THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_184211
UNIVERSAL
LIBRARY



दैवत-संहिता ।

(५)

अश्विनौ-देवता ।



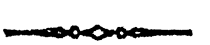
सम्पादक

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)



संवत् २०००, शक १८६५, सन १९४३



मुद्रक और प्रकाशक

वसंत श्रीपाद सातवलेकर, B. A.

स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध (जि० सातारा)

"अश्विनौ" देवता का स्वरूप।

वेदों में "अश्विनौ" देवता है। इस देवता का मन्त्र-संग्रह इस भूमिका के साथ पाठकों के सामने रखा जाता है। इस संग्रह में ६८९ मन्त्र हैं। इनमें ऋग्वेद के ६३३, वा० यजुर्वेद के ७, सामका १, अथर्व के ११ मंत्र हैं। सब मिलकर ६५२ मंत्र हुए। शेष ३७ मंत्र अश्विसहचारी देवतागण के हैं। ये सब मिलकर ६८९ होते हैं। अन्य पुनरुक्त मंत्रों की गणना यहां की नहीं है। इन देवतामंत्रों के ऋषि ये हैं—

१ कक्षीवान् दैर्घतमसः	८३
२ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	५६
३ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	३९
४ ब्रह्मातिथिः काण्वः	३७
५ घोषा काक्षीवती	२८
६ प्रस्कण्वः काण्वः	२५
७ कुरस आंगिरसः	२५
८ इयावाश्व आत्रेयः	२४
९ अथर्वा	२४
१० सध्वंसः काण्वः	२३
११ शशकर्णः काण्वः	२१
१२ प्रजापतिः [यजुः]	२१
१३ पौर आत्रेयः	२०
१४ विमना वैयश्वः	१९
१५ सोभरिः काण्वः	१८
१६ गोपवन आत्रेयः	१८
१७ पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ	१४
१८ हिरण्यस्तूप आंगिरसः	१२
१९ दीर्घतमा औचथ्यः	१२
२० गृत्समदः शौनकः	१२
२१ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	११
२२ भूतांशः काश्यपः	११
२३ भौमोऽत्रिः	११
२४ विश्वामित्रो गाथिनः	९
२६ अवस्युरात्रेयः	९
२७ ससवद्भिरात्रेयः	९
२८ कृष्ण आंगिरसः	९
२९ प्रगाथः काण्वः	६
३० कृष्णो द्युम्नीको वासिष्ठः	६
३१ अत्रिः सांख्यः	६
३२ मेधातिथिः काण्वः	५
३३ कृष्णो विश्वको वा कार्ष्णिः	५
३४ जमदग्निर्भार्गवः	५
३५ मेध्यः काण्वः	४
३६ मधुच्छंदा वैश्वामित्रः	३
३७ शुनःशेप आजीगर्तिः	३
३८ गोतमो राहूगणः	३
३९ परुच्छेपो दैवोदासिः	३
४० नाभाकः काण्वः	३
४१ विमद ऐन्द्रः	३
४२ विश्वामित्रः	३
४३ सुहस्त्यो धौषेयः	२
४४ सुकीर्तिः काक्षीवतः	२
४५ इरिम्बिठिः काण्वः	१
४६ त्वष्टा प्राजापत्यः	१
४७ अश्विनौ वैवस्वतौ	१
४८ ब्रह्मा	१

इस तरह मन्त्रसंख्या ऋषियोंके द्वारा देखी मिलती है। अब अश्विनी देवता के विषय में ब्राह्मणग्रंथों में जो निर्वचन मिलता है, वह यहां देते हैं—

अश्विनौ देवता के विषय में ब्राह्मणवचन।

अश्विनौ देवता के विषयमें ब्राह्मण-ग्रंथों में निम्नलिखित निर्वचन मिलते हैं, जो इस देवता-स्वरूप के बताने में सहायक हो सकते हैं—

इमे ह वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षं अश्विनौ, इमे हीदं सर्वं

पुष्करं आदित्योऽमुष्यै [दिवे]। [श० ब्रा० ४।१।५।१६]
श्रोत्रे अश्विनौ। [श० ब्रा० १२।९।१।१३]
नासिके अश्विनौ। [श० ब्रा० १२।९।१।१४]
तौ ह वा इमौ पुरुषाविवाक्ष्योः। एतावेवाश्विनौ।
[श० ब्रा० १२।९।१।१२]
अश्विनावध्वर्यू। [ऐ० ब्रा० १।१८; श० ब्रा० १।१।२।१७; ३।९।४।३; तै० ब्रा० ३।२।२।१; गो० ब्रा० उ० २।६]
अश्विनौ वै देवानां भिषजौ।
[ऐ. ब्रा. १।१८; कौ. ब्रा. १८।१]
मुख्यौ वा अश्विनौ [यज्ञस्य]। [श. ब्रा. ४।१।५।१९]
एतावेव हि अश्विनौ। श. ब्रा. ५।५।४।१]
स योनी वा अश्विनौ। [श. ब्रा. ५।३।१।८]
अश्विनाविव रूपेण [भूयासं]। मं. ब्रा. २।४।१४]
आश्विनं द्विकपालं पुरोडाशं निर्वपति।
[श. ब्रा. ५।३।१।८]
आश्विनो द्विकपालः [पुरोडाशः]। तां. ब्रा. २१।१०।२३]
वसन्तग्रीष्मावेवाभ्यां अश्विनाऽऽभ्यां [अवरुन्धे]।
[श. ब्रा. १२।८।२।३४]
अश्विभ्यां धानाः। [तै. ब्रा. १।५।११।३]
अथ यदेनं [अग्निं] द्वाभ्यां बाहुभ्यां द्वाभ्यामरणीभ्यां मन्थन्ति, द्वौ वा अश्विनौ, तदस्याश्विनं रूपम्।
[ऐ. ब्रा. ३।४]
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे। अश्विनोर्बाहुभ्याम्।
[तै. ब्रा. २।६।५।२]
गर्दभरथेनाश्विना उदजयताम्। [ऐ. ब्रा. ४।९]
तदश्विना उदजयतां रासभेन। [कौ. ब्रा. १८।१]
इममेव लोकमाश्विनेन [अवरुन्धे]।
[श. ब्रा. १२।८।२।३२]
अश्विनमन्वाह तदमुं लोकं [दिवं] आप्नोति।
[कौ. ब्रा. ११।२।१८।२]

[१] सब का भक्षण करते हैं, इसलिये द्यावापृथिवी ये दोनों लोक अश्विनौ हैं, [२] दोनों कान, [३] दोनों नाक, [४] दोनों आंख अश्विनौ हैं, [५] दोनों अध्वर्यु अश्विनौ हैं, [६] ये दोनों देवों के वैद्य हैं, [७] एक ही स्थानसे ये दोनों उत्पन्न होते हैं, [८] गर्दभ के रथ से अश्विनी देव आते हैं।

उक्त वचनोंसे जो निर्वचन मिलते हैं, वे ये हैं। ' बहुत खानेवाले, बहुत व्यापनेवाले ' ये ' अश् ' धातुके अर्थ हैं। येही यहां इन निर्वचनों में दीख रहे हैं। कान, नाक और आंख अपनी शक्तिसे विश्व को व्यापते हैं, आंख तो अपनी शक्ति से सब विश्व व्यापता है। इसलिये ये इंद्रिय अश्विनौ हैं। मनुष्यशरीर में अश्विनौ के ये रूप हैं। वैद्य अपनी चिकित्सा से बीमारी को घेरता और उसका नाश करता है। अध्वर्यू यज्ञप्रक्रिया को व्यापते हैं। इस तरह इन निर्वचनों का तात्पर्य है। इन निर्वचनों को देखने के बाद अब निरुक्त के वचन देखिये—

अथातो थुस्थाना देवताः। तासामश्विनौ प्रथमागामिनौ भवतः। अश्विनौ यद् व्यश्नुवाते सर्वं, रश्मिनान्यो, ज्योतिषान्यः। अश्वैरश्विनाविति यौर्णवाभः। तत् कावाश्विनौ? द्यावापृथिव्याविति येके। अहोरात्राविति येके। सूर्याचन्द्रमसाविति येके। राजानौ पुण्यकृताविति यैतिहासिकाः। तयोः काल ऊर्ध्वमर्धरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टम्भमनु, तमोभागो हि मध्यमः ज्योतिर्भाग आदित्यः ॥ १ ॥

तयोः समानकालयोः समानकर्मणोः संस्तुतप्रायर्योरसंस्तवनेषोऽर्धर्चो भवति–वासाय्यो अन्य उच्यते, ऋषः पुत्रस्तवान्य इति ॥ २ ॥

इह चेह च जातौ संस्तूयते पापेनालिप्यमानतया तन्वा नामभिश्च स्वैः। जिष्णुर्वामन्यः सुमहतो बलस्येरयिता मध्यमः, दिवो अन्यः सुभगः पुत्र ऊह्यत आदित्यः ॥३॥
प्रातर्युजा विबोधयाश्विनावेह गच्छताम्। [ऋ. १।२२।१]
प्रातर्योगिनौ विबोधयश्विनाविहागच्छताम्।
[निरुक्त अ. १३।१]
सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका।
उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु ॥
[ऋ. १०।१०६।६]

सृण्येवेति द्विविधा सृणिर्भवति भर्ता च हन्ता च, तथा अश्विनौ चापि भर्तारौ, जर्भरी भर्तारावित्यर्थः, तुर्फरीतू हन्तारौ। नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका– नितोशस्यापत्यं नैतोशः, नैतोशेव तुर्फरी क्षिप्रहन्तारौ। उदन्यजेव जेमना मदेरू– उदन्यजेवेत्युदकजे इव स्वने सामुद्रे चान्द्रमसे वा। जेमने जयमाने, जेमना मदेरू। ता मे जराय्वजरं

मरायु, एतज्जरायुजं शरीरं शरदं अजीर्णम् ॥ ५ ॥

[निरुक्त, १३।५]

अब द्युलोक की देवताओं की व्याख्या करते हैं। इन में अश्विदेव प्रथम आनेवाले होते हैं। ये सब व्यापते हैं, इनमें एक रस से व्यापता है और दूसरा प्रकाश से व्यापता है। और्णवाभ ऋषि का मत है कि, अश्विदेवोंके पास बहुत घोडे थे, घोडे पास रखने के कारण उनका नाम अश्विनौ हुआ। कौन भला ये अश्विनौ हैं? 'द्यु और पृथिवी' ऐसा कई मानते हैं, 'दिन और रात्री' ऐसा कई समझते हैं, 'सूर्य और चन्द्र' ऐसा कइयों का मत है, ऐतिहासिक लोग मानते हैं कि, ये पुण्यकर्म करनेवाले दो राजा हुए थे। इनका समय आधीरात व्यतीत होनेके पश्चात् का है, जब प्रकाश फटने लगता है, तब इनका उदय होता है। इस काल में जो अन्धकार का भाग है, वह मध्यम देवता है और जो ज्योति का भाग है, आदित्य का भाग है। इस तरह अन्धकार और प्रकाश इस समय इकट्ठे रहते हैं, येही अश्विनौ हैं।

ये दोनों देव एक ही काल में आते हैं, एक ही कर्म करते हैं। इनका वर्णन 'वसातिषु स्म०' आदि मन्त्र में किया है। इनमें से एक रात्री का और दूसरा उषा का पुत्र कहलाता है। अथवा इनमें से एक बडे बल का प्रेरक है और दूसरा द्युलोक का पुत्र आदित्य है। ये प्रातःकाल में आनेवाले हैं, ऐसा [प्रातर्युजा०] मन्त्र में कहा है।

[सृण्येव०] जिस प्रकार दात्री पोषण करनेवाली और नाश करनेवाली अर्थात् दोनों प्रकार की होती है, वैसे ही अश्विनौ में से एक देव पोषक है और दूसरा नाशक है।

इस तरह निरुक्त का अश्विनौ देवताओंके विषय में स्पष्टीकरण है। ब्राह्मणग्रन्थों के कथनों के अनुसार ही निरुक्तकारने अपना मत दिया है। [१] द्यावा-पृथिवी, [२] सूर्य-चन्द्र, [३] अहो-रात्र, [४] पुण्यकर्म करनेवाले दो राजा, [५] अंधेरा-प्रकाश, तथा [६] पोषक-संहारक इतने स्वरूप बताने के कारण अश्विनौ के विषय में किसी तरह का निश्चय नहीं होता। इसलियें वेदके मंत्रों में अश्विनौ देवता के स्वरूप के विषय में अधिक खोज करना चाहिये। देखिये मंत्रों में क्या क्या वर्णन आया है—

अश्विनौ देवता और 'तीन' संख्या।

अश्विनौ देवता के वर्णन में 'तीन' [३] इस संख्या का महत्व विशेष दीखता है देखिये—

त्रिश्चिन्नो अद्या भवतं नवेदसा। [१२; ऋ. १।३४।१]
आज तीन वार तुम हमारे बनो।

त्रयः पवयो मधुवाहने रथे०। त्रयः स्कंभासः०।
त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा ॥ [१३; ऋ. १।३४।२]

ऐ अश्विदेवो! तुम्हारे रथ के तीन चक्र हैं, तीन खंभे लगाये हैं। तुम दिन में तथा रात्रीमें तीन तीन वार जाते हो।

समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम्। त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यं उपसश्च पिन्वतम्। [१४; ऋ. १।३४।३]

आज एक ही दिन में तीन वार आओ और आज भी तीन वार आकर मधुसिंचन करो। आप दिनमें तथा रात्रीमें तीन तीन वार आकर पुष्टिकारक अन्न प्रदान करो।

त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिःसुप्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम्। त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिःपृक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम् ॥ [१५; ऋ. १।३४।४]

तुम हमारे पास तीन वार आओ, अपने भक्त के पास तीन वार जाओ, सुरक्षाके लिये तीन वार जाओ, तीन वार शिक्षा दो। हमारे पास तीन वार आनन्द लाओ तथा तीन वार अन्न प्रदान करो।

त्रिर्नो रयिं वहतं अश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावतं धियः। त्रिःसौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि नस्त्रिष्ठं वां सूरे दुहिता रुहद्रथम्। [१६; ऋ. १।३४।५]

'हमारे पास तीन वार संपति ले आओ, इस देवकर्म में तीन वार हमारी रक्षा करो, तीन वार हमें सौभाग्य देओ, तीन वार अन्न दो, तुम्हारे तीन स्थानवाले रथ पर सूर्य की पुत्री आरूढ हुई है।

त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिःपार्थिवानि त्रिरु दत्तमद्भ्यः। त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती। [१७; ऋ. १।३४।६]

हमें तीन वार दिव्य, पार्थिव और जलोद्भव औषधियां देते रहो; तथा तीनगुणा सुख हमें देते रहो।

त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीम

शायतम् । त्रिस्रो नासत्या रथ्या परावत० ।

[१८; ऋ. १।३४।७]

तीन वार प्रति दिन यज्ञ करते हैं। पृथ्वीके चारों ओर तुम तीन वार घूमते हो। रथसे तीन वार तुम दूर जाते हो।

क्व त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व त्रयो बन्धुरो ये सनीळाः ।

[ऋ. १।३४।९]

तुम्हारा त्रिकोणवाला रथ तीन चक्रोंवाला और तीन बैठने के स्थानों से युक्त है।

आ नो नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेय-मश्विना । प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा । [२२; ऋ. १।३४।११]

हे अश्विदेवो ! ३३ देवों को साथ लेकर मधुर रस का पान करने के लिये यहां आओ। हमारी आयु बढाओ, रोग दूर करो, शत्रु का नाश करो और हमारे सहायक बनो।

त्रिबन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा रथेनायातमश्विना ।

[४०; ऋ. १।४७।२]

तीन बैठकोंवाले त्रिकोणी सुंदर रथसे हे अश्विदेवो! आओ ।

अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो० त्रिबन्धुरो० ।

[१६५; ऋ. १।११५७।३]

तं युञ्जाथो० त्रिबन्धुरो० यस्त्रिचक्रः ।

[२०२; ऋ. १।१८३।१]

अश्विदेवों का रथ त्रिकोणी है, तीन चक्रों से युक्त है, बैठने के तीन तीन स्थान उस में हैं।

इस तरह अश्विदेवों के वर्णन में ' तीन ' संख्याका बडा महत्त्व है।

अश्विदेव वैद्य हैं ।

युवं ह स्थो भिषजा भेषजेभिः । [१६८; ऋ. १।११५७।६]

' आप के पास औषधियां हैं, इसलिये आप वैद्य हैं । ' इससे स्पष्ट हो जाता है कि, अश्विदेव बडे वैद्य हैं, उनके पास बहुत औषध हैं और वे रोगियों की चिकित्सा करते हैं। इनके वैद्य होनेके विषय में हम कुछ और मन्त्र यहां रखते हैं, पाठक इनका विशेष विचार करें—

अश्विनौ देवताओं का चिकित्सक होना सर्वत्र प्रसिद्ध है। इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखनेयोग्य है—

वृद्ध को तरुण बनाया ।

अश्विदेवों ने अति जीर्ण च्यवनऋषि को तरुण बनाया था, यह कायाकल्प का प्रयोग अश्विदेवों ने किया था, यह बात जैसी पुराणों में वैसी वेदमंत्रों में भी दीखती है–

जुजुरुषो नासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात् । प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्रादित् पतिमकृणुतं कनीनाम् ।

[८६; ऋ. १।११६।१०]

हे अश्विदेवो ! तुमने च्यवननामक एक वृद्ध के शरीर से कवच जैसी खाल उतार कर [बुढापा दूर किया और] उस की आयु बढायी और तरुण कन्याओंका पति बनाया।

यहां कायाकल्प के प्रयोग का कुछ वर्णन है। [च्यव-नात् जुजुरुषः वव्रिं द्रापिं इव प्रामुञ्चतं] वृद्ध च्यवन ऋषि के शरीर से कवच के समान संपूर्ण बुढापा दूर किया। शरीर से जैसा कोट या कुडता निकाल देते हैं, उस प्रकार शरीर से खाल निकाल कर उसको तरुण बनाया। यहां [द्रापिं प्रामुञ्चतं] चोगा उतारने का स्पष्ट उल्लेख है। सांप–नाग– भी अपने शरीर से चोगा उतारता है और फिर तरुण बनता है। सब शरीर से चर्म ऊपर की पतली त्वचा सांप के समान निकालने से शरीर पुनः तरुण हो जाता है ऐसा यहां प्रतीत होता है। आर्यवैद्यक ग्रंथों में जो कायाकल्प वर्णन किये हैं, उनमें भी कुटिरप्रवेशविधिसे कायाकल्पों का सेवन करनेसे शरीर की चमडी उतर जाती है और नवीन चमडी आती है, इस आशय के विधान हैं। इस विषय में सत्य क्या है, इसका विचार उत्तम वैद्यों को करना उचित है ।

' च्यवनप्राश ' अवलेह का वर्णन वैद्यक ग्रन्थोंमें है, जो च्यवन के पुनः तरुण बनने का स्मरण कराता है ।

इस मन्त्र में वृद्ध को ' दीर्घायु ' करने का भी उल्लेख है, तथा अनेक तरुणियों के साथ [कनीनां पतिं] विवाह च्यवनने किया, ऐसा भी कहा है। वृद्ध को तरुण बनाया, दीर्घायु बनाया और अनेक तरुणियों का पति भी बनाया गया था। यह अश्विदेवोंने अपने चिकित्सा के बलसे किया था। इस विषय में और मन्त्र देखिये—

युवं च्यवानं अश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः ॥ [११४; ऋ० १।११७।१३]

पुनश्च्यवानं चक्रथुः युवानम् ॥ [ऋ० १।११८।६]
विभिश्च्यवानं अश्विना नियाथः ॥ [ऋ० ५।७५।५]
प्र च्यवानाज्जुजुरुषो वव्रिं अक्तं न मुञ्चथः ।
युवा यदी कृथः पुनरा कामं ऋष्वे वध्वः ॥
[२७२; ऋ० ५।७४।५]

उत स्यद्वां जुरते अश्विना भूच्च्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे ।
अधि यद्वर्प इत ऊती धत्थः । [ऋ० ७।६८।६]
युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं । [ऋ० ७।७१।५]
युनं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।
[५८६; ऋ० १०।३९।४]

इन मन्त्रों का तात्पर्य यही है कि, अश्विदेव [च्यवानं नियाथः] च्यवन ऋषि के पास गये, उस वृद्ध ऋषि की चिकित्सा उन्होंने की, [वव्रिं अक्तं न मुञ्चथः] चोगे के समान सब खाल उतार दी, जिस से उस ऋषि का बुढापा दूर हुआ, [पुनः युवानं चक्रथुः] फिर से उसको जवान बनाया, वार्धक्य से उस की मुक्तता की, जैसा पुराना रथ [यथा रथं] कारीगर दुरुस्त करके नया बनाते हैं, वैसा ही च्यवन ऋषि को फिर से तरुण बनाया, यह च्यवन ऋषि अश्विदेवों को हवि अर्पण करता था। यह सब कार्य [शचीभिः] अपनी अद्भुत चिकित्सा की शक्तियों से अथवा औषधिविशेषों के प्रयोग से उन्होंने किया था। जो च्यवन चलनेफिरने में भी असमर्थ था, वही [चरथाय] अच्छी तरह घूमने लगा और [वध्वः कामं] स्त्रीसम्बन्ध का कामविकार उस में जाग्रत किया। अर्थात् यह ठीक तरह तरुण हुआ। इसी तरह वन्दनके विषयमें भी कहा है—

युवं वन्दनं निर्ऋतं जरण्यया रथं न दस्रा करणा
समिन्वथः । [ऋ. १।११९।७]
उद् वन्दनं ऐरयतं स्वर्दृशे । [ऋ. १।११२।५]
प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा । [ऋ. १।११९।६]

हे अश्विदेवो! तुमने वन्दन को निकृष्ट वृद्धावस्था को पहुंचे वन्दन को, उत्तम दृष्टि देकर, रथ दुरुस्त करने के समान तरुण अथवा हृष्टपुष्ट बनाया और [दीर्घेण आयुषा प्र तारि] दीर्घायु बनाया।

रथ दुरुस्त करने के समान इसका शरीर तुमने नाना औषधों के प्रयोग से ठीक बनाया। प्रसूतिकर्म में अश्विदेवों की प्रवीणता थी, इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र में उल्लेख है—

क्षेत्रादा विप्रं जनथः । [ऋ. १।११९।७]

क्षेत्र से [अर्थात् माता के गर्भाशय से] ब्राह्मणपुत्रको जन्म दिया। अर्थात् प्रसूतिकर्म की प्रवीणता से पुत्र को जन्म देकर माता की मुक्तता प्रसूतिवेदनाओं से की। इस मन्त्र में अश्विदेवों की प्रसूतिकर्म में प्रवीणता बतायी है।

घायल को दुरुस्त किया।

त्रिधा ह श्यावं अश्विना विकस्तं उज्जीवसे ऐरयतं
सुदानू ॥ [ऋ० १।११७।२४]

तीन स्थान पर कटे या जखमी हुए श्याव को पुनः जीवन देकर चलनेफिरनेयोग्य बना दिया।

तीन स्थान पर जिस के करीब करीब टुकडे हो चुके थे, ऐसे जखमी के टूटे भागों को पुनः जोड दिया और उस को अच्छी तरह चलनेफिरनेयोग्य बना दिया।

च्यवनऋषि की कथा शतपथब्राह्मण में निम्नलिखित प्रकार आ गयी है और उसमें अश्विदेवों का यही सम्बन्ध वर्णन किया गया है, वह कथा देखो—

च्यवनो वा भार्गवः, च्यवनो वाङ्गिरसः, तदेव जीर्णिः कृत्यारूपो जहे ॥ १ ॥ शर्यातो ह वा इदं मानवो ग्रामेण चचार। स तदेव प्रतिवेशो निविविशे तस्य कुमाराः क्रीडन्त इमं जीर्णिं कृत्यारूपमनर्थं मन्यमाना लोष्टैर्विपिपिषुः ॥ २ ॥ स शर्यातेभ्यश्चुक्रोध। तेभ्योऽसंज्ञां चकार, पितैव पुत्रेण युयुधे, भ्राता भ्रात्रा ॥३॥ शर्यातो ह वा ईक्षां चक्रे। यत्किमकरं तस्मादिदमापदीति स गोपालांश्चाविपालांश्च संह्वयित्वा उवाच ॥ ४ ॥ स होवाच। को वो अद्येह किंचिदद्राक्षीदिति, ते होचुः, पुरुष एवायं जीर्णिः कृत्यारूपः शेते, तमनर्थं मन्यमानाः कुमारा लोष्टैर्व्यक्षिपन्निति, स विदांचकार स वै च्यवन इति ॥ ५ ॥ स रथं युक्त्वा। सुकन्यां शर्यातीमुपाधाय प्रसिष्यन्द, स आजगाम, यत्रर्षिरास तत् ॥ ६ ॥ स होवाच। ऋषे नमस्ते यन्नावेदिषं तेनाहिंसिषमियं सुकन्या तया तेऽपह्नवे संजानीतां मे ग्राम इति, तस्य ह तत एव ग्रामः संजज्ञे स ह तत एव शर्यातो मानव उद्युयुजे नेदपरं हिनसानीति ॥ ७ ॥ अश्विनौ ह वा इदं भिषज्यन्तौ चेरतुः। तौ सुकन्यामुपेयतुः, तस्यां मिथुनमीषाते, तच्च जज्ञौ ॥ ८ ॥ तौ होचतुः। सुकन्ये कमिमं जीर्णिं

कृत्यारूपमुपशेष आवामनुप्रेहीति, सा होवाच, यस्मै मां पितादाञ्जैवाहं तं जीवन्तं हास्यामीति, तद्धायमृषिराजञ्जौ ॥ ९ ॥ स होवाच । सुकन्ये किं त्वेतदवोचतामिति, तस्मा एतद्याचक्षे, स ह व्याख्यात उवाच, यदि त्वैतत्पुनर्ब्रुवतः सा त्वं मृताञ्च वै सुसर्वाधिव स्थो, न सुसमृद्धाविवाथ मे पतिं निन्दथ इति, तौ यदि त्वाम्रवतः, केनावामसर्वौ स्वः, केनासमृद्धाविति, सा त्वं ब्रूतात्पतिं नु मे पुनर्युवाणं कुरुतमथ वां वक्ष्यामीति, तां पुनरुवेयतुस्तां हैतदवोचतुः ॥ १० ॥ तौ होचतुः । एतं ह्रदमभ्यवहर, स येन वयसा कमिष्यते तेनोदैष्यतीति, तं ह्रदमभ्यवजहार, स येन वयसा चकमे तेनोदेयायेति ॥ १२ ॥ [श. ब्रा. ४।१।५।१–१२]

च्यवननामक एक ऋषि था, जो भृगुकुल का समझा जाता है, अथवा आंगीरसकुल का भी माना जाता है। वह अति जीर्ण हो कर मरियलसा होकर एक स्थान पर पड़ा था। उस स्थान पर मनुवंश का शर्यात राजा आया। उस राजा के लडके वहां खेलने लगे। उन लडकों ने उस अति जीर्ण ऋषिके मुर्दे जैसे शरीर पर पत्थर मारे। इससे ऋषि को क्रोध आया, जिससे राजा के राज्य में सब प्रजाजनों की बुद्धि नष्ट हुई, वे आपस में लडने लगे। पिता पुत्रसे और भाई भाईसे लडने लगा। राजा शर्यात सोचने लगा कि, मैंने क्या ऐसा बुरा कर्म किया कि, जिसके कारण यह ऐसी आपत्ति आ गयी। उसने गवालियों को बुलाकर पूछा कि तुमने यहां कुछ देखा है? वे बोले कि, यह जो अतिजीर्ण मुर्दासा पडा है, वह मरा है, ऐसा मान कर तुम्हारे कुमारोंने उस पर पत्थर मारे, वह च्यवन ऋषि है, ऐसा उस राजाने जान लिया। पश्चात् अपनी कन्या को रथ पर बिठलाकर वह उस ऋषिके पास पहुंचा और उससे बोला कि 'हे ऋषि! नमस्ते। मुझे तुम्हारा ज्ञान नहीं था, इसलिये तुमको बहुत कष्ट पहुंचे। क्षमा करो। यह मेरी पुत्री है, यह तुम्हारे लिये अर्पण करता हूं। इसको प्राप्त करके सन्तुष्ट होओ। मेरे राज्य में जो बलवा उठा है, वह शान्त होवे।' तब ऋषि सन्तुष्ट हुआ और राज का बलवा शान्त हुआ। यह देखकर शर्यात राजाने प्रतिज्ञा की कि, मैं अब इसके बाद किसी को कष्ट नहीं दूंगा। उस ऋषि के आश्रम के पास अश्विदेव किसी की चिकित्सा करने के लिये आये थे, उन्होंने सुकन्याको देखा और उस तरुणी की इच्छा की। पर उस कन्याने उसके प्रस्ताव का स्वीकार नहीं किया। तब वे उससे पूछने लगे कि, 'हे सुकन्ये' तुम इस मुर्दा बने जीर्ण के पास क्यों रहती है? तू हमारा स्वीकार कर।' तब वह कन्या बोली कि– 'मेरे पिताने जिसको मेरा दान किया है, जब तक वह जीवित है, तब तक मैं उसे नहीं छोडूंगी।' सुकन्या का यह भाषण ऋषिने जान लिया, तब वह उस स्त्रीसे बोले कि, जिस समय ये अश्विनी कुमार फिर से तुम्हें ऐसा भाषण करने लगेंगे, तब तुम उनसे कहना कि– 'तुम मेरे पति की निंदा करते हो, परन्तु तुम तो अपूर्ण और सौभाग्यहीन से हो। यदि तुम मेरे पति को पुनः तरुण बनाओगे, तब सुपूर्ण तथा भाग्यसंपन्न बनाने का उपाय बताऊंगी।' सुकन्याने ऐसा अश्विनीकुमारों से कहा, तब वे बोले कि यदि तुम्हारा पति इस तालाव में गोता लगावे, तब जिस आयुका स्मरण करके वह गोता लगावेगा, उसी आयु को ऊपर आनेके पूर्व प्राप्त करेगा।' वैसा किया गया और च्यवन ऋषि उस तालावमें गोता लगाते ही तरुण बन गये। तब अश्विदेवोंने सौभाग्यसंपन्न बननेका मार्ग पूछा, तब उस ऋषिने यज्ञमें हविर्भाग प्राप्त करने का उपाय बताया। अश्विनीकुमार मानवों में जाते हैं, हर किसी की चिकित्सा करते हैं, इसलिये हमारी पंक्ति में बैठ कर हविर्भाग सेवन नहीं कर सकेंगे, ऐसा इन्द्रने निषेध किया, पर ऋषि के सामर्थ्य से इस समय से अश्विनी देवों को यज्ञ में हविर्भाग मिलने लगा।'

संक्षेप से यह कथा शतपथ ब्राह्मण में है। यही कथा पुराणों में अधिक विस्तृत रूपवाली हो गयी है। इस कथा का संबंध वेद के पूर्वोक्त मंत्रों के साथ स्पष्ट है।

अन्धे को आंख दिये।

अश्विनी देवोंने अन्धे को आंख और पंगु को चलनेयोग्य पांव दिये, यह चमत्कार निम्नलिखित मंत्र में है–

याभिः शचीभिः वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृथः। [५९; ऋ. १।११२।८]

अनेक-अपनी शक्तियों के द्वारा परावृज का अन्धत्व दूर करके उत्तम दृष्टिसे युक्त तथा उसका लंगडेपन हटा के इस

को उत्तम चलनेफिरनेवाला बना दिया। ऐसा ही वर्णन इन्द्र के लिये भी आया है-

नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थ्यः। [ऋ. २।१३।१२]

अन्धे और लूले परावृज को नीच अवस्था से उच्च बना कर [उत्तम दृष्टि से संपन्न और चलनेफिरनेवाले बनाकर] कीर्तिमान, यशस्वी बना दिया।

जैसी परावृजको दृष्टि दी, वैसी ही ऋज्राश्वको भी अश्विदेवोंने दृष्टि दी, देखिये—

शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानं ऋज्राश्वं तं पितान्धं चकार। तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्त दस्रा भिषजावनर्वन्। [९१; ऋ. १।११६।१६]

शतं मेषान् वृक्ये मामहानं तमः प्रणीतमशिवेन पित्रा। आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विचक्षे ॥ १७ ॥

शुनमन्धाय भरमह्वयत्सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति। जारः कनीन इव चक्षदान ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान्॥ [११८-११९; ऋ० १।११७।१७-१८]

श्रुतं गायत्रं तकवानस्य ... आक्षी शुभस्पती दन्। [ऋ० १।१२०।६]

ऋज्राश्वने एकसौ एक मेष भेडिये को खाने दिये, यह देख कर उसके पिताने उस ऋज्राश्व को अन्धा बना दिया। परन्तु अश्विदेवोंने इस ऋज्राश्व के आंख पुनः देखनेयोग्य बना दिये।

कवि को आंख दिये।

उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमाणमकृणुतं विचक्षे। [ऋ. १।११६।१४]

' दृष्टि की इच्छा से प्रार्थना करनेवाले कवि को उत्तम आंख दिये।' संभवतः यह दृष्टि कविकी क्रान्तदृष्टि होगी। बहुत करके इस स्थान पर की दृष्टि काव्य की दृष्टि है। तथापि पाठकों को ऐसे मंत्रों का विशेष विचार करना चाहिए।

मद्य के १०० घडे।

शतं कुम्भां असिञ्चतं सुरायाः। [ऋ. १।११६।७]

शतं कुम्भां असिञ्चतं मधूनाम्। [ऋ. १।११७।६]

" सुरा के अथवा मधू के १०० घट तुमने भर दिये।' यहां सुरा, आसव, मद्य, मधु, अरिष्ट आदि पद किस पदार्थ का बोध कराते हैं, इसका निर्णय वैद्यों को करना चाहिये। अश्विदेव वैद्य हैं, यह वेद में सुप्रसिद्ध है। वैद्यों के पास आसव के १०० घट भर कर रहे, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। ' मधु ' एक मीठा पेय है, यह मद्य नहीं है। ' सुरा ' भाप से पुनः पानी बनाया जाता है, उसका नाम है (Distilled Water) शुंडायंत्रसे जो अर्क निकालते हैं, वह सुरा है। इसमें इस तरह जो मद्य बनता है, वह भी शामिल है, पर इसका केवल यही अर्थ है, यह बात नहीं है। वृष्टिउदक, भांपसे बना जल आदि भी इसके अर्थ हैं। अतः वैद्यों को इस सुरा तथा मधुके विषय में अधिक खोज करके निर्णय करना उचित है।

विश्पला को लोहेकी टांग लगाई।

विश्पलानामक राजपुत्री की एक टांग युद्ध में कट गयी थी। वह काटकर उस स्थानपर अश्विदेवोंने लोहेकी टांग लगा दी और उस स्त्रीको चलनेफिरनेयोग्य बना दिया, यह बात निम्नलिखित मन्त्रों में है—

चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम्। सद्यो जंघामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम्॥ [ऋ० १।११६।१५]

सं विश्पलां नासत्यारिणीतम्। [ऋ० १।११७।११]

याभिर्विश्पलां धनसामथर्व्यं सहस्रमीळ्ह आजावजिन्वतम्। [ऋ० १।११२।१०]

प्रति जंघां विश्पलाया अधत्तम् [ऋ० १।११८।८]

धियंजिन्वा धिष्ण्या विश्पलावसू। [१।१८२।१]

युवं सद्यो विश्पलामेतवे कृथः। [१०।३९।८]

अथर्ववेदी कुल में उत्पन्न (खेलस्य) खेल राजा की पुत्री विश्पला (धने हिते) युद्ध में गयी थी। उसकी एक टांग टूट गयी। अश्विदेवोंने इस को लोहे की टांग (आयसीं जंघां) लगा दी। जिससे वह (सर्तवे) चलनेफिरनेयोग्य बनी। इसकी यह जखम भी अश्विदेवोंने ठीक बना दी, इसलिये अश्विदेवों को (विश्पला वसू) विश्पला को निवासयोग्य बनानेवाले इस अर्थ का नाम प्राप्त हुआ।

दधीची ऋषि को घोडे का सिर।

दधीची ऋषि को घोडे का सिर लगाने के उल्लेख वेद-मंत्रों में अनेक वार आ गये हैं देखिये–

दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो वां अश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच। [ऋ. १।११६।१२]
आथर्वणायाश्विना दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम्। [ऋ. १।११७।२२]

अथर्वकुल में दधीची ऋषि के लिये तुमने घोडे का सिर लगाया। इस अश्व के मुख से उस ऋषिने तुम दोनों को मधुविद्या सिखायी।

यहां अश्वका सिर ऋषि के मस्तक के स्थान पर लगा देने का उल्लेख है। मनुष्य के कण्ठ पर घोडे का सिर लग नहीं सकता, इसलिये यह उल्लेख विशेष अलंकार का सूचक है। अध्यात्मविद्या के संबंध में यह खोज करनेयोग्य वर्णन है। मधुविद्या दधीची ऋषि के पास थी, इन्द्रने यह विद्या दधीची को सिखायी थी। दधीची से यह विद्या अश्विदेवोंको प्राप्त हुई। इस संबंध की कथा पुराणों में लंबी-चौडी है। यह सब वैदिक और पौराणिक साहित्य एकत्रित करके सब की मिलकर खोज करने का विचार है। स्वतंत्र लेखरूप से यह लेख प्रकाशित किया जायगा।

रेभका वर्णन।

रेभ के विषयमें अश्विदेवों की सहायता का वर्णन निम्नलिखित मंत्रों में है–

याभी रेभं निवृतं सितं अद्रयः। [ऋ० १।११२।५]
विप्रुतं रेभं उदनि प्रवृक्तं उन्निन्यथुः।
[ऋ० १।११६।२४]

अश्वं न गूळ्हं अश्विना दुरेवैः ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु।
सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिः न वां जूर्यन्ति पूर्व्या कृतानि॥ [ऋ० १।११७।४]

रेभ ऋषिको दुष्टोंने जखमी करके जल में डुबाया था। उसको आपने ऊपर निकाला और उसके अवयव फिर से ठीक कर दिये। यह अश्विदेवों का कर्म बडा प्रशंसनीय है और यह वैद्यक्रिया के साथ संबंध रखता है। टूटे-फूटे अवयवों को पुनः ठीक करना यह कर्म वैद्यों का ही है।

वंध्या गौको दुधारू बनाया।

अश्विदेवोंने वंध्या गौको दुधारू बनाया है, इसका वर्णन अब देखिये–

याभिर्धेनुं अस्वं पिन्वथो नरा। [ऋ० १।११२।३]
अधेनुं दस्रा स्तर्यं विषक्तां अपिन्वतं शयवे अश्विना गाम्।
[ऋ० १।११७।२०]
युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि। [ऋ० १।११९।६]

हे अश्विदेवो! तुमने शयुके लिये वंध्या, कृश गौ को उपजाऊ और बहुत दूध देनेवाली बना दिया। यहां गौको पुष्ट करना, दुधारू बनाना और गर्भधारण के योग्य बनाने का उल्लेख है। औषधिप्रयोग से वंध्या को गर्भधारण-योग्य बनाना यह बडी भारी सफलताका चिन्ह है। तथा–

अश्विदेवोंने गाय में दूध उत्पन्न किया, इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखनेयोग्य है–

युवं पय उस्रियायां अधत्तं पक्वं आमायां अव पूर्व्यं गोः।
[ऋ० १।१८०।३]

'आपने गौ में दूध धारण किया और अपक्व गौ में परिपक्व दूध उत्पन्न किया।' अश्विदेवों के यत्न से गौ में उत्तम दूध बना है।

स्त्री का दान किया।

अश्विदेवोंने कइयोंको स्त्री देकर शादी कराई है देखिये–

याभिः पत्नीः विमदाय न्यूहथुः। [ऋ० १।११०२।१९]
यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहतू रथेन।
[ऋ० १।११६।१]
युवं शचीभिः विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम्॥ [ऋ० १।११७।२०]
युवं इयावाय रुशतीमदत्तं। [ऋ० १।११७।८]

विमद की शादी करने के लिये अश्विदेवोंने एक स्त्री उसको अर्पण की– तथा इयाव के लिये एक गौर वर्ण की सुन्दर स्त्री दी।

इस तरह अश्विदेव शादी करानेवाले दीखते हैं।

स्त्री को पति दिया।

घोषायै चित् पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यत्या अश्विनावदत्तम्॥
[ऋ० १।११७।७]

घोषा नामक एक स्त्री अपने पिताके घरमें रहकर बडती गती थी। इसके लिये एक उत्तम पति अश्विदेवोंने दिया और घोषा के लिये सुख दिया।

इस तरह पति को स्त्री और स्त्रीके लिये पति अश्विदेवोंने दिया है।

अश्विदेवों का रथ।

अश्विदेवों का रथ पक्षियों के समान आकाशमें उडता था, यह बात निम्न लिखित मन्त्रमें लिखी है–

वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि।
यद् वां रथो विभिष्पतात् ॥ [२६; ऋ० १।४६।३]

जब आप का रथ पक्षियों के समान आकाश में उडता है, तब आपके घोडे अन्तरिक्ष में गमन करते हैं। इनके आकाशगामी रथ को पक्षी जोते जाते थे। इस विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखने योग्य है–

आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः
पतंगाः। ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो
नासत्या वहन्ति ॥ [१३०; ऋ० १।११८।४]

आपके रथ को (आकाशयान को, विमान को) शीघ्रगामी पक्षी (आशवः पतंगाः युक्तासः) जोते गये हैं, वे श्येन पक्षी आप को इधर ले आवें। वे त्वराशील शीघ्रगामी हैं।

इस से अश्वियों का रथ विमान जैसा आकाशगामी है यह बात सिद्ध होती है। इन का भूमिपर चलनेवाला भी रथ है। पर इन मंत्रों में उन के विमान का वर्णन है।

अश्विदेवों का रथ घोडे जोतने का नहीं था, इसलिये उसको ' अनश्व रथ ' कहा है, देखिये–

अनश्वं यामी रथमावर्तं जिषे। [६३; ऋ० १।११२।१२]
अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः ॥
[१५७; ऋ० १।१२०।१०]

जिस को घोडे जोते नहीं जाते, ऐसा अश्विदेवोंका (अनश्वः रथः) अश्वरहित रथ है। इस से इस को पक्षी जोते जाते थे और वह आकाश में उडता था, यह बात स्पष्ट हो सकती है।

रथ को जोडे श्येन पक्षी।

अश्विदेवों के रथों अर्थात् आकाशयानों को पक्षी जोते जाते थे, इस विषय में ये मन्त्र देखिये–

आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः
पतंगाः। ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो
नासत्या वहन्ति। [१३०; ऋ. १।११८।४]

वेगवान् और उडनेवाले श्येन पक्षी तुम अश्विदेवों को वेग से यहां ले आवें। दिव्य गीधों के समान आकाश में उडनेवाले आप को हविष्यान्न के पास शीघ्र ले आवें।

यहां ' श्येनासः, पतंगाः, गृध्राः ' ये पद निःसंदेह पक्षीवाचक हैं। तथा ' आशवः, अप्तुरः ' ये पद विशेष गति के वाचक है। ' दिव्यासः ' पद आकाशगमन का सूचक है। ' रथे युक्ताः ' पदोंसे ये पक्षी आकाशयान में जोडे जाते थे, यह स्पष्ट हो जाता है। अर्थात् अश्विदेवोंके विमानों, हवाई जहाजों को गृध्र श्येन आदि वेगवान् पक्षी जोते जाते थे, यह बात इससे सिद्ध होती है।

इनके रथों को घोडे, गधे जोते जाते थे, इसका भी वर्णन अन्यत्र है।

उडनेवाली नौका = हवाई जहाज।

युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवं आत्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्र्याय कम्। येन देवत्रा मनसा निरूहथुः सुपप्तनी पेतथुः क्षोदसो महः ॥ [१९८; ऋ० १।१८२।५]

आपने तुग्रपुत्रके लिये अपने सामर्थ्य से पंखयुक्त नौका महासागर में बनायी, वह पक्षीके समान थी। उस नौका से उत्तम प्रकार उडनेवाले तुम दोनों सहजही से समुद्र से उडकर ऊपर चले गये।

यहां उडनेवाली नौका अश्विदेवोंने बनायी थी, यह स्पष्ट वर्णन है। यह जलमें तो चलती ही थी, पर आकाश में पक्षी के समान भी उडती थी। यही आकाशयान अथवा हवाई जहाज है। इन का रथ आकाश में घूमता है, इस विषय में देखिये–

उरु वां रथः परि नक्षति त्यां। [२४८; ऋ० ४।४३।५]

आप का रथ आकाश में संचार करता है। अर्थात् यह हवाई जहाज है, इस में सन्देह नहीं है।

भुज्यु की सहायता।

तुग्र एक सम्राट् था, उस का पुत्र भुज्यु बडा वीर था। वह एक वार मरु देश के किसी शत्रु से लडने के लिये अपनी सेना के साथ समुद्र मार्ग से नौकाओं के द्वारा गया था। वहां उस का पराभव हुआ। वहां से भुज्युने अश्वि-

देवोंको सन्देश भेजा, अश्विदेव अपने विमानोंसे आकाश-मार्ग से आये, भुज्युको तथा उस की सेना को अपने विमानों में उठाकर भुज्यु को घर पहुंचाया । इस तरह युद्धोंमें- दर्याई युद्धों में भी अश्विदेवोंने सहायता की है, इनके वर्णन देखिये-

वीळुपत्मभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाश-दाना । तद्रासभो नासत्या सहस्रमाजा यमस्य प्रधने जिगाय ॥ [७८; ऋ० १।११६।२]

(वीळु-पत्मभिः) बडे वेग से उडनेवाले, (आशु-हेमभिः) त्वरासे दौडनेवाले, (देवानां जूतिभिः) दैवी शक्तियों से प्रेरित होनेवाले यानों से युक्त (नासत्या) अश्विदेव बडे पराक्रम करनेवाले हैं । उनके वाहन से ही (आजा) इस युद्धमें (सहस्रं) हजारों शत्रु सैनिक (यमस्य प्रधने) यमराज के युद्ध में, सर्वस्वनाशक युद्ध में मारे जाकर (जिगाय) विजय मिला है ।

इस मन्त्र में अश्विदेवों के वाहन बडे प्रबल वेग से आकाश में उडते थे, ऐसा लिखा है ।

तुग्रो ह भुज्युं अश्विनोदमेघे रयिं न कश्चिन्ममृवां अवाहाः । तमूहथुः नौभिरात्मन्वतीभिः अन्तरिक्ष-प्रुद्भिरपोदकाभिः । [७९; ऋ. १।११६।३]

तुग्र नामक सम्राट्ने अपने भुज्युनामक पुत्रको [उदमेघे] समुद्र में- अर्थात् समुद्र के परतीरनिवासी शत्रु पर हमला करने के लिये- भेजा था। जैसा कोई [ममृवां] मरनेवाला [रयिं न] अपने धनकी आशा छोडता है, वैसेही तुग्रने अपने पुत्र की आशा छोड कर उसे शत्रु पर भेजा था। पश्चात् भुज्यु का पराभव हुआ और वह समुद्र में डूब मरने लगा । उस राजकुमारको [आत्मन्वतीभिः नौभिः] सामर्थ्य-वाली नौकाओंद्वारा [अन्तरिक्षप्रुद्भिः] जो नौकाएं आकाश में भी उडती थीं और [अप-उदकाभिः] जलमें से भी जाती थीं, अश्विदेवोंने उसके वर पहुँचाया ।

जो जहाज आकाश में उडते हैं, जल में जाते हैं और समय पर भूमि परसे भी जा सकते हैं, ऐसे जहाज अश्वि-देवों के थे ।

तिस्रः क्षपः त्रिरहातिव्रजद्भिः नासत्या भुज्युं ऊहथुः पतंगैः । समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षडश्वैः । [८०; ऋ. १।११६।४]

[तिस्रः क्षपः] तीन रात्री और [त्रिः अहा] तीन दिन तक [अतिव्रजद्भिः पतंगैः] अतिवेगसे दौडनेवाले पक्षि-सदृश यानोंसे भुज्यु को- अर्थात् उसके साथियों के साथ- [ऊहथुः] आकाशमार्गसे वहन किया । [आर्द्रस्य समुद्रस्य धन्वन् पारे] जलमय समुद्र के परे रेतीले प्रदेश में रहनेवाले राजा पर आक्रमण करने के लिये भुज्यु गया था। वहां से उसको [त्रिभिः रथैः] तीन रथों से उसको घर पहुंचाया । जिन रथों को सैंकडों चक्र लगे थे और छह घोडे अर्थात् वहन-साधन लगे थे ।

तीन अहोरात्र चलनेवाले ये हवाई जहाज थे, ऐसा यहां कहा है । सैनिकों को लेकर ये वायुयान तीन दिन रात उडते हुए तुग्र के राज्य में पहुंचे ।

अनारम्भणे तदवीरयेथां अनास्थाने अग्रभणे समुद्रे । यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमात-स्थिवांसम् ॥ [८१; ऋ० १।११६।५]

जिस समुद्र के (अनारम्भणे) आदि अन्त का पता नहीं लगता, (अनास्थाने) जिस समुद्र के मध्यमें ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं है, और (अग्रभणे) जिस का ग्रहण भी नहीं हो सकता, ऐसे अथांग महासागरमें भुज्यु डूब रहा था । वहां अश्विदेव पहुंचे और उन्होंने अपने (शतारित्रां नावं) सौ बल्लियोंवाली नौकापर उस को (आतस्थिवांसं) बिठलाकर उस को (अस्तं ऊहथुः) अपने घर पहुंचा दिया ।

यहां कहा है कि अथांग समुद्र में अश्विदेवों के जहाज जाते थे । वे आकाश में भी उडते थे और अनेक सैनिकों को बिठला सकते थे ।

युवं तुग्राय पूर्व्येभिरेवैः पुनर्मन्यावभवतं युवाना । युवं भुज्युं अर्णसो निः समुद्रात् विभिरूहथुः ऋज्रे-भिरश्वैः ॥ [११५; ऋ० १।११७।१४]

हे अश्विदेवों ! आप (तुग्राय) राजा तुग्र के लिये (पूर्व्येभिः एवैः) पूर्व समय में की सहायताओं से प्रिय हो चुके थे ही, पर आप (पुनः) फिर भी (मन्यौ अभ-वतं) मान्य हो गये हैं, क्योंकि (भुज्युं) तुग्र के युवराज राजपुत्र भुज्युको (अर्णसः समुद्रात्) बडे महासागर में से (ऋज्रेभिः अश्वैः) बडे वेगवाले अपने (विभिः) पक्षि-सदृश वाहनोंसे (ऊहथुः) ऊपर उठाया और घरको पहुंचाया।

यहां बताया है कि, अश्विद्वयों की पहले से ही मित्रता तुग्र के साथ थी । पर अब पुत्रको बचाने के कारण वह मित्रता सुदृढ हो गई है । पहले की अपेक्षा अब वह मित्रता अधिक बढ चुकी है ।

युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ । यासिष्टं वर्तिर्वृषणा विजेन्यम् ॥

[१४१; ऋ० १।११९।४]

आपने (भुरमाणं भुज्यं) जलों में डूब मरनेवाले भुज्यु नामक राजपुत्रको (विभिः गतं) उडनेवाले पक्षियों जैसे यानोंसे उठाकर (स्वयुक्तिभिः) अपनी खास युक्तियों से (पितृभ्यः आ निर्वहन्ता) पिताके पास लाया । आप (वृषणा) बलवान् हैं और (विजेन्यं यासिष्ठं) अतिदूर देशतक आप पहुंचे थे और भुज्युको आपने वहांसे लाया था ।

ता भुज्युं विभिरद्भ्यः समुद्रात्तुग्रस्य सूनुं ऊहथू रजोभिः । अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिः अर्णसो निरुप-स्थात् ॥ [३११; ऋ० ६।६२।६]

(तुग्रस्य सूनुं भुज्युं) राजा तुग्र के पुत्र भुज्यु को (निरुपस्थात् अर्णसः समुद्रात् अद्भ्यः) अर्थात् महासागर के बडे जलों से (अरेणुभिः रजोभिः) जहां धूली नहीं है, ऐसे अन्तरिक्षसे- आकाशमार्गसे- (ऊहथुः) उठाकर (योजनेभिः) विविध प्रकारकी योजनाओंसे युक्त (विभिः) पक्षियों जैसे (पतत्रिभिः) पक्षिरूप यानों से तुमने उसके घर पहुंचाया ।

युवं भुज्युं अवविद्धं समुद्र ऊहथुरर्णसो अस्रिधानैः । पतत्रिभिरश्रमैरश्वयिभिर्दंसनाभिः अश्विना पारयन्ता ॥

[६५३; ऋ० ७।६९।७]

आपने [समुद्रे अवविद्धं भुज्युं] समुद्र में जखमी होकर पडे हुए भुज्यु को [अस्रिधानैः] जिन में कुछ भी न्यूनता नहीं है, सब सुखसाधनों से जो परिपूर्ण हैं, [अश्रमैः] जिनमें बैठनेवालोंको बिलकुल श्रम नहीं होते, [अश्वयि-भिः] जिनमें किसी को व्यथा नहीं होती, ऐसे [पतत्रिभिः] पक्षि जैसे यानों से [अर्णसः उत् ऊहथुः] समुद्र से ऊपर उठा कर अनेकानेक युक्तियों से [पारयन्ता] समुद्र के पार करके घर पहुंचा दिया ।

युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईंखितम् । यातमच्छा पतत्रिभिः नासत्या सातये कृतम् ।

[६३१; ऋ० १०।१४३।५]

उत स्यं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे । निरीं पर्षदरावा यो युवाकुः । [३४४; ऋ. ७।६८।७]

आपने डूबनेवाले भुज्युको समुद्र से उठा कर [रजसः] अन्तरिक्ष के मार्ग से पार पहुंचा दिया । आप [पतत्रिभिः] पक्षी जैसे आकाश-यानों से वेगसे वहां पहुंचे थे ।

आपने समुद्र के बीच में जो कठिन अवस्था में पडा था, उस भुज्यु को मित्रभावसे उठा कर सुरक्षित घर पहुंचाया ।

इन मंत्रों से पता लगता है कि अश्विदेवों के पास पक्षियों के सदृश आकाश में उडनेवाले आकाश-यान थे । वे तीन अहोरात्र अतिवेग से चलाये जाते थे और उन में सैनिकों को बिठलाना और इष्ट स्थान पर पहुंचाने का कार्य किया जाता था ।

अश्विदेवों की यह विद्या मननपूर्वक आलोचना करने-योग्य है ।

इस तरह अश्विदेवों के कर्तृत्व का वर्णन वेद-मंत्रों में है । अश्विदेवता के सब मंत्रों का मननपूर्वक अध्ययन करने पर तथा इनका जो वर्णन पुराणों में है वह देखने के बाद, तथा दोनों की संगति लगाने के बाद अश्विदेवों के संबंध में ठीक ठीक पता लग सकता है ।

ये देवता उषाके पूर्व आकाश में तारकारूप से उगते हैं, ऐसा भी वर्णन है । ये दो साथ साथ रहते हैं । अस्तु । दैवत-संहितांतर्गत अश्विनौ देवताका अध्ययन होनेके लिये यह मंत्रसंग्रह सहायक होगा, ऐसी हमें आशा है ।

× × × ×

इस दैवत-संहिता के द्वितीय विभाग में आये सब देवताओं की उपमासूची, विशेषणसूची आदि अनेक उपयुक्त सूचियां श्री० पं० अनन्त दिनकर रास्ते, वाई (जि० सातारा) निवासीने बडी मेहेनत से तथा विशेष प्रयत्नपूर्वक बनायी हैं, इसलिये स्वाध्याय-मण्डल उन के विषय में अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है ।

× × × ×

इस दैवत-संहिता के मुद्रण और प्रकाशन के व्यय के लिये मुंबई विश्वविद्यालय (University of Bombay) ने जो सहायता दी और जो उक्त विश्वविद्यालय से सम्पादक को मिली है, उस के लिये सम्पादक उक्त विश्वविद्यालय का बडा ऋणी है ।

स्वाध्याय-मण्डल, औंध
ता० ७।६।४३

निवेदनकर्ता
श्रीपाद दामोदर सातवलेकर



दैवत-संहिता।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता।)

५ अश्विनौ देवता।

॥१॥ (ऋ. १।३।१—३)

(१—३) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। गायत्री।

अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती । पुरुभुजा चनस्यतम् १
अश्विना पुरुदंससा नरा शवीरया धिया । धिष्ण्या वनतं गिरः २
दस्रा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः । आ यातं रुद्रवर्तनी ३ ३

॥२॥ (ऋ. १।१५।११)

(४—८) मेधातिथिः काण्वः। (ऋतुसहितौ)। गायत्री।

अश्विना पिबतं मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता । ऋतुना यज्ञवाहसा ११

॥३॥ (ऋ. १।२२।१—४)

प्रातर्युजा वि बोधया—ऽश्विनावेह गच्छताम् । अस्य सोमस्य पीतये १ ५
या सुरथा रथीतमो—भा देवा दिविस्पृशा । अश्विना ता हवामहे २
या वां कशा मधुमत्य—श्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ३
नहि वामस्ति दूरके यत्रा रथेन गच्छथः । अश्विना सोमिनो गृहम् ४ ८

॥४॥ (ऋ. १।३०।१७—१९)

(९—११) शुनःशेप आजीगर्तिः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः।

आश्विनावश्वावत्ये—षा यातं शवीरया । गोमद् दस्रा हिरण्यवत् १७
समानयोजनो हि वां रथो दस्रावमर्त्यः । समुद्रे अश्विनेयते १८
न्यघ्न्यस्य मूर्धनि चक्रं रथस्य येमथुः । परि द्यामन्यदीयते १९ ११

॥५॥ (ऋ. १।३४।१—१२)

(१२—१३) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । जगती; ९,१२ त्रिष्टुप् ।

त्रिश्चिन् नो अद्या भवतं नवेदसा विभुर्वां यामं उत रातिरश्विना ।
युवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससो ऽभ्यायंसेन्या भवतं मनीषिभिः १
त्रयः पवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद् विदुः ।
त्रयः स्कम्भासः स्कभितास आरभे त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा २
समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम् ।
त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम् ३
त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम् ।
त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः पृक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम् ४ १५
त्रिर्नो रयिं वहतमश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावतं धियः ।
त्रिः सौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि न स्त्रिष्टं वां सूरे दुहिता रुहद् रथम् ५
त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमद्भ्यः ।
ओमानं शंयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती ६
त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् ।
तिस्रो नासत्या रथ्या परावतं आत्मेव वातः स्वसराणि गच्छतम् ७
त्रिरश्विना सिन्धुभिः सप्तमातृभिस्त्रयं आहावास्त्रेधा हविष्कृतम् ।
तिस्रः पृथिवीरुपरि प्रवा दिवो नाकं रक्षेथे द्युभिरक्तुभिर्हितम् ८
क्व त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व त्रयो वन्धुरो ये सनीळाः ।
कदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः ९ २०
आ नासत्या गच्छतं हूयते हविर्मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।
युवोर्हि पूर्वं सवितोषसो रथमृताय चित्रं घृतवन्तमिष्यति १०
आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा ११
आ नो अश्विना त्रिवृता रथेना ऽर्वाञ्चं रयिं वहतं सुवीरम् ।
शृण्वन्ता वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ १२ २३

॥६॥ (ऋ. १।४६।१—१५)

(२४—४८) प्रस्कण्वः काण्वः। गायत्री।

एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् १
या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम् । धिया देवा वसुविदा २ २५
वृष्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि । यद् वां रथो विभिष्पतात् ३
हविषा जारो अपां पिपर्ति पपुरिर्नरा । पिता कुटस्य चर्षणिः ४
आदारो वां मतीनां नासत्या मतवचसा । पातं सोमस्य धृष्णुया ५
या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासाथामिषम् ६
आ नौ नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे । युञ्जाथामश्विना रथम् ७ ३०
अरित्रं वां दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः । धिया युयुज्र इन्दवः ८
दिवस्कण्वास इन्दवो वसु सिन्धूनां पदे । स्वं व्रिं कुह धित्सथः ९
अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः । व्यख्यज्जिह्वयासितः १०
अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया । अदर्शि वि स्रुतिर्दिवः ११
तत् तदिदश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति । मदे सोमस्य पिप्रतोः १२ ३५
वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा । मनुष्वच्छभू आ गतम् १३
युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् । ऋता वनथो अक्तुभिः १४
उभा पिबतमश्विनो—भा नः शर्म यच्छतम् । अविद्रियाभिरूतिभिः १५

॥७॥ (ऋ. १।४७।१—१०)

प्रगाथः = (विषमा) बृहती, (समा) सतो बृहती।

अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोम ऋतावृधा ।
तमश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे १
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा रथेना यातमश्विना ।
कण्वासो वां ब्रह्म कृण्वन्त्यध्वरे तेषां सु शृणुतं हवम् २ ४०
अश्विना मधुमत्तमं पातं सोममृतावृधा ।
अथाद्य दस्रा वसु बिभ्रता रथे दाश्वांसमुप गच्छतम् ३
त्रिषधस्थे बर्हिषि विश्ववेदसा मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।
कण्वासो वां सुतसोमा अभिद्यवो युवां हवन्ते अश्विना ४ ४५

याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना ।
ताभिः ष्वस्माँ अवतं शुभस्पती पातं सोममृतावृधा ५
सुदासे दस्रा वसु बिभ्रता रथे पृक्षो वहतमश्विना ।
रयिं समुद्रादुत वा दिवस्पर्यस्मे धत्तं पुरुस्पृहम् ६
यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अधि तुर्वशे ।
अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ७ ४५
अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप ।
इषं पृञ्चन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिः सीदतं नरा ८
तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा ।
येन शश्वदूहथुर्दाशुषे वसु मध्वः सोमस्य पीतये ९
उक्थेभिरर्वागवसे पुरूवसू अर्कैश्च नि ह्वयामहे ।
शश्वत् कण्वानां सदसि प्रिये हि कं सोमं पपथुरश्विना १० ४८

॥८॥ (ऋ. १।९२।१६—१८)

(४९—५१) गोतमो राहूगणः । उष्णिक् ।

अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद् दस्रा हिरण्यवत् । अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम् १६
यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः । आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् १७
एह देवा मयोभुवा दस्रा हिरण्यवर्तनी । उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये १८ ५१

॥९॥ (ऋ. १।११२।१—२५)

(५२—७६) कुत्स आङ्गिरसः । १ (आद्यपादस्य) द्यावापृथिव्यौ, १ (द्वितीयपादस्य) अग्निः, १ (उत्तरार्धस्य) अश्विनौ; २—२५ अश्विनौ । जगती; २४—२५ त्रिष्टुप् ।

ईळे द्यावापृथिवी पूर्वचित्तये ऽग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये ।
याभिर्भरे कारमंशाय जिन्वथस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १
युवोर्दानाय सुभरा असश्चतो रथमा तस्थुर्वचसं न मन्तवे ।
याभिर्धियोऽवथः कर्मन्निष्टये ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् २
युवं तासां दिव्यस्य प्रशासने विशां क्षयथो अमृतस्य मज्मना ।
याभिर्धेनुमस्वं पिन्वथो नरा ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ३
याभिः परिज्मा तनयस्य मज्मना द्विमाता तूर्षु तरणिर्विभूषति ।
याभिस्त्रिमन्तुरभवद् विचक्षणस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ४ ५५

याभी रेभं निवृतं सितमद्भ्य उद् वन्दनमैरयतं स्वर्दृशे ।
याभिः कण्वं प्र सिषासन्तमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ५
याभिरन्तकं जसमानमारणे भुज्युं याभिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः ।
याभिः कर्कन्धुं वय्यं च जिन्वथस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ६
याभिः शुचन्ति धनसां सुषंसदं तप्तं घर्ममोम्यावन्तमत्रये ।
याभिः पृश्निगुं पुरुकुत्समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ७
याभिः शचीभिर्वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृथः ।
याभिर्वर्तिकां ग्रसिताममुञ्चतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ८
याभिः सिन्धुं मधुमन्तमसश्चतं वसिष्ठं याभिरजरावजिन्वतम् ।
याभिः कुत्सं श्रुतर्यं नर्यमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ९ ६०
याभिर्विश्पलां धनसामथर्व्यं सहस्रमीळ्ह आजावजिन्वतम् ।
याभिर्वशमश्व्यं प्रेणिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १०
याभिः सुदानू औशिजाय वणिजे दीर्घश्रवसे मधु कोशो अक्षरत् ।
कक्षीवन्तं स्तोतारं याभिरावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ११
याभी रसां क्षोदसोद्रः पिपिन्वथू रनश्वं याभी रथमावतं जिषे ।
याभिस्त्रिशोकं उस्रिया उदाजत ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १२
याभिः सूर्यं परियाथः परावति मन्धातारं क्षैत्रपत्येष्वावतम् ।
याभिर्विप्रं प्र भरद्वाजमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १३
याभिर्महामतिथिग्वं कशोजुवं दिवोदासं शम्बरहत्य आवतम् ।
याभिः पूर्भिद्यो त्रसदस्युमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १४ ६५
याभिर्वम्रं विपिपानमुपस्तुतं कलिं याभिर्वित्तजानिं दुवस्यथः ।
याभिर्व्यश्वमुत पृथिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १५
याभिर्नरा शयवे याभिरत्रये याभिः पुरा मनवे गातुमीषथुः ।
याभिः शारीराजतं स्यूमरश्मये ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १६
याभिः पठर्वा जठरस्य मज्मना ग्निर्नादीदेच्चित इद्धो अज्मन्ना ।
याभिः शर्यातमवथो महाधने ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १७
याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यथो ऽग्रं गच्छथो विवरे गोअर्णसः ।
याभिर्मनुं शूरमिषा समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १८ ६९

याभिः पत्नीर्विमदाय न्यूहथु—रा घं वा याभिररुणीरशिक्षतम् ।
याभिः सुदासं ऊहथुः सुदेव्यं१ ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् १९ ७०
याभिः शंतातौ भवथो ददाशुषे भुज्युं याभिरवथो याभिरध्रिगुम् ।
ओम्यावतीं सुभरामृतस्तुभं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् २०
याभिः कृशानुमसने दुवस्यथो जवे याभिर्यूनो अवन्तमावतम् ।
मधु प्रियं भरथो यत् सरड्भ्य—स्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् २१
याभिर्नरं गोषुयुधं नृषाह्ये क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः ।
याभी रथाँ अवथो याभिरवत—स्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् २२
याभिः कुत्समार्जुनेयं शतक्रतू प्र तुर्वीतिं प्र च दभीतिमावतम् ।
याभिर्ध्वसन्तिं पुरुषन्तिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् २३
अग्नंस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतं नो दस्रा वृषणा मनीषाम् ।
अद्यूत्येऽवसे नि ह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ २४
द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मा—नरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः २५ ७६

॥१०॥ (ऋ. १।११६।१—२५)

(७७—१५९) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । त्रिष्टुप् ।

नासत्याभ्यां बर्हिरिव प्र वृञ्जे स्तोमाँ इयर्म्यभ्रियेव वातः ।
यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहतू रथेन १
वीळुपत्मभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाशदाना ।
तद् रासभो नासत्या सहस्र—माजा यमस्य प्रधने जिगाय २
तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे रयिं न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः ।
तमूहथुर्नौभिरात्मन्वतीभि—रन्तरिक्षप्रुद्भिरपोदकाभिः ३
तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्भि—र्नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः ।
समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः ४ ८०
अनारम्भणे तदवीरयेथा—मनास्थाने अग्रभणे समुद्रे ।
यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमातस्थिवांसम् ५
यमश्विना ददथुः श्वेतमश्व—मघाश्वाय शश्वदित् स्वस्ति ।
तद् वां दात्रं महि कीर्तेन्यं भूत् पैद्वो वाजी सदमिद्धव्यो अर्यः ६ ८१

युवं नरा स्तुवते पज्रियाय कक्षीवते अरदतं पुरंधिम् ।
कारोतराच्छफादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भाँ असिञ्चतं सुरायाः ७
हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् ।
ऋषीसे अत्रिमश्विनावनीतमुन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति ८
परावृतं नासत्यानुदेथामुच्चाबुध्नं चक्रथुर्जिह्मबारम् ।
क्षरन्नापो न पायनाय राये सहस्राय तृष्यते गोतमस्य ९ ८९
जुजुरुषो नासत्योत वन्दे प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात् ।
प्रातिरतं जह्नितस्यायुर्दस्रादित् पतिमकृणुतं कनीनाम् १०
तद् वां नरा शंस्यं राध्यं चाभिष्टिमन्नासत्या वरूथम् ।
यद् विद्वांसा निधिमिवापगूळ्हमुद् दर्शतादुपथुर्वन्दनाय ११
तद् वां नरा सनये दंस उग्रमाविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम् ।
दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो वाममश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच १२
अजोहवीन्नासत्या करा वां महे यामन् पुरुभुजा पुरंधिः ।
श्रुतं तच्छासुरिव वध्रिमत्या हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम् १३
आस्नो वृकस्य वर्तिकामभीके युवं नरा नासत्यामुमुक्तम् ।
उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमाणमकृणुतं विचक्षे १४ ९०
चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम् ।
सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम् १५
शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानमृज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दस्रा भिषजावनर्वन् १६
आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य कार्ष्मेवातिष्ठदर्वता जयन्ती ।
विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या सचेथे १७
यदयातं दिवोदासाय वर्ति भरद्वाजायाश्विना हयन्ता ।
रेवदुवाह सचनो रथो वां वृषभश्च शिंशुमारश्च युक्ता १८
रयिं सुक्षत्रं स्वपत्यमायुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता ।
आ जह्नावीं समनसोप वाजैः क्षिरह्नो भागं दधतीमयातम् १९
परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सीं सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः ।
विभिन्दुना नासत्या रथेन वि पर्वताँ अजरयू अयातम् २० ९१

एकस्या वस्तोरावतं रणाय वशमश्विना सनये सहस्रा ।
निरंहतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता पृथुश्रवसो वृषणावरातीः २१
शरस्य चिदार्चत् कस्यावतादा नीचादुच्चा चक्रथुः पातवे वाः ।
शयवे चिन्नासत्या शचीभिर्जसुरये स्तर्यं पिप्यथुर्गाम् २२
अवस्यते स्तुवते कृष्णियाय ऋजूयते नासत्या शचीभिः ।
पशुं न नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय २३
दश रात्रीरशिवेना नव द्यून्नवनद्धं श्नथितमप्स्वन्तः ।
विप्रुतं रेभमुदनि प्रवृक्तमुन्निन्यथुः सोममिव स्रुवेण २४ १००
प्र वां दंसांस्यश्विनावोचं मस्य पतिः स्यां सुगवः सुवीरः ।
उत पश्येमाक्षुवन् दीर्घमायुरस्तमिवेज्जरिमाणं जगम्याम् २५

॥११॥ (ऋ. १।११७।१-२५)

मध्वः सोमस्याश्विना मदाय प्रत्नो होता विवासते वाम् ।
बर्हिष्मती रातिर्विश्रिता गीरिषा यातं नासत्योप वाजैः १
यो वामश्विना मनसो जवीयान् रथः स्वश्वो विश आजिगाति ।
येन गच्छथः सुकृतो दुरोणं तेन नरा वर्तिरस्मभ्यं यातम् २
ऋषिं नरावंहसः पाञ्चजन्यमुदीराणामुश्रथो गणेन ।
मिनन्ता दस्योरशिवस्य माया अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता ३
अश्वं न गूळ्हमश्विना दुरेवैर्ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु ।
सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिर्न वां जूर्यन्ति पूर्व्या कृतानि ४ १०५
सुषुप्वांसं न निर्ऋतेरुपस्थे सूर्यं न दस्रा तमसि क्षियन्तम् ।
शुभे रुक्मं न दर्शतं निखातमुदूपथुराश्विना वन्दनाय ५
तद् वां नरा शंस्यं पज्रियेण कक्षीवता नासत्या परिज्मन् ।
शफादश्वस्य वाजिनो जनाय शतं कुम्भाँ असिञ्चतं मधूनाम् ६
युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय ।
घोषायै चित् पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावदत्तम् ७
युवं श्यावाय रुशतीमदत्तं महः क्षोणस्याश्विना कण्वाय ।
प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम् ८ १०९

पुरू वर्पांस्यश्विना दधाना नि पेदवे ऊहथुराशुमश्वम् ।
सहस्रसां वाजिनमप्रतीत महिहनं श्रवस्यं तरुत्रम् ९ ११०
एतानि वां श्रवस्या सुदानू ब्रह्माङ्गूषं सदने रोदस्योः ।
यद् वां पज्रासो अश्विना हवन्ते यातमिषा च विदुषे च वाजम् १०
सूनोर्मानेनाश्विना गृणाना वाजं विप्राय भुरणा रदन्ता ।
अगस्त्ये ब्रह्मणा वावृधाना सं विश्पलां नासत्यारिणीतम् ११
कुह यान्ता सुष्टुतिं काव्यस्य दिवो नपाता वृषणा शयुत्रा ।
हिरण्यस्येव कलशं निखात मुदूपथुर्दशमे अश्विनाहन् १२
युवं च्यवानमश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः ।
युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया नासत्यावृणीत १३
युवं तुग्राय पूर्व्येभिरेवैः पुनर्मन्यावभवतं युवाना ।
युवं भुज्युमर्णसो निः समुद्राद् विभिरूहथुर्ऊर्जन्वद्भिरश्वैः १४ १११
अजोहवीदश्विना तौग्र्यो वां प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जगन्वान् ।
निष्टमूहथुः सुयुजा रथेन मनोजवसा वृषणा स्वस्ति १५
अजोहवीदश्विना वर्तिका वा मास्नो यत् सीमसिञ्चतं वृकस्य ।
वि जयुषा ययथुः सान्वद्रेर्जातं विष्वाचो अहतं विषेण १६
शतं मेषान् वृक्ये मामहानं तमः प्रणीतमशिवेन पित्रा ।
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विचक्षे १७
शुनमन्धाय भरमह्वयत् सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति ।
जारः कनीन इव चक्षदान ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान् १८
मही वामूतिरश्विना मयोभू रुत स्रामं धिष्ण्या सं रिणीथः ।
अथा युवामिदह्वयत् पुरंधिरागच्छतं सीं वृषणाववोभिः १९ १२०
अधेनुं दस्रा स्तर्यं विषक्ता मप्पिन्वतं शयवे अश्विना गाम् ।
युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम् २०
यवं वृकेणाश्विना वपन्तेषं दुहन्ता मनुषाय दस्रा ।
अभि दस्युं बकुरेणा धमन्तोरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय २१
आथर्वणायाश्विना दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम् ।
स वां मधु प्र वोचदुतायन् त्वाष्ट्रं यद् दस्रावपिकक्ष्यं वाम् २२ १२३

सदा कवी सुमतिमा चके वां विश्वा धियो अश्विना प्रावतं मे ।
अस्मे रयिं नासत्या बृहन्त—मपत्यसाचं श्रुत्यं रराथाम् २३
हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा वध्रिमत्या अदत्तम् ।
त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्त—मुज्जीवसं ऐरयतं सुदानू २४ १२५
एतानि वामश्विना वीर्याणि प्र पूर्व्याण्यायवोऽवोचन् ।
ब्रह्म कृण्वन्तो वृषणा युवभ्यां सुवीरासो विदथमा वदेम २५

॥१२॥ (ऋ.१।११८।१—११)

आ वां रथो अश्विना श्येनपत्वा सुमृळीकः स्ववां यात्वर्वाङ् ।
यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा वातरंहाः १
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक् ।
पिन्वतं गा जिन्वतमर्वतो नो वर्धयतमश्विना वीरमस्मे २
प्रवद्यामना सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः ।
किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठा—हुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः ३
आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः पतङ्गाः ।
ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ४ १३०
आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदत्र जुष्टी नरा दुहिता सूर्यस्य ।
परि वामश्वा वपुषः पतङ्गा वयो वहन्त्वरुषा अभीके ५
उद् वन्दनमैरतं दंसनाभि—रुद्रेभं दस्रा वृषणा शचीभिः ।
निष्टौग्र्यं पारयथः समुद्रात् पुनश्च्यवानं चक्रथुर्युवानम् ६
युवमत्रयेऽवनीताय तप्त—मूर्जमोमानमश्विनावधत्तम् ।
युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुजुषाणा ७
युवं धेनुं शयवे नाधितायापिन्वतमश्विना पूर्व्याय ।
अमुञ्चतं वर्तिकामंहसो निः प्रति जङ्घां विश्पलाया अधत्तम् ८
युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजूत—महिहनमश्विनादत्तमश्वम् ।
जोहूत्रमर्यो अभिभूतिमुग्रं सहस्रसां वृषणं वीळ्वङ्गम् ९
ता वां नरा स्ववसे सुजाता हवामहे अश्विना नाधमानाः ।
आ न उप वसुमता रथेन गिरो जुषाणा सुविताय यातम् १० १३६

आ श्येनस्य जवसा नूतनेना—स्मे यातं नासत्या सजोषाः ।
हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमायां उषसो व्युष्टौ ११

॥१३॥ (ऋ. १।११९।१—१०) जगती ।

आ वां रथं पुरुमायं मनोजुवं जीराश्वं यज्ञियं जीवसे हुवे ।
सहस्रकेतुं वनिनं शतद्वसुं श्रुष्टीवानं वरिवोधामभि प्रयः १
ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य प्रयाम—न्यधायि शस्मन्त्समयन्त आ दिशः ।
स्वदामि घर्मं प्रति यन्त्युतय आ वामूर्जानी रथमश्विनारुहत् २
सं यन्मिथः पस्पृधानासो अग्मत शुभे मखा अमिता जायवो रणे ।
युवोरह प्रवणे चेकिते रथो यदश्विना वहथः सूरिमा वरम् ३ १४०
युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ ।
यासिष्टं वर्तिर्वृषणा विजेन्यं दिवोदासाय महि चेति वामवः ४
युवोरश्विना वपुषे युवायुजं रथं वाणी येमतुरस्य शर्ध्यम् ।
आ वां पतित्वं सख्याय जग्मुषी योषावृणीत जेन्या युवां पती ५
युवं रेभं परिषूतेरुरुष्यथो हिमेन घर्मं परितप्तमत्रये ।
युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा ६
युवं वन्दनं निरृतं जरण्यया रथं न दस्रा करणा समिन्वथः ।
क्षेत्रादा विप्रं जनथो विपन्यया प्र वामत्रि विधते दंसना भुवत् ७
अगच्छतं कृपमाणं परावति पितुः स्वस्य त्यजसा निबाधितम् ।
स्वर्वतीरित ऊतीर्युवोरह चित्रा अभीके अभवन्नभिष्टयः ८ १४५
उत स्या वां मधुमन्मक्षिकारप—न्मदे सोमस्यौशिजो हुवन्यति ।
युवं दधीचो मन आ विवासथो ऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं वदत् ९
युवं पेदवे पुरुवारमश्विना स्पृधां श्वेतं तरुतारं दुवस्यथः ।
शर्यैरभिद्युं पृतनासु दुष्टरं चर्क्रत्यमिन्द्रमिव चर्षणीसहम् १०

॥१४॥ (ऋ. १।११२।१—१२)

(१ दुःस्वप्ननाशनम्) । १ गायत्री, २ ककुप्, ३ का-विराट्, ४ नष्टरूपी, ५ तनुशिरा, ६ उष्णिक्, ७ विष्टार-बृहती, ८ कृतिः, ९ विराट्, १०—१२ गायत्री ।

का राधद्धोत्राश्विना वां को वां जोष उभयोः । कथा विधात्यप्रचेताः १
विद्वांसाविद् दुरः पृच्छे—दविद्वानित्थापरो अचेताः । न चिन्नु मर्ते अक्रौ २ १४९

ता विद्वांसा हवामहे वां ता नो विद्वांसा मन्म वोचेतमद्य । प्रार्चद् दयमानो युवाकुः ३ १५०
वि पृच्छामि पाक्या३ न देवान् वषट्कृतस्याद्भुतस्य दस्रा । पातं च सह्यसो युवं च रम्यसो नः४
प्र या घोषे भृगवाणे न शोभे यया वाचा यजति पज्रियो वाम् । प्रैषयुर्न विद्वान् ५
श्रुतं गायत्रं तकवानस्या हं चिद्धि रिरेभाश्विना वाम् । आक्षी शुभस्पती दन् ६
युवं ह्यास्तं महो रन् युवं वा यन्निरततंसतम् । ता नो वसू सुगोपा स्यातं पातं नो वृकादघायोः७
मा कस्मै धातमभ्यमित्रिणे नो माकुत्रा नो गृहेभ्यो धेनवो गुः । स्तनाभुजो अशिश्वीः ८ १५५
दुहीयन् मित्रधितये युवाकु राये च नो मिमीतं वाजवत्यै । इषे च नो मिमीतं धेनुमत्यै ९
अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः । तेनाहं भूरि चाकन १०
अयं समह मा तनुह्याते जनाँ अनु । सोमपेयं सुखो रथः ११
अध स्वप्नस्य निर्विदे ऽभुञ्जतश्च रेवतः । उभा ता बस्रि नश्यतः १२ १५९

॥१५॥ (ऋ. १।१३९।३-५)

(१६०-१६२) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ५ बृहती ।

युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो अश्विना ऽऽश्रावयन्त इव श्लोकमायवो युवां हव्याभ्याईयवः ।
युवोर्विश्वा अधि श्रियः पृक्षश्च विश्ववेदसा ।
प्रुषायन्ते वां पवयो हिरण्यये रथे दस्रा हिरण्यये ३ १६०
अचेति दस्रा व्युनाकमृण्वथो युञ्जते वां रथयुजो दिविष्टिष्वध्वस्मानो दिविष्टिषु ।
अधि वां स्थाम बन्धुरे रथे दस्रा हिरण्यये ।
पथेव यन्तावनुशासता रजो ऽञ्जसा शासता रजः ४
शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दशस्यतम् ।
मा वां रातिरुप दसत् कदा चना सद् रातिः कदा चन ५ १६२

॥१६॥ (ऋ. १।१५७।१—६)

(१६३—१७४) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती, ५—६ त्रिष्टुप् ।

अबोध्यग्निर्जम उदेति सूर्यो व्युषाश्चन्द्रा मह्यावो अर्चिषा ।
आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद् देवः सविता जगत् पृथक् १
यद् युञ्जाथे वृषणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम् ।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि २
अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः ।
त्रिबन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे ३ १६५

आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवं मधुमत्या नः कशया मिमिक्षतम् ।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा ४
युवं ह गर्भं जगतीषु धत्थो युवं विश्वेषु भुवनेष्वन्तः ।
युवमग्निं च वृषणावपश्च वनस्पतीँरश्विनावैरयेथाम् ५
युवं ह स्थो भिषजा भेषजेभि रथो ह स्थो रथ्याऽ राथ्येभिः ।
अथो ह क्षत्रमधि धत्थ उग्रा यो वां हविष्मान् मनसा ददाश ६

॥१७॥ (ऋ. १।१५८।१—६) त्रिष्टुप्, ६ अनुष्टुप् ।

वक्षू रुद्रा पुरुमन्तू वृधन्ता दशस्यतं नो वृषणावभिष्टौ ।
दस्रा ह यद् रेकणं औचथ्यो वां प्र यत् ससाथे अकवाभिरूती १
को वां दाशत् सुमतये चिदस्यै वसू यद् धेथे नमसा पदे गोः ।
जिगृतमस्मे रेवतीः पुरंधीः कामप्रेणेव मनसा चरन्ता २ १७०
युक्तो ह यद् वां तौग्र्याय पेरु र्वि मध्ये अर्णसो धायि पज्रः ।
उप वामवः शरणं गमेयं शूरो नाज्म पतयद्भिरेवैः ३
उपस्तुतिरौचथ्यमुरुष्ये न्मा मामिमे पतत्रिणी वि दुग्धाम् ।
मा मामेधो दशतयश्चितो धाक् प्र यद् वां बद्बस्तमनि खादति क्षाम् ४
न मां गरन् नद्यो मातृतमा दासा यदीं सुसमुब्धमवाधुः ।
शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत् स्वयं दास उरो अंसावपि ग्ध ५
दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे ।
अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः ६ १७४

॥१८॥ (ऋ. १।१८०।१—१०)

(१७५—२१३) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद् वां पर्यर्णांसि दीयत् ।
हिरण्यया वां पवयः प्रुषायन् मध्वः पिबन्ता उषसः सचेथे १ १७५
युवमत्यस्यावं नक्षथो यद् विपत्मनो नर्यस्य प्रयज्योः ।
स्वसा यद् वां विश्वगूर्ती भरति वाजायेट्टे मधुपाविषे च २
युवं पयं उस्रियायामधत्तं पक्वमामायामव पूर्व्यं गोः ।
अन्तर्यद् वनिनो वामृतप्सू ह्वारो न शुचिर्यजते हविष्मान् ३ १७७

युवं ह॑ घर्मं मधु॑मन्तमत्र॒ये ऽपो न क्षोदो॑ऽवृणीतमे॒षे ।
तद् वां॑ नरावश्वि॒ना पश्व॑इष्टी॒ रथ्ये॑व च॒क्रा प्रति॑ यन्ति॒ मध्व॑ः ४
आ वां॑ दा॒नाय॑ ववृतीय दस्रा॒ गोरोहे॑ण तौ॒ग्र्यो न जिह्रे॑ः ।
अ॒पः क्षो॒णी सं॑चते॒ माहि॑ना वां॒ जूर्णो॑ वामक्षु॒रंह॑सो यजत्रा ५
नि यद् युवेथे॑ नि॒युत॑ः सुदानू॒ उप॑ स्व॒धाभि॑ः सृजथ॒ः पुरं॑धिम् ।
प्रेष॒द् वेष॒द् वात॑ो न सू॒रि॒रा म॒हे द॑दे॒ सुव्र॑तो न वाज॑म् ६ १८०
व॒यं चि॒द्धि वां॑ जरि॒तार॑ः स॒त्या वि॑पन्या॒महे॒ वि प॑णि॒र्हिता॑वान् ।
अधा॑ चि॒द्धि ष्मा॑श्विनावनिन्द्या॒ पाथो॒ हि ष्मा॑ वृषणावन्ति॒देव॑म् ७
युवां॑ चि॒द्धि ष्मा॑श्विना॒वनु॒ द्यून् वि॑रु॒द्रस्य॑ प्रस्रव॒णस्य॑ सा॒तौ ।
अ॒गस्त्यो॑ नरां नृषु॒ प्रश॑स्त॒ः कार॑धुनीव चितयद् स॒हस्रै॑ः ८
प्र यद् व॒हेथे॑ महि॒ना रथ॑स्य॒ प्र स्प॑न्द्रा याथो॒ मनु॑षो॒ न होता॑ ।
ध॒त्तं सू॒रिभ्य॑ उ॒त वा॒ स्व॒श्व्यं॑ नास॑त्या र॒यिषा॑चः स्याम ९
तं वां॑ रथं॒ वय॒मद्या हु॑वेम स्तो॒मैर॑श्विना सुवि॒ताय॒ नव्य॑म् ।
अरि॑ष्टनेमिं॒ परि॒ द्यामि॑या॒नं वि॒द्यामे॒षं वृ॒जनं॑ जी॒रदा॑नुम् १०

॥१९॥ (ऋ. १।१८१।१—९)

कदु॒ प्रेष्ठा॑विषां र॒यी॒णा॒मध्व॑र्यन्ता॒ यदु॑न्नि॒नी॑थो अ॒पाम् ।
अ॒यं वां॑ य॒ज्ञो अ॑कृत प्रश॒स्ति॒ वसु॑धिती अवि॒तारा॑ जना॒नाम् १ १८५
आ वा॒मश्वा॑सः शुचयः पयस्पा॒ वात॑रंहसो दि॒व्यासो॒ अत्या॑ः ।
मनो॑जुवो वृषणो वी॒तपृ॑ष्ठा॒ एह स्व॒राजो॑ अ॒श्विना॑ वहन्तु २
आ वां॑ रथो॑ऽवनि॒र्न प्र॒वत्वा॒न्त्सु॒प्रव॑न्धुरः सुवि॒ताय॑ गम्याः ।
वृष्ण॑ः स्थाता॒रा मन॑सो॒ जवी॑या॒नहं॑पूर्वो यजतो धि॒ष्ण्या॒ यः ३
इ॒हेह॑ जा॒ता सम॑वावशीता॒मरे॑पसा॒ तन्वा॒३ नाम॑भि॒ः स्वैः ।
जि॒ष्णुर्वा॑मन्यः सुम॑खस्य सू॒रि॒र्दि॒वो अ॒न्यः सु॒भग॑ः पुत्र ऊ॑हे ४
प्र वां॑ निचेरुः क॑कु॒हो वशाँ॑ अनु॒ पिश॑ङ्गरूपः सद॑नानि गम्याः ।
हरी॑ अ॒न्यस्य॑ पीपयन्त वा॒जै॒र्मधा॒ रजां॑स्यश्विना॒ वि घो॒षैः ५
प्र वां॑ श॒रद्वा॑न् वृष॒भो न नि॒ष्षाट् पूर्वी॑रिषश्चरति मध्व इ॒ष्णन् ।
एवै॑र॒न्यस्य॑ पीपयन्त वा॒जै॒र्वेष॑न्तीरू॒र्ध्वा न॒द्यो॑ न आ॑गुः ६ १९०

असर्जि वां स्थविरा वेधसा गी—र्बाळ्हे अश्विना त्रेधा क्षरन्ती ।
उपस्तुताववतं नाधमानं यामन्नयामञ्छृणुतं हवं मे ७
उत स्या वां रुशतो वप्ससो गी—स्त्रिर्बर्हिषि सदसि पिन्वते नॄन् ।
वृषा वां मेघो वृषणा पीपाय गोर्न सेके मनुषो दशस्यन् ८
युवां पूषेवाश्विना पुरंधि—रग्निमुषां न जरते हविष्मान्
हुवे यद् वां वरिवस्या गृणानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ९

॥२०॥ (ऋ. १।१८२।१—८) जगती; ६, ८ त्रिष्टुप् ।

अभूदिदं वयुनमो षु भूषता रथो वृषण्वान् मदता मनीषिणः ।
धियंजिन्वा धिष्ण्या विश्पलावसू दिवो नपाता सुकृते शुचिव्रता १
इन्द्रेतमा हि धिष्ण्या मरुत्तमा दस्रा दंसिष्ठा रथ्या रथीतमा ।
पूर्णं रथं वहेथे मध्व आचितं तेन दाश्वांसमुप याथो अश्विना २ १९५
किमत्र दस्रा कृणुथः किमासाथे जनो यः कश्चिदहविर्महीयते ।
अतिक्रमिष्टं जुरतं पणेरसुं ज्योतिर्विप्राय कृणुतं वचस्यवे ३
जम्भयंतमभितो रायतः शुनो हतं मृधो विदथुस्तान्यश्विना ।
वाचंवाचं जरितू रत्निनीं कृत—मुभा शंसं नासत्यावतं मम ४
युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लव—मात्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्र्याय कम् ।
येन देवत्रा मनसा निरूहथुः सुपप्तनी पेतथुः क्षोदसो महः ५
अवविद्धं तौग्र्यमप्स्व१न्त—रनारम्भणे तमसि प्रविद्धम् ।
चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा उदश्विभ्यामिषिताः पारयन्ति ६
कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्र्यो नाधितः पर्यषस्वजत् ।
पूर्णा मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम् ७ २००
तद् वां नरा नासत्यावनु ष्याद् यद् वां मानास उचथमवोचन् ।
अस्मादद्य सदसः सोम्यादा विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ८

॥२१॥ (ऋ. १।१८३।१—६)

तं युञ्जाथां मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः ।
येनोपयाथः सुकृतो दुरोणं त्रिधातुना पतथो विर्न पर्णैः १
सुवृद् रथो वर्तते यन्नभि क्षां यत् तिष्ठथः क्रतुमन्तानु पृक्षे ।
वपुर्वपुष्या सचतामियं गी—र्दिवो दुहित्रोषसा सचेथे २ २०३

आ तिष्ठतं सुवृतं यो रथो वा—मनु व्रतानि वर्तते हविष्मान् ।
येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ३
मा वां वृको मा वृकीरा दधर्षी—न्मा परि वर्क्तमुत मातियक्तम् ।
अयं वां भागो निहित इयं गी—र्दस्राविमे वां निधयो मधूनाम् ४ २०५
युवां गोतमः पुरुमीळ्हो अत्रि—र्दस्रा हवतेऽवसे हविष्मान् ।
दिशं न दिष्टामृजुयेव यन्ता मे हवं नासत्योप यातम् ५
अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।
एह यातं पथिभिर्देवयानै—र्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६

॥२२॥ (ऋ. १।१८४।१—६)

ता वामद्य तावपरं हुवेमो—च्छन्त्योमुषसि बर्हिरुक्थैः ।
नासत्या कुह चित् सन्तावर्यो दिवो नपाता सुदास्तराय १
अस्मे ऊ षु वृषणा मादयेथा—मुत् पणीँर्हितमूर्म्या मदन्ता ।
श्रुतं मे अच्छोक्तिभिर्मतीना—मेष्टा नरा निचेतारा च कर्णैः २
श्रिये पूषन्निषुकृतेव देवा नासत्या वहतुं सूर्यायाः ।
वच्यन्ते वां ककुहा अप्सु जाता युगा जूर्णेव वरुणस्य भूरेः ३ २१०
अस्मे सा वां माध्वी रातिरस्तु स्तोमं हिनोतं मान्यस्य कारोः ।
अनु यद् वां श्रवस्या सुदानू सुवीर्याय चर्षणयो मदन्ति ४
एष वां स्तोमो अश्विनावकारि मानेभिर्मघवाना सुवृक्ति ।
यातं वर्तिस्तनयाय त्मने चा—गस्त्ये नासत्या मदन्ता ५
अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।
एह यातं पथिभिर्देवयानै—र्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६ २१३

॥२३॥ (ऋ. २।३७।५)

(२१४-२२५) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । (ऋतुसहितौ) । जगती ।

अर्वाञ्चमद्य युय्यं नुवाहणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम् ।
पृङ्क्तं हवींषि मधुना हि कं गत—मथा सोमं पिबतं वाजिनीवसू ५

॥२४॥ (ऋ. २।३९।१—८) त्रिष्टुप् ।

ग्रावाणेव तदिदर्थं जरेथे गृध्रेव वृक्षं निधिमन्तमच्छ ।
ब्रह्माणेव विदथ उक्थशासा दूतेव हव्या जन्या पुरुत्रा १ २१५

प्रातर्यावाणा रथ्येव वीरा ऽजेत्रा यमा वरमा संचेथे ।
मेनेव तन्वा३ शुम्भमाने दम्पतीव क्रतुविदा जनेषु २
भृङ्गेव नः प्रथमा गन्तमर्वाक् छफाविव जर्भुराणा तरोभिः ।
चक्रवाकेव प्रति वस्तोरुस्रा ऽर्वाञ्चा यातं रथ्येव शक्रा ३
नावेव नः पारयतं युगेव नभ्येव न उपधीव प्रधीव ।
श्यानेव नो अरिषण्या तनूनां खृगलेव वित्रसः पातमस्मान् ४
वातेवाजुर्या नद्येव रीति रक्षी इव चक्षुषा यातमर्वाक् ।
हस्ताविव तन्वे३ शंभविष्ठा पादेव नो नयतं वस्यो अच्छ ५
ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता स्तनाविव पिप्यतं जीवसे नः ।
नासेव नस्तन्वो रक्षितारा कर्णाविव सुश्रुता भूतमस्मे ६ २२०
हस्तेव शक्तिमभि संदुदी नः क्षामेव नः समजतं रजांसि ।
इमा गिरो अश्विना युष्मयन्तीः क्ष्णोत्रेणेव स्वधितिं सं शिशीतम् ७
एतानि वामश्विना वर्धनानि ब्रह्म स्तोमं गृत्समदासो अक्रन् ।
तानि नरा जुजुषाणोप यातं बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ८

॥२५॥ (ऋ. २।४१।७-९) गायत्री ।

गोमद्वू षु नासत्या ऽश्वावद् यातमश्विना । वर्ती रुद्रा नृपाय्यम् ७
न यत् परो नान्तर आदधर्षद् वृषण्वसू । दुःशंसो मर्त्यो रिपुः ८
ता न आ वोळ्हमश्विना रयिं पिशङ्गसंदृशम् । धिष्ण्या वरिवोविदम् ९ २२५

॥२६॥ (ऋ. ३।५८।१-९)

(२२६—२३४) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहाना ऽन्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः ।
आ द्योतनिं वहति शुभ्रयामो षसः स्तोमो अश्विनावजीगः १
सुयुग् वहन्ति प्रति वामुतेनो ध्वा भवन्ति पितरेव मेधाः ।
जरेथामस्मद् वि पणेर्मनीषां युवोरवश्चकृमा यातमर्वाक् २
सुयुग्भिरश्वैः सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः ।
किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठा ऽऽहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः ३
आ मन्येथामा गतं कच्चिदेवै र्विश्वे जनासो अश्विना हवन्ते ।
इमा हि वां गोऋजीका मधूनि प्र मित्रासो न ददुरुस्रो अग्रे ४ २२९

तिरः पुरू चिदश्विना रजांस्याङ्गूषा वां मघवाना जनेषु ।
एह यातं पथिभिर्देवयानै—र्दस्राविमे वां निधयो मधूनाम् ५ २३०
पुराणमोकः सख्यं शिवं वां युवोर्नरा द्रविणं जह्नाव्याम् ।
पुनः कृण्वानाः सख्या शिवानि मध्वा मदेम सह नू समानाः ६
अश्विना वायुना युवं सुदक्षा नियुद्भिश्च सजोषसा युवाना ।
नासत्या तिरोअह्न्यं जुषाणा सोमं पिबतमस्रिधा सुदानू ७
अश्विना परि वामिषः पुरूची—रीयुर्गीर्भिर्यतमाना अमृध्राः ।
रथो ह वामृतजा अद्रिजूतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ८
अश्विना मधुषुत्तमो युवाकुः सोमस्तं पातमा गतं दुरोणे ।
रथो ह वां भूरि वर्पः करिक्रत् सुतावतो निष्कृतमागमिष्ठः ९ २३४

॥२७॥ (ऋ. ४।१५।९—१०)

(२३५—२४३) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

एष वां देवावश्विना कुमारः साहदेव्यः । दीर्घायुरस्तु सोमकः ९ २३५
तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम् । दीर्घायुषं कृणोतन १०

॥२८॥ (ऋ. ४।४५।१-७) जगती, ७ त्रिष्टुप् ।

एष स्य भानुरुदियर्ति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि ।
पृक्षासो अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो दृतिस्तुरीयो मधुनो वि रप्शते १
उद् वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु ।
अपोर्णुवन्तस्तम आ परीवृतं स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः २
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभि—रुत प्रियं मधुने युञ्जाथां रथम् ।
आ वर्तनिं मधुना जिन्वथस्पथो दृतिं वहेथे मधुमन्तमश्विना ३
हंसासो ये वां मधुमन्तो अस्रिधो हिरण्यपर्णा उहुव उषर्बुधः ।
उदप्रुतो मन्दिनो मन्दिनिस्पृशो मध्वो न मक्षः सवनानि गच्छथः ४ २४०
स्वध्वरासो मधुमन्तो अग्नय उस्रा जरन्ते प्रति वस्तोरश्विना ।
यन्निक्तहस्तस्तरणिर्विचक्षणः सोमं सुषाव मधुमन्तमाद्रिभिः ५
आकेनिपासो अहभिर्दविध्वतः स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः ।
सूरश्चिदश्वान् युयुजान ईयते विश्वाँ अनु स्वधया चेतथस्पथः ६ २४२

प्र वामवोचमश्विना धियंधा रथः स्वश्वो अजरो यो अस्ति ।
येन सद्यः परि रजांसि याथो हविष्मन्तं तरणिं भोजमच्छ ७ २४३

॥२९॥ (ऋ. ४।४३।१—७)

(२४४—२५७) पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । त्रिष्टुप् ।

क उ श्रवत् कतमो यज्ञियानां वन्दारु देवः कतमो जुषाते ।
कस्येमां देवीममृतेषु प्रेष्ठां हृदि श्रेषाम सुष्टुतिं सुहव्याम् १
को मृळाति कतम आगमिष्ठो देवानामु कतमः शंभविष्ठः ।
रथं कमाहुर्द्रवदश्वमाशुं यं सूर्यस्य दुहितावृणीत २ २४५
मक्षू हि ष्मा गच्छथ ईवतो द्यून्निन्द्रो न शक्तिं परितक्म्यायाम् ।
दिव आजाता दिव्या सुपर्णा कया शचीनां भवथः शचिष्ठा ३
का वां भूदुषमातिः कया न आश्विना गमथो हूयमाना ।
को वां महश्चित् त्यजसो अभीके उरुष्यतं माध्वी दस्रा न ऊती ४
उरु वां रथः परि नक्षति द्या मा यत् समुद्रादभि वर्तते वाम् ।
मध्वा माध्वी मधु वां पुषायन् यत् सीं वां पृक्षो भुरजन्त पक्काः ५
सिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्वान् घृणा वयोऽरुषासः परि ग्मन् ।
तदू षु वामजिरं चेति यानं येन पती भवथः सूर्यायाः ६
इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना ।
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् ७ २५०

॥३०॥ (ऋ. ४।४४।१—७)

तं वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुज्रयमश्विना संगतिं गोः ।
यः सूर्यां वहति वन्धुरायुर्गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम् १
युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभिः ।
युवोर्वपुरभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत् ककुहासो रथे वाम् २
को वामद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वार्कैः ।
ऋतस्य वा वनुषे पूर्व्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत् ३
हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम् ।
पिबाथ इन्मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय ४ २५४

आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।
मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः सं यद् ददे नाभिः पूर्व्या वाम् ५ २५५
नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्रा मिमाथामुभयेष्वस्मे ।
नरो यद् वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजमीळ्हासो अग्मन् ६
इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना ।
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् ७ २५७

॥३१॥ (ऋ. ५।७३।१—१०)

(२५८—२७७) पौर आत्रेयः । अनुष्टुप् ।

यदद्य स्थः परावति यदर्वावत्यश्विना । यद् वा पुरू पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम् १
इह त्या पुरुभूतमा पुरू दंसांसि बिभ्रता । वरस्या याम्यध्रिगू हुवे तुविष्टमा भुजे २
ईर्मान्यद् वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः । पर्यन्या नाहुषा युगा महा रजांसि दीयथः ३ २६०
तदु षु वामेना कृतं विश्वा यद् वामनु ष्टवे । नाना जातावरेपसा समस्मे बन्धुमेयथुः ४
आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठद् रघुष्यदं सदा । परि वामरुषा वयौ घृणा वरन्त आतपः ५
युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुम्नेन चेतसा । घर्मं यद् वामरेपसं नासत्यास्ना भुरण्यति ६
उग्रो वां ककुहो ययिः शृण्वे यामेषु संतनिः । यद् वां दंसोभिरश्विना ऽत्रिर्नराववर्तति ७
मध्व ऊषु मधूयुवा रुद्रा सिषक्ति पिप्युषी । यत् समुद्राति पर्षथः पक्वाः पृक्षो भरन्त वाम् ८ २६५
सत्यमिद् वा उ अश्विना युवामाहुर्मयोभुवा । ता यामन् यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा ९
इमा ब्रह्माणि वर्धना ऽश्विभ्यां सन्तु शंतमा । या तक्षाम रथाँइवा ऽवोचाम बृहन्नमः १०

॥३२॥ (ऋ. ५।७४।१—१०) अनुष्टुप्, ८ निचृत् ।

कूष्ठो देवावश्विना ऽद्या दिवो मनावसू । तच्छ्रेवथो वृषण्वसू अत्रिर्वामा विवासति १
कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या । कस्मिन्ना यतथो जने को वां नदीनां सचा २
कं यातः कं ह गच्छथः कमच्छा युञ्जाथे रथम् । कस्य ब्रह्माणि रण्यथो वयं वामुश्मसीष्टये ३ २७०
पौरं चिद्धयुदप्रुतं पौरं पौराय जिन्वथः । यदी गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस्पदे ४
प्र च्यवानाज्जुरुषो वव्रिमत्कं न मुञ्चथः । युवा यदी कृथः पुनरा कामंमृण्वे वध्वः ५
अस्ति हि वामिह स्तोता स्मसि वां सन्दृशि श्रिये । नू श्रुतं म आ गतमवोभिर्वाजिनीवसू ६
को वामद्य पुरूणामा वव्ने मर्त्यानाम् । को विप्रो विप्रवाहसा को यज्ञैर्वाजिनीवसू ७
आ वां रथो रथानां येष्ठो यात्वश्विना । पुरू चिदस्मयुस्तिर आजूर्णो मर्त्येष्वा ८ २७५

शमू षु वां मधूयुवास्माकमस्तु चर्कृतिः। अर्वाचीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम् ९
अश्विना यद्ध कर्हि चिच्छ्रुष्यातमिमं हवम्। वस्वीरू षु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः १० २७७

॥३३॥ (ऋ. ५।७५।१—९)

(२७८-२८६) अवस्युरात्रेयः। पङ्क्तिः।

प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम्।
स्तोता वामश्विनावृषिः स्तोमेन प्रति भूषति माध्वी मम श्रुतं हवम् १
अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना।
दस्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्ना सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम् २
आ नो रत्नानि बिभ्रता वश्विना गच्छतं युवम्।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम् ३ २८०
सुष्टुभौ वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता।
उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वी मम श्रुतं हवम् ४
बोधिन्मनसा रथ्येषिरा हवनश्रुता।
विभिश्यवानमश्विना नि याथो अद्रयाविनं माध्वी मम श्रुतं हवम् ५
आ वां नरा मनोयुजो ऽश्वासः प्रुषितप्सवः।
वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिरश्विना माध्वी मम श्रुतं हवम् ६
अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम्।
तिरश्चिदर्यया परि वर्तिर्यातमदाभ्या माध्वी मम श्रुतं हवम् ७
अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभस्पती।
अवस्युमश्विना युवं गृणन्तमुप भूषथो माध्वी मम श्रुतं हवम् ८
अभूदुषा रुशत् पशुराग्निरधाय्यृत्वियः।
अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्रावमर्त्यो माध्वी मम श्रुतं हवम् ९ २८१

॥३४॥ (ऋ. ५।७६।१—५)

(२८७-२९६) भौमोऽत्रिः। त्रिष्टुप्।

आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद् विप्राणां देवया वाचो अस्थुः।
अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ १
न सैस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठा ऽन्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह।
दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्तिं दाशुषे शंभविष्ठा २ २८८

उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।
दिवा नक्तमवसा शंतमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान ३
इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोकं इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम् ।
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा ऽद्भ्यो यातमिषमूर्जं वहन्ता ४ २९०
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं वहतमोत वीरा—ना विश्वान्यमृता सौभगानि ५

॥३५॥ (ऋ. ५।७७।१-५)

प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं पुरा गृध्रादररुषः पिबातः ।
प्रातर्हि यज्ञमश्विना दधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः १
प्रातर्यजध्वमश्विना हिनोत न सायमस्ति देवया अजुष्टम् ।
उतान्यो अस्मद् यजते वि चावः पूर्वः पूर्वो यजमानो वनीयान् २
हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन्ना रथो वर्तते वाम् ।
मनोजवा अश्विना वातरंहा येनातियाथो दुरितानि विश्वा ३
वां भूयिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष चनिष्ठं पित्वो ररते विभागे ।
स तोकमस्य पीपरच्छमीभि—रनूर्ध्वभासः सदमित् तुतुर्यात् ४
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं वहतमोत वीरा—ना विश्वान्यमृता सौभगानि ५ २९६

॥३६॥ (ऋ. ५।७८।१-९)

(२९७-३०५) सप्तवध्रिरात्रेयः । (५-९ गर्भस्राविण्युपनिषद्) । अनुष्टुप्, १-३ उष्णिक्, ४ त्रिष्टुप् ।

अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम् । हंसाविव पततमा सुताँ उप १
अश्विना हरिणाविव गौराविवानु यवसम् । हंसाविव पततमा सुताँ उप २
अश्विना वाजिनीवसू जुषेथां यज्ञमिष्टये । हंसाविव पततमा सुताँ उप ३
अत्रिर्यद् वामवरोहन्नृबीस—मजोहवीन्नाधमानेव योषा ।
रेभस्य चिज्जरसा नूतनेना ऽऽगच्छतमश्विना शंतमेन ४ ३००
वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्या इव । श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम् ५
भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये । मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः ६ ३०९

यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः । एवा ते गर्भ एजतु निरैतु दशमास्यः ७
यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति । एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा ८
दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि । निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि ९ ३०५

॥३७॥ (ऋ. ६।६२।१-११)

(३०६—३१७) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

स्तुषे नरा दिवो अस्य प्रसन्ता ऽश्विना हुवे जरमाणो अर्कैः ।
या सद्य उस्रा व्युषि ज्मो अन्तान् युयूषतः पर्युरू वरांसि १
ता यज्ञमा शुचिभिश्चक्रमाणा रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः ।
पुरू वरांस्यमिता मिमाना ऽपो धन्वान्यति याथो अज्रान् २
ता ह त्यद् वर्तिर्यदरध्रमुग्रे—त्था धियं ऊहथुः शश्वदश्वैः ।
मनोजवेभिरिषिरैः शयध्यै परि व्यथिर्दाशुषो मर्त्यस्य ३
ता नव्यसो जरमाणस्य मन्मो—र्प भूषतो युयुजानसप्ती ।
शुभं पृक्षमिषमूर्जं वहन्ता होता यक्षत् प्रलो अध्रुग् युवाना ४
ता वल्गू दस्रा पुरुशाकतमा प्रला नव्यसा वचसा विवासे ।
या शंसते स्तुवते शम्भविष्ठा बभूवतुर्गृणते चित्ररातीं ५ ३१०
ता भुज्युं विभिरद्भ्यः समुद्रात् तुग्रस्य सूनुमूहथू रजोभिः ।
अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरुपस्थात् ६
वि जयुषा रथ्या यातमर्द्धं श्रुतं हवं वृषणा वध्रिमत्याः ।
दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गा—मिति च्यवाना सुमतिं भुरण्यू ७
यद् रोदसी प्रदिवो अस्ति भूमा हेळो देवानामुत मर्त्यत्रा ।
तदादित्या वसवो रुद्रियासो रक्षोयुजे तपुरघं दधात ८
य ईं राजानावृतुथा विदधद् रजसो मित्रो वरुणश्चिकेतत् ।
गम्भीराय रक्षसे हेतिमस्य द्रोघाय चिद् वचस आनवाय ९
अन्तरिश्चक्रैस्तनयाय वर्ति—र्द्युमता यातं नृवता रथेन ।
सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य वनुष्यतामपि शीर्षा ववृक्तम् १०
आ परमाभिरुत मध्यमाभि—र्नियुद्भिर्यातमवमाभिरर्वाक् ।
हुवहस्य चिद् गोमतो वि व्रजस्य दुरो वर्तं गृणते चित्ररातीं ११ ३१६

॥३८॥ (ऋ. ६।६३।१—११) त्रिष्टुप्, १ विराट्, ११ एकपदा त्रिष्टुप्।

क्वे॒ त्या व॒ल्गू पु॑रुहू॒ताय॒ दूतो॒ न स्तोमो॑ऽविदु॒न्नम॑स्वान् ।
आ यो अ॒र्वाङ् नास॑त्या व॒वर्त॒ प्रेष्ठा॒ ह्यसं॑था अस्य॒ मन्म॑न् १
अरं॑ मे गन्तं॒ हव॑नायास्मै॒ गृ॒णा॒ना यथा॒ पिबा॑थो॒ अन्धः॑ ।
परि॑ ह॒ त्यद् व॒र्तिर्या॑थो रि॒षो॒ न यत् परो॒ नान्त॑रस्तुतु॒र्यात् २
अक॑ारि वा॒मन्ध॑सो॒ वरी॑म॒न्नस्ता॑रि ब॒र्हिः सु॒प्राय॑णतमम् ।
उ॒त्ता॒नह॑स्तो युव॒युर्व॑न्दा॒ऽऽ वां॑ नक्षन्तो॒ अद्र॑य आ॒जन् ३
ऊ॒र्ध्वो वा॑मग्नि॒रध्व॑रेष्व॒स्था॒त् प्र रा॒तिरे॑ति जु॒र्णिनी॑ घृ॒ताची॑ ।
प्र होता॑ गू॒र्तम॑ना उरा॒णो॒ऽयु॒क्त॒ यो नास॑त्या॒ हवी॑मन् ४ ३२०
आधिं॑ श्रि॒ये दु॑हि॒ता सू॒र्य॑स्य॒ रथं॑ तस्थौ पुरुभु॒जा श॒तोति॑म् ।
प्र मा॒याभि॑र्मायिना भू॒तम॑त्र॒ नरा॑ नृ॒तू जनि॑मन् य॒ज्ञिया॑नाम् ५
युवं श्री॒भिर्दे॑शता॒भि॒राभिः॒ शुभे पु॒ष्टिमू॑हथुः सू॒र्या॑याः ।
प्र वां॑ व॒यो व॑पु॒षेऽनु॑ पप्तन् नक्षद् वा॒णी सु॒ष्टु॒ता धि॒ष्ण्या॑ वाम् ६
आ वां॑ वयोऽश्वा॒सो व॑हि॒ष्ठा॒ अभि॒ प्रयो॑ नासत्या वहन्तु ।
प्र वां॑ र॒थो मनो॑जवा असर्जी॒—॒थः पृ॒क्ष इ॒षि॒यो अनु॑ पू॒र्वीः ७
पु॒रु हि वां॑ पुरुभुजा दे॒ष्णं धे॒नुं न इषं॑ पिन्वतमसक्राम् ।
स्तु॒तश्च॑ वां माध्वी सुष्टु॒तिश्च॒ रसा॑श्च॒ ये वा॒मनु॑ रा॒तिम॒ग्मन् ८
उ॒त मं ऋ॒ज्रे पु॑र॒यस्य॑ र॒घ्वी सु॑मी॒ळ्हे श॒तं पे॑रु॒के च॑ पक्वा ।
शा॒ण्डो दा॑द्धि॒रणि॑नः स्मदि॒ष्टीन् दश॑ व॒शासो॑ अ॒भि॒षाच॑ ऋ॒ष्वान् ९ ३२५
सं वां॑ श॒ता नास॑त्या स॒हस्रा॒ऽश्वानां॑ पुरु॒पन्था॑ गि॒रे दा॑त् ।
भ॒र॒द्वा॒जाय॑ वी॒र॒ नू गि॒रे दा॒—॒द्धुता॑ र॒क्षांसि॑ पुरुदंससा स्युः १०
आ वां॑ सु॒म्ने व॑रि॒मन्त्सू॒रिभिः॑ ष्याम् ११ ३२७

॥३९॥ (ऋ. ७।६७।१—१०) त्रिष्टुप् ।

(३२८-३८३) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

प्रति॑ वां र॒थं नृ॒पती॑ ज॒रध्यै॑ ह॒विष्म॑ता॒ मन॑सा य॒ज्ञिये॑न ।
यो वां॑ दू॒तो न धि॒ष्ण्या॒वजी॑ग॒—॒रच्छा॑ सू॒नुर्न पि॒तरा॑ विवक्मि १
अशो॑च्य॒ग्निः स॒मिधा॑नो अ॒स्मे उ॒षो अ॑दृश्रन् तम॒सश्चि॑दन्ताः ।
अचे॑ति के॒तुरु॒षसः॑ पु॒रस्ता॒—॒च्छ्रेये दि॒वो दु॑हि॒तुर्जाय॑मानः २ ३२९

अभि वां नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिषक्ति नासत्या विवक्वान् ।
पूर्वीभिर्यातं पथ्याभिरर्वाक् स्वर्विदा वसुमता रथेन ३ ३३०
अवोर्वां नूनमश्विना युवाकुर्हुवे यद् वां सुते माध्वी वसूयुः ।
आ वां वहन्तु स्थविरासो अश्वाः पिबाथो अस्मे सुषुता मधूनि ४
प्राचीमु देवाश्विना धियं मे ऽमृध्रां सातये कृतं वसूयुम् ।
विश्वा अविष्टं वाज आ पुरंधीस्ता नः शक्तं शचीपती शचीभिः ५
अविष्टं धीष्वश्विना न आसु प्रजावद् रेतो अह्रयं नो अस्तु ।
आ वां तोके तनये तूतुजानाः सुरत्नासो देववीतिं गमेम ६
एष स्य वां पूर्वगत्वेव सख्ये निधिर्हितो माध्वी रातो अस्मे ।
अहेळता मनसा यातमर्वागश्नन्ता हव्यं मानुषीषु विक्षु ७
एकस्मिन् योगे भुरणा समाने परि वां सप्त स्रवतो रथो गात् ।
न वायन्ति सुभ्वो देवयुक्ता ये वां धूर्षु तरणयो वहन्ति ८ ३३५
असश्चता मघवद्भ्यो हि भूतं ये राया मघदेयं जुनन्ति ।
प्र ये बन्धुं सूनृताभिस्तिरन्ते गव्या पृञ्चन्तो अश्व्या मघानि ९
नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।
धत्तं रत्नानि जरितं च सूरीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः १०

॥४०॥ (ऋ. ७।६८।१--९) विराट्; ८--९ त्रिष्टुप्।

आ शुभ्रा यातमश्विना स्वश्वा गिरो दस्रा जुजुषाणा युवाकोः ।
हव्यानि च प्रतिभृता वीतं नः १
प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुररं गन्तं हविषो वीतये मे ।
तिरो अर्यो हवनानि श्रुतं नः २
प्र वां रथो मनोजवा इयर्ति तिरो रजांस्यश्विना शतोतिः ।
अस्मभ्यं सूर्यावसू इयानः ३ ३४०
अयं ह यद् वां देवया उ अद्रिरूर्ध्वो विवक्ति सोमसुद् युवभ्याम् ।
आ वल्गू विप्रो ववृतीत हव्यैः ४
चित्रं ह यद् वां भोजनं न्वस्ति न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् ।
यो वामोमानं दधते प्रियः सन् ५ ३४५

उत त्यद् वां जुरते अश्विना भू—च्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे ।
अधि यद् वर्पं इतऊति धत्थः ६
उत त्यं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे ।
निरीं पर्षदरावा यो युवाकुः ७
वृकाय चिज्जसमानाय शक्त—मुत श्रुतं शयवे हयमाना ।
यावघ्न्यामपिन्वतमपो न स्तर्यं चिच्छक्त्यश्विना शचीभिः ८ ३४५
एष स्य कारुर्जरते सूक्तै—रग्रे बुधान उषसां सुमन्मा ।
इषा तं वर्धदघ्न्या पयोभि—र्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ९

॥४१॥ (ऋ. ७।६९।१—८) त्रिष्टुप् ।

आ वां रथो रोदसी बद्बधानो हिरण्ययो वृषभिर्यात्वश्वैः ।
घृतवर्तनिः पविभी रुचान इषां वोळ्हा नृपतिर्वाजिनीवान् १
स पप्रथानो अभि पञ्च भूमा त्रिवन्धुरो मनसा यातु युक्तः ।
विशो येन गच्छथो देवयन्तीः कुत्रा चिद् यामश्विना दधाना २
स्वश्वा यशसा यातमर्वाग् दस्रा निधिं मधुमन्तं पिबाथः ।
वि वां रथो वध्वाऽयादमानोऽन्तान् दिवो बाधते वर्तनिभ्याम् ३
युवोः श्रियं परि योषावृणीत सूरो दुहिता परितक्म्यायाम् ।
यद् देवयन्तमवथः शचीभिः परि घ्रंसमोमना वां वयो गात् ४ ३५०
यो ह स्य वां रथिरा वस्त उस्रा रथो युजानः परियाति वर्तिः ।
तेन नः शं योरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन् ५
नरा गौरेव विद्युतं तृषाणा ऽस्माकमद्य सवनोप यातम् ।
पुरुत्रा हि वां मतिभिर्हवन्ते मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ६
युवं भुज्युमर्णसो अस्रिधानैः ।
पतत्रिभिरश्वमैरव्यथिभि—र्दंसनाभिरश्विना पारयन्ता ७
नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।
धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ८

॥४२॥ (ऋ. ७।७०।१—७)

आ विश्ववाराश्विना गतं नः प्र तत् स्थानमवाचि वां पृथिव्याम् ।
अश्वो न वाजी शुनपृष्ठो अस्था—दा यत् सेदथुर्ध्रुवसे न योनिम् १ ३५५

सिषक्ति सा वां सुमतिश्चनिष्ठा ऽतापि घर्मो मनुषो दुरोणे ।
यो वां समुद्रान्त्सरितः पिपर्त्य—तंग्वा चिन्न सुयुजा युजानः २
यानि स्थानान्यश्विना दुधार्थे दिवो यह्वीष्वोषधीषु विक्षु ।
नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्ते—षं जनाय दाशुषे वहन्ता ३
चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु यद् योग्या अश्नवैथे ऋषीणाम् ।
पुरूणि रत्ना दधतौ न्य१स्मे अनु पूर्वाणि चख्यथुर्युगानि ४
शुश्रुवांसा चिदश्विना पुरूण्य—भि ब्रह्माणि चक्षाथे ऋषीणाम् ।
प्रति प्र यातं वरमा जनाया—ऽस्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ५
यो वां यज्ञो नासत्या हविष्मान् कृतब्रह्मा समर्यो३ भवाति ।
उप प्र यातं वरमा वसिष्ठ—मिमा ब्रह्माण्यृच्यन्ते युवभ्याम् ६ ३६०
इयं मनीषा इयमश्विना गी—रिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥४३॥ (ऋ. ७।७१।१—६)

अप स्वसुरुषसो नग्जिहीते रिणक्ति कृष्णीररुषाय पन्थाम् ।
अश्वामघा गोमघा वां हुवेम दिवा नक्तं शरुमस्मद् युयोतम् १
उपायातं दाशुषे मर्त्याय रथेन वाममश्विना वहन्ता ।
युयुतमस्मदनिराममीवां दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः २
आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ सुम्नायवो वृषणो वर्तयन्तु ।
स्यूमगभस्तिमृतयुग्भिरश्वै—राश्विना वसुमन्तं वहेथाम् ३
यो वां रथो नृपती अस्ति वोळ्हा त्रिवन्धुरो वसुमाँ उस्रयामा ।
आ नं एना नासत्योप यात—मभि यद् वां विश्वप्स्न्यो जिगाति ४ ३६५
युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रिं नि जाहुषं शिथिरे धातमन्तः ५
इयं मनीषा इयमश्विना गी—रिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥४४॥ (ऋ. ७।७२।१—५)

आ गोमता नासत्या रथेना—ऽश्वावता पुरुश्चन्द्रेण यातम् ।
अभि वां विश्वा नियुतः सचन्ते स्पार्हया श्रिया तन्वा शुभाना १ ३६८

आ नो देवेभिरुप यातमर्वाक् सजोषसा नासत्या रथेन ।
युवोर्हि नः सख्या पित्र्याणि समानो बन्धुरुत तस्य वित्तम् २
उदु स्तोमासो अश्विनोरबुध्रञ्जामि ब्रह्माण्युषसश्च देवीः ।
आविवासन् रोदसी धिष्ण्येमे अच्छा विप्रो नासत्या विवक्ति ३ ३७०
वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।
ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् बृहदग्नयः समिधा जरन्ते ४
आ पश्चातान्नासत्या पुरस्ता दाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥४५॥ (ऋ. ७।७३।१-५)

अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति स्तोमं देवयन्तो दधानाः ।
पुरुदंसा पुरुतमा पुराजा ऽमर्त्या हवते अश्विना गीः १
न्यु प्रियो मनुषः सादि होता नासत्या यो यजते वन्दते च ।
अश्नीतं मध्वो अश्विना उपाक आ वां वोचे विदथेषु प्रयस्वान् २
अहेम यज्ञं पथामुराणा इमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
श्रुष्टीवेव प्रेषितो वामबोधि प्रति स्तोमैर्जरमाणो वसिष्ठः ३ ३७५
उप त्या वह्नी गमतो विशं नो रक्षोहणा संभृता वीळुपाणी ।
समन्धांस्यग्मत मत्सराणि मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन ४
आ पश्चातान्नासत्या पुरस्ता दाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥४६॥ (ऋ. ७।७४।१—६) प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती)

इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना ।
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः १
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते ।
अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु २
आ यातमुप भूषतं मध्वः पिबतमश्विना ।
दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम् ३
अश्वासो ये वामुप दाशुषो गृहं युवां दीयन्ति बिभ्रतः ।
मक्षूयुभिर्नरा हयेभिरश्विना ऽऽ देवा यातमस्मयू ४ ३८१

अधा ह यन्तो अश्विना पृक्षः सचन्त सूरयः ।
ता यँसतो मघवद्भ्यो ध्रुवं यश इछर्दिरस्मभ्यं नासत्या ५
प्र ये ययुरवृकासो रथा इव नृपातारो जनानाम् ।
उत स्वेन शवसा शूशुवुर्नरः उत क्षियन्ति सुक्षितिम् ६ ३८३

॥४७॥ (ऋ. ८।५।१–३७)

(३८४—४२०) ब्रह्मातिथिः काण्वः । (३७ पूर्वार्धः)। गायत्री; ३७ बृहती ।

दूरादिहेव यत् सत्यरुणप्सुरशिश्वितत् । वि भानुं विश्वधातनत् १
नृवद् दस्रा मनोयुजा रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् २ ३८५
युवाभ्यां वाजिनीवसू प्रति स्तोमा अदक्षत । वाचं दूतो यथोहिषे ३
पुरुप्रिया ण ऊतये पुरुमन्द्रा पुरूवसू । स्तुषे कण्वासो अश्विना ४
महिष्ठा वाजसातमे षयन्ता शुभस्पती । गन्तारा दाशुषो गृहम् ५
ता सुदेवाय दाशुषे सुमेधामविंतारिणीम् । घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ६
आ नः स्तोममुप द्रवत् तूयं शयेनेभिराशुभिः । यातमश्वेभिरश्विना ७ ३९०
येभिस्तिस्रः परावतो दिवो विश्वानि रोचना । त्रीँरक्तून् परिदीयथः ८
उत नो गोमतीरिषः उत सातीरहर्विदा । वि पथः सातये सितम् ९
आ नो गोमन्तमश्विना सुवीरं सुरथं रयिम् । वोळ्हमश्वावतीरिषः १०
वावृधाना शुभस्पती दस्रा हिरण्यवर्तनी । पिबतं सोम्यं मधु ११
अस्मभ्यं वाजिनीवसू मघवद्भ्यश्च सप्रथः । छर्दिर्यन्तमदाभ्यम् १२ ३९५
नि षु ब्रह्म जनानां याविष्टं तूयमा गतम् । मो ष्वन्याँ उपारतम् १३
अस्य पिबतमश्विना युवं मदस्य चारुणः । मध्वो रातस्य धिष्ण्या १४
अस्मे आ वहतं रयिं शतवन्तं सहस्रिणम् । पुरुक्षुं विश्वधायसम् १५
पुरुत्रा चिद्धि वां नरा विह्वयन्ते मनीषिणः । वाघद्भिरश्विना गतम् १६
जनासो वृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो अरंकृतः । युवां हवन्ते अश्विना १७ ४००
अस्माकमद्य वामयं स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । युवाभ्यां भूत्वश्विना १८
यो ह वां मधुनो दति राहितो रथचर्षणे । ततः पिबतमश्विना १९
तेन नो वाजिनीवसू पश्वे तोकाय शं गवे । वहतं पीवरीरिषः २०
उत नो दिव्या इषः उत सिन्धूरहर्विदा । अप द्वारेव वर्षथः २१ ४०४

कदा वां तौग्र्यो विधत् समुद्रे जहितो नरा । यद् वां रथो विभिष्पतात् २२ ४०५
युवं कण्वाय नासत्या ऽर्पिरिम्णाय हर्म्ये । शश्वदूतीर्दशस्यथः २३
ताभिरा यातमूतिभि र्नव्यसीभिः सुशस्तिभिः । यद् वां वृषण्वसू हुवे २४
यथा चित् कण्वमावतं प्रियमेधमुपस्तुतम् । अत्रिं शिञ्जारमश्विना २५
यथोत कृत्व्ये धने ऽशुं गोष्वगस्त्यम् । यथा वाजेषु सोभरिम् २६
एतावद् वां वृषण्वसू अतो वा भूयो अश्विना । गृणन्तः सुम्नमीमहे २७ ४१०
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना । आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् २८
हिरण्ययी वां रभि रीषा अक्षो हिरण्ययः । उभा चक्रा हिरण्यया २९
तेन नो वाजिनीवसू परावतश्चिदा गतम् । उपेमां सुष्टुतिं मम ३०
आ वहेथे पराकात् पूर्वीरश्नन्तावश्विना । इषो दासीरमर्त्या ३१
आ नो द्युम्नैरा श्वभि रा राया यातमश्विना । पुरुश्चन्द्रा नासत्या ३२ ४१५
एह वां प्रुषितप्सवो वयो वहन्तु पर्णिनः । अच्छा स्वध्वरं जनम् ३३
रथं वामनुगायसं य इषा वर्तते सह । न चक्रमभि बाधते ३४
हिरण्ययेन रथेन द्रवत्पाणिभिरश्वैः । धीजवना नासत्या ३५
युवं मृगं जागृवांसं स्वदथो वा वृषण्वसू । ता नः पृङ्क्तमिषा रयिम् ३६
ता मे अश्विना सनीनां विद्यातं नवानाम् । (पूर्वार्धः) ३७ ४२०

॥४८॥ (ऋ. ८।८।१-२३)

(४२१—४४३) सध्वंसः काण्वः । अनुष्टुप् ।

आ नो विश्वाभिरूतिभि रश्विना गच्छतं युवम् ।
दस्रा हिरण्यवर्तनी पिबतं सोम्यं मधु १
आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा ।
भुजी हिरण्यपेशसा कवी गम्भीरचेतसा २
आ यातं नहुषस्पर्या ऽन्तरिक्षात् सुवृक्तिभिः ।
पिबाथो अश्विना मधु कण्वानां सवने सुतम् ३
आ नो यातं दिवस्पर्या ऽन्तरिक्षादधप्रिया ।
पुत्रः कण्वस्य वामिह सुषाव सोम्यं मधु ४
आ नो यातमुपश्रु त्यश्विना सोमपीतये ।
स्वाहा स्तोमस्य वर्धना प्र कवी धीतिभिर्नरा ५ ४२५

यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो जुहूरेऽवसे नरा ।
आ यातमश्विना गत मुपेमां सुष्टुतिं मम ६
दिवश्चिद् रोचनाद ध्या नो गन्तं स्वर्विदा ।
धीभिर्वत्सप्रचेतसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता ७
किमन्ये पर्यासते ऽस्मत् स्तोमेभिरश्विना ।
पुत्रः कण्वस्य वामृषि गींभिर्वत्सो अवीवृधत् ८
आ वां विप्र इहावसे ऽह्वत् स्तोमेभिरश्विना ।
अरिप्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं मयोभुवा ९
आ यद् वां योषणा रथ मातिष्ठद् वाजिनीवसू ।
विश्वान्यश्विना युवं प्र धीतान्यगच्छतम् १० ४३०
अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।
वत्सो वां मधुमद् वचो ऽशंसीत् काव्यः कविः ११
पुरुमन्द्रा पुरूवसू मनोतरा रयीणाम् ।
स्तोमं मे अश्विनाविम मभि वह्नी अनूषताम् १२
आ नो विश्वान्यश्विना धत्तं राधांस्यह्रया ।
कृतं न ऋत्वियावतो मा नो रीरधतं निदे १३
यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अध्यम्बरे ।
अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना १४
यो वां नासत्यावृषि गींभिर्वत्सो अवीवृधत् ।
तस्मै सहस्रनिर्णिज मिषं धत्तं घृतश्चुतम् १५ ४३५
प्रास्मा ऊर्जं घृतश्चुत मश्विना यच्छतं युवम् ।
यो वां सुम्नाय तुष्टवद् वसूयाद् दानुनस्पती १६
आ नो गन्तं रिशादसे मं स्तोमं पुरुभुजा ।
कृतं नः सुश्रियो नरे मा दातमभिष्टये १७
आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत ।
राजन्तावध्वराणा मश्विना यामहूतिषु १८
आ नो गन्तं मयोभुवा ऽश्विना शंभुवा युवम् ।

याभिः कण्वं मेधातिथिं याभिर्वशं दशव्रजम् ।
याभिर्गोशर्यमावतं ताभिर्नोऽवतं नरा २० ४४०
याभिर्नरा त्रसदस्यु मावतं कृत्व्ये धने ।
ताभिः ष्वस्माँ अश्विना प्रावतं वाजसातये २१
प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो गिरो वर्धन्त्वश्विना ।
पुरुत्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं पुरुस्पृहा २२
त्रीणि पदान्यश्विनो राविः सान्ति गुहा परः ।
कवी ऋतस्य पत्मभि रर्वाग् जीवेभ्यस्परि २३ ४४३

॥४९॥ (ऋ. ८।९।१--२१)

(४४४—४६४) शशकर्णः काण्वः । अनुष्टुप्; १,४,६,१४-१५, बृहती; २-३,२०-२१ गायत्री; ५ ककुप्; १० त्रिष्टुप्; ११ विराट्; १२ जगती ।

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे ।
प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दि र्युयुतं या अरातयः १
यदन्तरिक्षे यद् दिवि यत् पञ्च मानुषाँ अनु । नृम्णं तद् धत्तमश्विना २ ४४५
ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः । एवेत् काण्वस्य बोधतम् ३
अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि षिच्यते ।
अयं सोमो मधुमान् वाजिनीवसु येन वृत्रं चिकेतथः ४
यदप्सु यद् वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम् ।
तेन माविष्टमश्विना ५
यन्नासत्या भुरण्यथो यद् वा देव भिषज्यथः ।
अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः ६
आ नूनमश्विनोर्ऋषिः स्तोमं चिकेत वामया ।
आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि ७ ४५०
आ नूनं रघुवर्तनिं रथं तिष्ठाथो अश्विना ।
आ वां स्तोमा इमे मम नभो न चुच्यवीरत ८
यदद्य वां नासत्यो कथैरा चुच्युवीमहि ।
यद् वा वाणीभिरश्विने वत् काण्वस्य बोधतम् ९ ४५२

यद् वां कक्षीवाँ उत यद् व्यश्व ऋषिर्यद् वां दीर्घतमा जुहाव ।
पृथी यद् वां वैन्यः सादनेष्वे—वेदतो अश्विना चेतयेथाम् १०
यातं छर्दिष्पा उत नः परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा ।
वर्तिस्तोकाय तनयाय यातम् ११
यादिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना यद् वा वायुना भवथः समोकसा ।
यदादित्येभिर्ऋभुभिः सजोषसा यद् वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः १२ ४५५
यदद्याश्विनावहं हुवेय वाजसातये ।
यत् पृत्सु तुर्वणे सह—स्तच्छ्रेष्ठमश्विनोरवः १३
आ नूनं यातमश्विने—मा हव्यानि वां हिता ।
इमे सोमासो अधि तुर्वशे यदा—विमे कण्वेषु वामथ १४
यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।
तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम् १५
अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।
व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः १६
प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि ।
प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत् १७ ४६०
यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।
आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम् १८
यदापीतासो अंशवो गावो न दुह ऊधभिः ।
यद् वा वाणीरनूषत प्र देवयन्तो अश्विना १९
प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृपाय्याय शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचेतसा २०
यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः । यद् वा सुम्नेभिरुक्थ्या २१ ४६४

॥५०॥ (ऋ. ८।१०।१--६)

(४६५-४७०) प्रगाथो (घोरः) काण्वः । १ बृहती, २ मध्येज्योतिः, ३ अनुष्टुप्, (पिंगलमतेन-शंकुमती) ४ आस्तारपङ्क्तिः, ५--६ प्रगाथः = (५ बृहती+ ६ सतोबृहती)

यत् स्थो दीर्घप्रसद्मनि यद् वादो रोचने दिवः ।
यद् वा समुद्रे अध्याकृते गृहे ऽतु आ यातमश्विना १ ४६५

यद् वां यज्ञं मनवे संमिमिक्षथु रेवेत् काण्वस्य बोधतम् ।
बृहस्पतिं विश्वान् देवाँ अहं हुव इन्द्राविष्णू अश्विनावाशुहेषसा २
त्या न्वश्विना हुवे सुदंससा गृभे कृता ।
ययोरस्ति प्र णः सख्यं देवेष्वध्याप्यम् ३
ययोरधि प्र यज्ञा असुरे सन्ति सूरयः ।
ता यज्ञस्याध्वरस्य प्रचेतसा स्वधाभिर्या पिबतः सोम्यं मधु ४
यदद्याश्विनावपाग् यत् प्राक् स्थो वाजिनीवसू ।
यद् द्रुह्यन्वि तुर्वशे यदौ हुवे वामथ मा गतम् ५
यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजा यद् वेमे रोदसी अनु ।
यद् वां स्वधाभिरधितिष्ठथो रथं मत आ यातमश्विना ६ ४७०

॥५१॥ (ऋ. ८।१८।८)

(४७१) इरिम्बिठिः काण्वः । उष्णिक् ।

उत त्या दैव्या भिषजा शं नः करतो अश्विना । युयुयातामितो रपो अप स्रिधः ८ ४७१

॥५२॥ (ऋ. ८।२२।१—१८)

(४७२-४८९) सोभरिः काण्वः । १—६ प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती),
७ बृहती, ८ अनुष्टुप्, ११ ककुप्, १२ मध्येज्योतिः, प्रगाथः =
(९,१३,१५,१७, ककुप्; १०,१४,१६,१८ सतोबृहती)

ओ त्यमह्व आ रथं मघा दंसिष्ठमूतये ।
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी आ सूर्यायै तस्थथुः १
पूर्वापुषं सुहवं पुरुस्पृहं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ।
सचनावन्तं सुमतिभिः सोभरे विद्वेषसमनेहसम् २
इह त्या पुरुभूतमा देवा नमोभिरश्विना ।
अर्वाचीना स्ववसे करामहे गन्तारा दाशुषो गृहम् ३
युवो रथस्य परि चक्रमीयत ईर्मान्यद् वामिषण्यति ।
अस्माँ अच्छा सुमतिर्वां शुभस्पती आ धेनुरिव धावतु ४
रथो यो वां त्रिवन्धुरो हिरण्याभीशुरश्विना ।
परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुत स्तेन नासत्या गतम् ५ ४७६

दशस्यन्ता मनवे पूर्व्यं दिवि यवं वृकेण कर्षथः ।
ता वामद्य सुमतिभिः शुभस्पती अश्विना प्र स्तुवीमहि ६
उप नो वाजिनीवसू यातमृतस्य पथिभिः ।
येभिस्तृक्षिं वृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिन्वथः ७
अयं वामद्रिभिः सुतः सोमो नरा वृषण्वसू ।
आ यातं सोमपीतये पिबतं दाशुषो गृहे ८
आ हि रुहतमश्विना रथे कोशे हिरण्यये वृषण्वसू । युञ्जाथां पीवरीरिषः ९ ४८०
याभिः पक्थमवथो याभिरध्रिगुं याभिर्बभ्रुं विजोषसम् ।
ताभिर्नो मक्षू तूयमश्विना गतं भिषज्यतं यदातुरम् १०
यदध्रिगावो अध्रिगू इदा चिदह्नो अश्विना हवामहे । वयं गीर्भिर्विपन्यवः ११
ताभिरा यातं वृषणोप मे हवं विश्वप्सुं विश्ववार्यम् ।
इषा मंहिष्ठा पुरुभूतमा नरा याभिः क्रिविं वावृधुस्ताभिरा गतम् १२
ताविदा चिदहानां तावश्विना वन्दमान उप ब्रुवे । ता ऊ नमोभिरीमहे १३
ताविद् दोषा ता उषसि शुभस्पती ता यामन् रुद्रवर्तनी ।
मा नो मर्ताय रिपवे वाजिनीवसू परो रुद्रावति ख्यतम् १४ ४८५
आ सुग्म्याय सुग्म्यं भ्राता रथेनाश्विना वा सक्षणी । हुवे पितेव सोभरी १५
मनोजवसा वृषणा मदच्युता मक्षुंगमाभिरूतिभिः ।
आरात्ताच्चिद् भूतमस्मे अवसे पूर्वीभिः पुरुभोजसा १६
आ नो अश्वावदश्विना वर्तिर्यासिष्टं मधुपातमा नरा । गोमद् दस्रा हिरण्यवत् १७
सुप्रावर्गं सुवीर्यं सुष्ठु वार्य—मनाधृष्टं रक्षस्विना ।
अस्मिन्ना वामायाने वाजिनीवसू विश्वा वामानि धीमहि १८ ४८९

॥५३॥ (ऋ. ८।२६।१—१९)

(४९०-५०८) विश्वमना वैयश्वः, व्यश्वो वाङ्गिरसः । उष्णिक्: १६—१९, गायत्री ।

युवोरु षू रथं हुवे सधस्तुत्याय सूरिषु । अतूर्तदक्षा वृषणा वृषण्वसू १ ४९०
युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या । अवोभिर्याथो वृषणा वृषण्वसू २
ता वामद्य हवामहे हव्येभिर्वाजिनीवसू । पूर्वीरिष इषयन्तावति क्षपः ३
आ वां वाहिष्ठो अश्विना रथो यातु श्रुतो नरा । उप स्तोमान् तुरस्य दर्शथः श्रिये ४ ४९३

जुह्वाणा चिदश्विना ऽऽ मन्येथां वृषण्वसू । युवं हि रुद्रा पर्षथो अति द्विषः५
दस्रा हि विश्वमानुषङ् मक्षूभिः परिदीयथः । धियंजिन्वा मधुवर्णा शुभस्पती६ ४९५
उप नो यातमश्विना राया विश्वपुषा सह । मघवाना सुवीरावनपच्युता ७
आ मे अस्य प्रतीव्य१—मिन्द्रनासत्या गतम् । देवा देवेभिरद्य सचनस्तमा ८
वयं हि वां हवामह उक्षण्यन्तो व्यश्ववत् । सुमतिभिरुप विप्राविहा गतम् ९
अश्विना स्तृषे स्तुहि कुवित् ते श्रवतो हवम् । नेदीयसः कूळयातः पणीँरुत १०
वैयश्वस्य श्रुतं नरो—तो मे अस्य वेदथः । सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा११ ५००
युवादत्तस्य धिष्ण्या युवानीतस्य सूरिभिः । अहरहर्वृषणा मह्यं शिक्षतम् १२
यो वां यज्ञेभिरावृतो ऽधिवस्त्रा वधूरिव । सपर्यन्ता शुभे चक्राते अश्विना१३
यो वामुरुव्यचस्तमं चिकेतति नृपाय्यम् । वर्तिरश्विना परि यातमस्मयू१४
अस्मभ्यं सु वृषण्वसू यातं वर्तिर्नृपाय्यम् । विषुद्रुहेव यज्ञमूहथुर्गिरा १५
वाहिष्ठो वां हवानां स्तोमो दूतो हुवन्नरा । युवाभ्यां भूत्वश्विना १६ ५०५
यदुदो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे । श्रुतमिन्मे अमर्त्या १७
उत स्या श्वेतयावरी वाहिष्ठा वां नदीनाम् । सिन्धुहिरण्यवर्तनिः १८
स्मदेतया सुकीर्त्या ऽश्विना श्वेतया धिया । वहेथे शुभ्रयावाना १९ ५०८

॥१४॥ (ऋ. ८।३५।१—२४)

(५०९—५३२) श्यावाश्व आत्रेयः। उपरिष्टाज्ज्योतिः(त्रिष्टुप्), २२,२४ पङ्क्तिः, २३ महाबृहती।

अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुना ऽऽदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना १
विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन वाजिना दिवा पृथिव्याद्रिभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना २ ५१०
विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैरिहा—ऽङ्गिर्मरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ३
जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चे—षं नो वोळ्हमश्विना ४
स्तोमं जुषेथां युवशेव कन्यनां विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चे—षं नो वोळ्हमश्विना ५ ५१३

गिरो जुषेथामध्वरं जुषेथां विश्वेह देवौ सवनावं गच्छतम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चे—षं नो वोळ्हमश्विना ६
हारिद्रवेवं पतथो वनेदुप सोमं सुतं मंहिषेवावं गच्छथः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ७ ५१५
हंसाविव पतथो अध्वगाविव सोमं सुतं मंहिषेवावं गच्छथः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ८
श्येनाविव पतथो हव्यदातये सोमं सुतं मंहिषेवावं गच्छथः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ९
पिबतं च तृप्णुतं चा चं गच्छतं प्रजां चं धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चो—जं नो धत्तमश्विना १०
जयतं च प्र स्तुतं च प्र चावतं प्रजां चं धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चो—जं नो धत्तमश्विना ११
हतं च शत्रून् यतंतं च मित्रिणः प्रजां चं धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चो—जं नो धत्तमश्विना १२ ५२०
मित्रावरुणवन्ता उत धर्मवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽऽदित्यैर्यातमश्विना १३
अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णुवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽऽदित्यैर्यातमश्विना १४
ऋभुमन्ता वृषणा वाजवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽऽदित्यैर्यातमश्विना १५
ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं धियो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना १६
क्षत्रं जिन्वतमुत जिन्वतं नृन् हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना १७ ५२५
धेनूर्जिन्वतमुत जिन्वतं विशो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना १८
अत्रेरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुतिं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽश्विना तिरोअह्न्यम् १९ ५२७

सगौ इव सृजतं सुष्टुतीरुप श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चा ऽश्विना तिरोअह्न्यम् २०
रश्मीरिव यच्छतमध्वराँ उप श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चा ऽश्विना तिरोअह्न्यम् २१
अर्वाग् रथं नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ।
आ यातमश्विना गत मवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे २२ ५३०
नमोवाके प्रस्थिते अध्वरे नरा विवक्षणस्य पीतये ।
आ यातमश्विना गत मवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे २३
स्वाहाकृतस्य तृम्पतं सुतस्य देवावन्धसः ।
आ यातमश्विना गत मवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे २४ ५३१

॥५५॥ (ऋ. ८।४२।४—६)

(५३३—५३५) नाभाकः काण्वः, अर्चनाना आत्रेयो वा । अनुष्टुप् ।

आ वां ग्रावाणो अश्विना धीभिर्विप्रा अचुच्यवुः ।
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे ४
यथा वामत्रिरश्विना गीर्भिर्विप्रो अजोहवीत् ।
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे ५
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे ६ ५३५

॥५६॥ (ऋ. ८।५७। [९ वाल०] १-४)

(५३६—५३०) मेध्यः काण्वः । त्रिष्टुप् ।

युवं देवा क्रतुना पूर्व्येण युक्ता रथेन तविषं यजत्रा ।
आगच्छतं नासत्या शचीभिरिदं तृतीयं सवनं पिबाथः १
युवां देवास्त्रय एकादशासः सत्याः सत्यस्य दद्दशे पुरस्तात् ।
अस्माकं यज्ञं सवनं जुषाणा पातं सोममश्विना दीद्यग्नी २
पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः ।
सहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वाँ इत् ताँ उप याता पिबध्यै ३
अयं वां भागो निहितो यजत्रे मा गिरो नासत्योप यातम् ।
पिबतं सोमं मधुमन्तमग्ने प्र दाश्वांसमवतं शचीभिः ४ ५३९

॥५७॥ (ऋ. ८।७३।१-१८)

(५४०—५५७) गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा । गायत्री ।

उदीराथामृतायते युञ्जाथामश्विना रथम् । अन्ति षद्भूतु वामवः	१	५४०
निमिषश्चिज्जवीयसा रथेना यातमश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः	२	
उप स्तृणीतमन्त्रये हिमेन घर्ममश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः	३	
कुह स्थः कुह जग्मथुः कुह श्येनेव पेतथुः । अन्ति षद्भूतु वामवः	४	
यदद्य कर्हि कर्हि चिच्छुश्रूयातमिमं हवम् । अन्ति षद्भूतु वामवः	५	
अश्विना यामहूतमा नेदिष्ठं याम्याप्यम् । अन्ति षद्भूतु वामवः	६	५४५
अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं युवमश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः	७	
वरेथे अग्निमातपो वदते वल्गवत्रये । अन्ति षद्भूतु वामवः	८	
प्र सप्तवध्रिराशसा धारामग्नेरशायत । अन्ति षद्भूतु वामवः	९	
इहा गतं वृषण्वसू शृणुतं म इमं हवम् । अन्ति षद्भूतु वामवः	१०	
किमिदं वां पुराणवज्जरतोरिव शस्यते । अन्ति षद्भूतु वामवः	११	५५०
समानं वां सजात्यं समानो बन्धुरश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः	१२	
यो वां रजांस्यश्विना रथो वियाति रोदसी । अन्ति षद्भूतु वामवः	१३	
आ नो गव्येभिरश्वयैः सहस्रैरुप गच्छतम् । अन्ति षद्भूतु वामवः	१४	
मा नो गव्येभिरश्वयैः सहस्रेभिरति ख्यतम् । अन्ति षद्भूतु वामवः	१५	
अरुणप्सुरुषा अभूदकर्ज्योतिर्ऋतावरी । अन्ति षद्भूतु वामवः	१६	५५५
अश्विना सु विचाकशद् वृक्षं परशुमाँ इव । अन्ति षद्भूतु वामवः	१७	
पुरं न धृष्णवा रुज कृष्णया बाधितो विशा । अन्ति षद्भूतु वामवः	१८	५५७

॥५८॥ (ऋ. ८।८५।१-९)

(५५८—५६६) कृष्ण आङ्गिरसः । गायत्री ।

आ मे हवं नासत्याश्विना गच्छतं युवम् । मध्वः सोमस्य पीतये	१	
इमं मे स्तोममश्विने मं मे शृणुतं हवम् । मध्वः सोमस्य पीतये	२	
अयं वां कृष्णो अश्विना हवते वाजिनीवसू । मध्वः सोमस्य पीतये	३	५६०
शृणुतं जरितुर्हवं कृष्णस्य स्तुवतो नरा । मध्वः सोमस्य पीतये	४	
छर्दिर्यन्तमदाभ्यं विप्राय स्तुवते नरा । मध्वः सोमस्य पीतये	५	
गच्छतं दाशुषो गृहमित्था स्तुवतो अश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये	६	५६३

युञ्जाथां रासभं रथे वीळ्वङ्गे वृषण्वसू । मध्वः सोमस्य पीतये ७
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना यातमश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ८
नू मे गिरो नासत्या ऽश्विना प्रावतं युवम् । मध्वः सोमस्य पीतये ९ ५६६

॥५९॥ (ऋ. ८।८६।१—५)

(५६७—५७१) कृष्ण आङ्गिरसः, विश्वको वा कार्ष्णिः । जगती ।

उभा हि दस्रा भिषजा मयोभुवोभा दक्षस्य वचसो बभूवथुः ।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् १
कथा नूनं वां विमना उप स्तव द्युवं धियं ददथुर्वस्यइष्टये ।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् २
युवं हि ष्मा पुरुभुजेममेधतुं विष्णाप्वे ददथुर्वस्यइष्टये ।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ३
उत त्यं वीरं धनसामृजीषिणं दूरे चित् सन्तमवसे हवामहे ।
यस्य स्वादिष्ठा सुमतिः पितुर्यथा मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ४
ऋतेन देवः सविता शमायत ऋतस्य शृङ्गमुर्विया वि पप्रथे ।
ऋतं सासाह महि चित् पृतन्यतो मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ५ ५६७

॥६०॥ (ऋ. ८।८७।१—६)

(५७२—५७७) कृष्ण आङ्गिरसो वासिष्ठो वा द्युम्नीकः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा ।
प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती)

द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना क्रिविर्न सेक आ गतम् ।
मध्वः सुतस्य स दिवि प्रियो नरा पातं गौराविवेरिणे १
पिबतं घर्मं मधुमन्तमश्विना ऽऽ बर्हिः सीदतं नरा ।
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ नि पातं वेदसा वयः २
आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत ।
ता वर्तिर्यातमुप वृक्तबर्हिषो जुष्टं यज्ञं दिविष्टिषु ३
पिबतं सोमं मधुमन्तमश्विना ऽऽ बर्हिः सीदतं सुमत् ।
ता वावृधाना उप सुष्टुतिं दिवो गन्तं गौराविवेरिणम् ४
आ नूनं यातमश्विना ऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः ।
दस्रा हिरण्यवर्तनी शुभस्पती पातं सोममृतावृधा ५ ५७६

वयं हि वां हवामहे विपन्यवो विप्रासो वाजसातये ।
ता वल्गू दस्रा पुरुदंससा धिया ऽश्विना श्रुष्टया गतम् ६ ५७७

॥६१॥ (ऋ. ८।१०१।७-८)

(५७८—५७९) जमदग्निर्भार्गवः। प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती)।

आ मे वचांस्युद्यता द्युमत्तमानि कर्त्वा ।
उभा यातं नासत्या सजोषसा प्रति हव्यानि वीतये ७
रातिं यद् वामरक्षसं हवामहे युवाभ्यां वाजिनीवसू ।
प्राचीं होत्रां प्रतिरन्ताविंतं नरा गृणाना जमदग्निना ८ ५७९

॥६२॥ (ऋ. १०।२४।४-६)

(५८०--५८२) ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुक्रो वसुकृद्वा। अनुष्टुप्।

युवं शंक्रा मायाविना समीची निरमन्थतम् ।
विमदेन यदीळिता नासत्या निरमन्थतम् ४
विश्वे देवा अकृपन्त समीच्योर्निष्पतन्त्योः ।
नासत्यावब्रुवन् देवाः पुनरा वहतादितिं ५
मधुमन्मे परायणं मधुमत् पुनरायनम् ।
ता नो देवा देवतया युवं मधुमतस्कृतम् ६ ५८१

॥६३॥ (ऋ. १०।३९।१-१४)

(५८३--६१०) काक्षीवती घोषा। जगती, १४ त्रिष्टुप्।

यो वां परिज्मा सुवृदश्विना रथो दोषामुषासो हव्यो हविष्मता ।
शश्वत्तमासस्तमु वामिदं वयं पितुर्न नाम सुहवं हवामहे १
चोदयतं सूनृताः पिन्वतं धिय उत् पुरंधीरीरयतं तदुश्मसि ।
यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमं न चारुं मघवत्सु नस्कृतम् २
अमाजुरश्विद् भवथो युवं भगो ऽनाशोश्विदवितारापमस्य चित् ।
अन्धस्य चिन्नासत्या कृशस्य चिद् युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्य चित् ३ ५८५
युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।
निष्टौग्र्यमूहथुरद्भ्यस्परि विश्वेत् ता वां सवनेषु प्रवाच्या ४
पुराणा वां वीर्या३ प्र ब्रवा जने ऽथो हासथुर्भिषजा मयोभुवा ।
ता वां नु नव्यावसे करामहे ऽयं नासत्या श्रदुरिर्यथा दधत् ५ ५८७

इयं वामह्वे शृणुतं मे अश्विना पुत्रायेव पितरा मह्यं शिक्षतम् ।
अनापिरज्ञा असजात्यामतिः पुरा तस्या अभिशस्तेरवं स्पृतम् ६
युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् ।
युवं हवं वध्रिमत्या अगच्छतं युवं सुषुतिं चक्रथुः पुरंधये ७
युवं विप्रस्य जरणामुपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः ।
युवं वन्दनमृश्यदादुदूपथुर्युवं सद्यो विश्पलामेतवे कृथः ८ ५९०
युवं ह रेभं वृषणा गुहा हितमुदैरयतं ममृवांसमश्विना ।
युवमूबीसमुत तप्तमत्रय ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्तवध्रये ९
युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् ।
चर्कृत्यं ददथुर्द्रावयत्सखं भगं न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम् १०
न तं राजानावदिते कुतश्चन नांहो अश्नोति दुरितं नकिर्भयम् ।
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी पुरोरथं कृणुथः पत्न्या सह ११
आ तेन यातं मनसो जवीयसा रथं यं वामृभवश्चक्रुरश्विना ।
यस्य योगे दुहिता जायते दिव उभे अहनी सुदिने विवस्वतः १२
ता वर्तिर्यातं जयुषा वि पर्वत मर्पिन्वतं शयवे धेनुमश्विना ।
वृकस्य चिद् वर्तिकामन्तरास्याद् युवं शचीभिर्मुषिताममुञ्चतम् १३ ५९५
एतं वां स्तोममश्विनावकर्मा तक्षाम भृगवो न रथम् ।
न्यमृक्षाम योषणां न मर्ये नित्यं न सूनुं तनयं दधानाः १४

॥६४॥ (ऋ. १०।४०।१--१४)

रथं यान्तं कुह को ह वां नरा प्रति द्युमन्तं सुवितायं भूषति ।
प्रातर्यावाणं विभ्वं विशेविशे वस्तोर्वस्तोर्वहमानं धिया शमि १
कुह स्विद् दोषा कुह वस्तोरश्विना कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः ।
को वां शयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ २
प्रातर्जरेथे जरणेव कार्पया वस्तोर्वस्तोर्यजता गच्छथो गृहम् ।
कस्य ध्वस्रा भवथः कस्य वा नरा राजपुत्रेव सवनावं गच्छथः ३
युवां मृगेव वारणा मृगण्यवो दोषा वस्तोर्हविषा नि ह्वयामहे ।
युवं होत्रामृतुथा जुह्वते नरे षं जनाय वहथः शुभस्पती ४ ६००

युवां ह घोषा पर्यश्विना यती राज्ञ ऊचे दुहिता पृच्छे वां नरा।
भूतं मे अह्व उत भूतमक्तवे ऽश्वावते रथिने शक्तमर्वते ५
युवं कवी ष्ठः पर्यश्विना रथं विशो न कुत्सो जरितुर्नशायथः।
युवोर्ह मक्षा पर्यश्विना मध्वा सा भरत निष्कृतं न योषणा ६
युवं ह भुज्युं युवमश्विना वशं युवं शिञ्जारमुशनामुपारथुः।
युवो ररावा परि सख्यमासते युवोरहमवसा सुम्नमा चके ७
युवं ह कृशं युवमश्विना शयुं युवं विधन्तं विधवामुरुष्यथः।
युवं सनिभ्यः स्तनयन्तमश्विना ऽपं व्रजमूर्णुथः सप्तास्यम् ८
जनिष्ट योषा पतयत् कनीनको वि चारुहन् वीरुधो दंसना अनु।
आस्मै रीयन्ते निवनेव सिन्धवो ऽस्मा अह्वे भवति तत् पतित्वनम् ९ ६०५
जीवं रुदन्ति वि मयन्ते अध्वरे दीर्घामनु प्रसितिं दीधियुर्नरः।
धामं पितृभ्यो य इदं समेरिरे मयः पतिभ्यो जनयः परिष्वजे १०
न तस्य विद्म तदु षु प्र वोचत युवा ह यद् युवत्याः क्षेति योनिषु।
प्रियोस्त्रियस्य वृषभस्य रेतिनो गृहं गमेमाश्विना तदुश्मसि ११
आ वामगन्त्सुमतिर्वाजिनीवसू न्यश्विना हृत्सु कामा अयंसत।
अभूतं गोपा मिथुना शुभस्पती प्रिया अर्यम्णो दुर्याँ अशीमहि १२
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ धत्तं रयिं सहवीरं वचस्यवे।
कृतं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती स्थाणुं पथेष्ठामप दुर्मतिं हतम् १३
क्व स्विदद्य कतमास्वश्विना विक्षु दस्रा मादयेते शुभस्पती।
क्व ई नि षेमे कतमस्य जग्मतुर्विप्रस्य वा यजमानस्य वा गृहम् १४ ६१०

॥६५॥ (ऋ. १०,४१।१—३)

(६११—६१३) सुहस्त्यो घौषेयः। जगती।

समानमु त्यं पुरुहूतमुक्थ्यं रथं त्रिचक्रं सवना गणिग्मतम्।
परिज्मानं विदथ्यं सुवृक्तिभिर्वयं व्युष्टा उषसो हवामहे १
प्रातर्युजं नासत्याधि तिष्ठथः प्रातर्यावाणं मधुवाहनं रथम्।
विशो येन गच्छथो यज्वरीर्नरा कीरेश्चिद् यज्ञं होतृमन्तमाश्विना २
अध्वर्युं वा मधुपाणिं सुहस्त्यग्निधं वा धृतदक्षं दमूनसम्।
विप्रस्य वा यत् सवनानि गच्छथो ऽत आ यातं मधुपेयमश्विना ३ ६१३

॥६६॥ (ऋ. १०।१०६।१-११)

(६१४-६२४) भूतांशः काश्यपः । त्रिष्टुप् ।

उभा उ नूनं तदिदर्थयेथे वि तन्वाथे धियो वस्त्रापसेव ।
सध्रीचीना यातवे प्रेमजीगः सुदिनेव पृक्ष आ तसयेथे १
उष्टारेव फर्वरेषु श्रयेथे प्रायोगेव श्वात्र्या शासुरेथः ।
दूतेव हि ष्ठो यशसा जनेषु मापं स्यातं महिषेवावपानात् २ ६१५
साकंयुजा शकुनस्येव पक्षा पश्वेव चित्रा यजुरा गमिष्टम् ।
अग्निरिव देवयोर्दीदिवांसा परिज्मानेव यजथः पुरुत्रा ३
आपी वो अस्मे पितरेव पुत्रो—ग्रेव रुचा नृपतीव तुर्यै ।
इयेव पुष्ट्यै किरणेव भुज्यै श्रुष्टीवानेव हवमा गमिष्टम् ४
वंसगेव पूषर्या शिम्बाता मित्रेव ऋता शतरा शातपन्ता ।
वाजेवोचा वयसा घर्म्येष्ठा मेषेवेषा सपर्या३ पुरीषा ५
सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका ।
उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु ६
पत्रेव चर्चरं जारं मरायु क्षत्रेवार्थेषु तर्तरीथ उग्रा ।
ऋभू नापत् खरमत्रा खरज्रु—र्वायुर्न पर्फरत् क्षयद् रयीणाम् ७ ६२०
घर्मेव मधु जठरे सनेरू भगेविता तुर्फरी फारिवारम् ।
पतरेव चचरा चन्द्रनिर्णिङ् मनऋङ्गा मनन्या३ न जग्मी ८
बृहन्तेव गम्भरेषु प्रतिष्ठां पादेव गाधं तरते विदाथः ।
कर्णेव शासुरनु हि स्मराथो—ऽशेव नो भजतं चित्रमभ्रः ९
आरङ्गरेव मध्वरेयेथे सारघेव गर्वि नीचीनबारे ।
कीनारेव स्वेदमासिष्विदाना क्षामेवोर्जा सूयवसात् सचेथे १०
ऋध्याम स्तोमै सनुयाम वाज—मा नो मन्त्रं सरथेहोप यातम् ।
यशो न पक्वं मधु गोष्वन्त—रा भूतांशो अश्विनोः काममप्राः ११ ६२४

॥६७॥ (ऋ. १०।१३१।४—५)

(६२५-६२६) सुकीर्तिः काक्षीवतः । ४ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

युवं सुरामंमश्विना नमुचावासुरे सचा । विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ४ ६२५

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दंसनाभिः ।
यत् सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ५ ६१६

॥६८॥ (ऋ. १०।१४३।१—६)

(६२७-६३२) अत्रिः सांख्यः । अनुष्टुप् ।

त्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमश्वं न यातवे ।
कक्षीवन्तं यदी पुना रथं न कृणुथो नवम् १
त्यं चिदश्वं न वाजिनमरेणवो यमत्नत ।
दृळ्हं ग्रन्थिं न वि ष्यतमत्रिं यविष्ठुमा रजः २
नरा दंसिष्ठावत्रये शुभ्रा सिषासतं धियः ।
अथा हि वां दिवो नरा पुनः स्तोमो न विशसे ३
चित्रे तद् वां सुराधसा रातिः सुमतिरश्विना ।
आ यन्नः सदने पृथौ समने पर्षथो नरा ४ ६३०
युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईङ्खितम् ।
यातमच्छा पतत्रिभिर्नासत्या सातये कृतम् ५
आ वां सुम्नैः शंयू इव मंहिष्ठा विश्ववेदसा ।
समस्मे भूषतं नरोत्सं न पिप्युषीरिषः ६ ६३२

॥६९॥ (ऋ. १०।१८४।३)

(६३३) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

हिरण्ययीं अरणी यं निर्मन्थतो अश्विना ।
तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि सूतवे ३ ६३३

॥७०॥ (६३४-६३८) (वा. य. १४।१—५)

ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिर्ध्रुवासि ध्रुवं योनिमासीद साधुया ।
उरुव्यस्य केतुं प्रथमं जुषाणाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा १
कुलायिनीं घृतवतीं पुरन्धिः स्योने सीद सदने पृथिव्याः ।
अभि त्वा रुद्रा वसवो गृणन्त्विमा ब्रह्म पीपिहि सौभगायाश्विनाध्वर्यू
सादयतामिह त्वा २ ६३५

स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह सीद देवानाꣳ सुम्ने बृहते रणाय ।
पितेवैधि सूनवेऽआ सुशेवा स्वावेशा तन्वा संविशस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ३
पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वेऽअभिगृणन्तु देवाः ।
स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणायजस्वाश्विनाध्वर्यू सादयातामिह त्वा ४
अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धर्त्री विष्टम्भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम् ।
ऊर्मिर्द्रप्सोऽअपामसि विश्वकर्मा तऽऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ५ ६३८

॥७१॥ (६३९--६४०) (वा. य. ३८।१०,१३)

विश्वाऽआशा दक्षिणसद् विश्वान् देवानयाडिह ।
स्वाहाकृतस्य घर्मस्य मधोः पिबतमश्विना १०
अपातामश्विना घर्ममनु द्यावापृथिवीऽअमꣳसाताम् ।
इहैव रातयः सन्तु १३ ६४०

॥७२॥ (साम० ३०५)

(६४१) अश्विनौ वैवस्वतौ । बृहती ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
घृता वामश्मया क्षयमाणोऽशुनेत्थमु आद्वन्यथा ३ ६४१

॥७३॥ (अथर्व० २।२९।६)

(६४२—६४५) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्य—नमीवो मोदिषीष्ठाः सुवर्चाः ।
सवासिनौ पिबतां मन्थमेत—मश्विनौ रूपं परिधाय मायाम् ६

॥७४॥ (अथर्व० ६।५०।१-३)

अथर्वा (अभयकामः) । १ विराड् जगती, २-३ पथ्यापङ्क्तिः ।

हतं तर्द सꣳमङ्कमाखुमश्विना छिन्तं शिरो अपि पृष्टीः शृणीतम् ।
यवान्नेददानपि नह्यतं मुखमथाभयं कृणुतं धान्याय १
तर्द्दु है पतङ्गु है जभ्य हा उपक्वस ।
ब्रह्मेवासंस्थितं हविरनदन्त इमान्यवानहिंसन्तो अपोदित २ ६४४

तर्दीषते वघांषते तृष्टजम्भा आ शृणोत मे।
य आरण्या व्यद्विरा ये के च स्थ व्यद्विरास्तान्त्सर्वान् जम्भयामसि ३ ६४५

॥७५॥ (अथर्व० २।३०।२)

(६४६) प्रजापतिः। अनुष्टुप्।

सं चेन्नयाथो अश्विना कामिना सं च वक्षथः।
सं वां भगासो अग्मत सं चित्तानि समु व्रता २ ६४६

॥७६॥ (अथर्व० ६।१०२।१-३)

(६४७—६४९) जमदग्निः। अनुष्टुप्।

यथायं वाहो अश्विना समैति सं च वर्तते। एवा मामभि ते मनः समैतु सं च वर्तताम् १
आहं खिदामि ते मनो राजाश्वः पृष्ट्यामिव। रेष्मच्छिन्नं यथा तृणं मयि ते वेष्टतां मनः २
आञ्जनस्य मदुघस्य कुष्ठस्य नलदस्य च। तुरो भगस्य हस्ताभ्या—मनुरोधनमुद्भरे ३ ६४९

॥७७॥ (अथर्व० ६।१४१।१-३)

(६५०—६५२) विश्वामित्रः। अनुष्टुप्।

त्रायुरेनाः समाकरत् त्वष्टा पोषाय धियताम्। इन्द्र आभ्यो अधि ब्रवद् रुद्रो भूम्ने चिकित्सतु १
लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृधि। अकर्तामश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु २
यथा चक्रुर्देवासुरा यथा मनुष्या उत। एवा सहस्रपोषाय कृणुतं लक्ष्माश्विना ३ ६५२

अश्विसहचारी-देवगणः।

(१) अश्विसरस्वतीन्द्राः।

+॥७८॥ (६५३—६६९) (वा. य. १९।३३-३५)

यस्ते रसः सम्भृतऽओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य।
तेन जिन्व यजमानं मदेन सरस्वतीमश्विनाविन्द्रमग्निम् ३३
यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय।
इमं तꣳ शुक्रं मधुमन्तमिन्दुꣳ सोमꣳ राजानमिह भक्षयामि ३४
यदत्र रिप्तꣳ रसिनः सुतस्य यदिन्द्रोऽअपिबच्छचीभिः।
अहं तदस्य मनसा शिवेन सोमꣳ राजानमिह भक्षयामि ३५ ६५५

+वा० य० २०।५५-६६; २१।२९-४०। दै०[अग्निः] २०२५—२०३६; २०४८—२०५९
,, ,, १९।३२,८०—५९; २०।७३—७७,८०,९०। दै०[इन्द्रः] २९३७—२९५३; २९५७—२९६३।

॥७९॥ (वा. य. २०।६७-६९)

अश्विना हविरिन्द्रियं नमुचेर्धिया सरस्वती ।
आ शुक्रमासुराद्रसुं मघमिन्द्राय जभ्रिरे ६७
यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्रमवर्धयन् ।
स विंभेद वलं मघं नमुचावासुरे सचा ६८
तमिन्द्रं पशवः सचाश्विनोभा सरस्वती ।
दधानाऽअभ्यनूषत हविषा यज्ञऽइन्द्रियैः ६९

॥८०॥ (वा. य. २१।४८-५८)

देवं बर्हिः सरस्वती सुदेवमिन्द्रेऽअश्विना ।
तेजो न चक्षुरक्ष्योर्बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ४८
देवीर्द्वारोऽअश्विना भिषजेन्द्रे सरस्वती ।
प्राणं न वीर्यं नासि द्वारो दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ४९ ६६०
देवीऽउषासावश्विना सुत्रामेन्द्रे सरस्वती ।
बलं न वाचमास्य ऽउषाभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५०
देवी जोष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्धयन् ।
श्रोत्रं न कर्णयोर्यशो जोष्ट्रीभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५१
देवीऽऊर्जाहुती दुघे सुदुघेन्द्रे सरस्वत्यश्विना भिषजावतः ।
शुक्रं न ज्योति स्तनयोराहुती धत्तऽइन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५२
देवा देवानां भिषजा होतारावेन्द्रमश्विना ।
वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मतिꣳ होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५३
देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीराश्विनेडा सरस्वती ।
शूषं न मध्ये नाभ्यामिन्द्राय दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५४ ६६५
देवऽइन्द्रो नराशꣳसस्त्रिवरूथः सरस्वत्यश्विभ्यामीयते रथः ।
रेतो न रूपममृतं जनित्रमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५५
देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो ऽ अश्विभ्याꣳ सरस्वत्या सुपिप्पलऽइन्द्राय पच्यते मधु ।
ओजो न जूतिर्ऋषभो न भामं वनस्पतिर्नो दधदिन्द्रियाणि
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५६ ६६७

देवं बर्हिर्वारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विभ्यामूर्णम्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र ते सदः ।
ईशायै मन्युꣳ राजानं बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५७
देवोऽअग्निः स्विष्टकृद् देवान् यक्षद् यथायथꣳ होतारविन्द्रमश्विना वाचा वाचꣳसरस्वती-
मग्निꣳसोमꣳ स्विष्टकृत् स्विष्टऽइन्द्रः सुत्रामा सविता वरुणो भिषगिष्टो देवो वनस्पतिः स्विष्टा
देवाऽआज्यपाः स्विष्टोऽअग्निराग्निना होता होत्रे स्विष्टकृद् यशो न दधदिन्द्रियमूर्जमपचितिꣳ
स्वधां वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५८ ६६९

(२) अश्विसूर्यादयः ।

॥८१॥ (वा० य० ३८।१२)

अश्विना घर्मं पातꣳ हार्द्वानमहर्दिवाभिरूतिभिः ।
तन्त्रायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम् १२ ६७०

(३) अश्विनौ, बृहस्पतिः ।

॥८२॥ (अथर्व० ५।२६।१२)

(६७१) ब्रह्मा । परानिशक्वरी चतुष्पदा गायत्री ।

अश्विना ब्रह्मणा यातमर्वाञ्चौ वषट्कारेण यज्ञं वर्धयन्तौ ।
बृहस्पते ब्रह्मणा याह्यर्वाङ् यज्ञो अयं स्वरिदं यजमानाय स्वाहा १२ ६७१

(४) श्येनः, अश्विनौ ।

॥८३॥ (अथर्व० ३।३।४)

(६७२—६८८) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

श्येनो हव्यं मयत्वा परस्मा—दन्यक्षेत्रे अपरुद्धं चरन्तम् ।
अश्विना पन्थां कृणुतां सुगं त इमं सजाता अभिसंविशध्वम् ४

(५) अश्विनौ, यौष्पिता ।

॥८४॥ (अथर्व० ६।४।३) त्रिपदा विराड् गायत्री ।

धिये समश्विना प्रावतं न उरुष्या णो उरुज्मन्प्रयुच्छन् ।
द्यौर्ष्पितर्यावय दुच्छुना या ५ ६७३

(६) बृहस्पतिः, अश्विनौ।

॥८५॥ (अथर्व० ६।६९।१-३) अनुष्टुप्।

गिरावरगरांटेषु हिरण्ये गोषु यद्यशः। सुरायां सिच्यमानायां कीलाले मधु तन्मयि १
अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती। यथा भगंस्वतीं वाचं—मावदानि जनाँ अनु२ ६७५
मयि वर्चो अथो यशो—ऽथो यज्ञस्य यत् पयः। तन्मयि प्रजापति—र्दिवि द्यामिव दंहतु३

(७) सांमनस्यं, अश्विनौ।

॥८६॥ (अथर्व० ७।५२।१-२) १ ककुम्मत्यनुष्टुप्, २ जगती।

संज्ञानं नः स्वेभिः संज्ञानमरणेभिः।
संज्ञानमश्विना युवमिहास्मासु नि यच्छतम् १
सं जानामहै मनसा सं चिकित्वा मा युष्महि मनसा दैव्येन।
मा घोषा उत्स्थुर्बहुले विनिर्हते मेषुः पप्तदिन्द्रस्याहन्यागते २

(८) घर्मः, अश्विनौ।

॥८७॥ (अथर्व० ७।७३।१-५,८) १,४ जगती, २ पथ्याबृहती, ३,५,८ त्रिष्टुप्।

समिद्धो अग्निर्वृषणा रथी दिवस्तप्तो घर्मो दुह्यते वामिषे मधु।
वयं हि वां पुरुदमासो अश्विना हवामहे सधमादेषु कारवः १
समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो वां घर्म आ गतम्।
दुह्यन्ते नूनं वृषणेह धेनवो दस्रा मदन्ति वेधसः २ ६८०
स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु यज्ञो यो अश्विनोश्चमसो देवपानः।
तमु विश्वे अमृतासो जुषाणा गन्धर्वस्य प्रत्यास्ना रिहन्ति ३
यदुस्रियास्वाहुतं घृतं पयोऽयं स वामश्विना भाग आ गतम्।
माध्वी धर्तारा विदथस्य सत्पती तप्तं घर्मं पिबतं रोचने दिवः ४
तप्तो वां घर्मो नक्षतु स्वहोता प्र वामध्वर्युश्चरतु पयस्वान्।
मधोर्दुग्धस्याश्विना तनायां वीतं पातं पयस उस्रियायाः ५
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसा न्यागन्।
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय ८ ६८४

(९) मधु, अश्विनौ।

॥८८॥ (अथर्व० ९।१।११,१६-१७,१९) अनुष्टुप्, १७ उपरिष्टाद्विराड् बृहती।

यथा सोमः प्रातःसवने अश्विनोर्भवति प्रियः।
एवा मे अश्विना वर्चः आत्मनि ध्रियताम् ११ ६८५
यथा मधु मधुकृतः संभरन्ति मधावधि।
एवा मे अश्विना वर्चः आत्मनि ध्रियताम् १६
यथा मक्षा इदं मधु न्यञ्जन्ति मधावधि।
एवा मे अश्विना वर्चस्तेजो बलमोजश्च ध्रियताम् १७
अश्विना सारघेण मा मधुनाक्तं शुभस्पती।
यथा वर्चस्वतीं वाचमावदानि जनाँ अनु १९ ६८८

(१०) सिनीवालीसरस्वत्यश्विनः।

॥८९॥ (ऋ. १०।१८४।२)

(६८९) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः। अनुष्टुप्।

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते अश्विनौ देवावा धत्तां पुष्करस्रजा २ ६८९

अश्विनौ-देवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[५] १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
अश्विनावेह गच्छताम् ।
अस्य सोमस्य पीतये ।
(२८४) ५।७५।७ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
अश्विनावेह गच्छतं ।
(२९७) ५।७८।१ (सप्तवध्रिरात्रेयः । अश्विनौ)
(इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायू)
—हवामहे ।
अस्य सोमस्य पीतये ।
(इन्द्रः ३३२१) ४।४९।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्राबृहस्पती)
५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
अस्य... ।
(इन्द्रः ३०५५) ६।५९।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
अस्य... ।
(इन्द्रः ६३३) ८।७६।६ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
अस्य... ।
(मरुतः ४०४-६) ८ ९४।१०-१२ (बिन्दुः पूतदक्षो वा आङ्गिरसः । मरुतः)

[६] १।२२।२ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
उभा देवा दिविस्पृशा । ...हवामहे ।
(इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायू)
उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे ।

[७] १।२२।३ तया **यज्ञं मिमिक्षतम् ।**
(४२)१।४७।४ मध्वा **यज्ञं मिमिक्षतम् ।**

[१०] १।३०।१८ (शुनःशेप आजीगर्तिः । अश्विनौ)
समान**योजनो हि वां रथो दस्रावमर्त्यः ।**
(२८६) ५।७५।९ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्रावमर्त्यः ।

[११] १।३०।१९ (शुनःशेप आजीगर्तिः । अश्विनौ)
चक्रं रथस्य येमथुः। परि द्यामन्यदीयते ।
(२६०) ५।७३।३ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
ईर्मान्यद् वपुषे **वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः ।**
पर्यन्या...वीयथः ।

[२१] १।३४।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।
...रथम् ।
(२३९) ४।४५।३ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
.....आ रजः । **—रथम् ।**

[२२] १।३४।११ आ नासत्या **त्रिभिरेकादशैः ।**
(५११) ८।३५।३ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैः ।

["] १।३४।११ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा ।
(१६६) १।१५७।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ

[२३] १।३४।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
वामवसे जोहवीमि **वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।**
(७५) १।११२।२४ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
अवसे नि ह्वये **वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।**

[२५] १।४६।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
मनोतरा रयीणाम् ।
(४३२) ८।८।१२ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

[२६] १।४६।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
यद् वां रथो विभिष्पतात् ।
(४०५) ८।५।२२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

[३०] १।४६।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
युञ्जाथामश्विना रथम् ।
(५४०) ८।७३।१ (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा । अश्विनौ)

[३९] १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोम ऋतावृधा ।
२।४१।४ (गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)
अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा ।

[४०] १।४७।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
रथेना यातमश्विना ।
(४३१) ८।८।११ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।

(४३४) ८।८।१४ (सप्तवंसः काण्वः । अश्विनौ)
अतः— ।

[४१] १।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
पातं सोममृतावृधा ।
—दाश्वांसमुप गच्छतम् ।
(४३) १।४७।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
पातं— ।
३।६२।१८ (विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
पातं— ।
७।६६।१९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
पातं— ।
(५७६) ८।८७।५ (कृष्ण आङ्गिरसो युम्नीको वा वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
पातं— ।
(इन्द्रः३२२४) ४।४६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
दाश्वांसमुप गच्छतम् ।

[४१;४४] १।४७।३,६ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
अथाद्य (६ सुदासे) **दस्रा वसु बिभ्रता ।**

[४२] १।४७।४ मध्वा **यज्ञं मिमिक्षतम् ।**
(७) १।२२।३ तया **यज्ञं—** ।

[,,] १।४७।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
युवां हवन्ते अश्विना ।
(४००) ८।५।१७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

[४३] १।४७।५ **ताभिः** ष्व१स्मा **अवतं शुभस्पती ।**
(इन्द्रः ३२०४) ८।५९ (वाल० ११)।३
(सुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)
ताभिर्दाश्वांसमवतं शुभस्पती ।

[४५] १।४७।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अधि तुर्वशे ।
अतो रथेन सुव्रता न आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥
(४३४) ८।८।१४ (सप्तवंसः काण्वः । अश्विनौ)
यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अध्यम्बरे ।
अतः सहस्रनिर्णिजा **रथेना** यातमश्विना ।
१।१३७।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।
५।७९।८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।
८।१०१।१२ (जमदग्निर्भार्गवः । मित्रावरुणौ)
साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

[४६] १।४७।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप ।
इषं पृञ्चन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिः सीदतं नरा॥
(इन्द्रः २४२) ८।४।१४ (देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
अर्वाञ्चं त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो— ।
१।९२।३ (गोतमो राहूगणः । उषाः)
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ।
(५७३) ८।८७।२ (कृष्ण आङ्गिरसो युम्नीको वा वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
आ बर्हिः सीदतं नरा ।
(५७५) ८।८७।४ (कृष्ण आङ्गिरसो०... । अश्विनौ)
आ बर्हिः सीदतं सुमत् ।

[४७] १।४७।९ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा ।
(४७६) ८।२२।५ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
...तेन नासत्या गतम् ।
(४२२) ८।८।२ (सप्तवंसः काण्वः । अश्विनौ)
रथेन सूर्यत्वचा ।

[,,] १।४७।९ **मध्वः सोमस्य पीतये ।**
(५५८-५६६) ८।८५।१-९ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)

[४९] १।९२।१६ (गोतमो राहूगणः । अश्विनौ)
अर्वाग् रथं समनसा **नि यच्छतम् ।**
(३७९)७।७४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
(५३०) ८।३५।२२ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
अर्वाग् रथं नि यच्छतं ।

[५०] १।९२।१७ (गोतमो राहूगणः । अश्विनौ)
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ।
(१६६) १।१५७।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ)

[५१] १।९२।१८ (गोतमो राहूगणः । अश्विनौ)
दस्रा हिरण्यवर्तनी ।
(२७९) ५।७५।२ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
(३९४) ८।५।११ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
(४२१) ८।८।१ (सप्तवंसः काण्वः । अश्विनौ)
(५७६) ८।८७।५ (कृष्ण आङ्गिरसो युम्नीको वा वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)

[,,] १।९२।१८ उषर्बुधो **वहन्तु सोमपीतये ।**
(इन्द्रः ११०) ८।१।२४ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)

[५२-७४] १।११२।१-२३(कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्।

[५६] १।११२।५ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
याभी **रेभं** निवृतं सितमद्रय **उद्वन्दनमैरयतं स्वर्दृशे।**
(१३२) १।११८।६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
उद्वन्दनमैरयतं दंसानाभिरुद् **रेभं ।**

[५९] १।११२।८ याभिर्वर्तिकां ग्रसिताममुञ्चतं ।
(५९५) १०।३९।१३ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)
वर्तिकाम्...युवं शचीभिर्ग्रसिताममुञ्चतम्।

[७१] १।११२।२० (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
भुज्युं **याभिरवथो याभिरध्रिगुम्** ।
(४८१) ८।२२।१० (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
याभिः पक्थ**मवथो याभिरध्रिगुम्** ।

[७५] १।११२।२४=(२३) १।३४।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। अश्विनौ)
वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।

[७६] १।११२।२५ **तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम-दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।**
=(अग्निः २७१) १।९४।१६; (१८७८)१।९५।११; (१८७८) १।९६।९; (१७२६) १।९८।३
=(इन्द्रः ९७५) १।१००।१९; (८२७) १।१०१।११; (८३८) १।१०२।११; (८४६) १।१०३।८: (३०२०) १।१०८।१३; (३०२८) १।१०९।८
१।१०५।१९ (त्रित आप्त्यः कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)
=१।१०६।७=१।१०७।३ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)
=१।११०।९=१।१११।५ (कुत्स आङ्गिरसः । ऋभवः)
= १।११३।२० (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
= १।११४।११ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)
= १।११५।६ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)
(सोमः ९१४) ९।९७।५८ (,, । सोमः)

[८३] १।११६।७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
युवं नरा स्तुवते पज्रियाय कक्षीवते ।
कारोतराच्छफादश्वस्य वृष्णः **शतं कुम्भाँ असिञ्चतं** सुरायाः ।
(१०८)१।११७।७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)
युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय ।
(१०७) १।११७।६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)
तद् वां **नरा** शंस्यं **पज्रियेण कक्षीवता**...।
शफादश्वस्य वाजिनो जनाय **शतं कुम्भाँ।**
असिञ्चतं मधूनाम् ।

[९२] १।११६।१६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानमृज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।
तस्मा **अक्षी** नासत्या **विचक्ष आधत्तं ।**
(११८) १।११७।१७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
शतं मेषान् वृक्ये मामहानं तमः...**पित्रा ।**
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं...**विचक्षे ।**
(११९) १।११७।१८ **चक्षदान ऋज्राश्वः शत**मेकं च **मेषान्**

[१०३] १।११७।२ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
यो वामश्विना मनसो जवीयान् ।
येन गच्छथः **सुकृतो दुरोणं ।**
(२०२) १।१८३।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
मनसो यो जवीयान् ।
येनोपयाथः **सुकृतो दुरोणं ।**

[१०७] १।११७।६=(८३) १।११६।७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
शतं कुम्भाँ असिञ्चतं मधूनाम् (७सुरायाः)।

[१०८] १।११७।७=(८३) १।११६।७ **युवं नरा स्तुवते** कृष्णियाय (७ पज्रियाय)।

[११०] १।११७।९ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
(३६६) ७।७१।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

[११८] १।११७।१७ = (९२) १।११६।१६ **शतं मेषान् वृक्ये** मामहानं (१६ चक्षदानम्) ।

[१२१] १।११७।२० (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः ।अश्विनौ)
युवं शचीभि**र्विमदाय** जायां **न्यूहथुः पुरु-मित्रस्य योषाम्** ।
(५८९) १०।३९।७ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)
युवं रथेन **विमदाय** शुन्ध्युवं **न्यूहथुः पुरु-मित्रस्य योषणाम्** ।

[१२२] १।११७।२१ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
अभि **दस्युं** बकुरेणा धमन्तोरु **ज्योतिश्चक्रथु-रार्याय** ।
(अग्निः १७९९) ७।५।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वा-नरोऽग्निः)
त्वं **दस्यूँ**रोकसो अग्न आज **उरु ज्योतिर्जनय-न्नार्याय ।**

[१२४] १।११७।२३ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)
अपत्यसाचं शृत्यं ररथाम्।
(इन्द्रः३२७५) ६।७२।५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः। इन्द्रासोमौ)
—शृत्यं ररथे।

[१२६] १।११७।२५ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)
एतानि वामश्विना वीर्याणि...।
ब्रह्म कृण्वन्तो...**सुवीरासो विदथमा वदेम।**
(१२२) २।३९।८ (गृत्समदः शौनकः। अश्विनौ)
एतानि वामश्विना वर्धनानि **ब्रह्म**...अकन।
.....**वदेम विदथे सुवीराः।**
(इन्द्रः ११३६) २।१२।१५ (गृत्समदः शौनकः। इन्द्रः)
सुवीरासो विदथमा वदेम।
(सोमः११४८) ८।४८।१४ (प्रगाथो घौरः काण्वः। सोमः)
सुवीरासो विदथमा वदेम।

[१२७] १।११८।१=१।३५।१०(हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। सविता)
सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ्।

[,,] १।११८।१ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)
यो मर्त्यस्य **मनसो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा** वातरंहाः।
(२०२) १।१८३।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः।

[१२९] १।११८।३ (कक्षीवान औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)
प्रवद्यामना **सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः।**
किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठाहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः॥
(२२८) ३।५८।३ (विश्वामित्रो गाथिनः। अश्विनौ)
सुयुग्भिरश्वैः **सुवृता रथेन**...।
किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं...अश्विना हवन्ते॥

[१३०] १।११८।४ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)
आ वां रथेनासो अश्विना **वहन्तु**...।
...अभि प्रयो नासत्या वहन्ति॥
(३२३) ६।६३।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः। अश्विनौ)
आ वां वयोऽश्वासो वहिष्ठा **अभि प्रयो नासत्या वहन्तु।**

[१३२] १।११८।६=(५६) १।११२।५ **उद् वन्दनमैरतं** दंसनाभिः (५ स्वर्दृशे)।

[१३५]१।११८।९ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)
युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजूतमहिहनमश्विना-
दत्तमश्वम्।
जोहूत्रमर्यो...।
(१९२) १०।३९।१० (काक्षीवर्ता घोषा। अश्विनौ)
युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं।
चर्कृत्यं ददथुः।

[१६०] १।१३९।३ युवोर्विश्वा अधि श्रियः।
(इन्द्रः २४१६) ८।९२।२० (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः। इन्द्रः)
यस्मिन् **विश्वा अधि श्रियः।**

[१६३] १।१५७।१ (दीर्घतमा औचथ्यः। अश्विनौ)
आयुक्षातामश्विना यातवे **रथं।**
१०।३५।६ (लुशो धानाकः। विश्वे देवा)
आयुक्षातामश्विना तूतुजिं **रथं।**

[१६६] १।१५७।४ = (५०)१।९२।१७
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम्।

[,,] १।१५७।५ = (२२)१।३४।११
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा।

[१८४] १।१८०।१० (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
तं वां रथं वयमद्या हुवेम।
(२५१)४।४४।१ (पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ। अश्विनौ)

[१९९] १।१८२।६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
अनारम्भणे तमसि प्रविद्धम्।
(इन्द्रः ३२८०) ७।१०४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः[राक्षोघ्नं]। इन्द्रासोमौ)
—प्र विध्यतम्।

[२०२] १।१८३।१=(१२७) १।११८।१
त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः (१वातरंहाः)।

[२०४] १।१८३।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
'यो रथो...।
येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च।
(२१२) १।१८४।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
यातं **वर्तिस्तनयाय त्मने च।**
६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः। विश्वे देवाः)
...यो रथो...
येन नरा—।

[२०५] १।१८३।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणि.। अश्विनौ)
अयं वां भागो निहित इयं गीर्दस्राविमे वां निधयो मधूनाम्।

(५३९) ८।५७ (वाल.९)।४ (मेध्यः काण्वः। अश्विनौ)
अयं वां भागो निहितो यजत्रा ।
(२३०) ३।५८।५ (विश्वामित्रो गाथिनः। अश्विनौ)
दस्रावि मे वां निधयो मधूनाम् ।

[२०६] १।१८३।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
मे हवं नासत्योप यातम् ।
(५५८) ८।८५।१ (कृष्ण आङ्गिरसः। अश्विनौ)
आ **मे हवं नासत्या** ।

[२०७] १।१८३।६ = (२१३)१।१८४।६ = (३७३)७।७३।१
अतारिष्म तमसस्पारमस्य ।
१।९२।६ (गोतमो राहूगणः। उषा.)
अतारिष्म तमसस्पारमस्य ।

[,,] १।१८३।६ = (२१३)१।१८४।६(अगस्त्यो मैत्रावरुणि। अश्विनौ)
अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।
एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥
(२३०) ३।५८।५ (विश्वामित्रो गाथिनः। अश्विनौ)
एह यातं पथिभिर्देवयानैः ।

[२०९] १।१८४।२ **अस्मे** ऊ षु **वृषणा मादयेथाम् ।**
(अग्निः ७४८)४।१४।४**अस्मिन्** यज्ञे **वृषणा।**

[२१२] १।१८४।५ = (२०४)१।१८३।३
यातं **वर्तिस्तनयाय त्मने च ।**
६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः। विश्वे देवाः)
येन नरा...वर्तिर्याथस्तनयाय... ।

[२१३] १।१८४।६ = (२०६)१।१८३।६

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[२२२] २।३९।८–(१२६)१।११७।२५
एतानि वामश्विना वर्धनानि (२५वीर्याणि) ।

[२२४] २।४१।८ (गृत्समदः शौनकः। अश्विनौ)
न यत् परो नान्तर... ।
दुःशंसो मर्त्यो रिपुः ।

(३१८) ६।६३।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। अश्विनौ)
न यत् परो नान्तरस्तुतुर्यात् ।

८।८।१४ (इरिम्बिठिः काण्वः। आदित्याः)
दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[२२८] ३।५८।३=(१२९)१।११८।३

[२३०] ३।५८।५=(२०७) १।१८३।६=(२१३) १।१८४।६
(अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)

[,,] ३।५८।५=(२०५) १।१८३।४

[२३३] ३।५८।८ (गाथिनो विश्वामित्रः। अश्विनौ)
परि द्यावापृथिवी याति **सद्यः ।**
१।११५।३ (कुत्स आङ्गिरसः। सूर्यः)
परि द्यावापृथिवी यान्ति **सद्यः** ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[२५०] ४।४३।७=(२५७) ४।४४।७
(पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ। अश्विनौ)
इहेह यद् वां समना पप्रुक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना ।
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् ॥

[२५१] ४।४४।१=(१८४) १।१८०।१०
तं वां रथं वयमद्या हुवेम ।

[२५४] ४।४४।४ (पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ। अश्विनौ)
दधृषो रत्नं विधते जनाय ।

७।७५।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। उषाः)
दधाति रत्नं विधते जनाय ।

[२५५] ४।४४।५ **हिरण्येन** सुवृता **रथेन ।**
१।३५।१ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। सविता)

[,,] ४।४४।५ (पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ। अश्विनौ)
—यातं— ।
मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।
(३५१) ७।६९।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। अश्विनौ)
...यातम् ।
मा वामन्ये नि यमन देवयन्तः ।

[२५६] ४।४४।६ नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं ।
(अग्निः ९९२) ६।६।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । वैश्वानरोऽग्निः)
चन्द्रं रयिं —।
[२५७] ४।४४।७ = (२५०) ४।४३।७
[२३८] ४।४५।२ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
उद् वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते ।
७।६०।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
— मधुमन्तो अस्थुः ।
[,,] ४।४५।२ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु ।
(अग्निः ७४८) ४।१४।४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
— उषसो व्युष्टौ ।
[२३८] ४।४५।२ = (२४२) ४।४५।६
स्व१र्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः ।
[२३९] ४।४५।३ = (२१) १।३४।१०
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।
[२४१] ४।४५।५ सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः ।
(सोमः १०००) ९।१०७।१ सुषाव सोममद्रिभिः ।

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[२५८] ५।७३।१ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
यदन्तरिक्ष आ गतम् ।
(इन्द्रः ९८०) ८।९७।५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
— आ गहि ।
[२५९] ५।७३।२ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
इह स्या पुरुभूतमा ।
(४७४) ८।२२।३ (सोभारिः काण्वः । अश्विनौ)
[२६०] ५।७३।३ = (११) १।३०।१९ चक्रं रथस्य येमथुः ।
[२६२] ५।७३।५ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठत् ।
(४३०) ८।८।१० (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ यद् वां योषणा रथमतिष्ठत् ।
[२६७] ५।७३।१० इमा ब्रह्माणि वर्धना ।
(इन्द्रः ५६९) ८।६२।४ (प्रगाथो घौरः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।
[२७७] ५।७४।१० (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
अश्विना यद्ध कर्हि चिच्छ्रुष्टिमिमं हवम् ।
(५४४) ८।७३।५ (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा । अश्विनौ)
यदद्य कर्हि कर्हि चिच्छ्रुष्टिमिमं हवम् ।
[२७८-८६] ५।७५।१-९ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
माध्वी मम श्रुतं हवम् ।
[२७९] ५।७५।२ = (५१) १।९२।१८ = (४२१) ८।८।१
दस्रा हिरण्यवर्तनी ।
[२८०] ५।७५।३ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
आ नो...अश्विना गच्छतं युवम् ।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी ।
(४२१) ८।८।१ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नो...अश्विना गच्छतं युवम् ।
दस्रा हिरण्यवर्तनी ।
(५५८) ८।८५।१ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)
आ मे...अश्विना गच्छतं युवम् ।
[२८४] ५।७५।७ = (५) १।२२।१ = (२९७) ५।७८।१
अश्विनावेह गच्छतं (१।२२।१ गच्छताम्)।
[,,] ५।७५।७ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
नासत्या मा वि वेनतम् ।
(२९७) ५।७८।१ (सप्तवाध्रिरात्रेयः । अश्विनौ)
[२८६] ५।७५।९ = (१०) १।३०।१८ रथो दस्रावमर्त्यः ।
[२८९] ५।७६।३ मध्यंदिनं उदिता सूर्यस्य ।
५।६९।३ (उरुचक्रिरात्रेयः । मित्रावरुणौ)
[२९०] ५।७६।४ आ नो दिवो बृहतः पर्वतादः ।
५।४३।११ (भौमोऽत्रिः । विश्वे देवाः)
[२९१] ५।७६।५ = ५।४२।१८ = ५।४३।१७
(भौमोऽत्रिः । विश्वे देवाः)
[२९६] ५।७७।५ = ५।४२।१८ = (२९१) ५।७६।५
[२९७] ५।७८।१ = (५) १।२२।१ = (२८४) ५।७५।७
[,,-२९९] ५।७८।१-३ हंसाविव पततमा सुतां उप ।
[२९९] ५।७८।३ जुषेथां यज्ञमिष्टये ।
५।७२।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
[३०४] ५।७८।८ यथा वातो यथा वनम् ।
१०।२३।४ धूनोति वातो यथा वनम् ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३०८] ६।६२।३ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)
ता ह त्यद् वर्तिर्यदध्र.....।
.....परि... ।
(३१८) ६।६३।२ परि ह त्यद् वर्तिर्याथो...यम्...।
[३१०] ६।६२।५ बभूवतुर्गृणते चित्ररातो ।
(३१६) ६।६२।११ दुरो वर्तं गृणते चित्ररातो ।
[३१८] ६।६३।२ = (२२४) २।४१।८ न यत् परो नान्तरः ।
[३२०] ६।६३।४ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)
प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची ।
(अग्निः ६८४) ४।६।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
यता सुजूर्णि रातिनी घृताची ।
[३२३] ६।६३।७ = (१३०) १।११८।४
अभि प्रयो नासत्या वहन्तु (४ वहन्ति)।
[,,] ६।६३।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)
—प्र वां रथो मनोजवा असर्जि ।
(३४०) ७।६८।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
...मनोजवा इयर्ति ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३३३] ७।६७।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
आ वां तोके तनये तूतुजानाः सुरत्नासो
देववीति गमेम ।
(इन्द्रः ३१९६) ७।८४।५ = (इन्द्रः ३२०१) ७।८५।५
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीति गमेम ।
[३३७] ७।६७।१० = (३१४) ७।६९।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विना-
विरावत् ।
धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
[३४०] ७।६८।३ = (३२३) ६।६३।७
[३४८] ७।६९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
विशो येन गच्छथो देवयन्ताः ।
(६१२) १०।४१।२ (सुहस्त्यो घौषेयः । अश्विनौ)
—गच्छथो यज्वरीर्नरा ।
[३५२] ७।६९।६ = (२५५) ४।४४।५
मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।
[३५४] ७।६९।८ = (३३७) ७।६७।१० = (३४६) ७।६८।९
= (३६१) ७।७०।७ = (३६७) ७।७१।६ = (३७२,३७७)
७।७२-७३।५ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
(अग्निः १११९) ७।१।२०,२५; (११३३)
७।३--४।१०; (११४८) ७।७--८।७; (११६०) ७।९।६;
(११७०) ७।११।५; (११७३) ७।१२--१३।३; (११७६)
७।१४।३; (१६८२) १०।१२२।८ ।
(इन्द्रः २१५०) ७।१९।११; (२१६०) २०।१०;
(२१७०) २१।१०; (२१७९) २२।९; (२१८५)
२३।६; (२१९१) २४।६; (२१९७) २५।६
(२२०२) २६।५; (२२०७) २७।५; (२२१२) २८।५;
(२२१७) २९।५; (२२२२) ३०।५; (३०७८)
९३।८; (३१९६) ८४।५; (३२०१) ८५।५; (३२३५)
९०।७; (३२४०) ९१।७; (३३२५) ९७--९८।१०,७।
(सोमः ८०५) ९।९०।६; (८५९, ८६२) ९७।३,६।
(मरुतः ३६९) ७।५६।२५; (३७६) ५७।७; (३८२)
५८।६। (विश्वे देवाः) ७,३४,२५; ३५, १५; ३६,९;
३७, ८; ३९--४१, ७; ४२, ६; ४३, ५; ४८,४;
१०,६५-६६,१५ । (सविता) ७।४५।४ । (रुद्रः)
७।४६।४। (आपः) ७।४७।४। (आदित्याः) ७।५१।३।
(द्यावापृथिवी) ७।५३।३। (वास्तोष्पतिः) ७।५४।३।
(मित्रावरुणौ) ७।६०।१२; ६१, ७; ६२-६३, ६;
६४-६५,५। (उषाः) ७।७५।८; ७६,७; ७७,६;
७८-७९।५, ८०,३। (वरुणः) ७।८६।८; ८७--८८,
७। (वायुः) ७।९२।५। (सरस्वती) ७।९५।६।
(विष्णुः) ७।९९-१००।७। (पर्जन्यः) ७।१०१।६
[३५९] ७।७०।५ प्रति प्र यातं वरमा जनाय ।
७।६५।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
प्रति वामत्र वरमा जनाय ।
[,,] ७।७०।५ अस्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ।
(मरुतः ३७३) ७।५७।४ (वसिष्ठो मैत्रा०। मरुतः)
[३६१] ७।७०।७ = (३६७) ७।७१।६
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
इमा ब्रह्माणि युवयून्यगमन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

(३७५) ७।७३।३ इमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
[३६६] ७।७१।५ = (११०) १।११७।९
नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
[३६७] ७।७१।६ = (३६१) ७।७०।७
[३७१] ७।७२।४ ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् ।
(अग्निः ६८३) ४।६।२ ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेद् ।
(" ७४१) ४।१३।२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
(" ७४६) ४।१४।२ ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेद् ।
[३७२] ७।७२।५ = (३७७) ७।७३।५
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
आ पश्चाताज्जासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः
सदा नः ।
[३७३] ७।७३।१=१।९२।६= (२०७) १।१८३।६
= (२१३) १।१८४।६
[३७५] ७।७३।३ = (३६१) ७।७०।७
[३७६] ७।७३।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन ।
(३८०) ७।७४।३ मा नो मर्धिष्टमा गतम् ।
[३७७] ७।७३।५ = (३७२) ७।७२।५
[३७९] ७।७४।२ = (४९) १।९२।१६
अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतम् ।
[,,] ७।७४।२ = (४२१) ८।८।१ पिबतं सोम्यं मधु ।
(इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५
(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
[३८०] ७।७४।३ = (३७६) ७ ७३।४

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[३८५] ८।५।२ = (इन्द्रः ३२२४) ४।४६।५
(वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
[३८७] ८।५।४ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
पुरुमन्द्रा पुरूवसू ।
(४३२) ८।८।१२ (सप्तर्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
[३८८] ८।५।५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
गन्तारा दाशुषो गृहम् ।
(इन्द्रः ३३०) ८।१३।१० (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
—गृहं नमस्विनः ।
(४७४) ८।२२।३ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
[३८९] ८।५।६ घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
३।६२।१६ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
[३९०] ८।५।७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
आ नः स्तोममुप द्रवत् ।
(३९०) ८।४९ (वाल०१)।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
[३९२] ८।५।९ उत नो गोमतीरिषः ।
(सोमः ४४१) ९।६२।२४ (जमदग्निर्भार्गवः ।
पवमानः सोमः)
५।७९।८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
[३९४] ८।५।११ = (५१) १।९२।१८ दस्रा हिरण्यवर्तनी ।
[,,] ८।५।११ पिबतं सोम्यं मधु ।
(इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५
(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
[३९५] ८।५।१२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
छर्दिर्यन्तमदाभ्यम् ।
(५६२) ८।८५।५ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)
[३९८] ८।५।१५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
अस्मे आ वहतं रयिं
पुरुक्षुं विश्वधायसम् ।
(मरुतः ५८) ८।७।१३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
आ नो रयिं मदन्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम् ।
[४००] ८।५।१७ = ३।५९।९ (गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः)
[,,] ८।५।१७ हविष्मन्तो अरंकृतः ।
१।१४।५ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
[,,] ८।५।१७ = (४२) १।४७।४ युवां हवन्ते अश्विना ।
[४०१] ८।५।१८ = (इन्द्रः २०८९) ६।४५।३०
स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।
[,,] ८।५।१८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
स्तोमो वाहिष्ठो.....।
युवाभ्यां भूत्वश्विना ।
(५०५) ८।२६।१६ (विश्वमना वैयश्वः
व्यश्वो वाङ्गिरसः । अश्विनौ)
वाहिष्ठो.....स्तोमो ।
युवाभ्यां भूत्वश्विना ।
[४०३] ८।५।२० = (४१३) ८।५।३० तेन नो वाजिनीवसू ।
[४०५] ८।५।२२ = (२६) १।४६।३
यद् वां रथो विभिष्पतात् ।

[४११] ८।५।२८ = (इन्द्रः ३२२३) ४।४६।४
(वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
[„] ८।५।२८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना ।
आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ।
(४७६) ८।२२।५ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
रथो...त्रिवन्धुरो हिरण्याभीशुरश्विना ।
...द्यावापृथिवी... ।
(इन्द्रः ३२२३) ४।४६।४ **रथं हिरण्यवन्धुरम्...।**
आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ।
[४१३] ८।५।३० (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
उपेमां सुष्टुतिं मम ।
(४२६) ८।८।६ (सप्तवंसः काण्वः । अश्विनौ)
[४१८] ८।५।३५ **हिरण्ययेन रथेन ।**
१।३५।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
हिरण्ययेन...रथेना ।
[४२१] ८।८।१ **आ नो विश्वाभिरूतिभिः ।**
(इन्द्रः २१८९) ७।२४।४ (मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । इन्द्रः)
(४३८) ८।८।१८= (५७४) ८।८७।३
आ वां विश्वाभिरूतिभिः ।
["] ८।८।१=(२८०) ५।७५।३ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
["] ८।८।१ = (५१) १।९२।१८
(गोतमो राहूगणः । अश्विनौ)
["] ८।८१ = (इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५
(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
[४२२] ८।८।२ (सप्तवंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नूनं यातमश्विना ।
(४५७) ८।९।१४ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
(५७६) ८।८७।५ (कृष्ण आङ्गिरसो शुभ्रीको वा वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
["] ८।८।२ = (४७) १।४७।९
[४२४] ८।८।४ = (४२८) ८।८।८
पुत्रः कण्वस्य वामिह (८ वामृषिः)।
[४२५] ८।८।५ (सप्तवंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नो यातमुपश्रुति ।
(इन्द्रः ४३५) ८।३४।११ (नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
आ नो याह्युपश्रुति ।
["] ८।८।५ अश्विना **सोमपीतये ।**
(५३५) ८।४२।६ नासत्या **सोमपीतये ।**
(इन्द्रः ३०९७-३०९९) ८।३८।७-९
(शावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
[४२६] ८।८।६ **जुहूरेऽवसे नरा ।**
१।४८।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
जुहूरेऽवसे महि ।
["] ८।८।६ = (५३०-५३२) ८।३५।२२-२४
आ यातमश्विना गतम् ।
["] ८।८।६ = (४१३) ८।५।३० **उपेमां सुष्टुतिं मम ।**
[४२७] ८।८।७ **दिवश्चिद् रोचनादधि ।**
१।४९।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
["] ८।८।७ **स्तोमेभिर्हवनश्रुता ।**
(इन्द्रः ३०५५) ६।५९।१०
(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
[४२८] ८।८।८ = (४३५) ८।८।१५ = (४३९) ८।८।१९
गीर्भिर्वत्सो अवीवृधत् ।
[४३०] ८।८।१० = (२६२) ५।७३।५
आ यद् वां योषणा (५ सूर्या) **रथमतिष्ठत् ।**
[४३१] ८।८।११ = (४०) १।४७।२ **रथेना यातमश्विना ।**
[४३२] ८।८।१२ = (३८७) ८।५।४ **पुरुमन्द्रा पुरूवसू ।**
["] ८।८।१२ = (२५) १।४६।२ **मनोतरा रयीणाम् ।**
[४३३] ८।८।१३ = ७।९४।३ **मा नो रीरधतं निदे ।**
(इन्द्रः ३०८१) ७।९४।३ (मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । इन्द्राग्नी)
[४३४] ८।८।१४ = (४५) १।४७।७
(प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
["] ८।८।१४ = (४०) १।४७।२
[४३६] ८।८।१६ (सप्तवंसः काण्वः । अश्विनौ)
वसूयाद् दानुनस्पती ।
१।१३६।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
आदित्या दानुनस्पती ।
२।४१।६ (गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)
आदित्या..... ।
[४३७] ८।८।१७ **आ नो गन्तं रिशादसा ।**
५।७१।१ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
[४३८] ८।८।१८ = (५७४) ८।८७।३ =
(४२१) ८।८।१ = (इन्द्रः २१८९) ७।२४।४
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
आ वां (८।८।१,७।२४।४ नो)**विश्वाभिरूतिभिः ।**
["] ८।८।१८ = (५७४)८।८७।३ =
(अग्निः १०३) १।४५।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
प्रियमेधा अहूषत ।

[४३८] ८।८।१८ **राजन्तावध्वराणाम् ।**
(अग्निः ८;१०३) १।१।८; १।४५।४ **राजन्तमध्वराणाम् ।**
(अग्निः ३८) १।२७।१ **सम्राजन्तमध्वराणाम् ।**
[४४४] ८।९।१ **प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिः ।**
१।४८।१५ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।
[४४६] ८।९।३ = (४५२) ८।९।९ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
एवेत् काण्वस्य बोधतम् ।
(४६६) ८।१०।२ (प्रगाथो घौरः काण्वः । अश्विनौ)
[४५६] ८।९।१३ **हुवेय वाजसातये ।**
(इन्द्रः २७९) ८।६।३७; (इन्द्रः ४२८) ८।३४।४;
(इन्द्रः १७४१) ५।३५।६ **हवन्ते वाजसातये ।**
(इन्द्रः ३३३०) ६।५७।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रापूषणौ)
हुवेम वाजसातये ।
(५७७) ८।८७।६ **विप्रासो वाजसातये ।**
[४५७] ८।९।१४ = (४२२) ८।८।२ = (५७६) ८।८७।५
आ नूनं यातमश्विना ।
[४६१] ८।९।१८ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
सं सूर्येण रोचसे ।
(सोमः १६) ९।२।६ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
.....**रोचते ।**
[४६६] ८।१०।२ =(४४६) ८।९।३ = (४५२) ८।९।९
[४६७] ८।१०।३ **देवेष्वाप्यम् ।**
१।१०५।१३ (त्रित आप्त्यः कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)
देवेष्वस्त्याप्यम् ।
[४७२] ८।२२।१ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी ।
(५९३) १०।३९।११ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)
[४७३] ८।२२।२ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ।
(इन्द्रः १८३६) ८।४६।२० (वशोऽश्व्यः । इन्द्रः)
[४७४] ८।२२।३ = (२५९) ५।७३।२ **इह त्या पुरुभूतमा ।**
[”] ८।२२।३ **अर्वाचीना स्ववसे करामहे ।**
(इन्द्रः २५४४) १०।३८।४ (मुष्कवानिन्द्रः । इन्द्रः)
अर्वाञ्चमिन्द्रमवसे करामहे ।
[”] ८।२२।३ = (३८८) ८।५।५ = (इन्द्रः ३३०) ८।१३।१०
गन्तारा दाशुषो गृहम् ।
[४७६] ८।२२।५ = (४११) ८।५।२८
(सप्तंसः काण्वः । अश्विनौ ।)
[४७६] ८।२२।५ = (४७) १।४७।९ **तेन नासत्या गतम् ।**
[४७९] ८।२२।८ **आ यातं सोमपीतये ।**
(इन्द्रः ३२२८) ४।४७।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
[”] ८।२२।८ **पिबतं दाशुषो गृहे ।**
(इन्द्रः ३२२५) ४।४६।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
[४८०] ८।२२।९ **रथे कोशे हिरण्यये .....।**
(मरुतः ८९) ८।२०।८ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)
[४८१] ८।२२।१० = (७१) १।११२।२०
(कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
[४८५] ८।२२।१४ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)
मा नो मर्ताय रिपवे वाजिनीवस् ।
(अग्निः १३९६) ८।६०।८ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
... **रिपवे रक्षस्विने ।**
[४८९] ८।२२।१८ **विश्वा वामानि धीमहि ।**
५।८२।६ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
(अग्निः १२६१) ८।१०३।५ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
[४९८] ८।२६।९ (विश्वमना वैयश्वः व्यश्वो वाङ्गिरसः । अश्विनौ)
वयं हि वां हवामहे ।
(५७७) ८।८७।६ (कृष्ण आङ्गिरसो युम्नीको वा वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
[५००] ८।२६।११ **सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
१।४०।५ (कण्वो घौरः । ब्रह्मणस्पतिः)
यस्मिन्निन्द्रो **वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
७।६६।१२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः)
यदोहते **वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
(इन्द्रः ३१८१; ३१९१) ७।८२।१०; ८३।१०
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
अस्मे इन्द्रो **वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
(अग्निः १२३९) येन चष्टे **वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
१०।३६।१ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
द्यावाक्षामा **वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
१०।६५।१,९ (वसुकर्णो वासुक्रः । विश्वे देवाः)
अग्निरिन्द्रो (९ इन्द्रवायू) **वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
१०।९२।६ (शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः)
तेभिश्चष्टे **वरुणो मित्रो अर्यमा ।**
[५०५] ८।२६।१६ = (४०१) ८।५।१८
युवाभ्यां भूत्वाश्विना ।
[५०९] ८।३५।१ **आदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।**
२।३१।१ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः ।)
[५०९-२९] ८।३५।१-२१ **सजोषसा उषसा सूर्येण च ।**

[५०९-११] ८।३५।१-३ सोमं पिबतमश्विना ।
[५११] ८।३५।३ = (२२) १।३४।११
(हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
[५१२-१४] ८।३५।४-६ विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।
[,,] ८।३५।४-६ इषं नो वोळ्हमश्विना ।
[५१५-१७] ८।३५।७-९ सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः ।
[,,] ८।३५।७-९ निर्वर्तियातमश्विना ।
[५१८-२०] ८।३५।१०-१२ प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।
[,,] ८।३५।१०-१२ ऊर्जं नो धत्तमश्विना ।
[५२१-२३] ८।३५।१३-१५ मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।
[,,] ८।३५।१३-१५ आदित्यैर्यातमश्विना ।
[५२४-२६] ८।३५।१६-१८ हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।
[,,] ८।३५।१६-१८ सोमं सुन्वतो अश्विना ।
[५२७-२९] ८।३५।१९-२१ इयावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
[,,] ८।३५।१९-२१ अश्विना तिरोअह्न्यम् ।
[५३०] ८।३५।२२ = (४९) १।९२।१६ = (३७९) ७।७४।२
अर्वाग् रथं (१।९२।१६; ७।७४।२ समनसा) नि यच्छतम् ।
[,,] ८।३५।२२ = (३७९) ७।७४।२ = (३९४) ८।५।११
= (४२१) ८।८।१ पिबतं सोम्यं मधु ।
(इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
(इन्द्रः १८०२) ८।२४।१३ (विश्वमना वैयश्वः । इन्द्रः)
पिबाति सोम्यं मधु ।
[५३०-३२] ८।३५।२२-२४ = (४२६) ८।८।६
= (३९) १।४७।१ आ यातमश्विना
गतमवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ।
[५३३] ८।३५।२३ विवक्षणस्य पीतये ।
(इन्द्रः ११) ८।१।२५ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
[५३३-३५] ८।४२।४-६ = (४२५) ८।८।५
नासत्या (८।८।५ अश्विना) सोमपीतये ।
(इन्द्रः ३०९७-९९) ८।३८।७-९ इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
[५३५] ८।४२।६ (नाभाकः काण्वः; अर्चनाना आत्रेयो वा । अश्विनौ)
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
नासत्या सोमपीतये ॥
(इन्द्रः ३०९९) (इयावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥
[५३७] ८।५७ (वाल० ९)।२ युवां देवास्रय एकादशासः ।
(सोमः ८१५) ९।९२।४ (कश्यपो मारीचः । सोमः)
विश्वे देवास्रय एकादशासः ।
[५३९] ८।५७ (वाल०९)।४ अयं वां भागो निहितो यजत्रा ।
(२०५) १।१८३।४ अयं वां भागो निहित इयं गीः ।
[५४०] ८।७३।१ = (३०) १।४६।७ युञ्जाथामश्विना रथम् ।
[५४०-५७] ८।७३।१-१८ अन्ति षद्भूतु वामवः ।
[५४४] ८।७३।५ = (२७७)५।७४।१० (पौर आत्रेयः। अश्विनौ)
[५४९] ८।७३।१० शृणुतं म इमं हवम् ।
२।४१।१३ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
= ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
शृणुता म इमं हवम् ।
(५५९) ८।८५।२ इमं मे शृणुतं हवम् ।
(इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ इन्द्राग्नी शृणुतं हवम् ।
[५५३] ८।७३।१४ = (इन्द्रः ३०६९) ६।६०।१४
आ नो गव्येभिरश्व्यैः ।
[५५७] ८।७३।१८ पुरं न धृष्णवा रुज ।
(सोमः १०३१) ९।१०८।६ वर्मेव धृष्णवा रुज ।
[५५८] ८।८५।१ = (२०६) १।१८३।५
आ मे हवं नासत्योप यातम् ।
[,,] ८।८५।१ = (२८०) ५।७५।३ = (४२१) ८।८।१
अश्विना गच्छतं युवम् ।
[५५८-६६] ८।८५।१-९ = (४७) १।४७।९
मध्वः सोमस्य पीतये ।
[५५९] ८।८५।२ = (५४९) ८।७३।१० =
(विश्वे देवाः) २।४१।१३ = (विश्वे देवाः) ६।५२।७
[५६१] ८।८५।४ शृणुतं जरितुर्हवम् ।
(इन्द्रः ३२७) ८।१३।७ शृणुधी--।
(इन्द्रः ३०८०) ७।९४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
[५६२] ८।८५।५ = (३९५) ८।५।१२ छर्दिर्यन्तमदाभ्यम् ।
[५६३] ८।८५।६ = (३८८) ८।५।५ = (४७४) ८।२२।३
[५६७-६९] ८।८६।१-३ ता वां विश्वको हवते तनूकृथे ।
[५६७-७१] ८।८६।१-५ मा नो वि यौष्टं सख्या सुमोचतम् ।
[५७३] ८।८७।२ (कृष्ण आङ्गिरसो धुम्रीको वा वासिष्ठः प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
पिबतं घर्मं मधुमन्तमश्विना बर्हिः सीदतं नरा ।
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।
(५७५) ८।८७।४ पिबतं सोमं... सीदतं सुमत् ।
(६०९) १०।४०।१३ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।
[,,] ८।८७।२ = (४६) १।४७।८ आ बर्हिः सीदतं नरा ।
[५७४] ८।८७।३ = (इन्द्रः २१८९) ७।२४।४
= (४२१) ८।८।१ = (४३८) ८।८।१८

[५७४] ८।८७।३ = (अग्निः १०३) १।४५।४ = (४३८)८।८।१८ प्रियमेधा अङ्गिरसः ।
[५७५] ८।८७।४ = (४६) १।४७।८ = (५७३)८।८७।२ = (अग्निः १९२४) १।१४२।७
[५७६] ८।८७।५ = (४२२)८।८।२ = (४५७) ८।९।१४ आ नूनं यातमश्विना ।
[,,] ८।८७।५ = (इन्द्रः ३३१) ८।१३।११ अश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः ।
[,,] ८।८७।५ = (५१) १।९२।१८ = (२७९)५।७५।२ = (३९४) ८।५।११ = (४२१) ८।८।१
[,,] ८।८७।५ = (४१) १।४७।३ = (मित्रावरुणौ) ३।६२।१८ = (मित्रावरुणौ) ७।६६।१९
[५७७] ८।८७।६ = (५९८) ८।२६।९ वयं हि वां हवामहे ।
[५७८] ८।१०१।७ प्रति हव्यानि वीतये ।
८।१०१।१० (जमदग्निर्भार्गवः । वायुः)
[५७९] ८।१०१।८ गृणाना जमदग्निना ।
३।६२।१८ (विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
७।९६।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सरस्वती)
गृणाना जमदग्निवत् ।
(सोमः ४४१) ९।६२।२४ गृणानो जमदग्निना ।
(सोमः ५३२) ९।६५।२५ भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[५८६] १०।३९।४ = (इन्द्रः ७५७) १।५१।१३ = (इन्द्रः ९९६) ८।१००।६ विश्वेत् ता वां (ते) सवनेषु प्रवाच्या ।
[५८९] १०।३९।७ = (१२१) १।११७।२० न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् (२० योषाम्) ।
[५९२] १०।३९।१० = (१३५) १।११८।९ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
[५९३] १०।३९।११ = (४७२) ८।२२।१ यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी ।
[५९५] १०।३९।१३ = (५९) १।११२।८ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
[५९६] १०।३९।१४ अतक्षाम भृगवो न रथम् ।
(इन्द्रः १४८६) ४।१६।२० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः) ब्रह्मकर्मा भृगवो न रथम् ।
[६०९] १०।४०।१३ = (५७३) ८।८७।२ ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।
[६१२] १०।४१।२ विशो येन गच्छथो यज्वरीर्नरा ।
(३४८) ७।६९।२ विशो येन गच्छतो देवयन्ताः ।

"अश्विनौ--देवता--"

मन्त्रान्तर्गतानां उपमानां सूची।



अंशा इव १०,१०६,९; ६१२ नः भजतं चित्रमग्नः।
अक्षरा इव १,३४,४; १५ त्रिः पृक्षो अस्मे पिन्वतम्।
अक्षी इव २,३९,५; २१९ चक्षुषा यातमर्वाक्।
अग्निर्न चित इद्धः१,११२,१७; ६८ जठरस्य मज्मना पठर्वा।
अग्निरिव देवयोः १०,१०६,३; ६१६ दीदिवांसा।
अग्निम् उषाम् न १,१८१,९; १९३ जरते हविष्मान्।
अजा इव २,३९,२; २१६ यमा परमा सचेथे।
अत्कम् न ५,७४,५; २७२ वह्निं प्र मुञ्चथः।
(यथा) अत्रिः ८,४२,५; ५३४ विप्रः अजोहवीत्।
अत्रेः इव ८,३५,१९; ५२७ पूर्व्यस्तुतिं शृणुतम्।
अध्वगौ इव ८,३५,८; ५१६ सुतं सोमं पतथः।
अपः न १,१८०,४; १७८ क्षोदोऽवृणीतमेषे।
अपः न स्तर्यम् ७,६८,८; ३४५ अघ्न्याम् अपिन्वतम्।
अपसा इव वस्रा १०,१०६,१; ६१४ धियः वि तन्वाथे।
अभ्रिया इव वातः १,११६,१; ७७ सोमान् इयर्ना।
अवनिः न १,१८१,३; १८७ प्रवत्वान् सुविताय गम्याः।
अश्वम् न १,११७,४; १०५ गूळहम् रेभं सं रिणीथः।
अश्वम् न १०,१४३,१; ६२७ अग्निं अर्थं यातवे कृणुथः।
अश्वम् न वाजिनम् १०,१४३,२; ६२८ अरेणवो यमत्नत।
अस्तम् इव १,११६,२५; १०१ जरिमाणं जगम्याम्।
आत्मा इव वातः १,३४,७; १८ तिस्रः [वेदीः] गच्छतम्।
आरुक्रा इव १०,१०६,१०; ६२३ मधु पुरयेथे।
इर्या इव १०,१०६,४; ६१७ पुष्टये।
इन्द्रो न शक्तिम् ४,४३,३; २४६ ईवतो धृष्णू।
इन्द्रमिव चर्षणीसहम् १,११९,१०; १४७शर्यैरभिद्युं चर्कृत्यम्।
उग्रा इव रुचा १०,१०६,४; ६१७ हवम् आ गमिष्टम्।
उत्सं न १०,१४३,६; ६३२ समस्मे भूषतम्।
उदन्यजा इव १०,१०६,६; ६१९ जेमना मदेरू।
उपधी इव २,३९,४ २१८ नः पारयतम्।
उष्टारा इव १०,१०६,२; ६१५ फर्वरेषु श्रयेथे।
ऊ न १०,१०६,७; ६२० खरमज्रा।
एतग्वा चित् न ७,७०,२; ३५६ समुद्रान् सरितः पिपर्ति।
ओष्ठौ इव २,३९,६; २२० आस्ने मधु वदन्ता।
कनीन इव जारः १,११७,१८; ११९ चक्षदानः शतमेकं च।
कर्णा इव १०,१०६,९; ६२२ शासुः अनु हि स्मरथः।
कर्णौ इव २,३९,६; २२० सुश्रुता भूतमस्मे।
काराधुनी इव १,१८०,८; १८२ प्रशस्तः चितयत्सहस्रैः।
कार्ष्मं इव १,११६,१७; ९३ अतिष्ठदर्वता जयन्ती।
किरणा इव १०,१०६,४; ६१७ भुज्यै (भवथः।)
कीनारा इव १०,१०६,१०; ६२३ स्वेदं आसिष्विदाना।
कुत्सः न १०,४०,६; ६०२ जरितुर्नशायथः।
क्रिविः न सेके ८,८७,१; ५७२ स्तोमः आ गतम्।
क्षम्म इव १०,१०६,७; ६२० मरायु अर्थेषु तर्तरीथः।
क्षामा इव २,३९,७; २२१ नः रजांसि समजतम्।
क्षामा इव सूयवसात् १०,१०६,१०; ६२३ ऊर्जा सचेथे।
क्षोत्रेण इव २,३९,७; २२१ गिरः स्वधितिं सं शिशीतम्।
खृगला इव २,३९,४; २१८ विस्रसः अस्मान् पातम्।
गावः न ऊधभिः ८,९,१९; ४६२ अंशवः (ऊधभिः) दुहे।
गृध्रा इव वृक्षम् २,३९,१; २१५ निधिमन्तम् अच्छ।
गोः न सेके १,१८१,८; १९२ पीपाय मनुषो दशस्यन्।
गौरा इव विद्युतम् ७,६९,६; ३५२ तृषाणा सवनोप यातम्।
(यवसम् अनु) गौरौ इव ५,७८,२; २९८ आगच्छतम्।
गौरौ इव ईरिणे ८,८७,१; ५७२ मध्वः सुतस्य पातम्।
गौरौ इव ईरिणम् ८,८७,४; ५७५ सुष्टुतिम् उप गन्तम्।
(दळहं) ग्रन्थिम् न १०,१४३,२; ६२८ अग्रिम् वि ष्यतम्।
प्रावाणा इव २,३९,१; २१५ तत् अर्थं जरेथे।
घर्मा इव १०,१०६,८; ६२१ जठरे मधु सनेरू।
चक्रवाका इव २,३९,३; २१७ वस्तोः प्रति अर्वाञ्चा यातम्।
(कांपया) जरणा इव १०,४०,३; ५९९ वस्तोः वस्तोः प्रातः।
जरतोः इव पुराणवत् ८,७३,११; ५५० अन्ति षद्भूतु।
(युगा) जूर्णा इव १,१८४,३; २१० वक्ष्यन्ते वां ककुहा।
तन्यतुः न वृष्टिम् १,११६,१२; ८८ सनये दंस उग्रम्।

(रेभन्छिछन्नं यथा) तृणम् अथ०६,१०२,१; ६४८ मनः मयि।
दम्पती इव २,३९,१; २१६ ऋतुविदा जनयु।
दिव्यासः न गृध्राः १,११८,४. १३० अप्तुरः अभि प्रयः।
दिशं न दिष्टाम् ऋजूयेव १,१८३,५; २०६ मे हवं उपयातम्।
दूतः न ६,६३,१; ३१७ स्तोमोऽविदन्नमस्वान्।
दूतः न ७,६७,१; ३२८ रथः अजीगः।
(यथा) दूतः ८,५,३; ३८६ तथा वाचम् ऊहिषे।
दूता इव १,३९,१; २१५ हव्या जन्या पुरुत्रा।
दूता इव १०,१०६,१; ६१५ जनेषु यशसा स्थः।
(यथा चक्रुः) देवासुराः अथ०६,१४१,३; ६५२ सहस्रपोषाय।
(दिवि) द्याम् इव अथ०६,६९,३; ६७६ तत् (वर्चः) मयि।
द्रापिम् इव १,११६,१०; ८६ वह्निं प्रामुञ्चतं व्यवनात्।
द्वारा इव ८,५,२१; ४०४ अप वर्षथः।
धेनुः इव ८,२२,४; ४७५ सुमतिः अस्मान् अच्छ।
ध्रुवसे न योनिम् ७,७०,१; ३५५ यत् (अश्वं) आ सेदथुः।
नद्या इव २,३९,५; २१९ युवां रीतिः।
नभः न ८,९,८; ४५१ स्तोमाः वां आ चुच्यवीरत।
नभ्या इव २,३९,४; २१८ नः पारयतम्।
नावा इव २,३९,४; २१८ नः पारयतम्।
नासा इव २,३९,६; २२० नः तन्वो रक्षितारा भूतम्।
निथं न सूनुम् १०,३९,१४; ५९६ वां स्तोमं न्यमृक्षाम।
निधिम् इव अपगूळ्हम् १,११६,११, ८७ उद् दर्शत वृषथुः
निवना इव सिन्धवः १०,४०,९; ६०५ आस्यै रीयन्ते।
निष्कृतम् न योषणा १०,४०,६; ६०२ मधु आसा भरत।
नृपती इव १० १०६,४; ६१७ तुर्यै।
नैतोशा इव १० १०६,६; ६१९ तुर्फरी पर्फरीका।
पृश्ना इव १०,१०६,७; ६२० चर्चरम्।
पतरा इव १०.१०६,८; ६२१ चचरा।
(वृक्षं) परशुमान् इव ८.७३,१७; ५५६ अश्विना...।
परिज्मना इव १०,१०६,३; ६१६ पुरुत्रा यजथः।
पर्णा मृगस्य पतरोः इव १ १८२,७; २०० श्रोमताय कम्।
पशुं न नष्टमिव १,११६,२३; ९९ दर्शनाय विष्णापत्नं ददथुः।
पश्वा इव १०,१०६,३; ६१६ चित्रा यजुः आ गमिष्टम्।
पादा इव २,३९,५; २१९ तन्वे शम्भविष्ठा।
पादा इव १०,१०६,९; ६२१ गाधं तरते।
पिता इव ८,२२,१५; ४८६ हुवे।
पितरा इव ३.५८,२; २२७ मेधाः ऊर्ध्वा भवन्ति।
पितरा इव पुत्रा १०,१०६,४; ६१७ आपी वो अस्मे।
(यथा) पितुः ८,८६,४; ५७० सुमतिः स्वादिष्ठा।
पितुः न नाम १०,३९,१; ५८३ सुहवं हवामहे।
पुत्रम् इव पितरौ १०,१३१,५; ६२६ अवथुः काव्यैः।
पुत्राय पितरा इव १०,३९,६; ५८८ मह्यं शिक्षतम्।
पुंस् न ८,७३.१८; ५५७ आ रुज।
पूर्वगत्वा इव सख्ये ७,६७.७; ३३४ निधिर्हितः माध्वी।
पूषा इव १,१८१,९; १९३ पुरन्धिः हविष्मान् जरते।
प्रधी इव २,३९.४; २१८ नः पारयतम्।
प्रवृक्तम् १,११६ १४; १०० विप्रुतं रेभं उदनि उक्षिन्यथुः।
प्रायोगा इव १०,१०६,२; ६१५ श्वात्र्या शासुः आ इयः।
बर्हिः इव १,११६,१; ७७ प्र वृञ्जे स्तोमान्।
बृहन्ता इव १० १०६ ९; ६२२ गम्भनेषु प्रतिष्ठाम्।
ब्रह्मा इव अथ० ६,५०,२; ६४४ स्थितं हविः।
ब्रह्माणा इव २,३९,१; २१५ (युवां) विदथे उक्थशासा।
भृगवः न १०,३९.१४; ५९६ रथम् अतक्षाम।
मक्षः मक्षवः न ४,४५ ४; २४० सवनानि गच्छथः।
(यथा) मक्षा इदं अथ० ९ १ १७; ६८७ वर्चः तेजः।
(यथा) मधु मधुकृतः अथ० ९ १,१६; ६८६ वर्चः।
मनन्या न १०,१०६,८; ६२१ मनऋङ्गा जरमी।
मनुषः न होता १,१८०.९; १८३ प्र स्पन्द्रा याथः।
मनुष्वत् १,४६,१३; ३६ शम्भू आ गतम्।
(यथा चक्रुः) मनुष्याः अथ० ६,१४१.३; ६५२ सहस्रपोषाय।
मर्यं न योषा १०,४०.२; ५९८ कृणुते सधस्थ आ।
महिषा इव ८,३५,७-९; ५१५-५१७ सुतं सोमं अव गच्छथः।
महिषा इव अवपानात् १० १०६ २; ६१५ पानात् मा।
मित्रा इव ऋता १० १०६ ५ ६१८ शतरा शातपन्ता।
मित्रासः न ३,५८,४; २२९ प्र ददुः उस्रो अग्रे।
मृगा इव वारणा १०,४०,४; ६०० दोषा वस्तोर्हविषा।
(यथा) मेधिराः आहुवन्त ८,४१ ६; ५३५ एवा वामह्वे।
मेने इव २,३९ २; २१६ तन्वा शुम्भमाने।
मेषा इव १०,१०६,५; ६१८ इषा सपर्या पुरीषा।
युगा इव २,३९,४; २१८ नः पारयतम्।
युवशा इव कन्यनाम् ८,३५,५; ५१३ इह स्तोमं जुषेथाम्।
योनिः सूष्यन्त्याः इव ५,७८,५; ३०१ व जिह्रीष्व वनस्पते।
(नाधमाना इव) योषा ५,७८.४; ३०० अग्निर्यद् वाम०।
योषणां न मर्ये १०.३९,१४; ५९६ न्यमृक्षाम स्तोमं वाम्।
रथाः इव ७,७४,६; ३८३ प्र ये ययुः अधृक्षामः।
रथम् न १,११९,७; १४४ वन्दनं निर्ऋतं जरण्यया।
रथम् न १०,१४३ १; ६२७ अग्निं नवं कृणुथः।
रथान् इव ५,७३,१०; २६७ ब्रह्माणि तक्षाम।
रथ्या इव २,३९,२; २१६ वीरा वरं आ सचेथे।
रथ्या इव २,३९,३; २१७ शक्रा अर्वाञ्चा यातम्।

रथ्या इव चक्रा १,१८०,४; १७८ प्रति यन्ति मध्वः ।
रयिं न कश्चित् १,११६,३; ७९ तुग्रो भुज्युं मम्रुवान् ।
रश्मीन् इव ८,३५,२१; ५२९ अध्वरान् उप सृजतम् ।
राजपुत्राः इव १०,४०,३; ५९९ सवना अव गच्छथः ।
राजाश्वः पृष्ट्यामिव अथ० ६,१०२,२; ६४८ खिदामि ते ।
(शुभे) रुक्मं न १,११७,५; १०६ दर्शतं निखातम् उदूपथुः ।
वंसगा इव पूषर्या १०,१०६,५; ६१८ पूषर्या शिम्बाता ।
वचसं न मन्तवे १,११२,२; ५३ सुभरा रथमा तस्थुः ।
(अधिवस्त्रा) वधूः इव ८,२६,१३; ५०२ यः यज्ञेभिः आवृतः ।
(यथा वर्चस्वतीं) वाचं अथ० ९,१,१९; ६८८ सारघेण मा ।
(यथा भगस्वतीं) वाचं अथ० ६,६९,२; ६७५ ,, ,,
वाजा इव १०,१०६,५; ६१८ उच्चा वयसा घर्म्येष्ठा ।
वातः न १,१८० ६; १८० सूरिः प्रेषत् वेषत् ।
(यथा) वातः पुष्करिणीं ५,७८,७; ३०३ एवा ते दशमास्यः ।
(यथा) वातः वनम् ५,७८ ८; ३०४ एवा त्वं दशमास्य ।
वाता इव २,३९,५; २१९ युवम् अजुर्या ।
वायुः न १०,१०६,७; ६२० पर्फरत् ।
(यथायं) वाहः समैति अथ०६,१०२,१; ६४७ एवा मामभि ।
विः न पर्णैः १,१८३,१; २०२ सुकृतः त्रिधातुना उपयाथः ।
विधवा इव देवरम् १०,४०,२; ५९८ को वां शयुत्रा ।
विषुद्रुहा इव ८,२६,१५; ५०४ गिरा यज्ञम् ऊ॰थुः ।
वृषभः न १,१८१,६; १९० निष्पाट् पूर्वीः इषः प्र चरति ।
वेः इव अच्छेदि पर्णम् १,११६,१५; ९१ आजा खेलस्य ।
शंयू इव १०,१४३,६; ६३२ मंहिष्ठा ।
शकुनस्य इव पक्षा १०,१०६,३; ६१६ साकंयुजा ।
शफौ इव २,३९,३; २१७ जभ्रुराणा तरोभिः ।
शासुः इव १,११६,१३; ८९ वध्रिमत्याः तत् श्रुतम् ।
शूरो न अज्म पतयद्भिः १,१५८,३; १७१ उप वाम्...गमेयम् ।
श्रद्धा इव २,३९,३; २१७ नः प्रथमा गन्तमर्वाक् ।
श्येना इव ८,७३,४; ५४३ कुह पेतथुः ।
श्येना इव ५,७४,९; २७६ विचेतसा विभिः दीयतम् ।
श्येनौ इव ८,३५,९; ५१७ सुतं सोमं पतथः ।
श्रुष्टीवा इव प्रेषितः ७,७३,३; ३७५ प्रेषितः वां अबोधि ।
श्रुष्टीवाना इव १०,१०६ ४; ६१७ हवम् आ गमिष्टम् ।
श्वाना इव २,३९,४; २१८ नः अविष्यता तनूनाम् ।
(यथा) समुद्रः एजति ५ ७८,८; ३०४ एवा त्वं...अवेहि ।
सर्गान् इव ८,३५,२०; ५२८ सुष्टुतीः उप सृजतम् ।
सारघा इव १०,१०६,१०; ६२३ नीचीनबारे गवि मधु ।
सिंहम् इव दुहस्पदे ५,७४,४; २७१ यदीं ...जिन्वथः ।
सुदिना इव पृक्षः १०,१०६,१; ६१४ पृक्ष आ तंसयेथे ।
सुव्रतः न १,१८०,६; १८० सूरिः वाजं मघे आ ददे ।
सुषुप्वांसं न निक्तेरुपस्थे १,११७,५; १०६ तमसि क्षियन्तम् ।
सूनुः न पितरा ७,६७,१; ३२८ वां अच्छा विवक्मि ।
(पिता) सूनवे इव । वा०अ० १४,३; ६३६ त्वं सुशेवा एधि ।
सूर्यम् न १,११७,५; १०६ तमसि क्षियन्तं वन्दनाय ।
सृण्या इव जर्भरी १०,१०६,६; ६१९ जर्भरी तुर्फरीतू ।
सोमं इव स्रुवेण १,११६ १४; १०० उदनि.. उक्षिन्यथुः ।
सोमम् न १०,३९,२; ५८४ मघवत्सु...कृतम् ।
(यथा) सोमः प्रातःसवने अथ०९,१,११; ६८५ एवा मे वर्चः ।
स्तनौ इव २,३९,६; २२० नः जीवसे पिप्यतम् ।
स्वर् न ,, ४,४५,२; २३८ / ४,४५,६; २४२ शुक्र तन्वन्त आ रजः ।
हंसौ इव ५,७८,१-३; २९७-२९९ सुतान्...आ पततम् ।
हंसौ इव ८ ३५,८; ५१६ सोमम् पतथः ।
हरिणौ इव अनु यवसम् ५,७८,२; २९८ सुतान्...आ पततम् ।
हस्ता इव २,३९,७; २२१ शक्तिं अभि संददी नः ।
हस्तौ इव २,३९,५; २१९ तन्वे शम्भविष्ठा ।
हारिद्रवा इव वना इत् ८,३५,७; ५१५ सुतं सोमं उप पतथः ।
हिरण्या इव वाससः १,३४,१; १२ युवोः हि यन्त्रम् ।
हिरण्यं प्रति १,४६,१०; ३३ सूर्यः व्यरुचत् ।
हिरण्यस्य इव कलशम् १,११७,१२; ११३ कूपे...उदूपथुः ।
हारः न १,१८०,३; १७७ शुचिर्यजते हविष्मान् ।

अश्विनौ-देवताया गुणबोधक-पदसूची।

['अश्विना-नौ' इति द्विवचनान्तं पदम्, अतस्तद्बोधकपदान्यपि द्विवचनान्तानि वर्तन्ते।]

अङ्गिरस्वन्ता ८,३५,१४; ५१२
अजरौ १,११२,९; ६०
अतूर्तदक्षा ८,२६ १; ४९०
अदाभ्या ५,७५,७-८; २८४-२८५
अधप्रिया ८,८ ४; ४२४
अध्रिगू ५,७३,२; २५९। ८,२२,११; ४८२
अध्वर्यन्ता १,१८१,१; १८५
अनपच्युता ८,२६,७; ४९६
अनिन्द्या १,१८०,७; १८१
अनुशासिता १,१३९,४; १६१
अभ्यायंसेन्या १,३४,१; १२
अमर्त्या ८,२६,१७; ५०६
अरिप्रा ८,८,९; ४२९
अरेपसा १,१८१,४; १८८। ५,७३,४; २६१
अर्वाचीना ५,७४,९; २७६। ८,२२,३; ४७४
अवद्यगोहना १,३४,३; १४
अविता जनानाम् १,१८१,१; १८५
अश्नन्तौ ८,५,३१; ४१४
अश्वामघा ७,७१,१; ३६१
अस्मयू ७,७४,४; ३८१। ८,२६,१४; ५०३
अस्रिधा ३,५८,७; २३२
अहर्विदा ८,५,९,२१; ३९२, ४०४
आजाता दिवः ४,४३,३; २४६
आशुहेषसा ८,१०,२; ४६६
इन्द्रतमा १,१८२,२; १९५
इषयन्ता ८,५,५;२६,३; ३८८,४९२
ईळिता विमदेन १०,२४,४; ५८०
उग्रा १,१५७,६; १६८। ६,६२,३; ३०८। १०,१०६,७; ६२०
उपस्तुता १,१८१,७; १९१
उभा १,४६,१५; १२०,१२; ३८,१५९। ८,८६,१; १०१,७; १३१,५; ५६७,५७८,६२६
उस्रा १,३९,३; २१७
ऋतासू १,१८०,३; १७७
ऋतावृधा १,४७,१,३,५; ३९ ४१,४३। ८,८७,५; ५७६
ऋभुमन्ता ८,३५,१५; ५२३
कवी १,११७,२३; १२४। ८,८,२,५,२३; ४२१,४२५, ४४३। १०,४० ६; ६०२
क्रतुमन्ता १,१८३ २; २०३
क्रतुविदा २,३९,२; २१६
गन्तारा दाशुषो गृहम् ८,५,६;२२,३; ३८८,४७४
गम्भीरचेतसा ८,८,२; ४२२
गृणाना जमदग्निना ८,१०१,८; ५७९
गोपा १०,४०,१२; ६०८
गोमघा ७,७१,१; ३६२
चक्रमाणा यज्ञम् आ ६,६२,७; ३०७
चरन्ता कामप्रेणेव मनसा १,१५८,२; १७०
चित्ररातो ६,६२,५,११; ३१०,३१६
च्यवाना ६,६२,७; ३१२
छर्दिष्पौ ८,९,११; ४५४
जगत्पौ ८,९,११; ४५४
जर्भुराणा २,३९,३; २१७
जाता अप्सु १,१८४,३; २१०
,, इहेह १,१८१,४; १८८
जुजुषाणा गिरः ७,६८,१; ३३८
,, ब्रह्म स्तोमम् २,३९,८; २२२
जुषाणा ५,७५,३; २८०
,, उख्यस्य केतुं प्रथमम् वा० य० १४,१; ६३४
,, गिरः १,१८,१०; १३६
,, तिरोअह्नयम् ३,५८,७; २३२
,, सुष्टुतिम १,११८,७; १३३
जुहुराणा आ ८,२६,५; ४९४
जेन्यावसू ७,७४,३; ३८०
तनूपा ८,९,११; ४४९
तिरोअह्नयं जुषाणा ३,५८,७; २३२
तृषाणा विद्युतम् ७,६९,६; ३५२
दंसिष्ठा १,१८२,२; १९५। १०,१४३,३; ६२९
दक्षपिता वा० य० १४,३; ६३६
दधाना यामम् ७,६९,२; ३४८
दशस्यन्ता ६,६२,७; ३१२। ८,२२,६; ४७७
दस्रा १,३,३; ३। ३०,१७-१८; ९-१०। ४६,२; २५। ४७. ३,६; ४१,४४। ९२,१८; ५१। ११६,१०,१६; ८६,९२।

१,११७,५,२०-२२; १०६, १२१-१२३। ११८,३.६; १२९.१३२। ११९,७; १४४। १२०.४; १५१। १३९, ३-४; १६०-१६१। १५८, १। १६९। १८२,२-३; १९५-१९६। १८३,४-५; २०५-२०६। ३.५८,३,५; २२८,२३०। ४,४३,४; २४७। ४४.६; २५६। ५,७५.२.९; २७९.२८६। ६.६२,५; ३१०। ७ ६८,१; ३३८। ६९,३; ३४९। ८,५,२,११; ३८५, ३९४। ८,१; ४२१। २२.१७; ४८८। २६,८; ४९७। ८६,१; ५६७। ८७,५-६; ५७६-५७७। १०,४४, १४;६१०

दानुनस्पती ८,८,१६; ४३६

दिवः आजाता ४.४३,३; २४६

दिवि स्पृशा १,२२,२; ६

दिवो नपाता १,११७,१२; ११३। १८२,१; १९४। १८४, १; २०८। ४.४४.२; २५२

दिवो नरा १०,१४३,३; ६२९

दिव्या ४,४३,३; २४६

दीद्यग्नी १,१५,११; ४। ८,५७.२; ५३७

देव ८,९,६; ४४९। (छान्दसः ह्रस्वः)

देवा-वौ १,२२,२; ६। २४,२; २५। १८४.३; २१०। ४. १५,९-१०; २३५-२३६। ५,७४,१-२; २६८-२६९। ७,६७,५; ३३२। ७४,४; ३८१। ८,२२,३; ४७४। ५७.१; ५३६। १०,२४,६; ५८२। साम० ३०५; ६४१। वा० य० २१.५३; ६६४

देवौ १०,१८४,२; ६८७। ८,३५.४-६; ५१२-५१४

द्रवत्पाणी १,३,१; १

धर्तारा विदथस्य अथर्व ७,७३,४; ६८२

धर्मवन्ता ८,३५,१३; ५२१

धियंजिन्वा १.१८२ १; १९४। ८,२६,६; ४९५

धिष्ण्या १,३,२; २। १८२,१-२; १९४-१९५। २,४१.९; २२५। ५,६३.६; ३२२। ७,६७,१; ३२८। ७२,३; ३७०। ८,५,१४; ३९७। २६,१२; ५०१

धीजवना ८,५,३५; ४१८

नपाता दिवः ४.४,२; २५२

नरा १,३,२; २। ४६,४; २७। ४७ ८; ४६। ११२,३, १६; ५४,६७। ११६ ७,११-१२; ८३,८७-८८। ११७, ३-४ ६-७,१८,२४; १०४-१०५,१०७-१०८,११९,१२५। २१८.५,१०; १३१,१३६। १८२,८; २०१। १८३, ३; २०४। १८४,२; २०९। २,३९,६; २२२। ३,५८, ६,२३१। ५,७३,६-७; ६६३-२६४। ५,७५,६; २८३। ६,६२,१; ३०६। ६३.५; ३२१। ६९.६; ३५२। ७४,२ ४; ३७९,३८१। ८ ५,१६,२२; ३९९,४०५। ८,८,५-६,१७,२०-२१; ४२५-४२६,४३७,४४०-४४१। २२,८ १२,१७; ४७९,४८३,४८८। २६.४,११, १६; ४९३,५००,५०५। ३५,२३; ५३१। ८५,४-५; ५६१-५६२। ८७.१-२; ५७२-५७३। १०१,८; ५७२। १०,४०.१,३-५; ५९७,५९९-६०१। ४१,२; ६१२। १४३.३-४,६, ६२९-६३०,६३२

नवेदसा १,३४,१; १२

नव्यौ १०,३९,५; ५८७

नाना जातौ ५,७३,४; २६१

नासत्या १.३,३; ३। ३४,७,९-१०; १८.२०-२१। ४६,५; २८। ४७,७.९; ४५,४७। ११६ १-२,४,९-१०, १३,१६-१७,१९-२० २२ २३; ७७-७८,८०,८५ ८६, ८९.९२--९३,९५--९६,९८--९९ । ११७,१,१३,२३; १०२,११४,१२४। १.८,४,११; १३०,१३७। १८०, ९; १८३ । १८२,८; २०१। १८३, ३, ५; २०४, २०६। १८४,१,३,५; २०८,२१०.२१२। २,४१,७; ३२३। ३.५८,७; २३२। ४,४३,७; २५०। ४४, ४,७; २५४, २५७ । ५,७३,६-७; २६३--२६४। ७५,६; २८३। ६ ६२,१; ३०६। ६३.५; ३२१। ७,६९,६; ३५२। ७४,२,४; ३७९,३८१। ८.५,१६, २२; ३९९,४०५। ८.५,६,१७,२०-२१: ४२५-४२६, ४३७,४४०-४४१ । २२,८, १२,१७; ४७९,४८३, ४८८ । २६.४,११,१६; ४९३,५००,५०५। ३५,२३; ५३१।

नासत्या- ल्यौ ५,७४.२; २६९। ७५,७; २८४। ७८,१; २९७। ६,६३.१,४.७,१०; ३१७,३२०,३२३,३२६। ७.६७.३; ३३०। ७० ६; ३६०। ७१,४; ३६५। ७२, २-३ ५; ३६९ -३७०,३७२। ७३,२,५: ३७४.३७७। ७४,५; ३८२। ८,५ २३,३२,३५; ४०६,४१५ ४१८। ८,१४-१५; ४३४-४३५। ९,६ ९,१५; ४४९,४५२, ४५८। २२,५; ४७८। २६,२,८। ४९१,४९७। ४२, ४-६; ५३३--५३५। ५७,१,४; ५३६,५३९। ८५,१, ९; ५५८.५६६। १०१,७; ५७८। १०.२४,४-५; ५८०-५८१। ३९,३,५; ५८५,५८७। १४३,५; ६३१

निचेतारा १,१८४.२; २०९

नृपती ७ ६७,१; ३२८। ७१,४; ३६५

परस्या ८,९.११; ४५४

परिज्मानौ १,४६,१४; ३७

पिप्रतौ मदे सोमस्य १,४६,१२; ३५
पुनर्मन्यौ १,११७,१४; ११५
पुराजा ७,७३,१; ३७३
पुरुतमा ७,७३,१; ३७३
पुरुत्रा १,३९,१; २१५। ७,६९,६; ३५२। ८,५,१६; ३९९। ८,२२; ४४२
पुरुदंससा १,३,१; २। ६,६३,१०; ३२६। ८,९,५; ४४८। ८७,६; ५७७
पुरुदंसा ७ ७३,१; ३७३
पुरुपन्था ६,६३,१०; ३२६
पुरुप्रिया ८ ५,४; ३८७
पुरुभुजा १,३.१,१। ५,७३,१; २५८। ६,६३.५,८; ३२१, ३२४। ८,८,१७; ४३७। १०,६; ४७०। ८६,३; ५६९
पुरुभू ४,४४,४; २५४
पुरुभोजसा ८,२१,१६; ४८७
पुरुमन्तू १,१५८,१; १६९
पुरुमन्द्रा ८.५,४; ३८७। ८,१२; ४३२
पुरुशाकतमा ६,६२,५; ३१०
पुरुश्चन्द्रा ८,५,३२; ४१५
पुरुस्पृहा ८,८,२२; ४४२
पुरुहूता ६,६३,१; ३१७
पुरू ५,७३,१; २५८। ६,६२,२; ३०७
पुरूवसू १,४७ १०; ४८। ८,५,४; ३८७। ८,१२, ४३२
पौर [एकवचनम्] ५,७४,४; २७१
प्रचेतसा यज्ञस्य अध्वरस्य ८,१०,४; ४६८
प्रत्ना ६,६२,५; ३१०
प्रथमा १,३९.३; २१७। ५,७७,१; २९२
प्रातर्यावाणा २,३९,२; २१६। ५,७७,१ २९२
प्रातर्युजा १,२२,१; ५
प्रिया अर्यम्णः १०,४०,१२; ६०८
प्रियमेधा ८,८,१८; ४३८
प्रेष्ठा ६,६३,१; ३१७
प्रेष्ठौ १,१८१,१; १८५
बिभ्रता पुरु दंसांसि ५.७३,२; २५९,
बिभ्रतौ रत्नानि ५,७५,३; २८०
भिषजा १,११६,१६; ९२। १५७,६; १६८। ८,८६,१; ५६७। १०,३९.३,५; ५८५.५८७। वा०य० २१,५२; ६६३
भिषजा देवानाम् वा० य० २१,५३; ६६४
,, दैव्या ८,१८,८; ४७१
भुजी ८ ८,१; ४२१
भुरणा ७,६७,८; ३३५
भुरण्यू ६,६१,७; ३१२
मंहिष्ठा ८,५,५; ३८८। १२.१२; ४८३। १०,१४३ ६; ६३१
मघवान. १.१८४,५; २.१। ३,५८ ५; २३०। ८,२६,७; ४९६
मदच्युता ८,२२.१६; ४८७। ३५,१९-२१; ५२७-५२९
मदन्ता १,१८४,२,५; २०९,२१२
मधुपौ १,१८०,२; १७६
मधुपातमा ८,२२,१७; ४८८। ३५,२०-२१; ५२८-५२९
मधुमत् १,११९,९; १४६
मधुवर्णा ८ २६,६; ४९२
मधूयुवा ५ ७३ ८; २६५। ७४ ९; २७६
मनावसू ५,७४,१; २६८
मनोजवसा १,११७,१५; ११६। ८,२२,१६; ४८७
मनोतरा रयीणाम् १,४६.२; २५। ८,८,१२; ४३२
मन्दसाना ८,८७,२; ५७३। १०,४०.१३; ६०९
मयोभुवा १ ९२,१८; ५१। ५.७३,९; २६६। ८,८ ९,१९; ४२९,४३९। ८६,१; ५६७। १०,३९.५; ५८७
मरुत्तमा १,१८२,२; १९५
मरुत्वन्ता ८,३५,१३-१५; ५२१-५२३
मर्त्यत्रा ६,६२,८; ३१३
मायाविना १० २४.४; ५८०
मायिना ६,६३,५; ३२१
मित्रावरुणवन्ता ८ ३५.१३; ५२१
मिथुना १०,४०,१२; ६०८
मिमाना पुरू वरांसि अमिता ६,६२.२; ३०७
यजत्रा १,१८०.५; १७९। ८,५७,१ ४; ५३६,५३९
यज्ञवाहसा १.१५,११; ४
यन्तौ पथा इव रजः १,१३९.४; १६१
यमा २,३९,१; २१६
यामहूतमा ८,७३,६; ५४५
यावाणा प्रातः २,३९ २; २१६। ५,७७ १; २९२
युयुजानसप्ती ६.६२,४; ३०९
युवाना १,११७ १४; ११५। ३ ५८,७; २३२। ६,६१,४; ३०९। ७ ६७,१०; ३३७। ६९,८; ३५४
रक्षितारा २,३९,६; २२०
रक्षोहणा ७ ७३,४; ३७६
रत्नानि बिभ्रतौ ५.७५,३; २८०
रथी अथर्व० ७.७१,१; ६७९
रथीतमा १,२२,१; ६। १८२,१; १९५

रथ्या १,३४,७; १८ । १५७,६; १६८ । १८१,१; १९५ ५,७५,५; २८१ । ६,६१,७; ३११
रथिरा ७,६९,५; ३५१
रराणा १.११७,१४ १२५
राजन्तौ अध्वराणां ८,८ १८; ४३८
राजानौ ६,६१,९; ३१४ । १०,३९,११, ५९३
रिशादसा ८.८,१७; ४३७
रुद्रवर्तनी १,३.३, ३ । ८,२२.१,१४; ४७१,४८५ । १०, ३९,११; ५९३
रुद्रा १,१५८.१; १६९ । २,४१,७; २२३ । ५,७३,८; २६५ । ७५,३, २८१ । ८,२६,५; ४९४
वत्सप्रचेतसा ८,८,७; ४२७
वर्धना ८,८,५; ४२५
वल्गू ६,६१,५; ३१० । ६३,१; ३१७ । ७,६८,४; ३४१ ८,८७,६; ५७७
वसुधिती १,१८१,१; १८५
वसुविदा धिया १,४६.१; २५
वसू १,१५८,१-२; १६९-१७०
वह्नी ८८,१२; ४३२
वाजयन्ता ८,३५,१५; ५२३
वाजसातमा ८ ५,५; ३८८
वाजिनीवन्तौ १.१२०,१०; १५७
वाजिनीवसू २,३७,५; २१४ । ५ ७४.६-७; २७३-२७४ । ७५,३; २८० । ७८,३; २९९ । ८,५,३,१२,२०,३०; ३८६,३९५,४०३,४१३ । ८,१०, ४३० । ९,४; ४४७ १०.५; ४६९ । २२,७,१४.१८, ४७८.४८५.४८९ । २६,३; ४९१ । ८५,३; ५६० । १०७,८; ५७९ । १०, ४०,१२; ६०८
वावसाना विवस्वति १,४६ १३; ३६
वावृधाना ८,५,११; ३९४ । ८७,४; ५७९
विचेतसा ५,७४.९; २७६
विद्वांसा सौ १.११६,११; ८७ । १२०,२-३; १४९-१५०
विपन्यू ८,८.१९, ४३९
विप्रौ ८,२६,९; ४९८
विप्रवाहसा ५,७४,७; २७४
विपिपाना १०,१३१,४; ६२५
विश्पलावसू १,१८१,१; १९४
विश्वगूर्ती १ १८० २; १७६
विश्ववारा ७.७०.१; ३५५
विश्ववेदसा १,४७,४; ४२ । १३९,३; १६० । १०,१४३, ६; ६३१
विश्वा ५,७३,४; २६१
विष्णुवन्ता ८.३५,१४; ५२२
वीरा २,३९,२; २१६
वीळुपाणी ७ ७३.४; ३७६
वृत्रहन्तमा ८.८ ९ २२; ४२९,४४२
वृधन्ता १,१५८,१; १६९
वृषणा–णौ १,११२,८,२३; ५९,७४ । ११६,२१; ९७ । ११७,३-४ ८,१२.१५,१८-१९; १०४-१०५,१०९, ११३,११६ ११९-१२० । ११८,६; १३२ । ११९,४; १४१ । १५७,५; १६७ । १५८,१; १६९ । १८० ७; १८१ । १८१,८; १९२ । १८३,१; २०२ । १८४,२; २०९ । ६,६२,७; ३१२ । ७,७०,७; ३६१ । ७१,६; ३६७ । ७३,३; ३७५ । ७४,३; ३८० । ८,२२,७,१२, १६; ४७८,४८३.४८७ । २६ १-२,१२; ४९०-४९१, ५०१ । ३५,१५; ५२३ । १०,३९,९; ५९१ । अथर्व० ७,७३,१; ६७९
वृषण्वसू २.४१,८; २१४ । ५ ७४,१; २६८ । ७५,४ ९; २८१,२८६ । ८,५,२४,२७,३६; ४०७,४१०,४१९ । २२ ८-९; ४७९-४८० । २६,१-२,५,१५; ४९०-४९१,४९४,५०४ । ७३,१०; ५४९ । ८५,७; ५६४

शका २,३९,३; २१७ । १०,२७,४; ५८० ।
शचिष्ठा ४ ४३,३; २४६ ।
शचीपती ७,६७.५,३३२
शचीवसुः १,१३९.५; १६१ । ७,७४,१; ३७८
शतक्रतू १,१११,२३; ७४
शम्भविष्ठा २,३९,५; २१९ । ५,७६,२, २८८ । ६,६२,५, ३१०
शम्भुवा ८८,१९; ४३९
शम्भू १ ४६,१३; ३६
शयुत्रा १,११७.१२; ११३ । १०,४०,२; ५९८
शासता अञ्जसा रजः १,१३९,४; १६१
शुचिव्रता १,१५,११; ४ । १८२,१; १९४ ।
शुभस्पती १,३,१; १ । ३४.६; १७ । ४७.५; ४३ । ११०, ६; १५३ । ५,७१.८; २८५ । ८,५,५,११; ३८८,३९४ । २२,४,६,१४; ४७५,४७७,४८५ । २६,६; ४९५ । ८७.५; ५७६ । १०,४०.४,१२-१४; ६००,६०८-६,१० । १३१,४; ६२५
शुभाना स्पार्हया श्रिया ७,७१,१; ३६८
शुभ्रा ७,६८,१; ३३८

शुभ्रयावाना ८,२६,१९; ५०८
शुम्भमाने तन्वा १,३९,२; २१६
शुश्रुवांसा पुरूणि ब्रह्माणि ७,७०,४; ३५८
शूरसाता १,१५७,२; १६४
शृण्वन्ता स्तुतिम् १.३४,१२; २३
सक्षणी ८.२२,१५; ४८६
सचनस्तमा ८.२६ ८; ४९७
सचाभुवा १,३४,११; २२। १५७,४; १६६
सजोषसा ३,५८,७; २३२। ७,७२,२; ३३९। ८,९,१२; ४५५। १०७,७; ५७८
सत्पती विदथस्य अथर्व० ७ ७३,४; ६८२
सत्या १.१८०,७; १८१
सध्रीचीना यातवे १०,१०६,१; ६१४
सन्तौ १,१८४,१; २०८
सपर्यन्ता ८,२६,१३; ५०२
समनसा १,९२.१६; ४९। ७,७४,२; ३७९
सम्भृता ७ ७३,४; ३७६
सवासिनौ अथर्व० २,२९ ६; ६४२
सिन्धुमातरा १,४६,२; २५
सुगोपा १.१२०,७; १५४
सुजाता १,११८,१०; १३६
सुदंससा ८.१०,३; ४६७
सुदक्षा ३,५८,७; २३२
सुदानू १.११२,११; ६२। ११७,२०,२४; १२१,१२५। १८०,६; १८०। १८४,४; २११। ३,५८,७; २३२
सुपर्णा ४,४३,३; २४६
सुयुजा ७,७०,२; ३५६
सुरथा १ २२,२; ६
सुवीरा ८ २६ ७; ४९६
सुश्रुता २,३९,६; २२०
सुष्टुता ६,६३,६; ३२२
सुहवा ८,२२,'; ४७२। १०,३९,११; ५९३
सूर्यावसू ७,६८ ३; ३४०
स्थविरा १,१८१ ७; १९१
स्थातारा १.१८१,३; १८७
स्वर्विदा ८,८ ७; ४२७
स्वश्वा ७,६८,१; ३३८। ६९,३; ३४९
हवनश्रुता ५,७५ ५; २८२। ८,८,७; ४२७
हिरण्यपेशसा ८,८,२; ४२२
हिरण्यवर्तनी १,९२,१८; ५१। ५,७५,२-३; २७९-२८०। ८,५.११; ३९४। ८,१; ४२१। ८७,५; ५७६
होतारा देवानाम् वा० य० २१,५३;६६४

(१) सुरथा अश्विनौ। [अश्विनोः रथः।]

अक्षः हिरण्ययः यस्य ८,५,२९; ४१२
अजरः ४,४५,७; २४३
अत्यः १,१८०,२; १७६
अद्रिजूत· ३,३९,८; २३३
अनश्वः १,१२०,१०; १५७
अनुगायस् ८,५.३४; ४१७
अनेहस् ८,२२,१; ४७३
अमर्त्यः ५,७५,९; २८६
अरिष्टनेमिः १.१८०,१०; १८४
अश्वः ७,७०,१; ३५५
अश्वासः ४ ४५,२; २३८
अश्व'वत् ७,७२.१; ३६८
असनः १,१२०.१०; १५७
अहंपूर्वः १.१८१,३; १८७
आचितः १.१८२,२; १९५
आशुः ४,४३,२; २४५
इयानः अस्मभ्यम् ७,६८.३; ३४०
इयानः द्याम् १,१८०,१०; १८४
इषा वर्तते सह ८,५,३४; ४१७
इषां वोळ्हा ७ ६९.१,३४७
ईषा हिरण्ययी रभिः ८,५,२९; ४१२
उक्थ्यः १०,१४१,१; ६११
उग्रः ५,७३.७; २६४
उच्चयामः ७,७१,४; ३६५
उस्राः वस्ते ७,६९,५; ३५१
ऋतः २,५८,२; २२७
ऋतजाः ३.३९,८; २३३
ककुहः १,१८१,५; १८९। ५.७३,७; २६४
करिक्रत् भूरि वर्पः ३,५८,९; २३४
क्षाम् अभियन् १,१८३,२; २०३
गिर्वाहस् ४,४४,१; २५१
गोमान् ७,७२,१; ३६८

गोः संगतिः ४,४४,१; २५१
घृतवर्तनिः ७,६९ १; ३४७
घृतस्नुः ५ ७७.३; २७४
चक्रा उभा हिरण्यया ८,५,२९; ४१२
चक्रा त्री रथस्य १,३४,९; २०
चक्रैः अन्तरैः युक्त. ६,६२,१०; ३१५
जयुस् १,११७,१६; ११७ । १०,३९,१३; ५९५
जवीयान् निमिषाश्चित् ८,७३,२; ५४१
जवीयान् मनसः १,११७,२; १०३ । १०,३९,१२; ५९४
जीराश्वः १.११९ १; १३८ । १५७,३; १६५
तमः अपोर्णुवन् ४.४५,२; २३८
त्रिचक्रः १,११८,२; १२८ । १८३,१; २०२ । १०,४१,१; ६११
त्रिधातुः १,१८३,१; २०२
त्रिवन्धुरः १,४७,२; ४० । ११८.१-२; १२७-१२८ । १८३, १; २०२ । ७,६९ २; ३४८ । ७१,४; ३६५ । ८,२२, ५; ४७६ । ८५,८; ५६५
त्रिवृत् १,३४,९,१२; २०,२३ । ४७,२; ४० । ११८ २; १२८ । ८,८५,८; ५६५
त्रिष्टः १,८४.५। १६
दंसिष्ठः ८,२२,१; ४७२
दिविस्पृक् ८,५,३५; ४१८
दृतिः तुरीयः मधुनः ४,४५.१; २३७
द्युमान् ६.६२,१०; ३१५ । १०,४०.१; ५९७
द्रवत्पाणि ८,५,३५; ४१८
द्रवदश्वः ४ ४३,२; २४५
नर्यः १.१८०,२; १७६
नव्यः १.१८०.१०; १८४
निचेरुः १,१८१,५। १८९
निष्षाट् १,१८१.६; १९०
नूतनः ५,७८,४; ३०२
नृपतिः ७.६९,१; ३४७
नृवान् ६.६२.१०; ३१५
नृवाहणः २.३७,५; २१४
पप्रथानः पञ्च भूम ७,६९.२; ३४८
परिज्मन् १०,३९.१; ५८३ । ४१,१; ६११
पवयः त्रयः तस्य १,३४,२; १३ । १५७,३; १६५ । १०, ४१,२; ६१२
पवयः प्रुषायन्ते १,१३९.३; १६०
पविभिः रुचानः ७,६९,१; ३४७
पिशङ्गरूपः १,१८१,५; १८९
पुरुतमः ४,४४ १; २५१
पुरुप्रुष्-ट् ८,२२,२; ४७७
पुरुमायः १,११९,१; १३८
पुरुश्चन्द्रः ७,७२,१; ३६८
पुरुस्पृहः ८.२२,२; ४७३
पुरुहूतः १०,४१,२; ६११
पूर्वापुष ८,२२,१; ४७३
पूर्व्यः वाजेषु ८,२२,२; ४७३
पृक्षः वहन् ५,७७,३; २९४
पृक्षासः ४,४५.२; २३८
पृक्षासः अस्मिन् मिथुना अधि त्रयः ४,४५,१; २३७
पृथुज्रयः ४,४४,१; २५१
पृथुपाजस् ८,५,२; ३८५
प्रयज्युः १,१८०,२; १७६
प्रवत्वान् १.१८१,३; १८७
प्रवद्यामन् १,११८,३; १२९
प्रातर्यावान् १०,४०,१; ५९७ । ४१,२; ६१२
प्रातर्युज् १० ४१,२; ६१२
प्रियतमः ५,७५,१; २७८
बद्बधानः रोदसी ७,६९,१; ३४७
बाधते न चक्रमभि ८,५,३४.४१७
भुज्युः ८.२२,२; ४७३
मघवान् १ १५७,३; १६५
मधुमन्तः ४.४५,२; २३८
मधुवर्णः ५,७७,३; २९४
मधुवाहनः १,३४,२, १३ । १५७,३; १६५ । १०,४१.२,६१२
मध्वः पूर्णः १,१८१,२; १९५
मनसः जवीयान् १,११७ २; १०३ । १८३,१; २०२ । १०.३९ १२; ५९४
" " मर्त्यस्य १ ११८.१; १२७
" " वृष्णः १,१८१,३; १८७
मनसा युक्तः ७.६९.२; ३४८
मनोजवाः १.११७,१५; ११६ । ५,७७,३; २९४ । ६,६३, ७; ३२३ । ७,६८.३; ३४०
मनोजूः १,११९.१; १३८
मनोयुज्-क् ८,५,२; ३८५
यशियः १,११९.१; १३८
ययि. ५,७३.७; २६४
यय्यः २,३७,५; २१०

यात् १० ४०,१; ५९७
यामः १,३४,१; १२
युक्तः मनसा ७,६९,२; ३४८
युजानः ७,६९,५; ३५१
युवायुजम् (द्वितीया) १,११९,५; १४२
रघुवर्तनिः ८,९,८. ४५१
रघुस्य-ष्य-द् ५ ७३,५; २६२
रजः शुक्रं तन्वन्तः ४ ४५,२; २३८
रथानां श्रेष्ठ ५,७४,८; २७५
रातिः १,३४,१; १२
वनिन् (नी) १,११९,१; १३८
वन्धुरायुः ४,४४,१; २५१
वर्पः करिक्रत् भूरि ३,५८,९; २३४
वसुमान् १,११८,१०; १२६ । ७,६७,३; ३३० । ७१,३-४; ३६४-३६५
वसुवाहनः ५,७५,१; २७८
वसूयुः ४,४४,१; २५१
वस्ते उस्राः ७,६९,५; ३५१
वहमानः विशेविशे वस्तोःवस्तोः १०,४०,१; ५९७
वाजिनीवान् ७,६९,१; ३४७
वाजी ७,७०,१; ३५५
वाजेषु पूर्व्यः ८,२२,२; ४७३
वातरंहा १,११८,१; १२७ । ५,७७,३; २९४
वाहिष्ठः ८,२६,४; ४९३
विदथ्यः १०,४१,१; ६११
विद्वेषसः ८,२२,२; ४७३
विपत्मन् १,१८०,२; १७६
विभिन्दुना (तृतीया) १,११६,२०; ९६
विभुः १,३४,१; १२
विभ्वः १० ४०,१; ५९७
विमोचनः वाम् २,३७,५; २१४
विश्वपस्न्यः ७,७१,४; ३६५
विश्वसौभगः १,१५७,३; १६५
वीड्वङ्गः ८,८५,७; ५६४
वृक्षः निष्टितः १,१८२,७; २००
वृषणः-णम् १,१५७,२; १६४ । ५,७५,१; २७८
वृषण्वान् १,१८२,१; १९४
वृषभिः अश्वैः युक्तः ७,६९,१; ३४७
वोळ्हा ७,७१,४; ३६५
वोळ्हा इषाम् ७,६९,१; ३४७
व्रतानि अनु वर्तते यः १,१८३,३; २०४
शतद्वसुः १,११९,१; १३८
शतोतिः ६,६३,५; ३२ । ७,६८,३; ३४०
शन्तमः ५,७८,४; ३००
शरद्वान् १ १८१,६; १९०
शुनपृष्ठः ७ ७०,१; ३५५
श्येनपत्वा १ ११८,१; १२७
श्येनस्य चित् जवसा (रथेन) ५,७८.४; ३००
श्रुतः ८ २२,५; ४७६ . २६.४; ४९३
श्रुष्टीवान् १,११९,१; १३८
सचनः १,११६ १८; ९४
सचनावान् सुमतिभिः ८,२२ २; ४७३
सन्ततिः ५,७३,७; २६४
समानः १०,४१.१; ६११
समानयोजनः १,३०,१८; १०
सहस्रकेतुः १,११९,१; १३८
सहस्रनिर्णिक् ८.८.११,१४; ४३१,४३४
सुखः १,१२०,११; १५८
सुपेशस् (शाः) १,४७,२; ४०
सुमतिभिः सचनावान् ८,२२,२; ४७३
सुमृळीकः १,११८,१; १२७
सुयुज् १.११७,१५; ११६
सुवृत् १ ४७ ७; ४५ । ११८,२-३; १२८-१२९ । १८३; २-३; २०३-२०४ । ३,५८,३, २२८ । ४,४४,५; २५५ । १०,३९,१; ५८३
सुष्टुतः १,१५७,३; १६५
सुहवः ८,२२,२; ४७३
सूर्यत्वक् १,४७,९; ४७ । ८,८,२; ४२२
सूर्या यः वहति ४,४४,१; २५१
सप्रवन्धुरः १.१८१,३; १८७
सेनाजूः [जुवा-तृतीया] १,११६,१; ७७
स्कम्भासः (यस्य) त्रयः स्कभितासः १,३४,२; १३
स्यूमगभस्तिः ७,७१,३; ३६४
स्वर्विद् ७,६७,३; ३३०
स्ववान् १,११८,१; १२७
स्वश्वः १,११७,२; १०३ । ४,४५,७; २४३
हविष्मान् १,१८३,३; २०४
हिरण्यत्वक् ५ ७७,३; २९४
हिरण्ययः १,१३९,३-४; १६०-१६१ । ४,४४,४-५; २५४-२५५। ७,६९,१; ३४७। ८,५,३५;४१८। ८,२२,९; ४८०
हिरण्यवन्धुर ८,५,२८; ४११
हिरण्याभीशुः ८,५,२८; ४११ । २२,५; ४७६

(२) स्वश्वौ अश्विनौ । [अश्विनोः अश्वाः ।]

अग्राः ६,६२,२; ३०७
अत्याः १,१८१,२; १८६
अध्वरश्रियः १,४७,८; ४६
अप्तुरः १,११८,४; १३०
अरुषाः-पासः १,११८,५; १३१ । ४,४३,६; २४९
अवभिः (तृतीया) ६,६२,११; ३१६
अश्वाः-श्वासः १,११८,५; १३१ । ६,६३,७; ३२३ । ८,५,७ ३९०
आखिधः ४,४५,४; २४०
अहभिः दविध्वतः ४,४५,६; २४२
आकेनिपासः ४,४५,६; २४२
आशवः १,११८,४; १३० । ८,५,७; ३९०
आशुहेमानः १,११६,२; ७८
इषिराः ६,६२,३; ३०८
उदप्रुतः ४,४५,४; २४०
उषर्बुधः १,९२,१८; ५१ । ४,४५,४; २४०
उहुवः ४,४५,४; २४०
ऋतयुजः ७,७१,३; ३६४
एवाः १,१८१,६; १९०
ककुहासः ४,४४,२; २५२
तरणयः ७,६७,८; ३३५
दिव्यासः १,१८१,२; १८६
दिव्यासो न गृध्राः १,११८,४; १३०
देवयुक्ताः ७,६७,८; ३३५
द्रवत्पाणयः ८,५,३५; ४१८
नियुतः ६,६२,११; ३१६
पतङ्गाः १,११८,४-५; १३०-१३१
पयस्याः १,१८१,२; १८६
परमाभिः (तृतीया) ६,६२,११; ३१६
पर्णिनः ८,५,३३; ४१६
प्रुषितप्सवः ८,५,३३; ४१६ । ८७,५; ५७६
मक्षूयवः ७,७४,४; ३८१
मधुमनाः ४,४५,४; २४०
मध्यमाभिः (तृतीया) ६,६२,११; ३१६
मनोजवसः ६,६२,३; ३०८
मनोजुवः १,१८१,२; १८६
मन्दिनः ४,४५,४; २४०
मन्दिनिस्पृशः ४,४५,४; २४०
युक्ता वृषभश्च शिंशुमारश्च १,११६,१८; ९४
युक्तासः रथे १,११८,४; १३०
रजः शुकं आतन्वन्तः ४,४५,६; २४२
रजांसि सुयमासः १,१८०,१; १७५
रासभः १,११६,२; ७८ । ८,८५,७; ५६४
वपुषः १,११८,५; १३१
वयः १,११८,५; १३१ । ४,४३,६; २४९ । ६,६३,६-७; ३२२-३२३ । ८,५,३३; ४१६
वहिष्ठाः ६,६३,७; ३२३
वाजाः १,१८१,६; १९०
वातरंहसः १,१८१,२; १८६
वीतपृष्ठाः १,१८१,२; १८६
वीळुपत्मानः १,११६,२; ७८
वृषणः १,१८१,२; १८६ । ७,६९,१; ३४७ । ७१,३; ३६४
शुचयः १,१८१,२; १८६
श्येनासः १,११८,४; १३० । ८,५,७; ३९०
सप्तयः १,४७,८; ४६
सुभ्वः ७ ६७,८; ३३५
सुम्नायवः ७,७१,३; ३६४
सुयमासः रजांसि १,१८०,१; १७५
सुयुजः ३,५८,२-३; २२७-२२८
स्थविरासः ७,६७,४; ३३१
स्वराजः १,१८१,२; १८६
हंसासः ४,४५,४; २४०
हयाः ७,७४,४; ३८१
हरी १,१८१,५; १८९
हिरण्यपर्णाः ४,४५,४; २४०

(३) अश्विनोः सञ्चारः ।

(१) पृथिव्याम् ।

४,४५,७; २४३ येन (रथेन) सद्यः परि रजांसि याथः ।
५,७३,३; २६० ईर्मान् यद् वपुषे वपुः चक्रं रथस्य येमथुः ।
पर्यन्या नाहुषा युगा महा रजांसि दीयथः ॥
७,६९,२; ३४८ स [रथः] पप्रथानः अधि पञ्च भूमा ।

(२) दिवि ।

१,११९,३; १४० युवोरह प्रवणे चेकिते रथः ।
१,१३९,४; १६१ अचेति दस्रा व्युनाकमृण्वथः युञ्जते वां रथयुजो दिविष्टिषु पथेव यन्ता... रजः ।
१,१८०,१०; १८४ तं वा रथं वयमद्या हुवेम ...द्यामियानम् ।
८,९,११; ४६४ यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः ॥
८,२२,४; ४७५ युवो रथस्य परि चक्रमीयते ईर्मान् यद्वां इषण्यति ।
८,८३,७; ४२७ दिवश्चिद्रोचनादधि आ नो गन्तं स्वर्विदा ।
१,१८३,६; २०७
१,१८४,६; २१३
३,५८,५; २३० } एह यातं पथिभिर्देवयानैः ।
७,७०,३; ३५७ यानि स्थानानि अश्विना दधाथे दिवो यह्वीष्वोषधीषु विक्षु । नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्त ॥

(३) द्यावापृथिव्योः ।

१,३४,८; १९ तिस्रः पृथिवीरुपरि प्र वा दिवो नाकं रक्षेथे द्युभिरक्तुभिर्हितम् ।
३,५८,८; २३३ रथो ह वां ऋतजा अद्रिजूतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ।
४,४४,५; २५५ आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।
८,१०,६; ४७० यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजो यद्वेमे रोदसी अनु । यद्वा स्वधाभिरधितिष्ठथो रथे... अत आयातमश्विना ॥
८,२२,५; ४७६ [वां रथः] परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुतः ।
८,७३,१३; ५५२ यो वां रजांस्यश्विना रथो वि याति रोदसी ।
८,८३,३; ४२३ आ यातं नहुषस्परि आन्तरिक्षात् सुवृक्तिभिः ।
८,८३,४; ४२४ आ नो यातं दिवस्परि अन्तरिक्षादध प्रिया ।

(४) परावति ।

१,३४,७; १८ परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् । तिस्रो नासत्या रथ्या परावत आत्मेव वातः स्वसराणि गच्छतम् ॥
१,४७,७; ४५ यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अधि तुर्वशे । अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥
५,७३,१; २५८ यदद्य स्थः परावति यदर्वावति अश्विना । यद्वा पुरू पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम् ॥
८,५,८; ३९१ येभिस्तिस्रः परावतो दिवो विधानि रोचना । त्रीँरक्तून् परि दीयथः ॥
८,८,१४; ४३४ यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अध्यम्बरे ।

(५) जले ।

१,३०,१८; १० समानयोजनो हि वां रथः ···समुद्रे अश्विनेयते ।
५,७३,८; २६५ यत् समुद्राति पर्वथः ।
६,६२,२; ३०७ पुरू वरांसि अमिता मिमाना अपो धन्वान्यति याथो अज्रान् ।
७,६७,८; ३३५ परि वां सप्त स्रवतो रथो गात् ।
४,४३,६; २४९ सिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्वान् घृणा वयोऽरुषासः परि ग्मन् ।

(६) दिवि जले च ।

१,४६,८; ३१ अरित्रं वां दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः ।
१,१८०,१; १७५ युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद्वां परि अर्णांसि दीयत् ।
४,४३,५; २४८ उरु वां रथः परि नक्षति द्यामा यत् समुद्रादभि वर्तते वाम् ।
५,७६,४; २९० आ नो दिवो बृहतः पर्वतात् आ अद्भ्यः यातम् ।
८,२६,१७; ५०६ यददो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे ।
८,१०,१; ४६५ यत् स्थो दीर्घप्रसद्मनि यद्वादो रोचने दिवः । यद्वा समुद्रे अध्याकृते गृहेऽत आ यातमश्विना ॥

(७) सर्वदिक्षु ।

७,७२,५; ३७२ } आ पश्चाताच्चासत्या पुरस्तात् अश्विना
७,७३,५; ३७७ } यातमधरादुदक्तात् ।
८,१०,५; ४६९ यदद्याश्विनावपाग् यत् प्राक् स्थो वाजिनीवसू । यद् द्रुह्यवि अनवि तुर्वशे यदौ हुवे वामथ मा गतम् ॥

(८) अन्यदेवैः सह ।

८,९,१३; ४५५ यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना
यद्वा वायुना भवथः समोकसा ।
यदादित्येभिर्ऋभुभिः सजोषसा
यद्वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः ॥

(९) आशातः ।

१,२२,४; २८ न हि वामस्ति दूरके यत्रा रथेन गच्छथः ।

५,७५,७; २८४ तिरश्चिदर्यया परि वर्तिर्यातमदाभ्या ।
५,७४ १; २६८ कूष्ठो देवावश्विनाऽद्या दिवो मनावसू ?
५,७४,२; २६९ कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या?
८,७३.४; ५४३ कुह स्थः ? कुह जग्मथुः ? कुह श्येनेव पेतथुः ?
८.७३,५; ५४४ यदद्य कर्हि कर्हिचित् शुश्रूयातमिमं हवम् ।
१०,४०,२; ५९८ कुह स्विद् दोषा? कुह वस्तोरश्विना ?
कुहाभिपित्वं करतः ? कुहोषतुः ? ।

(४) अश्विनोः आवाहनकालः ।

१,११८,११; १३७ हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया उषसो व्युष्टौ ।
७,६८,९; ३४६ अग्रे बुधानः उषसां सुमन्मा ।
७,६९,५; ३५१ तेन नः शंयोरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञेऽस्मिन् ।
७,७१,३; ३६४ आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ...वर्तयन्तु ।
७,७१,४; ३६५ यो वां रथः.. उस्रयामा ।
७,७२,४; ३७१ विचेदुच्छन्ति उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।
१०,४१,१; ६११ वयं व्युष्टौ उषसो हवामहे ।
५,७६,१; २८७ आ भात्यग्निरुषसामनीकं अर्वाञ्चा ... नूनं रथ्येह यातम् ।
५,७६,२; २८८ दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा ।
१,११२,२४; ७५ अयूत्येऽवसे नि ह्वये वाम् ।
२,३९,२; २१६ प्रातर्यावाणा ।
५,७७,१; २९२ ,, ,, ।
,, ,, प्रातर्हि यज्ञमश्विना दधाते ।
५,७७,२; २९३ प्रातर्यजध्वमश्विना ।
८,२२,१५; ४८६ आ सुग्म्याय...प्राता रथेनाश्विना हुवे ।
१०,४०,१; ५९७ प्रातर्यावाणं रथम् ।
१०,४०,३; ५९९ प्रातर्जरेथे जरणेव कापया ।
१०,४१,२; ६१२ प्रातर्युजं नासत्याधि तिष्ठथः प्रातर्यावाणं... रथम् ।
८,२२,११; ४८२ इदा चिदह्नो हवामहे ।
८,२२,१३; ४८४ ताविदा चिददानाम्...वन्दमान उप ह्वये ।
८,२२,१४; ४८५ तावित् दोषा ता उषसि शुभस्पती ता यामन् [हवामहे] ।
१०,३९,१; ५८३ यो वां रथो दोषामुषासो हव्यः...तमु वामिदं वयं सुहवं हवामहे ।
१०,४०,४; ६०० दोषा वस्तोर्हविषा नि ह्वयामहे ।
७,७१,२; ३६३ उपायातं दाशुषे... ।
दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः ॥
१,११२,२५; ७६ द्युभिः अक्तुभिः परि पातमस्मान् ।
१,३४ १; १२ त्रिश्चिन्नो अद्या अवतम् ।
१,३४ ३; १४ समाने अह त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम् ।
१,३४,४; १५ त्रिर्वर्तिर्यातम् ।
८,३५.७-९; ५१५-५१७ ,,
८,२६,३; ४९२ ता वामद्य हवामहे... अति क्षपः ।
८,७३.६; ५४५ अश्विना यामहूतमा नेदिष्ठं याम्याप्यम् ।
१,४६.१४; ३७ ऋता वनथो अक्तुभिः ।
५.७६,३; २८९ उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य । दिवा नक्तमवसा शंतमेन ॥

(५) अश्विनोः भिषक्कर्म ।

(१) भिषजा ।

भिषजा १,११६,१६; ९२ । १५७,६; १६८ । ८,८६,१; ५६७ । १०,३९,५; ५८७ । वा० य० २१,५२; ६६३
भिषजा रुतस्य चित् १०,३९.३; ५८५ अन्धस्य चित्... कृशस्य चित्... ।
भिषजा देवानाम् वा० य० २१,५३; ६६४
भिषजा दैव्या ८,१८,८; ४७१

(२) भिषक्कर्म ।

१,३४,६; १७ त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरुदत्तमद्भ्यः ।

१.१५७,६; १६८ युवं ह स्थः भिषजा भेषजेभिः ।
८,९,६; ४४९ यन्नासत्या भुरण्यथः यद् वा देव भिषज्यथः।
८,९,१५; ४५८ यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् । तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्तं यच्छतम् ।
८,२२,१०; ४८१ ताभिर्नो मक्षू तूयमश्विना गतं भिषज्यतं यदातुरम् ॥
८,३५,१६-१८; ५२४-५२६ सेधतममीवाः ।
७,७०,३; ३५७ यानि स्थानानि अश्विना दधाथे दिवो यद्वीषु ओषधीषु विक्षु ।
७,७०,४; ३५८ चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु
१,१५७,५; १६७ युवं ह गर्भं जगतीषु धत्थः युवं विश्वेषु भुवनेषु अन्तः । युवमग्निं च वृषणावपश्च वनस्पतीरश्विना वैरयेथाम् ॥
७,७१,२; ३६३ युयुतमस्मदनिराममीवान् ।

(६) अश्विनोः सूर्याग्न्युषसां च सम्बन्धः ।

१,४६,१; २४ एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥
१,४६,१०; ३३ अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः । व्यख्यज्जिह्वयासित ॥ (तत्तदिदश्विनोरवः)
१,४६,१४; ३७ युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् ।
१,१५७,१; १६३ अबोध्यग्निर्जर्म उदेति सूर्यः व्युषाश्चन्द्रा मह्यावो अर्चिषा । आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद् देवः सविता जगत् पृथक् ॥
१,१८०,१; १७५ मन्वः पिबन्ता उषसः सचेथे ।
१,१८३,२; २३ दिवो दुहित्रा उषसा सचेथे ॥
३,५८,१; २२६ धेनु प्रत्नस्य काम्यं दुहान ऽन्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः । आ द्योतनिं वहति शुभ्रयामा उषस. स्तोमो अश्विनाघजीगः ॥
३,५८,४; २२९ इमा हि वां गोऋजीका मधूनि प्र मित्रासो न ददुरुस्रो अग्रे ।
४,४५,१-२; २३७-२३८ एष स्य भानुरुदियर्ति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि । पृक्षासो अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो दतिस्तुरीयो मधुनो वि रप्शते ॥
उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु । अपोर्णुवन्तस्तम आ परीवृतं स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः ॥
१,९२,१८; ५१ ४.४५,४; १४० (अश्विनोः अश्वासः) उषर्बुधः ।
५,७५,९; २८६ अभूदुषा रुशत् पशुरग्निरधाय्यृत्वियः । अयोजि वां वृषण्वसू रथः ।
५,७६,१; २८७ आ भात्यग्निरुषसामनीकम् उद् विप्राणां देवया वाचो अस्थुः । अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातम् ।
६,६२,१; ३०६ या सद्य उषा व्युषि ज्मो अन्तान् युयूषतः पर्युरू वरांसि ॥
६,६३,६; ३२२ युवं श्रीभिर्दर्शताभिराभिः शुभे पुष्टिमूहथुः सूर्यायाः ।
७,६७,२-३; ३२९-३३० अशोच्यग्निः समिधानो अस्मे उपो अदृश्रन् तमसश्चिदन्ताः । अचेति केतुरुषसः पुरस्तात् श्रिये दिवो दुहितुर्जायमानः ॥
अभि वां नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिषक्ति नासत्या विवक्वान् ।
७,७२,३; ३७० जामि ब्रह्माणि उषसश्च देवीः ।
७,७२,४; ३७१ वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते । ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेत् बृहदग्नयः समिधा जरन्ते ॥
८,५,२; ३८५ रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् ।
८,८,२ ४२२ आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा ॥
८,९,१६-१८ ४५९-४६१ अभुस्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः । व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः ॥
प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि। प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत् ॥
यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे । आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम्॥

८,३५,१-३; ५०९-५११ सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥
४-६; ५१२-५१५ ,, इयं नो वोळ्हमश्विना ॥
७-९; ५१५-५१७ ,, त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥
१०-१२; ५१८-५२० ,, ऊर्जं नो धत्तमश्विना ॥
१३-१५; ५२१-५२३ ,, आदित्यैर्यातमश्विना ॥
१६-१८; ५२४-५२६ ,, सोमं सुन्वतो अश्विना ॥
८,३५,१९-२१; ५२७-५२९ ,, आश्विना तिरोअह्नयम् ॥
८,७३,१६-१७; ५५५-५५६ अरुणप्सुरुषा अभूदकर्ज्योतिर्ऋतावरी ।
अन्ति षद्भूतु वामवः ॥
अश्विना सुविचाकशत् वृक्षं परशुमाँ इव ।
अन्ति षद्भूतु वामवः ॥
१०,३९,१२; ५९४ यस्य [रथस्य] योगे दुहिता जायते दिवः
उभे अहनी सुदिने विवस्वतः ॥

अश्विनोः मन्त्रेषु व्यक्तिनामानि ।

अंशुः स्तोता । ८,५,२६; ४०९

अगस्त्यः स्तोता । १,१८०,८; १८२ । १८४,५; २१२ । ८,५,२६; ४०९

अघाश्वः अवितः । (पेदुनामा राजर्षिः) १,११६,६; ८२

आङ्गिराः स्तोता । १,११२,१८; ६९

आत्रिः द्रष्टा । ५,५३,६-७; २६३-२६४ । ७४,१; २६८ । १०,१४३,१-३; ६२७-६२९ । (अवितः) १,११२,७,१६; ५८,६७ । ११६,८; ८४ । ११७,३; १०४ । ११८,७; १३३ । ११९,६; १४३ । १८०,४; १७८ । १८३, ५; २०६ । ७,६८,५; ३४२ । ७१,५; ३६६ । ८,५, २५; ४०८ । ३५,१९; ५२७ । (स्तोता) ८,४२,५; ५३४ । ७३,३,७-८; ५४२,५४६-५४७ । १०,३९,९; ५९१ । ५,७८,४; ३००

अधिगुः राजा । १,११२,२०; ७१ । ८,२२,१०; ४८१

अनुः स्तोता । ८,१०,५; ४६९

अन्तकः राजर्षिः अवितः । १,११२,६; ५७

अवस्युः द्रष्टा । ५,७५,८; २८५

आजमीळ्हासः द्रष्टारः । ४,४४,६; २५६

आर्चत्कः शरः अवित । १,११६,२२; ९८

आर्जुनेयः कुत्सः अवितः । १,११२,२३; ७४

उपस्तुतः अवितः । १,११२,१५; ६६ । ८,५,२५; ४०८

ऋज्राश्वः १,११६,१६; ९२ । ११७,१७-१८; ११८-११९ । १२०,६; १५३

ऋतस्तुभ् १,११२,२०; ७१

औचथ्यः मन्त्र-द्रष्टा । १,१५८,१,४; १६९,१७२

औशिजः द्रष्टा । १,११९,९; १४६

औशिजः कक्षीवान् (दीर्घतमसः पत्नी उशिक् तस्याः पुत्रः दीर्घश्रवाः) अवितः । १,११२,११; ६२

कक्षीवान् १,११२,११; ६२ । ११६,७; ८३ । ११७,६; १०७ । १२०,५; १५२ । (स्तोता) ८,९,१०; ४५३

कण्वः, कण्वस्य पुत्रः, कण्वामः वा द्रष्टारः । १,४६,९; ३२। ४७,१,४-५,१०; ४०,४२-४३,४८ । ८,५,४-५,२३, २५; ३८७-३८८,४०६,४०८ । ८,३; ४२३ । ९,२४; ४५७ । १०,२; ४६६

कण्वः अवितः । १,११२,५; ५६ । ११७,८; १०९ । ११८, ७; १३३ । ८,८,२०; ४४०

कर्कन्धुः अवितः । १,११२,६; ५७

कलिः अवितः । १,११२,१५; ६६ । १०,३९,८; ५९०

कविः अवितः । १,११६,१४; ९१ । ११९,७; १४४

काण्वः द्रष्टा । ८,९,३,९; ४४६,४५२

काव्यः स्तोता । १,११७,१२; ११३

कुत्सः अवितः । १,११२,९; ६० । ११२,२३; ७४ । १०, ४०,६; ६०२

कृशः अवितः । १०,४०,८;६०४

कृशानुः अवितः । १,११२,२१; ७२

कृष्णः द्रष्टा । ८,८५,३-४; ५६०-५६१

कृष्णियः विश्वकः अवितः । १,११६,२३; ९९

गृत्समदासः द्रष्टारः । २,३९,८; २२२

गोतमः अवित । १,११६,९; ८५ । (स्तोता) १,१८३,५; २०६

घोषः स्तोता । १,१२०,५; १५२

घोषा अविता । १,११७,७; १०८

घोषा द्रष्ट्री । १०,४०,५; ६०१

च्यवानः अवितः । १,११६,१०,८६ । ११७,१३; ११४ । ११८,६; १३२ । ५,७४,५; २७२ । ७५,५; २८२ । ७, ६८,६; ३४३ । ७२,५; ३३६ । १०,३९,४; ५८६

जमदग्निः द्रष्टा । ८,१०१,८; ५७९

जह्नावी अवितः । १,११६,१९; ९५ । ३,५८,६; २३१

जाहुषः अवितः । १,११६,२०; ९६ । ७,७१,५; ३६६

तुग्रः अवितः । १,११७,१४; ११५

तुग्रस्य सूनुः तौग्र्यः भुज्युः अवितः । १,११२,६; ५७ । ११२,२०; ७१। ११६,३-५; ७९-८१ । ११७,१४-१५; ११५-११६। ११८,६; १३२। ११९,४,८; १४१,१४५।

१,१५८, ३; १७१ । १८०,५; १७९ । १८२, ५-७; १९८-२०० । ६,६२,६; ३११ । ७,६८,७; ३४४ । ६९,७; ३५२ । १०,३९,४; ५८५ । ४०,७; ६०३ । १४३,५; ६३१

तुर्वशः स्तोता । ८,९,१४; ४५७ । १०,५; ४६९

तुर्वीतिः अवितः । १,११२,२३; ७४

तृक्षिः त्रासदस्यवः स्तोता । ८,२२,७; ४७८

त्रसदस्युः अवितः । १,११२,१४; ६५; ८,८,२१; ४४१

त्रिमन्तुः (कक्षीवान्) अवितः । १,११२,४; ५५

त्रिशोकः अवितः । १,११२,१२; ६३

त्रैतनः (दासः) १,१५८,५; १७३

दधीचिः अवितः । १,११६,१२; ८८ । ११७,२२; १२३। ११९,९; १४६

दर्भातिः अवितः । १,११२,२३; ७४

दशव्रजः अवितः । ८,८,२०; ४४०

दिवोदासः अवितः । १,११२,१४; ६५ । ११६,१८; ९४। ११९,४; १४१

दीर्घतमाः स्तोता । ८,९,१०; ४५३

,, मामतेयः द्रष्टा । १,१५८,६; १७४

दीर्घश्रवाः (औशिजः) अवितः । १,११२,११; ६२

दुद्रुः स्तोता । ८,१०,५; ४६९

ध्वसन्तिः अवितः । १,११२,२३; ७४

नर्यः अवितः । १,११२,९; ६०

नार्षदः अवितः । १,११७,८; १०९

पक्थः अवितः । ८,२२,१०; ४८१

पञ्चासः स्तोता । १,११७,१०; १११

पञ्चियः स्तोता । १,१२०,५; १५२

पठर्वा अवितः । १,११२,१७; ६८

परावृज् अवितः । १,११२,८; ५९ । [(इन्द्रः) २,१३,१२; ११४८ । २,१५,७; ११६८]

पुरयः दाता । ६,६३,९; ३२५

पुरुकुत्सः अवितः । १,११२,७; ५८

पुरुपन्थाः दाता । ६,६३,१०; ३२६

पुरुमित्रः १०,३९,७; ५८९

पुरुर्माळ्हः स्तोता । १,१८३,५; २०६

पुरुषन्तिः अवितः । १,११२,२३; ७४

पृथिः अवितः । १,११२,१५; ६६

पृथी (वैन्यः) स्तोता । ८,९,१०; ४५३

पृथुश्रवाः अवितः । १,११६,२१; ९७

पृश्निगुः अवितः । १,११२,७; ५८

पेदुः अवितः । १,११६,६; ८२ । ११७,९;११०। ११८, ९; १३५ । ११९,१०; १४७ । ७,७१,५; ३६६। १०, ३९,१०; ५९२

पेरुकः दाता । ६,६३,९; १२५

पौरः स्तोता । ५,७४,४; २७१

प्रियमेधः अवितः। ८,५,२५; ४०८। स्तोता ८,८७,३; ५७४

बभ्रुः अवितः । ८,२२,१०; ४८१

भरद्वाजः अवितः। १,११२,१३, ६४। द्रष्टा ६,६३,१०;३२६

भुज्युः द्रष्टव्यं– 'तुग्रस्य सूनुः तौग्र्यः' ।

भृगवाणः स्तोता । १,१२०,५; १५२

मनुः अवितः। १,११२,१६,१८; ६७,६९। ८,२२,६; ४७७

,, स्तोता । ८,१०,२; ४६६

मन्धाता अवितः । १.११२,१३; ६४

मेधातिथिः अवितः । ८,८.२० ४४०

यदुः स्तोता । ८,९,१४; ४५८ । १०,५; ४६९

रेभः अवितः । १,११२,५; ५६। ११६,२४; १००। ११७,४,१२; १०५,११३ । ११८,६; १३२ । ११९,६; १४३ । १०,३९,९; ५९१

वत्सः स्तोता । ८,८,१५,१९; ४३५,४३९ । ९,१,६,१५; ४४४,४४९,४५८

वध्रिमती अविता । १,११६,१३; ८९ । ११७,२४; १२५ । ६,६२,७; ३११ । १०,३९,७; ५८९

वन्दनः अवितः । १,११२,५; ५६ । ११६;११; ८७ । ११७,५; १०६ । ११८,६; १३२ । ११९,६-७; १४३-१४४ । १०,३९,८; ५९०

वम्रः अवितः । १,११२,१५; ६६

वर्ष्यः अवितः । १,११२,६; ५७ । [(इन्द्रः) १,५४,६; ७९१ । २,१३,१२, ११४८ । ४,१९,६; १५२७]

वरुः ८,२६,२; ४९१

वशः अवितः । १,११२,१०; ६१

वसिष्ठः अवितः । १,११२,९; ६० । स्तोता ७,७०,६; ३६० । ७३,३; ३७५

विधवा(वध्रिमती) अविता । १०,४०,८; ६०४

विमदः अवितः । १,११२,१९; ७० । ११६,१; ७७। ११७,२०; २१ । ८,९,१५; ४५८ । १०,३९,७; ५८९

द्रष्टा । १०,२४,४; ५८०

विमनाः स्तोता । ८,८६,२; ५६८

विश्पला अविता । १,११२,१०; ६१ । ११६,१५; ९१। ११७,११; ११२ । ११८,८; १३४ । १८२,१; १९४। १०,३९,८; ५९०

विश्वकः द्रष्टा। ८,८६,१-३; ५६७-५६९
विष्णवाप्वः अवितः। ८,८६,३; ५६९
विष्वाचः (षष्ठी)-ष्वक् असुरः १,११७,१६; ११७
वैन्यः (पृथी) अवितः। ८,९,१०; ४५३
वैयश्वः द्रष्टा। ८,२६,११; ५००
व्यश्वः अवितः। १ ११२,१५; ६६। स्तोता ८,९,१०; ४५३। २६,९; ४९८
शंयुः १.३४,६; १७
शयुः अवितः। १,११२,३,१६; ५४,६७। ११६,२२; ९८। ११७,१२.२०; ११३,१२१। ११८,८; १३४। ११९.६; १४३। ६,६२.७; ३१२। ७,६८,८; ३४५। १०,३९,१३; ५९५। ४०,८; ६०४
शरः (आर्चत्कः) अवितः। १,११६,२२; ९८
शर्यातः अवितः। १,११२,१७; ६८
शाण्डः दाता। ६,६३,९; ३२५
शुचन्तिः अवितः। १,११२,७; ५८
शुन्ध्यूः अविता। १०,३९,७; ५८९
श्यावः अवितः। १,११७ ८,२४; १०९,१२५
श्यावाश्वः द्रष्टा। ८.३५,१९--२१; ५२७-५२९
श्रुतर्यः अवितः। १,११२,९; ६०
सप्तवध्रिः द्रष्टा। ५,७८,५-६; ३०१-३०२
,, अवितः। ८,७३.९; ५४८। १०,३९,९; ५९१
साहदेव्यः द्रष्टा। ४ १५,१०; २३३
साहदेव्य. सोमकः द्रष्टा। ४.१५,९; २३५
सुदाः अवितः। १,४७.६; ४४। ११२,१९; ७०
सुमीळ्हः दाता। ६,६३,९; ३२५
सुषामा अवितः। ८,२६,२; ४९१
सुहस्त्यः द्रष्टा। १०,४१.३; ६१३
सोभरिः स्तोता। ८,५,२६; ४०९। द्रष्टा ८,२१,१,१५; ४७३,४८६
सोमकः साहदेव्यः द्रष्टा। ४.१५,९; २३५
स्यूमरश्मिः अवितः। १,११२,१६; ६७
हिरण्यहस्तः अवितः। १,११७,२४; १२५

अश्विनौ-देवता—मन्त्रेषु अन्याः-देवताः।

अग्निः १,११२,१ (द्वितीयः पादः); ५२। ५,७५,९; २८६। ७६,१; २८७। ७,६७,२; ३२९,। ७२,४; ३७१। ८,३५,१; ५०९
आङ्गिराः ८,३५,१३; ५२१
अदितिः १,११२,२५; ७६
अद्रिः ८,३५,२, ५१०
अर्यमा ८,२६,११; ५००
अश्वाः (अश्विनोः) १,१८१,२, १८६
अश्विरथः १,११९,१-३; १३८-१४० । १२०,१०-११; १५७-१५८। १५७,३; १६५ । १८०,१०; १८४ । १८१,३; १८७। ४,४३,२, २४५। १०,४१,१; ६११
आदित्यः १,४६,४; २७
आदित्याः ६,६१ ८; ३१३। ८,३५,१; ५०९
आपः ८,३५,३; ५११
इन्द्रः ८.३५,१; ५०९
इन्द्राविष्णू ८,१०,२; ४६६
इष्टका वा० य० १४,१-५; ६३४-६३८
ऋतु- (सहितौ) १,१५,११; ४
उषाः १,४६,१,१४; २४,३७। ५,७५,९; २८६। ७६,१; २८७। ७,७१,३-४; ३००-३०१ । ८,५,१; ३८४। ९.१६-१८; ४५९-४६१। ७३,१६; ५५५
उषःसूर्यसहितौ अश्विनौ ८,३५,१-२१; ५०९-५२९
ऋभवः ८,३५.१५; ५२३
कः ४,४३.१; २४४
चन्द्रादित्यौ १,१८१,४; १८८
तपाः २,३७,५; २१४
दीर्घतमाः १ १५८,६; १७४
देवाः (त्रयस्त्रिंशत्) १,३४,११; २२
द्यौः १,११२,२५; ७६। ८,३५.२; ५१०
द्यावापृथिव्यौ १,११२,१ (प्रथमः पादः); ५२। ६,६२,८; ३१३। ७,७२,३; ३७०
धर्मः ८,३५.१३; ५२१
धियः विश्वाः ८,३५,२; ५१०
पतयः १०,४०,१०; ६०९
पृथिवी १,११२,२५; ७६। ८,३५,२; ५१०
प्रजापतिः वा०य० २०,६७-६९; ६५६ ६५८। २१,४८-५८; ६५९-६६९
बृहस्पतिः ८,१०,२; ४६६
भुवनम् ८,३५,२; ५१०
भृगवः ८,३५,३; ५११

मरुतः ६,६२,८; ३१३ । ८,३५,३,१३-१५; ५११,५२१-५२३
मित्रः १,११२,२५; ७६ । ६,६२,९; ३१४ । ८,२६,११; ५००
मित्रावरुणौ ८,३५,१३; ५२१
रथः अश्विनोः– द्रष्टव्यम् 'अश्विरथः'
रुद्राः ८,३५,१; ५०९
रुद्रियाः ६,६२,८; ३१३
रोदसी ६,६२,८; ३१३
वरुणः १,११२,२५; ७६ । ६,६२,९; ३१४ । ८,२६,११; ५०० । ३५,१; ५०९
वसवः ६,६२,८; ३१३ । ८,३५.१; ५०९
विश्वा धियः ८,३५,२; ५१० ।
विश्वे देवाः ८,१०,२; ४६६ । ३५,३; ५११
विष्णुः ८,३५,१,१३; ५०९,५२१
सप्तवाध्रिः ८,७३,१८; ५५७
सरस्वती वा० य० २०,६७-६९; ६५६-६५८ । २१,४८-५८; ६५९-६६९
सिन्धः १,११२,२५; ७६
सविता १,१५७,१; १६३ । ७,७२,५; ३०१
सूर्यः ७,६७ २; ३२९
सूर्यसहितौ उषसा च ८.३५,१–२१; ५०९–५२९
सोमः वा० य० १९,३४; ६५४
सोमरसः वा० य० १९,३५; ६५५

(१) निर्विशोषितत्वेन* वर्णितं अश्विनोः अवनकर्म ।

अत्रिः ८,५.२५; ४०८ । [द्रष्टव्यम् '(५) परकृतविविधापक्वयः अवनम् ।']
अध्रिगुः १,११२,२०; ७१ । ८,२२,१०; ४८१
उपस्तुतः १,११२,१५; ६६ । ८,५ २५; ४०८
कक्षीवान् (स्तोता) १,११२,११; ६२
कण्वः (प्रसिषासन्) ८,५,२५; ४०८ । ८,२०; ४४० । [द्रष्टव्यम् '(५) परकृतविविधापक्वयः अवनम् ']
कर्कन्धुः १,११२,६; ५७
कलिः (वित्तजानिः) १,११२,१५; ६६ । [द्रष्टव्यम् '(६) भिषक्कर्मणा अवनम् ।']
कुत्सः १,११२,९; ६०
कुत्सः आर्जुनेयः १,११२,२३; ७४
कृशः १०,४०,८; ६०४
गोशर्यः ८,८,२०; ४४०
तुर्वीतिः १,११२,२३; ७४ ×
दृभीतिः १,११२,२३; ७४
ध्वसन्तिः १,११२,२३; ७४
नर्यः १,११२,९; ६० ×
पक्वः ८,२२,१०; ४८१
पुरुकुत्सः १,११२.७; ५८
पुरुषन्तिः १,११२.२३; ७४
पृथिः १,११२,१५; ६६
पृश्निगुः १,११२ ७; ५८
प्रियमेधः ८,५,२५; ४०८
बभ्रुः (विजोषस्) ८,२२,१०; ४८१
भरद्वाजः (विप्रः) १,११२,१३; ६४
भुज्युः १०,४०,७; ६०३ । [द्रष्टव्यम् '(५) परकृतविविधापक्वयः अवनम् ।']
मेधातिथिः ८ ८,२०; ४४०
वम्रः (विपिपानः) १,११२,१५; ६६
वय्यः १,११२,६; ५७ ×
वशः अश्व्यः (प्रेणिः) १,११२,१०; ६१
वशः दशव्रजः ८,८,२०; ४४०
वशः १०,४०,७; ६०३
वसिष्ठः १,११२,९; ६०
विधवा १० ४०,८; ६०४
व्यश्वः १,११२,१५; ६६
शयुः १०,४०,८; ६०४ । [द्रष्टव्यम् '(७) अन्येषां प्राणिनां अवनम् ।']
शिञ्जारः ८,५.२५; ४०८+ । १०,४०,७; ६०३
श्रुतर्यः १,११२,९; ६०

* ' यथा चित्कण्वमावतम् ' ' याभिर्यश्वमुत पृथिमावतम्' इति एतादृशमन्त्रैः वर्णितम् ।

× द्रष्टव्यम् ' त्वमाविथ नर्यं तुर्वशं यदुं त्वं तुर्वीतिं वय्यं शतक्रतो ।' (इन्द्रः०) १,५४.६; ७९१ ' अरमयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वय्याय च स्रुतिम् ।' (इन्द्रः०) २,१३,१२; ११४८ ' त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम् । अरमयो ममसैजदर्णः सुतरणाँ अकृणोरिन्द्र सिन्धून् ।' (इन्द्रः०) ऋ० ४.१९,६; १५२७।

+ अत्र सायनाचार्यः 'शिञ्जारः' इति शब्दस्य शब्दयन्, स्तुवन् इत्यर्थं दत्त्वा अयं शब्दः अत्रेर्विशेषणं इति मन्यन्ते ।

(२) इष्टवस्तुप्रदानेन अवनम् ।

धनम् ।

अंशुः	८,५,२६; ४०९	यथोत कृत्व्ये धने अंशुम् (आवतम्) ।
त्रसदस्युः	८,८,२१; ४४१	याभिर्नरा त्रसदस्युं आवतं कृत्व्ये धने ।
त्रासदस्यवः तृक्षिः	८,२२,७; ४७८	येभिः (ऋतस्य पथिभिः) तृक्षिं वृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिन्वथः ।
दिवोदासः	१,११६,१८; ९४	यदयातं दिवोदासाय वर्तिः भरद्वाजायाश्विना हयन्ता । रेवदुवाह सचनो रथो वां वृषभश्च शिंशुमारश्च युक्ता॥
विमनाः	८,८६,२; ५६८	कथा नूनं वां विमना उप स्तवद् युवं धियं ददथुः वस्य इष्टये ।
विष्णापूः	८,८६,३; ५६९	युवं हि ष्मा पुरुभुजा इमं एधतुं विष्णाप्वे ददथुः वस्य इष्टये ।
सुदाः	१,११२,१९; ७०	याभिः सुदासे ऊहथुः सुदेव्यम् ।
सुषामा	८,२६,२; ४९१	युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या ।
वशः	१,११२,१०; ६१	याभिर्वशमश्व्यं प्रेणिं आवतम् ।
	१,११६,२१; ९७	एकस्या वस्तोः आवतं रणाय वशमश्विना सनये सहस्रा ।
	८,८,२०; ४४०	याभिः वशं दशव्रजं ... आवतं कृत्व्ये धने ।
	१० ४०,७; ६०३	युवमश्विना वशं...उपारथुः।
जह्नावी	३,५८,६; २३१	युवोर्नरा द्रविणं जह्नाव्याम् ।
	१,११६,१९; ९५	रयिं सुक्षत्रं स्वपत्यं आयुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता । आ जह्नावीं समनसोप वाजैः त्रिरह्नो भागं दधतीमयातम्।

अन्नम् ।

मनुः	१,११२,१६; ६७	मनवे पुरा गातुमीषथुः ।
	१,११२,१८; ६९	मनुं शूरं इषा समावतम्।
	१,११७,२१; १२२	इषं दुहन्ता मनुषाय दस्रा । यवं वृकेणाश्विना वपन्ता ।
	८,२२,६; ४७७	दशस्यन्ता मनवे पूर्व्य दिवि यवं वृकेण कर्षथः ।
	८,१०,२; ४६६	यद् वा यज्ञं मनवे संमिमिक्षथुः ।
विप्रः	१,११७,११; ११२	सूनोर्मानेन अश्विना गृणाना वाजं विप्राय भुरणा रदन्ता ।
सोभरिः	८,५,२६; ४०९	यथा वाजेषु सोभरिम् (आवतम्)।

सदः ।

शुचन्तिः	१,११२,७; ५८	याभिः शुचन्ति धनसां सुषंसदम् ।

क्षेत्रपतित्वादि ।

मन्धाता	१,११२,१३; ६४	मन्धातारं क्षैत्रपल्येषु आवतम् ।
जाहुषः	७,७१,५; ३६६	नि जाहुषं शिथिरं धातमन्तः।
	१,११६,२०; ९६	परिविष्टं जाहुषं विश्वतःसीं सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः ।

स्त्री ।

कलिः	१,११२,१५; ६६	याभिः कलिं वित्तजानिं दुवस्यथः ।
	१०,३९,८; ५९०	युवं विप्रस्य जरणामुपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः।
श्यावः	१,११७,८; १०९	युवं श्यावाय रुशतीं अदत्तम् ।
	१,११७,२४; १२५	त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तमुज्जीवस ऐरयतं सुदानू।
विमदः	१,११२,१९; ७०	याभिः पत्नीर्विमदाय न्यूहथुः।
	१,११६,१; ७७	यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहथू रथेन ।
	१,११७,२०; १२१	युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथु पुरुमित्रस्य योषाम् ।
	१०,३९,७; ५८९	युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम्।
	८,९,१५; ४५८	यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् । तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम् ॥

विमदः (मन्त्रद्रष्टा) १०,२४,४; ५८० युवं शक्रा मायाविना समीची निरमन्थतम् । विमदेन यदीळिता नासत्या निरमन्थतम् ॥

पतिः ।

घोषा १,११७,७; १०८ घोषायै चित् पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावदत्तम्।
१०,४०,९ ६०५ जनिष्ट योषा पतयत् कनीनको वि चारुहन् वीरुधो दंसना अनु। आस्मै रीयन्ते निवनेव सिन्धवोऽस्मा अह्र भवति तत् पतित्वनम् ॥

पुत्रः ।

कृष्णियः १,११६,१३; ९९ अवस्यते स्तुवते कृष्णियाय ऋजूयते नासत्या शचीभिः। पशुं न नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय ॥
१,११७,७; १०८ युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय विष्णाप्वं ददथुः विश्वकाय ।

वध्रिमती १,११६,१३; ८९ अजोहवीन्नासत्या करा वां महे यामन् पुरुभुजा पुरन्धिः। श्रुतं तत् शासुरिव वध्रिमत्या हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम् ॥
१,११७,२४; १२५ हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा वध्रिमत्या अदत्तम् ।
६,६२,७; ३१२ श्रुतं हवं वृषणा वध्रिमत्याः ।
१०,३९,७; ५८९ युवं हवं वध्रिमत्या अगच्छतं युवं सुषुतिं चक्रथुः पुरन्धये ।

गावः ।

अगस्त्यः ८,५,२६; ४०९ यथा गोषु अगस्त्यम् (आवतम् ।)

त्रिशोकः १,११२,१९; ६३ याभिः त्रिशोकः उस्रिया उदाजत ।

अश्वः ।

पेदुः १,११६,६; ८२ यदश्विना ददथुः श्वेतमश्वं अघाश्वाय शश्वदित् स्वस्ति। तद् वां दात्रं महि कीर्तेन्यं भूत् पैद्वो वाजी सदमिद्धव्यो अर्यः॥
१,११७,९; ११० पुरू वर्पांस्यश्विना दधाना नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् । सहस्रसां वाजिनमप्रतीतमहिहनं श्रवस्यं तरुत्रम् ॥
१,११८,९; १३५ युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजूतमहिहनमश्विनादत्तमश्वम् । जोहूत्रमर्यो अभिभूतिमुग्रं सहस्रसां वृषणं वीड्वङ्गम् ॥
१,११९,१०; १४७ युवं पेदवे पुरुवारमश्विना स्पृधां श्वेतं तरुतारं दुवस्यथः । शयरभिद्युं पृतनासु दुष्टरं चर्कृत्यमिन्द्रमिव चर्षणीसहम् ॥
७,७१,५; ३६६ नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
१०,३९,१०; ५९२ युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम्। चर्कृत्यं ददथुर्दावयत्सखं भगं न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम् ॥

(३) क्षुद्र-पीडानिवारणम् ।

अन्तकः १,११२,६; ५७ याभिः अन्तकं जसमानं आऽरणे ... जिजिन्वथुः ।

अग्नः १,११२,१५; ६६ याभिः वग्नं विपिपानं ... दुवस्यथः ।

शरः १,११६,२२; ९८ शरस्य चिद् आर्चत्कस्यावतादा नीचादुच्चा चक्रथुः पातवे वाः ।

अंशः १,११२,१; ५२ याभिः भरे कारं अंशाय जिन्वथः ।

ऋतस्तुभ् १,११२,२०; ७१ ओम्यावतीं सुतरां ऋतस्तुभम् ।

ददाशुः १,११२,२०; ७१ याभिः शन्तातीं भवथः ददाशुषे ।

धीः-प्रवृत्तिः १,११२,२; ५३ याभिः धियः अवथः कर्मनिष्टये ।

त्रिमन्तुः १,११२,४; ५५ याभिः त्रिमन्तुः अभवत् त्रिचक्षणः ।

(४) संग्रामे शत्रुहननेन रक्षणम् ।

आर्यः	१,११७,२१; ११२	अभि दस्युं बकुरेणा धमन्ता उरु ज्योतिश्चक्रुः आर्याय ।
कृशानुः	१,११२,२१; ७२	याभिः कृशानुं असने दुवस्यथः ।
त्रसदस्युः	१,११२,१४; ६५	याभिः पूर्भिदे त्रसदस्युं आवतम् । [धनप्रदानं-द्रष्टव्यं । ८,८,२१; ४४१]
दिवोदासः	१,११२,१४: ६५	याभिः दिवोदासं शम्बरहत्य आवतम् ।
नरः	१,११२,२२; ७३	याभिः नरं गोषुयुधं नृषाह्ये क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः ।
		याभी रथान् अवथुः याभिः अर्वतः ।
पठर्वा	१,११२,१७; ६८	याभिः पठर्वा जठरस्य मज्मनाग्निर्नादीदेचित इद्धो अज्मन्ना ।
पृथुश्रवाः	१,११६,२१; ९७	निरहतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता पृथुश्रवसो वृषणावरातीः ।
शर्यातः	१,११२,१७; ६८	याभिः शर्यातं अवथः महाधने।
स्यूमरश्मिः	१,११२,१६; ६७	याभिः शारीः आजतं स्यूमरश्मये ।
	१,११६,२; ७८	वीळुपत्मभिः आशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाशदाना। तद् रासभो नासत्या सहस्रं आजा यमस्य प्रधने जिगाय॥
	१,११७,१६; ११७	जातं विष्वाचो अहतं विषेण ।
	१,११२,१२; ६३	अनश्वं याभी रथमावतं जिषे।

(५) परकृतविविधापद्भ्यः अवनम् ।

अत्रिः	१,११२,७; ५८	याभिः...तप्तं घर्ममोम्यावन्तमत्रये...आवतम् ।
	१,११२,१६; ६७	याभिर्नरा...अत्रये... ... गातुमीषथुः ।
	१,११६,८; ८४	हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् । ऋत्रीसे अत्रिमश्विनावनीतमुन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति॥
	१,११७,३; १०४	ऋषिं नरावंहसः पाञ्चजन्यमृबीसादत्रिं मुञ्चथो गणेन । मिनन्ता दस्योरशिवस्य मायाअनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता ॥
	१,११८,७; १३३	युवमत्रयेऽवनीताय तप्तमूर्जमोमानमश्विनावधत्तम् ।
	१,११९,६; १४३	युवं ... उरुष्यथः हिमेन घर्म परितप्तमत्रये ।
	१,१८०,४; १७८	युवं ह घर्म मधुमन्तमत्रयेऽपो न क्षोदोऽग्रणीतमेषे ।
	१,१८३,५; २०६	युवां गोतमः पुरुमीळ्हो अत्रिर्दस्रा हवतेऽवसे हविष्मान् ।
	५,७३,६; २६३	युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुम्नेन चेतसा । घर्म यद् वामरेपसं नासत्याऽऽस्ना भुरण्यति ।
	५,७३,७; २६४	उग्रो ह वां ककुहो यथिः शृण्वे यामेषु सन्तनिः । यद् वां दंसोभिरश्विनाऽत्रिर्नरावर्वतति ॥
	५,७४,१; २६८	अत्रिर्वामा विवासति ।
	७,६८,५; ३४२	चित्रं ह यद्वां भोजनं न्वास्ति न्यत्रये माहिष्वन्तं युयोतम् । यो वामोमानं दधते प्रियः सन् ॥
	७,७१,५; ३६६	निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रिम् ।
	८,५,२५; ४०८	यथा चित्कण्वमावतं प्रियमेधमुपस्तुतम् । अत्रिं शिञ्जारमश्विना ॥
स्यावाश्व (आत्रेयः)	८,३५,१९; ५१७	अत्रेरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुतिं स्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
अर्चनाना (आत्रेयः)	८,४१,५; ५३४	यथा वामत्रिरश्विना गर्भिर्विप्रा अजोहवीत् ।

गोपवन (आत्रेयः)	८,७३,३; ५४२	उप स्तृणीतमत्रये हिमेन घर्ममश्विना । अन्ति पक्वतु वामवः ॥
	८,७३,७; ५४६	अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं युवमश्विना । अन्ति पक्वतु वामवः ॥
	८,७३,८; ५४७	वरेथे अग्निमातपो वदते वल्गवत्रये । अन्ति० ...॥
	५,७८,४; ३००	अत्रिर्यद् वामवरोहन्नृबीस-मजोहवीन्नाधमानेव योषा । श्येनस्य चिज्जवसा नूतनेना-ऽऽगच्छतमश्विना शन्तमेन॥
	१०,३९,९; ५९१	युवमृबीसमुत तप्तमत्रय ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्त वध्रये ।
अत्रिः सांख्यः	१०,१४३,१; ६२७	त्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमश्वं न यातवे ।
	१०,१४३,२; ६२८	त्यं चिदश्वं न वाजिनमेरणवो यमत्नत । दळ्हं ग्रन्थिं न वि ष्यतमत्रिं यविष्ठमा रजः ॥
	१०,१४३,३; ६२९	नरा दंसिष्ठावत्रये शुभ्रा सिषासतं धियः ।
कण्वः	१,४७,५; ४३	याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना ।
	१,११२,५; ५६	याभिः कण्वं प्र सिषासन्त-मावतम् ।
	१,११७,८; १०९	युवं ... अदत्तं महः क्षोण-स्याश्विना कण्वाय ।
	१,११८,७; १३३	युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुजुपाणा ।
	८,५,२३; ४०६	युवं कण्वाय नासत्याऽपिरि-प्ताय हर्म्ये । शश्वदूतीर्द-शस्यथः ॥
	८,५.२५; ४०८	यथा चित् कण्वमावतम् ।
	८,८,२०; ४४०	याभिः कण्वं मेधातिथिं ... आवतम् ।
जाहुषः	१,११६,२०; ९६	परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सी सुगेभिर्नक्तं ऊहथुः रजोभिः।
	७,७१,५; ३६६	नि जाहुषं शिशिरे धातमन्तः।
दीर्घतमा (औचथ्यः)	१,१५८,४; १७२	उपस्तुतिरौचथ्यमुरुष्येत् मा मामिमे पतत्रिणी वि दुग्धाम्। मा मामेधो दशतयश्चितो धाक् प्र यद् वां बद्धस्तमनि खादति क्षाम् ॥
	१,१५८,५; १७३	न मा गरन् नद्यो मातृतमा दासा यदीं सुसमुब्धमवाधुः। शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत् स्वयं दास उरो अंसावपि ग्ध ॥
रेभः	१,११२,५; ५६	याभी रेभं निवृतं सित-मद्भ्यः ... । ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ।
	१,११६,२४; १००	दश रात्रीरशिवेना नव द्यून-वनद्धं श्रथितमप्स्वन्तः । विप्रुतं रेभमुदनि प्रवृक्त-मुन्निन्यथुः सोममिव स्रुवेण॥
	१,११७,४; १०५	अश्वं न गूळ्हमश्विना दुरेवै-र्ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु । सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिर्न ... ॥
	१,११७,२२; ११३	हिरण्यस्येव कलशं निखात-मुदूपथुर्दशमे अश्विनाहन् ॥
	१,११८,६; १३२	उद् रेभं दस्रा वृषणा शचीभिः ।
	१,११९,६; १४३	युवं रेभं परिषूतेरुरुष्यथः ।
	१०,३९,९; ५९१	युवं ह रेभं वृषणा गुहा-हितमुदैरयतं मम्रुवांसम-श्विना ॥
वन्दनः	१,११२,५; ५६	याभिः [ऊतिभिः] उद् वन्दनमैरयतं स्वर्दृशे ।
	१,११६,११; ८७	तद् वां नरा शंस्यं राध्यं चाभिष्टिमन्नासत्या वरूथम् । यद् विद्वांसा निधिमिवापगू-ळ्हमुद् दर्शतादूपथुर्वन्दनाय॥
	१,११७,५; १०६	सुषुप्वांसं न निर्ऋतेरुपस्थे सूर्यं न दस्रा तमसि क्षियन्तम्। शुभे रुक्मं न दर्शतं निखा-तमुदूपथुरश्विना वन्दनाय ॥
	१,११८,६; १३२	उद् वन्दनमैरतं दंसनाभिः।

१,११९,६; १४३ प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा॥
१,११९,७; १४४ युवं वन्दनं निर्ऋतं जरण्यया रथं न दस्रा करणा समिन्वथः ॥
१०,३९,८; ५९० युवं वन्दनमृश्यदादुदूपथुः ।
भुज्युः तौग्र्यः १,११२,६; ५७ भुज्युं याभिः [ऊतिभिः] अव्यथिभिर्जिजिन्वथुः ।
१,११२,२०; ७१ भुज्युं याभिः (ऊतिभिः) अवथः ।
१,११६,३-५; ७९-८१ तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे रयिं न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः। तमूहथुर्नौभिरात्मन्वतीभिरन्तरिक्षप्रुद्भिरपोदकाभिः ॥ तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्भिर्नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः। समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः ॥ अनारम्भणे तदवीरयेथामनास्थाने अग्रभणे समुद्रे। यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमातस्थिवांसम् ॥
१,११७,१४; ११५ युवं भुज्युमर्णसो निः समुद्राद् त्रिभिरूहथुर्ऋज्रेभिरश्वैः॥
१,११७,१५; ११६ अजोहवीदश्विना तौग्र्यो वां प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जगन्वान् ।
निष्टमूहथुः सुयुजा रथेन मनोजवसा वृषणा स्वस्ति ॥
१,११८,६; १३२ निष्टौग्र्यं पारयथः समुद्रात् ।
१,११९,४; १४१ युवं भुज्युं भुरमाणं वि भिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ । यामिष्टं वर्तिर्वृषणा विजेन्यम् ... ।
१,११९,८; १४५ अगच्छतं कृपमाणं परावति पितुः स्वस्य त्यजसा निबाधितम् ।
१,१५८,३; १७१ युक्तो ह यद् वां तौग्र्याय पेरुर्वि मध्ये अर्णसो धायि पज्रः।
१,१८०,५; १७९ आ वां दानाय वक्वृतीय दस्रा गोरोहेण तौग्र्यो न जिव्रिः।
१,१८२,५-७; १९८-२०० युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवमात्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्र्याय कम् । येन देवत्रा मनसा निरूहथुः सुपप्तनी पेतथुः क्षोदसो महः॥ अवविद्धं तौग्र्यमप्स्वन्तरनारम्भणे तमसि प्रविद्धम् । चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा उदधिभ्यामिषिताः पारयन्ति ॥ कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्र्यो नाधितः पर्यषस्वजत् । पर्णा मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम् ॥
६,६२,६; ३११ ता भुज्युं विभिरद्भ्यः समुद्रात् तुग्रस्य सूनुमूहथू रजोभिः । अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरुपस्थात् ॥
७,६८,७; ३४४ उत त्यं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे । निरीं पर्षदरावा यो युवाकुः॥
७,,६९,७; ३५३ युवं भुज्युमवविद्धं समुद्र उदूहथुरर्णसो अस्रिधानैः । पतत्रिभिरश्रमैरव्यथिभिर्दंसनाभिरश्विना पारयन्ता ॥
८,५,२२; ४०५ कदा वां तौग्र्यो विधत् समुद्रे जहितो नरा । यद् वां रथो विभिष्पतात् ॥
१०,३९,४; ५८६ निष्टौग्र्यमूहथुरद्भ्यस्परि ।
१०,४०,७; ६०३ युवं ह भुज्युं...उपारथुः ।
१०,१४३,५ ६३१ युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईङ्खितम् । यातमच्छा पतत्रिभिर्नासत्या सातये कृतम् ॥
सप्तवध्रिः ५,७८,५; ३०१ वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्या इव । श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम् ॥

५,७८,६; ३०२ भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये। मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः॥
८,७३,९; ५४८ प्र सप्तवध्रिराशसा धारामग्नेरशायत।
१०,३९,९; ५९१ ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्तवध्रये।
८,२२,१२; ४८३ 'याभिः किविं वावृधुः'।
[वन्दनपीडानिवारणार्थं एतत् कर्म इति केचित्]

(६) भिषक्कर्मणा अवनम्।

स्रामः १,११७,१९; १२० महीं वामूतिरश्विना मयोभूः उत स्रामं धिष्ण्या सं रिणीथः॥

नार्षदः १,११७,८; १०९ प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम्।

परावृज् १,११२,८; ५९ याभिः शचीभिः वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृथः। ×

कविः १,११६,१४; ९० उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमाणं अकृणुतं विचक्षे।

ऋज्राश्वः १,११६,१६; ९२ शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानमृज्राश्वं तं पितान्धं चकार। तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दस्रा भिषजावनर्वन्।
१,११७,१७; ११८ शतं मेषान् वृक्ये मामहानं तमः प्रणीतमशिवेन पित्रा। आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विचक्षे॥
१,११७,१८; ११९ शुनमन्धाय भरमह्वयत् सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति। जारः कनीन इव चक्षदान ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान्॥
१,१२०,६; १५३ श्रुतं गायत्रं तकवानस्याहं चिद्धि रिरेभाश्विना वाम्। आक्षी शुभस्पती दन्॥

विश्पला १,११२,१०; ६१ याभिर्विश्पलां धनसामथर्व्यं सहस्रमीळ्ह आजावजिन्वतम्।
१,११६,१५; ९१ चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम्। सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम्।
१,११७,११; ११२ सं विश्पलां नासत्यारिणीतम्।
१,११८,८; १३४ प्रति जङ्घां विश्पलाया अधत्तम्।
१,१८२,१; १९४ विश्पलावसू दिवो नपाता।
१०,३९,८; ५९० युवं सद्यो विश्पलामेतवे कृथः।

दधीचः १,११६,१२; ८८ तद् वां नरा सनये दंस उग्रमाविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम्। दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो वामश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच॥
१,११७,२२; १२३ आथर्वणायाश्विना दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम्। स वां मधु प्र वोचदृतायन् त्वाष्ट्रं यद् दस्रावपिकक्ष्यं वाम्।
१,११९,९; १४६ युवं दधीचो मन आ विवासथोऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं वदत्।

च्यवनः १,११६,१०; ८६ जुजुरुषो नासत्योत वर्त्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात्। प्रातिरतं जरितुरायुर्दस्रादित् पतिमकृणुतं कनीनाम्॥
१,११७,१३; ११४ युवं च्यवानमश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः।
१,११८,६; १३२ पुनश्च्यवानं चक्रथुर्युवानम्॥
५,७४,५; २७२ प्र च्यवानाज्जुजुरुषो वर्त्रिमतकं न मुञ्चथः। युवा यदी कृथः पुनरा काममृष्वे वध्वः॥
५,७५,५; २८२ विभिश्च्यवानमश्विना नियाथो अद्ग्याविनं माध्वी मम श्रुतं हवम्॥

× द्रष्टव्यम्–'नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थ्यः (इन्द्रः)। १,१३,१२; ११४८। स विद्वाँ अपगोहं कनीनामाविर्भवन्नुदतिष्ठत् परावृक्। प्रति श्रोणः स्थाद् ध्वनगचष्ट सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार।' (इन्द्रः) १,१५,७; ११६८।

७,६८,६; ३४३ उत त्यद् वां जुरते अश्विना भूच्च्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे। अधि यद् वर्प इत ऊति धत्थः॥
७,७१,५; ३६६ युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तम्।
१०,३९,४; ५८६ युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः।
कलिः १०,३९,८; ५९० युवं विप्रस्य जरणां उपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः।
१,११२,१५; ६६ याभिः कलिं वित्तजानिं दुवस्यथः।
श्यावाश्वः १,११७,२४; १२५ त्रिधा ह श्यावं अश्विना विकस्तं उज्जीवस ऐरयतं सुदानू।
१,११७,८; १०९ युवं श्यावाय रुशतीं अदत्तम्।
विप्रः- १,११९,७; १४४ क्षेत्राद् आ विप्रं जनथो विपन्यया।

(७) अन्येषां प्राणिनामवनम्।

अर्वा १,११२,११; ७१ जवे याभिः यूनः अर्वन्तं आवतम्।
गावः १,११२,१९; ७० आ घ वा याभिः अरुणीः आशिक्षतम्।
१,११२,१८; ६९ अग्रं गच्छथः विवरे गोअर्णसः।
१,११२,३; ५४ याभिः [ऊतिभिः] धेनुं अस्वं पिन्वथो नरा।
शयुः १,११२,१६; ६७ याभिः [ऊतिभि] नरा शयवे...गातुमीषथुः।
१,११६,२२; ९८ शयवे चिन्नासत्या शचीभिर्जसुरये स्तर्यं पिप्यथुर्गाम्।
१,११७,२०; १२१ अधेनुं दस्रा स्तर्यं विषक्तामपिन्वतं शयवे अश्विना गाम्।
१,११७,२२; ११३ दिवो नपाता वृषणा शयुत्रा।
१,११८,८; १३४ युवं धेनुं शयवे नाधितायापिन्वतमश्विना पूर्व्याय।
१,११९,६; १४३ युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि।
६,६२,७; ३१२ दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गाम्
७,६८,८; ३४५ उत श्रुतं शयवे हूयमाना।
यावघ्न्यामपिन्वतमपो न स्तर्यं चिच्छक्त्यश्विना शचीभिः।
१०,३९,१३; ५९५ अपिन्वतं शयवे धेनुमश्विना।
१०,४०,८; ६०४ युवमश्विना शयुं युवं ... उरुष्यथः।
मक्षिका १,११२,२१,७२ मधु प्रियं भरथः यत् सरड्भ्यः।
१,११९,९; १४६ उत स्या वां मधुमन्माक्षिकारपत्।
वर्तिका १,११२,८; ५९ याभिर्वर्तिकां ग्रसिताममुञ्चतम्।
१,११६,१४; ९० आस्नो वृकस्य वर्तिकामभीके युवं नरा नासत्यामुमुक्तम्।
१,११७,१६; ११७ अजोहवीदश्विना वर्तिका वामास्नो यत् सीममुञ्चतं वृकस्य।
१,११८,८; १३४ अमुञ्चतं वर्तिकामंहसो निः।
१०,३९,१३; ५९५ वृकस्य चिद् वर्तिकामन्तरास्याद् युवं शचीभिर्ग्रसिताममुञ्चतम्।

(८) अतिमानुषाणि कर्माणि।

१,११६,१०; ९६ विभिन्दुना नासत्या रथेन वि पर्वतॉं अजरयू अयातम्।
१,११७,१६; ११७ वि जयुषा ययथुः सान्वद्रेः।
१,११६,९; ८५ परावतं नासत्यानुदेथाम्। उच्चाबुध्नं चक्रथुर्जिह्मबारम्।
क्षरन्नापो न पायनाय राये सहस्राय तृष्यते गोतमस्य।
१,११६,७; ८३ कारोतराच्छफादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भॉं असिञ्चतं सुरायाः।

१,११७,६; १०७ शफादश्वस्य वाजिनो जनाय शतं कुम्भान् आसिञ्चतं मधूनाम् ॥
१,११२,१२; ६३ याभी रसां क्षोदसोद्रः पिपिन्वथुः ।
१,११२,९; ६० याभिः सिन्धुं मधुमत्तमसश्चतम् ।
१,११२,११; ६२ याभिः सुदानू औशिजाय वणिजे दीर्घश्रवसे मधु कोशो अक्षरत् ।
१,११२,४; ५५ याभिः परिज्मा तनयस्य मज्मना द्विमाता तूर्षु तरणिर्विभूषति ।
१,११२,१३; ६४ याभिः सूर्यं परियाथः परावति ।
सूर्यस्य दुहिता १,३४,५; १६ त्रिष्ठं वां सूरे दुहिता रुहद् रथम् ।
१,११६,१७; ९३ आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य कार्ष्मेवातिष्ठदर्वता जयन्ती। विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या सचेथे ॥
१,११७,१३; ११४ युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया नासत्यावृणीत ॥
१,११८,५; १३१ आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदत्र जुष्ट्वी नरा दुहिता सूर्यस्य।
१,११९,२; १३९ आ वामूर्जानी रथमश्विना-रुहत् ॥
१,११९,५; १४२ युवोरश्विना वपुषे युवायुजं रथं वाणी येमतुरस्य शर्ध्यम्। आ वां पतित्वं सख्याय जग्मुषी योषावृणीत जेन्या युवां पती ॥
१,१८४,३; ११० श्रिये पूषन्निषुकृतेव देवा नासत्या वहतुं सूर्यायाः। वचयन्ते वां ककुहा अप्सु जाता युगा जूर्णेव वरुणस्य भूरेः ॥
५,७३,५; २६१ आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठद् रघुष्यदं सदा। परि वामरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः ॥
६,६३,५; ३२१ अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य रथं तस्थौ पुरुभुजा शतोतिम् ।
७,६९,३; ३४९ वि वां रथो वध्वा यदमानोऽन्तान् दिवो बाधते वर्तनिभ्याम् ।
७,६९,४; ३५० युवोः श्रियं परि योषावृणीत सूरो दुहिता परितक्म्यायाम्।
८,८,१०; ४३० आ यद् वां योषणा रथमतिष्ठद् वाजिनीवमू । विश्वान्यश्विना युवं प्र धीतान्यगच्छतम् ॥

अश्विनौ-देवताया गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तरपद-सूची।

दीदि – अग्नी १,१५,११; ४
रिश – अदसा ८,८,१७; ४३७
अन् – अपच्युता ८,२७,६; ४९६
न – असत्या १,३,३; ३
सु – अश्वा ७,६८,१; ३३८
शत – क्रतू १,११२,२३; ७४
स – क्षणी ८,२२,१५; ४८६
अद्रि – गू ५,७३,२; २५९
विश्व – गूर्ता १,१८०,२; १७६
सु – गोपा १,१२०,७; १५४
अवद्य – गोहना १,३४,३; १४
पुरु (श्र) – चन्द्रा ८,५,३२; ४१५
गम्भीर – चेतसा ८,८,२; ४२२
वत्स-प्र – चेतसा ८,८,७; ४२७
वि – चेतसा ५,७४,९; २७६
मद – च्युता ८,२२,१६; ४८७
अ – जरौ १,११२,९; ६०
धी – जवना ८,५,३५; ४१८
मनो – जवसा १,११७,१५; ११६
पुरा – जा ७,७३,१; ३७३

सु – जाता १,११८,१०; १३६
धियं – जिन्वा १,१८२,१; १९४
स – जोषसा ३,५८.७; २३२
सचनस् – तमा ८,२६.८; ४९७
मनस् (नो) – तरा १,४६,२; २५
अ – तूर्तदक्षा ८,२६.१; ४९०
पुरु – त्रा २,३९,१; २१५
मर्त्य – त्रा ६,६२,८; ३१३
शयु – त्रा १,११७,१२; ११३
पुरु – दंसा ७,७३,१; ३७३
पुरु – दंससा १,३,२; २
सु – दंससा ८,१०,३; ४६७
अतूर्त – दक्षा ८,२६,१; ४९०
सु – दक्षा ३,५८.७; २३२
सु – दानू १,११२,११; ६२
अ – दाभ्या ५,७५,७; २८४
वसु – धिती १,१८१,१; १८५
दिवो (वः) – नपाता १,११७,१२; ११३
दिवो (वः) – नरा १०,१४३,३; ६२९
अ – निन्द्या १,१८०,७; १८१
दानुनः (स) – पती ८,८,१६; ४३६
नृ – पती ७,६७,१; ३२८
शची – पती ७,६५.५; ३३२
शुभ (स) – पती १,३,१; १
सन् – पती अथर्व० ७,७३.४; ३७६
पुरु – पन्था ६,६३,१०; ३२६
सु – पर्णा ४ ४३,३; २४६
तनू – पा ८,९,११; ४४९
पर (स्) – पा ८,९,११; ४४९
सु-गो – पा १,१२०,७; १५४
छर्दिस् – पी ८,९,११; ४४९
जगत् – पी ८,९,११; ४४९
मधु – पी १,१८०,२; १७६
द्रवत् – पाणी १,३,१; १
वीळु – पाणी ७,७३.४; ३७६
मधु – पातमा ८,२२,१७; ४८८
दक्ष – पिता वा० य० १४,३; ६३६
हिरण्य – पेशसा ८,८,२; ४२२
वत्स – प्रचेतसा ८,८,७; ४२७
अरि – प्रा ८,८,९; ४२९
अध – प्रिया ८,८,४; ४२४
पुरु – प्रिया ८,५,४; ३८७
ऋत – प्सू १,१८०,३; १७७
पुरु – भुजा १,३,१; १
पुरु – भू ४,४४.४; २५४
मयस् (यो) – भुवा १,९२,१८; ५१
शम् – भू १,४६.१३; ३६
शम् – भुवा ८,८,१९; ४३९
शम् – भविष्ठा २,३९,५; २१९
सचा – भुवा १,३४,११; २२
पुरु – भोजसा ८,२२,१६; ४८७
अश्व (श्वा) – मघा ७,७१,१; ३६२
गो – मघा ७,७१,१; ३६२
पुरु – मन्तू १,१५८,१; १६९
पुरु – मन्द्रा ८,५,४; ३८७
पुनर् – मन्यौ १,११७,१४; ११५
अ – मर्त्या ८,२६,१७; ५०६
सिन्धु – मातरा १,४६,२; २५
प्रिय – मेधा ८,८,१८; ४३८
प्रातर् – यावाणा २,३९,२; २१६
शुभ्र – यावाना ८,२६,१९; ५०८
प्रातर् – युजा १,२२,१; ५
सु – युजा ७,७०,२; ३५६
मधु (धू) – युवा ५,७३,८; २६५
सु – रथा १,२२,२; ६
चित्र – राती ६,६२,५; ३१०
अ – रेपसा १,१८१,४; १८८
मधु – वर्णा ८,२६.६; ४९२
रुद्र – वर्तनी १,३,३; ३
हिरण्य – वर्तनी १,९२,१; ५१
जेन्या – वसू ७,७४,३; ३८०
पुरु – वसू १,४७,१०; ४८
मना – वसू ५,७४.१; २६८
वाजिनी – वसू २,३७,५; २१४
विश्पला – वसू १,१८२,१; १९४
वृषन् (ण्) – वसू २,४१,८; २२४
शची – वसू १,६७,५; ३३२
सूर्या – वसू ७,६८,३; ३४०
विश्व – वारा ७,७०.१; ३५५
यज्ञ – वाहसा १,१५,११; ४
विप्र – वाहसा ५,७४,७; २७४

अहर् – विदा ८,५,९; ३९२
ऋतु – विदा २,३९,२; २१६
वसु – विदा १,४६,२; २५
स्वर् – विदा ८,८,७; ४२७
सु – वीरा ८,२६,७; ४९६
ऋत (ता) – वृधा १,४७,१; ३९
न – वेदसा १,३४,१; १२
विश्व – वेदसा १,४७,४; ४२
शुचि – व्रता १,१५,११; ४
पुरु – शाकतमा ६,६२,५; ३१०
सु – श्रुता १,३९,६; २२०
हवन – श्रुता ५,७५,५; २८१
न – अ-सत्या १,३,३; ३
युयुजान – सप्ती ६,६१,४; ३०९
वाज – सातमा ८,५,५; ३८८
शूर – साता १,१५७,२; १६४
सु – स्तु [ष्टु]ता ६,६३,६; ३११
दिवि – स्पृशा १,२१,२; ६
पुरु – स्पृहा ८,८,२१; ४४१
अ – स्निधा ३,५८,७; २३१
रक्षः (क्षो) – हना (णा) ७,७३,४; ३७६
वृत्र – हन्तमा ८,८,९; ४२९
सु – हवा ८,२२,१; ४७१
पुरु – हूता ६,६३,१; ३१७
याम – हूतमा ८,७३,६; ५४५
आशु – हेषसा ८,१०,२; ४६८

अश्विनौ–देवतामन्त्राणां

वर्णानुक्रमसूची।

अकारि वामन्धसो ३१९
अगच्छतं कुपमाणं १४५
अग्निनेन्द्रेण वरुणेन ५०९
अङ्गिरस्वन्ता उत ५२२
अचेति दस्रा व्युनाकम् १६१
अजोहवीदश्विना तौग्र्यो ११६
अजोहवीदश्विना वर्तिका ११७
अजोहवीन्नासत्या ८९
अतः सहस्रनिर्णिजा ४३१
अतारिष्म तमसः २०७; २१३; ३७३
अत्यायातमश्विना २७९
अत्रिर्यद् वामवरोहन् ३००
अत्रेरिव शृणुतं ५२७
अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयामि ६३८
अध स्वप्नस्य निर्विदे १५९
अधा ह यन्तो अश्विना ३८२
अधि श्रिये दुहिता ३२१
अधेनुं दस्रा स्तर्यं विषक्तां १२१
अध्वर्यु वा मधुपाणिं ६१३
अनारम्भणे तदवीरयेथाम् ८१
अन्तरैश्वक्रैस्तनयाय ३१५
अप स्वसुरुषसो ३६१
अपातामश्विना घर्मम् ६४०
अप्रस्वतीमश्विना ७५
अबोध्यग्निर्जर्म उदेति १६३
अभि वां नूनमश्विना ३३०
अभुत्स्यु प्र देव्या साकं ४५९
अभूदिदं वयुनमो १९४
अभूदु पारमेतवे ३४
अभूदु भा उ अंशवे ३३
अभूदुषा रुशत् पशुः २८६
अमाजुरश्विद् भवथो ५८५
अयं वां कृष्णो अश्विना ५६०
अयं वां घर्मो अश्विना ४४७
अयं वामद्रिभिः सुतः ४७९
अयं वां भागो निहितो ५३९
अयं वां मधुमत्तमः ३९
अयं समह मा तनूहि १५८
अयं ह यद् वां देवया ३४१
अरं मे गन्तं हवनाय ३१८
अरित्रं वां दिवस्पृथु ३१
अरुणप्सुरुषा अभूट् ५५५
अर्वाग् रथं नि यच्छतं ५३०
अर्वाङ् त्रिचक्रो मधु० १६५
अर्वाञ्चमद्य यय्यं २१४
अर्वाञ्चा वां सप्तयो ४६
अवन्तमत्रये गृहं ५४६
अवविद्धं तौग्र्यम् १९९
अवस्यते स्तुवते ९९
अविष्टं धीष्वश्विना ३३३
अवोर्वां नूनमश्विना ३३१
अशोच्यग्निः समिधानो ३२९
अश्वं न गूळ्हमश्विना १०५
अश्वासो ये वामुप ३८१
अश्विना घर्मं पातम् ६७०
अश्विना परि वामिषः २३३
अश्विना पिबतं मधु ४
अश्विना पुरुदंससा २
अश्विना ब्रह्मणा यातम् ६७१
आश्विना मधुमत्तमं ४१

अश्विना मधुपुत्तमो २३४
अश्विना यज्वरीरिषो १
अश्विना यद्ध कर्हि २७७
अश्विना यामहूतमा ५४५
अश्विना वर्तिरस्मदा ४९
अश्विना वाजिनीवसू २९९
अश्विना वायुना युवं २३२
अश्विनावेह गच्छतं १८४; २९७
अश्विना सारघेण मा ६७५; ६८८
अश्विना सु विचाकशद् ५५६
अश्विना स्तृषे स्तुहि ४९९
अश्विना हरिणाविव २९८
अश्विना हविरिन्द्रियं ६५६
अश्विनोरसनं रथम् १५७
असर्जि वां स्थविरा १९१
असश्चता मघवद्भ्यो ३३६
अस्ति हि वामिह स्तोता २७३
अस्मभ्यं वाजिनीवसू ३९५
अस्मभ्यं सु वृषण्वसू ५०४
अस्माकमद्य वामयं ४०१
अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या २८५
अस्मे आ वहतं रयिं ३९८
अस्मे ऊ षु वृषणा २०९
अस्मे सा वां माध्वी रातिः २११
अस्य पिबतमश्विना ३९७
अहेम यज्ञं पथा० ३७५

आकेनिपासो अहभिः २४२
आ गोमता नासत्या ३६८
आञ्जनस्य मदुघस्य ६४९
आ तिष्ठतं सुवृतं २०४
आ तेन यातं मनसो ५९४
आथर्वणायाश्विना ११३
आदारो वां मतीनां २८
आ न ऊर्जं वहतम् १६६
आ नः स्तोममुप द्रवत् ३९०
आ नासत्या गच्छतं २१
आ नासत्या त्रिभिरेकादशैः २२
आ नूनं यातमश्विना ४२१; ४५७; ५७६
आ नूनं रघुवर्तनिं ४५१
आ नूनमश्विना युवं ४४४
आ नूनमश्विनोर्ऋषिः ४५०
आ नो अश्वावदश्विना ४८८
आ नो अश्विना त्रिवृता २३
आ नो गन्तं मयोभुवा ४३९
आ नो गन्तं रिशादसा ४३७
आ नो गव्येभिरश्व्यैः ५५३
आ नो गोमन्तमश्विना ३९३
आ नो देवेभिरुप ३६९
आ नो द्युम्नैरा श्रवोभिः ४१५
आ नो नावा मतीनां ३०
आ नो यातं दिवस्पर्या ४२४
आ नो यातं दिवो अच्छा २५५
आ नो यातमुपश्रुति ४२५
आ नो रत्नानि बिभ्रतौ २८०
आ नो विश्वान्यश्विना ४३३
आ नो विश्वाभिरूतिभिः ४२१
आ परमाभिरुत ३१६
आ पश्चातान्नासत्या ३७२; ३७७
आपी वो अस्मे पितरेव ६१७
आ भात्यग्निरुषसाम् २८७
आ मन्येथामा गतं २२९
आ मे अस्य प्रतीव्यम् ४९७
आ मे वचांस्युद्यता ५७८
आ मे हवं नासत्या ५५८
आ यद् वां योषणा ४३०
आ यद् वां सूर्या रथं २६२
आ यातं नहुषस्पर्या ४२३
आ यात मुप भूषतं ३८०
आरज्ञेव मध्वेरयेथे ६२३
आ वहेथे पराकात् ४१४
आ वां रथं युवतिः १३१
आ वां रथं दुहिता ९३
आ वां रथमवमस्यां ३६४
आ वां रथं पुरुमायं १३८
आ वां रथो अश्विना १२७
आ वां रथो रथानां २७५
आ वां रथो रोदसी ३४७
आ वां रथोऽवनिर्न १८७
आ वां वयोऽश्वासो ३२३
आ वां वाहिष्ठो अश्विना ४९३
आ वां विश इहावसे ४२९
आ वां विश्वाभिरूतिभिः ४३८; ५७४
आ वां श्येनासो अश्विना १३०
आ वां सुम्नैः शंयू इव ६३२
आ वां प्राषाणो अश्विना ५३३
आ वां दानाय वव्रुतीय १७९
आ वां नरा मनोयुजो २८३
आ वामगन्त्सुमतिः ६०८
आ वामश्वासः शुचयः १८६
आ विश्ववाराश्विना गतं ३५५
आ शुभ्रा यातमश्विना ३३८
आ श्येनस्य जवसा १३७
आश्विनावश्वावती ९
आ सुग्म्याय सुग्म्यं ४८६
आस्नो वृकस्य वर्तिका० ९०
आहं खिदामि ते मनो ६४८
आ हि रुहतमश्विना ४८०

इदं हि वां प्रदिवि १९०
इन्द्रतमा हि धिष्ण्या १९५
इमं मे स्तोममश्विना ५५९
इमा उ वां दिविष्टय ३७८
इमा ब्रह्माणि वर्धना २६७
इयं मनीषा इयमश्विना ३६१; ३६७
इयं वामह्वे शृणुतं ५८८
इह त्या पुरुभूतमा १५९; ४७४
इहा गतं वृषण्वसू ५४९
इहेह जाता समवाव० १८८
इहेह यद् वां समना १५०; २५७
ईळे द्यावापृथिवी ५१
ईर्मान्यद् वपुषे वपुः २६०
ईक्येभिरर्वागवसे ४८

उग्रो वां ककुहो यविः २६४
उत त्यं वीरं धनसाम् ५७०
उत त्यद् वां जुरते ३४३
उत त्यं भुज्युमश्विना ३४४
उत त्या दैव्या भिषजा ४७१
उत नो गोमतीरिष १९१

उत नो दिव्या इष	४०४
उत म ऋज्रे पुरयस्य	३२५
उत स्या वां मधुमत्	१४६
उत स्या वां रशतो	१९२
उत स्या श्वेतयावरी	५०७
उता यातं संगवे	२८९
उदीराथामृतायते	५४०
उदु स्तोमासो अश्विनोः	३७०
उद् वन्दनमैरतं	१३२
उद् वां पृक्षासो मधुमन्तः	२३८
उप स्या वर्हा गमतो	३७६
उप नो यातमश्विना	४९६
उप नो वाजिनीवसू	४७८
उपस्तुतिरौचथ्यम्	१७२
उप स्तृणीतमन्तये	५४२
उपायातं दाशुषे मर्त्याय	३६३
उभा उ नूनं तदिदर्थ०	६१४
उभा पिबतमश्विना	३८
उभा हि दस्रा भिषजा	५६७
उरु वां रथः परि	२४८
उष्टारेव फर्वरेषु	६१५
ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य	१३९
ऊर्ध्वो वामग्निरध्वरेषु	३२०
ऋतेन देवः सविता	५७१
ऋध्याम स्तोमं सनुयाम	६२४
ऋभुमन्ता वृषणा	५२३
ऋषिं नरावंहसः	१०४
एकस्मिन् योगे भुरणा	३३५
एकस्या वस्तोरावतं	९७
एतं वां स्तोममश्विनौ	५९६
एतानि वां श्रवस्या	१११
एतानि वामश्विना	१२६; २२२
एतावद् वां वृषण्वसू	४१०
एवा वामह्व ऊतये	५३५
एष वां देवावश्विना	२३५
एष वां स्तोमो अश्विनौ	२१२
एष स्य कारुर्जरते	३४६
एष स्य भानुरुदियर्ति	२३७
एष स्य वां पूर्वगत्वेव	३३४
एषो उषा अपूर्व्या	१४
एह देवा मयोभुवा	५१
एह वां प्रुषितप्सवो	४१६
ओ त्यमह्व आ रथम्	४७१
ओष्ठाविव मध्वाञ्चे	२२०
क उ श्रवत् कतमो	२४४
कं याथः कं ह गच्छथः	२७०
कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो	२००
कथा नूनं वां विमना	५६८
कदा वां तौग्र्यो विधत्	४०५
कदु प्रेष्ठाविषां रयीणाम्	१८५
का राधद्धोत्रश्विना	१४८
का वां भूदुपमातिः	२४७
किमत्र दस्रा कृणुथः	१९६
किमन्ये पर्यासत	४२८
किमिदं वां पुराणवत्	५५०
कुलायिना घृतवती	६३५
कृष्टः को वामश्विना	६४१
कुह त्या कुह नु श्रुता	२६९
कुह यान्ता सुष्टुतिं	११३
कुह स्थः कुह जग्मथुः	५४३
कुह स्विद् दोषा कुह	५९८
कृष्टी देवावश्विना	२६८
को मृळाति कतम	२४५
को वां दाशत् सुमतये	१७०
को वामद्य पुरूणाम्	२७४
को वामद्या करते	२५३
क्व त्या वृक्षू पुरुहूताय	३१७
क्व त्री चक्रा त्रिवृतो	२०
क्व स्विदद्य कतमासु	६१०
क्षत्रं जिन्वतमुत	५२५
गच्छतं दाशुषो गृहम्	५६३
गर्भं धेहि सिनीवालि	६८९
गिरावरगरोटेषु	६७४
गिरो जुषेथामध्वरं	५१४
गोमद् षु नासत्या	२२३
ग्रावाणेव तदिदर्थं	२१५
घर्मेव मधु जठरे	६२१
घनिष्ठ देवा ओषधीषु	३५८
चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि	९१
चित्रे तद् वां सुराधसा	६३०
चित्रं ह यद् वां भोजनं	३४२
चोदयतं सूनृताः	५८४
छर्दिर्यन्तमदाभ्यं	५३२
जनासो वृक्तबर्हिषो	४००
जनिष्ट योषा पतयत्	६०५
जम्भयतमभितो	१९७
जयतं च प्र स्तुतं च	५१९
जीवं रुदन्ति वि मयन्ते	६०६
जुजुरुषो नासत्योत	८६
जुषेथां यज्ञं बोधतं	५१२
जुहुराणा चिदश्विना	४९४
तं युञ्जाथां मनसो	२०२
तं युवं देवावश्विना	२३६
तं वां रथं वयमद्या	१८४; २५१
तत् तदिदश्विनोरवो	३५
तद् प्रु वामेना कृतं	२६१
तद् वां नरा नासत्यावनु	२०१
तद् वां नरा शंस्यं	८७; १०७
तद् वां नरा सनये	८८
तप्तो वां घर्मो नक्षतु	६८३
तमिन्द्रं पशवः सचा	६५८
तर्द हे पतङ्ग हे	६४४
तर्दापते वघापते	६४५
ता न आ वोळ्हमश्विना	२२५
ता नव्यसो जरमाणस्य	३०९
ताभिरा यातमूतिभिः	४०७
ताभिरा यातं वृषणा	४८३
ता भुज्युं विभिरूह्यः	३११
ता मन्दसाना मनुषो	६०९
ता मे अश्विना सनीनां	४२०
ता यज्ञमा शुचिभिः	३०७
ता वर्तिर्यातं जयुषा	५९५
ता वल्गू दस्रा पुरु०	३१०
ता वां नरा स्ववसे	१३६
ता वामद्य तावपरं	२०८
ता वामद्य हवामहे	४९२
ताविदां चिदहानां	४८४

तावित्दोषा ता उपसि ४८५
ता विद्वांसा हवामहे १५०
ता सुदेवाय दाशुषे ३८९
ता ह त्यद्वृ वर्तिर्यद० ३०८
तिरः पुरू चिदश्विना २३०
तिस्रः क्षपस्त्रिरहाति ८०
तुग्रो ह भुज्युमश्विनो ७९
तेन नासत्या गतं ४७
तेन नो वाजिनीवसू ४०३; ४१३
त्यं चिदत्रिमृतजुरम् ६२७
त्यं चिदर्वं न वाजिनम् ६२८
त्या न्वश्विना हुवे ४६७
त्रयः पवयो मधुवाहने १३
त्रिरश्विना सिन्धुभिः १९
त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि १७
त्रिर्नो अश्विना यजता १८
त्रिर्नो रयिं वहतम् १६
त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते १५
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता ४०: १२८; ५६५
त्रिश्चिन् नो अद्या भवतं १२
त्रिषधस्थे बर्हिषि ४१
त्रीणि पदान्यश्विनोः ४४३
दश मासाञ्छशयानः ३०५
दश रात्रीरशिवेना १००
दशस्यन्ता मनवे ४७७
दस्रा युवाकवः सुता ३
दस्रा हि विश्वमानुषङ् ४९५
दिवाश्विद् रोचनादध्या ४२७
दिवस्कण्वास इन्दवो ३२
दीर्घतमा मामतेयो १७४
दुहीयन् मित्राधितये १५६
दूरादिहेव यत् ३८४
देव इन्द्रो नराशंसः ६६६
देवं बर्हिर्वारितीनां ६६८
देवं बर्हिः सरस्वती ६५९
देवा देवानां भिषजा ६६४
देवी उषासावश्विना ६६१
देवी ऊर्जाहुती दुवे ६६३
देवी जोष्ट्री सरस्वती ६६२
देवीर्द्वारो अश्विना ६६०
देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीः ६६५
देवो अग्निः स्विष्टकृद् ६६९
देवो देवैर्वनस्पतिः ६६७
द्युभिरक्तुभिः परि ७६
द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना ५७१
धिये समश्विना प्रावतं ४७३
धेनुः प्रत्नस्य कामं २२६
धेनूर्जिन्वतमुत ५२६
ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिः ६३४
न तं राजानावदिते ५९३
न तस्य विद्म तदु ६०७
न मा गरन् नद्यो १७३
नमोवाके प्रस्थिते ५३१
न यत् परो नान्तर २२४
नरा गौरेव विद्युतं ३५२
नरा दंसिष्ठावत्रये ६२९
न संस्कृतं प्र मिमीतो २८८
नहि वामस्ति दूरके ८
नावेव नः पारयतं २१८
नासत्याभ्यां बर्हिरिव ७७
निमिषश्चिज्जवीयसा ५४१
नि यद् युवेथे नियुतः १८०
नि षु ब्रह्म जनानां ३९६
नू नो रयिं पुरुवीरं २५६
नू मे गिरो नासत्या ५६६
नू मे हवमा शृणुतं ३३७; ३५४
नृवद् दस्रा मनोयुजा ३८५
न्यघ्न्यस्य मूर्धनि चक्रं ११
न्यु प्रियो मनुषः सादि ३७४
पनाय्यं तदश्विना ५३८
पत्नेव चर्चरं जारं ६२०
परावतं नासत्यान् ८५
परिविष्टं जाहुषं ९६
पिबतं सोमं मधुमन्तं ५७५
पिबतं घर्मं मधुमन्तं ५७३
पिबतं च तृप्णुतं चा ५१८
पुत्रमिव पितरौ ६२६
पुरं न धृष्णवा रुज ५५७
पुराणमोकः सख्यं २३१
पुराणा वां वीर्या प्र ५८७
पुरुत्रा चिद्धि वां नरा ३९९
पुरुप्रिया ण ऊतये ३८७
पुरुमन्द्रा पुरूवसू ४३१
पुरु हि वां पुरुभुजा ३१४
पुरू वर्पास्यश्विना ११०
पूर्वापुरं सुहवं ४७३
पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो ६३७
पौरं चिद्यदमुतं २७१
प्र च्यवानाज्जुजुरुषो २७१
प्रति प्रियतमं रथं २७८
प्रति वां रथं नृपती ३१८
प्र द्युम्नाय प्र शवसे ४६३
प्र बोधयोषो अश्विना ४६०
प्र यद् वहेथे महिना १८३
प्र या घोषे भृगवाणे १५१
प्र ये ययुरवृकासो ३८३
प्रवद्यामना सुवृता १२९
प्र वां रथो मनोजवा ३४०
प्र वां शरद्वान् वृषभो १९०
प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो ४४१
प्र वां दंसांस्यश्विनावोचम् १०१
प्र वां निचेरुः ककुहो २८९
प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुः ३३९
प्र वामवोचमश्विना २४३
प्र सप्तधिराशसा ५४८
प्राचीमु देवाश्विना ३३१
प्रातर्जरेथे जरणेव ५९९
प्रातर्यजध्वमश्विना २९३
प्रातर्यावाणा प्रथमा २९२
प्रातर्यावाणा रथ्येव ११६
प्रातर्युजं नासत्याधि ६११
प्रातर्युजा वि बोधय ५
प्रास्मा ऊर्जं घृतश्चुतम् ४३६
बृहन्तेव गम्भरेषु ६११
बोधिन्मनसा रथ्येषिरा २८१
ब्रह्म जिन्वतमुत ५२४
भीताय नाधमानाय ३०१

मक्षू हि ष्मा गच्छथ	२४६	यदिन्द्रेण रारथं	४५५	याभिर्नरा शयवे	६७
मधुमन्मे परायणं	५८१	यदुषो यासि भानुना	४६१	याभिर्महामतिथिग्वं	६५
मध्व ऊ षु मधूयुवा	२६५	यदुस्रियास्वाहुतं घृतं	६८२	याभिर्वभ्रं विपिपानम्	६६
मध्वः पिबतं मधुपेभिः	२३९	यद् युञ्जाथे वृषणम्	१६४	याभिर्विदंपलां धनसा	६१
मध्वः सोमस्यार्विना	१०२	यद् रोदसी प्रदिवो	३१३	याभी रसां क्षोदसोद्रः	६३
मनोजवसा वृषणा	४८७	यद् वां कक्षीवाँ उत	४५३	याभी रेभं निर्ऋतं	५६
मयि वर्चो अथो यशो	६७६	यद् वा यज्ञं मनवे	४६६	या वां कशा मधुमती	७
मंहिष्ठा वाजसातमा	३८८	यन्नासत्या पराके	४५८	यावित्था श्लोकमा दिवो	५०
मही वामूतिरश्विना	१२०	यन्नासत्या परावति	४५; ४३४	या सुरथा रथीतमा	६
मा कस्मै धातमभ्यमित्रिणे	१५५	यन्नासत्या भुरण्यथो	४४९	युक्तोह यद् वां तौग्र्याय	१७१
मा नो गव्येभिरश्व्यैः	५५४	यन्नूनं धीभिरश्विना	४६४	युञ्जाथां रासभं रथे	५६४
मा वां वृको मा वृकीरा	२०५	यमश्विना ददथुः	८१	युवं रथेन विमदाय	५८९
मित्रावरुणवन्ता उत	५२१	यमश्विना नमुचेरासुरादधि	६५४	युवं रेभं परिषूते	१४३
य ईं राजानावृतुथा	३१४	यमश्विना सरस्वती	६५७	युवं वन्दनं निर्ऋतं	१४४
यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो	४२६	ययोरधि प्र यज्ञा	४६८	युवं वरो सुषाम्णे	४९१
यत् स्थो दीर्घप्रसद्मनि	४६५	यवं वृकेणाश्विना	१२२	युवं विप्रस्य जरणाम्	५९०
यथा चक्रुर्देवासुरा	६५२	यस्ते रसः सम्भृत	६५३	युवं शका मायाविना	५८०
यथा चित् कण्वमावसं	४०८	यातं छर्दिष्पा उत नः	४५४	युवं श्यावाय रुशतीम्	१०९
यथा मक्षा इदं मधु	६८७	या दस्रा सिन्धुमातरा	२५	युवं श्रियमश्विना	२५२
यथा मधु मधुकृतः	६८६	या नः पीपरदश्विना	२९	युवं श्रीभिर्दशतीभिः	३२२
यथायं वाहो अश्विना	६४७	यानि स्थानान्यश्विना	३५७	युवं श्वेतं पेदवे	१३५; ५९२
यथा वातः पुष्करिणीं	२०३	याभिः कण्वमभिष्टिभिः	४३	युवं सुराममश्विना	६२५
यथा वातो यथा वनं	२०४	याभिः कण्वं मेधातिथि	४४०	युवं ह कृशं युवमश्विना	६०४
यथा वामत्रिरश्विना	५३४	याभिः कुत्समार्जुनेयं	७४	युवं ह गर्भं जगतीषु	१६७
यथा सोमः प्रातःसवने	६८५	याभिः कृशानुमसने	७२	युवं ह घर्मं मधुमन्तं	१७८
यथोत कृत्व्ये धनेशुं	४०९	याभिः पक्थमवथो	४८१	युवं ह भुज्युं युवमश्विना	६०३
यदत्र रिप्तꣳ रसिनः	६५५	याभिः पठर्वा जठररय	६८	युवं ह रेभं वृषणा	५९१
यददो दिवो अर्णवः	५०६	याभिः पत्नीर्विमदाय	७०	युवं ह स्थो भिषजा	१६८
यदद्य कर्हि कर्हि चित्	५४४	याभिः पारेज्मा तनयस्य	५५	युवं हि ष्मा पुरुभुजा	५६९
यदद्य वां नासत्या	४५१	याभिः शर्चीभिर्वृषणा	५९	युवं ह्यास्तं महो रन्	१५४
यदद्य स्थः परावति	२५८	याभिः शन्तातो भवथो	७१	युवं कण्वाय नासत्या	४०६
यदद्याश्विनावपाग्	४६९	याभिः शुचन्ति धनसां	५८	युवं कवी पृष्ठः पर्यश्विना	६०१
यदद्यावित्रनावहं	४५६	याभिः सिन्धुं मधुमन्तम्	६०	युवं चित्रं ददथुः	३७९
यदभिगावो अश्विगू	४८१	याभिः सुदानू औशिजाय	६१	युवं च्यवानं सनयं	५८६
यदन्तरिक्षे पतथः	४७०	याभिः सूर्यं पारयाथः	६४	युवं च्यवानं जरसो	३६६
यदन्तरिक्षे यद् दिवि	४४५	याभिरङ्गिरो मनसा	६९	युवं च्यवानमश्विना	११४
यद्प्सु यद् वनस्पतौ	४४८	याभिरन्तकं जसमानं	५७	युवं तासां दिव्यस्य	५४
यद्यातं दिवोदासाय	९४	याभिर्नरं गोषुयुधं	७३	युवं तुग्राय पूर्वेभिः	११५
यद्यपीतासो अंशवो	४६१	याभिर्नरा त्रसदस्युं	४४१	युवं देवा क्रतुना	५३६

युवं धेनुं शयवे १३४
युवं नरा स्तुवते ८३; १०८
युवमत्यस्याव नक्षथो १७६
युवमत्रये ऽवनीताय १३३
युवमेतं चक्रथुः १९८
युवं पय उस्रियायाम् १७७
युवं पेदवे पुरुवार० १४७
युवं भुज्युं समुद्र आ ६३१
युवं भुज्युमवविद्धं ३५३
युव भुज्युं भुरमाणं १४१
युवं मृगं जागृवांसं ४१९
युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो १६०
युवां ह घोषा पर्यश्विना ६०१
युवां गोतमः पुरुमीळ्हो २०६
युवां चिद्धि ष्माश्विनौ १८२
युवादत्तस्य धिष्ण्या ५०१
युवां देवास्रय एका० ५३७
युवाभ्यां वाजिनीवसू ३८६
युवां पूषेवाश्विना १९३
युवां मृगेव वारणा ६००
युवोः श्रियं परि योषा० ३५०
युवो रजांसि सुयमासो १७५
युवोरात्रिश्चिकेतति २६३
युवो रथस्य परि ४७५
युवोरश्विना वपुषे १४२
युवोरुषा अनु श्रियं ३७
युवोरु षू रथं हुवे ४९०
युवोर्दानाय सुभरा ५३
येभिस्तिस्रः परावतो ३९१
ये वां दंसांस्यश्विना ४४६
यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां २९५
यो वां यज्ञेभिराउतो ५०२
यो वां यज्ञो नासत्या ३६०
यो वां रजांस्यश्विना ५५२
यो वां रथो नृपती ३६५
यो वां नासत्यावृषिः ४३५
यो वामश्विना मनसो १०३
यो वामुरुष्यचस्तमं ५०३
यो वां परिज्मा सुवृद् ५८३
यो ह वां मधुनो दृति० ४०२
यो ह स्य वां रथिरा ३५१
रथं यान्तं कुह को ह ५९७
रथं वामनुगायसं ४१७
रथं हिरण्यबन्धुरं ४११
रथो यो वां त्रिवन्धुरो ४७६
रयिं सुक्षत्रं स्वपत्य० ९५
रश्मीरिव यच्छतम् ५२९
रातिं यद् वामरक्षसं ५७९
लोहितेन स्वधितिना ६५१
वंसगेव पूषर्या ६१८
वन्द्यन्ते वां ककुहासो २६
वयं हि वां हवामहे ४९८; ५७७
वयं चिद्धि वां जरितारः १८१
वरेण्ये अग्निमातपो ५४७
वसू रुद्रा पुरुमन्तू १६९
वातेवाजुर्या नभेव २१९
वायुरेनाः समाकरत् ६५०
वावसाना विवस्वति ३६
वावृधाना शुभस्पती ३९४
वाहिष्ठो वां हवानां ५०५
वि चेदुच्छन्त्यश्विना ३७१
वि जयुषा रथ्या यात० ३१२
वि जिहीष्व वनस्पते ३०१
विद्वांसाविद् दुरः १४९
वि पृच्छामि पाक्या १५१
विश्वा आशा दक्षिणसद् ६३९
विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन ५१०
विश्वे देवा अकृपन्त ५८१
विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेका० ५११
वीळुपत्माभिराशुहेमाभिः ७८
वृकाय चिज्जसमानाय ३४५
वैयश्वस्य श्रुतं नरोतो ५००
शचीभिर्नः शचीवसू १६२
शतं मेषान् वृक्ये ९२; ११८
शमू षु वां मधूयुवा २७६
शरस्य चिदार्चत्कस्य ९८
शिवाभिष्टे हृदयं ६४२
शुनमन्धाय भरमह्वयत् ११९
शुश्रुवांसा चिदश्विना ३५९
शृङ्गेव नः प्रथमा २१७
शृणुतं जरितुर्हवं ५६१
श्येनाविव पतथो ५१७
श्येनो हव्यं नयत्वा ६७२
श्रिये पूषन्निषुकृतेव ११०
श्रुतं गायत्रं तकवानस्य १५३
सं यन्मिथः पस्पृधानासो १४०
सं वां शता नासत्या ३२६
सं चेन्नयाथो अश्विना ६४६
सं जानामहै मनसा ६७८
संज्ञानं नः स्वेभिः ६७७
सत्यमिद् वा उ अश्विना १६६
सदा कवी सुमतिमा १२४
स पप्रथानो अभि ३४८
समश्विनोरवसा २९१; २९६
समानं वां सजात्यं ५५१
समानमु त्यं पुरुहूतम् ६११
समानयोजनो हि वां १०
समाने अहन् त्रिरवद्य० १४
समिद्धो अग्निरश्विना ६८०
समिद्धो अग्निर्वृषणा ६७९
सर्गाँ इव सृजतं ५२८
साकंयुजा शकुनस्य ६१६
सिन्धुर्ह वां रसया २४९
सिषक्ति सा वां सुमतिः ३५६
सुदासे दस्रा वसु ४४
सुप्रावर्गं सुवीर्यं ४८९
सुयुग्भिरश्वैः सुवृता २२८
सुयुग् वहन्ति प्रति २२७
सुवृद् रथो वर्तते २०३
सुषुप्वांसं न निर्ऋतेः १०६
सुष्टुभो वां वृषण्वसू २८१
सूनोर्मानेनाश्विना ११२
सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू ६१९
स्तुषे नरा दिवो अस्य ३०६
स्तोमं जुषेथां युवशेव ५१३
स्वदेतया सुकीर्त्या ५०८

स्व ध्वरासो मधुमन्तो	२४१	हतं च शत्रून् यततं	५२०	हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो	२९४
स्वस्वा यशसा यातम्	३४९	हतं तर्दं समङ्कमास्युं	६४३	हिरण्ययी अरणी यं	६३३
स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु	६८१	हविषा जारो अपां	२७	हिरण्ययी षां रभिरीषा	४१२
स्वाहाकृतस्य तृम्पतं	५३२	हस्तेव शक्तिमभि	२२१	हिरण्ययेन पुरुभू	२५४
स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह	६३६	हारिद्रवेव पतथो	५१५	हिरण्ययेन रथेन	४१८
हंसाविव पतथो	५१६	हिङ्कृण्वती वसुपत्नी	६८४	हिरण्यहस्तमश्विना	१२५
हंसासो ये षां मधुमन्तो	२४०	हिमेनाग्निं घ्रंसम०	८४		

शुद्धिपत्रम् ।

पृष्ठम् ।	मन्त्राङ्कः ।	अशुद्धम् ।	शुद्धम् ।
८	१,११६,२२ [९८]	चिदार्चत् कस्यावृतादा	चिदार्चत्कस्यावृतादा
११	१,११९,६ [१४३]	वीर्घेण	प्र वीर्घेण
२६	७,६८,८ [३४५]	हयमाना	हूयमाना
२९	८,५,५ [३८८]	महिष्ठा	मंहिष्ठा
३१	८,८,१३ [४३३]	रीरघतं	रीरधतं
८७	अन्त्या पङ्क्तिः	०विर्मघ०	०विर्भव०





दैवत-संहिता

(६)

आयुर्वेद-प्रकरण

संपादक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय-मण्डळ, औंध (जि. सातारा)

संवत् २०००, शक १८६५; सन् १९४३

मुद्रक और प्रकाशक
वसंत श्री. सातवळेकर, B. A.
भारत मुद्रणालय, औंध (जि. सातारा)

*

आयुर्वेद-प्रकरण

चारों वेदोंमें आयुर्वेद–विषयक मन्त्र इधर उधर बिखरे हैं। उन सब को इस प्रकरण में इकट्ठा किया है। इन में करीब ७५ ऋषियों के देखे मन्त्र हैं और ये मन्त्र करीब ८२ शीर्षकों में विभक्त हुए हैं। इनका ब्यौरा देखिये–

आयुर्वेद-प्रकरण के ऋषि

क्रमानुसार मन्त्र

	ऋषि	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या
१	अथर्वा	५८	५९,८
२	ब्रह्मा	४२	२७२
३	यमः	१३	१६७
४	भृगुः	१०	१४७
५	भृग्वंगिराः	१९	११८
६	शुक्रः	७	७५
	(यजुः)	३१	६२
७	गरुत्मान्	७	५९
८	शन्तातिः	१२	५९
९	चातनः	७	४४
१०	मृगारः	६	४२
११	विश्वामित्रः (गाथिनः)	६	४१
१२	वसिष्ठः (मैत्रावरुणिः)	१०	४१
१३	बृहस्पतिः	१	३५
१४	मातृणामा	२	३५
१५	प्रस्कण्वः (काण्वः)	८	३३
१६	प्रत्यङ्गिराः	१	३२
१७	अथर्वाङ्गिराः	६	२७
१८	अगस्त्यो (मैत्रावरुणिः)	२	२७
१९	भिषग् (आथर्वणः)	१	२३
२०	देवश्रवाः (यामायनः)	३	२२
	(मथितश्च)		
२१	त्रिशिराः (त्वाष्ट्रः)		
	सिन्धुद्वीप (आंबरीषः)	५	२०
२२	उन्मोचनः	२	२०
२३	कवष (ऐलूषः)	१	१५
२४	ऋभुः	२	१४
२५	भरद्वाजो (बार्हस्पत्यः)	१	१४
२६	सविता	१	१४
२७	अंगिराः (प्रचेताः)	४	१४
२८	शंखो (यामायनः)	१	१३
२९	सर्पः (काद्रवेय आर्बुदिः)	१	१४
३०	यमो यमी च	१	१४
३१	विवृहा (काश्यपः)	२	१३
३२	बादरायणिः	२	१३
३३	शौनकः	४	११
३४	शुनःशेपः	३	११
३५	अत्रिः (भौमः)	१	१०
३६	सप्तवध्रिः (आत्रेयः)	१	९
३७	भिक्षुः (आंगिरसः)	१	९
३८	मेधातिथिः (काण्वः)	१	८
३९	संकुसुको (यामायनः)	१	८
४०	सर्प (ऐरावतो जारत्कर्णः)	१	८
४१	भगः	२	८
४२	वामदेवः	२	८
४३	कुमारो (यामायनः)	१	७
४४	प्रजापतिः	१	७
४५	रक्षोहा	१	६
४६	अंगिराः	१	६
४७	वीतहव्यः	२	६
४८	हविर्धान (आंगिः)	१	५
४९	यक्ष्मनाशनः	१	५
५०	शंभुः	१	५
५१	ऋषभो (वैराजः)	१	५
५२	सूर्या (सावित्री)	२	४
५३	द्रविणोदाः	१	४
५४	मनुः (वैवस्वतः)	१	४
५५	ऊर्ध्वग्रावा (आर्बुदिः)	१	४
५६	गृत्समद (आंगिरसः)	२	४

५७	कबंधः	१	४
५८	भागलिः	१	३
५९	जाटिकायनः	१	३
६०	बभ्रुपिंगलः	१	३
६१	वरुणः	१	३
६२	कौशिकः	१	३
६३	गोतमो (राहूगणः)	३	३
६४	मधुच्छंदा (वैश्वामित्रः)	१	३
६५	उपरिबभ्रवः	१	३
६६	शिरिंबिठिः	१	२
६७	इन्द्राणी	१	२
६८	प्रजावान् (प्राजापत्यः)	१	२
६९	कौरुपथिः	१	२
७०	कक्षीवान् (दैर्घतमसः)	२	२
७१	कण्वो (घौरः)	१	२
७२	कूर्मो (गार्त्समदः)	१	१
७३	वसुक्रः (ऐंद्रः)	१	१
७४	दीर्घतमा (औचथ्यः)	१	१
७५	गार्ग्यः	१	१

आयुर्वेद-प्रकरण के मंत्रों की विषयानुसार गणना

आयुर्वेद-प्रकरण में नानाविषयों के शीर्षकों के नीचे जो मंत्र इकट्ठे किये गये हैं उनकी विषयानुसार गणना इस प्रकार है—

	मंत्र-संख्या
१ दीर्घ-आयुष्य की प्राप्ति	१६०
अरिष्टानि अंगानि	२
सुमंगलौ दन्तौ	३
२ यक्ष्मनाशन	१५०
३ ओषधिवनस्पतयः	७७
अन्न	३
सोम	४
वनस्पतिसूर्यगावः	३
वनस्पतयः	२
अपामार्ग	२७
अरुंधती	३
कुष्ठ औषधि	३
कुष्ठनाशनी	२०
पिप्पली	३
पृश्निपर्णी	८
रोहिणी	८
लक्षा	९
केशवर्धनी	९
अक्षिरोगनाशनी	४
मधुवनस्पति	५
रामायणी	१
अजशृंगी	१२
४ पापनाशनं	१२८
आस्रावभेषजं	६
रक्तस्रावनिवृत्तये धमनीबंधनं	४
निर्ऋतिनाशनं	४
हृद्रोग-कामिला-नाशनं	४
कासनाशनं (बलासनाशनं)	६
क्लीबत्वनाशनं	५
सौभाग्यवर्धनं	५
सपत्नीबाधनं	७
ज्वरनाशनं (तक्मनाशनं)	१८
गण्डमाला-चिकित्सा	१०
श्वेतकुष्ठनाशनं	८
रोगात् उन्मोचनं	३
रोगनिवारणं	२५
स्वापनं	७
मूत्रमोचनं	९
सूर्यः	३
५ इषुनिष्कासनं	३
६ अञ्जनं	३३
ईर्ष्याविनाशनं	४
उन्मत्ततामोचनं	४
७ विषनाशनं	८६

८ क्रिमिनाशनं ८३
(यातुधा, रक्ष, पिशाच, असुर आदीनां नाशनं)
९ कृत्यादूषणं ५७
दस्युनाशनं ६
बंधमोचनं २
मन्याविनाशनं ३
शापमोचनं ६
अरातिनाशनं १०
अरिष्टनाशनं १२
दुःखमोचनं ३४
अलक्ष्मीनाशनं ६
१० दुष्वप्ननाशनं ९८
सुखप्राप्तिः १
मन्युशमनं ३
वृषरोगशमनं ११
११ जलचिकित्सा २४८
१२ मणिधारणं १५५
१३ अन्नं २२४
१४ वाजीकरणं १४
गर्भाधानं १६
गर्भदृंहणं ४
गर्भरोगनिवारणं २६
गर्भसंस्रावः २५
सुखप्रसूतिः ११
मेधाजननं १२
१५ धर्मः यज्ञः ५
दर्भः ५
नवशालायां घृतहोमः १०
पितृमेधः २९४
यज्ञः यजमानः वेदी १७
यूपः १७
हविर्धाने ५
ऊलूखलमुसले ४
प्रावाणः २६
अन्नदानं ९
गोष्ठः
अग्निः १

आयुर्वेद-प्रकरण के २३३५ मन्त्रों यह ब्यौरा है। यहां यज्ञ-प्रकरण के अत्यावश्यक मन्त्र ही लिये हैं। यज्ञके विषय में कहा है–

ऋतुसंधिषु वै व्याधिर्जायते।
ऋतुसंधिषु यज्ञाः क्रियन्ते॥
(गो. ब्रा. उ. १।१९; कौ. ब्रा. ५।१)

अर्थात् ऋतु के संधिकाल में व्याधियां उत्पन्न होती हैं, अतः उनके शमन के लिये यज्ञ किये जाते हैं। यह प्रक्रिया वैदिक ग्रन्थों में दीखती है। इस प्रक्रिया के अनुसार यज्ञ-विषयक जितने मन्त्र लेनेकी आवश्यकता थी, उतने ही मन्त्र यहां लिये हैं। यज्ञ-प्रकरण के अन्य मन्त्र और अन्य यज्ञविधि का मन्त्र–संग्रह अन्यत्र किया जायगा।

दीर्घ आयु की प्राप्तिके मन्त्र यहां सबसे प्रथम दिये हैं। क्योंकि आयुर्वेद की उत्पत्ति इसी इच्छा से ही हुई है। दीर्घ आयु का उपभोग करने की प्रबल इच्छा प्रत्येक मानव में रहती है और यही इच्छा आयुर्वेद की उत्पत्ति और उन्नति करती रहती है।

दीर्घ आयु की इच्छा का घात करनेवाला यक्ष्म है। यक्ष्म का अर्थ नाना प्रकार के क्षयरोग हैं। मुख्य यक्ष्म का नाम क्षयरोग है, परन्तु सभी रोग क्षय उत्पन्न करते हैं, इसलिये गौण दृष्टि से सभी रोग यक्ष्म ही कहलाते हैं। दीर्घ आयु चाहिये, तो यक्ष्म का दूर करना अत्यावश्यक ही है।

इसी कार्य के लिये नाना प्रकार की औषधियों की खोज हो गयी। वेद में जो औषधियां मिलती हैं, वे सोम, अपामार्ग, अरुंधती, कुष्ट, पिप्पली, पृश्निपर्णी, रोहिणी, लाक्षा, केशवर्धनी, मधुला, रामायणी, अजशृंगी इत्यादि हैं। इनके अतिरिक्त यज्ञप्रकरण में ऋषभ, तारके, वचः आदि भी औषधियां मिलती हैं। इन औषधियों के वर्णन पाठक इन सूक्तों में देख सकते हैं। ये वर्णन पढने से निश्चयपूर्वक हम कह सकते हैं कि इन औषधियों का अनुभव इस समय हो चुका था।

औषधिवनस्पतियोंके विषयमें ब्राह्मण ग्रन्थों में निम्न लिखित प्रकार वर्णन मिलते हैं–

ब्राह्मणग्रंथोंमें औषधिवनस्पतियाँ ।

१ ओषं धयेति तत ओषधयः समभवंस्तस्मादोषधयो नाम । (श. ब्रा. २।२।४।५)

२ प्रजापतेर्विस्रस्तस्य यानि लोमानि अशीयन्त, ता इमा ओषधयोऽभवन् । (श. ७।४।२।११)

३ द्व्यो वा ओषधयः पुष्पेभ्यो अन्याः फलं गृह्णंति । मूलेभ्योऽन्या ॥ (तै. ब्रा. ३।८।१७।४)

४ उभय्यो (ओषधयो) ऽस्मै स्वादिताः पच्यन्तेऽकृष्टपच्याश्च कृष्टपच्याश्च । (तां. ब्रा. ६।९।९)

५ ततोऽसुरा उभयीरोषधीर्याश्च मनुष्या उपजीवन्ति, याश्च पशवः...ने (देवा) होचुर्हन्तेदमासां (ओषधीनां अपजिघ्रांसामेति केनेति यज्ञेनैवेति । (श. २।४।३।२-३)

६ एतद्वैतासां (ओषधीनां) समृद्धं रूपं यत्पुष्पवत्यः सुपिप्पलाः । (श. ब्रा. ६।४।४।१७)

७ पशूनां ओषधयः, ओषधीनां आपः । (जै. उ. १।५९।१४)

८ आपो ह वा ओषधीनां रसः । (श. ३।६।१।७)

९ अपां ओषधः, ओषधीनां पुष्पाणि, पुष्पाणां फलानि (रसः) । (श. १४।९।४।१)

१० तस्मादोषधयः केवल्यः खादिता न धिन्वन्ति, ओषधय उ हापां रसः । (श. ३।६।१।७)

११ एष ह वै सर्वासामोषधीनां रसो यत्पयः । (कौ. ब्रा. २।१)

१२ तस्माद्दक्षिणतो अग्र ओषधयः पच्यमाना आयन्ति, आग्नेय्यो ह्योषधयः । (ऐ. ब्रा. १।७)

१३ अग्नेर्वा एषा तनूः, यदोषधयः । (तै. ब्रा. ३।२।५।७)

१४ यदुग्रो देव ओषधयो वनस्पतयः । (कौ. ब्रा. ६।५)

१५ ओषधयो वै पशुपतिः, तस्माद्यदा पशवं ओषधीर्लभन्तेऽथ पतीयंति । (श. ६।१।३।१२)

१६ ओषधयो वै मदः । ओषधीभिर्हीदं सर्वं मोदते । (श. ९।४।१।७)

१७ ओषधय· खलु वाजः । (तै. ब्रा. १।३।७।१)

१८ ओषधयो मधुमतीः । (तै. ३।२।८।२)

१९ रसो वा एष ओषधिवनस्पतिषु यन्मधु । (श. ११।५।४।१८)

२० सौम्या ओषधयः । (श. १२।१।१।२)

२१ सोम ओषधीनामधिराजः । (गो. ब्रा. उ. १।१७)

२२ सोमो वै राजौषधीनाम् । (कौ. ४।१२; तै. ३।९।१७।१)

२३ या ओषधीः सोमराज्ञीः । (मं. ब्रा. २।८।३,४)

२४ औषधो हि सोमो राजा । (ऐ. ब्रा. ३।४०)

२५ विष्णोरध्योषधीरसृज्यत । (तै. २।३।२।४)

२६ ओषधिलोको वै पितरः । (श. १३।८।१।२०)

२७ जगत्य ओषधयः । (श. १।२।२।३)

२८ सप्त ग्राम्या ओषधयः सप्तारण्याः । (तै. १।३।८।१)

२९ वर्षवृद्धा वा ओषधयः । (तै. ३।२।२।५; ३।२।५।१०)

३० ओषधयो वै देवानां पत्न्यः । (श. ६।५।४।४)

३१ तस्मात् शरद् ओषधयोऽभिषिच्यन्ते । (तां. ब्रा. २१।१५।३)

३२ शरदि हि खलु वै भूयिष्ठा ओषधयः पच्यन्ते । (जै. उ. १।३५।५)

३३ सेनान्यं वा एतदोषधीनां यद्यवाः । (ऐ. ८।२६)

३४ साम्राज्यं वा एतदोषधीनां यन्महाव्रीहयः । (ऐ. ८।१६)

३५ ओषधीवनस्पतयो मे लोमसु श्रिताः । (तै. ३।१०।८।७)

३६ वनस्पतयो वै द्रु । (तै. ब्रा. १।३।९।१)

३७ भौज्यं वा एतद्वनस्पतीनां (यदुदुम्बरः ।) (ऐ. ब्रा. ७।३२; ८।१६)

३८ अथो सर्व एते वनस्पतयो यदुदुम्बरः । (श. ७।५।१।१५)

३९ तेजो ह वा एतद्वनस्पतीनां यद्ब्राह्मा शकलः, तस्माद्यदा बाह्याशकलमपतक्ष्णुवन्त्यथ शुष्यन्ति। (श. ३।७।१।८)

४० वनस्पतयो हि यज्ञिया, न हि मनुष्या यजेरन् यद्वनस्पतयो न स्युः। (श. ३।२।२।९)

४१ अग्निर्वै वनस्पतिः (कौ. ब्रा १०।६)

४२ प्राणो वनस्पतिः। (कौ. १२।७)

४३ स (वनस्पतिः) उ वै पयोभाजनः। (कौ. १०।६)

४३ यद् भेषजं तदमृतम्। (गो. पू. ३।४)

४४ शान्तिर्वै भेषजमापः। (कौ. ३।६,७,८,९। गो. उ. १।२५)

ये ओषधिवनस्पतियोंके संबन्ध में ब्राह्मणग्रंथोंके वचन हैं, अब इस आयुर्वेद-प्रकरण में आयुके सम्बन्ध के ब्राह्मण-वचन देखने योग्य हैं, वे ये हैं --

१ वरुण एव आयुः। (श. ४।१।४।१०)

२ अग्निर्वा आयुः। (श. ६।७।३।७; ७।२।१।१५)

३ अग्निर्वा आयुष्मानायुष ईष्टे। (श. १३।८।४।८)

४ संवत्सर आयुः। (श. ४।१।४।१०; ४।२।४।४)

५ यज्ञो वा आयुः। (तां. ६।४।४)

६ असौ लोकः (= द्युलोकः) आयुः। (ऐ. ४।१५)

७ असावुत्तमः (लोकः) आयुः। (तां. ४।१।७)

८ अन्नमु वा आयुः। (श. ९।२।३।१६)

९ आयुर्वा उद्गाता। आयुः क्षत्तसंगृहीतारः। (तै. ३।८।५।४)

१० प्राणो वा आयुः। (ऐ. २।३८)

११ यो वै प्राणः स आयुः। (श. ५।२।४।१०)

१२ आयुर्वा उष्णिक्। (ऐ. १।५)

१३ स यो हैवं विद्वान् सायंप्रातराशी भवति, सर्वं हैवायुरेति। (श. २।४।२।६)

१४ य एवं विद्वान्, स्यात् न मृण्मये भुञ्जीत। तथा हास्य आयुर्न रिष्येत तेजश्च। (आर्षेय ब्रा. १।१)

१५ आयुर्वै दीर्घम्। (तां. १३।११।१२)

आयु के सम्बन्ध में ये वचन ब्राह्मण ग्रंथोंमें हैं। अब औषधियोंके नामनिर्देश से जो वचन ब्राह्मण ग्रन्थों में आते हैं, उन्हें देखिये–

अपामार्ग औषधि।

१ अपामार्गेरपमृज्यते। (श. १३।८।४।४)

२ अपामार्गहोमं जुहोति। अपामार्गैर्वै देवा दिक्षु नाष्ट्रा रक्षांसि अपामृजत, ते व्यजयन्त। (श. ५।२।४।१४)

३ यदपामार्गं होमो भवति, रक्षसामपहत्यै। (तै. १।७।१।८)

४ प्राचीनफलो वा अपामार्गः। (श. ५।२।४।२)

रोहिणी।

१ तत ऊर्ध्वाऽरोहत्। सा रोहिण्यभवत्। तद्रोहिण्यै रोहिणित्वम्। (तै. १।१।१०।६)

२ ततौ वै ते सर्वान्रोहानरोहन् तद्रोहिण्यै रोहिणित्वम्। (तै. १।१।२।२)

इस आयुर्वेद-प्रकरण के कुछ विषयों के विषय में ब्राह्मण वचन ये हैं। ये आयुर्वेद-प्रकरण की बातें विशेषसी खोलते नहीं हैं। इनका आशय प्रायः स्पष्ट है, अतः इन सब का अर्थ यहां देनेकी आवश्यकता नहीं है। अब आयुर्वेद-प्रकरण में आए अनेक विषयों के सम्बन्ध में थोडासा वर्णन करके परिचय कराना आवश्यक प्रतीत होता है–

दीर्घ आयुष्य।

सब से प्रथम 'दीर्घायुष्य' का प्रकरण है, इसमें करीब १६० मन्त्र हैं। इनमें दीर्घायुष्य की कामना मुख्य विषय है। पहिले ही सूक्त में 'मन्यु' अर्थात् क्रोध आदि मनो-विकार आयु की क्षीणता करते हैं, उन से बचने की सूचना मुख्य है। द्वितीय सूक्त में बोध प्रतिबोध (ज्ञान-विज्ञान), निद्रा और जाग्रति, ये सब मनुष्य को सुरक्षित रखें ऐसा कहा है, वह बडे महत्त्व का विषय है। क्योंकि मनुष्य का ज्ञान ही उस को ऐसे फंदे में फंसाता है कि जो उसकी आयु क्षीण करता है। अतः मानव का ज्ञान तथा व्यवसाय उस की आयु क्षीण न करें। यह सूचना बडी महत्त्वपूर्ण है।

पञ्चम सूक्त में 'दाक्षायण सुवर्ण' आयुष्य बढाने-वाला है, ऐसा कहा है। इस सुवर्ण की सिद्धता किस तरह करना चाहिये, यह एक बडा महत्त्वपूर्ण खोज का विषय है। आर्य वैद्यक में सुवर्ण विषघ्न है और हृदय का बल बढाता

है ऐसा कहा है। इस से सुवर्ण दीर्घायु देनेवाला है, ऐसा हम अनुमान कर सकते हैं। निःसंदेह दीर्घायु देनेवाले धातुओं में सुवर्ण की प्रमुखता से गणना हो सकती है।

सप्तम सूक्त में जंगिडमणि के धारण से दीर्घायु की प्राप्ति होने का वर्णन है। यह अरण्य से लाया और कृषिके रसों से बना मणि है (मं. ५)। इस का विचार करके इस का प्रयोग सिद्ध करना चाहिये।

अष्टम सूक्त में हवन से दीर्घ जीवन का विषय पाठक देख सकते हैं। हवन से राजयक्ष्मा, ज्वर तथा अन्यान्य रोग दूर हो जाते हैं। घृतके हवन से वायुकी शुद्धता होती और वहां के रोगबीज दूर होते हैं। नाना प्रकार की ओषधियों के हवन करने से उन के सूक्ष्म अणु नासिका मुख आदि स्थान से शरीर में जाते, और वहां बडा प्रभाव करते तथा मानव की नीरोगता सिद्ध करते हैं। हवन से जैसे रोग दूर होते हैं वैसे बुरे पदार्थों के हवन से रोग उत्पन्न भी होते हैं। चरक ग्रन्थ में अतिसार-चिकित्सा में कहा है कि गौका मेध करने की प्रथा पृषध्र राजाने अपनी इच्छा से शुरू की, पहिले नहीं थी। उस यज्ञ से 'अतिसार' की उत्पत्ति हुई। वह अतिसार रोग अब तक जनता को सता रहा है। पृषध्रराजा के पूर्व गोमेध नहीं था, अतः अतिसार भी नहीं था। यह उस कथा का तात्पर्य है। बुरे यज्ञों का यह कुप्रभाव है। शत्रु के राज्यों में ऐसे कुयज्ञ करके नाना प्रकार के रोगों का फैलाव शत्रु देशोंमें करने के भी विधान कई ग्रन्थों में हैं। ये बुरे यज्ञ हैं. इसी तरह अच्छे यज्ञ करने से जनता को आरोग्य प्राप्त होकर उनकी दीर्घायुता भी सिद्ध हो सकती है। यह बडा शास्त्र है और खोज करने योग्य यह विषय है।

नवम सूक्त में 'दशवृक्ष' का वर्णन है। ये दशवृक्ष नाम से दस वनस्पतियां हैं; जो दीर्घकालीन रोग को दूर करती हैं और मानव को दीर्घजीवी बना देती हैं।

तेरहवें सूक्त में अंगस्थ ज्वरों का वर्णन है। इस सूक्त में विशेषतः रोगी मनुष्य के मनको विश्वास दिलाकर आरोग्यप्राप्ति में सहायता करने का विधान है। 'हे रोगी मानव! ज्ञान विज्ञान तथा निद्रा और जाग्रति ये सब तेरे प्राणों की रक्षा कर रहे हैं। यह अग्नि (यहां हवन कुण्ड में) जल रहा है, यह सूर्य उदय को प्राप्त हो रहा है। ये तेरी रक्षा करें, इनकी सहायता से तू गंभीर मृत्यु से अब ऊपर उठा है, (अब तेरी मृत्यु नहीं होगी;) (मन्त्र १०–११)' इस तरह रोगी को विश्वास दिलाया जाता है। इस मन्त्रपर दृढ विश्वास रखनेवाला रोगी इस से लाभ उठा सकता है।

पंधरहवें सूक्त में 'सौ वर्षों से भी अधिक जीवन' की इच्छा धारण करने की सूचना है। इस पृथ्वीपर मनुष्य सौ वर्षोंसे भी अधिक जीवित रहे, यह वैदिक विचारधारा थी। आगे पच्चीसवें सूक्त तक सूक्तों में दीर्घायुप्यप्राप्ति के प्रार्थना समेत अनेक उपयोगी निर्देश हैं। विशेषकर चोवीसवें सूक्त में उत्तम अवयवों की धारण और पच्चीसवें सूक्तमें उत्तम स्वच्छ दांतों का होना दीर्घायु के लिये अत्यंत आवश्यक है ऐसा जो कहा है, वह विशेष रीतिसे द्रष्टव्य है। दांत बिगडनेसे शरीर का स्वास्थ्य बिगडता है और उसके बिगडनेसे आयुष्य का नाश होता है। इस तरह इन सूक्तों में जो उपयुक्त निर्देश हैं, उन का विचार पाठकों को करना चाहिये।

यक्ष्म-नाशन।

यक्ष्म-नाशन इस आयुर्वेद-प्रकरण का दूसरा विभाग है। इस में करीब करीब डेढ सौ मन्त्र हैं। छब्बीसवें सूक्तसे इस प्रकरण का प्रारंभ होता है। छब्बीसवें सूक्तमें शरीर के नाना अवयवों का उल्लेख करके प्रत्येक अवयव से यक्ष्मरोग दूर करने का विषय है। मानस–चिकित्सा का यह सूक्त दीखता है। चिकित्सक रोगी को विश्वास दिलाता है कि, इस प्रयोग से तेरा यक्ष्मरोग निःसन्देह दूर होगा और तू निर्दोष होगा। इस सूक्त से यह बात सिद्धसी दीखती है कि यक्ष्मरोग शरीरके प्रत्येक अवयवमें हो सकता है और उसको वहां से हटाना चाहिये। इस सूक्त का 'अङ्गादङ्गाल्लोम्नो लोम्नो०' यह मन्त्र अंतिम है, वह मन्त्र प्राचीन काल से मृत्तिकास्नान के समय बोलने की परिपाठी महाराष्ट्र में तथा दक्षिण भारत में श्रावणी पर्व के समय है। अच्छी स्वच्छ मिट्टी जिस में खाद आदि कुछ भी मिला नहीं, ऐसी शुद्ध मृत्तिका जल में मिलाकर शरीरपर लगायी जाती है और शरीरपर लेप देकर कुछ देरके बाद स्वच्छ जल से स्नान किया जाता है। इस मिट्टी में खाद मूत अथवा कंकर आदि कुछ भी नहीं रहना चाहिये। यह मिट्टी स्वच्छ शुद्ध मलरहित मक्खन जैसी मृदु रहनी चाहिये। खादवाली मिट्टी हानिकारक होती है। खेत की मिट्टी लेनी

हो तो, एक हाथ के] नीचे की लेनी उचित है। अन्यथा जहां खेती नहीं होती, वहां से शुद्ध मिट्टी ली जाय तो वह इस प्रयोग के लिये अच्छी है। मिट्टी के प्रयोग से नाना रोगबीज शरीरसे दूर हो जाते हैं। अन्तिम मन्त्रका उपयोग मिट्टी शरीरपर मलने के लिये करते हैं। इस से हम अनुमान कर रहे हैं कि यह सब सूक्त मृत्तिका से यक्ष्म-दोष हटाने के लिये होना संभव है। पाठक इस का अधिक विचार करें।

आगे का सताईसवां सूक्त भी इसी दृष्टि से विचार करने योग्य है। इस सूक्त का अन्तिम ग्यारहवाँ मन्त्र पर्जन्य की वृष्टि से प्राप्त जल का उपयोग करके अ-मृत अर्थात् नीरोग बनने के कार्य के लिये स्पष्ट है। सब पाप, सब यक्ष्म और सब प्रकार के मरणकारक रोग-बीज वृष्टिजल के प्रयोग से दूर होते हैं। पर्जन्य के पहिले नक्षत्रों की वृष्टि होनेके पश्चात्, उस वृष्टि से वायु पवित्र होनेके पश्चात् की वृष्टि का जल लेना उचित है। प्रायः हस्त, चित्रा, स्वाती नक्षत्रों की वृष्टि का जल लेकर घडे भरकर घरमें अच्छी तरह बंद करके रख देनेसे, यह वृष्टि-जल सालभर इस प्रयोग के लिये मिलता रहता है। ख्याल इस बात का रखना चाहिये कि प्रथम वृष्टि होकर शुद्ध वायु में जो वृष्टि होगी, उसी का जल लेना चाहिये। नहीं तो वायु के दोष जल में आवेंगे और वैसे जल का परिणाम ठीक नहीं निकलेगा। यह जल पीनेसे भी अंदर की शुद्धता होती है। उपवास या लंघन में यह वृष्टि-जल पीनेसे बहुत ही लाभ होते हैं। वृष्टि का जल घडों में भर कर रख देना और सालभर पीनेके लिये बर्तना, इससे लाभ होगा, परन्तु अच्छी युक्ति से जल लेना चाहिये।

अठाईसवें सूक्त में तक्मा नामक ज्वर का उल्लेख है। जिस ज्वर में बडी रूक्षता होती है, वह तक्मा ज्वर है। इस ज्वर से कामिला (हरिमा) होती है, पण्डुरोग का यह एक प्रकार है। इस रोग के निवारण के लिये कई औषधियाँ हो सकती हैं। रक्त की क्षीणता करनेवाला यह ज्वर है। यह ज्वर (अ-व्रत) नियमरहित व्यवहार करनेवाले को अधिक कष्ट देता है। पाठक इस सूचना का विचार अवश्य करें।

उनत्तीसवें सूक्त में 'वृत्र' नाम आता है। पसीना न छोडनेवाला यह ज्वर है। जिसमें ज्वर आता है, पर पसीना नहीं आता, इस तरह के ज्वर को दूर करने के लिये अग्नि का ही प्रयोग कहा है। (वृत्रः आपः तस्तंभ) वृत्र जल-प्रवाह को रोकता है, वैसा यह ज्वर पसीने को रोकता है, इस कारण रोगी ज्वरमुक्त नहीं होता। इस यक्ष्म को दूर करने के लिये (वैश्वानरेण अग्निना वारये) वैश्वानर अग्नि का प्रयोग कहा है। इस प्रयोग का पता हमें, अभी तक लगा नहीं, परन्तु भांप से शरीर को सेक देकर पसीना निकालने का यह प्रयोग होगा। द्वितीय मन्त्र में (वाचा यक्ष्मं वारयामहे) मन्त्र-प्रयोग से रोग दूर करने का भी विधान है।

आगे के तीसवें सूक्तमें रक्तयुक्त कफमिश्रित खांसी अर्थात् कफक्षय-नामक रोगों का उल्लेख है। इसमें (पिशितं) रक्त-दोष, (हृदयामय) हृदय का रोग इसी तरह अन्यान्य रोगों का उल्लेख है। (वेदाहं तस्य भेषजं) उन रोगों की दवा मैं जानता हूं, ऐसा भी यहां कहा है। मन्त्रों का विचार करके विशेष खोजपूर्वक इस सूक्त के प्रत्येक पद का विचार करना उचित है। तब रोगनिवृत्ति के उपाय का पता लगना संभव है।

इकत्तीसवें सूक्त में हवन-चिकित्सा दीखती है। बत्तीसवें सूक्त में हरिण के सिर में उगनेवाले सींगसे रोगविशेष की चिकित्सा लिखी है। आजकल सिर की गर्मी हटानेके लिये सिर पर हरिण के सींग को पत्थर पर घिसकर उससे उत्पन्न विलेपन का लेप करते हैं। इससे सिर की गर्मी हटती है, मस्तक शान्त होता है। चतुर्थ मन्त्र में 'तारके' नामकी दो औषधियाँ कहीं हैं।

'तारके' नामक दो औषधियां इकट्ठी सेवन की जाती हैं। इस के नंतर जल को सब रोग निवारण करनेवाला बताया है। क्षेत्रिय रोग अर्थात् वंशपरंपरासे प्राप्त रोग और इसी शरीर में उत्पन्न ऐसे दोनों प्रकार के रोगों को हटाने के लिये जल उपयोगी है। इस तरह जल-चिकित्सा का वर्णन यहां है। अगले (३३ वें) सूक्त में भी जल का वर्णन बडे प्रभावी शब्दों से किया है।

तैंतीसवें सूक्त में अष्टायोग और षड्योग से उत्पन्न यव का उपयोग लिखा है। अष्टायोग और षड्योग का आज समझा जानेवाला अर्थ आठ बैल जोतने योग्य और छः बैल जोतने योग्य हल से उत्पन्न जव। परन्तु यदि वैद्यकीय

परिभाषा ली जाय, तो आठ अथवा छः वनस्पतियों के योग से सिद्ध किया औषध। इस विषय में निश्चय वैद्यों को विचारपूर्वक करना चाहिये।

चौंतीसवें सूक्त में सुगंधवाली गुल्गुलु औषधिका वर्णन है। अरुंधति, गुल्गुलु आदि औषधियों के प्रयोगसे चिकित्सा होती है। अरिष्टताति अर्थात् नीरोगता की वृद्धि करने के ये उपाय इस सूक्तमें हैं।

पैंतीसवें सूक्त में हवन-चिकित्सा से यक्ष्म, राजयक्ष्म, पुराना रोग आदि सब दूर होते हैं, ऐसा कहा है। मृत्युके पाश से मुक्त करके रोगी को शतायुषी करता हूं, ऐसा निश्चयपूर्वक यहां कहा है। हवन-चिकित्साका विचार करने के समय यह सूक्त अधिक विचार करने योग्य है। पुनः नवीन शरीर देने का अर्थात् मृत्यु से पुनरुत्थान होने का यहां का वर्णन देखने योग्य है।

छत्तीसवें सूक्त में शरीर के प्रत्येक अंगसे रोग को दूर करने का उल्लेख है। छब्बीसवें सूक्तके साथ इस छत्तीसवें सूक्त का विचार करना योग्य है। ये दोनों सूक्त कुछ पाठ-भेद के साथ एक जैसे ही हैं। एक ऋग्वेद का है, दूसरा अथर्व का है। अथर्ववेद के सूक्त में एक मन्त्र अधिक है और पदोंके क्रम में पर्याप्त भिन्नता है। अतः पाठक इन दो सूक्तों का विचार इकट्ठा करें। आगे उनचालीसवां सूक्त भी यहीं से पुनरुक्त हुआ है। केवल ऋषि की और देवताकी भिन्नता है। इस सूक्त की चन्द्रमा देवता सर्वानुक्रमणीकार देते हैं। मन्त्रों से वह देवता हमें प्रतीत नहीं होती। तथापि भिन्न देवता और भिन्न ऋषि होने से ही केवल यह सूक्त यहां पुनः लिया है। हमारे विचार से इस का देवता केवल यक्ष्मनाशन ही है। चन्द्रमा का कोई सम्बन्ध हमें यहां प्रतीत नहीं होता। परन्तु अथर्ववेद की बृहत्सर्वानुक्रमणी में जहां तहां 'चन्द्रमा' देवता लिखी मिलती है। कदाचित् कोई अपूर्वता उस में हो, ऐसी कल्पना करके यहां देवता-भेद के कारण यह सूक्त पुनः लिया है। वास्तव में इसके यहां पुनः लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। विद्वान् पाठक इस का विचार करें।

सैंतीस और अठत्तीस ये दो सूक्त नाना प्रकार के शरीर-स्थ रोग दूर करने के दिये हैं। मृत्यु से पुनर्जीवन प्राप्त होनेतक वर्णन यहां पाठक देख सकते हैं। अठत्तीसवें सूक्त में सिरकी पीडा का विशेष वर्णन देखने योग्य है।

इस तरह यह यक्ष्मनाशन विभाग यहां समाप्त होता है। शरीरसे यक्ष्म दूर होने से दीर्घ जीवन मिलता है, यह इस प्रकरण का पूर्व प्रकरण से सम्बन्ध है। अब रोग दूर करने के लिये औषधियों का उपयोग करने के विषय में तीसरा विभाग है, उसे अब देखिये—

औषधि वनस्पतियाँ

चालीसवें सूक्तसे करीब दो सौ मन्त्र औषधिवनस्पतियों के हैं। चालीसवाँ और इक्यालीसवाँ दोनों सूक्त सामान्यतः सर्वसाधारण औषधियों का वर्णन करने के लिये हैं। पहिला सूक्त ऋग्वेद का है और दूसरा अथर्ववेद का है। जिनके पास औषधियां सिद्ध रहती हैं उसको भिषक् कहते हैं (मं. ६), वह वैद्य रोजबीजरूप राक्षसों का नाश करता है और आमसे उत्पन्न सब रोगोंको दूर करता है। इस मंत्र में 'रक्षः' पद रोगक्रिमियों का वाचक है। रक्षः, राक्षस ये पद रोगजन्तुओं के लिये वेद में आते हैं। मन्त्र २२ में ओषधियों की प्रतिज्ञा लिखी है, वह यह है कि जिस रोगी को औषधियाँ दी जाती हैं, वह रोगमुक्त हो जाता है, निःसन्देह आरोग्य प्राप्त करता है।

इकतालीसवें सूक्त में अंशुमती, जीवला, काण्डिनी आदि-कोंका उल्लेख है। गौओं के तथा मनुष्यों के रोग औषधियों से दूर होते हैं, ऐसा भी १५ वें मन्त्र में कहा है। पशु-चिकित्सा का इस तरह यहां मूल है। यमके पाश से रोगी को मुक्त करने की प्रतिज्ञा औषधियां करती हैं, यह विषय इस सूक्त के अन्त में पाठक देख सकते हैं।

छियालीसवें सूक्त में अन्न का विषय है। अन्नसे बल और बलवीर्य से वीर संतान उत्पन्न होनेका विषय इस सूक्त में देखनेयोग्य है। आगे सूक्त ५५ तक वनस्पतियों का ही सर्व सामान्य वर्णन है। किसी विशेष वनस्पति का वर्णन नहीं है, तथापि सर्वसाधारणतः वनस्पतियों के प्रभाव का वर्णन यहां है।

छप्पन्नवें सूक्तसे उनसाठ सूक्त तकके चार सूक्तोंमें अपामार्ग वनस्पति का वर्णन है। इस को औषधियों में मुख्य कहा है। हजारहां दवाइयां इस से बनती हैं। अनेक रोगोंपर उन का उपयोग होता है। क्षुधा की न्यूनता, तृष्णाके कष्ट,

पुत्र न होना इन सब दोषोंपर इस औषधि का प्रयोग किया जाता है। कृत्या नामक मारक पयोग के हटाने के लिये, गौके रोग दूर करने के लिये, इस औषधिका उपयोग होता है।

आगे के सूक्तों में अरुन्धती, पिप्पली, पृश्निपर्णी, रोहिणी, लक्षा, कुष्ट, कुष्टनाशनी, यक्ष्मनाशिनी, केशवर्धनी, नितन्नी, अक्षिरोगनाशनी, शमी, सोम, मधु इन वनस्पतियों का क्रमशः वर्णन है। यहां यह औषधि-प्रकरण समाप्त होता है। दश वृक्ष, तारके आदि अनेक औषधियोंके प्रयोग छोड दिये जायँ, तो शेष सब प्रयोग एक एक औषधिके ही हैं। इसके पश्चात रोग-चिकित्सा-विभाग शुरू होता है—

रोगोंकी चिकित्सा

नाना प्रकार के रोगों का नाम लेकर उनकी चिकित्सा कई सूक्तों में कही है। वे सूक्त इस विभाग में संग्रहित हुए हैं, करीब करीब २१० मन्त्र इस विभागमें संग्रहित हुए हैं।

सत्तरवां सूक्त इस प्रकरण का प्रथम सूक्त है। कफ, बलगम, कास श्वास का यहां प्रथम स्थान है। उनासीवें सूक्त में हृद्रोग, हृदय का रोग और कामिलाका विचार हुआ है। आनुवंशिक क्षेत्रिय रोग को दूर करने का विचार अस्सीवें सूक्त में हुआ है। आगे एकासीवें सूक्तसे क्रमपूर्वक क्षेत्रिय रोग, क्लीबत्व, गण्डमाला, श्वेतकुष्ट, ज्वर, रुधिरस्राव, स्राव, मूत्र-प्रतिबन्ध आदि रोगों की चिकित्सा ९६ सूक्त तक है। बीच में ८४ वे सूक्त में रोहिणी, रामायणी आदि औषधियों का भी वर्णन है।

इसके नंतर १०२ सूक्त तक 'अंजन' का विषय है। नेत्र का सुधार, दृष्टिके दोष को दूर करना आदि अञ्जन का विषय सुप्रसिद्ध है। साथ साथ अञ्जन के अन्यान्य गुण भी इन सूक्तों में देखने योग्य हैं।

सूक्त १०३ में निद्रानाश को दूर करके उत्तम निद्राप्राप्ति होने के लिये मन्त्रयोग हैं। १०४ सूक्त में शरीर से बाण को निकालने का विषय है, आगे ७ सूक्तोंमें दुष्ट स्वप्न न होनेके लिये मन्त्रयोग लिखा है। ११३ वें सूक्त में क्रोध का शमन करने का विषय है। क्रोध का शमन भी आरोग्यदायी है।

११४ वें सूक्त में बैल के रोग का शमन है। आगे के सूक्त में मधुला वनस्पति का वर्णन है। ११९ वें सूक्त में सौभाग्यवर्धन का विषय है। १२० वें सूक्त में ईर्ष्यानिनाशन और १२२ वें सूक्त में उन्मत्तता-निवारण है। इस तरह यह विभाग इस सूक्त के साथ समाप्त होता है।

रोगक्रिमी का नाश

इस विभाग में रोग उत्पन्न करनेवाले क्रिमियों का नाश करने के विषय का विवेचन है। इस विवेचनके लिये करीब ८० मन्त्र हैं। रक्षः, राक्षस, यातुधान, पिशाच, गन्धर्व, अप्सरस्, आदि अनेक नाम रोगक्रिमियोंके यहां दिये हैं। प्रत्येक नाम का अर्थ रोगक्रिमि का विशेष लक्षण बताता है। अतः यह विषय बडा महत्त्वपूर्ण है।

ये रोग के कृमी (अ-दृष्ट) न दीखनेवाले होते हैं और कई दीखनेवाले (दृष्ट) भी होते हैं, इन सब को दूर करना चाहिये। ये रोग आँतों में, शिरमें, फेफडों में, पीठ की रीढमें, हड्डीमें होते हैं। ये कीडे पर्वतों, नदीं, ओषधियों, पशुओं, तथा हमारे शरीरों में भी होते हैं। इन सब को दूर करना चाहिये और आरोग्य की सिद्धता करनी चाहिये (सूक्त १२३)।

ये कृमी आंखों, नाकों, दांतों में रहकर कष्ट देते हैं, अतः इनका नाश करना आवश्यक है। ये कृमी नाना प्रकार के रंगरूप और आकारोंके होते हैं। सूर्य के प्रकाश से इन का नाश होता है (सूक्त १२४)।

ये कृमि सूर्य-किरण से नष्ट होते हैं। अन्धकारमें इनकी वृद्धि होती है, इसलिये सूर्य उदय से कृमियों का नाश होता है (सू० १२५)।

अजशृंगी औषधि इन राक्षसों अर्थात रोगकृमियों का नाश करती है। राक्षस, पिशाच, गन्धर्व, अप्सरस इन सब कृमियों का नाश इस वनस्पति से होता है। अश्व, न्यग्रोध (वट) ये वृक्ष भी इन रोगकृमियों का नाश करते हैं। जिन से क्षीणता होती है, वे रक्षस हैं, जो खून खाते उन को पिशाच कहा है, जो जल के आश्रय से रहते हैं उनको अप्सरस् कहते हैं, तथा जो मिट्टी में बढते हैं, वे गन्धर्व हैं। ये सब मनुष्य के आरोग्य को दूर करते हैं, इस लिये इन का नाश करना चाहिये (सू० १२६)।

अग्नि भी इन कृमियों का नाश करता है, अग्निमें विशिष्ट द्रव्यों का हवन करने से और अधिक लाभ होता है। घृत के हवन से सब रोगबीज नष्ट हो जाते हैं। अग्नि में नाना

औषधियां, घृत आदि के हवन से, सूर्य प्रकाश से, केवल अग्नि से भी ये रोग-कृमि नष्ट होते हैं।

विष को दूर करना

आगे करीब करीब ८० मन्त्र विषनाशन के हैं। १३६ वां सूक्त सर्पविष दूर करने के लिये है। मन्त्र के जाप से विष दूर होता है, ऐसा इस का वर्णन है, परन्तु इस के लिये जाप करके सिद्धि प्राप्त करना चाहिये। इक्कीस मोरनियाँ सर्पका विष दूर करती हैं, ऐसा यहां (मं० १४ में) कहा है। इस विषय में महाराष्ट्र में अनुभव यह है कि नाग सर्प का जहां दंश होता है, उस स्थान पर जीवित मुर्गी को पकडकर उस का गुदद्वार लगाया जाता है। मुर्गी विष खींचती है और मर जाती है। इस तरह लगातार एक के पीछे दूसरी ऐसी लगाते जाना चाहिये। विष के प्रमाण के अनुसार मुर्गियां मरती हैं। जब मुर्गी की गुदा वहां लगानेपर मुर्गी न मरेगी, तो समझना चाहिये कि वहां विष रहा नहीं है और रोगी ठीक नीरोग हुआ है। इस मन्त्र में २१ मोरनियां विष दूर करती हैं, ऐसा कहा है। सम्भव है मुर्गियां न्यून वा अधिक लगतीं हों। यह प्रयोग करके देखना चाहिये। महाराष्ट्र में सर्वत्र यह कहते हैं कि मुर्गी के योग से विष हटता है। बिच्छू के विष के विषयमें इसी सूक्त में कुछ कहा है (सू० १३६)। सर्प के विषय में निम्नलिखित मन्त्र बडा देखने योग्य है–

यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः।
(अथर्व. ६।१३९।५)

' नेवला सांपको काटता है और फिर से उसको जोडता है। ' यह अथर्ववेदका मन्त्र है। क्या यह सत्य हो सकता है ? महाराष्ट्र के पिण्ड पिण्ड में यह विश्वास है, परन्तु इसपर हमारा विश्वास नहीं बैठता। निःसन्देह यह खोजका विषय है। नेवला सांप को पकडता और काटता है, परन्तु फिर जोड देता है, यह मानना कठिन है।

जलचिकित्सा

इसके पश्चात् करीब अढाई सौ मन्त्र जलका वर्णन करने वाले हैं। इन में कुछ जल-चिकित्सा के भी हैं। जल में अनेक औषधिगुण हैं। जलप्रयोग से बहुत से रोग दूर हो जाते हैं। जलप्रयोगसे रोग-बीज शरीरसे बह जाते हैं।

जल वृष्टि से मिलता है, कूवा खोदकर जल प्राप्त होता है, स्वयं निर्झर से जल मिलता है, नदीका भी जल प्रसिद्ध हैं, जल सुख देनेवाला और दोष दूर करनेवाला है।

आवर्तन, निवर्तन, न्ययन, परायण, अभिषिंचन, प्रसिंचन, उपसिंचन आदि जल के प्रयोग हैं, जिन से जल-चिकित्सा होती है।

हिमालयपर्वत से जो जल आता है, वह बर्फ का जल होनेसे वह बडा ही शुद्ध रहता है। गंगानदी का जल इसी कारण अतिपवित्र है। इसी तरह हिमालय से चलनेवाली सब नदियों का जल उत्तम है।

सूर्य के किरणों से जल की भांप बनकर वह ऊपर जाती है। उसके मेघ बनते हैं। मेघों से वृष्टि होती है। वृष्टिका जल दिव्य जल कहा जाता है। सचमुच यह दिव्य आरोग्य देनेवाला जल है। इस कारण पर्जन्य को पिता कहते हैं, क्योंकि वही सब प्राणी और वृक्षवनस्पतियों का पालन करता है।

सब नदियां वृष्टि से ही भरती और चलती हैं। वृष्टि न हुई तो नदी चलेगी नहीं। केवल हिमालय से चलनेवाली नदियां गर्मी से बर्फ पिघल कर चलती हैं। इसलिये इन नदियों को महापूर गर्मी के दिनों में आता है।

अन्न

इसके आगे करीब सवादो सौ मन्त्र अन्न के वर्णन के लिये हैं। अन्न सब विश्वरूप में हमारे सम्मुख है। सभी अन्न हैं और सभी अन्न खानेवाले हैं। ओदन सूक्त (२०७–२१४ तक) पाठक देख सकते हैं। अन्न का महत्त्व जितना इन सूक्तोंमें बताया है, उतना सबका सब मननके योग्य है।

वाजीकरण तथा गर्भाधान।

आगे ये विषय हैं- गर्भधारणा होने के पश्चात् ' गर्भदोष-निवारण ' सूक्त २२३ में है। ' गर्भस्राव ' का उपाय सू० २२३ में पाठक देख सकते हैं। ' सुख-प्रसूति ' का विषय सू० २२६ में है। आगे के ४ सूक्तों में ' मेधाजनन ' का महत्त्वपूर्ण विषय है, जो बालक के हित होने के लिये अत्यंत आवश्यक है।

मणिधारण

आगे दस सूक्तों में 'मणिधारण' का विषय है। प्रतिसर,

वरण, काल, दर्भ, औदुम्बर, जंगिड, शतवार, अस्तृत ये मणि यहां वर्णन किये हैं। जैसे ताबीज बांधते हैं, वैसे ही ये मणि हैं। इनके वर्णन में अन्यान्य विषय भी बडे मनोरंजक हैं। किस को किसने यह मणि बांधा था, यह भी यहां इन सूक्तों में बताया है। किसी किसी मणि में सैंकडों सामर्थ्य हैं, ऐसा भी वर्णन है। ये मणि कैसे बनाये और धारण किये जाते हैं, यह बडी खोज का विषय है। इस कार्य के लिये अथर्ववेदके वेदाङ्ग ग्रन्थों का तथा तदंगभूत विविध ग्रन्थों की खोज करनी चाहिये। भाष्य में जो इस समय लिखा मिलता है, उस से हमारे हाथ में कुछ भी विशेष बात नहीं पडती।

इसके पश्चात् अरिष्टनिवारण, पापनाशन, कृत्यादूरीकरण, यज्ञादि विषय के मन्त्र हैं। इससे इस प्रकरण की समाप्ति होती है। इस आयुर्वेद-प्रकरण के कुल मन्त्र २३४५ हैं। करीब करीब सवा दो हजार हैं। आयुर्वेद का यह वैदिक मूल है। इस मूलका विस्तार आयुर्वेद है, जो चरक सुश्रुत के रूप में आज हमें उपलब्ध है।

इस सवा दो हजार के मन्त्रसंग्रह में आयुर्वेद के अनेक विषय हैं। इस का विचार करते समय पद पद का सूक्ष्म और खोजपूर्ण विचार करना चाहिये और आयुर्वेदके ग्रन्थों के साथ इन वेदमन्त्रों का मिलान करना चाहिये। तब जाकर इस विषय का समझने योग्य विवरण हो सकता है।

इस भूमिका में इस आयुर्वेद-प्रकरण के साथ पाठकों का केवल परिचय ही कराना था। वह इतने लेख से किया है। आशा है कि पाठक आयुर्वेद के इस मूल का कहां कैसा विस्तार हो गया है, इसका विचार करेंगे और लाभ उठावेंगे।

औंध (जि. सातारा)
१ पौष
संवत् २०००

निवेदनकर्ता
श्री. दा. सातवलेकर
अध्यक्ष, स्वाध्याय-मण्डल

आयुर्वेद-प्रकरण की विषयसूची

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
दीर्घायुष्यं	१-२४	१-१५८	१-१३
सुमंगलौ दन्तौ	२५	१५९-१६१	१३
यक्ष्मनाशनं	२६-३९	१६२-३००	१३-२३
ओषधि-वनस्पतयः	४०-७६	३०१-४०२	२३-३६
ओषधयः	४०-४५	३०१-३५८	२३-२७
अश्वं	४६	३५८-३६१	२७
वातसिन्ध्वो-षधयः	४७	३६२	,,
सूर्यभरीचयः	४८	३६३	,,
वनस्पतिः	४९-५५	३६४-३८९	२७-२९
अपामार्गः	५६-५९	३८०-४०६	२९-३०
अरुंधती	६०	४०७-४०९	३१
कुष्ठः	६१	४१०-४१२	,,
पिप्पली	६२	४१३-४१५	,,
पृश्निपर्णी	६३	४१६-४२०	,,
रोहिणी	६४	४२१-४२७	३१-३२
लाक्षा	६५	४२८-४३६	३२
कुष्ठः	६६-६७	४३७-४५६	३३-३४
केशवर्धिनी	६८	४५७-४५९	३४
नितनी	६९	४६०-४६२	,,
केशदंहणं	,,	,, ,,	,,
केशवर्धनं	७०	४६३-४६५	३५
अक्षिरोगभेषज्यं	७१	४६६-४६९	,,
शमी	७२	४७०-४७२	,,
वनस्पतिसूर्यगावः	७३	४७३	,,
सोमः	७४-७५	४७४-७७	३५-३६
मधुवनस्पतिः	७६	४७८-८२	३६
रोगचिकित्सा	७७-१२२	४८३-६९०	३६-५०
बलासनाशनं	७७	४८३-४८५	,,
कासा	७८	४८६-४८८	,,
हृद्रोगकामिला-नाशनं	७९	४८९-४९२	३७

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
यक्ष्मनाशनं	८०	४९३-४९७	,,
क्षेत्रिय ,,	,,	,, ,,	,,
क्लीबत्व ,,	८१	४९८-५०२	,,
गण्डमालाचिकित्सा	८२-८३	५०३-१२	७३-८३
रोहिणी	८४	५१३-१६	३८
रामायणी	,,	,, ,,	,,
आसिक्तिः	८५	५१७-२०	३८-३९
श्वेतकुष्ठनाशनं	८५-८६	५१७-२४	,, ,,
आसुरी	८६	५२१-२४	३९
ज्वरनाशनं	८७-८८	५२५-३१	,,
यक्ष्मनाशनोऽग्निः	८७	५२५-२८	,,
तक्मनाशनं	८९	५३१-४४	३९-४०
रोगघ्नं	९०	५४५-४७	४०
रोगनिवारणं	९१	५४८-५४	४१
धमनीबन्धनं	९२	५५५-५८	,,
रोगनाशनं	९३	५५९-६१	,,
सूर्यगौभेषजं	९४	५६२-६४	४२
आस्रावभेषजं	९५	५६५-७०	,,
मूत्रमोचनं	९६	५७१-७९	४२-४३
त्रैकाकुदमाञ्जनं	९७	५८०-८९	४३
अञ्जनं	९८-१०२	५९०-६१२	४४ ४५
स्वापनं	१०३	६१३-१९	४५
इषुनिष्कासनं	१०४	६२०-२२	४६
दुष्वप्ननाशनं	१०५-११	६२३-३७	४६-४७
सुखं	११२	६३८	४७
मन्युशमनं	११३	६३९-४१	,,
वृषरोगशमनं	११४	६४२-५२	४८
मधुला	११५	६५३-६३	,,
शरः	११६	६६४-६७	४८-४९
शापमोचनं	११७	६६८-७२	४९
अलक्ष्मीनाशनं	११८	६७३-७६	,,
सौभाग्यवर्धनं	११९	६७७-८१	४९-५०
ईर्ष्याविनाशनं	१२०	६८२-८४	५०

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
ईर्ष्याऽपनयनं	१२१	६८५-८६	५०
उन्मत्ततामोचनं	१२२	६८७-९०	,,
क्रिमिनाशनं	१२३-३५	६९१-७७३	५०-५६
क्रिमिजम्भनं	१२३	६९१-९५	५०-५१
क्रिमिघ्नं	१२४-१२५	६९५-७१४	५१-५२
अजशृंगी	१२६	७१५-२६	५२-५३
यातुधानानशनं	१२७-२८	७२७-३३	५३
रक्षोघ्नं	१२५-३१	७३४-५३	५३-५५
पिशाचक्षयणं	१३२	७५४-६२	५५
असुर ,,	१३३-३४	७६३-६६	५६
यातुधाननाशनं	१३५	७६७-७३	,,
विषनाशनं	१३६-४५	७७४-८५९	५७-६२
विषघ्नं	१३६-३७	७७४-९७	५७-५८
,, नाशनं	१३८	७९८-८०४	५८-५९
,, दूषणं	१३९	८०५-७	५९
,, दूरीकरणं	१४०	८०८-३३	५९-६०
सर्पविषनाशनं	१४१-४३	८३४-४८	६०-६१
सर्पेभ्यो रक्षणं	१४४	८४९-५१	६२
विषभैषज्यं	१४५	८५२-५९	,,
जलचिकित्सा	१४६-२०२	८६०-११०७	६२-८३
आपः	१४६-६५	८६०-९५५	६२-६९
दिव्या आपः	१६६-१६७	९५६-६२	७०
अपां भेषजं	१६८-७२	९६३-७३	७०-७१
पर्जन्यः	१७३-७९	९७४-१०११	७१-७५
नद्यः	१८०-८२	१०२२-४४	७५-७७
सरस्वान्	१८३-८५	१०४५-५०	७७-७८
सरस्वती	१८६-९७	१०५१-९२	७८-८१
आपः	१९८-२०२	१०९३-११०७	८१-८३
अन्नादिकं	२०३-१४	११०८-१३३१	८३-१०१
अन्नं	२०३-६	११०८-२६	८३-८४
ओदनः	२०७	११२७-८२	८४-८९
पञ्चौदनः	२०८	११८३-१२२०	८९-९२
ब्रह्मौदनं	२०९-१९	१२२१-६५	९३-९६
मधुमदन्नं	२११	१२६६-१२६८	९६
वासः	२१२-१३	१२६९-१२७१	,,

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
स्वर्गौदनः	२१४	१२७२-१३३१	९७-१०१
वाजीकरणं	२१५-१७	१३३२-४५	१०१-२
गर्भाधानं	२१८-३९	१३४६-१४२९	१०२ ८
योनिगर्भः	२१८	१३४६-५८	१०२-१०३
गर्भाधानं	२१९	१३५९-६०	१०३
गर्भदृंहणं	२२०	१३६१-१३६५	,,
आत्मा	२२१	१३६६	,,
गर्भदोषनिवारणं	२२२	१३६७-१३९२	१०४-१०५
,, संस्रावः	२२३	१३९३-१३९८	१०५-१०६
,, स्राविणी	२२४	१३९९-१४०२	१०६
,, धारणं	२२५	१४०३	,,
सुखप्रसूतिः	२२६	१४०५-१४१०	१०६-१०७
मेधा	२२७	१४११-१४१४	१०७
,, जननं	२२८	१४१५-१४१८	,,
,, वर्धनं	२२९	१४१९-२३	१०७-८
मणिधारणं	२३०-४१	१४२४-१५७८	१०८-११९
शंखः	२३०	१४२४-१४३०	१०८
प्रतिसरः	२३१	१४३१-१४५२	१०८-११०
वरणः	२३२	१४५३-१४७७	११०-१११
फालः	२३३	१४७८-१५१२	१११-११४
दर्भः	२३४-२३६	१५१३-१५३६	११५-११६
औदुम्बरः	२३७	१५३७-१५५०	११६-११७
जंगिडः	२३८-२३९	१५५१-१५६५	११७-११८
शतवारः	२४०	१५६६-१५७१	११८-११९
अस्तृतः	२४१	१५७२-१५७८	११९
अरिष्टनाशनं	२४२-२४५	१५७९-१५९०	११९-२०
,, क्षयणं	,, ,,	,, ,,	,, ,,
कृत्यादूषणं	२४६-२४९	१५९१-१६५३	१२१-२५
,, परिहरणं	२४६-२४७	१५९१-१६१५	१२१-२२
,, दूषणं	२४८	१६१६-१६४७	१२२-२४
दस्युनाशनं	२४९	१६४८-१६५३	१२४-२५
पापादिनाशनं	२५०-२९३	१६५४-१९१७	१२५-४३
पापमोचनं	२५०-२५५	१६५४-१६७९	१२५-२७
बन्ध ,,	२५६	१६८०-१६८२	१२७
मन्याविनाशनं	२५७	१६८२-१६८४	१२७-२८

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
पापमोचनं	२५८-२६८	१६८५-१७५५	१२८-३३
,, नाशनं	२६९-२७५	१७५७-१७७६	१३३-३५
अराति ,,	२७६	१७७६-१७८६	१३५
एनो ,,	२७७	१७८७-१७८९	१३६
निर्ऋतिमोचनं	२७८	१७९०-१७९३	,,
उन्मोचनं	२७९	१७९४-१७९६	,,
दुरितनाशनं	२८०	× ×	,,
दुःखनाशनं	२८१	१७९७-१८०२	१३६-३७
,, मोचनं	२८२-२८५	१८०३-१८३२	१३७-३८
दुःस्वप्ननाशनं	२८६-२९३	१८३५-१९१७	१३९-४३
अवनं	२९४	× ×	१४३
यज्ञादिकं	२९५-३३७	१९१८-२३२४	१४३-७६
घर्मः	२९५	१९१९-१९२०	१४३
अग्निः	२९६	१९२१-२२	,,
दर्भः	२९७-९८	१९२३-३७	१४३-४४
घृतहोमः	२९९	१९३८-४५	१४५
पितृमेधः	३००	१९४६-५३	१४५-४६
यमः	३०१-३	१९५४-८६	१४६-४८
पितरः	३०४	१९८७-२०००	१४८-४९
पितृमेधः	३०५-७	२००१-२१५०	१४९-६०
यमः पितरः	३०८	२१५१-२२३९	१६१-६६
यज्ञः	३०९-१४	२२४० ५६	१६६-६७
वेदी	३१५-२०	२२५७-७३	१६८-६९
हविः	३२१	२२७४	१७०
हविर्धाने	३२२	२२७५ ७९	,,
उलूखलमुसले	३२३	२२८०-८३	,,
ग्रावाणः	३२४-२७	२२८४-२३१०	१७०-७२
धनान्नदानं	३२८	२३११-२३१९	१७३
गावः	३२९	२३२०-२३२५	१७३ ७४
अग्निः	३३०	२३२६	१७४
दीर्घायुष्यं	३३१-३३	२३२७-२३३५	१७४-७५
दम्पत्योर्यक्ष्म-नाशनं	३३४	२३३६	१७५
अलक्ष्मीघ्नं	३३५	२३३७-२३३८	,,
सपत्नघ्नं	३३६-३७	२३३९-२३४५	१७५-७६

दैवत-संहिता।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् विषयानुसारेण संगृह्य निर्मितम्।)

६ आयुर्वेद-प्रकरणम्।

दीर्घायुष्यम्। (१-१५१)

॥१॥ (अथर्व० २।२८।१—५)

शम्भुः। १,३ जरिमा, आयुः; २ मित्रावरुणौ; ३—५ द्यावापृथिव्यादयो देवाः। त्रिष्टुप्, १ जगती, ५ भुरिक्।

तुभ्यमेव जरिमन् वर्धतामयं मेममन्ये मृत्यवो हिंसिषुः शतं ये।
मातेव पुत्रं प्रमना उपस्थे मित्र एनं मित्रियात् पात्वंहसः १
मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविदानौ।
तदग्निर्होता वयुनानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति २
त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः।
मेमं प्राणो हांसीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः ३
द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविदाने।
यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः ४
इममग्न आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन्।
मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत् ५ ५

॥२॥ (अथर्व० ८।१।१-२१)

ब्रह्मा। आयुः। त्रिष्टुप्; १ पुरोबृहती त्रिष्टुप्; २--३, १७--२१ अनुष्टुप्; ४,९,१५--१६ प्रस्तारपङ्क्तिः; ७ त्रिपदा विराड्गायत्री; ८ विराट्पथ्याबृहती; १२ त्र्यवसाना पञ्चपदा जगती; १३ त्रिपाद्भुरिङ्महाबृहती; १४ एकावसाना द्विपदा साम्नी भुरिग्बृहती।

अन्तकाय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम्।
इहायमस्तु पुरुषः सहासुना सूर्यस्य भागे अमृतस्य लोके १
उदेनं भगो अग्रभीदुदेनं सोमो अंशुमान्।
उदेनं मरुतो देवा उदिन्द्राग्नी स्वस्तये २
इह तेऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः।
उत् त्वा निर्ऋत्याः पाशेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि ३ ८

उत् क्रामातः पुरुष मावं पत्था मृत्योः पड्वीशमवमुञ्चमानः ।
मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य संदृशः ४
तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः ।
सूर्यस्ते तन्वे३ शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्ठाः ५ १०
उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।
आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि ६
मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो भून्मा जीवेभ्यः प्र मदो मानु गाः पितॄन् ।
विश्वे देवा अभि रक्षन्तु त्वेह ७
मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम् ।
आ रोह तमसो ज्योतिरेह्या ते हस्तौ रभामहे ८
श्यामश्च त्वा मा शबलश्च प्रेषितौ यमस्य यौ पथिरक्षी श्वानौ ।
अर्वाङेहि मा वि दीध्यो मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः । ९
मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि ।
तमं एतत् पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक् १० १५
रक्षन्तु त्वाग्नयो ये अप्स्व३न्ता रक्षतु त्वा मनुष्या३ यमिन्धते ।
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग् विद्युता सह ११
मा त्वा क्रव्यादभि मंस्तारात् संकसुकाच्चर ।
रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च ।
अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्याः १२
बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राणश्च रक्षताम् ।
गोपायंश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम् १३
ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपायन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा १४
जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुरिन्द्रो धाता दधातु सविता त्रायमाणः ।
मा त्वा प्राणो बलं हासीदसुं तेऽनु ह्वयामसि १५ २०
मा त्वा जम्भः संहनुर्मा तमो विदन्मा जिह्वा बर्हिः प्रमयुः कुथा स्याः ।
उत् त्वादित्या वसवो भरन्तूदिन्द्राग्नी स्वस्तये १६
उत् त्वा द्यौरुत् पृथिव्युन् प्रजापतिरग्रभीत् । उत् त्वा मृत्योरोषधयः सोमराज्ञीरपीपरन् १७
अयं देवा इहैवास्त्वयं मामुत्र गादितः । इमं सहस्रवीर्येण मृत्योरुत् पारयामसि १८ २३

उत् त्वा मृत्योरपीपरं सं धमन्तु वयोधसः । मा त्वा व्यस्तक्रेश्योः मा त्वा रुदो रुदन् १९
आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः । सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् २० २५
व्यवात् ते ज्योतिरभूदप त्वत् तमो अक्रमीत् ।
अप त्वन्मृत्युं निर्ऋतिमप यक्ष्मं नि दध्मसि २१

॥३॥ (अथर्व० ८।२।१-२८)

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप्; १--२, ७ भुरिक्; ३, २६ आस्तारपङ्क्तिः, ४ प्रस्तारपङ्क्तिः, ६, १५ पथ्यापङ्क्तिः; ८ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती जगती; ९ पञ्चपदा जगती; ११ विष्टारपङ्क्तिः, १२, २२, २८ पुरस्ताद्बृहती; १४ त्र्यवसाना षट्पदा जगती; १९ उपरिष्टाद्बृहती; २१ सतः पङ्क्तिः; ५, १०, १६--१८, २०, २३--२५, २७ अनुष्टुप् (१७ त्रिपाद्)।

आ रभस्वेमाममृतस्य श्रुष्टिमच्छिद्यमाना जरदष्टिरस्तु ते ।
असुं त आयुः पुनरा भरामि रजस्तमो मोप गा मा प्र मेष्ठाः १
जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङ् त्वा हरामि शतशारदाय ।
अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि २
वातात् ते प्राणमविदं सूर्याच्चक्षुरहं तव ।
यत् ते मनस्त्वयि तद् धारयामि सं वित्स्वाङ्गैर्वेदं जिह्वयालपन् ३
प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव जातमभि सं धमामि ।
नमस्ते मृत्यो चक्षुषे मनः प्राणाय तेऽकरम् ४ ३०
अयं जीवतु मा मृतेमं समीरयामसि ।
कृणोम्यस्मै भेषजं मृत्यो मा पुरुषं वधीः ५
जीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।
त्रायमाणां सहमानां सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये ६
अधि ब्रूहि मा रभथाः सुजेमं तवैव सन्त्सर्वहाया इहास्तु ।
भवाशर्वौ मृडतं शर्म यच्छतमपसिध्यं दुरितं धत्तमायुः ७
असौ मृत्यो अधि ब्रूहीमं दयस्वोदितोऽयमेतु ।
अरिष्टः सर्वाङ्गः सुश्रुजरसा शतहायन आत्मना भुजमश्नुताम् ८
देवानां हेतिः परि त्वा वृणक्तु पारयामि त्वा रजस उत् त्वा मृत्योरपीपरम् ।
आरादग्निं क्रव्यादं निरूहं जीवातवे ते परिधिं दधामि ९
यत् ते नियानं रजसं मृत्यो अनवधर्ष्यम् ।
पथ इमं तस्माद् रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्म कृण्मसि १० ३६

कृणोमि ते प्राणापानौ जरां मृत्युं दीर्घमायुः स्वस्ति ।
वैवस्वतेन प्रहितान् यमदूतांश्चरतोऽप सेधामि सर्वान् ११
आरादरातिं निर्ऋतिं परो ग्राहिं क्रव्यादः पिशाचान् ।
रक्षो यत् सर्वं दुर्भूतं तत् तमं इवाप हन्मसि १२
अग्नेष्टे प्राणममृतादायुष्मतो वन्वे जातवेदसः ।
यथा न रिष्या अमृतः सजूरसस्तत् ते कृणोमि तदु ते समृध्यताम् १३
शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी असंतापे अभिश्रियौ ।
शं ते सूर्य आ तपतु शं वातो वातु ते हृदे ।
शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्याः पयस्वतीः १४ ४०
शिवास्ते सन्त्वोषधय उत् त्वाहार्षमधरस्या उत्तरां पृथिवीमभि ।
तत्र त्वादित्यौ रक्षतां सूर्याचन्द्रमसावुभा १५
यत् ते वासः परिधानं यां नीविं कृणुषे त्वम् ।
शिवं ते तन्वेऽ तत् कृण्मः संस्पर्शेऽदृक्ष्णमस्तु ते १६
यत् क्षुरेण मर्चयता सुतेजसा वप्ता वपसि केशश्मश्रु ।
शुभं मुखं मा न आयुः प्र मोषीः १७
शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ ।
एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुञ्चतो अंहसः १८
यदश्नासि यत् पिबसि धान्यं कृष्याः पयः ।
यदाद्यं यदनाद्यं सर्वं ते अन्नमविषं कृणोमि १९ ४५
अह्ने च त्वा रात्रये चोभाभ्यां परि दद्मसि ।
अरायेभ्यो जिघत्सुभ्यं इमं मे परि रक्षत २०
शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः ।
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहृणीयमानाः २१
शरदे त्वा हेमन्तायं वसन्तायं ग्रीष्माय परि दद्मसि ।
वर्षाणि तुभ्यं स्योनानि येषु वर्धन्त ओषधीः २२
मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम् । तस्मात् त्वां मृत्योर्गोपतेरुद्धरामि स मा बिभेः २३
सोऽरिष्ट न मरिष्यसि न मरिष्यसि मा बिभेः । न वै तत्र म्रियन्ते नो यन्त्यधमं तमः २४
सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः । यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम् २५ ५१

परि॑ त्वा पातु सम॒नेभ्यो॑ऽभि॒चारा॑त् सब॑न्धुभ्यः ।
अम॑म्रिर्भवा॒मृतो॑ऽतिजी॒वो मा ते॑ हासिषुर॒सवः॒ शरी॑रम् २६
ये मृत्यव॒ एक॑शतं॒ या नाष्ट्रा अ॑ति॒तार्या॑ः ।
मु॒ञ्चन्तु॒ तस्मा॑त् त्वां दे॒वा अ॒ग्नेर्वै॑श्वा॒नरा॑दधि २७
अ॒ग्नेः शरी॑रमसि पारयि॒ष्णु र॑क्षो॒हासि॑ सपत्न॒हा ।
अथो॑ अमीव॒चात॑नः पू॒तुद्रु॑र्नाम॑ भेष॒जम् २८

॥४॥ (अथर्व० १।३०।१-४)

अथर्वा (आयुष्कामः)। विश्वे देवाः (१ वसवः, आदित्याः, १-४ देवाः)। त्रिष्टुप्, ३ शाकरगर्भा विराड्जगती।

विश्वे॑ देवा॒ वस॑वो॒ रक्ष॒तेम॒मुता॑दि॒त्या जा॑गृत यू॒यम॒स्मिन् ।
मे॒मं स॒नाभि॒रुत वा॒न्यना॒भिर्मे॒मं प्रा॒पत् पौरु॑षेयो व॒धो यः १ ५५
ये वो॑ देवाः पि॒तरो॒ ये च॑ पु॒त्राः सचे॑तसो मे शृणु॒तेद॒मु॒क्तम् ।
सर्वे॑भ्यो व॒ः परि॑ ददाम्ये॒तं स्व॒स्त्ये॒नं ज॒रसे॑ वहाथ २
ये दे॒वा दि॒वि ष्ठ ये पृ॑थि॒व्यां ये अ॒न्तरि॑क्ष॒ ओष॑धीषु प॒शुष्व॒प्स्व१॒न्तः ।
ते कृ॑णुत ज॒रस॒मायु॑र॒स्मै श॒तम॒न्यान् परि॑ वृणक्तु मृ॒त्यून् ३
येषा॑ं प्र॒या॒जा उ॒त वा॑नुया॒जा हु॒तभा॑गा अहु॒ता॑दश्च॒ दे॒वाः ।
येषा॑ं व॒ः पञ्च॑ प्र॒दिशो॒ विभ॑क्ता॒स्तान् वो॑ अ॒स्मै स॑त्र॒सदः॑ कृणोमि ४

॥५॥ (अथर्व० १।३५।१—४)

अथर्वा (आयुष्कामः)। हिरण्यम्, इन्द्राग्नी, विश्वे देवाः। जगती, ४ अनुष्टुब्गर्भा चतुष्पदा त्रिष्टुप्।

यद॑ाब॑ध्नन् दाक्षाय॒णा हिर॑ण्यं श॒तानी॑काय सुमन॒स्यमा॑नाः ।
तत् ते॑ बध्नाम्यायु॒षे वर्च॑से॒ बला॑य दीर्घायु॒त्वाय॑ श॒तशा॑रदाय १
नैन॑ं रक्षा॑ंसि न पिशा॒चाः स॑हन्ते दे॒वाना॒मोज॑ः प्रथम॒जं ह्ये॒३॒तत् ।
यो बि॑भ॒र्ति॑ दाक्षाय॒णं हिर॑ण्यं॒ स जी॒वेषु॑ कृणुते दी॒र्घमायु॑ः २ ६०
अ॒पां तेजो॒ ज्योति॒रोजो॒ बल॑ं च॒ वन॒स्पती॑नामु॒त वी॒र्या॑णि ।
इन्द्र॑ इवेन्द्रि॒याण्यधि॑ धारयामो अ॒स्मिन् तद् दक्ष॑माणो बिभर॒द्धिर॑ण्यम् ३
सं॒वत्स॒रस्य॒ पय॑सा पिपर्मि ।
इन्द्रा॒ग्नी विश्वे॑ दे॒वास्तेऽनु॑ मन्यन्ता॒महृ॑णीयमानाः ४ ६१

॥६॥ (अथर्व० ६।४१।१—३)

ब्रह्मा। चन्द्रमाः, २ सरस्वती, ३ दैव्या ऋषयः। अनुष्टुप्, १ भुरिक्, ३ त्रिष्टुप्।

मनसे चेतसे धिय आकूतय उत चित्तये। मत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम् १
अपानाय व्यानाय प्राणाय भूरिधायसे। सरस्वत्या उरुव्यचे विधेम हविषा वयम् २
मा नो हासिषुर्ऋषयो दैव्या ये तनूपा ये नस्तन्वस्तनूजाः।
अमर्त्या मर्त्याँ अभि नः सचध्वमायुर्धत्त प्रतरं जीवसे नः ३ ६५

॥७॥ (अथर्व० २।४।१-६)

अथर्वा। (चन्द्रमाः,) जङ्गिडः। अनुष्टुप्, १ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः।

दीर्घायुत्वाय बृहते रणायारिष्यन्तो दक्षमाणाः सदैव।
मणिं विष्कन्धदूषणं जङ्गिडं बिभृमो वयम् १
जङ्गिडो जम्भाद् विशराद् विष्कन्धादभिशोचनात्।
मणिः सहस्रवीर्यः परि णः पातु विश्वतः २
अयं विष्कन्धं सहतेऽयं बाधते अत्त्रिणः।
अयं नो विश्वभेषजो जङ्गिडः पात्वंहसः ३
देवैर्दत्तेन मणिना जङ्गिडेन मयोभुवा।
विष्कन्धं सर्वा रक्षांसि व्यायामे सहामहे ४
शणश्च मा जङ्गिडश्च विष्कन्धादभि रक्षताम्।
अरण्यादन्य आभृतः कृष्या अन्यो रसेभ्यः ५ ७०
कृत्यादूषिरण्यं मणिरथो अरातिदूषिः।
अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयूंषि तारिषत् ६

॥८॥ (अथर्व० ३।११।१—८)

ब्रह्मा, भृग्वङ्गिराश्च। इन्द्राग्नी, आयुष्यं, यक्ष्मनाशनम्। त्रिष्टुप्, ४ शाक्करीगर्भा जगती, ५-६ अनुष्टुप्, ७ उष्णिग्बृहतीगर्भा पथ्यापङ्क्तिः, ८ त्र्यवसाना षट्पदा बृहतीगर्भा जगती।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् १
यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव।
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय २
सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम्।
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् ३ ७४

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् छतमु वसन्तान् ।
शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ४ ७५
प्र विंशतं प्राणापानावनड्वाहाविव व्रजम् ।
व्यु१न्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम् ५
इहैव स्तं प्राणापानौ माप गातमितो युवम् ।
शरीरमस्याङ्गानि जरसे वहतं पुनः ६
जरायै त्वा परि ददामि जरायै नि धुवामि त्वा ।
जरा त्वा भद्रा नेष्ट व्यु१न्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम् ७
अभि त्वा जरिमाहित गामुक्षणमिव रज्ज्वा ।
यस्त्वा मृत्युरभ्यधत्त जायमानं सुपाशया ।
तं ते सत्यस्य हस्ताभ्यामुदमुञ्चद् बृहस्पतिः ८

॥९॥ (अथर्व० २।९।१-५)

भृग्वङ्गिराः । वनस्पतिः, यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप्, १ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो ग्राह्या अधि यैनं जग्राह पर्वसु ।
अथो एनं वनस्पते जीवानां लोकमुन्नय १ ८०
आगादुदगादयं जीवानां व्रातमप्यगात् ।
अभूदु पुत्राणां पिता नृणां च भगवत्तमः २
अधीतीरध्यगादयमधि जीवपुरा अगन् ।
शतं ह्यस्य भिषजः सहस्रमुत वीरुधः ३
देवास्ते चीतिमविदन् ब्रह्माणं उत वीरुधः ।
चीतिं ते विश्वे देवा अविदन् भूम्यामधि ४
यश्चकार स निष्करत् स एव सुभिषक्तमः ।
स एव तुभ्यं भेषजानि कृणवद् भिषजा शुचिः ५

॥१०॥ (अथर्व० ६।११०।१-३)

अथर्वा । अग्निः । त्रिष्टुप्, १ पङ्क्तिः ।

प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।
स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रायस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व १ ८५

ज्येष्ठघ्यां जातो विचृतोर्यमस्य मूलबर्हणात् परि पाह्येनम् ।
अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वाय शतशारदाय २
व्याघ्रेऽहत्यजनिष्ट वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः ।
स मा वधीत् पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीज्जनित्रीम् ३

॥११॥ (अथर्व० ६।४७।१-३)

अङ्गिराः प्रचेताः । १ अग्निः, २ विश्वे देवाः, ३ सुधन्वा। त्रिष्टुप् ।

अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद् विश्वशंभूः ।
स नः पावको द्रविणे दधात्वायुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम १
विश्वे देवा मरुत इन्द्रो अस्मानस्मिन् द्वितीये सवने न जह्युः ।
आयुष्मन्तः प्रियमेषां वदन्तो वयं देवानां सुमतौ स्याम २
इदं तृतीयं सवनं कवीनामृतेन ये चमसमैरयन्त ।
ते सौधन्वनाः स्वरानशानाः स्विष्टिं नो अभि वस्यो नयन्तु ३ ९०

॥१२॥ (अथर्व० २।२९।१-७)

अथर्वा । १ अग्निः, सूर्यः, बृहस्पतिः; २ जातवेदाः, सविता; ३ इन्द्रः; ४-५ द्यावापृथिवी, विश्वे देवाः, मरुतः, आपः; ६ अश्विनौ, ७ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप्, ४ पराबृहती निचृत्प्रस्तारपङ्क्तिः ।

पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वो३ बले ।
आयुष्यमस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः १
आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेह्यस्मै ।
रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम् २
आशीर्ण ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं दक्षं धत्तं द्रविणं सचेतसौ ।
जयं क्षेत्राणि सहसायमिन्द्र कृण्वानो अन्यानधरान्त्सपत्नान् ३
इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टो मरुद्भिरुग्रः प्रहितो न आगन् ।
एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे मा क्षुधन्मा तृषत् ४
ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती धत्तं पयो अस्मै पयस्वती धत्तम् ।
ऊर्जमस्मै द्यावापृथिवी अधातां विश्वे देवा मरुत ऊर्जमापः ५
शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्यनमीवो मोदिषीष्ठाः सुवर्चीः ।
सवासिनौ पिबतां मन्थमेतमश्विनौ रूपं परिधाय मायाम् ६ ९६

इन्द्र एतां सं सृजे विद्वो अग्र ऊर्जा स्वधामजरां सा त एषा ।
तया त्वं जीव शरदः सुवर्चा मा त आ सुस्रोद् भिषजस्ते अक्रन् ७

॥१३॥ (अथर्व० ५।३०।१-१७)

उन्मोचनः (आयुष्कामः)। आयुष्यम्। अनुष्टुप् १ पथ्यापङ्क्तिः, ९ भुरिक्, १२ चतुष्पदा विराड्जगती, १४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः, १७ त्र्यवसाना षट्पदा जगती।

आवर्तस्त आवर्तः परावर्तस्त आवर्तः ।
इहैव भव मा नु गा मा पूर्वाननु गाः पितॄनसुं बध्नामि ते दृढम् १
यत् त्वाभिचेरुः पुरुषः स्वो यदरणो जनः उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते २
यद् दुद्रोहिथ शेपिषे स्त्रियै पुंसे अचित्त्या । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ३ १००
यदेनसो मातृकृताच्छेषे पितृकृताच्च यत् । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ४
यत् ते माता यत् ते पिता जामिर्भ्राता च सर्जतः । प्रत्यक् सेवस्व भेषजं जरदष्टिं कृणोमि त्वा५
इहैधि पुरुष सर्वेण मनसा सह । दूतौ यमस्य मानु गा अधि जीवपुरा इहि ६
अनुहूतः पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः । आरोहणमाक्रमणं जीवतोजीवतोऽयनम् ७
मा बिभेर्न मरिष्यसि जरदष्टिं कृणोमि त्वा । निरवोचमहं यक्ष्ममङ्गेभ्यो अङ्गज्वरं तव ८ १०५
अङ्गभेदो अङ्गज्वरो यश्च ते हृदयामयः । यक्ष्मः श्येन इव प्रापप्तद् वाचा साढः परस्तराम्९
ऋषी बोधप्रतीबोधावस्वप्नो यश्च जागृविः । तौ ते प्राणस्य गोप्तारौ दिवा नक्तं च जागृताम् १०
अयमग्निरुपसद्य इह सूर्य उदेतु ते । उदेहि मृत्योर्गम्भीरात् कृष्णाच्चित् तमसस्परि ११
नमो यमाय नमो अस्तु मृत्यवे नमः पितृभ्य उत ये नयन्ति ।
उत् पारणस्य यो वेद तमग्निं पुरो दधेऽस्मा अरिष्टतातये १२
एतु प्राण एतु मन एतु चक्षुरथो बलम् । शरीरमस्य सं विदां तत् पद्भ्यां प्रति तिष्ठतु १३ ११०
प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं सृजेमं समीरय तन्वा३ सं बलेन ।
वेत्थामृतस्य मा नु गान्मा नु भूमिगृहो भुवत् १४
मा ते प्राण उप दसन्मो अपानोऽपि धायि ते । सूर्यस्त्वाधिपतिर्मृत्योरुदायच्छतु रश्मिभिः१५
इयमन्तर्वेदति जिह्वा बद्धा पनिष्पदा। त्वया यक्ष्मं निरवोचं शतं रोपींश्च तक्मनः १६
अयं लोकः प्रियतमो देवानामपराजितः । यस्मै त्वमिह मृत्यवे दिष्टः पुरुष जज्ञिषे ।
स च त्वानु ह्वयामसि मा पुरा जरसो मृथाः १७ ११४

॥१४॥ (अथर्व० १९।६४।१—४)

ब्रह्मा । अग्निः (दीर्घायुत्वम्) । अनुष्टुप् ।

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे । स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु १ ११५
इध्मेन त्वा जातवेदः समिधा वर्धयामसि । तथा त्वमस्मान् वर्धय प्रजया च धनेन च २
यदग्ने यानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि । सर्वं तदस्तु मे शिवं तज्जुषस्व यविष्ठ्य ३
एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः समिद्भव । आयुरस्मासु धेह्यमृतत्वमाचार्याय ४

॥१५॥ (अथर्व० १९।६७।१-८)

ब्रह्मा । सूर्यः (दीर्घायुत्वम्) । प्रजापत्या गायत्री ।

पश्येम शरदः शतम् १ जीवेम शरदः शतम् २
बुध्येम शरदः शतम् ३ रोहेम शरदः शतम् ४
पूषेम शरदः शतम् ५ भवेम शरदः शतम् ६
भूयेम शरदः शतम् ७ भूयसीः शरदः शतात् ८ ११६

॥१६॥ (अथर्व० ५।२८।१-१४)

अथर्वा । त्रिवृत्, अग्न्यादयः (दीर्घायुः) । त्रिष्टुप्, ६ पञ्चपदातिशक्करी;
७,९,१०,१२ ककुम्मत्यनुष्टुप्; १३ पुरउष्णिक् ।

नवं प्राणान् नवभिः सं मिमीते दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।
हरिते त्रीणि रजते त्रीण्ययसि त्रीणि तपसाविष्ठितानि १
अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो द्यौरन्तरिक्षं प्रदिशो दिशश्च ।
आर्तवा ऋतुभिः संविदाना अनेनं मा त्रिवृता पारयन्तु २
त्रयः पोषास्त्रिवृति श्रयन्तामनक्तु पूषा पयसा घृतेन ।
अन्नस्य भूमा पुरुषस्य भूमा भूमा पशूनां त इह श्रयन्ताम् ३
इममादित्या वसुना समुक्षतेममग्ने वर्धय वावृधानः ।
इममिन्द्र सं सृज वीर्येणास्मिन् त्रिवृच्छ्रयतां पोषयिष्णु ४ १३०
भूमिष्ट्वा पातु हरितेन विश्वभृदग्निः पिपर्त्वयसा सजोषाः ।
वीरुद्भिष्टे अर्जुनं संविदानं दक्षं दधातु सुमनस्यमानम् ५
त्रेधा जातं जन्मनेदं हिरण्यमग्नेरेकं प्रियतमं बभूव सोमस्यैकं हिंसितस्य परापतत् ।
अपामेकं वेधसां रेत आहुस्तत् ते हिरण्यं त्रिवृदस्त्वायुषे ६ १३१

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नस्तु त्र्यायुषम् ॥ ७
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदायन्नेकाक्षरमभिसंभूय शुक्राः ।
प्रत्यौहन् मृत्युममृतेन साकमन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा ॥ ८
दिवस्त्वा पातु हरितं मध्यात् त्वा पात्वर्जुनम् ।
भूम्या अयस्मयं पातु प्रागाद् देवपुरा अयम् ॥ ९ १३५
इमास्तिस्रो देवपुरास्तास्त्वा रक्षन्तु सर्वतः ।
तास्त्वं बिभ्रद् वर्चस्व्युत्तरो द्विषतां भव ॥ १०
पुरं देवानाममृतं हिरण्यं य आबिभेद प्रथमो देवो अग्रे ।
तस्मै नमो दश प्राचीः कृणोम्यनु मन्यतां त्रिवृदावधे मे ॥ ११
आ त्वा चृतत्वर्यमा पूषा बृहस्पतिः ।
अहर्जातस्य यन्नाम तेन त्वार्तिं चृतामसि ॥ १२
ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे वर्चसे त्वा ।
संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृण्मसि ॥ १३
घृतादुल्लुप्तं मधुना समक्तं भूमिदृंहमच्युतं पारयिष्णु ।
भिन्दत् सपत्नानधरांश्च कृण्वदा मा रोह सहते सौभगाय ॥ १४ १४०

॥१७॥ (अथर्व० ७।३२।१)

ब्रह्मा । आयुः । अनुष्टुप् ।

उप प्रियं पनिप्रतं युवानमाहुतीवृधम् ।
अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे ॥ १

॥१८॥ (अथर्व० ७।३३।१)

ब्रह्मा । मरुतः, पूषा, बृहस्पतिः, अग्निः, (दीर्घायुः) । पथ्यापङ्क्तिः ।

सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः ।
सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे ॥ १

॥१९॥ (अथर्व० ७।५३।१-७)

ब्रह्मा । आयुः, बृहस्पतिः अश्विनौ च । त्रिष्टुप्, २ भुरिक्, ४ उष्णिग्गर्भार्षी पङ्क्तिः, ५-७ अनुष्टुप् ।

अमुत्रभूयादधि यद् यमस्य बृहस्पतेरभिशस्तेरमुञ्चः ।
प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मद् देवानामग्ने भिषजा शचीभिः ॥ १ १४३

सं क्रामतं मा जहीतं शरीरं प्राणापानौ ते सयुजाविह स्ताम् ।
शतं जीव शरदो वर्धमानोऽग्निष्टे गोपा अधिपा वसिष्ठः २
आयुर्यत् ते अतिहितं पराचैरपानः प्राणः पुनरा ताविताम् ।
अग्निष्टदाहार्निर्ऋतेरुपस्थात् तदात्मनि पुनरा वेशयामि ते ३ १४५
मेमं प्राणो हांसीन्मो अपानोऽविहाय परा गात् ।
सप्तर्षिभ्य एनं परि ददामि त एनं स्वस्ति जरसे वहन्तु ४
प्र विंशतं प्राणापानावनड्वाहाविव व्रजम् । अयं जरिम्णः शेवधिररिष्ट इह वर्धताम् ५
आ ते प्राणं सुवामसि परा यक्ष्मं सुवामि ते । आयुर्नो विश्वतो दधदयमग्निर्वरेण्यः ६
उद्वयं तमसस्परि रोहन्तो नाकमुत्तमम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ७

॥२०॥ (अथर्व० ६।७६।१-४)

कबन्धः । सान्तपनाग्निः (आयुष्यम्) । अनुष्टुप्, ३ ककुम्मती ।

य एनं परिषीदन्ति समादधति चक्षसे । संप्रेद्धो अग्निर्जिह्वाभिरुदेतु हृदयादधि १ १५०
अग्नेः सान्तपनस्याहमायुषे पदमा रभे । अद्धातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यतः २
यो अस्य समिधं वेद क्षत्रियेण समाहिताम् । नाभिह्वारे पदं नि दधाति स मृत्यवे ३
नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो न सन्नाँ अव गच्छति । अग्नेर्यः क्षत्रियो विद्वान् नाम गृह्णात्यायुषे ४

॥२१॥ (अथर्व० १९।६३।१)

ब्रह्मा । ब्रह्मणस्पतिः (आयुर्वर्धनम्) । विराडुपरिष्टाद्बृहती ।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय । आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय १

॥२२॥ (अथर्व० १९।६१।१)

ब्रह्मा । ब्रह्मणस्पतिः (सर्वमायुः) । विराट् पथ्याबृहती ।

तनूस्तन्वा मे सहे दतः सर्वमायुरशीय । स्योनं मे सीद पुरुः पृणस्व पवमानः स्वर्गे १

॥२३॥ (अथर्व० १९।७०।१)

ब्रह्मा । इन्द्रसूर्यादयः (सर्वमायुः) । गायत्री ।

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् । सर्वमायुर्जीव्यासम् १ १५६

अरिष्टानि अङ्गानि । (१५७-१६१)

॥२४॥ (अथर्व० १९।६०।१-२)

ब्रह्मा । वाक्, अङ्गानि च । १ पथ्याबृहती; २ ककुम्मती पुरउष्णिक् ।

वाङ् म आसन्नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः ।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम् १ १५७

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः । प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः २

सुमङ्गलौ दन्तौ ।

॥२५॥ (अथर्व० ६।१४०।१-३)

अथर्वा । ब्रह्मणस्पतिः, दन्ताः । (अनुष्टुप् ?) १ उरोबृहती, २ उपरिष्टाज्ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्, ३ आस्तारपङ्क्तिः ।

यौ व्याघ्राववरूढौ जिघत्सतः पितरं मातरं च ।
यौ दन्तौ ब्रह्मणस्पते शिवौ कृणु जातवेदः १
व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम् ।
एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च । २
उपहूतौ सयुजौ स्योनौ दन्तौ सुमङ्गलौ ।
अन्यत्र वां घोरं तन्वः परैतु दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च ३ १६१

यक्ष्म-नाशनम् ।

(१६१-३००) ॥२६॥ (ऋ० १०।१६३।१-६)

विवृहा काश्यपः । यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप् ।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्का—ज्जिह्वाया वि वृहामि ते १
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् ।
यक्ष्मं दोषण्य१मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते २
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि ।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यकनः प्लाशिभ्यो वि वृहामि ते ३
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।
यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदा—द्भंससो वि वृहामि ते ४ १६५
मेहनाद्वनंकरणा—च्छेपसस्ते नखेभ्यः ।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मन—स्तमिदं वि वृहामि ते ५
अङ्गादङ्गाल्लोम्नोलोम्नो जातं पर्वणिपर्वणि ।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मन—स्तमिदं वि वृहामि ते ६ १६७

॥२७॥ (अथर्व० ३।३१।१-११)

ब्रह्मा । पाप्महाः १ अग्निः, २ शक्रः, ३ पशवः, ४ द्यावापृथिवी, ५ त्वष्टा, अग्निः, इन्द्रः; ७ देवाः, सूर्यः; ८-१० आयुः, ११ पर्जन्यः (यक्ष्मनाशनम्) । अनुष्टुप्, ४ भुरिक्, ५ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

वि देवा जरसावृतन् वि त्वमग्ने अरात्या ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा १
व्यार्त्या पवमानो वि शक्रः पापकृत्यया ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा २
वि ग्राम्याः पशव आरण्यैर्व्या पक्षिस्तृष्णयासरन् ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ३ १७०
वी३मे द्यावापृथिवी इतो वि पन्थानो दिशंदिशम् ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ४
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्तीतीदं विश्वं भुवनं वि याति ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ५
अग्निः प्राणान्त्सं दधाति चन्द्रः प्राणेन संहितः ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ६
प्राणेनेदं विश्वतोवीर्यं देवाः सूर्यं समैरयन् ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ७
आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेनेह जीव मा मृथाः ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ८ १७५
प्राणेनेह प्राणतां प्राणेहैव भव मा मृथाः ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ९
उदायुषा समायुषोदोषधीनां रसेन ।
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा १०
आ पर्जन्यस्य वृष्ट्योदस्थामामृता वयम्
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ११

॥२८॥ (अथर्व० ६।२०।१-३)

भृग्वङ्गिराः । यक्ष्मनाशनम् । १ जगती, २ ककुम्मतीप्रस्तारपङ्क्तिः, ३ सतः पङ्क्तिः ।

अग्नेरिवास्य दहत एति शुष्मिण उतेव मत्तो विलपन्नपायति ।
अन्यमस्मदिच्छतु कं चिदव्रतस्तपुर्वधाय नमो अस्तु तक्मने १ १७९

नमो रुद्राय नमो अस्तु तक्मने नमो राज्ञे वरुणाय त्विषीमते ।
नमो दिवे नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः २ १८०
अयं यो अभिशोचयिष्णुर्विश्वा रूपाणि हरिता कृणोषि ।
तस्मै तेऽरुणाय बभ्रवे नमः कृणोमि वन्याय तक्मने ३

॥२९॥ (अथर्व० ६।८५।१-३)

अथर्वा । वनस्पतिः (यक्ष्मनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

वरणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः । यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमु देवा अवीवरन् १
इन्द्रस्य वर्चसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च । देवानां सर्वेषां वाचा यक्ष्मं ते वारयामहे २
यथा वृत्र इमा आपस्तस्तम्भ विश्वधा यतीः ।
एवा ते अग्निना यक्ष्मं वैश्वानरेण वारये ३

॥३०॥(अथर्व० ६।१२७।१-३)

भृग्वङ्गिराः । यक्ष्मनाशनम्, वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ३ व्यवसाना षट्पदा जगती ।

विद्रधस्य बलासस्य लोहितस्य वनस्पते । विसल्पकस्योषधे मोच्छिषः पिशितं चन १ १८५
यौ ते बलास तिष्ठतः कक्षे मुष्कावपाश्रितौ । वेदाहं तस्य भेषजं चीपुद्रुरभिचक्षणम् २
यो अक्ष्यो यः कर्ण्यो यो अक्ष्योर्विसल्पकः । वि वृहामो विसल्पकं विद्रधं हृदयामयम् ।
परा तमज्ञातं यक्ष्ममधराञ्चं सुवामसि ३

॥३१॥ (अथर्व० १।१२।१-४)

भृग्वङ्गिराः । यक्ष्मनाशनम् । जगती (त्रिष्टुप् ?), ४ अनुष्टुप् ।

जरायुजः प्रथम उस्रियो वृषा वातभ्रजा स्तनयन्नेति वृष्टया ।
स नो मृडाति तन्व ऋजुगो रुजन् य एकमोजस्त्रेधा विचक्रमे १
अङ्गेअङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम ।
अङ्कान्त्समङ्कान् हविषा विधेम यो अग्रभीत् पर्वास्या ग्रभीता २
मुञ्च शीर्षक्त्या उत कास एनं परुष्परुराविवेशा यो अस्य ।
यो अभ्रजा वातजा यश्च शुष्मो वनस्पतीन्त्सचतां पर्वतांश्च ३
शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे ।
शं मे चतुर्भ्यो अङ्गेभ्यः शमस्तु तन्वे३ मम ४ १९१

॥३२॥ (अथर्व० ३।७।१-७)

भृग्वङ्गिराः । १-३ हरिणः, ४ तारके, ५ आपः, ६-७ यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप्, ६ भुरिक् ।

हरिणस्य रघुष्यदोऽधि शीर्षणि भेषजम् ।
स क्षेत्रियं विषाणया विषूचीनमनीनशत् १
अनु त्वा हरिणो वृषा पद्भिश्चतुर्भिरक्रमीत् ।
विषाणे वि ष्य गुष्पितं यदस्य क्षेत्रियं हृदि २
अदो यदवरोचते चतुष्पक्षमिव च्छदिः ।
तेना ते सर्वं क्षेत्रियमङ्गेभ्यो नाशयामसि ३
अमू ये दिवि सुभगे विचृतौ नाम तारके ।
वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् ४ १९५
आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः ।
आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात् ५
यदासुतेः क्रियमाणायाः क्षेत्रियं त्वा व्यानशे ।
वेदाहं तस्य भेषजं क्षेत्रियं नाशयामि त्वत् ६
अपवासे नक्षत्राणामपवास उषसामुत ।
अपास्मत् सर्वं दुर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छतु ७

॥३३॥ (अथर्व० ६।९१।१-३)

भृग्वङ्गिराः । यक्ष्मनाशनम्, ३ आपः । अनुष्टुप् ।

इमं यवमष्टायोगैः षड्योगेभिरचर्कृषुः । तेना ते तन्वो३ रपोऽपाचीनमप व्यये १
न्य१ग् वातो वाति न्यक् तपति सूर्यः । नीचीनमद्या दुहे न्यग् भवतु ते रपः २ २००
आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः ।
आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ३

॥३४॥ (अथर्व० १९।३८।१-३)

अथर्वा । गुल्गुलुः (यक्ष्मनाशनम्) । अनुष्टुप्; २ चतुष्पदा उष्णिक्; ३ एकावसाना प्राजापत्यानुष्टुप् ।

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते ।
यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते १
विष्वञ्चस्तस्माद् यक्ष्मा मृगा अश्वा इवेरते । यद् गुल्गुलु सैन्धवं यद् वाप्यासि समुद्रियम् २
उभयोरग्रभं नामास्मा अरिष्टतातये ३ २०४

॥३५॥ (अथर्व० २०।९६।६-१०)

यक्ष्मनाशनः। यक्ष्मनाशनम्। त्रिष्टुप्।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् ६ २०५
यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव।
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय ७
सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम्।
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् ८
शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् छतमु वसन्तान्।
शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ९
आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः। सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् १०

॥३६॥ (अथर्व० २०।९६।१७-२३)

विवृहाः। यक्ष्मनाशनम्। अनुष्टुप्।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते १७ २१०
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात्।
यक्ष्मं दोषण्यं१मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते १८
हृदयात् ते परिक्लोम्नो हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम्।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीह्नो यकनस्ते वि वृहामसि १९
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते २०
उरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम्।
यक्ष्मं भसद्यं१ श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते २१
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः।
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते २२
अङ्गेअङ्गे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि।
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि २३ २१६

॥३७॥ (अथर्व० १२।२।१-५५)

भृगुः। अग्निः; मन्त्रोक्ताः; २१-३३ मृत्युः (यक्ष्मरोगनाशनम्)। त्रिष्टुप्; २,५,११-२०,३४-३६;३८-४१, ४३,५१,५४ अनुष्टुप् (१६ ककुम्मती पराबृहती, १८ निचृत्, ४० पुरस्तात्ककुम्मती)। ३ आस्तारपङ्क्तिः; ६ भुरिगार्षी पङ्क्तिः; ७,४५ जगती; ८,४८-४९ भुरिग्; ९ अनुष्टुब्गर्भा विपरीतपादलक्ष्मा पङ्क्तिः; ३७ पुरस्ताद्बृहती; ४२ त्रिप० एकाव० भुरिगार्ची गायत्री; ४४ एकाव० द्विप० आर्ची बृहती; ४६ एका० द्विप० साम्नी त्रिष्टुप्; ४७ पञ्चपदा बार्हतवैराजगर्भा जगती; ५० उपरिष्टाद्विराड् बृहती; ५२ पुरस्ताद्विराड् बृहती; ५५ बृहतीगर्भा।

नडमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि।
यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकमधराङ् परेहि १
अघशंसदुःशंसाभ्यां करेणानुकरेण च। यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरजामसि २
निरितो मृत्युं निर्ऋतिं निररातिमजामसि।
यो नो द्वेष्टि तमद्धयग्ने अक्रव्याद्यमुं द्विष्मस्तमु ते प्र सुवामसि ३
यद्यग्निः क्रव्याद् यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः।
तं मापाज्यं कृत्वा प्र हिणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुषदोऽप्यग्नीन् ४ २२०
यत् त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते। सुकल्पमग्ने तत् त्वया पुनस्त्वोद्दीपयामसि ५
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्ने।
पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद् दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ६
यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश नो गृहमिमं पश्यन्नितरं जातवेदसम्।
तं हरामि पितृयज्ञाय दूरं स घर्मामिन्धां परमे सधस्थे ७
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः।
इहायमितरो जातवेदा देवो देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ८
क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान् हन्तं वज्रेण मृत्युम्।
नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान् पितॄणां लोकेऽपि भागो अस्तु ९ २२५
क्रव्यादमग्निं शशमानमुक्थ्यं१ प्र हिणोमि पथिभिः पितृयाणैः।
मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधि पितृषु जागृहि त्वम् १०
समिन्धते संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
जहाति रिप्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति ११
[वो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्ठान्यारुहत्। मुच्यमानो निरेणसोऽमोगस्माँ अशस्त्याः १२ २२८

अस्मिन् वयं संकसुके अग्नौ रिप्राणि मृज्महे ।
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयूंषि तारिषत् १३
संकसुको विकसुको निर्ऋथो यश्च निस्वरः। ते ते यक्ष्मं सवेदसो दूराद् दूरमनीनशन् १४ २३०
यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु ।
क्रव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः १५
अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा ।
निः क्रव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवितयोपनः १६
यस्मिन् देवा अमृजत यस्मिन् मनुष्या उत ।
तस्मिन् घृतस्तावौ मृष्ट्वा त्वमग्ने दिवं रुह १७
समिद्धो अग्न आहुत स नो माभ्यपक्रमीः ।
अत्रैव दीदिहि द्यवि ज्योक् च सूर्यं दृशे १८
सीसे मृड्ढ्वं नडे मृड्ढ्वमग्नौ संकसुके च यत् ।
अथो अव्यां रामायां शीर्षक्तिमुपबर्हणे १९ २३५
सीसे मलं सादयित्वा शीर्षक्तिमुपबर्हणे। अव्यामसिक्न्यां मृष्ट्वा शुद्धा भवत यज्ञियाः २०
परे मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते इतरो देवयानात् ।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहेमे वीरा बहवो भवन्तु २१
इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद् भद्रा देवहूतिर्नो अद्य ।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय सुवीरासो विदथमा वदेम २२
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।
शतं जीवन्तः शरदः पुरूचीस्तिरो मृत्युं दधतां पर्वतेन २३
आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यति स्थ ।
तान्वस्त्वष्टा सुजनिमा सजोषाः सर्वमायुर्नयतु जीवनाय २४ २४०
यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथर्तवं ऋतुभिर्यन्ति साकम् ।
यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम् २५
अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं वीरयध्वं प्र तरता सखायः ।
अत्रा जहीत ये असन्दुरेवा अनमीवानुत्तरेमाभि वाजान् २६
उत्तिष्ठता प्र तरता सखायोऽश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम् ।
अत्रा जहीत ये असन्नशीवाः शिवान्त्स्योनानुत्तरेमाभि वाजान् २७ २४३

वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।
अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम २८
उदीचीनैः पथिभिर्वायुमद्भिरतिक्रामन्तोऽवरान् परेभिः ।
त्रिः सप्त कृत्व ऋषयः परेता मृत्युं प्रत्यौहन् पदुयोपनेन २९ १४५
मृत्योः पदं योपयन्त एत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
आसीना मृत्युं नुदता सधस्थेऽथ जीवासो विदथमा वदेम ३०
इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं स्पृशन्ताम् ।
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ३१
व्याकरोमि हविषाहमेतौ तौ ब्रह्मणा व्यूहं कल्पयामि ।
स्वधां पितृभ्यो अजरां कृणोमि दीर्घेणायुषा समिमान्त्सृजामि ३२
यो नो अग्निः पितरो हृत्स्वन्तराविवेशामृतो मर्त्येषु ।
मय्यहं तं परि गृह्णामि देवं मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं तम् ३३
अपाघ्नत्य गार्हपत्यात् क्रव्यादा प्रेत दक्षिणा ।
प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम् ३४ १५०
द्विभागधनमादाय प्र क्षिणात्यवर्त्या । अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः क्रव्यादनिराहितः ३५
यत् कृषते यद् वनुते यच्च वस्नेन विन्दते । सर्वं मर्त्यस्य तन्नास्ति क्रव्याच्चेदनिराहितः ३६
अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनेन हविरत्तवे । छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद्यं क्रव्यादनुवर्तते ३७
मुहुर्गृध्यैः प्र वदत्यार्तिं मर्त्यो नीत्यै । क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादनुविद्वान् वितावति ३८
ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः ।
ब्रह्मैव विद्वानेष्योऽ यः क्रव्यादं निरादधत् ३९ १५५
यद् रिप्रं शमलं चकृम यच्च दुष्कृतम् ।
आपो मा तस्माच्छुम्भन्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत् ४०
ता अधरादुदीचीरावृत्रन् प्रजानतीः पथिभिर्देवयानैः ।
पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवाश्चरन्ति सरितः पुराणीः ४१
अग्ने अक्रव्यान्निः क्रव्यादं नुदा देवयजनं वह ४२
इमं क्रव्यादा विवेशायं क्रव्यादमन्वगात् । व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापरम् ४३
अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणामग्निर्गार्हपत्य उभयानन्तरा श्रितः ४४ १६०

जीवानामायुः प्र तिर त्वमग्ने पितॄणां लोकमपि गच्छन्तु ये मृताः।
सुगार्हपत्यो वितपन्नरातिमुषाम्मुषां श्रेयसीं धेह्यस्मै ४५
सर्वानग्ने सहमानः सपत्नानेषामूर्जं रयिमस्मासु धेहि ४६
इममिन्द्रं वर्हिं पाग्निमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात्।
तेनाप हत शरुमापतन्तं तेन रुद्रस्य परि पातास्ताम् ४७
अनड्वाहं प्लवमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात्।
आ रोहत सवितुर्नावमेतां षड्भिरुर्वीभिरमतिं तरेम ४८
अहोरात्रे अन्वेषि बिभ्रत् क्षेम्यस्तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरः।
अनातुरान्त्सुमनसस्तल्प बिभ्रज्ज्योगेव नः पुरुषगन्धिरेधि ४९ २६५
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते पापं जीवन्ति सर्वदा।
क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादश्व इवानुवपते नडम् ५०
येऽश्रद्धा धनकाम्या क्रव्यादा समासते। ते वा अन्येषां कुम्भीं पर्यादधति सर्वदा ५१
प्रेव पिपातिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः। क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादनुविद्वान् वितावति ५२
अविः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसे क्रव्यादपि चन्द्रं त आहुः।
माषाः पिष्टा भागधेयं ते हव्यमरण्यान्या गह्वरं सचस्व ५३
इषीकां जरतीमिष्ट्वा तिल्पिञ्जं दण्डनं नडम्। तमिन्द्रं इध्मं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ ५४ २७०
प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान् पन्थां वि ह्यविवेश।
परामीषामसून् दिदेश दीर्घेणायुषा समिमान्त्सृजामि ५५

॥३८॥ (अथर्व० ९।८।१-२२)

भृग्वङ्गिराः। सर्वशीर्षामयाद्यपाकरणम् (यक्ष्मनिवारणम्)। अनुष्टुप्; १२ अनुष्टुब्गर्भा ककुम्मती चतुष्पदोष्णिक्; १५ विराडनुष्टुप्; २१ विराट् पथ्याबृहती; २२ पथ्यापङ्क्तिः।

शीर्षक्तिं शीर्षामयं कर्णशूलं विलोहितम्। सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे १
कर्णाभ्यां ते कडङ्कूपेभ्यः कर्णशूलं विसल्पकम्।
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे २
यस्थ हेतोः प्रच्यवते यक्ष्मः कर्णत आस्यतः।
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ३
यः कृणोति प्रमोतमन्धं कृणोति पूरुषम्। सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ४ २७५

अङ्गभेदमङ्गज्वरं विश्वाङ्गयं विसल्पकम् ।
सर्वं शीर्ष्ण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ५
यस्य भीमः प्रतीकाश उद्वेपयति पूरुषम् । तक्मानं विश्वशारदं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ६
य ऊरू अनुसर्पत्यधो एति गवीनिके । यक्ष्मं ते अन्तरङ्गेभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ७
यदि कामादपकामाद्धृदयाज्जायते परि । हृदो बलासमङ्गेभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ८
हरिमाणं ते अङ्गेभ्योऽप्वामन्तरोदरात् । यक्ष्मोधामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ९ १८०
आसो बलासो भवतु मूत्रं भवत्वामयत् । यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् १०
बहिर्बिलं निर्द्रवतु काहाबाहं तवोदरात् । यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् ११
उदरात् ते क्लोम्नो नाभ्या हृदयादधि । यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् १२
याः सीमानं विरुजन्ति मूर्धानं प्रत्यर्षणीः । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् १३
या हृदयमुपर्षन्त्यनुतन्वन्ति कीकसाः ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् १४ १८५
याः पार्श्वे उपर्षन्त्यनुनिक्षन्ति पृष्टीः ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् १५
यास्तिरश्चीरुपर्षन्त्यर्षणीर्वक्षणासु ते ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् १६
या गुदा अनुसर्पन्त्यान्त्राणि मोहयन्ति च ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् १७
या मज्ञो निर्धयन्ति परूंषि विरुजन्ति च ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् १८
ये अङ्गानि मदयन्ति यक्ष्मासो रोपणास्तव ।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् १९ १९०
विसल्पस्य विद्रधस्य वातीकारस्य वालजेः ।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत २०
पादाभ्यां ते जानुभ्यां श्रोणिभ्यां परि भंससः ।
अनूकादर्षणीरुष्णिहाभ्यः शीर्ष्णो रोगमनीनशम् २१
सं ते शीर्ष्णः कपालानि हृदयस्य च यो विधुः ।
उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्ष्णो रोगमनीनशोऽङ्गभेदमशीशमः २२ १९३

॥३९॥ (अथर्व० २।३३।१-७)

ब्रह्मा। यक्ष्मविबर्हणं, चन्द्रमाः, आयुष्यम्। अनुष्टुप्, ३ ककुम्मती, ४ चतुष्पदा भुरिगुष्णिक्, ५ उपरिष्टाद्विराड्बृहती, ६ उष्णिग्गर्भा निचृदनुष्टुप्, ७ पथ्यापङ्क्तिः।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते १
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात्।
यक्ष्मं दोषण्य१मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते २ २९५
हृदयात् ते परिं क्लोम्नो हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम्।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीह्नो यकनस्ते वि वृहामसि ३
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते ४
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम्।
यक्ष्मं भसद्य१ श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते ५
अस्थिभ्यस्ते मज्ञभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः।
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते ६
अङ्गेअङ्गे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि।
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं ककुभस्पस्य वीबर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि ७ ३००

ओषधिवनस्पतयः। (३०१-४८२)

॥४०॥ (ऋ० १०।९७।१-२३)

आथर्वणो भिषग्। ओषधयः। अनुष्टुप्।

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च १
शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः।
अधा शतक्रत्वो यूय—मिमं मे अगदं कृत २
ओषधीः प्रतिं मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरी—र्वीरुधः पारयिष्णवः ३
ओषधीरितिं मातर—स्तद् वो देवीरुपं ब्रुवे।
सनेयमश्वं गां वासं आत्मानं तवं पूरुष ४ ३०४

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत् किलासथ यत् सनवथ पूरुषम् ५ ३०५
यत्रौषधीः समग्मत राजानः समिताविव ।
विप्रः स उच्यते भिषग् रक्षोहामीवचातनः ६
अश्वावतीं सोमावतीमूर्जयन्तीमुदोजसम् । आविंत्सि सर्वा ओषधीरस्मा अरिष्टतातये ७
उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते । धनं सनिष्यन्तीनामात्मानं तव पूरुष ८
इष्कृतिर्नाम वो माताऽथो यूयं स्थ निष्कृतीः ।
सीराः पतत्रिणीः स्थन यदामयति निष्कृथ ९
अति विश्वाः परिष्ठाः स्तेन इव व्रजमक्रमुः । ओषधीः प्राचुच्यवुर्यत् किं च तन्वोऽरपः १० ३१०
यदिमा वाजयन्नहमोषधीर्हस्त आदधे । आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा ११
यस्यौषधीः प्रसर्पथाङ्गमङ्गं परुष्परुः । ततो यक्ष्मं वि बाधध्व उग्रो मध्यमशीरिव १२
साकं यक्ष्म प्र पत चाषेण किकिदीविना ।
साकं वातस्य ध्राज्या साकं नश्य निहाकया १३
अन्या वो अन्यामवत्वन्यान्यस्या उपावत ।
ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावता वचः १४
याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूता स्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः १५ ३१५
मुञ्चन्तु मा शपथ्याऽथो वरुण्यादुत ।
अथो यमस्य पड्बीशात् सर्वस्माद् देवकिल्बिषात् १६
अवपतन्तीरवदन् दिव ओषधयस्परि । यं जीवमश्नवामहै न स रिष्याति पूरुषः १७
या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः । तासां त्वमस्युत्तमारं कामाय शं हृदे १८
या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः पृथिवीमनु । बृहस्पतिप्रसूता अस्यै सं दत्त वीर्यम् १९
मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः । द्विपच्चतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम् २० ३२०
याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः । सर्वाः संगत्य वीरुधोऽस्यै सं दत्त वीर्यम् २१
ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन् पारयामसि २२
त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा उपस्तयः ।
उपस्तिरस्तु सोऽस्माकं यो अस्माँ अभिदासति २३ ३२३

॥४१॥ (अथर्व० ८।७।१-२८)

अथर्वा। भैषज्यं, आयुष्यं, ओषधयः। अनुष्टुप्; २ उपरिष्टाद्बृहती; ३ पुर उष्णिक्; ४ पञ्चपदा परानुष्टुबतिजगती; ५-६,१०,२५ पथ्यापङ्क्तिः (६ विराड्गर्भा भुरिक्); ९ द्विपदार्ची भुरिगनुष्टुप्; १२ पञ्चपदा विराडतिशक्करी; १४ उपरिष्टान्निचृद्बृहती; २६ निचृत्; २८ भुरिक्।

या बभ्रवो याश्च शुक्रा रोहिणीरुत पृश्नयः।
असिक्नीः कृष्णा ओषधीः सर्वा अच्छावदामसि १
त्रायन्तामिमं पुरुषं यक्ष्मादु देवेषितादधि।
यासां द्यौष्पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव २ ३२५
आपो अग्रं दिव्या ओषधयः। तास्ते यक्ष्ममेनस्यं१ मङ्गादङ्गादनीनशन् ३
प्रस्तृणती स्तम्बिनीरेकशुङ्गाः प्रतन्वतीरोषधीरा वदामि।
अंशुमतीः काण्डिनीर्या विशाखा ह्वयामि ते वीरुधो वैश्वदेवीरुग्राः पुरुषजीवनीः ४
यद् वः सहः सहमाना वीर्यं१ यच्च वो बलम्।
तेनेममस्माद् यक्ष्मात् पुरुषं मुञ्चतौषधीरथो कृणोमि भेषजम् ५
जीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम्।
अरुन्धतीमुन्नयन्तीं पुष्पां मधुमतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये ६
इहा यन्तु प्रचेतसो मेदिनीर्वर्चसो मम। यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि ७ ३३०
अग्नेर्घासो अपां गर्भो या रोहन्ति पुनर्णवाः।
ध्रुवाः सहस्रनाम्नीर्भेषजीः सन्त्वाभृताः ८
अवकोल्वा उदकात्मान ओषधयः। व्यृषन्तु दुरितं तीक्ष्णशृङ्ग्यः ९
उन्मुञ्चन्तीर्विवरुणा उग्रा या विषदूषणीः।
अथो बलासनाशनीः कृत्यादूषणीश्च यास्ता इहा यन्त्वोषधीः १०
अपक्रीताः सहीयसीर्वीरुधो या अभिष्टुताः। त्रायन्तामस्मिन् ग्रामे गामश्वं पुरुषं पशुम् ११
मधुमन्मूलं मधुमदग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव।
मधुमत् पर्णं मधुमत् पुष्पमासां मधोः संभक्ता अमृतस्य भक्षे घृतमन्नं दुहतां गोपुरोगवम् १२ ३३५
यावतीः कियतीश्चेमाः पृथिव्यामध्योषधीः। ता मा सहस्रपर्ण्यो मृत्योर्मुञ्चन्त्वंहसः १३
वैयाघ्रो मणिर्वीरुधां त्रायमाणोऽभिशस्तिपाः। अमीवाः सर्वा रक्षांस्यप हन्त्वधि दूरमस्मत् १४
सिंहस्येव स्तनथोः सं विजन्तेऽग्नेरिव विजन्त आभृताभ्यः।
गवां यक्ष्मः पुरुषाणां वीरुद्भिरतिनुत्तो नाव्या एतु स्रोत्याः १५ ३३८

मुमुचाना ओषधयोऽग्नेर्वैश्वानरादधि । भूमिं संतन्वतीरिति यासां राजा वनस्पतिः १६
या रोहन्त्याङ्गिरसीः पर्वतेषु समेषु च । ता नः पयस्वतीः शिवा ओषधीः सन्तु शं हृदे १७ ३४०
याश्चाहं वेद वीरुधो याश्च पश्यामि चक्षुषा । अज्ञाता जानीमश्च या यासु विघ्न च संभृतम् १८
सर्वाः समग्रा ओषधीर्बोधन्तु वचसो मम । यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि १९
अश्वत्थो दर्भो वीरुधां सोमो राजामृतं हविः । व्रीहिर्यवश्च भेषजौ दिवस्पुत्रावमर्त्यौ २०
उज्जिहीध्वे स्तनयत्यभिक्रन्दत्योषधीः । यदा वः पृश्निमातरः पर्जन्यो रेतसावति २१
तस्यामृतस्येमं बलं पुरुषं पाययामसि । अथो कृणोमि भेषजं यथासच्छतहायनः २२ ३४५
वराहो वेद वीरुधं नकुलो वेद भेषजीम् । सर्पा गन्धर्वा या विदुस्ता अस्मा अवसे हुवे २३
याः सुपर्णा आङ्गिरसीर्दिव्या या रघटो विदुः । वयांसि हंसा या विदुर्याश्च सर्वे पतत्रिणः ।
मृगा या विदुरोषधीस्ता अस्मा अवसे हुवे २४
यावतीनामोषधीनां गावः प्राश्नन्त्यघ्न्या यावतीनामजावयः ।
तावतीस्तुभ्यमोषधीः शर्म यच्छन्त्वाभृताः २५
यावतीषु मनुष्या भेषजं भिषजो विदुः । तावतीर्विश्वभेषजीरा भरामि त्वामभि २६
पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत । संमातर इव दुहामस्मा अरिष्टतातये २७ ३५०
उत् त्वाहार्षं पञ्चशलादथो दशशलादुत । अथो यमस्य पड्वीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् २८

॥४२॥ (अथर्व० ६।९६।१-३)

भृग्वङ्गिराः । वनस्पतिः (चिकित्सा), ३ सोमः । अनुष्टुप्, ३ त्रिपदा विराण्नाम गायत्री ।

या ओषधयः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः १
मुञ्चन्तु मा शपथ्या३दथो वरुण्यादुत ।
अथो यमस्य पड्वीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् २
यच्चक्षुषा मनसा यच्च वाचोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।
सोमस्तानि स्वधया नः पुनातु ३

॥४३॥ (वा० य० ४।१; ५।४१; ६।१५)
(ओषधयः ।)

ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳसीः १

॥४४॥ (वा० य० ११।४७-४८)
(ओषधयः ।)

ओषधयः प्रतिमोदध्वमग्निमेतꣳ शिवमायन्तमभ्यत्र युष्माः ४७ ३५५

ओषधयः प्रतिगृभ्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः ।
अयं वो गर्भ ऽ ऋत्वियः प्रत्नꣳ सधस्थमासदत् ४८

॥४५॥ (वा० य० १२।७९;३५।४)
(ओषधिः ।)

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज ऽ इत्किलासथ यत् सनवथ पूरुषम् ७९

॥४६॥ (वा० य० १८।३२-३४)
(अन्नम् ।)

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावतः ।
वाजो नो विश्वैर्देवैर्धनसाताविहावतु ३२
वाजो नो ऽ अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँ२ऽ ऋतुभिः कल्पयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा ऽ आशा वाजपतिर्जयेयम् ३३ ३६०
वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा ऽ आशा वाजपतिर्भवेयम् ३४

॥४७॥ (ऋ० १।९०।६)
गोतमो राहूगणः । विश्वे देवाः (वातसिन्ध्वोषधयः)। गायत्री।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ६

॥४८॥ (ऋ० ३।५७।३)
गाथिनो विश्वामित्रः । विश्वे देवाः (ओषधयः सूर्यमरीचयो वा)। त्रिष्टुप् ।

या जामयो वृष्णं इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन् ।
अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति बिभ्रतं वपूंषि ३

॥४९॥ (अथर्व० ३।१८।१-६)
अथर्वा। वनस्पतिः। अनुष्टुप्, ४ अनुष्टुब्गर्भा चतुष्पदा उष्णिक्, ६ उष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः।

इमां खनाम्योषधिं वीरुधां बलवत्तमाम्। यया सपत्नीं बाधते यया संविन्दते पतिम् १
उत्तानपर्णे सुभगे देवजूते सहस्वति । सपत्नीं मे परा णुद पतिं मे केवलं कृधि २ ३६१
नहि ते नाम जग्राह नो अस्मिन् रमसे पतौ । परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि ३
उत्तराहमुत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः । अधः सपत्नी या ममाधरा साधराभ्यः ४
अहमस्मि सहमानाथो त्वमसि सासहिः । उभे सहस्वती भूत्वा सपत्नीं मे सहावहै५ ३६८

अभि तेऽधां सहमानामुप तेऽधां सहीयसीम् ।
मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु ६

॥५०॥ (वा० य० ५।४२-४३)
(वनस्पतिः ।)

अत्यन्याँ२ऽ अगां नान्याँ२ऽ उपागामर्वाक् त्वा परेभ्योऽविदं परोऽवरेभ्यः ।
तं त्वा जुषामहे देव वनस्पते देवयज्यायै देवास्त्वा देवयज्यायै जुषन्तां विष्णवे त्वा ।
ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳसीः ४२ ३७०
द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिꣳसीः पृथिव्या सम्भव ।
अयꣳ हि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभगाय ।
अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्शा वि वयꣳ रुहेम ४३

॥५१॥ (वा० य० २०।४५)
(वनस्पतिः ।)

वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्तमन्या समञ्जञ्छमिता न देवः ।
इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन ४५

॥५२॥ (वा० य० २१।२१)
(वनस्पतिः ।)

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।
ककुप् छन्दऽ इहेन्द्रियं वशा वेहद् वयो दधुः २१

॥५३॥ (वा० य० २७।२१)
(वनस्पतिः ।)

वनस्पतेऽव सृजा रराणस्तमना देवेषु । अग्निर्हव्यꣳ शमिता स्वदयाति २१

॥५४॥ (वा० य० २८।१०,३३,४३)
(वनस्पतिः ।)

होता यक्षद् वनस्पतिꣳ शमितारꣳ शतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम् ।
मध्वा समञ्जन् पथिभिः सुगेभिः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यज१०
होता यक्षद् वनस्पतिꣳ शमितारꣳ शतक्रतुꣳ हिरण्यपर्णमुक्थिनꣳ रशनां बिभ्रतं
वाशिं भगमिन्द्रं वयोधसम् ।
ककुभं छन्दऽ इहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज ३३ ३७६

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।
द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ४३

॥५५॥ (वा० २९।१०,३५)

(वनस्पतिः ।)

अश्वो घृतेन त्मन्या समक्त उप देवाँ२ऽऋतुशः पाथ एतु ।
वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत् १०
उपावसृज त्मन्या समञ्जन् देवानां पाथ ऋतुथा हवींषि ।
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन ३५

॥५६॥ (अथर्व० ४।१७।१-८)

शुक्रः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप् ।

ईशानां त्वा भेषजानामुज्जेष आ रभामहे । चक्रे सहस्रवीर्यं सर्वस्मा ओषधे त्वा १ ३८०
सत्यजितं शपथयावनीं सहमानां पुनःसराम् ।
सर्वाः समह्व्योषधीरितो नः पारयादिति २
या शशाप शपनेन याघं मूरमादधे । या रसस्य हरणाय जातमारेभे तोकमत्तु सा३
यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्नीललोहिते ।
आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुस्तया कृत्याकृतो जहि ४
दौष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अभ्वमराय्यः ।
दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि ५
क्षुधामारं तृष्णामारमगोतामनपत्यताम् । अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे ६ ३८५
तृष्णामारं क्षुधामारमथो अक्षपराजयम् । अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे ७
अपामार्ग ओषधीनां सर्वासामेक इद् वशी । तेन ते मृज्म आस्थितमथ त्वमगदश्चर८

॥५७॥ (अथर्व० ४।१८।१-८)

शुक्रः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ६ बृहतीगर्भा ।

समं ज्योतिः सूर्येणाह्ना रात्री समावती ।
कृणोमि सत्यमूतयेऽरसाः सन्तु कृत्वरीः १
यो देवाः कृत्यां कृत्वा हरादविदुषो गृहम् ।
वत्सो धारुरिव मातरं तं प्रत्यगुप पद्यताम् २ ३८९

अमा कृत्वा पाप्मानं यस्तेनान्यं जिघांसति ।
अश्मानस्तस्यां दुग्धायां बहुलाः फट् करिक्रति ३ ३९०
सहस्रधामन् विशिखान् विग्रीवां छायया त्वम् ।
प्रति स्म चक्रुषे कृत्यां प्रियां प्रियावते हर ४
अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम् ।
यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वा ते पुरुषेषु ५
यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् । चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपनं तु सः ६
अपामार्गोऽप मार्ष्टु क्षेत्रियं शपथश्च यः । अपाहं यातुधानीरप सर्वा अराय्यः ७
अपमृज्य यातुधानानप सर्वा अराय्यः । अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे ८ ३९५

॥५८॥ (अथर्व० ४।१९।१-८)

शुक्रः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप्, २ पथ्यापङ्क्तिः ।

उतो अस्यबन्धुकृदुतो असि नु जामिकृत् ।
उतो कृत्याकृतः प्रजां नडमिवा छिन्धि वार्षिकम् १
ब्राह्मणेन पर्युक्तासि कण्वेन नार्षदेन ।
सेनेवैषि त्विषीमती न तत्र भयमस्ति यत्र ग्राम्योषधे २
अग्रमेष्योषधीनां ज्योतिषेवाभिदीपयन् । उत त्रातासि पाकस्याथो हन्तासि रक्षसः ३
यददो देवा असुरांस्त्वयाग्रे निरकुर्वत । ततस्त्वमध्योषधेऽपामार्गो अजायथाः ४
विभिन्दती शतशाखा विभिन्दन् नाम ते पिता ।
प्रत्यग् वि भिन्धि त्वं तं यो अस्माँ अभिदासति ५ ४००
असद् भूम्याः समभवत् तद् यामेति महद् व्यचः ।
तद् वै ततो विधूपायत् प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु ६
प्रत्यङ् हि संबभूविथ प्रतीचीनफलस्त्वम् । सर्वान् मच्छपथाँ अधि वरीयो यावया वधम् ७
शतेन मा परि पाहि सहस्रेणाभि रक्ष मा । इन्द्रस्ते वीरुधां पत उग्र ओजमानमा दधत् ८

॥५९॥ (अथर्व० ७।६५।१-३)

शुक्रः । अपामार्गवीरुत् (दुरितनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

प्रतीचीनफलो हि त्वमपामार्ग रुरोहिथ । सर्वान् मच्छपथाँ अधि वरीयो यावया इतः १
यद् दुष्कृतं यच्छमलं यद् वा चेरिम पापया । त्वया तद् विश्वतोमुखापामार्गाप मृज्महे २
त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद् देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ३ ४०५

॥६०॥ (अथर्व० ६।५९।१-३)

अथर्वा। रुद्रः, अरुन्धती औषधिः। अनुष्टुप्।

अनडुद्भ्यस्त्वं प्रथमं धेनुभ्यस्त्वमरुन्धति। अर्धेनवे वयसे शर्म यच्छ चतुष्पदे १
शर्म यच्छत्वोषधिः सह देवीररुन्धती। करत् पयस्वन्तं गोष्ठमयक्ष्मा उत पूरुषान् २
विश्वरूपां सुभगामच्छावदामि जीवलाम्। सा नो रुद्रस्यास्तां हेतिं दूरं नयतु गोभ्यः ३

॥६१॥ (अथर्व० ६।९५।१-३)

भृग्वङ्गिराः। वनस्पतिः (कुष्ठौषधिः)। अनुष्टुप्।

अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि। तत्रामृतस्य चक्षणं देवाः कुष्ठमवन्वत १ ४१०
हिरण्ययी नौरचरद्धिरण्यबन्धना दिवि। तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत २
गर्भो अस्योषधीनां गर्भो हिमवतामुत। गर्भो विश्वस्य भूतस्येमं मे अगदं कृधि ३

॥६२॥ (अथर्व० ६।१०९।१-३)

अथर्वा। पिप्पली-भैषज्यं, आयुः। अनुष्टुप्।

पिप्पली क्षिप्तभेषज्यूयं तातिविद्ध भेषजी। तां देवाः समकल्पयन्नियं जीवितवा अलम् १
पिप्पल्यः समवदन्तायतीर्जनमादधि। यं जीवमश्नवामहै न स रिष्याति पूरुषः २
असुरास्त्वा न्यखनन् देवास्त्वोदवपन् पुनः। वातीकृतस्य भेषजीमथो क्षिप्तस्य भेषजीम् ३ ४१५

॥६३॥ (अथर्व० २।२५।१-५)

चातनः। पृश्निपर्णी वनस्पतिः। अनुष्टुप्, ४ भुरिक्।

शं नो देवी पृश्निपर्ण्यशं निर्ऋत्या अकः।
उग्रा हि कण्वजम्भनी तामभक्षि सहस्वतीम् १
सहमानेयं प्रथमा पृश्निपर्ण्यजायत। तयाहं दुर्णाम्नां शिरो वृश्चामि शकुनेरिव २
अरायमसृक् पावानं यश्च स्फातिं जिहीर्षति।
गर्भादं कण्वै नाशय पृश्निपर्णि सहस्व च ३
गिरिमेनाँ आ वेशय कण्वान् जीवितयोपनान्।
तांस्त्वं देवि पृश्निपर्ण्यग्निरिवानुदहन्निहि ४
पराच एनान् प्र णुद कण्वान् जीवितयोपनान्।
तमांसि यत्र गच्छन्ति तत् क्रव्यादो अजीगमम् ५

॥६४॥ (अथर्व० ४।१२।१-७)

ऋभुः। रोहणी वनस्पतिः। अनुष्टुप्, १ त्रिपदा गायत्री, त्रिपदा यवमध्या भुरिग्गायत्री, ७ बृहती।

रोहण्यसि रोहण्यस्थ्रश्छिन्नस्य रोहणी। रोहयेदमरुन्धति १ ४२१

यत् ते रिष्टं यत् ते द्युत्तमस्ति पेष्टं त आत्मनि ।
धाता तद् भद्रया पुनः सं दधत् परुषा परुः २
सं ते मज्जा मज्ज्ञा भवतु समु ते परुषा परुः ।
सं ते मांसस्य विस्रस्तं समस्थ्यपि रोहतु ३
मज्जा मज्ज्ञा सं धीयतां चर्मणा चर्म रोहतु ।
असृक् ते अस्थि रोहतु मांसं मांसेन रोहतु ४
लोम लोम्ना सं कल्पया त्वचा सं कल्पया त्वचम् ।
असृक् ते अस्थि रोहतु च्छिन्नं सं धेह्योषधे ५ ४२५
स उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव रथः सुचक्रः सुपविः सुनाभिः । प्रति तिष्ठोर्ध्वः ६
यदि कर्त पतित्वा संशश्रे यदि वाश्मा प्रहृतो जघान ।
ऋभू रथस्येवाङ्गानि सं दधत् परुषा परुः ७

॥६५॥ (अथर्व० ५।५।१-९)

अथर्वा । लाक्षा । अनुष्टुप् ।

रात्री माता नभः पितार्यमा ते पितामहः ।
सिलाची नाम वा असि सा देवानामसि स्वसा १
यस्त्वा पिबति जीवति त्रायसे पुरुषं त्वम् ।
भर्त्री हि शश्वतामसि जनानां च न्यञ्चनी २
वृक्षंवृक्षमा रोहसि वृषण्यन्तीव कन्यला । जयन्ती प्रत्यातिष्ठन्ती स्परणी नाम वा असि ३ ४३०
यद् दण्डेन यदिष्वा यद् वारुहरसा कृतम् ।
तस्य त्वमसि निष्कृतिः सेमं निष्कृधि पूरुषम् ४
भद्रात् प्लक्षान्निस्तिष्ठस्यश्वत्थात् खदिराद्धवात् ।
भद्रान्न्यग्रोधात् पर्णात् सा न एह्यरुन्धति ५
हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्यवर्णे वपुष्टमे । रुतं गच्छासि निष्कृते निष्कृतिर्नाम वा असि ६
हिरण्यवर्णे सुभगे शुष्मे लोमशवक्षणे । अपामसि स्वसा लाक्षे वातो ह्यात्मा बभूव ते ७
सिलाची नाम कानीनोऽजबभ्रु पिता तव ।
अश्वो यमस्य यः श्यावस्तस्य हास्यास्युक्षिता ८
अश्वस्यास्नः संपतिता सा वृक्षाँ अभि सिष्यदे ।
सुरा पतत्रिणी भूत्वा सा न एह्यरुन्धति ९ ४३६

॥६६॥ (अथर्व० ५।४।१-१०)

भृग्वङ्गिराः। कुष्ठो, यक्ष्मनाशनम् (कुष्ठतक्मनाशनम्)। अनुष्टुप्, ५ भुरिक्, ६ गायत्री, १० उष्णिग्गर्भा निचृत्।

यो गिरिष्वजायथा वीरुधां बलवत्तमः। कुष्ठेहि तक्मनाशन तक्मानं नाशयान्वितः १
सुपर्णसुवने गिरौ जातं हिमवतस्परि। धनैरभि श्रुत्वा यन्ति विदुर्हि तक्मनाशनम् २
अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि। तत्रामृतस्य चक्षणं देवाः कुष्ठमवन्वत ३
हिरण्ययी नौरचरद्धिरण्यबन्धना दिवि। तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत ४ ४४०
हिरण्ययाः पन्थान आसन्नरित्राणि हिरण्यया।
नावो हिरण्ययीरासन् याभिः कुष्ठं निरावहन् ५
इमं मे कुष्ठ पूरुषं तमा वह तं निष्कुरु। तमु मे अगदं कृधि ६
देवेभ्यो अधि जातोऽसि सोमस्यासि सखा हितः।
स प्राणाय व्यानाय चक्षुषे मे अस्मै मृड ७
उदङ् जातो हिमवतः स प्राच्यां नीयसे जनम्।
तत्र कुष्ठस्य नामान्युत्तमानि वि भेजिरे ८
उत्तमो नाम कुष्ठास्युत्तमो नाम ते पिता।
यक्ष्मं च सर्वं नाशय तक्मानं चारसं कृधि ९ ४४१
शीर्षामयमुपहत्यामक्ष्योस्तन्वोऽरपः। कुष्ठस्तत् सर्वं निष्करद् देवं समह वृण्यम् १०

॥६७॥ (अथर्व० १९।३९।१-१०)

भृग्वङ्गिराः। कुष्ठः (कुष्ठनाशनम्)। अनुष्टुप्; २,३ त्र्यवसाना षट्पदा व्यवसाना पथ्यापङ्क्तिः; ४ षट्पदा जगती; ५ सप्तपदा शक्करी; ६-८ अष्टिः (५-८ चतुरवसाना)।

एतु देवस्त्रायमाणः कुष्ठो हिमवतस्परि। तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः १
त्रीणि ते कुष्ठ नामानि नद्यमारो नद्यारिपः। नद्यायं पुरुषो रिषत्।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा २
जीवला नाम ते माता जीवन्तो नाम ते पिता। नद्यायं पुरुषो रिषत्।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा ३
उत्तमो अस्योषधीनामनड्वान् जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव। नद्यायं पुरुषो रिषत्।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा ४ ४५०

त्रिः शाम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यस्त्रिरादित्येभ्यस्परि । त्रिर्जातो विश्वदेवेभ्यः ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ५
अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ६
हिरण्ययी नौरचरद्धिरण्यबन्धना दिवि । तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ७
यत्र नावप्रभ्रंशनं यत्र हिमवतः शिरः । तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ८
यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाकुो यं वा त्वा कुष्ठ काम्यः ।
यं वा वसो यमात्स्यस्तेनासि विश्वभेषजः ९ ४५५
शीर्षलोकं तृतीयकं सदन्दिर्यश्च हायनः । तक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्चं परा सुव १०

॥६८॥ (अथर्व० ६।२१।१-३)

शन्तातिः । चन्द्रमाः (केशवर्धनी ओषधिः)। अनुष्टुप्।

इमा यास्तिस्रः पृथिवीस्तासां ह भूमिरुत्तमा ।
तासामधि त्वचो अहं भेषजं सम्भृ जग्रभम् १
श्रेष्ठमसि भेषजानां वसिष्ठं वीरुधानाम् । सोमो भग इव यामेषु देवेषु वरुणो यथा २
रेवतीरनाधृषः सिषासवः सिषासथ । उत स्थ केशदंहणीरथो ह केशवर्धनीः ३

॥६९॥ (अथर्व० ६।१३६।१-३)

वीतहव्यः । नितली वनस्पतिः (केशदंहणम्) । अनुष्टुप्, २ एकावसाना द्विपदा साम्नी बृहती ।

देवी देव्यामधि जाता पृथिव्यामस्योषधे ।
तां त्वा नितलि केशेभ्यो दंहणाय खनामसि १ ४६०
दंह प्रलान् जनयाजातान् जातानु वर्षीयसस्कृधि २
यस्ते केशोऽवपद्यते समूलो यश्च वृश्चते । इदं तं विश्वभेषज्याभि षिञ्चामि वीरुधा ३ ४६१

॥७०॥ (अथर्व० ६।१३७।१-३)

वीतहव्यः। वनस्पतिः (केशवर्धनम्)। अनुष्टुप्।

यां जमदग्निरखनद् दुहित्रे केशवर्धनीम्। तां वीतहव्य आभरदसितस्य गृहेभ्यः १
अभीशुना मेषा आसन् व्यामेनानुमेषाः। केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि २
इंह मूलमाग्रं यच्छ वि मध्यं यामयौषधे। केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि ३ ४६५

॥७१॥ (अथर्व० ६।१६।१-४)

शौनकः। चन्द्रमाः, मन्त्रोक्तदेवताः (अक्षिरोगभैषजम्)। अनुष्टुप्, १ निचृत्त्रिपदा गायत्री; ३ बृहतीगर्भा ककुम्मत्यनुष्टुप्, ४ त्रिपदा प्रतिष्ठा।

आवयो अनावयो रसस्त उग्र आवयो। आ ते करम्भमब्रसि १
विहह्वो नाम ते पिता मदावती नाम ते माता। स हिन त्वमसि यस्त्वमात्मानमावयः २
तौविलिकेऽवेलयावायमैलब ऐलयीत्। बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्चापेहि निरालं ३
अलसालासि पूर्वा सिलाञ्जालास्युत्तरा। नीलागलसालां ४

॥७२॥ (अथर्व० ६।३०।१-३)

उपरिबभ्रवः। शमी (पापशमनम्)। जगती, २ त्रिष्टुप्, ३ चतुष्पाच्छंकुमत्यनुष्टुप्।

देवा इमं मधुना संयुतं यवं सरस्वत्यामधि मणावचर्कृषुः।
इन्द्र आसीत् सीरपतिः शतक्रतुः कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः १ ४७०
यस्ते मदोऽवकेशो विकेशो येनाभिहस्यं पुरुषं कृणोषि।
आरात् त्वदन्या वनानि वृक्षि त्वं शमि शतवल्शा वि रोह २
बृहत्पलाशे सुभगे वर्षवृद्ध ऋतावरि। मातेव पुत्रेभ्यो मृड केशेभ्यः शमि ३

॥७३॥ (ऋ० १।९०।८)

गोतमो राहूगणः। विश्वे देवाः (वनस्पतिसूर्यगावः)। गायत्री।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ८

॥७४॥ (ऋ० १०।८५।२-४)

सावित्री सूर्या ऋषिका। सोमः। अनुष्टुप्।

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही।
अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः १
सोमं मन्यते पपिवान् यत् संपिंषन्त्योषधिम्।
सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन ३ ४७५

आच्छद्विधानैर्गुपितो बार्हतैः सोम रक्षितः ।
ग्राव्णामिच्छृण्वन् तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः ४

॥७५॥ (ऋ० १।९१।६)

गोतमो राहूगणः । सोमवनस्पतिः । गायत्री ।

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ६

॥७६॥ (अथर्व० १।३४।१-५)

अथर्वा । मधुवनस्पतिः (मधुविद्या) । अनुष्टुप् ।

इयं वीरुन्मधुजाता मधुना त्वा खनामसि ।
मधोरधि प्रजातासि सा नो मधुमतस्कृधि १
जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम् ।
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि २
मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम् ।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः ३ ४८०
मधोरस्मि मधुतरो मदुघान्मधुमत्तरः ।
मामित् किल त्वं वनाः शाखां मधुमतीमिव ४
परि त्वा परितत्नुनेक्षुणागामविद्विषे । यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः ५ ४८१

रोगचिकित्सा । (४८२ ६८०)

॥७७॥ (अथर्व० ६।१४।१-३)

वभ्रुपिङ्गल । बलासः (बलासनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

अस्थिस्रंसं परुस्रंसमास्थितं हृदयामयम् । बलासं सर्वं नाशयाङ्गेष्ठा यश्च पर्वसु १
निर्बलासं बलासिनः क्षिणोमि मुष्करं यथा । छिनद्म्यस्य बन्धनं मूलमुर्वारा इव २
निर्बलासेतः प्र पताशुगः शिशुको यथा । अथो इट इव हायनोप द्राह्यवीरहा ३ ४८५

॥७८॥ (अथर्व० ६।१०५।१-३)

उन्मोचनः । कासा (कासशमनम्) । अनुष्टुप् ।

यथा मनो मनस्केतैः परापतत्त्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत मनसोऽनु प्रवाय्यम् १
यथा बाणः सुसंशितः परापतत्त्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत पृथिव्या अनु संवतम् २
यथा सूर्यस्य रश्मयः परापतन्त्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत समुद्रस्यानु विष्टपम् ३ ४८८

॥७९॥ (अथर्व० १।२२।१--४)

ब्रह्मा । सूर्यो, हरिमा हृद्रोगश्च (हृद्रोग-कामिला-नाशनम्) । अनुष्टुप् ।

अनु सूर्यमुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते ।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि १
परि त्वा रोहितैर्वर्णैर्दीर्घायुत्वाय दध्मसि । यथायमरपा असदथो अहरितो भुवत् २ ४९०
या रोहिणीर्देवत्या३ गावो या उत रोहिणीः ।
रूपंरूपं वयोवयस्ताभिष्ट्वा परि दध्मसि ३
शुकेषु ते हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणं नि दध्मसि ४

॥८०॥ (अथर्व० २।८।१--५)

भृग्वङ्गिराः । वनस्पतिः, यक्ष्मनाशनम् (क्षेत्रियरोगनाशनम्) । अनुष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः, ४ विराट्, ५ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ।

उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारके । वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् १
अपेयं रात्र्युच्छत्वपोच्छन्त्वभिकृत्वरीः । वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु २
बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य यवस्य ते पलाल्या तिलस्य तिलपिञ्जया ।
वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ३ ४९५
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नम ईषायुगेभ्यः । वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ४
नमः सनिस्रसाक्षेभ्यो नमः संदेश्येभ्यः ।
नमः क्षेत्रस्य पतये वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ५

॥८१॥ (अथर्व० ६।१३८।१--५)

अथर्वा । वनस्पतिः (क्लीबत्वम्) । अनुष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमाभिश्रुतास्योषधे । इमं मे अद्य पूरुषं क्लीबमोपशिनं कृधि १
क्लीबं कृध्योपशिनमथो कुरीरिणं कृधि । अथास्येन्द्रो ग्रावभ्यामुभे भिनत्त्वण्ड्यौ २
क्लीबं क्लीबं त्वाकरं वध्रे वध्रिं त्वाकरमरसारसं त्वाकरम् ।
कुरीरमस्य शीर्षणि कुम्बं चाधिनिदध्मसि ३ ५००
ये ते नाड्यौ देवकृते ययोस्तिष्ठति वृष्ण्यम् । ते ते भिनद्मि शम्ब्यामुष्या अधि मुष्कयोः ४
यथा नडं कशिपुने स्त्रियो भिन्दन्त्यश्मना । एवा भिनद्मि ते शेपोऽमुष्या अधि मुष्कयोः ५

॥८२॥ (अथर्व० ७।७४।१--४)

अथर्वाङ्गिराः । मन्त्रोक्ताः, ४ जातवेदाः (गण्डमालाचिकित्सा) । अनुष्टुप् ।

अपचितां लोहिनीनां कृष्णा मातेति शुश्रुम । मुनेर्देवस्य मूलेन सर्वा विध्यामि ता अहम् १ ५०३

विध्याम्यासां प्रथमां विध्याम्युत मध्यमाम् । इदं जघन्यामासामा च्छिनद्मि स्तुकामिव २
त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि तं ईर्ष्यामंमीमदम् । अथो यो मन्युष्टे पते तमु ते शमयामसि ३ ५०५
व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह ।
तं त्वा वयं जातवेदः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे ४

॥८३॥ (अथर्व० ७।७६।१-६)

अथर्वा । १,२ अपचिद्भैषज्यं, ३-६ जायान्यः, इन्द्रः, (गण्डमालाचिकित्सा)। अनुष्टुप्, १ विराट्, २ परोष्णिक्, ४ त्रिष्टुप्, ५ भुरिगनुष्टुप् ।

आ सुस्रसः सुस्रसो असंतीभ्यो असंत्तराः । सेहोररसतरा लवणाद् विक्लेदीयसीः १
या ग्रैव्या अपचितोऽथो या उपपक्ष्याः । विजाम्नि या अपचितः स्वयंस्रसः २
यः कीकसाः प्रशृणाति तलीद्यमवतिष्ठति । निर्हास्तं सर्वं जायान्यं यः कश्च ककुदि श्रितः ३
पक्षी जायान्यः पतति स आ विशति पूरुषम् । तदक्षितस्य भेषजमुभयोः सुक्षतस्य च ४ ५१०
विद्म वै ते जायान्य जानं यतो जायान्य जायसे । कथं ह तत्र त्वं हनो यस्य कृण्मो हविर्गृहे ५
धृषत् पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् ।
माध्यन्दिने सवन आ वृषस्व रयिष्ठानो रयिमस्मासु धेहि ६

॥८४॥ (अथर्व० ६।८३।१-४)

भगः । १ सूर्यः चन्द्रमाः, २ रोहिणी, ३ रामायणी (भैषज्यम्) । अनुष्टुप्, ४ एकावसाना द्विपदा निचृदार्च्यनुष्टुप् ।

अपचितः प्र पतत सुपर्णो वसतेरिव । सूर्यः कृणोतु भेषजं चन्द्रमा वोऽपोच्छतु १
एन्येका श्येन्येका कृष्णैका रोहिणी द्वे । सर्वासामग्रभं नामावीरघ्नीरपेतन २
असूर्तिका रामायण्यपचित् प्र पतिष्यति ।
ग्लौरितः प्र पतिष्यति स गलुन्तो नशिष्यति ३ ५१५
वीहि स्वामाहुतिं जुषाणो मनसा स्वाहा मनसा यदिदं जुहोमि ४

॥८५॥ (अथर्व० १।२३।१-४)

अथर्वा । वनस्पतिः [असिक्निः] (श्वेतकुष्ठनाशनम्)। अनुष्टुप् ।

नक्तंजातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्नि च ।
इदं रजनि रजय किलासं पलितं च यत् १
किलासं च पलितं च निरितो नाशया पृषत् ।
आ त्वा स्वो विशतां वर्णः परा शुक्लानि पातय २
असितं ते प्रलयनमास्थानममितं तव । असिक्न्यस्योषधे निरितो नाशया पृषत् ३ ५१९

अस्थिजस्य किलासस्य तनूजस्य च यत् त्वचि ।
दूष्या कृतस्य ब्रह्मणा लक्ष्म श्वेतमनीनशम् ४ ५२०

॥८६॥ (अथर्व० १।२४।१-४)

ब्रह्मा । आसुरी वनस्पतिः (श्वेतकुष्ठनाशनम्) । अनुष्टुप्, २ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ।

सुपर्णो जातः प्रथमस्तस्य त्वं पित्तमासिथ ।
तदासुरी युधा जिता रूपं चक्रे वनस्पतीन् १
आसुरी चक्रे प्रथमेदं किलासभेषजमिदं किलासनाशनम् ।
अनीनशत् किलासं सरूपामकरत् त्वचम् २
सरूपा नाम ते माता सरूपो नाम ते पिता ।
सरूपकृत् त्वमोषधे सा सरूपमिदं कृधि ३
श्यामा सरूपंकरणी पृथिव्या अध्युद्भृता । इदमु षु प्र साधय पुना रूपाणि कल्पय ४

॥८७॥ (अथर्व० १।२५।१-४)

भृग्वङ्गिराः । यक्ष्मनाशनोऽग्निः (ज्वर-नाशनम्) । त्रिष्टुप्, २-३ विराड्गर्भा, ४ पुरोऽनुष्टुप् ।

यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि ।
तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् १ ५२५
यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः शकल्येषि यदि वा ते जनित्रम् ।
हूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् २
यदि शोको यदि वाभिशोको यदि वा राज्ञो वरुणस्यासि पुत्रः ।
हूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् ३
नमः शीताय तक्मने नमो रूराय शोचिषे कृणोमि ।
यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने ४

॥८८॥ (अथर्व० ७।११६।१-२)

अथर्वाङ्गिराः । चन्द्रमाः (ज्वर-नाशनम्) १ पुरोष्णिक्, २ एकावसाना द्विपदा आर्च्यनुष्टुप् ।

नमो रूराय च्यवनाय नोदनाय धृष्णवे । नमः शीताय पूर्वकामकृत्वने १
या अन्येद्युरुभयद्युरभ्येतीमं मण्डूकमभ्येत्विव्रतः २

॥८९॥ (अथर्व० ५।२२।१-१४)

भृग्वङ्गिराः । तक्मनाशनः । अनुष्टुप्, १ भुरिक् त्रिष्टुप्, २ त्रिष्टुप्, ५ विराट् पथ्याबृहती ।

अग्निस्तक्मानमप बाधतामितः सोमो ग्रावा वरुणः पूतदक्षाः ।
वेदिर्बर्हिः समिधः शोशुचाना अप द्वेषांस्यमुया भवन्तु १ ५३१

अयं यो विश्वान् हरितान् कृणोष्युच्छोचयन्नग्निरिवाभिदुन्वन् ।
अधा हि तक्मन्नरसो हि भूया अधा न्यङ्धराङ् वा परेहि २
यः पुरुषः पारुषेयोऽवध्वंस इवारुणः । तक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्चं परा सुव ३
अधराञ्चं प्र हिणोमि नमः कृत्वा तक्मने । शकम्भरस्य मुष्टिहा पुनरेतु महावृषान् ४
ओको अस्य मूजवन्त ओको अस्य महावृषाः ।
यावज्ञातस्तक्मंस्तावानसि बल्हिकेषु न्योचरः ५ ५३५
तक्मन् व्याल वि गद व्यङ्ग भूरि यावय ।
दासीं निष्टक्करीमिच्छ तां वज्रेण समर्पय ६
तक्मन् मूजवतो गच्छ बल्हिकान् वा परस्तराम् ।
शुद्रामिच्छ प्रफर्व्यं१ तां तक्मन् वीव धूनुहि ७
महावृषान् मूजवतो बन्धवद्धि परेत्य । प्रैतानि तक्मने ब्रूमो अन्यक्षेत्राणि वा इमा ८
अन्यक्षेत्रे न रमसे वशी सन्मृडयासि नः ।
अभूदु प्रार्थस्तक्मा स गमिष्यति बल्हिकान् ९
यत् त्वं शीतोऽथो रूरः सह कासावेपयः ।
भीमास्ते तक्मन् हेतयस्ताभिः स्म परि वृङ्ग्धि नः १० ५४०
मा स्मैतान्त्सखीन् कुरुथा बलासं कासमुद्युगम् ।
मा स्मातोऽर्वाङैः पुनस्तत् त्वा तक्मन्नुप ब्रुवे ११
तक्मन् भ्रात्रा बलासेन स्वस्रा कासिकया सह ।
पाप्मा भ्रातृव्येण सह गच्छामुमरणं जनम् १२
तृतीयकं वितृतीयं संदुन्दिमुत शारदम् ।
तक्मानं शीतं रूरं ग्रैष्मं नाशय वार्षिकम् १३
गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः ।
प्रैष्यन् जनमिव शेवधिं तक्मानं परि दद्मसि १४

॥९०॥ (ऋ० १।५०।११-१३)

प्रस्कण्वः काण्वः । सूर्यः (रोगघ्न्य उपनिषदः, १३ अन्त्योऽर्धर्चः द्विषद्भ्रघ्नश्च) । अनुष्टुप् ।

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् । हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ११ ५४५
शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि १२
उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह । द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम् १३ ५४७

॥९१॥ (अथर्व० ४।१३।१-७)

शन्तातिः। चन्द्रमाः, विश्वे देवाः, १ देवाः, २-३ वातः, ४ मरुतः, ६-७ हस्तः, (रोगनिवारणम्)। अनुष्टुप्।

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः। उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः १
द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आवातु व्यन्यो वातु यद् रपः २
आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः।
त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे ३ ५१०
त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां मरुतां गणाः। त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ४
आ त्वागमं शंतातिभिरथो अरिष्टतातिभिः।
दक्षं त उग्रमाभारिषं परा यक्ष्मं सुवामि ते ५
अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः। अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः ६
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी।
अनामयित्नुभ्यां हस्ताभ्यां ताभ्यां त्वाभि मृशामसि ७

॥९२॥ (अथर्व० १।१७।१-४)

ब्रह्मा। योषितः धमन्यश्च (रुधिरस्रावनिवृत्तये धमनीबन्धनम्)। अनुष्टुप्, १ भुरिगनुष्टुप्, ४ त्रिपदार्षी गायत्री।

अमूर्या यन्ति योषितो हिरा लोहितवाससः।
अभ्रातर इव जामयस्तिष्ठन्तु हतवर्चसः १ ५११
तिष्ठावरे तिष्ठ पर उत त्वं तिष्ठ मध्यमे।
कनिष्ठिका च तिष्ठति तिष्ठादिद्धमनिर्मही २
शतस्य धमनीनां सहस्रस्य हिराणाम्। अस्थुरिन्मध्यमा इमाः साकमन्ता अरंसत ३
परि वः सिकतावती धनूर्बृहत्यक्रमीत्। तिष्ठतेलयता सु कम् ४

॥९३॥ (अथर्व० ६।४४।१-३)

विश्वामित्रः। वनस्पतिः (रोगनाशनम्)। अनुष्टुप्, ३ त्रिपदा महाबृहती।

अस्थाद् द्यौरस्थात् पृथिव्यस्थाद् विश्वमिदं जगत्।
अस्थुर्वृक्षा ऊर्ध्वस्वप्नास्तिष्ठाद् रोगो अयं तव १
शतं या भेषजानि ते सहस्रं संगतानि च। श्रेष्ठमास्रावभेषजं वासिष्ठं रोगनाशनम् २
रुद्रस्य मूत्रमस्यमृतस्य नाभिः।
विषाणका नाम वा असि पितॄणां मूलादुत्थिता वातीकृतनाशनी ३ ५६१

॥९४॥ (अथर्व० ६।५२।१-३)

भागलिः । १ सूर्यः, २ गावः, ३ भेषजम् । अनुष्टुप् ।

उत् सूर्यो दिव एति पुरो रक्षाꣳसि निजूर्वन् । आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा १
नि गावो गोष्ठे असदन् नि मृगासो अविक्षत । न्यूऽ१र्मयो नदीनां न्य१दृष्टा अलिप्सत २
आयुर्ददे विपश्चितं श्रुतां कण्वस्य वीरुधम् । आभारिषं विश्वभेषजीमस्यादृष्टान् नि शमयत् ३

॥९५॥ (अथर्व० २।३।१-६)

आङ्गिराः । भैषज्यं, आयुः, धन्वन्तरिः, (आस्रावस्य भेषजम्) । अनुष्टुप्, ६ त्रिपदा स्वराडुपरिष्टान्महाबृहती ।

अदो यदवधावत्यवत्कमधि पर्वतात् ।
तत् ते कृणोमि भेषजं सुभेषजं यथाससि १ ५६५
आदङ्गा कुविदङ्गा शतं या भेषजानि ते ।
तेषामसि त्वमुत्तममनास्रावमरोगणम् २
नीचैः खनन्त्यसुरा अरुस्राणमिदं महत् ।
तदास्रावस्य भेषजं तदु रोगमनीनशत् ३
उपजीका उद् भरन्ति समुद्रादधि भेषजम् ।
तदास्रावस्य भेषजं तदु रोगमशीशमत् ४
अरुस्राणमिदं महत् पृथिव्या अध्युद्भृतम् ।
तदास्रावस्य भेषजं तदु रोगमनीनशत् ५
शं नो भवन्त्वप ओषधयः शिवाः ।
इन्द्रस्य वज्रो अप हन्तु रक्षस आराद् विसृष्टा इषवः पतन्तु रक्षसाम् ६ ५७०

॥९६॥ (अथर्व० १।३।१-९)

अथर्वा । १ पर्जन्यः, २ मित्रः, ३ वरुणः, ४ चन्द्रः, ५ सूर्यः, (मूत्रमोचनम्) । अनुष्टुप्, १-५ पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं शतवृष्ण्यम् ।
तेना ते तन्वेऽ१ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति १
विद्मा शरस्य पितरं मित्रं शतवृष्ण्यम् ।
तेना ते तन्वेऽ१ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति २
विद्मा शरस्य पितरं वरुणं शतवृष्ण्यम् ।
तेना ते तन्वेऽ१ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति ३ ५७३

विद्मा शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृष्ण्यम् ।
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति ४
विद्मा शरस्य पितरं सूर्यं शतवृष्ण्यम् ।
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति ५ ५७५
यदान्त्रेषु गवीन्योर्यद्वस्तावधि संश्रुतम् । एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ६
प्र ते भिनद्मि मेहनं वर्त्रं वेशन्त्या इव ।
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ७
विषितं ते वस्तिबिलं समुद्रस्योदधेरिव ।
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ८
यथेषुका परापतदवसृष्टाधि धन्वनः ।
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ९

॥९७॥ (अथर्व० ४।९।१-१०)

भृगुः । त्रैककुदाञ्जनम् । अनुष्टुप्, २ ककुम्मती, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

एहि जीवं त्रायमाणं पर्वतस्यास्यक्ष्यम् । विश्वेभिर्देवैर्दत्तं परिधिर्जीवनाय कम् १ ५८०
परिपाणं पुरुषाणां परिपाणं गवामसि । अश्वानामवितां परिपाणाय तस्थिषे २
उतासि परिपाणं यातुजम्भनमाञ्जन ।
उतामृतस्य त्वं वेत्थाथो असि जीवभोजनमथो हरितभेषजम् ३
यस्याञ्जन प्रसर्पस्यङ्गमङ्गं परुष्परुः । ततो यक्ष्मं वि बाधस उग्रो मध्यमशीरिव ४
नैनं प्राप्नोति शपथो न कृत्या नाभिशोचनम् ।
नैनं विष्कन्धमश्नुते यस्त्वा बिभर्त्याञ्जन ५
असन्मन्त्राद् दुष्वप्न्याद् दुष्कृताच्छमलादुत ।
दुर्हार्दश्चक्षुषो घोरात् तस्मान्नः पाह्याञ्जन ६ ५८५
इदं विद्वानाञ्जन सत्यं वक्ष्यामि नानृतम् । सनेयमश्वं गामहमात्मानं तव पूरुष ७
त्रयो दासा आञ्जनस्य तक्मा बलास आदहिः ।
वर्षिष्ठः पर्वतानां त्रिककुन्नाम ते पिता ८
यदाञ्जनं त्रैककुदं जातं हिमवतस्परि । यातूंश्च सर्वाञ्जम्भयत् सर्वाश्च यातुधान्यः ९
यदि वासि त्रैककुदं यदि यामुनमुच्यसे ।
उभे ते भद्रे नाम्नी ताभ्यां नः पाह्याञ्जन १० ५८९

॥९८॥ (अथर्व० ७।३०।१)

भृग्वङ्गिराः । द्यावापृथिवी, मित्रः, ब्रह्मणस्पतिः, सविता च (अञ्जनम्) । बृहती ।

स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी स्वाक्तं मित्रो अंकरयम् ।
स्वाक्तं मे ब्रह्मणस्पतिः स्वाक्तं सविता करत् १ ५९०

॥९९॥ (अथर्व० ७।३६।१)

१ अथर्वा । अक्षि, मनः (अञ्जनम्) । अनुष्टुप् ।

अक्ष्यौ॑ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।
अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति १

॥१००॥ (अथर्व० १९।४५।१--१०)

भृगुः । आञ्जनम्, मन्त्रोक्तदेवताः । १-२ अनुष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप्; ६-१० एकावसाना महाबृहती (६ विराट्, ७-१० निचृत्) ।

ऋणाद्ऋणमिव संनयन् कृत्यां कृत्याकृतो गृहम् ।
चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हार्दः पृष्टीरपि शृणाञ्जन १
यदस्मासु दुष्वप्न्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे ।
अनामगस्तं च दुर्हार्दः प्रियः प्रति मुञ्चताम् २
अपामूर्ज ओजसो वावृधानमग्नेर्जातमधि जातवेदसः ।
चतुर्वीरं पर्वतीयं यदाञ्जनं दिशः प्रदिशः करदिच्छिवास्ते ३
चतुर्वीरं बध्यत आञ्जनं ते सर्वा दिशो अभयास्ते भवन्तु ।
ध्रुवास्तिष्ठासि सवितेव चार्यं इमा विशो अभि हरन्तु ते बलिम् ४ ५९५
आक्ष्वैकं मणिमेकं कृष्णुष्व स्नाह्येकेना पिबैकमेषाम् ।
चतुर्वीरं नैर्ऋतेभ्यश्चतुर्भ्यो ग्राह्या बन्धेभ्यः परि पात्वस्मान् ५
अग्निर्माग्निनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ६
इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ७
सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ८
भगो मा भगेनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ९ ६००
मरुतो मा गणैरवन्तु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा १०

॥१०१॥ (अथर्व० १९।४४।१--१०)

भृगुः । आञ्जनम्, ८-९ वरुणः (भैषज्यम्) । अनुष्टुप्; ४ चतुष्पदा शंकुमती उष्णिक्; ५ निचृद्विषमा त्रिपदा गायत्री ।

आयुषोऽसि प्रतरणं विप्रं भेषजमुच्यसे । तदाञ्जन त्वं शंताते शमापो अभयं कृतम् १ ६०१

यो हरिमा जायान्योऽङ्गभेदो विसल्पकः । सर्वं ते यक्ष्ममङ्गेभ्यो बहिर्निर्हन्त्वाञ्जनम् २
आञ्जनं पृथिव्यां जातं भद्रं पुरुषजीवनम् । कृणोत्वप्रमायुकं रथंजूतिमनागसम् ३
प्राणं प्राणं त्रायस्वासो असवे मृड । निर्ऋते निर्ऋत्या नः पाशेभ्यो मुञ्च ४ ६०५
सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां पुष्पम् । वातः प्राणः सूर्यश्चक्षुर्दिवस्पयः ५
देवाञ्जन त्रैककुदं परि मा पाहि विश्वतः । न त्वा तरन्त्योषधयो बाह्याः पर्वतीया उत ६
वीदं मध्यमवासृपद् रक्षोहामीवचातनः । अमीवाः सर्वाश्चातयन् नाशयदभिभा इतः ७
बह्वीदं राजन् वरुणानृतमाह पूरुषः । तस्मात् सहस्रवीर्य मुञ्च नः पर्यंहसः ८
यदापो अघ्न्या इति वरुणेति यदूचिम । तस्मात् सहस्रवीर्य मुञ्च नः पर्यंहसः ९ ६१०
मित्रश्च त्वा वरुणश्चानुप्रेयतुराञ्जन । तौ त्वानुगत्य दूरं भोगाय पुनरोहतुः १०

॥१०२॥ (वा० य० ४।३)

(अञ्जनम् ।)

वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा ऽ असि चक्षुर्मे देहि ३

॥१०३॥ (अथर्व० ४।५।१-७)

ब्रह्मा । स्वापनं, वृषभः । अनुष्टुप्, २ भुरिक्, ७ पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् ।

सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत् ।
तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि १
न भूमिं वातो अति वाति नाति पश्यति कश्चन ।
स्त्रियश्च सर्वाः स्वापय शुनश्चेन्द्रसखा चरन् २
प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया नारीर्या वह्यशीवरीः ।
स्त्रियो याः पुण्यगन्धयस्ताः सर्वाः स्वापयामसि ३ ६१५
एजदेजदजग्रभं चक्षुः प्राणमजग्रभम् । अङ्गान्यजग्रभं सर्वा रात्रीणामतिशर्वरे ४
य आस्ते यश्चरति यश्च तिष्ठन् विपश्यति ।
तेषां सं दध्मो अक्षीणि यथेदं हर्म्यं तथा ५
स्वप्नं माता स्वप्नं पिता स्वप्नं श्वा स्वप्नं विश्पतिः ।
स्वपन्त्वस्यै ज्ञातयः स्वप्त्वयमभितो जनः ६
स्वप्नं स्वप्नाभिकरणेन सर्वं नि ष्वापया जनम् ।
ओत्सूर्यमन्यान्त्स्वापयाव्यृषं जागृतादहमिन्द्र इवारिष्टो अक्षितः ७ ६१९

॥१०४॥ (अथर्व० ६।९०।१-३)

अथर्वा । रुद्रः (इषुनिष्कासनम्) । अनुष्टुप्, ३ आर्षी भुरिगुष्णिक् ।

यां ते रुद्र इषुमास्यदङ्गेभ्यो हृदयाय च । इदं तामद्य त्वद् वयं विषूचीं वि वृहामसि १ ६१०
यास्ते शतं धमनयोऽङ्गान्यनु विष्ठिताः । तासां ते सर्वासां वयं निर्विषाणि ह्रयामसि २
नमस्ते रुद्रास्यते नमः प्रतिहितायै । नमो विसृज्यमानायै नमो निपतितायै ३

॥१०५॥ (ऋ० १।१२०।१२)

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । अश्विनौ (दुःष्वप्ननाशनम्) । गायत्री ।

अध स्वप्नस्य निर्विदे ऽभुञ्जतश्च रेवतः । उभा ता बस्रि नश्यतः १२

॥१०६॥ (ऋ० २।२८।१०)

कृमो गार्त्समदो गृत्समदो वा । वरुणः (दुःष्वप्ननाशिनी) । त्रिष्टुप् ।

यो मे राजन् युज्यो वा सखा वा स्वप्ने भयं भीरवे मह्यमाह ।
स्तेनो वा यो दिप्सति नो वृको वा त्वं तस्माद् वरुण पाह्यस्मान् १०

॥१०७॥ (ऋ० १०।१६४।१-५)

प्रचेता आङ्गिरसः । दुःष्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

अपेहि मनसस्पते ऽप क्राम परश्चर ।
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः ×१ ६१५
भद्रं वै वरं वृणते भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम् ।
भद्रं वैवस्वते चक्षुर्बृहद्वदेम विदथे सुवीराः २
यदाशसा निःशसाभिशसो पारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।
अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यजुष्टान्यरे अस्मद् दधातु ३
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते ऽभिद्रोहं चरामसि ।
प्रचेता न आङ्गिरसो द्विषतां पात्वंहसः ४
अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम् ।
जाग्रत्स्वप्नः संकल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ५

॥१०८॥ (अथर्व० ६।४५।१-३)

अङ्गिराः प्रचेता यमश्च । दुःष्वप्ननाशनम् । १ पथ्यापङ्क्तिः, २ भुरिक् त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप् ।

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि ।
परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि सं चर गृहेषु गोषु मे मनः १ ६३०

× अथर्व० २०,९६,२४।

अवशसा निःशसा यत् पराशसोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।
अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यजुष्टान्यारे अस्मद् दधातु २
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पतेऽपि मृषा चरामसि । प्रचेता न आङ्गिरसो दुरितात् पात्वंहसः ३

॥१०९॥ (अथर्व० ६।४६।१-३)

अङ्गिराः प्रचेता यमश्च । दुःस्वप्ननाशनम् । १ विष्टारपङ्क्तिः, २ व्यवसाना शाक्करीगर्भा पञ्चपदा जगती, ३ अनुष्टुप् ।

यो न जीवोऽसि न मृतो देवानाममृतगर्भोऽसि स्वप्न ।
वरुणानी ते माता यमः पितारुर्नामासि १
विद्म ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ।
अन्तकोऽसि मृत्युरसि ।
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि २
यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति । एवा दुष्वप्न्यं सर्वं द्विषते सं नयामसि ३ ६३५

॥११०॥ (अथर्व० ७।१००।१)

यमः । दुःस्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप् ।

पर्यावर्ते दुष्वप्न्यात् पापात् स्वप्न्यादभूत्याः ।
ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे परा स्वप्नमुखाः शुचः १

॥१११॥ (अथर्व० ७।१०१।१)

यमः । दुःस्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप् ।

यत् स्वप्ने अन्नमश्नामि न प्रातरधिगम्यते ।
सर्वं तदस्तु मे शिवं नहि तद् दृश्यते दिवा १

॥११२॥ (अथर्व० ७।६९।१)

शन्तातिः । सुखम् । पथ्यापङ्क्तिः ।

शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः ।
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु १

॥११३॥ (अथर्व० ६।४३।१-३)

भृग्वङ्गिराः (परस्परचित्तैकीकरणकामः) । मन्युशमनम् । अनुष्टुप् ।

अयं दुर्भो विमन्युकः स्वायु चारणाय च । मन्योर्विमन्युकस्यायं मन्युशमन उच्यते १
अयं यो भूरिमूलः समुद्रमवतिष्ठति । दुर्भः पृथिव्या उत्थितो मन्युशमन उच्यते २
वि ते हनव्यां शरणिं वि ते मुख्यां नयामसि ।
यथावशो न वादिषो मम चित्तमुपायसि ३ ६४१

॥११४॥ (अथर्व० ५।१६।१-११)

विश्वामित्रः । एकवृषः (वृषरोगशमनम्) । एकावसानं द्वैपदम्; १,४,५,७-१० साम्नी उष्णिक्; २,३,६. आसुरी अनुष्टुप्; ११ आसुरी गायत्री ।

यद्येकवृषोऽसि सुजारसोऽसि १ यदि द्विवृषोऽसि सुजारसोऽसि २
यदि त्रिवृषोऽसि सुजारसोऽसि ३ यदि चतुर्वृषोऽसि सुजारसोऽसि ४
यदि पञ्चवृषोऽसि सुजारसोऽसि ५ यदि षड्वृषोऽसि सुजारसोऽसि ६
यदि सप्तवृषोऽसि सुजारसोऽसि ७ यद्यष्टवृषोऽसि सुजारसोऽसि ८
यदि नववृषोऽसि सुजारसोऽसि ९ यदि दशवृषोऽसि सुजारसोऽसि १०
यद्येकादशोऽसि सोऽपोदकोऽसि ११ ६५२

॥११५॥ (अथर्व० ५।१५।१-११)

विश्वामित्रः । मधुला वनस्पतिः (रोगोपशमनम्) । अनुष्टुप्, ४ पुरस्ताद्बृहती; ५,७-९ भुरिक् ।

एका च मे दश च मेऽपवक्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः १
द्वे च मे विंशतिश्च मेऽपवक्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः २
तिस्रश्च मे त्रिंशच्च मेऽपवक्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ३ ६५५
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मेऽपवक्तारं ओषधे ।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ४
पञ्च च मे पञ्चाशच्च मेऽपवक्तारं ओषधे ।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ५
षट् च मे षष्टिश्च मेऽपवक्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ६
सप्त च मे सप्ततिश्च मेऽपवक्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ७
अष्ट च मेऽशीतिश्च मेऽपवक्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ८ ६६०
नव च मे नवतिश्च मेऽपवक्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ९
दश च मे शतं च मेऽपवक्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः १०
शतं च मे सहस्रं चापवक्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ११

॥११६॥ (अथर्व० १।२।१-४)

अथर्वा । पर्जन्यः, (१,४पृथिवी, ३इन्द्रः,[चन्द्रमाश्च])(रोगोपशमनम्)। अनुष्टुप्, ३त्रिपदा विराण्नाम गायत्री।

विश्वा शरस्य पितरं पर्जन्यं भूरिधायसम् । विश्वो ध्वस्य मातरं पृथिवीं भूरिवर्पसम् १
ज्याकेः परि णो नमाश्मानं तन्वं कृधि । वीडुवरीयोऽरातीरप द्वेषांस्या कृधि २
वृक्षं यद् गावः परिषस्वजाना अनुस्फुरं शरमर्चन्त्यृभुम् । शरुमस्मद्यावय दिद्युमिन्द्र ३ ६६६

यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजनम् ।
एवा रोगं चास्रावं चान्तस्तिष्ठतु मुञ्ज इत् ४

॥११७॥ (अथर्व० २।७।१-५)

अथर्वा । भैषज्यं, आयुः, वनस्पतिः (शापमोचनम्) । अनुष्टुप्, १ भुरिक्, ४ विराडुपरिष्टाद्बृहती।

अघद्विष्टा देवजाता वीरुच्छपथयोपनी ।
आपो मलमिव प्राणैक्षीत् सर्वान् मच्छपथाँ अधि १
यश्च सापत्नः शपथो जाम्याः शपथश्च यः ।
ब्रह्मा यन्मन्युतः शपात् सर्वं तन्नो अधस्पदम् २
दिवो मूलमवततं पृथिव्या अध्युत्ततम् । तेन सहस्रकाण्डेन परि णः पाहि विश्वतः ३ ६७०
परि मां परि मे प्रजां परि णः पाहि यद्धनम् ।
अरातिर्नो मा तारीन्मा नस्तारिपुरभिमातयः ४
शत्रारमेतु शपथो यः सुहार्त् तेन नः सह । चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हार्दः पृष्टीरपि शृणीमसि ५

॥११८॥ (अथर्व० १।१८।१-४)

द्रविणोदाः । १ विनायकः; (२ सविता, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, देवाः; ३ सविता) (अलक्ष्मीनाशनम्)।
१ विराडुपरिष्टाद् बृहती, २ निचृज्जगती, ३ विराडास्तारपङ्क्तिस्त्रिष्टुप्, ४ अनुष्टुप् ।

निर्लक्ष्म्यं ललाम्यं१ निररातिं सुवामसि ।
अथ या भद्रा तानि नः प्रजाया अरातिं नयामसि १
निररणिं सविता सावीषक् पदोर्निर्हस्तयोर्वरुणो मित्रो अर्यमा ।
निरस्मभ्यमनुमती रराणा प्रेमां देवा असाविषुः सौभगाय २
यत् त आत्मनि तन्वां घोरमस्ति यद् वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा ।
सर्वं तद्वाचार्प हन्मो वयं देवस्त्वा सविता सूदयतु ३ ६७१
रिश्यपदीं वृषदतीं गोषेधां विधमामुत । विलीढ्यं ललाम्यं१ ता असन्नाशयामसि ४

॥११९॥(अथर्व० ६।१३९।१-५)

अथर्वा। वनस्पतिः (सौभाग्यवर्धनम्) । अनुष्टुप्, १ व्यवसाना षट्पदा विराड् जगती ।

न्यस्तिका रुरोहिथ सुभगंकरणी मम । शतं तवं प्रतानास्त्रयस्त्रिंशन्नितानाः ।
तया सहस्रपर्ण्या हृदयं शोषयामि ते १
शुष्यतु मयि ते हृदयमथो शुष्यत्वास्यम्। अथो नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर २
संवनंनी समुष्पला बभ्रु कल्याणि सं नुद । अमूं च मां च सं नुद समानं हृदयं कृधि ३ ६७९

यथोदकमपपुषोऽपशुष्यत्यास्यम्। एवा नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर ४ ६८०
यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः। एवा कामस्य विच्छिन्नं सं धेहि वीर्यावति ५

॥११०॥ (अथर्व० ६।१८।१-३)

अथर्वा। ईर्ष्याविनाशनम्। अनुष्टुप्।

ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमां प्रथमस्या उतापराम्। अग्निं हृदग्र्यं१ शोकं तं ते निर्वापयामसि १
यथा भूमिर्मृतमना मृतान्मृतमनस्तरा। यथोत मम्रुषो मन एवेर्ष्योर्मृतं मनः २
अदो यत् ते हृदि श्रितं मनस्कं पतयिष्णुकम्।
ततस्त ईर्ष्यां मुञ्चामि निरूष्माणं दतेरिव ३

॥१११॥ (अथर्व० ७।४५।१-२)

प्रस्कण्वः, २ अथर्वा। ईर्ष्यापनयनं, भेषजम्। अनुष्टुप्।

जनाद् विश्वजनीनात् सिन्धुतस्पर्याभृतम्। दूरात् त्वा मन्य उद्भृतमीर्ष्याया नाम भेषजम् १ ६८५
अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य दहतः पृथक्। एतामेतस्येर्ष्यामुद्वाग्निमिव शमय २

॥११२॥ (अथर्व० ६।१११।१-४)

अथर्वा। अग्निः (उन्मत्ततामोचनम्)। अनुष्टुप्, १ परानुष्टुप् त्रिष्टुप्।

इमं मे अग्ने पुरुषं मुमुग्ध्ययं यो बद्धः सुयतो लालपीति।
अतोऽधि ते कृणवद् भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति १
अग्निष्टे नि शमयतु यदिं ते मन उद्युतम्। कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्मदितोऽससि २
देवैनसादुन्मदितमुन्मत्तं रक्षसस्परि। कृणोमि विद्वान् भेषजं यदानुन्मदितोऽसति ३
पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भगः। पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽससि ४ ६९०

क्रिमिनाशनम्। (६९१-७७३)

॥११३॥ (अथर्व० २।३१।१-५)

काण्वः। मही, चन्द्रमाः (क्रिमिजम्भनम्)। अनुष्टुप्; २,४ उपरिष्टाद्विराड् बृहती, ३,५ आर्षी त्रिष्टुप्।

इन्द्रस्य या मही दृषत् क्रिमेर्विश्वस्य तर्हणी।
तया पिनष्मि सं क्रिमीन् दृषदा खल्वाँ इव १
दृष्टमदृष्टमतृहमथो कुरूरुमतृहम्।
अलगण्डून्त्सर्वान् छलुनान् क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि २
अलगण्डून् हन्मि महता वधेन दूना अदूना अरसा अभूवन्।
शिष्टानशिष्टान् नि तिरामि वाचा यथा क्रिमीणां नकिरुच्छिषातै ३ ६९३

अन्वान्त्र्यं शीर्षण्यं१मथो पार्ष्ट्यं क्रिमीन् ।
अवस्कवं व्यध्वरं क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि ४
ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेष्वोषधीषु पशुष्वप्स्वन्तः ।
ये अस्माकं तन्वमाविविशुः सर्वं तद्धन्मि जनिम क्रिमीणाम् ५ ६९५

॥१२४॥ (अथर्व० ५।२३।१-१३)
कण्वः । इन्द्रः (क्रिमिघ्नम्)। अनुष्टुप्, १३ विराट् ।

ओतो मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती ।
ओतौ म इन्द्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामितिं १
अस्येन्द्र कुमारस्य क्रिमीन् धनपते जहि । हता विश्वा अरातय उग्रेण वचसा मम २
यो अक्ष्यौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति ।
दतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि ३
सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ ।
बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हताः ४
ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिबाहवः ।
ये के च विश्वरूपास्तान् क्रिमीन् जम्भयामसि ५ ७००
उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा ।
दृष्टांश्च घ्नन्नदृष्टांश्च सर्वांश्च प्रमृणन् क्रिमीन् ६
येवाषासः कष्कषास एजत्काः शिपविल्लुकाः ।
दृष्टश्च हन्यतां क्रिमिरुतादृष्टश्च हन्यताम् ७
हतो येवाषः क्रिमीणां हतो नदनिमोत । सर्वान् नि मष्मषाकरं दृषदा खल्वाँ इव ८
त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः ९
अत्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत् ।
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन् १० ७०५
हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा ११
हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः ।
अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः १२
सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् ।
भिनद्म्यश्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम् १३ ७०८

॥१२५॥ (अथर्व० २।३२।१--६)

काण्वः। आदित्यः (क्रिमिनाशनम्)। अनुष्टुप्, १ त्रिपपदा भुरिग्गायत्री, ६ चतुष्पदा निचृदुष्णिक्।

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु निम्रोचन् हन्तु रश्मिभिः।
ये अन्तः क्रिमयो गवि १
विश्वरूपं चतुरक्षं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम्। शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः २ ७१०
अत्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत्।
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन् ३
हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः। हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा ४
हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः।
अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः ५
प्र ते शृणामि शृङ्गे याभ्यां वितुदायसि। भिनद्मि ते कुषुम्भं यस्ते विषधानः ६

॥१२६॥ (अथर्व० ४।३७।१-१२)

बादरायणिः। अजशृङ्गी; १ अप्सरसः; १-२,६,१० ओषधी अजशृङ्गी; ३-५ अप्सरसः; ७-१२ गन्धर्वाप्सरसः (क्रिमिनाशनम्)। अनुष्टुप्, ३ उपरिष्टाद्बृहती विराड्गर्भा, ४ व्यवसाना षट्पदा त्रिष्टुप्, ५ प्रस्तारपङ्क्तिः, ७ परोष्णिक्, ११ षट्पदा जगती, १२ निचृत्।

त्वया पूर्वमथर्वाणो जघ्नू रक्षाꣳस्योषधे।
त्वया जघान कश्यपस्त्वया कण्वो अगस्त्यः १ ७१५
त्वया वयमप्सरसो गन्धर्वाꣳश्चातयामहे। अजशृङ्ग्यज रक्षः सर्वान् गन्धेन नाशय २
नदीं यन्त्वप्सरसोऽपां तारमवश्वसम्।
गुल्गुलूः पीलो नल्यौ३क्षगन्धिः प्रमन्दनी।
तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ३
यत्राश्वत्था न्यग्रोधा महावृक्षाः शिखण्डिनः।
तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ४
यत्र वः प्रेङ्खा हरिता अर्जुना उत यत्राघाटाः कर्कर्यः संवदन्ति।
तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ५
एयमगन्नोषधीनां वीरुधां वीर्यावती। अजशृङ्ग्यराटकी तीक्ष्णशृङ्गी व्यृषतु ६ ७२०
आनृत्यतः शिखण्डिनो गन्धर्वस्याप्सरापतेः। भिनद्मि मुष्कावपि यामि शेपः ७
भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीरयस्मयीः। ताभिर्हविरदान् गन्धर्वानवकादान् व्यृषितु ८ ७२२

भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीर्हिरण्ययीः। ताभिर्हविरदान् गन्धर्वानवकादान् व्यृषितु९
अवकादानभिशोचान्प्सु ज्योतय मामकान् ।
पिशाचान्त्सर्वानोषधे प्र मृणीहि सहस्व च १०
श्वेवैकः कपिरिवैकः कुमारः सर्वकेशकः ।
प्रियो दृश इव भूत्वा गन्धर्वः संचते स्त्रियस्तमितो नाशयामसि ब्रह्मणा वीर्यावता११ ७२५
जाया इद् वो अप्सरसो गन्धर्वाः पतयो यूयम् ।
अप धावतामर्त्या मर्त्यान् मा संचध्वम् १२

॥१२७॥ (अथर्व० १।८।१-४)

चातनः । १-२ बृहस्पतिः, अग्नीषोमौ च; ३-४ अग्निः [जातवेदाः] (यातुधाननाशनम्) । १-३ अनुष्टुप्, ४ बार्हतगर्भा त्रिष्टुप् ।

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवा वहत् ।
य इदं स्त्री पुमानकरिह स स्तुवतां जनः १
अयं स्तुवान आगमदिमं स्म प्रति हर्यत । बृहस्पते वशे लब्ध्वाग्नीषोमा वि विध्यतम् २
यातुधानस्य सोमप जहि प्रजां नयस्व च । नि स्तुवानस्य पातय परमक्ष्युतावरम्३
यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुहा सतामत्त्रिणां जातवेदः ।
तांस्त्वं ब्रह्मणा वावृधानो जह्येषां शततर्हमग्ने ४ ७३०

॥१२८॥ (अथर्व० ६।३२।१-३)

चातनः; ३ अथर्वा । १ अग्निः, २ रुद्रः, ३ मित्रावरुणौ (यातुधानक्षयणम्) । त्रिष्टुप्, २ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अन्तर्दावे जुहुता स्वेऽ३तद् यातुधानक्षयणं घृतेन ।
आराद् रक्षांसि प्रति दह त्वमग्ने न नो गृहाणामुप तीतपासि १
रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत् पिशाचाः पृष्टीर्वोऽपि शृणातु यातुधानाः ।
वीरुद् वो विश्वतोवीर्या यमेन समजीगमत् २
अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्त्रिणो नुदतं प्रतीचः ।
मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विघ्ना उप यन्तु मृत्युम् ३

॥१२९॥ (अथर्व० १।२८।१-४)

चातनः । १-२ अग्निः, ३-४ यातुधानीः (रक्षोघ्नम्) । अनुष्टुप्, ३ विराट्पथ्याबृहती, ४ पथ्यापङ्क्तिः ।

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामीवचातनः ।
दहन्नप द्व्याविनो यातुधानान् किमीदिनः १ ७३४

प्रति दह यातुधानान् प्रति देव किमीदिनः ।
प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः ॥ २ ७३५
या शशाप शपनेन याघं मूरमादधे । या रसस्य हरणाय जातमारेभे तोकमत्तु सा ३
पुत्रमत्तु यातुधानीः स्वसारमुत नप्त्यम् ।
अधा मिथो विकेश्यो३ वि भ्रतां यातुधान्यो३ वि तृह्यन्तामराय्यः ॥ ४

॥१३०॥ (अथर्व० ५।२९।१-१५)

चातनः । जातवेदाः, मन्त्रोक्ताः (रक्षोघ्नम्) । त्रिष्टुप्; ३ त्रिपदा विराण्नाम गायत्री; ५ पुरोऽतिजगती विराड्जगती; १२--१५ अनुष्टुप् (१२ भुरिक्; १४ चतुष्पदा पराबृहती ककुम्मती ।)

पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदोऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम् ।
त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्वं पुरुरूपं सनेम ॥ १
तथा तदग्ने कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः ।
यो नो दिदेव यतमो जघास यथा सो अस्य परिधिष्पतात् ॥ २
यथा सो अस्य परिधिष्पतात् यथा तदग्ने कृणु जातवेदः ।
विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः ॥ ३ ७४०
अक्ष्यौ३ नि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि तृन्द्धि प्र दतो मृणीहि ।
पिशाचो अस्य यतमो जघासाग्ने यविष्ठ प्रति तं शृणीहि ॥ ४
यदस्य हृतं विहृतं यत् पराभृतमात्मनो जग्धं यतमत् पिशाचैः ।
तदग्ने विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे मांसमसुमेरयामः ॥ ५
आमे सुपक्वे शबले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने ददम्भ ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३ऽयमस्तु ॥ ६
क्षीरे मा मन्थे यतमो ददम्भाकृष्टपच्ये अशने धान्ये३ यः ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३ऽयमस्तु ॥ ७
अपां मा पाने यतमो ददम्भ क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३ऽयमस्तु ॥ ८ ७४५
दिवा मा नक्तं यतमो ददम्भ क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३ऽयमस्तु ॥ ९
क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः ।
तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः ॥ १० ७४७

सनादग्ने मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षाँसि पृतनासु जिग्युः ।
सहमूराननु दह क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ११
समाहर जातवेदो यद्भूतं यत् पराभृतम्। गात्राण्यस्य वर्धन्तामंशुरिवा प्यायतामयम् १२
सोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम् ।
अग्ने विरप्शिनं मेध्यमयक्ष्मं कृणु जीवतु १३ ७५०
एतास्ते अग्ने समिधः पिशाचजम्भनीः ।
तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः १४
तार्ष्टाघीरग्ने समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषा ।
जहातु क्रव्याद् रूपं यो अस्य मांसं जिहींर्षति १५

॥१३१॥ (वा० य० ५।२२)
(रक्षोघ्नम् ।)

इदमहꣳ रक्षसां ग्रीवा ऽ अपिकृन्तामि २२

॥१३२॥ (अथर्व० ४।२०।१-९)

मातृनामा । मातृनामा (पिशाचक्षयणम्) । अनुष्टुप्; १ स्वराट्, ९ भुरिक् ।

आ पश्यति प्रति पश्यति परा पश्यति पश्यति ।
दिवमन्तरिक्षमाद् भूमिं सर्वं तद् देवि पश्यति १
तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीः षट् चेमाः प्रदिशः पृथक् ।
त्वयाहं सर्वा भूतानि पश्यानि देव्योषधे २ ७५५
दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य हासि कनीनिका ।
सा भूमिमा रुरोहिथ वह्यं श्रान्ता वधूरिव ३
तां मे सहस्राक्षो देवो दक्षिणे हस्त आ दधत् ।
तयाहं सर्वं पश्यामि यश्च शूद्र उतार्यः ४
आविष्कृणुष्व रूपाणि मात्मानमप गूहथाः ।
अथो सहस्रचक्षो त्वं प्रति पश्याः किमीदिनः ५
दर्शय मा यातुधानान् दर्शय यातुधान्यः। पिशाचान्त्सर्वान् दर्शयेति त्वा रभ ओषधे ६
कश्यपस्य चक्षुरसि शुन्याश्च चतुरक्ष्याः ।
वीध्रे सूर्यमिव सर्पन्तं मा पिशाचं तिरस्करः ७
उदग्रभं परिपाणाद् यातुधानं किमीदिनम् । तेनाहं सर्वं पश्याम्युत शूद्रमुतार्यम् ८ ७६१

यो अन्तरिक्षेण पतति दिवं यश्चातिसर्पति ।
भूमिं यो मन्यते नाथं तं पिशाचं प्र दर्शय ९

॥१३३॥ (अथर्व० ६।७१।१-३)

अथर्वा । सोमः, अदितिः, ३ देवाः (असुरक्षयणम्) । गायत्री, १ निचृत् ।

येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः । तेना नोऽवसा गहि १
येन सोम साहन्त्यासुरान् रन्धयासि नः । तेना नो अधि वोचत २
येन देवा असुराणामोजांस्यवृणीध्वम् । तेना नः शर्म यच्छत ३ ७६५

॥१३४॥ (अथर्व० १९।६६।१)

ब्रह्मा । जातवेदाः सूर्यो वज्रश्च (असुरक्षयणम्) । अतिजगती ।

अयोजाला असुरा मायिनोऽयस्मयैः पाशैरङ्किनो ये चरन्ति ।
तांस्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रऋष्टिः सपत्नान् प्रमृणन् पाहि वज्रः १

॥१३५॥ (अथर्व० १।७१।१-७)

चातनः । अग्निः (जातवेदाः), ३ अग्नीन्द्रौ (यातुधाननाशनम्) । अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

स्तुवानमग्न आ वह यातुधानं किमीदिनम् ।
त्वं हि देव वन्दितो हन्ता दस्योर्बभूविथ १
आज्यस्य परमेष्ठिन् जातवेदस्तनूवशिन् ।
अग्ने तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय २
वि लपन्तु यातुधानाः अत्त्रिणो ये किमीदिनः ।
अथेदमग्ने नो हविरिन्द्रश्च प्रति हर्यतम् ३
अग्निः पूर्व आ रभतां प्रेन्द्रो नुदतु बाहुमान् ।
ब्रवीतु सर्वो यातुमानयमस्मीत्येत्य ४ ७७०
पश्याम ते वीर्यं जातवेदः प्र णो ब्रूहि यातुधानान् नृचक्षः ।
त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् त आ यन्तु प्रबुवाणा उपेदम् ५
आ रभस्व जातवेदोऽस्माकार्थाय जज्ञिषे ।
दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय ६
त्वमग्ने यातुधानानुपबद्धाँ इहा वह ।
अथैषामिन्द्रो वज्रेणापि शीर्षाणि वृश्चतु ७ ७७१

विषनाशनम्। (७७४-८५९)

॥१३६॥ (ऋ० १।१९१।१-१६)

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अप्तृणसूर्याः (विषघ्नोपनिषद्)। अनुष्टुप्; १०-१२ महापङ्क्तिः; १३ महाबृहती।

कङ्कतो न कङ्कतो ऽथो सतीनकङ्कतः।
द्वाविति प्लुषी इति न्यदृष्टा अलिप्सत १
अदृष्टान् हन्त्याय॒त्यथो हन्ति परायती।
अथो अवघ्नती ह॒न्त्यथो पिनष्टि पिंषती २ ७७५
शरासः कुशरासो दर्भासः सैर्या उत।
मौञ्जा अदृष्टा वैरिणाः सर्वे साकं न्यलिप्सत ३
नि गावो गोष्ठे असदन् नि मृगासो अविक्षत।
नि केतवो जनानां न्यदृष्टा अलिप्सत ४
एत उ त्ये प्रत्यदृश्रन् प्रदोषं तस्करा इव।
अदृष्टा विश्वदृष्टाः प्रतिबुद्धा अभूतन ५
द्यौर्वः पिता पृथिवी माता सोमो भ्रातादितिः स्वसा।
अदृष्टा विश्वदृष्टा॒स्तिष्ठतेलयता सु कम् ६
ये अंस्या ये अङ्गर्याः सूचीका ये प्रकङ्कताः।
अदृष्टाः किं चनेह वः सर्वे साकं नि जस्यत ७ ७८०
उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा।
अदृष्टान्त्सर्वाञ्जम्भय॒न्त्सर्वाश्च यातुधान्यः ८
उदपप्तदसौ सूर्यः पुरु विश्वानि जूर्वन्।
आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा ९
सूर्ये विषमा सजामि दृतिं सुरावतो गृहे।
सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार १०
इयत्तिका शकुन्तिका सका जघास ते विषम्।
सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार ११
त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका विषस्य पुष्पमक्षन्।
ताश्चिन्नु न मरन्ति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार १२ ७८५

नवानां नवतीनां विषस्य रोपुषीणाम् ।
सर्वासामग्रभं नामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार १३
त्रिः सप्त मयूर्यः सप्त स्वसारो अग्रुवः ।
तास्ते विषं वि जभ्रिर उदकं कुम्भिनीरिव १४
इयत्तकः कुषुम्भक स्तकं भिनद्म्यश्मना ।
ततो विषं प्र वावृते पराचीरनु संवतः १५
कुषुम्भकस्तदब्रवीद् गिरेः प्रवर्तमानकः ।
वृश्चिकस्यारसं विष मरसं वृश्चिक ते विषम् १६

॥१३७॥ (अथर्व० ४।६।१-८)

गरुत्मान्। नक्षकः, १ ब्राह्मणः; २ द्यावापृथिवी, सप्तसिन्धवः; ३ सुपर्णः; ४-८विषम् (विषघ्नम्)। अनुष्टुप्।

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः ।
स सोमं प्रथमः पपौ स चकारारसं विषम् १ ७९०
यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावत् सप्त सिन्धवो वितष्ठिरे ।
वाचं विषस्य दूषणीं तामितो निरवादिषम् २
सुपर्णस्त्वा गरुत्मान् विषं प्रथममावयत् ।
नामीमदो नारूरुप उतास्मा अभवः पितुः ३
यस्त आस्यत् पञ्चाङ्गुरिर्वक्राच्चिदधि धन्वनः ।
अपस्कम्भस्य शल्यान्निरवोचमहं विषम् ४
शल्याद् विषं निरवोचं प्राञ्जनादुत पर्णधेः ।
अपाष्ठाच्छृङ्गात् कुल्मलान्निरवोचमहं विषम् ५
अरसस्ते इषो शल्योऽथो ते अरसं विषम् । उतारसस्य वृक्षस्य धनुष्टे अरसारसम् ६ ७९५
ये अपीपन् ये अदिदृन् य आस्यन् ये अवासृजन् ।
सर्वे ते वध्रयः कृता वध्रिर्विषगिरिः कृतः ७
वध्रयस्ते खनितारो वध्रिस्त्वमस्योषधे ।
वध्रिः स पर्वतो गिरिर्यतो जातमिदं विषम् ८

॥१३८॥ (अथर्व० ४।७।१-७)

गरुत्मान्। वनस्पतिः (विषनाशनम्)। अनुष्टुप्, ४ स्वराट्।

वारिदं वारयातै वरणावत्यामधि । तत्रामृतस्यासिक्तं तेना ते वारये विषम् १ ७९८

अरसं प्राच्यं विषमरसं यदुदीच्यम्। अथेदमधराच्यं करम्भेण वि कल्पते २
करम्भं कृत्वा तिर्यं पीवस्पाकमुदारथिम्।
क्षुधा किल त्वा दुष्टनो जक्षिवान्त्स न रूरुपः ३ ८००
वि ते मदै मदावति शरामिव पातयामसि।
प्र त्वा चरुमिव येषन्तं वचसा स्थापयामसि ४
परि ग्राममिवार्चितं वचसा स्थापयामसि।
तिष्ठा वृक्ष इव स्थाम्न्यभ्रिखाते न रूरुपः ५
पवस्तैस्त्वा पर्यक्रीणन् दूर्शेभिरजिनैरुत। प्रक्रीरसि त्वमोषधेऽभ्रिखाते न रूरुपः ६
अनाप्ता ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे।
वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे ७

॥१३९॥ (अथर्व० ६।१००।१-३)

गरुत्मान्। वनस्पतिः (विषदूषणम्)। अनुष्टुप्।

देवा अदुः सूर्यो अदाद् द्यौरदात् पृथिव्यदात्।
तिस्रः सरस्वतीरदुः सचित्ता विषदूषणम् १ ८०५
यद् वो देवा उपजीका आसिञ्चन् धन्वन्युदकम्।
तेन देवप्रसूतेनेदं दूषयता विषम् २
असुराणां दुहितासि सा देवानामसि स्वसा।
दिवस्पृथिव्याः संभृता सा चकर्थारसं विषम् ३

॥१४०॥ (अथर्व० १०।४।१-२६)

गरुत्मान्। तक्षकः (सर्पविषदूरीकरणम्)। अनुष्टुप्; १ पथ्यापङ्क्तिः; २ त्रिपदा यवमध्या गायत्री; ३-४ पथ्याबृहती; ८ उष्णिग्गर्भा परा त्रिष्टुप्; १२ भुरिग्गायत्री; १६ त्रिपदा प्रतिष्ठा गायत्री; २१ ककुम्मती; २३ त्रिष्टुप्; २६ त्र्यवसाना षट्पदा बृहतीगर्भा ककुम्मती भुरिक् त्रिष्टुप्।

इन्द्रस्य प्रथमो रथो देवानामपरो रथो वरुणस्य तृतीय इत्।
अहीनामपमा रथं स्थाणुमारदथार्षत् १
दुर्भः श्रोचिस्तरूणकमश्वस्य वारः पुरुषस्य वारः। रथस्य बन्धुरम् २
अव श्वेत पदा जहि पूर्वेण चापरेण च। उदप्लुतामिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम् ३ ८१०
अरंघुषो निमज्योन्मज्य पुनरब्रवीत्। उदप्लुतामिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम् ४
पैद्वो हन्ति कसर्णीलं पैद्वः श्वित्रमुतासितम्। पैद्वो रथर्व्याः शिरः सं बिभेद पृदाकाः ५ ८१२

पैद्व प्रेहि प्रथमोऽनु त्वा वयमेमसि । अहीन् व्यस्यतात् पथो येन स्मा वयमेमसि ६
इदं पैद्वो अजायतेदमस्य परायणम् । इमान्यर्वतः पदाहिह्यो वाजिनीवतः ७
संयत्तं न वि ष्परद् व्यात्तं न सं यमत् । अस्मिन् क्षेत्रे द्वावही स्त्री च पुमाँश्च तावुभावरसाः ८ ८१५
अरसास इहाहयो ये अन्ति ये च दूरके । घनेन हन्मि वृश्चिकमहिं दण्डेनागतम् ९
अघाश्वस्येदं भेषजमुभयोः स्वजस्य च । इन्द्रो मेऽहिमघायन्तमहिं पैद्वो अरन्धयत् १०
पैद्वस्य मन्महे वयं स्थिरस्य स्थिरधाम्नः । इमे पश्चा पृदाकवः प्रदीध्यत आसते ११
नष्टासवो नष्टविषा हता इन्द्रेण वज्रिणा । जघानेन्द्रो जघ्निमा वयम् १२
हतास्तिरश्चिराजयो निपिष्टासः पृदाकवः । दर्विं करिक्रतं श्वित्रं दुर्भेष्वसितं जहि १३ ८२०
कैरातिका कुमारिका सका खनति भेषजम् । हिरण्ययीभिरभ्रिभिर्गिरीणामुप सानुषु १४
आयमगन् युवा भिषक् पृश्निहापराजितः । स वै स्वजस्य जम्भन उभयोर्वृश्चिकस्य च १५
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयन्मित्रश्च वरुणश्च । वातापर्जन्याभा १६
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत् पृदाकुं च पृदाकम् । स्वजं तिरश्चिराजिं कसर्णीलं दशोनसिम् १७
इन्द्रो जघान प्रथमं जनितारमहे तव । तेषामु तृह्यमाणानां कः स्वित् तेषामसद् रसः १८ ८२५
सं हि शीर्षाण्यग्रभं पौञ्जिष्ठ इव कर्वरम् । सिन्धोर्मध्ये परेत्य व्यनिजमहेर्विषम् १९
अहीनां सर्वेषां विषं परा वहन्तु सिन्धवः । हतास्तिरश्चिराजयो निपिष्टासः पृदाकवः २०
ओषधीनामहं वृण उर्वरीरिव साधुया । नयाम्यर्वतीरिवाहे निरैतु ते विषम् २१
यदग्नौ सूर्ये विषं पृथिव्यामोषधीषु यत् । कान्दाविषं कनक्रकं निरैत्वेतु ते विषम् २२
ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां ये अप्सुजा विद्युत आबभूवुः ।
येषां जातानि बहुधा महान्ति तेभ्यः सर्पेभ्यो नमसा विधेम २३ ८३०
तौदी नामासि कन्या घृताची नाम वा असि । अधस्पदेन ते पदमा ददे विषदूषणम् २४
अङ्गादङ्गात् प्र च्यावय हृदयं परि वर्जय । अधा विषस्य यत् तेजोऽवाचीनं तदेतु ते २५
आरे अभूद् विषमरौद् विषे विषमप्रागपि । अग्निर्विषमहेर्निरधात् सोमो निरणयीत् ।
दंष्टारमन्वगाद् विषमहिरमृत २६

॥१४१॥ (अथर्व० ५।१३।१--११)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषनाशनम्) । जगती, २ आस्तारपङ्क्तिः, ४,७-८ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप्, ६ पथ्यापङ्क्तिः, ९ भुरिक्, १०-११ निचृद्गायत्री ।

दुदिहि मह्यं वरुणो दिवः कविर्वचोभिरुग्रो नि रिणामि ते विषम् ।
खातमखातमुत सक्तमग्रभमिरेव धन्वन् नि जजास ते विषम् १ ८३४

यत् ते अपोदकं विषं तत् त एतास्त्वग्रभम् ।
गृह्णामि ते मध्यममुत्तमं रसमुतावमं भियसा नेशदादु ते २ ८३५
वृषा मे रवो नभसा न तन्यतुरुग्रेण ते वचसा बाध आदु ते ।
अहं तमस्य नृभिरग्रभं रसं तमस इव ज्योतिरुदेतु सूर्यः ३
चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि विषेण हन्मि ते विषम् ।
अहे म्रियस्व मा जीवीः प्रत्यगभ्येतु त्वा विषम् ४
कैरात पृश्न उपतृण्य बभ्र आ मे शृणुतासिता अलीकाः ।
मा मे सख्युः स्तामानमपि ष्ठाताश्रावयन्तो नि विषे रमध्वम् ५
असितस्य तैमातस्य बभ्रोरपोदकस्य च ।
सात्रासाहस्याहं मन्योरव ज्यामिव धन्वनो वि मुञ्चामि रथाँ इव ६
आलिंगी च विलिंगी च पिता च माता च ।
विश्व वः सर्वतो बन्धवरसाः किं करिष्यथ ७ ८४०
उरुगूलाया दुहिता जाता दास्यसिक्न्या ।
प्रतङ्कं दुदुषीणां सर्वासामरसं विषम् ८
कर्णा श्वावित् तदब्रवीद् गिरेरवचरन्तिका ।
याः काश्चेमाः खनित्रिमास्तासामरसतमं विषम् ९
ताबुवं न ताबुवं न घेत् त्वमसि ताबुवम् । ताबुवेनारसं विषम् १०
तस्तुवं न तस्तुवं न घेत् त्वमसि तस्तुवम् । तस्तुवेनारसं विषम् ११

॥१४२॥ (अथर्व० ७।८८।१)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषनाशनम्)। त्र्यवसाना बृहती ।

अपेह्यरिरस्यरिर्वा असि । विषे विषमपक्था विषमिद् वा अपक्थाः ।
अहिमेवाभ्यपेहि तं जहि १ ८४५

॥१४३॥ (अथर्व० ६।१२।१-३)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषनिवारणम्)। अनुष्टुप् ।

परि द्यामिव सूर्योऽहानां जनिमागमम् ।
रात्री जगदिवान्यद्वंसात् तेना ते वारये विषम् १
यद् ब्रह्मभिर्यदृषिभिर्यद् देवैर्विदितं पुरा । यद् भूतं भव्यमासन्वत् तेना ते वारये विषम् २
मध्वा पृञ्चे नद्यः पर्वता गिरयो मधु । मधु पर्णी शीपाला शमास्ने अस्तु शं हृदे ३ ८४८

॥१४४॥ (अथर्व० ६।५६।१-३)

शन्तातिः । १ विश्वे देवाः, २-३ रुद्रः (सर्पेभ्यो रक्षणम्) । १ उष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः, २ अनुष्टुप्, ३ निचृत् ।

मा नो देवा अहिर्वधीत् सतोकान्त्सहपूरुषान् ।
संयतं न वि ष्परद् व्यात्तं न सं यमन्नमो देवजनेभ्यः १
नमोऽस्त्वसिताय नमस्तिरश्चिराजये । स्वजाय बभ्रवे नमो नमो देवजनेभ्यः २ ८५०
सं ते हन्मि दता दतः सम्मु ते हन्वा हनू ।
सं ते जिह्वया जिह्वां सम्वास्नाहं आस्यम् ३

॥१४५॥ (अथर्व० ७।५६।१-८)

अथर्वा । वृश्चिकादयः, २ वनस्पतिः, ४ ब्रह्मणस्पतिः (विषभैषज्यम्) । अनुष्टुप्, ४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः ।

तिरश्चिराजेरसितात् पृदाकोः परि संभृतम् । तत् कङ्कपर्वणो विषमियं वीरुदनीनशत् १
इयं वीरुन्मधुजाता मधुश्चुन्मधुला मधूः । सा विद्युतस्य भेषज्यथो मशकजम्भनी २
यतो दष्टं यतो धीतं ततस्ते निर्ह्वयामसि । अर्भस्य तृप्रदंशिनो मशकस्यारसं विषम् ३
अयं यो वक्रो विपरुर्व्यङ्गो मुखानि वक्रा वृजिना कृणोषि ।
तानि त्वं ब्रह्मणस्पत इषीकामिव सं नमः ४ ८५५
अरसस्य शर्कोटस्य नीचीनस्योपसर्पतः । विषं ह्यस्यादिष्यथो एनमजीजभम् ५
न ते बाह्वोर्बलमस्ति न शीर्षे नोत मध्यतः । अथ किं पापयामुया पुच्छे बिभर्ष्यर्भकम् ६
अदन्ति त्वा पिपीलिका वि वृश्चन्ति मयूर्यः । सर्वं भल ब्रवाथ शार्कोटमरसं विषम् ७
य उभाभ्यां प्रहरसि पुच्छेन चास्येन च । आस्ये३ न ते विषं किमु ते पुच्छधावसत् ८ ८५९

जलचिकित्सा । (८६०-१११९)

॥१४६॥ (अथर्व० ६।५७।१-३)

शन्तातिः । रुद्रः । १-२ अनुष्टुप्, ३ पथ्याबृहती ।

इदमिद् वा उ भेषजमिदं रुद्रस्य भेषजम् ।
येनेषुमेकतेजनां शतशल्यामपव्रवत् १
जालाषेणाभि षिञ्चत जालाषेणोप सिञ्चत ।
जालाषमुग्रं भेषजं तेन नो मृड जीवसे २
शं च नो मयश्च नो मा च नः किं चनाममत् ।
क्षमा रपो विश्वं नो अस्तु भेषजं सर्वं नो अस्तु भेषजम् ३ ८६१

॥१४७॥ (ऋ० १।२३।१६-२३)

मेधातिथिः काण्वः । आपः, २३ आपः अग्निश्च । १६-१८ गायत्री, १९ पुर उष्णिक्, २१ प्रतिष्ठा । २०,२२-२३ अनुष्टुप् ।

अम्बयो यन्त्यध्वभि॒र्जामयो अध्वरीयताम् । पृञ्चतीर्मधुना पयः १६
अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् १७
अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः । सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः १८ ८६५
अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषज॒मपामुत प्रशस्तये । देवा भवत वाजिनः १९
अप्सु मे सोमो अब्रवी॒दन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशंभुव॒मापश्च विश्वभेषजीः २०
आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम । ज्योक् च सूर्यं दृशे २१
इदमापः प्र वहत यत् किं च दुरितं मयि । यद् वाहमभिदुद्रोह यद् वा शेप उतानृतम् २२
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि । पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा २३ ८७०

॥१४८॥ (ऋ० ७।४७।१-४)

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आपः । त्रिष्टुप् ।

आपो यं वः प्रथमं देवयन्त इन्द्रपानमूर्मिमकृण्वतेळः ।
तं वो वयं शुचिमरिप्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम १
तमूर्मिमापो मधुमत्तमं वो ऽपां नपादवत्वाशुहेमा ।
यस्मिन्निन्द्रो वसुभिर्मादयाते तमश्याम देवयन्तो वो अद्य २
शतपवित्राः स्वधया मदन्ती॒र्देवीर्देवानामपि यन्ति पाथः ।
ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि सिन्धुभ्यो हव्यं घृतवज्जुहोत ३
याः सूर्यो रश्मिभिरातताने याभ्य इन्द्रो अरदद् गातुमूर्मिम् ।
ते सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ४

॥१४९॥ (ऋ० ७।४९।१-४)

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आपः । त्रिष्टुप् ।

समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः ।
इन्द्रो या वज्री वृषभो ररादे ता आपो देवीरिह मामवन्तु १ ८७१
या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः ।
समुद्रार्था याः शुचयः पावका॒स्ता आपो देवीरिह मामवन्तु २
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम् ।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावका॒स्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ३ ८७२

यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति ।
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्ट—स्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ४

+॥१५०॥ (ऋ० १०।९।१-९)

त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः, सिन्धुद्वीप आम्बरीषो वा । आपः । गायत्री, ५ वर्धमाना गायत्री, ७ प्रतिष्ठा गायत्री, ८-९ अनुष्टुप् ।

आपो हि ष्ठा मयोभुव—स्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे १
यो वः शिवतमो रस—स्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः २ ८८०
तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ३
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ४
ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम् । अपो याचामि भेषजम् ५
अप्सु मे सोमो अब्रवी—दन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशंभुवम् ६
आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम । ज्योक् च सूर्यं दृशे ७ ८८५
इदमापः प्र वहत यत् किं च दुरितं मयि ।
यद् वाहमभिदुद्रोह यद् वा शेप उतानृतम् ८
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि ।
पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ९

॥१५१॥ (ऋ० १०।१७।१०-१४)

देवश्रवा यामायनः । १०-१४ आपः, ११-१३ सोमो वा । त्रिष्टुप्, १३-१४ अनुष्टुप्, (१३ पुरस्ताद्बृहती वा ।)

आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवी—रुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि १०
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु द्यू—निमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः ११
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशु—र्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात् ।
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात् तं ते जुहोमि मनसा वषट्कृतम् १२
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशु—रवश्च यः परः स्रुचा ।
अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिञ्चतु राधसे १३ ८९१

+ऋ. १०,९,१-४; वा० य० ११,५०-५२; ३६,१२,१४-१६

पर्यस्वतीरोषधयः पर्यस्वन्मामकं वचः ।
अपां पर्यस्वदित् पय—स्तेन मा सह शुन्धत १४

॥१५२॥ (ऋ० १०।१९।१-८)

मथितो यामायनः, भृगुर्वारुणिर्वा, च्यवनो भार्गवो वा । आपः, गावो वा, १ उत्तरार्धर्चस्य अग्नीषोमौ । अनुष्टुप्, ६ गायत्री ।

नि वर्तध्वं मानु गाता—ऽस्मान्त्सिषक्त रेवतीः ।
अग्नीषोमा पुनर्वसू अस्मे धारयतं रयिम् १
पुनरेना नि वर्तय पुनरेना न्या कुरु ।
इन्द्र एणा नि यच्छ—त्वग्निरेना उपाजतु २
पुनरेता नि वर्तन्ता—मस्मिन् पुष्यन्तु गोपतौ ।
इहैवाग्ने नि धारये—ह तिष्ठतु या रयिः ३ ८९५
यन्नियानं न्ययनं संज्ञानं यत् परायणम् ।
आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे ४
य उदानड् व्ययनं य उदानट् परायणम् ।
आवर्तनं निवर्तन—मपि गोपा नि वर्तताम् ५
आ निवर्त नि वर्तय पुनर्न इन्द्र गा देहि । जीवाभिर्भुनजामहै ६
परि वो विश्वतो दध ऊर्जा घृतेन पयसा ।
ये देवाः के च यज्ञिया—स्ते रय्या सं सृजन्तु नः ७
आ निवर्तन वर्तय नि निवर्तन वर्तय ।
भूम्याश्चतस्रः प्रदिश—स्ताभ्यं एना नि वर्तय ८ ९००

॥१५३॥ (ऋ० १०।३०।१-१५)

कवष ऐलूषः । आपः, अपां नपात् वा । त्रिष्टुप् ।

प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुरे—त्वपो अच्छा मनसो न प्रयुक्ति ।
महीं मित्रस्य वरुणस्य धासिं पृथुज्रयसे रीरधा सुवृक्तिम् १
अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि भूता—ऽच्छाप इतोशतीरुशन्तः ।
अव याश्चष्टे अरुणः सुपर्ण—स्तमास्यध्वमूर्मिमद्या सुहस्ताः २
अध्वर्यवोऽप इता समुद्र—मपां नपातं हविषा यजध्वम् ।
स वो दददूर्मिमद्या सुपूतं तस्मै सोमं मधुमन्तं सुनोत ३ ९०३

यो अ॑ग्नि॒ध्मो दी॒दय॒दप्स्व॑न्त॒र्यं विप्रा॑स ई॒ळते अध्व॒रेषु॑ ।
अपां॑ नपा॒न्मधु॑मतीर॒पो दा॒ याभि॒रिन्द्रो॑ वावृ॒धे वी॒र्या॑य ४
याभिः॒ सोमो॒ मोद॑ते॒ हर्ष॑ते च कल्या॒णीभि॑र्युवति॒भिर्न मर्यैः॑ ।
ता अ॑ध्वर्यो अ॒पो अच्छा॒ परे॑हि॒ यदा॑सि॒च्या ओष॑धीभिः पुनी॒तात् ५ ९०५
एवे॒द्यूने॑ युव॒तयो॑ नमन्त॒ यदी॑मु॒शन्नु॑श॒तीरे॒त्यच्छ॑ ।
सं जा॑नते मन॒सा सं चि॑किते॒ऽध्व॒र्यवो॑ धि॒षणा॑पश्च दे॒वीः ६
यो वो॑ वृ॒ताभ्यो॑ अकृणोदु लो॒कं यो वो॑ म॒ह्या अ॑भिश॒स्तेर॑मुञ्चत् ।
तस्मा॒ इन्द्रा॑य॒ मधु॑मन्तमू॒र्मिं दे॑व॒मादं॑ प्र हि॑णोतनापः ७
प्रास्मै॑ हिनोत॒ मधु॑मन्तमू॒र्मिं गर्भो॒ यो वः॑ सिन्धवो॒ मध्व॒ उत्सः॑ ।
घृ॒तपृ॑ष्ठमीड्य॒मध्व॑रेष्वा॒ऽऽपो रे॒वतीः॑ शृणु॒ता हवं॑ मे ८
तं सिन्धवो मत्स॒रमिन्द्र॑पान॒मूर्मिं प्र हि॑त य उ॒भे इ॒यर्ति॑ ।
मद॒च्युत॑मौशा॒नं न॒भोजां॑ परि॑ त्रितन्तुं॒ वि॒चर॑न्त॒मुत्स॑म् ९
आव॑र्वृ॒ततीरध॒ नु द्वि॒धारा॑ गोषु॒युधो॒ न नि॒यव॑ं चरन्तीः ।
ऋषे॑ जनि॒त्रीर्भुव॑नस्य॒ पत्नी॒रपो॑ वन्दस्व सु॒वृधः॑ सयो॒नीः १० ९१०
हि॒नोता॑ नो अध्व॒रं दे॑वयु॒ज्या हि॑नोत॒ ब्रह्म॑ सनये॒ धना॑नाम् ।
ऋ॒तस्य॒ योगे॒ वि ष्य॑ध्व॒मूधः॑ श्रु॒ष्टीव॑रीर्भू॒तनास्मभ्य॑मापः ११
आपो॑ रेवती॒ः क्षय॑था॒ हि व॒स्वः क्रतुं॑ च भ॒द्रं बि॑भृथामृतं॑ च ।
रा॒यश्च॑ स्थ स्वपत्य॒स्य पत्नी॑ः सर॑स्वती॒ तद् गृ॑णते वयो॑ धात् १२
प्रति॒ यदापो॒ अदृ॑श्रमाय॒ती॒घृतं॑ पयो॑सि बिभ्र॒तीर्मधू॑नि ।
अ॒ध्व॒र्यु॒भिर्म॑न॒सा सं॑विदा॒ना इन्द्रा॑य॒ सोमं॑ सुषु॒तं॑ भर॒न्तीः १३
एमा अ॑ग्मन् रे॒वतीर्जी॒वध॑न्या॒ अध्व॑र्यवः॒ सादय॑ता सखायः ।
नि ब॒र्हिषि॑ धत्तन सोम्यासो॒ऽपां नप्त्रा॑ संविदा॒नास॑ एनाः १४
आग्म॒न्नाप॑ उश॒तीर्ब॒र्हिरे॒दं न्य॑ध्व॒रे अ॑सदन् देव॒यन्तीः॑ ।
अध्व॑र्यवः सुनु॒तेन्द्रा॑य सोम॒मभू॑दु वः सु॒शका॑ देवयु॒ज्या १५

॥१५४॥ (अथर्व० १।३३।१-४)

शन्तातिः । (चन्द्रमाः) आपः (च) । त्रिष्टुप् ।

हिर॑ण्यवर्णाः शु॒चय॑ः पाव॒का यासु॑ जा॒तः स॑वि॒ता यास्व॒ग्निः ।
या अ॒ग्निं गर्भं॑ दधि॒रे सु॒वर्णा॒स्ता न॒ आप॒ः शं स्यो॒ना भ॑वन्तु १ ९१६

यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानाम् ।
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु २
यासौ देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ३
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे ।
घृतश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ४

॥१५५॥ (अथर्व० ३।१३।१-७)

भृगुः । वरुणः, सिन्धुः, आपः; २-३ इन्द्रः । अनुष्टुप्, १ निचृत्, ५ विराड्जगती, ६ निचृदनुष्टुप् ।

यदुदः संप्रयतीरहावनदता हते ।
तस्मादा नद्योऽ३ नाम स्थ ता वो नामानि सिन्धवः १ ९२०
यत् प्रेषिता वरुणेनाच्छीभं समवल्गत ।
तदाप्नोदिन्द्रो वो यतीस्तस्मादापो अनु ष्ठन २
अपकामं स्यन्दमाना अवीवरत वो हि कम् ।
इन्द्रो वः शक्तिभिर्देवीस्तस्माद् वार्नाम वो हितम् ३
एको वो देवोऽप्यतिष्ठत् स्यन्दमाना यथावशम् ।
उदानिषुर्महीरिति तस्मादुदकमुच्यते ४
आपो भद्रा घृतमिदाप आसन्नग्नीषोमौ बिभ्रत्याप इत् ताः ।
तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत् ५
आदित् पश्याम्युत वा शृणोम्या मा घोषो गच्छति वाङ् मासाम् ।
मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अतृपं यदा वः ६ ९२५
इदं व आपो हृदयमयं वत्स ऋतावरीः । इहेत्थमेत शक्वरीर्यत्रेदं वेशयामि वः ७

॥१५६॥ (अथर्व० ७।३९।१)

प्रस्कण्वः । आपः, सुपर्णः, वृषभः । त्रिष्टुप् ।

दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तमपां गर्भं वृषभमोषधीनाम् ।
अभीपतो वृष्ट्या तर्पयन्तमा नो गोष्ठे रयिष्ठां स्थापयाति १

॥१५७॥ (अथर्व० १९।२।१-५)

सिन्धुद्वीपः । आपः । अनुष्टुप् ।

शं त आपो हैमवतीः शमु ते सन्तूत्स्याः । शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु वर्ष्याः १
शं त आपो धन्वन्याऽ३ः शं ते सन्त्वनूप्याः । शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः २ ९२९

*

अनभ्रयः खनमाना विप्रा गम्भीरे अपसः ।
भिषग्भ्यो भिषक्तरा आपो अच्छा वदामसि ३ ९३०
अपामहं दिव्यानामपां स्रोतस्यानाम् ।
अपामहं प्रणेजनेऽश्वा भवथ वाजिनः ४
ता अपः शिवा अपोऽयक्ष्मंकरणीरपः । यथैव तृप्यते मयस्तास्त आ दत्त भेषजीः ५

॥१५८॥ (अथर्व० १९।६९।१-४)

ब्रह्मा । आपः । १ आसुर्यनुष्टुप्; २ साम्यनुष्टुप्; ३ आसुरी गायत्री; ४ साम्युष्णिक् ।

जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् १
उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् २
संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ३ ९३५
जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ४

॥१५९॥ (वा० य० १।१२--१३,२१,३१)

(आपः ।)

सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
देवीरापो अग्रेगुवो अग्रेपुवोऽग्र इममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिꣳ सुधातुं यज्ञपतिं
देवयुवम् १२
युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षिता स्थ १३
समाप ओषधीभिः समोषधयो रसेन ।
सꣳरेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्तासꣳ सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम् २१
सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ३१ ९४०

॥१६०॥ (वा० य० २।२,३४)

(आपः ।)

अदित्यै व्युन्दनमसि २
ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् । स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन् ३४

॥१६१॥ (वा० य० ४।१,१२)

(आपः ।)

इमा आपः शमु मे सन्तु देवीः १
श्वात्राः पीता भवत यूयमापो ऽअस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः ।
ता अस्मभ्यमयक्ष्मा अनमीवा अनागसः स्वदन्तु देवीरमृता ऋतावृधः १२ ९४४

॥१६२॥ (वा० य० ५।११)

(आपः।)

इदमहं तप्तं वार्बहिर्धा यज्ञाग्निः सृजामि ११ ९४५

॥१६३॥ (वा० य० ६।१०,१३,३०-३१)

(आपः।)

आपो देवीः स्वदन्तु स्वाक्तं चित्सद् देवहविः १०

देवीरापः शुद्धा वोद्वꣳ सुपरिविष्टा देवेषु सुपरिविष्टा वयं परिवेष्टारो भूयास्म १३

निग्राभ्या स्थ देवश्रुतस्तर्पयत मा ३०

मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे
तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून् मे तर्पयत गणान् मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन् ३१

॥१६४॥ (वा० य० ६।१७,२२,२४,२७-२८)

(आपः।)

इदमापः प्रवहताद्यं च मलं च यत्।
यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्।
आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु १७ ९५०
मापो मौषधीर्हिꣳसीः।
सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः २२
अग्नेर्वोऽपन्नगृहस्य सदसि सादयामीन्द्राग्न्योर्भागधेयी स्थ मित्रावरुणयोर्भागधेयी स्थ
विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ।
अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् २४
देवीरापो अपां नपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान् मदिन्तमः।
तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा २७
समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः २८

॥१६५॥ (वा० य० ८।२६)

(आपः।)

देवीरापः एष वो गर्भस्तꣳ सुप्रीतꣳ सुभृतं बिभृत।
देवꣳ सोमैष ते लोकस्तस्मिञ्छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व २६ ९५५

॥१६६॥ (अथर्व० ६।१२४।१-३)

अथर्वा । दिव्या आपः (निर्ऋत्यपस्तरणम्)। त्रिष्टुप्।

दिवो नु मां बृहतो अन्तरिक्षादपां स्तोको अभ्यपप्तद् रसेन ।
समिन्द्रियेण पयसाहमग्ने छन्दोभिर्यज्ञैः सुकृतां कृतेन १
यदि वृक्षादभ्यपप्तत् फलं तद् यद्यन्तरिक्षात् स उ वायुरेव ।
यत्रास्पृक्षत् तन्वो३ यच्च वासस आपो नुदन्तु निर्ऋतिं पराचैः २
अभ्यञ्जनं सुरभि सा समृद्धिर्हिरण्यं वर्चस्तदु पुत्रिममेव ।
सर्वा पवित्रा वितताध्यस्मत् तन्मा तारीन्निर्ऋतिर्मो अरातिः ३

॥१६७॥ (अथर्व० ७।८९।१-४)

सिन्धुद्वीपः । अग्निः (दिव्या आपः)। अनुष्टुप्, ४ द्विपदा निचृत् परोष्णिक् ।

अपो दिव्या अचायिषं रसेन समपृक्ष्महि ।
पयस्वानग्न आगमं तं मा सं सृज वर्चसा १
सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ।
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः २ ९६०
इदमापः प्र वहतावद्यं च मलं च यत् । यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम् ३
एधोऽस्येधिषीय समिदसि समेधिषीय । तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ४

॥१६८॥ (अथर्व० १।४।४)

सिन्धुद्वीपः । आपः (अपां भेषजम्)। पुरस्ताद्बृहती ।

अप्स्व१न्तरमृतमप्सु भेषजम् ।
अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनीः ४

॥१६९॥ (अथर्व० १।६।४)

सिन्धुद्वीपः (अथर्वा कृतिर्वा)। आपः (अपां भेषजम्)। पथ्यापङ्क्तिः ।

शं न आपो धन्वन्या३ः शमु सन्त्वनूप्याः ।
शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकीः ४

॥१७०॥ (अथर्व० ६।२२।१-३)

शन्तातिः । १ आदित्यरश्मिः, २-३ मरुतः (भैषज्यम्) । त्रिष्टुप्, २ चतुष्पदा भुरिग्जगती ।

कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत् पतन्ति ।
त आववृत्रन्त्सदनादृतस्यादिद घृतेन पृथिवीं व्यू३दुः १ ९६५

पयस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षसः ।
ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु २
उदुप्रुतो मरुतस्ताँ इयर्त वृष्टिर्या विश्वा निवतस्पृणाति ।
एजाति ग्लहा कन्येव तुन्नैरु तुन्दाना पत्येव जाया ३

॥१७१॥ (अथर्व० ६।२३।१-३)

शन्तातिः । आपः (अपां भैषज्यम्)। १ अनुष्टुप्, २ त्रिपदा गायत्री, ३ परोष्णिक् ।

सस्रुषीस्तदपसो दिवा नक्तं च सस्रुषीः । वरेण्यक्रतुरहमपो देवीरुप ह्वये १
ओता आपः कर्मण्या मुञ्चन्त्वितः प्रणीतये। सद्यः कृण्वन्त्वेतवे २
देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः । शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवाः ३ ९७०

॥१७२॥ (अथर्व० ६।२४।१-३)

शन्तातिः । आपः (अपां भैषज्यम्) । अनुष्टुप् ।

हिमवतः प्र स्रवन्ति सिन्धौ समह संगमः ।
आपो ह मह्यं तद् देवीर्ददन् हृद्द्योतभेषजम् १
यन्मे अक्ष्योरादिद्योत पाष्ण्र्योः प्रपदोश्च यत् ।
आपस्तत् सर्वं निष्करन् भिषजां सुभिषक्तमाः २
सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्यः स्थन ।
दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै ३

॥१७३॥ (ऋ० ५।८३।१-१०)

भौमोऽत्रिः । पर्जन्यः । त्रिष्टुप्, २-४ जगती, ९ अनुष्टुप् ।

अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास ।
कनिक्रदद् वृषभो जीरदानू रेतो दधात्योषधीषु गर्भम् १
वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात् ।
उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत् पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः २ ९७५
रथीव कशयाश्वाँ अभिक्षिप्न आविर्दूतान् कृणुते वर्ष्याँ अह ।
दूरात् सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत् पर्जन्यः कृणुते वर्ष्यं नभः ३
प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः ।
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत् पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति ४ ९७७

यस्य व्रते पृथिवी नंनमीति यस्य व्रते शुफवज्जर्भुरीति ।
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ५
दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः ।
अर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेह्यपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः ६
अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन ।
दृतिं सु कर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः ७ १८०
महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात् ।
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघन्याभ्यः ८
यत् पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः ।
प्रतीदं विश्वं मोदते यत् किं च पृथिव्यामधि ९
अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभाया ऽकर्धन्वान्यत्येतवा उ ।
अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषां १०

॥१७४॥ (ऋ० १०।२७।१६)

ऐन्द्रो वसुक्रः । इन्द्रः (पर्जन्यः) । त्रिष्टुप् ।

दशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वन्ति क्रतवे पार्याय ।
गर्भं माता सुधितं वक्षणास्वर्वन्तं तुषयन्ती बिभर्ति १६

॥१७५॥ (ऋ० ७।१०१।१-६)

मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः (वृष्टिकामः), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः । त्रिष्टुप् ।

तिस्रो वाचः प्र वद ज्योतिरग्रा या एतद् दुह्रे मधुदोघमूधः ।
स वत्सं कृण्वन् गर्भमोषधीनां सद्यो जातो वृषभो रोरवीति १ १८५
यो वर्धन ओषधीनां यो अपां यो विश्वस्य जगतो देव ईशे ।
स त्रिधातु शरणं शर्म यंसत् त्रिवर्तु ज्योतिः स्वभिष्टयस्मे २
स्तरीरुं त्वद् भवति सूत उ त्वद् यथावशं तन्वं चक्र एषः ।
पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः ३
यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुस्तिस्रो द्यावस्त्रेधा सस्रुरापः ।
त्रयः कोशास उपसेचनासो मध्वः श्चोतन्त्युभितो विरप्शम् ४ १८८

इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत् ।
मयोभुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्द्यवगोपाः ५
स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।
तन्म ऋतं पातु शतशारदाय युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६ ९९०

॥१७६॥ (ऋ० ७।१०२।१-३)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः (वृष्टिकामः), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः । गायत्री, २ पादनिचृत् ।

पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळ्हुषे । स नो यवसमिच्छतु १
यो गर्भमोषधीनां गवां कृणोत्यर्वताम् । पर्जन्यः पुरुषीणाम् २
तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता मधुमत्तमम् । इळां नः संयतं करत् ३

॥१७७॥ (ऋ० ७।१०३।१-१०)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मण्डूकाः (पर्जन्यः) । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप् ।

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
वाचं पर्जन्यजिन्विताम् प्र मण्डूका अवादिषुः १
दिव्या आपो अभि यदेनमायन् दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम् ।
गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वग्नुरत्रा समेति २ ९९५
यदीमेनाँ उशतो अभ्यवर्षीत् तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम् ।
अक्खलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति ३
अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनोरपां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम् ।
मण्डूको यदभिवृष्टः कनिष्कन् पृश्निः संपृङ्क्ते हरितेन वाचम् ४
यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः ।
सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत् सुवाचो वदथनाध्यप्सु ५
गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम् ।
समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः ६
ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः ।
संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूव ७
ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् ।
अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित् ८ १००१

देवहितिं जुगुपुर्द्वादुशस्यं ऋतुं नरो न प्र मिनन्त्येते ।
संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तप्ता घर्मा अश्नुवते विसर्गम् ९
गोमायुरदादजमायुरदात् पृश्निरदाद्धरितो नो वर्ष्मनि ।
गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः १०

॥१७८॥ (अथर्व० ४।१५।१-१६)

अथर्वा । १ दिशः, २-३ वीरुधः, ४ मरुत्पर्जन्यौ, ५-१० मरुतः आपः, ११ प्रजापतिः स्तनयित्नुः, १२ वरुणः, १३-१५ मण्डूकाः पितरश्च, १६ वातः (वृष्टिः)। त्रिष्टुप्; १-२,५ विराड् जगती, ४ विराट् पुरस्ताद्बृहती; ७,१३ अनुष्टुप्, ९ पथ्यापङ्क्तिः, १० भुरिक्, १२ पञ्चपदानुष्टुब्गर्भा भुरिक्, १५ शंकुमत्यनुष्टुप् ।

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः समभ्राणि वातजूतानि यन्तु ।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु १
समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवोऽपां रसा ओषधीभिः सचन्ताम् ।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तामोषधयो विश्वरूपाः २ १००५
समीक्षयस्व गायतो नभस्यपां वेगासः पृथगुद् विजन्ताम् ।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तां वीरुधो विश्वरूपाः ३
गणास्त्वोप गायन्तु मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक् ।
सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु ४
उदीरयत मरुतः समुद्रतस्त्वेषो अर्को नभ उत् पातयाथ ।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु ५
अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधिं भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्ग्धि ।
त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्षमाशारैषी कृशगुरेत्वस्तम् ६
सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु ७ १०१०
आशामाशां वि द्योतता वाता वान्तु दिशोदिशः ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु ८
आपो विद्युदभ्रं वर्ष सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु ९
अपामग्निस्तनूभिः संविदानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।
स नो वर्ष वनुतां जातवेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्परि १० १०१३

प्रजापतिः सलिलादा समुद्रादार्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ ११
अपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः शमन्तु गमरा अपां वरुणाव नीचीरपः सृज ।
वदन्तु पृश्निबाहवो मण्डूका इरिणानु ॥ १२ १०१५
संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
वाचं पर्जन्यजिन्विता प्र मण्डूका अवादिषुः ॥ १३
उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि । मध्ये ह्रदस्य प्लवस्व विगृह्य चतुरः पदः ॥ १४
खण्वखा३इ खैमखा३इ मध्ये तदुरि । वर्ष वनुष्वं पितरो मरुतां मन इच्छत ॥ १५
महान्तं कोशमुदचाभि षिञ्च सविद्युतं भवतु वातु वातः ।
तन्वतां यज्ञं बहुधा विसृष्टा आनन्दिनीरोषधयो भवन्तु ॥ १६

॥१७९॥ (अथर्व० ७।१८।१--२)

अथर्वा । पृथिवी, पर्जन्यः (वृष्टिः) । १ चतुष्पदा भुरिगुष्णिक्, २ त्रिष्टुप् ।

प्र नभस्व पृथिवि भिन्द्धी३दं दिव्यं नभः ।
उद्नो दिव्यस्य नो धातरीशानो वि ष्या दृतिम् ॥ १ १०२०
न घ्रंस्तताप न हिमो जघान प्र नभतां पृथिवी जीरदानुः ।
आपश्चिदस्मै घृतमित् क्षरन्ति यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम् ॥ २

॥१८०॥ (ऋ० ३।३३।१-१३)

गाथिनो विश्वामित्रः; ४,६,८,१० नद्यः ऋषिकाः । नद्यः; ४,८,१० विश्वामित्रः; ६,७ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, १३ अनुष्टुप् ।

प्र पर्वतानामुशती उपस्था—दश्वे इव विषिते हासमाने ।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते ॥ १
इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः ।
समाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे ॥ २
अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म ।
वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनु संचरन्ती ॥ ३
एना वयं पयसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः ।
न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति ॥ ४
रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः ।
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषा ऽवस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः ॥ ५ १०२६

इन्द्रो अस्माँ अरदद् वज्रबाहु—रपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम् ।
देवोऽनयत् सविता सुपाणि—स्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः ६
प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं१ त—दिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत् ।
वि वज्रेण परिषदो जघाना—ऽऽयन्नापोऽयनमिच्छमानाः ७
एतद् वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत् ते घोषानुत्तरा युगानि ।
उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते ८
ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत यथौ वो दूरादनसा रथेन ।
नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः ९ १०३०
आ तें कारो शृणवामा वचांसि यथाथं दूरादनसा रथेन ।
नि तें नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै तें १०
यदङ्ग त्वा भरताः संतरेयु—र्गव्यन् ग्राम इषित इन्द्रजूतः ।
अर्षादहं प्रसवः सर्गतक्त आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम् ११
अतारिषुर्भरता गव्यवः स—मभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम् ।
प्र पिन्वध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्वं यात शीभम् १२
उद् वं ऊर्मिः शम्या ह—न्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत ।
मादुष्कृतौ व्येनसा—ऽघ्न्यौ शूनमारताम् १३

॥१८१॥ (ऋ० ७।५०।४)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । नद्यः । अतिजगती शक्करी वा ।

याः प्रवतो निवतं उद्वतं उदन्वतीरनुदकाश्च याः ।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा देवीरशिपदा भवन्तु
सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु ४ १०३५

॥१८२॥ (ऋ० १०।७५।१-९)

सिन्धुक्षित् प्रैयमेधः । नद्यः । जगती ।

प्र सु वं आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः ।
प्र सप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सृत्वरीणामति सिन्धुरोजसा १
प्र तेऽरदद् वरुणो यातवे पथः सिन्धो यद् वाजाँ अभ्यद्रवस्त्वम् ।
भूम्या अधि प्रवता यासि सानुना यदेषामग्रं जगतामिरज्यसि २ १०३७

दिवि स्वनो यतते भूम्योप—र्यनन्तं शुष्ममुदियर्ति भानुना ।
अभ्रादिव प्र स्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत् ३
अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः ।
राजेव युध्वा नयसि त्वमित् सिचौ यदासामग्रं प्रवतामिनक्षसि ४
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या ।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तया—ऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ५ १०४०
तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्या त्या ।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्नू वा सरथं याभिरीयसे ६
ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि ज्रयांसि भरते रजांसि ।
अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमा—ऽश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता ७
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती ।
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम् ८
सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ ।
महान् ह्यस्य महिमा पनस्यते ऽदब्धस्य स्वयशसो विरुश्मिनः ९

॥१८३॥ (ऋ० ७।९५।३)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वान् । त्रिष्टुप् ।

स वावृधे नर्यो योषणासु वृषा शिशुर्वृषभो यज्ञियासु ।
स वाजिनं मघवद्भ्यो दधाति वि सातये तन्वं मामृजीत ३ १०४५

॥१८४॥ (ऋ० ७।९६।४--६)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वान् । गायत्री ।

जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः । सरस्वन्तं हवामहे ४
ये ते सरस्व ऊर्मयो मधुमन्तो घृतश्चुतः । तेभिर्नोऽविता भव ५
पीपिवांसं सरस्वतः स्तनं यो विश्वदर्शतः । भक्षीमहि प्रजामिषम् ६

॥१८५॥ (अथर्व० ७।४०।१-२)

प्रस्कण्वः । सरस्वान् । १ भुरिक्, २ त्रिष्टुप् ।

यस्य व्रतं पशवो यन्ति सर्वे यस्य व्रत उपतिष्ठन्त आपः ।
यस्य व्रते पुष्टपतिर्निविष्टस्तं सरस्वन्तमवसे हवामहे १ १०४९

आ प्रत्यञ्चं दाशुषे दाश्वंसं सरस्वन्तं पुष्टपतिं रयिष्ठाम् ।
रायस्पोषं श्रवस्युं वसाना इह हुवेम सदनं रयीणाम् २ १०५०

॥१८६॥ (ऋ० १।३।१०-१२)

मधुच्छन्दावैश्वामित्रः । सरस्वती । गायत्री ।

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः १०
चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् । यज्ञं दधे सरस्वती ११
महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति १२

॥१८७॥ (ऋ० १।१६४।४९)

दीर्घतमा औचथ्यः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि ।
यो रत्नधा वसुविद् यः सुदत्रः सरस्वति तमिह धातवे कः ४९

×॥१८८॥ (ऋ० २।३०।८ [पूर्वार्धः])

गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्राः पश्चाद् भार्गवः) शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून् ८ १०५५

॥१८९॥ (ऋ० २।४१।१६-१८)

गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः) शौनकः । सरस्वती । अनुष्टुप्, १८ बृहती ।

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति ।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि १६
त्वे विश्वा सरस्वति श्रितायूंषि देव्याम् ।
शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवि दिदिड्ढि नः १७
इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति ।
या ते मन्म गृत्समदा ऋतावरि प्रिया देवेषु जुह्वति १८

॥१९०॥ (ऋ० ६।६१।१-१४)

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । सरस्वती । गायत्री, १-३,१३ जगती; १४ त्रिष्टुप् ।

इयमददाद् रभसमृणच्युतं दिवोदासं वध्र्यश्वाय दाशुषे ।
या शश्वन्तमाचखादावसं पणिं ता ते दात्राणि तविषा सरस्वति १
इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत् सानु गिरीणां तविषेभिरूर्मिभिः ।
पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः २ १०६०

× दै० [इन्द्रः] १२३३

सरस्वति देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसयस्य मायिनः ।
उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमेभ्यो असवो वाजिनीवति ३
प्र णो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । धीनामवित्र्यवतु ४
यस्त्वा देवि सरस्व त्युपब्रुते धने हिते । इन्द्रं न वृत्रतूर्ये ५
त्वं देवि सरस्व त्यवा वाजेषु वाजिनि । रदा पूषेव नः सनिम् ६
उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः । वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम् ७ १०६५
यस्या अनन्तो अहुत स्त्वेषश्चरिष्णुरर्णवः । अमश्चरति रोरुवत् ८
सा नो विश्वा अति द्विषः स्वसृरन्या ऋतावरी । अतन्नहेव सूर्यः ९
उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सजुष्टा । सरस्वती स्तोम्या भूत् १०
आपप्रुषी पार्थिवा न्युरु रजो अन्तरिक्षम् । सरस्वती निदस्पातु ११
त्रिषधस्था सप्तधातुः पञ्च जाता वर्धयन्ती । वाजेवाजे हव्या भूत् १२ १०७०
प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तमा ।
रथ इव बृहती विभ्वने कृतो स्तुत्या चिकितुषा सरस्वती १३
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो मापस्फरीः पयसा मा न आ धक् ।
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत् क्षेत्राण्यरणानि गन्म १४

॥१९१॥ (ऋ० ७।९५।१-२,४-६)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

प्र क्षोदसा धायसा सस्र एषा सरस्वती धरुणमायसी पूः ।
प्रबाबधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः १
एकाचेतत् सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात् ।
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृतं पयो दुदुहे नाहुषाय २
उत स्या नः सरस्वती जुषाणोप श्रवत् सुभगा यज्ञे अस्मिन् ।
मितज्ञुभिर्नमस्यैरियाना राया युजा चिदुत्तरा सखिभ्यः ४ १०७५
इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः प्रति स्तोमं सरस्वति जुषस्व ।
तव शर्मन् प्रियतमे दधाना उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम् ५
अयग्मन् ते सरस्वति वसिष्ठो द्वारावृतस्य सुभगे व्यावः ।
वर्धे शुभ्रे स्तुवते रासि वाजान् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६ १०७७

॥१९२॥ (ऋ० ७।९६।१--३)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वती । १--२ प्रगाथः- (१ बृहती, २ सतो बृहती), ३ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

बृहद्दु गायिषे वचो ऽसुर्या नदीनाम् ।
सरस्वतीमिन्महया सुवृक्तिभिः स्तोमैर्वसिष्ठ रोदसी १
उभे यत् तें महिना शुभ्रे अन्धसी अधिक्षियन्ति पूरवः ।
सा नो बोध्यवित्री मरुत्सखा चोदु राधो मघोनाम् २
भद्रमिद् भद्रा कृणवत् सरस्व—त्यकवारी चेतति वाजिनीवती ।
गृणाना जमदग्निवत् स्तुवाना च वसिष्ठवत् ३ १०८०

॥१९३॥ (ऋ२ १०।१७।१-२,७--९)

देवश्रवा यामायनः । १-२ सरण्यूः, ७-९ सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोती—तीदं विश्वं भुवनं समेति ।
यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश १
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वी सवर्णामददुर्विवस्वते ।
उताश्विनावभरद् यत् तदासी—दजहादु द्वा मिथुना सरण्यूः २
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ७
सरस्वति या सरथं ययाथ स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयस्वा—ऽनमीवा इष आ धेह्यस्मे ८
सरस्वतीं यां पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।
सहस्रार्घमिळो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानेषु धेहि ९ १०८१

॥१९४॥ (अथर्व० ७।१०।१)

शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते स्तनः शशयुर्यो मयोभूर्यः सुम्नयुः सुहवो यः सुदत्रः ।
येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवे कः १

॥१९५॥ (अथर्व० ७।११।१)

शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते पृथु स्तनयित्नुर्य ऋष्वो दैव्यः केतुर्विश्वमाभूषतीदम् ।
मा नो वधीर्विद्युता देव सस्यं मोत वधी रश्मिभिः सूर्यस्य १ १०८२

॥१९६॥ (अथर्व० ७।५७।१-२)

वामदेवः। सरस्वती। जगती।

यदाशसा वदतो मे विचुक्षुभे यद् याचमानस्य चरतो जनाँ अनु।
यदात्मनि तन्वो मे विरिष्टं सरस्वती तदा पृणद् घृतेन १
सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवृतन्नृतानि।
उभे इदस्योभे अस्य राजत उभे यतेते उभे अस्य पुष्यतः २

॥१९७॥ (अथर्व० ७।६८।१-३)

शन्तातिः। सरस्वती। १ अनुष्टुप्, २ त्रिष्टुप्, ३ गायत्री।

सरस्वति व्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु। जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि ररास्व नः १ १०९०
इदं ते हव्यं घृतवत् सरस्वतीदं पितॄणां हविरास्यं यत्।
इमानि त उदिता शंतमानि तेभिर्वयं मधुमन्तः स्याम २
शिवा नः शंतमा भव सुमृडीका सरस्वति। मा ते युयोम संदृशः ३

॥१९८॥ (वा० य० १०।१-४,६,१९)

(आपः।)

अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वती राजस्वुश्चितानाः।
याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन् याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः १

वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि २

अर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहार्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापः परिवाहिणीः स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहापः परिवाहिणीः स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देह्यपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ३ १०९५

सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त व्रजक्षितः स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा व्रजक्षितः स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त जनभृतः स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा

जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त विश्वभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा विश्वभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापः स्वराज स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त । मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्तां महि क्षत्रं क्षत्रियाय वन्वाना अनाधृष्टाः सीदत सहौजसो महि क्षत्रं क्षत्रियाय दधतीः ४

सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
अनिभृष्टमसि वाचो बन्धुस्तपोजाः सोमस्य दात्रमसि स्वाहा राजस्वः ६
प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिचः इयानाः ।
ता आववृत्रन्नधरागुदक्ता अहिं बुध्न्यमनु रीयमाणाः १९

॥१९९॥ (वा० य० ११।३८)
(आपः ।)

अपो देवीरुपसृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः ।
तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः ३८

॥२००॥ (वा० य० १२।३५,५५)
(आपः ।)

आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत् स्योने कृणुध्वꣳ सुरभा उ लोके ।
तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत् ३५ ११००
ता अस्य सूददोहसः सोमꣳ श्रीणन्ति पृश्नयः ।
जन्मन् देवानां विशस्त्रिष्वा रोचने दिवः ५५

॥२०१॥ (वा० य० १४।८)
(आपः ।)

अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव चतुष्पात् पाहि दिवो वृष्टिमेरय ८

॥२०२॥ (वा० य० २०।१८-२०,२२-२३)
(आपः ।)

यदापो अघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।
अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्ष्यव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि १८
समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।
सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः १९
द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः २० ११०१

अपो अद्यान्वचारिषꣳ रसेन समसृक्ष्महि ।
पयस्वानग्न आगमं तं मा सꣳ सृज वर्चसा प्रजया च धनेन च २२
एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजो मयि धेहि २३ ११०७

अन्नादिकम्। (११०८-१३३१)

॥२०३॥ (ऋ० १।१८७।१-११)

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। अन्नं। १ अनुष्टुब्गर्भा उष्णिक्। ३,५-७,११ अनुष्टुप्; (११ बृहती वा); २,४,८-१० गायत्री।

पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम् । यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत्+ १
स्वादो पितो मधो पितो वयं त्वा ववृमहे । अस्माकमविता भव २
उप नः पितवा चर शिवः शिवाभिरूतिभिः। मयोभुरद्विषेण्यः सखा सुशेवो अद्वयाः ३ १११०
तव त्ये पितो रसा रजांस्यनु विष्ठिताः । दिवि वाता इव श्रिताः ४
तव त्ये पितो ददत—स्तव स्वादिष्ठ ते पितो । प्र स्वाञ्चानो रसानां तुविग्रीवा इवेरते ५
त्वे पितो महानां देवानां मनो हितम् । अकारि चारु केतुना तवाहिमवसावधीत् ६
यदुदो पितो अजगन् दिवस्पर्वतानाम् । अत्रा चिन्नो मधो पितो ऽरं भक्षाय गम्याः ७
यदुपामोषधीनां परिशमारिशामहे । वातापे पीव इद् भव ८ १११५
यत् ते सोम गवाशिरो यवाशिरो भजामहे । वातापे पीव इद् भव ९
करम्भ ओषधे भव पीवो वृक्क उदाराथिः । वातापे पीव इद् भव १०
तं त्वा वयं पितो वचोभि—र्गावो न हव्या सुषूदिम ।
देवेभ्यस्त्वा सधमाद—मस्मभ्यं त्वा सधमादम् ११

॥२०४॥ (अथर्व० ६।७१।१-३)

ब्रह्मा। अग्निः, ३ वैश्वानरः, देवाः (अन्नम्)। जगती, ३ त्रिष्टुप्।

यदन्नमग्निं बहुधा विरूपं हिरण्यमश्वमुत गामजामविम् ।
यदेव किं च प्रतिजग्रहाहमग्निष्टद्धोता सुहुतं कृणोतु १
यन्मा हुतमहुतमाजगाम दत्तं पितृभिरनुमतं मनुष्यैः ।
यस्मान्मे मन उदिव रारंजीत्यग्निष्टद्धोता सुहुतं कृणोतु २
यदन्नमद्यनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नुत सेंगृणामि ।
वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मह्यं मधुमदस्त्वन्नम् ३ ११२१

+ऋ० १,१८७,१; वा० य० ३४,७; काण्व ३३,१।

॥२०५॥ (अथर्व० ७।५८।१--२)

कौरुपथिः । इन्द्रावरुणौ (अन्नम्) । १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रतौ ।
युवो रथो अध्वरो देववीतये प्रति स्वसरमुप याातु पीतये १
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम् ।
इदं वामन्धः परिषिक्तमासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयेथाम् २

॥२०६॥ (अथर्व० ६।१४२।१-३)

विश्वामित्रः । वायुः (अन्नसमृद्धिः) । अनुष्टुप् ।

उच्छ्रयस्व बहुर्भव स्वेन महसा यव । मृणीहि विश्वा पात्राणि मा त्वा दिव्याशनिर्वधीत् १
आशृण्वन्तं यवं देवं यत्र त्वाच्छावदामसि । तदुच्छ्रयस्व द्यौरिव समुद्र इवैध्यक्षितः २ ११२५
अक्षितास्त उपसदोऽक्षिताः सन्तु राशयः । पुणन्तो अक्षिताः सन्त्वत्तारः सन्त्वक्षिताः ३

॥२०७॥ (अथर्व० ११।३।१-५६)

[प्रथमः पर्यायः । १-३१]

अथर्वा । ओदनः (बार्हस्पत्यौदनः) ।

१,१४ आसुरी गायत्री; २ त्रिपदा समविषमा गायत्री; ३, ६,१० आसुरी पङ्क्तिः; ४.८ साम्न्यनुष्टुप्; ५.१३,१५,२५ साम्न्युष्णिक्; ७,१९-२२ प्राजापत्या-ऽनुष्टुप्; ९,१७-१८ आसुर्यनुष्टुप्; ११ भुरिगार्च्यनुष्टुप्; १२ याजुषी जगती; १६,२३ आसुरी बृहती; २४ त्रिपदा प्राजापत्या बृहती; २६ आर्च्युष्णिक्; २७--२९ साम्नी बृहती (२८-२९ भुरिक्); ३० याजुषी त्रिष्टुप्; ३१ अल्पशः पङ्क्तिरुत याजुषी ।

तस्यौदनस्य बृहस्पतिः शिरो ब्रह्म मुखम् १
द्यावापृथिवी श्रोत्रे सूर्याचन्द्रमसावक्षिणी सप्तऋषयः प्राणापानाः २
चक्षुर्मुसलं काम उलूखलम् ।३। दितिः शूर्पमदितिः शूर्पग्राही वातोऽपाविनक् ४ ११३०
अश्वाः कणा गावस्तण्डुला मशकास्तुषाः ५
कर्बु फलीकरणाः शरोऽभ्रम् ६
श्याममयोऽस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम् ७
त्रपु भस्म हरितं वर्णः पुष्करमस्य गन्धः ८
खलः पात्रं स्फ्यावंसावीषे अनूक्ये ।९। आन्त्राणि जत्रवो गुदा वरत्राः १०
इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्यौदनस्य द्यौरपिधानम् ११
सीताः पर्शवः सिकता ऊबध्यम् ।१२। ऋतं हस्तावनेजनं कुल्योपसेचनम् १३ ११३१

ऋचा कुम्भ्यधिहितार्त्विज्येन प्रेषिता १४ ११४०
ब्रह्मणा परिगृहीता साम्ना पर्यूढा ।१५। बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः १६
ऋतवः पक्त्रार आर्तवाः समिन्धते ।१७। चरुं पञ्चबिलमुखं घर्मो३ भीन्धे १८
ओदनेन यज्ञवचः सर्वे लोकाः समाप्याः १९ ११४५
यस्मिन्त्समुद्रो द्यौर्भूमिस्त्वयोऽवरपरं श्रिताः २०
यस्य देवा अकल्पन्तोच्छिष्टे षडशीतयः २१
तं त्वौदनस्य पृच्छामि यो अस्य महिमा महान् २२
स य ओदनस्य महिमानं विद्यात् २३
नाल्प इति ब्रूयान्नानुपसेचन इति नेदं च किं चेति २४ ११५०
यावद् दातारमिमनस्येत तन्नाति वदेत् २५
ब्रह्मवादिनो वदन्ति परांश्चमोदनं प्राशी३: प्रत्यञ्चा३मिति २६
त्वमोदनं प्राशी३स्त्वामोदना३ इति २७
परांश्चं चैनं प्राशीः प्राणास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह २८
प्रत्यञ्चं चैनं प्राशीरपानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह २९ ११५५
नैवाहमोदनं न मामोदनः ।३०। ओदन एवौदनं प्राशीत् ३१

[द्वितीयः पर्यायः । ३२--४९]

मन्त्रोक्ताः । ३२,३८,४१ (प्रथमा), ३२-४९ (सप्तमी) साम्नी त्रिष्टुप्; ३२,३५,४२ (द्वितीया), ३२-४९ (तृतीया), ३३-३४,४४-४८ (पञ्चमी) एकपदाऽऽसुरी गायत्री; ३२,४१,४३,४७ दैवी जगती; ३८,४४,४६ (द्वि०), ३२,३५-४३,४९ (पञ्चमी) एकपदाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ३२-४९ (षष्ठी) साम्न्यनुष्टुप्; ३३--४९ (प्र०) आर्च्यनुष्टुप्; ३७ (प्र०) साम्नी पङ्क्तिः; ३३,३६,४०, ४७--४८ (द्वि०) आसुरी जगती; ३४,३७,४१,४३,४५ (द्वि०) आसुरी पङ्क्तिः; ३४ (चतुर्थी) आसुरी त्रिष्टुप्; ३५,४६,४८ (च०) याजुषी गायत्री; ३६--३७,४० (च०) दैवी पङ्क्तिः; ३८--३९ (च०) प्राजापत्या गायत्री; ३९ (द्वि०) आसुर्युष्णिक्; ४२,४५,४९ (चतुर्थी) दैवी त्रिष्टुप्; ४९ (द्वि०) एकपदा भुरिक्साम्नी बृहती।

ततश्चैनमन्येन शीर्ष्णा प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
ज्येष्ठतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह ।२।
तं वा अहं नार्वाञ्चं न परांञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
बृहस्पतिना शीर्ष्णा ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३२ ११५८

तर्तश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
बधिरो भविष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
द्यावापृथिवीभ्यां श्रोत्राभ्याम् ।४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३३

तर्तश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
अन्धो भविष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
सूर्याचन्द्रमसाभ्यामक्षीभ्याम् ।४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३४ ११६०

तर्तश्चैनमन्येन मुखेन प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
मुखतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
ब्रह्मणा मुखेन ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३५

तर्तश्चैनमन्यया जिह्वया प्राशीर्यया चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
जिह्वा ते मरिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
अग्नेर्जिह्वया ।४। तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३६

तर्तश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
दन्तास्ते शत्स्यन्तीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
ऋतुभिर्दन्तैः ।४। तैरेनं प्राशिषं तैरेनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३७ ११६३

तर्तश्चैनमन्यैः प्राणापानैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
प्राणापानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

सप्तर्षिभिः प्राणापानैः ।४। तेरेनं प्राशिषं तैरेनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एष सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३८

ततश्चैनमन्येन व्यचसा प्राशीर्येनं चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
राजयक्ष्मस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
अन्तरिक्षेण व्यचसा ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३९ ११६५

ततश्चैनमन्येन पृष्ठेन प्राशीर्येनं चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
विद्युत् त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
दिवा पृष्ठेन ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद७। ४०

ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीर्येनं चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
कृष्या न रात्स्यसीत्येनमाह २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
पृथिव्योरसा ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ४१

ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीर्येनं चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
उदुरदारस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
सत्येनोदरेण ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ४२ ११६८

ततश्चैनमन्येन वस्तिना प्राशीर्येनं चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
अप्सु मरिष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
समुद्रेण वस्तिना ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ४३

ततश्चैनमन्याभ्यामूरुभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
ऊरू ते मरिष्यत इत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
मित्रावरुणयोरूरुभ्याम् ।४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद। ७। ४४ ११७०

ततश्चैनमन्याभ्यामष्ठीवद्भ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
स्रामो भविष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
त्वष्टुरष्ठीवद्भ्याम् ।४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ४५

ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
बहुचारी भविष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
अश्विनोः पादाभ्याम् ।४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ४६

ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
सर्पस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
सवितुः प्रपदाभ्याम् ।४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ४७

ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
ब्राह्मणं हनिष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
ऋतस्य हस्ताभ्याम् ।४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ४८ ११७४

तर्त्तश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया प्राशीर्यया चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।१।
अप्रतिष्ठानोऽनायतनो मरिष्यसीत्येनमाह ।२।
तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।
सत्ये प्रतिष्ठायं ।४। तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम् ।५।
एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ४९ ११७५

[तृतीयः पर्यायः । ५०-५६]

मन्त्रोक्ताः । ५० आसुर्यनुष्टुप्; ५१ आर्च्युष्णिक्; ५२ त्रिपदा भुरिक् साम्नी त्रिष्टुप्; ५३ आसुरी बृहती; ५४ द्विपदा भुरिक् साम्नी बृहती; ५५ साम्न्युष्णिक्; ५६ प्राजापत्या बृहती ।

एतद् वै ब्रह्मस्य विष्टपं यदोदनः ५०
ब्रह्मलोको भवति ब्रह्मस्य विष्टपि श्रयते य एवं वेद ५१
एतस्माद् वा ओदनात् त्रयस्त्रिंशतं लोकान् निरमिमीत प्रजापतिः ५२
तेषां प्रज्ञानाय यज्ञमसृजत ५३
स य एवं विदुषं उपद्रष्टा भवति प्राणं रुणद्धि ५४ ११८०
न च प्राणं रुणद्धि सर्वज्यानिं जीयते ५५
न च सर्वज्यानिं जीयते पुरैनं जरसः प्राणो जहाति ५६

॥२०८॥ (अथर्व० ९।५।१-३८)

भृगुः । पञ्चौदनोऽजः; मन्त्रोक्ताः । त्रिष्टुप्; २ चतुष्पदा पुरोऽतिशाक्करी जगती; ४.१० जगती; १४.१७,२७-३० अनुष्टुप् (३० ककुम्मती); १६ त्रिपदाऽनुष्टुप्; १८,३७ त्रिपदा विराड् गायत्री; २३ पुर उष्णिक्; २४ पञ्चपदाऽनुष्टुबुष्णिग्गर्भोपरिष्टाद्विराड् जगती; २०-२२,२६ पञ्चपदाऽनुष्टुबुष्णिग्गर्भोपरिष्टाद्बार्हता भुरिक्; ३१ सप्तपदाऽष्टिः; ३२-३५ दशपदा प्रकृतिः; ३६ दशपदाऽऽकृतिः; ३८ एकावसाना द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

आ नयैतमा रभस्व सुकृतां लोकमपि गच्छतु प्रजानन् ।
तीर्त्वा तमांसि बहुधा महान्त्यजो नाकमा क्रमतां तृतीयम् १
इन्द्राय भागं परि त्वा नयाम्यस्मिन् यज्ञे यजमानाय सूरिम् ।
ये नो द्विषन्त्यनु तान् रभस्वानागसो यजमानस्य वीराः २ ११८४

प्र पदोऽवं नेनिग्धि दुश्चरितं यच्चचार शुद्धैः शफैरा क्रमतां प्रजानन् ।
तीर्त्वा तमाँसि बहुधा विपश्यन्नजो नाकमा क्रमतां तृतीयम् ३ ११८५
अनु च्छय श्यामेन त्वचमेतां विंशस्तयथापर्वा सिना माभि मँस्थाः ।
माभि द्रुहः परुशः कल्पयैनं तृतीये नाके अधि वि श्रयैनम् ४
ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ श्रयाम्या सिञ्चोदुकमव धेह्येनम् ।
पर्याधत्ताग्निना शमितारः शृतो गच्छतु सुकृतां यत्र लोकः ५
उत् क्रामातः परि चेदतप्तस्तप्ताच्चरोरधि नाकं तृतीयम् ।
अग्नेरग्निरधि सं बभूविथ ज्योतिष्मन्तमभि लोकं जयैतम् ६
अजो अग्निरजमु ज्योतिराहुरजं जीवता ब्रह्मणे देयमाहुः ।
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिल्लोके श्रद्धानेन दत्तः ७
पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमतामाक्रंस्यमानस्त्रीणि ज्योतींषि ।
ईजानानां सुकृतां प्रेहि मध्यं तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व ८ ११९०
अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः शरभो न चत्तोऽतिं दुर्गाण्येषः ।
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानः स दातारं तृप्त्या तर्पयाति ९
अजस्त्रिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठे नाकस्य पृष्ठे दंदिवांसं दधाति ।
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुघास्येका १०
एतद् वो ज्योतिः पितरस्तृतीयं पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिल्लोके श्रद्धानेन दत्तः ११
ईजानानां सुकृतां लोकमीप्सन् पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।
स व्याप्तिमभि लोकं जयैतं शिवोऽस्मभ्यं प्रतिगृहीतो अस्तु १२
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकाद् विप्रो विप्रस्य सहसो विपश्चित् ।
इष्टं पूर्तमभिपूर्तं वषट्कृतं तद् देवा ऋतुशः कल्पयन्तु १३ ११९५
अमोतं वासो दद्याद्धिरण्यमपि दक्षिणाम् ।
तथा लोकान्त्समाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः १४
एतास्त्वाजोप यन्तु धाराः सोम्या देवीर्घृतपृष्ठा मधुश्चुतः ।
स्तभान पृथिवीमुत द्यां नाकस्य पृष्ठेऽधि सप्तरश्मौ १५
अजोऽस्यजं स्वर्गोऽसि त्वया लोकमाङ्गिरसः प्राजानन् । तं लोकं पुण्यं प्र ज्ञेषम् १६
येना सहस्रं वहसि येनाग्ने सर्ववेदसम् । तेनेमं यज्ञं नो वह स्वर्देवेषु गन्तवे १७ ११९९

अजः पक्वः स्वर्गे लोके दधाति पञ्चौदनो निर्ऋतिं बाधमानः ।
तेन लोकान्त्सूर्यवतो जयेम १८ १२००
यं ब्राह्मणे निदधे यं च विक्षु या विप्रुष ओदनानामजस्य ।
सर्वं तदग्ने सुकृतस्य लोके जानीतान्नः संगमने पथीनाम् १९
अजो वा इदमग्रे व्यक्रमत तस्योरः इयमभवद् द्यौः पृष्ठम् ।
अन्तरिक्षं मध्यं दिशः पार्श्वे समुद्रौ कुक्षी २०
सत्यं चर्तं च चक्षुषी विश्वं सत्यं श्रद्धा प्राणो विराट् शिरः ।
एष वा अपरिमितो यज्ञो यदजः पञ्चौदनः २१
अपरिमितमेव यज्ञमाप्नोत्यपरिमितं लोकमव रुन्धे ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति २२
नास्यास्थीनि भिन्द्यान्न मज्ञो निर्धयेत् । सर्वमेनं समादायेदमिदं प्र वेशयेत् २३ १२०५
इदमिदमेवास्य रूपं भवति तेनैनं सं गमयति ।
इषं मह ऊर्जमस्मै दुहे योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति २४
पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि वस्त्रा पञ्चास्मै धेनवः कामदुघा भवन्ति ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति २५
पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै भवन्ति वर्म वासांसि तन्वे भवन्ति ।
स्वर्गं लोकमश्नुते योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति २६
या पूर्वं पतिं वित्त्वाथान्यं विन्दतेऽपरम्। पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वि योषतः २७
समानलोको भवति पुनर्भुवापरः पतिः। योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति २८ १२१०
अनुपूर्ववत्सां धेनुमनड्वाहमुपबर्हणम् । वासो हिरण्यं दत्त्वा ते यन्ति दिवमुत्तमाम् २९
आत्मानं पितरं पुत्रं पौत्रं पितामहम् । जायां जनित्रीं मातरं ये प्रियास्तानुप ह्वये ३०
यो वै नैदाघं नामर्तुं वेद । एष वै नैदाघो नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ३१
यो वै कुर्वन्तं नामर्तुं वेद । कुर्वतीं कुर्वतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वै कुर्वन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ३२ १२१४

यो वै संयन्तं नामर्तुं वेद । संयतींसंयतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वै संयन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ३३ १२१५
यो वै पिन्वन्तं नामर्तुं वेद । पिन्वतींपिन्वतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वै पिन्वन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ३४
यो वा उद्यन्तं नामर्तुं वेद । उद्यतीमुद्यतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वा उद्यन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ३५
यो वा अभिभुवं नामर्तुं वेद ।
अभिभवन्तीमभिभवन्तीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वा अभिभूर्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ३६
अजं च पचत पञ्च चौदनान् ।
सर्वा दिशः संमनसः सध्रीचीः सान्तर्देशाः प्रति गृह्णन्तु त एतम् ३७
तास्ते रक्षन्तु तव तुभ्यमेतं ताभ्य आज्यं हविरिदं जुहोमि ३८ १२२०

॥२०९॥ (अथर्व० ४।३४।१-८)

अथर्वा । ब्रह्मौदनम् । त्रिष्टुप्, ४ उत्तमा भुरिक्, ५ व्यवसाना सप्तपदा कृतिः; ६ पञ्चपदातिशक्करी, ७ भुरिक् शक्करी, ८ जगती ।

ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य पृष्ठं वामदेव्यमुदरमोदनस्य ।
छन्दांसि पक्षौ मुखमस्य सत्यं विष्टारी जातस्तपसोऽधि यज्ञः १
अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः शुचयः शुचिमपि यन्ति लोकम् ।
नैषां शिश्नं प्र दहति जातवेदाः स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेषाम् २
विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनानवर्तिः सचते कदा चन ।
आस्ते यम उप याति देवान्त्सं गन्धर्वैर्मदते सोम्येभिः ३ १२२३

विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनान् यमः परि मुष्णाति रेतः ।
रथी हि भूत्वा रथयानं ईयते पक्षी हि भूत्वाति दिवः समेति ४
एष यज्ञानां विततो बर्हिष्ठो विष्टारिणं पक्त्वा दिवमा विवेश ।
आण्डीकं कुमुदं सं तनोति बिसं शालूकं शफको मुलाली ।
एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः ५ १२१५
घृतह्रदा मधुकूलाः सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना ।
एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः ६
चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णाँ उदकेन दध्ना ।
एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः ७
इममोदनं नि दधे ब्राह्मणेषु विष्टारिणं लोकजितं स्वर्गम् ।
स मे मा क्षेष्ट स्वधया पिन्वमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुघा मे अस्तु ८

॥११०॥ (अथर्व० ११।१।१--३७)

ब्रह्मा । ओदनः (ब्रह्मौदनम्) । त्रिष्टुप्; १ अनुष्टुब्गर्भा भुरिक्पङ्क्तिः; २ बृहतीगर्भा विराट्; ३ चतुष्पदा शाकरगर्भा जगती; ४,१५--१६,२९,३१ भुरिक्; ५ बृहतीगर्भा विराट्; ६ उष्णिक्; ८ विराड् गायत्री; ९ शाकरातिजागतगर्भा जगती; १० विराट् पुरोऽतिजगती विराड्जगती; ११ जगती; १७,२१,२४ २६,३७ विराड् जगती; १८ अतिजागतगर्भा परातिजागता विराडतिजगती; २० अतिजागतगर्भा परा शाकरा चतुष्पदा भुरिग्जगती; २७ अतिजागतगर्भा जगती; ३५ चतुष्पदा ककुम्मत्युष्णिक्; ३६ पुरोविराट्
(व्याघ्राविष्ववगन्तव्या)

अग्ने जायस्वादितिर्नाथितेयं ब्रह्मौदनं पचति पुत्रकामा ।
सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वा मन्थन्तु प्रजया सहेह १
कृणुत धूमं वृषणः सखायोऽद्रोघाविता वाचमच्छ ।
अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवा असहन्त दस्यून् २
अग्नेऽजनिष्ठा महते वीर्याय ब्रह्मौदनाय पक्तवे जातवेदः ।
सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वाजीजनन्नस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ ३ ११३१

समिद्धो अग्ने समिधा समिध्यस्व विद्वान् देवान् यज्ञियाँ एह वक्षः ।
तेभ्यो हविः श्रपयं जातवेद उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् ४
त्रेधा भागो निहितो यः पुरा वो देवानां पितॄणां मर्त्यानाम् ।
अंशान् जानीध्वं वि भजामि तान् वो यो देवानां स इमां पारयाति ५
अग्ने सहस्वानभिभूरभीदसि नीचो न्युञ्ज द्विषतः सपत्नान् ।
इयं मात्रा मीयमाना मिता च सजातांस्ते बलिहृतः कृणोतु ६
साकं संजातैः पयसा सहैध्युदुम्बरेनां महते वीर्याय ।
ऊर्ध्वो नाकस्याधि रोह विष्टपं स्वर्गो लोक इति यं वदन्ति ७ १२३५
इयं मही प्रति गृह्णातु चर्म पृथिवी देवी सुमनस्यमाना ।
अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् ८
एतौ ग्रावाणौ सयुजा युङ्ग्धि चर्मणि निर्भिन्ध्यंशून् यजमानाय साधु ।
अवघ्नती नि जहि य इमां पृतन्यवं ऊर्ध्वं प्रजामुद्धरन्त्युद्वहं ९
गृह्णाण ग्रावाणौ सुकृतौ वीर हस्त आ ते देवा यज्ञियां यज्ञमगुः ।
त्रयो वरा यतमांस्त्वं वृणीषे तास्ते समृद्धीरिह राधयामि १०
इयं ते धीतिरिदमु ते जनित्रं गृह्णातु त्वामदितिः शूरपुत्रा ।
परा पुनीहि य इमां पृतन्यवोऽस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ ११
उपश्वसे द्रुवये सीदता यूयं वि विन्ध्यध्वं यज्ञियास्तुषैः ।
श्रिया संमानानति सर्वान्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि १२ १२४०
परेहि नारि पुनरेहि क्षिप्रमपां त्वा गोष्ठोऽध्यरुक्षद् भराय ।
तासां गृह्णीताद् यतमा यज्ञिया असन् विभाज्य धीरीतरा जहीतात् १३
एमा अगुर्योषितः शुम्भमाना उत्तिष्ठ नारि तवसं रभस्व ।
सुपत्नी पत्या प्रजया प्रजावत्या त्वागन् यज्ञः प्रति कुम्भं गृभाय १४
ऊर्जो भागो निहितो यः पुरा व ऋषिप्रशिष्टाप आ भरैताः ।
अयं यज्ञो गातुविन्नाथवित् प्रजाविदुग्रः पशुविद् वीरविद् वो अस्तु १५
अग्ने चरुर्यज्ञियस्त्वाध्यरुक्षच्छुचिस्तपिष्ठस्तपसा तपैनम् ।
आर्षेया दैवा अभिसंगत्य भागमिमं तपिष्ठा ऋतुभिस्तपन्तु १६
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा आपश्चरुमव सर्पन्तु शुभ्राः ।
अदुः प्रजां बहुलान् पशून् नः पक्वौदनस्य सुकृतामेतु लोकम् १७ १२४५

ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता घृतेन सोमस्यांशवस्तण्डुला यज्ञिया इमे ।
अपः प्र विशत प्रति गृह्णातु वश्चरुरिमं पक्त्वा सुकृतामेत लोकम् १८
उरुः प्रथस्व महता महिम्ना सहस्रपृष्ठः सुकृतस्य लोके ।
पितामहाः पितरः प्रजोपजाहं पक्ता पञ्चदशस्ते अस्मि १९
सहस्रपृष्ठः शतधारो अक्षितो ब्रह्मौदनो देवयानः स्वर्गः ।
अमूंस्त आ दधामि प्रजया रेषयैनान् बलिहाराय मृडतान्मह्यमेव २०
उदेहि वेदिं प्रजया वर्धयैनां नुदस्व रक्षः प्रतरं धेह्येनाम् ।
श्रिया समानानति सर्वान्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि २१
अभ्यावर्तस्व पशुभिः सहैनां प्रत्यङेनां देवताभिः सहैधि ।
मा त्वा प्रापच्छपथो माभिचारः स्वे क्षेत्रे अनमीवा वि राज २२ १२५०
ऋतेन तप्ता मनसा हितैषा ब्रह्मौदनस्य विहिता वेदिरग्रे ।
असर्दां शुद्धामुप धेहि नारिं तत्रौदनं सादय दैवानाम् २३
अदितेर्हस्तां स्रुचमेतां द्वितीयां सप्तऋषयो भूतकृतो यामकृण्वन् ।
सा गात्राणि विदुष्योदनस्य दर्विर्वेद्यामध्येनं चिनोतु २४
शृतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु दैवा निःसृप्याग्नेः पुनरेनान् प्र सीद ।
सोमेन पूतो जठरे सीद ब्रह्मणामार्षेयास्ते मा रिषन् प्राशितारः २५
सोम राजन्त्संज्ञानमा वपैभ्यः सुब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान् ।
ऋषीनार्षेयांस्तपसोऽधि जातान् ब्रह्मौदने सुहवा जोहवीमि २६
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि ।
यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्त्स ददादिदं मे २७ १२५५
इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं पक्वं क्षेत्रात् कामदुघा म एषा ।
इदं धनं नि दधे ब्राह्मणेषु कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः २८
अग्नौ तुषाना वप जातवेदसि परः कुम्बूकाँ अप मृड्ढि दूरम् ।
एतं शुश्रुम गृहराजस्य भागमथो विद्म निर्ऋतेर्भागधेयम् २९
श्राम्यतः पचतो विद्धि सुन्वतः पन्थां स्वर्गमधि रोहयैनम् ।
येन रोहात् परमापद्य यद् वयं उत्तमं नाकं परमं व्योमि ३०
बभ्रेरध्वर्यो मुखमेतद् वि मृड्ढ्याज्याय लोकं कृणुहि प्रविद्वान् ।
घृतेन गात्रानु सर्वा वि मृड्ढि कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः ३१ १२५९

बभ्रे रक्षः समदुमा वपैभ्योऽब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान् ।
पुरीषिणः प्रथमानाः पुरस्तादार्षेयास्ते मा रिषन् प्राशितारः ३२ १२६०
आर्षेयेषु नि दध ओदन त्वा नानार्षेयाणामप्यस्त्यत्र ।
अग्निर्मे गोप्ता मरुतश्च सर्वे विश्वे देवा अभि रक्षन्तु पक्वम् ३३
यज्ञं दुहानं सदमित् प्रपीनं पुमांसं धेनुं सदनं रयीणाम् ।
प्रजामृतत्वमुत दीर्घमायू रायश्च पोषैरुप त्वा सदेम ३४
वृषभोऽसि स्वर्ग ऋषीनार्षेयान् गच्छ ।
सुकृतां लोके सीद तत्र नौ संस्कृतम् ३५
समाचिनुष्वानुसंप्रयाह्यग्ने पथः कल्पय देवयानान् ।
एतैः सुकृतैरनु गच्छेम यज्ञं नाके तिष्ठन्तमति सप्तरश्मौ ३६
येन देवा ज्योतिषा द्यामुदायन् ब्रह्मौदनं पक्त्वा सुकृतस्य लोकम् ।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम् ३७ १२६५

॥२११॥ (अथर्व० ६।११६।१-३)

जाटिकायनः । विवस्वान् (मधुमदन्नम्) । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यया ।
वैवस्वते राजनि तज्जुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम् १
वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति ।
मातुर्यदेनं इषितं न आगन् यद् वा पितापराद्धो जिहीडे २
यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस एनु आगन् ।
यावन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः ३

॥२१२॥ (अथर्व० ७।३७।१)

अथर्वा । वासः । अनुष्टुप् ।

अभि त्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा ।
यथासो मम केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन १

॥२१३॥ (वा० य० ४।१,१०)

(वासः ।)

दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा२ शग्मां परिदधे भद्रं वर्ण पुष्यन् २
विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीष्कधि १० १२७१

॥२१४॥ (अथर्व० १२।३।१-६०)

यमः। स्वर्गः, ओदनः, अग्निः (स्वर्गौदनः)। त्रिष्टुप्; १,४२-४३, ४७ भुरिक्; ८,११,२१-२२, २४ जगती; १३,१७ स्वराडार्षी पङ्क्तिः; ३४ विराड्गर्भा; ३९ अनुष्टुब्गर्भा; ४४ परावृहती; ५५-६० त्र्यवसाना सप्तपदा शाङ्कुमत्यतिजागतशाक्वरातिशाक्वरधार्त्यगर्भातिधृतिः (५५,५७-६० कृतिः, ५६ विराट् कृतिः)।

पुमान् पुंसोऽधि तिष्ठ चर्मेहि तत्र ह्वयस्व यतमा प्रिया ते ।
यावन्तावग्रे प्रथमं समेयथुस्तद् वां वयो यमराज्ये समानम् १
तावद् वां चक्षुस्ततिं वीर्याणि तावत् तेजस्तातिधा वाजिनानि ।
अग्निः शरीरं सचते यदैधोऽधा पक्वान्मिथुना सं भवाथः २
समस्मिल्लोके समु देवयाने सं स्वा समेतं यमराज्येषु ।
पूतौ पवित्रैरुप तद्ध्वयेथां यद्यद् रेतो अधि वां संबभूव ३
आपस्पुत्रासो अभि सं विशध्वमिमं जीवं जीवधन्याः समेत्य ।
तासां भजध्वममृतं यमाहुर्यमौदनं पचति वां जनित्री ४ १२७५
यं वां पिता पचति यं च माता रिप्रान्निर्मुक्त्यै शमलाच्च वाचः ।
स ओदनः शतधारः स्वर्ग उभे व्याप्नोति नभसी महित्वा ५
उभे नभसी उभयांश्च लोकान् ये यज्वनामभिजिताः स्वर्गाः ।
तेषां ज्योतिष्मान् मधुमान् यो अग्रे तस्मिन् पुत्रैर्जरसि सं श्रयेथाम् ६
प्राचींप्राचीं प्रदिशमा रभेथामेतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते ।
यद् वां पक्वं परिविष्टमग्नौ तस्य गुप्तये दंपती सं श्रयेथाम् ७
दक्षिणां दिशमभि नक्षमाणौ पर्यावर्तेथामभि पात्रमेतत् ।
तस्मिन् वां यमः पितृभिः संविदानः पक्वाय शर्म बहुलं नि यच्छात् ८
प्रतीचीं दिशामियमिद् वरं यस्यां सोमो अधिपा मृडिता च ।
तस्यां श्रयेथां सुकृतः सचेथामधा पक्वान्मिथुना सं भवाथः ९ १२८०
उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद् दिशामुदीची कृणवन्नो अग्रम् ।
पाङ्क्तं छन्दः पुरुषो बभूव विश्वैर्विश्वाङ्गैः सह सं भवेम १०
ध्रुवेयं विराण्नमो अस्त्वस्यै शिवा पुत्रेभ्य उत मह्यमस्तु ।
सा नो देव्यदिते विश्ववार ईर्य इव गोपा अभि रक्ष पक्वम् ११
पितेव पुत्रानभि सं स्वजस्व नः शिवा नो वाता इव वान्तु भूमौ ।
यमौदनं पचतो देवतेह तं नस्तप उत सत्यं च वेत्तु १२ १२८३

यद्यत् कृष्णः शकुन एह गत्वा त्सरन् विषक्तं बिलं आससाद ।
यद् वा दास्या३ द्रहस्ता समङ्क्त उलूखलं मुसलं शुम्भतापः १३
अयं ग्रावा पृथुबुध्नो वयोधाः पूतः पवित्रैरप हन्तु रक्षः ।
आ रोह चर्म महि शर्म यच्छ मा दंपती पौत्रमघं नि गातम् १४ १२८५
वनस्पतिः सह देवैर्न आगन् रक्षः पिशाचाँ अपबाधमानः ।
स उच्छ्रयाते प्र वदाति वाचं तेन लोकाँ अभि सर्वान् जयेम १५
सप्त मेधान् पशवः पर्यगृह्णन् य एषां ज्योतिष्माँ उत यश्चकर्श ।
त्रयस्त्रिंशद् देवतास्तान्त्सचन्ते स नः स्वर्गमभि नेष लोकम् १६
स्वर्गं लोकमभि नो नयासि सं जायया सह पुत्रैः स्याम ।
गृह्णामि हस्तमनु मैत्वत्र मा नस्तारीन्निर्ऋतिर्मो अरातिः १७
ग्राहिं पाप्मानमति ताँ अयाम तमो व्यस्य प्र वदासि वल्गु ।
वानस्पत्य उद्यतो मा जिहिंसीर्मा तण्डुलं वि शरीर्देवयन्तम् १८
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्त्सयोनिर्लोकमुप याह्येतम् ।
वर्षवृद्धमुप यच्छ शूर्पं तुषं पलावानप तद् विनक्तु १९ ११९०
त्रयो लोकाः संमिता ब्राह्मणेन द्यौरेवासौ पृथिव्यन्तरिक्षम् ।
अंशून् गृभीत्वान्वारभेथामा प्यायन्तां पुनरा यन्तु शूर्पम् २०
पृथग् रूपाणि बहुधा पशूनामेकरूपो भवसि सं समृद्ध्या ।
एतां त्वचं लोहिनीं तां नुदस्व ग्रावा शुम्भाति मलग इव वस्त्रा २१
पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि तनूः समानी विकृता त एषा ।
यद्यद् द्युत्तं लिखितमर्पणेन तेन मा सुस्रोर्ब्रह्मणापि तद् वपामि २२
जानित्रीव प्रति हर्यासि सूनुं सं त्वा दधामि पृथिवीं पृथिव्या ।
उखा कुम्भी वेद्यां मा व्यथिष्ठा यज्ञायुधैराज्येनातिषक्ता २३
अग्निः पचन् रक्षतु त्वा पुरस्तादिन्द्रो रक्षतु दक्षिणतो मरुत्वान् ।
वरुणस्त्वा दंहाद्वरुणे प्रतीच्या उत्तरात् त्वा सोमः सं ददातै २४ ११९५
पूताः पवित्रैः पवन्ते अभ्राद् दिवं च यान्ति पृथिवीं च लोकान् ।
ता जीवला जीवधन्याः प्रतिष्ठाः पात्र आसिक्ताः पर्यग्निरिन्धाम् २५
आ यन्ति दिवः पृथिवीं सचन्ते भूम्याः सचन्ते अध्यन्तरिक्षम् ।
शुद्धाः सतीस्ता उ शुम्भन्त एव ता नः स्वर्गमभि लोकं नयन्तु २६ ११९७

उतेव॑ प्रभ्वीरुत संमितास उत शुक्राः शुचयश्चामृतासः ।
ता ओदनं दंपतिभ्यां प्रशिष्टा आपः शिक्षन्तीः पचता सुनाथाः २७
संरुयाता स्तोकाः पृथिवीं संचन्ते प्राणापानैः संमिता ओषधीभिः ।
असंरुयाता ओप्यमानाः सुवर्णाः सर्वं व्याप्नुः शुचयः शुचित्वम् २८
उद्योधन्त्यभि वल्गन्ति तप्ताः फेनमस्यन्ति बहुलांश्च बिन्दून् ।
योषेव दृष्ट्वा पतिमृत्वियायैतैस्तण्डुलैर्भवता समापः २९ १३००
उत्थापय सीदतो बुध्न एनानद्भिरात्मानमभि सं स्पृशन्ताम् ।
अमांसि पात्रैरुदकं यदेतन्मितास्तण्डुलाः प्रदिशो यदीमाः ३०
प्र यच्छ पशुं त्वरया हरैषमहिंसन्त ओषधीर्दान्तु पर्वन् ।
यासां सोमः परि राज्यं बभूवामन्युता नो वीरुधो भवन्तु ३१
नवं बर्हिरोदनाय स्तृणीत प्रियं हृदश्चक्षुषो वल्गवस्तु ।
तस्मिन् देवाः सह दैवीर्विशन्त्विमं प्राश्नन्त्वृतुभिर्निषद्य ३२
वनस्पते स्तीर्णमा सीद बर्हिरग्निष्टोमैः संमितो देवताभिः ।
त्वष्टेव रूपं सुकृतं स्वधित्यैना एहाः परि पात्रे ददृश्राम् ३३
षष्टयां शरत्सु निधिपा अभीच्छात् स्वः पक्वेनाभ्यश्नवातै ।
उपैनं जीवान् पितरश्च पुत्रा एतं स्वर्गं गमयान्तमग्नेः ३४ १३०५
धर्ता ध्रियस्व धरुणे पृथिव्या अच्युतं त्वा देवताश्चयावयन्तु ।
तं त्वा दंपती जीवन्तौ जीवपुत्रावुद् वासयातः पर्याग्नेधानात् ३५
सर्वान्त्समागा अभिजित्य लोकान् यावन्तः कामाः समतीतृपस्तान् ।
वि गाहेथामायवनं च दर्विरेकस्मिन् पात्रे अध्युद्धरैनम् ३६
उप स्तृणीहि प्रथयं पुरस्ताद् घृतेन पात्रमभि घारयैतत् ।
वाश्रेवोस्रा तरुणं स्तनस्युमिमं देवासो अभिहिङ्कृणोत ३७
उपास्तरीरकरो लोकमेतमुरुः प्रथतामसमः स्वर्गः ।
तस्मिंछ्यातै महिषः सुपर्णो देवा एनं देवताभ्यः प्र यच्छान् ३८
यद्यजाया पचति त्वत् परःपरः पतिर्वा जाये त्वत् तिरः ।
सं तत् सृजेथां सह वां तदस्तु संपादयन्तौ सह लोकमेकम् ३९
यावन्तो अस्याः पृथिवीं सचन्ते अस्मत् पुत्राः परि ये संबभूवुः ।
सर्वांस्ताँ उप पात्रे हुयेथां नाभिं जानानाः शिशवः समायान् ४० १३११

वसोर्या धारा मधुना प्रपीना घृतेन मिश्रा अमृतस्य नाभयः ।
सर्वास्ता अव रुन्धे स्वर्गः षष्टयां शरत्सु निधिपा अभीच्छात् ४१
निधिं निधिपा अभ्येनमिच्छादनीश्वरा अभितः सन्तु येऽन्ये ।
अस्माभिर्दत्तो निहितः स्वर्गस्त्रिभिः काण्डैस्त्रीन्त्स्वर्गानरुक्षत् ४२
अग्नी रक्षस्तपतु यद् विदेवं क्रव्यात् पिशाच इह मा प्र पास्त ।
नुदामं एनमप रुध्मो अस्मदादित्या एनमङ्गिरसः सचन्ताम् ४३
आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो मध्विदं घृतेन मिश्रं प्रति वेदयामि ।
शुद्धहस्तौ ब्राह्मणस्यानिहत्यैतं स्वर्गं सुकृतावपीतम् ४४ १३१५
इदं प्रापमुत्तमं काण्डमस्य यस्माल्लोकात् परमेष्ठी समाप ।
आ सिञ्च सर्पिर्घृतवत् समङ्ग्ध्येष भागो अङ्गिरसो नो अत्र ४५
सत्यायं च तपसे देवतास्यो निधिं शेवधिं परि दद्म एतम् ।
मा नो द्यूतेऽवं गान्मा समित्यां मा स्मान्यस्मा उत् सृजता पुरा मत् ४६
अहं पचाम्यहं ददामि ममेदु कर्मन् करुणेऽधि जाया ।
कौमारो लोको अजनिष्ट पुत्रोऽन्वारभेथां वयं उत्तरावत् ४७
न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममानं एति ।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति ४८
प्रियं प्रियाणां कृणवाम तमस्ते यन्तु यतमे द्विषन्ति ।
धेनुरनड्वान् वयोवय आयदेव पौरुषेयमप मृत्युं नुदन्तु ४९ १३२०
समुग्रयो विदुरन्यो अन्यं य ओषधीः सचते यश्च सिन्धून् ।
यावन्तो देवा दिव्याश्चतपन्ति हिरण्यं ज्योतिः पचतो बभूव ५०
एषा त्वचां पुरुषे सं बभूवानग्नाः सर्वे पशवो ये अन्ये ।
क्षत्रेणात्मानं परि धापयाथोऽमोतं वासो मुखमोदनस्य ५१
यदक्षेषु वदा यत् समित्यां यद् वा वदा अनृतं वित्तकाम्या ।
समानं तन्तुमभि संवसानौ तास्मिन्त्सर्वं शमलं सादयाथः ५२
वृषं वनुष्वापि गच्छ देवांस्त्वचो धूमं पर्युत् पातयासि ।
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्त्सयोनिर्लोकमुप याह्येतम् ५३
तन्वं स्वर्गो बहुधा वि चक्रे यथा विद आत्मन्नन्यवर्णाम् ।
अपाजैत् कृष्णां रुशतीं पुनानो या लोहिनी तां तें अग्नौ जुहोमि ५४ १३२५

प्राच्यै त्वा दिशेऽग्नयेऽधिपतयेऽसिताय रक्षित्र आदित्यायेषुमते।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः।
दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५५
दक्षिणायै त्वा दिश इन्द्रायाधिपतये तिरश्चिराजये रक्षित्रे यमायेषुमते।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः।
दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५६
प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणायाधिपतये पृदाकवे रक्षित्रेऽन्नायेषुमते।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः।
दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५७
उदीच्यै त्वा दिशे सोमायाधिपतये स्वजाय रक्षित्रेऽशन्या इषुमत्यै।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः।
दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५८
ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवेऽधिपतये कल्माषग्रीवाय रक्षित्र ओषधीभ्य इषुमतीभ्यः।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः।
दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५९
ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतयेऽधिपतये श्वित्राय रक्षित्रे वर्षायेषुमते।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः।
दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ६० १३३१

वाजीकरणम्। (१३३२-१३४५)

॥२१५॥ (अथर्व० ४।४।१-८)

अथर्वा। वनस्पतिः; १-२ सूर्यः, प्रजापतिः; ४ इन्द्रः; ५ आपः, सोमः; ६ अग्निः, सरस्वती, ब्रह्मणस्पतिः (वाजीकरणम्)। अनुष्टुप्, ४ पुर उष्णिक्, ६-७ भुरिक्।

यां त्वा गन्धर्वो अखनद् वरुणाय मृतभ्रजे।
तां त्वा वयं खनाम्योषधिं शेपहर्षणीम् १
उदुषा उदु सूर्य उदिदं मामकं वचः। उदेजतु प्रजापतिर्वृषा शुष्मेण वाजिना २
यथा स्म ते विरोहतोऽभितप्तमिवानति। ततस्ते शुष्मवत्तरमियं कृणोत्वोषधिः ३
उच्छुष्मौषधीनां सारं ऋषभाणाम्। सं पुंसामिन्द्र वृष्ण्यमस्मिन् धेहि तनूवशिन् ४
अपां रसः प्रथमजोऽथो वनस्पतीनाम्। उत सोमस्य भ्रातास्युतार्शसि वृष्ण्यम् ५ १३३६

अद्याग्ने अद्य सवितरद्य देवि सरस्वति । अद्यास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः ६
आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि ।
क्रमस्वर्शे इव रोहितमनवग्लायता सदा ७
अश्वस्याश्वतरस्याजस्य पेत्वस्य च ।
अथ ऋषभस्य ये वाजास्तानस्मिन् धेहि तनूवशिन् ८

॥२१६॥ (अथर्व० ६।७२।१-३)

अथर्वाङ्गिराः । शेपोऽर्कः (वाजीकरणम्) । १ जगती, २ अनुष्टुप्, ३ भुरिक् ।

यथासितः प्रथयते वशाँ अनु वपूँषि कृण्वन्नसुरस्य मायया ।
एवा ते शेपः सहसायमर्कोऽङ्गेनाङ्गं संसमकं कृणोतु १ १३४०
यथा पसस्तायादुरं वातेन स्थूलभं कृतम् ।
यावत् परस्वतः पसस्तावत् ते वर्धतां पसः २
यावदङ्गीनं पारस्वतं हास्तिनं गार्दभं च यत् ।
यावदश्वस्य वाजिनस्तावत् ते वर्धतां पसः ३

॥२१७॥ (अथर्व० ६।१०१।१-३)

अथर्वाङ्गिराः । ब्रह्मणस्पतिः (वाजीकरणम्) । अनुष्टुप् ।

आ वृषायस्व श्वसिहि वर्धस्व प्रथयस्व च । यथाङ्गं वर्धतां शेपस्तेन योषितमिज्जहि १
येन कृशं वाजयन्ति येन हिन्वन्त्यातुरम् । तेनास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः २
आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि ।
क्रमस्वर्शे इव रोहितमनवग्लायता सदा ३ १३४५

गर्भाधानम् । (१३४६-१४२३)

॥२१८॥ (अथर्व० ५।२५।१-१३)

ब्रह्मा । योनिगर्भः, पृथिव्यादयो देवताः । अनुष्टुप्, १३ विराट्पुरस्ताद्बृहती ।

पर्वताद् दिवो योनेरङ्गादङ्गात् समाभृतम् । शेपो गर्भस्य रेतोधाः सरौ पर्णमिवा दधत् १
यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे । एवा दधामि ते गर्भं तस्मै त्वामवसे हुवे २
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा ३
गर्भं ते मित्रावरुणौ गर्भं देवो बृहस्पतिः । गर्भं त इन्द्रश्चाग्निश्च गर्भं धाता दधातु ते ४
विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु । आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ५
यद् वेद राजा वरुणो यद् वा देवी सरस्वती । यदिन्द्रो वृत्रहा वेद तद् गर्भकरणं पिब ६ १३५१

गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो अग्ने गर्भमेह धाः ७
अधि स्कन्द वीरयस्व गर्भमा धेहि योन्याम्। वृषासि वृष्ण्यावन् प्रजायै त्वा नयामसि ८
वि जिहीष्व बाहत्सामे गर्भस्ते योनिमा शयाम्। अदुष्टे देवाः पुत्रं सोमपा उभयाविनम् ९
धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्यां गवीन्योः। पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे १० १३५५
त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्यां गवीन्योः। पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे ११
सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्यां गवीन्योः। पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे १२
प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्यां गवीन्योः। पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे १३

॥२१९॥ (अथर्व० ६।८१।१-३)

अथर्वा। आदित्यः, ३ त्वष्टा (गर्भाधानम्)। अनुष्टुप्।

यन्तासि यच्छसे हस्तावप रक्षांसि सेधसि। प्रजां धनं च गृह्णानः परिहस्तो अभूदयम् १
परिहस्त वि धारय योनिं गर्भाय धातवे। मर्यादे पुत्रमा धेहि तं त्वमा गमयागमे २ १३६०
यं परिहस्तमबिभरदितिः पुत्रकाम्या। त्वष्टा तमस्या आ बध्नाद् यथा पुत्रं जनादिति ३

॥२२०॥ (अथर्व० ६।१७।१-४)

अथर्वा। गर्भदंहणम्, पृथिवी। अनुष्टुप्।

यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे। एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे १
यथेयं पृथिवी मही दाधारेमान् वनस्पतीन्। एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे २
यथेयं पृथिवी मही दाधार पर्वतान् गिरीन्। एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे ३
यथेयं पृथिवी मही दाधार विष्ठितं जगत्। एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे ४ १३६५

॥२२१॥ (अथर्व० ७।१११।१)

ब्रह्मा। वृषभः (आत्मा)। परावृहती त्रिष्टुप्।

इन्द्रस्य कुक्षिरसि सोमधानं आत्मा देवानामुत मानुषाणाम्।
इह प्रजा जनय यास्ते आसु या अन्यत्रेह तास्ते रमन्ताम् १

॥२२२॥ (अथर्व० ८।६।१-२६)

मातृनामा। मन्त्रोक्ताः, मातृनामा, १५ ब्रह्मणस्पतिः (गर्भदोषनिवारणम्)। अनुष्टुप्; २ पुरस्ताद्बृहती; १० त्र्यवसाना षट्पदा जगती; ११-१२,१४,१६, पथ्यापङ्क्तिः; १५ त्र्यवसाना सप्तपदा शाक्करी; १७ त्र्यवसाना सप्तपदा जगती।

यौ ते मातोन्मार्जं जातायाः पतिवेदनौ। दुर्णामा तत्र मा गृधद्रालिंश उत वत्सपः १
पलालानुपलालौ शर्कु कोकं मलिम्लुचं पलीजकम्।
आश्रेषं वम्रिवासमृक्षग्रीवं प्रमीलिनम् २ १३६८

मा सं वृतो मोप सृप ऊरू माव सृपोऽन्तरा ।
कृणोम्यस्यै भेषजं बजं दुर्णामचातनम् ३
दुर्णामा च सुनामा चोभा संवृतमिच्छतः । अरायानप हन्मः सुनामा स्त्रैणमिच्छताम् ४ १३७०
यः कृष्णः केश्यसुर स्तम्बज उत तुण्डिकः ।
अरायानस्या मुष्काभ्यां भंससोप हन्मसि ५
अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं क्रव्यादमुत रेरिहम् ।
अरायौल्लुकिष्किणौ बजः पिङ्गो अनानिशत् ६
यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते भ्राता भूत्वा पितेव च ।
बजस्तान्त्सहतामितः क्लीबरूपांस्तिरीटिनः ७
यस्त्वा स्वपन्तीं त्सरति यस्त्वा दिप्सति जाग्रतीम् ।
छायामिव प्र तान्त्सूर्यः परिक्रामन्ननीनशत् ८
यः कृणोति मृतवत्सामवतोकामिमां स्त्रियम् ।
तमोषधे त्वं नाशयास्याः कमलमञ्जिवम् ९ १३७५
ये शालाः परिनृत्यन्ति सायं गर्दभनादिनः ।
कुसूला ये च कुक्षिलाः कंकुभाः करुमाः स्त्रिमाः ।
तानोषधे त्वं गन्धेन विषूचीनान् वि नाशय १०
ये कुकुन्धाः कुकूरभाः कृत्तीर्दूशानि बिभ्रति ।
क्लीबा इव प्रनृत्यन्तो वने ये कुर्वते घोषं तानितो नाशयामसि ११
ये सूर्यं न तितिक्षन्त आतपन्तमसुं दिवः ।
अरायान् बस्तवासिनो दुर्गन्धीन्लोहितास्यान् मकंकान् नाशयामसि १२
य आत्मानमतिमात्रमंस आधाय बिभ्रति।स्त्रीणां श्रोणिप्रतोदिन इन्द्र रक्षांसि नाशय १३
ये पूर्वे वध्वोऽ यान्ति हस्ते शृङ्गाणि बिभ्रतः ।
आपाकेष्टाः प्रहासिनं स्तम्बे ये कुर्वते ज्योतिस्तानितो नाशयामसि १४ १३८०
येषां पश्चात् प्रपदानि पुरः पार्ष्णीः पुरो मुखा ।
खलजाः शंकधूमजा उरुण्डा ये च मट्मटाः कुम्भमुष्का अयाशवः ।
तानस्या ब्रह्मणस्पते प्रतीबोधेन नाशय १५
पर्यस्ताक्षा अपचङ्कशा अस्त्रैणाः सन्तु पण्डगाः ।
अव भेषज पादय य इमां संविवृत्सत्यपतिः स्वपतिं स्त्रियम् १६ १३८९

उद्वर्षिणं मुनिकेशं जम्भयन्तं मरीमृशम्। उपेषन्तमुदुम्बलं तुण्डेलेमुत शालुडम्
पदा प्र विध्य पार्ष्ण्या स्थालीं गौरिव स्पन्दना १७
यस्ते गर्भं प्रतिमृशाज्जातं वा मारयाति ते।
पिङ्गस्तमुग्रधन्वा कृणोतु हृदयाविधम् १८
ये अन्नो जातान् मारयन्ति सूतिका अनुशेरते।
स्त्रीभागान् पिङ्गो गन्धर्वान् वातो अभ्रमिवाजतु १९ १३८५
परिसृष्टं धारयतु यद्धितं गर्भे पादि तत्।
गर्भं त उग्रौ रक्षतां भेषजौ नीविभार्यौ २०
पुवीनसात् तक्मत्वाच्छायकादुत नग्नकात्।
प्रजायै पत्ये त्वा पिङ्गः परि पातु किमीदिनः २१
व्याघ्र्यात्तुरश्चात् पञ्चपादादनङ्गुरेः। वृन्ताद्भि प्रसर्पतः परि पाहि वरीवृतात् २२
य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः।
गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि २३
ये सूयीत् परिसर्पन्ति स्नुषेव श्वशुरादधि।
वज्रश्च तेषां पिङ्गश्च हृदयेऽधि नि विध्यताम् २४ १३९०
पिङ्ग रक्ष जायमानं मा पुमांसं स्त्रियं क्रन्।
आण्डादो गर्भान् मा दभन् बाधस्वेतः किमीदिनः २५
अप्रजास्त्वं मातेवत्समाद् रोदमघमावयम्। वृक्षादिव स्रजं कृत्वाग्रिये प्रतिमुञ्च तत् २६

॥१२३॥ (अथर्व० २०।९६।११-१६)

रक्षोहा। गर्भसंस्राव। अनुष्टुप्।

ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः।
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये ११
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये। अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत् १२
यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम्।
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि १३ १३९५
यस्ते ऊरू विहरत्यन्तरा दम्पती शये। योनिं यो अन्तरारोहि तमितो नाशयामसि १४
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि १५ १३९७

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि १६

॥२२४॥ (ऋ० ५।७८।५-९)

सप्तवध्रिरात्रेयः । अश्विनौ (गर्भस्राविष्युपनिषद्) । अनुष्टुप् ।

वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्या इव ।
श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम् ५
भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये ।
मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः ६ १४००
यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः । एवा ते गर्भ एजतु निरैतु दशमास्यः ७
यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति ।
एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा ८
दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि ।
निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि ९

॥२२५॥ (ऋ० ९।७४।५)

कक्षीवान् दैर्घतमसः । पवमानः सोमः (अदितेर्गर्भः) । जगती ।

अरावीदंशुः सचमान ऊर्मिणा देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् ।
दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे ५

॥२२६॥ (अथर्व० १।११।१-६)

अथर्वा । पूषा, अर्यमा, वेधाः, दिशः, देवाः (नारी-सुखप्रसूतिः) । १ पङ्क्तिः; २ अनुष्टुप्; ३ चतुष्पदोष्णिग्गर्भा ककुम्मत्यनुष्टुप्; ४-६ पथ्यापङ्क्तिः ।

वषट् ते पूषन्नस्मिन्त्सूतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः ।
सिस्रतां नार्यृतप्रजाता वि पर्वाणि जिहतां सूतवा उ १ १४०५
चतस्रो दिव्याः प्रदिशश्चतस्रो भूम्या उत । देवा गर्भं समैरयन् तं व्यूर्णुवन्तु सूतवे २
सुषा व्यूर्णोतु वि योनिं हापयामसि । श्रथया सूषणे त्वमव त्वं विष्कले सृज ३
नेव मांसे न पीवसि नेव मज्जस्वाहतम् ।
अवैतु पृश्नि शेवलं शुने जरायवत्तवेऽव जरायु पद्यताम् ४
वि ते भिनद्मि मेहनं वि योनिं वि गवीनिके ।
वि मातरं च पुत्रं च वि कुमारं जरायणावं जरायु पद्यताम् ५ १४०९

यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः ।
एवा त्वं दशमास्य साकं जरायुणा पतावं जरायु पद्यताम् ६ १४१०

॥२२७॥ (अथर्व० १९।४०।१-४)

ब्रह्मा । बृहस्पतिः, विश्वे देवाश्च (मेधा)। १ पराऽनुष्टुप् त्रिष्टुप्; २ पुरःककुम्मत्युपरिष्टाद्बृहती; ३ बृहतीगर्भा; ४ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री ।

यन्मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः सरस्वती मन्युमन्तं जगाम ।
विश्वैस्तद् देवैः सह संविदानः सं दधातु बृहस्पतिः १
मा न आपो मेधां मा ब्रह्म प्र मथिष्टन ।
सुष्यदा यूयं स्यन्दध्वमुपहूतोऽहं सुमेधा वर्चस्वी २
मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत् तपः ।
शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः ३
या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासतामिषम् ४

॥२२८॥ (अथर्व० १।१।१-४)

अथर्वा । वाचस्पतिः (मेधाजननम्) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा विराडुरोबृहती ।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे १
पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह ।
वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम् २
सदैवाग्ने वि तनुभे आत्मां इव ज्यया ।
वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम् ३
उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान् वाचस्पतिर्ह्वयताम् ।
सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि ४

॥२२९॥ अथर्व० ६।१०८।१-५)

शौनकः । मेधा, ४ अग्निः (मेधावर्धनम्) । अनुष्टुप्, २ उरोबृहती, ३ पथ्याबृहती ।

त्वं नो मेधे प्रथमा गोभिरश्वेभिरा गहि । त्वं सूर्यस्य रश्मिभिस्त्वं नो असि यज्ञिया १
मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं ब्रह्मजूतामृषिष्टुताम् । प्रपीतां ब्रह्मचारिभिर्देवानामवसे हुवे २
यां मेधामुभवो विदुर्यां मेधामसुरा विदुः ।
ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्या वेशयामसि ३ १४२१

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः । तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कृणु ४
मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यंदिनं परि । मेधां सूर्यस्य रश्मिभिर्वचसा वेशयामहे५ १४२१

मणिधारणम् । (१४२४-१५७८)

॥२३०॥ (अथर्व० ४।१०।१-७)

अथर्वा । शङ्खमणिः, कृशनः । अनुष्टुप्, ६ पथ्यापङ्क्तिः, ७ षड्वपदा पराऽनुष्टुप्शाकरी ।

वाताज्जातो अन्तरिक्षाद् विद्युतो ज्योतिषस्परि ।
स नो हिरण्यजाः शङ्खः कृशनः पात्वंहसः १
यो अग्रतो रोचनानां समुद्रादधि जज्ञिषे । शङ्खेन हत्वा रक्षांस्यत्रिणो वि षहामहे२ १४२५
शङ्खेनामीवामर्मतिं शङ्खेनोत सदान्वाः ।
शङ्खो नो विश्वभेषजः कृशनः पात्वंहसः ३
दिवि जातः समुद्रजः सिन्धुतस्पर्याभृतः ।
स नो हिरण्यजाः शङ्ख आयुष्प्रतरणो मणिः ४
समुद्राज्जातो मणिर्वृत्राज्जातो दिवाकरः । सो अस्मान्त्सर्वतः पातु हेत्या देवासुरेभ्यः५
हिरण्यानामेकोऽसि सोमात् त्वमधि जज्ञिषे ।
रथे त्वमसि दर्शत इषुधौ रोचनस्त्वं प्र ण आयूंषि तारिषत् ६
देवानामस्थि कृशनं बभूव तदात्मन्वच्चरत्यप्स्वन्तः ।
तत् ते बध्नाम्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय कार्शनस्त्वाभि रक्षतु ७ १४३०

॥२३१॥ (अथर्व० ८।५।१-२२)

शुक्रः । कृत्यादूषणं, मन्त्रोक्ताः (प्रतिसरो मणि- । अनुष्टुप्; १,६ उपरिष्टाद्बृहती; २ त्रिपदा विराड् गायत्री; ३ चतुष्पदा भुरिग्जगती; ५ भुरिक्संस्तारपङ्क्तिः; ७-८ ककुम्मती; ९ पुरस्कृतिर्जगती; १० त्रिष्टुप्; ११ पथ्यापङ्क्तिः; १४ त्र्यवसाना षट्पदा जगती; १५ पुरस्ताद्बृहती; १९ जगतीगर्भा त्रिष्टुप्; २० विराड्गर्भा प्रस्तारपङ्क्तिः २१ विराट् त्रिष्टुप्; २२ त्र्यवसाना सप्तपदा विराड्गर्भा भुरिक्शाकरी।

अयं प्रतिसरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते ।
वीर्यवान्त्सपत्नहा शूरवीरः परिपाणः सुमङ्गलः १
अयं मणिः सपत्नहा सुवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।
प्रत्यक् कृत्या दूषयन्नेति वीरः २
अनेनेन्द्रो मणिना वृत्रमहन्नेनासुरान् पराभावयन्मनीषी ।
अनेनाजयद् द्यावापृथिवी उभे इमे अनेनाजयत् प्रदिशश्चतस्रः ३ १४३३

अयं स्राक्त्यो मणिः प्रतीवर्तः प्रतिसरः ।
ओजस्वान् विमृधो वशी सो अस्मान् पातु सर्वतः ४
तदग्निराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तादिन्द्रः ।
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु ५ १४३५
अन्तर्दधे द्यावापृथिवी उताहरुत सूर्यम् ।
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु ६
ये स्राक्त्यं मणिं जना वर्माणि कृण्वते । सूर्य इव दिवमारुह्य वि कृत्या बाधते वशी ७
स्राक्त्येन मणिना ऋषिणेव मनीषिणा । अजैषं सर्वाः पृतना वि मृधो हन्मि रक्षसः ८
याः कृत्या आङ्गिरसीर्याः कृत्या आसुरीर्याः कृत्याः स्वयंकृता या उ चान्येभिराभृताः ।
उभयीस्ताः परा यन्तु परावतो नवतिं नाव्याꣳ अतिं ९
अस्मै मणिं वर्म बध्नन्तु देवा इन्द्रो विष्णुः सविता रुद्रो अग्निः ।
प्रजापतिः परमेष्ठी विराड् वैश्वानर ऋषयश्च सर्वे १० १४४०
उत्तमो अस्योषधीनामनड्वान् जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव ।
यमैच्छामाविंदाम तं प्रतिस्पाशनमन्तितम् ११
स इद् व्याघ्रो भवत्यथो सिंहो अथो वृषा । अथो सपत्नकर्शनो यो बिभर्तीमं मणिम् १२
नैनं घ्नन्त्यप्सरसो न गन्धर्वा न मर्त्याः ।
सर्वा दिशो वि राजति यो बिभर्तीमं मणिम् १३
कश्यपस्त्वामसृजत कश्यपस्त्वा समैरयत् ।
आबिभस्त्वेन्द्रो मानुषे बिभ्रत् संश्रेषिणेऽजयत् ।
मणिं सहस्रवीर्यं वर्म देवा अकृण्वत १४
यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा दीक्षाभिर्यज्ञैर्यस्त्वा जिघांसति ।
प्रत्यक् त्वमिन्द्र तं जहि वज्रेण शतपर्वणा १५ १४४५
अयमिद् वै प्रतीवर्त ओजस्वान् संजयो मणिः ।
प्रजां धनं च रक्षतु परिपाणः सुमङ्गलः १६
असपत्नं नोऽधरादसपत्नं न उत्तरात् । इन्द्रासपत्नं नः पश्चाज्ज्योतिः शूर पुरस्कृधि १७
वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः । वर्म म इन्द्रश्चाग्निश्च वर्म धाता दधातु मे १८
ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नाति विध्यन्ति सर्वे ।
तन्मे तन्वं त्रायतां सर्वतो बृहदायुष्मा जरदष्टिर्यथासानि १९ १४४९

आ मारुक्षद् देवमणिर्मह्या अरिष्टतातये ।
इमं मेथिमभिसंविशध्वं तनूपानं त्रिवरूथमोजसे २० १४५०
अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु नृम्णमिमं देवासो अभिसंविशध्वम् ।
दीर्घायुत्वाय शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासत् २१
स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी ।
इन्द्रो बध्नातु ते मणिं जिगीवाँ अपराजितः सोमपा अभयंकरो वृषा ।
स त्वा रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वतः २२

॥२३२॥ (अथर्व० १०।३।१--२५)

अथर्वा । (सपत्नक्षयणो), वरणमणिः, वनस्पतिः, चन्द्रमाः । अनुष्टुप्; २-३,६ भुरिक् त्रिष्टुप्; ८,१३-१४ पथ्यापङ्क्तिः; ११,१६ भुरिक्; १५,१७-२५ षट्पदा जगती ।

अयं मे वरणो मणिः सपत्नक्षयणो वृषा ।
तेना रभस्व त्वं शत्रून् प्र मृणीहि दुरस्यतः १
प्रैणान्छृणीहि प्र मृणा रभस्व मणिस्ते अस्तु पुरएता पुरस्तात् ।
अवारयन्त वरणेन देवा अभ्याचारमसुराणां श्वःश्वः २
अयं मणिर्वरणो विश्वभेषजः सहस्राक्षो हरितो हिरण्ययः ।
स ते शत्रूनधरान् पादयाति पूर्वस्तान् दंभुहि ये त्वा द्विषन्ति ३ १४५५
अयं तं कृत्यां विततां पौरुषेयादयं भयात् ।
अयं त्वा सर्वस्मात् पापाद् वरणो वारयिष्यते ४
वरणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः । यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमु देवा अवीवरन् ५
स्वप्नं सुप्त्वा यदि पश्यासि पापं मृगः सृतिं यति धावादजुष्टाम् ।
परिक्षवाच्छकुनेः पापवादादयं मणिर्वरणो वारयिष्यते ६
अरात्यास्त्वा निर्ऋत्या अभिचारादथो भयात् ।
मृत्योरोजीयसो वधाद् वरणो वारयिष्यते ७
यन्मे माता यन्मे पिता भ्रातरो यच्च मे स्वा यदेनश्चकृमा वयम् ।
ततो नो वारयिष्यतेऽयं देवो वनस्पतिः ८ १४६०
वरणेन प्रव्यथिता भ्रातृव्या मे सबन्धवः । अमूर्तं रजो अप्यगुस्ते यन्त्वधमं तमः ९
अरिष्टोऽहमरिष्टगुरायुष्मान्त्सर्वपूरुषः ।
इदं मायं वरणो मणिः परि पातु दिशोदिशः १० १४६१

अयं मे वरुण उरसि राजा देवो वनस्पतिः ।
स मे शत्रून् वि बाधतामिन्द्रो दस्यूनिवासुरान् ११

इमं बिभर्मि वरुणमायुष्मान्छतशारदः ।
स मे राष्ट्रं च क्षत्रं च पशूनोजश्च मे दधत् १२
यथा वातो वनस्पतीन् वृक्षान् भनक्त्योजसा ।
एवा सपत्नान् मे भङ्ग्धि पूर्वान् जाताँ उतापरान् वरुणस्त्वाभि रक्षतु १३ १४६५
यथा वातश्चाग्निश्च वृक्षान् प्सातो वनस्पतीन् ।
एवा सपत्नान् मे प्साहि पूर्वान् जाताँ उतापरान् वरुणस्त्वाभि रक्षतु १४
यथा वातेन प्रक्षीणा वृक्षाः शेरे न्यर्पिताः ।
एवा सपत्नांस्त्वं मम प्र क्षिणीहि न्यर्पय पूर्वान् जाताँ उतापरान् वरुणस्त्वाभि रक्षतु १५

तांस्त्वं प्र च्छिन्द्धि वरुण पुरा दिष्टात् पुरायुषः ।
य एनं पशुषु दिप्सन्ति ये चास्य राष्ट्रदिप्सवः १६
यथा सूर्यो अतिभाति यथाग्निन् तेज आहितम् ।
एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा १७
यथा यशश्चन्द्रमस्यादित्ये च नुचक्षसि ।
एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा १८ १४७०
यथा यशः पृथिव्यां यथाग्निन् जातवेदसि ।
एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा १९
यथा यशः कन्यायां यथास्मिन्त्संभृते रथे ।
एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा २०

यथा यशः सोमपीथे मधुपर्के यथा यशः ।
एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा २१ १४७३

यथा यज्ञोऽग्निहोत्रे वषट्कारे यथा यज्ञः ।
एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा २२
यथा यशो यजमाने यथास्मिन् यज्ञ आहितम् ।
एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा २३ १४७५
यथा यज्ञः प्रजापतौ यथास्मिन् परमेष्ठिनि ।
एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा २४
यथा देवेष्वमृतं यथैषु सत्यमाहितम् ।
एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा २५

॥२३३॥ (अथर्व० १०।६।१-३५)

बृहस्पतिः । फालमणिः, वनस्पतिः, ३ आपः (मणिबन्धनम्)। अनुष्टुप्; १,४,११ गायत्री; ५ षट्पदा जगती; ६ सप्तपदा विराट् शक्करी; ७-१० त्र्यवसाना अष्टपदाऽष्टिः (१० नवपदा धृतिः); ११,१०, २३-२७ पथ्यापङ्क्तिः, १२-१७ त्र्यवसाना षट्पदा शक्करी; ३१ त्र्यवसाना षट्पदा जगती; ३५ पञ्चपदा त्र्यनुष्टुब्गर्भा जगती ।

अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य दुर्हार्दो द्विषतः शिरः । अपि वृश्चाम्योजसा १
वर्म मह्यमयं मणिः फालाज्जातः करिष्यति । पूर्णो मन्थेन मागमद् रसेन सह वर्चसा २
यत् त्वा शिक्वः परावधीत् तक्षा हस्तेन वास्या ।
आपस्त्वा तस्माज्जीवलाः पुनन्तु शुचयः शुचिम् ३ १४८०
हिरण्यस्रगयं मणिः श्रद्धां यज्ञं महो दधत् । गृहे वसतु नोऽतिथिः ४
तस्मै घृतं सुरां मध्वन्नमन्नं क्षदामहे ।
स नः पितेव पुत्रेभ्यः श्रेयःश्रेयश्चिकित्सतु भूयोभूयः श्वःश्वो देवेभ्यो मणिरेत्यं ५
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।
तमग्निः प्रत्यमुञ्चत सो अस्मै दुह आज्यं भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ६
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।
तमिन्द्रः प्रत्यमुञ्चतौजसे वीर्याय कम् ।
सो अस्मै बलमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ७ १४८४

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।
तं सोमः प्रत्यमुञ्चत महे श्रोत्राय चक्षसे ।
सो अस्मै वर्च इद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ८ १४८५
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।
तं सूर्यः प्रत्यमुञ्चत तेनेमा अजयद् दिशः ।
सो अस्मै भूतिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ९
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।
तं बिभ्रच्चन्द्रमा मणिमसुराणां पुरोऽजयद् दानवानां हिरण्ययीः ।
सो अस्मै श्रियमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १०
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे ।
सो अस्मै वाजिनं दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ११
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तेनेमां मणिना कृषिमश्विनावभि रक्षतः ।
स भिषग्भ्यां महीं दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १२
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं बिभ्रत् सविता मणिं तेनेदमजयत् स्वः ।
सो अस्मै सनृतां दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १३ १४९०
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तमापो बिभ्रतीर्मणिं सदा धावन्त्यक्षिताः ।
स आभ्योऽमृतमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १४
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं राजा वरुणो मणिं प्रत्यमुञ्चत शंभुवम् ।
सो अस्मै सत्यमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १५
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं देवा बिभ्रतो मणिं सर्वाँल्लोकान् युधाजयन् ।
स एभ्यो जितिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १६
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तमिमं देवता मणिं प्रत्यमुञ्चन्त शंभुवम् ।
स आभ्यो विश्वमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १७
ऋतवस्तमबध्नतार्तवास्तमबध्नत । संवत्सरस्तं बद्ध्वा सर्वं भूतं वि रक्षति १८ १४९५
अन्तर्देशा अबध्नत प्रदिशस्तमबध्नत । प्रजापतिसृष्टो मणिर्द्विषतो मेऽधराँ अकः १९
अथर्वाणो अबध्नताथर्वणा अबध्नत ।
तैर्मेदिनो अङ्गिरसो दस्यूनां बिभिदुः पुरस्तेन त्वं द्विषतो जहि २०
तं धाता प्रत्यमुञ्चत स भूतं व्यकल्पयत् । तेन त्वं द्विषतो जहि । २१ १४९८

यमबंध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।
स मायं मणिरागमद् रसेन सह वर्चसा २२
यमबंध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।
स मायं मणिरागमत् सह गोभिरजाविभिरन्नेन प्रजया सह २३ १५००
यमबंध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।
स मायं मणिरागमत् सह व्रीहियवाभ्यां महसा भूत्या सह २४
यमबंध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।
स मायं मणिरागमन्मधोर्घृतस्य धारया कीलालेन मणिः सह २५
यमबंध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।
स मायं मणिरागमदूर्जया पयसा सह द्रविणेन श्रिया सह २६
यमबंध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।
स मायं मणिरागमत् तेजसा त्विष्या सह यशसा कीर्त्या सह २७
यमबंध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।
स मायं मणिरागमत् सर्वाभिर्भूतिभिः सह २८ १५०५
तमिमं देवता मणिं मह्यं ददतु पुष्टये । अभिभुं क्षत्रवर्धनं सपत्नदम्भनं मणिम् २९
ब्रह्मणा तेजसा सह प्रतिं मुञ्चामि मे शिवम् ।
असपत्नः संपत्नहा सपत्नान् मेऽधराँ अकः ३०
उत्तरं द्विषतो मामयं मणिः कृणोतु देवजाः ।
यस्य लोका इमे त्रयः पयो दुग्धमुपासते ।
स मायमधिं रोहतु मणिः श्रैष्ठ्याय मूर्धतः ३१
यं देवाः पितरो मनुष्या उपजीवन्ति सर्वदा ।
स मायमधिं रोहतु मणिः श्रैष्ठ्याय मूर्धतः ३२
यथा बीजमुर्वरायां कृष्टे फालेन रोहति ।
एवा मयि प्रजा पशवोऽन्नमन्नं वि रोहतु ३३ १५१०
यस्मै त्वा यज्ञवर्धन मणे प्रत्यमुंचं शिवम् ।
तं त्वं शतदक्षिण मणे श्रैष्ठ्याय जिन्वतात् ३४
एतमिध्मं समाहितं जुषाणो अग्ने प्रति हर्य होमैः ।
तस्मिन् विदेम सुमतिं स्वस्ति प्रजां चक्षुः पशून्त्समिद्धे जातवेदसि ब्रह्मणा ३५ १५१९

॥२३४॥ (अथर्व० १९।२८।१-१०)

ब्रह्मा (सपत्नक्षयकामः)। दर्भमणिः, मन्त्रोक्ताश्च। अनुष्टुप्।

इमं बध्नामि ते मणिं दीर्घायुत्वाय तेजसे। दर्भं सपत्नदम्भनं द्विषतस्तपनं हृदः १

द्विषतस्तापयन् हृदः शत्रूणां तापयन् मनः।
दुर्हार्दः सर्वांस्त्वं दर्भ घर्म इवाभिन्तसंतापयन् २
घर्म इवाभितपन् दर्भ द्विषतो नितपन् मणे।
हृदः सपत्नानां भिन्द्धीन्द्र इव विरुजं बलम् ३ १५१५
भिन्द्धि दर्भ सपत्नानां हृदयं द्विषतां मणे।
उद्यन् त्वर्चमिव भूम्याः शिर एषां वि पातय ४
भिन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे भिन्द्धि मे पृतनायतः।
भिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो भिन्द्धि मे द्विषतो मणे ५
छिन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे छिन्द्धि मे पृतनायतः।
छिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दान् छिन्द्धि मे द्विषतो मणे ६
वृश्च दर्भ सपत्नान् मे वृश्च मे पृतनायतः।
वृश्च मे सर्वान् दुर्हार्दो वृश्च मे द्विषतो मणे ७
कृन्त दर्भ सपत्नान् मे कृन्त मे पृतनायतः।
कृन्त मे सर्वान् दुर्हार्दो कृन्त मे द्विषतो मणे ८ १५२०
पिंश दर्भ सपत्नान् मे पिंश मे पृतनायतः।
पिंश मे सर्वान् दुर्हार्दः पिंश मे द्विषतो मणे ९
विध्य दर्भ सपत्नान् मे विध्य मे पृतनायतः।
विध्य मे सर्वान् दुर्हार्दो विध्य मे द्विषतो मणे १०

॥२३५॥ (अथर्व० १९।२९।१-९)

ब्रह्मा। दर्भमणिः। अनुष्टुप्।

निर्ऋ दर्भ सपत्नान् मे निर्ऋ मे पृतनायतः।
निर्ऋ मे सर्वान् दुर्हार्दो निर्ऋ मे द्विषतो मणे १
तृन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे तृन्द्धि मे पृतनायतः।
तृन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दस्तृन्द्धि मे द्विषतो मणे २
रुन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे रुन्द्धि मे पृतनायतः।
रुन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो रुन्द्धि मे द्विषतो मणे ३ १५२५

मृण दर्भ सपत्नान् मे मृण मे पृतनायतः ।
मृण मे सर्वान् दुर्हार्दो मृण मे द्विषतो मणे ४
मन्थ दर्भ सपत्नान् मे मन्थ मे पृतनायतः ।
मन्थ मे सर्वान् दुर्हार्दो मन्थ मे द्विषतो मणे ५
पिण्ड्ढि दर्भ सपत्नान् मे पिण्ड्ढि मे पृतनायतः ।
पिण्ड्ढि मे सर्वान् दुर्हार्दः पिण्ड्ढि मे द्विषतो मणे ६
ओष दर्भ सपत्नान् मे ओष मे पृतनायतः ।
ओष मे सर्वान् दुर्हार्द ओष मे द्विषतो मणे ७
दह दर्भ सपत्नान् मे दह मे पृतनायतः ।
दह मे सर्वान् दुर्हार्दो दह मे द्विषतो मणे ८ १५१०
जहि दर्भ सपत्नान् मे जहि मे पृतनायतः ।
जहि मे सर्वान् दुर्हार्दो जहि मे द्विषतो मणे ९

॥२३६॥ (अथर्व० १९।३०।१-५)

ब्रह्मा । दर्भमणिः । अनुष्टुप् ।

यत् ते दर्भ जरामृत्युः शतं वर्मसु वर्म ते । तेनेमं वर्मिणं कृत्वा सपत्नान् जहि वीर्यैः १
शतं ते दर्भ वर्माणि सहस्रं वीर्याणि ते । तमस्मै विश्वे त्वा देवा जरसे भर्तवा अदुः २
त्वामाहुर्देववर्म त्वां दर्भ ब्रह्मणस्पतिम् । त्वामिन्द्रस्याहुर्वर्म त्वं राष्ट्राणि रक्षसि ३
सपत्नक्षयणं दर्भ द्विषतस्तपनं हृदः । मणिं क्षत्रस्य वर्धनं तनूपानं कृणोमि ते ४ १५१५
यत् समुद्रो अभ्यक्रन्दत् पर्जन्यो विद्युता सह ।
ततो हिरण्ययो बिन्दुस्ततो दर्भो अजायत ५

॥२३७॥ (अथर्व० १९।३१।१-१४)

सविता (पुष्टिकामः) । औदुम्बरमणिः । अनुष्टुप्; ५,१२ त्रिष्टुप्; ६ विराट् प्रस्तार-पङ्क्तिः; ११,१३ पञ्चपदा शाकरी; १४ विराडास्तारपङ्क्तिः ।

औदुम्बरेण मणिना पुष्टिकामाय वेधसा । पशूनां सर्वेषां स्फातिं गोष्ठे मे सविता करत् १
यो नो अग्निर्गार्हपत्यः पशूनामधिपा असत् ।
औदुम्बरो वृषा मणिः स मा सृजतु पुष्ट्या २
करीषिणीं फलवतीं स्वधामिरां च नो गृहे ।
औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु मे ३ १५१९

यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च यान्यन्नानि ये रसाः ।
गृह्णेऽहं त्वेषां भूमानं बिभ्रदौदुम्बरं मणिम् ४ १५४०
पुष्टिं पशूनां परि जग्रभाहं चतुष्पदां द्विपदां यच्च धान्यम् ।
पयः पशूनां रसमोषधीनां बृहस्पतिः सविता मे नि यच्छात् ५
अहं पशूनामधिपा असानि मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु ।
मह्यमौदुम्बरो मणिर्द्रविणानि नि यच्छतु ६
उप मौदुम्बरो मणिः प्रजया च धनेन च ।
इन्द्रेण जिन्वितो मणिरा मागन्त्सह वर्चसा ७
देवो मणिः सपत्नहा धनसा धनसातये ।
पशोरन्नस्य भूमानं गवां स्फातिं नि यच्छतु ८
यथाग्रे त्वं वनस्पते पुष्ट्या सह जज्ञिषे ।
एवा धनस्य मे स्फातिमा दधातु सरस्वती ९ १५४५
आ मे धनं सरस्वती पयस्फातिं च धान्यम् ।
सिनीवाल्युपा वहादयं चौदुम्बरो मणिः १०
त्वं मणीनामधिपा वृषासि त्वयि पुष्टं पुष्टपतिर्जजान ।
त्वयीमे वाजा द्रविणानि सर्वौदुम्बरः स त्वमस्मत् सहस्वारादरातिमदतिं क्षुधं च ११
ग्रामणीरसि ग्रामणीरुत्थायाभिषिक्तोऽभि मा सिञ्च वर्चसा ।
तेजोऽसि तेजो मयि धारयाधि रयिरसि रयिं मे धेहि १२
पुष्टिरसि पुष्ट्या मा समङ्ग्धि गृहमेधी गृहपतिं मा कृणु ।
औदुम्बरः स त्वमस्मासु धेहि रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छ
रायस्पोषाय प्रति मुञ्चे अहं त्वाम् १३
अयमौदुम्बरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते ।
स नः सनिं मधुमतीं कृणोतु रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छात् १४ १५५०

॥१३८॥ (अथर्व० १९।३४।१-१०)

अङ्गिराः । वनस्पतिः, लिंगोक्ताः (जङ्गिडमणिः) । अनुष्टुप् ।

जङ्गिडोऽसि जङ्गिडो रक्षितासि जङ्गिडः । द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वं रक्षतु जङ्गिडः १
या गृत्स्यस्त्रिपञ्चाशीः शतं कृत्याकृतश्च ये ।
सर्वान् विनक्तु तेजसोऽरसां जङ्गिडस्करत् २ १५५१

अरसं कृत्रिमं नादमरसाः सप्त विस्रसः । अपेतो जङ्गिडामतिमिषुमस्तेव शातय ३
कृत्यादूषण एवायमथो अरातिदूषणः । अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयूंषि तारिषत् ४
स जङ्गिडस्य महिमा परि णः पातु विश्वतः ।
विष्कन्धं येन सासह संस्कन्धमोज ओजसा ५ १५५५
त्रिष्टा देवा अजनयन् निष्ठितं भूम्यामधि । तमु त्वाङ्गिरा इति ब्राह्मणाः पूर्व्या विदुः ६
न त्वा पूर्वा ओषधयो न त्वा तरन्ति या नवाः ।
विबाध उग्रो जङ्गिडः परिपाणः सुमङ्गलः ७
अथोपदान भगवो जङ्गिडामितवीर्य । पुरा त उग्रा ग्रसत उपेन्द्रो वीर्यं ददौ ८
उग्र इत् ते वनस्पत इन्द्रं ओजमानमा दधौ । अमीवाः सर्वाश्चातय जहि रक्षांस्योषधे ९
आशरीकं विशरीकं बलासं पृष्ट्यामयम् । तक्मानं विश्वशारदमरसां जङ्गिडस्करत् १० १५६०

॥२३९॥ (अथर्व० १९।३५।१-५)

आङ्गिराः । वनस्पतिः (जङ्गिडः) । अनुष्टुप्; ३ पथ्यापङ्क्तिः; ४ निचृत् त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य नामं गृह्णन्त ऋषयो जङ्गिडं ददुः ।
देवा यं चक्रुर्भेषजमग्रे विष्कन्धदूषणम् १
स नो रक्षतु जङ्गिडो धनपालो धनेव । देवा यं चक्रुर्ब्राह्मणाः परिपाणमरातिहम् २
दुर्हार्दुः संघोरं चक्षुः पापकृत्वानमागमम् ।
तांस्त्वं सहस्रचक्षो प्रतीबोधेन नाशय परिपाणोऽसि जङ्गिडः ३
परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् परि मा वीरुद्भ्यः ।
परि मा भूतात् परि मोत भव्याद् दिशोदिशो जङ्गिडः पात्वस्मान् ४
य ऋष्णवो देवकृता य उतो वनुतेऽन्यः ।
सर्वांस्तान् विश्वभेषजोऽरसां जङ्गिडस्करत् ५ १५६५

॥२४०॥ (अथर्व० १९।३६।१-६)

ब्रह्मा । शतवारो मणिः । अनुष्टुप् ।

शतवारो अनीनशद् यक्ष्मान् रक्षांसि तेजसा ।
आरोहन् वर्चसा सह मणिर्दुर्णामचातनः १
शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते मूलेन यातुधान्यः । मध्येन यक्ष्मं बाधते नैनं पाप्मार्ति तन्वति २
ये यक्ष्मासो अर्भका महान्तो ये च शब्दिनः ।
सर्वां दुर्णामहा मणिः शतवारो अनीनशत् ३ १५६८

शतं वीरानजनयच्छतं यक्ष्मानपावपत् । दुर्णाम्नः सर्वान् हत्वाव रक्षाँसि धूनुते ४
हिरण्यशृङ्ग ऋषभः शातवारो अयं मणिः । दुर्णाम्नः सर्वांस्तृड्ढ्वाव रक्षाँस्यक्रमीत्५ १५७०
शतमहं दुर्णाम्नीनां गन्धर्वाप्सरसां शतम् । शतं शंश्वन्वतीनां शतवारेण वारये ६

॥२४१॥ (अथर्व० १९।४६।१-७)

प्रजापतिः । अस्तृतमणिः । त्रिष्टुप्; १ पञ्चपदा ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्; २ षट्पदा भुरिक्शक्करी; ३,७ पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः; ४ चतुष्पदा; ५ पञ्चपदा अतिशक्करी; ६ पञ्चपदोष्णिग्गर्भा विराड् जगती ।

प्रजापतिष्ट्वा बध्नात् प्रथममस्तृतं वीर्याय कम् ।
तत् ते बध्नाम्यायुषे वर्चस ओजसे च बलाय चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु १
ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्नप्रमादुमस्तृतेमं मा त्वा दभन् पणयो यातुधानाः ।
इन्द्र इव दस्युनव धूनुष्व पृतन्यतः सर्वांछत्रून् वि षहस्वास्तृतस्त्वाभि रक्षतु २
शतं च न प्रहरन्तो निघ्नन्तो न तस्तिरे ।
तस्मिन्निन्द्रः पर्यदत्त चक्षुः प्राणमथो बलमस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ३
इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि धापयामो यो देवानामधिराजो बभूव ।
पुनस्त्वा देवाः प्र णयन्तु सर्वेऽस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ४ १५७५
अस्मिन् मणावेकशतं वीर्याणि सहस्रं प्राणा अस्मिन्नस्तृते ।
व्याघः शत्रूनभि तिष्ठ सर्वान् यस्त्वा पृतन्यादधरः सो अस्त्वस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ५
घृतादुलुम्पो मधुमान् पयस्वान्त्सहस्रप्राणः शतयोनिर्वयोधाः ।
शंभूश्च मयोभूश्चोर्जस्वांश्च पयस्वांश्चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ६
यथा त्वमुत्तरोऽसो असपत्नः सपत्नहा ।
सजातानामसद् वशी तथा त्वा सविता करदस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ७ १५७८

अरिष्टनाशनम् । (१५७९-१५९०)

॥२४२॥ (अथर्व० ६।२७।१-३)

भृगुः । यमः, निर्ऋतिः (अरिष्टक्षयणम्) । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

देवाः कपोत इषितो यदिच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम ।
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे १
शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनो गृहं नः ।
अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु २ १५८०

हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मानाष्ट्री पदं कृणुते अग्निधाने ।
शिवो गोभ्य उत पुरुषेभ्यो नो अस्तु मा नो देवा इह हिंसीत् कपोतः ३

॥२४३॥ (अथर्व० ६।२८।१-३)

भृगुः । यमः, निर्ऋतिः (अरिष्टक्षयणम्) । १ त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप्, ३ जगती ।

ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदुमिषं मदन्तः परि गां नयामः ।
संलोभयन्तो दुरिता पदानि हित्वा न ऊर्जं प्र पदात् पथिष्ठः १
परीमेऽग्निमर्षत परीमे गामनेषत ।
देवेष्वक्रत श्रवः क इमाँ आ दधर्षति २
यः प्रथमः प्रवतमाससाद बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानः ।
योऽस्येशे द्विपदो यश्चतुष्पदस्तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे ३

॥२४४॥ (अथर्व० ६।२९।१-३)

भृगुः । यमः, निर्ऋतिः (अरिष्टक्षयणम्) । (बृहती) १-२ विराण्नाम गायत्री, ३ त्र्यवसाना सप्तपदा विराडष्टिः ।

अमून् हेतिः पतत्रिणी न्येतु यदुलूको वदति मोघमेतत् ।
यद् वा कपोतः पदमग्नौ कृणोति १ १५८५
यौ ते दूतौ निर्ऋत इदमेतोऽप्रहितौ प्रहितौ वा गृहं नः ।
कपोतोलूकाभ्यामपदं तदस्तु २
अवैरहत्यायेदमा पपत्यात् सुवीरतायै इदमा ससद्यात् ।
परांङेव परा वद पराचीमनु संवतम् ।
यथा यमस्य त्वा गृहेऽरसं प्रतिचाकशानाभूकं प्रतिचाकशान् ३

॥२४५॥ (अथर्व० ६।८०।१-३)

अथर्वा । चन्द्रमाः (अरिष्टक्षयणम्) । १ भुरिक्, २ अनुष्टुप्, ३ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अन्तरिक्षेण पतति विश्वा भूतावचाकशत् ।
शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम १
ये त्रयः कालकाञ्जा दिवि देवा इव श्रिताः ।
तान्त्सर्वानह ऊतयऽआ अरिष्टतातये २
अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थं समुद्रे अन्तर्महिमा ते पृथिव्याम् ।
शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम ३ १५९०

कृत्यादूषणम्। (१५९१-१६५३)

॥२४६॥ (अथर्व० ५।१४।१--१३)

शुक्रः। वनस्पतिः, कृत्यापरिहरणम्। अनुष्टुप्; ३,५,१२ भुरिक्; ८ त्रिपदा विराट्; १० निचृद्बृहती; ११ त्रिपदा साम्नी त्रिष्टुप्; १३ स्वराट्।

सुपर्णस्त्वान्वविन्दत् सूकरस्त्वाखनन्नसा। दिप्सौषधे त्वं दिप्सन्तमव कृत्याकृतं जहि १
अव जहि यातुधानानव कृत्याकृतं जहि।
अथो यो अस्मान् दिप्सति तमु त्वं जह्योषधे २
रिश्यस्येव परीशासं परिकृत्य परि त्वचः।
कृत्यां कृन्याकृतं देवा निष्किमिव प्रति मुञ्चत ३
पुनः कृत्यां कृत्याकृतं हस्तगृह्य परा णय।
समक्षमस्मा आ धेहि यथा कृत्याकृतं हनत् ४
कृत्याः सन्तु कृत्याकृते शपथः शपथीयते।
सुखो रथ इव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः ५ १५९५
यदि स्त्री यदि वा पुमान् कृत्यां चकार पाप्मने।
तामु तस्मै नयामसि श्वेव श्वाभिधान्या ६
यदि वासि देवकृता यदि वा पुरुषैः कृता। तां त्वा पुनर्णयामसीन्द्रेण सयुजा वयम् ७
अग्ने पृतनाषाट् पृतनाः सहस्व। पुनः कृत्यां कृत्याकृते प्रतिहरणेन हरामसि ८
कृतव्यधनि विध्य तं यश्चकार तमिज्जहि। न त्वामचक्रुषे वयं वधाय सं शिशीमहि ९
पुत्र इव पितरं गच्छ स्वज इवाभिष्ठितो दश।
बन्धमिवावक्रामी गच्छ कृत्ये कृत्याकृतं पुनः १० १६००
उदेणीव वारण्यभिस्कन्दं मृगीव। कृत्या कर्तारमृच्छतु ११
इष्वा ऋजीयः पततु द्यावापृथिवी तं प्रति।
सा तं मृगमिव गृह्णातु कृत्या कृत्याकृतं पुनः १२
अग्निरिवैतु प्रतिकूलमनुकूलमिवोदकम्। सुखो रथ इव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः १३

॥२४७॥ (अथर्व० ५।३१।१--१२)

शुक्रः। कृत्यादूषणम् (कृत्यापरिहरणम्)। अनुष्टुप्; ११ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्; १२ पथ्याबृहती।

यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्ये।
आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् १ १६०४

यां ते चक्रुः कुकवाकावजे वा यां कुरीरिणि ।
अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् २ १६०५
यां ते चक्रुरेकशफे पशूनामुभयादति ।
गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् ३
यां ते चक्रुरमूलायां वलगं वा नराच्याम् ।
क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् ४
यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये पूर्वाग्नावुत दुश्चितः ।
शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् ५
यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरधिदेवने ।
अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् ६
यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिष्वायुधे ।
दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् ७ १६१०
यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः श्मशाने वा निचख्नुः ।
सभ्ये कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् ८
यां ते चक्रुः पुरुषास्थे अग्नौ संकसुके च याम् ।
श्रोकं निर्दाहं क्रव्यादं पुनः प्रति हरामि ताम् ९
अपथेना जभारिणां तां पथेतः प्र हिण्मसि ।
अधीरो मर्याधीरेभ्यः सं जभाराचित्त्या १०
यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् । चकार भद्रमस्मभ्यमभूगो भगवद्भ्यः ११
कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेय्यम् ।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तया १२

॥२४८॥ (अथर्व० १०।१।१-३२)

प्रत्यङ्गिरसः । कृत्यादूषणम् । अनुष्टुप्; १ महाबृहती; २ विराण्नाम गायत्री; ९ पथ्यापङ्क्तिः; ११ पङ्क्तिः; १३ उरोबृहती; १५ चतुष्पदा विराड्जगती; १७,२०,२४ प्रस्तारपङ्क्तिः (२० विराड्); १६,१८ त्रिष्टुप्; १९ चतुष्पदा जगती; २२ एकावसाना द्विपदाऽऽर्ची उष्णिक्; २३ त्रिपदा भुरिग्विषमा गायत्री; २८ त्रिपदा गायत्री; २९ मध्ये ज्योतिष्मती जगती; ३२ त्र्यनुष्टुब्गर्भा पञ्चपदाऽतिजगती ।

यां कल्पयन्ति वहतौ वधूमिव विश्वरूपां हस्तकृतां चिकित्सवः ।
सारादेत्वप नुदाम एनाम् १ १६१६

शीर्ष्णवती नस्वती कर्णिनी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा । सारादेत्वप नुदाम एनाम्२
शूद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्मभिः कृता । जाया पत्या नुत्तेव कर्तारं बन्धृच्छतु३
अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम् । यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वा ते पुरुषेषु४
अघमस्त्वघकृते शपथः शपथीयते । प्रत्यक् प्रतिप्रहिण्मो यथा कृत्याकृतं हनत् ५ १६२०
प्रतीचीन आङ्गिरसोऽध्यक्षो नः पुरोहितः ।
प्रतीचीः कृत्या आकृत्यामून् कृत्याकृतो जहि ६
यस्त्वोवाच परेहीति प्रतिकूलमुदाय्यम् ।
तं कृत्येऽभिनिवर्तस्व मास्मानिच्छो अनागसः ७
यस्ते परूंषि संदधौ रथस्येव भुरिधया । तं गच्छ तत्र तेऽयनमज्ञातस्तेऽयं जनः ८
ये त्वा कृत्वालेभिरे विद्रला अभिचारिणः ।
शंभ्वी३दं कृत्यादूषणं प्रतिवर्त्म पुनःसरं तेन त्वा स्नपयामसि ९
यद् दुर्भगां प्रस्नपितां मृतवत्सामुपेयिम । अर्पतु सर्वं मत् पापं द्रविणं मोप तिष्ठतु१० १६२५
यत् ते पितृभ्यो ददतो यज्ञे वा नाम जगृहुः ।
संदेश्या३त् सर्वस्मात् पापादिमा मुञ्चन्तु त्वौषधीः ११
देवैनसात् पित्र्यान्नामग्राहात् संदेश्या३दभिनिष्कृतात् ।
मुञ्चन्तु त्वा वीरुधो वीर्येण ब्रह्मण ऋग्भिः पयस ऋषीणाम् १२
यथा वातश्चयावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम् ।
एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति १३
अप क्राम नानदती विनद्धा गर्दभीव ।
कर्तृन् नक्षस्वेतो नुत्ता ब्रह्मणा वीर्यावता १४
अयं पन्थाः कृत्येति त्वा नयामोऽभिप्रहितां प्रति त्वा प्र हिण्मः ।
तेनाभि याहि भञ्जत्यनस्वतीव वाहिनी विश्वरूपा कुरूटिनी १५ १६३०
पराक् ते ज्योतिरपथं ते अर्वागन्यत्रास्मदयना कृणुष्व ।
परेणेहि नवतिं नाव्या३ अति दुर्गाः स्रोत्या मा क्षणिष्ठाः परेहि १६
वात इव वृक्षान् नि मृणीहि पादय मा गामश्वं पुरुषमुच्छिष एषाम् ।
कर्तृन् निवृत्येतः कृत्येऽप्रजास्त्वाय बोधय १७
यां ते बर्हिषि यां श्मशाने क्षेत्रे कृत्यां वलगं वा निचख्नुः ।
अग्नौ वा त्वा गार्हपत्येऽभिचेरुः पाकं सन्तं धीरतरा अनागसम् १८ १६३३

*

उपाहृतमनुबुद्धं निखातं वैरं त्सार्यन्वविदाम कर्त्रम् ।
तदेतु यत आभृतं तत्राश्व इव वि वर्ततां हन्तु कृत्याकृतः प्रजाम् १९
स्वायुसा असयः सन्ति नो गृहे विद्मा ते कृत्ये यतिधा परूंषि ।
उत्तिष्ठैव परेहीतोऽज्ञाते किमिहेच्छसि २० १६३५
ग्रीवास्ते कृत्ये पादौ चापि कर्त्स्यामि निर्द्रव ।
इन्द्राग्नी अस्मान् रक्षतां यौ प्रजानां प्रजावती २१
सोमो राजाधिपा मृडिता च भूतस्य नः पतयो मृडयन्तु २२
भवाशर्वावस्यतां पापकृते कृत्याकृते । दुष्कृते विद्युते देवहेतिम् २३
यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा ।
सेतोऽइष्टापदी भूत्वा पुनः परेहि दुच्छुने २४
अभ्यं१क्ताक्ता स्वरिकृता सर्वं भरन्ती दुरितं परेहि ।
जानीहि कृत्ये कर्तारं दुहितेव पितरं स्वम् २५ १६४०
परेहि कृत्ये मा तिष्ठो विद्धस्येव पदं नय ।
मृगः स मृगयुस्त्वं न त्वा निकर्तुमर्हति २६
उत हन्ति पूर्वासिनं प्रत्यादायापरं इष्वा । उत पूर्वस्य निघ्नतो नि हन्त्यपरः प्रति२७
एतद्धि शृणु मे वचोऽथेहि यत एयथ । यस्त्वा चकार तं प्रति २८
अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः ।
यत्रयत्रासि निहिता ततस्त्वोत्थापयामसि पूर्णाछपीयसी भव २९
यदि स्थ तमसावृता जालेनाभिहिता इव ।
सर्वाः संलुप्येतः कृत्याः पुनः कर्त्रे प्र हिण्मसि ३० १६४५
कृत्याकृतो वलगिनोऽभिनिष्कारिणः प्रजाम् ।
मृणीहि कृत्ये मोच्छिषोऽमून् कृत्याकृतो जहि ३१
यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि रात्रिं जहात्युषसश्च केतून् ।
एवाहं सर्वं दुर्भूतं कर्त्रं कृत्याकृतां कृतं हस्तीव रजो दुरितं जहामि ३२

॥२४९॥ (अथर्व० २।१४।१-६)

चातनः । शालाग्निर्देवत्यं (दस्युनाशनम्) । अनुष्टुप्, २ भुरिक्, ४ उपरिष्टाद्विराड्बृहती ।

निःसालां धृष्णुं धिषणमेकवाद्यां जिघत्स्वम् ।
सर्वाश्चण्डस्य नप्त्यो नाशयामः सदान्वाः १ १६४८

निर्वो गोष्ठादजामसि निरक्षान्निरुपानसात् ।
निर्वो मगुन्द्या दुहितरो गृहेभ्यश्चातयामहे २
असौ यो अधराद् गृहस्तत्र सन्त्वराय्यः ।
तत्र सेदिर्युच्यतु सर्वाश्च यातुधान्यः ३ १६५०
भूतपतिर्निरजत्विन्द्रश्चेतः सदान्वाः ।
गृहस्य बुध्न आसीनास्ता इन्द्रो वज्रेणाधि तिष्ठतु ४
यदि स्थ क्षेत्रियाणां यदि वा पुरुषेषिताः ।
यदि स्थ दस्युभ्यो जाता नश्यतेतः सदान्वाः ५
परि धामान्यासामाशुर्गाष्ठामिवासरन् ।
अजैषं सर्वानाजीन्वो नश्यतेतः सदान्वाः ६ १६५३

पापादिनाशनम् । (१६५४-१९३०)

॥२५०॥ (अथर्व० १।१०।१-४)

अथर्वा । असुरो वरुणः (पाश-विमोचनम्) । त्रिष्टुप्, ३ ककुम्मत्यनुष्टुप्, ४ अनुष्टुप् ।

अयं देवानामसुरो वि राजति वशा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः ।
ततस्परि ब्रह्मणा शाशदान उग्रस्य मन्योरुदिमं नयामि १
नमस्ते राजन् वरुणास्तु मन्यवे विश्वं ह्युग्र निचिकेषि दुग्धम् ।
सहस्रमन्यान् प्र सुवामि साकं शतं जीवाति शरदस्तवायम् २ १६५५
यदुवक्थानृतं जिह्वया वृजिनं बहु । राज्ञस्त्वा सत्यधर्मणो मुञ्चामि वरुणादहम् ३
मुञ्चामि त्वा वैश्वानरादर्णवान्महतस्परि ।
सजातानुग्रेहा वद ब्रह्म चापः चिकीहि नः ४

॥२५१॥ (अथर्व० १।३१।१-४)

ब्रह्मा । आशापालाः, [वास्तोष्पतिः] (पाशमोचनम्) । अनुष्टुप्, ३ विराट् त्रिष्टुप्, ४ पराऽनुष्टुप् त्रिष्टुप् ।

आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः । इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम् १
य आशानामाशापालाश्चत्वार स्थन देवाः ।
ते नो निर्ऋत्याः पाशेभ्यो मुञ्चतांहसोअंहसः २
अस्तामस्त्वा हविषा यजाम्यश्लोणस्त्वा घृतेन जुहोमि ।
य आशानामाशापालस्तुरीयो देवः स नः सुभूतमेह वक्षत् ३ १६६०

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः ।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम् ४

॥२५२॥ (अथर्व० २।१०।१-८)

भृग्वङ्गिराः। १-८ द्यावापृथिवी, ब्रह्म; २ अग्निः, आपः, ओषधयः, सोमः; ३ वातः, दिशः; ४-८ वातपत्नीः, सूर्यः, यक्ष्मं, निर्ऋतिः (पाशमोचनम्)। १ त्रिष्टुप्; २ सप्तपदाऽष्टिः; ३-५,७-८ सप्तपदा धृतिः; ६ सप्तपदाऽत्यष्टिः; ८ (१-३) द्वौ पादौ उष्णिहौ।

क्षेत्रियात् त्वा निर्ऋत्या जामिशंसाद् दुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् १
शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् दुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् । अना० । २
शं ते वातो अन्तरिक्षे वयो धाच्छं ते भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः । एवाहं० । अना० । ३
इमा या देवीः प्रदिशश्चतस्रो वातपत्नीरभि सूर्यो विचष्टे । एवाहं० । अना० । ४ १६६५
तासु त्वान्तर्जरस्या दधामि प्र यक्ष्म एतु निर्ऋतिः पराचैः । एवाहं० । अना० । ५
अमुक्था यक्ष्माद् दुरितादवद्याद् द्रुहः पाशाद् ग्राह्याश्चोदमुक्थाः। एवाहं० । अना० । ६
अहा अरातिमविदः स्योनमप्यभूर्भद्रे सुकृतस्य लोके । एवाहं० । अना० । ७
सूर्यमृतं तमसो ग्राह्या अधि देवा मुञ्चन्तो असृजन्निरेणसः ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् दुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ८

॥२५३॥ (अथर्व० ३।११२।१-३)

अथर्वा। अग्निः (पाशमोचनम्)। त्रिष्टुप्।

मा ज्येष्ठं वधीदयमग्न एषां मूलबर्हणात् परि पाह्येनम् ।
स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे १ १६७०
उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन् ।
स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् पितापुत्रौ मातरं मुञ्च सर्वान् २
येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धोऽङ्गेअङ्ग आर्पित उत्सितश्च ।
वि ते मुच्यन्तां विमुचो हि सन्ति भृणघ्नि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व ३ १६७१

॥२५४॥ (अथर्व० ६।११९।१-३)

कौशिकः। वैश्वानरोऽग्निः [आनृण्यम्] (पाशमोचनम्)। त्रिष्टुप्।

यद्दीव्यन्नृणमहं कृणोम्यदास्यन्नग्न उत संगृणामि ।
वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् १
वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्यृणं संगरो देवतासु ।
स एतान् पाशान् विचृतं वेद सर्वानथ पक्वेन सह सं भवेम २
वैश्वानरः पवित्रा मा पुनातु यत् संगरमभिधावाम्याशाम् ।
अनाजानन् मनसा याचमानो यत् तत्रैनो अप तत् सुवामि ३ १६७५

॥२५५॥ (अथर्व० ७।८३।१-४)

शुनःशेपः। वरुणः (पाशमोचनम्)। १ अनुष्टुप्, २ पथ्यापङ्क्तिः, ३ त्रिष्टुप्, ४ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप्।

अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मितः ।
ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु १
धाम्नोधाम्नो राजन्नितो वरुण मुञ्च नः ।
यदापो अघ्न्या इति वरुणेति यदूचिम ततो वरुण मुञ्च नः २
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।
अधा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ३
प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् य उत्तमा अधमा वारुणा ये ।
दुष्वप्न्यं दुरितं नि ष्वास्मदथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् ४

॥२५६॥ (अथर्व० ७।७८।१-२)

अथर्वा। अग्निः (बन्धमोचनम्)। १ परोष्णिक्, २ त्रिष्टुप्।

वि ते मुञ्चामि रशनां वि योक्त्रं वि नियोजनम् । इहैव त्वमजस्र एध्यग्ने १ १६८०
अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्ने युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन ।
दीदिह्यस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं प्रेमं वोचो हविर्दा देवतासु २

॥२५७॥ (अथर्व० ६।२५।१-३)

शुनःशेपः। मन्याविनाशनम्। अनुष्टुप्।

पञ्च च याः पञ्चाशच्च संयन्ति मन्या अभि ।
इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव १
सप्त च याः संप्रतिश्च संयन्ति ग्रैव्या अभि ।
इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव २ १६८३

नवं च या नवतिश्च संयन्ति स्कन्ध्या अभि ।
इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव ३

॥२५८॥ (अथर्व० ४।२३।१-७)

मृगारः । प्रचेता अग्निः (पाप-मोचनम्) । त्रिष्टुप्, ३ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती, ४ अनुष्टुप्, ६ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते ।
विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः १ १६८५
यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन् ।
एवा देवेभ्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः २
यामन्यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन्कर्मन्नाभगम् ।
अग्निमीडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः ३
सुजातं जातवेदसमग्निं वैश्वानरं विभुम् । हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः ४
येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः ।
येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः ५
येन देवा अमृतमन्वविन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन् ।
येन देवाः स्वरभरन्त्स नो मुञ्चत्वंहसः ६ १६९०
यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्जातं जनितव्यं च केवलम् ।
स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः ७

॥२५९॥ (अथर्व० ४।२४।१-७)

मृगारः । इन्द्रः (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, १ शाक्करीगर्भा पुरःशाक्करी ।

इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य मन्महे वृत्रघ्न स्तोमा उप मेम आगुः ।
यो दाशुषः सुकृतो हवमेति स नो मुञ्चत्वंहसः १
य उग्रीणामुग्रबाहुर्ययुर्यो दानवानां बलमारुरोज ।
येन जिताः सिन्धवो येन गावः स नो मुञ्चत्वंहसः २
यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वर्विद् यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् ।
यस्याध्वरः सप्तहोता मदिष्ठः स नो मुञ्चत्वंहसः ३
यस्य वशास ऋषभास उक्षणो यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वर्विदे ।
यस्मै शुक्रः पवते ब्रह्मशुम्भितः स नो मुञ्चत्वंहसः ४
यस्य जुष्टिं सोमिनः कामयन्ते यं हवन्त इषुमन्तं गविष्टौ ।
यस्मिन्नर्कः शिश्रिये यस्मिन्नोजः स नो मुञ्चत्वंहसः ५ १६९६

यः प्रथमः कर्मकृत्याय जज्ञे यस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम् ।
येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायतार्हिं स नो मुञ्चत्वंहसः ६
यः संग्रामान्नयति सं युधे वशी यः पुष्टानि संसृजति द्वयानि ।
स्तौमीन्द्रं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः ७

॥२६०॥ (अथर्व० ४।२५।१-७)

मृगारः । सविता, वायुः (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, ३ अतिशक्करी, ७ पथ्याबृहती ।

वायोः सवितुर्विदथानि मन्महे यावात्मन्वद् विशथो यौ च रक्षथः ।
यौ विश्वस्य परिभू बभूवथुस्तौ नो मुञ्चतमंहसः १
ययोः संख्याता वरिमा पार्थिवानि याभ्यां रजो युपितमन्तरिक्षे ।
ययोः प्रायं नान्वानशे कश्चन तौ नो मुञ्चतमंहसः २ १७००
तवं व्रते नि विशन्ते जनासस्त्वय्युदिते प्रेरते चित्रभानो ।
युवं वायो सविता च भुवनानि रक्षथस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ३
अपेतो वातो सविता च दुष्कृतमप रक्षांसि शिमिदा च सेधतम् ।
सं द्यू३जया सृजथः सं बलेन तौ नो मुञ्चतमंहसः ४
रयिं मे पोषं सवितोत वायुस्तनू दक्षमा सुवतां सुशेवम् ।
अयक्ष्मतातिं महे इह धत्तं तौ नो मुञ्चतमंहसः ५
प्र सुमतिं सवितर्वाय ऊतये महस्वन्तं मत्सरं मादयाथः ।
अर्वाग् वामस्य प्रवतो नि यच्छतं तौ नो मुञ्चतमंहसः ६
उप श्रेष्ठा न आशिषो देवयोर्धामन्नस्थिरन् ।
स्तौमि देवं सवितारं च वायुं तौ नो मुञ्चतमंहसः ७ १७०५

॥२६१॥ (अथर्व० ४।२६।१-७)

मृगारः । द्यावापृथिवी (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, १ अष्टिः, २-३ जगती, ७ शाकरगर्भातिमध्येज्योतिः ।

मन्वे वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ सचेतसौ ये अप्रथेथामभितो योजनानि ।
प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसूनां ते नो मुञ्चतमंहसः १
प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसूनां प्रवृद्धे देवी सुभगे उरूची ।
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः २
असंतापे सुतपसौ हुवेऽहमुर्वी गम्भीरे कविभिर्नमस्ये । द्यावापृथिवी० । ३ १७०८

ये अमृतं बिभृथो ये हवींषि ये स्रोत्या बिभृथो ये मनुष्यान् ।
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः ४
ये उस्रिया बिभृथो ये वनस्पतीन् ययोर्वो विश्वा भुवनान्यन्तः ।
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः ५ १७१०
ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन याभ्यामृते न किं चन शक्नुवन्ति ।
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः ६
यन्मेदमभिशोचति येनयेन वा कृतं पौरुषेयान्न दैवात् ।
स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चतमंहसः ७

॥२६२॥ (अथर्व० ४।२७।१-७) [पापमोचनम्] ।×

॥२६३॥ (अथर्व० ४।२८।१-७)

मृगारोऽथर्वा वा । भवाशर्वौ रुद्रो वा (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, १ अतिजागतगर्भा भुरिक् ।

भवाशर्वौ मन्वे वां तस्य वित्तं ययोर्वामिदं प्रदिशि यद् विरोचते ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः १
ययोरभ्यध्व उत यद् दूरे चिद् यौ विदितावितिषुभृतामसिष्ठौ । यावस्येशाथे० । २
सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवेऽहं दूरेगव्यूती स्तुवन्नेम्युग्रौ । यावस्येशाथे० । ३ १७१५
यावारेभाथे बहु साकमग्रे प्र चेदस्राष्ट्रमभिभां जनेषु । यावस्येशाथे० । ४
ययोर्विधान्नापपद्यते कश्चनान्तर्देवेषुत मानुषेषु । यावस्येशाथे० । ५
यः कृत्याकृन्मूलकृद् यातुधानो नि तस्मिन् धत्तं वज्रमुग्रौ । यावस्येशाथे० । ६
अधि नो ब्रूतं पृतनासुग्रौ सं वज्रेण सृजतं यः किमीदी ।
स्तौमि भवाशर्वौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः ७

॥२६४॥ (अथर्व० ४।२९।१-७)

मृगारः । मित्रावरुणौ (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, ७ शाकरीगर्भोऽतिजगती ।

मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे ।
प्र सत्यावानमवथो भरेषु तौ नो मुञ्चतमंहसः १
सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे प्र सत्यावानमवथो भरेषु ।
यौ गच्छथो नृचक्षसौ बभ्रुणा सुतं तौ नो मुञ्चतमंहसः २ १७२१

×द्रष्टव्या मरुद्देवतामन्त्राः ४४०-४४६ ।

यावङ्गिरसमवथो यावगस्तिं मित्रावरुणा जमदग्निमत्रिम् ।
यौ कश्यपमवथो यौ वसिष्ठं तौ नो मुञ्चतमंहसः ३
यौ श्यावाश्वमवथो वध्र्यश्वं मित्रावरुणा पुरुमीढमत्रिम् ।
यौ विमदमवथः सप्तवाध्रिं तौ नो मुञ्चतमंहसः ४
यौ भरद्वाजमवथो यौ गविष्ठिरं विश्वामित्रं वरुण मित्र कुत्सम् ।
यौ कक्षीवन्तमवथः प्रोत कण्वं तौ नो मुञ्चतमंहसः ५
यौ मेधातिथिमवथो यौ त्रिशोकं मित्रावरुणावुशनां काव्यं यौ ।
यौ गोतममवथः प्रोत मुद्गलं तौ नो मुञ्चतमंहसः ६ १७२५
ययो रथः सत्यवर्त्मर्जुरश्मिर्मिथुया चरन्तमभियातिं दूषयन् ।
स्तौमि मित्रावरुणौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः ७

॥२६५॥ (अथर्व० ६।११५।१-३)

ब्रह्मा । विश्वे देवाः (पापमोचनम्) । अनुष्टुप् ।

यद् विद्वांसो यदविद्वांस एनांसि चकृमा वयम् ।
यूयं नस्तस्मान्मुञ्चत विश्वे देवाः सजोषसः १
यदि जाग्रद् यदि स्वप्नेन एनस्योऽकरम् ।
भूतं मा तस्माद् भव्यं च द्रुपदादिव मुञ्चताम् २
द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नात्वा मलादिव ।
पूतं पवित्रेणेवाज्यं विश्वे शुम्भन्तु मैनसः ३

॥२६६॥ (अथर्व० ७।४२।१-२)+

प्रस्कण्वः । सोमारुद्रौ (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप् ।

सोमारुद्रा वि वृहतं विषूचीममीवा या नो गयमाविवेश ।
बाधेथां दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत् १ १७३०
सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मद् विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।
अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो असत् तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत् २

॥२६७॥ (अथर्व० ७।६४।१-२)

यमः । आपः, अग्निः, निर्ऋतिः (पापमोचनम्) । १ भुरिगनुष्टुप्, २ न्यङ्कुसारिणी बृहती ।

इदं यत् कृष्णः शकुनिरभिनिष्पतन्नपीपतत् ।
आपो मा तस्मात् सर्वस्माद् दुरितात् पान्त्वंहसः १ १७३२

+सोमदेवता- १२२४-१२२५ (ऋ. ६।७४।२,३) ।

इदं यत् कृष्णः शकुनिरवामृक्षन्निर्ऋते ते मुखेन ।
अग्निर्मा तस्मादेनसो गार्हपत्यः प्र मुञ्चतु २

॥२६८॥ (अथर्व० ११।६।१--२३)

शन्तातिः। चन्द्रमाः, मन्त्रोक्ताः (पापमोचनम्)। अनुष्टुप्; २३ बृहतीगर्भा ।

अग्निं ब्रूमो वनस्पतीनोषधीरुत वीरुधः ।
इन्द्रं बृहस्पतिं सूर्यं ते नो मुञ्चन्त्वंहसः १
ब्रूमो राजानं वरुणं मित्रं विष्णुमथो भगम् ।
अंशुं विवस्वन्तं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः २ १७३५
ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत पूषणम् । त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ३
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम् ।
अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ४
अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा ।
विश्वानादित्यान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ५
वातं ब्रूमः पर्जन्यमन्तरिक्षमथो दिशः । आशाश्च सर्वा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ६
मुञ्चन्तु मा शपथ्याद्दहोरात्रे अथो उषाः ।
सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति ७ १७४०
पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या उत ये मृगाः ।
शकुन्तान् पक्षिणो ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ८
भवाशर्वाविदं ब्रूमो रुद्रं पशुपतिश्च यः ।
इषुर्या एषां संविद्म ता नः सन्तु सदा शिवाः ९
दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान् ।
समुद्रा नद्यो वेशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः १०
सप्तर्षीन् वा इदं ब्रूमोऽपो देवीः प्रजापतिम् । ११
पितॄन् यमश्रेष्ठान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः
ये देवा दिविषदो अन्तरिक्षसदश्च ये । पृथिव्यां शक्रा ये श्रितास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः १२ १७४५
आदित्या रुद्रा वसवो दिवि देवा अथर्वाणः ।
अङ्गिरसो मनीषिणस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः १३
यज्ञं ब्रूमो यजमानमृचः सामानि भेषजा । यजूंषि होत्रा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः १४ १७४७

पञ्च॑ रा॒ज्यानि॑ वी॒रुधां॑ सोम॑श्रेष्ठानि ब्रूमः ।
दर्भो॑ भङ्गो॒ यव॒ः सह॒स्ते नो॑ मुञ्च॒न्त्वंह॑सः १५
अरा॑यान् ब्रूमो॒ रक्षां॑सि स॒र्पान् पु॑ण्यज॒नान् पि॒तॄन् ।
मृ॒त्यूने॑कशतं ब्रूम॒स्ते नो॑ मुञ्च॒न्त्वंह॑सः १६
ऋ॒तून् ब्रू॑म ऋतु॒पती॑नार्त॒वानु॒त हा॑य॒नान् ।
समाः॑ संवत्स॒रान् मासां॑स्ते नो॑ मुञ्च॒न्त्वंह॑सः १७ १७५०
एत॑ देवा दक्षिण॒तः प॒श्चात् प्राञ्च॑ उ॒देत॑ ।
पु॒रस्ता॑दुत्त॒राच्छ॒क्रा विश्वे॑ दे॒वाः स॒मेत्य॒ ते नो॑ मुञ्च॒न्त्वंह॑सः १८
विश्वा॑न् दे॒वानि॒दं ब्रू॑मः स॒त्यसं॑धानृ॒तावृ॑धः ।
विश्वा॑भि॒ः पत्नी॑भिः स॒ह ते नो॑ मुञ्च॒न्त्वंह॑सः १९
सर्वा॑न् दे॒वानि॒दं ब्रू॑मः स॒त्यसं॑धानृ॒तावृ॑धः ।
सर्वा॑भि॒ः पत्नी॑भिः स॒ह ते नो॑ मुञ्च॒न्त्वंह॑सः २०
भूत॑ ब्रूमो भू॒तप॑तिं भू॒ताना॑मु॒त यो व॒शी ।
भूता॑नि॒ सर्वा॑ स॒ंगत्य॒ ते नो॑ मुञ्च॒न्त्वंह॑सः २१
या दे॒वीः पञ्च॑ प्र॒दिशो॒ ये दे॒वा द्वाद॑शर्तवः ।
सं॒व॒त्स॒रस्य॒ ये दं॒ष्ट्रास्ते नः॑ सन्तु॒ सदा॑ शि॒वाः २२ १७५५
यन्मा॑त॒ली रथ॒क्रीत॑म॒मृत॑ं वेद॑ भेष॒जम् ।
तदिन्द्रो॑ अ॒प्सु प्रावे॑शय॒त् तदापो॑ दत्त भेष॒जम् २३

॥२६९॥ (अथर्व० ४।३३।१-८; ऋ० १।९७।१-८; अग्निः १८८७-९४)

ब्रह्मा । पाप्मनाशनोऽग्निः (पाप-नाशनम्) । गायत्री ।

अप॑ नः शोशु॒चदघ॑मग्ने शुशु॒ग्ध्या र॒यिम् । अप॑ नः शोशु॒चदघ॑म् १
सु॒क्षे॒त्रिया॑ सु॒गात॒ुया व॑सू॒या च॑ यजामहे । अप॑ नः शोशु॒चदघ॑म् २
प्र यद् भन्दि॑ष्ठ ए॒षां प्रास्माका॑सश्च सू॒रय॑ः । अप॑ नः शोशु॒चदघ॑म् ३
प्र यत् ते॑ अग्ने सू॒रयो॒ जाय॑ेमहि॒ प्र ते॑ व॒यम् । अप॑ नः शोशु॒चदघ॑म् ४ १७६०
प्र यद॒ग्नेः सह॑स्वतो॒ विश्व॑तो या॒न्ति भा॒नव॑ः । अप॑ नः शोशु॒चदघ॑म् ५
त्वं हि विश्व॑तोमुख॒ विश्व॑तः परि॒भूरसि॑ । अप॑ नः शोशु॒चदघ॑म् ६
द्विषो॑ नो विश्वतोमु॒खाति॑ ना॒वेव॑ पारय । अप॑ नः शोशु॒चदघ॑म् ७
स नः॑ सिन्धु॒मिव॑ ना॒वाति॑ पर्षा स्व॒स्तये॑ । अप॑ नः शोशु॒चदघ॑म् ८ १७६४

॥२७०॥ (अथर्व० ६।११३।१-३)

अथर्वा । पूषा (पापनाशनम्) । त्रिष्टुप्, ३ पङ्क्तिः ।

त्रिते देवा अमृजतैतदेनस्त्रिते एनन्मनुष्येषु ममृजे ।
ततो यदि त्वा ग्राहिरानशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु १ १७६५
मरीचीर्धूमान् प्र विशानु पाप्मन्नुदारान् गच्छोत वा नीहारान् ।
नदीनां फेनाँ अनु तान् वि नश्य भ्रूणघ्नि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व २
द्वादशधा निहितं त्रितस्यापमृष्टं मनुष्यैनसानि ।
ततो यदि त्वा ग्राहिरानशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु ३

॥२७१॥ (अथर्व० ७।११२।१-२)

वरुणः । आपः, वरुणश्च (पापनाशनम्) । १ भुरिक्, २ अनुष्टुप् ।

शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महिव्रते ।
आपः सप्त सुस्रुवुर्देवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः १
मुञ्चन्तु मा शपथ्या३दथो वरुण्यादुत ।
अथो यमस्य पड्वीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् २

॥२७२॥ (अथर्व० ७।११५।१-४) [पापलक्षणनाशनम्]*

॥२७३॥ (अथर्व० ६।२६।१-३)

ब्रह्मा । पाप्मा (पाप्मनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

अवं मा पाप्मन्त्सृज वशी सन् मृडयासि नः ।
आ मा भद्रस्य लोके पाप्मन् धेह्यविंहुतम् १ १७७०
यो नः पाप्मन् न जहासि तमु त्वा जहिमो वयम् ।
पथामनु व्यावर्तनेऽन्यं पाप्मानु पद्यताम् २
अन्यत्रास्मन्न्युच्यतु सहस्राक्षो अमर्त्यः ।
यं द्वेष्मि तमृच्छतु यमु द्विष्मस्तमिज्जहि ३

॥२७४॥ (अथर्व० ६।३७।१-३)

अथर्वा । (स्वस्त्ययनकामः) । चन्द्रमाः (शापनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

उप प्रागात् सहस्राक्षो युक्त्वा शपथो रथम् ।
शुनारमन्विच्छन् मम वृक इवाविमतो गृहम् १
परि णो वृङ्ग्धि शपथ हृदमग्निरिवा दहन् ।
शुनारमत्र नो जहि दिवो वृक्षमिवाशनिः २ १७७४

*अग्निदेवता- २२०१-२२०४ ।

यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात् ।
शुने पेष्ट्रमिवावक्षामं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे ३ १७७५

॥२७५॥ (अथर्व० ७।५९।१)

बादरायणिः । अरिनाशनम् (शाप-मोचनम्) । अनुष्टुप् ।

यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात् ।
वृक्ष इव विद्युता हत आ मूलादनु शुष्यतु १

॥२७६॥ (अथर्व० ५।७।१-१०)

अथर्वा । बहुदैवत्यम्; १-३,६-१० अरातयः; ४-५ सरस्वती (अरातिनाशनम्) । अनुष्टुप्; १ विराड्गर्भा प्रस्तारपङ्क्तिः; ४ पथ्याबृहती; ६ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

आ नो भर मा परि ष्ठा अराते मा नो रक्षीर्दक्षिणां नीयमानाम् ।
नमो वीत्सायाऽसमृद्धये नमो अस्त्वरातये १
यमराते पुरोधत्से पुरुषं परिरापिणम् ।
नमस्ते तस्मै कृण्मो मा वनिं व्यथयीर्मम २
प्र णो वनिर्देवकृता दिवा नक्तं च कल्पताम् ।
अरातिमनुप्रेमो वयं नमो अस्त्वरातये ३
सरस्वतीमनुमतिं भगं यन्तो हवामहे ।
वाचं जुष्टां मधुमतीमवादिषं देवानां देवहूतिषु ४ १७८०
यं याचाम्यहं वाचा सरस्वत्या मनोयुजा ।
श्रद्धा तमद्य विन्दतु दत्ता सोमेन बभ्रुणा ५
मा वनिं मा वाचं नो वीत्सीरुभाविन्द्राग्नी आ भरतां नो वसूनि ।
सर्वे नो अद्य दित्सन्तोऽरातिं प्रतिं हर्यत ६
परोऽपेह्यसमृद्धे वि ते हेतिं नयामसि ।
वेद त्वाहं निमीवन्तीं नितुदन्तीमराते ७
उत नग्ना बोभुवती स्वप्नया सचसे जनम् ।
अराते चित्तं वीर्त्सन्त्याकूतिं पुरुषस्य च ८
या महती महोन्माना विश्वा आशा व्यानशे ।
तस्यै हिरण्यकेश्यै निर्ऋत्या अकरं नमः ९
हिरण्यवर्णा सुभगा हिरण्यकशिपुर्महीं ।
तस्यै हिरण्यद्रापयेऽरात्या अकरं नमः १० १७८६

॥२७७॥ (अथर्व० ६।५१।१-३)

शन्तातिः । आपः, ३ वरुणः (एनोनाशनम्) । १ गायत्री, २ त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा १
आपो अस्मान् मातरः सूदयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि २
यत् किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरन्ति ।
अचित्त्या चेत् तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ४

॥२७८॥ (अथर्व० ६।८४।१-४)

भगः । निर्ऋतिः (निर्ऋतिमोचनम्) । १ भुरिग्जगती; २ त्रिपदार्षी बृहती; ३ जगती; ४ भुरिक् त्रिष्टुप् (जगती) ।

यस्यास्त आसनि घोरे जुहोम्येषां बद्धानामवसर्जनाय कम् ।
भूमिरिति त्वाभिप्रमन्वते जना निर्ऋतिरिति त्वाहं परि वेद सर्वतः १ १७९०
भूते हविष्मती भवैष ते भागो यो अस्मासु । मुञ्चेमानमूनेनसः स्वाहा २
एवो ष्वस्मन्निर्ऋतेऽनेहा त्वमयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।
यमो मह्यं पुनरित् त्वा ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे ३
अयस्मये द्रुपदे बेधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम् ।
यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् ४

॥२७९॥ (अथर्व० ६।११४।१-३)

ब्रह्मा । विश्वे देवाः (उन्मोचनम्) । अनुष्टुप् ।

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् । आदित्यास्तस्मान्नो यूयमुत्स्यूतेनं मुञ्चत १
ऋतस्यूतेनादित्या यजत्रा मुञ्चतेह नः ।
यज्ञं यद् यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेकिम २ १७९५
मेदस्वता यजमानाः सुचाज्यानि जुह्वतः ।
अकामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम ३

॥२८०॥ (अथर्व० ७।६३।१) [दुरितनाशनम्]×

॥२८१॥ (अथर्व० ३।९।१-६)

वामदेवः । द्यावापृथिवी, देवाः (दुःखनाशनम्) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा निचृद्बृहती, ६ भुरिक्

कर्शफस्य विशफस्य द्यौः पिता पृथिवी माता ।
यथाभिचक्र देवास्तथापं कृणुता पुनः १ १७९७

×अग्निदेवता- २३७४ ।

अश्रेष्माणो अधारयन् तथा तन्मनुना कृतम् ।
कृणोमि वध्रि विष्कन्धं मुष्काबर्हो गवामिव २
पिशङ्गे सूत्रे खृगलं तदा बध्नन्ति वेधसः ।
श्रवस्युं शुष्मं काबवं वध्रिं कृण्वन्तु बन्धुरः ३
येना श्रवस्यवश्चरथ देवा इवासुरमायया ।
शुनां कपिरिव दूषणो बन्धुग काबवस्य च ४ १८००
दुष्टयै हि त्वा भत्स्यामि दूषयिष्यामि काबवम् ।
उदाशवो रथा इव शपथेभिः सरिष्यथ ५
एकशतं विष्कन्धानि विष्ठिता पृथिवीमनु ।
तेषां त्वामग्र उज्जहरुर्मणिं विष्कन्धदूषणम् ६

॥२८२॥ (अथर्व० १६।१।१-१३) [प्रथमः पर्यायः।]

अथर्वा। प्रजापतिः (दुःखमोचनम्)। १,३ द्विपदा साम्नी बृहती; २,१० याजुषी त्रिष्टुप्; ४ आसुरी गायत्री; ५,८ साम्नी पङ्क्तिः (५ द्विपदा); ६ साम्नी अनुष्टुप्; ७ निचृद् विराड् गायत्री; ९ आसुरी पङ्क्तिः; ११ साम्न्युष्णिक्; १२-१३ आर्च्यनुष्टुप्।

अतिसृष्टो अपां वृषभोऽतिसृष्टा अग्नयो दिव्याः १
रुजन् परिरुजन् मृणन् प्रमृणन् २
स्रोको मनोहा खनो निर्दाह आत्मदूषिस्तनूदूषिः ३ १८०५
इदं तमतिं सृजामि तं माभ्यवनिक्षि ४
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ५
अपामग्नेमसि समुद्रं वोऽभ्यवसृजामि ६
योऽप्स्वग्निरति तं सृजामि स्रोकं खनिं तनूदूषिम् ७
यो वः आपोऽग्निराविवेश स एष यद् वो घोरं तदेतत् ८ १८१०
इन्द्रस्य व इन्द्रियेणाभि षिञ्चेत् ९
अरिप्रा आपो अप रिप्रमस्मत् १०
प्रास्मदेनो वहन्तु प्र दुष्वप्न्यं वहन्तु ११
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे १२
शिवानग्नीनप्सुषदो हवामहे मयि क्षत्रं वर्च आ धत्त देवीः १३ १८१५

॥२८३॥ (अथर्व० १६।२।१-६) [द्वितीयः पर्यायः ।]

अथर्वा । वाक् १ आसुर्यनुष्टुप्; २ आसुर्युष्णिक्; ३ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदा साम्नी बृहती; ५ आर्च्यनुष्टुप्; ६ निचृद् विराड्गायत्री ।

निर्दुरर्मण्य ऊर्जा मधुमती वाक् । १
मधुमती स्थ मधुमतीं वाचमुदेयम् २
उपहूतो मे गोपा उपहूतो गोपीथः ३
सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रूयासम् ४
सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा हासिष्टां सौपर्णं चक्षुरजस्रं ज्योतिः ५ १८२०
ऋषीणां प्रस्तरोऽसि नमोऽस्तु दैवाय प्रस्तराय ६

॥२८४॥ (अथर्व० १६।३।१-६) [तृतीयः पर्यायः ।]

ब्रह्मा । आदित्यः । १ आसुरी गायत्री; २-३ आर्च्यनुष्टुप्; ४ प्राजापत्या त्रिष्टुप्; ५ साम्न्युष्णिक्; ६ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम् १
रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम् २
उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्टां धर्ता च मा धरुणश्च मा हासिष्टाम् ३
विमोकश्च मार्द्रपविश्च मा हासिष्टामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम् ४ १८२५
बृहस्पतिर्म आत्मा नुमणा नाम हृद्यः ५
असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा ६

॥२८५॥ (अथर्व० १६।४।१-७) [चतुर्थः पर्यायः ।]

ब्रह्मा । आदित्यः । १,३ साम्न्यनुष्टुप्; २ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्; ५ आसुरी गायत्री; ६ आर्च्युष्णिक्; ७ त्रिपदा विराड्गर्भाऽनुष्टुप् ।

नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम् १
स्वासदसि सुषा अमृतो मर्त्येष्वा २
मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽवहाय परा गात् ३ १८३०
सूर्यो माह्नः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः ४
प्राणापानौ मा मा हासिष्टं मा जने प्र मेष ५
स्वस्त्यहोषसो दोषसश्च सर्वा आपः सर्वगणो अशीय ६
शक्करी स्थ पशवो मोप स्थेषुर्मित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु ७ १८३४

॥२८६॥ (अथर्व० १६।५।१-१०) [पञ्चमः पर्यायः।]

यमः। ×दुःष्वप्ननाशनम्। १-६ (प्रथमा) विराड् गायत्री [५ (प्रथमा) भुरिक, ६ (प्रथमा) स्वराट्]; १-६ (द्वितीया) प्राजापत्या गायत्री; १-६ (तृतीया) द्विपदा साम्नी बृहती।

विद्म ते स्वप्न जनित्रं ग्राह्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ १ १८३५
अन्तकोऽसि मृत्युरसि ॥२॥ २
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि ॥३॥ ३
विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१। अन्तं०।२ तं०।३ ४
विद्म ते स्वप्न जनित्रमभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१। अन्तं०।२ तं०।३ ५
विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१। अन्तं०।२ तं०।३ ६ १८४०
विद्म ते स्वप्न जनित्र पराभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१। अन्तं०।२ तं०।३ ७
विद्म ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ ८
अन्तकोऽसि मृत्युरसि ॥२॥ ९
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि ॥३॥ १०

॥२८७॥ (अथर्व० १६।६।१-११) [षष्ठः पर्यायः।]

यमः। दुःष्वप्ननाशनं, उषा। १-४ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ५ साम्ना पङ्क्तिः; ६ निचृदार्षी बृहती; ७ द्विपदा साम्नी बृहती; ८ आसुरी जगती; ९ आसुरी बृहती; १० आर्च्युष्णिक्; ११ त्रिपदा यवमध्या गायत्री वा आर्च्यनुष्टुप्।

अजैष्माद्यासनामाद्याभूमानागसो वयम् १ १८४५
उषो यस्माद् दुष्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छतु २
द्विषते तत् परा वह शपते तत् परा वह ३
यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तस्मा एनद् गमयामः ४
उषा देवी वाचा सँविदाना वाग् देव्युषसा संविदाना ५
उषस्पतिर्वाचस्पतिना संविदानो वाचस्पतिरुषस्पतिना संविदानः ६ १८५०
तेऽमुष्मै परा वहन्त्वरायान् दुर्णाम्नः सदान्वाः ७
कुम्भीका दूषीकाः पीयकान् ८
जाग्रद्दुष्वप्न्यं स्वप्नेदुष्वप्न्यम् ९
अनागमिष्यतो वरानविन्तेः संकल्पानमुष्या हृदः पाशान् १०
तदमुष्मा अग्ने देवाः परा वहन्तु वध्रिर्यथासद् विथुरो न साधुः ११ १८५५

×४६-४७ पृष्ठयोः १०५-१११ सूक्तानि द्रष्टव्यानि।

॥१८८॥ (अथर्व० १६।७।१-१३) [सप्तमः पर्यायः ।]

यमः । दुःष्वप्ननाशनं, उषा । १ पङ्क्तिः; २ साम्न्यनुष्टुप्; ३ आसुर्युष्णिक्; ४ प्राजापत्या गायत्री; ५ आर्च्युष्णिक्; ६,९,११ साम्नी बृहती; ७ याजुषी गायत्री; ८ प्राजापत्या बृहती; १० साम्नी गायत्री; १२ भुरिक् प्राजापत्यानुष्टुप्; १३ आसुरी त्रिष्टुप् ।

तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं विध्यामि निर्भूत्यैनं विध्यामि
परांभूत्यैनं विध्यामि ग्राह्यैनं विध्यामि तमसैनं विध्यामि १
देवानामेनं घोरैः क्रूरैः प्रैषैरभिप्रेष्यामि २
वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोरपि दधामि ॥३॥ एवानेवाव सा गंरत् ४
योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा द्वेष्टु यं वयं द्विष्मः स आत्मानं द्वेष्टु ५ १८६०
निर्द्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या निरन्तरिक्षाद् भजाम ॥६॥ सुयामंश्वाक्षुष ७
इदमहमामुष्यायणेऽमुष्याः पुत्रे दुष्वप्न्यं मृजे ८
यदुदोअंदो अभ्यगच्छन् यद् दोषा यत् पूर्वां रात्रिम् ९
यज्जाग्रद् यत् सुप्तो यद् दिवा यन्नक्तम् १० १८६५
यदहंरहरभिगच्छामि तस्मादेनमव दये ११
तं जहि तेनं मन्दस्व तस्यं पृष्टीरपि शृणीहि १२
स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु १३

॥१८९॥ (अथर्व० १६।८।१-२७) [अष्टमः पर्यायः ।]

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । १-२७ (प्रथमा) एकपदा यजुर्ब्राह्म्यनुष्टुप्; १-२७ (द्वितीया) द्विपदा निचृद्गायत्री; १ (तृतीया) प्राजापत्या गायत्री; १-२७ (चतुर्थी) त्रिपदा प्राजापत्या त्रिष्टुप्; २-४,९,१७, १९,२४ (तृतीया) आसुरी जगती; ५,७-८,१०-११,१३ १८ (तृतीया) आसुरी त्रिष्टुप्;६,१२, १४-१६,२०-२३,२७(तृतीया) आसुरी पङ्क्तिः; २५-२६ (तृतीया) आसुरी बृहती।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमुतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥१॥ १
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ॥२॥ २ १८७०
स ग्राह्याः पाशान्मा मौचि ॥३॥ ३
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥४॥ १ । ४
जितम० । स निर्ऋत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं० ॥१-४॥ २ । ५
जितम० । सोऽभूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं० ॥१-४॥ ३ । ६
जितम० । स निर्भूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं० ॥१-४॥ ४ । ७ १८७५

जितम्० । स पराभूत्याः पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ ५। ८
जितम्० । स दैवजामीनां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ ६। ९
जितम्० । स बृहस्पतेः पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ ७। १०
जितम्० । स प्रजापतेः पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ ८। ११
जितम्० । स ऋषीणां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ ९। १२ १८८०
जितम्० । स आर्षेयाणां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ १०। १३
जितम्० । सोऽङ्गिरसां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ ११। १४
जितम्० । स आङ्गिरसानां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ १२। १५
जितम्० । सोऽथर्वणां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ १३। १६
जितम्० । स आथर्वणानां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ १४। १७ १८८५
जितम्० । स वनस्पतीनां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ १५। १८
जितम्० । स वानस्पत्यानां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ १६। १९
जितम्० । स ऋतूनां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ १७। २०
जितम्० । स आर्तवानां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ १८। २१
जितम्० । स मासानां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ १९। २२ १८९०
जितम्० । सोऽर्धमासानां पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ २०। २३
जितम्० । सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ २१। २४
जितम्० । सोऽह्नोः संयतोः पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ २२। २५
जितम्० । स द्यावापृथिव्योः पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ २३। २६
जितम्० । स इन्द्राग्न्योः पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ २४। २७ १८९५
जितम्० । स मित्रावरुणयोः पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ २५। २८
जितम्० । स राज्ञो वरुणस्य पाशान्मा मोचि । तस्येदं० ॥१-४॥ २६। २९
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥१॥ ३०
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ॥२॥ ३१
स मृत्योः पड्वीशात् पाशान्मा मोचि ॥३॥ ३२
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥४॥ २७। ३३ १९०१

॥२९०॥ (अथर्व० १६।९।१-४) [नवमः पर्यायः ।]

यमः । १ प्रजापतिः; २ अग्निः, सोमः, पूषा; ३-४ सूर्यः । १ प्राजापत्या आर्च्यनुष्टुप्; २ आर्च्युष्णिक्; ३ साम्नी पङ्क्तिः; ४ परोष्णिक् ।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्यष्ठां विश्वाः पृतना अरातीः १
तदग्निराह तदु सोम आह पूषा मा धात् सुकृतस्य लोके २
अगन्म स्वः स्वरगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म ३
वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि ४ १९०५

॥२९१॥ (अथर्व० ७।२३।१)

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप् ।

दौष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अभ्वमराय्यः ।
दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि १

॥२९२॥ (अथर्व० १९।५६।१-६)

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । त्रिष्टुप् ।

यमस्य लोकादध्या बभूविथ प्रमदा मर्त्यान् प्र युनक्षि धीरः ।
एकाकिना सरथं यासि विद्वान्त्स्वप्नं मिमानो असुरस्य योनौ १
बन्धस्त्वाग्ने विश्वचर्या अपश्यत् पुरा रात्र्या जनितोरेके अह्नि ।
ततः स्वप्नेदमध्या बभूविथ भिषग्भ्यो रूपमपगूहमानः २
बृहद्वावासुरेभ्योऽधि देवानुपावर्तत महिमानमिच्छन् ।
तस्मै स्वप्नाय दधुराधिपत्यं त्रयस्त्रिंशासः स्वरानशानाः ३
नैतां विदुः पितरो नोत देवा येषां जल्पिश्चरत्यन्तरेदम् ।
त्रिते स्वप्नमदधुराप्त्ये नर आदित्यासो वरुणेनानुशिष्टाः ४ १९१०
यस्यं क्रूरमभजन्त दुष्कृतोऽस्वप्नेन सुकृतः पुण्यमायुः ।
स्वर्मदासि परमेण बन्धुना तप्यमानस्य मनसोऽधि जज्ञिषे ५
विद्म ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद् विद्म स्वप्न यो अधिपा इहा तै ।
यशस्विनौ नो यशसेह पाह्यारात् द्विषेभिरप याहि दूरम् ६

॥२९३॥ (अथर्व० १९।५७।१-५)

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । १ अनुष्टुप्; २-३ त्रिष्टुप् (व्यवसाना); ४ षट्पदा उष्णिग्बृहतीगर्भा विराट् शक्करी; ५ व्यवसाना पञ्चपदा परशाकरातिजगती ।

यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति ।
एवा दुष्वप्न्यं सर्वमप्रिये सं नयामसि १ १९१३

सं राजानो अगुः समुणान्यंगुः सं कुष्ठा अंगुः सं कुला अंगुः ।
समस्मासु यद् दुष्वप्न्यं निर्द्विष्ते दुष्वप्न्यँ सुवाम २
देवानां पत्नीनां गर्भं यमस्य कर यो भद्रः स्वप्न ।
स मम यः पापस्तद् द्विषते प्र हिण्मः । मा तृष्टानामसि कृष्णशकुनेर्मुखम् ३ १९१५
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स त्वं स्वप्नाश्व इव कायमश्व इव नीनाहम् ।
अनाम्माकं देवपीयुं पियारुं वप यदुस्मासु दुष्वप्न्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे ४
अनाम्माकस्तद् देवपीयुः पियारुर्निष्कमिव प्रति मुञ्चताम् ।
नवारत्नीनपमया अस्माकं ततः परि । दुष्वप्न्यं सर्वं द्विषते निर्दयामसि ५ १९१७

॥२९४॥ (अथर्व० १९।६५।१) [अवसम्]*

यज्ञादिकम्। (१९१८-२३२४)

॥२९५॥ (अथर्व० ७।७३।६-७,११)×

अथर्वा। घर्मः, अश्विनौ। ६ जगती; ७,११ त्रिष्टुप्।

उप द्रव पयसा गोधुगोषमा घर्मे सिञ्च पय उस्रियायाः ।
वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुषसो वि राजति ६
उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम् ।
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचत् ७
सुयवसाद् भगवती हि भूया अधा वयं भगवन्तः स्याम ।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती ११ १९२०

॥२९६॥ (अथर्व० ७।६१।१-२)

अथर्वा। अग्निः (तपः) अनुष्टुप्।

यदग्ने तपसा तप उपतप्यामहे तपः । प्रियाः श्रुतस्य भूयास्मायुष्मन्तः सुमेधसः १
अग्ने तपस्तप्यामह उप तप्यामहे तपः ।
श्रुतानि शृण्वन्तो वयमायुष्मन्तः सुमेधसः २

॥२९७॥ (अथर्व० १९।३२।१-१०)

भृगुः (आयुष्कामः)। दर्भः। अनुष्टुप्; ८ पुरस्ताद्बृहती; ९ त्रिष्टुप्; १० जगती।

शतकाण्डो दुश्चयवनः सहस्रपर्ण उत्तिरः । दुर्भो य उग्र ओषधिस्तं ते बध्नाम्यायुषे १ १९२३

---

* दै० [अग्निः] २३४९

×अथर्व० ७।७३।१-५,८ = दै० [अश्विनौ] ६७९-६८४।

,, ७।७३।९-१० = दै० [अग्निः] ७९४,९३५।

नास्य केशान् प्र वपन्ति नोरसि ताडमा घ्नते ।
यस्मा अच्छिन्नपर्णेन दुर्भेण शर्म यच्छति २
दिवि ते तूलमोषधे पृथिव्यामसि निष्ठितः । त्वया सहस्रकाण्डेनायुः प्र वर्धयामहे३ १९२५
तिस्रो दिवो अत्यतृणत् तिस्र इमाः पृथिवीरुत ।
त्वयाहं दुर्हार्दो जिह्वां नि तृणद्मि वचांसि ४
त्वमसि सहमानोऽहमस्मि सहस्वान् । उभौ सहस्वन्तौ भूत्वा सपत्नान्त्सहिषीवहि ५
सहस्व नो अभिमातिं सहस्व पृतनायतः ।
सहस्व सर्वान् दुर्हार्दः सुहार्दो मे बहून् कृधि ६
दुर्भेण देवजातेन दिवि ष्टम्भेन शश्वदित् ।
तेनाहं शश्वतो जनाँ असेनं सनवानि च ७
प्रियं मा दर्भ कृणु ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च ।
यस्मै च कामयामहे सर्वस्मै च विपश्यते ८ १९३०
यो जायमानः पृथिवीमदृंहद् यो अस्तभ्नादुन्तरिक्षं दिवं च ।
यं बिभ्रतं ननु पाप्मा विवेद स नोऽयं दुर्भो वरुणो दिवा कः ९
सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वानोषधीनां प्रथमः सं बभूव ।
स नोऽयं दुर्भः परि पातु विश्वतस्तेन साक्षीय पृतनाः पृतन्यतः १०

॥२९८॥ (अथर्व० १९।३३।१-५)

भृगुः । दर्भः । १ जगती; २,५ त्रिष्टुप्; ३ आर्षी पङ्क्तिः; ४ आस्तारपङ्क्तिः ।

सहस्रार्घः शतकाण्डः पर्यस्वानपामग्निर्वरुधो राजसूयम् ।
स नोऽयं दुर्भः परि पातु विश्वतो देवो मणिरायुषा सं सृजाति नः १
घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पयस्वान् भूमिदृंहोऽच्युतश्च्यावयिष्णुः ।
नुदन्त्सपत्नानधरांश्च कृण्वन् दर्भो रोह महतामिन्द्रियेण २
त्वं भूमिमत्येष्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुरध्वरे ।
त्वां पवित्रमृषयोऽभरन्त त्वं पुनीहि दुरितान्यस्मत् ३ १९३५
तीक्ष्णो राजा विषासही रक्षोहा विश्वचर्षणिः ।
ओजो देवानां बलमुग्रमेतत् तं ते बध्नामि जरसे स्वस्तये ४
दुर्भेण त्वं कृणवद् वीर्याणि दुर्भ बिभ्रदात्मना मा व्यथिष्ठाः ।
अतिष्ठाया वर्चसाधान्यान्त्सूर्य इवा भाहि प्रदिशश्चतस्रः ५ १९३७

॥१९९॥ (अथर्व० ५।२६।१-४,६-९,११)+

ब्रह्मा। वास्तोष्पतिः, २ सविता, ३,११ इन्द्रः, ४ निविदः, ६ अदितिः, ७ विष्णुः, ८ त्वष्टा, ९ भगः, (नवशालायां घृतहोमः)। १,४,६-८,११ त्रिपदा प्राजापत्या बृहती; ३ त्रिपदा विराड् गायत्री; ९ त्रिपदा पिपीलिकमध्या पुर उष्णिक्; (सर्वा एकावसानाः)

युनक्तु देवः सविता प्रजानन्नस्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा २
इन्द्रं उक्थामदान्यस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सयुजः स्वाहा ३
प्रैषा यज्ञे निविदः स्वाहा शिष्टाः पत्नीभिर्बृहतेह युक्ताः ४ १९४०
एयमगन् बर्हिषा प्रोक्षणीभिर्यज्ञं तन्वानादितिः स्वाहा ६
विष्णुर्युनक्तु बहुधा तपांस्यस्मिन् यज्ञे सयुजः स्वाहा ७
त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा अस्मिन् यज्ञे सयुजः स्वाहा ८
भगो युनक्त्वाशिषो न्व१स्मा अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सयुजः स्वाहा ९
इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याण्यस्मिन् यज्ञे सयुजः स्वाहा ११ १९४५

॥२००॥ (ऋ० १०।१८।७-१४)×

संकुसुको यामायनः।७-१४ पितृमेधः, १४ प्रजापतिर्वा। त्रिष्टुप्, ११ प्रस्तारपङ्क्तिः, १३ जगती, १४ अनुष्टुप्।

इमा नारीरविधवाः सुपत्नी—राञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ७
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ ८
धनुर्हस्तादाददानो मृतस्या—ऽस्मे क्षत्राय वर्चसे बलाय।
अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वाः स्पृधो अभिमातीर्जयेम ९
उप सर्प मातरं भूमिमेता—मुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम्।
ऊर्णम्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात् १०
उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि मा नि बाधथाः सूपायनास्मै भव सूपवञ्चना।
माता पुत्रं यथा सिचा ऽभ्येनं भूम ऊर्णुहि १०
उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम्।
ते गृहासो घृतश्चुतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र १२ १९५१

+ अथ० ५।२६।१ = अग्निः १३४५; ५।२६ ५ = मरुतः ४३२; ५।२६।१० = सोमः ११८९; ५।२६।१२ = अश्विनौ ६७१
×अथर्व० १८।३।१,५०-५१,५७

उत् ते स्तभ्नामि पृथिवीं त्वत् परी—मं लोगं निदधन्मो अहं रिषम्।
एतां स्थूणां पितरो धारयन्तु तेऽत्रा यमः सादना ते मिनोतु १३
प्रतीचीने मामहनी—ष्वाः पर्णमिवा दधुः ।
प्रतीचीं जग्रभा वाच—मश्वै रशनया यथा १४

॥३०१॥ (ऋ० १०।१०।१-१४)*

नवमीवर्ज्यानामयुजां षष्ठ्याश्च वैवस्वती यमी ऋषिका। यमः । षष्ठीवर्ज्यानां युजां नवम्याश्च वैवस्वतो यमः ऋषिः । यमी। त्रिष्टुप्, १३ विराट्स्थाना ।

ओ चित् सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान् ।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः १
न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत् सलक्ष्मा यद् विषुरूपा भवाति ।
महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परि ख्यन् २ १९५५
उशन्ति घा ते अमृतास एत—देकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य ।
नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वं१ मा वि विश्याः ३
न यत् पुरा चकृमा कद्ध नून—मृता वदन्तो अनृतं रपेम ।
गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नौ ४
गर्भे नु नौ जनिता दंपती क—र्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ।
नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथिवी उत द्यौः ५
को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्र वोचत् ।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आहनो वीच्या नॄन् ६
यमस्य मा यम्यं१ काम आग—न्त्समाने योनौ सहशेय्याय ।
जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद् वृहेव रथ्येव चक्रा ७ १९६०
न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति ।
अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा ८
रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य विमुयादजामि ९
आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि ।
उप बर्बृहि वृषभाय बाहु—मन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत् १० १९६१

* अथर्व० १८।१।१-५,७-१२,१५-१६।

किं भ्रातासद् यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात् ।
काममूता बह्वेतद् रपामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि ११
न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत् १२ १९६५
वतो बतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम ।
अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परि ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् १३
अन्यमू षु त्वं यम्यन्य उ त्वां परि ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ।
तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवाधा कृणुष्व संविदं सुभद्राम् १४

॥३०२॥ (ऋ० १०।१४।१-५,७-९,१३-१६)+

वैवस्वतो यमः। यमः, ७-९ लिङ्गोक्ताः, पितरो वा। त्रिष्टुप्; १३-१४,१६ अनुष्टुप्; १५ बृहती।

परेयिवांसं प्रवतो महीरनु बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा दुवस्य १
यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ ।
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुरेना जज्ञानाः पथ्या अनु स्वाः २
मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः ।
याँश्च देवा वावृधुर्ये च देवान्त्स्वाहान्ये स्वधयान्ये मदन्ति ३ १९७०
इमं यम प्रस्तरमा हि सीदाङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः ।
आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व ४
अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभिर्यम वैरूपैरिह मादयस्व ।
विवस्वन्तं हुवे यः पिता ते ऽस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्य ५
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिर्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः ।
उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम् ७
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन् ।
हित्वावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः ८
अपेत वीत वि च सर्पतातो ऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन् ।
अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै ९
यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः ।
यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः १३ १९७६

+ ऋ० १०।१४।१,९। अथर्व० १८।१।५०,५५।

यमाय घृतवद्धवि—र्जुहोत प्र च तिष्ठत ।
स नो देवेष्वा यमद् दीर्घमायुः प्र जीवसे १४
यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन ।
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः १५
त्रिकद्रुकेभिः पतति षळुर्वीरेकमिद् बृहत् ।
त्रिष्टुब् गायत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आहिता १६

॥३०३॥ (ऋ० १०।१३५।१-७)
कुमारो यामायनः । यमः । अनुष्टुप् ।

यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे देवैः संपिबते यमः ।
अत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणाँ अनु वेनति १ १९८०
पुराणाँ अनुवेनन्तं चरन्तं पापयामुया ।
असुयन्नभ्यचाकशं तस्मा अस्पृहयं पुनः २
यं कुमार नवं रथं—मचक्रं मनसाकृणोः ।
एकेषं विश्वतः प्राञ्च—मपश्यन्नधि तिष्ठसि ३
यं कुमार प्रावर्तयो रथं विप्रेभ्यस्परि ।
तं सामानु प्रावर्तत समितो नाव्याहितम् ४
कः कुमारमजनयद् रथं को निरवर्तयत् ।
कः स्वित् तदद्य नो ब्रूया—दनुदेयी यथाभवत् ५
यथाभवदनुदेयी ततो अग्रमजायत ।
पुरस्ताद् बुध्न आततः पश्चान्निरयणं कृतम् ६ १९८५
इदं यमस्य सादनं देवमानं यदुच्यते ।
इयमस्य धम्यते नाळी—रयं गीर्भिः परिष्कृतः ७

॥३०४॥ (ऋ० १०।१५।१-१४)
शङ्खो यामायनः । पितरः । त्रिष्टुप्, ११ जगती ।

उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञा—स्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु १
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः ।
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विक्षु २ १९८८

आहं पितॄन्त्सुविदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः ३
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम् ।
त आ गतावसा शंतमेना ऽथा नः शं योरपो दधात ४ १९९०
उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ५
आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभि गृणीत विश्वे ।
मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद् व आगः पुरुषता करांम ६
आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय ।
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जं दधात ७
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो ऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः ।
तेभिर्यमः संरराणो हवींष्यु शन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु ८
ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदः स्तोमतष्टासो अर्कैः ।
अग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ् सत्यैः कव्यैः पितृभिर्धर्मसद्भिः ९ १९९५
ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः ।
अग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः परैः पूर्वैः पितृभिर्घर्मसद्भिः १०
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः ।
अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिं सर्ववीरं दधातन ११
त्वमग्न ईळितो जातवेदो ऽवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वी ।
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि १२
ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म ।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व १३
ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते ।
तेभिः स्वराळसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयस्व १४

॥३०५॥ (अथर्व० १८।१।६,१३-१४,१७,३९-४९,५१-५४,५७-६१)×

अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः, ४० रुद्रः ४१-४३ सरस्वती, ४४-४६,५१-५२ पितरः (पितृमेधः)।
त्रिष्टुप्; १४,४९ भुरिक्, ५७,६१ अनुष्टुप्; ५९ पुरोबृहती ।

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून् ।
आसन्निषून् हृत्स्वसो मयोभून् य एषां भृत्यामृणधत् स जीवात् ६ २००१

× अथर्व० १८।१।१८-३८,५६ । दे० [अग्निः] १५४०-१५५६,२३१७-२८,१५६८ । दे० [इन्द्रः] १७९०-९१

न तै नाथं यम्यत्राहमस्मि न तै तनूं तन्वा३ सं पपृच्याम् ।
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत् १३
न वा उ ते तनूं तन्वा३ सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।
असंयदेतन्मनसो हृदो मे भ्राता स्वसुः शयने यच्छयीय १४
त्रीणि च्छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम् ।
आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि १७
स्तेगो न क्षामत्येषि पृथिवीं महीं नो वातो इह वान्तु भूमौ ।
मित्रो नो अत्र वरुणो युज्यमानो अग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम् ३९ २००५
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुपहत्नुमुग्रम् ।
मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यमस्मत् ते नि वपन्तु सेन्यम् ४०
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ४१
सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे ४२
सरस्वति या सरथं ययाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।
सहस्रार्घमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि ४३
उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ४४ २०१०
आहं पितॄन्त्सुविदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः ४५
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो ये अपरास ईयुः ।
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु दिक्षु ४६
मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः ।
यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवांस्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ४७
स्वादुष्किलायं मधुमाँ उतायं तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम् ।
उतो न्व१स्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु ४८
परेयिवांसं प्रवतो महीरिति बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत ४९ २०१५

बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम् ।
त आ गतावसा शंतमेनाथा नः शं योररपो दधात ५१
आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येदं नो हविरभि गृणन्तु विश्वे ।
मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद् व आगः पुरुषता करम ५२
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति तेनेदं विश्वं भुवनं समेति ।
यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश ५३
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणैर्येना ते पूर्वे पितरः परेताः ।
उभा राजानौ स्वधया मदन्तौ यमं पश्यासि वरुणं च देवम् ५४
द्युमन्तस्त्वेधीमहि द्युमन्तः समिधीमहि ।
द्युमान् द्युमत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे ५७ २०२०
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः ।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ५८
अङ्गिराभिर्यज्ञियैरा गहीह यमं वैरूपैरिह मादयस्व ।
विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन् बर्हिष्या निषद्य ५९
इमं यम प्रस्तरमा हि रोहाङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः ।
आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व ६०
इत एत उदारुहन् दिवस्पृष्ठान्यारुहन् ।
प्र भूर्जयो यथा पथा द्यामङ्गिरसो ययुः ६१

॥३०६॥ (अथर्व० १८।२।१-६०)

अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः; ४,३४ अग्निः; ५ जातवेदाः; २९ पितरः (पितृमेधः) । त्रिष्टुप्; १-३,६, १४-१८,२०,२२-२३,२५,३०,३४,३६,४६,४८,५०-५२,५६ अनुष्टुप्; ४,७,९,१३ जगती; ५,२६,४९,५७ भुरिक्; १९ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; २४ त्रिपदा समविषमाऽऽर्षी गायत्री; ३७ विराड् जगती; ३८-४४ आर्षी गायत्री; (४०,४२-४४ भुरिक्) ४५ ककुम्मती अनुष्टुप् ।

यमाय सोमः पवते यमाय क्रियते हविः । यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः १ २०२५
यमाय मधुमत्तमं जुहोता प्र च तिष्ठत ।
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः २
यमाय घृतवत् पयो राज्ञे हविर्जुहोतन ।
स नो जीवेष्वा यमेद् दीर्घमायुः प्र जीवसे ३ २०२७

मैनमग्ने वि दहो माभि शूशुचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।
शृतं यदा करसि जातवेदोऽथेमेनं प्र हिणुतात् पितॄँरुप ४
यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेममेनं परि दत्तात् पितृभ्यः ।
यदो गच्छात्यसुनीतिमेतामथ देवानां वशनीर्भवाति ५
त्रिकद्रुकेभिः पवते षडुर्वीरेकमिद् बृहत् ।
त्रिष्टुब् गायत्री छन्दाँसि सर्वा ता यम आर्पिता ६ २०३०
सूर्य चक्षुषा गच्छ वातमात्मना दिवं च गच्छ पृथिवीं च धर्मभिः ।
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः ७
अजो भागस्तपसस्तं तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चिः ।
यास्ते शिवास्तन्वो जातवेदस्ताभिर्वहैनं सुकृताम् लोकम् ८
यास्ते शोचयो रंहयो जातवेदो याभिरापृणासि दिवमन्तरिक्षम् ।
अजं यन्तमनु ताः समृण्वतामथेतराभिः शिवतमाभिः शृतं कृधि ९
अवं सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस्त आहुतश्चरति स्वधावान् ।
आयुर्वसान उप यातु शेषः सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः १०
अति द्रव श्वानौ सारमेयौ चतुरक्षौ शबलौ साधुना पथा ।
अथा पितॄन्त्सुविदत्राँ अपीहि यमेन ये सधमादं मदन्ति ११ २०३५
यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिषदौ नृचक्षसा ।
ताभ्यां राजन् परि धेह्येनं स्वस्त्यस्मा अनमीवं च धेहि १२
उरूणसावसुतृपावुदुम्बलौ यमस्य दूतौ चरतो जनाँ अनु ।
तावस्मभ्यं दृशये सूर्यायं पुनर्दातामसुमद्येह भद्रम् १३
सोम एकेभ्यः पवते घृतमेक उपासते ।
येभ्यो मधु प्रधावति ताँश्चिदेवापि गच्छतात् १४
ये चित् पूर्व ऋतसाता ऋतजाता ऋतावृधः ।
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात् १५
तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ययुः ।
तपो ये चक्रिरे महस्ताँश्चिदेवापि गच्छतात् १६
ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये तनूत्यजः ।
ये वा सहस्रदक्षिणास्ताँश्चिदेवापि गच्छतात् १७ २०४१

सहस्रणीथाः कवयो ये गोपायन्ति सूर्यम् ।
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात् १८
स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी । यच्छास्मै शर्म सप्रथाः १९
असंबाधे पृथिव्या उरौ लोके नि धीयस्व ।
स्वधा याश्चकृषे जीवन् तास्ते सन्तु मधुश्चुतः २०
ह्वयामि ते मनसा मन इहेमान् गृहाँ उप जुजुषाण एहि ।
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेन स्योनास्त्वा वाता उप वान्तु शग्माः २१ २०४५
उत् त्वा वहन्तु मरुतः उदवाहा उदप्रुतः । अजेन कृण्वन्तः शीतं वर्षेणोक्षन्तु बालिति २२
उदह्वमायुरायुषे क्रत्वे दक्षाय जीवसे ।
स्वान् गच्छतु ते मनो अधा पितॄरुप द्रव २३
मा ते मनो मासोर्माङ्गानां मा रसस्य ते ।
मा ते हास्त तन्वः किं चनेह २४
मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट मा देवी पृथिवी मही ।
लोकं पितृषु विस्वैधस्व यमराजसु २५
यत् ते अङ्गमतिहितं परा चैरपानः प्राणो य उ वा ते परेतः ।
तत् ते संगत्य पितरः सनीडा घासाद् घासं पुनरा वेशयन्तु २६ २०५०
अपेमं जीवा अरुधन् गृहेभ्यस्तं निर्वहत परि ग्रामादितः ।
मृत्युर्यमस्यासीद् दूतः प्रचेता असून् पितृभ्यो गमयां चकार २७
ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा ज्ञातिमुखा अहुतादश्नरन्ति ।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टान्त्सात् प्र धमाति यज्ञात् २८
सं विशन्त्विह पितरः स्वा नः स्योनं कृण्वन्तः प्रतिरन्त आयुः ।
तेभ्यः शकेम हविषा नक्षमाणा ज्योग् जीवन्तः शरदः पुरूचीः २९
यां ते धेनुं निपृणामि यस्मै ते क्षीर ओदनम् ।
तेना जनस्यासो भर्ता योऽत्रासदजीवनः ३०
अश्वावतीं प्र तर या सुशेवार्क्षाकं वा प्रतरं नवीयः ।
यस्त्वा जघान वध्यः सो अस्तु मा सो अन्यद् विदत भागधेयम् ३१
यमः परोऽवरो विवस्वान् ततः परं नार्तिं पश्यामि किं चन ।
यमे अध्वरो अधि मे निविष्टो ध्रुवो विवस्वान्न्वातताम ३२ २०५६

अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वा सवर्णामदधुर्विवस्वते ।
उताश्विनावभरद् यत् तदासीदजहाद् द्वा मिथुना सरण्यूः ३३
ये निखाता ये परोप्ता ये दग्धा ये चोद्धिताः ।
सर्वांस्तानग्न आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे ३४
ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते ।
त्वं तान् वेत्थ यदि ते जातवेदः स्वधया यज्ञं स्वधितिं जुषन्ताम् ३५
शं तप मार्ति तपो अग्ने मा तन्वो३ तपः ।
वनेषु शुष्मो अस्तु ते पृथिव्यामस्तु यद्धरः ३६ २०६०
ददाम्यस्मा अवसानमेतद् य एष आगन् मम चेदभूदिह ।
यमश्विकित्वान् प्रत्येतदाह ममैष राय उप तिष्ठतामिह ३७

इमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ३८
प्रेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ३९
अपेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ४०
वीमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ४१ २०६५
निरिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ४२

उदिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ४३
समिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ४४
अमासि मात्रां स्वर्गामायुष्मान् भूयासम् ।
यथापरं न मासातै शते शरत्सु नो पुरा ४५
प्राणो अपानो व्यान आयुश्चक्षुर्दृशये सूर्याय ।
अपरिपरेण पथा यमराज्ञः पितॄन् गच्छ ४६ २०७०
ये अग्रवः शशमानाः परेयुर्हित्वा द्वेषांस्यनपत्यवन्तः ।
ते द्यामुदित्यावदन्त लोकं नाकस्य पृष्ठे अधि दीध्यानाः ४७
उदन्वती द्यौरवमा पीलुमतीति मध्यमा ।
तृतीया ह प्रद्यौरिति यस्यां पितर आसते ४८
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्वो३न्तरिक्षम् ।
य आक्षियन्ति पृथिवीमुत द्यां तेभ्यः पितृभ्यो नमसा विधेम ४९ २०७३

इदमिद् वा उ नापरं दिवि पश्यसि सूर्यम् ।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि ५०

इदमिद् वा उ नापरं जरस्यन्यदितोऽपरम् ।
जाया पतिमिव वाससाभ्येनं भूम ऊर्णुहि ५१ २०७५

अभि त्वौर्णोमि पृथिव्या मातुर्वस्त्रेण भद्रया ।
जीवेषु भद्रं तन्मयि स्वधा पितृषु सा त्वयि ५२

अग्नीषोमा पथिकृता स्योनं देवेभ्यो रत्नं दधथुर्वि लोकम् ।
उप प्रेष्यन्तं पूषणं यो वहात्यञ्जोयानैः पथिभिस्तत्र गच्छतम् ५३

पूषा त्वेतश्चयावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः ।
स त्वैतेभ्यः परि ददत् पितृभ्योऽग्निर्देवेभ्यः सुविदत्रियेभ्यः ५४

आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् ।
यत्रासते सुकृतो यत्र त ईयुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु ५५

इमौ युनज्मि ते वह्नी असुनीताय वोढवे ।
ताभ्यां यमस्य सादनं समितीश्चाव गच्छतात् ५६ २०८०

एतत् त्वा वासः प्रथमं न्वागन्नपैतदूहः यदिहाबिभः पुरा ।
इष्टापूर्तमनुसंक्राम विद्वान् यत्र ते दत्तं बहुधा विबन्धुषु ५७

अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व मेदसा पीवसा च ।
नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हृषाणो दधृग् विधक्षन् परीळ्खयातै ५८

दण्डं हस्तादाददानो गतासोः सह श्रोत्रेण वर्चसा बलेन ।
अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वा मृधो अभिमातीर्जयेम ५९

धनुर्हस्तादाददानो मृतस्य सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन ।
समागृभाय वसु भूरि पुष्टमवाड् त्वमेह्युप जीवलोकम् ६० २०८४

॥३०७॥ (अथर्व० १८।३।१,३-४९,५२,५४,५६,५८-६६,६८-७३)×

अथर्वा । यमः; ४४,४६ मन्त्रोक्ताः, ५-६ अग्निः; ५४ इन्दुः, ५६ आपः (पितृमेधः) । त्रिष्टुप्; ४,८,११,१३ सतः पङ्क्तिः; ५ त्रिपदा निचृद्गायत्री; ६,५६,६८,७०,७२ अनुष्टुप् (५६ आर्षी); १८,२५-२९, ४४,४६ जगती (१८ भुरिक्, २९ विराट्); ३० पञ्चपदाऽतिजगती; ३१ विराट् शाकरी; ३२-३५,४७,४९,५२ भुरिक्; ३६ एकावसानाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ३७ एकावसानाऽऽसुरी गायत्री; ३९ परा त्रिष्टुप् पङ्क्तिः; ५४ पुरोऽनुष्टुप्; ५८ विराट्; ६० व्यवसाना षट्पदा जगती; ६४ भुरिक् पथ्यापङ्क्तिः; ६९,७१ उपरिष्टाद् बृहती ।

इयं नारी पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम् ।
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि १ २०८५
अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम् ।
अन्धेन यत् तमसा प्रावृतासीत् प्राक्तो अपाचीमनयं तदेनाम् ३
प्रजानत्यत्रैये जीवलोकं देवानां पन्थामनुसंचरन्ती ।
अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमधि रोहयैनम् ४
उप द्यामुप वेतसमवत्तरो नदीनाम् । अग्ने पित्तमपामसि ५
यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वापया पुनः ।
कव्याम्बूरत्र रोहतु शाण्डदूर्वा व्यल्किशा ६
इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।
संवेशने तन्वा३ चारुरेधि प्रियो देवानां परमे सधस्थे ७ २०९०
उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः कृणुष्व सलिले सधस्थे ।
तत्र त्वं पितृभिः संविदानः सं सोमेन मदस्व सं स्वधाभिः ८
प्र च्यवस्व तन्वं१ सं भरस्व मा ते गात्रा वि हायि मो शरीरम् ।
मनो निविष्टमनुसंविशस्व यत्र भूमेर्जुषसे तत्र गच्छ ९
वर्चसा मां पितरः सोम्यासो अञ्जन्तु देवा मधुना घृतेन ।
चक्षुषे मा प्रतरं तारयन्तो जरसे मा जरदष्टिं वर्धन्तु १०
वर्चसा मां समनक्त्वग्निर्मेधां मे विष्णुर्नि क्त्वासन् ।
रयिं मे विश्वे नि यच्छन्तु देवाः स्योना मापः पवनैः पुनन्तु ११ २०९४

× अथर्व० १८।३।५३,५५,६७ = दै० [अग्निः] १५६१,१५६४ । दै० [इन्द्रः] २१६० ।

मित्रावरुणा परि मामधातामादित्या मा स्वरवो वर्धयन्तु ।
वर्चो म इन्द्रो न्यनक्तु हस्तयोर्जरदष्टिं मा सविता कृणोतु १२ २०९५
यो ममार प्रथमो मर्त्यानां यः प्रेयाय प्रथमो लोकमेतम् ।
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत १३
परा यात पितर आ च यातायं वो यज्ञो मधुना समक्तः ।
दत्तो अस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं रयिं च नः सर्ववीरं दधात १४
कण्वः कक्षीवान् पुरुमीढो अगस्त्यः श्यावाश्वः सोभर्यर्चनानाः ।
विश्वामित्रोऽयं जमदग्निरत्रिरवन्तु नः कश्यपो वामदेवः १५
विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ भरद्वाज गोतम वामदेव ।
शर्दिनो अत्रिरग्भीन्नमोभिः सुशंसासः पितरो मृडता नः १६
कस्ये मृजाना अति यन्ति रिप्रमायुर्दधानाः प्रतरं नवीयः ।
आप्यायमानाः प्रजया धनेनार्धं स्याम सुरभयो गृहेषु १७ २१००
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते ।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमांसु गृह्णते १८
यद् वो मुद्रं पितरः सोम्यं च तेनो सचध्वं स्वयशसो हि भूत ।
ते अर्वाणः कवय आ शृणोत सुविदत्रा विदथे हूयमानाः १९
ये अत्रयो अङ्गिरसो नवग्वा इष्टावन्तो रातिषाचो दधानाः ।
दक्षिणावन्तः सुकृतो य उ स्थासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् २०
अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न ऋतमाशशानाः ।
शुचीदयन् दीध्यत उक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप व्रन् २१
सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो अयो न देवा जनिमा धमन्तः ।
शुचन्तो अग्निं वावृधन्त इन्द्रमुर्वीं गव्यां परिषदं नो अक्रन् २२ २१०१
आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्यद् देवानां जनिमान्त्युग्रः ।
मर्तासश्चिद्दर्वशीरकृप्रन् वृधे चिदर्य उपरस्यायोः २३
अकर्म ते स्वपसो अभूम ऋतमवस्रन्नुषसो विभातीः ।
विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः २४
इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २५ २१०८

धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २६
अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः पातु बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २७ ११११०
सोमो मा विश्वैर्देवैरुदीच्या दिशः पातु बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २८
धर्ता हं त्वा धरुणो धारयाता ऊर्ध्वं भानुं सविता द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २९
प्राच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३०

दक्षिणायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३१
प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३२ ११११५
उदीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३३
ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३४
ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरिं ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३५

धर्तासि धरुणोऽसि वंसगोऽसि ॥३६॥ उदपूरसि मधुपूरसि वातपूरसि ३७ ११११०
हुतश्च मामुतश्चावतां यमे इव यतमाने यदैतम् ।
प्र वां भरन् मानुषा देवयन्तो आ सीदतां स्वमु लोकं विदाने ३८
स्वासस्थे भवतमिन्दवे नो युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः ।
वि श्लोक एति पथ्येव सूरिः शृण्वन्तु विश्वे अमृतास एतत् ३९
त्रीणि पदानि रुपो अन्वरोहच्चतुष्पदीमन्वैतद् व्रतेन ।
अक्षरेण प्रति मिमीते अर्कमृतस्य नाभावभि सं पुनाति ४० ११११३

देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं प्रजायै किममृतं नावृणीत ।
बृहस्पतिर्यज्ञमतनुत ऋषिः प्रियां यमस्तन्वꣳमा रिरेच ४१
त्वमग्न ईडितो जातवेदोऽवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वा ।
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि ४२ २१२५
आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय ।
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जं दधात ४३
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः ।
अत्तो हवींषि प्रयतानि बर्हिषि रयिं च नः सर्ववीरं दधात ४४
उपहूता नः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ४५
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा अनूजहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः ।
तेभिर्यमः संरराणो हवींष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु ४६
ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदः स्तोमतष्टासो अर्कैः ।
आग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः सत्यैः कविभिर्ऋषिभिर्घर्मसद्भिः ४७ २१३०
ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं तुरेण ।
आग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ् परैः पूर्वेभिर्ऋषिभिर्घर्मसद्भिः ४८
उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम् ।
ऊर्णम्रदाः पृथिवी दक्षिणावत एषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् ४९
उत् ते स्तभ्नामि पृथिवीं त्वत् परीमं लोगं निदधन्मो अहं रिषम् ।
एतां स्थूणां पितरो धारयन्ति ते तत्र यमः सादना ते कृणोतु ५२
अथर्वा पूर्णं चमसं यमिन्द्रायाबिभर्वाजिनीवते ।
तस्मिन् कृणोति सुकृतस्य भक्षं तस्मिन्निन्दुः पवते विश्वदानीम् ५४
पयस्वतीरोषधयः पयस्वन्मामकं पयः ।
अपां पयसो यत् पयस्तेन मा सह शुम्भतु ५६ २१३५
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन् ।
हित्वावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः ५८
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्वन्तरिक्षम् ।
तेभ्यः स्वराडसुनीतिर्नो अद्य यथावशं तन्वः कल्पयाति ५९ २१३७

शं ते नीहारो भवतु शं ते प्रुष्वाव शीयताम् ।
शीतिके शीतिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति ।
मण्डूक्यप्सु शं भुव इमं स्वग्निं शमय ६०
विवस्वान् नो अभयं कृणोतु यः सुत्रामा जीरदानुः सुदानुः ।
इहेमे वीरा बहवो भवन्तु गोमदश्ववन्मय्यस्तु पुष्टम् ६१
विवस्वान् नो अमृतत्वे दधातु परैतु मृत्युरमृतं न एतु ।
इमान् रक्षतु पुरुषाना जरिम्णो मो ष्वेषामसवो यमं गुः ६२ २१४०
यो दुध्रे अन्तरिक्षे न मह्ना पितॄणां कविः प्रमतिर्मतीनाम् ।
तमर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धात् ६३
आ रोहत दिवमुत्तमामृषयो मा बिभीतन ।
सोमपाः सोमपायिन इदं वः क्रियते हविरगन्म ज्योतिरुत्तमम् ६४

प्र केतुना बृहता भात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति ।
दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्ध ६५
नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ६६
अपूपापिहितान् कुम्भान् यांस्ते देवा अधारयन् ।
ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः ६८ २१४५
यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।
तास्ते सन्तु विभ्वीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम् ६९
पुनर्देहि वनस्पते य एष निहितस्त्वयि ।
यथा यमस्य सादन आसाते विदथा वदन् ७०

आ रभस्व जातवेदस्तेजस्वद्धरो अस्तु ते ।
शरीरमस्य सं दहाथैनं धेहि सुकृतामु लोके ७१
ये ते पूर्वे परागता अपरे पितरश्च ये ।
तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु शतधारा व्युन्दती ७२
एतदा रोह वयं उन्मृजानः स्वा इह बृहदु दीदयन्ते ।
अभि प्रेहि मध्यतो मापं हास्थाः पितॄणां लोकं प्रथमो यो अत्र ७३ २१५०

॥३०८॥ (अथर्व० १८।४।१-८९)+

अथर्वा। यमः, मन्त्रोक्ताः, ८१ पितरः, ८८ अग्निः, ८९ चन्द्रमाः। त्रिष्टुप्; १.४,७,१४,३६,६० भुरिक्; २,५.११ २९,५०-५१,५८ जगती; ३ पञ्चपदा भुरिगतिजगती; ६ ९,१३ पञ्चपदा शाक्करी (९ भुरिक्, १३ त्र्यवसाना); ८ पञ्चपदाऽतिशाक्करी; ११ महाबृहती; १६-२४ त्रिपदा भुरिङ्महाबृहती; २६,३३,४३ उपरिष्टाद्बृहती (२६ विराट्), २७ याजुषी गायत्री; २५,३१-३२,३८,४१-४२.५५-५७,५९,६१ अनुष्टुप् (५६ ककुम्मती); ३९,६२-६३ आस्तारपङ्क्तिः; (३९ पुरोविराट्, ६२ भुरिक्, ६३ स्वराट्); ४९ अनुष्टुब्गर्भा त्रिष्टुप्; ५३ पुरोविराट् सतः पङ्क्तिः; ६६ त्रिपदा स्वराड् गायत्री; ६७ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप्; ६८,७१ आसुर्यनुष्टुप्, ७२-७४,७९ आसुरी पङ्क्तिः; ७५ आसुरी गायत्री; ७६ आसुर्युष्णिक्; ७७ दैवी जगती; ७८ आसुरी त्रिष्टुप्; ८० आसुरी जगती; ८१ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ८२ साम्नी बृहती; ८३-८४ साम्नी त्रिष्टुप्; ८५ आसुरी बृहती; (६७-६८,७१-८६ एकावसाना); ८६-८७ चतुष्पदा उष्णिक्; (८६ ककुम्मती, ८७ शंकुमती); ८८ त्र्यवसाना पथ्यापङ्क्तिः; ८९ पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः।

आ रोहत जनित्रीं जातवेदसः पितृयाणैः सं व आ रोहयामि।
अवाड्ढव्येषितो हव्यवाहं ईजानं युक्ताः सुकृतां धत्त लोके १
देवा यज्ञमृतवः कल्पयन्ति हविः पुरोडाशं स्रुचो यज्ञायुधानि।
तेभिर्याहि पथिभिर्देवयानैर्यैरीजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम् २
ऋतस्य पन्थामनु पश्य साध्वङ्गिरसः सुकृतो येन यन्ति।
तेभिर्याहि पथिभिः स्वर्गं यत्रादित्या मधु भक्षयन्ति तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व ३
त्रयः सुपर्णा उपरस्य मायू नाकस्य पृष्ठे अधि विष्टपि श्रिताः।
स्वर्गा लोका अमृतेन विष्ठा इषमूर्जं यजमानाय दुहाम् ४
जुहूर्दाधार द्यामुपभृदुन्तरिक्षं ध्रुवा दाधार पृथिवीं प्रतिष्ठाम्।
प्रतीमां लोका घृतपृष्ठाः स्वर्गाः कामंकामं यजमानाय दुहाम् ५ २१५५

ध्रुव आ रोह पृथिवीं विश्वभोजसमन्तरिक्षमुपभृदा क्रमस्व।
जुहू द्यां गच्छ यजमानेन साकं स्रुवेण वत्सेन दिशः प्रपीनाः सर्वा धुक्ष्वाहुतीयमानः ६
तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो महीरिति यज्ञकृतः सुकृतो येन यन्ति।
अत्रादधुर्यजमानाय लोकं दिशो भूतानि यदकल्पयन्त ७ २१५७

अङ्गिरसामयनं पूर्वो अग्निरादित्यानामयनं गार्हपत्यो दक्षिणानामयनं दक्षिणाग्निः ।
महिमानमग्नेर्विहितस्य ब्रह्मणा समङ्गः सर्व उप याहि शग्मः ८
पूर्वो अग्निष्ट्वा तपतु शं पुरस्ताच्छं पश्चात् तपतु गार्हपत्यः ।
दक्षिणाग्निष्टे तपतु शर्म वर्मोत्तरतो मध्यतो अन्तरिक्षाद् दिशोदिशो
अग्ने परि पाहि घोरात् ९
यूयमग्ने शंतमाभिस्तनूभिरीजानमभि लोकं स्वर्गम् ।
अश्वा भूत्वा पृष्टिवाहो वहाथ यत्र देवैः संधमादं मदन्ति १० ११६०
शर्मग्ने पश्चात् तप शं पुरस्ताच्छमुत्तराच्छमधरात् तपैनम् ।
एकस्त्रेधा विहितो जातवेदः सम्यगेनं धेहि सुकृतामु लोके ११
शमग्नयः समिद्धा आ रभन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः ।
शृतं कृण्वन्त इह मावं चिक्षिपन् १२
यज्ञ एति विततः कल्पमान ईजानमभि लोकं स्वर्गम् ।
तमग्नयः सर्वहुतं जुषन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः ।
शृतं कृण्वन्त इह मावं चिक्षिपन् १३
ईजानश्चितमारुक्षदग्निं नाकस्य पृष्ठाद् दिवमुत् पतिष्यन् ।
तस्मै प्र भाति नभसो ज्योतिषीमान्त्स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः १४
अग्निर्होतांध्वर्युष्टे बृहस्पतिरिन्द्रो ब्रह्मा दक्षिणतस्ते अस्तु ।
हुतोऽयं संस्थितो यज्ञ एति यत्र पूर्वमयनं हुतानाम् १५ ११६५
अपूपवान् क्षीरवाँश्चरुरेह सीदतु ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ १६
अपूपवान् दधिवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० १७
अपूपवान् द्रप्सवाँश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० १८
अपूपवान् घृतवाँश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० १९
अपूपवान् मांसवाँश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २० ११७०
अपूपवानन्नवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २१
अपूपवान् मधुमांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २२
अपूपवान् रसवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २३
अपपवानपवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २४ ११७४

अपूपार्पिहितान् कुम्भान् यांस्ते देवा अधारयन् ।
ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः २५ २१७५
यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।
तास्ते सन्तूदुम्बरीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानं मन्यताम् २६
अक्षितिं भूयसीम् २७
द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः २८
शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं नृचक्षसस्ते अभि चक्षते रयिम् ।
ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति सर्वदा ते दुहते दक्षिणां सप्तमातरम् २९
कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्बिलमिडां धेनुं मधुमतीं स्वस्तये ।
ऊर्जं मदन्तीमदितिं जनेष्वग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् ३० २१८०
एतत् ते देवः सविता वासो ददाति भर्तवे ।
तत् त्वं यमस्य राज्ये वासानस्तार्प्यं चर ३१
धाना धेनुरभवद् वत्सो अस्यास्तिलोऽभवत् ।
तां वै यमस्य राज्ये अक्षितामुपं जीवति ३२
एतास्ते असौ धेनवः कामदुघा भवन्तु ।
एनीः श्येनीः सरूपा विरूपास्तिलवत्सा उप तिष्ठन्तु त्वात्र ३३
एनीर्धाना हरिणीः श्येनीरस्य कृष्णा धाना रोहिणीर्धेनवस्ते ।
तिलवत्सा ऊर्जमस्मै दुहाना विश्वाहा सन्त्वनपस्फुरन्तीः ३४
वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि साहस्रं शतधारमुत्सम् ।
स बिभर्ति पितरं पितामहान् प्रपितामहान् बिभर्ति पिन्वमानः ३५ २१८५
सहस्रधारं शतधारमुत्समक्षितं व्यच्यमानं सलिलस्य पृष्ठे ।
ऊर्जं दुहानमनपस्फुरन्तमुपासते पितरः स्वधाभिः ३६
इदं कसाम्बु चयनेन चितं तत् संजाता अव पश्यतेतं ।
मर्त्योऽयममृतत्वमेति तस्मै गृहान् कृणुत यावत्सबन्धु ३७
इहैवैधि धनसानिरिहाचित्त इहक्रतुः । इहैधि वीर्यवत्तरो वयोधा अपराहतः ३८
पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीरापो मधुमतीरिमाः ।
स्वधां पितृभ्यो अमृतं दुहाना आपो देवीरुभयांस्तर्पयन्तु ३९ २१८९

आपो अग्निं प्र हिणुत पितॄँरुपेमं यज्ञं पितरो मे जुषन्ताम् ।
आसीनामूर्जमुप ये सचन्ते ते नो रयिं सर्ववीरं नि यच्छान् ४० ११९०
समिन्धते अमर्त्यं हव्यवाहं घृतप्रियम् । स वेदु निहिताग्निधीन् पितॄन् परावतो गतान् ४१
यं ते मन्थं यमोदनं यन्मांसं निप्तृणामि ते । ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः ४२
यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।
तास्ते सन्तूदूखीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम् ४३
इदं पूर्वमपरं नियानं येना ते पूर्वे पितरः परेताः ।
पुरोगवा ये अभिशाचो अस्य ते त्वा वहन्ति सुकृतामु लोकम् ४४
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ४५ ११९५
सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे ४६
सरस्वति या सरथं ययाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।
सहस्रार्घमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि ४७
पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि देवो नो धाता प्र तिरात्यायुः ।
परापरैता वसुविद् वो अस्त्वधा मृताः पितृषु सं भवन्तु ४८
आ प्र च्यवेथामप तन्मृजेथां यद् वामभिभा अत्रोचुः ।
अस्मादेतमघ्न्यौ तद् वशीयो दातुः पितृष्विहभोजनौ मम ४९
एयमगन् दक्षिणा भद्रतो नो अनेन दत्ता सुदुघा वयोधाः ।
यौवने जीवानुपपृच्छती जरा पितृभ्य उपसंपराणयादिमान् ५० १२००
इदं पितृभ्यः प्र भरामि बर्हिर्जीवं देवेभ्य उत्तरं स्तृणामि ।
तदा रोह पुरुष मेध्यो भवन् प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम् ५१
एदं बर्हिरसदो मेध्योऽभूः प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम् ।
यथापरु तन्वै सं भरस्व गात्राणि ते ब्रह्मणा कल्पयामि ५२
पर्णो राजापिधानं चरूणामूर्जो बलं सह ओजो न आगन् ।
आयुर्जीवेभ्यो विदधद् दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ५३
ऊर्जो भागो य इमं जजानाश्मान्नामाधिपत्यं जगाम ।
तमर्चत विश्वामित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धात् ५४ १२०४

यथा यमाय हर्म्यमवपन् पञ्च मानवाः ।
एवा वपामि हर्म्यं यथा मे भूर्योऽसत ५५ २२०५
इदं हिरण्यं बिभृहि यत् ते पितार्बिभः पुरा।
स्वर्गं यतः पितुर्हस्तं निर्मृङ्ङ्धि दक्षिणम् ५६
ये च जीवा ये च मृता ये जाता ये च यज्ञियाः ।
तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु मधुधारा व्युन्दती ५७
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सूरो अह्नां प्रतरीनोषसां दिवः ।
प्राणः सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्दिमाविशन् मनीषया ५८
त्वेषस्ते धूम ऊर्णोतु दिवि षञ्छुक्र आततः ।
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ५९
प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतिं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरः ।
मर्य इव योषाः समर्षसे सोमः कलशे शतयामना पथा ६० २२१०
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाँ अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा यविष्ठा ईमहे ६१
आ यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पथिभिः पितृयाणैः ।
आयुरस्मभ्यं दधतः प्रजां च रायश्च पोषैरभि नः सचध्वम् ६२
परा यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पथिभिः पूर्याणैः ।
अधा मासि पुनरा यात नो गृहान् हविरत्तुं सुप्रजसः सुवीराः ६३
यद् वो अग्निरजहादेकमङ्गं पितृलोकं गमयं जातवेदाः ।
तद् व एतत् पुनरा प्याययामि साङ्गाः स्वर्गे पितरो मादयध्वम् ६४
अभूद् दूतः प्रहितो जातवेदाः सायं न्यह्न उषवन्द्यो नृभिः ।
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि ६५ २२१५
असौ हा इह ते मनः ककुत्सलमिव जामयः । अभ्येनं भूम ऊर्णुहि ६६
शुम्भन्तां लोकाः पितृषदना पितृषदने त्वा लोक आ सादयामि ६७
येऽत्रास्माकं पितरस्तेषां बर्हिरसि ॥६८॥ उदुत्तमं वरुण०+ ६९
प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् यैः समामे बध्यते यैर्व्यामे ।
अधा जीवेम शरदः शतानि त्वया राजन् गुपिता रक्षमाणाः ७०
अग्नये कव्यवाहनाय स्वधा नमः ॥७१॥ सोमाय पितृमते स्वधा नमः ७२ २२२२

+दे० [आयुर्वेद०] १६७८।

पितृभ्यः सोमवद्भ्यः स्वधा नमः ॥७३॥ यमाय पितृमते स्वधा नमः ७४
एतत् ते प्रतामह स्वधा ये च त्वामनु ७५ १२२५
एतत् ते तामह स्वधा ये च त्वामनु ७६
एतत् ते तत स्वधा ॥७७॥ स्वधा पितृभ्यः पृथिविषद्भ्यः ७८
स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्षसद्भ्यः ॥७९॥ स्वधा पितृभ्यो दिविषद्भ्यः ८० १२१०
नमो वः पितर ऊर्जे नमो वः पितरो रसाय ८१
नमो वः पितरो भामाय नमो वः पितरो मन्यवे ८२
नमो वः पितरो यद् घोरं तस्मै नमो वः पितरो यत् क्रूरं तस्मै ८३
नमो वः पितरो यच्छिवं तस्मै नमो वः पितरो यत् स्योनं तस्मै ८४
नमो वः पितरः स्वधा वः पितरः ८५ १२१५
ये ऽत्र पितरः पितरो ये ऽत्र यूयं स्थ युष्माँस्तेऽनु यूयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्थ ८६
य इह पितरो जीवा इह वयं स्मः । अस्माँस्तेऽनु वयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्म ८७
आ त्वाम इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
यद् घ सा ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवि । इषं स्तोतृभ्य आ भर ८८
चन्द्रमा अप्स्व१न्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ८९

॥३०९॥ (ऋ० ८।३१।१-४)

मनुर्वैवस्वतः । यज्ञः, यजमानश्च । गायत्री ।

यो यजाति यजात इत् सुनवच्च पचाति च । ब्रह्मेदिन्द्रस्य चाकनत् १ १२४०
पुरोळाशं यो अस्मै सोमं ररत आशिरम् । पादित् तं शक्रो अंहसः २
तस्य द्युमाँ असद् रथो देवजूतः स शुशुवत् । विश्वा वन्वन्नभिष्टिया ३
अस्य प्रजावती गृहे ऽसश्चन्ती दिवेदिवे । इळा धेनुमती दुहे ४

॥३१०॥ (ऋ० १०।१८३।१-२)

प्रजावान् प्राजापत्यः । १ यजमानः; २ यजमानपत्नी । त्रिष्टुप् ।

अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं तपसो जातं तपसो विभूतम् ।
इह प्रजामिह रयिं रराणः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकाम १
अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां स्वायां तनू ऋत्व्ये नाधमानाम् ।
उप मामुच्चा युवतिर्बभूयाः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकामे २ १२४५

॥३११॥ (अथर्व० ७।९७।१-८) [यक्ष्मः ।]+

॥३१२॥ (अथर्व० १९।१।१-३)

ब्रह्मा । यक्ष्मः, चन्द्रमाश्च । १-२ पथ्याबृहती, ३ पङ्क्तिः ।

सं सं स्रवन्तु नद्यः सं वाताः सं पतत्रिणः ।
यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि १
इमं होमा यज्ञमवतेमं संस्रावणा उत ।
यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि २
रूपंरूपं वयोवयः संरभ्यैनं परि ष्वजे ।
यज्ञमिमं चतस्रः प्रदिशो वर्धयन्तु संस्राव्येण हविषा जुहोमि ३

॥३१३॥ (अथर्व० १९।५८।१-६)

ब्रह्मा । यक्ष्मः, बहुदैवत्यम् । त्रिष्टुप्, २ पुरोऽनुष्टुप्; ३ चतुष्पदाऽतिशक्करी; ५ भुरिक् ।

घृतस्य जूतिः समना सदेवा संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती ।
श्रोत्रं चक्षुः प्राणोच्छिन्नो नो अस्त्वच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः १
उपास्मान् प्राणो ह्वयतामुप वयं प्राणं ह्वामहे ।
वर्चो जग्राह पृथिव्यन्तरिक्षं वर्चः सोमो बृहस्पतिर्विधत्ता २ ११५०
वर्चसो द्यावापृथिवी संग्रहणी बभूवथुर्वर्चो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम ।
यशसं गावो गोपतिमुप तिष्ठन्त्यायतीर्यशो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम ३
व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्मी सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।
पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दृंहता तम् ४
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि ।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः ५
ये देवानामृत्विजो ये च यज्ञिया येभ्यो हव्यं क्रियते भागधेयम् ।
इमं यज्ञं सह पत्नीभिरेत्य यावन्तो देवास्तविषा मादयन्ताम् ६

॥३१४॥ (अथर्व० १९।५९।१)*

ब्रह्मा । अग्निः (यक्ष्मः)। त्रिष्टुप् ।

यद् वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।
अग्निष्टद् विश्वादा पृणातु विद्वान्त्सोमस्य यो ब्राह्मणाँ आविवेश २ ११५५

+ दे० [इन्द्रः] ३२०-३२७ ।

* अथर्व० १९।५९।१-३, = दे० [अग्निः] ११२४,१४९४-१४९५ ।

॥३१५॥ (अथर्व० ७।९९।१)

अथर्वा । वेदी । भुरिक् त्रिष्टुप् ।

परि॑ स्तृणीहि॒ परि॑ धेहि॒ वेदिं॒ मा जा॒मिं मो॑षीरमु॒या शया॑नाम् ।
होतृ॒षद॑नं॒ हरि॑तं हिर॒ण्ययं॑ नि॒ष्का ए॒ते यज॑मानस्य लो॒के १

॥३१६॥ (ऋ० १।३६।१३-१४)

कण्वो घौरः । (अग्निः) यूपः । प्रगाथः [विषमा बृहती+समा सतोबृहती] (१३ उपरिष्टाद्बृहती । ऐ. ब्रा. २।२ चरणच्छेदः) ।

ऊ॒र्ध्व ऊ॒ षु ण॑ ऊ॒तये॒ तिष्ठा॑ दे॒वो न स॑वि॒ता ।
ऊ॒र्ध्वो वाज॑स्य सनि॒ता यद॒ञ्जिभि॑र्वा॒घद्भि॑र्वि॒ह्वया॑महे १३
ऊ॒र्ध्वो नः॑ पा॒ह्यंह॑सो नि के॒तुना॒ विश्वं॑ सम॒त्रिणं॑ दह ।
कृ॒धी न॑ ऊ॒र्ध्वाञ्चर॑थाय जी॒वसे॒ वि॒दा दे॒वेषु॑ नो दु॒वः १४

॥३१७॥ (ऋ० ३।८।१-१०)

गाथिनो विश्वामित्रः । यूपः, ६-१० यूपाः, ८ विश्वे देवा वा । त्रिष्टुप्; ३,७ अनुष्टुप् ।

अ॒ग्नि॒न्ति त्वाम॑ध्व॒रे दे॑व॒यन्तो॒ वन॑स्पते मधु॒ना दै॒व्येन ।
यद्ऊ॒र्ध्वस्तिष्ठा द्र॑विणेह धत्ताद् यद् वा क्षयो॑ मातु॒रस्या उ॒पस्थे॑ १
समि॑द्धस्य श्रयमाणः पु॒रस्ता॒द् ब्रह्म॑ वन्वा॒नो अ॒जरं॑ सु॒वीर॑म् ।
आरे अ॒स्मदम॑तिं बाधमा॒न उ॒च्छ्र॑यस्व महते सौभगा॒य २ ११६०
उ॒च्छ्र॑यस्व वनस्पते॒ वर्ष्म॑न् पृथि॒व्या अधि॑ ।
सु॒मि॒ती मी॑यमा॒नो॒ वचो॑ धा य॒ज्ञव॑हसे ३
युवा॑ सु॒वासाः॑ परि॒वीत॒ आगा॑त् स उ॒ श्रेया॑न् भवति जायमानः ।
तं धीरा॑सः क॒वय॒ उन्न॑यन्ति स्वा॒ध्यो॑३ मन॑सा देव॒यन्तः॑ ४
जा॒तो जा॑यते सुदिन॒त्वे अह्नां॑ सम॒र्य आ वि॑द॒थे व॑र्धमानः ।
पु॒नन्ति॒ धीरा॑ अ॒पसो॑ मनी॒षा दे॑व॒या वि॒प्र उदि॑यर्ति॒ वाच॑म् ५
यान् वो॒ नरो॑ देव॒यन्तो॑ नि॒मि॒म्यु॒र्वन॑स्पते स्वधितिर्वा त॒तक्ष॑ ।
ते दे॒वासः॑ स्वर॒वस्तस्थि॒वांसः॑ प्र॒जाव॑दस्मे दिधिषन्तु र॒त्नम् ६
ये वृ॒क्णासो॒ अधि॑ क्षमि॒ निमि॑तासो॒ यत॑स्रुचः ।
ते नो॑ व्यन्तु॒ वार्यं॑ देव॒त्रा क्षे॒त्रसा॑धसः ७
आदि॒त्या रु॒द्रा वस॑वः सु॒नी॒था द्यावा॒क्षामा॑ पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्षम् ।
स॒जोष॑सो य॒ज्ञम॑वन्तु दे॒वा ऊ॒र्ध्वं कृ॑ण्वन्त्वध्व॒रस्य॑ के॒तुम् ८ ११६१

हंसा इव श्रेणिशो यतानाः शुक्रा वसानाः स्वरवो न आगुः ।
उन्नीयमानाः कविभिः पुरस्ताद् देवा देवानामपि यन्ति पाथः ९
शृङ्गाणीवेच्छृङ्गिणां सं ददृश्रे चषालवन्तः स्वरवः पृथिव्याम् ।
वाघद्भिर्वा विहवे श्रोषमाणा अस्माँ अवन्तु पृतनाज्येषु १०

॥३१८॥ (वा० य० ६।२-३,६)

(यूपः ।)

अग्रेणीरसि स्वावेश उन्नेतृणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः ।
द्यामग्रेणास्पृक्ष आन्तरिक्षं मध्येनाप्राः पृथिवीमुपरेणादृंहीः २
या ते धामान्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।
अत्राह तदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदमवभारि भूरि ।
ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं रायस्पोषवनिं पर्यूहामि ।
ब्रह्म दृंह क्षत्रं दृंहायुर्दृंह प्रजां दृंह ३ ११७०
परिवीरसि परि त्वा दैवीर्विशो व्ययन्तां परीमं यजमानꣳ रायो मनुष्याणाम् ।
दिवः सूनुरस्येष ते पृथिव्याँ छोक आरण्यस्ते पशुः ६

॥३१९॥ (वा० य० २१।४६)

(यूपः ।)

होता यक्षद् वनस्पतिमभि हि पिष्टतमया रशनयार्धत ।
यत्राश्विनोश्छागस्य हविषः प्रिया धामानि यत्र सरस्वत्या मेषस्य हविषः प्रिया धामानि यत्रेन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामानि यत्राग्नेः प्रिया धामानि यत्र सोमस्य प्रिया धामानि यत्रेन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामानि यत्र सवितुः प्रिया धामानि यत्र वरुणस्य प्रिया धामानि यत्र वनस्पतेः प्रिया पाथाꣳसि यत्र देवानामाज्यपानां प्रिया धामानि यत्राग्नेर्होतुः प्रिया धामानि तत्रैतान् प्रस्तुत्येवोपस्तुत्येवोपावसृक्षद् रभीयस इव कृत्वी करदेवं देवो वनस्पतिर्जुषतां हविर्होतर्यज ४६

॥३२०॥ (वा० य० २८।२०)

(यूपः ।)

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो मधुशाखः सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्धयत् ।
दिवमग्रेणास्पृक्षदान्तरिक्षं पृथिवीमदृंहीद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज २० ११७१

॥३२१॥ (अथर्व० ७।९८।१)

अथर्वा । इन्द्रः, विश्वे देवाः (हविः) । विराड् त्रिष्टुप् ।

सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः ।
सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा १

॥३२२॥ (ऋ० १०।१३।१-५)

आङ्गिर्हविर्धानः विवस्वानादित्यो वा । हविर्धाने× । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोक एतु पथ्येव सूरेः ।
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः १ २२७१
यमे इव यतमाने यदैतं प्र वां भरन् मानुषा देवयन्तः ।
आ सीदतं स्वमु लोकं विदाने स्वासस्थे भवतमिन्दवे नः २
पञ्च पदानि रुपो अन्वरोहं चतुष्पदीमन्वेमि व्रतेन ।
अक्षरेण प्रति मिम एता मृतस्य नाभावधि सं पुनामि ३
देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं प्रजायै कममृतं नावृणीत ।
बृहस्पतिं यज्ञमकृण्वत ऋषिं प्रियां यमस्तन्वं१ प्रारिरेचीत् ४
सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवतन्नृतम् ।
उभे इदस्योभयस्य राजत उभे यतेते उभयस्य पुष्यतः ५

॥३२३॥ (ऋ० १।२८।५-८)

आजीगर्तिः शुनःशेपः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । ५-६ उलूखलं, ७-८ उलूखलमुसले ।
५-६ अनुष्टुप्, ७-८ गायत्री ।

यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह उलूखलक युज्यसे ।
इह द्युमत्तमं वद जयतामिव दुन्दुभिः ५ २२८०
उत स्म ते वनस्पते वातो वि वात्यग्रमित् ।
अथो इन्द्राय पातवे सुनु सोममुलूखल ६
आयजी वाजसातमा ता ह्युच्चा विजर्भृतः । हरी इवान्धांसि बप्सता ७
ता नो अद्य वनस्पती ऋष्वावृष्वेभिः सोतृभिः । इन्द्राय मधुमत् सुतम् ८

॥३२४॥ (ऋ० ७।१०४।१७)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । प्रावाणः । त्रिष्टुप् ।

प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमपं द्रुहा तन्वं१ गूहमाना ।
वव्राँ अनन्ताँ अव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः १७ २२८४

× ऋ० २।४१।१९-२१ द्यावापृथिवी हविर्धाने वा ।

॥३२५॥ (ऋ० १०।७६।१-८)

सर्प ऐरावतो जरत्कर्णः। प्रावाणः। जगती।

आ वं ऋञ्जस ऊर्जो व्युष्टि—ष्विन्द्रं मरुतो रोदसी अनक्तन ।
उभे यथा नो अहनी सचाभुवा सदःसदो वरिवस्यात उद्भिदा १ २२८५
तदु श्रेष्ठं सवनं सुनोतना—ऽत्यो न हस्तयतो अद्रिः सोतरि ।
विदद्वयो अभिभूति पौंस्यं महो राये चित् तरुते यदर्वतः २
तदिद्धयस्य सवनं विवेरपो यथा पुरा मनवे गातुमश्रेत् ।
गोअर्णसि त्वाष्ट्रे अश्वनिर्णिजि प्रेमध्वरेष्वध्वराँ अशिश्रयुः ३
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः स्कभायत निर्ऋतिं सेधतामतिम् ।
आ नो रयिं सर्ववीरं सुनोतन देवाय्यं भरत श्लोकमद्रयः ४
दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो विभ्वना चिदाश्वपस्तरेभ्यः ।
वायोश्चिदा सोमरभस्तरेभ्यो ऽग्नेश्चिदर्च पितुकृत्तरेभ्यः ५
भुरन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो ग्रावाणो वाचा दिविता दिवित्मता ।
नरो यत्र दुहते काम्यं मधवा—घोषयन्तो अभितो मिथस्तुरः ६ २१९०
सुन्वन्ति सोमं रथिरासो अद्रयो निरस्य रसं गविषो दुहन्ति ते ।
दुहन्त्यूधरुपसेचनाय कं नरो हव्या न मर्जयन्त आसभिः ७
एते नरः स्वपसो अभूतन य इन्द्राय सुनुथ सोममद्रयः ।
वामंवामं वो दिव्याय धाम्ने वसुंवसु वः पार्थिवाय सुन्वते ८

॥३२६॥ (ऋ० १०।९४।१-१४)

अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः। प्रावाणः। जगती; ५,७,१४ त्रिष्टुप्।

प्रैते वदन्तु प्र वयं वदाम ग्रावभ्यो वाचं वदता वदद्भ्यः ।
यदद्रयः पर्वताः साकमाशवः श्लोकं घोषं भरथेन्द्राय सोमिनः १
एते वदन्ति शतवत् सहस्रव—दभि क्रन्दन्ति हरितेभिरासभिः ।
विष्टीं ग्रावाणः सुकृतः सुकृत्यया होतुश्चित् पूर्वे हविरद्यमाशत २
एते वदन्त्यविदज्जना मधु न्यूङ्खयन्ते अधि पक्व आमिषि ।
वृक्षस्य शाखामरुणस्य बप्सत—स्ते सूभर्वा वृषभाः प्रेमरावीषुः ३
बृहद् वदन्ति मदिरेण मन्दिने—न्द्रं क्रोशन्तोऽविदज्जना मधु ।
संरभ्या धीराः स्वसृभिरनर्तिषु—राघोषयन्तः पृथिवीमुपब्दिभिः ४ २२९६

सुपर्णा वाचमक्रतोप ह्व्या खरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।
न्यङ्ङि यन्त्युपरस्य निष्कृतं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्चितः ५
उग्रा इव प्रवहन्तः समायसुः साकं युक्ता वृषणो बिभ्रतो धुरः ।
यच्छ्वसन्तो जग्रसाना अरावि षुः शृण्व एषां थोथथो अर्वतामिव ६
दशावनिभ्यो दशकक्ष्येभ्यो दशयोक्त्रेभ्यो दशयोजनेभ्यः ।
दशाभीशुभ्यो अर्चताजरेभ्यो दश धुरो दश युक्ता वहन्त्यः ७
ते अद्रयो दशयन्त्रास आशव स्तेषामाधानं पर्येति हर्यतम् ।
त ऊं सुतस्य सोम्यस्यान्धसो ऽशोः पीयूषं प्रथमस्य भेजिरे ८ २३००
ते सोमादो हरी इन्द्रस्य निंसतें ऽशुं दुहन्तो अध्यासते गवि ।
तेभिर्दुग्धं पपिवान्त्सोम्यं मधि न्द्रो वर्धते प्रथते वृषायते ९

वृषा वो अंशुर्न किला रिषाथने ळावन्तः सदमित् स्थनाशिताः ।
रैवत्येव महसा चारवः स्थन यस्य ग्रावाणो अजुषध्वमध्वरम् १०
तृदिला अतृदिलासो अद्रयो ऽश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः ।
अनातुरा अजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो अतृपिता अतृष्णजः ११
ध्रुवा एव वः पितरो युगेयुगे क्षेमकामासः सदसो न युञ्जते ।
अजुर्यासो हरिपाचो हरिद्रव आ द्यां रवेण पृथिवीमशुश्रवुः १२
तदिद् वदन्त्यद्रयो विमोचने यामन्नञ्जस्पा इव घेदुपब्दिभिः ।
वपन्तो बीजमिव धान्याकृतः पुञ्जन्ति सोमं न मिनन्ति बप्सतः १३ २३०५
सुते अध्वरे अधि वाचमक्रता ऽऽ क्रीळयो न मातरं तुदन्तः ।
वि षू मुञ्चा सुषुवुषो मनीषां वि वर्तन्तामद्रयश्चायमानाः १४

॥३२७॥ (ऋ० १०।१७५।१-४)

ऊर्ध्वग्रावा सर्प आर्बुदिः । ग्रावाणः । गायत्री ।

प्र वो ग्रावाणः सविता देवः सुवतु धर्मणा । धृषु युज्यध्वं सुनुत १
ग्रावाणो अप दुच्छुना मप सेधत दुर्मतिम् । उस्राः कर्तन भेषजम् २
ग्रावाण उपरेष्वा महीयन्ते सजोषसः । वृष्णे दधतो वृष्ण्यम् ३
ग्रावाणः सविता नु वो देवः सुवतु धर्मणा । यजमानाय सुन्वते ४ २३१०

॥३२८॥ (ऋ० १०।११७।१-९)

भिक्षुराङ्गिरसः। धनान्नदानम्। त्रिष्टुप्, १-१ जगती।

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन् मर्डितारं न विन्दते १
य आध्राय चकमानाय पित्वो ऽन्नवान्त्सन् रफिताय्योपजग्मुषे।
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित् स मर्डितारं न विन्दते २
स इद्भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम् ३
न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः।
अपास्मात् प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत् ४
पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः ५ २३१५
मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ६
कृषन्नित् फालु आशितं कृणोति यन्नध्वानमप वृङ्क्ते चरित्रैः।
वदन् ब्रह्मावदतो वनीयान् पृणन्नापिरपृणन्तमभि ष्यात् ७
एकपाद् भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात् त्रिपादमभ्येति पश्चात्।
चतुष्पादेति द्विपदामभिस्वरे संपश्यन् पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः ८
समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः संमातरा चिन्न समं दुहाते।
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित् सन्तौ न समं पृणीतः ९

॥३२९॥ (अथर्व० ३।१४।१-६)

ब्रह्मा। गोष्ठः, अहः, २ अर्यमा, पूषा, बृहस्पतिः, इन्द्रः; १-६ गावः, ५ गोष्ठश्च।
अनुष्टुप्, ६ आर्षी त्रिष्टुप्।

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभूत्या।
अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि १ २३२०
सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः।
समिन्द्रो यो धनंजयो मयि पुष्यत यद् वसु २
संजग्माना अबिभ्युषीरस्मिन् गोष्ठे करीषिणीः।
बिभ्रतीः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन ३ २३२१

इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत । इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः ४
शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशाकेव पुष्यत । इहैवोत प्र जायध्वं मया वः सं सृजामसि ५
मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पोषयिष्णुः ।
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम ६

॥३३०॥ (अथर्व० ६।४९।३) ।×
गार्ग्यः । अग्निः (अग्निस्तवः) । विराड् जगती ।

सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्याखरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।
नि यन्नियन्त्युपरस्य निष्कृतिं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्रितः ३ ११२६

[११२७-११४५ इत्येकोनविंशति (१९) मन्त्राः तत्तद्विषये संग्राह्याः ।]

॥३३१॥ (वा० य० १२।१००)
(दीर्घायुष्यम् ।)

दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् १००

॥३३२॥ (वा० य० ३४।५०-५१)
(दीर्घायुष्यम् ।)

आयुष्यं वर्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम् ।
इदꣳ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम् ५०
न तद् रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत् ।
यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते
दीर्घमायुः ५१
यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ५२

॥३३३॥ (अथर्व० २।१३।१-५)
अथर्वा । अग्निः, १-३ बृहस्पतिः, ४-५ विश्वे देवाः (दीर्घायुःप्राप्तिः)। त्रिष्टुप्, ४ अनुष्टुप्, ६ विराड्जगती।

आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने ।
घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम् १ ११३१

× अथर्व० ६।४९।१-२ = दै० [अग्निः] २३३७-२३३८ ।

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।
बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ ं २
परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्गृष्टीनामभिशस्तिपा उ ं ।
शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व ३
एवश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः ।
कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम् ४
यस्ये ते वासः प्रथमवास्यं१ हरामस्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः ।
तं त्वा भ्रातरः सुवृधा वर्धमानमनु जायन्तां बहवः सुजातम् ५ २३३५

॥३३४॥ (ऋ० १०।८५।३१)

सावित्री सूर्या ऋषिका । दम्पत्योर्यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप् ।

ये बध्नञ्शन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जनादनुं ।
पुनस्तान् यज्ञिया देवा नयन्तु यत आगताः ३१

॥३३५॥ (ऋ० १०।१५५।१,४)

शिरिम्बिठो भारद्वाजः । अलक्ष्मीघ्नम् । अनुष्टुप् ।

अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे ।
शिरिम्बिठस्य सत्वभि—स्तेभिष्ट्वा चातयामसि १
यद्ध प्राचीरजगन्तो—रो मण्डूरधाणिकीः ।
इता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुद्बुदयाशवः ४

॥३३६॥ (ऋ० १०।१४५।४,६)*

इन्द्राणी । सपत्नीबाधनम् (उपनिषत्) । ४ अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः ।

नह्यस्या नाम गृभ्णामि नो अस्मिन् रमते जने ।
परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि ४
उप तेऽधां सहमाना—मभि त्वाधां सहीयसा ।
मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु ६

॥३३७॥ (ऋ० १०।१६६।१-५)

ऋषभो वैराजः, ऋषभः शाकरो वा । सपत्नघ्नम् । अनुष्टुप्, ५ महापङ्क्तिः ।

ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषासहिम् ।
हन्तारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम् १ २३४१

---

* ऋ० १०।१४५।१-६ = वै० [आयुर्वेद०] ३६४-३६९ ।

अहमस्मि सपत्नहेन्द्र इवारिष्टो अक्षतः ।
अधः सपत्ना मे पदोरिमे सर्वे अभिष्ठिताः २
अत्रैव वोऽपि नह्यामि उभे आर्त्नी इव ज्यया ।
वाचस्पते नि षेधेमान् यथा मदधरं वदान् ३
अभिभूरहमागमं विश्वकर्मेण धाम्ना ।
आ वस्त्रिषमा वो व्रतमा वोऽहं समितिं ददे ४
योगक्षेमं व आदायाऽहं भूयासमुत्तम आ वो मूर्धानमक्रमीम् ।
अधस्पदान्म उद्वदत मण्डूका इवोदुकान्मण्डूका उदुकादिव ५ २३४५

इत्यायुर्वेद-प्रकरणं समाप्तम् ।

दैवतसंहितायां
आयुर्वेद-प्रकरणस्य उपमा-सूची ।

अंशुः इव अथ. ५,२९,१२; ७४९ आ प्यायतां अयम् ।
अंशुगः शिशुकः यथा अथ. ६,१४,३; ४८५ निर्बलासः प्र पत ।
अग्निः इव अथ. २,२५,४; ४१९ तान् अनुदहन् इहि ।
अग्निः इव अथ. ५,१४,१३; १६०३ एतु प्रतिकूलम् ।
अग्निः इव अथ. ५,२२,२; ५३२ अभिदुन्वन्। उच्छोचयन्।
अग्निः वने न अ. १८.१.३९; २००५ व्यसृष्ट शोकम्।
(यथा) अग्निः वृक्षान् अ. १०,३,१४; १४६६ एवा सपत्नान्।
अग्निं इव अ. ८,२,४; ३० जातं अभि सं धमामि ।
अग्नेः इव अ. ७,४५,२; ६८६ अस्य दहतः दावस्य पृथक्।
अग्नेः इव अ. ८,७,१५; ३३८ विजन्त आभृताभ्यः ।
अग्नेः इव अ. ६,२०,१; १७९ अस्य दहतः एति शुष्मिणः ।
(यथा यशः) अग्निहोत्रे अ. १०,३,२२; १४७४ एवा मणिः ।
(यथा) अघ्न्या नीचीनं दुहे अ.६,९१,२;२०० न्यग् भवतु ते रपः।
अज्रः पाः इव ऋ. १०,९४,१३; २३०५ अद्रयः यामन् तद् इद् ।
अत्रिवत् अ. ५,२३,१०; ७०५ क्रिमयः हन्मि ।
अधि ज्यामिव धन्वनि अ.४,४,७; १३३८ अहं ते पसः
अ. ६,१०१,२; १३४५ आ तनोमि ।
अत्यः न ऋ. १०,७६,२; २२८६ अद्रिः हस्तयतः सोतरि ।
अध्वर्यवः घर्मिणः सिष्वि०ऋ.७ १०३,८;१००१ मण्डूकाः गुह्याः।
अनड्वान् जगतामिव अ. ८,५,११; १४४१ | उत्तमा ओषधीनाम् ।
,, अ. १९,३९,४; ४५० |
अनड्वाहौ इव व्रजम् | अ. ३,११,५; ७६ | अ. ७,५३,५; १४७ | प्रविशतं प्राणापानौ ।
अनस्वती इव वाहिनी अ.१०,१,१५;१६३०तेनाभि वाहि भद्रती।
अनुकूलं इव उदकम् अ.५,१४,१३; १६०३ वर्ततां कृत्या ।
(यथा)अभिचक्रं देवाः अ. ३,९,१; १७९७ तथाप कृणुता पुनः।
(यथा स्म ते विरोहतः) अभि तप्तं अ. ४,४,३; १३३४ शुष्मवत्तरं।
अभ्रात् इव वृष्टयः ऋ० १०,७५,३; १०३८ सिन्धुः एति ।
अभ्रातर इव जामयः अ. १,१७,१; ५५५ हिराः हतवर्चसः तिष्ठन्तु
(यथा) अमृतं देवेषु अ. १०,३,२५; १४७७ एवा मणिः ।
अयः न अ. १८,३,२२; २१०५ देवाः जनिमा धमन्तः ।

अर्वतां इव ऋ. १०,९४,६, २२९८ एषां गोथः शृण्वे ।
अर्वतीः इव अ. १०,४,२१; ८२८ नयामि ।
अवध्वसः इव अ. ५,२२,३; ५३३ अरुणः ।
अवसृष्टः न पाशैः वा. य. २०,४५; ३७२ त्मन्या समञ्जन् ।
अश्नेष्माणः अधारयन् अ. ३,९,२; १७९८ तथा तत् मनुना।
अश्वः इव अ. १०,१,१९; १६३४ वि वर्तताम् ।
अश्व इव अ. १९,५७,४; १९१६ कायम् ।
अश्व इव अ. १९,५७,४; १९१६ नीनाहम् ।
अश्व इव नडम् अ. ११,२,५०; २६६ अग्नेः आन्तकात् अनुवपते।
अश्वं इव अश्वाभिधान्या अ. ५,१४,६; १५९६ ता तस्मै नयाम सि.
अश्वाः इव ऋ. १०,९७,३; ३०३ वीरुधः सजित्वरीः ।
(मृगाः) अश्वाः इव अ. १९,३८,२; २०३ विष्वञ्चः यक्ष्माः ईरते।
अश्वा न ऋ. १०,७५,७; १०४२ चित्रा सिन्धुः ।
(विषिते हासमाने) अश्वे इव ऋ. ३,३३,१, १०२२ पर्वतानां ।
(यथा)ऽसितः प्रथयते अ. ६.७२,१; १३४० एवा ते अङ्गेन ।
(इषुम्) अस्ता इव अ. १९,१४,३; १५५३ अपेतो जह्निडामतिं
(यथा) अहानि अनुपूर्वम् अ. ११,२,२५; २४१ एवा आर्तवि
(यथा) अहा रात्री समवती अ. ४,१८,१; ३८८ तथा कृणोमि
अहा इव सूर्यः ऋ. ६,६१,९; १०६७ ऋतावरी अन्याः स्वसृः
(यथा यशः) आदित्ये अ. १०,३,१८ १४७० एवा मणिः कीर्ति
आपः मलं इव अ. २,७.१; ६६८ सर्वान् शपथान् अधि ।
(पक्के) आमिषे अधि ऋ. १०,९४,३; २२९५ सूभर्वाः वृषभाः
आत्नीं इव ज्यया अ. १.१,३; १४१७ इहैव उभौ अभि वि तनु।
आत्नीं इव ज्यया ऋ. १०,१६६,३; २३४३ अत्रैव व. अपि ।

इटः इव अ. ६,१४,३; ४८५ हायन, उप द्राहि ।
इन्द्र इव विरुजं बलम् अ. १९,२८,३; १५१५ हृदः सपत्नानां
इन्द्रः इव ऋ. १,१६६,२; २३४२ अहं अक्षत अस्मि ।
इन्द्रः इव अ. ४,५,७; ६१९ अहं अरिष्टः अक्षितः ।
इन्द्रः इव दस्यून् असुरान् अ. १० ३ ११; १४६३ मे शत्रून् ।
इन्द्र इन्द्रियाणि इव अ. १,३५,३; ६१ दक्षमाण. हिरण्यं बिभ्रत्।

इन्द्रं न वृत्रतूर्ये धने हिते ऋ. ६,६१,५; १०६३ यः त्वा उप ब्रूते
(धन्वन्) इरा इव अ. ५,१३,१; ८३४ ते विषं नि जजास।
इर्षाकां इव अ. ७,५६,४; ८५५ तानि त्वं सं नमः।
(यथा) इषुका परापतदव सृष्टा अ. १,३,९; ५७९ एवा ते मूत्रं।
इळावन्तः इव ऋ. १०,९४,१०; २३०२ सदमित् आशिताः।
(मध्यमशीः) उग्रः इव अ. ४,९,४; ५८३ ततः यक्ष्मं वि बाधसे।
उग्राः इव प्रवहन्तः ऋ. १०,९४,६; २२९७ प्रावाणः समाययुः।
(यथा) उदकं अपपुषः अ. ६,१३९,४; ६८० एवा नि शुष्य।
उदगुतमिव दारु अ. १०,४,३-४; ८१०-११ अरसं विषं उग्रम्।
उद्रा अग्निं इव अ. ७,४५,२; ६८६ ईर्ष्यां शमय।
उर्वरीः इव साधुया अ. १०,४,२१; ८२८ ओषधीनां अहं वृणे।
(यथा) ऋणं सं नयन्ति अ. १९,५७,१; १९१३ | एवा दुष्वप्न्यं
अ. ६,४६,३; ६३५ | अप्रिये।
ऋणात् ऋणं इव अ. १९,४५,१; ५९२; संनयन् कृत्यां।
(यथा) ऋतवः ऋतुभिः अ. १२,२,२५; २४१ एवा धातः।
ऋषिणा इव मनीषिणा अ. ८,५,८; १४३८ स्राक्त्येन मणिना।
(वारणी) एणी इव अ. ५,१४,११; १६०१ कृत्या कर्तारं उत्।
ककुत्सलमिव जामयः अ. १८,४,६६; २२१६ अभि एनं भूम।
कक्ष्या युक्तं इव ऋ. १०,१०,१३; १९६६ त्वां अन्या परि।
कण्ववत् अ ५,२३,१०; ७०६ क्रिमयः हन्मि।
कन्या इव तुन्ना अ. ६,२२,३; ९६७ एजाति ग्लहा।
(मर्याय इव) कन्या ऋ. ३,३३,१०; १०३१ शश्वच्चै ते।
(यथा यशः) कन्यायाम् अ. १०,३,२०; १४७२ एवा मणिः।
कपिः इव अ. ४,३७,११; ७२५ एकः गन्धर्वः।
(यथा) कलां संनयन्ति अ.१९,५७,१; १९१३ | एवा सर्वं
अ.६,४६,३; ६३५ | अप्रिये।
कुमारः सर्वकेशकः इव अ. ४,३७,११; ७२५ एकः गन्धर्वः।
(उदकं) कुम्भिनीः इव ऋ. १,१९१,१४; ७८७ मयूर्यः ते विषं।
कृशः इव रोहितम् अ. ४.४,७; १३३८ | अनवग्लायता सदा।
अ. ६,१०१,३; १३४५ |
क्रीळयः न मातरम् ऋ.१०,९४,१४,२३०६ सुतं अध्वरे अधि।
क्लीबा इव अ. ८,६.११; १३७८ वने प्रनृत्यन्तः।
खर्गलाः इव ऋ. ७,१०४,१७; २२८४ या नक्तं प्रजिगाति।
(दृषदा) खल्वान् इव अ. १,३१,१; ६९१ सं पिनाष्मि क्रिमीन्।
(दृषदा) खल्वान् इव अ. ५,२३ ८; ७०३ मष्मषा नि आकरम्।
गवां अह न मायुः ऋ. ७,१०३,१; ९९५ मण्डूकानां वग्नुः।
(मुष्काबर्हो) गवामिव अ. ३,९,२; १७९८ कृणोमि वध्रि।
गां उक्षणमिव रज्ज्वा अ. ३,११,८; ७९ अभि त्वा।
गावः गोष्ठात् इव ऋ. १०.९७,८; ३०८ ओषधीनां शुष्माः।
(रिहाणा मातरा शुभ्रे) गावा ऋ. ३,३३,१; १०२२ पर्वतानां।
गावो न हव्या ऋ. १,१८७,११; १११८ हे पितो वचोभिः।
गोषु युधः न ऋ. १०,३०,१०; ९१० नियवं चरन्तीः।
गोष्ठामिव अ. २,१४,६; १६५३ आसां धामानि परि असरन्
(वत्सं) गौः इव ऋ. १०,१४५,६; २३४० ते मनः मां अनु।
" " अ. ३,१८,६; ३६९ मामनु ते मनः प्र धावतु।
(स्पन्दना) गौः स्थालीं अ. ८,६,१७; १३८३ पार्ष्ण्या पदा।
(अचितं) ग्रामं इव अ. ४,७,५; ८०२ वचसा परि स्थाप०।
घर्मं इव अभितपन् अ. १९,२८,३; १५१५ द्विषतो नितपन् मणे।
चतुष्पदामिव च्छदिः अ. ३,७,३; १९४ अदो यदवरोचते।
(यथा यशः)चन्द्रमसि अ.१०,३,१८; १४७० मणिः कीर्तिं भूतिं।
(येषन्तं) चरुमिव अ. ४,७,४; ८०१ वचसा परि स्थापयामसि।
छायां इव अ. ८,६,८; १३७४ प्र तान् सूर्यः अनीनशत्।
(रात्री) जगत् इव अ. ६,१२,१; ८४६ हंसात् अन्यत् विषं।
जनं इव शेवधिम् अ. ५,२२,४; ५४४ तक्मानं परि दद्मसि।
जमदग्निवत् अ. ५,२३,१०; ७०५ क्रिमयः हन्मि।
जयतां इव दुन्दुभिः ऋ. १,२८,५; २२८० द्युमत्तमं वद।
(यथा यशः) जातवेदसि अ. १०,३,१९;१४७१ एवा मणिः कीर्तिं
जाया पतिं इव अ. १८,२,५१; २०७५ वाससा अभ्येनं।
(पत्या नुशा) जाया इव अ. १०,१,३; १६१८ शूद्रकृता कर्तारं
जाया इव पत्ये ऋ. १०,१०,७;१९६० अहं तन्वं वि रिरिच्याम्।
जालेन अभिहिता इव अ. १०.१,३०; १६४५ तमसा आवृताः।
(यथा) जीवाः अदितेः उपस्थे अ. २,२८,४;४ त्वां पिता गुपिता।
(यथा) जीवगृभः अ. १०,९७,११; ३११ तथा यक्ष्मस्य आत्मा।
ज्यामिव धन्वनः अ. ५,१३,६; ८३९ मन्योः विमुञ्चामि।
(यथा) समं ज्योतिः सूर्येण अ. ४,१८,१; ३८८ तथा कृणोमि।
ज्योतिषा इव अ. ४,१९,३; ३९८ अभि दीपयन् अग्निमेषि।
तक्मन्वी इव अ. ५,२२,७; ५३७ तां धूनुहि।
तम इव अ. ८,२,१२; ३८ सर्वं दुर्भूतं अपहन्मसि।
तमस इव ज्योतिः अ. ५,१३,३; ८३६ उदेतु सूर्यः।
(प्रदोषं) तस्कारः इव ऋ. १,१९१,५;७७८ अदृष्टाः विश्वदृष्टाः।
(यथैव) तृप्यते मयः अ. १९,२,५; ९३२ तास्त आदत्त भेषजीः।

(यथा) तेज आहितम् अ. १०,३,१७ १४६९ एवा मणिः कीर्तिं
(यथा अन्तस्तिष्ठति) तेजनम् अ. १,२,४; ६६७ एवा रोगं च ।
(उद्यन्) त्वचमिव भूम्याः अ. १९,२८,४; १५१६ शिर एषां ।
दिवि देवाः इव अ.६,८०,२; १५८९ त्रयः कालकाञ्जाः श्रिताः ।
दिवो वृक्षमिवाशनि अ. ६,३७,२; १७७४ शत्रारं अत्र नो जहि ।
दुहिता इव पितरम् अ. १०,१,२६; १६४१ जानीहि कृत्ये ।
दृतिं न शुष्कम् ऋ. ७,१०३,२; ९९५ आपः शयानं एनम् ।
दृतिं (इव) सुरावतो ऋ. १,१९१,१०; ७८३ सूर्यं विषम् ।
(निरूष्माणं) दृतेरिव अ. ६,१८,३; ६८४ ते ईर्ष्यां मुञ्चामि ।
दृशः इव अ. ४,३७,११; ७२५ प्रियः भूत्वा ।
देवः न सविता ऋ. १,३६,१३; २२५७ (यूप), ऊर्ध्वः तिष्ठ ।
देवा इव असुरमायया अ. ३,९,४; १८०० येन श्रवस्यवः चरथ ।
द्यां इव उपरि अ. १८,३,२९; २११२ ऊर्ध्वं भानुं सविता ।
" | अ. १८,३,२५-२८, ३०-३५; २१०८-११,२११३-१८ बाहुच्युता पृथिवी
(परि) द्यां इव सूर्यः अ.६,१२,१; ८४६ अहीनां जनिमागमम् ।
(इमे) द्यावापृथिवी वि इतः अ. ३,३१,४; १७१ अहं सर्वेण ।
द्यौः इव अ. ६,१४२,२; ११२५ तत् उच्छ्रयस्व ।
द्रुपदादिव मुमुचानः वा. य. २०,२०; ११०५ आपः मा एनसः ।
" " अ. ६,११५,३; १७२९ आपः शुन्धन्तु ।
धनपालः धना इव अ. १९,३५,२;१५६२ स नो रक्षतु जन्निडः ।
धनुः इव अ. ६,१०१,२; १३४४ आ तानय पसः ।
" " अ. ४,४,६; १३३७ " "
(यथा) नकुलः विच्छिद्य अ. ६,१३९,५; ६८१ एवा कामस्य
नडं इव अ. ४,१९,१; ३९६ प्रजां छिन्धि वार्षिकम् ।
(यथा) नडं काशेपुने स्त्रियो अ. ६,१३८,५; ५०२ एवा भिनद्मि ।
नडाः इव अ. ६,१३७,२-३; ४६४-६५ केशाः वर्धन्ताम् ।
नदी फेनमिवा वहत् अ. १,८,१; ७२७ इदं हविः यातुधानान् ।
नावा इव अ. ४,३३,७; १७६२ द्विषो नो अति पारय ।
निष्कमिव अ. ५,१४,३; १५९३ कृत्यां देवाः प्रति मुञ्चत ।
(यथा) पतन्ति पक्षिणः अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं जरायुणा
पत्या इव जाया अ. ६,२२,३; ९६७ एनं तुन्दाना ।
पथ्या इव सूरिः अ. १८,३,३९; २१२२ वि श्लोक एति ।
(सूरेः) पथ्या इव ऋ. १०,१३,१; २२७५ श्लोकः एतु ।
पन्थानः दिशं दिशं वि अ. ३,३१,४; १७१ अहं सर्वेण ।
पयसा इव धेनवः ऋ. १०,७५,४; १०३९ त्वां वाश्राः अर्षन्ति ।
(यथा यशः) परमेष्ठिनि अ. १०,३,२४; १४७६ एवा मणिः कीर्तिं
(इष्वाः) पर्णं इव ऋ. १०,१८,१४; १९५३ मां प्रतीचीन ।
(सरौ) पर्णं इव अ. ५,२५,२; १३४६ शेपो गर्भस्य रेतोधाः ।
(पूतं) पवित्रेण इव आज्यं | वा.य. २०,२०;११०५ आपः शुन्धन्तु । अ. ६,११५, ३; १७१९
पिता इव पुत्रान् अ. २,१३,१; २३३१ अभिरक्षतात् इमम् ।
पितरं न पुत्रः ऋ. ७,१०३,३; ९९६ अन्यः अन्यं (मण्डूकं) ।
पियारुः निष्कमिव अ. १९,१७,५; १९१७ देवपीयुः प्रति ।
पुत्र इव पितरम् अ. ५,१४,१०; १६०० कृत्ये गच्छ ।
(यथा) पुत्रं जनादिति अ. ६,८१,३; १३६१ त्वष्टा तं अस्यै ।
(यथा न) पूर्वं अपरः जहाति अ. १२,२,२५; २४१ एवा धातः ।
पूषा इव ऋ. ६,६१,६; १०६४ नः सनिं रद ।
(यथेयं) पृथिवी गर्भं आ दधे अ. ५,२५,२; १३४७ एवा दधामि
" " अ. ६,१७,१-४; १३६२-६५ एवा ते ।
(यथा यशः) पृथिव्याम् अ. १०,३,१९; १४७१ एवा मणिः ।
पौञ्जिष्ठ इव कर्वरम् अ. १०,४,१९; ८२६ शीर्षाणि अग्रभम् ।
(यथा यशः) प्रजापतौ अ.१०,३,२४; १४७६ एवा मणिः कीर्तिं ।
बन्धमिव अ. ५,१४,१०; १६०० अवकामी ।
(यथा) बाणः सुसंशितः अ. ६,१०५,२; ४८७ एवा त्वं कासे ।
बिसखा इव ऋ. ६,६१,२; १०६० ऊर्मिभिः गिरीणां सानु ।
(वपन्तः धान्यकृतः) बीजम् ऋ. १०,९४,१३; २३०५ आवापः ।
(यथा) बीजं उर्वराया अ. १०,६,३३; १५१० एवा मयि प्रजा ।
ब्राह्मणा इव व्रतचारिणः ऋ. ७,१०३,१; ९९४ मण्डूकाः वाचं ।
ब्राह्मणासः अतिरात्रे न सोमे ऋ.७,१०३,७; १००० मण्डूकाः ।
भग इव यामेषु अ. ६,२१,२; ४५८ भेषजानां श्रेष्ठं असि ।
(इदं) भुवनं विश्वं वि अ. ३,३१,५; १७२ अहं सर्वेण पाप्मना ।
(यथा) भूमिः मृतमनाः अ. ६,१८,२; ६८३ एवा ईर्ष्योः ।
मण्डूकाः उदकात् इव ऋ.१०,१६६,५; २३४५ मे पदात् अधः
मत्तः इव अ. ६,२०,१; १७९ विलपन् ।
मधुपर्के यथा यशः अ. १०,३,२१; १४७३ एवा मणिः ।
(उग्रः) मध्यमशीः इव ऋ. १०,९७,१२; ३१२ ओषधीः यक्ष्मं ।
(यथा) मनः (पतति) अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं जरायुणा ।
यथा मनः मनस्केतैः परा अ. ६,१०५,१,४८६ एवा कासे प्रपत ।
(यथा पुरा)मनवे गातुम् ऋ.१०,७६,३; २२८७ तद्वत् व्याप्नोतु ।
मनसः न प्रयुक्ति ऋ. १०,३०,१; ९०१ सोमः देवत्रा अपः ।
(यथा) मनुषो मनः अ. ६,१८,२; ६८३ एवा ईर्ष्यो मृतं मनः ।

मर्यः न कल्याणीभिः ऋ. १०,३०,५; ९०५ याभिः सोमः ।
मर्य इव योषाः अ. १८,४.१०; २२१० सोमः शतयामना ।
माता इव अ. २,२८,५; ५ अस्मै शर्म यच्छ ।
माता इव पुत्रम् अ. २,२८,१; १ मित्रः एवं पात्वंहसः ।
(सं)मातरः इव अ. ८,७.२७; ३५० पुष्पवतीः दुहामस्या ।
(उशती इव) मातरः ऋ. १०,९,२;८८० तस्य भाजयत इह नः
(स) मातरा चित् न ऋ १०,११७,९; २३१९ ज्ञाती चित् ।
माता पुत्रं यथ अ. १८,२,५०; २०७४ अग्नेयं भूम ऊर्णुहि ।
(यथा) माता पुत्रं सिचा ऋ. १०,१८,११; १९५० एनं हे भूमे
माता इव पुत्रम् वा. य. १२,३५; ११०० सुपत्नीः बिभ्रत ।
माता इव पुत्रेभ्यः अ ६,३०,३; ४७२ शमि केशेभ्यः मृड ।
मुष्करं यथा अ. ६,१४,२, ४८४ बलासं निः क्षिणोमि ।
मूलमुर्वा इव अ ६,१४ २; ४८४ छिनद्मि अस्य बन्धनम् ।
मृगं इव अ ५,१४,१२; १६०२ तं कृत्याकृतं पुनः गृह्णातु ।
मृगी इव अ. ५,१४,११; १६०१ कृत्या कर्तारं उद् ऋच्छतु ।
यथा यमस्य गृहे त्वा अ. ६,२९.३; १५८७ तथा आभूकम् ।
यथा यमस्य सादन अ. १८.३,७०; २१४७ पुनर्देहि वनस्पते।
यथा यमाय हर्म्यं अ. १८ ४,५५; २२०५ एवा वपामि ।
यमे इव ऋ.१०.१३,२; २२७६ युवां यतम ने यदा एतम् ।
अ. १८,३,३८; २१२१
यथा यशः यजमाने अ. १०,३.२३; १४७५ एवा मणिः कीर्तिं ।
यथा यशः यज्ञे अ. १०,३,२३; १४७५ एवा मणिः कीर्तिं ।
युवयोः चित् न समा ऋ.१०,११७,९;२३१९ तथा ज्ञाती चित्।
यूथा इव सुमति पश्वः अ. १८.३,२३; २१०६ उग्रः देव ना ।
पीप्यान यंषा इव ऋ. ३,३३,१०; १०३१ वयं ते नि नंसै ।
(सुखः) रथः इव अ. ५,१४,५; १५९५ कृत्या कृत्याकृतं ।
अ. ५,१४,१३; १६०३
रथः इव ऋ ६,६१,३; १०७१ बृहती विश्वने कृता ।
(यथा सुचक्र सुपवि. रथः अ. ४,१५,६; ४२६ तथा प्रति।
(आशवः) रथाः इव अ. ३,९,५; १८०१ शपथेभिः उत् ।
रथान् इव अ. ५ १३,६. ८३९ सात्रास हस्य मन्योः वि मुञ्चामि।
(ऋभुः) रथस्य अगानि इव अ. ४,११,७; ४२७ परुषा परुः।
रथस्य इव अ. १०,१.८; १६९३ यस्ते परूंषि संदधौ ।
(यथा यशः) रथे अ. १०,३ २०; १४७२ एवा मणिः ।
रथी इव ऋ. ५,८३,३; ९७६ कशया अश्वान् अभिशिपन् ।
रथ्या इव ऋ. ३,३३,२; १०२३ युवां समुद्रं अच्छा याथः ।
(प्रबाबधाना) रथ्या इव ऋ. ७,९५,१; १०७३ अप. प्रबाबधाना।
रथ्या इव चक्रा ऋ. १०,११७,५; २३१५ रायः आ वर्तन्ते ।
" ऋ. १०,१०,७ १९६० [आवां] वि वृहेव चित् ।
" ऋ. १०,१०,८ १९६१ तेन अन्येन वि वृह ।
राजा इव युध्वा ऋ. १०,७५,४, १०३९ त्वमित् सिचौ नयसि।
राजानः समितौ इव ऋ.१०,९७,६; ३०६ ओषधीः समग्मत ।
रिश्यस्य इव परीशासम् अ. ५,१४,३; १५९३ त्वचः परि ।
रैवत्या इव ऋ. १०,९४,१०; २३०२ महसा चारतः स्थन ।
लिबुजा वृक्षं इव ऋ. १०,१०,१३; १९६६ त्यां अन्या ।
" " ऋ. १०,१०,१४; १९६७ अन्यः त्वां ।
वत्सो धारुरिव मातरम् अ. ४,१८,२; ३८९ त प्रत्यगुप पद्यताम्।
वत्समिव मातरा संरिहाणे ऋ. ३,३३,३; १०२४ युवां अया०
वधूं इव वहतौ अ. १०,१,१; १६१६ चिकित्सवः यां ।
वपुषी इव ऋ. १०,७५,७; १०४२ दर्शता ।
(देवेषु) वरुणो यथा अ. ६,२१,२: ४५८ भेषजानां श्रेष्ठं असि ।
वर्चं वेशन्त्या इव अ. १,३,७; ५७७ प्र ते भिनद्मि मेहनम् ।
वषट्कारे यथा यशः अ. १०,३,२२; १४७४ एवा मणिः ।
वह्यंश्चान्ता वधूः इव अ. ४,२०,३; ७५६ स भूमिं आ ।
वाका अपचिता इव अ.६,२५,१-३;१६८२-८४ताः सर्वाः नश्यन्तु
(यथा) वातः अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं पत ।
वातः अभ्रं इव अ. ८,६,१९; १३८५ पिङ्गः स्त्रीभागान् ।
(यथा) वनस्पतीन् अवतश्च्यावयति अ. १०,१.१३; १६२८ एवा सर्वं ।
(यथा) वातश्च्यावयति अन्तरिक्षादभ्रम् " "
यथा वातः न्यग् वाति अ. ६,९१,२, २०० न्यग भवतु ते रपः।
वात इव वृक्षान् अ. १०.१.१७; १६३२ नि मृणीहि ।
(यथा) वातः वनस्पतीन् अ १०,३,१३; १४६५ एवा मे ।
(यथा) वातश्च अग्निश्च अ. १०,३,१४; १४६६ " "
(दिवि) वाता इव श्रिताः ऋ. १,१८७,४; १०११ त्ये रसाः ।
(यथा) वातेन प्रक्षीणाः अ. १०,३,१५; १४६७ एवा सपत्नान्।
(पथा) वार् इव ऋ. १०.१४५,६; २३४० मनः मामनु ।
विद्धस्य इव अ. १०,१,२६; १६४१ कृत्ये पदं नय ।
(नानदती) विनद्धा गर्दभी इव अ. १० १,१४; १६२९ कृत्ये
वृक इव अविमतः अ.६,३७,१; १७७३ सहस्राक्षः उप प्रागात्।
वृक्षः इव अ. ४,७,५; ८०२ तिष्ठ स्थाम्नि ।
वृक्ष इव विद्युता हतः अ ७,५९.१; १७७६ आ मूलात् अनु ।
वृक्षादिव स्रजम् अ. ८,६,२६; १३९२ कृत्वा प्रिये प्रति ।

(यथा) वृत्रः अपः तस्तम्भ अ. ६,८५,३; १८४ एवा ते यक्ष्मं।
वृषण्यन्ती इव कन्यला अ. ५,५,३; ४३० वृक्षं वृक्षं आरोहसि।
वृषभः न ऋ. १०,७५,३; १०३८ सिन्धुः रोरुवत् एति ।
व्याघ्रः श्वपदामिव अ. १९,३९,४; ४५० उत्तमोऽसि ओषधीनाम्।
,, ,, अ. ८,५,११; १४४१
शाका इव अ. ३,१४,४; २३२३ इहो पुष्यत ।
शकुनेः इव अ. २,२५,२; ४१७ दुर्णाम्नां शिरो वृश्चामि ।
शतवत् ऋ. १०,९४,२; २२९४ एते वदन्ति ।
(यथा) शफं संनयन्ति अ. ६,४६,३; ६३५ दुष्वप्न्यं द्विषते।
,, ,, ,, अ. १९,५७,१; १९१३ दुष्वप्न्ये आप्रिये।
शमिता न त्मन्या समञ्जन् वा. य. २०,४५; ३७१ देवः यशं ।
शरं इव अ. ४,७,४; ८०१ ते मदं मदावति वि पातयामसि ।
शरणं न वृक्षम् ऋ.७,९५,५;१०७६ शर्मन् दधानाः उप स्थेयाम
शाक्तस्य इव शिक्षमाणः ऋ. ७,१०३.५; ९९८ मण्डूकानां ।
शाखां मधुमतीं इव अ. १,३४,४, ४८१ मां इत किलत्वं ।
शारिशाका इव अ ३,१४,५; २३२४ शिवो वो गोष्ठो भवतु ।
शिशुं इत् न मातरः ऋ.१०,७५,४;१०३९ त्वां वाश्राः अर्षन्ति।
शुने पेष्ट्रं इव अवक्षामम् अ. ६,३७,३; १७७५ तं प्रत्यस्यामि ।
शुनां कपिः इव दूषणः अ. ३,९,४; १८०८ बन्धुरा काबधस्य च ।
शृंगिणां शृंगाणि इव ऋ. ३ ८,१०; २२६८ स्वरवः पृथिव्यां ।
श्येनः इव अ. ५,३०,९; १०६ यक्ष्मः प्रापप्तत् ।
श्वा इव अ. ४,३७,११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।

सखा सख्युः न अ. १८,४,६०; २२१० प्र वा एति इन्दुः।
(यथा) सत्यं आहितम् अ. १०,३,२५; १४७७ एवा मणिः ।
समुद्रः इव अ. ६,१४१,२; ११२५ अधि अक्षितः ।
समुद्रं न सुभुवः अ. ४,८,७; ८०४ अस्वन्तः तस्थिवांसं ।
समुद्रस्य उदधेः इव अ.१,३,८; ५७८ ते वस्तिचिलं विषितम् ।
सविता इव अ. १९,४५,४; ५९५ ध्रुवस्तिष्ठसि चार्यः ।
सहस्रवत् ऋ. १०,९४,२; २२९४ एते ग्रावाणः वदन्ति ।
सिंहस्य इव अ. ८,७,१५; ३३८ स्तनथोः सं विजन्ते ।
सिन्धुं इव नावा अ. ४,३३,८; १७६३ अति पर्षा स्वस्तये ।
सुपर्णो वसतेः इव अ. ६,८३,१; ५१३ अपचितः प्र पतत ।
सूरो न हुता अ. १८,४,५९; २२०९ त्वं कृपा रोचसे ।
सूर्यः इव अ. १९,३३,५; १८३७ आभाहि प्रदिशः चतस्रः ।
सूर्य इव दिवमारुह्य अ. ८,५,७; १४३७ वशी कृत्या वि बाधते।
(यथा) सूर्यः अतिभाति अ. १०,३,१७; १४६९ मणिः कीर्तिं ।
(यथा न्यक् तपते) सूर्यः अ. ६,९१,२; २०० न्यग् भवतु ते ।
(यथा) सूर्यो मुच्यते तमसः अ. १०,१,३२; १६४७ एव अहं ।
(वीघ्रे) सूर्यमिव सर्पन्तम् अ. ४,२०,७; ७६० मा पिशाचं ।
(यथा) सूर्यस्य रश्मयः अ. ६,१०५,३; ४८८ एवा त्वं कासे ।
सेना इव अ. ४,१९,२; ३९७ एषि त्विषीमती ।
सोमः इव यामेषु अ. ६,२१,२; ४५८ वीरुधानां वसिष्ठम् ।
(यथा यशः) सोमपीथे अ. १०,३,२१; १४७३ मणिः कीर्तिं।
स्तुकां इव अ. ७,७४,२; ५०४ जघन्यां आसां आ छिनद्मि ।
स्तेनः इव व्रजम् ऋ. १०,९७,१०; ३१० ओषधीः विश्वाः ।
स्नुषा इव श्वशुरादधि अ. ८,६ २४,१३९० सूर्यात् परि सर्पति।
स्वजः इव अ. ५,१४,१०; १६०० अभिष्ठितः दश ।
स्विन्नः स्नात्वा मलादिव अ.६,११५.३;१७२९ आपः शुन्धन्तु
वा. य. २०,२०, ११०५ मैनसः।

हंसाः इव ऋ. ३,८,९; २२६७ स्वरवः नः आगुः ।
हरी इव अन्यांसि ऋ. १,२८,७; २२८२ आयजी उलूखल०
(यथेदं) हर्म्यम् अ. ४,५,५; ६१७ तेषां अक्षीणि सं दध्मः ।
(यथा) हव्यं नहसि अ. ४,२३,२; १६८६ एवा देवेभ्यः ।
(यथा) यज्ञं कल्पयसि अ. ४,२३,२; १६८६ ,, ,,
(समौक्षित्) हस्तौ न समं ऋ.१०,११७,९;२३१९ तथा ज्ञाती।
हस्ती इव रजः अ. १०,१,३२; १६४७ दुरितं जहामि ।
हृदं अग्निः इवा दहन् अ.६,३७,२;१७७४ परि णः वृङ्धि शपथ।

विषय-सूची ।

विषयः ।	मंत्रांकाः	प्रकरणम् ।
आक्षि ७,३६,१; ५९१		रोगचि.
अक्षिरोगभैषज्यम् ६ १६,१-४; ४६६-६९		ओषधि.
अग्निः ६,११,१-३; ८५-८७ । ६,४७,१; ८८ । २,२९,१; ९१ । १९,६४,१-४; ११५-१८ । ७,३३,१; १४२ । २,१३,१; २३३१		दीर्घायु.
,, ३,३१,१,६; १६८,१७३ । १२,२,१-५५; २१७-७१		यक्ष्मना.
,, १,२५,१-४; ५२५-२८ । ६,१११,१-४; ६८७-९०		रोगचि.
,, ६,३२,१; ७३१ । १,२८,१-२; ७३४-३५		क्रिमिना.
,, १,२३,२३; ८७० । ७,८५,१-४; ९५९-६२		जलचि.
,, ६,७१,१-३; १११९-२१ । १२,३,१-६०; १२७२-१३३१		अन्नादि.
,, ४,४,६; १३३७		वाजी.
,, ६,१०८,४; १४२२		गर्भाधा.
,, २,१०,२; १६६३ । ६,११२,१-३; १६७०-७२ । ७,७८,१-२; १६८०-८१ । ४,२३,१-७; १६८५-९१ । ७,६४,१-२; १७३२-३३ । ४,३३,१-८; १७५७-६४। १६,९,२; १९०३		पापादि.
,, ७,६१,१-२, १९२१-२२ । १८,२,४,३४; २०२८,२०५८। १८,३,५-६; २०८८-८९। १८,४,८८; २२३८। १९,५९,२; २२५५। ऋ. १,३६,१३-१४; २२५७-५८। ६,४९,३; २३२६		यज्ञादि.
,, ऋ. १०,१५५,१,४; २३३७-३८ (अलक्ष्मी)		रोगचि.
अग्निः जातवेदाः १,१८,३-४; ७२९-३० । १,७, १-७; ७६७-७३		क्रिमिना.
,, वैश्वानरः ६,११९,१-३; १६७३-७५		पापादिना.
अग्निस्तवः ६,४९,३; २३२६		यज्ञादि.
अग्नीन्द्रौ १,७,३; ७६९		क्रिमिना.
अग्नीषोमौ १,८,१-२; ७२७-२८		,,
,, ऋ. १०,१९,१ उत्तरार्धः; ८९३		जलचि.
अग्न्यादयः त्रिवृत् ५,२८,१-१४; १२७-४०		दीर्घायु.
अंगानि १९,६०,१-२; १५७-५८		,, (अरिष्टानि अंगानि)
अजः ९,५,१-३८; ११८३-१२२०		अन्नादि.
अजशृंगी (ओषधिः) ४,३७,१-१२, ७१५-२६		क्रिमिना.
अञ्जनम् ७,३०,१; ५९० । ७,३६,१; ५९१ । वा० य० ४,३; ६१२		रोगचि.
अदितिः ६,७,१-३; ७६३-६५		क्रिमिना.
,, ५,२६,६; १९४१		यज्ञादि.
अदितेर्गर्भः ऋ. ९,७४,५, १४०४		गर्भाधानं
अन्नम् वा० य० १८,३२-३४; ३५९-६१ [वाजः]		ओषधि.
,, ऋ. १,१८७,१-११; ११०८-१८ । अ. ६, ७२,१-३; ११११-२१। ७,५८,१-२; ११२२-२३ । ६,११६,१-३; १२६६-६८		अन्नादि.
अन्नसमृद्धिः ६,१४२,१-३; ११२४-२६		
अन्नादिकम् । (११०८-१३३१)		
अपचिद्-भैषज्यम् ७,७६,१-२; ५०७-८		रोगचि.
अपामार्गो वनस्पतिः ४,१७,१-८ । १८,१-८ । १९,१-८; ३८०-४०३		ओषधि.
अपामार्गवीरुत् ७,६५,१-३; ४०४-६		,,
अपां नपात् ऋ. १०,३०,१-१५; ९०१-१५		जलचि.
अपां भेषजम् १,४,४; ९६३ । १,६,४; ९६४		,,
अपां भैषज्यम् ६,२३,१-३; ९६८-७० । ६,२४, १-३; ९७१-७३		,,
अप्सरसः ४,३७,१,३-५; ७१५,७१७-१९		क्रिमिना.

अरातयः ५,७,१-३,६-१०; १७७७-७९,१७८२-८६ पापादि.
अरातिनाशनम् ५,७,१-१०; १७७७-८६
अरिनाशनम् ७,५९,१; १७७६

अरिष्टनाशनम्। (१५७९ १५९०)

अरिष्टक्षयणम् ६,२७,१-३; १५७९ ८१। ६,२८, १-३। २९,१-३। ८०,१-३; १५८२-९० अरिष्ट.

अरिष्टानि अंगानि। (१५७-१५८)

अरुन्धती (औषधिः) ६,५९,१-३; ४०७-९ ओषधि.
अर्कः ६,७२,१-३; १३४०-४२ वाजीक.
अर्यमा १,१८,२; ६७४ रोगचि.
" १,११,१-६; १४०५-१० गर्भाधानं
" ३,१४,२; २३२१ यज्ञादि.
अलक्ष्मघ्नम् ऋ. १०,१५५,१,४; २३३७-३८ रोगचि.
अलक्ष्मानाशनम् १,१८,१-४; ६७३-७६ "
अवनम् १९,६५,१ [अग्नेः २३४९] पापादि.
अश्विनौ २,२९,६; ९६। ७,५३,१-७; १४३-४९ दीर्घायु.
" ऋ. १,१२०,१; ६१३ रोगचि.
" ऋ. ५,७८,५-९; १३९९-१४०३ (गर्भस्राविण्युपनिषद्) गर्भाधानं.
" ७,७३,६-७,११; १९१८-२० यज्ञादि.
असिक्निः १,२३,१४; ५१७-२० रोगचि.
असुरक्षयणम् ६,७,१-३; ७६३-६५ क्रिमिना.
असुरः वरुणः १,१०,१-४; १६५४-५७ पापादिना.
अस्तृतमणिः १९,४६,१-७; १५७१-७८ मणिधारणं
अहः ३,१४,१; २३२० यज्ञादि.
अहानि ७,६९,१; ६३८ रोगचि.
आञ्जनम् ४,९,१-१०; ५८०-८९। १९,४५,१-१०; ५९२ ६०१। १९,४४,१-११; ६०२-११ "
आत्मा ७,१११,१; १३६६ गर्भाधानं.
आदित्यः २,३२,१-६; ७०९-१४ क्रिमिना.
" ६,८१,१-३; १३५९-६१ गर्भाधानं.
" १६,३,१-६। ४,१-७; १८२२-३४ पापादि.
आदित्याः १,३०,१; ५५ दीर्घायु.
आदित्यरश्मयः ६,२२,१; ९६५ जलचि.
आनृण्यम् ६,११९,१-३; १६७३-७५ पापादिना.
आपः २,२९,४-५; ९४-९५ दीर्घायु.
आपः ३,७,५; १९६। ६,९१,३; २०१ यक्ष्मना.
" ऋ० १,१९१,१-१६; ७७४-८९ विषना.
" ऋ० १, २३, १६-२३। ७, ४७, १-४। ४९,१-४। १०,९,१-९। १७,१०-१४। १९, १-८। ३०, १-१५। अ० १, ३३, १-४; ८६३-९१९। ३,१३,१.४-७; ९२०,९२३-२६। ७,३९,१; ९२७। १९,२,१-५। ६९,१-४; ९२८-३६। वा. य. १, १२-१३. २१. ३१। २,२.३४;४,१.१२। ५,११। ६,१०-१३. ३०-३१। ६,१७.२२.२४.२७--२८। ८,२६; ९३७-५५। १,४,४। ६,४, ९६३-६४। ६,२३,१-३।२४,१-३; ९६८-७३। ४,१५,५-१०; १००८-१३। वा०य० १०,१-४.६.१९। ११,३८। १२,३५.५५। १४,८। २०,१८-२०,२२-२३, १०९३-११०७ जलचि.
" ४,४,५; १३३६ वाजीक.
" १०,६,३; १४८० मणिधारणं
" २,१०,२; १६६३। ७,६४,१-२; १७३२-३३।११२,१-२; १७६८-६९। ६,५१,१-३; १७८७-८९ पापादिना.
" १८,३,५६; २१३५ यज्ञादि.
आपः दिव्याः ६,१२४,१-३।७,८९,१-४; ९५६-६२ जलचि.
आयुः २,२८,१,३; १,३। ८,१,१-२१। २,१-२८; ६-५४। ७,३२,१; १४१। ७,५३,१-७; १४३-४९ दीर्घायुष्यम्
" ३,३१,८-१०; १७५-७७ यक्ष्मनाश.
" ६,१०९,१-३; ४१३-१५ ओषधिव.
" २,३,१-६;५६५-७०। ७,१-५; ६६८-७२ रोगचिकि.
आयुः सर्वम् १९,६१,१; १५५। ७०,१; १५६ दीर्घायु.
आयुष्यम् ३,११,१-८; ७२-७९। ५,३०,१-१७; ९८-११४। ६,७६,१-४; १५०-५३ दीर्घायु.
" २,३३,१-७; २९४-३०० यक्ष्मनाश.
" ८,७,१-२८; ३२४-५१ ओषधिव.
आयुष्कामः द्रष्टा १,३०,१-४; ५५-५८। ३५,१-४; ५९-६२। ५,३०,१-१७; ९८-११४ दीर्घायु.
" १९,३२,१-१०। ३३,१-५; १९२३-३७ यज्ञादि.
आयुर्वर्धनम् १९,६३,१; १५४ दीर्घायु.

आशापालाः १,३१,१-४; १६५८-६१ पापादिना.
आसुरी वनस्पतिः १.२४,१-४; ५२१-२४ रोगाचिकि.
आस्रावस्य भेषजम् २,३,१-६; ५६५-७० ,,
इन्दुः १८,३,५४; २१३४ यज्ञादि.
इन्द्रः २.२९,३; ९३ दीर्घायु.
" ७,७६,३-६; ५०९-१२ । १,२,३; ६६६ रोगाचिकि.
" ५,२३,१-१३; ६९६-७०८ क्रिमिना.
" ३.१२,२-३; ९२१-२२। ऋ० १०,२७,१६; ९८४। ऋ० ३,३३,६-७; १०२७-२८ जलाचि.
" ४,४ ४; १३३५ अन्नादि.
" ४,२४,१-७; १६९२ ९८ पापादिना.
" ५,२६,३,११; १९३९,१९४५ । ३,१४,२; २३२१ यज्ञादि.
इन्द्रसूर्यादयः १९,७०,१; १५६ दीर्घायु.
इन्द्राग्नी १,३५,१-४; ५९-६२ । ३,११,१-८; ७२-७९ ,,
इन्द्रावरुणौ ७,५८,१-२; ११२२-२३ अन्नादि.
इषुनिष्कासनम् ६,९०,१-३; ६२०-२२ रोगाचि.
ईर्ष्यापनयनम् ७,४५.१-२; ६८५-८६ ,,
ईर्ष्याविनाशनम् ६,१८,१-३; ६८२-८४ ,,
उन्मत्ततामोचनम् ६,१११,१-४; ६८७-९० ,,
उन्मोचनम् ६,११४,१-३; १७९४ ९६ पापादिना.
उलूखलम् ऋ० १,२८,५-६; २२८०-८१ यज्ञादि.
उलूखलमुसले ऋ० १,२८,७-८; २२८२-८३ ,,
उषा ७,६९,१; ६३८ रोगाचि.
,, १६,६,१-११। ७,१-१३; १८४५-६८ पापादिना.
एकवृषः ५,१६,१-११; ६४२-५२ रोगाचि.
एनोनाशनम् ६,५१,१-३; १६८७-८९ पापादिना.
ओदनम् पञ्च ९,५,१-३८; ११८३-१२२० अन्नादि.
,, बार्हस्पत्य ११,३ १-५६; ११२७-८२ ,,
,, ब्रह्म ११,१,१-३७; १२२९-६५ ,,
,, स्वर्ग १२,३,१-६०; १२७२-१३३१ ,,

ओषधिवनस्पतयः । (३०१-४८२)

ओषधिः वा० य० १२,७९; ३५८ ओषधि.
ओषधयः ऋ०१०,९७,१-२३; ३०१-२३ । अ०८,७, १-२८; ३२४-५१। ऋ० ३,५३,७;३६३ ,,
ओषधयः १,१०,२; १६६३ पापादि.
औषधिः अजशृंगी ४,३७,१-२,६,१०; ७१५-१६, ७२०,७२४ क्रिमिनाश.
,, अरुन्धती ६,५९,१-३; ४०७-९ ओषधिव.
,, केशवर्धनी ६,२१,१-३; ४५७-५९ ,,
औदुम्बरमणिः १९,३१,१-१८; १५३७-५० मणिधार.
कामिलानाशनम् १,२२,१-४; ४८९-९२ रोगाचि.
कासा क सशमनम् ६,१०५,१-३; ४८६-८८ ,,
कुष्ठः ५,४,१-१०; ४३७-४६ । १९,३९,१-१०; ४४७-५६ ओषधिव.
कुष्ठतक्मनाशनम्× ५,४,१-१०; ४३७-४६ ,,
,, १९,३९,१-१०;४४७-५६ ,,
कुष्ठौषधिः ६,९५,१-३; ४१०-१२ ,,

कृत्यादूषणम्। (१५९१-१६५३)

कृत्यादूषणम् ८,५,१-२२; १४३१-५२ मणिधारणम्.
,, १०,१,१-३२; १६१६-४७ । ५,३१, १-१२; १६०४-१५ कृत्यादू.
कृत्यापरिहरणम् ५,१४,१-१३; १५९१-१६०३ । ५,३१,१-१२; १६०४-१५ ,,
कृमिनाशनम् ४,३७,१-२; ७१५-२६ क्रिमिना.
कृशनः ४,१०,१-७; १४२४-३० मणिधा.
केशदंहणम् ६,१३६,१-३; ४६०-६२ ओषधि.
केशवर्धनम् ६.१३७.१-३; ४६३-६५ ,,
केशवर्धनी औषधिः ६,२१,१-३; ४५७-५९ ,,
क्रिमिघ्नम् ५,२३,१-१३; ६९६-७०८ क्रिमिना.
क्रिमिजम्भनम् २,३२,१-५; ६९१-९५ ,,

क्रिमिनाशनम् । (६९१-७७३)

क्रिमिनाशनम् २,३२,१-६; ७०९-१४ ,,
क्लीबत्वम्* ६,१३८,१-५; ४९८-५०२ रोगाचि.

× 'कुष्ठः' वीरुधां बलवत्तमा ओषधिः। सा तक्मानं नाशयति। अतः अत्र 'कुष्ठः तक्मनाशनः।' इति प्रथमस्थले, 'तक्मनाशनम्' इति द्वितीयस्थले पाठः योग्यः।

* अत्र 'क्लीबत्वापादनम्' इति पाठः समीचीनतरः भवति।

क्षेत्रियरोगनाशनम् २,८,१-५; ४९३-९७ रोगचिकित्सा
गण्डमाल.चिकित्सा ७,७४,१-४। ७६,१-६; ५०३-१२ ,,
गन्धर्वाप्सरसः ४,३७,७-१२; ७२१-२६ क्रिमिना.

गर्भाधानम्। (१३४६-१४१०)

गर्भदृंहणम् ६,१७,१-४; १३६२-६५ गर्भाधानम्
गर्भदोषनिवारणम् ८,६,१-२६; १३६७-९२ ,,
गर्भसंस्रावः २०,९६,११-१६; १३९३-९८ ,,
गर्भस्राविण्युपनिषद् ऋ० ५,७८,५-९; १३९९-१४०३ ,,
गर्भाधानम् ६,८१,१-३, १३५९ ६१ ,,
गावः ऋ० १,९०,८; ४७३ ओषधि
,, ६,५२,२; ५६३ रोगचि.
,, ऋ. १०,१९,१-८; ८९३-९०० जलचि.
,, ३,१४,१-६; २३२०-२५ यज्ञादि.
गोघ्नः ३,१४.१.५; २३२०,२३२४ ,,
ग्रावाणः ऋ० ७।१०४,१७। १०,७६,१-८। ९४, १-१४। १७५,१ ४; २२८४-२३१० ,,
घर्मः ७,७३,६-७.११; १९१८-२० ,,
घृतहोमः ५.६२,२-४, ६-९,११, १९३८-४५ ,,

चन्द्रः ३,३१.६; १७३ यक्ष्मना.
,, १,३,४, ५७४ रोगचि.
चन्द्रमाः २,४.१ ६; ६६-७१। ४,१,१-३; ६३-६५ दीर्घायु.
,, २,३३,१-७; २९४-३०० यक्ष्मना.
,, ६,२,१-३; ४५७-५९। ६,१६,१-४;४६६-६९ ओषधि.
,, ६,८३,१; ५१३। ७,११६,१-२; ५२९-३०।
,, ४,१३,१-७; ५४८ ५४। १.२,३; ६६६ रोगचि.
,, २.३१,१-५; ६९१-९५ क्रिमिना.
,, १,३३,१-४, ९१६ १९ जलचि.
,, १०,३,१ २५; १४५३-७७ मणिधा.
,, ६.८०,१-३; १५८८-९० अरिष्टना.
,, ११,६.१-२३; १७३४-५६। ६,३७,१-३; १७७३-७५ पापादि.
,, १८,४,८९;२२३९।१९,१,१-३;२२४६-४८ यज्ञादि.
चिकित्सा ६,९६,१-३; ३५२-५४ ओषधि.
जङ्गिडः २,४,१-६, ६६-७१ दीर्घायु.
,, १९,३५,१-५; १५६१-६५ मणिधा.
जङ्गिडमणिः १९.३४,१-१०; १५५१-६० ,,
जरिमा २,२८,१.३; १,३ दीर्घायु

जलचिकित्सा। (८६०-११०७)

जातवेदा ६,२९.२, ९२ ,,
,, ७,७४,४; ५०४ रोगचि.
,, १.१८ ३ ४; ७२९-३०। ५ २९,१-१५; ७३८-५२। १९,६६,१; ७६६। १,७ १-७, ७६७ ७३ क्रिमिना.
,, १८.२,५, २०२९ यज्ञादि.
जायान्यः ७.७६,३-६; ५०९-१२ रोगचि.
ज्वरनाशनम् १,२५,१-४; ५२५ २८। ७,११६,१-२; ५२९-३० ,,
तक्मनाशनः ५,२२,१-१४; ५३१-४४ ,,
तक्षकः ४, ६. १-८; ७९०-९७। १०, ४, १-२६; ५,१३,१-११। ७ ८८,१; ६,१२,१-३; ८०८ ४८ विषना.
तपः ७,६१,१-२; १९११-२२ यज्ञादि.
तारके ३,७,१; १७५ यक्ष्मना.
तृणम् ऋ० १ १९१,१ १६; ७७४-८९ (आतृणसूर्या) विषना.
त्रिवृत् ५,२८,१-१४; १२७-४० दीर्घायु.
त्रैकाकुदञ्जनम् ४.९,१-१०; ५८०-८९ रोगचि.
त्वष्टा ३,३१,९; १७२ यक्ष्मना.
,, ६,८१,३: १३६१ गर्भाधानं
,, ५,२६,८, १९४३ यज्ञादि.
दन्तौ ६,१४०,१-३; १५९ ६१ (सुमंगली दन्तौ) दीर्घायु.
दर्भः १९ ३२,१ १०; १९२३-३२। ३३,१-५; १९३३-३७ यज्ञादि.
दर्भमणिः १९,२८,१ १०। २९,१-९ । ३०,१-५; १५१३-३६ मणिधा.
दस्युनाशनम् २,१४.१-६; १६४८-५३ कृत्यादू.
दिशः ४,१५.१, १००४ जलचि.
,, १.११.१-६, १००५-१० गर्भाधानं
,, २,१०,३; १६६४ पापादिना.

दीर्घायुष्यम्। (१-१६१)

दीर्घायुः ५,२८,१.१४; १२७-४०। ७,३३,१; १४२ दीर्घायु
दीर्घायुत्वम् १९,६४,१-४; ११५ १८। ६७,१८; ११९-२६ ,,

दीर्घायुष्यम् वा० य० १२,१००। ३४,५०-५२; २३२७-३० दीर्घायु.
दीर्घायुः प्राप्तिः २,१३,१-५; २३३१-३५ ,,
दुरितनाशनम् ७,६५,१-३; ४०४-६ ओषधि.
,, ७,६३,१; [अग्निः २३७४] पापादि.
दुःखनाशनम् ३,९,१-६; १७९७-१८०३ ,,
दुःखमोचनम् १६,१,१-१३। २,१-६। ३,१-६।४,१-७; १८०३-३४ ,,
दुःष्वप्ननाशनम् ऋ० १,१२०,१२। २,२८,१०। १०, १६४,१-५; ६२३-२९ रोगचि.
,, अ०६,४५,१-३। ४६,१-३। ७,१००,१। १०१,१; ६३०-३७ ,,
,, १६,५,१-१०। ६,१-११। ७,१-१३। ८, १-३३। ९,१-४; ७,२३,१; १९,५६,१-६। ५७,१-५; १८३५-१९१७ पापादि.
द्वाः १,३०,१-४; ५१-५८ दीर्घायु.
,, ३,३१,७; १७४ यक्ष्मना.
,, ४,१३,१; ५४८। १,१८,२; ६७४ रोगचि.
,, ६,७,३; ७६५ क्रिमिना.
,, ६,७१,३; ११२१ अन्नादि.
,, १,११,१-६; १४०५-१० गर्भाधानं
,, ३,९,१-६, १७९७-१८०२ पापादि.
द्रव्याः ऋषयः ६,४१,१-३; ६३ ६५ दीर्घायु.
द्यावापृथिवी २,२९,४-५; ९४-९५ ,,
,, ३,३१,४; १७१ यक्ष्मना.
,, ७,३०,१; ५९० रोगचि.
,, ४,६,२; ७९१ विषना.
,, २,१०,१-८; १६६२-६९। ४,२६,१-७; १७०६-१२। ३,९,१-६; १७९७-१८०२ पापादि.
द्यावापृथिव्यादयः २,२८,४-५; ४-५ दीर्घायु.
धनान्नदानम् ऋ. १०,११७,१-९; २३११-१९ यज्ञादि.
धन्वन्तरिः २,३,१-६; ५६५-७० रोगचि.
धमन्यः धमनीबन्धनम् १,१७,१-४; ५५५-५८ ,,
नद्यः ऋ. ३,३३,१-३. ५.९,११-१३; १०२२-३४ ऋ० ७,५०,४; ऋ० १०,७५,१-९; १०३५-४४ जलचि.
नारीसुखप्रसूतिः १,११,१-६ १४०५-१० गर्भाधानं
नितत्नी (वनस्पतिः) ६,१३६,१-३; ४६०-६२ ओषधि.
निर्ऋतिः ६,२७,१-३। २८,१-३। २९,१-३; १५७९-८७ अरिष्टना.
,, २,१०,४-८; १६६५-६९। ७,६४,१-२; १७३२-३३ पापादि.
निर्ऋतिमोचनम् ६,८४,१-४। १७९०-९३ ,,
निविदः ५,२६,४; १९४० यज्ञादि.
पञ्चौदनः अजः ९,५,१-३८; ११८३-१२२० अन्नादि.
परस्पराचित्तैक्यीकरणकामः [द्रष्टा]६,४३,१-३; ६३९-४१ रोगचि.
पर्जन्यः ३,३१,११; १७८ यक्ष्मना.
,, १,३,१; ५७१। १,२,१४; ६६४-६७ रोगचि.
,, ऋ० ५,८३,१-१०; १०,२७,१६। ७,१०१, १-६। १०२,१-३। १०३,१-१०; ९७४-१००३ ४,१५,४; १००७। ७,१८,१-२; १०२०-२१ जलचि.
पवमानः सोमः ऋ० ९,७४,५; १४०४ गर्भाधानं
पशवः ३,३१,३; १७० यक्ष्मना.

पापादिनाशनम्। (१६५४-१९१७)

पापनाशनम् ४,३३,१-८; १७५७-६४। ६,११,१-३; १७६५-६७। ७,११२,१-२; १७६८-६९ पापादि.
पापमोचनम् ४,२३,१-७। २४,१-७। २५,१ ७। २६,१-७; १६८५-१७१२। २७,१-७; [मरुतः ४४०-४६]। २८,१-७। २९,१-७। ६,१५,१-३; ७,४२,१-२। ६४,१-२। ११,६,१-२३; १७१३-५६ ,,
पापलक्षणनाशनम् ७,११५,१-४; [अग्निः २२०१-४] ,,
पापशमनम् ६.३०,१-३; ४७०-७२ ओषधि.
पाप्मनाशनः (अग्निः) ४,३३,१-८; १७५७-६४ पापादि.
पाप्मनाशनम् ६,२६,१-३; १७७०-७२ ,,
पाप्महा ३,३१,१-११; १६८-७८ यक्ष्मना.
पाप्मा ६,२६,१-३; १७७० ७२ पापादि.
पाशमोचनम् १,३१,१-४। २,१०,१-८। ६,११२,१-३। ११९,१-३। ७,८३,१-४; १६५८-७९ ,,
पाशविमोचनम् १,१०,१-४; १६५४-५७ ,,
पितरः ४,१५,१३-१५; १०१६-१८ जलचि.
,, १०,१४,७-९; १९७३-७५। १५,१-१४; १९८७-२०००। १८,१,४४-४६; ५१,५२; २०१०-१२,२०१६-१७। १८,२,२९; २०५३। ४,८१; २२३१ यज्ञादि.

पितृमेधः १०,१८,७-१४; १९४६-५३। १८,१,६. १३-१४. १७. ३९-४९. ५१-५४. ५७-६१। २,१-६०। ३,१,३-४९. ५२.५४. ५६.५८-६६. ६८-७३; २००१-२१५० यज्ञादि.
पिप्पली ६,१०९,१-३; ४१३-१५ ओषधि.
पिशाचक्षयणम् ४,२०,१-९; ७५४-६२ क्रिमिना.
पुष्टिकामः (द्रष्टा) १९,३१,१-१४; १५३७-५० मणिधा.
पूषा ७,३३,१; १४२ दीर्घायु.
,, १,११,१-६; १४०५-१० गर्भाधानं
,, ६,११३,१-३; १७६५-६७। १६,९,२; १९०३ पापादि.
,, ३,१४,२; २३२१ यज्ञादि.
पृथिवी १,२,१,४; ६६४,६६७ रोगचि.
,, ७,१८,१-२; १०२०-२१ जलचि.
,, ६,१७,१-४; १३६२-६५ गर्भाधानं
पृथिव्यादयः ५.२५,१-१३; १३४६-५८ ,,
पृश्निपर्णी २,२५,१-५; ४१६-२० ओषधि.
प्रजापतिः ४,१५,११; १०१४ जलचि.
,, ४,४,१-२; १३३२-३३ वाजीक.
,, १६,१,१-१३; १८०३-१५। १६,९,१; १९०२ पापादि.
,, ऋ० १०,१८.१४; १९५३ यज्ञादि.
प्रतिसरः मणिः ८,५,१-२२; १४३१-५२ मणिधा.
फालमणिः १०,६,१-३५; १४७८-१५१२ ,,
बन्धमोचनम् ७,७८,१-२; १६८०-८१ पापादि.
बलासः बलासनाशनम् ६,१४,१-३; ४८३-८५ रोगचि.
बहुदैवत्यम् ५,७,१-१०; १७७७-८६ (अरातिनाशनम्) पापादि.
,, १९,५८,१-६, २२४९-५४ (यज्ञः) यज्ञादि.
बृहस्पत्य-ओदनः ११,३,१-५६; ११२७-८२ अन्नादि.
बृहस्पतिः २,२९,१; ९१। ७,५३,१-७; १४३-४९। २,१३,२-३; २३३२-३३ दीर्घायु.
,, १,१८,१-२; ७२८-२९ क्रिमिना.
,, १९,४०,१-४; १४११-१४ गर्भाधानं
,, ३,१४,२; २३२१ यज्ञादि.
ब्रह्म २,१०,१-८; १६६२-६९ पापादि.
ब्रह्मणस्पतिः १९,६३,१.६१-१; १५४-५५। ६,१४०, १-३; १५९.६१ (सुमंगली दन्तौ) दीर्घायु.
ब्रह्मणस्पतिः ७.३०,१; ५९० रोगचि.
,, ७,५६,४; ८५५ विषना.
,, ४ ४,६; १३३७। ६,७२,१-३। १०१,१-३; १३४०-४५ वाजीक.
,, ८,६,१५; १३८१ गर्भाधानं
ब्रह्मौदनम् ११,१,१-३७; १२२९-६५ अन्नादि.
भगः ५,२६,९; १९४४ यज्ञादि.
भवाशर्वौ ४,२८,१-७; १७१३-१९ पापादिना.
भेषजम् ६,५२.३; ५६४। ७,४५,१-२; ६८५ ८६ रोगचि.
भेषजम्, आस्रावस्य २,३,१ ६; ५६५-७० ,,
भैषज्यम् ८,७,१ २८; ३२४-५१। ६,१०९,१-३; ४१३-१५ ओषधि.
,, २,३,१-६; ५६५-७०। १९,४४,१-१०; ६०२-११; २,७ १-५; ६६८-७२ रोगचि.
,, ६,२२,१-३; ९६५-६७ जलचि.

मणिधारणम्। (१४२४-१५७८)

मणिः अस्तृत १९,४६,१-७, १५७२ ७८ मणिधारणं
,, औदुम्बरः १९,३१,१ १४; १५३७-५० ,,
,, जंगिडः १९,३४,१-१०; १५५१-६०। ३५,१-५; १५६१-६५ ,,
,, २,४,१-६; ६६ ७१ दीर्घायु.
,, दर्भ १९.२८,१-१०। २९.१-९। ३०,१-५; १५१३-३६ मणिधारणं
,, प्रतिसरः ८,५,१-२२; १४३१-५२ ,,
,, फाल १०,६,१-३५; १४७८-१५१२ ,,
,, वरणः १०,३,१-२५: १४५३-७७ ,,
,, शंख ४,१०,१-७; १४२४-३० ,,
,, शतवारः १९,३६,१-६; १५६६-७१ ,,
मण्डूकाः ऋ० ७,१०३,१-१०; ९९४-१००३। अ. ४,१५,१३-१५; १०१६-१८ जलचि.
मधु (वनस्पतिः) मधु-विद्या १,३४ १-५, ४७८-८२ ओषधि.
मधुमत् अन्नम् ६,११६,१-३; १२६६-६८ अन्नादि.
मधुला (वनस्पतिः) ५,१५,१-११; ६५३-६३ रोगचि.
मनः ७,३६,१; ५९१ ,,
मंत्रोक्ताः १२,२,१-५५; २१७-७१ यक्ष्मना.
,, ६,१६,१-४; ४६६-६९ ओषधि.

मंत्रोक्ताः १९,४५ १-१०; ५९२-६०१ । (आञ्जनम्) रोगचि.
,, ५.२९,१-१५; ७३८ ५२ । (रक्षोघ्नम्) क्रिमिना.
,, ११.३ ३२-५६; ११५८-८२ । ९,५,१-३८; ११८३-१२२० (ओदनः) अन्नादि.
,, ८,६.१-२६; १३३७-९२ । (मातृनाम) गर्भाधानं
,, ८,५,१-२२; १४३१-५२ (कृत्यादूषणम्) मणिधा.
,, ११,६.१-२३; १७३४-५६ पापादि.
,, १८,१,६.१३-१४ १७.३९-४९. ५१-५४. ५७-६१। २.१-६०; २००१-८४ । (पितृमेधः) ३,४४.४६: २२२७,२२२९ । १८,४,१-८९; २१५१-२२३९ यज्ञादि.
मन्याविनाशनम् ६,२५,१-३; १६८२-८४ पापादि.
मन्युशमनम् ६,४३,१-३, ६३९-४१ रोगचि.
मरुतः २,२९ ४-५; ९४-९५ । ७,३३,१; १४२ दीर्घायु.
,, ४,१३,४; ५५१ रोगचि.
,, ६,२२.२-३; ९६६--६७ । ४,१५,४-१०; १००७-१३ जलचि.
,. ४,२७.१-७; [मरुतः ४४०-४६] पापादि.
मही २,३१.१-५; ६९१-९५ क्रिमिना.
मातृन मा ४.२०,१-९; ७५४-६२ ,,
,, ८ ६.१-२६; १३६७-९२ गर्भाधानं
मित्रः १.३.२, ५७२ । ७,३०,१; ५९०; १,१८,२; ६७४ रोगचि.
मित्रावरुणौ २,२८,२; २ दीर्घायु.
,, ६,३२,३; ७३३ क्रिमिना.
मूत्रमोचनम् १,३.१ ९; ५७१-७९ रोगचि.
मृत्युः १२,२,२१-३३; २३७-४९ यक्ष्मना.
मेधा १९,४० १-४; १४११-१४ । ६,१०८,१-५; १४१९-२३ गर्भाधानं
मेधाजननम् १ १ १-४; १४१५-१८ ,,
मेधावर्धनम् ६,१०८,१-५; १४१९-२३ ,,
यक्ष्म २,१०,४-८: १६६५-६९ पापादि.

यक्ष्मनाशनम् । (१६२ ३००.२३३६)

यक्ष्मनाशनम् ३.११,१-८; ७२-७९ । २.९,१-५; ८०-८४ दीर्घायु.
यक्ष्मनाशनम् ऋ. १०,१६३,१-६; अ.३,११,१-११। ६,२०,१-३। ८५,१-३। १२७,१-३। १,१२,१-४; १६२-९१। ३,७,६-७। ६,९१,१-३;१९७-२०१। २०, ९६, ६-१०; २०५-९ । १९, ३८, १-३; २०२-४ । २०,९६,१७-२३; २१०-१६ यक्ष्मना.
,, दम्पत्योः ऋ. १०,८५,३१; २३३६ ,,
,, ५,४,१-१०; ४३७ ४६ ओषधि.
,, (वनस्पतिः) २,८,१-५; ४९३-९७ रोगचि.
यक्ष्मनाशनः अग्निः १,२५,१-४; २२५-२८ ,,
यक्ष्म विबर्हणम् २,३३,१-७; २९४-३०० यक्ष्मना.
यक्ष्मनिवारणम् ९,८,१-२२; २७२-९३ ,,
यक्ष्मरोगनाशनम् १२,२,१-५५; २१७-७१ ,,
यजमानः ऋ ८,३१,१-४; २२४०-४३। ऋ. १०, १८३,१; २२४४ यज्ञादि.
यजमानपत्नी ऋ. १०,१८३,२; २२४५ ,,

यज्ञादिकम् । (१९१८-२३२४)

यज्ञः ऋ. ८,३१,१-४; २२४०-४३। अ. ७,१७,१-८। [इन्द्रः३१२० २७]। १९,१,१-३। ५८,१-६। ५९,२; २२४६-५५ । ५९,१.३ [अग्निः१२१४,१४९४] यज्ञादि.
यमः ६,२७,१-३ २८,१-३ । २९,१-३,१५७९-८७ अरिष्ट.
ऋ. १०,१४,१-५.१३-१६; १९६८-७२, १९७६-७९ यज्ञादि.
.. यमी ऋ. १०,१०,१-१४; १९५४-६७ ,,
,, ऋ १०,१३५,१-७; १९८०-८६। १८,१,६. १३-१४. १७.३९-४९. ५१-५४. ५७-६१ । २,१-६०। ३,१,३-४९.५२.५४.५६.५८-६६. ६८-७३ । ४,१-८९; २००१-२२३९ ,,
यातुधानीः १,२८,३-४. ७३६-३७ क्रिमिना.
यातुधानक्षयणम् ६.३२,१-३; ७३१-३३ ,,
यातुधानन शनम् १,१८,१-४; ७२७-३० । १,७, १-७; ७६७-७३ ,,
यूपः १,३६,१३-१४; २२५७-५८। ऋ. ३,८,१-५; २२५९ ६३ यज्ञादि.
,, वा य ६,२-३,६। २१,४६। २८,१०; २२६९-७३ ,,
यूपाः ऋ. ३ ८,६-१०, २२६४-६८ ,,
योनिगर्भः ५,२५,१-१३; १३४६-५८ गर्भाधानं

योषितः (धमन्यः) १,१७,१-४; ५५५-५८ रोगचि.
रक्षोघ्नम् १,२८.१-४; ७३४-३७। ५,२९,१-१५; ७३८-५१। वा. य. ५,२२; ७५३ क्रिमिना.
रात्रिः ७,६९,१; ६३८ (सुखम्) रोगचि.
रामायणी ६,८३,३; ५१५ ,,
रुद्रः ५,५९,१-३; ४०७-९। ६,९०,१-३; ६२०-२२ ओषधि.
,, ६,३२,१; ७३२ क्रिमिना.
,, ६,५६,१-३; ८५०-५१ विषना.
,, ६,५७,१-३; ८६०-६२ जलचि.
,, ४,२८,१-७; १७१३-१९ पापादि.
,, १८,१,४०; २००६ यज्ञादि.
रुधिरस्रावनिवृत्तये धमनीबंधनम् १,१७,१-४;५५५-५८ रोगचि.

रोगचिकित्सा। (४८३-६९०)

रोगघ्न्यः उपनिषदः ऋ. १,५०,११-१३; ५४५-४७ ,,
रोगनाशनम् (वनस्पतिः) ६,४४,१-३; ५५९-६१ ,,
रोगनिवारणम् ४,१३,१-७; ५४८-५४ ,,
रोगोपशमनम् ५,१५,१-११। १,२,१-४; ६५३-६७ ,,
रोहणी ४,१२,१-७; ४२१-२७ ओषधि.
रोहिणी २,८,१-५; ४९३-९७। ६,८३,२; ५१४ रोगचि.
लाक्षा ५,५,१-९; ४२८-३६ ओषधि.
लिङ्गोक्ताः १९,३४,१-१०; १५५१-६०(जंगिडमणिः) मणिधारणं
,, १०,१४,७-९; १९७३-७५ यज्ञादि.
वज्र १९,६६.१; ७६६ क्रिमिना.
वनस्पतिः ६,८५,१-३। १२७,१-३; १८२-८७ यक्ष्मना.
,, ६,९६,१-३;३५४-५६। ३,१८,१-६;३६४-६९। वा. य. ५,४२-४३। २०,४५। २१,२१। २७,२१। २८,१०.३३.४३। २९,१०,३५; ३७०-७९ ओषधि.
,, २,८,१-५। ६,१३८,१-५; ४९३-५०२।६,४४, १-३; ५५९-६१। २,७,१-५; ६६८-७२। ६,१३९,१-५; ६७७-८१ रोगचि.
,, ४,७,१-७; ७९८-८०४। ६, १००, १-३, ८०५-७। ७,५६,२; ८५३ विषना.
,, ४,४,१-८; १३३२-३९ वाजीक.
,, १०,३.१-२५; १४५३-७७। ५,१४,१-१३; १५९१ १६०३ मणिधा.
वनस्पतिसूर्यगावः ऋ. १,९०,८; ४७३ ओषधि.
वनस्पतिः, अपामार्गः ४,१७,१-८। १८,१-८। १९, १-८; ३८०-४०३ ,,
,, असिक्नी १,२३,१-४; ५१७-२० रोगचि.
,, आसुरी १,२४,१-४; ५२१-२४ ,,
,, कुष्ठौषधिः ६,९५,१-३। ४१०-१२ ओषधि.
,, जंगिडः १९,३४,१-१०। ३५,१-५;१५५१-६५ मणिधा.
,, दशवृक्षः २,९,१-५; ८०-८४ दीर्घायु.
,, पृश्निपर्णी २,२५.१-५; ४१६-२० ओषधि.
,, फालमणिः १०,६,१-३५; १४७८-१५७२ मणिधा.
,, मधुला ५,१५,१-११; ६५३-६३ रोगचि.
,, रोहणी ४,१२,१-७; ४२१-२७ ओषधि.
,, वरणमणिः १०,३,१,२५; १४५३ ७७ मणिधा.
वरणमणिः १०,३.१-२५; १४५३-७७ ,,
वरुणः १,३,३; ५७३। १९,४४,८९; ६०९-१०; ऋ. २,२८,१०; ६२४। १,१८,२; ६७४ रोगचि.
,, ४,५,१२; १०१५ जलचि.
,, ७,८३,१-४; १६७६-७९। ७,११२,१-२; १७६८-६९ पापादि.
वरुणः आसुरः १,१०,१-४; १६५४-५७ ,,
वसवः १,३०,१; ५५, दीर्घायु.
वाक् १९,६०,१-२; १५७-५८ (अरिष्टानि अंगानि) ,,
,, १६,२,१-६; १८१६-२१ पापादि.
वाचस्पतिः १,१,१-४; १४१५-१८ (मेधाजननम्) गर्भाधानं

वाजीकरणम्। (१३३२-१३४५)

वाजीकरणम् ४,४,१-८। ६,७२,१-३। १०१,१-३; १३३२-४५ वाजीक.
वातः ४,१३,२-३; ५४९-५०। ७,६९,१; ६३८ रोगचि.
,, ४,१५,१६; १०१९ जलचि.
,, २,१०,३; १६६४ पापादि.
वातपत्नीः २,१०,४-८; १६६५-६९ ,,
वातसिन्ध्वोषधयः ऋ. १,९०-६; ३६२ ओषधि.
वायुः ६,१४२,१-३; ११२४-२६ अन्नादि.
,, ४,२५,१-७; १६९९-१७०५ पापादि.
वासः (सस्) ७,३७,१; १२६९। वा. य. ४,२,१०; १२७०-७१ अन्नादि.
वास्तोष्पतिः १,३१,१-४; १६५८-६१ पापादि.
,, ५,२६,२-४.६-९.११; १९३८-४५ यज्ञादि.

विनायकः १,१८,१; ६७३ रोगचि.
विवस्वान् ६,११६,१-३; १२६६-६८ अन्नादि.
विश्वामित्रः ऋ. ३,३३,४.८.१०; १०२५,१०२९, १०३१ जलचि.
विश्वे देवाः १,३०,१-४। ३५,१-४; ५५-६२। ६,४७, २; ८९। २,३९,४-५; ९४-९५। २,१३, ४-५; २३३४-३५ दीर्घायु.
,, ऋ. १,९०,६; ३६२। ऋ. ३,५७,३; ३६३। ऋ. १,९०,८; ४७३ ओषधि.
,, ४,१३,१-७; ५४८-५४ रोगचि.
,, ६,५६,१। ८४९ विषना.
,, १९,४०,१-४; १४११-१४ गर्भाधानं
,, ६,१५,१-३; १७२७-२९। ११४,१-३; १७९४-९६। पापादि.
,, ऋ.३,८,८; २२६६। अ. ७,९८,१; २२७४ यज्ञादि.

विषनाशनम्। (७७४-८५९)

विषम् ४,६,४-८; ७९३-९७ विषना.
विषघ्नम् ४,६,१-८; ७९०-९७ ,,
विषघ्नोपनिषद् ऋ.१,९१,१-१६; ७७४-८९ ,,
विषदूषणम् ६,१००,१-३; ८०५-७ ,,
विषनाशनम् ४,७,१-७; ७९८-८०४ ,,
विषभैज्यम् ७,५६,१-८; ८५२-५९ ,,
विष्णुः ५,२६,७; १९४२ यज्ञादि.
वीरुधः ४,१५,२-३; १००५-६ जलचि.
वृश्चिकादयः ७,५६,१-८; ८५२-५९ विषना.
वृषभः ४,५,१-७; ६१३-१९ रोगचि.
,, ७,३९,१; ९२७ जलचि.
,, ७,११,१; १३३६ गर्भाधानं
वृषरोगशमनम् ६,१६,१-११; ६४२-५२ रोगचि.
वृष्टिः ४,१५,१-१६; १००४-१९। ७, १८, १-२; १०२०-२१ जलचि.
वृष्टिकामः (द्रष्टा) ऋ. ७,१०१,१-६। १०२,१-३; ९८५-९३ ,,
वेदी ७,९९,१; २२५६ यज्ञादि.
वेधाः १,११,१-६; १४०५-१० गर्भाधानं
वैश्वानरः (अग्निः) ६,७१,३; ११२१ अन्नादि.
,, ६,११९,१-३; १६७३-७५ पापादि.
शक्रः ३,३१,२; १६९ यक्ष्मना.
शंखमणिः ४,१०,१-७; १४२४-३० मणिधा.
शतवारः मणिः १९,३६,१-६; १५६६-७१ ,,
शमी ६,३०,१-३; ४७०-७२ ओषधि.
शापनाशनम् ६,३७,१-३; १७७३-७५ पापादि.
शापमोचनम् २,७,१-५; ६६८-७२ रोगचि.
,, ७,५९,१; १७७६ पापादि.
शालाग्निदैवत्यम् २,१४,१-६; १६४८-५३ कृत्यादू.
शेपः ६,७२,१-३; १३४०-४२ वाजीक.
श्वेतकुष्ठनाशनम् १,२३,१-४; ५१७-२० रोगचि.
सपत्नक्षयकामः (द्रष्टा) १९,२८,१-१०; १५१३-२२ मणिधा.
सपत्नक्षयणः १०,३,१-२५; १४५३-७७ ,,
सपत्नघ्नम् ऋ०१०,१६६,१-५; २३४१-४५ ओषधि.
सपत्नीजयः ३,१८,१-६; ३६४-६९ ,,
सपत्नीबाधनम् ऋ० १०,१४५,४.६; २३३९-४० ,,
सप्तसिन्धवः ४,६,२; ७९१ विषना.
सरण्यूः ऋ०१०,१७,१-२; १०८१-८२ जलचि.
सरस्वान् ऋ०७,९५,३। ९६,४-६। अ. ७,४०,१-२; १०४५-५० ,,
सरस्वती ६,४१,२; ६४ दीर्घायु.
,, ऋ०१,३,१०-१२। १६४,४९। २,३०,८ पूर्वार्धः। ४१,१६-१८। ६,६१,१-१४। ७,९५,१-२, ४-६। ९६,१-३। १०५१-८०। १०,१७,७-९; १०८३-८५। अ०७,१०,१। ११,१। ५७,१-२। ६८,१-३; १०८६-९२ जलचि.
,, ४,४,६; १३३७ वाजीक.
,, ५,७,४-५; १७८०-८१ पापादि.
,, १८,१,४१-४३; २००७-९ यज्ञादि.
सर्पविषदूरीकरणम् १०,४,१-२६। ५, १३, १-११; ८०८-४४ विषना.
सर्पविषनाशनम् ७,८८,१; ८४५ ,,
सर्पविषनिवारणम् ६,१२,१-३; ८४६-४८ ,,
सर्पेभ्यो रक्षणम् ६,५६,१-३; ८४९-५१ ,,
सर्वमायुः १९,६१,१; १५५। ७०,१; १५६ दीर्घायु.
सर्वशीर्षमयाद्यपाकरणम् ९,८,१-२२; १७२-९३ यक्ष्मना.

सविता १,२९,२; ९१	दीर्घायु.
,, ७,३०,१; ५९० । १,१८,२-३; ६७४-७५	रोगचि.
,, ४,२५,१-७; १६९९-१७०५	पापादि.
,, ५,२६,१; १९३८	यज्ञादि
सान्तपन अग्निः ६,७६,१-४; १५०-५३	दीर्घायु.
सुखम् ७,६९,१; ६३८	रोगचि.
सुधन्वा ६,४७,३; ९०	दीर्घायु.
सुपर्णः ४,६,३; ७९२	विषना.
,, ७,३९,१; ९२७	जलचि.
सूर्यः १,२९,१; ९१ । १९,६७,१-८; ११९-२६	दीर्घायु.
,, ३,३१,७; १७४	यक्ष्मना.
,, ऋ० १,९०,८; ४७३	ओषधि.
,, १,२२,१-४; ४८९-९२ । ६,८३,१; ५१३ । ऋ०१,५०,११-१३; ५४५-४७ । ६,५१,१; ५६२ । १,३,७; ५७५ । ७,६९,१; ६३८	रोगचि.
,, १९,६६,१; ७६६	क्रिमिना,
,, ऋ०१,१९१,१-१६; ७७४-८९ (अप्तृणसूर्याः)	विषना.
,, ४,४,१-२; १३३२-३३	वार्जाक.
,, १,१०,४-८; १६६५-६९ । १६,९,३-४; १९०४-५	पापादि.
सूर्यमरीचयः ऋ० ३,५७,३; ३८३	ओषधि.
सोमः ६,९६,३; ३५४ । ऋ०१०,८५,१-४;४७४-७६	,,
,, ६,७,१-३; ७६३-६५	क्रिमिना.
,, ऋ० १०,१७,११-१३; ८४९-५१	जलचि.
,, ४,४,५; १३३६	वार्जाक.
,, २,१०,२; १६६३ । १६,९,२; १९०३	पापादि.
सोमः पवमानः ऋ० ९,७४,५; १४०४	गर्भाधानं
सोमवनस्पतिः ऋ० १,९१,६; ४७७	ओषधि.
सोमारुद्रौ ७,४२,१-२; १७३०-३१	पापादि.
सौभाग्यवर्धनम् ६,१३९, १-५; ६७७-८१	रोगचि.
स्तनयित्नुः ४,१५,११; १०१४	जलचि.
स्वर्गः स्वर्गोदनः १२,३,१-६०; १२७२-१३३१	अन्नादि.
स्वस्त्ययनकामः (द्रष्टा) ६,३७,१-३; १७७३-७५	पापादि.
स्वापनम् ४,५,१-७; ६१३-१९	रोगचि.
हरिणः ३,७,१-३; १९२-९४	यक्ष्मना.
हरिमा १,२२,१-४; ४८९-९२	रोगचि.
हविः ७,९८,१; २२७४	यज्ञादि.
हविर्धाने ऋ० १०,१३,१-५; २२७५-७९	,,
हरतः ४,१३,६-७; ५५३-५४	रोगचि.
हिरण्यम् १,३५,१-४; ५९-६२	दीर्घायु.
हृद्रोगः (कामिलानाशनम्) १,२२,१-४; ४८९-९२	रोगचि.

अभावकरणार्थं निर्दिष्टाः विषयाः ।

निस् + कस् ।
- इषु निष्कासनम् ।

अपा + दूरी + कृ ।
- सर्वशीर्षामयादि अपाकरणम् ।
- सर्पविषदूरीकरणम् ।

क्षि ।
- अरिष्ट— क्षयणम् ।
- असुर— ,,
- पिशाच— ,,
- यातुधान— ,,
- सपत्न— ,,

जम्भ् ।
- क्रिमिजम्भनम् ।

दुष् ।
- कृत्यादूषणम् ।
- विषदूषणम् ।

वि + नश् ।
- अरातिनाशनम् ।
- अरि— ,,
- अलक्ष्मी—,,
- एनः— नाशनम् ।
- कामिला— ,,
- कृमि— ,,
- क्षेत्रियरोग—,,
- ज्वर— ,,
- तक्मन— ,,
- दस्यु— ,,
- दुरित— ,,
- दुःख— ,,
- दुष्वप्न— ,,

पाप— नाशनम्
पापलक्षण—,,
पाप्म— ,,
बलास— ,,
यक्ष्म— ,,
यक्ष्मरोग—,,
रोग— ,,
विष— ,,
श्वेतकुष्ठ —,,
सर्पविष ,,
ईर्ष्याविनाशनम् ।
मन्या — ,,

अप+ नि ।

ईर्ष्या— अपनयनम् ।

वि + बर्ह् ।

यक्ष्मविबर्हणम् ।

बाध् ।

सपत्नीबाधनम् ।

उत्+वि+ मुच् ।

उन्मत्तता-मोचनम् ।
दुःख— ,,
निर्ऋति— ,,
पाप— ,,
पाश— ,,
बन्ध— ,,
मूत्र-- मोचनम् ।
शाप-- ,,
उत् – ,,
पाश – विमोचनम् ।

नि + बृ ।

गर्भदोष-निवारणम् ।
यक्ष्म-- ,,
रोग-- ,,
सर्पविष-- ,,

उप+ शम् ।

कास-शमनम् ।
पाप-- ,,
मन्यु-- ,,
वृषरोग--,,
शाप-- ,,
रोग-उपशमनम् ।

हन् ।

अलक्ष्मी-घ्नम् ।
क्रिमि-- ,,
रक्षो-- ,,
रोग-- ,,
विष-- ,,
पाप्म-- हा

परि + हृ ।

कृत्यापरिहरणम् ।

भावकरणार्थं निर्दिष्टाः विषयाः ।

दीर्घायुःप्राप्तिः ।
मेधा- जननम् ।
सपत्नी- जयः ।
केश- दृंहणम् ।
गर्भ- दृंहणम् ।
धमनी- बन्धनम् ।
सर्पेभ्यः- रक्षणम् ।
आयुर्- वर्धनम् ।
केश- वर्धनम् ।
मेधा- वर्धनम् ।
सौभाग्य- वर्धनम् ।

द्रष्टुः कामः ।

आयुष्कामः ।
परस्परैकचित्तीकरणकामः ।
पुष्टि- कामः ।
वृष्टि- कामः ।
सपत्नक्षय- कामः ।
स्वस्त्ययन- कामः ।

यक्ष्मनाशनम्।

(१) गुणबोधक-पदसहिता मन्त्रोक्त-देवताः।

अग्निः अ. ३,३१,१,६; १६८,१७३। २०,९६,९; २०८। १२,२,३-५, १७-१८,५०,५२; २१९-२१, २३३-३४, २६६,२६८। १२,२,१-५५; २१७-७१

अग्निः क्रव्यात् १२,२,७-१०,१५-१६,३५-३८; २२३-२६, २३१-२३२,२५१-५४

,, गार्हपत्यः १२,२,३४,४४-४६; २५०,२६०-६२

,, वैश्वानरः ६,८५,३; १८४

,, संकुसुकः १२,२,११-१४,१९,४०; २२७-३०, २३५, २५६

अघ्न्या ६,९१,२; २००

अनड्वान् १२,२,४८; २६४

अश्मन्वती १२,२,२६-२७; २४२-४३

आदित्यः १२,२,६; २२२। ९,८,२१-२२; २९२-९३

आदित्याः ९,८,२२; २९३

आपः ३,३१,३; १७०। ३,७,१; १९६। ६,९१,३; २०१। १२,२,४०-४१; २५६-५७

आयुः ३,३१,८-१०; १७५-७७

आयुष्यम् २,३३,१-७; २९४-३००

इन्द्रः ६,८५,२; १८३। २०,९६,९; २०८। १२,२,४७, ५४; २६३,२७०

इन्द्राग्नी २०,९६,६; २०५

ऋषयः १२,२,२९-३०; २४५-४६

ओषधयः ६,२०,२; १८०

गुल्गुलुः अ. १९,३८,१-३, २०२-४

ग्राम्याः पशवः ३,३१,३; १७०

चन्द्रः ३,३१,६; १७३

चन्द्रमाः २,३३,१-७, २९४-३००

तक्मा ६,२०,१-३; १७९-८१

तारके ३,७,४; १९५। विचृतौ सुभगे।

त्वष्टा ३,३१,५; १७३। १२,२,२४; २४०

देवाः ३,३१,१,७; १६८,१७४। ६,८५,१-२; १८२-८३। ऋ. १०,८५,३१; २३३६ यज्ञियाः।

द्यौः ६,२०,२; १८०

द्यावापृथिवी ३,३१,४; १७१

धाता १२,२,२५; २४१

पन्थानः ३,३१,४; १७१

पर्जन्यः पर्जन्यस्य वृष्टिः ३,३१,११; १७८

पवमानः ३,३१,२; १६९

पशवः ग्राम्याः ३,३१,३; १७०

पाप्महा ३,३१,१-११; १६८-७८

पृथिवी ६,२०,२; १८०

बृहस्पतिः २०,९६,९; २०८

ब्रह्मा १२,२,६; २२२। वसुर्नीतिः।

ब्रह्मणस्पतिः १२,२,६; २२२

मन्त्रोक्ताः १२,२,१-५५; २१७-७१

मित्रः अ. ६,८५,२; १८३

मृत्युः १२,२,२१-३३; २३७-४९

यक्ष्मनाशनम् ऋ. १०,१६३,१-६; १६२-६७। अ. ३,३१, १-११; १६८-७८। ६,२०,१-३; १७९-८१। ८५,१-३; १८२-१८४। १२७,१-३; १८५-८७। १,१२,१-४; १८८-१९१। ३,७,६-७; १९७-९८। ६,९१,१-३; १९९-२०१। १९,३८,१-३; २०२-४। २०,९६,६-१०; २०५-९। ९६,१७-२३; २१०-१६। ऋ. १०,८५,३१, २३३६

यक्ष्मनिवारणम् अ. ९,८,१-२२; १७२-९३

यक्ष्मरोग नाशनम् अ. १२,२,१-५५; २१८-७१

यक्ष्म विबर्हणम् अ. २,३३,१-७; २९४-३००

रुद्रः ६,२०,२; १८०

रुद्राः १२,२,६; २२२

वनस्पतिः ६,८५,१; १८२। १२७,१-३; १८५-८७

वरुणः ६,२०,२; १८० । ६,८५,२; १८३
वसवः १२,२,६; २२२
वातः ६ ९१,२; २००
विचृतौ तारके ३,७,४; १९५ । सुभगे ।
विश्वे देवाः ६,८५,२; १८३ । १२,२,२८; २४४
शक्रः अ. ३,३१,२; १६९
सर्वशीर्षामयाद्यपाकरणम् ९,८,१-२१; २७२-९३
सविता २०,९६,९; २०८
सुपत्नी १२,२,३१; २४७ । अनमीवाः अनश्रवः अविधवाः नारीः सुरत्नाः ।
सूर्यः ३, ३१, ७; १७४ (विश्वतोवीर्यः)। १, १२, १-४; १८८-९१ । ६,९१,२; २०० । अग्निवायुसूर्यात्मा ।
हरिणः ३,७,१; १९२ रघुष्यद् । ३,७,१-३; १९३-९४

(२) यक्ष्मस्य शरीरगतस्थानानि ।

अंसौ ऋ. १०,१६३,१; १६३ । अ. २०,९६,१८; २११ । २,३३,२; २९५
अक्षिणी ऋ. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७; २१० । २,३३,१; २९४
अंगम् ऋ. १०,१६३,६; १६७। अ. २०,९६,२३; २१६। २,३३,७; ३००
अंगानि अ. ९,८,९,१९; २८०,२९०
अङ्गुलयः अ. २०,९६,२२; २१५ । २,३३,६; २९९
अनूक्यम् ऋ. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८; २११ । २,३३,२; २९५
अन्तरात्मा अ. ९,८,९; २८०
अष्ठीवन्तौ ऋ. १०,१६३,४; १६५ । अ. २०,९६,२१; २१४ । २,३३,५; २९८
अस्थीनि ऋ. १०,१६३,४; १६५ । अ. २०,९६,२१; २१५ । २,३३,६; २९९
आत्मा ऋ. १०,१६३,५; १६६ । अ. २०,९६,२२; २१५ । २,३३,६; २९९
आन्त्राणि ऋ. १०,१६३,३; १६४ । अ. २०,९६,१९; २१२ । २,३३,३; २९६
आस् (आसः पद्म) अ. ९,८,१०; २८१
आस्यम् अ. ९,८,३; २७४
उदरम् अ० ९,८,९,११-१२; २८०,२८२-२८३ । २०, ९६,२०; २१३ । २,३३,४; २९७
उष्णिहाः ऋ. १०,१६३,२; १६३। अ. २०,९६,१८; २११। २,३३,२; २९५
ऊरू ऋ. १०,१६३,४; १६५ । अ. २०,९६,२१; २१४। २,३३,५; २९८ । अ. ९,८,७; २७८
कक्षम् अ. ६,१२७,२; १८६
कङ्कषाः अ. ९,८,२; २७३
कर्णौ ऋ. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७; २१०। २,३३,१; २९४ । अ. ९,८,२-३; २७३-७४
कीकसाः ऋ. १०,१६३,२, १६३ । अ. २०,९६,१८; २११ । २,३३,२; २९५
कुक्षी ऋ. १०,१६३,२; १६३। अ. २०,९६,२०; २१३ । २,३३,४; २९७
क्लोमन् अ. ९,८,१२; २८३
गवीनिके अ. ९,८,७; २७८
गुदाः ऋ. १०,१६३,३; १६४ । अ. २०,९६,१९; २१२। २,३३,३; २९६ । अ. ९,८,१७; २८८
ग्रीवाः ऋ. १०,१६३,२; १६३। अ. २०,९६,१८; २११। २,३३,२; २९५
छुबुकम् ऋ. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७; २१० । २,३३,१; २९४
जानू अ. ९,८,११; २९२
जिह्वा ऋ. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७; २१०। २,३३,१; २९४
त्वक् (त्वचस्यम्)..... अ. २०,९६,२३; २१६। २,३३, ७; ३००
दोस् (दोषण्यम्) ऋ. १०,१६३,२; १६३। अ. २०,९६,२३; २१६। २,३३,७; ३००

धमन्यः ऋ. १०,१६३,१; १६१। अ. २०,९६,२२; २१५। २,३३,६; २९९
नखानि ऋ. १०,१६३,५; १६६। २०,९६,२२; २१५। २,३३,६; २९९
नाभिः अ. ९,८,१२; २८३। २०,९६,२०; २१३। २,३३,४; २९७
नासिका ऋ. १०,१६३,१; १६२। अ. २०,९६,१७; २१०। २,३३,१; २९४
पक्रुस्-रूंषि अ. ९,१८,१८; २८९
पर्वन्-र्व ऋ. १०,१६३,६; १६७। अ. २०,९६,२३; २१६। २,३३,७; ३००
पाणी ऋ. १०,१६३,६; १६७। अ. २०,९६,२२; २१५। २,३३,६; २९९
पादौ अ. ९,१८,२१; २९२
पार्श्वे अ. ९,८,१५; २८६। अ. २०,९६,१९; २१२। २,३३,३; २९६
पार्ष्णी ऋ. १०,१६३,४; १६५। अ. २०,९६,२१; २१४। २,३३,५; २९८
पृष्ट्यः अ. ९,८,१५; २८६
प्रपदे ऋ. १०,१६३,४; १६५। अ. २०,९६,२१; २१४। २,३३,५; २९८
प्लाशयः ऋ. १०,१६३,३; १६४। अ. २०,९६,२०; २१३। २,३३,४; २९७
प्लीहा ऋ. १०.१६३,३; १६४। अ. २०,९६,१९; २१२। २,३३,३; २९६
बाहू ऋ. १०,१६३,२; १६३। अ. २०,९६,१८; २११। २,३३,२; २९५
भंसस् ऋ. १०,१६३,४; १६५। अ. २०,९६,२१; २१४। २,३३,५; २९८। अ. ९,८,२१; २९२
भासदः ऋ. १०,१६३,४; १६५। अ. २०,९६,२१; २१४। २,३३,५; २९८
मज्ज्ञा अ. ९,८,१८, २८९। अ. २०,९६,२२; २१५। २,३३,६; २९९
मतस्नौ ऋ. १०,१६३,३; १६४। अ.२०,९६,१९; २१२। २,३३,३; २९६
मस्तिष्कम् ऋ. १०,१६३,१; १६२। अ. २०,९६,१७; २१०। २,३३,१; २९४
मुष्कौ अ. ६,१२७,२; १८६
मूर्धा अ. ९,८,१३; २८७
मेहनम् ऋ. १०,१६३,५; १६६
यकृत्-यकन् ऋ. १०,१६३,३; १६४। अ. २०,९६,१९; २१२। अ. २,३३,३; २९६
लोम-मानि ऋ. १०,१६३,५-६; १६६-१६७। अ. २०,९६,२३; २१६। २,३३,७; ३००
वक्षणाः अ. ९,८,१६, २८७
वनंकरणम् ऋ. १०,१६३,५; १६६
वनिष्ठुः ऋ. १०,१६३,३; १६४। अ. २०,९६,२०; २१३। २,३३,४; २९७
शीर्षन् अ. ९,८,१-५,२२; २७२-७६,२९३
शीर्षन् (शीर्षण्यम्) ऋ. १०,१६३,१; १६२। अ. २०,९६,१७; २१०। २,३३,१; २९४
श्रोणी ऋ. १०,१६३,४; १६५। अ. २०,९६,२१; २१४। २,३३,५; २९८। अ. ९,८,२१; २९२
सीमन्-मा अ. ९,८,१३; २८४
स्नावन्-वा ऋ. १०,१६३,४; १६५। अ. २०,९६,२२; २१५। २,३३,६; २९९
हलीक्ष्णम् ऋ. १०,१६३,४; १६५। अ. २०,९६,१९; २१२। २,३३,३; २९६
हृदयम् ऋ. १०,१६३,३; १६४। अ. २०,९६,१९; २१२। २,३३,३; २९६। अ. ९,८,८,१२,१४,२२; २७९,२८३; २८५,२९३

(३) गुणबोधकपदसहिताः यक्ष्मभेदाः।

अक्ष्योः विसल्पकः अ. ६,१२७,३; १८७
अघशंसः १२,१,२; २१८
अंगज्वरः ९,८,५; २७६
अंगभेदः ९,८,५; २७६। ९,८,२२; २९३
अंग्यः विसल्पकः ६,१२७,३; १८७
अज्ञातः यक्ष्मः ६,१२७,३; १८७

अज्ञातयक्ष्मः २०,९६,६; २०५
अधराञ्च् ६,१२७,३; १८७
अन्धः पुरुषः (अन्धत्वम्) ९,८,४; २७५
आवा ९,८,९; २८०
अभिशोचयिष्णुः ६,२०,३; १८१
अभ्रजाः १,१२,३; १९०
अरातिः ३,३१,१; १६८। १२,२,३; २१९
अरुणः ६,२०,३; १८१
अर्षणीः ९,८,१३,१६,२१; २८४,२८७,२९२
अलजिः ९,८,२०; २८१
आर्तिः ३,३१,२; १६९
आसो बलासः ९,८,१०; २८१
कर्ण्यः विसल्पकः ६,१२७,३; १८७
कर्णशूलः ९,८,१-२; २७२-७३
कासः १,१२,३; १९०
काहाबाहः ९,८,११; २८२
कीकसाः ९,८,१४; २८५
क्षेत्रियः ३,७,१-७; १९२-९८
गुप्तिः हृदि ३,७,२; १९३
गोषु यक्ष्मः १२,२,१। २१७
ग्राहिः २०,९६,६; २०५
जातः पर्वणि पर्वणि ऋ. १०,१६३,६; १६७
तक्मा ६,२०,१-३; १७९-८१। ९,८,६; २७७
तपुर्वधः ६,२०,१, १७९
तिल्पिजः १२,२,५४; २७०
त्वचस्यः २०,९६,२३; २१६
दण्डनम् १२,२,५४; २७०
दुःशंसः १२,२,२; २१८
दुर्भूतं सर्वम् ३,७,७; १९८
दोषण्यः यक्ष्मः ऋ. १०,१६३,२; १६३
निर्ऋतिः २०,९६,७; २०६। १२,२,३; २१९
पापकृत्या ३,३१,२; १६९
पाप्मा सर्वः ३,३१,१-११; १६८-७८
पुरुषेषु यक्ष्मः १२,२,१; २१७
प्रमोतः पुरुषः (प्रमोतत्वम्) ९,८,४; २७५
बभ्रुः (तक्मा) ६,१०,३; १८१
बलासः ६,१२७,२; १८६। ९,८,८,१०; २७९,२८१
मूत्रं आमयत् ९,८,१०; २८१
मृत्युः १२,२,३; २१९
यक्ष्मः (बहुशः प्रतिसूक्तम्)।
रपः ६,९१,१-२; १९९-२००
राजयक्ष्मः २०,९६,६; २०५
रोपणाः ९,८,१९; २९०
लोहितः ६,१२७,२; १८६
वन्यः ६,२०,३; १८१
वातजाः १,१२,३; १९०
वातीकारः ९,८,२०; २९१
विद्रधः ६,१२७,१,३; १८५,१८७। ९,८,२०; २९१
विलोहितः ९,८,१; २७२
विश्वशारदः ९,८,६; २७७
विश्वाङ्ग्यः ९,८,५; २७६
विषूचीनः ३,७,१; १९२
विष्वङ् २०,९६,२३; २१६
विसल्पः ९,८,२०; २९१
विसल्पकः ६,१२७,३; १८७। ९,८,२,५; २७३,२७६
शपथः १९,३८,१; २०२
शरुः १२,२,४७; २६३
शीर्ष्णः रोगः ९,८,२२; २९३
शीर्षण्यः यक्ष्मः ऋ. १०,१६३,१; १६२। अ. २०,९६, १७; २१०
शीर्षण्यः रोगः ९,८,१-५; २७२-७६
शीर्षक्तिः १, १२, ३; १९०। १२,२,१९-२०; २३५-३६। ९,८,१, २७२
शीर्षामयः ९,८,१; २७२
शुष्मः १,१२,३; १९०
शुष्मी ६,२०,१; १७९
सीसम् १२,२,२०; २३६
हरिमा ९,८,९; २८०
हृदयामयः ६,१२७,३; १८७

(४) दीर्घायुत्वपर्यायाः।

आयुः ३,३१,१-११; १६८-७८। १२,२,२५; २४१
,, दीर्घम् १२,२,६,३२,५५; २२२,२४८,२७१
,, द्राघीयः १२,२,३०; २४६
,, सर्वम् २०,९६,१०; २०९। १२,२,२४; २४०
,, शतम् २०,९६,८-९; २०७-८
,, जरसम् १२,२,२४; २४०
शतं वसन्ताः २०,९६,९; २०८
,, शरदः २०,९६,९; २०८
,, हेमन्ताः २०,९६,९; २०८
,, हिमाः १२,२,८; २४४
शतशारदम् २०,९६,७; २०६

(५) भैषज्यम्।

(१) ओषधयः।

गुल्गुलुः १९,३८,१-३; २०२-४
गुल्गुलु, सैन्धवम् १९,३८,२; २०३
,, समुद्रियम् १९,३८,२; २०३
गुल्गुलोः सुरभिः गन्धः १९,३८,१; २०२
चीपु- द्रुः ६,१२७,२; १८६
यवः ६,९१,१८; १९९
वरणः (वनस्पतिः देवः) ६,८५,१; १८२
वनस्पतिः ६,१२७,१; १८५

(२) अन्ये पदार्थाः।

आपः ३,७,५; १९६। ६,९१,३; २०१
हरिणस्य शीर्षणि भेषजम् ३,७,१; १९२
हरिण- विषाणम् ३,७,१-२; १९-२०३

ओषधिवनस्पतयः।

ओषधिदेवता-गुणबोधक पदानि।

पदानि।	स्थानम्।	विशेषनाम।	पदानि।	स्थानम्।	विशेषनाम।
अंशुमत्यः	अ० ८,७,४; ३२७	ओषधयः	अपक्रीताः	८,७,११; ३३४	ओषधयः
अग्नेः घासः	अ. ८,७,८ ३३१	,,	अपां स्वसा	५,५,७; ४३४	लाक्षा
अग्रं आपः	अ० ८,७,३; ३२६	,,	अपां गर्भः	८,७,८; ३३१	ओषधयः
अग्रं ओषधीनाम्	एषि ४,१९,३; ३९८	अपामार्गः	अपामार्गः	४,१७,१-८। १८,१-८। १९,१-८। ७,६५,१-३; ३८०-४०६	विशेषनाम
अग्रं मधुमत्	८,७,१२; ३३५	ओषधयः	अपुष्पाः	ऋ० १०,९७,१५; ३१५	ओषधयः
अजबभ्रु पिता	५,५,८; ४३५	लाक्षा	अफलाः	ऋ० १०,९७,१५; ३१५।८,७,१७; ३५०	,,
अतिविद्धभेषजी	६,१०९,१; ४१३	पिप्पली	अबन्धुकृत्	४,१९,१; ३९६	अपामार्गः
अनड्वान् जगताम्	१९,३९,४; ४५०	कुष्ठः	अभिदीपयन्	४,१९,३; ३९८	,,
अनाधृषः	६,२१,३; ४५९	रेवतीः	अभिष्टुताः	८,७,११; ३३४	ओषधयः
अनावयुः	६,१६,१; ४६६	विशेषनाम	अमृतस्य भक्षः	८,७,१२; ३३५	,,
अन्नं घृतं आसाम्	८,७,१२; ३३५	ओषधयः			

अयक्ष्मान् पुरुषान् करत् ६,५९,२; ४०८	अरुन्धती
अरुन्धती ८,७,६; ३२९ । ६,५९,१-३	ओषधिविशेषः
,, ६,५९,१-३; ४०७ ९	,,
,, ४,१२,१; ४२१	रोहणी
,, ५,५,५; ४३२	लाक्षा
अर्यमा पितामहः ५,५,१; ४२८	,,
अलसाला (पूर्वा) ६,१६,४; ४६९	विशेषनाम
अवकोल्बाः ८,७,९; ३३२	ओषधयः
अवपतन्तीः दिवः ऋ. १०,९७,१५; ३१५	,,
अश्वत्थः ५,५,५; ४३२। ५,४,३; ४३९। १९,३९,६; ४५१	विशेषनाम
अश्वत्थः, दर्भः ८,७,२०; ३४३	ओषधयः
अश्वत्थे निषूदनम् ऋ. १०,९७,५; ३०५ । वा० य० १२,७९; ३५,४; ३५८	,,
अश्वावती ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम
असिक्नी ८,७,१; ३२४	ओषधयः
आंगिरसीः ८,७,१७,२४; ३४०,३४७	,,
आत्मा वातः ५,५,७; ४३४	लाक्षा
आपः अग्रम् ८,७,३; ३२६	ओषधयः
आबयुः ६,१६,१; ४६६	वि. नाम
आभृताः ८,७,८,२५; ३३१,३४८	ओषधयः
इक्ष्वाकुः १९,३९,९; ४५५	,,
इष्कृतिः माता ऋ. १०,९७,९; ३०९	,,
उक्थिन्-क्थी वा० य० २८,३३; ३७६	वनस्पतिः
उक्षिता अश्वस्य अस्ना ५,५,८; ४३५	लाक्षा
उग्राः ८,७,४,१०; ३२७,३३३	ओषधयः
उग्रा १,२५,१; ४१६	पृश्निपर्णी
उत्तमः ५,४,९; ४४५	कुष्ठः
उत्तमः नाम ते पिता ५,४,९; ४४५	,,
उत्तमः ओषधीनाम् १९,३९,४; ४५०	,,
उत्तरा ३,१,४; ३६७	वि. नाम
उत्तानपर्णा ३,१,२; ३६५	वि. नाम
उदकात्मानः ८,७,९; ३३२	ओषधयः
उदोजस्-जाः ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम
उन्नयन्ती ८,७,६; ३२९	अरुन्धती
उन्मुञ्चन्तीः ८,७,१०; ३३३	ओषधयः
ऊर्जयन्ती ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम
ऋतावरी ६,३०,३; ४७२	शमी
एकशुङ्गाः ८,७,४; ३२७	ओषधयः
ओषधिः ओषधयः (बहुलं दृश्यते)।	सामान्यनाम
ओषधीनां गर्भः ६,९५,३; ४१२	कुष्ठः, अश्वत्थो वा
कण्वजम्भनी २,२५,१; ४१६	पृश्निपर्णी
काण्डिनीः ८,७,४; ३२७	ओषधयः
कानीनः ५,५,५; ४३५	लाक्षा
कुष्ठः ६,९५,१-३; ४१०-१२ । ५,४,१-१०। १९, ३९,१-१०; ४३७-४५६	वि. नाम
कृत्यादूषणीः ८,७,१०; ३३३	ओषधयः
कृष्णाः ८,७,१; ३२४	,,
केशदंहणीः ६,२१,३; ४५९	रेवतीः
केशवर्धनीः ६,२१,३; ४५९	,,
केशवर्धनी ६,१३७,१; ४६३	वनस्पतिः
क्षिप्तभेषजी ६,१०९,१; ४१३	पिप्पली
क्षिप्तस्य भेषजी ६,१०९,३; ४१५	,,
खदिरः ५,५,५; ४३२	ओषधिविशेषः
गर्भः अपाम् ८,७,८; ३३१	ओषधयः
,, ओषधीनाम् ६,९५,३; ४१२	अश्वत्थः कुष्ठो वा
,, विश्वस्य भूतस्य ,, ,,	,, ,,
,, हिमवताम् ,, ,,	,, ,,
गोभाजः ऋ. १०,९७,५; ३०५। वा०य० १२,७९; ३५,४; ३५८	ओषधयः
गोष्ठं पयस्वन्तं करत् ६,५९,२; ४०८	अरुन्धती
घासः अग्नेः ८,७,८; ३३१	ओषधयः
जनानां न्यञ्चनी ५,५,२; ४२९	लाक्षा
जयन्ती ५,५,३; ४३०	,,
जातः त्रिः आदित्येभ्यः परि १९,३९,५; ४५१	कुष्ठः
,, ,, विश्वेभ्यो देवेभ्यः १९,३९,५; ४५१	,,
,, ,, शाम्बुभ्यो अंगिरोभ्यः १९,३९,५; ४५१	,,
,, देवेभ्यः अधि ५,४,७; ४४३	,,
,, सुपर्णसुवने गिरौ ५,४,२; ४३८	,,
,, हिमवतः उदङ् ५,४,८; ४४४	,,
जामयः ऋ. ३,५७,३; ३६३	ओषधयः
जामिकृत् ४,१९,१; ३९६	अपामार्गः

जीवन्ती ८,७,६; ३२९	विशेषनाम
जीवन्तो नाम पिता १९,३९,३; ४४९	कुष्ठः
जीधला ८,७,६; ३२९	वि. नाम
जीवला नाम ते माता १९,३९,३; ४४९	कुष्ठः
जीवला ६,५९,३; ४०९	अरुन्धती
जोष्टा धियः वा. य. २८,१०; ३७५	वनस्पतिः (यूपः)
तक्मनाशनः ५,४,१-२; ४३७-४३८	कुष्ठः
तीक्ष्णशृंग्यः ८,७,९; ३३१	ओषधयः
त्विषीमती ४,१९,२; ३९७	अपामार्गः
त्राता पाकस्य ४,१९,३; ३९८	,,
त्रायमाणः १९,३९,१; ४४७	कुष्ठः
दर्भः अश्वत्थः वीरुधाम् ८,७,१०; ३४३	अश्वत्थः
दिव्याः ८,७,३,२४; ३२६,३४७	ओषधयः
देवः १९,३९,१; ४४७	कुष्ठः
देवः वा. य. ५,४२-४३; ३७०-३७१। २०,४५; ३७२। २८,४३; ३७७। २९,३५; ३७९	वनस्पतिः (यूपः)
देवीः ऋ. १०,९७,४; ३०४	ओषधयः
देवी ६,१३६,१; ४६०	नितत्नी
देवजूता ३,१८,२; ३६५	उत्तानपर्णा
देवलोकं प्रजानन् २९,१०; ३७८	वनस्पतिः (यूपः)
देवसदनः ५,४,३; ४३९	अश्वत्थः
देवेभ्यः त्रियुगं पुरा ऋ. १०,९७,१; ३०१	ओषधयः
देवानां स्वसा ५,५,१; ४२८	लाक्षा
द्यौः पिता ८,७,२; ३२५	ओषधयः
धनं सनिष्यन्तीः ऋ. १०,९७,८; ३०८	,,
धवः ५,५,५; ४३२	वि. नाम
धामानि शतम् ऋ. १०,९७,२; ३०२	ओषधयः
धामानि शतं सदा च ऋ. १०,९७,१; ३०१	,,
धियः जोष्टा वा. य. २८,१०; ३७५	वनस्पतिः (यूपः)
धेनवः ऋ. ३,५७,३; ३६३	ओषधयः
ध्रुवाः ८,७,८; ३३१	,,
नद्यमारः १९,३९,२; ४४८	कुष्ठः
नद्यायम् १९,३९,२; ४४८	,,
नद्यारिषः ८,७,६; ३२९	ओषधयः
नद्यारिषः १९,३९,२; ४४८	कुष्ठः
नभः पिता ५,५,१; ४२८	लाक्षा
नमस्यन्तीः ऋ. ३,५७,३; ३६३	ओषधयः
नितत्नी ६,१३६,१; ४६०	वि. नाम
निषदनं अश्वत्थे ऋ. १०,९७,५; ३०५	ओषधयः
निष्कृतिः ५,५,६; ४३३	लाक्षा
निष्कृतीः ऋ. १०,९७,९; ३०९	ओषधयः
नीलागलसाला ६,१६,४; ४६९	वि. नाम
न्यग्रोधः ५,५,५; ४३२	वि. नाम
न्यञ्चनी जनानाम् ५,५,१; ४२८	लाक्षा
पतत्रिणी ५,५,९; ४३६	,,
पतत्रिणीः ऋ. १०,९७,९; ३०९	ओषधय
पयस्वतीः ८,७,१७; ३४०	,,
परागताः दूरम् ऋ. १०,९७,२१; ३११	,,
परिष्ठाः ऋ. १०,९७,१०; ३१०	,,
पर्णः ५,५,५; ४३२	वि. नाम
पर्ण मधुमत् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
पर्णे वसतिः ऋ. १०,९७,५; ३०५	,,
पर्युक्ता कण्वेन नार्षदेन ४,१९,२; ३९७	अपामार्गः
पाकस्य त्राता ४,१९,३; ३९८	,,
पारयिष्णवः ऋ. १०,९७,३; ३०३	ओषधयः
पिता अजबभ्रुः ५,५,८; ४३५	(सिलाची)लाक्षा
,, द्यौः ८,७,२; ३२५	ओषधयः
,, नभः ५,५,१; ४२८	(सिलाची)लाक्षा
,, विभिन्दिन् नाम ४,१९,५; ४००	अपामार्गः
,, विहल्हो नाम ६,१६,२; ४६७	आबयुः
पितामहः अर्यमा ५,५,१; ४२८	लाक्षा
पिप्पली-ल्यः ६,१०९,१-२; ४१३-४१४	वि. नाम
पुनर्नवाः ८,७,८; ३३१	ओषधयः
पुनः सरा ४,१७,२; ३८१	अपामार्गः
पुरुषजीवनीः ८,७,४; ३२७	ओषधयः
पुष्पा ८,७,६; ३२९	वि. नाम
पुष्पं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
पुष्पिणीः ऋ. १०,९७,१५; ३१५	,,
पुष्पवतीः ऋ. १०,९७,३; ३०३। अ. ८,७,२७; ३५०	,,
पूर्वा जाताः ऋ. १०,९७,१; ३०१	,,
पृथिवी माता ८,७,२; ३२५	,,

पृश्नयः ८,७,१; ३२४ ओषधयः
पृश्निपर्णी २,२५,१-४; ४१६-४१९ वि. नाम
प्रचेतसः ८,७,७; ३३० ओषधयः
प्रजाता मधोः अधि १,३४,१; ४७८ मधुवनस्पतिः
प्रजानन् देवलोकम् वा० य० २९,१०; ३७८ वनस्पतिः
प्रतन्वतीः ८,७,४; ३२७ ओषधयः
प्रतीचीन फलः ४,१९,७; ४०२ अपामार्गः
प्रत्यातिष्ठन्ती ५,५,३; ४३० लाक्षा
प्रथमा (सहमाना) २,२५,२; ४१७ पृश्निपर्णी
प्रसूमतीः ८,७,२७; ३५० ओषधयः
प्रसूवरीः ऋ. १०,९७,३; ३०३ ,,
प्रस्तृणतीः ८,७,४; ३२७ ,,
प्लक्षः ५,५,५; ४३२ वि. नाम
फलिनीः ऋ. १०,९७,१५; ३१५ ओषधयः
बभ्रवः ऋ. १०,९७,१; ३०१ । ८,७,१; ३२४ ,,
बलवत्तमा वीरुधाम् ३,१८,१; ३६४ उत्तानपर्णा
बलासनाशनीः ८,७,१०; ३३३ ओषधयः
बर्ह्णाः ऋ. १०,९७,१५; ३१५ । ६,९६,१; ३५२ ,,
बृहत्पलाशा ६,३०,३; ४७२ शमी
बृहस्पतिप्रसूताः ऋ.१०,९७,१५,१९; ३१५,३१९; ६,९६,१; ३५२ ओषधयः
भक्षः अमृतस्य ८,७,१२; ३३५ ,,
भगः वा० य० २८,३३; ३७६ वनस्पतिः (यूपः)
भद्रः ५,५,५; ४३२ वि. नाम
भद्रा ४,१२,२; ४२२ रोहणी
भर्त्री शश्वताम् ५,५,२; ४२९ लाक्षा
भूमिं सन्तन्वतीः ८,७,१६; ३३९ ओषधयः
भेषजीः ८,७,८; ३३१ ,,
भेषजौ ८,७,२०; ३४३ व्रीहिः यवश्च
भेषजानां श्रेष्ठः ६,२१,२; ४५८ चन्द्रमाः
मणिः वैयाघ्रः यासाम् ८,७,१४; ३३७ वीरुधः
मदावती नाम माता ६,१६,२; ४६७ आबयुः
मधुमत् अग्रम् ८,७,१२; ३३५ ओषधयः
" पर्णम् " " "
" पुष्पम् " " "
" मध्यम् " " "
" मूलम् " " "
मधुमान् ऋ. १,९०,८; ४७३ वनस्पतिः
मधुमती ८,७,६; ३२९ ओषधयः
मधुना संयुतः ६,३०,१; ४७० यवः
मधुजाता १,३४,१; ४७८ मधुवनस्पतिः
मधोः अधि प्रजाता " " "
मधोः सम्भक्ताः ८,७,१२; ३३५ ओषधयः
मध्यं मधुमत् ८,७,१२; ३३५ "
मातरः ऋ. १०,९७,४; ३०४ "
माता इष्कृतिः ऋ. १०,९७,९; ३०९ "
माता पृथिवी ८,७,२; ३२५ "
माता मदावती नाम ६,१६,२; ४६७ आबयुः
माता रात्रिः ५,५,१; ४२८ लाक्षा
माध्वीः ऋ. १,९०,६; ३६२ ओषधयः
मूलं मधुमत् ८,७,१२; ३३५ "
मूलं समुद्रः ८,७,२; ३२५ "
मेदिनीः ८,७,७; ३३० "
यवः ८,७,२०; ३४३ । ६,३०,१; ४७० वि. नाम
रक्षसः हन्ता ४,१९,३; ३९८ अपामार्गः
रराणः त्मना देवेषु ऽ वा. य. २७,२१; ३७४ वनस्पतिः (यूपः)
रशनां बिभ्रत् वा. य. २८,३३; ३७६ " "
राजा वनस्पतिः यासाम् ८,७,१६; ३३९ ओषधयः
राजा वीरुधाम् ८,७,२०; ३४३ सोमः
रात्रिः माता ५,५,१; ४२८ लाक्षा
रुहः सहस्रं यासाम् ऋ. १०,९७,२; ३०२ ओषधयः
रेवतीः ६,२१,३; ४५९ वि. नाम
रोहणी ४,१२,१; ४२१ वि. नाम
रोहिणीः ८,७,१; ३२४ ओषधयः
लाक्षा ५,५,७; ४३४ लाक्षा
लोमशवक्षणा ५,५,७; ४३४ "
वनस्पतिः वा० य० ५,४१-४३ । २०,४५ । २१,११ । २७,११ । २८,१०. ३३. ४३; ३७०-३७७ वनस्पतिः (यूपः)
वनस्पतिः (उपर्युक्तान्यस्थले सामान्यनाम रूपेण निर्देशः) ।
वपुष्टमा ५,५,६; ४३३ लाक्षा
वर्षवृद्धा ६,३०,३; ४७१ शमी
वशिः वा० य० २८,३३; ३७६ (वनस्पतिः) यूपः

वशी ४,१७,८; ३८७ अपामार्गः
वसतिः पर्णं वः ऋ. १०,९७,५; ३०५ । वा.य० १२,७९;३५,४; ३५८ ओषधयः
वातः आत्मा ५,५,७; ४३४ लक्षा
वातीकृतस्य भेषजी ६,१०९,३; ४१५ पिप्पली
वावशानाः पुत्रम् ऋ. ३,५७,३; ३६३ ओषधयः
विभिन्दन् नाम पिता ४,१९,५; ४०० अपामार्गः
विभिदन्तो ४,१९,५; ४०० ,,
विवरुणाः ८,७,१०; ३३३ ओषधयः
विशाखाः ८,७,४; ३२७ ,,
विश्वाः ऋ. १०,९७,१०; ३१० ,,
विश्वधावीर्यः १९,३९,१०; ४५६ कुष्ठः
विश्वभेषजः १९,३९,५-९; ४५१-४५५ ,,
विश्वभेषजी ६,१३६,३; ४६२ नितत्नी
विश्वभेषजीः ८,७,२६; ३४९ ओषधयः
विश्वतोमुखः ७,६५,२; ४०५ अपामार्गः
विश्वरूपा ६,५९,३; ४०९ अरुन्धती
विश्वस्य भूतस्य गर्भः ६,९५,३; ४१२ कुष्ठौषधिः
विषदूषणीः ८,७,१०; ३३३ ओषधयः
विष्णुः वा. य. ५,४२; ३७० वनस्पतिः (यूपः)
विष्ठिताः पृथिवीं अनु ऋ. १०,९७,१९; ३१९ ,,
विहह्वो नाम ते पिता ६,१६,२; ४६७ आबयुः
वीरुधः ऋ. १०,९७,३,२१; ३०३,३२१ । ८,७,२; ३२५ सामान्यव चो
वीरुधां पतिः ४,१९,४; ४०३ अपामार्गः
वीरुधां बलवत्तमा ३,१८,१; ३६४ उत्तानपर्णा
वीरुधां बलवत्तमः ५,४,१; ४३७ कुष्ठः
वीरुधानां वसिष्ठः ६,२१,२; ४५८ चन्द्रमाः
वृक्षाः उपस्तयः तव ऋ. १०,९७,२३; ३२३ सोमः
वैश्वदेवीः ८,७,४; ३२७ ओषधयः
व्रीहिः ८,७,२०; ३४३ वि. नाम
शतक्रतुः वा. य. २८,१०,३३; ३७५-३७६ वनस्पति (यूपः)
शतक्रत्वः ऋ. १०,९७,२; ३०२ ओषधयः
शतवल्शाः वा. य. ५,४३; ३७१ वनस्पतिः(यूपः)
शतवल्शा ६,३०,२; ४७१ शमी
शतविचक्षणाः ऋ. १०,९७,१८; ३१८। ६,९६,१; ३५२ ओषधयः
शतशाखा ४,१९,५; ४०० अपामार्गो वनस्पतिः
शपथयावनी ४,१७,२; ३८१ ,, ,,
शमिता वा. य. २१,२१; २७,२१; २८,१०,३३; ३७३-३७६ वनस्पतिः (यूपः)
शमी ६,३०,३; ४७२ वि. नाम
शश्वतां भर्त्री ५,५,२; ४२९ लाक्षा
शिवाः ८,७,१७; ३४० ओषधयः
शुक्राः ८,७,१; ३२४ ,,
शुष्मा ५,५,७; ४३४ लाक्षा
सजित्वरीः ऋ. १०,९७,३; ३०३ ओषधयः
सत्यजित् ४,१७,२; ३८१ अपामार्गः
सनिष्यन्तीः धनम् ऋ. १०,९७,८; ३०८ ओषधयः
सन्तन्वन्ती भूमिम् ८,७,१६; ३३९ ,,
समुद्रः मूलम् ८,७,२; ३२५ ,,
सम्पतिता अश्वस्य अस्नः ५,५,९; ४३६ लक्षा
सम्भक्ता मधोः ८,७,१२; ३३५ ओषधयः
सरा ५,५,९; ४३६ लाक्षा
सहमानाः ८,७,५; ३२८ ओषधयः
,, २,२५,२; ४१७ पृश्निपर्णी
,, ४,१७,२; ३८१ अपामार्गः
सहस्रधामा ४,१८,४; ३९१ ,,
सहस्रनाम्नीः ८,७,८; ३३१ ओषधयः
सहस्रपर्ण्यः ८,७,१३; ३३६ ,,
सहस्वती ३,१८,२,५; ३६५,३६८ उत्तरा उत्तानपर्णा वा
,, २,२५,१; ४१६ पृश्निपर्णी
सासहिः ३,१८,५; ३६८ उत्तरा
सिलाची ५,५,१,८; ४२८, ४३५ लाक्षा
सिलाञ्जाला ६,१६,४; ४६२ आबयुः
सिषासवः ६,२१,३; ४५९ रेवतीः केशवर्धनीः
सीराः ऋ १०,९७,९; ३०९ ओषधयः
सुपर्णाः ८,७,२४; ३४७ ,,
सुपिप्पलाः वा. य. ११,४८; ३५७ ,,
सुभगा ३,१८,२; ३६५ उत्तानपर्णा
,, ६,५९,३; ४०९ अरुन्धती
,, ५,५,६-७; ४३३-४३४ लाक्षा
,, ६,३०,३; ४७२ शमी

सूर्यवर्णा ५,५,६; ४३३	लाक्षा
सोमः ६,११,१; ४५८	चन्द्रमाः
सोमः (राजा) ऋ. १०,९७,२२-२३; ३२१-३२३ ८,७,२०; ३४३ । ६,९६,३; ३५४	वि. नाम
सोम-राज्ञीः ऋ. १०,९७,१८-१९; ३१८-१९, ६,९६,१; ३५१	ओषधयः
सोमावती ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम
स्तम्बिनीः ८,७,४; ३१७	ओषधयः
स्परणी ५,५,३, ४३०	लाक्षा
स्वधितिः वा०य० ४,१; ५,४१; ६,१५; ३५५ । ५,४१; ३७०	ओषधिः
स्वसा अपाम् ५,५,७; ४३४	लाक्षा
स्वसा देवानाम् ५,५,१, ४२८	सिलाची (लाक्षा)
हन्ता रक्षसः ४,१९,३; ३९८	अपामार्गः
हितः सखा सोमस्य ५,४,७; ४४३	कुष्ठः
हिमवतां गर्भः ६,९५,३; ४१२	,,
हिरण्यपर्णः वा० य० २८,३३; ३७६	वनस्पतिः (यूपः)
हिरण्यवर्णा ५,५,६-७; ४३३-३४	लाक्षा

रोगचिकित्सान्तर्गता ओषधयः ।

वनस्पतिः सौभाग्यवर्धनी । ६,१३९,१-५; ६७७-६८१

कल्याणी ३; ६७९
त्रयस्त्रिंशत् नितानाः १; ६७७
न्यस्तिका १; ६७७
बभ्रु ३; ६७९
वीर्यावती ५; ६८१
शतं प्रतानाः १; ६७७
संवननी ३; ६७९
समुष्पला ३; ६७९
सहस्रपर्णी १; ६७७
सुभगंकरणी १; ६७७

वनस्पतिः मधुला (रोगोपशमनम्)। ५,१५,१-११; ६५३-६६३

ऋतजाता १-११; ६५३-६६३
ऋतापरी १-११; ६५३-६६३

वनस्पतिः (शापमोचनम्)। २,७,१-५; ६६८-६७१

अघद्विष्टा १; ६६८
देवजाता १; ६६८
मूलं दिवः अवततम् ३; ६७०
मूलं पृथिव्या अधि उत्तमम् ३; ६७०
शपथयोपनी वीरुत् १; ६६८
सहस्रकाण्डः ३; ६७०

अलक्ष्मी- (दोषः) । १,१८,१-४; ६७३-६७६

अरणिः पदोः २; ६७४
" हस्तयोः २, ६७४
अरातिः १, ६७३
गोषेधा ४; ६७६
घोरः आत्मनि ३; ६७५
" केशेषु ,,
" तन्वाम् ,,
" प्रतिचक्षणे ,,
निर्लक्ष्म्यम् १, ६७३
रिश्यपदी ४; ६७६
ललाम्यम् १,४; ६७३, ६७६
विधमा ४; ६७६
विलीढ्यम् ४; ६७६
वृषदती ४; ६७६

रोगचिकित्सा ।

(१) रोगाणां नामानि, तेषां गुणबोधकपदानि च ।

अपचितः गण्डमालाः वा (५०३-५१६)
अपचित्-तः ६,८३,१,३; ५१३,५१५
अरसतराः सेहोः ७,७६,१; ५०७
असत्तराः असतीभ्यः ७,७६,१; ५०७
अवीरघ्नीः ६,८३,२; ५१४
असूतिवत् ६,८३,३; ५१५
उपपक्ष्याः अपचितः ७,७६,२; ५०८
एनी ६,८३,२; ५१४
ककुदिश्रितः ७,७६,३; ५०९
कीकसाः प्रशृणाति यः ७,७६,३; ५०९
कृष्णा ६,८३,२; ५१४
गलुन्तः ६,८३,३; ५१५
ग्रैव्याः अपचितः ७,७६,२; ५०८
ग्लौः ६,८३,३; ५१५
जायान्यः ७,७६,३-५; ५०९-५११
तलीयं अवतिष्ठमाना ७,७६,३; ५०९
माता यासां कृष्णा ७,७४,१; ५०३
रामायणी ६,८३,३; ५१५
रोहिणी ६,८३,२; ५१४
लोहिनी ७,७४,१; ५०३
विक्लेदीयसीः लवणात् ७,७६,१; ५०७
विजाम्नि याः अपचिताः ७,७६,२; ५०८
श्येनी ६,८३,२; ५१४
सुस्रसः सुस्रसः ७,७६,१; ५०७
स्वयंस्रसः ७,७६,२; १

अलक्ष्मी दोषः । १,१८,१४; ६७३-७६

इषु- (**वेधः**)। ६,१०,१-३, ६२०-६२२
इषुः अस्यमाना १,३; ६२०,६२२
" निपतिता ३; ६२२
" प्रतिहिता ३; ६२२
" विसृज्यमाना ३; ६२२

ईर्ष्या । ६८२-६८६
अग्निः हृदय्यः ६,१८,१; ६८२
मनस्कं पतयिष्णुकम् ६,१८,३; ६८४
मूर्तं मनः ईर्ष्योः ६,१८,२; ६८३
शोकः हृदय्यः ६,१८,१; ६८२

उन्मत्तता । ६,१११,१-४; ६८७-६९०
उन्मत्तं रक्षसस्परि ६,१११,३; ६८९
उन्मदितं देव एनसात् " "
उद्युतं मनः ६,१११,२; ६८८
सुयतः ल.लपीति यः ६,१११,१; ६८७

कासा । ६,१०५,१-३; ४८६-४८८

क्षेत्रियरोगः । २,८,१-५; ४९३-९७
अभिकृत्वरीः २; ४९४

ज्वरः । १,२५,१-४ । ७,११६,१-२; ५२५-३०
अन्येद्युः अभ्येता १,२५,४; ५२८। ७,११६,२; ५३०
अभिशोकः १,२५,३; ५२७
अर्चिः ,, २; ५२६
अव्रतः ७,११६,२; ५३०
उभयद्युः १,२५,४; ५२८। ७,११६,२; ५३०
च्यवनः ७,११६,१; ५२९
जनित्रं शकल्येषि १,२५,२; ५२६
तक्मा १,२५,१-४; ५२५-२८
तृतीयकः १,२५,४; ५२८
धृष्णुः ७,११६,१; ५२९
नोदनः ७,११६,१; ५२९
पुत्रः राज्ञः वरुणस्य १,२५,३; ५२७
पूर्वकामकृत्वन् ७,११६,१; ५२९
रूरः १,२५,४; ५२८। ७,११६,१; ५२९
वरुणस्य पुत्रः १,२५,३; ५२७
शकल्येषि जनित्रम् १,२५,२; ५२६
शीतः १,२५,४; ५२८। ७,११६,१; ५२९
शोकः १,२५,३; ५२७
शोचिः १,२५,२,४; ५२५,५२८

हरितस्य देवः १,२५,३; ५२७
हूडुः नाम ''

तक्मा । ५,२२,१-१४; ५३१-४४

अधराङ् ३; ५३३
अभिदुन्वन् अग्निः इव २; ५३२
अरसः २; ५३२
अवध्वंसः इव अरुणः ३; ५३३
उच्छोचयन् अग्निः इव २; ५३२
उद्युगः यस्य सखा ११; ५४१
कासः '' '' ११; ५४१
कासा सह अवेपयः १०; ५४०
कासिका यस्य स्वसा १२; ५४२
ग्रैष्मः १३; ५४३
तक्मा १-१४; ५३१-४४
तृतीयकः १३; ५४३
परुषः पारुषेयः ३; ५३३
पाप्मा भ्रातृव्यः १२; ५४२
प्रार्थः ९; ५३९
बर्हिकेषु न्योचरः ५; ५३५
बलासः यस्य भ्राता १२; ५४२
बलासः यस्य सखा ११; ५४१
महावृषाः अस्य ओकः ५; ५३५
मूजवन्तः अस्य ओकः ५; ५३५
रूरः १०,१३; ५४०,५४३
वशी ९; ५३९
वार्षिकः १३; ५४३
वितृतीयः १३; ५४३
व्यंगः ६; ५३६
व्याळः ६; ५३६
शक्रम्भरस्य मुष्टिहा ४; ५३४
शारदः १३; ५४३
शीतः १०,१३; ५४०,५४३
सदन्दिः १३; ५४३
हरितान् विश्वान् यः कृणोति २; ५३२
हेतयः यस्य भीमाः १०; ५४०

दुःष्वप्नानि ।

बलासः । ६,१४,१-३; ४८३-४८५

अंगेष्टाः १; ४८३
अवीरहा ३; ४८५
अस्थिसंसः १; ४८३
पर्वसु (तिष्ठमानः) १; १४३
पुरःसंसः १; ४८३
हृदयामयः १; ४८३

मूत्र- (कृच्छ्रम्) । १,३,१-९; ५७१-७९

आन्त्रेषु अधि संश्रुतं मूत्रम् ६;५७६
गवीन्योः '' ''
वस्तौ '' ''

यक्ष्मनाशनम् । २,८,१-५; ४९३-९६

इदं सूक्तं क्षेत्रियरोगनाशनपरम्, न यक्ष्मनाशनपरम् । 'यक्ष्मनाशनम्' नाम स्वतन्त्रं प्रकरणं (१६२-३०० मंत्रांकाः) अस्यां संहितायां वर्तते ।

रुधिरास्रावः । १,१७,१-४ । ६,४४,१-३ । २,३,१-६; ५५५-६१, ५६५-५७०

श्वेत कुष्ठम् । १,२३,१-४ । २४,१-४; ५१७-२४

अस्थिजः किलासः १,२३,४; ५२०
किलासः १,२३,१-२; ५१७-१८
तनूजः किलासः १,२३,४; ५२०
दूष्या कृतः '' ''
पलितम् १,२३,१-२; ५१७-१८
पृषत् १,२३,२-३; ५१८-१९
लक्ष्म श्वेतं त्वचि १,२३,४; ५२०
शुक्लानि १,२३,२; ५१८

हरिमा । १,२२,१-४; ४८९-४९१ ।

ऋ. १,५०,११-१३; ५४५-५७
हरिमा १,२२,१,४; ४८९,४९२
ऋ. १,५०,११-१२; ५४५-४६
द्योतः १,२२,१; ४८९
द्रोगः १,५०,११; ५४५

(२) रोगाणां परिहार-साधनानि।

अपचितः गण्डमाला वा।

मुनेः देवस्य मूलम् ७,७४,१; ५०३

त्वाष्ट्रं वचः ७,७४,३; ५०५

इषुनिष्कासनम्।

ईर्ष्यापनयनम्।

भेषजम् ७,४५,१; ६८५

उन्मत्ततामोचनम्।

भेषजम् ६,१११,२-३; ६८८-६८९

कासा-शमनम्।

क्षेत्रियरोगनाशनम्। १,८,१-५; ४९३-९७

क्षेत्रियनाशनी वीरुत् २-५; ४९४-९७

तिलस्य तिलपिञ्जी ३; ४९५

यवस्य पलाली अर्जुनकाण्डस्य ३; ४९५

यवस्य पलालो बभ्रोः ३; ४९५

विचृतौ नाम तारके १; ४९३

ईषायुगेभ्यः क्षेत्रस्य पतये लांगलेभ्यः गनिस्रसाक्षेभ्यः सन्देश्येभ्यः च नमस्कृतिः ४-५; ४९६-९७

ज्वरनाशनम्।

तक्मनाशनम्।

दुःष्वप्ननाशनम्।

बलासनाशनम्।

मूत्रमोचनः।

प्र ते भिनद्मि मेहनम् १,३,७; ५७७

विषितं ते वस्तिबिलम् १,३,८; ५७८

यक्ष्मनाशनम्। १,८,१-५; ४९३-९६

इदं सूक्तं न यक्ष्मनाशनम् [स्वतन्त्रं प्रकरणं द्रष्टव्यम् १६२ ३००]

रुधिरास्रावनिवृत्तिः।

योषितः हिराः लोहितवासरः धमन्यः अभ्रातरः इव जनयः तिष्ठन्तु १,१७,१; ५५५

आस्रावभेषजम् ६,४४,२; ५६०

रुद्रस्य मूत्रम् ६,४४ ३; ५६१

वातीकृतनाशनी ६,४४,३; ५६१

विषणका नाम ,, ,,

अन्वास्रावम् २,३,२; ५६६

अरुस्राणम् २,३,३,५; ५६७-५६९

अरोगणम् २,३,२; ५६६

आस्रावस्य भेषजम् २,३,३-५; ५६७-६९

श्वेतकुष्ठनाशनम्।

असिक्नी (वनस्पतिः) १,२३,१-४; ५१७-२०

असितं आस्थानम् १,२३,३; ५१९

असितं प्रलयनम् ,, ,,

आसुरी (वनस्पतिः) १,२४,१-४; ५२१-२४

किलासनाशनम् १,२४,२; ५२२

किलासभेषजम् १,२४,२; ५२२

कृष्णा १,२३,१; ५१७

पृथिव्या अधि उद्भृता १,२४,४; ५२४

रामा १,२३,१; ५१७

श्यामा १,२४,४; ५२४

सरूपकरणी ,, ,,

सरूपकृत् १,२४,३; ५२३

सरूपो नाम पिता ,, ,,

सरूपा नाम माता ,, ,,

हरिमा- (हृद्रोग-कामिला नाशनम्)।

नाशनम्। १,२२,१-४; ४८९-९२

रोगघ्न्यः उपनिषदः ऋ १,५०,११-१३; ५४५-४७

रोपणाकासु धमानम् १,२२,४; ४९२। ऋ. १,५०, १२; ५४६

रोहितैः वर्णैः धमनम् १,२२,२; ४९०

रोहितस्य वर्णेन ,, १,२२,१; ४८९

रोहिणीभिः ,, १,२२,३; ४९१

रोहिणीः देवत्याः गावः ताभिः धमानम् १,२२,३; ४९१

शुकेषु धमानम् १,२२,४; ४९२। ऋ. १,५०,१२; ५४६

हारिद्रवेषु ,, १,२२,४; ४९२। ऋ. १,५०,१२; ५४६

(३) भैषज्यम् ।

आञ्जनं । गुणबोधक पदानि

अञ्जनं आञ्जनं वा ४,९,१-१० । ७,३०,१ । ३६,१ । १९,४५,१-१०; १९,४४,१-१० । वा. य. ४,३; ५८०-६१२
अपां ऊर्जः १९,४५,३; ५९४
अभयम् १९,४४,१; ६०२
आञ्जनम् १९,४४,३; ६०४
आयुषः प्रतरणम् १९,४४,१; ६०२
ओजसः वावृधानम् १९,४५,३; ५९४
कम् ४,९,१; ५८०
चक्षुर्दाः वा. य. ४,३; ६१२
चतुर्वीरम् १९,४५,३-५; ५९४-९६
जम्भयत् यातून् ४,९,९; ५८८
,, यातुधान्यः ४,९,९; ५८८
जातं अग्नेः जातवेदसः १९,४५,३; ५९४
जातं हिमवतः परि ४,९,९; ५८८
जीवं त्रायमाणम् ४,९,१; ५८०
जीवभोजनम् ४,९,३; ५८२
त्रिककुद् नाम ते पिता ४,९,८; ५८७
त्रैककुदम् ४,९,९-१०; ५८८-५८९
,, १९,४४,६; ६७०
दत्तं विश्वेभिः देवैः ४,९,१; ५८०
देवः १९,४४,६; ६०७
परिधिः जीवनाय १९,४५,३; ५९४
परिपाणं अर्वताम् ४,९,१; ५८१
,, अश्वानाम् ,,
,, गवाम् ,,
,, पुरुषाणाम् ,,
पर्वतस्य अक्ष्यम् ४,९,१; ५८०
पर्वतीयम् १९,४५,३; ५९४
पुरुषजीवनम् १९,४४,३; ६०४
पृथिव्यां जातम् १९,४४,३; ६०४
भद्रम् १९,४४,३; ६०४
भेषजम् १९,४४,१; ६०२
यातुजम्भनम् ४,९,३; ५८२
यामुनम् ४,९,१०; ५८९
विद्युतां पुष्पम् १९,४४,५; ६०६
विप्रम् १९,४४,१; ६०२
वृत्रस्य कनीनकः वा. य. ४,३; ६१२
शन्तातिः १९,४४,१; ६०२
सहस्रवीर्यम् १९,४४,८-९; ६०९-६१०
सिन्धोः गर्भः १९,४४,५; ६०६
हरितभेषजम् ४,९,३; ५८२

आञ्जनेन परिहरणीयाः रोगाः

अंगभेदः विसल्पकः १९,४४,२; ६०३
अप्रमायुकः १९,४४,३; ६०४
आददिः (अंजनस्य दातः) ४,९,८; ५८७
तक्मा (,,) ,, ,,
बलासः (,,) ,, ,,
यक्ष्म १९,४४,२; ६०३
रथजूतिः १९,४४,३; ६०४
विसल्पकः अंगभेदः १९,४४,२; ६०३
हरिमा जायान्य ,, ,,

क्रिमिनाशनम् ।

(१) क्रिमीणां विविधप्रकाराः; तेषां गुणबोधकपदानि च ।

अक्ष्यौ परिसर्पन् ५,२३,३; ६९८
अङ्किनः अयस्मयैः पाशैः १९,६६,१; ७६६
आत्रिणः ६,३२,३; ७३३ । १,७,३; ७६९
अदृनाः १,३१,३; ६९३
अदृष्टः १,३१,१; ६९१
अदृष्टाः ५,२३,६-७; ७०१-७०२
अन्तः ये अप्सु १,३१,५; ६९५
,, ओषधीषु ,,

अन्तः ये गवि २,३२,१; ७०९
" पर्वतेषु २,३१,५; ६९५
" पशुषु "
" वनेषु "
अन्वान्त्यः २,३१,४; ६९४
अप्सरसः ४,३७,२-५; ७१६-७१९
अप्सरसः जाया ४,३७,११; ७२६
अप्सरापतिः ४,३७,७; ७२१
अभिशोचाः ४,३७,१०; ७२४
अयोजालाः १९,६६,१; ७६६
अरसाः २,३१,३; ६९३
अराय्यः १,२८,४ ७३७
अर्जुनः २,३२,२; ७१० । ५,२३,९; ७०४
अलगण्डवः २,३१,२; ६९२
अवकदाः गन्धर्वाः ४,३७,८-१०; ७२२-७२४
अवस्कवः २,३१,४; ६९४
अशिष्टाः २,३१,३; ६९३
असुराः ६,७,२-३; ७६४-६५ । १९,६६,१; ७६६
आनृत्यत् ४,३७,७; ७२१
एजत्काः ५,२३,७; ७०२
कपिः इव ४,३७,११; ७२५
कष्कषासः ५,२३,७; ७०२
किमीदिनः ४,२०,८; ७६१ । १,७,१,३; ७६७,७६९। १,२८,१-२; ७३४-७३५
कुमारः इव सर्वकेशकः ४,३७,११; ७२५
कुरूरुः २,३१,२; ६९२
कृष्णौ ष्णाः ५,२३,४-५; ६९९-७००
कोकः ५,२३,४; ६९९
क्रव्यात् ५,२९,८-११,१५; ७४५-४८,७५२
क्रिमयः २,३१,१-५; ५,२३,१-१३; २,३२,१-५; ६९२-७१३ सर्वत्र
क्षुल्लकाः २,३२,५; ७१३
गन्धर्वाः ४,३७,२ ७; ७१६,७२१
गन्धर्वाः पतयः ४,३७,१२; ७२६
गृध्रः ५,२३,४; ६९९
चतुरक्षः २,३२,२; ७१०
छलुनाः २,३१,२; ६९२
त्रिककुद् ५,२३,९; ७०४
त्रिशीर्षा ५,२३,९; ७०४
दतां मध्ये गच्छन् ५,२३,३; ६९८
दूनाः २,३१,३; ६९३
दृष्टः-ष्टाः २,३१,२; ६९२ । ५,२३,६-७; ७०१-७०२
द्वयाविनः १,२८,१; ७३४
नासे परिसर्पन् ५,२३,३; ६९८
परिवेशसः २,३२,५; ७१३
पार्ष्ट्येयः २,३१,४; ६९४
पिशाचाः ६,३१,२; ७३२ । ५,२९,४-१०; ७४१-७४७ ४,२०,६-७,९; ७५९-६०,७६२। ४,३७,१०; ७२४
प्रियः दृशः इव ४,३७,११; ७२५
बभ्रुः ५,२३,४; ६९९
बभ्रुकर्णः ५,२३,४; ६९९
मनोहनः ५,२९,१०; ७४७
मायिनः १९,६६,१; ७६६
यातुधानाः १,८,१; ७२७ ×
यातुधानः १,८,३; ७२९ ×
यातुधानाः ६,३२,२; ७३२ । १,२८,१-२; ७३४-३५ ५,२९,११; ७४८ । ४,२०,६,८; ७५९,७६१ । १, ७,१-३,५-७; ७६७-७६९,७७१-७७३
यातुधान्यः १,२८,२,४; ७३५,७३७। ४,२०,६; ७५९
यातुमान् १,७,४; ७७०
येवाषः-षासः ५,२३,७-८; ७०२-७०३
रक्षः ४,३७,२; ७१६
रक्षांसि ४,३७,१; ७१५। ६,३२,१; ७३१। ५,२९,१०; ७४७ । वा. य. ५,२२; ७५३
राजा क्रिमीणाम् २,३२,४; ७१२
रुधिरः ५,२९,१०; ७४७
रोहितौ ५,२३,४; ६९९
विरूपौ ५,२३,४; ६९९

× इदं पदद्वयं क्रिम्यर्थे न प्रतिभाति ।

विश्वरूपः ५,२३,५; ७००। २,३१,२; ७१०
वेशसः २,३२,५; ७१३
व्यध्वरः २,३१,४; ६९४
शिखण्डी ४,३७,७; ७२१
शितिकक्षाः ५,२३,५; ७००
शितिबाहवः ५,२३,५; ७००
शिपविष्टुकाः ५,२३,७; ७०२
शिष्टाः २,३१,३; ६९३
शीर्षण्यः २,३१,४; ६९४
श्वा इव ४,३७,११; ७२५
सरूपौ ५,२३,४; ६९९
सहमूराः ५,२९,११; ७४८
सारङ्गः २,३२,२; ७१०। ५,२३,९; ७०४
स्थपतिः २,३२,४; ७१२
हतभ्राता २,३२,४; ७१२
हतमाता ,,
हतस्वसा ,,
हविरदाः ४,३७,८-९; ७२२-७२३

(२) ओषधिनामानि ।

तासां गुणबोधकपदानि च ।

अजशृङ्गी ४,३७,२,६; ७१६,७२०
अराटकी ४,३७,६; ७२०
अर्जुनाः ४,३७,५; ७१९
अश्वत्थाः ४,३७,४; ७१८ (महावृक्षः)
आघाटाः ४,३७,५; ७१९
ओषधिः देवी ४,२०,२; ७५५
ओषधीनां वीरुधां वीर्यावती ४,३७,६; ७२०
औक्षगन्धिः ४,३७,३; ७१७
कर्कर्यः ४,३७,५; ७१९
गुल्गुलः ४,३७,३; ७१७
तीक्ष्णशृङ्गी ४,३७,६; ७२०
नलदी ४,३७,३; ७१७
न्यग्रोधाः ४,३७,४; ७१८ (महावृक्षाः)
पीला ४,३७,३; ७१७
प्रमन्दनी ४,३७ ३; ७१७
ब्रह्म ४,३७,११; ७२५
विश्वतोवीर्या वीरुत् ६,३२,२, ७३२
शिखण्डिनः ४,३७,४; ७१८ (महावृक्षाः)
हरिताः ४,३७,५; ७१९

विषनाशनम् ।

(१) विष-उत्पत्ति-हेतवः ।

अंस्याः ऋ. १,१९१,७; ७८०
अग्निविषम् १०,४,२२; ८२९
अग्निजाः सर्पाः १०,४,२३; ८३०
अघाश्वः १०,४,१०; ८१७
अङ्ग्याः ऋ. १,१९१,७; ७८०
अदृष्टाः ऋ. १,१९१,१-८; ७७४ ७८१
अपोदकाः ५,१३,६; ८३९
अप्सुजाः सर्पाः १०,४,२३; ८३०
अलीकाः ५,१३,६; ८३९
असिक्न्या दासी ५,१३,८; ८४१
अस्तिं-ताः १०,४,५,१३; ८११,८२०। ५,१३,५-६; ८३८-८३९
अहिः-हयः १०,४,६,८-९,१६-१७, १९-२१,२६; ८१३,८१५-१६,८२३-२४,८२६-२८,८३३ । ७, ८८,१; ८४५ । ६,५६,१; ८४९
आलिगी ५,१३,७; ८४०
उपतृण्यः ५,१३,५; ८३८
उरुगूलायाः दुहिता ५,१३,८; ९४१
ओषधिः ४,६,८; ७९७
ओषधिजाः सर्पाः १०,४,२३; ८३०

ओषधीषु विषम् १०,४,२२; ८२९
कंकतः ऋ. १,१९१,१; ७७४
कंकपर्वा ७,५६,१; ८५२
कनक्रकम् १०,४,२२, ८२९
कर्णा ५,१३,९; ८४२
कसर्णीलम् १०,४,५,१७; ८१२,८२४
कान्दाविषम् १०,४,२२; ८२९
कुशरासः ऋ. १,१९१,३; ७७६
कैरातः ५,१३,५; ८३८
खनित्रिमाः ५,१३,९; ८४२
गिरिः यतः विषं जातम् ४,६,८; ७९७
तिरश्चिराजिः १०,४,१३,१७,२०; ८२०,८२४,८२७
तृप्रदंशी अर्भः ७,५६,३; ८५४
तैमातः ५,१३,६; ८३९
दद्रुषी ५,१३,८; ८४१
दर्भासः ऋ. १,१९१,३; ७७६
दर्वा १०,४,१३; ८२०
दशोनसिः १०,४,१७; ८२४
न कङ्कतः ऋ १.१९१,१; ७७४
पर्वतः यतः विषं जातम् ४,६,८; ७९७
पृथिव्यां यद् विषम् १०,४,२२; ८२९
पृदाकुः १०,४,११,१३,१७,२०; ८१८,८२०,८२४, ८२७। ७,५६,१; ८५२
पृदाकम् १०,४,५,१७; ८१२,८२४
पृश्नः ५,१३,५; ८३८
प्रकंकता ऋ. १,१९१,७; ७८०
बभ्रुः ५,१३,५-६; ८३८-३९। ६,५६,२; ८५०
बैरिणाः ऋ. १,१९१,३; ७७६
मदावती ४,७,४; ८०१
मन्युः ५,१३,६; ८३९
मशकः तृप्रदंशी ७,५६,३; ८५४
मौञ्जाः ऋ. १,१९१,३; ७७६
यातुधान्यः ऋ. १,१९१,८; ७८१
रथर्वी १०,४,५; ८१२
विद्युतः जाताः सर्पाः १०,४,२३; ८३०
विलिर्गा ५,१३,७; ८४०
वृश्चिकः ऋ. १,१९१,१६; ७८९। १०,४,९,१५; ८१६,८२२
शरासः ऋ. १,१९१,३; ७७६
शर्कोटिः ७,५६,५,७; ८५६,८५८
श्वावित् ५,१३,९; ८४२
श्वित्रम् १०,४,५,१३; ८१२,८२०
सर्तानकंकतः ऋ. १.१९१,१; ७७४
सर्पाः १०,४,२३; ८३०
सात्रासाहः ५,१३,६: ८३९
सूर्ये यत् विषम् १०,४,२२, ८२९
सैर्याः ऋ. १,१९१,३; ७७६
स्वजः १०,४,१०; ८१७
सूचीकाः ऋ. १,१९१,७; ७८०

(२) गुणबोधक-पदसहिता विषनाशका देवता ओषधयश्च।

अग्निः (देवता) १०,४,२६; ८३३
अगुवः ऋ. १,१९१,१४; ७८७
अदृष्टहा (सूर्यवि.) ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२
अरंघुषः १०,४,४; ८११
अवघ्नती (ओषधिवि.) ऋ. १,१९१,२; ७७५
अश्वस्य वारः १०,४,२; ८०९
आदित्यः ऋ. १,१९१,९; ७८२
आयती (ओषधिवि.) ऋ. १,१९१,२; ७७५
इन्द्रः १०,४,१०,१२,१६-१८; ८१७,८१९,८२३ २५
उदकं धन्वनि ६,१००,२; ८०६
ओषधिः असुराणां दुहिता ६,१००,३; ८०७
" देवानां स्वसा "
" दिवः पृथिव्याः सम्भूता "
" अवघ्नती ऋ. १,१९१,२; ७७५
" आयती "
" परायती "
" पिंषती "

करम्भः ४,७,२-३; ७९९-८००
गरुत्मान् ४,६,३; ७९२
कुषुम्भकः ऋ. १,१९१,१६; ७८९
गिरयः (तेषां मधु) ६,१२,३; ८४८
घृताची नाम (कन्या) १०,४,२४; ८३१
तरूणकम् १०,४,२; ८०९
तरुत्रम् ५,१३,११; ८४४
तावुवम् ५,१३,१०; ८४३
तौरी नाम (कन्या) १०,४,२४; ८३१
दर्भः १०,४,२; ८०९
दशशीर्षः (ब्राह्मणः) ४,६,१; ७९०
दशाग्र्यः (ब्राह्मणः) ४,६,१; ७९०
देवजनाः ६,५६,२; ८५०
देवाः ६,१००,१; ८०५
द्यौः ६,१००,१; ८०५
धन्वनि उदकम् ६,१००,२; ८०६
नद्यः (तासां मधु) ६,१२,३; ८४८
परुषी (ओषधिः) ६,१२,३; ८४८
पर्जन्यः १०,४,१६; ८२३
पर्वताः (तेषां मधु) ६,१२,३; ८४८
पाङ्क्तपाक्तः तिर्यङ् उदाराधिः ४,७,३; ८००
पुरुषस्य नाभिः १०,४,२; ८०९
पेडुः १०,४,५ ७,१०-११; ८१२-१४,८१७-१८
ब्रह्मणस्पतिः ७,५६,४; ८५५
ब्राह्मणः (दशशीर्षः दशास्य) ४,६,१; ७९०
मधु (नद्यः पर्वता गिरयः एतेषां) ६,१२,३; ८४८
मधुला (वीरुत्) ७,५६,२; ८५३
मशकजम्भनी (वीरुत्) ७,५६,२; ८५३
मयूर्यः त्रिः सप्त ऋ. १,१९१,१४; ७८७
मित्रः १०,४,१६; ८२३
रोपुष्याः नव नवत्यः ऋ. १,१९१,१३; ७८६
वचस् (ओषधिः) ४,७,४-५; ८०१-२
वरणावत्यां अधि (ओषधिः) ४,७,१; ७९८
वरुणः १०,४,१६; ८२३
वातः १०,४,१६; ८२३
विश्वदृष्टः (सूर्यः) ऋ. १,१९१,८-९; ७८१ ८२
विष्फुलिङ्गा त्रिः सप्त ऋ. १,१९१,१२; ७८५
वीरुत् ७,५६,१; ८५२
,, मधुजाता ७,५६,२; ८५३
,, मधुला ,,
,, मधुश्चुत् ,,
,, मधूः ,,
,, मशकजम्भनी ,,
शकुन्तिका इयत्तिका ऋ. १,१९१,११; ७८४
शोचिः १०,४,२; ८०९
श्वेत. (ओषधिः) १०,४,३; ८१०
शीपाला ,, ६,१२,३; ८४८
सरस्वतीः तिस्रः ६,१००,१; ८०५
सिन्धवः १०,४,२०; ८२७
सुपर्णः (गरुत्मान्) ४,६,३; ७९२
सूर्यः ६,१००,१; ८०५। ऋ.१,१९१,१०, ७८३
सूर्यः अदृष्टहा विश्वदृष्टः ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२
सोमः १०,४,२६; ८३३
स्वसारः सप्त (अमृवः) ऋ. १,१९१,१४; ७८७

मणिधारणम् ।

अस्तृतादि-मणिदेवता-गुणबोधकपदानि ।

(१) अस्तृतमणिः । १९,४६,१-७; १५७२-१५७८
असपत्नः ७; १५७८
ऊर्जस्वान् ६; १५७७
घृनात् उत्क्षुतः ६; १५७७
पयस्वान् ६; १५७७
मधुमान् ६; १५७७
मयोभूः ६; १५७७
वयोधाः ६; १५७७
वशी सजातानाम् ७; १५७८
शतमोनिः ६; १५७७

शम्भूः ६; १५७८
सपत्नहा ७, १५७८
सहस्रप्राणः ६; १५७७

(२) औदुम्बरमणिः। १९,३१,१-१४; १५३७-५०

अधिपाः मणीनाम् ११; १५४७
गृहमेधी १३; १५४९
ग्रामणीः १२; १५४८
तेजः १२; १५४८
देवः ८, १५४४
धनसाः ८; १५४४
पुष्टपतिः ६; १५४२
पुष्टिः १३; १५४९
रयिः १२, १५४८
वनस्पतिः ९; १५४५
वीरः १४; १५५०
वृषा ३,११; १५३८,१५४६
सपत्नहा ८; १५४४

(३) जङ्गिडमणिः। २,४,१-६; ६६-७१। १९, ३४,१-१०; ३५,१-५; १५५१-६५

अंगिराः ३४,६; १५५६
अमितवीर्यः ३४,८; १५५८
अरातिदूषणः ३४,४; १५५४
अरातिदूषिः २,४,६; ७१
अरातिहा ३५,२; १५६२
आभूतः अरण्यात् २,४,५; ७०
उग्रः ३४,७; १५५७
उपदानः ३४,८; १५५८
ओजः ३४,५; १५५५
ओषधिः ३४,९; १५५९
कृत्यादूषणः ३४,४: १५५४
कृत्यादूषिः २,४,६; ७१
कृष्याः रसेभ्यः २,४,५; ७०
देवैः दत्तः २,४,४; ६९
परिपाणः ३४,७; १५५७। ३५,२-३; १५६२-६३
भगवान् ३४,८; १५५८
भूम्यां अधि निष्ठितः ३४,६, १५५६
भेषजम् ३५,१; १५६१
मयोभूः २,४,४; ६९
वनस्पतिः ३४,९; १५५९
विश्वभेषजः २,४,३; ६८। १९,३५,५; १५६५
विष्कन्धदूषणः २,४,१; ६६। १९,३५,१; १५६१
सहस्रचक्षुः १९,३५,३; १५६३
सहस्रवीर्यः २,४,२; ६७
सहस्वान् २,४,६; ७१। १९,३४,४; १५५४
सुमङ्गलः १९,३४,७; १५५७

(४) दर्भमणिः। १९,२८,१-१०; ९९,१-३; ३०,१-५; १५१३-३६

अभितपन् धर्मः इव २८,३; १५१५
इन्द्रस्य वर्म ३०,३; १५३४
क्षत्रस्य वर्धनः ३०,४: १५३५
दुर्हार्दः सन्तापयन् २८,२; १५१४
देववर्म ३०,३; १५३४
द्विषतः नितपन् २८,३; १५१५
द्विषतः हृदः तपनः २८,१-२; १५१३-१४
ब्रह्मणस्पतिः ३०,३; १५३४
वर्माणि ते शतम् ३०,२; १५३३
वीर्याणि ते सहस्रम् ३०,२; १५३३
शत्रूणां मनः तापयन् २८,२; १५१४
सपत्नक्षयणः ३०,४; १५३५
सपत्नदम्भनः २८,१; १५१३

यज्ञादि-प्रकरणे 'दर्भः' देवता-गुणबोधकपदानि। १९,३३,१-१०; १९२३-३२। ३३,१-५; १९३३-३७

अच्युतः ३३,२; १९३४
अपां अग्निः ३३,१; १९३३
उग्रः ३२,१; १९२३
उतिरः ३२,१; १९२३
उग्रं बलम् ३३,४; १९३६
ओजः देवानाम् ३३,४; १९३६
ओषधिः ३२,१,३; १९२३,१९२५
ओषधीनां प्रथमः ३२,१०; १९३२
घृतात् उल्लुप्तः ३३,२; १९३४
च्यावयिष्णुः ३३,२; १९३४

तीक्ष्णः १९,३३,४; १९३६
दिवि तूलं ते ३२,३; १९२५
दिविष्टम्भः ३२,७; १९२९
दुश्च्यवनः ३२,१; १९२३
देवजातः ३२,७; १९२९
नुदन् सपत्नान् ३३,२; १९३४
पयस्वान् ३३,१-२; १९३३-३४
पवित्रः ३३,३; १९३५
पृथिव्यां निष्टितः ३२,३; १९२५
भूमिदंहः ३३,२; १९३४
मधुमान् ३३,२; १९३४
रक्षोहा ३३,४; १९३६
राजा ३३,४; १९३६
विश्वचर्षणिः ३३,४; १९३६
विषासहिः ३३,४; १९३६
वीरुधां राजगूयः ३३,१; १९३३
शतकाण्डः १९,३२,१,१०; १९२३,१९३२। ३३,१; १९३३
सपत्नहा ३२,१०; १९३२
सहमानः ३२,५; १९२७
सहस्रकाण्डः ३२,३; १९२५
सहस्रपर्णः ३२,१; १९२३
सहस्रार्घः ३३, १; १९३३

(५) प्रतिसरमणिः। ८,५,१-२२; १४३१-५२

अनडुवान् जगतामिव ११; १४४१
उग्रः २; १४३२
उत्तमः ओषधीनाम् ११; १४४१
ओजस्वान् ४,१६; १४३४,१४४६
ओषधीनां उत्तमः ११; १४४१
तनूपानः २०; १४५०
त्रिदरुधः २०; १४५०
देवमणिः २०; १४५०
नृम्णः २१; १४५१
परिपाणः १,१६; १४३१,१४४६
प्रतिसरः (मणिः) १,४; १४३१,१४३४
प्रतीवर्तः ४,१६; १४३४,१४४६
मणिः १,४,७,८,२१; १४३१,१४३४,१४३७-३८; १४५२
मेधिः २०; १४५०
वशी ४,७; १४३४,१४३७
वाजी २; १४३२
विमृधः ४; १४३४
वीरः १-२; १४३१-३२
वीर्यवान् १; १४३१
व्याघ्रः श्वपदां इव ११; १४४१
शूरवीरः १; १४३१
सञ्जयः १६; १४४६
सपत्नहा १-२; १४३१-३२
सहमानः २; १४३२
सहस्रवीर्यः १४; १४४४
सहस्वान् २; १४३२
सुमंगलः १,१६; १४३१,१४४६
सुवीरः २; १४३२
स्वाक्ष्यः ४,७-८; १४३४,१४३७-३८

(६) फालमणिः। १०,६,१-३५; १४७८-१५१२

अभिभूः २९; १५०६
असपत्नः ३०; १५०७
असुराक्षितिः २१-२८; १४९९-१५०५
उग्रः ६-१०; १४८३-८७
क्षत्रवर्धनः २९; १५०६
खदिरः ६-१०; १४८३-८७
घृतश्चुतः ६-७; १४८३-८४
देवजाः ३१; १५०८
प्रजापतिसृष्टः १९; १४९६
यज्ञवर्धनः ३४; १५११
शतदाक्षिणः ३४; १५११
शंभुवः १५,१७; १४९१,१४९४
सपत्नदम्भनः २९; १५०६
सपत्नहा ३०; १५०७
हिरण्यस्रक् ४; १४८१

(७) वरणमणिः। १०,३,१-२५; १४५३-७७
देवः ५,८,११; १४५७,१४६०,१४६३

पुरएता २; १४५४
मणिः २; १४५४
वनस्पतिः ५,८,११; १४५७,१४६०,१४६३
विश्वभेषजः ३, १४५५
वृषा १; १४५३
सपत्नक्षयणः १; १४५३
सहस्राक्षः ३; १४५५
हरितः ३; १४५५
हिरण्ययः ३, १४५५
(८) शङ्खमणिः। ४,१०,१-७; १४२४-३०
आयुष्प्रतरणः ४, १४२७
कार्शनः ७; १४३०
कृशनः १,३; १४२४,१४२६
जातः अन्तरिक्षात् १; १४२४
,, दिवि ४; १४२७
,, वातात् १; १४२४
,, विद्युतः १; १४२४
,, वृत्रात् ५; १४२८
जातः समुद्रात् ५; १४२८
ज्योतिषःपरि १; १४२४
दर्शतः ६; १४२९
दिवाकरः ५; १४२८
पर्याभृतः सिन्धुतः ४; १४२७
मणिः ४; १४२७
रोचनः ६; १४२९
विश्वभेषजः ३; १४२६
शंखः १-४; १४२४-२७
समुद्रजः ४; १४२७
हिरण्यजाः १,४; १४२४,१४२७
हिरण्यानां एकः ६; १४२९
(९) शतवारमणिः। १९,३६,१६; १५६६७१
ऋषभः ५; १५७०
दुर्णामचातनः १; १५६६
दुर्णामहा ३; १५६८
शातवारः मणिः ५; १५७०
हिरण्यशृंगः ५; १५७०

यज्ञादिकम्।

(१) यम-देवताया गुणबोधकपदानि।

अनुपरःपशानः बहुभ्यः पन्थाम् ऋ. १०,१४,१; १९६८। अ. १८,१,४९; २०१५। ६,२८,३; १५८४
ईशे वः द्विपदः चतुष्पदः ६,२८,३; १५८४
उशन् ऋ. १०,१५,८; १९९४
कविः १८,३,६३; २१४१
चिकित्वान् १८,२,३७; २०६१
छन्दांसि आहिताः यस्मिन् ऋ. १०,१४,१६; १९७९
जनानां संगमनः ऋ.१०,१४,१; १९६८। अ.१८,१,४९; २०१५। १८,३,१३, २०९६
नाभिः आसु गन्धर्वः अप्या च योषा यस्य ऋ. १०,१०,४; १९५७
परेयिवांस् ऋ.१०,१४,१; १९६८। अ.१८,१,४९; २०१५
पिता ऋ. १०,१३५,१; १९८०
पिता विवस्वान् यस्य ऋ. १०,१४,५; १९७२
पितृमान् १८,४,७४; २२२४
प्रथमः ऋ. १०,१४,२; १९६९। अ.६,२८,३; १५८४
प्रेयाय यः प्रथमः लोकमेतम् १८,३,१३; २०९६
मदन् स्वधया ऋ. १०,१४७; १९७३। अ. १८,१,५४; २०१९
ममार य प्रथमः मर्त्यानाम् १८,३,१३; २०९६
मृत्युः ६,२८,३; १५८४
यमः ६,२७-२९,१-३; १५७९-१५८७। ऋ १०, १०,१-१४; १४, १-५,७९, १३-१६; १३५, १-७; १९५४-८६। २००१ २२३९ मंत्रेषु बहुषु स्थलेषु।
यमी (यमस्य भगिनी) ऋ. १०,१०,९; १९६२

राजा ऋ.१०,१४,१,४,७,१५; १९६८,१९७१,१९७३, १९७८। अ. १८,१,४९; २०१५। अ. १८,१,६०; २०२३। १८, २, १२; २०३६। १८, ३, १३; २०९६

विवस्वान् पिता यस्य ऋ. १०,१४,५; १९७२

विश्पतिः ऋ. १०,१३५,१; १९८०

वैवस्वतः ऋ. १०,१४,१; १९६८। अ. १८,१,४९; २०१५। १८,३,१३; २०९६

संरराणः हवींषि ऋ. १०,१५,८; १९९४। अ. १८, ३,४६; २१२९

संगमनः जनानाम् 'जनानां संगमनः' द्रष्टव्यम्।

स्वधया मदन् 'मदन् स्वधया' द्रष्टव्यम्।

(२) पितर-देवताया गुणबोधकपदानि।

अग्निदग्धाः ऋ. १०,१५,१४; २०००। अ. १८,२, ३५; २०५९

अग्निष्वात्ताः ऋ. १०,१५,११; १९९७। अ १८,३, ४४; २१२७

अंगिरसः ऋ. १०,१४,३-५; १९७०-७२। अ. १८, १,५८-६१; २०२१-२४

अथर्वाणः १८,१,५८; २०२१

अनग्निदग्धाः ऋ. १०,१५,१४; २०००। अ. १८,२,३५; २०५९

अनाधृष्याः तपसा १८,२,१६; २०४०

अन्तरिक्षसदः १८,४,७९; २२२९

अपरासः १८,१,४६; २०१२

अर्वाणः १८,३,१९; २१०२

अवरे ऋ. १०,१५,१; १९८७। अ. १८,१,४४; २०१०

अवृकाः " "

असुं ये ईयुः " "

आसीनासः अरुणीनां उपस्थे ऋ. १०,१५,७; १९९३। अ. १८,३,४३; २१२६

उक्थशासः १८,३,११, २१०४

उद्धिताः १८,२,३४; २०५८

उपरासः ऋ. १०,१५,२; १९८८

उपहूताः ऋ. १०,१५,५; १९९१

ऋतं आशशानाः १८,३,११; २१०४

ऋतजाताः १८,२,१५; २०३९

ऋतज्ञाः ऋ. १०,१५,१; १९८७। अ. १८,१,४४; २०१०

ऋतसाताः १८,२,१५; २०३९

ऋतावृधः "

कवयः १८,३,१९,४७; २१०२,२१३०

कव्याः ऋ. १०,१५,९; १९९५

घर्मसदः ऋ. १०,१५,९-१०; १९९५-९६। अ. १८,३ ४७-४८; २१३०-३१

जेहमानाः ऋ. १०,१५,९; १९९५। अ. १८,३,४७; २१३०

तपस्वन्तः १८,२,१५; २०३९

तपोजाः "

दग्धाः १८,२,३४; २०५८

देवत्राः ऋ. १०,१५,९; १९९५। अ. १८,३,४७; २१३०

देववन्दाः ऋ. १०,१५,१०; १९९६

धुमन्तः १८,१,५७; २०२०

नवग्वाः १८,१,५८; २०२१

निखाताः १८,२,३४; २०५८

पराः रासः ऋ. १०,१५,१,१०; १९८७, १९९६। अ. १८,१,४४; २०१०। १८,३,२१; २१०४

परोप्ताः १८,२,३४; २०५८

पार्थिवे रजसि आ निषत्ताः ऋ. १०,१५,२; १९८८

पूर्वे-वासः ऋ. १०,१५,२,८,१०; १९८८,१९९४, १९९६। अ. १८,१,४६; २०१२

पितरः पितृदैवतमंत्रेषु सर्वत्र।

प्रत्नासः १८,३,२१; २१०४

बर्हिषदः ऋ. १०,१५,३-४; १९८९-९०। अ. १८,१, ४५,५१; २०११,२०१६

भूर्जयः १८,१,६१; २०२४

भृगवः १८,१,५८; २०२१

मध्यमाः ऋ. १०,१५,१; १९८७। अ. १८,१,४४; २०१०

मध्ये दिवः स्वधया मादयन्तः ऋ.१०,१५,१४; २०००
अ. १८,२,३५; २०५९
यज्ञियाः ऋ. १०,१४,५; १९७२। अ. १८,१,५८-५९;
२०२१-२२
यमराजानः १८,२,२५,४६; २०४९,२०७०
वसिष्ठाः १८,३,४६; २१२९
विश्वे ऋ. १०,१५,६; १९९२
वैरूपाः ऋ. १०,१४,५; १९७२। अ. १८,१,५९; २०२२
सत्याः-त्यासः ऋ. १०, १५, ९-१०; १९९५-९६
अ. १८,३,४७-४८; २१३०-३१
सदःमदः ऋ. १०,१५,११; १९९७। अ. १८,३,४४;
२१२७
सनीडाः १८,२,२६; २०५०
सरथं दधानाः इन्द्रेण देवैः ऋ. १०,१५,१०; १९९६
सुप्रजसः १८,४,६३; २२१३
सुप्रणीतयः ऋ १०,१५,११; १९९७। अ. १८,३,४४
२१२७
सुविदत्राः ऋ.१०,१५,३,९;१९८९,१९९५। अ.१८,१,
४५; २०११। १८,३,१९,४८; २१०२,२१३१
सुवीराः १८,४,६३; २२१३
सुव्रजनासु विक्षु (वर्तमानाः) ऋ. १०,१५,२; १९८८
सुसंशासः १८,३,१६; २०९९
सोमवन्तः १८,४,७३; २२२३
सोम्यासः ऋ.१०,१५,१,५,८; १९८७,१९९१,१९९४।
३,१८,१,४४,५८; २०१०,२०२१। १८,३,४५;२१२८
स्तोमतष्टासः ऋ. १०,१५,९; १९९५। अ. १८,३,४७;
२१३०
हविरदः ऋ. १०,१५,१०; १९९६। अ. १८,३,४८;
२१३१
हविष्याः ,, ,,
होत्राविदः ऋ. १०,१५,९; १९९५। अ. १८,३,४७;
२१३०

(३) पृथिवी ' भूमिः वा ' देवताया गुणबोधकपदानि ।

ऋ. १०,१८,७-१४ (१९४६-१९५३)

उच्छ्वञ्चमाना १२; १९५१
उरुव्यचाः १०; १९४९। १८,३,४९; २१३२
ऊर्णम्रदा १०; १९४९। १८,३,४९; २१३२
पृथिवी १०-१३; १९४९-५२। १८,३,४९; २१३२
भूमिः १०-११; १९४९-५०। १८,३,४९; २१३२
माता १०;१९४९। १८,३,४९; २१३२
युवतिः १०; १९४९
विश्वभोजस् अ. १८,४,६; ७१५६
लोगः १३; १९५२
सुशेवाः १०; १९४९। १८,३,४९; २१३२
सूपवञ्चना ११; १९५०
सूपायना ११; १९५०
स्थूणा १३; १९५२। अ. १८,३,५२; २१३३

दीर्घायुष्य-उपप्रकरणे देवतानामानि ।

अग्नयः ८,१,११; १६
अग्निः अथर्व. २,२८,५; ५। ३,११,४; ७५। ६,११०,
१-३; ८५-८७। ६,४७,१; ८८। २,२९,१; ९१।
५,३०,११-१२,१४; १०८-१०९,१११। १९,६४,
१-४; ११५-११८। ५,२८,२,४-५; १२८,१३०-
१३१। ७,३३,१; १४२। ७,५३,२-४,६; १४४-
१४६,१४८। २,१३,१; २३३१
अग्निः जातवेदाः ८,२,१३; ३९। ८,१,११; १६। २,
२९,२; ९२
,, वैश्वानरः ८,१,११; १६
अग्निः सन्तपनः ६,७६,१-४; १५०-५३
अदितिः २,२८,५; ५
अन्तरिक्षम् ८,१,१२; १७। ५,२८,२; १२८
अर्जुनम् ५,२८,५; १३१
अर्यमा ५,२८,१२; १३८
अश्विनौ २,२९,६; ९६। ७,५३,१; १४३
अस्वप्नः ८,१,१३; १८। ५,३०,१०; १०७
आदित्याः ८,१,१६; २१। १,३०,१; ५५। ५,२८,
४; १३०
आदित्यौ ८,२,१५; ४१

आपः ८,१,५; १०। ५,२८,२; ११८
" दिव्याः पयस्वतीः ८,२,१४; ४०
" पयस्वतीः २,२९,५; ९५
आयुः २,२८,१,३; १,३। ८,१,१-११; ६-२६। ८,१,१ २८; २७-५४। ७,३२,१; १४१। ७,५३,१-७; १४३-४९
आयुर्वर्धनम् १९,६३,१; १५४। वा.य. ३४,५०-५२; २३२८-३०
आयुष्यम् ३,११,१-८; ७१-७९। ५,३०,१-१७; ९८-११४। ६,७६,१-४; १५०-१५३। ५,२८,१-१४; १२७-४०। ७,३३,१; १४१। २,१३,४,५; २३३४
दीर्घायुत्वम् अ. १९,६४,१-४; ११५-१८। १९,६७, १-८; ११९-२६। ५,२८,१-१४; १२७-४०। ७,३३, १; १४१। २,१३,४-५; २३३४-३५। वा.य. ११, १००; २३२७
सर्वमायुः १९,६१,१; १५५। १९,७०,१; १५६
इन्द्रः ८,१,१५; २०। ३,११,३-४; ७४-७५। ६,४७, २; ८९। २,२९,३-४,७; ९३-९४,९७। ५,२८,४, १३०। १९,७०,२; १५६
इन्द्राग्नी ८,१,२,१६; ७,२१। ८,२,२१; ४७। १, ३५,४; ६२। ३,११,१-८; ७१-७९
ऋतवः आर्तवाः ५,२८,२,१३; १२८,१३९
ऋषयः दैव्याः ६,४१,३; ६५. अमर्त्याः तन्वः तनूजाः तनूपाः।
,, सप्त ७,५३,४; १४६
ओषधी-धयः ८,२,६,१५; ३२,४१
गोपायन् ८,१,१३; १८
चन्द्रमाः ८,१,१२; १७। ६,४१,१; ६३। ५,२८,२, १२८
जङ्गिडः मणिः २,४,१-६; ६६-७१
जरिमा २,२८,१,३; १,३
जागृविः ८,१,१३; १८। ५,३०,१०; १०७
त्रिवृत् ५,२८,१-१४; १२७-४०
,, आयुः ५,२८,७; १३३
,, देवपुराः ५,२८,९-१०; १३५-३६
,, पोषाः भूमा वा ५,२८,३; १२९
,, प्राणाः ५,२८,१; १२७
,, सुपर्णाः ५,२८,८; १३४
,, हिरण्यम् ५,२८,६; १३१
त्वष्टा २,२९,२; ९२
दशवृक्षः २,९,१; ८०
दाक्षायणाः १,३५,१; ५९
दाक्षायणं हिरण्यम् १,३५,२; ६०। वा.य. ३४,५०-५२; २३२८-२३३०
दिशः ५,२८,२; ११८
देवाः ८,१,१८; २३। ८,२,२७; ५३। १,३०,२,४, ५६,५८ (अहुतादः सत्रसदः हुतभागाः)। २,२९,१; ९१। १९,७०,१; १५६
द्यौः १,१२,१७; १७,२२
द्यावापृथिवी २,२८,४; ४। ८ २,१४; ४० (अभिश्रियौ असन्तापे शिवे)। २,२९,४-५; ९४-९५ (ऊर्जस्वती पयस्वती)।
धाता ८,१,१५; २०
पितरः ५,३०,१२; १०९
पूषा ५,२८,३,१२, १२९,१३८। ७,३२,१; १४१
पृथिवी ८,१,१२; १७
प्रजापतिः ८,१,१७; २२
प्रतीबोधः ८,१,१३; १८। ५,३०,१०; १०७
प्रदिशः ५,२८,२; ११८
बृहस्पतिः ३,११,४,८; ७५,७९। २,२९,१; ९१। ५, २८,१२; १३८। ७,३३,१; १४१। ७,५३,१; १४३। २,१३,२-३; २३३२-३३
बोधः ८,१,१३; १८। ५,३०,१०; १०७
ब्रह्मणस्पतिः १९,६३,१; १५४। ६१,१; १५५
भगः ८,१,२; ७
भवाशर्वौ ८,२,७; ३३
भूमिः ५,२८,२,५; १२८,१३१
मरुतः ८,१,२; ७। ६,१७,२; ८९। २,२९,४-५; ९४-९५। ७,३३,१; १४१
मातरिश्वा वातः ८,१,५; १०। ८,२,३,१४; २९,४०
मित्रः २,२८,१; १
मित्रावरुणौ २,२८,२,५; २,५ रिशादा संविदानौ।
मृत्युः ८,१,१,६; ६,१०। ५,३०,१२; १०९
यक्ष्मनाशनम् ३,११,१-८; ७१-७९। २,९,१-५; ८०-८४

यमः ५,३०,१२; १०९। ७,५३,१; १४३
राणः ८,१,१३; १८
वनस्पतिः २,९,१-५; ८०-८४
वरुणः २,२९,४; ९४
वसवः ८,१,१६; २१। १,३०,१; ५५
वायुः ८,१,१५; २०
विश्वे देवाः २,२८,५; ५। ८,१,७; ११। ८,२,२१; ४७। १,३५,४; ६२ (अहूणीयमानाः)। १,३०,१-४; ५५-५८। २,९,४; ८३। ६,४७,२; ८९। २,२९,५; ९५। २,१३,४-५; २३३४-२३३५
शणः २,४,५; ७०
शबलः ८,१,९; १४
श्यामः ८,१,९; १४
सरस्वती ६,४१,२; ६४
सविता ८,१,१५; २०। ३,११,४; ७५। २,२९,२; ९२
सूर्यः ८,१,५,१२; १०,१७। ८,२,३,१४; २९,४०। २,२९,१; ९१। ५,३०,११; १०८। ५,३०,१५; ११२ (अधिपतिः)। १९,६७,१-८; ११९-१२६। ५,२८,२; ११८। ७,५३,७; १४९। १९,७०,१; १५६
सूर्याचन्द्रमसौ ८,२,१५; ४१
सोमः ८,१,२; ७। ७,३२,१; १४१। २,१३,२; २३३२
सोमराज्ञी ८,१,१७; २२
सौधन्वनाः ६,४७,३; ९० स्वर् आनशानाः।
सुधन्वा ६,४७,३; ९०
हिरण्यम् १,३५,१४; ५९-६२

(२) अग्निदेवता-गुणबोधकपदानि।

अन्तः अप्सु ८,१,११; १६
आयुर्दा २,१३,१; २३३१
इद्धः १९,६४,४; ११८
ईड्यः ६,११०,१; ८५
घृतपृष्ठः २,१३,१; २३३१
घृतप्रतीकः " "
जरसं वृणानः " "
जातवेदाः १९,६४,१-२; ११५-११६
नव्यः ६,११०,१; ८५
पावकः ६,४७,१; ८८
प्रत्नः ६,११०,१; ८५
यविष्ठ्यः १९,६४,३; ११७
विद्वान् वयुनानि २,२८,२; २
विश्वकृत् ६,४७,१; ८८
विश्वशंभूः " "
वैश्वानरः ६,४७,१; ८८
सनात् ६,११०,१; ८५
संप्रेद्धः ६,७६,१; १५०
सान्तपनः ६,७६,१-४; १५०-१५३
होता २,२८,२; २। ६,११०,१; ८५

जंगिडमणिदेवता-गुणबोधकपदानि।

अरातिदूषिः २,४,६; ७१
कृत्यादूषिः ,, ६; ७१
देवैः दत्तः ,, ४; ६९
मयोभूः ,, ४; ६९
विश्वभेषजः २,४,३; ६८
विष्कन्धदूषणः ,, १; ६६
सहस्रवीर्यः ,, २; ६७
सहस्वान् ,, ६; ७१

(३) 'दीर्घायुष्यम्' पर्यायशब्दाः।

अमृतत्वम् १९,६४,४; ११८
आयुः ,, ,,
आयुः दीर्घम् १,३५,२; ६०। ७,३२,१; १४१। ३३,१; १४२। वा. य. ३४,५१; २३२९। २,१३,२; २३३२
दी०[आयुर्वेद०] २८
दीर्घायुत्वम् १,३५,१; ५९। ६,११०,२; ८६। ५,२८,१; १२७। वा. य. १२,१००; २३२७
द्राघीयः आयुः ८,२,२; २८
जरदष्टिः २,२८,५; ५। ८,२,१; २७। ५,३०,५,८; १०२,१०५। वा. य. ३४,५२; २३३०

जरसं आयुः १,३०,३; ५७
जरसे बहू ७,५३,४; १४६
जरामृत्युः २,२८,२,४; २,४
शतशारदम् ८,२,२; २८। १,३५,१; ५९। ३,११,२; ७३। ६,११०,२; ८६। ५,२८,१; १२५। वा. य. ३४,५२; २३३०
शतहायनम् ८,२,८; ३४
शतं शरदः ३,११,४; ७५। २,२९,२; ९२। १९, ६७,१-८; ११९-१२६। ७,५३,२; १४४
,, वसन्ताः ३,११,४; ७५
,, हेमन्ताः ,, ,,
,, हिमाः २,२८,४; ४
शतं अयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि ८,२,२१; ४७
सर्वं आयुः १९,६१,१; १५५। १९,७०,१; १५६

(४) दीर्घायुत्वे परिहरणीयम्।

अंहः २,२८,१; १। २,४,३; ६८
अंगज्वरः ५,३०,९; १०६
अंगभेदः ,, ,,
अजातयक्ष्मः ३,११,१; ७२
अभिशस्तिः ७,५३,१; १४३
अभिशोचनम् २,४,२; ६७
ग्राहिः ३,११,२; ७२
जम्भः २,४,२; ६७
मृत्युः ७,५३,१; १४३
मृत्यवः शतम् २,२८,१; १
यक्ष्मः ५,३०,९; १०६
राजयक्ष्मः ३,११,१; ७२
विशरः २,४,२; ६७
विष्कन्धः २,४,२,५; ६७,७०
हृदयामयः ५,३०,९; १०६

(५) ओषधयः, तासां विकाराः, गुणबोधकपदानि च।

ओषधिः वा. य. १२,१००; २३२७
जांगडः मणिः २,४,१-६; ६६-७१
जीवन्ती ८,२,६; ३२
जीवला ,, ,,
त्रायमाणा ,, ,,
दशवृक्षः २,९,१; ८०
नघारिषा ८,२,६; ३२
पूतुदुः नाम भेषजम् ८,२,२८; ५४
वनस्पतिः २,९,१; ८०
वीरुधः ८,७,२; ३२५
शतवल्शा वा.य. १२,१००; २३२७
सर्वहा ८,२,७; ३३
सहमाना ८,२,६; ३२
सहस्वती ,, ,,

जलचिकित्सा।

(१) आपः [उदकम्] गुणबोधकपदानि।

अग्रेगुवः वा य. १,१२; ९३७
अग्रेपुवः वा. य. १,१२; ९३७
अघ्न्याः वा. य. २०,१८; ११०३
अध्वरीयतां अम्बयः ऋ. १,२३,१६; ८६३
अध्वरीयतां जामयः ऋ. १,२३.१६; ८६३
अध्वर्युभिः मनसा संविदानाः ऋ. १०,३०,१३; ९१३
अनभ्रयः अ. १९,२,३; ९३०
अनमीवाः वा. य. ४,१२; ९४४

अनागसः वा.य. ४,१२; ९४४
अनाधृष्टाः वा. य. १०,४; १०९६
अनिभृष्टम् वा. य. १०,६; १०९७
अनिविशमानाः अ. ७,४९,१; ८७५
अनूप्याः अ. १९,२,२; ९२९। १,६,४; ९६४
अन्तरिक्षेयाः बहुधा भवन्ति अ. १,३३,३; ९१८
अपां गर्भः वा. य. १०,३; १०९५
अपां पतिः वा. य. १०,३; १०९५
अपां गर्भः [सुपर्णः वृषभः वा] अ. ७,३९,१; ९१७
अमृतं अप्सु अन्तः ऋ. १,२३,१९; ८६६। अ. १,४,४; ९६३
अमृताः वा. य. ४,१२; ९४४
अयक्ष्मंकरणीः अ. १९,२,५; ९३२
अयक्ष्माः वा.य. ४,१२; ९४४
अरिप्रः [सोमरसः] ऋ. ७,४७,१; ८७१
अर्षतः वा. य. १०,३; १०९५
अर्हिं बुध्न्यं अनुरीयमाणाः वा. य. १०,१९; १०९८
आपः वा. य. ११,३८; १०९९। १२,३,५; ११००। ऋ. १०,९,१,४-५; ८७९,८८१-८८३। अ. ७,४९,१-४; ८७५-७८
आपः (निर्वचनम्) अ. ३,१३,२; ९२१
आयतीः ऋ. १०,३०,१३; ९१३
आवर्वृततीः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
इन्द्रपानः [सोमः] अ. ७,४७,१; ८७१। ऋ. १०,३०,९; ९०९
इयानाः पर्वतस्य पृष्ठात् वा. य. १०,१९; १०९८
ईड्यः ऋ. १०,३०,८; ९०८
ईशानाः वार्याणाम् ऋ. १०,९,५; ८८३
उत्स्याः अ. १९,२,१; ९२८
उदकम् (निर्वचनम्) अ. ३,१३,४; ९२३
उदक्ताः वा. य. १०,१९; १०९८
उपजीवाः अ. १९,६९,२; ९३४
उशतीः ऋ. १०,३०,१५; ९१५
ऊर्जं वहन्तीः वा. य. २,३४; ९४२
ऊर्जस्वतीः वा.य. १०,१; १०९३
ऊर्मिः (सोमः) ऋ. ७,४७,१; ८७१। १०,३०,७-९; ९०७-९०९
ऊर्मिः वृष्णः वा. य. १०,२; १०९४
ऋतावरीः अ. ३,१३,७; ९२६
ऋतावृधः वा. य. ४,१२; ९४४
ओजस्वतीः वा. य. १०,३; १०९५
ओषधीनां वृषभः [सुपर्णः] अ. ७,३९,१; ९१७
औशानः [सोमः] ऋ. १०,३०,९; ९०९
कल्याणीः ऋ. १०,३०,५; ९०५
कुंभेभिः-भे-आभृताः अ. १९,२,२; ९२९। १,६,४; ९६४
क्षत्रियाय महि क्षत्रं वन्वानाः वा. य. १०,४; १०९६
क्षयन्तीः चर्षणीनाम् ऋ. १०,९,५; ८८२
खनमानाः अ. १९,२,३; ९३०
खनित्रिमाः ऋ. ७,४९,२; ८७६। अ. १९,२,२;९२९। १,६,४; ९६४
घृतावः ऋ. १०,१७,१; ८८८
घृतप्रुषः ऋ. १०,३०,८; ९०८
घृतमुषः (सोमः) ऋ. ७,४७,१; ८७१
घृतं बिभ्रतीः ऋ. १०,३,१३; ९१३। अ. ३,१३,५; ९२४
घृतश्चुतः अ. १,३३,४; ९१९
चरन्तीः नियवम् ऋ. १०,३०,१०; ९१०
चितानाः वा. य. १०,१; १०९३
जनभृतः वा. य. १०,४; १०९६
जनयः व . य. ११,३५; ११००
जनित्रीः भुवनस्य ऋ. १०,३०,१०; ९१०
जानयः अध्वरीयताम् ऋ. १,२३,१६; ८६३
जालषम् (जलम्) अ. ६,५७,२; ८६१
जीवाः अ. १९,६९,१; ९३३
जीवधन्याः ऋ. १०,३०,१४; ९१४
जीवलाः अ. १९,६९,४; ९३६
तपोजाः वा. य. १०,६; १०९७
त्रितन्नुः [सोमः] ऋ. १०,३०,९; ९०९
दिव्यः ऋ. ७,४९,२; ८७६। अ. ७,३९,१; ९१७। १९,२,४; ९३१
दुर्मित्रियाः द्विषे वा.य. २०,१९; ११०४
देवयादनः [सोमः] ऋ. १०,३०,७; ९०७

देवश्रुतः वा. य. ६,३०; ९४८
देवीः ऋ. १,२३,१८; ८६५ । ७,४७,३; ८७३ । ४९,१-४; ८७५-७८ । १०,१७,१०; ८८८ । वा. य. ४,१,१२; ९४३-४४ । ६,१०,१३; ९४६-४७ । अ. ६,२४,१; ९७१ । वा. य. ११,३८; १०९९ । १२,३५; ११००
द्विधाराः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
धन्वन्याः अ. १९,२,२; ९२९ । १,६,४; ९६४
नद्यः (निर्वचनम्) अ. ३,१३,१; ९२०
नभोजाः (सोमः) ऋ. १०,३०,९; ९०९
नावः वा. य. १०,१९; १०९८
निम्राज्यः वा. य. ६,३०; ९४८
द्रप्सः [सोमः] ऋ. १०,१७,११-१३; ८८९-९१
पत्नीः भुवनस्य ऋ. १०,३०,१०; ९१०
पत्नीः रायः ऋ. १०,३०,१२; ९१२
,, स्वपत्यस्य ऋ. १०,३०,१२; ९१२
पयस् [सुपर्णः वृषभः] अ. ७,३९,१; ९२७
पयस्वत् इत् पयः अपाम् (सोमः) ऋ. १०, १७, १४; ८९२
पयः पृञ्चतीः मधुना ऋ. १,२३,१६; ८६३
परिवाहिर्णाः वा. य. १०,३; १०९५
पावकाः ऋ. ७,४९,२-३; ८७६-८७७ । अ. १,३०, १,४; ९१६,९१९
पीताः वा. य. ४,१२; ९४४
पुनानाः ऋ. ७,४९,१; ८७५
पृश्नयः वा. य. १२,५५; ११०१
बृहत् [सुपर्णः] अ. ७,३९,१; ९२७
भद्राः अ. ३,१३,५; ९२४
भिषक्तराः भिषग्भ्यः अ. १९,२,३; ९३०
भिषक्तमाः भिषजाम् अ. ६,२४,२; ९७२
भुवनस्य जनित्रीः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
भुवनस्य पत्नीः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
भेषजम् (जलम्) अ. ६,५७,१-३; ८६०-६२
भेषजीः अ. १९,२,५; ९३२
मत्सरः (सोमः) ऋ. १०,३०,९; ९०९
मदच्युतः (सोमः) ऋ. १०,३०,९; ९०९
मदन्तीः स्वधया ऋ. ७,४७,३; ८७३
मधुमतीः वा. य. १०,१,४; १०९३,१०९६। ११,३८; १०९९ । १,२१; ९३९ । ऋ. १०,३०,४; ९०४
मधुमान् (सोमः) ऋ. ७,४७,१; ८७१ । १०,३०,७-८; ९०७-८
मधुमत्तमः (सोमः) ऋ. ७,४७,२; ८७२
मध्व उत्सः (सोमः) ऋ. १०,३०,८; ९०८
मधुश्चुतः ऋ. ७,४९,३; ८७७
मधुपृचः अ. ३,१३,५; ९२४
मयोभुवः ऋ. १०,९,१; ८७९
मातरः ऋ. १०,१७,१०; ८८८
मान्दाः वा. य. १०,४; १०९६
रसः यासां शिवतमः ऋ. १०,९,२; ८८०
राजस्वः वा. य. १०,१,६; १०९३,१०९७
रायः पत्नीः ऋ. १०,३०,१२; ९१२
राष्ट्रदाः वा. य. १०,२-४; १०९४-१०९६
रेवतीः ऋ. १०,३०,८,१२,१४; ९०८,९१२,९१४ । वा. य. १,२१; ९३९
वर्ष्याः अ. १९,२,१; ९२८
वाः (र्) अ. ३,१३,३; ९२२ निर्वचनम् । वा. य. ५, ११, ९४५
वाचः बन्धुः वा. य. १०,६; १०९७
वार्षिकीः अ. १,६,३; ९६४
वाशाः वा. य. १०,४; १०९६
विचरन् (सोमः) ऋ. १०,३०,९; ९०९
विश्वभृतः वा. य. १०,४; १०९६
विश्वभेषजीः ऋ. १,२३,२०; ८६७
वृषण ऊर्मिः वा. य. १०,२; १०९४
वृषसेनः वा. य. १०,२; १०९४
वृषभः ओषधीनाम् (सुपर्णः) अ ७,३९,१; ९२७
वृष्ट्या अभीपतः तर्पयन् (सुपर्णः) अ. ७,३९,१; ९२७
व्रजक्षितः वा. य. १०,४, १०९६
शं भवन्तः अ. १,३३,१-४; ९१६-१९। वा.य. ४,१,९४३
शक्करीः अ. ३,१३,७; ९२६ । वा. य. १०,४; ९९६
शतपवित्राः ऋ. ७,४७,३, ८७३
शविष्ठाः वा. य. १०,४; १०९६
शिवाः अ. १९,२,५; ९३२

शुचयः ऋ. ७,४९,२-३; ८७६-७७ । अ. १,३३,१,४; ९१६,९१९
शुचिः (सोमः) ऋ. ७,४७,१; ८७१
शुद्धाः वा. य. ६,१३; ९४७
श्रुष्टीवरीः ऋ. १०,३०,११; ९११
श्वात्राः वा. य. ४,१२; ९४४
संजीवाः अ. १९,६९,३; ९३५
सनिष्यदाः अ. १९,२,१; ९२८
समुद्रज्येष्ठाः ऋ. ७,४९,१; ८७५
समुद्रार्थाः ऋ. ७,४९,२; ८७६
सयोनीः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
सवृधः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
सहोजसः वा. य. १०,४; १०९६
सिन्धवः (निर्वचनम्) अ. ३,१३,१; ९२०
सिन्धवः ऋ. १,२३,१८; ८६५ । ७,४७,३-४; ८७३-७४ । १०,३०,८-९; ९०८-९
सुपत्नीः वा. य. १२,३५; ११००
सुपरिविष्टाः वा. य. ६,१३; ९४७
सुपर्णः (देवता) अ. ७,३९,१; ९२७
सुमित्रियाः नः वा.य. ६,२२; ९५१ । १०,१९; ११०४
सुवर्णाः अ. १,३३,१-३; ९१६-१८
सुशेवाः वा. य. ४,१२; ९४४
सूददोहसः वा. य. १२,५५; ११०१
सूर्यत्वचसः वा. य. १०,४; १०९६
सूर्यवर्चसः वा. य. १०,४; १०९६
सोमस्य दात्रम् वा. य. १०,६; १०९७
स्योनाः अ. १,३३,१-४; ९१६-१९
स्रवन्ति याः ऋ. ७,४९,२; ८७६
स्रोतस्याः अ. १९,२,४; ९३१
स्वपत्यस्य पत्नीः ऋ. १०,३०,१२; ९१२
स्वयंजाः ऋ. ७,४९,२; ८७६
स्वराजः वा. य. १०,४; १०९६
स्वसिचः वा. य. १०,१९; १०९८
हिरण्यवर्णाः अ. १,३३,१; ९१६ । ३,१३,६; ९२५
हैमवतीः अ. १९,२,१; ९२८

(२) सरस्वत्यादि-नदी-नामानि, तासां गुणबोधकपदानि च ।

अकव-अरी (सरस्वती) ऋ. ७,९३,३; १०८०
अघ्न्यौ (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,१३; १०३४
अदब्धा (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,७; १०४२
अदुष्कृतौ (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,१३; १०३४
अधोअक्षाः (नद्यः) ऋ. ३,३३,९; १०३०
अनन्तः (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६,६१,८; १०६६
अनुदकाः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
अपसां अपसामा (नद्या) ऋ. १०,७५,७; १०४२ (सरस्वती) ६,६१,१३; १०७१
अप्येति अन्या अन्याम् (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,२; १०२३
अमृता (सरण्यूः) ऋ. १०,१७,२; १०८२
अम्बितमा (सरस्वती) ऋ. २,८१,१६; १०५६
अर्णवः (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६,६१,८; १०६६
अवित्री (सरस्वती) ऋ. ७,९३,२; १०७९ । ऋ. ६,६१,४; १०६१
अशिपदाः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
अशिमिदाः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
असिक्नी [विशेषनाम] ऋ. १०,७५,५; १०४०
अह्रुतः (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६,६१,८; १०६६
आर्जीकीया [विशेषनाम] ऋ. १०,७५,५; १०४०
इन्द्रेषिते [विराट् शुतुद्री] ऋ. ३,३३,२; १०२३
इयाना भितज्ञुभिः नमस्यैः [सरस्वती] ऋ. ७,९५,४; १०७५
इषयन्तीः (नद्यः) ऋ. ३,३३,११; १०३३
उत्तरा सखिभ्यः [सरस्वती] ऋ. ७,९५,४; १०७५
उदन्वतीः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
उदधिः (समुद्रः) अ. ४,१५,११; १०१४
उद्वतः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०५०
उपस्तुत्या चिकितुषा (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१३; १०७१
उर्वी (विपाट्) ऋ. ३,३३,३; १०२४
उशती (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,१; १०२२

ऊर्णावती (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
ऋजीती (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,७; १०४२
ऋतावरीः (नद्यः) ऋ. ३,३३,५; १०२६ (सरस्वती)। २,४१,१८; १०५८
ऋष्वः (सरस्वती स्तनः) अ. ७,११,१; १०८७
एनी (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,७; १०४२
कुभा (सिन्धुसंगता) ऋ. १०,७५,६; १०४१
केतुः [सरस्वती स्तनः] अ. ७,११,१; १०८७
गंगा (नदीविशेषः) ऋ. १०,७५,५; १०४०
गोमती (सिन्धुसंगता) ऋ. १०,७५,६; १०४१
घृतश्चुतः (सरस्वद्भूर्मयः) ऋ. ७,९६,५; १०४७
घोरा (सरस्वती) ऋ. ६,६१,७; १०६५
चरन्ती देवकृतं योनिं अनु (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,४; १०२५
चरिष्णुः [सरस्वत्याः अमः] ऋ. ६,६१,८; १०६६
चित्रा अश्वा न (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,७; १०४२
चेतन्ती भुवनस्य भूरेः रायः (सरस्वती) ऋ. ७,९५,२; १०७४
चेतन्ती सुमतीनाम् (सरस्वती) ऋ. १,३,११; १०५२
चोदयित्री सूनृतानाम् (सरस्वती) ऋ. १,३,११; १०५२
जुषाणा (सरस्वती) ऋ. ७,९५,४; १०७५
तृष्टामा (सिन्धुसंगतानदी) ऋ. १०,७५,६; १०४१
त्वेषः (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६,६१,८; १०६६
त्रिषधस्था (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१२; १०७०
दर्शता वपुषी इव (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,७; १०४२
दाश्वान् (सरस्वान्) अ. ७,४०,१; १०५०
देवी (सरस्वती) ऋ. ६,६१,४-६; १०६२-६४। २,४१,१७; १०५७। ...(नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
देवितमा (सरस्वती) ऋ. २,४१,१६; १०५६
दैवः (सरस्वती स्तनः) अ. ७,११,१; १०८७
धरुणा (सरस्वती) ऋ. ७,९५,१; १०७३
धियावसुः (सरस्वती) ऋ. १,३,१० १०५१
धीनां अवित्री (सरस्वती) ऋ. ६,६१,४; १०६१
धृषती (सरस्वती) ऋ. २,३०,८; १०४५
नदीतमा (सरस्वती) ऋ. २,४१,१६; १०५६
नर्यः (सरस्वान्) ऋ. ७,९५,३; १०४५
निवतः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
पञ्चजाता वर्धयन्ती (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१२; १०७०
पर्ष्णी (नदीविशेषा) ऋ. १०,७५,५; १०४०
पारावतघ्नी (सरस्वती) ऋ.६,६१,२; १०६०
पावका (सरस्वती) ऋ. १,३,१०; १०५१
पिन्वमाने ऊर्मिभिः (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,२; १०२३
पिन्वमानाः पयसा (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,४; १०२५। (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
पीपिवान् (सरस्वतः स्तनः) ऋ. ७,९६,६; १०४८
पुष्टपतिः (सरस्वन्) अ. ७,४०,१; १०५०
पृथुः (सरस्वती स्तनः) अ. ७,११,१; १०८७
प्रचेतयति महः अर्णः केतुना (सरस्वती) ऋ. १,३,११; १०५३
प्रत्यङ् आ दाशुषे (सरस्वान्) अ. ७,४०,१; १०५०
प्रबाबधाना महिना विश्वा अपः (सरस्वती) ऋ ७,९५,१; १०७३
प्रवतः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
प्रिया प्रियासु (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१०; १०६८
बृहती कृता विभ्वने (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१३; १०७१
भद्रा (सरस्वती) ऋ. ७,९६,३; १०८०
भद्रं कृणवत् (सरस्वती) ऋ. ७,९६,३; १०८०
भिक्षमाणे प्रसवम् (विपाट् शुतुद्री) ३,३३,१; १०२३
मधुमन्तः (सरस्व ऊर्मयः) ऋ. ७,९६,५; १०४७
मयोभूः (सरस्वती स्तनः) ऋ. १,१६४,४९; १०५४। अ. ७,१०,१; १०८६
मरुत्वती (सरस्वती) ऋ. २,३०,८; १०५५
मरुत्सखा (सरस्वती) ऋ. ७,९६,१; १०७९
मरुद्वृधा (नदीविशेषः) ऋ. १०,७५,५; १०४०
मातृतमा (शुतुद्री) ऋ. ३,३३,३; १०२४
मेहत्नुः (सिन्धुसंगतानदी) ऋ. १०,७५,६; १०४१
यती गिरिभ्यः आ समुद्रात् (सरस्वती) ऋ. ७,९५,१; १०७४
यमुना (नदीविशेषा) ऋ. १०,७५,५; १०४०
याति रथ्या इव (सरस्वती) ऋ. ७,९५,१; १०७३
(युक्ता) द्युभ्नेभिः- (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१३; १०७१
(युक्ता) महिना महिम्ना (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१३; १०७१
युजा राया (सरस्वती) ७,९५,४; १०७५

युयुजे सुखं अश्विनं रथम् (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,९;१०४४
युवतिः (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
रयिष्ठाः (सरस्वान्) अ. ७,४०,२; १०५०
रसा (सिन्धुसंगतानदी) ऋ. १०,७५,६; १०४१
रायस्पोषः (सरस्वान्) अ. ७,४०,२; १०५०
रुशती (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,७; १०४२
रोरुवत् एति (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,३; १०३८
रोरुवत् चरति (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६,६१,८; १०६६
वक्षणाः (नद्यः) ऋ. ३,३३,१२; १०३३
वर्धयन्ती पद्मजाता (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१२; १०७०
वस्ते मधुवृधं अधि (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
वाजिनी (सरस्वती) ऋ. ६,६१,६; १०६४
वाजिनीवती (सरस्वती) ऋ. ६,६१,३-४; १०६१-१०६२ । ७,९६,३; १०८० । २,४,१८; १०५८ । १,३,१०; १०५१। (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
वि-एनसा (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,१३; १०३४
वितस्ता (नदीविशेषः) ऋ. १०,७५,५; १०४०
विपाट् (नदीविशेषः) ऋ. ३,३३,१; १०२२
विश्वदर्शतः (सरस्वान्) ऋ. ७,९६,६; १०४८
वृत्रघ्नी (सरस्वती) ऋ. ६,६१,७; १०६५
वृषभः (सरस्वान्) ऋ. ७,९५,३; १०४५
वृषा (सरस्वान्) ऋ. ७,९५,३; १०४५
शशयः (सरस्वती स्तनः) ऋ. १,१६४,४९; १०५४
शशयुः (सरस्वती स्तनः) अ. ७,१०,१; १०८६
शिवाः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
शिशुः (सरस्वान्) ऋ. ७,९५,३; १०४५
शुचिः (सरस्वती) ऋ. ७,९५,२; १०७४
शुतुद्रिः (नदीविशेषः) ऋ. ३,३३,१; १०२२ । १०,७५,५; १०४०
शुभ्रा-भ्रे (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,१; १०२३ । (सरस्वती) ऋ. ७,९५,६; १०७७ । ७,९६,१; १०७८
श्रवस्युः (सरस्वान्) अ. ७,४०,२; १०५०
श्वेती (सिंधुसंगता) ऋ. १०,७५,६; १०४१
संरिहाणे वत्समिव (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,३; १०२४
संचरन्ती समानं योनिं अनु (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,३; १०२४
सप्तधातुः (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१२; १०७०
सप्तस्वसा (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१०; १०६८
समुद्रः अ. ४,१५,५; १००८ । ऋ. ३,३३,१; १०२३। ७,९५,२; १०७४। वा.य. २०,१९; ११०४
समाराणे (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,२; १०२३
सरण्यूः (नदीविशेषः) ऋ. १०,१७,१-२; १०८१-८२
सरस्वती (नदीविशेषः) ऋ. १०,७५,५; १०४०। १,३,१०-१२; १०५१-५३ । १,१६४,४९; १०५४ । २,३०,८; १०५५ । २,४१,१६-१८; १०५६-५८ । ६,६१,१-७,१०-११,१३-१४; १०५९-६५,१०६८-६९,१०७१-७२ । ७,९५,१-२,४-६; १०७३-७७ । ९६,१,३; १०७८,१०८० । १०,१७,७-९; १०८३-८५ । अ. ७,१०,१; १०८६ । ५७,१; १०८८; ६८,१-३; १०९०-९२
सरस्वान् ऋ. ७,९६,४-६; १०४६-४८ । अ. ७,४०,१-२; १०४९-५०
सिन्धुः ऋ. ३,३३,३,५ (शुतुद्री), ९ (नद्यः); १०२४, १०२६,१०३०
,, (समुद्रः) अ. ६,२४,१; ९७१ । ऋ. १०,७५,१-४,६-९; १०३६-३९,१०४१-४४ । (विशेषनाम)
सिन्धुपत्नीः (नद्यः) अ. ६,२४,३; ९७३
सिन्धुराज्ञीः ,, ,, ,,
सीलमावती (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
सुकृता (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
सुजुष्टा (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१०; १०६८
सुदत्रः (सरस्वती स्तनः) ऋ. १,१६४,४९; १०५४ । अ. ७, १०,१; १०८६
सुपारा: (नद्यः) ऋ. ३,३३,९; १०३०
सुभगा (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३ । (विपाट्) ऋ. ३,३३,३; १०२४
,, (सरस्वती) ऋ. ७,९५,४,६; १०७५,१०७७
सुमतीनां चेतन्ती (सरस्वती) ऋ. १,३,११; १०५२
सुरथा (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
सुराधाः (नद्यः) ऋ. ३,३३,१२; १०३३
सुवासाः (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
सुसर्तुः (सिन्धुसङ्गता) ऋ. १०,७५,६; १०४१

सुसोमा (नदीविशेषः) ऋ. १०,७५,५; १०४०
सुहवः (सरस्वती स्तनः) अ. ७,१०,१; १०८६
सूनृतानां चोदयित्री (सरस्वती) ऋ. १,३,११; १०५२
स्तनः (सरस्वत्याः) ऋ. १,१६४,४९; १०५४ । अ. ७,१०,१; १०८६
स्तनयित्नुः (सरस्वत्याः) अ. ७,११,१; १०८७
स्वाम्या (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१०; १०६८
स्वश्वा (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
स्वसारः (नद्यः) ऋ. ३,३३,९; १०३०
हासमाने (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३,३३,१; १०२२
हिरण्ययी (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,८; १०४३
हिरण्यवर्तनिः (सरस्वती) ऋ. ६,६१,७; १०६५

(३) 'पर्जन्य' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजगराः (मेघाः) अ. ४,१५,९; १०१२
असुरः ऋ. ५,८३,६; ९७९ । अ. ४,१५,१२; १०१५
ईशः विश्वस्य जगतः ऋ ७,१०१,२; ९८६
उत्साः (मेघाः) अ. ४,१५,९; १०१२
ऊधः ऋ. ७,१०१,१; ९८५
कनिक्रदत् ऋ. ५,८३,१,९; ९७४,९८२
कृणोति गर्भं ओषधीनाम् ऋ. ७,१०२,२; ९९२
" " गवाम् ऋ. ७,१०२,२; ९९२
" " पर्षणीनाम् ऋ. ७,१०२,२; ९९२
कृण्वन् ओषधीनां गर्भम् ऋ. ७,१०१,१; ९८५
कृण्वन् वत्सम् ऋ. ७.१०१,१; ९८५
जीरदानुः ऋ. ५,८३,१; ९७४
दिवस्पुत्रः ऋ. ७,१०२,१; ९९१
देवः ऋ. ७,१०१,२; ९८६
निषिञ्चन् अपः ऋ. ५,८३,६; ९७९ । अ. ४,१५,१२; १०१५
पर्जन्यः ऋ. ५,८३,१-५,९; ९७४-७८,९८२ । ७,१०१,५; ९८९ । १०२,१; ९९१
पिता नः ऋ. ५,८३,६; ९७९। अ. ४,१५,१२; १०१५
प्रच्युताः मरुद्भिः (मेघाः) अ. ४,१५,७९; १०१०-१२
मधुदोघः (मेघः) ऋ. ७,१०१,१; ९८५
मीढ्वान् ऋ. ७,१०२,१; ९९१
मेघाः अ ४,१५,७-९; १०१०-१२
यंसत् त्रिधातु शरणं शर्म ऋ. ७,१०१,२; ९८६
रेतोधाः ऋ. ७,१०१,६; ९९०
वर्धनः अपाम् ऋ. ७,१०१,२; ९८६
वर्धनः ओषधीनाम् ऋ. ७,१०१,२; ९८६
वर्षम् (वृष्टिः) ऋ. ५,८३,१०; ९८३। अ. ७,१५,२-४, ६,१०,१४-१५; १००५-७,१००९,१०१३,१०१७-१८
वर्ष्यम् (वृष्ट्योपेतम्) ऋ. ५,८३,३; ९७६
वर्ष्याः (मेघाः) ऋ. ५,८३,३; ९७६
वृषभः ऋ.५,८३,१; ९७४।७,१०१,१,६; ९८५,९९०
वृष्टिः-ष्टयः ऋ. ५,८३,६; ९७९। ७,१०१,५; ९८९
सद्योजातः ऋ. ७,१०१,१; ९८५
सुदानवः (मेघाः) अ. ४,१५,९; १०१२
स्तनयन् ऋ. ५,८३,१,९; ९७५,९८२
स्वराट् ऋ. ७,१०१,५; ९८९

(४) 'मण्डूक' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजमायुः ऋ. ७,१०३,६,१०, ९९९,१००३
अभिवृष्टः ४; ९९७
उशन् ३; ९९६
कनिक्रन्दू ४; ९९७
गुह्याः न ८, १००१
गोमायुः ६,१०; ९९९,१००३
घर्माः ९, १००२
घर्मिणः ऋ. ७,१०३, ८; १००१
तप्ताः ९; १००२
तृष्यावन्तः ३, ९९६
नरः न ९; १००२
पुरुत्रा वाचं वदन्तः ६; ९९९
पृश्निः ४,६,१०; ९९७,९९९,१००३
पृश्निबाहवः अ. ४,१५,१२; १०१५

ब्राह्मणाः-णासः न ऋ. ७,१०३; १,७; ९९४,१०००। अ. ४,१५,१३; १०१६
मण्डूकाः ऋ. ७,१०३,१-२,७,१०; ९९४-९५,१०००, १००३ । अ. ४,१५,१२-१३; १०१५-१६
मण्डूकी अ. ४,१५,१४; १०१७
वदन, वदन्तः ऋ. ७,१०३,३,७; ९९६,१०००
विरूपाः ७,१०३,६; ९९९
व्रतचारिणः १; ९९४ । अ. ४,१५,१३; १०१६
शयानः २; ९९५
शशयानः संवत्सरम् १; ९९४ । अ. ४,१५,१३; १०१६
समानं नाम बिभ्रतः ६; ९९९
सिष्विदानाः ८; १००१
हरितः ४,६,१०; ९९७,९९९,१००३

(५) 'आपः' देवतान्तरसम्बन्धः ।

पयस्वान् अग्न आ गहि । तं मा सं सृज वर्चसा । ऋ. १, १३,१३; ८७०। १०,९,९; ८८७। अ. ७,८९,१; ९५९
अग्निः अप्सु अन्तः ऋ. १,२३,२०; ८६७
अग्निं याः गर्भं दधिरे अ. १,३३,१-३; ९१६-१८
अग्निः यासु जातः अ. १,३३,१; ९१६
वैश्वानरो यासु अग्निः प्रविष्टः ऋ. ७,४९,४; ८७८
इन्द्रो याभ्यः अरदद् गातुमूर्मिम् ऋ. ७,४७,४; ८७४
इन्द्रो या वज्री वृषभो ररादऋ. ७,४९,१; ८७५
इन्द्रो याभिः वावृधे वीर्याय ऋ. १०,३०,४; ; ९०४
यः (इन्द्रः) वो वृताभ्यो अकृणोदु लोकम् ऋ. १०,३०, ७; ९०७
यः (इन्द्रः) वो मह्या अभिशस्तेरमुञ्चत् ऋ. १०,३०, ७; ९०७
युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये वा. य. १,१३; ९३८;
यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये " "
याभिः इन्द्रमनयन्नत्यरातीः वा. य. १०,१; १०९३
इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तीः ऋ. १०,३०,१३; ९१३
अध्वर्यवः " " सुनुत ऋ. १०,३०,१५; ९१५
तां इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि ऋ. ७,४७,३; ८७३
यं वः प्रथमं इन्द्रपानमूर्मिमकृण्वतेळः ऋ. ७,४७,१; ८७१
तं सिन्धवो मत्सरमिन्द्रपानं ऊर्वि प्र हेत ऋ. १०,३०,९; ९०९
इन्द्राय मधुमन्तं ऊर्मिं प्र हिणोतनापः ऋ.१०,३०,७,९०७
प्रास्मै (इन्द्राय) मधुमन्तमूर्मिम् ऋ. १०,३०,८; ९०८
इन्द्राग्न्योः भागधेयीः स्थ । वा. य. ६,२४; ९५२
यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षम् ऋ. १,३३,३; ९१८
देवानां अपि यन्ति पाथः ऋ. ७,४७,३; ८७३
याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन् वा. य. १०,१; १०९३
मित्रावरुणयोः भागधेयी स्थ वा. य. ६,२४; ९५२
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अ.१,३३,२; ९१७।
अवपश्यञ्जनानाम् ऋ. ७,४९,३; ८७७
यासु राजा वरुणः (वर्तते) ऋ. ७,४९,४; ८७८
विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति ऋ. ७,४९,४; ८७८
विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ वा. य. ६,२४; ९५२
अपामुत प्रशस्तये । देवा भवत वाजिनः॥ ऋ. १,२३, १९; ८३६
यासु जातः सविता अ. १,३३,१; ९१६
सूर्यः रश्मिभिर्याः (आपः) आततान ऋ.७,४७,४; ८७४
अमूः (आपः) याः उप सूर्ये ऋ १,२३,१७; ८६४ । याभिर्वा सूर्यः सह वा. य. ६,२४; ९५२
आपः पृणीत भेषजं ज्योक् च सूर्यं दृशे ऋ. १,२३,२१; ८६८ । १०,९,७; ८८५
यासु सोमः (वर्तते) ऋ. ७,४९,४; ८७८
याभिः सोमः मोदते हर्षते च ऋ. १०,३०,५; ९०५
आसु मे सोमोऽब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा ऋ. १,२३,२०; ८६७
अग्निं च विश्वशंभुवं आपश्च विश्वभेषजीः ऋ. १०,९,६; ८८४
तमूर्मिमापो मधुमत्तमं वोऽपां नपादवत्वाशुहेमा । ऋ. ७, ४७,२; ८७२
अध्वर्यवोऽप इता समुद्रं अपां नपातं हविषा यजध्वम् । ऋ. १०,३०,३; ९०३
नि बर्हिषि धत्तन सोम्यासोऽपां नप्त्रा संविदानास एनाः । ऋ. १०,३०,१४; ९१४
अपां नपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्यः वा. य. ६,२७; ९५३

*

आयुर्वेदमन्त्राणां

वर्णानुक्रमसूची ।

अकर्म ते स्वपसो अभूम	२१०७
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव	२२११
अक्षितास्त उपसदो	११२६
अक्षितिं भूयसीम्	२१७७
अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां	१६२,२१०,२९४
अक्ष्यौ नि विध्य हृदयं	७४१
अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे	५९१
अगन्म स्वः स्वरगन्म	१९०४
अग्नये कव्यवाहनाय	२२२१
अग्निः पचन् रक्षतु त्वा	१२९५
अग्निः पूर्व आ रभतां	७७०
अग्निः प्राणान्त्सं दधाति	१७३
अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान्	८८
अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो	१२८
अग्निं भूमो वनस्पतीन्	१७३४
अग्निरिवैतु प्रतिकूलम्	१६०३
अग्निर्माग्निनावतु प्राणाय	५९७
अग्निर्होताध्वर्युष्टे बृहस्पतिः	२१६५
अग्निष्टे नि शमयतु	६८८
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत	१९९७, २१२७
अग्निस्तक्मानमप बाधतामितः	५३१
अर्मा रक्षस्तपतु यद् विदेवं	१३१४
अर्माषोमा पथिकृता स्योनं	२०७७
अग्ने अकव्यानिः कव्यादं	२५८
अग्ने चरुर्यज्ञियस्त्वाध्यरुक्षत्	१२४४
अग्नेऽजनिष्ठा महते वीर्याय	१२३१
अग्ने जायस्वादितिनाथितेयं	१२२९
अग्ने तपस्तप्यामह उप	१९२२
अग्ने पृतनाषाट् पृतनाः	१५९८
अग्ने समिधमाहार्षं	११५
अग्ने सहस्वानभिभूरभीदसि	१२३४
अग्नेः शरीरमसि	५४
अग्नेः सान्तपनस्य	१५१
अग्नेरिवास्य दहत एति	१७९
अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य	६८६
अग्नेर्घासो अपां गर्भो	३३१
अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः	१६८५
अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व	२०८२
अग्नेर्वोऽपन्नगृहस्य सदसि	९५२
अग्नेष्टे प्राणममृताद्	३९
अग्नौ तुषाना वप जातवेदसि	१२५७
अग्रमेष्योषधीनां ज्योतिषा	३९८
अग्रेणीरसि स्वावेश	२२६९
अघद्विष्टा देवजाता	६६८
अघमस्त्वघकृते शपथः	१६२०
अघशंसदुःशंसाभ्यां	२१८
अघाश्वस्येदं भेषजम्	८१७
अङ्गभेदमङ्गज्वरं	२७६
अङ्गभेदो अङ्गज्वरो	१०६
अङ्गादङ्गात् प्र च्यावय	८३२
अङ्गादङ्गाल्लोम्नोलोम्नो	१६७
अङ्गिरसामयनं पूर्वो	२१५८
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा	२०२१
अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभिः	१९७२
अङ्गिरोभिर्यज्ञियैरा गहीह	२०२२
अङ्गेअङ्गे लोम्निलोम्नि	२१६, ३००
अङ्गेअङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं	१८९
अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः	९७४
अच्छा सिन्धुं मातृतमा	१०२४
अजं च पचत पक्व	१२१९
अजः पक्वः स्वर्गे लोके	१२००

अजस्रिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठे	११९२
अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः	११९१
अजैष्माद्यासनाम च	६२९
अजैष्माद्यासनामाद्याभूम	१८४५
अजो अग्निरजमु ज्योतिराहुः	११८९
अजो भागस्तपसस्तं तपस्व	२०३२
अजो वा इदमग्रे व्यक्रमत	१२०२
अजोऽस्यज स्वर्गोऽसि त्वया	११९८
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकाद्	११९५
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते	२१०१
अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो	२२५९
अतारिषुर्भरता गव्यवः	१०३३
अति द्रव श्वानौ सारमेयौ	२०३५
अति विश्वाः परिष्ठाः	३१०
अतिसृष्टो अपां वृषभो	१८०३
अत्यन्याँ अगां नान्याँ	३७०
अत्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि	७०५, ७११
अत्रैव वोऽपि नह्यामि	२३४३
अथर्वाणो अबध्नत	१४९७
अथर्वा पूर्ण चमसं	२१३४
अथोपदान भगवो	१५५८
अदन्ति त्वा पिपीलिका	८५८
अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः	२११०
अदितेर्हस्तां स्रुचमेतां द्वितीयां	१२५२
अदित्यै व्युन्दनमसि	९४१
अदृष्टान् हन्त्यायति	७७५
अदो यत् ते हृदि श्रितं	६८४
अदो यदवधावति	५६५
अदो यदवरोचते	१९४
अद्याग्ने अद्य सवितः	१३३७
अधराचं प्र हिणोमि	५३४
अध स्वप्नस्य निर्विदे	६२३
अधा यथा नः पितरः	२१०४
अधि नो ब्रूतं पृतनासूग्रौ	१७१९
अधि ब्रूहि मा रभथाः	३३
अधि स्कन्द वीरयस्व	१३५३
अधीतीरध्यगादयम्	८२
अध्वर्यवोऽप इता समुद्रं	९०३
अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि	९०२
अनड्वद्भ्यस्त्वं प्रथमं	४०७
अनड्वाहं प्लवमन्वारभध्वं	२६४
अनभ्रयः खनमाना	९३०
अनयाहमोषध्या सर्वाः	३९२, १६१९
अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः	१२२२
अनागमिष्यतो वरानवित्तेः	१८५४
अनागोहत्या वै भीमा कृत्या	१६४४
अनाप्ता ये वः प्रथमा	८०४
अनास्माकस्तद् देवपीयुः	१९१७
अनु च्छय श्यामेन त्वचमेतां	११८६
अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं	१३७२
अनु त्वा हरिणो वृषा	१९३
अनुपूर्ववत्सां धेनुम्	१२११
अनुसूर्यमुदयतां	४८९
अनुहूतः पुनरेहि	१०४
अनेनेन्द्रो मणिना वृत्रमहन्	१४३३
अन्तकाय मृत्यवे नमः	६
अन्तकोऽसि मृत्युरसि	१८३६, १८४३
अन्तरिक्षेण पतति	१५८८
अन्तर्दधे द्यावापृथिवी	१४३६
अन्तर्दावे जुहुता स्वेतद्	७३१
अन्तर्देशा अबध्नत	१४९६
अन्तर्धिर्देवानां परिधिः	२६०
अन्यक्षेत्रे न रमसे	५३९
अन्यत्रास्मन्न्युच्यतु	१७७२
अन्यमू षु त्वं यस्यन्य	१९६७
अन्या वो अन्यामवतु	३१४
अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो	२३२
अन्यो अन्यमनुगृभ्णात्येनोः	९९७
अन्वान्त्यं शीर्षण्यमथो	६९४
अपकामं स्यन्दमाना	९२२
अप क्राम नानदती	१६२९
अपक्रीताः सहीयसीः	३३४
अपचितः प्र पतत	५१३
अपचितां लोहिनीनां	५०३

अपथेना जभारैणां	१६१३
अप नः शोशुचदघमग्ने	१७५७
अपः पिन्वौषधीर्जिन्व	११०२
अपमृज्य यातुधानान्	३९५
अपरिमितमेव यज्ञमाप्नोति	१२०४
अपवासे नक्षत्राणाम्	१९८
अपश्यं युवतिं नीयमानां	२०८६
अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं	२२४४
अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां	२२४५
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः	२२८८
अपां रसः प्रथमजोऽथो	१३३६
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः	१०८१, २०५७
अपानाय व्यानाय	६४
अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं	६१
अपामग्निस्तनूभिः संविदानो	१०१३
अपामग्रमसि समुद्रं वो	१८०८
अपमह दिव्यानाम्	९३१
अपामार्ग ओषधीनां	३८७
अपामार्गोऽप मार्ष्टु	३९४
अपामूर्जं ओजसो वावृधानं	५९४
अपां मा पाने यतमो ददम्भ	७४५
अपाकृत्य गार्हपत्यात्	२५०
अपूपवानन्नवान्	२१७१
अपूपवानपवान्	२१७४
अपूपवान् क्षीरवान्	२१६६
अपूपवान् घृतवान्	२१६९
अपूपवान् दधिवान्	२१६७
अपूपवान् द्राप्सवान्	२१६८
अपूपवान् मधुमान्	२१७२
अपूपवान् मांसवान्	२१७०
अपूपवान् रसवान्	२१७३
अपूपापिहितान् कुम्भान्	२१४५, २१७५
अपेत वीत वि च सर्पतातो	१९७५
अपेतो वातो सविता च	१७०२
अपेमं जीवा अरुधन्	२०५१
अपेमां मात्रां मिमीमहे	२०६४
अपेयं राज्युच्छत्वपे०	४९४
अपेहि मनसस्पते	६२५
अपेह्यरिरस्यरिर्वा असि	८४५
अपो अद्यान्वचारिषम्	११०६
अपो दिव्या अचायिषं	९५९
अपो देवा मधुमतीः	१०९३
अपो देवीरुपसृज	१०९९
अपो देवीरुप ह्वये	८६५
अपो निषिञ्चन्नसुरः	१०१५
अप्रजास्त्वं मातेवत्समात्	१३९२
अप्सु ते जन्म दिवि ते	१५९०
अप्सु ते राजन् वरुण	१६७६
अप्सु मे सोमो अब्रवीद्	८६७, ८८४
अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्	८६६, ९६३
अभयं मित्रावरुणाविहास्तु	७३३
अभि क्रन्द स्तनयं गर्भमा	९८०
अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधिं	१००९
अभि तेऽधां सहमानाम्	३६१
अभि त्वा जरिमाहित	७९
अभि त्वा मनुजातेन	१२६९
अभि त्वा सिन्धो शिशुमिव	१०३९
अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या	१०७६
अभिभूरहमागमं	१३४४
अभीशुना मेथा आसन्	४६४
अभूद् दूतः प्रहितो जातवेदाः	२२१५
अभ्यक्ताक्ता स्वरंकृता	१६४०
अभ्यञ्जनं सुरभि सा समृद्धिः	९५८
अभ्यावर्तस्व पशुभिः सहैनां	१२५०
अमा कृत्वा पाप्मानं	३९०
अभासि मात्रां स्वरगाम्	२०६९
अमुक्था यक्ष्माद् दुरितादवद्याद्	१६६७
अमुत्रभूयादधि यद्यमस्य	१४३
अमून् हेतिः पतत्रिणी	१५८५
अमू ये दिवि सुभगे	१९५
अमूर्या उप सूर्ये याभिः	८६४
अमूर्या यन्ति योषितो	५५५
अमोतं वासो दद्यात्	११९६
अम्बयो यन्त्यध्वभिः	८६३

अम्बितमे नदीतमे	१०५६
अयं यो अभिशोचयिष्णुः	१८१
अयं यो भूरिमूलः	६४०
अयं यो वक्रो विपरु०	८५५
अयं यो विश्वान् हरितान्	५३२
अयं लोकः प्रियतमो	११४
अयं विष्कन्धं सहते	६८
अयं स्तुवान आगमत्	७२८
अयं स्फात्यो मणिः	१४३४
अयं ग्रावा पृथुबुध्नो वयोधाः	१२८५
अयं जीवतु मा मृत	३१
अयक्ष्मियो हतवर्चा भवति	२५३
अयं ते कृत्यां विततां	१४५६
अयं दर्भो विमन्युकः	६३९
अयं देवा इदैवास्तु	२३
अयं देवानामसुरो वि राजति	१६५४
अयमग्निरुपसद्य इह	१०८
अयमिद् वै प्रतीवर्त	१४४६
अयमु ते सरस्वति वसिष्ठो	१०७७
अयमौदुम्बरो मणिः	१५५०
अयं पन्थाः कृत्येति त्वा	१६३०
अयं प्रतिसरो मणिः	१४३१
अयं मणिर्वरणो विश्वभेषजः	१४५५
अयं मणिः सपत्नहा सुवीरः	१४३२
अयं मे वरण उरसि	१४६३
अयं मे वरणो मणिः	१४५३
अयं मे हस्तो भगवान्	५५३
अयस्मये द्रुपदे बेधिष इह	१७९३
अयोजाला असुरा मायिनो	७६६
अरंघुषो निमज्य	८११
अरसं कृत्रिमं नादम्	१५५३
अरसं प्राच्यं विषम्	७९९
अरसस्त इषो शल्यो	७९५
अरसस्य शर्कोटस्य	८५६
अरसास इहाहयो	८१६
अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य	१४७८
अरात्यास्त्वा निर्ऋत्या	१४५९
अरायमसृक् पावकं	४१८
अरायान् भूमो रक्षांसि	१७४९
अरायि काणे विकटे	२३३७
अरावीदंशुः सचमानः	१४०४
अरिप्रा आपो अप	१८१२
अरिष्टोऽहमरिष्टगुः	१४६२
अरुक्षाणमिदं महत्	५६९
अर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं	१०९५
अलसालासि पूर्वा	४६९
अलगण्डून् हन्मि महता	६९३
अवकादानभिशोचानप्सु	७२४
अवकोल्बा उदकात्मान	३३१
अव जहि यातुधानान्	१५९२
अवपतन्तीरवदन्	३१७
अव मा पाप्मन्त्सृज	१७७०
अवर्षीर्वर्षमुदु पू गृभाय	९८३
अवशसा निःशसा यत्	६३१
अव श्वेत पदा जहि	८१०
अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो	२०३४
अविः कृष्णा भागधेयं	२६९
अवैरहत्यायेदमा पपत्यात्	१५८७
अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं	२४२
अश्रेष्माणो अधारयन्	१७९८
अश्वत्थे वो निषदनं	३०५; ३५८
अश्वत्थो दर्भो वीरुधां	३४३
अश्वत्थो देवसदनः	४१०, ४३९, ४५२
अश्वस्याश्वतरस्याजस्य	१३३९
अश्वस्याश्नः संपतिता सा	४३६
अश्वाः कणा गावः	११३१
अश्वावतीं प्र तर या	२०५५
अश्वावतीं सोमावतीं	३०७
अश्वो घृतेन त्मन्या समक्त	३७८
अष्ट च मेऽशीतिश्च मे	६६०
असद् भूम्याः समभवत्	४०१
असंतापं मे हृदयमुर्वी	१८२७
असंतापे सुतपसौ हुवे	१७०८
असन्मन्त्राद् दुःष्वप्न्याद्	५८५

असपत्नं नो अधराद्	१४४७
असंबाधे पृथिव्या उरौ	२०४४
असितं ते प्रलयनम्	५१९
असितस्य तैमातस्य	८३९
असुराणां दुहितासि	८०७
असुरास्त्वा न्यखनन् देवाः	४१५
असूतिका रामायणी	५१५
असौ यो अधराद् गृहः	१६५०
असौ हा इह ते मनः	२२१६
अस्थाद् द्यौरस्थाद् पृथिवी	५५९
अस्थिजस्य किलासस्य	५२०
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः	२१५, २९९
अस्थिस्रंसं परुस्रंसम्	४८३
अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु	१४५१
अस्मिन् मणावेकशतं	१५७६
अस्मिन् वयं संकसुके	२२९
अस्मै क्षत्राणि धारयन्तम्	१६८१
अस्मै मणिं वर्म बध्नन्तु	१४४०
अस्मै मृत्यो अधि ब्रूहि	३४
अस्य प्रजावती गृहे	२२४३
अस्येन्द्र कुमारस्य	६९७
अस्रामस्त्वा हविषा यजामि	१६६०
अहमस्मि सपत्नहेन्द्रो	२३४२
अहमस्मि सहमानाथो	३६८
अहं पचाम्यहं ददामि	१३१८
अहं पशूनामधिपा असानि	१५४२
अहा अरातिमवदः स्योनम्	१६६८
अहीनां सर्वेषां विषं	८२७
अहोरात्रे अन्वेषि बिभ्रत्	२६५
अहोरात्रे इदं ब्रूमः	१७३८
अह्ने च त्वा रात्र्ये च	४६
आक्ष्वैकं मणिमेकं कृष्णुष्व	५९६
आगादुदगादयं	८१
आग्मन्नाप उशतीर्बर्हिरेदं	९१५
आ घा ता गच्छानुत्तरा	१९६३
आच्छाद्विधानैर्गुपितो	४७६
आच्या जानु दक्षिणतो	१९९१, २०१७
आज्यस्य परमेष्ठिन्	७६८
आञ्जनं पृथिव्यां जातं	६०४
आ ते कारो शृणवामा	१०३१
आ ते प्राणं सुवामसि	१४८
आत्मानं पितरं पुत्रं	१११९
आ त्वागमं शंतातिभिः	५५१
आ त्वाग्न इधीमहि	२२३८
आ त्वा घृतत्वर्यमा	१३८
आदङ्गा कुविदङ्गा	५६६
आदित् पश्यामुत वा	९१५
आदित्या रुद्रा वसवः	१७४६, २२६६
आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो	१३१५
आ नयैतमा रभस्व	११८३
आ निवर्तन वर्तय	९००
आ निवर्त नि वर्तय	८९८
आनृत्यतः शिखण्डिनो	७११
आ नो भर मा परि ष्ठा	१७७७
आन्त्राणि जत्रवो गुदा	११३६
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो	१६४, २१३, २९७
आप इद् वा उ भेषजीः	१९६, २०१
आपः पृणीत भेषजं	८६८, ८८५
आपप्रुषी पार्थिवानि	१०६९
आ पर्जन्यस्य वृष्टयो०	१७८
आ पश्यति प्रति पश्यति	७५४
आपस्पुत्रासो अभि सं	१२७५
आपो अग्निं प्र हिणुत	२१९०
आपो अग्रं दिव्या	३२६
आपो अद्यान्वचारिषं	८७०, ८८७
आपो अस्मान् मातरः	८८८, १७८८
आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत	११००
आपो देवीः स्वदन्तु	९४६
आपो भद्रा घृतमिदाप	९२४
आपो यं वः प्रथमं देवयन्ते	८७१
आपो रेवतीः क्षयथा हि	९११
आपो विद्युदभ्रं वर्ष सं वो	१०११
आपो हि ष्ठा मयोभुवः	८७९
आ प्र च्यवेथामप तन्मृजेथां	२१९९

आ प्रत्यञ्चं दाशुषे दाश्वंसं	१०५०
आबयो अनाबयो रसः	४६६
आ मारुक्षद् देवमणिः	१४५०
आ मे धनं सरस्वती	१५४६
आमे सुपक्के शबले विपक्के	७४३
आयजी वाजसातमा	२२८२
आ यन्ति दिवः पृथिवीं	१२९७
आयमगन् युवा भिषक्	८२२
आ यात पितरः सोम्यासो	२२१२
आयुरस्मै धेहि जातवेदः	९२
आयुर्ददं विपश्चितं	५६४
आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो	२३३१
आयुर्यत् ते अतिहितं परा चैः	१४५
आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा	२०७९
आयुषोऽसि प्रतरणं	६०२
आयुष्मतामायुष्कृतां	१७५
आयुष्यं वर्चस्यꣳ राय०	२३२८
आ यूथेव क्षुमति पश्वो	२१०६
आ रभस्व जातवेदः	७७२, २१४८
आ रभस्वेमाममृतस्य	२७
आरादरातिं निर्ऋतिं परो	३८
आरे अभूद् विषमरौद्	८३३
आ रोहत जनित्रीं जातवेदसः	२१५१
आ रोहत दिवमुत्तमाम्	२१४२
आ रोहतायुर्जरसं वृणाना	२४०
आर्षेयेषु नि दध ओदन	१२६१
आलिगि च विलिगी च	८४०
आ व ऋञ्जस ऊर्जा व्युष्टिषु	२२८५
आवतस्त आवतः	९८
आवर्वृततीरध नु द्विधारा	९१०
आ वात वाहि भेषजं	५५०
आविष्कृणुष्व रूपाणि	७५८
आ वृषायस्व श्वसिहि	१३४३
आशरीकं विशरीकं	१५६०
आशानामाशापालेभ्यः	१६५८
आशामाशां वि द्योततां	१०११
आशीर्ण ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं	९३
आशृण्वन्तं यवं देवं	११२५
आसीनासो अरुणीनाम्	१९९३, २१२६
आसुरी चक्रे प्रथमेदं	५२२
आ सुस्रसः सुस्रसो	५०७
आसो बलासो भवतु	२८१
आहं तनोमि ते पसो	१३३८, १३४५
आहं पितॄन्त्सुविदत्राँ	१९८९, २०११
आहार्षमविदं त्वा	२५, २०९
इत एत उदारुहन्	२०२४
इतश्च मामुतश्चावतां	२१२१
इदं यत् कृष्णः शकुनि०	१७३२, १७३३
इदं यमस्य सादनं	१९८६
इदं व आपो हृदयमयं	९२६
इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे	९८९
इदं विद्वानाञ्जन सत्यं	५८६
इदं हविर्यातुधानान्	७२७
इदं हिरण्यं बिभृहि	२२०६
इदं कसाम्बु चयनेन चितं	२१८७
इदं त एकं पर ऊ त एकं	२०९०
इदं तमति सृजामि	१८०६
इदं तृतीयं सवनं कवीनाम्	९०
इदं ते हव्यं घृतवत्	१०९१
इदमहꣳ रक्षसां ग्रीवा	७५३
इदमहं तप्तं वार्बहिर्धा	९४५
इदमहमामुष्यायणेऽमुष्याः	१८६३
इदमापः प्र वहत	८६९, ८८६
इदमापः प्रवहतावद्यं	९५०, ९६१
इदमिदमेवास्य रूपं	१२०६
इदमिद् वा उ नापरं	२०७४, २०७५
इदमिद् वा उ भेषजम्	८६०
इदं पितृभ्यः प्र भरामि	२२०१
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य	१९८८, २०१२
इदं पूर्वमपरं नियानं	२१९४
इदं पैद्वो अजायत	८१४
इदं प्रापमुत्तमं काण्डम्	१३१६
इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं	१२५६

इध्मेन त्वा जातवेदः ११६
इन्द्र उक्थामदान्यस्मिन् १९३९
इन्द्र एतां ससृजे विद्धो ९७
इन्द्र जीव सूर्य जीव १५६
इन्द्रस्य कुक्षिरसि सोमधान १३६६
इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि १५७५
इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त १५६१
इन्द्रस्य प्रथमो रथो देवानाम् ८०८
इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य १६९२
इन्द्रस्य या मही दृषत् ६९१
इन्द्रस्य व इन्द्रियेण १८११
इन्द्रस्य वचसा वयं १८३
इन्द्राय भागं परि त्वा ११८४
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य ११२३
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं ११२१
इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टो ९४
इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे १०२३
इन्द्रो अस्माँ अरदद् १०२७
इन्द्रो जघ न प्रथमं ८२५
इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या २१०८
इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु ५९८
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत् ८२३, ८२४
इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याणि १९४५
इमं यम प्रस्तरमा १९७१, २०२३
इमं यवमष्टायोगैः १९९
इमं होमा यज्ञमवतेमं २२४७
इमं क्रव्यादा विवेशायं २५९
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि २३९
इममग्न आयुषे वर्चसे जय ५
इममादित्या वसुना समुक्षत १३०
इममिन्द्रं वर्धिं पप्रिमनु २६३
इममोदनं नि दधे ब्राह्मणेषु १२२८
इमं बध्नामि ते मणिं १५१३
इमं बिभर्मि वरणम् १४६४
इमं मे अग्ने पुरुषं मुमुग्ध्यय ६८७
इमं मे कुष्ठ पूरुषं ४४१
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति १०४०
इमा आपः शमु मे सन्तु ९४३
इमां खनाम्योषधिं ३६४
इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः १०७६
इमा नारीरविधवाः सुपत्नीः १४७, १९४६
इमा ब्रह्म सरस्वति १०५८
इमां मात्रां मिमीमहे २०६१
इमा या देवीः प्रदिशश्चतस्रो १६६५
इमा यास्तिस्रः पृथिवी ४५७
इमास्तिस्रो देवपुराः १३६
इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन् २३८
इमौ युनज्मि ते वही २०८०
इयं वीरुन्मधुजाता ४७८, ८५३
इयं शुष्मेभिर्बिसखा इव १०६०
इयत्तकः कुषुम्भकः ७८८
इयत्तिका शकुन्तिका ७८४
इयं ते धीतिरिदमु ते जनित्रं १२३९
इयं नारी पतिलोकं वृणाना २०८५
इयमददाद् रभसमृणच्युतं १०५९
इयमन्तर्वदति जिह्वा ११३
इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति ११३७
इयं मही प्रति गृह्णातु १२३६
इषीकां जरतीमिष्ट्वा २७०
इष्कृतिर्नाम वो माता ३०९
इष्वा ऋजीयः पततु १६०२
इह तेऽसुरिह प्राण ८
इहा यन्तु प्रचेतसो ३३०
इहैधि पुरुष सर्वेण १०३
इहैव गाव एतनेहो २३२३
इहैव स्तं प्राणापानौ ७७
इहैवाभि वि तनूभे १४१७
इहैवैधि धनसनिः २१८८
ईजानश्चितमारुक्षद् २१६४
ईजानानां सुकृतां लोकम् ११९४
ईर्ष्याया भ्राजिं प्रथमां ६८२
ईशानां त्वा भेषजानाम् ३८०
ईशाना वार्याणां क्षयन्तीः ८८३

उग्र इत् ते वनस्पते १५५९
उग्रा इव प्रवहन्तः २२९८
उच्छुष्मा ओषधीनां ३०८
उच्छुष्मौषधीनां सार १३३५
उच्छ्रयस्व बहुर्भव स्वेन ११२४
उच्छ्रयस्व वनस्पते २२६१
उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी सु १९५१
उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि मा १९५०
उज्जिहीध्वे स्तनयति ३४४
उत देवा अवहितं ५४८
उत नग्ना बोभुवती १७८४
उत नः प्रिया प्रियासु १०६८
उत स्म ते वनस्पते २२८१
उत स्या नः सरस्वती १०६५, १०७५
उत हन्ति पूर्वासिनं १६४२
उतासि परिपाणं ५८२
उतेव प्रभ्वीरुत संमितासः १२९८
उतो अस्यबन्धुकृदुतो ३९६
उत् क्रामातः परि चेद् ११८८
उत् क्रामातः पुरुष माव ९
उत्तमो अस्योषधीनाम् ४५०, १४४१
उत्तमो नाम कुष्ठासि ४४५
उत्तरं द्विषतो मामयं १५०८
उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद् १२८१
उत्तराहमुत्तर उत्तरेद् ३६७
उत्तानपर्णे सुभगे ३६५
उत्तिष्ठता प्र तरता सखायो १४३
उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः १०९१
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते १५४
उत् ते स्तभ्नामि पृथिवीं १९५१, २१३३
उत् त्वा द्यौरुत पृथिवी २१
उत् त्वा मृत्योरपीपरं २४
उत् त्वा वहन्तु मरुतः २०४६
उत् त्वाहार्षं पञ्चशलाद् ३५१
उत्थापय सीदतो बुध्न एनान् १३०१
उत् पुरस्तात् सूर्य एति ७०१, ७८१
उत् सूर्यो दिव एति ५६२
उदगातां भगवती ४९३
उदगादयमादित्यो ५४७
उदग्रभं परिपाणाद् ७६१
उदङ् जातो हिमवतः ४४४
उदन्वती द्यौरवमा २०७२
उदपप्तदसौ सूर्यः ७८२
उदपूरसि मधुपूरसि २११०
उदप्रुतो मरुतस्ताँ इयर्त ९६७
उदरात् ते क्लोम्नो नाड्या ३८३
उदह्वमायुरायुषे कृत्वे २०४७
उदायुषा समायुषा १७७
उदिमां मात्रां मिमीमहे २०६७
उदीचीनैः पथिभिर्वायुमद्भिः २४५
उदीच्यां त्वा दिशि पुरा २११६
उदीच्यै त्वा दिशे सोमाय १३२९
उदीरतामवर उत् परासः १९८७, २०१०
उदीरयत मरुतः समुद्रतः १००८
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं १९४७
उदुत्तमं वरुण पाशम् १६७८, २२१९
उदुषा उदु सूर्य उदिदं १३३३
उदेणीव वारण्यभिस्कन्दं १६०१
उदेनं भगो अग्रभीद् ७
उदेहि वेदिं प्रजया वर्धय १२४९
उद्यन्नद्य मित्रमह ५४५
उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु ७०९
उद्यानं ते पुरुष नावयानं ११
उद्योधन्त्याभि वल्गन्ति तप्ताः १३००
उद् व ऊर्मिः शम्या हन्तु १०३४
उद्वयं तमसस्परि रोहन्तो १४९
उद्वर्षिणं मुनिकेशं १३८३
उन्मुञ्चन्तीर्विवरुणा ३३३
उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न एषां १६७१
उपजीका उद् भरन्ति ५६८
उपजीवा स्थोप जीव्यासं ९३४
उप तेऽधां सहमानाम् २३४०
उप द्यामुप वेतसमवत्तरो २०८८
उप द्रव पयसा गोधु गोषमा १९१८

उप नः पितवा चर ११९०
उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा १०१७
उप प्रागात् सहस्राक्षो १७७३
उप प्रागाद् देवो अग्नी ७३४
उप प्रियं पनिप्रतं १४१
उप मौदुम्बरो मणिः १५४३
उप श्रेष्ठा न आशिषो १७०५
उपश्वसे दुवये सादिता यूयं १२४०
उप सर्प मातरं भूमिम् १९४९, २१३२
उप स्तृणीहि प्रथय पुरस्ताद् १३०८
उपहूता नः पितरः सोम्यासो २१२८
उपहूताः पितरः सोम्यासो १९९१
उपहूतो मे गोपा १८१८
उपहूतो वाचस्पतिः १४१८
उपहूतौ सयुजा स्योनौ १६१
उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां १९१९
उपावसृज त्मन्या समञ्जन् ३७९
उपास्तरीरकरो लोकम् १३०९
उपास्मान् प्राणो ह्वयताम् २२५०
उपाहृतमनुबुद्धं निखातं १६३४
उभयोरग्रभं नामास्मा २०४
उभे नभसी उभयांश्च १२७७
उभे यत् ते महिना १०७९
उरुगूलाया दुहिता ८४१
उरुः प्रथस्व महता १२४७
उरूणसावसुतृपावुदुम्बलौ २०३७
उर्वश्च मा चमसश्च मा १८२४
उशन्ति घा ते अमृतासः १९५६
उषस्पतिर्वाचस्पतिना १८५०
उषा देवी वाचा संविदाना १८४९
उषो यस्माद् दुष्वप्न्याद् १८४६
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां १६५, २१४, २९८
ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं ९४१
ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती ९५
ऊर्जो भागो निहितो यः १२४३
ऊर्जो भागो य इमं जजाना २२०४
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये २२५७
ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्नप्रमादम् १५७१
ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा २११८
ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतये १३३१
ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि २२५८
ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जव· १५८
ऋचा कपोतं नुदत १५८१
ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ ११८७
ऋचा कुम्भ्यधिहिता ११४०
ऋजीत्रेणी रुशती महित्वा १०४२
ऋणाद्दणमिव संनयन् ५९१
ऋतं हस्तावनेजनं ११३९
ऋतवः पक्षार आर्तवाः ११४३
ऋतवस्तमबध्नत १४९५
ऋतस्य पन्थामनु पश्य २१५३
ऋतस्यर्तेनादित्या १७९५
ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे १३९
ऋतून् क्लृप ऋतुपतीन् १७५०
ऋतेन तष्टा मनसा ११५१
ऋषभं मा समानानां २३४१
ऋषीणां प्रस्तरोऽसि १८२१
ऋषी बोधप्रतीबोधा १०७
एकपाद् भूयो द्विपदो २३१८
एकशतं विष्कन्धानि १८०१
एका च मे दश च मे ६५३
एकाचेतत् सरस्वती नदीनां १०७४
एको वो देवोऽप्यतिष्ठत् ९१३
एजदेजदजग्रमं चक्षुः ६१६
एत उ त्ये प्रत्यदृश्रन् ७७८
एतत् ते तत स्वधा २२२७
एतत् ते ततामह स्वधा २२२६
एतत् ते देवः सविता २१८१
एतत् ते प्रततामह स्वधा २२२५
एतत् त्वा वासः प्रथमं २०८१
एतदा रोह वय उन्मृजानः २१५०
एत देवा दक्षिणतः १७५१

एतद्धि शृणु मे वचो १६४३
एतद् वचो जरितर्मापि १०२९
एतद् वै ब्रह्मस्य विष्टपं ११७६
एतद् वो ज्योतिः पितरः ११९३
एतमिध्मं समाहितं जुषाणो १५१२
एतस्माद् वा ओदनाद् ११७८
एतास्ते अग्ने समिधः ११८, ७५१
एतास्ते असौ धेनवः ११८३
एतास्त्वाजोप यन्तु धाराः ११९७
एते नरः स्वपसो अभूतन २२९२
एते वदन्ति शतवत् २२९४
एते वदन्त्यविदन्ना मधु २२९५
एतौ ग्रावाणौ सयुजा १२३७
एदं बर्हिरसदो मेध्योऽभूः २२०१
एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि ११०७
एधोऽस्येधिषीय समिदसि ९६१
एना वयं पयसा पिन्वमाना १०२५
एनीर्धाना हरिणीः श्येनीः २१८४
एन्येका श्येन्येका कृष्णैका ५१४
एमा अगुर्योषितः शुम्भमाना १२४२
एमा अग्मन् रेवतीः ९१४
एयमगन्नोषधीनां ७२०
एयमगन् दक्षिणा भद्रतो २२००
एयमगन् बर्हिषा प्रोक्षणीभिः १९४१
एवानेवाव सा गरत् १८५९
एवेद्यूने युवतयो नमन्त ९०६
एवो ष्वस्मन्निर्ऋतेऽनेहा १७९२
एष यज्ञानां विततो १२२५
एषा त्वचां पुरुषे सं बभूव १३२२
एहि जीवं त्रायमाणं ५८०
एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा २३३४
ऐतु देवस्त्रायमाणः ४४७
ऐतु प्राण ऐतु मनः ११०
ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं १४४९
ओको अस्य मूजवन्त ५३५
ओ चित् सखायं सख्या १९५४
ओता आपः कर्मण्या ९६९
ओते मे द्यावापृथिवी ६९६
ओदन एवौदनं ११५७
ओदनेन यज्ञवचः ११४५
ओष दर्भ सपत्नान् मे १५२९
ओषधयः प्रतिगृभ्णीत ३५७
ओषधयः प्रतिमोदध्वं ३५६
ओषधयः सं वदन्ते ३२२
ओषधीः प्रति मोदध्वं ३०३
ओषधीनामहं वृण ८२८
ओषधीरिति मातरः ३०४
ओषधे त्रायस्व स्वधिते ३५५
ओ षु स्वसारः कारवे १०३०
औदुम्बरेण मणिना १५३७
कः कुमारमजनयद् १९८४
कङ्कतो न कङ्कतो ७७४
कण्वः कक्षीवान् पुरुमीढो २०९८
कण्वु फलीकरणाः ११३२
करम्भ ओषधे भव १११७
करम्भं कृत्वा तिर्थं ८००
करीषिणीं फलवतीं १५३९
कर्णाभ्यां ते कङ्कषेभ्यः २७३
कर्णा श्वावित् तदब्रवीद् ८४२
कर्शफस्य विशफस्य १७९७
कश्यपस्त्वामसृजत १४४४
कश्यपस्य चक्षुरसि ७६०
कस्ये मृजाना अति २१००
किं भ्रातासद् यदनाथं १९६४
किलासं च पलितं च ५१८
कुम्भीका दूषीकाः १८५२
कुसुम्भकस्तदब्रवीद् ७८९
कृणुत धूमं वृषणः १२३०
कृणोमि ते प्राणापानौ ३७
कृतव्यधनि विध्य तं १५९९
कृत्याकृतं वलगिनं १६१५
कृत्याकृतो वलगिनो १६४६

कृत्यादूषण एवायमथो १५५४
कृत्यादूषिरण्यं मणिः ७१
कृत्याः सन्तु कृत्याकृते १५९५
कृन्त दर्भ सपत्नान् मे १५२०
कृषन्नित् फाल आशितं २३१७
कृष्णं नियानं हरयः ९६५
कैरात पृश्न उपतृण्य ८३८
कैरातिका कुमारिका ८११
को अद्य युङ्क्ते धुरि २००१
को अस्य वेद प्रथमस्य १९५९
कोशं दुहन्ति कलशं २१८०
क्रव्यादमग्निं शशमान २२६
क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि २२५
क्रव्यादमग्निं प्र दूरं हिणोमि २२४
क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं ७४७
क्लीब क्लीबं त्वाकरं वध्रे ५००
क्लीबं कृध्योपशिनम् ४९९
क्षीरे मा मन्थे यतमो ७४४
क्षुधामारं तृष्णामारम् ३८५
क्षेत्रियात् त्वा निर्ऋत्या १६६२
खण्वखाइ खैमखाइ १०१८
खलः पात्रं स्फ्यावंसावीषे ११३५
गणास्त्वोप गायन्तु मारुताः १००७
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो १७३७
गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्यो ५४४
गर्भं ते मित्रावरुणौ १३४९
गर्भं धेहि सिनीवालि १३४८
गर्भे नु नौ जनिता दंपती १९५८
गर्भो अस्योषधीनां ४१२, १३५२
गिरिमेनाँ आ वेशय ४१९
गृहाण ग्रावाणौ सकृतौ १२३८
गोमायुरदादजमायुरदात् १००३
गोमायुरेको अजमायुरेकः ९९९
ग्रामणीरसि ग्रामणीः १५४८
ग्रावाण उपरेष्वा २३०९
ग्रावाणः सविता नु वो २३१०
ग्रावाणो अप दुच्छुनाम् २३०८
ग्राहिं पाप्मानमति तौं १२८९
ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते ९५५
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः १६३, २११, २९५
ग्रीवास्ते कृत्ये पादौ १६३६
घर्म इवाभितपन् दर्भ १५१५
घृतस्य जूतिः समना २२४९
घृतह्रदा मधुकूलाः सुरोदकाः १२२६
घृतादुल्लुप्तं मधुना समक्तं १४०
घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पयस्वान् १५७७, १९३४
चक्षुर्मुसलं काम उलूखलम् ११२९
चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि ८३७
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मे ६५६
चतस्रो दिवः प्रदिशः १४०६
चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि १२२७
चतुर्वीरं बध्यत आञ्जनं ते ५९५
चन्द्रमा अप्स्वन्तरा २२३९
चरुं पञ्चबिलमुखं ११४४
चोदयित्री सूनृतानां १०५२
छिन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे १५१८
जङ्गिडो जम्भाद् विशराद् ६७
जङ्गिडोऽसि जङ्गिडो १५५१
जनाद् विश्वजनीनात् ६८५
जनित्रीव प्रति हर्यासि १२९४
जनीयन्तो न्यग्रवः १०४६
जरायुजः प्रथम उस्रियो १८८
जरायै त्वा परि ददामि ७८
जहि दर्भ सपत्नान् मे १५३१
जाग्रद्दुष्वप्न्यं स्वप्ने १८५३
जातो जायते सुदिनत्वे २२६३
जाया इद् वो अप्सरसो ७२६
जालाषेणाभि षिञ्चत ८६१
जितम०। स आङ्गिरसानां १८८३
जितम०। स आथर्वणानां १८८५
जितम०। स आर्तवानां १८८९
जितम०। स आर्षेयाणां १८८१

जितम०। स इन्द्राग्न्योः १८९५
जितम०। स ऋतूनां १८८८
जितम०। स ऋषीणां १८८०
जितम०। स देवजामीनां १८७७
जितम०। स द्यावापृथिव्योः १८९४
जितम०। स निर्ऋत्याः १८७३
जितम०। स निर्भूत्याः १८७५
जितम०। स पराभूत्याः १८७६
जितम०। स प्रजापतेः १८७९
जितम०। स बृहस्पतेः १८७८
जितम०। स मासानां १८९०
जितम०। स मित्रावरुणयोः १८९६
जितम०। स राज्ञो वरुणस्य १८९७
जितम०। स वनस्पतीनां १८८६
जितम०। स वानस्पत्यानां १८८७
जितम०। सोऽङ्गिरसां १८८२
जितम०। सोऽथर्वणां १८८४
जितम०। सोऽभूत्याः १८७४
जितम०। सोऽर्धमासानां १८९१
जितम०। सोऽहोरात्रयोः १८९२
जितम०। सोऽह्नोः संयतोः १८९३
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकम् १८६९, १८९८, १९०२
जिह्वाया अग्रे मधु मे ४७९
जीवतां ज्योतिरभि २८
जीवलां नघारिषां ३२, ३२९
जीवला नाम ते माता ४४९
जीवला स्थ जीव्यासं ९३६
जीवानामायुः प्र तिर २६१
जीवा स्थ जीव्यासं ९३३
जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुः २०
जीवेम शरदः शतम् १२०
जुह्वदर्धार द्यामुपभृदन्तरिक्षं २१५५
ज्याके परि णो नमाइमानं ६६५
ज्येष्ठघ्न्यां जातो विचृतोः ८६
तं सिन्धवो मत्सरम् ९०९
तक्मन् भ्रात्रा बलासेन ५४२
तक्मन् मूजवतो गच्छ ५३७
तक्मन् व्याल वि गद ५३६
तं जहि तेन मन्दस्व १८६७
ततश्चैनमन्यया जिह्वया ११६२
ततश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया ११७५
ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां ११५९
ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां ११७४
ततश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां ११६०
ततश्चैनमन्याभ्य मष्ठीवद्भ्यां ११७१
ततश्चैनमन्याभ्यामूरुभ्यां ११७०
ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां ११७२
ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां ११७३
ततश्चैनमन्येन पृष्ठ्या ११६६
ततश्चैनमन्येन मुखेन ११६१
ततश्चैनमन्येन वस्तिना ११६९
ततश्चैनमन्येन व्यचसा ११६५
ततश्चैनमन्येन शीर्ष्णा ११५८
ततश्चैनमन्यैः प्राणापानैः ११६४
ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीः ११६३
ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीः ११६८
ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीः ११६७
तथा तदग्ने कृणु जातवेदो ७३९
तदग्निराह तदु सोम आह १४३५, १९०३
तदमुष्मा अग्ने देवाः परा १८५५
तदिद्धयस्य सवनं विवेरपो २२८७
तदिद् वदन्त्यद्रयो २३०५
तदु श्रेष्ठं सवनं सुनोतना २२८६
तनूस्तन्वा मे सहे १५५
तं त्वा वयं पितो वचोभिः १११८
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म १८३७, १८४४, १९१६
तं त्वौदनस्य पृच्छामि ११४८
तं धाता प्रत्यमुञ्चत १४९८
तन्वं स्वर्गो बहुधा १३२५
तपसा ये अनाधृष्याः २०४०
तमिमं देवता मणिं १५०६
तमूर्मिमापो मधुमत्तमं ८७२
तव त्ये पितो ददतः १११२

तव ल्ये पितो रसा	१११९
तव व्रते नि विशन्ते	१७०१
तस्तुवं न तस्तुवं	८४४
तस्मा अरं गमाम वो	८८१
तस्मा इदास्ये हविः	९९३
तस्मादमुं निर्भजामो	१८७०, १८९९
तस्मै घृतं सुरां मधु	१४८२
तस्य द्युमाँ असद्	२२४२
तस्यामृतस्येमं बलं	३४५
तस्येदं वर्चस्तेजः	१८७२, १९०१
तस्यौदनस्य बृहस्पतिः	११२७
ता अधरादुदीचीः	२५७
ता अपः शिवा अपो	९३२
ता अस्मभ्यमयक्ष्मा	९४४
ता अस्य सूददोहसः	११०१
ता नो अद्य वनस्पती	२२८३
ताबुवं न ताबुवं	८४३
तां मे सहस्राक्षो देवो	७५७
तार्ष्टाधीरमे समिधः	७५२
तावद् वां चक्षुस्तति	१२७३
तासु त्वान्तर्जरस्या	१६६६
तास्ते रक्षन्तु तव	१२२०
तांस्त्वं प्र च्छिन्द्धि	१४६८
तिरश्चिराजेरसितात्	८५२
तिष्ठावरे तिष्ठ पर	५५६
तिस्रश्च मे त्रिंशच्च मे	६५५
तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीः	७५५
तिस्रो दिवो अत्यतृणत्	१९२६
तिस्रो वाचः प्र वद	९८५
तीक्ष्णो राजा विषासही	१९३६
तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो	२१५७
तुभ्यं वातः पवतां	१०
तुभ्यमेव जरिमन्	१
तृतीयकं वितृतीयं	५४३
तृदिला अतृदिलासो अद्रयो	२३०३
तृन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे	१५२४
तृष्णामारं क्षुधामारम्	३८६
तृष्टामया प्रथमं यातवे	१०४१
ते अद्रयो दशयन्त्रासः	२३००
ते त्वा रक्षन्तु ते	१९
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते	२६६
तेन तमभ्यतिसृजामो	१८०७
तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं	१८५६
तेऽस्मिै परा वहन्तु	१८५१
तेषां प्रज्ञानाय यज्ञम्	११७९
ते सोमादो हरी इन्द्रस्य	२३०१
तौदी नामासि कन्या	८३१
तौ विलिकेऽवेलया०	४६८
त्रपु भस्म हरितं वर्णः	११३४
त्रयः पोषास्त्रिवृति	१२९
त्रयः सुपर्णा उपरस्य	२१५४
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता	१३४
त्रयो दासा आञ्जनस्य	५८७
त्रयो लोकाः संमिता	१२९१
त्रायन्तामिमं देवाः	५५१
त्रायन्तामिमं पुरुषं	३२५
त्रिः शाम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यः	४५१
त्रिः सप्त मयूर्यः	७८७
त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका	७८५
त्रिकद्रुकेभिः पतति	१९७९
त्रिकद्रुकेभिः पवते	२०३०
त्रिते देवा अमृजत	१७६५
त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं	७०४
त्रिषधस्था सप्तधातुः	१०७०
त्रिष्ट्वा देवा अजनयन्	१५५६
त्रीणि च्छन्दांसि कवयो	२००४
त्रीणि ते कुष्ठ नामानि	४४८
त्रीणि पदानि रुपो	२१२३
त्रेधा जातं जम्मनेदं	१३२
त्रेधा भागो निहितो	१२३३
त्र्यायुषं जमदग्नेः	१३३
त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमा	४९८
त्वं हि विश्वतोमुख	१७६२
त्वं च सोम नो वशो	४७७

त्वं देवि सरस्वत्यवा	१०६४
त्वं नो मेधे प्रथमा	१४१९
त्वमग्न ईळि (०डि०) तो जातवेदो	१९९८, २१२५
त्वमग्ने यातुधानान्	७७३
त्वमसि सहमानो	१९२७
त्वमीशिषे पशूनां	३
त्वमुत्तमास्योषधे	३२३
त्वमोदनं प्राशिस्त्वाम्	११५३
त्वं भूमिमत्येष्योजसा	१९३५
त्वं मणीनामधिपा वृषासि	१५४७
त्वया पूर्वमथर्वाणो	७
त्वया वयमप्सरसो	७१६
त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	१३५६
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति	१०८१, २०१८
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्ति	१७२
त्वष्टा युनक्तु बहुधा	१९४३
त्वामाहुर्देववर्म त्वां	१५३४
त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि	५०५
त्वे पितो महानां देवानां	१११३
त्वे विश्वा सरस्वति	१०५७
त्वेषस्ते धूम ऊर्णोतु	२२०९
दक्षिणां दिशमभि	१२७९
दक्षिणायां त्वा दिशि	२११४
दक्षिणायै त्वा दिश	१३२७
दण्डं हस्तादाददानो	२०८३
ददाम्यस्मा अवसानम्	२०६१
ददिर्हि मह्यं वरुणो दिवः	८३४
दर्भः शोचिस्तरूणकम्	८०९
दर्भेण त्वं कृणवद् वीर्याणि	१९३७
दर्भेण देवजातेन	१९२९
दर्शय मा यातुधानान्	७५९
दश च मे शतं च मे	६६२
दश मासाञ्छशयानः	१४०३
दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो	८०
दशानामेकं कपिलं समानं	९८४
दशावनिभ्यो दशकक्षेभ्यो	२२९९
दह दर्भ सपत्नान् मे	१५३०
दितिः शूर्पमदितिः	११३०
दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि	१७४३
दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो	२२८९
दिवस्त्वा पातु हरितं	१३५
दिवा मा नक्तं यतमो	७४६
दिवि जातः समुद्रजः	१४२७
दिवि ते तूलमोषधे	१९२५
दिवि स्वनो यतते	१०३८
दिवो नु मां बृहतो	९५६
दिवो नो वृष्टिं मरुतो	९७९
दिवो मूलमवततं	६७०
दिव्यं सुपर्णं पयसं	९२७
दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य	७५६
दिव्या आपो अभि	९९५
दीक्षातपसोस्तनूरसि	१२७०
दीर्घायुत्वाय बृहते रणाय	६६
दीर्घायुस्त ओषधे खनिता	२३२७
दुर्णामा च सुनामा च	१३७०
दुर्हार्दः संघोरं चक्षुः	१५६३
दुष्टचै हि त्वा भरस्यामि	१८०१
दृंह मूलमाग्रं यच्छ	४६५
दृंह प्रत्नान् जनयाजातान्	४६१
दृष्टमदृष्टमनृहम्	६९२
देवस्य सवितुः सवे	९७०
देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य	१००२
देवा अदुः सूर्यो अदाद्	८०५
देवा इमं मधुना संयुतं	४७०
देवाः कपोत इषितो	१५७९
देवाञ्जन त्रैककुदं	६०७
देवानां हेतिः परि त्वा	३५
देवानामस्थि कृशनं बभूव	१४३०
देवानामेनं घोरैः	१८५७
देवानां पत्नीनां गर्भ	१९१५
देवा यज्ञमृतवः कल्पयन्ति	२१५२
देवास्ते चीतिमविदन्	८३

देवी देव्यमधि जाता	४६०
देवीराप एष वो गर्भः	९५५
देवीरापः शुद्धा वोढ्वꣳ	९४७
देवीरापो अपां नपाद्यो	९१३
देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं	११२४,११७८
देवेभ्यो अधि जातोऽसि	४४३
देवैनसात् पित्र्यान्नाम	१६२७
देवैनसादुन्मदितम्	६८९
देवैर्दत्तेन मणिना	६९
देवो अग्निः संकसुको	२२८
देवो देवैर्वनस्पतिः	२२७३
देवो मणिः सपत्नहा	१५४४
देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं	३७७
दोष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं	३८१,१९०६
द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं	३७१
द्यावापृथिवी श्रोत्रे	११२८
द्युमन्तस्त्वेधीमहि	२०२०
द्यौर्वः पिता पृथिवी माता	७७९
द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता	४
द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु	२१७८
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु	८८९
द्रुपदादिव मुमुचानः	११०५, १७२९
द्वादशधा निहितं त्रितस्या०	१७६७
द्वाविमौ वातौ वात आ	५४९
द्विभागधनमादाय प्र	२५१
द्विषतस्तापयन् हृदः	१५१४
द्विषते तत् परा वह	१८४७
द्विषो नो विश्वतोमुखाति	१७६३
द्वे च मे विंशतिश्च मे	६५४
द्व्यास्याच्चतुरक्षात्	१३८८
धनुर्हस्तादाददानो मृतस्य	१९४८,२०८४
धर्ता ध्रियस्व धरुणे पृथिव्या	१३०६
धर्तासि धरुणोऽसि	२११९
धर्ता ह त्वा धरुणो	२१११
धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	१३५५
धाता मा निर्ऋत्या	२१०९
धाना धेनुरभवद् वत्सो	२१८२
धान्योधान्यो राजन्नितो	१६७७
धृषत् पिब कलशे सोमम्	५११
ध्रुव आ रोह पृथिवीं	२१५६
ध्रुवा एव वः पितरो	२३०४
ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा	२११७
ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवे	१३३०
ध्रुवेयं विराण्नमो अस्तु	११८२
न किल्बिषमत्र नाधारो	१३१९
नक्तंजातास्योषधे रामे	५१७
न घ्रंस्तताप न हिमो	१०२१
न च प्राणं रुणद्धि	११८१
न च सर्वज्यानिं जीयते	११८२
नडमा रोह न ते	२१७
न तं यक्ष्मा अरुन्धते	२०२
न तद् रक्षाꣳसि न	२३२९
न तिष्ठन्ति न नि मिषन्ति	१९६१
न ते नाथं यम्यत्राहमस्मि	२००१
न ते बाह्वोर्बलमस्ति	८५७
न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत्	१९५५
न त्वा पूर्वो ओषधयो	१५५७
नदीं यन्त्वप्सरसो	७१७
न भूमिं वातो अति	६१४
नमः शीताय तक्मने	५२८
नमः सनिस्नसाक्षेभ्यो	४९७
नमस्ते राजन् वरुणास्तु	१६५५
नमस्ते रुद्रास्यते	६२१
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो	४९६
नमो यमाय नमो अस्तु	१०९
नमो रुद्राय नमो अस्तु	१८०
नमो रूराय व्यवनाय	५१९
नमो वः पितर ऊर्जे	२२३१
नमो वः पितरः स्वधा	२२३५
नमो वः पितरो भामाय	२२३१
नमो वः पितरो यच्छिवं	२२३४
नमो वः पितरो यद् घोरं	२२३१

नमोऽस्त्वसिताय नमः ८५०
न यत् पुरा चकृमा कद्ध १९५७
नव च मे नवतिश्च मे ६६१
नव च या नवतिश्च १६८४
नव प्राणान् नवभिः सं १२७
नवं बर्हिरोदनाय स्तृणीत १३०३
न वा उ ते तनूं तन्वा सं २००३
न वा उ ते तन्वा तन्वं सं १९६५
न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं २३११
नवानां नवतीनां ७८६
नष्टासवो नष्टविषा ८१९
न स सखा यो न ददाति २३१४
नहि ते नाम जग्राह ३६६
नाम्नास्या नाम गृभ्णामि २३३९
नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं २१४४
नाभिरहं रयीणां १८२८
नाल्प इति ब्रूयान्नानुसेचन ११५०
नास्य केशान् प्र वपन्ति १९२४
नास्यास्थीनि भिन्द्यान्न १२०५
निःसालां धृष्णुं धिषणम् १६४८
निक्ष दर्भ सपत्नान् मे १५२३
नि गावो गोष्ठे असदन् ५६३, ७७७
निग्राभ्या स्थ देवश्रुतः ९४८
निधिं निधिपा अभ्येनम् १३१३
निररणिं सविता सावीषक् ६७४
निरितो मृत्युं निर्ऋतिं २१९
निरिमां मात्रां मिमीमहे २०६६
निर्दुरमण्य ऊर्जा १८१६
निर्द्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या १८६१
निर्बलासं मलासिनः ४८४
निर्बलासेतः प्र पतात्शुंगः ४८५
निर्लक्ष्म्यं ललाम्यं ६७३
निर्वो गोष्ठादजामसि १६४९
नि वर्तध्वं मानु गात ८९३
नीचैः खनन्त्यसुरा ५६७
नेतां विदुः पितरो नोत १९१०
नेव मांसे न पीवसि १४०८
नैनं रक्षांसि न पिशाचाः ६०
नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो १५३
नैनं घ्नन्त्यप्सरसो १४४३
नैनं प्राप्नोति शपथो ५८४
नैवाहमोदनं न मामोदनः ११५६
न्यग् वातो वाति न्यक् २००
न्यस्तिका रुरोहिथ ६७७
पक्षी जायान्यः पतति ५१०
पञ्च च मे पञ्चाशच्च मे ६५७
पञ्च च याः पञ्चाशच्च १६८२
पञ्च पदानि रुपो अन्वरोहं २२७७
पञ्च राज्यानि वीरुधां १७४८
पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै १२०८
पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि १२०७
पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमताम् ११९०
पयस्वतीः कृणुथाप ओषधीः ९६६
पयस्वतीरोषधयः ८९२, २१३५
परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां २३७
पराक् ते ज्योतिरपथं ते १६३१
पराच एनान् प्र णुद ४२०
पराञ्चं चैनं प्राशीः प्राणास्त्वा ११५४
परा यात पितर आ च यात २०९७
परा यात पितरः सोम्यासो २२१३
परि ग्राममिवाचितं ८०२
परि णो वृङ्ग्धि शपथ १७७४
परि त्वा परितत्नुना ४८२
परि त्वा पातु समानेभ्यो ५२
परि त्वा रोहितैर्वर्णैः ४९०
परि द्यामिव सूर्योऽहीनां ८४६
परि धत्त धत्त नो वर्चसा २३३२
परि धामान्यासामाशुः १६५३
परिपाणं पुरुषाणां ५८१
परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः १५६४
परि मां परि मे प्रजां ६७१
परि वः सिकतावती ५५८
परिवीरसि परि त्वा दैवीर्विशो २२७१

परि वो विश्वतो दध ८९९
परिसृष्टं धारयतु यद्धितं १३८६
परि स्तृणीहि परि धेहि २२५६
परिहस्त वि धारय १३६०
परीदं वासो अधिथाः २३३३
परीमेऽग्निमर्षत परि १५८३
परेयिवांसं प्रवतो महीः १९६८, २०१५
परेहि कृत्ये मा तिष्ठो १६४१
परेहि नारि पुनरेहि क्षिप्रम् १२४१
परोऽपेहि मनस्पाप किम् ६३०
परोऽपेत्यसमृद्धे वि १७८३
पर्जन्याय प्र गायत ९९१
पर्णो राजापिधानं चरूणाम् २२०३
पर्यस्ताक्षा अप्रचङ्कशा १३८१
पर्यावर्ते दुष्वप्न्यात् ६३६
पर्वताद् दिवो योनेः १३४६
पलालानुपलालौ शर्कु १३६८
पवस्तैरस्वा पर्यक्रीणन् ८०३
पवीनसात् तङ्गल्वात् १३८७
पश्याम ते वीर्यं जातवेदः ७७१
पश्येम शरदः शतम् ११९
पादाभ्यां ते जानुभ्यां २९१
पार्थिवस्य रसे देवा ९१
पार्थिवा दिव्याः पशवः १७४१
पावका नः सरस्वती १०५१
पिंश दर्भ सपत्नान् मे १५२१
पिङ्ग रक्ष जायमानं १३९१
पिण्डु दर्भ सपत्नान् मे १५२८
पितुं नु स्तोषं महो ११०८
पितृभ्यः सोमवद्भ्यः २२२३
पितेव पुत्रानभि सं १२८३
पिप्पली क्षिप्तभेषजी ४१३
पिप्पल्यः समवदन्त ४१४
पिशङ्गे सूत्रे खृगलं १७९९
पीपिवांसं सरस्वतः १०४८
पुत्र इव पितरं गच्छ १६००
पुत्रमद्य यातुधानीः ७३७
पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीः २१८९
पुनः कृत्यां कृत्याकृते १५९४
पुनरेता नि वर्तन्ताम् ८९५
पुनरेना नि वर्तय ८९४
पुनरेहि वाचस्पते १४१६
पुनर्देहि वनस्पते य २१४७
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः २२२
पुनस्त्वा दुरप्सरसः ६९०
पुमान् पुंसोऽधि तिष्ठ १२७२
पुरं देवानामृतं हिरण्यं १३७
पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदो ७१८
पुराणाँ अनुवेनन्तं १९८१
पुरोळाशं यो अस्मै २२४१
पुष्टिं पशूनां परि जग्रभ १५४१
पुष्टिरसि पुष्ट्या मा समङ्धि १५४९
पुष्पवतीः प्रसूमतीः ३५०
पूताः पवित्रैः पवन्ते अभ्राद् १२९६
पूर्वो अग्निष्ट्वा तपतु शं २१५९
पूषा त्वेतश्च्यावयतु प्र २०७८
पूषेम शरदः शतम् १२३
पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् २३१५
पृथग् रूपाणि बहुधा पशूनाम् १२९२
पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि १२९३, २१९८
पैद्व प्रेहि प्रथमोऽनु ८१३
पैद्वस्य मन्महे वयं ८१८
पैद्वो हन्ति कसर्णीलं ८१२
प्र केतुना बृहता भात्यग्निः २१४३
प्र क्षोदसा धायसा सस्र १०७१
प्र च्यवस्व तन्वं सं भरस्व २०९२
प्रजापतिष्ट्वा बध्नात् प्रथमम् १५७२
प्रजापतिः सलिलादा समुद्राद् १०१४
प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेण १३५८
प्रजानत्यघ्न्ये जीवलोकं २०८७
प्र णो देवी सरस्वती १०६२
प्र णो वनिर्देवकृता १७७९
प्रति दह यातुधानान् ७३५
प्रति यदापो अदृश्रमायतीः ९११

प्रतिष्ठे अभवतं वसूनां	१७०७
प्रतीची दिशामियमिद्	१२८०
प्रतीचीन आङ्गिरसो	१६२१
प्रतीचीनफलो हि	४०४
प्रतीचीने मामहनीष्वाः	१९५३
प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा	२११५
प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणाय	१३२८
प्र ते भिनद्मि मेहनं	५७७
प्र तेऽरदद् वरुणो यातवे	१०३७
प्र ते शृणामि शृङ्गे	७१४
प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु	८५
प्रत्यङ् हि संबभूविथ	४०२
प्रत्यञ्चं चैनं प्राशीरपानाः	११५५
प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा	२७१
प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुः	९०१
प्र नभस्व पृथिवि	१०२०
प्र पदोऽव नेनिग्धि दुश्चरितं	११८५
प्र पर्वतस्य वृषभस्य	१०९८
प्र पर्वतानामुशती उपस्थाद्	१०२२
प्र यच्छ पर्षि त्वरया	१३०२
प्र यत् ते अग्ने सूरयो	१७६०
प्र यदग्नेः सहस्वतो	१७६१
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां	१७५९
प्र या जिगाति खर्गलेव	२२८४
प्र या महिम्ना महिनासु	१०७१
प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य	२२१०
प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तद्	१०२८
प्र वाता वान्ति पतयन्ति	९७७
प्र विशतं प्राणापानौ	७६, १४७
प्र वो ग्रावाणः सविता	२३०७
प्र सुमतिं सवितर्वाय ऊतये	१७०४
प्र सु व आपो महिमानम्	१०३६
प्रस्तृणती स्तम्बिनीरेकशुङ्गाः	३२७
प्राचीप्राचीं प्रदिशमा	१२७८
प्राच्यां त्वा दिशि पुरा	२११३
प्राच्यै त्वा दिशेऽग्नये	१३२६
प्राण प्राणं त्रायस्वासो	६०५
प्राणापानौ मा मा हासिष्टं	१८३२
प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदां	३०
प्राणेन प्राणतां प्राण	१७६
प्राणेन विश्वतोवीर्यं	१७४
प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं सृजेमं	१११
प्राणो अपानो व्यान आयुः	२०७०
प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च	१६७९, २२२०
प्रास्मदेनो वहन्तु प्र	१८१३
प्रास्मै हिनोत मधुमन्तमूर्मिं	९०८
प्रियं प्रियाणां कृणवाम तमः	१३२०
प्रियं मा दर्भ कृणु ब्रह्म०	१९३०
प्रेमां मात्रां मिमीमहे	२०६३
प्रेव पिपतिषति मनसा	२६८
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणैः	२०१९
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिः	१९७३
प्रैणान्छृणीहि प्र मृणा रभस्व	१४५४
प्रैते वदन्तु प्र वयं वदाम	२२९३
प्रैषा यज्ञे निविदः स्वाहा	१९४०
प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया	६१५
ब्रतो बतासि यम नैव ते	१९६६
बन्धस्त्वाग्रे विश्वचया	१९०८
बभ्रे रक्षः समदमा वपैभ्यो	१२६०
बभ्रेरध्वर्यो मुखमेतद्	१२५९
बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य यवस्य	४९५
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वाग्	१९९०, २०१६
बहिर्बिलं निर्दवतु	२८२
बह्वीदं राजन् वरुणान्	६०९
बुध्येम शरदः शतम्	१२१
बृहत्पलाशे सुभगे	४७२
बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः	११४२
बृहदु गायिषे वचो	१०७८
बृहद्भावासुरेभ्योऽधि देवान्	१९०९
बृहद् वदन्ति मदिरेण	२२९६
बृहस्पतिर्म आत्मा	१८२६
बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च	१८
ब्रह्मलोको भवति ब्रह्मस्य	११७७

ब्रह्मणाग्निः संविदानो	१३९३
ब्रह्मणा तेजसा सह	१५०७
ब्रह्मणा परिगृहीता	११४१
ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता	१२४६
ब्रह्मवादिनो वदन्ति परात्वम्	११५२
ब्रह्मास्य शीर्ष बृहदस्य	१२२१
ब्राह्मणासः सोमिनो वाचम्	१००१
ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे	१०००
ब्रह्मणेन पर्युक्तासि	३९७
ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो	७९०
ब्रूमो देवं सवितारं	१७३६
ब्रूमो राजानं वरुणं	१७३५
भगो मा भगेनावतु प्राणाय	६००
भगो युनक्त्व शिषो न्वम्भा	१९४४
भद्रं वै वरं वृणते	६२६
भद्रमिद् भद्रा कृणवत्	१०८०
भद्रात् प्रक्षान्निस्तिष्ठसि	४३२
भवाशर्वावस्यतां पापकृते	१६३८
भवाशर्वाविदं ब्रूमो	१७४२
भवाशर्वौ मन्वे वा तस्य	१७१३
भवेम शरदः शतम्	१२४
भिन्द्धि दर्भ सपत्नानां	१५१६
भिन्द्धि दर्भ सपत्नान मे	१५१७
भीताय नाधमानाय	१४००
भीमा इन्द्रस्य हेतयः	७२२, ७२३
भुरन्तु नो यशमः सोत्वन्धसो	२२९०
भूतपतिर्निरजतु	१६५१
भूतं ब्रूमो भूतपति	१७५४
भूते हविष्मती भवैष ते	१७९१
भूमिष्ट्वा पातु हरितेन	१३१
भूयसीः शरदः शतात्	१२६
भूयेम शरदः शतम्	१२५
भेजा मज्ञा सं धीयतां	४२४
मधुमती स्थ मधुमतीं	१८१७
मधुमन्मे निक्रमणं	४८०
मधुमन्मूलं मधुमदग्रमासां	३३५
मधुमान्नो वनस्पतिः	४७३
मधु वाता ऋतायते	३६१
मध्वा पृञ्चे नद्यः पर्वता	८४८
मधोरस्मि मधुतरो	४८१
मनसे चेतसे धियः	६३
मनो मे तर्पयत वाचं मे	९४९
मन्थ दर्भ सपत्नान् मे	१५१७
मन्वे वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ	१७०६
मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ	१७२०
मया गावो गोपतिना सचध्वम्	२३१५
मरीचीर्धूमान् प्र विशानु	१७६६
मरुतो मा गणैरवन्तु	६०१
महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च	९८१
महान्तं कोशमुदचाभि षिञ्च	१०१९
महावृषान् मूजवतो	५३८
महो अर्णः सरस्वती	१०५३
मा गतानामा दीधीथा	१३
मा ज्येष्ठं वधीदयमम एषां	१६७०
मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिः	१९७०, २०१३
मा ते प्राण उप दसन्मो	१११
मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो	११
मा ते मनो मासोर्माङ्गानां	२०४८
मा त्वा क्रव्यादभि मंस्त	१७
मा त्वा जम्भः संहनुर्मा	२१
मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट	२०४९
मा न आपो मेधां मा	१४१२
मा नो देवा अहिर्बुधीत्	८४९
मा नो मेधां मा नो दीक्षां	१४१३
मा नो ह्रासिषुर्ऋषयो दैव्या	६५
मापो मौषधीर्हिंसीः	९५१
मा बिभेर्न मरिष्यसि	१०५
मा मां प्राणो हासीन्मो	१८३०
मा वर्नि मा वाचं नो	१७८२
मा वो रिषत् खनिता	३२०
मा सं वृतो मोप सृप	१३६९
मा स्मैतान्त्सखीन् कृरुथा	५४१

मित्र एनं वरुणो वा	२
मित्रश्च त्वा वरुणश्च	६११
मित्रावरुणा परि मामृ	२०९५
मुञ्चन्तु मा शपथ्याद् ३१६, ३५३, १७४०, १७६९	
मुञ्च शीर्षक्त्या उत कासः	१९०
मुञ्चामि त्वा वैश्वानराद्	१६५७
मुञ्चामि त्वा हविषा ७२, २०५	
मुमुचाना ओषधयो	३३९
मुहुर्गृध्यैः प्र वदति	२५४
मूर्धाहं रयीणां मूर्धा	१८२२
मृण दर्भ सपत्नान् मे	१५२६
मृत्युरीशे द्विपदां	४९
मृत्योः पदं योपयन्त	२४६
मेदस्वता यजमानाः	१७९६
मेधां सायं मेधां प्रातः	१४२३
मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं	१४२०
मेमं प्राणो हासीन्मो	१४६
मेहनाद्वनंकरणात्	१६६
मैतं पन्थामनु गा भीम	१५
मैनमग्ने वि दहो माभि	२०२८
मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः	२३१६
म्रोको मनोहा खनो निः	१८०५
य आत्मानमतिमात्रमंस	१३७९
य आधाय चकमानाय	२३१२
य आमं मांसमदन्ति	१३८९
य आशानामाशापालाः	१६५९
य आस्ते यश्चरति यश्च	६१७
य इह पितरो जीवा	२२३७
य उग्रीणामुग्रबाहुर्ययुः	१६९३
य उदानड् व्ययनं	८९७
य उभाभ्यां प्रहरसि	८१९
य ऊरू अनुसर्पति	२७८
य ऋष्णवो देवकृता	१५६५
य एनं परिषीदन्ति	१५०
यं याचाम्यहं वाचा	१७८१
यं वां पिता पचति यं	१२७६
यः कीकसाः प्रशृणाति	५०९
यः तृणोति प्रमोतम्	२७५
यः कृणोति मृतवत्सम्	१३७५
यः कृत्याकृन्मूलकृद्	१७१८
यः कृष्णः केश्यसुर	१२७१
यः पुरुषः पारुषेयो	५३३
यः प्रथमः कर्मकृत्याय	१६९७
यः प्रथमः प्रवतमाससाद	१५८४
यः संग्रामान्नयति सं युधे	१६९८
यं कुमार नवं रथम्	१९८१
यं कुमार प्रावर्तयो	१९८३
यच्चक्षुषा मनसा यच्च	३५४
यच्चिद्धि त्वं गृहेगृहे	२२८०
यज्जाग्रद् यत् सुप्तो	१८६५
यज्ञ एति विततः कल्पमानः	२१६३
यज्ञं दुहानं सदमित् प्रपीनं	१२६२
यज्ञं ब्रूमो यजमानम्	१७४७
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं	२२५३
यतो दर्भं यतो धीतं	८५४
यत् किं चेदं वरुण दैव्ये	१७८९
यत् क्षुरते यद् वपते	२५१
यत् क्षुरेण मर्चयता	४३
यत् त आत्मनि तन्वां	६७५
यत् ते अङ्गमतिहितं	२०५०
यत् ते अपोदकं विषं	८३५
यत् ते दर्भ जराभृन्युः	१५३२
यत् ते नियानं रजसं	३६
यत् ते पितृभ्यो ददतो	१६२६
यत् ते माता यत् ते पिता	१०२
यत् ते रिष्टं यत् ते द्युत्तम्	४२२
यत् ते वासः परिधानं	४२
यत् ते सोम गवाशिरो	१११६
यत् त्वं शीतोऽथो रूरः	५४०
यत् त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रुः	२२१
यत् त्वाभिचेरुः पुरुषः	९९
यत् त्वा शिक्वः परावः	१४८०
यत् पर्जन्य कनिक्रदत्	९८१

यत् प्रेषिता वरुणेन ९२१
यत्र नावप्रभ्रंशनं ४५४
यत्र वः प्रेङ्खा हरिता ७१९
यत्राश्वत्था न्यग्रोधा ७१८
यत्रैषामग्ने जनिमानि ७३०
यत्रौषधीः समग्मत ३०६
यत् समुद्रो अभ्यक्रन्दत् १५३६
यत् स्वप्ने अन्नमश्नामि ६३७
यथा कलां यथा शफं ६३५, १९१३
यथाग्ने त्वं वनस्पते १५४५
यथा त्वमुत्तरोऽसो १५७८
यथा देवेष्वमृतं यथा १४७७
यथा द्यां च पृथिवीं च ६६७
यथा नकुलो विच्छिद्य ६८१
यथा नडं कशिपुने ५०२
यथा पसस्तायादरं १३४१
यथा बाणः सुसंशितं ४८७
यथा बीजमुर्वरायां १५१०
यथाभवदनुदेयी ततो १९८५
यथा भूमिर्मृतमना ६८३
यथा मनो मनस्कैतैः ४८६
यथा यमाय हर्म्यम् २२०५
यथा यशः कन्यायां १४७२
यथा यशः पृथिव्यां १४७१
यथा यशः प्रजापतौ १४७६
यथा यशः सोमपीथे १४७३
यथा यशश्चन्द्रमसि १४७०
यथा यशोऽग्निहोत्रे १४७४
यथा यशो यजमाने १४७५
यथा वातः पुष्करिणीं १४०१
यथा वातश्चाग्निश्च वृक्षान् १४६६
यथा वातश्च्यावयति १६२८
यथा वातेन प्रक्षीणा १४६७
यथा वातो यथा मनो १४१०
यथा वातो यथा वनं १४०२
यथा वातो वनस्पतीन् १४६५
यथा वृत्र इमा आपः १८४
यथासितः प्रथयते वशाँ १३४०
यथा सूर्यस्य रश्मयः ४८८
यथा सूर्यो अतिभाति १४६९
यथा सूर्यो मुच्यते तमसः १६४७
यथा सो अस्य परिधिः ७४०
यथा स्म ते विरोहतो १३३४
यथा हव्यं वहसि जातवेदो १६८६
यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति २४१
यथेयं पृथिवी मही दाधार १३६३-६५
यथेयं पृथिवी मही भूतानां १३४७, १३६१
यथेषुका परापतद् ५७९
यथोदकमपपुषो ६८०
यदक्षेषु वदा यत् समित्यां १३२३
यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य ५२५
यदग्ने तपसा तपः १९२१
यदग्ने यानि कानि ११७
यदग्नौ सूर्ये विषं पृथिव्याम् ८२९
यदङ्ग त्वा भरताः संतरेयुः १०३१
यददः संप्रयतीरहा० ९२०
यददीव्यन्नृणमहं कृणोमि १६७३
यददोऽदो अभ्यगच्छन् १८६४
यददो देवा असुरान् ३९९
यददो पितो अजगन् १११४
यदन्नमग्नि बहुधा विरूपं १११९
यदन्नमद्म्यनृतेन देवा १११२
यदपामोषधीनां परि० १११५
यदश्नासि यत् पिबसि ४५
यदस्मासु दुष्वप्न्यं यद् ५९३
यदस्य हृतं विहृतं यत् ७४२
यदहरहरभिगच्छामि १८६६
यदाजनं त्रैककुदं ५८८
यदान्त्रेषु गवीन्योः ५७६
यदापो अघ्न्या इति ६१०, ११०३
यदाबध्नन् दाक्षायणा ५९, २३३०
यदाशसा निःशसाभिशसो ६२७
यदाशसा वदतो मे विचुक्षुभे १०८८

यदा शृतं कृणवो जातवेदो २०२९
यदासुतेः क्रियमाणायाः १९७
यदि कर्तं पतित्वा संशश्रे ४२७
यदि कामादपकामाद् २७९
यदि क्षितायुर्यदि वा ७३, २०६
यदि चतुर्वृषोऽसि सृजा० ६४५
यदि जाग्रद् यदि स्वपन्नेन १७२८
यदि त्रिवृषोऽसि सृजारसो ६४४
यदि दशवृषोऽसि सृजा० ६५१
यदि द्विवृषोऽसि सृजा० ६४३
यदि नववृषोऽसि सृजा० ६५०
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते ६२८, ६३२
यदि पञ्चवृषोऽसि सृजा० ६४६
यदिमा वाजयन्नहम् ३११
यदि वासि त्रैककुदं ५८९
यदि वासि देवकृता १५९७
यदि वृक्षादभ्यपप्तत् ९५७
यदि शोको यदि वाभि ५२७
यदि षड्वृषोऽसि सृजा० ६४७
यदि सप्तवृषोऽसि सृजा० ६४८
यदि स्त्री यदि वा पुमान् १५९६
यदि स्थ क्षेत्रियाणां १६५२
यदि स्थ तमसावृता १६४५
यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः १२६८
यदीमेनाँ उशतो अभि ९९६
यदुवक्थानृतं जिह्वया १६५६
यदेनसो मातृकृता० १०१
यदेषामन्यो अन्यस्य ९९८
यद् दण्डेन यदिष्वा ४३१
यद् दुद्रोहिथ शेपिषे १००
यद् दुर्भगां प्रस्नपितां १६२५
यद् दुष्कृतं यच्छमलं ४०५
यद् देवा देवहेडनं १७९४
यद्य प्राचीरजगन्तोरो २३३८
यद् ब्रह्मभिर्यदृषिभिः ८४७
यद्यग्निः क्रव्याद् यदि २२०
यद्यजाया पचति स्वत् १३१०
यद्यत् कृष्णः शकुनः १२८४
यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः ५२६
यद्यष्टवृषोऽसि सृजारसो ६४९
यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो १२६६
यद्येकवृषोऽसि सृजारसो ६४२
यद्येकादशोऽसि सोऽपो ६५२
यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी १६३९
यद् रिप्रं शमलं चकृम २५६
यद् वः सहः सहमाना ३२८
यद् विद्वांसो यदविद्वांसः १७२७
यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च १५४०
यद् वेद राजा वरुणो १३५१
यद् वो अग्निरजहादेकं २२१४
यद् वो देवा उपजीका ८०६
यद् वो मुद्रं पितरः सोम्यं २१०२
यद् वो वयं प्रमिनाम २२५५
यन्तासि यच्छसे हस्तौ १३५९
यं ते मन्थं यमोदनं २१९२
यं त्वमग्ने समदहस्तमु २०८९
यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको ४५५
यं देवा पितरो मनुष्या १५०९
यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि १८४८
यानियानं न्ययनं ८९६
यन्मातली रथक्रीतम् १७५६
यन्मा हुतमहुतमाजगाम ११२०
यन्मे अक्ष्योरादिद्योत ९७२
यन्मे छिद्रं मनसो यच्च १४११
यन्मेदमभिशोचति येनयेन १७१२
यन्मे माता यन्मे पिता १४६०
यमः परोऽवरो विवस्वान् २०५६
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो १४९९-१५०५
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं १४८३-८७
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय १४८८-९४
यमराते पुरोधत्से पुरुषं १७७८
यमस्य मा यम्यं कामः १९६०
यमस्य लोकादध्या बभूविथ १९०७

यमाय घृतवत् पयो २०२७
यमाय घृतवद्धविः १९७७
यमाय पितृमते स्वधा २२२४
यमाय मधुमत्तमं १९७८, २०२६
यमाय सोमं सुनुत १९७६
यमाय सोमः पवते २०२५
यमे इव यतमाने यदैतं २२७६
यमो नो गातुं प्रथमो १९६९
यं परिहरतमबिभः १३६१
यं ब्राह्मणे निदधे यं च १२०१
ययो रथः सत्यवर्त्मर्जुरश्मिः १७२६
ययोरभ्यध्व उत यद् दूरे १७१४
ययोर्वधान्नापपद्यते कश्चन १७१७
ययोः संख्याता वरिमा १७००
यश्चकार न शशाक कर्तुं ३९३, १६१४
यश्चकार स निष्करत् ८४
यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वर्विद १६९४
यश्च सापत्नः शपथो ६६९
यस्त आस्यत् पराङ्गुरिः ७९३
यस्त ऊरू विहरति १३९६
यस्ते केशोऽवपद्यते ४६२
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा १३९४
यस्ते गर्भं प्रतिमृशात् १३८४
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति ८९०
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते ८९१
यस्ते परुषि संदधौ १६१३
यस्ते पृथु स्तनयित्नुर्यः १०८७
यस्ते मदोऽवकेशो विकेशो ४७१
यस्ते स्तनः शशयुर्यो १०८६
यस्ते स्तनः शशयो यो १०५४
यस्ते हन्ति पतयन्तं १३९५
यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा १४४५
यस्त्वा देवि सरस्वति १०६३
यस्त्वा पिबति जीवति ४१९
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा १३९७
यस्त्वा स्वपन्तीं त्सरति १३७४
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा १३९८
यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते १३७३
यस्त्वोवाच परेहीति १६११
यस्मिन्त्समुद्रो द्यौर्भूमिः ११४६
यस्मिन् देवा अमृजत २२३
यस्मिन् विश्वानि भुवनानि ९८८
यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे १९८०
यस्मै त्वा यज्ञवर्धन मणे १५११
यस्य क्रूरमभजन्त दुष्कृतो १९११
यस्य जुष्टिं सोमिनः १६९६
यस्य ते वासः प्रथमवास्यं २३३५
यस्य देवा अकल्पन्त ११४७
यस्य भीमः प्रतीकाशः २७७
यस्य वशास ऋषभासः १६९५
यस्य व्रतं पशवो यन्ति १०४९
यस्य व्रते पृथिवी नंनमीति ९७८
यस्य हेतोः प्रच्यवते २७४
यस्या अनन्तो अहतः १०६६
यस्याञ्जन प्रसर्पसि ५८३
यस्यास्त आसनि घोरे १७९०
यस्येदं प्रदिशि यद् १६९१
यस्यौषधीः प्रसर्पथ ३१२
या अन्येद्युरुभयद्युः ५३०
या आपो दिव्या उत ८७६
या ओषधयः सोमराज्ञीः ३५२
या ओषधीः पूर्वा जाता ३०१
या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः ३१८
या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः ३१९
याः कृत्या आङ्गिरसीर्याः १४३९
याः पार्श्वे उपर्षन्ति २८६
याः प्रवतो निवत उद्वतः १०३५
याः फलिनीर्या अफला ३१५
याः सीमानं विरुजन्ति २८४
याः सुपर्णा आङ्गिरसीः ३४७
याः सूर्यो रश्मिभिराततान ८७४
या गुदा अनुसर्पन्ति २८८
यां गृत्स्यस्त्रिपश्चाशीः १५५१
या प्रैष्या अपचितो ५०८

यां कल्पयन्ति वहतौ	१६१६
या जामयो वृष्ण इच्छन्ति	३६३
यां जमदग्निरखनद्	४६३
यातुधानस्य सोमप	७२९
या ते धामान्युश्मसि	२२७०
या देवीः पञ्च प्रदिशो	१७५५
या नः पीपरदश्विना	१४१४
यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः	१६११
यां ते चक्रुः कृकवाकावजे	१६०५
यां ते चक्रुः पुरुषास्थे	१६१२
यां ते चक्रुः सभायां	१६०९
यां ते चक्रुरमूलायां	१६०७
यां ते चक्रुरामे पात्रे	३८३, १६०४
यां ते चक्रुरेकशफे	१६०६
यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये	१६०८
यां ते चक्रुः सेनायां	१६१०
यां ते धेनुं निपृणामि	२०५४
यां ते बर्हिषि यां श्मशाने	१६३३
यां ते रुद्र इषुमास्यद्	६२०
यां त्वा गन्धर्वो अखनद्	१३३२
यान् वो नरो देवयन्तो	२२६४
या पूर्वं पतिं वित्त्वाथ	१२०९
या बभ्रवो याश्च शुक्रा	३२४
याभिः सोमो मोदते	९०५
या मज्ञो निर्धयन्ति	२८९
यामन्यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं	१६८७
या महती महोन्माना	१७८५
यामृषयो भूतकृतो	१४२२
यां मेधामृभवो विदुर्यां	१४२१
या रोहन्त्याङ्गिरसीः	३४०
या रोहिणीर्देवत्याः	४९१
यावङ्गिरसमवथो यावगस्तिं	१७२२
यावतीः कियतीर्येमाः	३३६
यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा	७९१
यावतीनामोषधीनां गावः	३४८
यावतीषु मनुष्या भेषजं	३४९
यावदग्नेनं पारस्वतं	१३४२
यावद् दाताभिमनस्येत	११५१
यावन्तो अस्याः पृथिवीं	१३११
यावारेभाथे बहु साकम्	१७१६
या शशाप शपनेन	३८१, ७३६
याश्चाहं वेद वीरुधो	३४१
याश्चेदमुपशृण्वन्ति	३२१
यासां राजा वरुणो याति	८७७, ९१७
यासां देवा दिवि कृण्वन्ति	९१८
यासु राजा वरुणो यासु	८७८
यास्तिरश्चीरुपर्षन्ति	२८७
यास्ते धाना अनुकिरामि	२१४६, २१७६, २१९३
यास्ते शतं धमनयो	६२१
यास्ते शोचयो रंह्यो	२०३३
या हृदयमुपर्षन्ति	२८५
युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं	२२७१
युनक्तु देवः सविता प्रजानन्	१९३८
युवा सुवासाः परिवीत आगात्	२२६२
युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये	९३८
यूयमग्ने शंतमाभिस्तनूभिः	२१६०
ये अंस्या ये अङ्गया	७८०
ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां	८३०
ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा	२०००, २०५९
ये अग्रवः शशमानाः परेयुः	२०७१
ये अङ्गानि मदयन्ति	२९०
ये अत्रयो अङ्गिरसो नवग्वा	२१०३
ये अपीषन् ये अदिहन्	७९६
ये अमृतं बिभृथो ये हवींषि	१७०९
ये अन्नो जातान् मारयन्ति	१३८५
ये उखिया बिभृथो ये वनस्पतीन्	१७१०
ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन	१७११
ये कुकुन्धाः कुकूरभाः	१३७७
ये किमयः पर्वतेषु वनेषु	६९५
ये किमयः शितिकक्षा	७००
ये च जीवा ये च मृता	२२०७
ये चित् पूर्व ऋतसाता	२०३९
ये चेह पितरो ये च नेह	१९९९
ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना	१९९५, २१३०

ये ते नाड्यौ देवकृते	५०१
ये ते पूर्वे परागता	२१४९
ये ते सरस्व ऊर्मयो	१०४७
येऽत्र पितरः पितरो	२२३६
ये त्रयः कालकाञ्जा	१५८९
ये त्रिषप्ताः परियन्ति	१४१५
ये त्वा कृत्वालेभिरे	१६२४
ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा	२०५२
ये देवा दिविषदो	१७४५
ये देवा दिविष्ठ ये पृथिव्यां	५७
ये देवानामृत्विजो ये च	२२५४
येन ऋषयो बलमद्योतयन्	१६८९
येन कृशं वाजयन्ति	१३४४
येन देवा अमृतमन्वविन्दन्	१६९०
येन देवा असुराणाम्	७६५
येन देवा ज्योतिषा द्याम्	१२६५
ये नः पितुः पितरो ये	२०७३, २११९, २१३७
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो	१९९४
येन सोम साहन्त्यासुरान्	७६४
येन सोमादितिः पथा	७६३
येना श्रवस्यवश्चरथ	१८००
येना सहस्रं वहसि	११९९
ये निखाता ये परोप्ता	२०५८
ये पूर्वे वध्वो यन्ति	१३८०
येभिः पाशैः परिवितो	१६७१
ये मृत्यव एकशतं	५३
ये यक्ष्मासो अर्भका	१५६८
ये युध्यन्ते प्रधनेषु	२०४१
ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं	२३३६
येवाषासः कष्कषासः	७०२
ये वृकणासो अधि क्षमि	२२६५
ये षो देवाः पितरो ये च	५६
ये शालाः परिनृत्यन्ति	१३७६
येऽश्रद्धा धनकाम्या	१६७
येषां पश्चात् प्रपदानि	१३८१
येषां प्रयाजा उत वानुयाजा	५८
ये सत्यासो हविरदो	१९९६, २१३१
ये सूर्यं न तितिक्षन्त	१३७८
ये सूर्यत् परिसर्पन्ति	१३९०
येऽस्माकं पितरस्तेषां	२२१८
ये स्राक्त्यं मणिं जना	१४३७
यो अक्ष्यौ परिसर्पति	६९८
यो अग्निः कव्यात् प्रविवेश	२२३
यो अग्नयो यः कव्यो	१८७
यो अग्रतो रोचनानां	१४२५
यो अनिध्मो दीदयदप्स्वन्तर्य	९०४
यो अन्तरिक्षेण पतति	७६१
यो अस्य समिधं वेद	१५१
योगक्षेमं व आदाय	२३४५
यो गर्भमोषधीनां	९९१
यो गिरिष्वजायथा	४३७
यो जायमानः पृथिवीम्	१९३१
यो दधे अन्तरिक्षे न महा	२१४१
यो देवाः कृत्यां कृत्वा	३८९
यो न जीवोऽसि न मृतो	६३३
यो नः पाप्मन् न जहासि	१७७१
यो नः शपादशपतः	१७७५, १७७६
यो नो अग्निः पितरो हृत्सु	२४९
यो नो अग्निर्गार्हपत्यः	१५३८
यो नो अश्वेषु वीरेषु	२३१
योऽप्स्वग्निरिति तं सृजामि	१८०९
यो ममार प्रथमो मर्त्यानां	२०९६
यो मे राजन् युज्यो वा	६२४
यो यजाति यजात इत्	२२४०
यो व आपोऽग्निराविवेश	१८१०
यो वर्धन ओषधीनां	९८६
यो वः शिवतमो रसः	८८०
यो वा अभिभुवं नामर्तुं	१११८
यो वा उद्यन्तं नामर्तुं	१११७
यो वै कुर्वन्तं नामर्तुं	१११४
यो वै मैदाघं नामर्तुं	१११३
यो वै पिम्बन्तं नामर्तुं	१११६
यो वै संयन्तं नामर्तुं	१११५

यो वो वृताभ्यो अकृणोदु ९०७
योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा १८६०
यो हरिमा जायान्यो ६०३
यौ ते दूतौ निर्ऋत इदम् १५८६
यौ ते बलास तिष्ठतः १८६
यौ ते मातोन्ममार्ज १३६७
यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ २०३६
यौ भरद्वाजमवथो यौ १७२४
यौ मेधातिथिमवथो यौ १७२५
यौ व्याघ्रावरूढौ जिघत्सतः १५९
यौ श्यावाश्वमवथो वध्र्यश्वं १७२३
रक्षन्तु त्वाग्नयो ये अप्स्वन्ता १६
रथीव कशयाश्वाँ अभिक्षिपन् ९७६
रमध्वं मे वचसे सोम्याय १०२६
रयिं मे पोषं सवितोत वायुः १७०३
रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् १९६१
रात्री माता नभः पिता ४२८
रिश्यपदीं वृषदतीं ६७६
रिश्यस्येव परीशासं १५९३
रुजन् परिरुजन् मृणन् १८०४
रुजश्च मा वेनश्च मा ह्रासिष्टां १८२३
रुद्रस्य सूत्रमस्यमृतस्य नाभिः ५६१
रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत् ७३२
रुन्धि दर्भ सपत्नान् मे १५२५
रूपंरूपं वयोवयः २२४८
रेवतीरनाधृषः सिषासवः ४५९
रोहण्यसि रोहणी ४२१
रोहेम शरदः शतम् १२२
लोम लोम्ना सं कल्पया ४२५
वध्रयस्ते खनितारो ७९७
वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैः ३७२
वनस्पतिः सह देवैर्न आगन् १२८६
वनस्पतेऽव सृजा रराणः ३७४
वनस्पते स्तीर्णमा सीद बर्हिः १३०४
वरुणेन प्रव्यथिता १४६१
वरुणो वारयाता अयं १८१, १४५७
वरोहो वेद वीरुधं ३४६
वर्चसा मां समनक्त्वग्निर्मेधां २०९४
वर्चसा मां पितरः सोम्यासो २०९३
वर्चसो द्यावापृथिवी संग्रहणी २२५१
वर्म मह्यमयं मणिः १४७९
वर्म मे द्यावापृथिवी १४४८
वर्ष वनुष्वापि गच्छ देवान् १३२४
वषट् ते पूषन्नस्मिन्त्सुतौ १४०५
वसोर्या धारा मधुना प्रपीना १३१२
वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो १९०५
वाङ् म आसन्नसोः प्राणः १५७
वाजः पुरस्तादुत मध्यतो ३६१
वाजो नः सप्त प्रदिशः ३५९
वाजो नो अद्य प्रसुवाति ३६०
वात इव वृक्षान् नि मृणीहि १६३२
वाताज्जातो अन्तरिक्षाद् १४२४
वातात् ते प्राणमविदं २९
वातं जूमः पर्जन्यम् १७३९
वायोः पूतः पवित्रेण १७८७
वायोः सवितुर्विदथानि १६९९
वारिदं वारयातै ७९८
वि ग्राम्याः पशव आरण्यैः १७०
वि जिह्रीष्व बार्हतसामे १३५४
वि जिह्रीष्व वनस्पते १३९९
वि ते भिनद्मि मेहनं १४०९
वि ते मदं मदावति ८०१
वि ते मुञ्चामि रशनां १६८०
वि ते हनव्यां शरणिं ६४१
वि देवा जरसावृतन् १६८
विद्म ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद् १९१२
विद्म ते स्वप्न जनित्रं प्राच्याः १८३५
विद्म ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां ६३४, १८४२
विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः १८३८
विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः १८४०
विद्म ते स्वप्न जनित्रमभूत्याः १८३९
विद्म ते स्वप्न जनित्रं पराभूत्याः १८४१
विद्म वै ते जायान्म जानं ५११

विद्मा शरस्य पितरं चन्द्रं ५७४
विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं ५७१, ६६४
विद्मा शरस्य पितरं मित्रं ५७२
विद्मा शरस्य पितरं वरुणं ५७३
विद्मा शरस्य पितरं सूर्यं ५७५
विद्रधस्य बलासस्य १८५
विध्य दर्भ सपत्नान् मे १५२२
विध्याम्यासां प्रथमा ५०४
विभिन्दती शतशाखा ४००
विमोक्थ मार्द्रपविश्च मा १८२५
वि लपन्तु यातुधाना ७६९
विवस्वान् नो अभयं कृणोतु २१३९
विवस्वान् नो अमृतत्वे दधातु २१४०
वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति ९७५
विश्वरूपं चतुरक्षं किमिं ७१०
विश्वरूपां सुभगाम् ४०९
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन् १९९०
विश्वान् देवानिदं ब्रूमः १७५२
विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ २०९९
विश्वे देवा महत इन्द्रो ८९
विश्वे देवा वसवो रक्षते० ५५
विषितं ते वस्तिबिलं ५७८
विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति १२२३, १२२४
विष्णुर्युनक्तु बहुधा तपांसि १९४१
विष्णुर्योनिं कल्पयतु १३५०
विष्णोः शर्मासि शर्म १२७१
विष्वञ्चस्तस्माद् यक्ष्मा २०३
विसल्पस्य विद्धरय २९१
विहृदो नाम ते पिता ४६७
वीदं मध्यमवासृपद् ६०८
वीमां मात्रां मिमीमहे २०६५
वीमे द्यावापृथिवी इतो १७१
वीहि स्वामाहुतिं जुषाणो ५१६
वृक्षं यद् गावः परिषस्वजाना ६६६
वृक्षंवृक्षमा रोहसि वृष० ४३०
वृत्रस्यासि कनीनकः ६१२
वृश्च दर्भ सपत्नान् मे १५१९
वृषभोऽसि स्वर्ग ऋषीन् १२६१
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः २२०८
वृषा मे रवो नभसा न ८३६
वृषा वो अंशुर्न किला २१०२
वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा १०९४
वैयाघ्रो मणिर्वीरुधां ३१७
वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं १२६७
वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं २४४
वैश्वानरः पविता मा पुनातु १६७५
वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोः १८५८
वैश्वानराय प्रति वेदयामि १६७४
वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि २१८५
व्यवात् ते ज्योतिरभूद् २६
व्याकरोमि हविषाहमेतौ २४८
व्याघ्रेऽह्यजनिष्ट वीरो ८७
व्यार्त्या पवमानो दि १६९
व्रजं कृणुध्वं स हि वो २२५२
व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो ५०६
व्रीहिमत्तं यवमत्तम् १६०
शाक्वरी स्थ पशवो १८३४
शङ्खेनामीवाममतिं १४२६
शं च नो मयश्च नो ८६२
शण्डश्च मा जक्षिडश्च ७०
शतं या भेषजानि ते ५६०
शतं वीरानजनयच्छतं १५६९
शतं वो अम्ब धामानि ३०२
शतकाण्डो दुश्च्यवनः १९२३
शतं च न प्रहरन्तो १५७४
शतं च मे सहस्रं च ६६३
शतं जीव शरदो वर्धमानः ७५, २०८
शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं २१७९
शतं ते दर्भ वर्माणि १५३३
शतं तेऽयुतं हायनान् ४७
शतपवित्राः स्वधया मदन्तीः ८७३
शतमहं दुर्णाम्नां १५७१
शतवारो अजीजनद् यक्ष्मान् १५६६

शतस्य धमनीनां	५५७
शतेन मा परि पाहि	४०३
शं त आपो धन्वन्याः	९२९
शं त आपो हैमवतीः	९२८
शं तप मति तपो अग्ने	२०६०
शं ते अग्निः सहाग्निरस्तु	१६६३
शं ते नीहारो भवतु	२१३८
शं ते वातो अन्तरिक्षे	१६६४
शं न आपो धन्वन्याः	९६४
शं नो देवी पृश्निपर्ण्यशं	४१६
शं नो देवीरभिष्टय	८८२
शं नो भवन्त्वप	५७०
शं नो वातो वातु	६३८
शप्तारमेतु शपथो यः	६७२
शममयः समिद्धा आ	२१६२
शममे पश्चात् तप शं	२१६१
शमिता नो वनस्पतिः	३७३
शं मे परस्मै गात्राय	१९१
शरदे त्वा हेमन्ताय	४८
शरासः कुशरासो	७७६
शर्म यच्छत्वोषधिः	४०८
शल्याद् विषं निरवोचं	७९४
शिवः कपोत इषितो	१५८०
शिवा नः शंतमा भव	१०९२
शिवानमीनप्सुषदो हवामहे	१८१५
शिव भिष्टे हृदयं तर्पयामि	९६
शिवास्ते सन्त्वोषधय उत्	४१
शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी	४०
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः	९१९, १८१४
शिवो वो गोष्ठो भवतु	२१२४
शिवौ ते स्तां व्रीहियवौ	४४
शीर्षक्तिं शीर्षामयं	२७२
शीर्षण्वती नस्वती कर्णिनी	१६१७
शीर्षलोकं तृतीयकं	४५६
शीर्षामयमुपहत्याम्	४४६
शुकेषु ते हरिमाणं	४९२, ५४६
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया	१२४५, १२५५
शुम्भनी द्यावापृथिवी	१७६८
शुम्भन्तां लोकाः पितृषदना	२२१७
शुष्यतु मयि ते हृदयम्	६७८
शूद्रकृता राजकृता	१६१८
शृङ्गाणिवेच्छृङ्गिणां सं ददृश्रे	२२६८
शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते	१५६७
शृतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु	१२५३
श्याममयोऽस्य मांसानि	११३३
श्यामश्च त्वा मा शबलः	१४
श्यामा सरूपंकरणी	५२४
श्यावदता कुनखिना	४०६
श्राम्यतः पचतो विद्धि	१२५८
श्रेष्ठमसि भेषजानां	४५८
श्वेवैकः कपिरिवैकः	७२५
षट् च मे षष्टिश्च मे	६५८
षष्ट्यां शरत्सु निधिपा	१३०५
स इद्भोजो यो गृहवे	२३१३
स इद् व्याघ्रो भवत्यथो	१४४२
स उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव	४२६
संयतं न वि ष्परद्	८१५
सं राजानो अगुः समृणानि	१९१४
सं वः सृजत्वर्यमा	२३२१
संवत्सरं शशयाना	९९४, १०१६
संवननी समुष्पला	६७९
सं विशन्त्विह पितरः	२०५३
सं वो गोष्ठेन सुधदा	२३२०
सं वोऽवन्तु सुदानव	१०१०
सं सं स्रवन्तु नद्यः	२२४६
सं हि शीर्ष्ण्यग्रभं	८२६
स प्राद्याः पाशान्मा मोचि	१८७१
संकसुको विकसुको	२३०
सं क्रामतं मा जहीतं शरीरं	१४४
संख्याता स्तोकाः पृथिवीं	१२९९
सं गच्छस्व पितृभिः सं	१९७४, २१३६
सचेतसौ दुहणो यौ	१७२१
स जक्षिवस्य महिमा	१५५५

संजग्माना अबिभ्युषीः २३२२
संजीवा स्थ सं जीव्यासं ९३५
सत्यजितं शपथयावनीं ३८१
सत्यं चर्तं च चक्षुषी विश्वं १२०३
सत्याय च तपसे देवताभ्यो १३१७
स नः सिन्धुमिव नावाति १७६४
सनादग्ने मृणसि यातुधानान् ७४८
स नो रक्षतु जन्निडो १५६२
सं ते मज्जा मज्ञा भवतु ४२३
सं ते शीर्ष्णः कपालानि २९३
सं ते हन्मि दता दतः ८५१
सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वान् १९३२
सपत्नक्षयणं दर्भं द्विषतः १५३५
सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते १०८९, २२७९
सप्त च मे सप्ततिश्च मे ६५९
सप्त च याः सप्ततिश्च १६८३
सप्त मेधान् पशवः पर्यगृह्णन् १२८७
सप्तर्षीन् वा इदं भूमो १७४४
समग्नयो विदुरन्यो अन्यं य १३२१
समं ज्योतिः सूर्येण ३८८
समस्मिल्लोके समु देवयाने १२७४
समाचिनुष्वानुसंप्रयाह्यग्ने १२६४
स मा जीवीत् तं प्राणो १८६८
समानलोको भवति १२१०
समानां मासामृतुभिष्ट्वा वयं ६२
समाप ओषधीभिः सम् ९३९
समाहर जातवेदो ७४९
समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्ताद् २२६०
समिद्धो अग्न आहुत २३४
समिद्धो अग्ने समिधा समिध्यस्व १२३२
समिन्धते अमर्त्यं २१९१
समिन्धते संकसुकं स्वस्तये २२७
समिमां मात्रां मिमीमहे २०६८
समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवो १००५
समीक्षयस्व गायतो नभांसि १००६
समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः १००४
समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् ८७५
समुद्रस्य त्वा क्षित्या ९५४
समुद्राज्जातो मणिः १४२८
समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः ११०४
स मृत्योः पड्वीशात् पाशान्मा १९००
समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः २३१९
सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन २२७४
सं माग्ने वर्चसा सृज ९६०
सं मा सिञ्चन्तु मरुतः १४१
स य एवं विदुष उपद्रष्टा ११८०
स य ओदनस्य महिमानं ११४९
सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि १०५५
सरस्वति देवनिदो नि बर्हय १०६१
सरस्वति या सरथं ययाथ १०८४, २००९, २१९७
सरस्वति व्रतेषु ते १०९०
सरस्वतीं यां पितरो हवन्ते १०८५
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते १०८३, २००७, २१९५
सरस्वतीमनुमतिं भगं १७८०
सरस्वतीं पितरो हवन्ते २००८, २१९६
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो १०७२
सरूपा नाम ते मा ता ५२३
सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ ६९९
स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां ९९०
सर्वाः समग्रा ओषधीः ३४२
सर्वानग्ने सहमानः सपत्नान् २६२
सर्वान्त्समागा अभिजित्य १३०७
सर्वान् देवानिदं भूमः १७५३
सर्वेषां च क्रिमीणां ७०८
सर्वो वै तत्र जीवति ५१
स वावृधे नर्यो योषणासु १०४५
सवितः श्रेष्ठेन रूपेण १३५७
सवितुर्वः प्रसव उत्पुनामि ९३७, ९४०, १०९७
सप्तर्षीस्तदपसो दिवा ९६८
सहमानेयं प्रथमा ४१७
सहस्रणीथाः कवयो २०४२
सहस्रधामन् विशिखान् ३९१
सहस्रधारं शतधारमुत्समक्षितं २१८६
सहस्रपृष्ठः शतधारो अक्षितो १२४८

सहस्रशृङ्गो वृषभो	६१३
सहस्राक्षेण शतवीर्येण	७४, २०७
सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवे	१७१५
सहस्रार्घः शतकाण्डः	१९३३
सहस्व नो अभिमातिं	१९२८
साकं यक्ष्म प्र पत	३१३
साकं सजातैः पयसा सह	१२३५
सा नो विश्वा अति द्विषः	१०६७
सिंहस्येव स्तनथोः सं	३३८
सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः	९७३
सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां	६०६
सिलाची नाम कानीनो	४३५
सीताः पर्शवः सिकता	११३८
सीसे मलं सादयित्वा	२३६
सीसे मृड्ढ्वं नडे मृडद्ध्वं	२३५
सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो	२१०५
सुक्षेत्रिया सुगातुया	१७५८
सुखं रथं युयुजे सिन्धुः	१०४४
सुजातं जातवेदसम्	१६८८
सुते अध्वरे अधि वाचमक्रत	२३०६
सुन्वन्ति सोमं रथिरासो	२२९१
सुपर्णसुवने गिरौ	४३८
सुपर्णस्त्वा गरुत्मान्	७९२
सुपर्णस्त्वान्वविन्दत्	१५९१
सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यवि	२२९७, २३२६
सुपर्णो जातः प्रथमः	५२१
सुषामंश्वाशुष	१८६२
सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा	१८२०
सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ	१८१९
सूक्तवाद् भद्रवादी हि	१९२०
सूर्यं चक्षुषा गच्छ	२०३१
सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा	१०९६
सूर्यमृतं तमसो प्राज्ञाः	१६६९
सूर्ये विषमा सजामि	७८३
सूर्यो माहः पात्वग्निः	१८३१
सूषा व्यूर्णोतु वि योनिं	१४०७
सोम एकेभ्यः पवते	२०३८
सोमं मन्यते पपिवान्	४७५
सोम राजन्त्संज्ञानमा	१२५४
सोमस्येव जातवेदो	७५०
सोमाय पितृमते स्वधा	२२२२
सोमारुद्रा युवमेतानि	१७३१
सोमारुद्रा वि वृहतं	१७३०
सोमेनादित्या बलिनः	४७४
सोमो मा विश्वैर्देवैरुदीच्या	२१११
सोमो मा सौम्येनावतु	५९९
सोमो राजाधिपा मृडिता	१६३७
सोऽरिष्ट न मरिष्यसि	५०
स्तरीरु त्वद् भवति सूते	९८७
स्तुवानमग्न आ वह	७६७
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं	२००६
स्तेगो न क्षामत्येषि	२००५
स्योनास्मै भव पृथिवि	२०४३
स्वाक्त्येन मणिन ऋषिणा	१४३८
स्वधा पितृभ्यः पृथिवि	२२२८
स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्ष	२२२९
स्वधा पितृभ्यो दिवि	२२३०
स्वप्तु माता स्वप्तु पिता	६१८
स्वप्नं सुप्त्वा यदि	१४५८
स्वप्न स्वप्नाभिकरणेन	६१९
स्वर्गं लोकमभि नो	१२८८
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा	१०४३
स्वस्तिदा विशां पतिः	१४५२
स्वस्ति मात्र उत पित्रे	१६६१
स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च	१८३३
स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी	५९०
स्वादुष्किलायं मधुमाँ	२०१४
स्वादो पितो मधो पितो	११०९
स्वायसा असयः सन्ति	१६३५
स्वासदसि सूषा अमृतो	१८२९
स्वासस्थे भवतमिन्दवे	२१२२
हंसा इव श्रेणिशो	२२६७
हतासो अस्य वेशसो	७०७, ७१३

हतास्तिरश्चिराजयो	८१०	हिरण्यवर्णा सुभगा	१७८६
हतो येषाषः क्रिमीणां	७०३	हिरण्यवर्णे सुभगे शुभ्रे	४३४
हतो राजा क्रिमीणाम्	७०६, ७१२	हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्य	४३३
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां	५५४	हिरण्यशृङ्ग ऋषभः	१५७०
हरिणस्य रघुष्यदो	१९१	हिरण्यस्रगयं मणिः	१४८१
हरिमाणं ते अङ्गेभ्यो	२८०	हिरण्यानामेकोऽसि	१४२९
हिनोता नो अध्वरं	९११	हृदयात् ते परि क्लोम्नो	२१२, २९६
हिमवतः प्र स्रवन्ति	९७१	हेतिः पक्षिणी न	१५८१
हिरण्ययाः पन्थानः	४४१	होता यक्षद् वनस्पतिमभि	२२७१
हिरण्ययी नौरचरद्	४११, ४४०, ४५३	होता यक्षद् वनस्पतिं	३७५, ३७६
हिरण्यवर्णाः शुचयः	९१६	ह्वयामि ते मनसा	२०४५

॥ आयुर्वेद-प्रकरणं समाप्तम् ॥



दैवत-संहिता ।

(७)

रुद्रदेवता ।

संपादक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)

संवत् २०००, शके १८६५, सन १९४३

मुद्रक और प्रकाशक- **वसंत श्रीपाद सातवळेकर,** B. A.
भारतमुद्रणालय, स्वाध्याय-मंडल, औंध, (जि. सातारा.)

रुद्रदेवताका परिचय।



'रुद्र' के विषयमें निरुक्तका मत।

'**निघण्टु**' नामक वैदिक कोश में अ० ३।१६ में '**स्तोतृनामों**' में '**रुद्र**' शब्दका निर्देश किया गया है। इससे '**रुद्र**' शब्दका '**स्तोता**' स्तुति करनेवाला, ऐसा अर्थ निघण्टुकार के मतसे है। इसलिये निघण्टुकारके मतानुसार '**रुद्र**' शब्द मनुष्यवाचकही प्रतीत होता है। परंतु निरुक्त-कार यास्काचार्यने इस '**रुद्र**' देवताका परिगणन मध्यस्थानीय देवगण (निरु० अ० १०।१) में किया है।

अथातो मध्यस्थाना देवताः ॥ १ ॥ रुद्रो रौतीति सतः रोरूयमाणो द्रवतीति वा, रोदयतेर्वा, 'यदरुदत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्' इति काठकम् 'यदरोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्' इति हारिद्रविकम् ॥

(निरुक्त, दैवतकाण्ड १०।१।१-६)

"अब मध्यम स्थान अर्थात् अंतरिक्ष स्थानके देवोंका विचार करना है। 'रु' अर्थात् शब्द करना, इस अर्थका यह शब्द है, किंवा शब्द करता हुआ पिघलता है, ऐसा इसका अर्थ है। रोनेके कारण इसको रुद्र कहा है, ऐसा काठक और हरिद्रविक शाखा संप्रदायवालोंका मत है।" अर्थात् 'रुद्र' देवता अंतरिक्षमें है। मेघोंमें रहकर यह गर्जनारूप शब्द करता है, और गर्जना करता हुआ, मेघोंको द्रवरूप बनाकर वृष्टि कराता है। **काठक और हारिद्रविक** शाखा-सांप्रदाय-वालोंका मत ऐतिहासिक है; देखिए—

(१) स किल पितरं प्रजापतिमिषुणा विध्यन्त-मनुशोचन्नरुदत् तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम् ॥

(२) यदरोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम् ॥

(नि० भाष्य १०।१।६)

"वह रुद्र अपने प्रजापति पिताको बाणसे विद्ध करता हुआ देखकर रोया, इसलिये उसका नाम रुद्र हुआ।" यह मत ऐतिहासिकोंका है। तथा—

एक एव रुद्रोऽवतस्थे न द्वितीयः।
असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।
.....इति ॥ (नि० १।१३)

"एक मंत्र कहता है कि '**एकही रुद्र है, वह अ-द्वितीय है**'। परंतु दूसरे मंत्रमें कहा है कि '**पृथ्वीमें असंख्य और हजारों रुद्र हैं।**

इस विषय में निरुक्तकार कहते हैं—

तासां महाभाग्यादेकैकस्या अपि बहूनि नाम-धेयानि भवन्ति ॥१॥.....तत्र संस्थानैकत्वं संभोगैकत्वं चोपेक्षितव्यम् ।..... ॥
तत्रैतन्नरराष्ट्रमिव ॥ ५ ॥ (नि० दै. ७।२।५)

"उन देवताओंमें एकएक देवताका महत्त्व विशेष होनेके कारण एक-एक देवताके अनेक नाम होते हैं। .....परंतु उन का स्थानसे और भोगसे एकत्व देखना चाहिए। ..... जैसा मनुष्योंका राष्ट्र।"

अर्थात् एकएक देवताके विशेष गुणोंके कारण अनेक नाम हुआ करते हैं। नाम अनेक होनेपर भी भिन्न देवता नहीं होते हैं। अनेक शब्दोंसे एकही देवताका बोध होता है। ..... क्योंकि उनके स्थान और भोगकी एकता देखकर उनकी विविधतामें एकता देखनी चाहिए।..... जैसा राष्ट्रमें रंग-रूप-जातिके कारण अनेक प्रकारके लोग होनेपर भी उन सबमें एक राष्ट्रीयत्व होता है, उसी प्रकार अनेक देवताओंके 'स्थानके और भोगके एकत्व' के कारण उन अनेकोंमें एकत्व मानना उचित है।

इसलिये यद्यपि किसी मंत्रमें '**एकही रुद्र है**' ऐसा वचन आया अथवा दूसरे किसी मंत्रमें '**हजारों रुद्र हैं**' ऐसा विधान

आगया, तथापि इतनेसे ही उनमें भेद है, ऐसा नहीं सिद्ध होता। यह उक्त निरुक्तवचनोंका तात्पर्य है।

निरुक्तकार और क्या क्या कहते हैं, यह पहिले यहां देखेंगे और पश्चात् अन्य मतोंका विचार करेंगे—

अग्निरपि रुद्र उच्यते ॥ (नि. १०।७।२)

"अग्निको भी रुद्र कहते हैं।" इस प्रकार 'रुद्र' शब्दका 'अग्नि' ऐसा अर्थ यहां निरुक्तकारने दिया है।

'रुद्र' शब्दका 'परमात्मा, परमेश्वर' ऐसा अर्थ स्पष्टतापूर्वक यद्यपि निरुक्तकारने नहीं दिया, तथापि 'एकही देवताके अनेक नाम देवताके महत्त्वके कारण हुआ करते हैं।' ऐसा कहकर सूचित किया है कि परमात्माके अनेक नामोंमें 'रुद्र' भी एक नाम है; अर्थात् 'रुद्र' शब्दका परमेश्वरपर अर्थ भी हो सकता है।

स्थानके एकत्वके कारण, भिन्न वर्णन होने पर भी, एकत्वकी कल्पना करनेकी सूचना निरुक्तकार यास्काचार्य पूर्वोक्त वचनमें देते हैं। सर्वव्यापक परमात्मा जैसा पृथ्वी पर है, वैसाही अंतरिक्षमें और ऊपर द्युलोकमें भी व्यापक होनेसे उसका स्थान सर्वत्र है; इसलिये सब स्थानके देवताओंके सब शब्द उस एक अद्वितीय महा देवताके वाचक हो सकते है। इस तर्कशास्त्रसे हम निरुक्तकारका भाव जान सकते है। यही भाव श्वेताश्वतर उपनिषद्में बिलकुल स्पष्ट है। देखिए—

रुद्रके विषयमें उपनिषत्कारोंकी संमति।

श्वेताश्वतर उपनिषद्में 'एक रुद्र है,' इस विषयमें निम्न मंत्र आया है—

एको ह रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य इमांल्लोकानीशत ईशनीभिः ॥ प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति संचुकोचान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः ॥ २ ॥ (श्वे. उ. ३।२)

यही मंत्र निरुक्तभाष्यकारने निम्न प्रकार दिया है—

एक एव रुद्रोऽवतस्थे न द्वितीयो रणे निघ्नन् पृतनासु शत्रून् ॥ संसृज्य विश्वा भुवनानि गोप्ता प्रत्यङ् जनान्संचुकोचान्तकाले ॥

(नि. १।१४ दुर्गाचार्यटीका)

एक एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थे ॥ (तै. सं. १।८।६।१)

"एकही रुद्र है, दूसरा रुद्र नहीं है। वह शत्रुओंको युद्धमें पराजित करता है। सब भुवनोंको उत्पन्न करके, उस सब विश्वका संरक्षण करता है और अंतकालमें सबका संकोच (प्रलय) करता है।"

ऊपर दिये हुए श्वेताश्वतर मंत्रका अर्थ- "एकही रुद्र है, वह किसी दूसरेकी सहायताकी अपेक्षा नहीं करता। वह अपनी शक्तियोंसे इन सब लोकोंको स्वाधीन रखता है। और प्रत्येक मनुष्यके अंदर रहता है। यह संरक्षक प्रभु सब विश्वको उत्पन्न करने और पालन करनेके पश्चात् अंतकालमें सबको संकुचित करता है।" तथा—

एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै य इमांल्लोकानीशत ईशनीभिः ॥ (अथर्व-शिर. ५)

रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणम् ॥अथर्व-शिर.५

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश ॥ य इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये ॥ (अथर्व-शिर. ६)

"एक ही रुद्र है। वह किसी दूसरेकी सहायता नहीं चाहता। जो इन सब लोक-लोकान्तरोंको अपनी शक्तियोंद्वारा स्वाधीन रखता है। "रुद्र" एकही है ऐसा कहते हैं। वह शाश्वत और प्राचीन है।" "जो रुद्र अग्नि, जल, ओषधी, वनस्पति, आदिमें व्यापक है और जो इन सब भुवनोंको बनाता है, उस एक अद्वितीय तेजस्वी रुद्रके लिये नमस्कार है।" तथा—

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ ४ ॥ (श्वेता. उ. ३।४)

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥११॥(श्वेता. उ. ४।१२)

"जो सब देवताओंको जन्म देता है, जो सर्व द्रष्टा और सब विश्वका अधिपति है, जिसने पहिले हिरण्यगर्भ को उत्पन्न किया था, वह एक प्रभु रुद्र हम सबको शुभ बुद्धि देवे।"

इस प्रकार '**रुद्र**' शब्दसे '**एक परमात्मा**' का बोध उपनिषदोंमें लिया है। इससे सिद्ध है कि 'रुद्र' शब्द परमात्मवाचक है। यद्यपि इस समयका कोई कोशकार '**रुद्र**' शब्दका '**परमात्मा**' ऐसा अर्थ नहीं देता, तथापि कृष्णयजुर्वेदीय श्वेताश्वतर उपनिषद्के उक्त वचनद्वारा उस शब्दका परमात्मवाचक अर्थ निःसंदेह सिद्ध है।

रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदकी संमति।

'रुद्र' के एकत्वके विषयमें निरुक्तकारने दिया हुआ मंत्र पूर्व स्थलमें दिया ही है। वह आजकल किसी संहितामें नहीं मिलता। इसलिये अनुमान है कि वह किसी अन्य शाखाग्रंथमें पठित होगा और निरुक्तकारके समय वह शाखाग्रंथ उपलब्ध होगा। रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदमें ये वचन हैं-

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम्। ... ३
सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः।... ४
तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव॥१२॥
एते अस्मिन्देवा एकवृतो भवन्ति १३ (अथर्व. १३।४।२)

"वह ही धाता, विधाता, वायु, अर्यमा, वरुण, रुद्र और महादेव है। उसीसे यह आकाश ऊपर हुआ है, यह सब महान् शक्ति उसी में है। वह एकही है। वह एक सर्वत्र व्यापता है। वह निश्चयसे एक है। सब देव उसमें एक जैसे होते है।" इसमें बताया है कि एक सर्वव्यापक सर्वाधार आत्मतत्त्वका नाम भी रुद्र है।

सर्वव्यापक रुद्रदेव।

एकही रुद्र सर्वत्र व्यापक है, इस आशयको निम्न मंत्र प्रकट कर रहा है—

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश॥ य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमोस्त्वग्नये॥ (अथर्व० ७।९।२।१)

"जो एक रुद्र देव अग्नि, जल, औषधि, वनस्पति आदि पदार्थोंमें व्याप्त है और जो सब भुवनोंको (चक्लृपे) बना सकता है, उस (अग्नये रुद्राय) एक तेजस्वी रुद्रदेवके लिये नमन है।"

यह मंत्र बिलकुल स्पष्ट है और इससे रुद्रदेवकी सर्वव्यापकता सिद्ध होती है। जगत् की रचना करनेवाला, सब पदार्थोंमें व्यापक और सबका उपास्य जो देव है, उसीका उल्लेख यहां 'रुद्र' नामसे किया है। रुद्र शब्दके एकवचन होनेके कारण वह एक ही है, ऐसा सिद्ध होता है। तथा सर्वव्यापक जो होता है, वह एकही हो सकता है। इससे भी उसका एकत्व सिद्ध ही सकता है। रुद्रदेवका ही सब कुछ है, ऐसा अथर्ववेदीय रुद्रसूक्तके निम्न मंत्रमें कहा है-

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेदमुग्रोर्वन्तरिक्षम्। तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत्प्राणत् पृथिवीमनु॥१०॥ (अथर्व. ११।२।१०)

"हे रुद्र! इन चार दिशाओंमें तथा द्युलोक, पृथ्वी और इस बडे अंतरिक्षमें जो कुछ है, वह सब तेरा ही है। जो कुछ (आत्मन्-वत्) आत्मायुक्त अर्थात् प्राण धारण करनेवाला है, जो इस पृथ्वी पर जीवनरूपसे रहता है, वह सब तेरा ही है।"

इस तरह 'रुद्र' का सामर्थ्य और प्रभुत्व चारों ओर सब दिशा विदिशाओंमें है, ऐसा वर्णन इस मंत्रमें है। इससे सिद्ध होता है कि उस जगन्नियन्ता परमात्माकाही यह **'रुद्र'** नाम है।

केवल इतनेही प्रमाणोंसे 'परमात्मा' वाचक 'रुद्र' शब्द है, ऐसा सिद्ध होगा। तथापि परमात्माके अनेक गुण वेदमंत्रोंद्वारा 'रुद्र' के साथ मिलते हैं वा नहीं, यह हम अब देखते हैं—

जगत् का पिता रुद्र।

'पिता' का अर्थ 'रक्षक और अपने वीर्यद्वारा जन्म देनेवाला' ऐसा होता है। 'रुद्र' सब भुवनोंका पिता है, ऐसा निम्न मंत्रमें कहा है—

भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ॥ बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नमृधग्घुवेम कविनेषितासः। (ऋ० ६।४९।१०)

"(दिवा अक्तौ) दिनमें और रात्रीमें (आभिः गीर्भिः) इन वचनोंके साथ (भुवनस्य पितरं) सब सृष्टिके पिता (रुद्रं रुद्रं) बलवान् रुद्र देवकी (वर्धय) बधाई करो। उनके महत्वकी प्रशंसा करो। उस (बृहन्तं) महान् (ऋष्वं) श्रेष्ठ ज्ञानी तथा (अ-जरं) जीर्ण अथवा क्षीण न होनेवाले और (सु-सुम्नं) अत्यंत उत्तम विचारशील, रुद्रदेवताकी, (कविना इषितासः) बुद्धिवानोंके साथ उन्नतिकी इच्छा करनेवाले हम सब (ऋधक् हुवेम) विशेष प्रकारसे उपासना करेंगे।"

इस मंत्रमें वह 'रुद्र' देव 'महान्, ज्ञानी, अजर, अमर और सुविचारी' है, ऐसा कहा है। ये उनके गुण परमात्माके गुणोंके साथ मिलनेवालेही हैं, तथा **'भुवनस्य पितरं रुद्रं'** ये शब्द रुद्रदेवका वास्तविक स्वरूप बताते है। **'सृष्टिका पिता रुद्र है।'** जगतका पिता जो अजर, अमर, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है, वह परमात्माके सिवा दूसरा कौन हो सकता है? इस प्रकार इस मंत्रका 'रुद्र' देव उस अद्वितीय परमात्माका ही नाम है, ऐसा दीखता है। इस जगदीशका वर्णन निम्न मंत्रमें देखने योग्य है—

सब सृष्टिका स्वामी रुद्र।

स्थिरेभिरंगैः पुरुरूप उग्रो बभ्रुः शुक्रेभिः पिपिशे हिरण्यैः॥ ईशानादस्य भुवनस्य भूरेर्न वा उ योषद्रुद्रादसुर्यम्॥ (ऋ० २।३३।९)

"(स्थिरेभिः अंगैः) दृढ अवयवोंसे (पुरु-रूपः) अनेक पदार्थोंको आकार देनेवाला (उग्रः) महान् प्रबल और (बभ्रुः) तेजस्वी रुद्र (शुक्रेभिः हिरण्यैः) शुद्ध तेजोंके साथ (पिपिशे) शोभता है। (अस्य भुवनस्य) इस सब सृष्टिके (भूरेः ईशानात् रुद्रात्) महान् स्वामी रुद्रदेवसे (असु-र्यं) उसकी महान् जीवनशक्ति (न वा उ योषत) कभी पृथक् नहीं होती।"

यह 'रुद्र' देव जगत्को निर्माण करके सब पदार्थोंको रंग, रूप और आकार देता है। वह अत्यंत तेजस्वी और सर्व शक्तिमान् है। अपनेही विविध तेजोंसे और पवित्रताओंके कारण वह शोभायमान हो रहा है। वह सब जगत्का ईश्वर है और उससे उसकी शक्ति कभी पृथक् नहीं होती। यह मंत्र 'रुद्र' देवताके सब शंकाओंको दूर कर सकता है। '**भुवनस्य ईशानात् रुद्रात् असुर्यं न योषत्।**' जगत् के स्वामी रुद्रदेवसे उसकी दिव्य शक्ति कभी पृथक् नहीं होती। इस वाक्यसे रुद्र देवताके वास्तविक मूल स्वरूपका पता लग सकता है।

भुवनस्य पिता रुद्रः॥ (ऋ० ६।४९।१०)
भुवनस्य ईशानः रुद्रः॥ (ऋ० २।३३।९)

उक्त दो मंत्रोंके ये दो वाक्य एकही आशयको बतानेवाले हैं, इसका यदि पाठक विचार करेंगे, तो वेदमंत्रोंके शब्दोंकी विशेष योजनाका पता लग सकता है। यह वाक्य यदृच्छासे नहीं बने हैं, विशेष हेतुपूर्वकही यह शब्दप्रयोग हुआ है, ऐसा प्रतीत होता है। इससे अगला मंत्र यहां अब देखिए।

सर्वशक्तिमान् रुद्र।

अर्हन् बिभर्षि सायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपम्॥ अर्हन्निदं दयसे विश्वमभ्वं न वा ओजीयो रुद्र त्वदस्ति॥ (ऋ० २।३३।१०)

"(अर्हन्) योग्य होनेके कारण रुद्र सब शस्त्रास्त्रोंको धारण करता है। रुद्र योग्य होनेके कारण सब विश्वको रूप और तेज देता है। योग्य होनेके कारणही इस (अभ्वं विश्वं) महान् विश्व पर (दयसे) दया करके उस सबका संरक्षण करता है। हे रुद्र! (त्वत्) तेरेसे कोई भी अधिक (ओजीयः) बलवान् (न वा अस्ति) नहीं है।"

इस मंत्रमें '**त्वत् ओजीयो न वा अस्ति।**' तेरेसे अधिक शक्तिशाली कोई भी नहीं है, अर्थात् तूही सबसे अधिक बलवान् है। इससे सर्वशक्तिमान् रुद्रदेव परमात्माही है, ऐसा दिखाई दे रहा है। अब निम्न लिखित मंत्र देखिए। इसमें रुद्रदेव सब जनताका राजा है, ऐसा कहा है—

गुहा-निवासी रुद्र।

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुपहत्नुमुग्रम्॥ मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यमस्ते नि वपन्तु सेन्यम्॥ (अथर्व० १८।१।४०)

"(उग्रं भीमं) उग्र और शक्तिमान्, (उप-हत्नुं) प्रलयकर्ता, (श्रुतं) ज्ञानी, (गर्त-सदं) सबके अंदर रहनेवाला, (जनानां राजानं) सब लोकोंका राजा रुद्र है, उसकी (स्तुहि) स्तुति करो। हे रुद्र! तेरी (स्तवानः) प्रशंसा होनेपर (जरित्रे) उपासकको तू (मृड) सुख दे। (ते सेन्यं) तेरी शक्ति (अस्मत् अन्यं) हम सबको बचाकर दूसरे दुष्टका (निवपन्तु) नाश करे।"

इस मंत्रमें **जनानां राजानं रुद्रं** ये शब्द विशेष महत्त्व रखते हैं। सब लोगोंका एक राजा रुद्र है।

गर्त-सद्
गुहाऽऽहितः
गुहा-चरः
गुहा-शयः } =निहितं गुहा सत्। (यजु० ३२।८)
=परमं गुहा यत्। (अथर्व० २।१।१;२)
=गुह्यं ब्रह्म।

उक्त शब्दोंके साथ '**गर्त-सद्**' शब्द देखने और विचार करनेसे इस शब्दके गूढ आशयका पता लग सकता है। '**गुहाऽऽहित**' और '**गर्त-सद्**' ये दोनों शब्द एकही अर्थ बता रहे हैं। 'गर्त' शब्दका 'गुहा' ऐसा अर्थ ऊपर दिया ही है। अस्तु। इस मंत्रसे भी 'रुद्र' का पूर्वोक्त भावही दृढ हो रहा है। तात्पर्य 'रुद्र' शब्दका 'सर्वव्यापक परमात्मा' ऐसा एक अर्थ निःसंदेह है। इस मंत्रका ऋग्वेदका पाठ यहां देखिए—

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम्॥ मृळा जरित्रे रुद्र स्तवानोऽन्यं ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः॥ (ऋ० २।३३।११)

इसका अर्थ स्पष्ट है।

अपने अंतःकरणमें रुद्रकी खोज।

अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया॥ गृभ्णन्ति जिह्वया ससम्॥ (ऋ० ८।७२।३)

"मुमुक्षुजन (तं रुद्रं) उसी रुद्रको (जने परः अन्तः) मनुष्यके अत्यंत बीचके अंतःकरणमें (मनीषया) बुद्धिद्वारा जानना (इच्छन्ति) चाहते हैं। (जिह्वया) जिह्वासे (ससं) फलको (गृह्णन्ति) लेते हैं।"

मुमुक्षु जन जिह्वासे सात्विक पदार्थोंको लेते हैं। '**सस**' शब्दका अर्थ 'फल, धान्य, अनाज, शाकभाजी, ओषधि, वनस्पति' इतनाही है। जिह्वासे जिस अन्नका ग्रहण करना उचित है, उसका इस मंत्रने यहां उपदेश किया है। फल, धान्य, अनाज, शाकभाजी, आदि पदार्थही खाने चाहिए। इस प्रकारका सात्त्विक आहार करनेवाले मुमुक्षु लोग उस रुद्र देवको अर्थात् परमात्माको मनुष्यके अतःकरणके अत्यन्त गहरे स्थानमें अपनी सात्त्विक विचारशक्तिके द्वारा ढूँढ ढूँढ कर देखनेकी इच्छा करते हैं।

अनेक रुद्रोंमें व्यापक 'एक रुद्र।'

पूर्वोक्त प्रमाणोंसे 'रुद्र' एक है और वह सर्वत्र व्यापक है, यह बात सिद्ध हो चुकी। अब अनेक रुद्रोंका वर्णन, जो वेदमें आता है, उसका विचार करना चाहिए।

रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे ॥ (ऋ. १०।६४।८)

"(रुद्रेषु) अनेक रुद्रोंमें रहनेवाले (रुद्रियं रुद्रं) प्रशंसा करने योग्य एक रुद्रकी (हवामहे) हम सब पूजा करते हैं।"

एक रुद्रदेव अनेक रुद्रोंमें रहता है, अर्थात् यह एक रुद्र सबमें व्यापक है और अनेक रुद्र व्याप्य हैं। अनेक रुद्र अणु हैं और यह एक रुद्र महान् है। इस एक रुद्रके द्वारा अनेक रुद्र प्रेरित होते हैं, अर्थात् अनेक रुद्र प्रेर्य हैं और यह एक रुद्र सबका प्रेरक है। तथा—

(१) **शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः ॥** (ऋ. ७।३५।६)
(२) **रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृळयाति नः॥**(ऋ. १०।६६।३)
(३) **रुद्रं रुद्रेभिरावहा बृहन्तम् ॥** (ऋ. ७।१०।४)

"(१) अनेक रुद्रोंके साथ एक रुद्र हम सबका कल्याण करे। (२) अनेक रुद्रोंके साथ एक रुद्रदेव हम सबको सुख देवे। (३) अनेक रुद्रोंके साथ रहनेवाले एक महान् रुद्रकी पूजा करो।" ये सब मंत्र उक्त भाव बता रहे हैं। अनेक छोटे रुद्रोंमें एक महान् रुद्र की प्रेरणा होती है, इस आशयका ध्वनि निम्न मंत्रमें देखने योग्य है-

तदिद्रुद्रस्य चेतति यह्वं प्रत्नेषु धामसु ॥
मनो यत्रा वि तदधुर्विचेतसः ॥ (ऋ. ८।१३।२०)

"(रुद्रस्य तत् यह्वं) रुद्र देवकी वह एक महान् प्रेरक शक्ति (प्रत्नेषु धामसु) अनेक सनातन स्थानोंमें (इत् चेतति) निश्चयसे चेतना देती है। (यत्र) जिस शक्तिमें (वि-चेतसः) विशेष ज्ञानी लोक (तत् मनः) अपना वह मन (वि-दधुः) विशेष प्रकार धारण करते हैं।"

इस मंत्रमें 'रुद्र' की '**यह्व**' शक्तिका वर्णन है। यह शक्ति सब को सतत चेतना दे रही है।

एक रुद्रके पुत्र अनेक रुद्र हैं।

रुद्रस्य ये मीळ्हुषः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधृ·
विर्भरध्यै ॥ विदे हि माता महो मही षा
सेत्पृश्निः सुभ्वे गर्भमाधात् ॥ ३ ॥ (ऋ०६।६६।३)

"(मीळ्हुषः रुद्रस्य) एक दानशूर रुद्रदेवके (ये पुत्राः) जो अनेक रुद्र संज्ञकपुत्र हैं, (यान् च उ नु) और जिनका निश्चयसे (भरध्यै) भरण पोषण पालन करनेकी सब शक्ति वह एक अद्वितीय रुद्र (दाधृविः) धारण करता है। (महः) इस महान् रुद्रकी शक्तिको (सा मही माता विदे) वह मूल प्रकृतिरूपी बडी माता जानती है, अथवा प्राप्त करती है और (सु-भ्वे) जीवोंकी उत्तम अवस्था होनेके लिये (सा पृश्निः) वह विविध रंगरूपवाली माता (इत्) निश्चयसे (गर्भं आधात्) जीवोंको गर्भमें धारण करती है।"

इस मंत्रमें अनेक रुद्र इस एक रुद्रके पुत्र हैं, ऐसा स्पष्ट कहा है। इस लिये परमपिता परमात्मा ही रुद्र है और सब जीव उसके पुत्र हैं, ऐसाही इसका अर्थ मानना उचित है।

अनंत प्राणी अनेक रुद्र हैं।

ये अनंत रुद्र जीव हैं, ये प्राणी अर्थात् जीवन धारण करनेवाले हैं। ये मर्य, मर्त्य हैं। इनका शरीर धारण होनेके कारण जन्म होता है और मृत्युभी होती है। यद्यपि जन्ममरण शरीरका धर्म है, तथापि इन रुद्रोंकी शरीरके साथ स्थिति होनेके कारण, शरीरके साथ इनका जन्म और मरण हुआ, ऐसा कहा जाता है। अर्थात् शरीरके धर्मोंका इनके ऊपर आरोपण होता है। ये '**मर्त्य**' हैं, ऐसा निम्न मंत्रमें कहा है—

ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास उक्षणो रुद्रस्य मर्या
असुरा अरेपसः ॥ पावकासः शुचयः सूर्या
इव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्पसः ॥
(ऋ० १।६४।२)

"(ते) वे अनंत रुद्र (ऋष्वासः) उच्च (दिवः उक्षाणः) दिव्य बलसे युक्त (असु-राः) जीवनशक्तिसे प्रकाशनेवाले, (अ-रेपसः) निष्कलंक और (मर्याः) मर्त्य हैं। वे उस (रुद्रस्य जज्ञिरे) एक रुद्रसे प्रकट होते हैं। वे (पावकासः)

अग्निके समान पवित्र (शुचयः) तेजस्वी और शुद्ध (सूर्य इव सत्वानः) सूर्यके समान सत्त्वशाली और (द्रप्सिनः न) वर्षा करनेवाले मेघोंके समान (घोर-वर्पसः) सुंदर और विशाल रूप धारण करनेवाले हैं।"

इस मंत्रमें रुद्रसंज्ञक जीवके गुणधर्म बताये हैं। इनमें **' मर्त्य '** शब्द आया है। प्राणी, शरीरधारी, मरणधर्मवाला, ऐसा उस शब्दका अर्थ है। जिन अनंत रुद्रोंमें एक महान् रुद्र व्यापक हो रहा है वे अनंत रुद्र **' अनंत मर्त्य '** प्राणी हैं; यह भाव इस मंत्रसे प्रकट हो रहा है। **'जनानां राजा रुद्रः'** ऐसा एक वचन पूर्व स्थलमें आया है। उसके साथ इस मंत्रका आशय **' मर्त्यानां पिता रुद्रः '**। देखने योग्य है। एक ही भाव किस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकारसे बताया गया है, यह यहां देखने योग्य है। इसी विषयका स्पष्टीकरण करनेवाले निम्न लिखित मंत्र यहां देखिए—

क ईं व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा स्वश्वाः ॥१॥ न किर्होषां जनूंषि वेद ते अंग विद्रे मिथो जनित्रम् ॥ २ ॥ (ऋ० ७।५६)

"(अध) अजी ! (स्वश्वाः = सु-अश्वाः) उत्तम भोग भोगनेवाले, (स-नीळाः) एक आश्रयसे रहनेवाले और (व्यक्ताः नरः) अलग अलग दीखनेवाले पुरुष (के) कौन है ? वे (रुद्रस्य मर्याः) रुद्रके मर्त्य पुत्र हैं । (एषां जनूंषि) इनके जन्मका वृत्तांत (न किः वेद) कोईभी नहीं जानता ? हे (अंग) प्रिय! (ते मिथः) वेही परस्पर एक दूसरेका (जनित्रं) जन्म (विद्रे) जानते हैं। "

इस मंत्रमें **' रुद्रस्य मर्याः '** रुद्रके मर्त्य पुत्रोंका वर्णन फिर आया है। इनमें अलग अलग व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तित्व, पृथक्त्व, इकाई है, इस लिये इनको ' व्यक्त ' अर्थात् ' व्यक्ति-भाव' से युक्त कहा है। प्रकृति और पुरुष ऐसे जो दो भेद हैं, उनमें ये ' पुरुष ' हैं, इसलिये मंत्रमें इनको **' नर '** कहा है। एक ईश्वरके आश्रयसे ये रहते हैं, इसलिये इन सबको ' स-नीळाः ' (स-नीडाः) कहा है। यहां–

यत्र विश्वं भवत्येक-नीडम् ॥ (यजु० ३२।८)
यत्र विश्वं भवत्येक-रूपम् ॥ (अथर्व० २।१।१)

इन मंत्रोंके **'एक-नीडं'** और **'एक-रूपं'** ये शब्द देखने योग्य हैं। **'स-नीळ, स-नीड, एक-नीड, एक-रूप'** ये सब शब्द ' सबका एकही आश्रयस्थान है, ' ऐसा बता रहे हैं।

इस विचारसे पता लग जायगा कि (१) अनंत रुद्रोंका जन्म, (२) उनको पुत्र कहना, (३) उनकी माताका वर्णन, (४) उनके गर्भधारणका वर्णन यहां है।

रुद्रके पुत्र मरुत् हैं। मरुतोंके विषयमें श्री सायणाचार्य लिखते हैं कि **' मनुष्यरूपा वा मरुतः। पूर्वं मनुष्याः संतः पश्चात् सुकृतविशेषेण ह्यमरा आसन् ।'** मरुत् पहिले मनुष्यही होते हैं, परंतु उत्तम प्रशस्त कर्म करनेके कारण जो अमर बनते हैं (ऋ. सायणभाष्य, मं. १०, सू. ७७, मं. २) इस प्रकार मरुतोंके मनुष्यरूप होनेमें शंकाही नहीं है। मनुष्योंके अतिरिक्त भी मरुतोंका अर्थ है, उसका विचार मरुतदेवताके ग्रंथमें किया गया है। अब मरुतोंके मनुष्य होनेके विषयमें वेदका प्रमाण देखिए–

अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्टय आत्वेषमुग्रमव ईमहे वयम् ॥ ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः सिंहा न हेषक्रतवः सुदानवः ॥ (ऋ. ३।२६।५)

"(ते रुद्रियाः मरुतः) वे रुद्रके पुत्र मरुत् (अग्नि-श्रियः) अग्निके समान तेजस्वी, (स्वानिनः) उत्तम शब्द बोलनेवाले, (सिंहा न हेषक्रतवः) सिंहके समान गंभीर शब्द करनेवाले, (वर्ष-निर्णिजः) वृष्टिके द्वारा शुद्ध होनेवाले, (सु-दानवः) उत्तम दान करनेवाले, (विश्वकृष्टयः) सर्व-मनुष्य हैं। (वयं) हम सब (त्वेषं उग्रं अवः) तेजस्वी शौर्यमय संरक्षण उनसे (आ ईमहे) प्राप्त करते हैं।"

इस मंत्रमें **' विश्व-कृष्टि'** शब्द अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। **'कृष्टि'**- शब्दका अर्थ- (१) मनुष्यमात्र, मानवजाति है। (२) देशनिवासी राष्ट्रीय जनता। **'विश्व-कृष्टिः'**= (विश्व+जन=सर्व+जन) सब मनुष्य, मनुष्यमात्र, मनुष्यजाति।

यहां कई शंका करेंगे कि मानवजातिके विषयका उल्लेख वेदमें कहां है? वैदिक धर्म **'वैयक्तिक'** होनेके कारण उसमें **'सार्व-जनिक भाव'** नहीं होगा। इस शंकाका उत्तर देनेके लिये यहां सार्वजनिक भाव बतानेवाले कुछ वैदिक शब्दोंका उल्लेख करना चाहिए। देखिए निम्न शब्द–

(१) **विश्व-कृष्टिः**=(सर्व-मनुष्य)= मानवजाति ।
(२) **विश्व-चर्षणिः**=(सर्व-जन)= सब लोक, मनुष्य, मनुष्यमात्र, मानवजाति ।
(३) **विश्व-जनः**=(सर्व-जन)= मानवजाति ।
(४) **विश्व-मनुष्यः**
(५) **विश्व-मानुषः**] = (सर्व-मनुष्य)=मनुष्यमात्र ।

(६) **विश्वा-नरः**= (सर्व-नर)= सब मनुष्य ।

(७) **पंच-जनाः**= ज्ञानी, शूर, व्यापारी, कारीगर और साधारण लोक। ये पांच प्रकारके लोक मिलकर सब जनता होती है ।

इस तरह सार्वजनिक भावोंकी विस्तारपूर्वक कल्पना वेदमेंही स्पष्ट है । वैदिक धर्म '**सार्वजनिक भावका धर्म**' ही है ।

प्रस्तुत मंत्रमें '**विश्व-कृष्टि**' शब्द 'मानव-जाति' का भाव बता रहा है । मरुतोंका अथवा रुद्र-पुत्रोंका अर्थात् छोटे छोटे असंख्य रुद्रोंका स्वरूप 'विश्व-कृष्टि' शब्दने बताया है । इस प्रकार अनेक रुद्र ये अनंत मानवप्राणी है, यह बात सिद्ध हो गई । 'मर्य' शब्दसे साधारण मर्त्य अर्थात् मरणधर्मवाले प्राणिमात्र, ऐसाभी भाव निकल सकता है । इसका निश्चय अब करेंगे ।

अनेक रुद्रोंकी संख्या ।

इन अनंत रुद्रोंकी संख्याके विषयमें वाजसनेय यजुर्वेदमे निम्न लिखित मंत्र देखने योग्य है–

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् ॥
(यजु. १६।५४)

"असंख्यात हजार (ये रुद्राः) जो रुद्र (भूम्यां अधि) पृथ्वी पर हैं ।" अर्थात् ये अनेक रुद्र अनंत हजार इस पृथ्वीपर हैं । प्राणियोंकी संख्या किसी समयमें भी पृथ्वीपर निश्चित नहीं कही जा सकती। क्योंकि प्राणियोंकी संख्या अनेक कारणोंसे बढ भी सकती है और घट भी सकती है। इस हेतुसे यहां निश्चित संख्या नहीं कही, परंतु 'अनंत हजार' ऐसाही कहा है । इससे वेदके शब्दोंका अद्भुत महत्त्व ज्ञात हो सकता है ।

यजुर्वेद वाजसनेय संहिता अ० १६ में रुद्रोंके कई नाम लिखे हैं। यह अध्याय काण्व संहितामें १७ वां है । और तैत्तिरीय संहितामें यही रुद्राध्याय ४।५।१।१ में है । अब इन रुद्रोंका वर्गीकरण करना है । परंतु इससे पूर्व '**रुद्र**' शब्दका भाष्यकार आचार्योंका किया हुआ अर्थ अवश्य देखना चाहिए । क्योंकि उन अर्थोंको देख करहि हम रुद्रोंके वर्ग बना सकते हैं ।

रुद्रके विषयमें श्रीसायणाचार्यजीका मत ।

श्री सायणाचार्यजीने चारों वेद और सब मुख्य ब्राह्मणोंपर भाष्य किया है। इनका भाष्य विशेषतया याज्ञिक पद्धतिके अनुसार है । इस लिये इनका भाष्य देखनेसे याज्ञिक-संप्रदायवालोंका मत ज्ञात हो सकता है । अब देखिए श्री सायणाचार्यजी '**रुद्र**' के विषयमें क्या कहते हैं—

ऋग्वेद-भाष्य ।

१. रुद्रस्य कालात्मकस्य परमेश्वरस्य । (ऋ. ६।२८।७)

२. रुद्राय क्रूराय अग्नये । (ऋ. १।२७।१०)

३. रुत् दुःखं तद्धेतुभूतं पापं वा । तस्य द्रावयितारौ रुद्रौ । संग्रामे भयंकरं शब्दयन्तौ वा ॥
(ऋ. १।१५८।१)

४. रुद्राणां.....प्राणरूपेण वर्तमानानां मरुतां । यद्वा । रोदयितृणां प्राणानां । प्राणा हि शरीरान्निर्गताः सन्तो बंधुजनान् रोदयन्ति ॥ (ऋ. १।१०१।७)

५. रुद्राणां रोदनकारिणां शूरभटानां वर्तनिर्मार्गो घाटी-रूपो पथोस्तौ रुद्रवर्तनी ॥ (ऋ. १।३।३)

६. रोदयन्ति शत्रूनिति रुद्राः । (ऋ.३।३२।३)

७. रुद्रौ संग्रामे रुद्रन्तौ । (ऋ. ८।२६।५)

८. हे रुद्र ! जरादिरोगस्य प्रेक्षणेन संहर्तर्देव ।
(ऋ० १।११६।१)

९. रुद्रियं सुखं । (ऋ. २।११।३)

१०. रुद्रियं रुद्रसंबंधि भेषजं । (ऋ. १।४३।२)

अथर्ववेद-भाष्य ।

१. रोदयति सर्वं अंतकाले इति रुद्रः संहर्ता देवः ।
(अथर्व. १।१९।३)

२. रौति शब्दायते तारकं ब्रह्म उपदिशतीति रुद्रः । तथा च जाबालश्रुतिः । 'अत्र हि जन्तोः प्राणेषूत्क्रामत्सु रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे ॥ (जाबा. उ.१)
(अथर्व. २।२७।६)

३. तस्मै जगत्स्रष्टे सर्वं जगदनुप्रविष्टाय रुद्राय ।
(अथर्व. ७।९२।१)

४. रुत् दुःखं दुःखहेतुर्वा तस्य द्रावको देवो रुद्रः परमेश्वरः । (अथर्व. ११।२।३)

५. सर्वप्राणिनो मामनिष्टुरा विनश्यन्ति इति स्वयं रौति रुद्रः । (अथर्व. १८।१।४०)

६. स्वसेवकानां दुःखस्य द्रावकत्वं (रुद्रस्य)।
(अथर्व. १८।१।४०)

७. महानुभावं रुद्रं ॥ (अथर्व. १८।१।४०)

८. रुद्रस्य हिंसकस्य देवस्य ॥ (अथर्व. ६।५९।३)

९. रुद्रस्य ज्वराभिमानिदेवस्य हेतिः आयुधं।
(अथर्व. ४।२१।७)
१०. रुद्रः रोदयिता शूलाभिमानी देवः।
(अथर्व. ६।९०।१)
११. रोदयति उपतापेन अश्रूणि मोचयति इति रुद्रो ज्वराभिमानी देवः। (अथर्व. ६।२०।२)
१२. रोदयति शत्रूनिति रुद्रः। (अथर्व. ७।९२।१)
१३. रुद्रा रोदकाः। (अथर्व. १९।९।१०)
१४. रुद्राः रोदयितारः अंतरिक्षस्थानीया देवाः।
(अथर्व. १९।११।४)
१५. रुद्रः पशूनां अभिमन्ता पीडाकरो देवः।
(अथर्व. ६।१४१।१)

ये 'रुद्र' शब्दके श्री सायणाचार्यजीके किये हुए अर्थ हैं। अब यजुर्वेदके भाष्यमें श्री उवटाचार्य और श्री महीधराचार्य क्या कहते हैं, देखिए—

श्री उवटाचार्यजीका 'रुद्र' विषयक मत।

१. रुद्रैः स्तोतृभिः। (यजु. भाष्य. ३८।१६)
२. रुद्रवर्तनी रुग्णवर्तनी ॥ (य. १९।८२)
३. रुद्रौ शत्रूणां रोदयितारौ। (य. २०।८१)
४. रुद्रैः धीरैः ॥ (य. ११।५५)

श्री महीधराचार्यजीका 'रुद्र' संबंधी मत।

१. रुद्रस्य शिवस्य। (वा. यजु. भाष्य १६।५०)
२. रुद्राय शंकराय। (य. १६।४८)
३. रुत् दुःखं द्रावयति रुद्रः।
रवर्णं रुत् ज्ञानं राति ददाति।
पापिनो नरान् दुःखभोगेन रोदयति। (य. १६।१)
४. रुद्रस्य क्रूरदेवस्य। (य. ११।१५)
५. रुत् दुःखं द्रावयति नाशयति रुद्रः। (य. १६।२८)
६. रुद्रो दुःखनाशकः। (य. १६।३९)
७. रोदयति विरोधिनां शतं इति रुद्रः। (य. ३।५७)
८. रुद्रौ शत्रूणां रोदयितारौ। (य. २०।८१)
९. रुद्रैः धीरैः बुद्धिमद्भिः। (य. ११।५५)
१०. रुद्रैः स्तोतृभिः। (य. ३८।१६)
११. रुद्रवर्तनी रुग्णवर्तनी भिषजौ अश्विनौ।
(य. १९।८२)
१२. कदभक्षणे चौर्ये वा प्रवर्त्य, रोगमुत्पाद्य, जनान् द्रवति तेभ्यः पृथ्वीस्थेभ्यो अन्तरायुधेभ्यो रुद्रेभ्यः ॥
(य. १६।६६)
१३. कुवातेनान्नं विनाश्य वातरोगं वा उत्पाद्य जनान् द्रवन्ति। (य. १६।१५)

श्री स्वामी दयानंद सरस्वतीजीका रुद्रके विषयमें मत।

ऋग्वेद-भाष्य।

१. रुद्राय परमेश्वराय जीवाय वा॥ .....॥ रुद्रशब्देन त्रयोऽर्था गृह्यन्ते। परमेश्वरो जीवो वायुश्चेति। तत्र परमेश्वरः सर्वज्ञतया येन यादृशं पापकर्म कृतं तत्फलदानेन रोदयिताऽस्ति। जीवः खलु यदा मरणसमये शरीरं जहाति पापफलं च भुंक्ते तदा स्वयं रोदिति। वायुश्च शूलादिपीडा कर्मणा कर्मनिमित्तः सन् रोदयितास्ति। अत एते रुद्रा विज्ञेयाः। (ऋग्वेद. १।४३।१)

२. रुद्रः दुःखनिवारकः। (ऋ. २।३३।७)
३. रुद्रः दुष्टानां भयंकरः। (ऋ. ५।४६।२)
४. रुद्रः दुष्टदण्डकः। (ऋ. ५।५१।११)
५. रुद्रः सर्वरोगदोषनिवारकः। (ऋ. २।३३।९)
६. रुद्रस्य रोगाणां द्रावकस्य निःसारकस्य।
(ऋ. ७।५६।१)
७. रुद्रः रोगाणां प्रलयकृत्। (ऋ. २।३३।६)
८. रुद्रः कुपथ्यकारिणां रोदयिता। (ऋ. २।३३।४)
९. रुद्रस्य प्राणस्य वर्तनिः मार्गः ययोस्तौ रुद्रवर्तनी।
(ऋ. १।३।३)
१०. रुद्रं शत्रुरोद्धारं। (ऋ. १।११४।४)
११. रुद्रस्य शत्रूणां रोदयितुर्महावीरस्य। (ऋ. १।८५)
१२. रुद्राणां प्राणानां दुष्टान् श्रेष्ठांश्च रोदयतां।
(ऋ. १०।१०१।७)
१३. रुद्र! रुतः सत्योपदेशान् राति ददाति तत्संबुद्धौ।
(ऋ. १।११४।३)
१४. रुद्रः अधीतविद्यः। (ऋ. १।११४।११)
१५. रुद्राय सभाध्यक्षाय। (ऋ. १।११४।६)
१६. रुद्रः न्यायाधीशः। (ऋ. १।११४।२)
१७. रुद्रियं रुद्रस्येदं कर्म। (ऋ. १।४३।२)

यजुर्वेद-भाष्य।

१. रुद्रः परमेश्वरः। चतुश्चत्वारिंशद्वर्षकृतब्रह्मचर्यो विद्वान् वा। (यजु. ४।२०)
२. रोदयत्यन्यायकारिणो जनान् स रुद्रः। (य. ३।५७)
३. दुष्टानां रोदयिता विद्वान् रुद्रः। (य. ४।२१)
४. रुद्रः शत्रूणां रोदयिता शूरवीरः। (य. ९।३९)
५. रुद्रस्य शत्रुरोदकस्य स्वसेनापतेः। (य. ११।१५)
६. रुद्रः जीव। (य. ८।५८)
७. रुद्राः एकादशप्राणाः। (य. २।५)
८. रुद्राः प्राणरूपा वायवः। (य. ११।५४)
९. रुद्रा बलवंतो वायवः। (य. १५।११)
१०. रुद्राः सजीवा अजीवाः प्राणादयो वायवः। (य. १६।५४)
११. रुद्रा मध्यस्थाः। (य. १२।४४)
१२. रुद्रा रुद्रसंज्ञका विद्वांसः। (य. ११।५८)
१३. रुद्रः राजवैद्यः। (य. १६।४९)
१४. रुद्रस्य सभेशस्य। (य. १६।५०)

इस तरह भाष्य में अर्थ हैं।

यजु० अ० १६ में रुद्रवाचक अनेक पद आये हैं। इनकी संख्या लगभग २४० है।

(१) **विश्व-रूप**, (२) **विद्युत्**, (३) **वायु**, (४) **वृक्ष**, (५) **गृत्स**, (६) **मंत्रिन्**, (७) **भिषक्**, (८) **सभा**, (९) **सभापति**, (१०) **स्थ-पति**, (११) **सेनानी**, (१२) **सेना**, (१३) **इषु-कृत्**, (१४) **रथी**, (१५) **वणिज्**, (१६) **किरिक**, (१७) **तक्षन्**, (१८) **परि-चर**, (१९) **स्तेन**, (२०) **प्रतरण**, (२१) **श्वन्**, (२२) **तल्प्य**.

ये सब रुद्र ही हैं-(१) सर्वव्यापक ईश्वर, (२) बिजुली, (३) वायु, (४) वृक्ष, (५) विद्वान्, (६) दिवाण, (७) वैद्य, (८) सभा, (९) सभापति, (१०) राजा, (११) सेनापति, (१२) सेना, (१३) शस्त्र बनानेवाला, (१४) वीर, (१५) बनिया, (१६) किसान, (१७) बढई, (१८) नौकर, (१९) चोर, (२०) धोखेबाज, (२१) कुता, (२२) खटमल; इन सबको यहां रुद्रही कहा है, इस सबमें '**रुद्रत्व**' है यह निश्चित है।

'**रोदयति इति रुद्रः**' (जो दूसरोंको रुलाता है, वह रुद्र है) यह रुद्र शब्दका एक अर्थ है। दूसरोंको रुलानेका धर्म रुद्रमें है, यह बात इस अर्थसे सिद्ध होती है। रुलानेका तात्पर्य कष्ट अथवा दुःख देना है। देखिए-

(१) **रोदयति शत्रून् इति रुद्रः महा-वीरः**।
(२) **रोदयति दुष्टान् इति रुद्रः न्यायाधीशः**।
(३) **रोदयति धनिकान् इति रुद्रः चोरः**।
(४) **रोदयति निद्राक्रान्तान् इति रुद्रः तल्प्य-कीटः**।

(१) शत्रुओंको रुलानेके कारण शूरको रुद्र कहते हैं। (२) दुष्टोंको रुलानेके कारण न्यायाधीशको रुद्र कहते हैं। (३) धनिकोंको रुलानेके कारण चोरको रुद्र कहते हैं। (४) सोने-वालोंको रुलानेके कारण खटमलको रुद्र कहते हैं।

उक्त चार विग्रहोंमें क्रमशः '**(१) शत्रून्, (२) दुष्टान्, (३) धनिकान्, (४) निद्राक्रान्तान्।**' इन चार पदोंका अध्याहार अर्थात् कल्पना की है। और उस कल्पनाके अनुसार 'रुद्र' शब्दके चार भिन्न भिन्न अर्थ किये हैं। जहां जैसा पूर्वापर संबंध होगा, वहां वैसा अर्थ लेना उचित है।

उक्त चार अर्थोंमें '**रुलानेका धर्म**' सबमें समान है। यही यहां '**रुद्रत्व**' है। '**रोदयितृत्वं रुद्रत्वं**' रुलानेका धर्म हि रुद्रपन है, ऐसा हम यहां कह सकते हैं। जहां जहां 'रुलानेका गुण' होगा, वहां वहां रुद्रत्व होगा, यह इस विवरण-का तात्पर्य है।

इस प्रकार अन्य स्थानोंमें भी समझना चाहिए। यह बात स्पष्ट है कि इस अर्थमें 'स्वयं दुःखका अनुभव करना रुद्रपनका लक्षण' है। दूसरोंको रुलाना अथवा स्वयं रोना ये दोनों रुद्रके लक्षण हैं। इन दोनों अर्थोंको लेनेसे पूर्वोक्त रुद्रवाचक अनेक शब्दोंमेंसे कई शब्दोंका मूल आशय खुल जाता है और इस बातका निश्चय होता है, कि इनको रुद्र क्यों कहा गया है।

'**रुद्र**' के इतने ही लक्षण नहीं है। '**रुत् ज्ञानं तत् ददाति इति रुद्रः**।' जो ज्ञानको उपदेशद्वारा देता है, वह रुद्र होता है। इस अर्थको लेनेसे '**ज्ञानी, उपदेशक, गुरु, व्याख्यानदाता**' ये रुद्र हैं, ऐसा प्रतीत होगा। पूर्वोक्त शब्दोंमें 'अधिवक्ता' शब्द इसी अर्थका प्रकाश करनेवाला है। 'श्रुत, गृत्स, मंत्रिन्' ये भी शब्द इसी भावको बतानेवाले हैं। '**ज्ञानदातृत्वं रुद्रत्वं**' दूसरोंको उपदेश करनेका रुद्रका धर्म है, ऐसा इस अर्थसे सिद्ध होता है।

'**रुद् दुःखं द्रावयति विनाशयति इति रुद्रः**।' रुत् अर्थात् दुःख, उसका जो नाश करता है, वह रुद्र कहलाता है। 'क्षत्र' शब्दका अर्थ 'क्षतात् त्रायते' जो दुःखसे बचाता है,

ऐसा होता है। यह रुद्रका एक अर्थ है।

रुद्+द्र= दुःखको दूर करनेवाला।

क्षत्+त्र= दुःखसे बचानेवाला।

ये दोनों शब्द बिलकुल समान अर्थवाले हैं। इसीलिये क्षत्रिय-वाचक शब्द रुद्रके लिये आये हैं। इस बातको पूर्वोक्त वीरवर्गमें पाठक देख सकते है।

'रुद् रोगं राति ददाति इति रुद्रः रोगोत्पादकः।' जो रोगोंको उत्पन्न करता है, उसको रुद्र कहते है। बुरी हवा, सडा हुआ जल, दुर्गंधयुक्त भूमि, कुपथ्य, आदि सब इस अर्थके कारण रुद्र होते है। **'रुत्'** शब्दके दुःख और रोग ऐसे अर्थ कोशोंमें हैं। रोग उत्पन्न करना यह रुद्रका कार्य कई मंत्रोंमें वर्णन किया है, उनमेंसे एक मंत्र यहां देखिए—

येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ॥

(यजु. अ. १६।६२)

'(ये) जो रुद्र (अन्नेषु) अन्नोंमें और (पात्रेषु) बर्तनोंमें प्रविष्ट होकर (पिबतः जनान्) जल पीनेवाले मनुष्योंको (विविध्यन्ति) अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं।' यह रुद्रका वर्णन विशेष प्रकारसे देखने योग्य है। इसी मंत्रके भाष्य देखिए—

श्री सायणाचार्य— ये रुद्रा अन्नेषु भुज्यमानेषु स्थिताः सन्तो जनान् विविध्यन्ति, विशेषेण ताडयन्ति। धातुवैषम्यं कृत्वा रोगान् उत्पादयन्ति इत्यर्थः। तथा पात्रेषु पात्रस्थक्षीरोदकादिषु स्थिताः सन्तः क्षीरादिपानं कुर्वतो जनान् विविध्यन्ति। अन्नोदकभोक्तारो व्याधिभिः पीडनीया इति भावः ॥ (काण्वयजु. १७।७।१३)

श्री महीधराचार्य— (पूर्ववत्)

श्री उवटाचार्य— ये अन्नेषु अवस्थिताः विविध्यन्ति अतिशयेन विध्यन्ति ताडयन्ति। येषामयमधिकारः अन्नस्य भक्षयितारो व्याधिभिर्गृहीतव्या इति इ० ॥

उक्त आचार्य-मतका तात्पर्य— ये रुद्र अन्न और पानीमें प्रविष्ट होकर उस अन्नको खानेवाले और उस पानीको पीनेवाले लोगोंमें रोग उत्पन्न करते हैं।

रोग उत्पन्न करना रुद्रोंका कर्म है। रोगजन्तुओंका यह वर्णन है। **'रोग-जन्तु'** अन्नके द्वारा और जलके द्वारा शरीरमें प्रविष्ट होकर शरीरमें नाना प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं, यही भाव उक्त मंत्रका है। इसलिये रोगबीजोंका नाम रुद्र हुआ है। रोगजंतु किस प्रकारके होते हैं और कहां रहते हैं, इस बातका ज्ञान पूर्वोक्त अध्यायमें **'जन्तुवर्ग'** के रुद्रवाचक शब्दोंके अर्थोंका विचार करनेसे स्पष्टतया हो सकता है।

तात्पर्य इस प्रकार रुद्रोंके लक्षण हैं। यहां नमूनेके लिये थोडेसे दिये हैं। विशेष विचार करनेके लिये पूर्वोक्त आचार्योंके अर्थोंका मनन करना उचित है। इन अर्थोंको देखनेसे **'रुद्रत्व'** की कल्पना हो सकती है। अर्थात् **'रुद्र'** यह कोई एकही पदार्थ नहीं है, परंतु यह अनेक कल्पनाओंका समूहवाचक शब्द है।

जिस प्रकार 'प्राणी' कहनेसे 'मनुष्य, घोडा, गाय, चूहा' आदि का बोध होता है अथवा 'मनुष्य' कहनेसे 'ज्ञानी, शूर, व्यापारी' आदि जनोंका बोध होता है, इसी प्रकार 'रुद्र' कहनेसे 'ज्ञानी, शूर, दुष्ट, सज्जन' आदिका बोध होता है। परंतु ये सब प्रत्यक्षमें एक नहीं हैं, इनमें भिन्नत्व है। इस भिन्नत्वका स्वरूप यहां बताया है और इस समयतक के संपूर्ण विवरणमें भी इसी भिन्नत्वका रूप स्पष्ट किया है।

श्री भ०गीताके विभूतियोगके साथ तुलना।

श्रीमद्भगवद्गीताके १० अध्यायमें 'विभूतियोग' कहा है। उसका थोडासा भाग देखिए—

रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥२५॥
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥३०॥
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥३२॥
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥३६॥
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पांडवानां धनंजयः ॥३७॥
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंशसंभवम् ॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ॥
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥३२॥

(श्री भ० गी० अ० १०)

" रुद्रोंमें मैं शंकर, यक्ष और राक्षसोंमें मैं कुबेर, वसुओंमें मैं पावक, चोटियोंवाले पहाडोंमें मैं मेरुपर्वत हूं। यज्ञोंमें जपयज्ञ, स्थिर पदार्थोंमें हिमालय, मृगोंमें सिंह, पक्षियोंमें गरुड, विद्याओंमें आत्मविद्या और वक्ताओंका भाषण मैं ही हूं। **कपटियोंका द्यूत** अर्थात् **जूआ**, तेजस्वियोंका तेज, वृष्णियोंमें वासुदेव, पांडवोंमें अर्जुन **मैं हूं**। जो जो विशेष ऐश्वर्ययुक्त,

शोभायुक्त और उच्च तत्त्व होगा, वह सब मेरे ही अंशसे हुआ है, ऐसा तुम जानो। अथवा इतने विस्तारसे कहनेकी क्या आवश्यकता है ? सारांशरूपसे इतनाही कहना पर्याप्त है कि एक अंशसे सब जगत् व्याप कर मैं रहा हूं।'

जगत्में जो जो ऐश्वर्ययुक्त सत्त्व होता है, वह परमेश्वरके अंशसे होता है, ऐसा यहां कहा है।

इसी 'विभूतियोग'के समान 'रुद्रको चोर के रूपमें मानना' है। कई टीकाकारोंने इस रुद्राध्यायपर टीका करते हुए लिखा है कि चोर और डाकूभी रुद्रके रूप हैं। देखिए—

रुद्रो लीलया चोरादिरूपं धत्ते, यद्वा रुद्रस्य जगदात्मकत्वाच्चोरादयो रुद्रा एव ज्ञेयाः। यद्वा स्तेनादिशरीरे जीवेश्वररूपेण रुद्रो द्विधा तिष्ठति तत्र जीवरूपं स्तेनादिपदवाच्यं तदीश्वररुद्ररूपं लक्षयति यथा शाखाग्रं चन्द्रस्य लक्षकम्। किंबहुना लक्ष्यार्थविवक्षया मंत्रेषु लौकिकाः शब्दाः प्रयुक्ताः॥

(महीधरभाष्य य. अ. १६।२०)

"रुद्ररूपी जगदात्मा लीलासे चोरका रूप धारण करता है। अथवा रुद्र जगदात्मा होनेसे चोरादि सब रुद्रही जान लीजिए। अथवा चोरादिकोंके शरीरमें जीव और ईश्वररूपसे रुद्र दो प्रकारका होकर रहता है, वहां चोर आदि शब्द जीवरूपके दर्शक होते हुए भी ईश्वररूपके बोधक होते हैं, जिस प्रकार शाखाके अग्रसे चंद्रमाका ज्ञान बताया जाता है। बहुत क्या कहना है ? ईश्वरका ज्ञान देनेकी इच्छासे मंत्रोंमें बहुतसे लौकिक शब्द प्रयुक्त किये हैं।"

श्री सायणाचार्य भी अपने काण्व-यजु० अ० १७ के भाष्य में उक्त प्रकारही कहते हैं। उक्त विषयमें सायण और महीधर की संमति एक जैसीही है।

१. **छलयतां द्यूतं अस्मि** (गीता)-कपटियोंका द्यूत मैं हूं।
२. **स्तेनानां पतिः अस्मि** (वेद)-चोरोंका स्वामी मैं हूं।
३. **स्तायूनां पतिः अस्मि**। (")-ठगोंका मुखिया मैं हूं।
४. **तस्करणां पतिः अस्मि**। (")-डाकुओंका सरदार मैं हूं।
५. **मुष्णतां पतिः अस्मि**। (")-लुटेरोंका श्रेष्ठ मैं हूं।

उक्त गीताके वचनमें '**रुद्राणां शंकरश्चास्मि।**' यह वाक्य है। 'अनंत रुद्रोंमें मैं एक शंकरनामक रुद्र हूं।' इस वाक्यमें रुद्रोंका अनंतत्व और शंकरका एकत्व सिद्ध है। यहां शंकर शब्दसे परमात्मा और रुद्र शब्दसे परमात्मासे उत्पन्न पूर्वोक्त इतर रुद्र लेना उचित है। इस प्रकार करनेसे इस वाक्यकी वेदके आशयके साथ संगति लग सकती है।

पं० जान डॉसनसाहब का मत।

'हिंदु-क्लासिकल डिक्शनरी'में पं० डॉसन साहब लिखते हैं कि-

'He is the howling terrible god, the god of storms, the father of the Rudras or Maruts, and is sometimes identified with the god of fire. On the one hand he is a distructive deity who brings diseases upon men and cattle, and upon the other he is a beneficent deity supposed to have a healing influence. These are the germs which afterwards developed into the god Siva.'

(पृ. २६९)

'यह (रुद्र) गर्जना करनेवाला भयानक देव है, जो तूफानका देव है और जो रुद्रों अथवा मरुतोंका पिता है। कभी कभी इसका संबंध अग्निदेव के साथ जोडा जाता है। एक ओर यह देव सबका नाश करता है और प्राणियोंमें बीमारियाँ फैलाता है, तथा दूसरी ओर इसको सुखदायक और आरोग्य देनेवाला देव समझा जाता है। ये ही मूल अंकुर हैं कि जिनका विकास होकर आगे जाकर शिवजीका स्वरूप बना है।'

रुद्रको केवल बादलोंका देव पं० डॉसन साहब मानते हैं। परंतु यदि वे 'रुद्र और मरुत्'के मूल अर्थोंकी थोडीसी भी खोज करते, तो उनको पता लगता कि '**रुद्र**' को '**जगतां पतिः**' अर्थात् 'अनंत ब्रह्मांडोंका स्वामी' कहा है। यह मंत्रोंका विधान ये यूरोपियन पंडित देखतेही नहीं।

सर मोनिअर वुइलियमसाहब की संमति।

यह साहब कहते हैं कि—

'Rudra, roarer, the god of tempests and father and ruler of Rudras and Maruts. (In Veda he is closely connected with Indra and still more with Agni, the god of fire ..... and also with Kala or time, the all-consumer with whom he is afterwards indentified; though

generally represented as a destroying deity,.. he has also the epithet Siva, 'benevolent or auspicious' and is even supposed to possess healing powers..... from his purifying the atmosphere ; .....)'

(सर मो. वुइलियम का संस्कृत-इंग्लिश कोश)

'गरजनेवाला रुद्र तूफानोंका देव है और रुद्रों और मरुतोंका पिता और राजा है। (वेदमें रुद्र देवका इन्द्र और विशेष कर अग्निके साथ संबंध बताया है।.....बादमें सर्वभक्षक कालके साथ भी जोड दिया है। यद्यपि इसको संहारक देव समझा जाता है.....तथापि यह कल्याणकारक और आरोग्यदायक भी वर्णन किया है। यह हवा को शुद्ध करता है।)'

एकहि परमेश्वर जगत्का उत्पादक, पालक, संहारक, कल्याणकारक, सुखदायक, आदि अनंत गुणोंसे युक्त है। ये लोग इन सब गुणोंको रुद्र-वर्णनमें देखते हैं, परंतु रुद्रको ईश्वर माननेके समय झिझकते हैं।

श्री० म० आर्थर आंटोनी मॅक्डोनेल-साहबकी संमति।

'This god occupies a subordinate position in the Rig Veda being celebrated in only three entire hymhs, in part of another, and in one conjointly with Soma. His hand, his arms, and his limbs are mentioned. He has beautiful lips and wears braided hair. His colour is brown; his form is dazzling, for he shines like the radiant sun, like gold..... he holds the thunderbolt in his arm, and discharges his lightning shaft from the sky; but he is usually said to be armed with a bow & arrows, which are strong and swift.'

'Rudra is very often associated with the Maruts (i. 85). He is their father, and is said to have generated them from the shining udder of the cow Prishni.'

'He is fierce and destructive like a terrible beast, and is called a bull, as well as the ruddy (arusa) boar of heaven. He is exalted, strongest of the strong, swift, unassailable, unsurpassed in might. He is young and unaging, a lord (Ishana) and father of the world. By his rule and universal dominion he is aware of the doings of men and gods. He is bountiful (midhvams), easily invoked and auspicious (Shiva). But he is usually regarded as malevolent; for the hymns addressed to him chiefly express fear of his terrible shafts and depreciation of his wrath..... He is, however, not purely maleficent like a demon. He not only preserves from calamity, but bestows blessing. His healing powers are especially often mentioned; he has a thousand remedies, and is the greatest physician of physicians.....'

'The physical basis represented by Rudra is not clearly apparent. But it seems probable that the phenomenon underlying his nature was the storm. .....' [A Vedie Reader, pages 56-57]

'..... यह रुद्रदेव ऋग्वेदमें निम्न कोटिका देव है। क्योंकि संपूर्ण ऋग्वेदमें इसके लिये केवल तीन सूक्तहि हैं। ..... उसके हात, बाहू और अवयवोंका वर्णन किया है। उसके होंठ सुंदर हैं, और वह जटाजूट धारण करनेवाला है। उसका बदामी रंग है और इसका आकार चमकीला है, क्योंकि तेजस्वी सूर्यके समान वह चमकता है..... मेघविद्युत् का वज्र वह हाथमें धरता है, और आकाशसे तेजस्वी बाण मारता है, परंतु बहुत करके धनुष्यबाण धारण करता है, ऐसाहि कहा गया है...'

'रुद्रका मरुतोंके साथ बहुत संबंध बताया है। वह उनका पिता है और पृश्निनामक गायके चमकीले गर्भस्थानसे मरुतोंकी उत्पत्ति की गई है, ऐसा कहा गया है।'

'क्रूर पशुके समान भयानक और विनाशक वह रुद्र है। और उसको बैल कहते हैं, तथा उसको स्वर्गका लाल सुवर कहा है। वह बडा उच्च, बलवानोंमें बलवान्, चपल, न दबनेवाला और सबसे प्रबल है। वह तरुण और वृद्धावस्थासे रहित है। वह सबका राजा और जगत्का पिता है। सब मनुष्य और सब देवताओंके सब कर्मोंको वह जानता है, क्योंकि उसका राज्य

और उसका शासन सर्व जगत्में है। वह दानशूर, कल्याणमय और सुलभतासे संतुष्ट होनेवाला है। परंतु बहुधा ऐसा समझा जाता है कि वह बडा द्रोही है, क्योंकि जिन सूक्तोंसे उनकी प्रार्थना की गई है, उन सूक्तोंमें उसके क्रोधकी भीति और उसके शस्त्रोंका डर व्यक्त हुआ है। ..... परंतु वह राक्षसके समान अत्याचारी नहीं है। वह कष्टोंसे न केवल बचाता है, परंतु आशीर्वादभी देता है। उसकी आरोग्यवर्धनकी शक्तियोंका वर्णन आया है और उसके पास हजारों दवाइयां हैं और वह वैद्योंमें बडा वैद्य है .....।'

'रुद्रके द्वारा जिस पांचभौतिक घटनाका वर्णन हुआ है, वह घटना स्पष्ट रीतीसे ज्ञात नहीं होती। परंतु यह संभव है कि उसके स्वभावके नीचे जो पांचभौतिक घटना है, वह बहुधा तूफानी अवस्था होगी.....'

(वैदिकरीडर, पृ. ५६-५७)

युरोपियन पंडितोंकी ये हि संमतियां हैं। अन्य अनेक पंडितोंने रुद्र देवताके विषयपर बहुतसा लिखा है, परंतु उसका मुख्य अंश उक्त संमतियोंमें हैं। इसलिये और अधिक संमतियां न देता हुआ मैं इनकीही समालोचना करता हूं। उक्त संमतियां देखनेसे निम्न मत प्रतीत होते हैं-

(१) रुद्रका दर्जा बहुत नीचे है, क्योंकि उसके लिये थोडे सूक्त हैं।

(२) उसके अवयवोंका और रंगरूपका वर्णन होनेसे वह साकार है।

(३) धनुष्यबाणका वर्णन होनेसे वह शस्त्रधारी साकार है।

(४) रुद्र मरुतोंका पिता है और पृश्निनामक गायसे मरुतोंकी उत्पत्ति हुई है।

(५) रुद्र देव क्रूर, द्रोही, भयानक है, परंतु राक्षसके समान अत्याचारी नहीं है।

(६) वह उच्च, श्रेष्ठ, सर्वशक्तिमान्, चपल, न दबनेवाला, सबसे प्रबल, तेजस्वी, सर्वज्ञ, दाता, मंगलमय और संतुष्ट है। वह सब जगत्का पिता और राजा है।

(७) यह आरोग्यदाता और रोग दूर करनेवाला है।

(८) रुद्रके वर्णनके बीचमें जो नैसर्गिक घटना है, वह गुप्त है, उसका पता नहीं लगता। परंतु वह घटना बहुधा तूफानकी हवा होगी।

(९) वह बैल और दिव्य सुवर कहा गया है।

(१०) रुद्र मेघस्थानकी बिजुली है।

अब हम रुद्रसूक्तका थोडासा विचार करते हैं—

पौराणिक रुद्र और वैदिक रुद्र।

पुराणोंमें आया हुआ रुद्रका वर्णन और वेदका रुद्रका वर्णन कई अंशोंमें भिन्न है। देखिए—

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राऽम्बिकया तं जुषस्व स्वाहा। एष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः॥ (यजु० ३।५७)

'हे रुद्र! यह तेरा भाग है। अपनी बहन अंबिकाके साथ उसका सेवन करो। यह तेरा भाग है और चूहा तेरा पशु है।'

यहां इतनाही बताना है कि वेदमें अंबिका रुद्रदेवकी बहन कही है, परंतु पुराणोंमें उसकी धर्मपत्नी कही है। तथा रुद्रका पशु चूहा इस मंत्रमें बताया है। परंतु पुराणोंमें चूहा गणपतिका पशु कहा है। यह भेद देखने योग्य है। तथा—

भवारुद्रौ सयुजा संविदानावुभावुग्रौ चरतो वीर्याय। ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीतः॥

(अथर्व. ११।२।१४)

'भव और शर्व ये दोनों (सयुजा) साथ रहनेवाले मित्र, (संविदानौ) उत्तम ज्ञानवाले हैं। (उभौ उग्रौ) दोनों प्रतापी हैं, वे (वीर्याय चरतः) वे पराक्रम करनेके लिये चलते हैं। (यतमस्यां दिशि) जिस किसी दिशामें वे होंगे, उनको हमारा नमस्कार है।'

इससे 'भव और शर्व' ये परस्पर भिन्न हैं, परंतु साथ रहनेवाले और बडा पराक्रम करनेवाले हैं, ऐसा पता लगता है। पुराणमें ये दोनों शब्द एकहि रुद्रके लिये आये हैं।

'भव' का अर्थ 'उत्पन्नकर्ता' है और 'शर्व' का अर्थ 'प्रलय करनेवाला' है। परमात्मामें ये दोनों गुण होनेसे वहां इनकी भिन्नता लुप्त होती है, ऐसा भी माना जा सकता है। इसलिये यह भिन्नत्व और एकत्व विशेष विचारसे सोचना चाहिए।

रुद्रका शरीर।

शिवपुराणमें निम्न श्लोक 'रौद्री तनुः' अर्थात् रुद्रके शरीरके विषयमें आते हैं, रुद्रका विचार करनेके समय इसका भी विचार करना उचित है—

अग्निरित्युच्यते रौद्री घोरा या तैजसी तनुः ।
सोमः शाक्तोऽमृतमयः शक्तेः शांतिकरी तनुः॥३॥
विविधा तेजसे वृत्तिः सूर्यात्मा च जलात्मिका ।
तथैव रसवृत्तिश्च सोमात्मा च जलात्मिका ॥४॥
वैद्युतादिमयं तेजः मधुरादिमयो रसः ।
अग्नेरमृतनिष्पत्तिरमृतादग्निरेधते ॥ ५ ॥

' अग्नितत्त्वको रुद्रका भयानक तैजस् शरीर कहते हैं । तथा जलमय सोमतत्त्वको शक्तिका-(रुद्रपत्नी)-शांतिकारक शरीर कहते हैं । तेजके तत्त्व अनेक प्रकारके हैं तथा जलके तत्त्वभी विविध है । विद्युत् आदि तेज हैं और मधुर आदि रस है। अग्नि से जलकी उत्पत्ति और जलसे अग्निका प्रकाश होता है ।' इस प्रकार सब जगत् 'तैजस् उग्र शक्तिके साथ जलात्मक शांत शक्तिके वास्तव्य' से होता है ।

उक्त वर्णनका तात्पर्य इतनाही है कि, इस जगत्में दो शक्तियां हैं. (१) एक तेजस शक्ति गति उत्पन्न करनेवाली है; (२) दूसरी शांति करनेवाली एक शक्ति है । इन दो शक्तियोंसे यह जगत् चल रहा है । दोनों शक्तियां कार्य कर रहीं है । पहिली रुद्र शक्ति है और दूसरी रुद्रकी धर्मपत्नी है । इसीलिये इन को जगत् के माता पिता कहते हैं ।

रुद्र	अंबिका
महादेव	पार्वती
अग्नि	जल
सूर्य	चंद्र
अग्नि	सोम

इत्यादि शब्दोंसे उक्त आशयका पता लग सकता है । आशा है कि इस विधानका भी पाठक विचार करेंगे ।

खोजका विषय ।

'रुद्र' देवताका परिचय देनेके लिये बहुतसा रुद्रविषयक ज्ञान इस निबंधमें एकत्रित किया है । अभी बहुतसे बातोंका संशोधन करना है। आशा है कि पाठक इन बातोंका विचार करेंगे और रुद्रत्वका निश्चय करनेके लिये अन्य ग्रंथोंका संशोधन करके अधिक ज्ञान प्रकाशित करेंगे ।

रुद्रदेवताका यजुर्वेदोक्त विश्वरूप ।

यह रुद्रसूक्त यजुर्वेद-संहिता में है । वाजसनेयी संहिता का १६ वां अध्याय, काण्वसंहिताका १७ वां अध्याय, मैत्रायणी संहिताका काण्ड २, प्रपाठक ९; काठक संहिताका १७,१३-१४; कपिष्ठल कठ संहिता का २७,३-४; तैत्तिरीयसंहिताका कां. ७।५।४–५ रुद्रदेवता के वर्णन के लिये ही प्रसिद्ध हैं । जो सूक्त हम यहां आज विचार करनेके लिये लेना चाहते हैं, वह इतनी संहिताओं में प्रमाणत्वेन विद्यमान है । इस अध्याय में रुद्रदेवताका बडा विस्तृत वर्णन है ।

यहां विचार करनेके लिये हम वा० यजु० अ० १६ के १७–४६ और ५४ ये ३१ मंत्र लेते हैं ।

यहां कई रुद्रों के नाम गिनाये हैं । इन मन्त्रों में नाम ही नाम गिनाये हैं । इन नामों के हम नीचे वर्ग करके बता देते हैं, जिन से पाठकों को पता लगेगा कि, वे सब रुद्र किन किन वर्गों में संमिलित होने योग्य हैं । इन में से जो मानवों में संमिलित होनेयोग्य हैं, उन के वर्ग वे हैं—

मानवरूपों में रुद्र ।
(ज्ञानी पुरुष ।)

पूर्वोक्त मन्त्रों में जो ज्ञानी-वर्ग के रुद्र हैं, उनकी नामावलि यह है । ज्ञानी-वर्गके रुद्रोंको ब्राह्मणवर्ग के रुद्र कहा जा सकता है ।

१. **गृत्स** = ज्ञानी, कवि, एक ऋषि [२५]
२. **गृत्सपति** = ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ, गृत्सों का अधिष्ठाता [२५]
३. **श्रुत** = विख्यात, प्रसिद्ध, विद्वान्, श्रुति का वेत्ता[३५]
४. **पुलस्ति** = विद्वान्, ऋषि [४३]
५. **रुद्र** = [रु] शब्द शास्त्र का [द्र] पारंगत, ज्ञानी [१८]
६. **वदःगुरमाण** = उत्तम ज्ञानका उपदेश देनेवाला, वक्ता [४६]
७. **अधिवक्ता** = [वा० य० १६।५] = उपदेशक, अध्यापक, वक्ता ।
८. **मंत्री** = राजा का मन्त्री, दिवान, सलाहगार, सुविचारी, बुद्धिमान्, चतुर, हित की मंत्रणा देनेवाला [१९]
९. **देवानां हृदयः** = देवताओंके लिये जिसने अपना हृदय दिया है, भक्त, प्रेमी, साधु, सज्जनों की सेवा करनेवाला [४६]
१०. **भिषक्, दैव्यो भिषक्** = दिव्य वैद्य [वा० य० १६।५], **आयुर्वृध** [६०] आयुष्य की वृद्धि करनेवाला ।

११. **ओषधीनां पतिः** = औषधियां अपने पास रखनेवाला [१९]

१२. **सभा** = सभा, परिषद्, विविध सभाओं के सभासद [२४]

१३. **सभापतिः** = सभा का अध्यक्ष, परिषद् का प्रमुख [२४]

१४. **श्रवः** = कान, सुननेवाला, श्रवण करनेवाला, शिष्य [३४] **प्रमृशः** = परामर्श लेनेवाले पंडित [३६]

१५. **प्रतिश्रवः** = सुनानेवाला, उपदेश करनेवाला, गुरु [३४]। वादी-प्रतिवादी, प्रश्न-प्रतिप्रश्न के समान श्रव-प्रतिश्रव ये पद हैं। इनका परस्परसंबंध है। **सोभ्यः** [३३] = पुण्यकर्म करनेवाले तथा **प्रतिसर्य** [३३] = गुप्त बात प्रकट करनेवाले।

१६. **श्लोक्यः** = प्रशंसनीय, श्लोकों के योग्य, प्रशंसनीय विद्वान् [३३]

प्राचीन परंपराके अनुसार वैद्य, राजा का मंत्री, अध्यापक आदि ब्राह्मण अथवा ज्ञानी-वर्गके लोग ही हुआ करते हैं। अर्थात् ये ब्राह्मण हैं अथवा ज्ञानी तो निःसन्देह हैं।

पुरुषसूक्त में ' ब्राह्मणों को नारायण का मुख ' कहा है। यहां उसी नारायण के अथवा रुद्रदेवता के मुख में किन का समावेश होता है, यह अधिक नाम देकर बताया है। यहां के कई नाम जैसे ' उद्गुरमाण ' आदि अन्य वर्गमें भी गिने जाना स्वाभाविक है। जो शेष बचेंगे, वे इस वर्ग में रहेंगे। इस तरह ब्राह्मणवर्ग के रुद्रोंका विचार करने के पश्चात् अब क्षत्रियवर्ग के रुद्रों का, अथवा वीरोंका विचार करते हैं। रुद्र का नाम ' **वीरभद्र** ' सुप्रसिद्ध है। कल्याण करनेवाला वीर ' वीरभद्र ' कहा जाता है। देखिये, वीरभद्रके वर्गमें कौनसे रुद्र गिने जाने योग्य हैं—

क्षत्रिय-वर्ग के रुद्र ।

(वीर रुद्र ।)

(**रोदयति इति रुद्रः**) जो रुलाता है, वह रुद्र है। शत्रुओं को रुलाने के कारण वीर को रुद्र कहते हैं। इस तरह क्षत्रिय वीर रुद्र कहे जाते हैं।

१. **रुद्रः** = शत्रुओं को रुलानेवाला वीर [१,१८] **तवस्** = बलवान् [४८] आगे राजाके अनेक अधिकारी, ओहदेदार, रुद्र करके गिनाये हैं।

२. **क्षेत्राणां पतिः** = खेतोंकी रक्षा करनेवाला [१८] **भूतानां अधिपतिः** = प्राणियों के रक्षक [५९]

३. **वनानां पतिः** = वनोंकी पालना करनेवाला [१८] **वन्यः** = वनमें उत्पन्न [३४]

४. **अरण्यानां पतिः** = अरण्यों का संरक्षण करनेवाला [२०]

५. **स्थपतिः** = स्थानोंका पालक [१९], **पथिरक्षी** [६०], **प्रपथ्य** [४३] = मार्गों की रक्षा करनेहारे।

६. **कक्षाणां पतिः** [१९] **दिशां पतिः** [१७] (**कक्षा**) = गुप्त स्थान, अन्तका भाग, बडा अरण्य, बहुत ही बडा वन। [**कक्षाणां पतिः, कक्षापः**] = गुप्त स्थान की रक्षा करनेवाला, अन्तिम विभाग का रक्षक, बडे अरण्योंका रक्षक [१९], **कक्ष्यः** = अरण्य की कक्षा में रहनेवाला [३४]

७. **पत्तीनां पतिः** = सेनाओं का पालक, सेनापति, पादचारी सेनाविभाग का अधिपति [१९], **सत्वनां पतिः** = प्राणियोंका रक्षक [२०]

८. **आव्याधिनीनां पतिः** = उत्तम निशाना मारनेवाले सैनिकोंका अधिपति, सेनापति [२०], [**व्याधिन्**] = शत्रु का वेध करनेवाला [२०,२४]

९ **विकृन्तानां पतिः** = शत्रु सैनिकोंका अधिपति [२१]

१०. **कुलुञ्चानां पतिः** = शत्रुसेनाको पीसनेवाले, शत्रुपर चढाई करके उनके सेनाविभागोंको पृथक् करके उनका नाश करनेवाले वीरोंके प्रमुख अधिपति [२२]

११. **गणपतिः** = वीरोंके गणों के अधिपति [२५] **ककुभः** = प्रमुख, मुख्य [२०]

१२. **व्रातपतिः** = वीरों के समूह के प्रमुख [२५]

१३. **सेना, १४ व्रातः, १५ गणः** = ये सेनाविभागोंके नाम हैं; सैनिकों की संख्या के अनुसार ये नाम प्रयुक्त होते हैं [२५,२६]।

१६. **शूरः** = वीर, शूर [३४]; **क्षयद्वीरः** = शत्रु का नाश करनेवाला वीर [४८]; **उग्रः, भीमः** = उग्र, शूर वीर, भयानक कर्म करनेवाले [४०]

१७. **विचिन्वत्कः** = शूर वीर, बहादुर, चुन चुन कर शत्रुवीरों का वेध करनेवाला वीर [४६], **विकिरिद्रः** = विशेष नाश करनेवाला [५२]

१८. **रथी** = रथमें बैठनेवाला वीर [२६]

१९. **अरथी** = रथके विना युद्ध करनेमें प्रवीण वीर [२६]
२०. **आशुरथ** = जो त्वराके साथ रथयुद्ध करता है, त्वरासे रथ चलानेवाला वीर [३४]
२१. **उगणा** = शस्त्रास्त्रों को ऊपर उठाकर शत्रुपर हमला करनेवाली सेना का समूह [२४]
२२. **आशुसेनः** = अपनी सेनाको अतिशीघ्र तैयार करनेवाला वीर, अपनी सेनाको सदा सिद्ध रखनेवाला वीर [३४]
२३. **श्रुतसेनः** = जिस सेनाका यश चारों और फैला हो, विख्यात, यशस्वी, सदा विजयी सेनापति [३५]
२४. **सेनानी** = सेनाको कुशलता के साथ चलानेवाला सेनापति [२६]
२५. **दुंदुभ्यः** = नौबत, ढोल अथवा बाजेके साथ रहकर लडनेवाला सैन्य [३५]
२६. **असिमान्** = तलवारसे लडनेवाले सैनिक वीर [२१]
२७. **इषुमान्** = बाणोंका उपयोग करनेवाले, बाणोंको बर्तनेवाले वीर [२२,२९]
२८. **सृकायी** = तीक्ष्ण बाण अथवा भाला बर्तनेवाला वीर [२१]
सृकाहस्ताः = शस्त्र धारण करनेवाले [६१]
२९. **निषङ्गी** = खड्गधारी वीर [२०,२१,३६]
३०. **धन्वायी** = धनुष्य धारण करके शत्रुपर चढाई करनेवाला वीर [२२]
आयुधी = शस्त्रोंको साथ रखनेवाला वीर [३६]
३१. **शतधन्वा** = सौ धनुष्योंका धारण करनेवाला वीर [२९]
३२. **इषुधिमान्** = बाणोंके तर्कसको पास रखनेवाला [२१,३६]
३३. **तीक्ष्णेषुः** = तीखे बाणोंका उपयोग करनेवाला [३६]
३४. **स्वायुधः** = उत्तम आयुधोंको पास रखनेवाला [३६]
३५. **सुधन्वन्** = उत्तम धनुष्यका उपयोग करनेवाला [३६]
३६-३९. **वर्मी, कवची, विलपी, वरूथी** = विविध प्रकारके कवच धारण करनेवाला वीर [३५]
४०. **कृत्तायतया धावन्** = आकर्ण धनुष्य पूर्णतया खींचकर युद्धभूमिमें दौडनेवाला वीर [२०]
४१. **निषङ्गी** [१८,२०] = शत्रुका निःशेष वेध करनेवाला वीर [२०]
४२. **जिघांसत्** = शत्रुकी कत्ल करनेवाला वीर [२१]
४३. **विध्यत्** = शत्रुका वेध करनेवाला [२३]
४४. **अश्वभेदी** = शत्रुको नीचे गिराकर उसको छिन्नभिन्न करनेवाला वीर [३४]
४५. **हन्ता** = शत्रुका हनन करनेवाला [४०]
४६. **हनीयान्** = शत्रुका संहार करनेवाला [४०]
४७. **अभिघ्नत्** = शत्रुपर प्रहार करनेवाला [४६]
४८. **अग्रेवधः** = अग्रभागमें रहकर शत्रुका वध करनेवाला [४०]
४९. **दूरेवधः** = दूरसे शत्रुका वध करनेवाला [४०]
५०. **आहनन्यः** = शत्रुपर आघात करनेवाला [३५] ढोलका शब्द करता हुआ शत्रुपर आक्रमण करनेवाला।
५१. **धृष्णुः** = शत्रुका वध करनेवाला साहसी वीर [१४,३६]
५२. **विक्षिणत्क** = शत्रुका नाश करनेवाला [४६]
५३. **आनिर्हत** = आसमन्तात् भागसे जिसने शत्रुका वध किया है [४६]
५४. **सहमानः** = शत्रुका पराभव करनेवाला [२०]
५५. **आतन्वानः** = धनुष्यकी प्रत्यंचा चढानेवाला वीर [२२]
५६. **प्रतिदधानः** = प्रत्यंचा चढाये धनुष्यपर बाण लगानेवाला [२२]
५७. **आयच्छत्** = धनुष्यकी डोरी खींचनेवाला वीर [२२]
५८. **अस्यत्** = शत्रुपर बाण फेंकनेवाला [२२]
५९. **विसृजत्** = शत्रुपर विशेष रूपसे बाण फेंकनेवाला [२३]
६०-६१. **आखिदत् प्रखिदत्** = शत्रुको खेद उत्पन्न करने योग्य आचरण करनेवाला वीर [४६]
६२-६३. **आव्याधिनी** [२४], **आव्याधिनीनां पतिः** [२०] = शत्रुसेनापर चारों ओरसे हमला करनेवाला वीर तथा ऐसी वीरसेनाका सेनापति।
६४. **विविध्यन्ती** = विशेष रीतिसे शत्रुसेना का वेध करनेवाली प्रबल वीरसेना [२४]
६५. **तृंहती** = शत्रुका नाश करनेवाली वीरसेना [२४]
६६. **अवसान्यः** = अन्तिम भागपर खडा रहकर संरक्षण करनेवाला वीर [३३]
६७. **पथीनां पतिः** = मार्गस्थोंके रक्षक वीर [१७]
६८. **मृगयुः** = मृगया, अथवा शिकार करनेवाला वीर [२७]

ये वीरवर्ग अथवा क्षत्रियवर्गके नाम हैं। रुद्रोंकेही ये नाम हैं, जैसे ब्राह्मणवर्गके रुद्र पीछे दिये हैं, वैसे ही ये क्षत्रियवर्गके

रुद्र हैं। जिस तरह ब्राह्मण रुद्र हैं, वैसे ही क्षत्रिय भी रुद्र हैं। अब वैश्यवर्गके रुद्र देखिये। वैश्यवर्गमें खेती और पशु-पालन करनेवालोंका समावेश होता है, अतः उक्त मन्त्रोंमें वैश्य-रुद्रोंका वर्णन देखिये—

वैश्यवर्गके रुद्र ।

वैश्यवर्गमें निम्नलिखित रुद्रोंका अन्तर्भाव हो सकता है—

१. **वाणिजः** = बनिया, व्योपारी, दूकानदारी करने-वाला [१९]

२. **संग्रहीता** = पदार्थों का संग्रह करनेवाला [२६] **वारिवस्कृत्** [१९] धनकी उत्पत्ति करनेवाला।

३-४. **अन्धसस्पतिः** [४७], **अन्नानां पतिः** [१८] = अन्नका पालनकर्ता, अन्नके लिये उपयोगी होनेवाले विविध धान्यादि पदार्थोंका पालन करनेवाला,[४७,१८] **ऐलबृदाः** [६०] = अन्नकी वृद्धि करनेवाला।

५. **वृक्षाणां पतिः** = वृक्षवनस्पति आदिओं की पालना करनेवाला [१९]

६-७. **पशुपतिः** [२८], **पशूनां पतिः** [१७] = पशुओं का पालनेवाला।

८. **अश्वपतिः** = घोडोंकी पालना करनेवाला [२४]

९-१०. **श्वपतिः** [२८], **श्वनी** [२७], कुत्तोंकी पालना करनेवाला।

११. **पुष्टानां पतिः** = पुष्टोंके स्वामी [१७]

१२. **जगतां पतिः**= चलनेवालोंका पालक [१८]

वैश्योंका कर्तव्य खेती, वृक्षसंवर्धन और पशुपालन है। यह कर्म करनेवाले ये रुद्र इस रुद्रसूक्तमें दीखते है। इस तरह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्गोंके रुद्रोंका वर्णन हमने यहां तक देखा। शूद्रवर्गके रुद्रोंका वर्णन अब देखना है। शूद्रोंमें सब कारीगरों का समावेश होता है। देखिये—

शिल्पिवर्गके रुद्र ।

पूर्वोक्त मंत्रोंमें निम्नलिखित रुद्र शिल्पिवर्गके आ गये है—

१. **सूतः** = सारथी, रथ चलानेवाला, घोडोंको शिक्षा देनेवाला, भाट और वीरोंकी कथाओंको सुनानेवाला।

२-४. **क्षत्ता** [२६], **तक्षा** [२७], **रथकारः** [२७] = बढई, तर्खाण, रथ बनानेवाला, लकडीका काम करने-वाला [२६]

५-६. **धनुष्कृत्, इषुकृत्** = धनुष्य और बाण बनाने-वाला कारीगर [४६]

७. **कर्मारः** = लुहार, लोहेका अथवा धातुका कार्य करनेवाला [२७]

८. **कुलालः** = कुम्हार [२७]

९. **निषादः** = जंगलमें रहनेवाला, जंगली आदमी, सभामें [नि साद] सबसे नीचे बैठने योग्य [२७]

१०. **पुंजिष्ट** = टोलियां बनाकर रहनेवाले लोग [२७]

११. **गिरि-चरः** [२२] **गिरिशयः** [२९] **गिरिशन्त** [२] पहाडियोंपर घूमनेवाला, पहाडी लोग।

१२. **उत्तरण, प्रतरण, तार** = नदीके पार करानेवाला, नदीपार करानेमें कुशल [४२]

१३. **अहन्तिः सूतः** = हननसे बचानेवाला सूत [१८]

ये नाम प्रायः कारीगरोंके तथा अन्यान्य व्यवहार करनेवालों के वाचक है। अर्थात शूद्रों के वाचक है। शूद्रोंमें जो कारीगरी कर नहीं सकते,वे परिचर्या, सेवा शुश्रूषा करके अपनी आजीवि-का करते है, उनके नाम उपर्युक्त रुद्रमंत्रों में ये है -

१४. **परि-चरः**= परिचारक, नौकर, सेवक, परिचर्या करने-वाले [२२]

१५. **नि-चेरुः** = नौकरी करनेवाला, नीचे के स्थानमें रहनेयोग्य [२०]

१६. **जघन्यः** = हीन, अन्त्यज, नीच वृत्तिका मनुष्य,अधः-पतित मनुष्य [३२]

ये नाम शूद्रवर्ग के है। इनमें 'परिचर' नाम परिचर्या करने-वाले का स्पष्ट है। लुहार, बढई आदि के नाम भी सब को मालूम है। शूद्रो में दो भेद हैं, एक सच्छूद्र कहलाते हैं। जो कारीगरीके द्वारा अपनी आजीविका प्राप्त करके निर्वाह करते है और दूसरे असच्छूद्र है, जो सेवा करके आजीविका प्राप्त करते है। इन दोनों प्रकारके शूद्रो का वर्णन पूर्वोक्त शब्दोंद्वारा हुआ है।

यहां तक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्गोंके अर्थात ज्ञानी, शूर, व्यापारी और कारीगर इन चार प्रकार के व्यवसायियों के नाम रुद्र के नामों में दीखते है। वे सब रुद्र के रूप हैं। रुद्रदेवता इन रूपों में इस भूमिपर विचर रहा है। रुद्रदेवता की भेट करनी हो, तो इन रूपों में रुद्र का दर्शन हो सकता है। रुद्र इन नाना रूपों में इस भूमिपर विचर रहा है। रुद्रदेवता के भक्त अपनी उपास्य देवता का दर्शन करें। वेद ने रुद्रदेवता का इस तरह प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराया है। पाठक इस का स्वीकार करें।

पाठक यह जानते हैं कि, 'रुद्र' उसी एक अद्वितीय देव का नाम है, जिस को 'पुरुष, नारायण, अग्नि, इन्द्र,' आदि अनेक नाम दिये गये हैं।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्
बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद् वैश्यः
पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ [ऋ० १०।९०।१२]

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णोंके लोग ये सब परमात्माके क्रमशः सिर, बाहू, पेट या जंघा तथा पांव हैं। अर्थात् चारों वर्ण मिलकर परमात्मा का शरीर है। परमात्मा के शरीरके ये चार अवयव हैं। इस परमात्मा को आत्मा, ब्रह्म, पुरुष, नारायण या रुद्र आदि नामों से पुकारते हैं। रुद्र और नारायण एक ही देव है। एक ही देवताके ये दो नाम हैं। इसलिये जो वर्णन नारायणपुरुष का पुरुषसूक्त में हुआ है, वही वर्णन रुद्र का विस्तार से रुद्रसूक्त में दिखाई दिया, तो वह उचित ही है।

यहां पाठक देखें कि, पुरुषसूक्त में जो वर्णन अतिसंक्षेप से है, वही वर्णन रुद्रसूक्त में विस्तार से है। पुरुषसूक्त में पुरुष-नारायण-देवता के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये लोग अवयव हैं, ऐसा कहा है और रुद्रसूक्त में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्गों के कई नाम गिनाये है। अर्थात् पुरुषसूक्त का यह विस्तार से स्पष्टीकरण है। इस रुद्रसूक्तमें ये रुद्र के रूप हैं, ऐसा कहा है; और इन रुद्र को नमस्कार किया है। ये उपास्य और संसेव्य हैं, ऐसा यहां बताया है।

मानवों को जो परमात्मा संसेव्य है, वह ज्ञानी, शूर, व्यापारी और सेवक रूप से इस भूमिपर विचरनेवाला ही परमात्मा है। यह बात इस रुद्रसूक्त के मनन से सिद्ध हो रही है। परमात्मा सब रूपों में इस भूमि पर विचर रहा है, इन में मानवों के रूप भी हैं। हमें परमात्मा की सेवा करके कृतकृत्य बनना है, तो हमें इन मानवों की-जनतारूपी जनार्दन की सेवा करना उचित है। वेदका यही धर्म है, पर आज मानवों की सेवा अपनी कृतकृत्यता के लिये करने का भाव समाज से दूर हुआ है और अन्यान्य उपासनाएं प्रचलित हुई हैं!! वैदिक धर्म से जनता कितनी दूर जा रही है, इसका विचार यहां इस विवेक से हो सकता है।

चार वर्णों के रुद्र।

चार वर्णों के चार वर्गों में जो रुद्र होते हैं, उनकी गणना उपर के लेख में की है, परन्तु वहां ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य ये नाम नहीं आये हैं। इसलिये पाठकोंके मनमें सन्देह हो सकता है कि, ये नाम चार वर्णों के कैसे माने जायेंगे? इस शंकाका निवारण यजुर्वेदकी मैत्रायणी-संहिता में किया है, वह मन्त्र-भाग अब देखिये—

नमो ब्राह्मणेभ्यो राजन्येभ्यश्च वो नमः।
नमः सूतेभ्यो विश्येभ्यश्च वो नमः॥
(मैत्रायणी सं० २।९।५)

'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और सूत संज्ञक रुद्रों को मैं प्रणाम करता हूं।' वहां शूद्र नाम नहीं है, पर 'सूत' नाम है, जो शूद्र का वाचक है। अन्य तीन नाम हैं। इस से सिद्ध होता है कि, चारों वर्णों के लोग रुद्र देवताके रूप हैं। इसलिये इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है।

पूर्वोक्त चार वर्णों के रुद्रोंमें ही संपूर्ण जनता समाप्त नहीं होती हैं। जिनको दुष्ट डाकू आदि कहा जाता है, उन रूपों में भी रुद्रदेवता हमारे सम्मुख उपस्थित होती है, देखिये-

आततायी वर्ग के रुद्र।

१. **आततायी** = घातपातवाला करनेवाला [१८] धनुष्य सज्य करके हमला करनेवाला घातक।

२-५. **स्तेनानां पतिः** [२०], **तस्कराणां पतिः** [२१], **मुष्णतां पतिः** [२१], **सताऽनां पतिः** [२१] = चोर, डाकू, लुटेरे, ठगानेवाले।

६-८. **वञ्चत्** [२१], **परिवञ्चत्** [२१] = धोखेबाज, फरेबी, मक्कार, कपटी, छल करनेवाला।

९. **लोप्यः** = नियमों का लोप करनेवाला, नियमों का उल्लंघन करनेवाला [४५]।

१०. **नक्तंचरत्** = रात्री के समय दुष्ट इच्छा से भ्रमण करनेवाला [२१]।

ये नाम चोर, डाकू, लुटेरे, आतयायी दुष्टोंके हैं। निःसन्देह ये दुष्ट भाववाले मानवों के वाचक हैं। परन्तु ये भी रुद्र के ही रूप हैं। जिस तरह ज्ञानदाता ब्राह्मण, सब के पालन करनेवाले क्षत्रिय, सब के पोषणकर्ता वैश्य और सबकी सहायतार्थ कर्म

करनेवाले शूद्र रुद्रके रूप हैं, उसी तरह चोरी करके लोगों को लूटनेवाले भी रुद्र के ही रूप हैं ।

पाठकों को यह मानने के लिये बडा कठिन कार्य है । चोर भी परमात्मा का अंश है । क्या यह सत्य नहीं हैं ? भगवद्गीता में कहा है कि—

मम एव अंशः जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।

[भ. गी. १५।७]

'मेरा सनातन एक अंश जीवलोकमें जीव होता है ।' यदि मानवों का जीव परमात्मा का अंश है, तब तो वह जैसा ज्ञानी योगियों का जीव परमात्मा का अंश है, वैसा ही दुष्ट डाकुओं का भी जीव परमात्मा का ही अंश है । जीवमात्र परमात्मा का अंश है, यह जैसा भगवद्गीता में कहा है, वैसा ही वेद में– पुरुषसूक्त में भी कहा है । पुरुष का एक अंश इस विश्व में वारंवार जन्मता है, यह बात पुरुषसूक्त में कही है । अस्तु, इस तरह चार वर्णोंके मानवों का जीव जैसा परमात्मा का अंश है, वैसा ही चोर, डाकू, लुटेरे दुष्टों का भी परमात्माका ही अंश है । तत्त्वतः सब की एकता है ।

इसी तरह आंख में सूर्य का अंश, जिह्वा में जल का अंश, नासिकामें पृथ्वी का अंश और अन्यान्य इंद्रियों में और अवयवों में अन्यान्य देवताओं के अंश आकर वसे हैं । ये जैसे सत्पुरुष के देह में वसे हैं, वैसे ही दुष्ट दुर्जनोंके देहों में भी वसे हैं । देवताओं के अंशों के निवास की दृष्टि से भी सब मानवों की, सब प्राणियों की समता है । इस रीति से ३३ देवताओं के अंश और परमात्मा का अंश शरीर में आकर रहे हैं, इस दृष्टि से सब के देह समान हैं । प्रत्येक देह में ३३ देवताओं के अंशों के साथ परमात्मा का अंश रहता है । देह सज्जन का हो या दुर्जन का, उसमें परमात्माके अंशके साथ सब देवताओं के अंश रहतेही हैं ।

अतः वेद का कथन यह है कि, जिस तरह चार वर्णों में वियमान जनता संसेव्य है, उसी तरह चोर, डाकू आदि भी वैसे ही संसेव्य हैं । पर सज्जनों की अपेक्षा दुर्जनों की सेवा अधिक प्रेमसे करनी चाहिये, क्योंकि इन दुष्ट मानवों की दुष्टता उन के शारीरिक और मानसिक विकृति के कारण होती है ।

सेवा उसकी करनी चाहिये, जिस के लिये सेवाकी आवश्यकता है । जैसे किसीको सर्दी लगती हो, तो उसको कंबल देना चाहिये, प्यासेको जल, भूखेको अन्न, रोगीको दवा आदि देना सेवा है । जो तृप्त है, उसको अन्न देना सेवा नहीं है । सर्वत्र न्यूनता, हीनता, विकृतता की पूर्तिके लिये ही सेवा हुआ करती है । रोगी-की सेवा शुश्रूषा उसमें उत्पन्न विकार अथवा न्यूनता को दूर करनेके लिये की जानी चाहिये । इसी तरह चोर, डाकू, आततायी, लुटेरे, ठग, कपटी आदि जो गुनहगार हैं, वे यकृत, प्लीहा या मस्तिष्क की विकृतिके कारण अथवा सामाजिक, आर्थिक या राजकीय दोषोंके कारण गुनाह करनेके लिये प्रवृत्त होते हैं । देखिये, यकृत बिगडनेसे मस्तिष्क बिगडता है और क्रोधी प्रकृति बनती है, जिसका परिणाम खून करनेतक होता है । दरिद्रताके कारण त्रस्त हुआ मनुष्य चोरी की ओर झुकता है । इसी तरह अन्यान्य कुप्रवृत्तियोंके कारण शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा राजकीय विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं । इसलिये जैसे ज्वरके रोगी चिकित्सा-द्वारा संसेव्य हैं, उसी तरह चोर, डाकू, खूनी, आततायी भी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा राजकीय चिकित्सासे सेवा करनेयोग्य हैं ।

आजकल इन चोर, डाकू आदिकोंको जेलखानेमें बंद करते हैं, कोडोंसे मारते हैं अथवा खूनियोंको फांसी देते हैं । पर वेद कहता है कि, ये भी वैसेही रुद्रके अवतार हैं, जैसे उत्तम ब्राह्मण और श्रेष्ठ क्षत्रिय । अतः ये भी सेवाके योग्य हैं । उनकी सेवा करके जिन दोषोंके कारण उनमें कुप्रवृत्तियां उठीं, उनको दूर करके उनकी तनदुरुस्ती अथवा मनदुरुस्ती करनी चाहिये। सदैक्यवादकी भूमिकाके अनुकूल और वेदके द्वारा कथित उपदेशके अनुसार चोर भी ईश्वरका रूप है और वह भी सज्जनके समान ही सेवाके योग्य है । यदि ठीक तरह इस ईश्वरके रूपकी सेवा होगी, तो जो उस ईश्वरके रूपमें अप्रसन्नता थी, वहां सुप्रसन्नता होगी और वेही लोग समाजमें प्रसन्नता बढायेंगे । सदैक्यवादसे अर्थात् वैदिक दृष्टिकोन धारण करनेसे इस तरह चोर और डाकू भी दिव्य भावप्रकाशनका अवसर मिलनेसे देवत्वको प्रकट कर सकते हैं । सेवा तो अप्रसन्नकी प्रसन्नता करनेके लिये ही की जाती जाती है । इस विषयमें अधिक आगे लिखा जायगा । यहां किंचित् दिग्दर्शनमात्र लिखना पर्याप्त है ।

यहांतक मानवी प्राणियों के रुद्र के रूपों का वर्णन हुआ, अब अन्य प्राणियों के रूपों में जो रुद्र का अवतरण हुआ है, उस विषय में देखिये—

प्राणियों में रुद्र के रूप।

१. **अश्वः** = घोडा [२४]

२. **श्वा** = कुत्ता [२८]

३. **व्रज्यः** = व्रज अर्थात् ग्वालों के बाडोंमें पालनेयोग्य गौ आदि पशु [४४]

४. **गोष्ठ्यः** = गोशाला में पालनेयोग्य गौ आदि पशु[४४]

५. **शौभ्यः** = बैल आदि गतिमान् पशु [३१]

६. **गेह्यः** = घरों में पालनेयोग्य पशु, अर्थात् गाय, भैंस, बैल, कुत्ता, बिल्ली आदि पशु [४४]

७. **किरिकः** = किरिः = सूवर, सूकर [४६]

८. **तल्प्य** = बिछोना, चारपाई, खटिया, तकिया आदि में जो कृमिकीट होते हैं, जिनको खटमल आदि नाम है, वे कृमि [४४]

९. **रेष्म्यः** = हिंसक कृमिकीट अथवा जीव [३९]

१०. **गह्वरेष्ठः** = घन जंगलों में, पहाडों की गुफा में रहनेवाले सिंह, व्याघ्र आदि पशु [४४], गुहा में रहनेवाले मनुष्य।

११. **हरिण्यः** = उजाड मैदान मे, रेतीले स्थानमें, जो भूमि उपजाऊ नहीं है, वैसी भूमि में रहनेवाले, प्राणी अथवा कृमि [४३]

१२. **सिकत्यः** = रेतीले स्थान में रहनेवाले पशु अथवा कृमिकीट [४३]

१३. **किंशिलः** = पत्थरोंवाले स्थान में रहनेवाले पशु अथवा जीव [४३]

१४-१५ **पांसव्यः, रजस्यः** = धूलीं में रहनेवाले जीवजन्तु [४५]

१६-१७. **ऊर्व्यः** [४५], **उर्वर्यः** [३३], = उपजाऊ भूमिमें रहनेवाले जीव।

१८. **खल्यः** = खलियान में जो जीव रहते है [३३]

१९. **सूर्व्यः** = [सु-ऊर्व्यः] उत्तम उपजाऊ भूमि में होनेवाला जीव [४५]

२०-२१. **शुष्क्यः** [४५], **अवर्ष्यः** [३८], = शुष्क स्थानमें, वर्षा न होनेवाली भूमिमें होनेवाले जीवजन्तु।

२२-२३. **हरित्यः** [४५], **वर्ष्यः** [३८] = हरेभरे स्थानमें रहनेवाले, वर्षाके स्थानमें होनेवाले जीवजन्तु।

२४. **अवट्यः** = छोटे तालाब में रहनेवाले जीव [३८]

२५. **उलप्यः** = घास जहां उगता है, ऐसे स्थान में होनेवाले कृमि [४५]

२६. **शाष्प्यः** = कोमल घासके ऊपर रहनेवाले कृमि[४२]

२७-२८ **पर्णः, पर्णशद्यः** = पत्तोंपर रहनेवाले जीव-जन्तु [४६]

२९-३० **पथ्यः** [३७], **प्रपथ्यः** [४३], = मार्गों पर रहनेवाले जीव, मार्गों के रक्षक।

३१. **नीप्यः**= पहाडके निम्न स्थानमें रहनेवाले प्राणी [३७] अथवा पहाडियों की तराईपर निवास करनेवाले मनुष्य।

३२. **आतप्यः** = धूप में रहनेवाले प्राणी [३८]

३३. **वात्यः** = वायुरूप में रहनेवाले प्राणी [३९]

३४. **वीध्र्यः** = शुष्क अभ्ररूप में रहनेवाले [३८]

३५. **मेघ्यः** = मेघ में रहनेवाले प्राणी [३८]

३६-३७. **काट्यः** [३७,४४], **कूप्यः** [३८] = कुवें में रहनेवाले प्राणी, कूप के पास रहनेवाले मनुष्य।

३८-४६. **कुल्यः** [३७], **कूल्यः** [४२] = जल-प्रवाहमें अथवा प्रवाहके समीप रहनेवाले प्राणी, जलप्रवाह के पास रहनेवाले मनुष्य।

३९. **सरस्यः** = तालाव के समीप अथवा तालाव में रहनेवाले जीव या मानव [३७]

४०. **नादेयः** = नदी में अथवा नदीके समीप रहनेवाले जीव या मानव [३१,३१]

४१. **वैशन्तः** = छोटे तालाबमें रहनेवाले जीव [३७], अथवा मनुष्य।

४२. **तीर्थ्यः** = तीर्थस्थान में रहनेवाले [४२], **ये तीर्थानि प्रचरन्ति** (६१) = जो तीर्थों में विचरते है, यात्री।

४३. **ऊर्म्यः** = लहरों में रहनेवाले [३१]

४४. **प्रवाह्यः** = प्रवाह में रहनेवाले [३१]

४५. **पार्यः** = परतीर में रहनेवाले [४२]

४६. **अवार्यः** = नदीके इधरके तीरपर रहनेवाले [४२]

४७. **फेन्यः** = जलके फेनमें रहनेवाले [४२]

४८. **द्वीप्यः** = द्वीपमें रहनेवाले, टापूमें रहनेवाले [३१]

४९. **निवेष्यः** = पानीके भंवरमें रहनेवाले [४४]

५०. **क्षयणः** = जहां पानी स्थिर रहता है, ऐसे स्थानमें रहनेवाले [४३]

ये सब रुद्र जलस्थानोंमें रहनेवाले प्राणियोंके रूप हैं। और देखिये–

५१. **हृदय्यः** = हृदयमें रहनेवाले (४४), हृदयको प्रिय लगनेवाले स्थानमें रहनेवाले।

५२. **वास्तुपः** = घरोंका संरक्षण करनेवाले [३९] पहरेदार।

५३. **वास्तव्यः** = घरोंमें रहनेवाले [३९]

'**वास्तव्य** तथा **वास्तुप**' ये दो पद सर्वसाधारण मानव-जातिके वाचक हो सकते हैं। क्योंकि प्रायः मानव घरोंमें रहते और घरोंकी रक्षा करते हैं।

सर्वसाधारण रुद्र।

१. **उपवीती** = यज्ञोपवीत अथवा उत्तरीय धारण करनेवाले [१७]

२. **उष्णीषी** = पगडी अथवा साफा धारण करनेवाले [२२]

३. **हिरण्यबाहुः** = बाहुओंपर सुवर्णभूषण धारण करनेवाले [१७]

४. **कपर्दी**=जटा अथवा शिखा धारण करनेवाले [२२,४८]

५. **व्युप्तकेशः** = जिनके बाल कटे हैं, हजामत बनाये हुए [२९], **विशिखासः** [५९]=शिखा न रखनेवाले, सिर मुंडन करनेवाले।

६. **सोम्यः** = शान्त [३९]

७. **याम्यः** = नियममें रहनेवाले [३३]

८. **क्षेम्यः** = आराम देनेवाले [३३], घरमें रहनेवाले,

९-११. **आशु, शीघ्र्य, अजिर** = शीघ्रता करनेवाले [३१]

१२-१९ **महान्** [२६], **सवृद्ध** [३०], **पूर्वज** [३२], **ज्येष्ठ** [३२], **अग्र्य** [३०], **प्रथम** [३०], **बृहत्** [३०], **वर्षीयस्** [३०], **वृद्ध** [२९]=बडा, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, पूर्वज।

२०-२६ **अर्भक** [२६], **ह्रस्व** [३०], **वामन** [३०], **मध्यम** [३२], **अपर-ज** [३२], **कनिष्ठ**, [३२] **अवसान्य** [३३]= छोटा, कनिष्ठ, बालक, निकृष्ट,

२७. **बुध्न्य** = तह में रहनेवाला [३२]

२८. **अप्रगल्भ** = अज्ञानी [३२]

२९-३० **ताम्र, अरुण** [३९] = **विलोहित** [७,५२, ५८] **बभ्रु** [६], **सारंपजर** [१७] लाल रंगवाले,

३१. **आक्रन्दयन्, उच्चैर्घोषः** = गर्जना करनेवाला [१९]

३२. **स्वपत्** = सोनेवाला [२३]

३३. **जाग्रत्** = जागनेवाला [१६]

३४. **शयानः** = लेटनेवाला [२३]

३५. **आसीनः** = बैठनेवाला [२३]

३६. **तिष्ठत्** = खडा रहनेवाला [२३]

३७. **धावत्** = दौडनेवाला [२३]

यहां नानाविध प्राणियों के नाम हैं, तथापि इनमें कई पद मानवप्राणियोंके भी वाचक हो सकते हैं, जैसा देखिये– **गव्हरेष्ठ** [४४] यह पद सिंहव्याघ्रादि जंगली जानवरों का वाचक करके ऊपर दिया है, पर इस पदका अर्थ 'गुहा में रहनेवाला मानव' भी हो सकता है। जो गुहामें रहता है, वह गव्हरेष्ठ है। इसी तरह '**नीप्य** = [३७] पहाड की तराई पर रहनेवाला' यह मानव भी हो सकता है, क्योंकि पहाडों की तराई पर मनुष्य भी रहते हैं। '**कूल्य**' [४२] = नदीतीरपर रहनेवाला यह जैसा मानव, वैसाही अन्य प्राणी भी होना संभव है। इसी तरह अन्ततक समझना उचित है। ये पद प्राणियोंके वाचक है, फिर ये प्राणी मनुष्य हों अथवा अन्य हों। ये सब रुद्रदेवता के रूप हैं।

वास्तुपः– [३९] यह पद घरोंकी सुरक्षा के लिये जो पहरेदार होते हैं, उन का वाचक है। आगे '**उपवीती**' [१७] आदि शब्द मानवों के ही वाचक हैं। **व्युप्तकेश** [हजामत किये हुए], **विशिखासः** [शिखारहित, सन्यासी] ये सब निःसंदेह मानवही है।

इस के आगे [३२–३७] जागनेवाले, सोनेवाले, लेटनेवाले, बैठनेवाले, दौडनेवाले ये सब जाति के प्राणी हो सकते हैं, क्योंकि सभी प्राणी इन क्रियाओं को करते हैं।

१२ ते २६ तकके शब्द भी बालक–वृद्ध, जवान–तरुण, मध्यम–कनिष्ठ आदि अवस्थाओं के वाचक हैं, अतः ये पद सब प्राणियों के लिये प्रयुक्त हो सकते हैं। अतः इन अवस्थाओंमें रहनेवाले सभी प्राणी रुद्रदेवता के रूप हैं। बालक, तरुण, वृद्ध ये सब रुद्र हैं, अर्थात् सभी प्राणी रुद्र हैं।

यहां प्राणियों की कोई भी अवस्था छूटी नहीं है, अर्थात् सब अवस्थाओं में विद्यमान सब प्राणी रुद्रदेवता के रूप हैं, यह यहां सिद्ध हुआ। पशुपक्षी, मानव, कृमिकीट, पतंग सभी रुद्र

के रूप हैं। इसी तरह सूक्ष्म कृमि भी रुद्र हैं, जो जलों और अन्नोंद्वारा मनुष्यादि प्राणियों में प्रविष्ट होकर नाना प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं। इनकी भयानकता प्रसिद्ध है—

सूक्ष्म रुद्र।

ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।
(वा. १६-६२)

जो अन्नों में तथा जलमें रहते हैं और अन्न खानेवालों तथा जल पीनेवालों में नाना प्रकार की पीडा उत्पन्न करते हैं, ये भी सूक्ष्म रोगकृमि रुद्र के रूप हैं।

वृक्षरूपी रुद्र।

१. **वृक्ष** (४०) = वृक्ष, पेड, वनस्पति।
२. **हरिकेश** (४०) = हरे रंगवाले पत्तेरूपी केश जिनको होते हैं, ऐसे।

इस तरह वृक्षवनस्पति भी रुद्र के रूप हैं।

ईश्वरवाचक रुद्र।

अब ईश्वरको इस रुद्रसूक्तमें 'विश्वरूपं' कहा है। क्योंकि जब सभी रूप परमात्मा के हैं, तब विश्व के सब रूपों को कहां तक गिना जाय? एक वार 'विश्वरूप' कहा, तो उसमें सब रूप आ गये, इसलिये ये नाम देखिये—

१. **विश्वरूपः** (२५) = विश्वका रूप धारण करनेवाला,
२. **विरूप** (२५) = विविध रूप धारण करनेवाला,
३. **भव** (२८) = सबका उत्पादक,
४. **शर्व** (२८) = प्रलयकर्ता,
५. **भगवः, ईशानः** (५३) = भगवान्, ईश्वर,
६. **भवस्य हेतिः** (१८) = संसार के दुःखों को दूर करने का साधन।

ईश्वर सब का कल्याण करता है, इसलिये निम्न लिखित पद उस में सार्थ होते हैं—

कल्याणकारी रुद्र।

३८-४०. **शिव, शिवतर** (४१), **शिवतम** (५१),= कल्याण करनेवाला।
४१-४२ **शंभु, शंकर** (४१) = शांति करनेवाला।
४३-४४ **मयोभव, मयस्कर** (४१) = सुख देनेवाला।
४५. **अघोर** (२) = जो भयानक नहीं है, जो शांत है।
४६. **सुमंगल** (६) = जो मंगल है।
४७. **शंगु** (४०) = शांतिसुख का दाता।
४८. **मीदुष्टम** = सुखदाता (५१)।
४९. **त्विषीमत्** (१७) = तेजस्वी।
५०. **विद्युत्य** (३८) = बिजली के समान तेजस्वी।
५१-५२. **शिपिविष्ट, सहस्राक्षः** (२९) = सहस्रों किरणों से युक्त, तेजस्वी।

यहां तक जो रुद्रदेवता का वर्णन हुआ, उससे पाठकों को पता लग सकता है कि, तमाम विश्वरूप ही परमेश्वर का रूप है, इस रूप में सब रूप आ गये। सूर्य चंद्रके रूप, जल, पृथ्वी, अग्नि, विद्युत् के रूप, सब प्राणियोंके रूप, सब जन्तुओं के रूप इसमें आ गये हैं।

स्थावर-जंगम में राज्ययन्त्रके कर्मचारी, राजा, मन्त्री, नाना प्रकारके ओहदेहार, प्रजाजन, सैनिक, योद्धा, क्षत्रिय, स्त्रियां, बालक, वृद्ध, तरुण, पशुपक्षी आदि सब आते हैं, जो परमात्मा के ही रूप हैं। यही तो सदैक्यवादद्वारा बताया जा रहा है। इसलिये परमेश्वर के रूप में राज्ययंत्र का अन्तर्भाव होना स्वाभाविक है। सब राज्य-यन्त्र ईश्वर का स्वरूप है। इस विषय में इस यजुर्वेद के रुद्राध्यायद्वारा जो गूढ उपदेश दिया है, वह इस लेख में प्रकट करना है।

रुद्रदेवता संहार की देवता है, पर वह संहार जनता की भलाई करने के उद्देश्य में होता है। इसलिये यह रुद्रदेवता संघटना का कार्य भी करती है। इस देवताद्वारा जो संहार होता है, वह संघटना के लिये ही होता है। इस लिये रुद्रदेवता संघटना के लिये सहायक देवता है, यह बात यहां भूलना नहीं चाहिये।

रुद्रदेवता ईश्वर का ही रूप है। ईश्वर संहारकारी है, वैसा रचनाकारी भी है। इसलिये जन्म और मृत्यु ये दोनों उसी के रूप हैं। इसलिये संहार से घबराना योग्य नहीं है। जंगल तोडने के बाद उस लकडी से घर बनते हैं, अर्थात् वृक्षों का तोडना घरों के बनानेका सहायक है। इसी तरह संहार आगामी रचनाके लिये आवश्यक ही है।

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे॥
(वा० य० १६।४९)

जिघांसद्भ्यः ॥ २१ ॥ क्षयणाय च ॥ ४३ ॥

(वा० य० १६)

रुद्रकी दो तनुएँ हैं। एक 'घोरा' तनु और दूसरी 'शिवा' तनु। रुद्र का घोर कर्म करनेवाला एक शरीर है और कल्याणकारक कर्म करनेवाला दूसरा शरीर है। इसीलिये इस रुद्र को जैसे 'शिव' कहते हैं, वैसे ही 'क्रूर' भी कहते है। अस्तु। इस से ज्ञात हो सकता है कि, इस देवताके मिष से जैसे विघटना के, तोडने के कार्यों का विधान है, वैसे ही संघटना के, संगठन के कार्यों का भी उल्लेख है। शत्रु के साथ लडना और उस का नाश करना, इसका एक विघटनाका कार्य है और राष्ट्रकी घटना करना इस का दूसरा संघटनाका कार्य है। यह दूसरा कार्य अब बताना है।

वा० यजु० के अ० १६, मं० २५ में "**नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः, नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः**" कहा है। यह गणपति-संस्था की महत्त्व की बात है। गणपतिके सहस्रनामों से '**गण, गणेश, गणपति, गणमण्डल, गणमण्डलाध्यक्ष, महागणपति**' आदि पद है। ये भी यहां देखने आवश्यक है। यही गणपति-संस्था रुद्र की शासनसंस्था में प्रधान कार्य करनेवाली संस्था है। गण और व्रात ये दो इन के संघटना के मूल भाग है।

गण और व्रात।

'व्रत' पालन करनेवालों के संघ का नाम 'व्रात' है और जो केवल एकत्र गिनाये गये है, उन का नाम '**गण**' है। '**गण् संख्याने**' धातु से '**गण**' शब्द बनता है, अतः इस का अर्थ जितकी संख्या निश्चित की गयी है, जो गिने हैं, जिनकी गणना की गयी है, ऐसा होता है और एक व्रतसे, एक नियम से, एक उद्देश्य तथा एक ध्येय के कारण जो इकट्ठे कार्य कर रहे हैं, वे '**व्रात**' हैं। तीसरा एक संघटना बतानेवाला पद इस रुद्राध्याय में है, वह है '**पुञ्जिष्ट**' अर्थात् पुंज करके रहनेवाले, अनेक लोग मिलकर अपना जमाव बनाकर रहनेवाले। 'पुञ्ज' का अर्थ एकत्र मिलकर रहना है। रुद्रसंघटना के ये तीन भेद है।

वेदमें '**संभूति**' शब्द (वा. य. अ. ४०।९-११ में) आया है। कारीगरों की संघटना (व्यवसाय करनेवाली मंडली = "कंपनी") के अर्थ में यह पद है। '**संभूति, संभवन, संभूयसमुत्थान**' आदि अनेक पद मिलकर व्यवसाय करने के अर्थ में भारतीय अर्थशास्त्र में प्रचलित हुए हैं। अनेक लोगोंने मिलकर बहुत धन इकट्ठा करके बडा व्यापारव्यवहार करने के अर्थ मे ये पद प्राचीन काल से प्रयुक्त होते हैं। स्मृतियों और अर्थशास्त्र मे इस तरह की संघटना के विषय में विस्तारपूर्वक उल्लेख है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय मे उक्त '**संभूति, संभव**' ये पद मानवों के सांघिक जीवनविषयक व्यहार के लिये आये है। पर रुद्राध्याय में इस पदका प्रयोग नही है, इसलिये हम यहां इस पदका विचार नहीं करेंगे।

गण, व्रात और पुञ्ज ये तीन पद रुद्र की संघटना के लिये इस रुद्राध्याय में प्रयुक्त हुए हैं, इसलिये इनका विचार हम यहाँ करेंगे।

१. '**गण**' पदसे 'गणना किये गये, गिने हुए लोग,'

२. '**व्रात**' पद से 'एक व्रत का पालन करनेवाले लोग,' और—

३. '**पुञ्ज**' पदसे 'एक जातिके लोग' बोधित होते है।

जनगणना करनेकी बात '**गण**' पदसे बोधित होती है। रुद्रकी शासनसंस्थामें जनोंकी गणना की जाती थी, यह इससे सूचित होता है। विना गणना किये 'गण' बनही नहीं सकते। इसलिये जहां गणोंका राज्य होता है, वहां जनगणना अवश्य होती है। महादेवके भूतगण प्रसिद्ध हैं। इन भूतगणोंमें जनगणना की जाती थी। ये ही गण रुद्रशासनमे प्रमुख घटक माने गये हैं।

एक नियमका पालन करनेवाले, एक कार्य करनेवाले, एक उद्देश्यसे संघटित हुए, एक ध्येयको माननेवाले जो लोग होंगे, उनके समूहका नाम '**व्रात**' है। कर्मव्यवसायसे, व्यापारव्यवहारसे ये व्रात नामक संघ निर्माण होते हैं। सैनिकोंके समूहों के भी ये नाम महत्सूक्तोंमें प्रसिद्ध हैं। एकही उद्देश्यसे एकही कर्ममें लगनेके कारण इनमें सांघिक बल बढा चढा रहता है।

पूर्वोक्त रुद्रसूक्तमें '**गण, गणपति, व्रात, व्रातपति**' ऐसे पद आये हैं। अर्थात् इन संघोंका एक अध्यक्ष भी रहता है। इस अध्यक्ष का कार्य अपने संघका हित करना होता है। (आजकल Union, Guild आदि श्रमजीवी लोगोंके संघ और उनके अध्यक्ष रहते हैं, वैसेही यहां ये दीखते हैं।)

इससे पूर्व कहा है, '**गण, गणमण्डल, गणमहामण्डल**' ऐसे संघोके छोटे और मोटे संघ हुआ करते हैं। इसी तरह '**गणेश, गणपति, गणमण्डलेश, गणमहामण्डलाधि-**

पति, महागणपति' आदि नाम गणपतिसहस्रनामोंमें संघाधिपतियोंके दिये हैं। इससे इनके कर्तव्योंका ज्ञान हो सकता है और ये संघ अपने संघमें रहनेवाले लोगोंके लिये क्या कार्य करते हैं, इसका भी ज्ञान इन नामोंके मननसे हो सकता है।

'पुंज' के लिये **'पुंजपति'** नहीं है। **'पुंजिष्ठ'** पद ही है। अर्थात् इस नामके संघमें कोई अध्यक्ष नहीं होता था। ये संघके सभी सदस्य मिलकर अपना प्रबंध किया करते थे।

पुंज के सदस्य इकट्ठे होते हैं और वे सबके सब अपना संघ का हित या प्रबंध करने के लिये जो कुछ करना होगा, वह कर लेते हैं। इनके नाम से यह सिद्ध होता है कि, ये संघशासक हैं। इन संघशासकों में कोई एक मुखिया नहीं होता। अतः ये पूरे पूरे 'समाजशासक' होते हैं। इस पुंजव्यवस्था से गण और व्रात की व्यवस्थामें कुछ भिन्नता है। पाठक इस भेद को ध्यान में अवश्य धारण करें। पुंज का जाति के साथ संबंध है और ऐसा जातीय समाजशासन इस भरतखण्ड में कई जातियों में प्राचीन काल से इस समय तक प्रचलित है।

ये गण और व्रात संघ कार्य, व्यवहार, धंधा, उद्योग, सिद्धान्त या ध्येय के साथ संबंधित हैं। पुंज के समान जाति के या कुल के साथ संबंधित नहीं हैं। इसीलिये गण और व्रातके पूर्व दूसरे व्यवसायों का वाचक कोई पद अवश्य रखना चाहिये, तब इस व्यवस्था की कल्पना ठीक तरह ध्यानमें आ सकती है। वा० यजुर्वेदके १६ वें अध्यायमें ऐसे अनेक धंधोंके पद हैं, उनको इस के साथ जोड दें। देखिये, इससे ये संघ सिद्ध होते हैं—

धंधा	संघ
भिषक् (वैद्य)	भिषग्गण (वैद्यों का संघ)
वणिक् (वैश्य)	वणिग्गण (व्यापारियों का संघ)
क्षत्ता (बढई)	क्षत्तृगण (बढइयों का संघ)
तक्षा (तर्खाण)	तक्षगण (तर्खाणों का संघ)
रथकार (रथ बनानेवाला)	रथकारगण (गाडी बनानेवालों का संघ)
कुलाल (कुम्हार)	कुलालगण (कुम्हारों का संघ)

इस तरह कार्यव्यवहार करनेवाले धन्धेवालों के **गण** होते थे और शर्तें लगाकर, नियम बांधकर एक ध्येय से प्रेरित होकर जो संघ बनते थे, वे **'व्रात'** कहलाते थे। उतने नियमों का, उतनी शर्तोंका ही बन्धन उन व्रातनामक संघवालोंपर रहता था। व्रात संघके सदस्य अन्य व्यवहारके लिये स्वतंत्र समझे जाते थे। 'गण' व्यवस्थामें हरएक सदस्यपर अन्य सदस्योंके हिताहितकी जिम्मेवारी पूर्णतया रहती थी, पर 'व्रात' व्यवस्थामें उतने निश्चित व्रतकी मर्यादा तक की ही यह जिम्मेवारी रहती थी। गणमें उत्तरदायित्व अधिक और व्रातमें नियमानुकूल मर्यादित रहता था। इस कारण गणमें प्रविष्ट होनेवालोंको लाभ भी अधिक होते थे और व्रातमें उसकी अपेक्षासे लाभ भी कम होते थे।

विचार करनेसे पता चलता है कि, गणसंस्थामें संमिलित होनेवाले सदस्योंका हित करनेका पूर्णतासे उत्तरदायित्व गणके अधिष्ठातापर रहता था। इसलिये गणेश अर्थात् गणके अधिष्ठाताको तथा गणपति अर्थात् गणके पालनकर्ताको गणके प्रत्येक सदस्यके हितकी सब जिम्मेवारी उठानी पडती थी। अर्थात् गणमें प्रविष्ट सदस्य बीमार हुआ, युद्धमें जखमी हुआ, किसी अन्य आपत्तिमें फँसा, तो ऐसी सब आपत्तियोंका निवारण करनेके लिये सुप्रबन्ध करनेका कार्य गणपतिको करना पडता था। यह भाव निम्न लिखित नामोंसे ज्ञात होता है- **'गणभीतिहर, गणदुःखप्रणाशन, गणभीत्यपहारक, गणसौख्यप्रद, गणाभीष्टकर, गणरक्षणकर्ता,'** ऐसे अनेक नाम हैं, जो बताते हैं कि गणोंका सब प्रकारसे हित करनेके लिये गणोंके अध्यक्षको अनेक प्रकारका योग्य प्रबंध करना पडता था।

'व्रात' के विषयमें जिम्मेवारी थोडी होती है। जिस नियम या शर्तसे वह व्रात संघटित होता था, उतनाही उत्तरदायित्व संघाधिपतिपर रहता था। अन्य बातोंके विषयमें उसको देखने की आवश्यकता नहीं होती थी।

गण-व्यवस्थामें छोटीमोटी कई संस्थाएं थीं, जो निम्नलिखित नामोंसे ज्ञात हो सकती हैं- 'गणप, गणवर, गणेश, गणपति, गणाधीश, गणाग्रणी, गणाध्यक्ष, गणेश्वर, गणैकराट्, गणाधिराज, गणनायक, गणमण्डलाध्यक्ष' ये पद एक अर्थके वाचक नहीं हैं। प्रत्येक पदमें अधिकारका भेद है और तदनुसार छोटे या बडे संघका भी वह सूचक है।

गणमण्डलाध्यक्ष वह है, जो अनेक गणोंके संघोंका अध्यक्ष होता है। गणनायक वह है, जो गणोंको चलानेवाला है। गणप वह है कि जो गणोंका पालन करता है। ये सब पद गणशासन की प्रणाली बताते हैं। इन सबका विचार करनेसे इस शासनसम्बन्धी सब बातोंका पता लग सकता है, पर हमें इस लेखमें गणपतिसंस्थाका पूर्ण विचार करना नहीं है, प्रत्युत रुद्रशासन-

संस्थाका विचार करना है । इसके अन्तर्गत गणपति पद होनेसे गणपतिसंस्थाका थोडासा विचार करना आवश्यक हुआ, अतः अतिसंक्षेपसे यह विचार यहां किया है ।

अपना प्रकृत विषय ठीक तरह समझमें आनेके लिये यजुर्वेद अ. १६ में आये गण और गणपति का थोडासा अधिक विचार करना आवश्यक है । विचार करनेके लिये मान लीजिये कि, '**रथकार-गण**' है, अर्थात् गाडियाँ बनानेवालोंका एक संघ रुद्रके अधिराज्यमें स्थापन हुआ है । इसका एक अध्यक्ष होगा, जिसका नाम '**रथकार-गणेश**' होगा । इस अध्यक्षका प्रथम कर्तव्य है अपने संघमें स्थित सदस्योंकी गणना करना, एक पुस्तकमें अपने सदस्योंके नाम, स्थान तथा उनकी आवश्यकताओंका लेख तैयार करके सुरक्षित रखना । अपने गणको अर्थात् संघसदस्यको कार्य न होगा, तो उसको कार्य देना, भोजनका प्रबंध न होगा तो करना, बीमार होनेपर दवाका प्रबंध करना, अर्थात् काम लेना और उसके बदले दाम देना अथवा सुखसाधन देना । इतने वर्णनसे पाठकोंके मनमें यह बात आयी होगी कि, यह गणव्यवस्था कैसी होनी चाहिये ।

'**गण-आर्ति-हर**' यह नाम इस प्रबंधकी सुव्यवस्था का सूचक है । गणव्यवस्थामें आये सदस्योंकी हरप्रकारकी आपत्तियोंको दूर करना गणनायकका कर्तव्य होता है और वह उसको करनाही पडता है । सदस्य कर्म करनेके जिम्मेवार हैं, शेष जिम्मेवारी नायकपर रहती है ।

पाठक ऐसी कल्पना करें कि, इस **रथकार-गण** में १०० सदस्य होंगे, तो उन को उन के करनेयोग्य काम देना, उन से काम करवा लेना और उन को सुखसाधन समय पर देना, यह इस गणसंस्था में अध्यक्ष का मुख्य कर्तव्य है । ऐसा प्रबन्ध करने के लिये देशभर कैसी सुव्यवस्था रखना आवश्यक है, इस का विचार पाठक कर सकते हैं । यह रथकार-संघ के विषय में हुआ ।

इस के पश्चात् ऐसे अनेक गणों का '**गण-मण्डल**' होता है । जिस में एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखनेवाले अनेक उपकारक गणों का परस्पर सम्मेलम होता है और अनेक 'गण-मण्डलों' का मिलकर एक '**महागणमण्डल**' हुआ करता है। हम पूर्वोक्त रुद्राध्यायमें देखेंगे कि, गणमण्डल में रथकार-गण के साथ कौन से अन्य गण संमिलित हो सकते हैं । हमारे विचार से निम्न लिखित कारीगरों का गणमण्डल रथकार-गण के साथ बन सकता है- (क्षत्तृगण) बढइयोंका संघ, (तक्षगण) तर्खाणों का संघ, (कर्मारगण) लुहारों का संघ, ये और ऐसे एक दूसरेके साथ सम्बन्ध रखनेवाले अनेक कारीगरों के गणोंका मिलकर यह गणमण्डल होगा ।

इस गणमण्डल का एक अध्यक्ष होगा । उसका कर्तव्य सब गणों का हित करना होगा । इस तरह सदस्यों का गण, गणों का गणमण्डल और गणमण्डलों का महागणमण्डल होता है । ऐसा संघों का यह जाला देशभर फैला रहता है । यह है गणशासन की आयोजना ।

रुद्रसूक्त में जो नाम गिनाये हैं, उन में जो कार्यव्यवहार के वाचक नाम हैं, उन सब के ऐसे गण हैं, ऐसा समझकर इस रुद्रशासनप्रणाली का विचार करना चाहिये । तब वैदिक गणशासन का महत्त्व ध्यान में आ सकता है । यहां प्रत्येक के संघ का स्वतन्त्र विचार करके लेख को व्यर्थ बढाने की आवश्यकता नहीं है । रुद्र की शासनव्यवस्था की कल्पना ही पाठकों को देना है । ऊपर दिये वर्णन से वह व्यवस्था पाठकों के मन में आ गयी होगी । इस तरह ब्राह्मणवर्ग में कई गण अथवा संघ, क्षत्रियों में अनेक गण अथवा संघ, इसी तरह वैश्य और शूद्रों में भी कार्यव्यवहार तथा व्यवसाय के गण बनाने से यह रुद्रशासनप्रणाली परिपूर्ण होती है ।

राष्ट्र में कोई मनुष्य गणव्यवस्था से बाहर नहीं रहने पाय, जिसके कर्म और व्यवहार की गणना नहीं हुई, ऐसा भी कोई मनुष्य नहीं रहना चाहिये । प्रत्येक मनुष्य को उसके करनेके लिये सुयोग्य कार्य मिलना चाहिये और उस कर्म के बदले उसको कर्मफलस्वरूप आवश्यक सुखसाधन प्राप्त होने चाहिये । यह इस गणव्यवस्था का मूल सूत्र है ।

प्रत्येक मनुष्य को अपना कर्म उत्तम कुशलता के साथ समाप्त करना चाहिये, कर्म के फलस्वरूप सुखसाधन देना इस शासनसंस्था की जिम्मेवारी है । कर्म करनेपर हरएक को आवश्यक सुखसमाधान मिलने ही चाहिये । आवश्यक सुखसाधनों में रहने के लिये सुयोग्य स्थान, भोजन के लिये योग्य और आवश्यक अन्न, पीने के लिये उत्तम जल, ओढने के लिये आवश्यक वस्त्र, बीमारी की निवृत्ति के लिये चिकित्सा के साधन, धर्मसंस्कार के समय पर होनेकी व्यवस्था, विद्या की पढाईकी व्यवस्था और आध्यात्मिक उन्नति के लिये आवश्यक गुरूपदेश आदिका समावेश होना स्वाभाविक है । जो सदस्य उत्तम धर्मा-

नुकूल रहेंगे, उनका इस व्यवस्था से कल्याण होगा। पर जो नियमभंग करेंगे, उनको कठोर दण्ड देना भी इस रुद्रशासन के प्रबंधद्वारा ही होता रहता है। उसमें क्षमा नहीं होगी।

रुद्रसूक्त में जो नाम कार्यव्यवहार करनेवालोंके गिनाये है, उतने ही कार्यव्यवहार करनेवाले हैं, ऐसी बात नहीं हैं। किसी देशविशेषमें इससे न्यून वा अधिक भी कार्यव्यवहार करनेवाले लोग हो सकते हैं। वहां की स्थिति के अनुसार न्यून वा अधिक गणों की व्यवस्था होगी। उस रुद्राध्याय के वर्णन में इस रुद्रीय शासनव्यवस्था का पता लगने के लिये केवल सूचनामात्र उल्लेख है। उस अध्याय में '**गण, गणपति**' तथा '**व्रात, व्रातपति**' ऐसे नाम लिखकर इस गणशासन के व्यवहार की सूचना दी है। परन्तु प्रत्येक धंधेवाले के साथ '**गण**' शब्द उस अध्याम में लगाया नहीं है। वह उन धंधेवाले नामों के साथ लगाकर इस शासन की कल्पना पाठकों को करनी चाहिये, इसीलिये यह लेख लिखा है।

उक्त अध्याय मे कई पद सर्वसामान्य भाव बतानेवाले हैं, उन्हें देखिये- (**उपवीती**) यज्ञोपवीतधारी, (**उष्णीषी**) पगडीधारी, (**कपर्दी**) शिखाधारी, (**व्युप्तकेश**) जिस के बाल कटे है। ये पद सामान्य हैं। प्रत्येक वर्णके लोगों को ये पद लगाये जा सकते हैं। 'उपवीती' पद तीन वर्णों के लिये प्रयुक्त हो सकता है, शेष तीनों पद सब मानवोंके लिये प्रयुक्त हो सकते है।

इसी तरह (स्वपत्) सोनेवाला, (जाग्रत्) जागनेवाला, (शयानः) लेटनेवाला, (आसीनः) बैठनेवाला आदि पद सर्वसामान्य मानवों के लिये अथवा प्राणियों के लिये लगाये जा सकते है। तथा (महान्) बडा, (ज्येष्ठ) श्रेष्ठ, (प्रथम) पहिला, (कनिष्ठ) छोटा आदि पद भी सामान्य पद हैं, जो हरएक प्राणी के लिये प्रयुक्त हो सकते हैं। ऐसे सामान्य पद इस अध्याय में कौनसे हैं, उन का पता पाठकों को उक्त पदों का अर्थ देखने से लग सगता है। ऐसे सर्वसामान्य पद छोडने चाहिये, और शेष पदों में जो पद कामधंधेके सूचक हैं, व्यापार व्यवहार के सूचक तथा विशेष उद्यम के सूचक है, उनके साथ ही यह '**गण**' पद अथवा '**व्रात**' पद लग सकता है। ये '**गण, व्रात** और **पुंज**' पद सब व्यवसायों के साथ लगनेवाले पद हैं। उदाहरण के लिये हम कुछ ऐसे गण बना देते है—

ब्राह्मणवर्ण में- **गृत्सगण** (कवियोंका संघ), **श्रुतगण** (श्रुतिशास्त्रज्ञों का संघ), **अधिवक्तृगण** (उपदेशक संघ), **भिषग्गण** (वैद्यों का संघ), इ. इ.

क्षत्रियवर्ण में- **क्षेत्रपति-गण** (खेतोंके मालिकों का संघ), **रथीगण** (रथियोंका संघ), **स्वायुधगण** (उत्तम हथियार चलानेवालों का संघ), **दूरेवधगण** (दूर से वध करनेवालों का संघ), इ. इ.

वैश्यवर्णमें- **वणिग्गण** (व्यापारियोंका संघ), **संग्रहीतृ-गण** (बडे बडे संग्रह [Store] करनेवालोंका संघ), **पशु-पतिगण** (पशुपालकों का संघ), इ. इ.

शूद्रवर्ण में- **रथकारगण** (गाडी बनानेवालों का संघ), **इषुकृद्गण** (बाण बनानेवालों का संघ), **कुलालगण** (कुम्हारों का संघ), **निषादगण** (निषादोंका संघ), इ. इ.

इस तरह इस रुद्राध्याय का विचार करके जितने धंधेवाले यहां है और जितने कल्पना में आ सकते हैं, उतनों के संघों की अर्थात् उतने गणोंकी अथवा व्रातोंकी कल्पना पाठक कर सकते है। इस तरह गणोंकी स्थापना के पश्चात् अनेक परस्पर सहायक गणोंका मिलकर एक गणमण्डल बनने की भी कल्पना पाठक करें। प्रत्येक गण का एक अध्यक्ष तथा गणमण्डल का प्रमुख बनाने का भी विचार इसी तरह हो सकता है। इस संस्था के अध्यक्ष वा प्रमुख का कर्तव्य पूर्व स्थानमें बताया ही है। गणके सब सदस्यों का ठीक तरह योगक्षेम चलाना संघप्रमुखों का कर्तव्य है। कर्म कुशलता से करना संघस्थों का कर्तव्य है। इस तरह विचार करनेसे निःसन्देह पता लग सकता है कि, यह गणशासन की आयोजना अत्यंत उत्तम है और बडी सुखदायी भी है।

इस में कर्मकर्ताओं को चिंता नहीं है, प्रमुखों को ही चिंता रहती है। कर्मकर्ताको इतनी ही चिंता रहती है कि, अपनी कारीगरी की अत्यधिक उन्नति करना। सबका योगक्षेम गणव्यव-स्थाके प्रबंधद्वारा यथायोग्य होता रहता है।

शिक्षाका प्रबंध ब्राह्मणों के द्वारा विनामूल्य होता रहता है। रक्षाका प्रबंध क्षत्रिय करते रहते हैं। इसी तरह वैश्यशूद्रों के व्यवसायों का प्रबंध होता रहता है। और सब मानवों का योगक्षेम चलता है।

'**गणनायक**' का कार्य गणके सदस्यों को चलाना है। यहां नायक का अर्थ अधिपति नहीं है, परन्तु नेता अर्थात्

पालक है। आज क्या कर्तव्य करना चाहिये, इस विषय की योग्य संमति अपने सदस्यों को देकर जो अपने संघ से उत्तमोत्तम कार्य कराता रहता है, वही गणनायक होता है। गण का ईश, गण का पालक, गणका अधिपति, गण का नायक ये सब विभिन्न कर्तव्य बतानेवाले पद हैं। इनके विभिन्न कर्तव्य अच्छी तरह समझनेसे ही गणशासन का उपयोगित्व ठीक तरह ध्यान में आ सकता है।

गण का अधिष्ठाता जानता है कि, अपने संघ में कितने कर्मकर्ता हैं, किसको किस वस्तु की जरूरत है, उस की आवश्यकता की पूर्तता किस तरह करनी चाहिये, अपने संघ में कौन बीमार है, किस वैद्य से उसकी चिकित्सा करनी योग्य है, आदि का विचार गण का अधिष्ठाता करता रहता है। गणमण्डल के अन्दर अनेक संघ संमिलित रहते हैं, उनके धंधोंका परस्पर संबंध रहता है और वे धंधे एक दूसरे के साहाय्यकारी रहते हैं। इसलिये गणमण्डल की सुव्यवस्थासे सब गणों का सुख बढता जाता है।

गणमण्डलों के मुख्य **महागणमण्डलाध्यक्ष** के पास सभी प्रकार की व्यवस्था रहती है। सारे कारीगरोंके सब पदार्थ इसके कार्यालयमें जमा होते हैं और आवश्यकताके अनुसार वह पदार्थों का लेनदेन करता है। अनावश्यक वस्तुओं के निर्माण पर वह प्रतिबंध रखता है, और आवश्यक वस्तुओं के निर्माण की प्रेरणा करता है। एक बार इस तरह की सुव्यवस्था की कल्पना पाठकोंके मनमें उतर गयी, तो वे ही इस सब व्यवस्था के विषय में उत्तम कल्पना अपने मन में कर सकते हैं। इस दृष्टि से यह वा० यजुर्वेद का १६ वाँ अध्याय विशेष अभ्यसनीय है। साथ ही साथ वा० यजुर्वेद ३०वाँ अध्याय भी मननपूर्वक अध्ययन करनेयोग्य है। १६ वाँ अध्याय रुद्रदेवताके रूप बताने के लिये है और ३० वाँ अध्याय नारायण पुरुष के रूप बताने के लिये है। पर तत्त्वदृष्टि से दोनों का आशय एक ही है।

यह गणशासनव्यवस्था वेद की आदर्श शासनव्यवस्था है। इस से प्रजा का हित अधिक से अधिक हो सकता है। प्रजा का सुख अधिक से अधिक करने के लिये इसी मार्ग से जाना चाहिये। इस में शासकों की व्यवस्था इस तरह रहती है—

१. **रुद्र** = (महारुद्र, महादेव) = सर्वाधिपति।
२. **मंत्री** = मन्त्री, सलाहकार।
३. **सभा, सभापति** = राष्ट्रसभा, राष्ट्रसभापति, ग्रामसभा, प्रांतसमिति, आमंत्रण (मन्त्रीमंडल)।
४. **गण, गणपति** = गणोंकी नाना प्रकार के संघों की व्यवस्था।
५. **व्रात, व्रातपति** = नाना प्रकार व्रतनिष्ठ संघों की व्यवस्था।
६. **पुञ्जिष्ठ** = मानवपुञ्जों की व्यवस्था।

यह व्यवस्था पूर्व स्थान में बतायी है। गण, महागण, गणमण्डल आदि बडे बडे संघों में से राष्ट्रसभा के सदस्य चुने जाते हैं और इस तरह राज्य का नियंत्रण होता रहता है और वहां प्रत्यक्ष जनताके साथ रातदिन रहनेवाले और जनता की स्थिति देखनेवाले ही लोग आते हैं, इसलिये उन का शासन जनहित का साधक होता है।

इस के साथ साथ निम्न लिखित कार्यकर्ता भी होते हैं—

७. **क्षेत्रपतिः** = खेतों की रक्षा करनेवाले,
८. **वनपतिः** = वनों की पालना करनेवाले,
९. **स्थपतिः** = स्थानों के पालनकर्ता,
१०. **कक्षाणां पतिः** = राष्ट्र की कक्षा चारों ओर की परिधि होती है, वहीं की सुरक्षा करने के लिये जो नियुक्त होते हैं, वे कक्षापति कहलाते हैं, गुप्त स्थानों के रक्षक।
११. **पत्तीनां पतिः** = पैदल विभाग के नेता,
१२. **सेना, सेनापतिः** = सब प्रकार की सेना और उस के अधिपति,
१३. **सेनानी** = सेना का संचालन करनेवाले,
१४. **आव्याधिनीनां पतिः** = हमला करनेवाली सेना के नेता।

इस तरह सेना की व्यवस्था इस रुद्रशासन में रहती है। इस रुद्राध्याय में सैनिकों के नाम बडे विस्तारपूर्वक दिये हैं। पाठक उन सब को यहां रखकर उन का कार्य राष्ट्ररक्षा में कितना है, इस का यथायोग्य विचार करें, उन सबको यहां पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

१५. **वास्तुपः** = घरोंकी रक्षाके लिये नियुक्त पहरेदार,
१६. **वास्तव्यः** = लोग जहां रहते हैं, वहां रहनेवाला,
१७. **गह्वरेष्ठः** = गिरिकंदरों की रक्षाके लिये नियुक्त,

१८. **नादेयः, तीर्थ्यः** = नदी तैरकर पार होनेके स्थान-पर रक्षा के लिये तथा सहाय-तार्थ नियुक्त,

१९. **नक्तंचरः**=रात्रीके समय घूमकर रक्षा करनेमें नियुक्त।

इस तरह अनेकानेक पदोंसे पाठक योग्य बोध प्राप्त कर सकते हैं और रुद्र की शासनव्यवस्थाका पता भी इस से लगा सकते हैं।

यहां पाठक देखें कि, रुद्राध्याय (वा. यजु. अ. १६) के विशेष सूक्ष्म रीति के इस अध्ययन से एक विशेष प्रकार की गणशासन की प्रणाली का बोध यहां हमें मिला है। यह वैदिक व्यवस्था है और प्रत्येक प्रजाजनका इससे लाभ हो सकता है। इस विषय में विस्तारपूर्वक बहुत कुछ स्पष्टीकरण करना आवश्यक है, परंन्तु वैसा करने के लिये हमारे पास यहां स्थान नहीं है।

एक रुद्रके अनेक रूप हैं।

एक ही रुद्र के ये सब मानवी रूप हैं। गण, गणपति ये दोनों रुद्र के रूप हैं। मन्त्री और राजा, सेना और सेनापति, क्षेत्र और क्षेत्रपति, वणिक् और ग्राहक, शिष्य और गुरु ये सब रुद्र के रूप हैं। कोई मनुष्य, कोई प्राणी अथवा कोई वस्तु रुद्रका रूप नहीं, ऐसी वस्तु यहां नहीं है।

यहां राजा भी ईश्वर का रूप है और प्रजा भी। दोनों मिलकर एक ईश्वरके दो रूप हैं। राजा-प्रजा, गुरु-शिष्य, मालक-मजदूर, धनी-सेवक, ज्ञानी-अज्ञानी ये सब ईश्वरके ही रूप हैं, अतः ये परस्पर की सेवा करनेयोग्य हैं। एक सत्ता के ये अंश हैं। अतः सब की मिलकर एक ही सत्ता माननी चाहिये। यहां किसी की भी विभिन्न सत्ता नहीं है। हम सब एक ही जीवन के अंश हैं, यह जानकर परस्पर के सहायक व्यवहार हम सबको करने चाहिये।

जिस तरह एक शरीर में सिर, आंख, नाक, कान, मुख, जिह्वा, दांत, होट, गाल, बाहु, अंगुलियां, हात, पेट, पांव आदि अनेक अवयव एकही जीवनके अवयव हैं और पूर्णतया परस्पर सहायता करना इनका कर्तव्य है, सब का मिलकर एक जीवन है, यह जानना, मानना और उस एक जीवन के हितके लिये अपना समर्पण करना प्रत्येक अवयव का कर्तव्य है, उसी तरह सब मानव एकही जीवनके अंश हैं, यह जानना, मानना और उस अखंड, अटूट, अनन्य एक जीवनका अत्यधिक हित करनेके लिये अपने जीवनको लगाना, अर्थात् पूर्ण की सेवाके लिये अंशने अपना अर्पण करना आवश्यक है।

जो लोग शंका करते हैं कि सदैक्यवादसे राष्ट्रीय शासन किस तरह होगा, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रकी उन्नति तथा राष्ट्रीय संघटना किस तरह होगी, इस शंकाका उत्तर इस लेखमें दिया गया है। वेदने जनताकी उन्नतिके लिये **'सदैक्यवाद'** दिया और इस वादसे सिद्ध होनेवाला राष्ट्रीय संघटनाका आदर्श भी मानवोंके सम्मुख गणव्यवस्थाद्वारा रख दिया। सदैक्यवादसे अनन्य-भावकी सिद्धता होती है और सब प्राणियोंका मिलकर एक अखण्ड और अटूट जीवन है, इसके विषयमें निश्चय होता है। इस निश्चयके पश्चात् व्यक्ति व्यक्ति की, संघ संघकी तथा जाति जाति की सेवामें लगकर, परस्पर सेवाशुश्रूषासे जो सबकी उन्नति होती है, उस उन्नतिकी आयोजनाकी कल्पना इस गणसंस्थासे पाठकों के मनमें स्थिर हो सकती है। इस तरह सदैक्यवादसे राष्ट्रोन्नति सिद्ध होती है और इससे मानवताका भी पूर्ण विकास हो सकता है।

इस रुद्राध्याय में सब प्राणी रुद्रके रूप हैं ऐसा कहकर संघ-टना का वैदिक संदेश दिया है। अन्य स्थानों में पुरुष, नारायण, आत्मा, ब्रह्म आदिके सब रूप हैं, ऐसा बता कर वही संदेश दिया है। सदैक्यवाद का तत्त्व यह है कि, सबके रूप भिन्न होने पर भी सब की सत्ता तत्त्वतः एक मानना। यहां तत्त्वतः भिन्न अनेक सत्ताएं नहीं हैं। इस सदैक्यवाद के सिद्धान्त को व्यवहार में लानेके लिये छोटे छोटे गणों में यह तत्त्व प्रथम आचरणद्वारा तथा परस्पर सेवाद्वारा सिद्ध करना चाहिये। पश्चात् गणों के, संघोंके और राष्ट्रके व्यवहार में लाना चाहिये और अन्त में मानवों के व्यवहार में लाना योग्य है। इसका मार्ग जो वेद ने बताया है, वह यह है। इसका विचार पाठक करें।

अस्तु। रुद्रदेवताका स्वरूप और उसका कार्य इसका विचार यहांतक हुआ। पाठक रुद्रके मंत्रोंका अधिक विचार करें और वेदका आशय जाननेका यत्न करें। यहां रुद्रके संपूर्ण मंत्रोंका संग्रह इसी प्रकारके मनन के लिये इकट्ठा किया है।

निवेदन-कर्ता

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
स्वाध्याय-मण्डल, **औंध**, (जि. सातारा)

रुद्रदेवताकी विषयसूची ।



विषय	पृष्ठ
१. रुद्रदेवताका परिचय ।	३
२. रुद्रके विषयमें निरुक्तका मत	,,
३. रुद्रके विषयमें उपनिषत्कारोंकी सम्मति ।	४
४. रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदकी सम्मति ।	५
५. सर्वव्यापक रुद्रदेव ।	,,
६. जगत् का पिता रुद्र ।	,,
७. सब सृष्टिका स्वामी रुद्र ।	,,
८. सर्वशक्तिमान् रुद्र ।	६
९. गुहानिवासी रुद्र ।	,,
१०. अपने अंतःकरणमें रुद्र की खोज ।	,,
११. अनेक रुद्रोंमें व्यापक ' एक रुद्र ' ।	७
१२. एक रुद्रके पुत्र अनेक रुद्र हैं ।	,,
१३. अनंत प्राणी अनेक रुद्र हैं ।	,,
१४. अनेक रुद्रोंकी संख्या ।	९
१५. रुद्रके विषयमें श्रीसायणाचार्यजीका मत ।	,,
१६. श्रीउवटाचार्यजी का ' रुद्र ' विषयक मत ।	१०
१७. श्रीमहीधराचार्यजीका ' रुद्र ' संबंधी मत ।	,,
१८. श्री स्वामी दयानंदसरस्वतीजीका रुद्रके विषयमें मत,	,
१९. श्री भग० गीताके विभूतियोगके साथ तुलना ।	१२
२०. पं. जॉन डॉसनसाहबका मत ।	१३
२१. सर मोनिअर वुइलियमसाहबकी सम्मति ।	१३
२२. श्री० म० आर्थर आंटोनी मॅक्डोनेलसाहबकी सम्मति ।	१४
२३. पौराणिक रुद्र और वैदिक रुद्र ।	१५
२४. रुद्रका शरीर ।	,,
२५. खोजका विषय ।	१६
२६. रुद्रदेवताका यजुर्वेदोक्त विश्वरूप ।	,,
२७. मानवरूपोंमें रुद्र (ज्ञानी पुरुष) ।	,,
२८. क्षत्रियवर्गके रुद्र (वीर रुद्र ।)	१७
२९. वैश्यवर्गके रुद्र ।	१९
३०. शिल्पिवर्गके रुद्र ।	,,
३१. चार वर्णोंके रुद्र ।	२०
३२. आततायी वर्ग के रुद्र ।	,,
३३. प्राणियों में रुद्र के रूप ।	२२
३४. सर्वसाधारण रुद्र ।	२३
३५. सूक्ष्म रुद्र ।	२४
३६. वृक्षरूपी रुद्र ।	,,
३७. ईश्वरवाचक रुद्र ।	,,
३८. कल्याणकारी रुद्र ।	,,
३९. गण और व्रात ।	२५
४०. एक रुद्रके अनेक रूप हैं ।	३०

रुद्र-देवता-मंत्रोंकी ऋषिसूची ।

रुद्रः ।

ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठम्
कण्वो घौरः	१-५	१
कुत्स आङ्गिरसः ।	६-१६	,,
गृत्समदः शौनकः ।	१७-२१	२
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।	२२-२६	३
(वाज०यजुर्वेदमन्त्राः ।)	३७-१११	४
ब्रह्मा ।	११२-११७	९
कपिञ्जलः ।	११८	१०
अथर्वा ।	११९-१४१	,,

रुद्रसहचारी देवगणाः

(१) रुद्रः मित्रावरुणौ च। कण्वो घौरः। १४२ ११
(२) रुद्रः, दिशः। अथर्वा। १४३-२०० ''
(३) आदित्याः, रुद्राः। '' '' १३
(४) सोमारुद्रौ। '' '' ''
(५) भव-शर्व-रुद्राः '' '' १४
भव-शर्व-रुद्राः। सन्तातिः। २०१-२०२ १६
(६) रुद्राः, व्याघ्रः। अथर्वा। २०३-२०९ ''
(७) रुद्रः (अग्निः)। वामदेवो गौतमः। २१० १७
'' '' '' (मृत्युः)। संकसुको यामायनः। २११-१४ ''
'' '' '' '' । अथर्वा। २१५-२१७ १८
'' '' '' '' । प्रजापतिः। २१८-२२५ ''
'' '' '' '' । दुह्वणः। २२६-२२७ १९

रुद्र-देवताकी सूचियाँ।

१ पुनरुक्त-मन्त्रभागाः। पृ० २०
ऋ० प्रथमं मण्डलम्। ''
द्वितीयं '' ''
चतुर्थं '' ''
सप्तमं '' ''
२ मन्त्राणां सूची। २१-२३
३ गुणबोधक-पदसूची। २४-३०
४ मृत्यु-देवता-गुणबोधक-पदानि। ३१
५ मृत्युनिवारक-ब्रह्मौदन-गुणबोधक-पदानि। ''
६ दिग्भेदेन रुद्ररूपाणि। ३२
७ उपमा-सूची। ''

दैवत-संहिता।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता।)

७ रुद्रदेवता।

॥१॥ (ऋ० १।४३।१-२,४-६)

(१-५) कण्वो घौरः। गायत्री।

कद् रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे । वोचेम शंतमं हृदे १
यथा नो अदितिः करत् पश्वे नृभ्यो यथा गवे । यथा तोकाय रुद्रियम् २
गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् । तच्छंयोः सुम्नमीमहे ४
यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते । श्रेष्ठो देवानां वसुः ५
शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये । नृभ्यो नारिभ्यो गवे ६ ५

॥२॥ (ऋ० १।११४।१-११)

(६-१६) कुत्स आङ्गिरसः। जगतीः १०-११ त्रिष्टुप्।

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् १
मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु २
अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः ।
सुम्नायन्निद् विशो अस्माकमा चरारिष्टवीरा जुहवाम ते हविः ३
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं वङ्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे ।
आरे अस्मद् दैव्यं हेळो अस्यतु सुमतिमिद् वयमस्या वृणीमहे ४ ९

दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं त्वेषं रूपं नमसा नि ह्वयामहे ।
हस्ते बिभ्रद् भेषजा वार्याणि शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यंसत् ५ १०
इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।
रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृळ ६
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ७
मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ८
उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकरं रास्वा पितर्मरुतां सुम्नमस्मे ।
भद्रा हि ते सुमतिर्मृळयत्तमाथा वयमव इत् ते वृणीमहे ९
आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं क्षयद्वीर सुम्नमस्मे ते अस्तु ।
मृळा च नो अधि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः १०
अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृणोतु नो हवं रुद्रो मरुत्वान् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ११ १६

॥३॥ (ऋ० २।३३।१-१५)

(१७-३१) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चात्) भार्गवः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

आ ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु मा नः सूर्यस्य संदृशो युयोथाः ।
अभि नो वीरो अर्वति क्षमेत प्र जायेमहि रुद्र प्रजाभिः १
त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभिः शतं हिमा अशीय भेषजेभिः ।
व्यस्मद् द्वेषो वितरं व्यंहो व्यमीवाश्चातयस्वा विषूचीः २
श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियासि तवस्तमस्तवसां वज्रबाहो ।
पर्षि णः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अभीती रपसो युयोधि ३
मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिर्मा दुष्टुती वृषभ मा सहूती ।
उन्नो वीराँ अर्पय भेषजेभिर्भिषक्तमं त्वा भिषजां शृणोमि ४ १०
हवींमभिर्हवंते यो हविर्भिरव स्तोमेभी रुद्रं दिषीय ।
ऋदूदरः सुहवो मा नो अस्यै बभ्रुः सुशिप्रो रीरधन्मनायै ५
उन्मा ममन्द वृषभो मरुत्वान् त्वक्षीयसा वयसा नाधमानम् ।
घृणीव च्छायामरपा अशीया ऽऽ विवासेयं रुद्रस्य सुम्नम् ६ १२

कृ॒धी स्य तें रुद्र मृळ॒याकु॒र्हस्तो॒ यो अस्ति॑ भेष॒जो जला॑षः ।
अप॑भर्ता रप॒सो दैव्य॑स्या॒भी नु मा॑ वृषभ चक्षमीथाः ७
प्र ब॒भ्रवे॑ वृष॒भाय॑ श्वि॒तीचे॒ म॒हो म॒हीं सु॑ष्टु॒तिमी॑रयामि ।
न॒म॒स्या क॑ल्मली॒किनं॑ नमो॒भि॒र्गृ॒णी॒मसि॑ त्वे॒षं रु॒द्रस्य॒ नाम॑ ८
स्थि॒रेभि॒रङ्गैः॑ पुरुरू॒प उ॒ग्रो ब॒भ्रुः शु॒क्रेभिः॑ पिपिशे॒ हिर॑ण्यैः ।
ईशा॑नादस्य॒ भुव॑नस्य॒ भूरे॒र्न वा उ॑ योषद् रु॒द्रादसु॑र्यम् ९ २५
अहे॑न् बिभर्षि सायका॒नि ध॒न्वा॒र्हन् नि॒ष्कं य॑जतं वि॒श्वरू॑पम् ।
अर्हं॒न्निदं द॑यसे वि॒श्वमभ्वं॒ न वा ओजी॑यो रुद्र॒ त्वदस्ति॑ १०
स्तु॒हि श्रु॒तं ग॑र्त॒सदं॒ युवा॑नं मृ॒गं न भी॒ममु॑पहत्नु॒मु॒ग्रम् ।
मृ॒ळा ज॑रित्रे रुद्र॒ स्तवा॑नो॒ ऽन्यं ते॑ अ॒स्मन्नि व॑पन्तु॒ सेना॑ः ११
कु॒मा॒रश्चि॑त् पि॒तरं॑ वन्द॒मानं॒ प्रति॑ नानाम रुद्रोप॒यन्त॑म् ।
भूरे॑र्दा॒तार॑ं सत्प॒तिं गृ॑णीषे॒ स्तुत॒स्त्वं भे॑षजा रास्यस्मे १२
या वो॑ भेषजा म॒रुतः॑ शु॒चीनि॒ या शं॑त॒मा वृ॑षणो॒ या म॑यो॒भु ।
यानि॒ मनु॑रवृणी॒ता पि॒ता न॒स्ता शं च॒ योश्च॑ रु॒द्रस्य॑ वाश्मि १३
परि॑ णो हे॒ती रु॒द्रस्य॑ वृज्या॒ः परि॑ त्वे॒षस्य॑ दु॒र्मति॑र्महि गात् ।
अव॑ स्थि॒रा म॒घव॑द्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तो॒काय॑ तन॒याय॑ मृळ १४
एवा ब॑भ्रो वृषभ चेकिता॒न यथा॑ दे॒व न हृ॒णी॒षे न हं॑सि ।
ह॒वन॒श्रुन्नो॑ रुद्रे॒ह बो॑धि बृ॒हद् व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीरा॑ः १५ ३१

॥४॥ (ऋ० ७।४६।१-४)

(३२-३६) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती, ४ त्रिष्टुप् ।

इ॒मा रु॒द्राय॑ स्थि॒रध॑न्वने॒ गिर॑ः क्षि॒प्रेष॑वे दे॒वाय॑ स्व॒धाव्ने॑ ।
अषा॑ळ्हाय॒ सह॑मानाय वे॒धसे॑ ति॒ग्मायु॑धाय भरता शृणोतु॒ नः १
स हि क्षये॑ण॒ क्षम्य॑स्य॒ जन्म॑नः॒ साम्रा॑ज्येन दि॒व्यस्य॒ चेत॑ति ।
अव॑न्नवन्ती॒रुप॑ नो दुरश्चरा॒ऽनमी॑वो रुद्र जासु॒ नो भव २
या ते॑ दि॒द्युदव॑सृष्टा दि॒वस्परि॑ क्ष्म॒या च॑रति॒ परि॒ सा वृ॑णक्तु नः ।
स॒हस्रं॑ ते स्वपिवात भेष॒जा मा न॑स्तो॒केषु॒ तन॑येषु रीरिषः ३
मा नो॑ वधी रुद्र मा परा॑ दा॒ मा ते॑ भूम॒ प्रसि॑तौ॒ हीळि॑तस्य ।
आ नो॑ भज ब॒र्हिषि॑ जीवशं॒से यू॒यं पा॑त स्व॒स्ति॒भिः॒ सदा॑ नः ४ ३५

*

॥५॥ (ऋ० ७।५९।१२)

रुद्रः (त्र्यम्बकः) (मृत्युविमोचनी ऋक्) । अनुष्टुप् ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् १२ ३६

॥६॥ (३७-१११) (वा० य० ३।५७-६३)×

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आस्वुस्ते पशुः ५७
अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम् ।
यथा नो वस्यसस्करद् यथा नः श्रेयसस्करद् यथा नो व्यवसाययात् ५८
भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम् । सुखं मेषाय मेष्यै ५९
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनं । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ६० ४०
एतत् ते रुद्रावसं तेन परो मूजवतोऽतीहि ।
अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिंꣳसन्नः शिवोऽतीहि ६१
त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद् देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ६२
शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसीः ।
निर्वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ६३

॥७॥ (वा० य० १०।२०)

रुद्र यत् ते क्रिवि परं नाम तस्मिन् हुतमस्यमेष्टमसि स्वाहा २०

॥८॥ (वा० य० ११।५४)

रुद्राः सꣳसृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे ।
तेषां भानुरजस्र इच्छुक्रो देवेषु रोचते ५४ ४५

॥९॥ (वा० य० १६।१-६६)+

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो न इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः १
या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि २
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत् ३ ४८

×वा० य० ३।६० (पूर्वार्धः) = ऋ० ७।५९।१२।
+वा० य० १६।१-१६ = ऋ० १।११४।७-८

शिवेन॒ वच॑सा त्वा॒ गिरि॑शाच्छा॒ वदा॑मसि ।
यथा॑ नः॒ सर्व॒मिज्जग॑दय॒क्ष्मꣳ सु॒मना॒ असत् ४
अध्य॑वोचदधि॒वक्ता॒ प्र॑थ॒मो दैव्यो॑ भि॒षक् ।
अहीँ॑श्च॒ सर्वा॑ञ्जम्भय॒न्त्सर्वा॑श्च यातुधा॒न्यो॑ऽधरा॒चीः परा॑सुव ५ ५०
अ॒सौ यस्ता॒म्रो अ॑रु॒ण उ॒त ब॒भ्रुः सु॑म॒ङ्गल॑: ।
ये चैन॑ꣳ रु॒द्रा अ॒भितो॑ दि॒क्षु श्रि॒ताः स॑हस्र॒शोऽवै॑षाꣳ हेड॒ ईम॑हे ६
अ॒सौ यो॑ऽव॒सर्प॑ति॒ नील॑ग्रीवो॒ वि॑लो॒हित॑: ।
उ॒तैनं॑ गो॒पा अ॑दृश्रन्नदृश्रन्नुदहा॒र्य॑: स दृ॒ष्टो मृ॑डयाति नः ७
नमो॑ऽस्तु नील॑ग्रीवाय सहस्रा॒क्षाय॑ मी॒ढुषे॑ ।
अथो॒ ये अ॑स्य॒ सत्वा॑नो॒ऽहं तेभ्यो॑ऽकरं॒ नमः॑ ८
प्रमु॑ञ्च॒ धन्व॑न॒स्त्वमु॒भयो॒रार्त्न्यो॑र्ज्याम् ।
याश्च॑ ते॒ हस्त॒ इष॑वः॒ परा॒ ता भ॑गवो वप ९
विज्यं॒ धनु॑: कप॒र्दिनो॒ विश॑ल्यो॒ बाण॑वाँ२ उ॒त ।
अने॑शन्नस्य॒ या इष॑व आ॒युर॑स्य नि॒षङ्ग॑धिः १० ५५
या ते॑ हे॒तिर्मी॒ढुष्ट॑म॒ हस्ते॑ ब॒भूव॑ ते॒ धनु॑: ।
तया॒स्मान् वि॒श्वत॒स्त्वम॑य॒क्ष्मया॒ परि॑भुज ११
परि॑ ते॒ धन्व॑नो हे॒तिर॒स्मान् वृ॑णक्तु वि॒श्वत॑: ।
अथो॒ य इ॑षु॒धिस्तवा॑रे अ॒स्मन्नि॑धे॒हि तम् १२
अव॑तत्य॒ धनु॑ष्ट्वꣳ सह॒स्राक्ष॒ शते॑षुधे ।
नि॒शीर्य॑ श॒ल्यानां॒ मुखा॑ शि॒वो नः॑ सुमना॑ भव १३
नम॑स्त॒ आयु॑धायाना॒तताय॑ धृ॒ष्णवे॑ । उ॒भाभ्या॑मु॒त ते॒ नमो॑ बा॒हुभ्या॑ं त॒व ध॒न्व॑ने १४
मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अर्भ॒कं मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ उक्षि॒तम् ।
मा नो॑ वधीः पि॒तर॑ं मो॒त मा॒तर॑ं मा नः॑ प्रि॒यास्त॒न्वो॑ रुद्र रीरिषः १५ ६०
मा न॑स्तो॒के तन॑ये मा॒ न आयु॑षि मा॒ नो॑ गोषु॒ मा नो॑ अ॒श्वेषु॑ रीरिषः ।
मा नो॑ वी॒रान् रु॑द्र भामि॒नो॑ वधीर्ह॒विष्म॑न्तः सद॒मित् त्वा॑ हवामहे १६
नमो॑ हिर॒ण्यबा॑हवे सेनान्ये॒ दिशां॑ च पत॒ये॒ नमो॒ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॑ हरि॒केशे॑भ्यः
पशू॑नां पत॒ये॒ नमो॒ नमः॑ शष्पिञ्ज॒राय॑ त्विषी॒मते॑ पथी॒नां पत॒ये॒ नमो॒ नमो॑ हरि॒केशा॑यो-
पवी॒तिने॑ पु॒ष्टाना॑ं पत॒ये॒ नमः॑ १७ ६२

नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः १८

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः १९

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः २० ६५

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः २१

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः २२

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः २३

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमः २४

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः २५ ७०

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः २६

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः २७

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च २८ ७३

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिश-
याय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च २९
नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे
च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च ३० ७५
नमः आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चाव-
स्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ३१
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय
चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ३२
नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय
चावसान्याय च नमः उर्वर्याय च खल्याय च ३३
नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नमः आशुषेणाय
चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ३४
नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च
श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ३५ ८०
नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायु-
धिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ३६
नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च
सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ३७
नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च
विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च ३८
नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय
च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ३९
नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरे-
वधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ४० ८५
नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय
च शिवतराय च ४१
नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च
कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ४२ ९०

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमः इरिण्याय च प्रपथ्याय च ४३

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ४४

नमः शुष्कयाय च हरित्याय च नमः पांसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च ४५ १०

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च प्रखिदते च नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाꣳ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ४६

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ।
आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत् ४७

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ४८

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ४९

परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ५० ९५

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव ।
परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि ५१

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः ५२

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ५३

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ५४

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव० ५५ १००

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव० ५६

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव० ५७

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव० ५८ १०३

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव० ५९
ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्युधः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव० ६० १०५
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव० ६१
येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव० ६२
य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव० ६३

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ६४

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ६५

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ६६ १११

॥१०॥ (अथर्व० १।१९।३)
(११२-११७) ब्रह्मा । पथ्यापङ्क्तिः ।

यो नः स्वो यो अरणः सजात उत निष्ट्यो यो अस्माँ अभिदासति ।
रुद्रः शरव्या यैतान् ममामित्रान् वि विध्यतु ३

॥११॥ (अथर्व० ६।५५।२-३)
२ त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो वसन्तः शरद् वर्षाः स्विते नो दधात ।
आ नो गोषु भजता प्रजायां निवात इद् वः शरणे स्याम २
इदावत्सरायं परिवत्सरायं संवत्सरायं कृणुता बृहन्नमः ।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ३

॥१२॥ (अथर्व० १३।४।४; १३।६।२५-२६) ।
४ प्राजापत्याऽनुष्टुप्, २५ एकपदाऽऽसुरी गायत्री, २६ आर्च्यनुष्टुप् ।

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः ।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ४ ११५

स एव मृत्युः सोऽमृतं सोऽस्वँ१ स रक्षः २५
स रुद्रो वसुवर्निर्वसुदेयं नमोवाके वषट्कारोऽनु संहितः २६ ११७

॥१३॥ (अथर्व० २।२७।६)
(११८) कांपञ्जलः । अनुष्टुप् ।

रुद्र जलाषभेषज नीलशिखण्ड कर्मिकृत् ।
प्राशं प्रतिप्राशो जम्भरसान् कृण्वोषधे ६

॥१४॥ (अथर्व० ७।८७।१)
(११९-१४१) अथर्वा । जगती ।

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वँन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश ।
य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये १

॥१५॥ (अथर्व० १५।५।१-२१)

१ त्रिपदा समविषमा गायत्री; २ त्रिपदा भुरिगार्ची त्रिष्टुप्; ३,६,९,१२,१५,१८,२१ द्विपदा प्राजाप-, त्याऽनुष्टुप्, ४ त्रिपदा स्वराट् प्राजापत्या पङ्क्तिः; ५,८,११,१७ त्रिपदा ब्राह्मी गायत्री;७,१०,१६ त्रिपदा ककुप्; १३,१९ भुरिग् विषमा गायत्री; १४ निचृद्ब्राह्मी गायत्री; २० विराट् ।

तस्मै प्राच्या दिशो अन्तर्देशाद् भवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ १ ११०
भव एनमिष्वासः प्राच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ २
नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद ॥३॥ ३
तस्मै दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशाच्छर्वमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ ४
शर्व एनमिष्वासो दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ ५ नास्य पशून्० ॥३॥ ६ ११५
तस्मै प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशात् पशुपतिमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ ७
पशुपतिरेनमिष्वासः प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ ८ नास्य पशून्० ॥३॥ ९
तस्मा उदीच्या दिशो अन्तर्देशादुग्रं देवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ १०
उग्र एनं देव इष्वास उदीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ ११ नास्य पशून्० ॥३॥ १२
तस्मै ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशाद् रुद्रमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ १३ १२२

रुद्र एनमिष्वासो ध्रुवायां दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ १४ नास्य पशून्० ॥३॥ १५
तस्मा ऊर्ध्वायां दिशो अन्तर्देशान्महादेवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ १६ १३५
महादेव एनमिष्वास ऊर्ध्वायां दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ १७ नास्य पशून्० ॥३॥ १८
तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्य ईशानमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ १९
ईशान एनमिष्वासः सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्योऽनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः॥२॥
नास्य पशून् न समानान् हिंनस्ति य एवं वेद ॥३॥ २१

॥१६॥ (अथर्व० १९।१८।३) आर्च्यनुष्टुप् ।

सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु । ये मायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासात् ३ १४१

रुद्र-सहचारी देवगणः ।

(१) रुद्रः मित्रावरुणौ च ।

॥१७॥ (ऋ० १।४३।३)
(१४२) कण्वो घौरः । गायत्री ।

यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ३

(२) रुद्रः, दिशः ।

॥१८॥ (अथर्व० ३।२६।१-६)
(१४३-२००) अथर्वा । दिशः, रुद्रः; १ साम्नयो हेतयः, २ सकामा अविष्यवः, ३ वैराजः, ४ सवाताः प्रविध्यन्तः, ५ सौषधिका निलिम्पाः, ६ बृहस्पतियुता अवस्वन्तः । त्रिष्टुप्; २,५-६ जगती; ३-४ भुरिक्; १-६ पञ्चपदा विपरीतपादलक्ष्मा ।

येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः ।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा १
येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिश्य विष्यवो नाम देवास्तेषां वः काम इषवः ।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा २
येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि वैराजा नाम देवास्तेषां व आप इषवः ।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ३ १४५

येऽ३ऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि प्रविध्यन्तो नाम देवास्तेषां वो वात इषवः ।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ४
येऽ३ऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि निलिम्पा नाम देवास्तेषां व ओषधीरिषवः ।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ५
येऽ३ऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिश्यवस्वन्तो नाम देवास्तेषां वो बृहस्पतिरिषवः ।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ६

॥१९॥ (अथर्व० ३।२७।१-६)

दिशः, रुद्रः; १ अग्निः असितः, आदित्याः; २ इन्द्रः, तिरश्चिराजी, पितरः; ३ वरुणः, पृदाकुः, अन्नं; ४ सोमः, स्वजः, अशनिः; ५ विष्णुः, कल्माषग्रीवो वीरुधः; ६ बृहस्पतिः, श्वित्रं, वर्षम् ।
१-६ पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः, (२ अत्यष्टिः, ५ भुरिक्) ।

प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः १
दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः २ १५०
प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ३
उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ४
ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ५
ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ६ १५१

(३) आदित्याः, रुद्राः ।

॥२०॥ (अथर्व० ५।३।१०)

बृहद्दिवोऽथर्वा । विराड् जगती ।

ये नः सपत्ना अप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव बाधामह एनान् ।
आदित्या रुद्रा उपरिस्पृशो न उग्रं चेत्तारमधिराजमक्रत १० १५५

(४) सोमारुद्रौ ।

॥२१॥ (अथर्व० ५।६।१-१४)

१ ब्रह्म, २ कर्माणि, ३-४ रुद्रगणाः, ५-८ सोमारुद्रौ, ९ हेतिः, १०-१४ सर्वात्मा रुद्रः ।
त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप्, ३ जगती, ४ अनुष्टुबुष्णिक्त्रिष्टुग्गर्भा पञ्चपदा जगती,
५-७ त्रिपदा विराण्नाम गायत्री, ८ एकावसाना द्विपदाऽऽर्ष्यनुष्टुप्,
१० प्रस्तारपङ्क्तिः, ११-१३ पङ्क्तिः, १४ स्वराट्पङ्क्तिः ।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः १
अनाप्ता ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे ।
वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे २
सहस्रधार एव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः ।
तस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवे ३
पर्यू षु प्र धन्वा वाजसातये परिं वृत्राणिं सक्षणिः ।
द्विषस्तदध्यर्णवेनेयसे सनिस्रसो नाम्मासि त्रयोदशो मास इन्द्रस्य गृहः ४
न्वे३तेनारात्सीरसौ स्वाहा ।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः ५ १६०
अवैतेनारात्सीरधौ स्वाहा । तिग्मायुधौ तिग्महेती० ६
अपैतेनारात्सीरसौ स्वाहा । तिग्मायुधौ तिग्महेती० ७
मुमुक्तमस्मान् दुरितादवद्याज्जुषेथां यज्ञममृतमस्मासु धत्तम् ८
चक्षुषो हेते मनसो हेते ब्रह्मणो हेते तपसश्च हेते ।
मेन्या मेनिरस्यमेनयस्ते सन्तु येऽस्माँ अभ्यघायन्ति ९
योऽस्मांश्चक्षुषा मनसा चिख्याकूत्या च यो अघायुरभिदासात् ।
त्वं तानमे मेन्यामेनीन् कृणु स्वाहा १० १६५

इन्द्रस्य गृहोऽसि । तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वगुः सर्वपूरुषः
सर्वात्मा सर्वतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन ११
इन्द्रस्य शर्मासि । तं त्वा प्र पद्ये तं० १२
इन्द्रस्य वर्मासि । तं त्वा प्र पद्ये तं० १३
इन्द्रस्य वरूथमसि । तं त्वा प्र पद्ये तं० १४

(५) भव-शर्व-रुद्राः ।×

॥२२॥ (अथर्व० ११।२।१-३१)

त्रिष्टुप्; १परोऽतिजागता विराड्जागती; २ अनुष्टुब्गर्भा पञ्चपदा पथ्याजगती; ३ चतुष्पदा स्वराडुष्णिक्; ४-५,७,१३,१५-१६,२१ अनुष्टुप्; ६ आर्षी गायत्री; ८ महाबृहती; ९ आर्षी; १० पुरोकृति त्रिपदा विराट्; ११ पञ्चपदा विराड्जगतीगर्भा शाकरी; १२ भुरिक्; १४,१७-१९,२३,२६-२७ विराड्गायत्री; २० भुरिग्गायत्री; २२ विषमपादलक्षमा त्रिपदा महाबृहती; २४,२९ जगती; २५ पञ्चपदाऽतिशाकरी; ३० चतुष्पदा उष्णिक्; ३१ ऽयवसाना विपरीतपादलक्षमा षट्पदा (जगती?) ।

भवाशर्वौ मृडतं माभि यातं भूतपती पशुपती नमो वाम् ।
प्रतिहितामायतां मा वि स्राष्टं मा नो हिंसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः १ १७०
शुने क्रोष्ट्रे मा शरीराणि कर्तमलिक्लवेभ्यो गृध्रेभ्यो ये च कृष्णा अविष्यवः ।
मक्षिकास्ते पशुपते वयांसि ते विघसे मा विदन्त २
क्रन्दाय ते प्राणाय याश्च ते भव रोपयः । नमस्ते रुद्र कृण्मः सहस्राक्षायामर्त्य ३
पुरस्तात् ते नमः कृण्म उत्तरादधरादुत । अभीवर्गाद् दिवस्पर्यन्तरिक्षाय ते नमः ४
मुखाय ते पशुपते यानि चक्षूंषि ते भव। त्वचे रूपाय संदृशे प्रतीचीनाय ते नमः५
अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वाया आस्याय ते । दद्भ्यो गन्धाय ते नमः ६ १७५
अस्रा नीलशिखण्डेन सहस्राक्षेण वाजिना । रुद्रेणार्धकघातिना तेन मा समरामहि७
स नो भवः परि वृणक्तु विश्वत आप इवाग्निः परि वृणक्तु नो भवः ।
मा नोऽभि मांस्त नमो अस्त्वस्मै ८
चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्वः पशुपते नमस्ते ।
तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः ९ १७८

×वै० [अथर्ववेद०] १७१३-१७१९ । मन्त्राः द्रष्टव्याः ।

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेदमुग्रोर्वन्तरिक्षम् ।
तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत् प्राणत् पृथिवीमनु १०
उरुः कोशो वसुधानस्तवायं यस्मिन्निमा विश्वा भुवनान्यन्तः ।
स नो मृड पशुपते नमस्ते परः क्रोष्टारो अभिभाः श्वानः परो यन्त्वघरुदो विकेश्यः ११ १८०
धनुर्बिभर्षि हरितं हिरण्ययं सहस्रघ्नि शतवधं शिखण्डिनम् ।
रुद्रस्येषुश्चरति देवहेतिस्तस्यै नमो यतमस्यां दिशीतः १२
योऽभियातो निलयते त्वा रुद्र निचिकीर्षति ।
पश्चादनुप्रयुङ्क्ष्व तं विद्धस्य पदवीरिव १३
भवारुद्रौ सयुजा संविदानावुभावुग्रौ चरतो वीर्याय ।
ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीतः १४
नमस्तेऽस्त्वायते नमो अस्तु परायते । नमस्ते रुद्र तिष्ठत आसीनायोत ते नमः १५
नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा ।
भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकरं नमः १६ १८५
सहस्राक्षमतिपश्यं पुरस्ताद् रुद्रमस्यन्तं बहुधा विपश्चितम् ।
मोपाराम जिह्वयेयमानम् १७
श्यावाश्वं कृष्णमसितं मृणन्तं भीमं रथं केशिनः पादयन्तम् ।
पूर्वे प्रतीमो नमो अस्त्वस्मै १८
मा नोऽभि स्रा मृत्यो देवहेतिं मा नः क्रुधः पशुपते नमस्ते ।
अन्यत्रास्मद् दिव्यां शाखां वि धूनु १९
मा नो हिंसीरधि नो ब्रूहि परि णो वृङ्ग्धि मा क्रुधः । मा त्वया समरामहि २०
मा नो गोषु पुरुषेषु मा गृधो नो अजाविषु ।
अन्यत्रोग्र वि वर्तय पियारूणां प्रजां जहि २१ १९०
यस्य तक्मा कासिका हेतिरेकमश्वस्येव वृषणः क्रन्द एति ।
अभिपूर्वं निर्णयते नमो अस्त्वस्मै २२
योऽन्तरिक्षे तिष्ठति विष्टभितोऽयज्वनः प्रमृणन् देवपीयून् ।
तस्मै नमो दशभिः शक्वरीभिः २३
तुभ्यमारण्याः पशवो मृगा वने हिता हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि ।
तव यक्षं पशुपते अप्स्वन्तस्तुभ्यं क्षरन्ति दिव्या आपो वृषे २४ १९३

शिशुमारा अजगराः पुरीकया जषा मत्स्या रजसा येभ्यो अस्यसि ।
न ते दूरं न परिष्ठास्ति ते भव सद्यः सर्वान् परि
पश्यसि भूमिं पूर्वस्माद्धंस्युत्तरस्मिन्त्समुद्रे २५
मा नो रुद्र तकमना मा विषेण मा नः सं स्रा दिव्येनाग्निना ।
अन्यत्रास्मद् विद्युतं पातयैताम् २६ १९५
भवो दिवो भव ईशे पृथिव्या भव आ पप्र उर्वन्तरिक्षम् ।
तस्मै नमो यतमस्यां दिशीतः २७
भव राजन् यजमानाय मृड पशूनां हि पशुपतिर्बभूथ ।
यः श्रद्दधाति सन्ति देवा इति चतुष्पदे द्विपदेऽस्य मृड २८
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा नो वहन्तमुत मा नो वक्ष्यतः ।
मा नो हिंसीः पितरं मातरं च स्वां तन्वं रुद्र मा रीरिषो नः २९
रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंसृक्तगिलेभ्यः ।
इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः ३०
नमस्ते घोषिणीभ्यो नमस्ते केशिनीभ्यः ।
नमो नमस्कृताभ्यो नमः संभुञ्जतीभ्यः ।
नमस्ते देव सेनाभ्यः स्वस्ति नो अभयं च नः ३१ २००

॥२३॥ (अथर्व० ६।९३।१-२)

(२०१-२०२) शन्तातिः । रुद्रः; १ यमो मृत्युः, शर्वः; २ भवः, शर्वः । त्रिष्टुप् ।

यमो मृत्युरघमारो निर्ऋथो वभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः ।
देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परि वृञ्जन्तु वीरान् १
मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्मै उत राज्ञे भवाय ।
नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्मदघविषा नयन्तु २

(६) रुद्रः, व्याघ्रः ।

॥२४॥ (अथर्व० ४।३।१-७)

(२०३-२०९) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ पथ्यापङ्क्तिः, ३ गायत्री, ७ ककुम्मतीगर्भोपरिष्टाद्बृहती ।

उदितस्थुर्यो अक्रमन् व्याघ्रः पुरुषो वृकः ।
हिरुग्घि यन्ति सिन्धवो हिरुग् देवो वनस्पतिर्हिरुङ्नमन्तु शत्रवः १ २०३

परेणैतु पथा वृकः परमेणोत तस्करः ।
परेण दत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्षतु २
अक्ष्यौ॑ च ते मुखं च ते व्याघ्र जम्भयामसि ।
आत् सर्वान् विंशतिं नखान् ३ २०५
व्याघ्रं दत्वतो वयं प्रथमं जम्भयामसि ।
आदु ष्टेनमथो अहिं यातुधानमथो वृकम् ४
यो अद्य स्तेन आयति स संपिष्टो अपायति ।
पथामपध्वंसेनैत्विन्द्रो वज्रेण हन्तु तम् ५
मूर्णा मृगस्य दन्ता अपिशीर्णा उ पृष्टयः ।
निमुक्तै गोधा भवतु नीचायच्छशयुर्मृगः ६

यत् संयमो न वि यंमो वि यंमो यन्न संयमः ।
इन्द्रजाः सोमजा आथर्वणमसि व्याघ्रजम्भनम् ७ २०९

(७) रुद्रः (अग्निः) ।

॥२५॥ (ऋ० ४।३।१)

(२१०) वामदेवो गौतमः । रुद्रः । त्रिष्टुप् ।

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ता द्विरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् १ २१०

॥२६॥ (ऋ० १०।१८।१-४)

(२११-२१४) संकुसुको यामायनः । मृत्युः । त्रिष्टुप् ।

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् १
मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः २
इमे जीवा वि मृतैराववृत्र न भूद् भद्रा देवहूतिर्नो अद्य ।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ३
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।
शतं जीवन्तु शरदः पुरूची रन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन ४ २१४

॥२७॥ (अथर्व० ६।११३।१-३)

(२१५-२१७) अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः) । मृत्युः । अनुष्टुप् ।

नमो॑ देव॒वधे॑भ्यो॒ नमो॑ राज॒वधे॑भ्यः ।
अथो॒ ये विश्या॑नां व॒धास्तेभ्यो॑ मृत्यो॒ नमो॑ऽस्तु ते १ २१५
नम॑स्ते अधिवा॒काय॑ परावा॒काय॑ ते॒ नमः॑ ।
सु॒म॒त्यै मृ॑त्यो ते॒ नमो॑ दुर्म॒त्यै त॑ इ॒दं नमः॑ २
नम॑स्ते यातु॒धाने॑भ्यो॒ नम॑स्ते मेष॒जेभ्यः॑ ।
नम॑स्ते मृत्यो॒ मूले॑भ्यो ब्राह्म॒णेभ्य॑ इ॒दं नमः॑ ३ २१७

॥२८॥ (अथर्व० ४।३५।१-७)

(२१८-२२५) प्रजापतिः । अतिमृत्युः । त्रिष्टुप्, ३ भुरिग्जगती ।

यमो॑दु॒नं प्र॑थम॒जा ऋ॒तस्य॑ प्र॒जाप॑ति॒स्तप॑सा ब्र॒ह्मणे॑ऽपचत् ।
यो लो॒कानां॑ विधृ॒तिर्नाभि॑रेषात् तेनौ॑दु॒नेनाति॑ तराणि मृ॒त्युम् १
येनात॑रन् भूत॒कृतोऽति॑ मृ॒त्युं यम॒न्ववि॑न्दन् तप॒सा श्रमे॑ण ।
यं प॒पाच॑ ब्र॒ह्मणे ब्र॒ह्म पूर्वं॒ तेनौ॑दु॒नेनाति॑ तराणि मृ॒त्युम् २
यो दा॑धार॒ पृथि॑वीं वि॒श्वभो॑जसं॒ यो अ॒न्तरि॑क्षमापृ॒णाद् रसे॑न ।
यो अस्त॑भ्नाद् दि॒वमू॒र्ध्वो म॑हि॒म्ना तेनौ॑दु॒नेनाति॑ तराणि मृ॒त्युम् ३ २२०
यस्मा॒न्मासा॒ निर्मि॑ता॒स्त्रिंश॑दरा॒ः संव॑त्स॒रो यस्मा॒न्निर्मि॑तो॒ द्वाद॑शारः ।
अहो॑रात्रा॒ यं प॑रि॒यन्तो॒ नापु॒स्तेनौ॑दु॒नेनाति॑ तराणि मृ॒त्युम् ४
यः प्रा॑ण॒दः प्रा॑ण॒दवा॑न् ब॒भूव॒ यस्मै॑ लो॒का घृ॒तव॑न्तः क्षर॑न्ति ।
ज्योति॑ष्मतीः प्र॒दिशो॒ यस्य॒ सर्वा॒स्तेनौ॑दु॒नेनाति॑ तराणि मृ॒त्युम् ५
यस्मा॑त् प॒क्वादु॒तामृतं॑ संब॒भूव॒ यो गा॑य॒त्र्या अधि॑पति॒र्ब॑भूव ।
यस्मि॒न् वेदा॒ निहि॑ता वि॒श्वरू॑पा॒स्तेनौ॑दु॒नेनाति॑ तराणि मृ॒त्युम् ६
अव॑ बाधे॒ द्विष॑न्तं॒ देव॑पीयुं स॒पत्ना॒ ये मे॑ऽप॒ ते भ॑वन्तु ।
ब्रह्मौ॑दु॒नं वि॑श्व॒जितं॑ पचामि शृ॒ण्वन्तु॑ मे श्र॒द्धान॑स्य॒ देवाः॑ ७

॥२९॥ (अथर्व० ७।१०२।१)

द्यावापृथिवी; अन्तरिक्षम्, मृत्युः । विराट् पुरस्ताद्बृहती ।

नम॒स्कृत्य॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑म॒न्तरि॑क्षाय मृ॒त्यवे॑ ।
मे॒क्षाम्यू॒र्ध्वस्ति॒ष्ठन्मा मा॑ हिंसिषु॒रीश्व॑राः १ २२५

॥३०॥ (अथर्व० ६।६३।१-३)

(२२६-२२७) ब्रह्मणः । १ यमः, ३ मृत्युः। २ अतिजगतगर्भा, ३ जगती।

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।
यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे २
अयस्मये द्रुपदे बेधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्यः सहस्रम् ।
यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् ३ २२७

इति रुद्रदेवता समाप्ता ।

रुद्रदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[११] १।११४। ६ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)
—रुद्राय — —
त्मने तोकाय तनयाय मृळ ।
(३०) २।३३। १४ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)
—रुद्रस्य — — ।
मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृळ ।

[१४] १।११४।९ उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकरं ।
१०।१२७।८ (विहव्य आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)
उप ते गा इवाकरं ।— स्तोमं ।
[१५] १।११४।१० मृळा च नो अधि च ब्रूहि देव ।
(अदितिः० ४१९) १।३५।११ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
रक्षा च नो अधि ... ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[१८] २।३३।१२ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)
द्य१स्मद् द्वेषो वितरं व्यंहो ।
(इन्द्रः २०५१) ६।४४।१६ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
द्य१स्मद् द्वेषो युयवद् व्यंहः ।
[३०] २।३३।१४ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)
परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः ।

६।२८।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गावः)
परि वो हेती — ।
(इन्द्रः ३१९३) ७।८४।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्रावरुणौ)
परि नो हेळो वरुणस्य वृज्याः ।
[३०] २।३३।१४=(११) १।११४।६ तोकाय तनयाय मृळ ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[२२७] ४।३।१ (वामदेवो गौतमः । रुद्रः)
होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।

(अग्निः १०८७) ६।१६।४६ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अग्निः)
होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३१] ७।४६।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । रुद्रः)
अषाळ्हाय सहमानाय वेधसे ।
(इन्द्रः १११८) २।११।२ गृत्समदो भार्गवः शौनकः । इन्द्रः)
अषाळ्हाय सहमानाय वेधसे ।

[३५] ७।४६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । रुद्रः)
मा नो वधी रुद्र मा परा दा ।
(इन्द्रः ८५४) १।१०४।८ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा ।

*

दैवत-संहितान्तर्गत

रुद्रदेवता-मन्त्राणां सूची ।

अक्ष्यौ च ते मुखं च ते	२०५	उग्र एनं देव इष्वासः	१३०
अङ्गेभ्यस्त उदराय	१७५	उदितस्त्रयो अक्रमन्	२०३
अध्यवोचदधिवक्ता	५०	उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः	१५२
अनाप्ता ये वः प्रथमा	१५७	उन्मा ममन्द वृषभो	२२
अपैतेनारात्सीरसौ	१६२	उप ते स्तोमान् पशुपा	१४
अयस्मये द्रुपदे	२२७	उरुः कोशो वसुधानः	१८०
अर्हन् बिभर्षि सायकानि	२६	ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः	१५४
अवतत्य धनुष्ट्वꣳ	५८	एतत् ते रुद्रावसं	४१
अव बाधे द्विषन्तं	२२३	एवा बभ्रो वृषभ	३१
अव रुद्रमदीमह्यव	३८	एष ते रुद्र भागः	३७
अवैतेनारात्सीरसौ	१६१	कद् रुद्राय प्रचेतसे	१
अवोचाम नमो अस्मा	१६	कुमारश्चित् पितरं	२८
अश्याम ते सुमतिं	८	क्रन्दाय ते प्राणाय	१७२
असंख्याता सहस्राणि	९९	क्व स्य ते रुद्र मृळयाकुः	२३
असौ यस्ताम्रो अरुण	५१	गाथपतिं मेधपतिं	३
असौ योऽवसर्पति	५२	ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो	११३
अस्रा नीलशिखण्डेन	१७६	चक्षुषो हेते मनसो	१६४
अस्मिन् महत्यर्णवे	१००	चतुर्नमो अष्टकृत्वो	१७८
आ ते पितर्मरुतां	१७	तव चतस्रः प्रदिशः	१७९
आरे ते गोघ्नमुत	१५	तस्मा उदीच्या दिशो	१२९
आ वो राजानमध्वरस्य	२१०	तस्मा ऊर्ध्वाया दिशो	१३५
इदं पित्रे मरुताम्	११	तस्मै दक्षिणाया दिशो	१२३
इदावत्सराय परि०	११४	तस्मै ध्रुवाया दिशो	१३२
इन्द्रस्य गृहोऽसि	१६६	तस्मै प्रतीच्या दिशो	१२६
इन्द्रस्य वरूथमसि	१६९	तस्मै प्राच्या दिशो	१२०
इन्द्रस्य वर्मासि	१६८	तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्यः	१३८
इन्द्रस्य शर्मासि	१६७	तुभ्यमारण्याः पशवो	१९३
इमं जीवेभ्यः परिधिं	२१४	त्र्यम्बकं यजामहे	३६; ४०
इमा रुद्राय तवसे	६; ९३	त्र्यायुषं जमदग्नेः	४१
इमा रुद्राय स्थिर०	३१	त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभिः	१८
इमे जीवा वि मृतैः	२१३	त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं	९
ईशान एनमिष्वासः	१३९	दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिः	१५०

दिवो वराहमरुषं १०
द्रापे अन्धसस्पते ९२
धनुर्बिभर्षि हरितं १८१
ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः १५३
नम आशवे चाजिराय ७६
नम उष्णीषिणे ६७
नमः कपर्दिने च ७४
नमः कूप्याय च ८३
ननः कृत्स्नायतया ६५
नमः पर्णाय च ९१
नमः पार्याय च ८७
नमः शङ्गवे च ८५
नमः शम्भवाय च ८६
नमः शुष्क्याय च ९०
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यः ७३
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यः ६९
नमः सायं नमः प्रातः १८५
नमः सिकत्याय च ८८
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यः ७१
नमः सोभ्याय च ७८
नमः स्रुत्याय च ८२
नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यां २२५
नमस्त आयुधायाना० ५९
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यः ७२
नमस्ते अधिवाकाय २१६
नमस्ते घोषिणीभ्यो २००
नमस्ते यातुधानेभ्यो २१७
नमस्ते रुद्र मन्यव ४६
नमस्तेऽस्त्वायते नमो १८४
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यः ७०
नमो ज्येष्ठाय च ७७
नमो देववधेभ्यो २१५
नमो धृष्णवे च ८१
नमो बभ्लुशाय ६३
नमो बिल्मिने च ८०
नमो रोहिताय ६४
नमो वञ्चते परि० ६६
नमो वन्याय च ७९
नमो वात्याय च ८४
नमो विसृजद्भ्यो ६८
नमो व्रज्याय च ८९
नमोऽस्तु ते निर्ऋते २२६
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय ५३
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि १०९
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे ११०
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां १११
नमो हिरण्यबाहवे ६२
नमो ह्रस्वाय च ७५
न्वेतेनारात्सीरसौ १६०
नास्य पशून् न समानान् १२२, १२५, १२८, १३१, १३४, १३७, १४०
नीलग्रीवाः शितिकण्ठा १०१
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः १०२
परं मृत्यो अनु परेहि २११
परि णो हेती रुद्रस्य ३०
परि ते धन्वनो हेतिः ५७
परि नो रुद्रस्य हेतिः ९५
परेणैतु पथा वृकः २०४
पर्यू षु प्र धन्वा वाजसातये १५९
पशुपतिरेनमिष्वासः १२७
पुरस्तात् ते नमः कृण्मः १७३
प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः १५१
प्र बभ्रवे वृषभाय २४
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वम् ५४
प्राची दिगग्निरधिपतिः १४९
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं १५६
भव एनमिष्वासः १२१
भव राजन् यजमानाय १९७
भवारुद्रौ सयुजा १८३
भवाशर्वौ मृडतं १७०
भवो दिवो भव ईशे १९६
भेषजमसि भेषजं ३९
मनसा होमैर्हरसा २०२
महादेव एनमिष्वासः १३६
मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा २०
मा नस्तोके तनये ११; ६१
मा नो गोषु पुरुषेषु १९०
मा नोऽभि सा मत्यं १८८
मा नो महान्तमुत ११; ६०; १९८
मा नो रुद्र तक्मना १९५

मा नो वधी रुद्र मा	३५
मा नो हिंसीरधि	१८९
मीढुष्टम शिवतम	९६
मुखाय ते पशुपते	१७४
मुमुक्तमस्मान् दुरितात्	१६३
मूर्णा मृगस्य दन्ता	२०८
मृळा नो रुद्रोत नो	७
मृत्योः पदं योपयन्तो	२१२
य एतावन्तश्च भूयाꣳसः	१०८
यः प्राणदः प्राणदवान्	२२२
यः शुक्र इव सूर्यो	४
यत् संयमो न वि	२०९
यथा नो अदितिः	२
यथा नो मित्रो वरुणो	१४२
यमोदनं प्रथमजा	२१८
यमो मृत्युरघमारो	२०१
यस्मात् पक्वादमृतं	२२३
यस्मान्मासा निर्मिताः	२२१
यस्य तक्मा कासिका	१९१
या ते दिद्युदवसृष्टा	३४
या ते रुद्र शिवा तनूः	४७; ९४
या ते हेतिर्मीढुष्टम	५६
यामिषुं गिरिशन्त	४८
या वो भेषजा मरुतः	२९
ये तीर्थानि प्रचरन्ति	१०६
ये नः सपत्ना अप ते	१५५
येनातरन् भूतकृतो	२१९
येऽन्नेषु विविध्यन्ति	१०७
ये पथां पथिरक्षय	१०५
ये भूतानामधिपतयो	१०४
ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा	१०३
येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिशि	१४४
येऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि	१४७
येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि	१४५
येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि	१४३
येऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि	१४६
येऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिशि	१४८
यो अग्नौ रुद्रो यो	११९
यो अद्य स्तेन आयति	२०७
यो दाधार पृथिवीं	२२०
यो नः स्वो यो अरणः	११२
योऽन्तरिक्षे तिष्ठति	१९२
योऽभियातो निलयते	१८२
योऽस्मांश्चक्षुषा मनसा	१६५
रुद्र एनमिष्वासो	१३३
रुद्र जलाषभेषज	११८
रुद्र यत् ते क्रिवि	४४
रुद्रस्यैलबकारेभ्यो	१९९
रुद्राः संसृज्य पृथिवीं	४५
विक्किरिद्र विलोहित	९७
विज्यं धनुः कपर्दिनो	५५
व्याघ्रं दत्वतां वयं	२०६
शं नः करत्यर्वते	५
शर्व एनमिष्वासो	१२४
शिवेन वचसा त्वा	४९
शिवो नामासि स्वधितिः	४३
शिंशुमारा अजगराः	१९४
शुने क्रोष्ट्रे मा शरीराणि	१७१
श्यावाश्वं कृष्णमसितं	१८७
श्रेष्ठो जातस्य रुद्र	१९
स एव मृत्युः सोऽमृतं	११६
स नो भवः परि वृणक्तु	१७७
स रुद्रो वसुवनिः	११७
सहस्रधार एव ते	१५८
सहस्राक्षमतिपश्यं	१८६
सहस्राणि सहस्रशो	९८
स हि क्षयेण क्षम्यस्य	३३
सोमं ते रुद्रवन्तं	१४१
सोऽर्यमा स वरुणः	११५
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं	२७
स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप	२५
हवीमभिर्हवते	२१

दैवत--संहितान्तर्गत

रुद्रदेवताया गुणबोधक-पदसूची।

[१ ऋग्वेदसंहिता 'ऋ०'; अथर्ववेदसंहिता 'अ०'; संहितानामविरहिताः यजुर्वेदमन्त्राः। २ जातसंज्ञाः रुद्राः बहुवचनेन निर्दिष्टाः।]

अग्रे-वधः १६,४०. ८५
अग्न्यः १६,३०. ७५
अजिरः १६,३१. ७६
अधः क्षमाचराः १६,५७. १०२
अधिपतयः भूतानाम् १६,५९. १०४
अधिवक्ता १६,५. ५०
अध्वरस्य राजा [अग्निः] ऋ० ४,३,१. २१०
अनुष्ठाता अ० १५,५, १-२, ४-५, ७-८, १०-११, १३-१४, १६-१७, १९-२०. १२०-२१, १२३-२४, १२६-२७, १२९-३०, १३२-३३, १३५-३६, १३८-३९
अन्तरिक्षे (ये) येषां वातः इषवः १६,६५. ११०
अन्धसस्पतिः १६,४७. ९२
अन्नानां पतिः १६,१८. ६३
अपगल्भः १६,३२. ७७
अपभर्ता रपसः दैव्यस्य ऋ० २,३३,७. २३
अपरजः १६,३२. ७७
अभिघ्नन् १६,४६. ९१
अभ्वं सः अ० १३,६,२५. ११६
अमर्त्यः अ० ११,२,३. १७१
अमृतं सः अ० १३,६,२५. ११६
अरण्यानां पतिः १६,२०. ६५
अरथाः १६,२६. ७१
अरुणः १६,६,३९. ५१,८४
अरुषः ऋ० १,११४,५. १०
अर्भकाः १६,२६. ७१
अर्यमा (सः) अ० १३,४,४. ११५
अर्हन् ऋ० २,३३,१०. २६
अवठ्यः १६,३८. ८३
अवततधन्वा ३,६१. ४१
अवभेदी १६,३४. ७९
अवर्ध्यः १६,३८. ८३
अवसान्यः १६,३३. ७८
अवस्वन्यः १६,३१. ७६
अवार्यः १६,४२. ८७
अश्वाः १६,२४. ६९
अश्वपतयः १६,२४. ६९
अषाळहः ऋ० ७,४६,१. ३२
असंख्याताः १६,५४. ९९
असितः अ० ११,२,१८. १८७
असिमन्तः १६,२१. ६६
अस्यन्तः १६,२२. ६७
अस्यन् बहुधा अ० ११,२,१७. १८६
अहन्तिः १६,१८. ६३
आक्रन्दयत् १६,१९. ६४
आखिदत् १६,४६. ९१
आततायी १६,१८. ६३
आतन्वानाः १६,२२. ६७
आतप्यः १६,३८. ८३
आनिर्हताः १६,४६. ९१
आयत् अ० ११,२,१५. १८४
आयच्छन्तः १६,२२. ६७
आयुधी (धिन्) १६,३६. ८१
आयुर्वृधः १६,६०. १०५
आव्याधिन्यः १६,२४. ६९
आव्याधिनीनां पतिः १६,२०. ६५
आशुः १६,३१. ७६
आशुरथः १६,३४. ७९
आशुषेणः १६,३४. ७९
आसीनः अ० ११,२,१५. १८४
आसीनाः १६,२३. ६८
आहनन्यः १६,३५. ८०
इरिण्यः १६,४३. ८८
इषुकृतः (त्) १६,४६. ९१

इषुधिमान् १६,२१,३६. ६६,८१
इषुमान् १६,२९. ७४
इषुमन्तः १६,२२. ६७
इष्वासः अ० १५,५,१-२, ४-५, ७-८, १०-११, १३-१४, १६-१७, १९-२०. १२०-२१, १२३-२४, १२६-२७, १२९-३०, १३२-३३, १३५-३६, १३८-३९
ईयमानः अ० ११,२,१७. १८६
ईशानः ऋ० २,३३,९. २५। अ० १५,५,२,५,८, ११,१४,१७,१९-२०. १२१,१२४,१२७,१३०,१३३, १३६,१३८-३९
ईशानः हेतीनाम् १६,५३. ९८
ईशे दिवः पृथिव्याः अ० ११,२,२७. १९६
उगणाः १६,२४. ६९
उग्रः १६,४०. ८५। ऋ० २,३३,९,११. २५,२७। अ० १५,५,१०-११. १२९-१३०. ११,२,२१. १९०
उच्चैर्घोषः १६,१९. ६४
उत्तरणः १६,४२. ८७
उद्धुरमाणः १६,४६. ९१
उपवीती १६,१७. ६२
उपहत्नुः ऋ० २,३३,११. २७
उर्वर्यः १६,३३. ७८
उलप्यः १६,४५. ९०
उष्णीषी १६,२२. ६७
ऊर्म्यः १६,३१. ७६
ऊर्ध्यः १६,४५. ९०
ऋदूदरः ऋ० २,३३,५. २१
एतावन्तः १६,६३. १०८
ऐलबृदाः १६,६०. १०५
ओषधीनां पतिः १६,१९. ६४
ककुभः १६,२०. ६५
कक्षाणां पतिः १६,१९. ६४
कक्ष्यः १६,३४. ७९
कनिष्ठः १६,३२. ७७
कपर्दी १६,१०,२९,४३. ५५,७४,८८। ऋ० १,११४, १,५. ६,१०
कपर्दिनः १६,५९. १०४
कर्मकृत् अ० २,२७,६. ११८
कर्मारः १६,२७. ७२
कल्मलीकी ऋ० २,३३,८. २४
कवची १६,३५. ८०
कविः १६,४८. ९३। ऋ० १,११४,४. ९
काव्यः १६,३७,४४. ८२,८९
किंशिलः १६,४३. ८८
किरिकाः १६,४६. ९१
कुलालाः १६,२७. ७२
कुलुञ्चानां पतिः १६,२२. ६७
कुल्यः १६,३७. ८२
कूल्यः १६,४२. ८७
कृत्तिं वसानः १६,५१. ९६
कृत्तिवासाः ३,६१. ४१
कृत्न्नायतया धावन् १६,२०. ६५
कृष्णः ११,२,१८. १८७
क्षत्तारः १६,२६. ७१
क्षमाचराः अधः १६,५७. १०२
क्षयणः १६,४३. ८८
क्षयद्वीरः ऋ० १,११४,१-३,१०. ६-८,१५
क्षिप्रेषुः ऋ० ७,४६,१. ३२
क्षेत्राणां पतिः १६,१८. ६३
क्षेम्यः १६,३३. ७८
खल्यः १६,३३. ७८
गणाः १६,२५. ७०
गणपतयः १६,२५. ७०
गर्तसदः (द्) ऋ. २,३३,११. २७
गह्वरेष्ठः १६,४४. ४९
गाथपतिः ऋ० १,४३,४. ३
गिरिचरः १६,२२. ६७
गिरिशः १६,४. ४९
गिरिशयः १६,२९. ७४
गिरिशन्तः १६,१-३. ४७-४८
गृत्सः १६,२५. ७०
गृत्सपतयः १६,२५. ७०
गेह्यः १६,४४. ८९
गोष्ठ्यः १६,४४. ८९
चेकितानः ऋ० २,३३,१५. ३१
जगतां पतिः १६,१८. ६३
जघन्यः १६,३२. ७७
जलाषभेषजः ऋ० १,४३,४. ३। अ० २,२७,६. ११८
जाग्रतः १६,२३. ६८

जातस्य श्रेष्ठः ऋ० २,३३,३. १९
जिघांसन्तः १६,२१. ६६
ज्येष्ठः १६,३२. ७७
तक्षाणः १६,२७. ७२
तल्प्यः १६,४४. ८९
तवस् १६,४८. ९३। ऋ० १,११४,१. ६
तव्यस् ऋ० १,४३,१. १
तस्कराणां पतिः १६,२१. ६६
ताम्रः १६,६,३९. ५१,८४
तारः १६,४०. ८५
तिग्महेती [सोमारुद्रौ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६१
तिग्मायुधः ऋ० ७,४६,१. ३१
तिग्मायुधौ [सोमारुद्रौ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६१
तिष्ठन् अ० ११,२,१५. १८४
तिष्ठन्तः १६,२३. ६८
तवस्तमः तवसाम् ऋ० २,३३,३. १९
तीक्ष्णेषुः १६,३६. ८१
तीर्थ्यः १६,४२. ८७
तृंहन्त्यः १६,२४. ६९
त्र्यम्बकः ३,५८,६०. ३८,४०। ऋ० ७,५९,१२. ३६
त्विषीमान् १६,१७. ६२
त्वेषः ऋ० १,११४,४-५. ९, १०। २,३३,१४. ३०
दरिद्रः १६,४७. ९२
दाता भूरेः ऋ० २,३३,१२. २८
दिवं उपश्रिताः १६,५६. १०१
दिवि ये येषां वर्ष इषवः १६,६०. १०९
दिशां पतिः १६,१७. ६२
दुन्दुभ्यः १६,३५. ८०
दूरेवधः १६,४०. ८५
देवः ३,५८. ३८। ऋ० १,११४,१०. १५। २,३३,१५,३१। ७,४६,१. ३१। अ० १५,५, १०-११. १२९-१३०
देवानां श्रेष्ठः ऋ० १,४३,५. ४
देवानां हृदयानि १६,४६. ९१
द्रापिः १६,४७. ९२
द्विबर्हाः ऋ० १,११४,१०. १५
द्वीप्यः १६,३१. ७६
धनुष्कृतः १६,४६. ९१
धन्वायिनः* १६,२२. ६७
धावत् कृत्स्नायतया १६,२०. ६५
धावन्तः १६,२३. ६८
धृष्णुः १६,३६. ८१
नक्षन्नरन्तः १६,२१. ६६
नादेयः १६,३१,३७. ७६,८२
निचेरुः १६,२०. ६५
निर्णयन् अभिपूर्वम् अ० ११,२,२२. १९१
निवेष्यः १६,४४. ८९
निव्याधी १६,२०. ६५
निषङ्गिणः १६,६१. १०६
निषङ्गी १६,२०-२१,३६. ६५-६६,८१
निषादाः १६,२७. ७२
नीप्यः १६,३७. ८२
नीलग्रीवः १६,७-८,२८. ५२-५३,७३
नीलग्रीवाः १६,५६-५८. १०१-१०३
नीललोहितः १६,४७. ९२
नीलशिखण्डः अ० २,२७,६. ११८। ६,९३,१. २०१। ११,२,७. १७६
पतिः अन्धसः १६,४७. ९२
,, अन्नानाम् १६,१८. ६३
,, अरण्यानाम् १६,२०. ६५
,, आव्याधिनीनाम् १६,२०. ६५
,, ओषधीनाम् १६,१९. ६४
,, कक्षाणाम् १६,१९. ६४
,, कुलुञ्चानाम् १६,२२. ६७
,, क्षेत्राणाम् १६,१८. ६३
,, जगताम् १६,१८. ६३
,, तस्कराणाम् १६,२१. ६६
,, दिशाम् १६,१७. ६२
,, पत्तीनाम् १६,१९. ६४
,, पथीनाम् १६,१७. ६२
,, पशूनाम् १६,१७. ६२
,, पुष्टानाम् १६,१७. ६२
,, मुष्णताम् १६,२१. ६६
,, वनानाम् १६,१८. ६३
,, विकृन्तानाम् १६,२१. ६६

* रुद्रस्य धनुः- शतवधं, शिखण्डि, सहस्रघ्नि, हरितं, हिरण्ययं च। (अथर्व० ११,२,१२. १८१)

पतिः वृक्षाणाम् १६,१९. ६४
,, सत्वनाम् १६,२०. ६५
,, स्तायूनाम् १६,२१. ६६
,, स्तेनानाम् १६,२०. ६५
पतिवेदनः ३,६०. ४०
पत्तीनां पतिः १६,१९. ६४
पथां पथि रक्षयः १६,६०. १०५
पथीनां पतिः १६,१७. ६२
पथ्यः १६,३७. ८२
परिचरः १६,२०. ६५
परिवक्तृत् १६,२१. ६६
परावत् अ० ११,२,१५. १८४
पर्णः १६,४६. ९१
पर्णशदः १६,४६. ९१
पशूनां पतिः १६,१७. ६२
पशुपतिः १६,२८,४०. ७३, ८५ । अ० १५,५,७-८. १२६-१२७ । अ० ११,२,२,५,९, ११. १७१, १७४,१७८,१८०
पशुपती [भवाशर्वौ] अ० ११,२,१. १७०
पांसव्यः १६,४५. ९०
पादयन् केशिनः रथम् अ० ११,२,१८. १८७
पार्यः १६,४१. ८७
पिता मरुताम् ऋ० १,११४,६,९. ११, १४; २,३३, १. १७
पिनाकावसः ३,६१. ४१
पिनाकं बिभ्रत् १६,५१ .९६
पुजिष्ठाः १६,२७. ७२
पुरुरूपः ऋ० २,३३,९. २५
पुलस्तिः १६,४३. ८८
पुष्टानां पतिः १६,१७. ६२
पुष्टिवर्धनः ३,६०. ४० । ऋ० ७,५९,१२. ३६
पूर्वजः १६,३२. ७७
पृथिव्यां ये, येषां अन्नं इषवः १६,६६. १११
प्रखिदत् १६,४६. ९१
प्रचरन्तः तीर्थानि १६,६१. १०६
प्रचेताः ऋ० १,४३,१. १
प्रतरणः १६,४१. ८७
प्रतिदधानाः १६,२२. ६७
प्रतिश्रवः १६,३४. ७९
प्रतिहर्यः १६,३३. ७८
प्रतीचीनः अ० ११,२,५. १७४
प्रथमः १६,३०. ७५
प्रथमः भिषक् दैव्यः १६,५. ५०
प्रपथ्यः १६,४३. ८८
प्रमृणन् अयज्वनः देवपीयून् अ० ११,२,२३. १९२
प्रमृशः १६,३६. ८१
प्रवाह्यः १६,४३. ८८
फेन्यः १६,४२. ८७
बभ्रुः १६,६. ५१ । ऋ० २,३३,५,८-९,१५. २१, २४,२५,३१
बभ्लुशः १६,१८. ६३
बिभ्रत् पिनाकम् १६,५१. ९६
बिभ्रत् भेषजा वार्याणि ऋ० १,११४,६. ११
बिल्मी १६,३५. ८०
बुध्न्यः १६,३२. ७७
बृहत् १६,३०. ७५
भगवान् १६,९,५२-५३. ५४,९७-९८
भवः १६,२८. ७३। अ० १५,५,१-२,५,८,११, १४,१७,२०. १२०-२१,१२४,१२७, १३०,१३३, १३६, १३९ । अ० ११,२,३,५,८-९,१६,२५,२७. १७२,१७४,१७७-१७८,१८५,१९४, १९६
भवाशर्वौ [देवते] अ० ११,२,१. १७०
भवस्य हेतिः १६,१८. ६३
भामितः ऋ० १,११४,८. १३
भिषक् दैव्यः प्रथमः १६,५. ५०
भिषक्तमः भिषजाम् ऋ० २,३३,४. २०
भीमः १६,४०. ८५ । ऋ० २,३३,११. २७
भुवनस्य भूरिः ऋ० २,३३,९. २५
भुवन्तिः १६,१९. ६४
भूतानां अधिपतयः १६,५९. १०४
भूतपती [भवाशर्वौ] अ० ११,२,१. १७०
भूयांसः १६,६३. १०८
भूरिः भुवनस्य ऋ० २,३३,९. २५
भूरेः दाता ऋ० २,३३,१२. २८
भेषजम् ३,५९. ३९
भेषजा वार्याणि बिभ्रत् ऋ० १,११४,६. ११
मध्यमः १६,३२. ७७
मन्त्री १६,१९. ६४
मयस्करः १६,४१. ८६

*

मयोभुवः १६,४१. ८६
मरुत्वान् ऋ० १,११४,११. १६। ऋ० २,३३,६. २२
मरुतां पिता ऋ० १,११४,६. ११। ऋ० २,३३,१. १७
महान्तः १६,२६. ७१
महादेवः सः अ० १३,४,४. ११५। अ० १५,५, १६-१७. १३५-१३६
महेन्द्रः सः अ० १३,४,४. ११५
मीढ्वान् १६,८,५०. ५३,९५। ऋ० १,११४,३. ८। २,३३,१४. ३०
मीढुष्टमः १६,११,२९,५१. ५६,७४, ९६। ऋ० १, ४३,१. १
मुष्णतां पतिः १६,२१. ६६
मृगयवः (युः) १६,२७. ७२
मृणन् अ० ११,२,१८. १८७
मृत्युः सः अ० १३,६,२५. ११६
मेध्यः १६,३८. ८३
मेधपतिः ऋ० १,४३,४. ३
यज्ञसाधः ऋ० १,११४,४. ९
याम्यः १६,३३. ७८
युवा ऋ० २,३३,११. २७
रक्षः सः अ० १३,६,२५. ११६
रजस्यः १६,४५. ९०
रथकाराः १६,२७. ७२
रथिनः १६,२६. ७१
राजा अ० ११,२,२८. १९७
राजा, अध्वरस्थ- [अग्निः] ऋ० ४,३,१. २१०
रुद्रः (प्रायः सर्वत्र)।
रुद्रः [अग्निः] ऋ० ४,३,१. २१०
रुद्रः अग्नौ अन्तः अ० ७,८७,१. ११९
,, अप्सु अन्तः अ० ७,८७,१. ११९। अ० ११,२,२४. १९३
,, ओषधीः विवेश अ०७,८७,१. ११९। अ०११,२,२४. १९३
,, वीरुधः विवेश अ० ७,८७,१. ११९। अ० ११,२,२४. १९३
रूपम् ऋ० १,११४,५. १०
रेष्म्यः १६.३९. ८४
रोहितः ऋ० १६,१९. ६४
लोप्यः १६,४५. ९०
वङ्कुः ऋ० १,११४,४. ९
वज्रबाहुः ऋ० २,३३,३. १९
वञ्चत् १६,२१. ६६
वनानां पतिः १६,१८. ६३
वन्यः १६,३४. ७९
वराहः ऋ० १,११४,५. १०
वरुणः सः अ० १३,४,४. ११५
वरूथी १६,३५. ८०
वर्मी १६,३५. ८०
वर्षीयान् १६,३०. ७५
वर्ष्यः १६,३८. ८३
वसानः कृत्तिम् १६,५१. ९६
वसुः ऋ० १,४३,५. ४
वाणिजः १६,१९. ६४
वसुदेये वसुवनिः अ० १३,६,२६. ११७
वषट्कारः नमोवाके अनु अ० १३,६,२६. ११७
वात्यः १६,३९. ८४
वामनः १६,३०. ७५
वारिवस्कृतः १६,१९. ६४
वास्तव्यः १६,३९. ८४
वास्तुपः १६,३९. ८४
विकिरिद्रः १६,५२. ९७
विकृन्तानां पतिः १६,२१. ६६
विक्षिणत्काः १६,४६. ९१
विचिन्वत्काः १६,४६. ९१
विद्युत्यः १६,३८. ८३
विध्यन्तः १६,२३. ६८
विपश्चित् अ० ११,२,१७. १८६
विरूपाः १६,२५. ७०
विलोहितः १६,७,५२,५८. ५२,९७,१०३
विविध्यन्त्यः १६,२४. ६९
विशिखासः १६,५९. १०४
विश्वरूपाः १६,२५. ७०
विसृजन्तः १६,२३. ६८
वीर्य्यः १६,३८. ८३
वृक्षाः (हरिकेशाः) १६,४०. ८५
वृक्षाः १६,१७. ६२
वृक्षाणां पतिः १६,१९. ६४
वृक्षेषु स्थिताः १६,५८. १०३

वृद्धः १६,३०. ७५
वृषभः ऋ० २,३३,४,६-८,१५. २०,२२-२४,३१
वेधाः ऋ० ७,४६,१. ३२
वैशन्तः १६,३७. ८२
व्रज्यः १६,४४, ८९
व्राताः १६,२५. ७०
व्रातपतयः १६,२५. ७०
व्याधी (धिन्) १६,१८. ६३
व्युप्तकेशः १६,२९. ७४
शङ्करः १६,४१. ८६
शङ्गः १६,४०. ८५
शतधन्वा १६,२९. ७४
शतेषुधिः १६,१३. ५८
शम्भवः १६,४१. ८६
शयानाः १६,२३. ६८
शर्वः १६,२८. ७३। अ० १५,५,२,५,८,११,१४,१७, २०. १२१,१२४,१२७,१३०,१३३,१३६,१३९
शाष्पिञ्जरः १६,१७. ६२
शाष्पिञ्जराः वृक्षेषु १६,५८. १०३
शष्प्यः १६,४२. ८७
शितिकण्ठः १६,२८. ७३
शितिकण्ठाः १६,५६,५८. १०१-१०३
शिपिविष्टः १६,२९. ७४
शिवः ३,६१. ४१। १६,४१. ८६
शिवतरः १६,४१. ८६
शिवतमः १६,५१. ९६
शिवः नाम ३,६३. ४३
शीर्ष्यः १६,३१. ७६
शीर्ष्यः १६,३१. ७६
शुष्क्यः १६,४५. ९०
शूरः १६,३४. ७९
श्यावाश्वः अ० ११,२,१८. १८७
श्रवः १६,३४. ७९
श्रिया श्रेष्ठः ऋ० २,३३,३. १९
श्रुतः १६,३५. ८०। ऋ० २,३३,११. २७
श्रुतसेनः १६,३५. ८०
श्रेष्ठः जातस्य ऋ० २,३३,३. १९
श्रेष्ठः देवानाम् ऋ० १,४३,५. ६
,, श्रिया ऋ० २,३३,३. १९
श्लोक्यः १६,३३. ७८
श्वनयः (निः) १६,२७. ७२
श्वपतयः※ १६,२८. ७३
श्वानः १६,२८. ७३
श्वित्यञ्च् (ङ्) ऋ०२,३३,८. २४
संविदानौ [भवारुद्रौ] अ० ११,२,१४. १८३
संगृहीतारः १६,२६. ७१
सत्पतिः ऋ० २,३३,१२. २८
सत्यजः [अग्निः] ऋ० ४,३,१. २१०
सत्वनां पतिः १६,२०. ६५
सभाः १६,२४. ६९
सभापतयः १६,२४. ६९
सयुजौ [भवारुद्रौ] अ० ११,२,१४. १८४
सरस्यः १६,३७. ८२
सवृध् १६,३०. ७५
सहमानः १६,२०. ६५। ऋ० ७,४६,१. ३२
सहस्राणि १६,५४. ९९
सहस्राक्षः १६,८,१३,२९. ५३,५८,७४। अ० ११,२,३,७. १७२,१७६
सिकत्यः १६,४३. ८८
सुगन्धिः ३,६०.४०। ऋ० ७,५९,१२. ३६
सुधन्वा १६,३६. ८१
सुमङ्गलः १६,६. ५१
सुशिप्रः ऋ० २,३३,५. २१
सुशेवौ [सोमारुद्रौ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६२
सुहवः ऋ० २,३३,५. २१
सूतः १६,१८. ६३
सूर्य्यः १६,४५. ९०
सृकायी (यिन्) १६,२१. ६६
सृकाहस्ताः १६,६१. १०६
सेनाः १६,२६. ७१
सेनानीः× १६,१७. ६२
सेनान्यः १६,२६. ७१
सोभ्यः १६,३३. ७८

※ अस्य श्वानः– असंसूक्तगिलाः, ऐलबकाराः, महास्याः। (अ० ११,२,३०. १९९)

× अस्य सेनाः– कोशिन्यः, घोषिण्यः, नमस्कृताः, संभुञ्जनयः। (अ० १०,२,३१. २००)

सोमः १६,३९. ८४। अ० १९,१८,३. १४१
स्तुतः ऋ० २,३३,१२. २८
स्तुत्यः १६,३७. ८२
स्तायूनां पतिः १६,२१. ६६
स्तेनानां पतिः १६,२०. ६५
स्थपतिः १६,१९. ६४
स्थिरधन्वा ऋ० ७,४६,१. ३२
स्वधावन् (वा) ऋ० ७,४६,१. ३२
स्वपन्तः १६,२३. ६८
स्वपिवातः ऋ० ७,४६,३. ३४
स्वायुधः १६,३६. ८१
हनीयान् १६,४०. ८५
हन्ता १६,४०. ८५
हरिकेशः १६,१७. ६२
हरिकेशाः (वृक्षाः) १६,४०. ८५
हरित्यः १६,४५. ९०
हवनश्रुत् ऋ० २,३३,१५. ३१
हिरण्यबाहुः १६,१७. ६२
हिरण्यरूपः [अग्निः] ऋ० ४,३,१. २१०
हीळितः ऋ० ७,४६,४. ३५
हस्तः यस्य जलाषः, भेषजः, मृळयाकुः ऋ० २,३३,७. २३
हस्ते बिभ्रत् भेषजा वार्याणि ऋ० १,११४,५. १०
हृदयानि देवानाम् १६,४६. ९१
हृदय्यः १६,४४. ८९
हेतिः भवस्य १६,१८. ६३
हेतिः यस्य तक्मा कासिका अ० ११,२,२२. १९१
हेतीनाम् ईशानः १६,५३. ९८
होता [अग्निः] ऋ० ४,३,१. २१०
ह्रस्वः १६,३०. ७५

मृत्युदेवता-गुणबोधक-पदानि

अधिवाकः अ० ६,१३,२. २१६
चक्षुष्मान् ऋ० १०,१८,१. २११
तिग्मतेजाः अ० ६,६३,२. २२६
दुर्मतिः अ० ६,१३,१. २१६
देववधाः अ० ६,१३,१. २१५
निर्ऋतिः अ० ६,६३,१. २२६
परावाक् अ० ६,१३,१. २१६
ब्राह्मणाः अ० ६,१३,३. २१७
भेषजानि अ० ६,१३,३. २१७
मृत्युः ऋ० १०,१८,१-१,४. २११-२१२, २१४। अ० ६,१३,१-३. २१५-२१७; ४, ३५, १--७. २१८-२२५; ६, ६३, १--३. २२६-२२७
यमः अ० ६,६३,२-३. २२६,२२७
यातुधानाः अ० ६,१३,३. २१७
राजवधाः अ० ६,१३,१. २१५
विश्यानां वधाः अ० ६,१३,१. २१५
शृण्वन् ऋ० १०,१८,१. २११
सुमतिः अ० ६,१३,१. २१६

मृत्युनिवारक-ब्रह्मौदन-गुणबोधक-पदानि ।

ओदनः ब्रह्मणे अ० ४,३५,१-७. २१८-२२४
अधिपतिः गायत्र्याः ,, ६. २२३
पक्वः ,, ६. २२३
प्राणदः ,, ५. २२२
प्राणदवान् ४,३५, ५. २२२
ब्रह्मौदनः ,, ७. २२४
विधृतिः लोकानाम् ,, १. २१८
विश्वजित् ,, ७. २२४

दिग्भेदेन रुद्ररूपाणि ।

अथर्व० ३. २६. १-६ (१४३-१४८)			अथर्व० ३.२७.१-६ (१४९-१५४)			अथर्व०१५.५.१-११(१२०-१४०)
दिङ्नाम ।	देवाः ।	इषवः ।	अधिपतिः ।	रक्षिता ।	इषवः ।	अन्तर्देशात् अनुष्ठाता इष्वासः ।
प्राची	हेतयः	अग्निः	अग्निः	असितः	आदित्याः	भवः
दक्षिणा	अविष्यवः	कामः	इन्द्रः	तिरश्चिराजिः	पितरः	शर्वः
प्रतीची	वैराजाः	आपः	वरुणः	पृदाकुः	अन्नम्	पशुपतिः
उदीची	प्रविध्यन्तः	वातः	सोमः	स्वजः	अशनिः	उग्रः
ध्रुवा	निलिम्पाः	ओषधीः	विष्णुः	कल्माषग्रीवः	वीरुधः	रुद्रः
ऊर्ध्वा	अवस्वन्तः	बृहस्पतिः	बृहस्पतिः	श्वित्रः	वर्षम्	महादेवः
सर्वे अन्तर्देशाः।	.....	.....	.....	.....	.....	ईशानः

दैवत-संहितान्तर्गत-

रुद्रदेवताया उपमा-सूची ।

आप इव अग्निः	अ० ११,२,८. १७७	परि वृणक्तु नो भवः ।
वृषणः अश्वस्य क्रन्दः इव	अ० ११,२,२२. १९१	यस्य तक्मा कासिका हेतिः ।
घृणी इव च्छायाम्	ऋ० २,३३,६. २२	अरपाः रुद्रस्य सुम्नं अशीय ।
पशुपाः इव	ऋ० १,११४,९. १४	ते स्तोमान् उपाकरम् ।
मृगं न	ऋ० २,३३,११. २७	भीमम् ।
सूर्यः इव	ऋ० १,४३,५. ४	यः शुक्रः ।
हिरण्यं इव	ऋ० १,४३,५. ४	यः रोचते ।



दैवत-संहिता

(८)

उषा-देवता

संपादक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय-मण्डळ, औंध (जि. सातारा)



संवत् २०००, शक १८६५; सन् १९४४

संपादक

भट्टाचार्य पं० **श्रीपाद दामोदर सातवळेकर**
महामहाध्यापक, गीतालंकार, अध्यक्ष स्वाध्याय मण्डल औंध, (जि० सातारा)

सहसंपादक

पं० **दयानंद गणेश धारेश्वर**, बी. ए.
'वैदिक धर्म' सहसंपादक, औंध

सूचीलेखक

श्री० पं० **अनंत दिनकर रास्ते**, वाई, (जि० सातारा)

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवळेकर, B. A.,
भारत-मुद्रणालय, औंध (जि० सातारा)

उषाका परिचय

(१)

उषादेवता के सूक्तोंमें साधारणतया प्रातःकालिक दृश्यका अत्यन्त मनोरम एवं काव्यमय वर्णन किया हुआ है ऐसा प्रथमतः मनमें विचार उठ खडा होता है, और यह धारणा है भी ठीक, क्योंकि उषादेवता के लगभग २०० मंत्रोंमें करीब ८० मंत्र भाग स्पष्ट तथा प्रातःकालीन स्फूर्तिप्रद तथा प्रकाशमय दृश्य का बखान करते हुए पाये जाते हैं। इस उषावेलाके सजीव एवं आन्दोलनमय वर्णन के अतिरिक्त पचास से अधिक बार इन मंत्रोंमें आर्थिक और सांपत्तिक समृद्धि एवं वैभव के देने और पानेका उल्लेख पाया जाता है। इसलिये ऐसा निस्सन्देह कहा जा सकता है कि, इन मंत्रोंमें भौतिक संपन्नता और उषःकालीन प्राकृतिक सुरम्यता का ही अत्यधिक चित्रण एवं निर्देश किया है।

अँधेरे का हट जाना और उजेलेका आविर्भाव मंत्रोंमें इस भाँति चित्रित किया है।

१. ज्योतिः कृणोति सूनरी। (ऋ. १।४८।८)

२. ज्योतिः विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती ... उषा तमः वि आवः। (ऋ. १।९२।४)

३. अप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति। (ऋ.१।११३।१६)

४. ...वि आवः ज्योतिषा तमः। उषः अनु स्वधां अव। (ऋ. ४।५२।६)

५. अप ... बाधमाना तमांसि उषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्। (ऋ. ५।८०।५)

६. पुनः ज्योतिः युवतिः पूर्वथा अकः। (ऋ. ५।८०।६

७ ... चित्रं भान्ति उषसः ... वि ता बाधन्ते तम ऊर्म्यायाः। (ऋ. ६।६५।२)

८. ...अकः ज्योतिः बाधमाना तमांसि। (ऋ ७।७७।१

९. उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिता अप देवी। (ऋ. ७।७८।२)

१०. एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गूळ्वी तमो ज्योतिषोषा अबोधि। (ऋ. ७।८०।२)

११. अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी। (ऋ. ७।८१।१)

१२. अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी। (साम. ३०३ पूर्व. आ.)

१३. मं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिः यच्छन्ति...। (ऋ. ७।७९।२)

१४. ...त्याः प्रायदग्रन् पुरस्तात् ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः। ...अपाचीनं तमो अगादजुष्टम्। (ऋ.७।७८।३)

१५. ...उषा ज्योतिः यच्छत्यग्रे अह्नाम्। (ऋ ५।८०।२)

१६. इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात्। (ऋ १।११३।१)

१७. इदं ...स्यत् पुरुतमं पुरस्ताज्ज्योतिरुषसो .. अस्थात्। (ऋ. ४।५१।१)

१८. अस्थुः ...चित्रा उषसः पुरस्तात् ...वि ...तमसो द्वारोच्छन्तीः। (ऋ. ४।५१।२)

१. "यह भली भाँति ले चलनेवाली उषा प्रकाशका सृजन करती है; २. समूचे संसार के लिए उजाला निर्माण करती हुई उषा अँधेरा हटाचुकी है; ३. अँधेरा बिलकुल दूर हटगया और अब उजाला चला आरहा है; ४. हे उषे! तू उजालेसे अँधेरा हटा चुकी है और अब स्वकीय धारक शक्तिके अनुकूल रक्षा कर; ५. द्युलोक की मानों कन्यासी यह उषा अंधःकार के पुत्र को दूर भगाती हुई उजालेके साथ आचुकी है; ६. इस युवती उषाने फिर पहले जैसेही उजाला बनाया है; ७. उषाएँ अनूठे ढंगसे जगमगाती हैं और वे रात्रीके अँधेरेको विशेषरूपसे हटाती हैं; ८. अंधःकार हटाती हुई उषा उजाला करचुकी है; ९. द्योतमान उषा सारे अँधेरे एवं बुराइयोंको उजालेसे दूर भगाती हुई चली आती है; १०. यही वह उषा जागृत हुई है जो उजालेसे अँधेरा छिपाकर नवीन जीवनका धारण करलेती है; ११. सुन्दर ढंगसे ले चलनेवाली उषा देखना संभव हो इसलिये बडा भारी अँधेरा दूर करती है; १२. हे उषे! तेरी किरणें अँधेरेको ठीक तरह हटाती हैं और उजेला दे डालती हैं; १३. वे जगमगानेवाली उषाएँ प्रकाश देती हुई सामने दीख पडीं और अ-सेवनीय अँधेरा नीचा मुंह कर चला गया. १४. दिन के आरम्भ में ही

उषा उजाला देती है, १५. यह सभी प्रकाशोंमें उच्च कोटिका प्रकाश आपहुँचा है १६. अँधेरेमेंसे यह विशालतम प्रकाश सामने उठखडा हुआ है; १७. सामने ये जगमगाती हुई उषाएँ विशेषरूपसे अँधःकारको हटाती हुई खडी हो चुकी हैं।"

इसभाँति अँधियारीके दूर हो जानेपर और सभी जगह प्रकाश का पूर्ण संचार हो चुकनेपर प्राणिमात्रमें जागृति तथा हलचल शुरु होती है जिसका वर्णन निम्न मंत्रोंमें किया दीख पडता है—

१ सूनरी उषा आयति, पद्वत् ईयते, पक्षिणः उत्पातयति।
(ऋ. १।४८।५)

२. उषे वयश्चित् वसतेरपसन् नरश्च...व्युष्टौ।
(ऋ. १।१२४।१२;६।६४।६)

३. वयो नकिष्टे पप्तिवांस आसते व्युष्टौ (ऋ.१।४८।६)

४. वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपच्चतुष्पदर्जुनि।
उषः प्रारन्नृतूँरनु दिवः अन्तेभ्यस्परि (ऋ.१।४९।३)

" १. सुन्दर रूपवाली या अच्छे ढंगसे ले चलनेवाली उषा चली जाती है तब जो कोई पैरोंसे युक्त होता है, वह चलने-लगता है और पंछी उडने लगते हैं; २. हे उषे ! तेरे उठ-आनेपर मानव तथा पंछी भी अपने निवासस्थानसे उठ बाहर निकल आये; ३. हे उषे ! तेरे उदय होनेपर उडनेवाले पंछी कभी नहीं बैठ जाते हैं याने तुरन्त उडना शुरु करते हैं; ४. हे (अर्जुनि उषः) श्वेतवर्णवाली उषे ! (ते ऋतून् अनु) तेरी हलचल होनेके उपरान्तही (द्विपत् चतुष्पत्) मानव, चौपाये (पतत्रिणः वयः चित्) और डैनोंवाले पंछी भी (दिवः अंतेभ्यः परि) आकाशके एक छोरसे ले दूसरे छोरतक चारों ओरसे (प्रआरन्) जाने आने लगे।" तथा और भी देखिए-

१. अचेति दिवो दुहिता...विश्वं पश्यन्त्युषसं विभातीम्।
(ऋ. ७।७८।४)

२. उषो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै।
(७।७७।१)

३. आविष्कृण्वती भुवनानि विश्वा। (ऋ. ७।८०।१)

४. अविरकर्भुवनं विश्वमुषाः। (ऋ. ७।७६।१)

५. विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्य...उर्विया वि भाति।
विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती...॥ (ऋ. १।९२।९)

६. विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगत्...। (१।४८।८)

७. विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरी।
(ऋ. १।४८।१०)

८. दभ्रं पश्यद्भ्यः उर्विया वि चक्षे उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा। (ऋ. १।११३।५)

९. ससतो बोधयन्ती शश्वतमागात्...। (ऋ. १।१२४।४)

१०. यूयं हि देवीः...परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः।
प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाच्चतुष्पाच्चरथाय जीवम्॥
(ऋ. ४।५१।५)

१. द्युलोककी कन्या इस उषाका पता लगा, अब सभी विशेष-रूपसे जगमगाती हुई उषाको देख लेते हैं; २. यह उषा समूचे प्राणीमात्रको संचारके लिए प्रेरित करती हुई युवती महिलाके तुल्य समीप आकर जगमगाती है; ३. सारे विश्वको प्रकट करती है; ४. समूचे संसारको स्पष्ट कर चुकी है; ५. समूचे जीव-लोकको संचारार्थ जगाती हुई द्योतमान उषा अखिल जगत् को देखकर अत्यन्त अधिक रूपसे सुहाती है; ६. सारा संसार इसे देखनेके लिए नम्र हुआ है; ७. हे सुन्दरी उषे ! जो तू ऊपर उठ आती है तो सचमुच सबकी प्राणशक्ति तथा जीवनशक्ति तुझपर निर्भर है; ८. जो तनिकसा देख रहे हों वे विस्तृत रूपमें देख सकें इसलिए उषाने सारे संसारको जगाया है; ९. सोने-वालोंको जगाती हुई उषा हमेशा आती है; १०. तुम द्योतमान उषाओ ! तुरन्तही तुम अखिल विश्वमें संचार करती हो और मानव एवं चौपाये जीवोंको जो कि सोये पडे हैं, संचार करनेके लिए जगाती हो।

उपर्युक्त अवतरणोंसे स्पष्ट हुआ कि उषाके आगमनमात्रसे सारे संसारमें जागृति एवं संचरणशीलताका सूत्रपात होता है। निद्राधीन प्राणीमात्रको जागृत करना उषाकाही कार्य है। तेजस्विता, सूर्यकिरणों एवं विविध वर्णोंका चेतोहारी दर्शन उषःकालमें हमें होता है। इस संबंधमें निम्न मंत्र देखने योग्य हैं-

१. उष आभाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः।
(ऋ. १।४८।९)

२. उषो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः।
(ऋ. १।४८।१५)

३. अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि भाहि। (ऋ. ७।७७।४)

४. एते त्ये भानवो दर्शतायाग्निभ्रा उषसो अमृतास आगुः।
(ऋ. ७।५५।३)

"१. हे द्युलोककन्ये उषे ! तू आल्हाददायक किरणसे जगमगाती रह; २. हे उषे । आज तू किरणकी सहायतासे मानों द्युलोकके दरवाजोंको खोल चुकी है; ३. हमारे लिए उच्च कोटिके किरणोंसे युक्त हो जगमगाने लगो; ४. देखनेयोग्य उषाके येही वे अनूठे एवं अमृतत्वके गुणोंसे पूर्ण किरण आ पहुँचे हैं।"

१. द्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमा भासि रोचनम्।
(ऋ. १।४९।४)

२. सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दृशाना। (ऋ. १।९२।१२)

३. आ द्यां तनोषि रश्मिभिरान्तरिक्षं उरु प्रियं।
उषः शुक्रेण शोचिषा (ऋ. ४।५२।७)

१. हे. उषे! तू ऊपर उठती हुई अपने किरणोंसे सारे जगत् को कान्तिमान् बनादेती है; २. सूर्यकिरणोंसे दर्शनीय उषाका पता लगा; ३. हे उषे! तू दीप्त तेजसे तथा किरणोंसे विशाल अन्तरिक्ष एवं द्युलोकको व्याप्त करलेती है।

उषाके आगमनके फलस्वरूप जनताको पथज्ञान भली भाँति हो जाता है, जिसके बारेमें निम्न निर्देश पाये जाते हैं-

१. एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वती याति अग्रे। (ऋ. ५।८०।२)

२. कृणोति विश्वा सुपथा सुगानि...। (ऋ. ६।६४।२)

३. वि उषा आवः पथ्या जनानाम्...। (ऋ. ७।७९।१)

४. एषा...पथो रदन्ती सुविताय देवी...वि भाति।
(ऋ. ५।८०।३)

५. ...दिवो दुहितरो विभातीर्गातुं कृणवन्नुषसो जनाय।
(ऋ. ४।५१।१)

६. भास्वती...अचेति चित्रा वि दुरो न आवः।
(ऋ. १।११३।४)

१. यह दर्शनीय उषा जनताको जगाती हुई और मार्गोंको आसानीसे यात्रा करने योग्य बनाती हुई आगे बढती है; २. सारे अच्छे मार्गोंको सुगमतापूर्वक जाने योग्य बनाती है; ३. जनताकी सडकोंको उषाने विशेष ढंगसे व्यक्त किया है; ४. यह द्योतमान उषा भलाईके लिए मार्गोंको खोदती हुई विशेषरीतिसे कान्ति युक्त दिखाई देती है; ५. जगमगानेवाली द्युलोक कन्या उषाओंने जनताके लिए गमनके लिए सडक बनाई है; ६. जगमगाती हुई अनोखी उषा ज्ञात हुई और उसने हमारे लिए द्वार खोलदिये हैं।

शुभ्र वस्त्र पहनी हुई नारीके समान उषा दीख पडती है ऐसा उल्लेख वेदमंत्रोंमें पाया जाता है—

१. एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः
(ऋ. १।११३।७)

२. एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना...।
(ऋ. १।१२४।३)

३. ...रुशद्वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत्। (ऋ. ७।७७।२)

४. ...इयं अश्वैत् युवतिः पुरस्तात्...। (ऋ. १।१२४।११)

५. रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागात्। (१।११३।२)

१. यह द्युलोककी कन्या श्वेतवस्त्र पहनी हुई युवतीकी तरह ऊपर उठती हुई सबको दीखपडी; २. ज्योतिसे मानों ढकी हुई इस आकाशकन्याका दर्शन हुआ; ३ श्वेत एवं चमकीला वस्त्र धारण करती हुई उषा विकसित तथा शुभ्र हुई; ४. यह युवती नारीके समान आभावाली उषा सामने श्वेतवर्णवाली हुई; ५. जगमगानेवाली एवं चमकीले सूर्यबिम्बको साथ ले शुभ्र उषा आपहुँची है।

प्रातःकालके समय पूर्वदिशाका दृश्य कितना मनोरम एवं हृदयंगम होता है सो नीचे दिये हुए मंत्रोंमें बताया है-

१. यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदृक्षत...सा ..उषा।
(ऋ. १।४८।११)

२. ...त्या उषसः केतुं अक्रत पूर्वे अर्धे...भानुं अञ्जते।
(ऋ. १।९२।१)

३. चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना (ऋ. १।११३।१५)

४. पूर्वे अर्धे रजसः... अकृत प्रकेतुम् (ऋ. १।१२४।५)

"१. जिसकी जगमगानेवाली कल्याणकारक ज्वालाएँ सामने दीख पडीं वह उषा है; २. वे उषाएँ पूर्व गोलार्धमें मानों झंडा खडा करचुकीं और रश्मिजालको सुशोभित करती हैं; ३. जागृत होती हुई उषा मानों अनोखा झंडा-ज्ञापक चिन्ह कर लेती है; ४. विश्वके पूर्व विभागमें झंडा ऊँचा किया गया है।"

पूर्व दिशामें रक्तिमाका दृश्य कैसे होता है सो बताया है।

१. एषा गोभिः अरुणेभिः युजाना...। (ऋ. ५।८०।३)

२. ...इयं...युवतिः...युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम्।
(ऋ० १।१२४।११)

३. उदपप्तन् अरुणा भानवो...स्वायुजो अरुषीःगा अयुक्षत।
... उषासो...रुशन्तं भानुं अरुषीः अशिश्रयुः।
(ऋ. १।९२।२)

४. युक्ष्वा हि... अश्वान् अद्य अरुणान् उषः (ऋ. १।९२।१५)

५. निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः, प्रति गावो अरुषीः यन्ति ...(ऋ. १।९२।१)

६. प्रति अर्चिः रुशत् अस्या अदर्शि, वि तिष्ठते बाधते कृष्णं अभ्वम्। विश्वं दिवो दुहिता भानुं अश्रेत्। (ऋ.१।९२।५)

७. गृहन्तीरभ्वमसितं रुशद्भिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः ...दिवो दुहितरो विभातीः.... । (ऋ, ४।५१।९)

८. द्युतद्- यामानं...अरुणप्सुं विभातीं, देवीं उषसं .. (ऋ.५।८०।१)

९. उते शोचिर्भानवो दामपसन्...उषो देवि रोचमाना महोभिः (ऋ. ६।६४।२)

१०. एषा स्या...दुहिता दिवोजाः ...या भानुना रुशता रामयासु अजीजनि तिरस्तमांसि अश्रिदक्तून् ।(ऋ. ६।६५।१)

११. प्रति द्युतानां अरुषासो अश्वाः विप्रा अदृश्रन्नुषसं वहन्तः । (ऋ. ७।७५।६)

१२. ऊर्ध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते । (ऋ. ७।७८।१)

१३. प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक् । (ऋ. ३।६१।५)

१४. उषा अदर्शि रश्मिभिः व्यक्ता । (ऋ. ७।७७।३)

१५. दिवो अर्केः अबोधि । (ऋ. ३।६१।६)

" १ यह उषा लालरंगवाले किरणोंसे युक्त होती हुई दीख-पडती है; २. यह नवयौवन संपन्न नारीके तुल्य मोहकरूपवाली उषा रक्तिमामय किरणोंके समूहको जोडदेती है; ३. रक्तवर्ण-वाले किरण ऊपर उठ आये और लालिमामय एवं स्वयंही जुडजानेवाले रश्मिसमूह को जोड दिया तथा रक्तिम आभावाली उषाएँ दीप्तिमान सूर्य किरणके सहारे खडी है; ४. हे उषे ! आज तू रक्तिम कान्तिवाले तथा व्याप्त होनेवाले किरणोंको जोड दे;५. ये लाल किरण चारों ओर चले जाते हैं तो ऐसा जान पडता है कि, मानों साहसी वीर अपने हथियार खींच निकालते हों; ६. इस उषाकी दैदीप्यमान ज्वालासी कान्ति दिखाई दी और यह विशेष रूपसे खेड रहकर काले कलूटे तथा प्रचंड अंधःकारको विनष्ट करडालती है पश्चात् यह द्युलोककन्या उषा विचित्ररूपवाले या अद्भुत सूर्यके सहारे रहती है; ७. ये द्युलोक की कन्यारूप उषाएँ सुशोभित होती हुई तथा पवित्र एवं विशुद्ध हो चमकती हुई और दीप्त बनकर तेजस्वी रूपोंसे बडे भारी कृष्ण वर्णको मानों छिपाती हैं; ८. द्योतमान उषाको जैसे रक्तिम आभा-वाली होकर भासमान होती है, तथा जिसका मार्ग जगमगारहा है; ९. हे द्योतमान् उषे ! तेरी आभा तथा रश्मियाँ आकाशमें ऊपर उठ चुकी हैं और तू तेजस्वितासे बडी सुहावनी प्रतीत होती है; १०. यही वह द्युलोकमें उत्पन्न कन्या है जो तेजस्वी किरण की बदौलतही रात्रियोंमें अँधेरा एवं तारागण की टिम-टिमाहट की अपेक्षा कहीं अधिक प्रतीत होती है, ११. अनूठे, लाल रंगवाले, व्यापकशक्तिसे युक्त किरण द्योतमान उषाको उठाकर लेचलते हुएसे दीख पडे; १२. इस उषाके विभूषण ऊपरवाली दिशामें टिके हुए दिखाई देते हैं; १३. देखनेमें रमणीय प्रतीत होनेवाली उषा आभामय हो यथेष्ट सुहाने लगी; १४. किरणोंके कारण स्पष्ट होकर उषा दृष्टिगोचर हुई, १५ द्युलोकमें अर्चनीय किरणोंसे वह जागृत हुई ।"

उषाके बारेमें मंत्र क्या कहते हैं सो देख लीजिए-

१. उषो देवि अमर्त्ये वि भाहि । (३।६१।२)

२. उषः...ऊर्ध्वा तिष्ठसि अमृतस्य केतुः। (ऋ.३।६१।३)

१. हे द्योतमान उषे ! तू अमरणशील होकर विशेषतया जगमगाती रह; २. तू अमरपनकी पताकासी है और ऊँची जगह ठहरती है ।" इसीलिए यह उषा जो कि—

१. भास्वती ... दिवः...दुहिता । (ऋ. १।९२।७)

२. शुक्रा कृष्णात् अजनिष्ट श्वितीची । (ऋ. १।१२३।९)

३. उषा याति स्वसरस्य पत्नी...आ अन्तात् दिवः पथ्ये आ पृथिव्याः । (ऋ. ३।६१।४)

अर्थात् '१. जगमगाती हुई द्युलोककन्या तथा २. कृष्णवर्ण अंधकारमेंसे तेजस्विनी और शुभ्रवर्णवालीके रूपमें उत्पन्न हुई एवं ३. दिनकी मानों पत्नीसी बनकर यात्रा करती है, अतः द्युलोक एवं भूलोकके एक कोनेसे लेकर दूसरे कोनेतक फैलचुकी है' और

व्युच्छन्ती जीवमुदीरयन्ती उषा मृतं कंचन बोधयन्ती । (ऋ. १।११३।८)

"उषा ऊपर उठते समय जीवमात्रको ऊपर उठनेके लिए प्रेरित करती हुई किसी भी निश्चेष्ट पडे हुए को जगाती हुई" दीख पडती है अब उदित होती है तो लोग कहने लगते कि-

अतारिष्म तमसः पारं अस्य । (ऋ. १।९२।६)

'हम इस अंधःकारको पार कर गये हैं' क्योंकि अब तो

उषा उच्छन्ती...समयते विभाती सुप्रतीका (ऋ.१।९२।६)

'ऊपर उठनेवाली उषा सुन्दर स्वरूपवाली होकर और प्रकाशमान बनकर हँस रही है ।' यह उषा

व्यूर्वती दिवो अन्ताँ अबोधि, अप स्वसारं सनुतर्युयोति।
(१।९२।११)

आकाशकी चरम सीमाको खोलती हुई उठगयी है और अपनी मानों बहनसी रात्रिको हमेशाही दूर हटाती है।'

वि अञ्जिभिः दिव आतासु अद्यौत् अप कृष्णां निर्णिजं देवी आवः। (१।११३।१४)

'द्योतमान उषा ऊपरकी दिशाओंमें किरणजालसे चमकने लगी और रात्रिके कालेकलूटे स्वरूपको दूर कर चुकी है।

पूर्वा विश्वस्माद्भुवनादबोधि..उच्चा व्यख्यद्युवतिः पुनर्भूः ..।
(१।१२३।२)

'सारे संसारके पहलेही यह जागृत हुई और नवयौवनसंपन्न तथा बारबार उत्पन्न होनेवाली यह उषा उच्च पदपर चढकर खूब सुहाने लगी।'

पुनर्पुनः जायमाना पुराणी समानं वर्णं अभिशुम्भमाना।
(ऋ. १।९२।१०)

'यह उष पुरानी है पर बारबार उत्पन्न होती हुई वर्णको समान रूपसे साफसुथरा एवं परिमार्जित करती हुई दिखाई देती है।'

पुराणी देवी युवतिः पुरन्धिः अनु व्रतं चरसि विश्ववारे।
(ऋ. ३।६१।१)

'हे दीप्तियुक्त तथा सबके स्वीकरणीय उषे! तू पुरानी है लेकिन नवयौवनयुक्त और बहुतोंका धारण करनेवाली महिला जैसी है तथा व्रत-नियम-के अनुकूल संचार करती है।'

१. संस्मयमाना युवतिः पुरस्तात्...। (१।१२३।१०)

२. सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा... (१।१२३।११)

१. यह उषा जनताके सम्मुख सुहास्य वदनी युवतीकी नाई दिखाई देती है; २. यह उषा मानों माताने विभूषित की हुई सुस्वरूप युवती नारीके तुल्य है।

१. एषा...आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात्। (ऋ.५।८०।४)

२. एषा...ऊर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात्।(ऋ.५।८०।५)

३. आविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती। (ऋ. १।१२३।१०)

४. आविस्तन्वं कृणुषे दृशे कम्। (ऋ. १।१२३।११)

१. यह उषा सामने शरीरको व्यक्त करती हुई और २. ऊँची जगह मानों जलमग्न हुईसी हमारे दर्शनार्थ खडी है;

"हे उषे! तू सुहाती हुई जनताके दर्शनार्थ अपना सुन्दर शरीर भलीभांति स्पष्ट अनावृत करती है।"

ऊपरके वचनोंसे स्पष्ट हुआ होगा कि विश्वके पुरातनतम साहित्य-अर्थात् वेदमें प्रातःकालका कितना काव्यमय, रसिकतापूर्ण एवं सौन्दर्यग्राही वर्णन किया हुआ उपलब्ध होता है। ऐसा निरसन्देह कहा जा सकता है कि, उषादेवताके सूक्त वास्तवमें वेदकालीन प्रतिभाशाली कवियोंकी रसिकता तथा सौन्दर्य लोलुपताका भलीभाँति परिचय करानेकी क्षमता रखनेवाले काव्य हैं।

उषा सूक्तोंको ध्यानपूर्वक पढलेनेसे जहाँ एक ओर वैदिक कवियोंकी सौन्दर्यासक्ति तथा सहृदयताका ज्वलन्त उदाहरण दीख पडता है, वहां इस बातका भी स्मरण हुए बिना नहीं रहा जाता कि, वैदिक सूक्तोंके सृजन करनेकी क्षमतासे युक्त वे प्राचीन कवि आर्थिक सुसमृद्धि एवं भौतिक वैभवको प्राप्त करनेकी आवश्यकताके बारेमें पर्याप्त रूपसे सतर्क और सचेष्ट रहा करते थे। बात भी बिलकुल ठीक जंचती है, क्योंकि साधारणतया ऐसा दिखाई देता है कि, जिस समाजमें पर्याप्त मात्रामें वैभवसंपन्नता विद्यमान है, वहींपर रसिकता सहृदयता एवं प्रतिभासंपन्न सुरुचिताका प्रादुर्भाव हुआ करता है। वैदिक सूक्त पढ लेनेसे साफ जाहिर होता कि वैदिक समाज व्यवस्थामें सांपत्तिक सुविधा एवं भौतिक ऐश्वर्यको अक्षुण्ण बनाये रखनेकी ओर तत्कालीन जनताका ध्यान किस तीव्रतासे आकृष्ट हो चुका था। अस्तु, अब हमें उन मंत्र भागोंकी ओर दृष्टिपात करना चाहिए जहाँ आर्थिक प्रगति करलेनेके स्पष्ट निर्देश पाये जाते हैं।

१. दिवः दुहितर्! स्येभिः वाजेभिः आगहि, रयिं अस्मे नि धारय। (ऋ. १।३०।२२)

२. सा न आवह...रयिं दिवो दुहितर्...।(ऋ. ६।६४।४)

३. उच्छा दिवो दुहितः प्रत्नवत्...सुवीरं रयिं गृणते रिरीहि..।
(ऋ. ६।६५।६)

४. महे नो अद्य सुविताय बोधि उषो...चित्रं रयिं यशसं धेहि अस्मे...। (ऋ. ७।७५।२)

५. एषा नेत्री राधसः...उषा...दीर्घश्रुतं रयिं अस्मे दधाना...। (ऋ. ७।७६।७)

६. वामेन सह, बृहता द्युम्नेन राया सह नः वि उच्छ।
(ऋ. १।४८।१)

७. सा अस्मासु धा गोमदश्वावदुक्थ्यं उषो वाजं सुवीर्यम्।
(ऋ. १।४८।१२)

८. बृहता विश्वपेशसा राया, इळाभिः वाजैः सुग्न्येन नः सं मिमिक्ष्व (ऋ. १।४८।१६)

९. उषो अद्येह...रेवदस्मे व्युच्छ । (ऋ. १।९२।१४)

१०. उषस्तच्चित्रमाभरास्मभ्यं ...येन तोकं तनयं च धामहे । (ऋ. १।९२।१३)

११.... अस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् (ऋ. १।११३।१७)

१२. ताः प्रत्नवन्नव्यसीर्नूनमस्मे रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः। (ऋ. १।१२४।९)

१३. तेभ्यो सुम्नं बृहदुश उषो मघोन्यावह । (ऋ. ५।८९।७)

१४. रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु देवीः ।

१५. स्योनाद्या वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम। (ऋ. ४।५१।१०)

१६. महे नो अद्य बोधय उषो राये दिवित्मती । (ऋ. ५।७९।१)

१७. ...नो गोमतीरिषः आ वहा दुहितर्दिवः...। (ऋ. ५।७९।८)

१८. तच्चित्रं राध आभरोषो ... यस्ते दिवो दुहितर्मर्तभोजनं तत्रास्त्र भुनजामहै । (ऋ. ७।८१।५)

"१. हे द्युलोककन्ये ! उन अन्नों या बलोंके साथ इधर आजा और हममें धन रख दे; २. तू हमतक धन पहुँचा दे; ३. पहले जैसेही तू उदित होती रह और स्तोताको अच्छी वीरतासे युक्त धन देडाल; ४. हे उषे ! हमारी बडी भारी भलाई हो इसलिए तू आज जाग तथा हमारे बीच अनूठे वैभव और यशकी स्थापना कर; ५. यह उषा बहुत दूरतक विख्यात धन हमारे मध्य रखती हुई धनको पहुँचानेवाली है; ६. हमारेलिए तू सुन्दरताके साथ बडे भारी धन एवं वैभवको साथ ले उदित होजा; ७. गायों और घोडोंसे युक्त, अच्छी वीरता से परिपूर्ण एवं सराहनीय अन्नसामग्री या बल हममें धरदे; ८. बडे प्रचंड, विश्वभरमें सुन्दर धन, अन्न सामग्रियों, बलों तथा वैभवसे तू हमें भली भाँति संयुक्त कर; ९. उषे ! आज तू हमारे लिए धनसंपन्न हो उदित हो; १० वह अनूठा धन हमें दे डाल ताकि हम पुत्र पौत्रोंका धारण करसकें; ११. हमें संतानयुक्त दीर्घजीवन दे डाल, १२. वे उषाएँ हमारेलिए पहले जैसे अबभी अच्छे दिनवाली एवं धनसंपन्न हो उदित हों; १३. हे ऐश्वर्य संपन्न उषे ! उन्हें बडा भारी यश और धन पहुंचादे; १४. वे द्योतमान द्युलोक कन्याएँ हमारे मध्य संतान-युक्त धन का प्रदान करें; १५. हे उषाओ ! आपके दिये हुए सुखसे हम जागृत होकर अच्छी वीरताके अधिपति बनें; १६. हे द्योतमान उषे ! आज हमें बडा भारी धन मिले इसीलिए जागृत कर १७. हे द्युलोककन्ये ! हमारे समीप गोधन युक्त अन्नसामग्रियाँ पहुंचादे; १८. वह अनूठा धन देदे और जो तेरे निकट मानवोंके उपभोग योग्य वस्तु हो उसे प्रदान कर ताकि हम उपभोग लें "

उषाके संबंधमें वैदिक कवि कहते हैं–

१. चित्रामघा राय ईशे वसूनाम् । (ऋ. ७।७५।५)

२. अग्रं अग्रमित् भजते वसूनाम्। (ऋ. १।१२३।४)

३. विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सुभगे व्युच्छा। (ऋ. ९।११३।७)

४. ... उतोषो वस्व ईशिषे । (ऋ. ४।९२।३)

५. धनानां सनये उषा एति । (ऋ. १।१२४।७)

६. एषा ..अक्षेधन्ती रयिं अप्रायु चक्रे (ऋ. ५।८०।३)

७...ता भद्रा उषसः पुरा आसुः...यास्वीजानः....स्तुवन् शंसन् द्रविणं सद्य आप । (ऋ० ४।५१।७)

८. अभूदुषा...मघोन्यजीजनत् सुविताय श्रवांसि । (ऋ. ७।७९।३)

१. "यह उषा अनोखे धनसे संपन्न है और संपत्तियोंपर प्रभुत्व रखती है; २. धनोंमें जो परले दर्जेका हो उसेही ले लेती है; ३. हे सुंदर ऐश्वर्यवाली उषे ! तू समूचे भूमंडलस्थ धनपर प्रभुत्व रखती हुई आज उदित हो; ४. तेरे आधीन धन है; ५. धनोंका दान करनेके लिए उषा आती है; ६. यह उषा क्षीण न होती हुई धनको स्थिर कर चुकी है; ७. पहले वे सुन्दर हितकारक उषाएँ थीं जिनमें यज्ञ करनेवाला सराहना एवं भाषण करता हुआ तुरन्त धन पा सका; ८. उषा ऐश्वर्यसंपन्न हुई और भलाईके लिए अन्नोंका उत्पादन करचुकी।"

अच्छे कार्य करनेवाले तथा दानशूर पुरुषकोही धन देनेके बारेमें निम्न मंत्रोंमें निर्देश मिलते हैं जिससे स्पष्ट होता है कि वैदिक कवि संपत्तिके विकेन्द्रीकरणके अनुकूल थे और ऐसी समाज व्यवस्था चाहते थे जहाँ आर्थिक विषमता न हो तथा अधिकांश जनता निर्धन और कुछ इनेगिने व्यक्ति अत्यधिक संपन्न एवं धनशाली हैं ऐसी दशा न होने पाय ।

१. ...वहसि भूरि वामं उषो देवि दाशुषे मर्त्याय।
(ऋ. १।१२४।१२)

२. या वहसि पुरु स्पार्हं...रत्नं न दाशुषे मयः।
(ऋ. ७।८१।३)

३. वि दिवो देवी दुहिता दधाति...सुकृते वसूनि।
(ऋ. ७।७९।३)

४. याति शुभ्रा...दधाति रत्नं विधते जनाय।
(ऋ. ७।७५।६)

५. श्रवो वाजं इषं ऊर्जं वहन्तीः नि दाशुषे उषसो मर्त्याय...अवो धात विधते रत्नं अद्य। (ऋ. ६।६५।३)

६. एषा...दुहिता दिवो...व्यूर्णवती दाशुषे वार्याणि।
(ऋ. ५।८०।६)

७. या गोमतीरुषसः...व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय... ता अश्वदा अश्नवत् सोमसुत्वा। (ऋ. १।११३।१८)

१. "हे उषे! देवि! तू दानशूर मानवके लिए प्रचंड सुन्दर धन पहुँचाती है; २. तू दान देचुकनेपर उसे यथेष्ट, स्पृहणीय रत्नतुल्य सुख पहुँचाती है; ३. दानशूर द्युलोककन्या सुन्दर कार्य करनेवालेके लिए धनसमूह रखती है; ४. श्वेत-वर्णवाली उषा कार्यकर्ता लोगोंके लिए रत्न धरदेती हुई चली आती है; ५. दानी मानवके लिए उषाएँ अन्न, यश तथा बल पहुंचाती हैं, आज कार्यकर्ताके लिए रक्षा एवं रत्न रख दो; ६. यह द्युलोककन्या दानीके लिए स्वीकरणीय वस्तुओंको खोल देती है; ७. दानी पुरुषके लिए जो उषाएं गोधनयुक्त हो उदित होती हैं उन अश्व देनेवाली उषाओंको सोम निचोडनेवाला पाता है।"

वैदिक कवि उषासे क्या अपेक्षा रखते हैं सो देखलीजिए–

१. उष आ भाहि भानुना...आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभगम्।
(ऋ. १।४८।९)

२. अधा नो विश्वा सौभगान्यावह (ऋ. १।९२।१५)

३. सा नो रयिं विश्ववारं सुपेशसं उषा ददातु सुगम्यम्।
(ऋ. १।४८।१३)

४. ...प्र नो यच्छतादवृकं पृथु छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः।
(ऋ. १।४८।१५)

५. उषस्तमश्यां यशसं सुवीरं...रयिं... (ऋ. १।९२।८)

६. ... भद्रं भद्रं क्रतुमस्मासु धेहि।
उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छ अस्मासु रायो मघवत्सु च स्युः। (ऋ. १।१२३।१३)

७. युष्माकं देवीरवसा सनेम सहस्रिणं च शतिनं च वाजम्।
(ऋ. १।१२४।१३)

८. एतावद् वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि।
(ऋ. ५।७९।१०)

९. नू नो गोदद्वीरवद्धेहि रत्नं उषो अश्ववत् पुरुभोजो अस्मे।
(ऋ. ७।७५।८)

१०. .... उरुगायमधि धेहि श्रवो नः (ऋ. ६।६५।६)

११. .... उषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः।
इषं च नो धत्ती.... गोमदश्वावद्रथवच्च राधः
(ऋ. ७।७७।५)

१२. तावद्युषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत् स्तोतृभ्यो अरदो गृणाना। (ऋ. ७।७९।४)

१३. उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वामं अस्मभ्यं वक्षि। (ऋ. ७।७८।१)

१. "हे उषे! रश्मिसे तू जगमगाती रह और हमारे लिए बहुतसा अच्छा भाग्य पहुँचाती रह; २. अच्छा, अब तो हमें सभी सौभाग्य प्राप्त करा; ३. वह उषा हमें सुस्वरूप, सबके स्वीकरणीय एवं सुखदायक धनवैभव देवे; ४. हे द्योतमान! हमें विस्तीर्ण, शत्रुरहित (जिसमें भेडिया नहीं घुस सकता हो) घर तथा गोधनयुक्त अन्नसामग्रियाँ यथेष्ट दे दे; ५ हे उषे! मैं अच्छी वीरतासे युक्त एवं यशसे पूर्ण धनसंपदाको प्राप्त कर लूं; ६. हममें अच्छे अच्छे कार्योंको धरदेती चल और हे उषे! तू आज हमारे लिए सुखपूर्वक बुलाने योग्य है अतः उदित हो तथा हममें और धनिकोंमें संपत्तियाँ रहें ऐसा प्रबंध कर; ७. हे द्योतमान उषाओ! तुम्हारी रक्षाके फलस्वरूप हम सैकडों और हजारोंकी संख्यामें अन्न प्राप्त करें; ८. हे उषे! इतना तो जरूरही लेकिन और भी फिर, तू हमें दे दे; ९. अब हमें गोधन, वाजिधन एवं वीरोंसे युक्त और बहुतोंको भोगसाधन मिलसके ऐसा रत्न दे डाल; १०. बहुतसे लोग जिसके बारेमें गायन करते हों ऐसा यश हममें धर दे; ११. हे देवतारूपी उषे! हमारा जीवन बढाती हुई और गौओं; घोडों तथा रथादि वाहनोंसे युक्त धन एवं अन्न हमें देती हुई..; १२. हे उषे! स्तोताओंको जितना धन तूने दिया उतना तू हमें देदे; १३. हे उषे! प्रकाशयुक्त और बडे रथको, जो कि हमारी ओरही आ रहा है साथ लेकर तू सुन्दर धन हमें देती रह।"

उषासे ऐसी प्रार्थना इसलिए की जाती है कि–

स्पार्हा वसूनि तमसा अपगूळहा आविष्कृण्वन्ति उषसो विभातीः। (ऋ. १।१२३।६)

' चमकती हुई उषाएं अंधेरेने गुप्तरूपसे ढकी हुई स्पृहणीय धनोंको खोलदेती हैं। ' और भी एक बात है कि,

प्राप्यां जगद्व्युषो रायो अख्यत्। (ऋ. १।११३।४)

' जगत्को अच्छी तरह दृष्टिगोचर कराके उषाने हमारे धनोंको विशेषरीतिसे खोलदिया, चमकादिया।' यह उषा हमारे लिए '(**आवहन्ती पोष्या वार्याणि**) ऋ. १।११३।१५ ' पोषणीय तथा स्वीकरणीय वस्तुओंको पहुंचाती रहती है। और ' **अस्मभ्यं गोमतः वाजान् सूरिभ्यः अमृतं वसुष्वनं अवः चोदयित्री** ।(ऋ. ७।८१।६)' अर्थात् , हमें गौओंसे युक्त अन्न और विद्वानोंको अमरपन , धनाढ्यता एवं यश देनेकी प्रेरणा करनेवाली है।

केवल पर्याप्त मात्रामें प्रकाश, अन्न, बल, धन देनेसेही देवता का कार्य पूर्ण नहीं होता, किन्तु द्वेष्टा, विरोधियों तथा शत्रुओंको हटानाभी अत्यन्त आवश्यक है। देखिए, वैदिक कवियोंने इस संबंधमें क्या कहा है–

... उषा स्निधः अप उच्छत्। (ऋ. ७।८१।६)

अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्निधः। (ऋ. १।४८।८)

अर्थात् ' द्युलोककन्या एवं ऐश्वर्यसंपन्न उषा द्वेषकरनेवालों को और शत्रुओंको हटानेके लिए उदित हो जाए।'

अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः।
यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि। (ऋ० ७।७७।४)

'हे (मघोनि) ऐश्वर्यसंपन्न उषे! तू (अन्ति-वामा) अपने समीप हमें देनेके लिए धन रखनेवाली है, अब (अमित्रं दूरे उच्छ) शत्रुको दूर हटादे और (नः) हमारे लिए (उर्वीं गव्यूतिं) विशाल मार्ग तथा (अभयं कृधि) निर्भयतामय वातावरणका सृजन कर; पश्चात् (द्वेषः यावय) द्वेषको हटादे और (वसूनि आ भर) हमें धन ला दे एवं (गृणते राधः चोदय) स्तोताके लिए धन प्रेरित कर।'

वि उषा आवो...आविष्कृण्वाना महिमानमागात्।
अप दुहस्तम आवरजुष्टं...॥ (ऋ. ७।७५।१)

' उषा प्रकट हुई है, वह महिमाको साफ तौरसे व्यक्त करती हुई आ चुकी है और द्वेष करनेवालेको एवं असेवनीय अँधेरेको दूर भगाया है।'

उषःवेलामें अनूठेपनके रहनेपरभी अनोखी समानरूपता पाई जाती है जिसका उल्लेख यूं है—

सदृशीरद्य सदृशीरिदु श्वो...। (ऋ १।१२३।८)

शुभं यच्छुभ्रा उषसश्चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदृशीरजुर्याः। (ऋ. ४।५१।६)

' आज ये उषाएँ समानरूपवाली हैं तो कलभी उसी तरह रूपवाली दिखाई देती हैं; ये शुभ्रवर्णवाली एवं जीर्ण न होनेवाली उषाएँ भलीभाँति हितके लिए संचार करती हैं और समान स्वरूपवाली होनेसे पृथक् पृथक् नहीं जानी जाती हैं।''

विख्यात ऋषि उषाकी सराहना करते थे ऐसा निम्न मंत्रोंसे सूचित होता है–

१. **प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवांसः।** (ऋ. ७।७६।६)

२. **एषा...उषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः** (ऋ.७।७६।७)

३. **प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा अबुध्रन्।** (ऋ ७।८०।१)

४. **ऋषिष्टुता...मघोन्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना।** (ऋ. ७।७५।५)

५. **देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रासो मतिभिर्जरन्ते।** (ऋ. ५।८०।१)

६. **यावयद् द्वेषसं त्वा...प्रति स्तोमैरभुत्स्महि।** (ऋ. ४।५२।४)

७. **अभि ये त्वा विभावरि स्तोमैर्गृणन्ति वह्नयः।** (ऋ. ५।७९।४)

८. **उषो... स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि।**(ऋ.३।६१।१)

९. **व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमाभासि रोचनम्।**
तां त्वामुषर्वसूयवो गीर्भिः कण्वा अहूषत॥(ऋ.१।४९।४)

१. " हे सुन्दर ऐश्वर्यवाली उषे! सुबह जाग उठनेवाले एवं स्तुति करनेवाले वसिष्ठ परिवारके लोग स्तुतिमय काव्योंसे तेरी प्रशंसा करते हैं; २. उदित होनेवाली उषाकी स्तुति वसिष्ठ वंशके ऋषियोंसे की जाती है; ३. प्रथम श्रेणीके तथा ज्ञानी वसिष्ठ कुलके ऋषि उषाके आगमनके मौकेपर स्तोत्रपाठ कर चुके; ४. यह ऐश्वर्यसंपन्न एवं ऋषियोंद्वारा प्रशंसित उषा उदित होती है जबकि हव्योंको ढोनेवाले यजमान उसकी स्तुति करने लगते हैं; ५. स्वर्गतुल्य तेज पहुँचानेवाली तथा दैदीप्यमान उषाकी स्तुति विद्वान लोग मननीय काव्योंसे करते हैं; ६. तू

उदित होनेपर द्वेषभाव हटाती है इसलिए हम स्तोत्रोंसे तुझको मानों जगाते हैं; ७. हे विशेष तेजवाली उषे! हवनीय वस्तुओंको इष्टस्थानतक पहुँचानेवाले जो यजमान हैं वे स्तोत्रोंसे तेरी स्तुति करते हैं; ८. हे ऐश्वर्यसंपन्न उषे! स्तोताके स्तुतिमय काव्यका स्वीकार कर, ९ हे उषे! उदित होती हुई तू समूचे जगत्को सुन्दर करती है, ऐसे तुझको धन चाहनेवाले कण्व वंशके ऋषि भाषणोंसे बुलाते हैं।'

उषा सुन्दर रथपर चढकर आती है और बलिष्ठ घोडे उसे खींचते हैं ऐसा वर्णन पाया जाता है जैसे,

१. उषो देवि...चन्द्ररथा ..ईरयन्ती।

२. आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये॥ (ऋ. ३।६१।२)

१. 'हे द्योतमान उषे! तू सुन्दर, आल्हाद दायक रथवाली है और दूसरोंको प्रेरणा देनेवाली है इसलिए; २. जो विशाल बलयुक्त तथा भलीभाँति नियमित घोडे हैं वे सुवर्ण कान्तिवाली तुझको इधर ले आयँ।'

सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उषस्त्वम्। (ऋ.१।४९।२)

'हे उषे! जिस सुन्दररूपवाले एवं सुखदायक रथपर तू चढचुकी थी।'

सा नो रथेन बृहता.... श्रुधि चित्रामघे हवम्।

(ऋ. १।४८।१०)

'हे अनोखे ऐश्वर्यसे युक्त उषे! बडे भारी रथपर चढकर आती हुई तू हमारी पुकार सुनले।'

एषा अयुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि।
शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान्॥

(ऋ. १।४८।७)

'यह उषा सूर्योदयके पहलेही सुदूर स्थानमें रथोंको घोडे जोत चुकी है, ताकि शीघ्र यात्रारंभ हो; यह सुन्दर ऐश्वर्यवाली उषा मानवोंके समीप मानों सैकडों रथोंसे चली जाती है।

... अश्वोदुषाः शोशुचता रथेन। (ऋ. १।१२३।७)

'उषा जगमगाते हुए रथके कारण चमकनेलगी।

बृहद्रथा बृहती.... उषा ज्योतिर्यच्छति....।

(ऋ. ५।८०।१)

'महान उषा बडे भारी रथसे आती हुई उजेला देडालती है।

.... अरुणासो अश्वाश्चित्रा अग्रेण्यसं वहन्तः।

याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन.... (ऋ. ७।७५।६)

"रक्तिम आभावाले अनूठे घोडे उषाको ले आते हुए दीखपडे और यह तेजस्वी उषा सभीरूप धारण करनेवाले रथपरसे चली जाती है।"

.... दिवो दुहिता.... आस्थात् रथं स्वधया युज्यमानं
आ यं अश्वासः सुयुजो वहन्ति। (ऋ. ७।७८।४)

'द्युलोककन्या उषा, स्वकीय धारणशक्तिसे तैयार होनेवाले रथपर, जिसे भली भाँति जोते हुए घोडे लेचलते हैं, चढगई।

अश्विनौ जैसे अश्वरूपसे लोक सेवा करनेवालोंसे मित्रता पूर्ण बर्ताव रखना और और गौओंकी माता बनना उषाकी विशेषता है, देखिए-

हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंदृग् गवां माता नेद्यहाभरोचि।

(ऋ. ७।७७।२)

'सुवर्णकी कान्तिवाली अतः जिसका दर्शन बडाही रमणीय है ऐसी यह गौओंकी माता उषा जो कि दिनोंकी नेत्री है जगमगाने लगी।'

...अरुणी माता गवां...सखा अभूदश्विनोरुषाः।
उत सखा असि अश्विनोरुत माता गवामसि...।

(ऋ. ४।५२।२-३)

'लालिमामय आभावाली उषा गौओंकी माता एवं अश्विनौ की मित्रा है।'

लोगोंके दिलमें उषाके प्रति कैसी आदरमय भावना रहा करती थी सो निम्न मंत्रोंसे स्पष्ट होगा—

उच्छन्ती या कृणोषि महना महि प्रख्यै देवि स्वर्दृशे।
तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः॥

(ऋ. ७।८१।४)

'हे (महि देवि) महनीय देवतारूपी उषे! (या उच्छन्ती) जो तू उदित होती हुई (महना) अपने तेजसे (स्वः) स्वर्गको (दृशे) दर्शनके योग्य तथा (प्रख्यै कृणोषि) विशेष स्पष्टताके अनुकूल बनाती है उस (तस्याः ते) तुझको जो कि (रत्नभाजः) रत्न साथ रखनेवाली है हम (ईमहे) चाहते हैं, या प्रार्थना करते हैं कि (वयं) हम तेरी निगाहमें (मातुः सूनवः न) माताके लिए उसके पुत्र जैसे प्यारे होते हैं, वैसेही (स्याम) प्रिय हों।'

उषो भद्रेभिरागहि दिवश्चिद्रोचनादधि। (ऋ० १।४९।१)

हे उषे! तू (रोचनात् दिवः चित्) चमकीले द्युलोक से

भी (भद्रेभिः अधि आगहि) कल्याणप्रद किरणों से युक्त हो हमें प्राप्त होजा।

तद्यो दिवो दुहितरो विभातीरुप ब्रुव उषसः ...
वयं स्याम यशसो जनेषु ... (ऋ० ४।५१।११)

'हे चमकती हुई, द्युलोककी कन्यासी उषाओ! मैं तुमसे यही कहना चाहता हूं कि हम जनता में यशस्वी हों।'

यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः।
सा अस्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।
(ऋ० ७।७७।६)

'हे (सुजाते) सुन्दर ढंगसे उत्पन्न! द्युलोककन्ये उषे! (यां त्वा) जिस तुझको वसिष्ठवंशोत्पन्न लोग (मतिभिः वर्धयन्ति) बुद्धि से निष्पादित काव्योंद्वारा वृद्धिंगत करते हैं ऐसी (सा) वह तू (अस्मासु) हममें (बृहन्तं ऋष्वं रयिं धा) बडे दैदीप्यमान धन रख दे और तुम हमें सदैव कल्याणकारक बातोंसे सुरक्षित रखो।'

उषा में इन्द्रशक्ति एवं अंगिरसोंकी शक्ति बढनेका उल्लेख मिलता है जैसे—

अभूदुषा इन्द्रतमा मघोनी ... दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि। (७।७९।३)
...समानेन योजनेना परावतः। ... इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ... ॥ (ऋ० १।९२।३)

'यह ऐश्वर्यसंपन्न उषा इन्द्रशक्तिकी खूब वृद्धि कर चुकी है और अंगिरसोंकी सामर्थ्य यथेष्ट बढाकर सुकर्मकर्ताको धन दे डालती है; ये उषाएं सुदूर देशसे भी सदृश आयोजनाके अनुकूल अच्छे दानी एवं सुन्दर कार्यकर्ता को अन्न पहुंचाती हैं।'

इस तरह उषा के सूक्तोंमें हमें एक सुरम्य प्राकृतिक दृश्य का और शाश्वतिक मानवी आकांक्षाका संमिश्र वर्णन देखने मिलता है। इन सूक्तोंमें इस बातका परिचय मिलता है कि मानवी मन प्राचीन कालमें मनोहर प्राकृतिक घटना से किस भाँति प्रभावित हुआ करता था और साथही यह भी ज्ञात होता है कि उत्साहवर्धक एवं नयनमनोरम प्राकृतिक दृश्य से प्रभावित होने और उस में रस लेनेकी दशामें भी अनिवार्य सामाजिक आवश्यकताओंकी पूर्तिका भी ख्याल रखना पडता है। वैदिक सुकवियोंके विशाल एवं व्यापक दृष्टिकोणका इससे बढकर और क्या अधिक परिचायक हो सकता है कि प्रतिदिन दृश्यमान एक नैसर्गिक दृश्य का सौन्दर्यग्राही वर्णन करते हुए भी शाश्वतिक मानवी आवश्यकताओं का बारंबार उल्लेख करना वे नहीं भूलते।

लेखक
दयानंद गणेश धारेश्वर
स्वाध्याय-मण्डल, औंध, (जि० सातारा)

(२)

उषा सूक्तोंमें अतीन्द्रिय ज्ञान

योगी श्री अरविंदजी महाराज अपने वेद रहस्य में उषा के स्वरूपका वर्णन अत्यंत हृदयंगम करते हैं, उसे अब यहां देखिये-

"गोमद् वीरवद् धेहि रत्नम् उषो अश्वावत्" उस समय कर्मकाण्डपरक व्याख्याकार को इस प्रार्थना में केवल उस सुखमय धन-दौलत की ही याचना दीखती है, जो गौओं, वीर मनुष्यों (या पुत्रों) और घोडों से युक्त हो। दूसरी तरफ यदि ये शब्द प्रतीकरूप हों, तो इसका अभिप्राय होगा- "हमारे अन्दर आनन्द की उस अवस्था को स्थिर करो, जो ज्योति से, विजयशील शक्ति से और प्राण-बलसे भरपूर हो।" इसलिये यह आवश्यक है कि एक वार सभी स्थलों के लिये वेद मंत्रों में आनेवाले, 'गौ' शब्द का अर्थ क्या है, इस का निर्णय कर लिया जाय। यदि यह सिद्ध हो जाय, कि यह प्रतीकरूप है, तो निरन्तर इस के साथ आनेवाले अश्व (घोडा), वीर (मनुष्य या शूरवीर), अपत्य या प्रजा (औलाद), हिरण्य (सोना), वाज (समृद्धि, या सायण के अनुसार अन्न). इन दूसरे शब्दों का अर्थ भी अवश्य प्रतीकरूप और इसका सजातीय ही होगा।

'गौ' का अलंकार वेद में निरन्तर उषा और सूर्यके साथ सम्बद्ध मिलता है। इसे हम उस कथानक में भी पाते हैं, जिस में इन्द्र और बृहस्पति ने सरमा कुतिया (देवशुनी) और अङ्गिरस ऋषियों की मदद से पणियों की गुफा में से खोई हुई

गौओं को फिर से प्राप्त किया है। उषा का विचार और अङ्गिरसों का कथानक ये मानो वैदिक सम्प्रदायके हृदयस्थानीय हैं और इन्हें करीबकरीब वेद के अर्थों के रहस्य की कुञ्जी समझा जा सकता है। इसलिये ये ही दोनों हैं, जिन की हमें अवश्य परीक्षा कर लेनी चाहिये, जिस से आगे अपने अनुसंधान के लिये हमें एक दृढ आधार मिल सके।

अब उषासंबन्धी वेद के सूक्तों को बिल्कुल ऊपर ऊपर से जांचने पर भी इतना बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि, उषा की गौएं या सूर्यकी गौएँ 'ज्योति' का प्रतीक हैं, इसके सिवाय और कुछ नहीं हो सकतीं। सायण खुद इन मन्त्रों का भाष्य करते हुए विवश होकर कहीं इस शब्द का अर्थ 'गाय' करता है और कहीं 'किरणें,' हमेशा की अपनी आदत के अनुसार परस्पर संगति बैठाने की भी कुछ पर्वाह नहीं रखता; कहीं वह यह भी कह जाता है कि, 'गौ' का अर्थ सत्यवाची 'ऋत' शब्द की तरह पानी होता है। असल में देखा जाय तो यह स्पष्ट है कि इस शब्दसे दो अर्थ लिये जाने अभिप्रेत हैं, (१) 'प्रकाश' इस का असली अर्थ है और (२) 'गाय' उस का स्थूल रूपक-रूप और शाब्दिक अलंकारमय अर्थ है।

ऐसे स्थलों में गौओं का अर्थ 'किरणें' इस में कोई मतभेद नहीं हो सकता, जैसे कि इंद्र के विषय में मधुच्छन्दस् ऋषिके सूक्त (१.७) का तीसरा मन्त्र है- 'इंद्रने दीर्घ दर्शन के लिये सूर्य को द्युलोक में चढाया उसने उसे उसकी किरणों (गौओं) के द्वारा सारे पहाड पर पहुंचा दिया- वि गोभिः अद्रिम् ऐरयत्*।' परन्तु इस के साथ ही सूर्य की किरणें 'सूर्य' देवता की गौएं हैं, हीलियस (Helios) की वे गौएँ हैं, जिन्हें ओडिसी (Odyssey) में ओडिसस (Odysseus) के साथियोंने वध किया है, जिन्हें हर्मिज (Hermes) के लिये कहे गये होमर के गीतों में हर्मिजने अपने भाई अपोलो (Apollo) के पास से चुराया है। ये वे गौएँ हैं, जिन्हें 'वल' नामक शत्रूने या पणियोंने छिपा लिया था। जब मधुच्छन्दस् इंद्रको कहता है-'तूने वलकी उस गुफाको खोल दिया, जिस में गौएँ बंद पडी थीं'- तब उस का यही अभिप्राय होता कि, वल गौओं को कैद करनेवाला है, प्रकाश को रोकनेवाला है और वह रोका हुआ प्रकाश ही है, जिसे इन्द्र यज्ञ करनेवालों के लिये फिर से ला देता है। खोई हुई या चुराई हुई गौओं को फिर से पालने का वर्णन वेद के मन्त्रों में लगातार आया है और इस का अभिप्राय पर्याप्त स्पष्ट हो जायगा, जब कि हम पणियों और अङ्गिरसोंके कथानककी परीक्षा करना शुरू करेंगे।

एक बार यदि यह अभिप्राय, यह अर्थ सिद्ध हो जाता है, स्थापित हो जाता है, तो 'गौओं' के लिये की गई वैदिक प्रार्थनाओं की जो भौतिक व्याख्या की जाती है, वह एकदम हिल जाती है। क्योंकि खोई हुई गौएं, जिन्हें फिर से पा लेने के लिये ऋषि इंद्र का आह्वान करते हैं, वे यदि द्रविड लोगों-द्वारा चुराई गई भौतिक गौएं नहीं हैं, किंतु सूर्य की ज्योति की चमकती हुई गौएं हैं, तो हमारा यह विचार बनाना न्याय-संगत ठहरता है कि, जहां केवल गौओं के लिये ही प्रार्थना है और साथ में कोई विरोधी निर्देश नहीं है, वहां भी यह अलंकार लगता है, वहां भी गौ भौतिक गाय नहीं है। उदाहरण के लिये ऋ० १,४,१,२ × में इंद्र के विषय में कहा गया है कि, वह पूर्ण रूपों को बनानेवाला है और वह गौओं के दोहने में ऐसा चतुर है कि, उस का सोम-रस से चलनेवाला मद सचमुच गौओंको देनेवाला है, 'गोदा इद् रेवतो मदः'।

निरर्थकता और असंगतताकी हद हो जायगी, यदि इस कथनका यह अर्थ समझा जाय कि, इन्द्र कोई बडा समृद्धि-शाली देवता है और जब वह पिये हुए होता है, उस समय गौओं के दान करने में बडा उदार हो जाता है। यह स्पष्ट है कि जैसे पहली ऋचा में गौओं का दोहना एक अलंकार है, वैसे ही दूसरी में गौओं का देना भी अलंकार ही है। और यदि हम वेद के दूसरे सन्दर्भों से यह जान लें कि 'गौ'

---

* इस का अनुवाद हम यह भी कर सकते हैं कि, "उसने अपने वज्र (अद्रि) को उस से निकलती हुई चमकों के साथ चारों ओर भेजा" पर यह अर्थ उतना अच्छा और संगत नहीं लगता। पर यदि हम इसे ही मानें, तो भी 'गोभिः' का अर्थ 'किरणें' ही होता है, गाय पशु नहीं।

× सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि।
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः॥ (ऋ० १।४।१-२)

प्रकाश का प्रतीक है तो यहां भी हमें अवश्य यही समझना चाहिये कि, इंद्र जब सोम-जनित आनन्द में भरा होता है, तब वह निश्चित ही हमें ज्योतिरूप गौएं देता है।

उषा के सूक्तों में भी, गौएं ज्योति का प्रतीक हैं, यह भाव वैसा ही स्पष्ट है। उषा को सब जगह 'गोमती' कहा गया है, जिस का स्पष्ट ही अवश्य यही अभिप्राय होना चाहिये कि, वह ज्योतिर्मय या किरणोंवाली है, क्योंकि यह तो बिल्कुल मूर्खतापूर्ण होगा कि, उषा के साथ एक नियत विशेषण के तौरपर 'गौओं से पूर्ण' यह विशेषण उस के शाब्दिक अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाय। पर गौओं का प्रतीक वहां पर विशेषण में है, क्योंकि उषा केवल 'गोमती' ही नहीं है, वह **'गोमती अश्वावती'** है, वह हमेशा अपने साथ अपनी गौएं और अपने घोडे रखती है।

'वह सारे संसारके लिये ज्योति को रचकर देती है और अन्धकार को, जो गौओं का बाडा है, खोल देती है, १.९२.४+' यहां हम देखते हैं कि, बिना किसी भूलचूक की सम्भावना के गौएं ज्योति का प्रतीक ही हैं। हम इस पर भी ध्यान दे सकते हैं कि, इस सूक्त (१.९२) में अश्विनों को कहा गया है कि, वे अपने रथ को उस पथपर हांक कर नीचे ले जायें, जो ज्योतिर्मय और सुनहरा है-× **'गोमद् हिरण्यवद्'** इस के अतिरिक्त उषा के संबंध में कहा गया है कि, उस के रथ को अरुण गौएं खींचतीं हैं और कहीं यह भी कहा है कि, अरुण घोडे खींचते हैं।

'वह अरुण गौओंके समूह को अपने रथ में जोतती है। **युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम्।** ऋ.१.१२४.११' यहां 'अरुण किरणों के समूह को' यह दूसरा अर्थ भी स्थूल अलंकार के पीछे स्पष्ट ही रखा हुआ है। उषा का वर्णन इस रूप में हुआ है कि, वह गौओं या किरणों की माता है. **'गवां जनित्री अकृत प्रकेतम्** ऋ.१.१२४.५· गौओं (किरणों) की माता ने दर्शन (Vision) को रचा है।' और दूसरे स्थानपर उस के कार्य के विषय में कहा है, 'अब दर्शन या बोध उदित हो गया है। जहां पहले कुछ नहीं (असत्) था'।* इस से पुनः यह स्पष्ट है कि, 'गौएं' प्रकाश की ही चमकती हुई किरणें हैं। उस की इस रूप में भी स्तुति की गई है कि, वह चमकती हुई गौओं का नेतृत्व करनेवाली है (**नेत्री गवाम्** ७.७६.६) और एक दुसरी ऋचा इस पर पूरा ही प्रकाश डाल देती है, जिस में ये दोनों ही विचार इकट्ठे आ गये हैं, 'गौओं की माता दिनों की नेत्री'(**गवां माता नेत्री अह्नाम्।** ऋ. ७.७७.२) अन्तमें मानो इस अलंकार पर से आवरण को कतई हटा देने के लिये ही, वेद स्वयं हमें कहता है कि, गौएँ प्रकाश की किरणों के लिये एक अलंकार है, "उसकी सुखमय किरणें दिखाई दीं, जैसे छोडी हुई गौएँ"- **प्रति भद्रा अदृक्षत गवां सर्गा न रश्मयः।** ऋ. ४.५२.५ हमारे सामने इससे भी अधिक निर्णयात्मक एक दूसरी ऋचा (ऋ. ७.७९.२) है-'तेरी गौएँ (किरणें) अन्धकार को हटा देती हैं और ज्योति को फैलाती हैं: **सं ते गावस्तम आवर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति०।**

लेकिन उषा इन प्रकाशमय गौओंद्वारा केवल खींची ही नहीं जाती, वह इन गौओं को यज्ञ करनेवालों के लिये उपहाररूप में देती है। वह इन्द्र की ही भांति, जब सोम के आनन्द में होती है, तो ज्योति को देती है वसिष्ठके एक सूक्त (७.७५) में उसका वर्णन इस रूपमें है कि, वह देवों के कार्य में हिस्सा लेती है और उससे वे दृढ स्थान जहां गौएं बन्द पडी हैं, टूट कर खुल जाते हैं और गौएं मनुष्यों को प्राप्त हो जाती हैं। "वह * सच्चे देवोंके साथ सच्ची है, महान् देवों के साथ

+ ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः॥ (ऋ० १।९२।४)

× अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद् दस्रा हिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम्। (ऋ० १।९२।१६)

* वि नूनमुच्छाद् असति प्रकेतुः। (ऋ० १।१२४।१६)

० निस्संदेह इसमें मतभेद हो सकता कि वेद में गौ का अर्थ प्रकाश है, उदाहरण के लिये जब यह कहा जाता है कि, 'गवा,' 'गौ' से, प्रकाश से, वृत्र को मारा गया, तो यहां गाय पशुका तो कोई प्रश्न ही नहीं है, प्रश्न यह है कि, यहां द्व्यर्थक प्रयोग है और गौ यहां प्रतीकरूप है।

* सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः।
रुजद् दृळ्हानि दददुस्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त॥ (ऋ० ७।७५।७)
नू नो गोमद् वीरवद् धेहि रत्नमुषो अश्वावत् पुरुभोजो अस्मे॥ (ऋ० ७।७५।८)

महान् है, वह दृढ स्थानों को तोड कर खोलती है और प्रकाश मय गौओंको छोड देती हैं, गौएं उषाके प्रति रँभाती हैं" **रुजद् दृळ्हानि ददद् उस्रियाणाम्, प्रति गाव उषसं वावशन्त।** (ऋ. ७.७५.७) और ठीक अगली ही ऋचामें उससे प्रार्थना की गई है कि, वह यज्ञकर्ता के लिये आनन्द की उस अवस्था को स्थिर करे या धारण करावे, जो प्रकाश से (गौओं से), अश्वों से (प्राण-शक्ति से) और बहुत से सुख-भोगों से परिपूर्ण हो- " **गोमद् रत्नम् अश्वावत् पुरुभोजः।**" इसलिये जिन गौओं को उषा देती है, वे गौएं ज्योतिकी ही चमकती हुई सेनायें हैं, जिन्हें देवता और अङ्गिरस ऋषि वल और पणियोंके दृढ स्थानों से उद्धार करके लाये हैं। साथ ही गौओं (और अश्वों) की सम्पत्ति जिस के लिये ऋषि लगातार प्रार्थना करते हैं उसी ज्योति की सम्पत्तिके अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकती; क्योंकि यह कल्पना असंभवसी है कि, जिन गौओं को देने के लिये इस सूक्त की सातवीं ऋचा में उषा को कहा गया है, वे उन गौओं से भिन्न हों जो ८ वीं में मांगी गई हैं, कि पहले मन्त्र में ' गौ ' शब्द का अर्थ है ' प्रकाश ' और अगले में ' गाय, ' और यह कि ऋषि मुखसे निकालते ही उसी क्षण यह भूल गया कि किस अर्थ में वह शब्द का प्रयोग कर रहा था।

कहीं कहीं ऐसा है कि प्रार्थना ज्योतिर्मय आनन्द या ज्योतिर्मय समृद्धिके लिये नहीं है, बल्कि प्रकाशमय प्रेरणा या बल के लिये है, ' हे द्यु की पुत्री उषः ! तू हमारे अन्दर सूर्य की रश्मियों के साथ प्रकाशमय प्रेरणाको ला '- ' **गोमतीरिष आवहा दुहितर्दिवः, साकं सूर्यस्य रश्मिभिः।** ५.७९.८ सायणने ' **गोमतीः इषः** ' का अर्थ किया है ' चमकता हुआ अन्न ' × । परन्तु यह स्पष्ट ही एक निरर्थक सी बात लगती है कि उषा से कहा जाय कि, वह सूर्य किरणों के साथ किरणों से युक्त अन्नों को लाये। यदि ' इष् ' का अर्थ अन्न है, तो हमें इस प्रयोग का अभिप्राय लेना होगा।

इन नमूने के उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि, प्रकाश की गौओं का यह अलंकार कैसा व्यापक है और कैसे अनिवार्य रूप से यह वेदके लिये एक अध्यात्मपरक अर्थ की ओर निर्देश कर रहा है। एक सन्देह भी बीच में आ उपस्थित होता है। हमने माना कि, यह एक अनिवार्य परिणाम है कि 'गौ' प्रकाश के लिये प्रयुक्त हुआ है, पर इससे हम क्यों न समझें कि, इसका सीधासाधा मतलब दिन के प्रकाश से है, जैसा कि, वेद की भाषा से निकलता प्रतीत होता है ? वहां किसी प्रतीक की कल्पना क्यों करें, जहां केवल एक अलंकार ही है ? हम उस दूसरे अलंकार की कठिनाई को निमंत्रण क्यों दें, जिस में ' गौ ' का अर्थ तो हो ' उषा का प्रकाश ' और उषाके प्रकाश को ' आन्तरिक ज्योति ' का प्रतीक समझा जाय ? यह क्यों न मान लें कि ऋषि आत्मिक ज्योति के लिये नहीं, बल्कि दिन के प्रकाश के लिये प्रार्थना कर रहे थे ?

ऐसा माननेपर अनेक प्रकार के आक्षेप आते हैं और उन में कुछ तो बहुत प्रबल हैं। यदि हम यह मानें कि, वैदिक सूक्तों की रचना भारत में हुई थी और यह उषा भारत की उषा है और यह रात्रि वही यहां की दस या बारह घण्टे की छोटीसी रात है, तो हमें यह स्वीकार कर के चलना होगा कि, वैदिक ऋषि जंगली थे, अन्धकार के भय से बडे भयभीत रहते थे और समझते थे कि, इस में भूत-प्रेत रहते हैं, वे दिन-रात की परम्परा के प्राकृतिक नियम से जिसका अब तक बहुत से सूक्तों में बडा सुन्दर चित्र खिंचा मिलता है- भी अनभिज्ञ थे और उनका ऐसा विश्वास था कि, आकाश में जो सूर्य निकलता था और उषा अपनी बहिन रात्रि के आलिङ्गन से छूटकर प्रकट होती थी, वह सब केवल उन की प्रार्थनाओं के कारण से ही होता था। पर फिर भी वे देवोंके कार्यमें अटल नियमों का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि, उषा हमेशा शाश्वत सत्य व दिव्य नियम के मार्ग का अनुसरण करती है ! हमें यह कल्पना करनी होगी कि, ऋषि जब उल्लास में भरकर पुकार उठता है ' हम अन्धकार को पार करके दूसरे किनारे पहुंच गये हैं ! ' तो यह केवल दैनिक सूर्योदय पर होनेवाला सामान्य जागना ही है।

जिस की ऋषि ऐसी उत्कण्ठा से स्तुति कर रहा है। हमें यह कल्पना करनी होगी कि, वैदिक लोग **उषा** निकलने पर यज्ञ के लिये बैठ जाते थे और प्रकाश के लिये प्रार्थना करते थे, जबकि वह पहले से ही निकल चुका होता था। और यदि हम इन सब असंभव कल्पनाओं को मान भी लें, तो आगे हमें यह एक स्पष्ट कथन मिलता है

× गोमतीर्गोभिरुपेतानि इषोऽन्नानि आवह आनय— सायण

कि, नौ या दस महीने बैठ चुकने के उपरान्त ही यह हो सका कि आङ्गिरस ऋषियों को खोया हुआ प्रकाश और खोया हुआ सूर्य फिर से मिल पाया। और जो पितरों के द्वारा 'ज्योति' के खोजे जाने का कथन लगातार मिलता है, उस का हम क्या अर्थ लगायेंगे।

"हमारे पितरों ने छिपी हुई ज्योति को ढूंढकर पा लिया, उनके विचारों में जो सत्य था, उस के द्वारा उन्होंने उषा को जन्म दिया- **गूळ्हं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्, सत्य-मन्त्रा अजनयन् उषासम्।** (ऋ. ७।७६।४) यदि हम किसी भी साहित्य के किसी कविता संग्रह में इस प्रकार का कोई पद्य पावें, तो तुरन्त हम उसे एक मनोवैज्ञानिक या आध्यात्मिक रूप दे देंगे, तो फिर वेद के साथ हम दूसरा ही बर्ताव करें, इस में कोई युक्तियुक्त कारण नहीं दीखता।

फिर भी यदि हमें वेद के सूक्तों की प्रकृतिवादी व्याख्या ही करनी है और कोई नहीं, तो भी यह बिलकुल साफ है कि, वैदिक उषा और रात्रि कम से कम भारत की रात्रि और उषा तो नहीं हो सकतीं। यह केवल उत्तरीय ध्रुव के प्रदेशों में ही हो सकता है कि इन प्रकृति की घटनाओं के संबंध में ऋषियों की जो मनोवृत्ति है और अंगिरसों के विषय में जो बातें कही गई हैं, वे कुछ समझ में आनेलायक बन सकें। प्राचीन वैदिक आर्य उत्तरीय ध्रुव से आये, इस कल्पना (वाद) को क्षणभर के लिये मान लेनेपर भी यद्यपि यह बहुत अधिक सम्भव हो सकता है कि, उत्तरीय ध्रुव की स्मृतियां वेद के बाह्य अर्थ में आ गई हों, फिर भी इस कल्पना से प्रकृति से खींचे हुए इन प्राचीन अलंकारों के पीछे जो एक आन्तरिक अर्थ है, उस का निराकरण नहीं हो सकता, नहीं इस के मान लेने से यह सिद्ध हो जाता है कि, उषासंबंधी ऋचाओं की इस की अपेक्षा और अधिक सुसंबद्ध और सीधी किसी दूसरी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है।

उदाहरण के लिये हमारे सामने अश्विनों को कहा गया प्रस्कण्व काण्वका सूक्त [१४६] है, जिस में उस ज्योतिर्मय अन्तःप्रेरणा का संकेत है, जो हमें अन्धकार में से पार कर के परले किनारे पर पहुंचा देती है। उस सूक्त का उषा और रात्रिके वैदिक विचार के साथ घनिष्ट संबंध है। इस में वेद में नियतरूप से आनेवाले बहुत से अलंकारों का संकेत मिलता है; जैसे ऋत के मार्ग का, नदियों को पार करने का, सूर्य के उदय होने का, उषा और अश्विनों में परस्पर संबंध का, सोम-रस के रहस्यमय प्रभाव का और उसके सामुद्रिक रस का।

'देखो, आकाशमें उषा खिल रही है, जिस से अधिक उच्च और कोई वस्तु नहीं है, जो आनन्द से भरी हुई है। हे अश्विनो! तुम्हारी मैं महान् स्तुति करता हूं। + (१) तुम जिन की सिंधु माता है, जो कार्य को पूर्ण करनेवाले हो, जो मन में से होते हुए उस पार पहुंचकर ऐश्वर्यों (रयि) को पा लेते हो, जो दिव्य हो और उस ऐश्वर्य (वसु) को विचार के द्वारा पाते हो। (२) हे समुद्र-यात्रा के देवो जो शब्द को मनोमय करनेवाले हो! यह तुम्हारे विचारों को भंग करनेवाला है- तुम प्रचण्ड रूपसे सोम का पान करो (५) हे अश्विनो! हमें वह ज्योति-ष्मती अन्तःप्रेरणा दो, जो हमें तमस् से निकाल कर पार पहुंचा दे। (६) हमारे लिये तुम अपनी नावपर बैठकर चलो, जिस से हम मन के विचारों से परे परले पार पहुंच सकें। हे अश्विनो! तुम अपने रथ को जोतो (७) अपने उस रथ को जो द्युलोक में इसकी नदियों को पार करने के लिये एक बडे पतवारवाले जहाज का काम देता है। विचार के द्वारा आनन्द की शक्तियां जोती गई हैं। (८) जलों के स्थान पर द्युलोक में आनन्दरूपी सोम-शक्तियां ही वह ऐश्वर्य [वसु] है। पर अपने उस आवरण को तुम कहां रख दोगे, जो तुमने अपने आपको छिपने के लिये बनाया है? [९] नहीं,

---

+ एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत्। [ऋ० १।४६।१]
या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम्। धिया देवा वसुविदा ॥ २ ॥
आदारो वां मतीनां नासत्या मतवचसा। पातं सोमस्य धृष्णुया ॥ ५ ॥
या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः। तामस्मे रासाथामिषम् ॥ ६ ॥
आ नो नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे। युञ्जाथामश्विना रथम् ॥ ७ ॥
अरित्रं वां दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः। धिया युयुज्र इन्दवः ॥ ८ ॥
दिवस्कण्वास इन्दवो वसु सिन्धूनां पदे। स्वं व्रिं कुह धित्सथः ॥ ९ ॥

सोम का आनंद लेने के लिये प्रकाश उत्पन्न हो गया है,– सूर्य ने जो कि, अन्धकारमय था, अपनी जिह्वा को हिरण्य की ओर लपलपाया है [१०] ऋत का मार्ग प्रकट हो गया है, जिस से हम उस पार पहुंचेंगे; द्यु के बीच का सारा खुला मार्ग दिखलाई पड गया है । [११] खोजनेवाला अपने जीवन में अश्विनों के ज्यों ज्यों सोम के आनन्दमें तृप्ति-लाभ करते हैं, त्यों त्यों उनके निरन्तर एक के बाद दूसरे आविर्भाव की ओर प्रगति किये जा रहा है ! [१२] उस सूर्य में जिस में ज्योति ही ज्योति है, तुम निवास करते हुए [या चमकते हुए] सोम-पानके द्वारा, वाणीके द्वारा हमारी मानवीयता में सुख का सर्जन करनेवाले के तौरपर आओ । [१३] तुम्हारी कीर्ति और विजयके अनुरूप उषा हमारे पास आती है, जब तुम हमारे सब लोकों में व्याप्त हो जाते हो और रात्रि में से सत्यों को विजय कर लाते हो । [१४] दोनों मिलकर हे अश्विनो! सोम-पान करो, दोनों मिलकर हमारे अन्दर शक्ति को प्राप्त कराओ उन विस्तारों के द्वारा जिन की पूर्णता सदा अविच्छिन्न रहती है । [१५]×

यह इस सूक्त का सीधा और स्वाभाविक अर्थ है और हमें इस का भाव समझने में कठिनाई नहीं होगी, यदि हम वेद के मूलभूत विचारों और अलङ्कारों को स्मरण रखेंगे । 'रात्रि' स्पष्ट ही आन्तरिक अन्धकार के लिये आलंकारिक रूप से कहा गया है; उषा के आगमन के द्वारा रात्रि में से 'सत्यों' को जीतकर हस्तगत किया जाता है। यही उस सूर्यका, सत्यके सूर्य का, उदय होना है, जो अन्धकार के बीच में खो गया था– वही खोये हुए सूर्य का हमारा परिचित अलंकार जिस में उसे देवों और ऋषियोंने फिर से पाया है । और अब यह अपनी अग्नि की जिह्वा को स्वर्णिल ज्योति के प्रति– 'हिरण्य' के प्रति लपलपाता है ।

सुवर्ण उच्चतर ज्योति का स्थूल प्रतीक है, यह सत्य का सोना है और यही वह निधि है, न कि कोई सोनेका सिक्का, जिस के लिये वैदिक ऋषि देवों से प्रार्थना करते हैं । आन्तरिक अन्धकार में से निकाल कर ज्योति में लाने के इस महान् परिवर्तन को अश्वी करते हैं, जो मन की और प्राण-शक्तियों की प्रसन्नतायुक्त ऊर्ध्वगति के देवता हैं, और इसे वे इस प्रकार करते हैं कि, आनन्द का अमृतरस मन और शरीर में उण्डेला जाता है और वहां वे इस का पान करते हैं । वे व्यंजक शब्द को मनोमय रूप देते हैं, वे हमें विशुद्ध मन के उस स्वर्ग में ले जाते हैं, जो इस अन्धकार से परे है और वहां वे विचार के द्वारा आनन्द की शक्तियों को काम में लाते हैं ।

पर वे द्यु के जलों को भी पार कर के उससे भी ऊपर चले जाते हैं, क्योंकि सोम की शक्ति उन्हें सब मानसिक रचनाओं को तोड डालने में सहायता देती है और वे इस आवरण को भी उतार फेंकते हैं । वे मन से परे चले जाते हैं और सबसे अन्तिम चीज जो वे प्राप्त करते हैं वह 'नदियों का पार करना' कही गई है, जो कि विशुद्ध मनके द्युलोकमें से गुजरने की यात्रा है, वह यात्रा है, जिस से सत्य के मार्ग पर चलकर किनारे पर पहुंचा जाता है और जब तक अन्त में हम उच्चतम पद, परमा परावत्पर नहीं पहुंच जाते, तब तक हम इस महान् मानवीय यात्रा से विश्राम नहीं लेते ।

हम देखेंगे कि, न केवल इस सूक्त में बल्कि सब जगह उषा सत्य को लानेवाली के रूप में आती है, स्वयं यह सत्य की ज्योति से जगमगानेवाली है । वह दिव्य उषा है और यह भौतिक उषा (प्रभात होना) उस की केवल छायामात्र है और प्राकृतिक जगत् में उस का प्रतीक है ।

उषा सत्य के पथ की दृढ अनुगामिनी है और चूंकि इस बात का उसे ज्ञान या बोध रहता है, इसलिये वह असीमता को, बृहत् को, जिसकी कि वह ज्योति है, सीमित नहीं करती। यही इस मन्त्र का असली अभिप्राय है, यह बात ५ मण्डल की एक ऋचा (ऋ. ५।८०।१) से निर्विवाद स्पष्ट रूपसे सिद्ध

× अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः । व्यख्यज्जिह्वयासितः ॥ १० ॥
अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया । अदर्शि वि स्रुतिर्दिवः ॥ ११ ॥
तत्तदिदश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति । मदे सोमस्य पिप्रतोः ॥ १२ ॥
वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा । मनुष्वच्छंभू आ गतम् ॥ १३ ॥
युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् । ऋता वनथो अक्तुभिः ॥ १४ ॥
उभा पिबतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम् । अविद्रियाभिरूतिभिः ॥ १५ ॥

हो जाती है और इस में भूलचूक की कोई संभावना नहीं रह जाती। इस में उषा के लिये कहा है- **द्युतद्यामानं बृहतीम् ऋतेन ऋतावरीं, स्वरावहन्तीम्।** "वह प्रकाशमय गति-वाली है, ऋतसे महान् है, ऋत में सर्वोच्च (या ऋत से युक्त) है, अपने साथ स्वःको लाती है।" यहाँ हम बृहत् का विचार, सत्य का विचार, स्वर्लोक के सौर प्रकाश का विचार पाते हैं, और निश्चय ही वे सब विचार इस प्रकार घनिष्ठता और दृढता से एकमात्र भौतिक उषा के साथ सम्बद्ध नहीं रह सकते। इसके साथ हम ७।७५।१ के वर्णन की भी तुलना कर सकते हैं- **व्युषा आवो दिविजा ऋतेन, आविष्कृण्वाना महिमानमागात्।** "द्यौमें प्रकट हुई उषा सत्यके द्वारा वस्तुओं को खोल देती है, वह महिमा को व्यक्त करती हुई आती है।" यहाँ पुनः हम देखते हैं कि, उषा सत्य की शक्ति के द्वारा सब वस्तुओं को प्रकट करती है और इसका परिणाम यह बताया गया है कि, एक प्रकार की महत्ता का आविर्भाव हो जाता है।

अन्तमें इसी विचार को हम आगे भी वर्णित किया गया पाते हैं, बल्कि यहाँ सत्यके लिए 'ऋत' के बजाय सीधा 'सत्य' शब्द ही है, जोकि 'ऋतम्' की तरह दूसरा अर्थ किये जा सकने की सम्भावनामें डालनेवाला भी नहीं है- **सत्या सत्येभिर्मघवन्महद्भिर्देवी देवेभिः।** (ऋ० ७।७५।७) 'उषा अपनी सत्ता में सच्चे देवों के साथ सच्ची है, महान् देवों के साथ महान् है।' वामदेव ने अपने एक सूक्त ४.५१ में उषा के इस 'सत्य' पर बहुत बल दिया है; क्योंकि वहाँ वह उषाओं के बारे में केवल इतना ही नहीं कहता कि, 'तुम सत्य के द्वारा जोते हुए अश्वों के साथ जल्दी से लोकों को चारों ओर से घेर लेती हो, ×' **ऋतयुग्भिः अश्वैः** (तुलना करो ऋ. २।६५।२ +) परन्तु वह उनके लिए कहता है- **भद्रा ऋतजातसत्याः** (ऋ. ४।५१।७) 'वे सुखमय हैं और सत्यसे उत्पन्न हुई सच्ची हैं।' और एक दूसरी ऋचा में वह उनका वर्णन इस रूप में करता है कि, वे देवी हैं जो कि ऋतके स्थानमें प्रबुद्ध होती हैं। *"

'भद्रा' और 'ऋत' का यह निकट सम्बन्ध आप्रियों कहे गये मधुच्छन्दस् के सूक्त में इसी प्रकार का जो विचारों का परस्पर सम्बन्ध है, उस का हमें स्मरण करा देता है। वेद की अपनी आध्यात्मिक व्याख्या में हम प्रत्येक मोड पर इस प्राचीन विचार को पाते हैं कि 'सत्य' आनन्द को प्राप्त करने का मार्ग है। तो उषाको, सत्य की ज्योति से जगमगाती उषा को, भी अवश्य सुख और कल्याण को लानेवाला होना चाहिए। उषा आनन्द को लानेवाली है, यह विचार वेद में हम लगातर पाते हैं और वशिष्ठने (ऋ. ७।८१।३) में इसे बिल्कुल स्पष्ट रूप में कह दिया है- **या वहसि पुरुस्पार्हं रयिं न दाशुषे मयः।** "तू जो देनेवाले को कल्याण-सुख प्राप्त कराती है, जो कि अनेक रूप है और स्पृहणीय आनन्द रूप है"

वेद का एक सामान्य शब्द 'सूनृता' है जिसका अर्थ सायण ने 'मधुर और सत्य वाणी' किया है, परन्तु प्रतीत होता है कि, इसका प्रायः और भी अधिक व्यापक अभिप्राय 'सुखमय सत्य' है। उषा का कहीं कहीं यह कहा गया है कि, वह 'ऋतावरी' है, सत्य से परिपूर्ण है और कहीं उसे 'सूनृतावती' कहा गया है। वह आती है सच्चे और सुखमय शब्दों को उच्चरित करती हुई "**सूनृता ईरयन्ती**"। जैसे उस का वह वर्णन किया गया है कि, वह जगमगाती हुई गौओं की नेत्री है और दिनों की नेत्री है, वैसे ही उसे सुखमय सत्यों की प्रकाशवती नेत्री कहा गया है। **भास्वती नेत्री सूनृतानाम्।** (ऋ० १।९२।७) और वैदिक ऋषियों के मनमें ज्योति, किरणों या गौओं के विचार और सत्य के विचार में जो परस्पर गहरा सम्बन्ध है, वह एक दूसरी ऋचा (ऋ० १।९२।१४)में और भी अधिक स्पष्ट तथा असन्दिग्ध रूप से पाया जाता है- **गोमति अश्वावति विभावरि... ... ... सूनृतावति।** "हे उषा, जो तू अपनी जगमगाती हुई गौओंके साथ है, अपने अश्वोंके साथ है अत्यधिक प्रकाशमान है और सुखमय सत्योंसे परिपूर्ण है।" इसी जैसा पर तो भी इससे अधिक स्पष्ट वाक्यांश (ऋ. १।४८।२)में है, जो इन विशेषणों के इस प्रकार रखे जानेके अभिप्राय को सूचित

× यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भिरश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः। (ऋ. ४।५१।५)

+ वि तद् ययुरुरुणयुग्भिरश्वैश्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः। (ऋ. ६।६५।२)

* ऋतस्य देवीः सदसो बुधानाः। (ऋ. ४।५१-८)

कर देता है– **गोमतीरश्वावतीर्विश्वसुविदः**। "उषाएं जो अपनी ज्योतियों (गौओं) के साथ हैं, अपनी त्वरितगतियों (अश्वों) के साथ हैं और जो सब वस्तुओं को ठीक प्रकार से जानती हैं।"

वैदिक उषा के आध्यात्मिक स्वरूपका निर्देश करनेवाले जो उदाहरण ऋग्वेद में पाये जाते हैं, वे किसी भी प्रकार वहीं तक परिमित नहीं हैं। उषा को निरन्तर इस रूप में प्रदर्शित किया गया है कि, वह दर्शन, बोध, ठीक दिशामें गति को जागृत करती है। गोतम रहूगण कहता है, "वह देवी सब भुवनोंको सामने होकर देखती है, वह दर्शनरूपी आँख अपनी पूर्ण विस्तीर्णता में चमकती है, ठीक दिशा में चलने के लिए सम्पूर्ण जीवन को जगाती हुई वह सब विचारशील लोगों के लिए वाणी को प्रकट करती है।" × **विश्वस्य वाचमविदन् मनायोः**। (ऋ० १।९२।९)

यहां हम उषा को इस रूप में पाते हैं कि, वह जीवन और मनको बंधन मुक्त करके अधिकसे अधिक पूर्ण विस्तार में पहुंचा देती है और यदि हम इस उपर्युक्त निर्देश को यहीं तक सीमित रखें कि, यह केवल भौतिक उषा के उदय होने पर पार्थिव जीवन के पुनः जाग उठने का ही वर्णन है, तो हम ऋषि के चुने हुए शब्दों और वाक्यांशों में जो बल है, उस सारे की उपेक्षा ही कर रहे होंगे और यदि यह हो कि, उषा से लाये जानेवाले दर्शन के लिए यहाँ जो शब्द प्रयुक्त किया गया है, 'चक्षुः' उसे केवल भौतिक दर्शनशक्ति को ही सूचित कर सकनेयोग्य माना जाय, तो दूसरे सन्दर्भोंमें हम इसके स्थान पर 'केतु' शब्द पाते हैं, जिसका अर्थ है बोध, मानसिक चेतना में होनेवाला बोधयुक्त दर्शन, ज्ञान की एक शक्ति। उषा है 'प्रचेताः' इस बोधयुक्त ज्ञान से पूर्ण। उषाने जो कि ज्योतियों की माता है, मन के इस बोधयुक्त ज्ञान को रचा है, **गवां जनित्री अकृत प्र केतुम्** (ऋ. १.१२४.५)। वह स्वयं ही दर्शनरूप है– "अब बोधमय दर्शनकी उषा खिल उठी है, जहाँ कि पहले कुछ नहीं (असत्) था," **वि नूनमुच्छादसति प्र केतुः** (ऋ. १.१२४-११)। वह अपनी बोधयुक्त शक्ति के द्वारा सुखमय सत्योंवाली है, **चिकित्सत् सूनृतावरि**। (ऋ. ४.५२.४)

यह बोध, यह दर्शन, हमें बताया गया है, अमरत्व का है– **अमृतस्य केतुः** (ऋ.३.६१.३)। दूसरे शब्दोंमें यह उस सत्य और सुख की ज्योति है, जिनसे उच्चतर या अमर चेतन का निर्माण होता है। रात्रि वेद में हमारी उस अन्धकारमयी चेतना का प्रतीक है जिस के ज्ञान में अज्ञान भरा पड़ा है और जिसके संकल्प तथा क्रिया में स्खलन पर स्खलन होते रहते हैं और इसलिए जिसमें सब प्रकार की बुराई, पाप तथा कष्ट रहते हैं। प्रकाश है ज्योतिर्मयी उच्चतर चेतना का आगमन जो कि सत्य और सुख को प्राप्त कराता है। हम निरन्तर 'दुरितम्' और 'सुवितम्' इन दो शब्दों का विरोध पाते हैं। 'दुरितम्' का शाब्दिक अर्थ है स्खलन, गलत रास्ते पर पर जाना और औपचारिक रूप से यह सब प्रकार की गलती और बुराई, सब पाप, भूल और विपत्तियों का सूचक है। 'सुवितम्' का शाब्दिक अर्थ है, ठीक और भले रास्ते पर जाना और यह सब प्रकारकी अच्छाई तथा सुख को प्रकट करता है और विशेषकर इस का अर्थ वह सुख-समृद्धि है, जो कि सही मार्ग पर चलनेसे मिलती है। सो वसिष्ठ इस देवी उषाके विषयमें (ऋ.७.७८.२) में इस प्रकार कहता है– "दिव्य उषा अपनी ज्योति से सब अन्धकारों और बुराइयों को हटाती हुई आ रही है।" (**विश्वा तमांसि दुरिता**) और बहुतसे मन्त्रोंमें इस देवीका वर्णन इस रूपमें किया गया है कि, यह मनुष्योंको जगा रही है, प्रेरित कर रही है, ठीक मार्ग की ओर, सुख की ओर (**सुवितायं**)।

इसलिये वह केवल सुखमय सत्यों की ही नेत्री, किंतु हमारी आध्यात्मिक समृद्धि और उल्लास की भी नेत्री है, उस आनन्दको लानेवाली है, जिस तक मनुष्य सत्य के द्वारा पहुँचता है या जो सत्यके द्वारा मनुष्य के पास लाया जाता है, (**एषा नेत्री राधसः सूनृतानाम्**। (ऋ. ७.७६.७) यह समृद्धि जिस के लिए ऋषि प्रार्थना करते हैं, भौतिक दौलतों के अलङ्कार से वर्णन की गई है, यह '**गोमद् अश्वावद् वीरवद्**' है, या यह '**गोमद् अश्वावद् रथवच्च राधः**' है। गौ (गाय), अश्व (घोडा), प्रजा या अपत्य (सन्तान), नृ या वीर (मनुष्य या शूरवीर), हिरण्य (सोना), रथ (सवारीवाला रथ), अन्नः

× विश्व नि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति।
विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः॥ (ऋ० १।९२।९)

* उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिताप देवी। (ऋ० ७।७८।२)

(भोजन या कीर्ति)- याज्ञिक साम्प्रदायवालों की व्याख्या के अनुसार ये ही उस सम्पत्ति के अंग हैं, जिस की वैदिक ऋषि कामना करते थे। यह लगेगा कि, इससे अधिक ठोस दुनियावी पार्थिव और भौतिक दौलत कोई और नहीं हो सकती थी, निस्सन्देह ये ही वे ऐश्वर्य हैं, जिन के लिए कोई बेहद भूखी, पार्थिव वस्तुओं की लोभी, कामुक, जंगली लोगोंकी जाति अपने आदि देवोंसे याचना करती। परन्तु हम देख चुके हैं कि 'हिरण्य' वेदमें भौतिक सोने की अपेक्षा दूसरे ही अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। हम देख आए हैं कि ' गौएं ' निरन्तर उषा के साथ सम्बद्ध होकर बार बार आती हैं, कि यह प्रकाश के उदय होने का आलङ्कारिक वर्णन होता है और हम यह भी देख चुके हैं कि, इस प्रकाश का सम्बन्ध मानसिक दर्शन के साथ है और उस सत्य के साथ है जो कि सुख लाता है। और अश्व, घोड़ा, आध्यात्मिक भावों के निर्देशक इन मूर्त अलंकारों में सर्वत्र गौ के प्रतीकात्मक अलंकार के साथ जुड़ा हुआ आता है; उषा ' **गोमती अश्वावती** ' है। वसिष्ठ ऋषिकी एक ऋचा (ऋ० ७।७७।३) है, जिसमें वैदिक मंत्र का प्रतीकात्मक अभिप्राय बड़ी स्पष्टता और बड़े बल के साथ प्रकट होता है-

देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती, श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम्। उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता, चित्रमघा विश्वमनु प्रभूता॥

' देवों की दर्शनरूपी आँख को लाती हुई, पूर्ण दृष्टिवाले सफ़ेद घोड़ेका नेतृत्व करती हुई सुखमय उषा रश्मियोंद्वारा व्यक्त होकर दिखाई दे रही है, यह अपने चित्रविचित्र ऐश्वर्योंसे परिपूर्ण है, अपने जन्मको सब वस्तुओंमें अभिव्यक्त कर रही है। ' यह पर्याप्त स्पष्ट है कि ' सफ़ेद घोड़ा ' पूर्णतया प्रतीकरूप ही है × (सफ़ेद घोड़ा यह मुहावरा अग्निदेवता के लिए प्रयुक्त किया गया है, जो कि अग्नि + ' द्रष्टा का संकल्प ' है कविक्रतु है, दिव्य संकल्पकी अपने कार्यों को करने की पूर्ण दृष्टि-शक्ति है। (ऋ.५।१।४) और ये ' चित्र-विचित्र ऐश्वर्य ' भी आलंकारिक ही हैं, जिन्हें कि वह अपने साथ लाती है, निश्चय ही सबका अभिप्राय भौतिक धन-दौलत से नहीं है।

उषाका वर्णन किया गया है कि यह ' **गोमती अश्वावती वीरवती** ' है और क्योंकि उसके साथ लगाये गये ' गोमती ' और ' अश्वावती ' ये दो विशेषण प्रतीकरूप हैं और इन का अर्थ यह नहीं है कि, यह ' भौतिक गौओं और भौतिक घोड़ोंवाली ' है, बल्कि यह अर्थ है कि यह ज्ञान की ज्योति से जगमगानेवाली और शक्ति की तीव्रतासे युक्त है, तो 'वीरवती' का अर्थ भी यह नहीं हो सकता कि यह ' मनुष्योंवाली है या शूर वीरों, नौकरचाकरों या पुत्रों से युक्त ' है, बल्कि इस की अपेक्षा इस का अर्थ यह होगा कि, यह विनय शील शक्तियों से संयुक्त है अथवा यह शब्द बिल्कुल इसी अर्थ में नहीं, तो कमसे कम किसी ऐसे ही और प्रतीकरूप अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। यह बात (ऋ० १.११३.१८)में बिलकुल स्पष्ट हो जाती है। ' **या गोमतीरुषसः सर्ववीरा ... ... ता अश्वदा अश्नवत् सोम सुत्वा।** ' इस का यह अर्थ है कि, ' ये उषाएं जिन में कि भौतिक गायें हैं और सब मनुष्य या सब नौकर-चाकर हैं, सोम अर्पित कर के मनुष्य उन का भौतिक घोड़ों को देनेवाली के रूप में उपभोग करता है।' उषा देवी यहाँ आन्तरिक उषा है, जो कि मनुष्य के लिए उस की बृहत्तम सत्ता की विविध पूर्णताओं को, शक्ति को, चेतना को और प्रसन्नता को लाती है; यह अपनी ज्योतियों से जगमग है, सब संभव शक्तियों और बलों से युक्त है, यह मनुष्य को जीवन-शक्तिका पूर्ण बल प्रदान करती है, जिस से कि यह उस बृहत्तर सत्ता के असीम आनन्द का स्वाद ले सके।

अब हम अधिक देर तक '**गोमद् अश्वावद् वीरवद् राधः**' को भौतिक अर्थों में नहीं ले सकते; वेदकी भाषा ही हमें इस से बिलकुल भिन्न तथ्य का निर्देश कर रही है। इस कारण

× घोड़ा प्रतीकरूप ही है, यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है दीर्घतमस् के सूक्तों में जो कि यज्ञ के घोड़े के सम्बन्ध में हैं, अश्वदधिक्रावन् विषयक भिन्न भिन्न ऋषियों के सूक्तों में और फिर बृहदारण्यक उपनिषद् के आरम्भ में जहां यह जटिल आलङ्कारिक वर्णन है, जिसका आरम्भ " उषा घोड़े का सिर है, " (उषा या अश्वस्य मेध्यस्य शिरः,) इस वाक्य से होता है।

+ अग्निमञ्छा देवयतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति।
यदीं सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नाम्॥ (ऋ० ५।१।४)

देवोंद्वारा दी गई इस सम्पत्ति के अन्य अंगों को भी हमें इसी की तरह अवश्यमेव आध्यात्मिक अर्थों में ही लेना चाहिए; सन्तान, सुवर्ण, रथ ये प्रतीकरूप ही हैं, 'श्रवः' कीर्ति या भोजन नहीं है, बल्कि इस में आध्यात्मिक अर्थ अन्तर्निहित है और इस का अभिप्राय है, वह उच्चतर दिव्य ज्ञान जो कि इंद्रियों या बुद्धि का विषय नहीं है, बल्कि जो सत्य की दिव्य श्रुति है और सत्य के दिव्य दर्शन से प्राप्त होता है, 'रयिं दीर्घश्रुत्तमम्' 'रयिं श्रवस्युम्' सत्ता की यह सम्पन्न अवस्था है, यह आध्यात्मिक समृद्धि से युक्त वैभव है, जो कि दिव्य ज्ञान की ओर प्रवृत्त होता है (श्रवस्यु) और जिस में उस दिव्य शब्द के कम्पनों को सुननेके लिये सुदीर्घ, दूर तक फैली श्रवणशक्ति है, जो दिव्य शब्द हमारे पास असीम के प्रदेशों (दिशः) से आता है। इस प्रकार उषाका यह उज्ज्वल अलंकार हमें वेदसम्बन्धी उन सब भौतिक, कर्मकाण्डिक, अज्ञानमूलक भ्रांतियों से मुक्त कर देता है, जिनमें कि यदि हम फंसे रहते तो वे हमें असंगति और अस्पष्टता की रात्रि में ठोकरों पर ठोकरें खिलाती हुई एक से दूसरे अन्धकूपमें ही गिराती रहतीं, वह हमारे लिए बन्द द्वारों को खोल देती है और वैदिक ज्ञान के हृदय के अन्दर हमारा प्रवेश करा देती है।

उषा सूक्तों का यह आध्यात्मिक रहस्य श्री योगी अरविन्द जी की खोजसे प्राप्त हुआ है जिसे पाठकोंको मननपूर्वक अपनाना योग्य है।

(३)

उषादेवताका वर्णन

उषा देवताका वर्णन कई विभिन्न रीतियोंसे भी देखने योग्य है। उषके सूक्तों में काव्य का आलंकारिक वर्णन तो बडा ही मनोरंजक और हृदयंगम है हि परंतु इसकी अन्यभी कुछ विशेषताएं है जो देखने योग्य हैं।

सूर्योदयके पूर्व उषाएँ

(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः)

तानीदहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य।
यतः परि जार इवाचरन्ती उषः दृक्षे न पुनर्यतीव॥
(१४९) ऋ. ७।७६।३)

'(सूर्यस्य प्राचीनं या उदिता) सूर्यके पूर्व जो उदय हुए थे, (तानि अहानि बहुलानि इत् आसन्) ऐसे वे उषःकाल निःसन्देह बहुत ही थे।'

इस मंत्र में 'सूर्योदयके पूर्व अनेक उषःकाल अथवा (अहानि) अनेक दिन व्यतीत हुए' ऐसा वर्णन किया है। क्या कभी हमें इसका अनुभव है? नहीं, हमें अपने देशमें तो एक उषःकाल आनेके बादही उसी दिन प्रत्यक्ष सूर्य उगता हुआ दिखाई देता है। सूर्य उदयके पूर्व बहुत दिन व्यतीत हुए और बहुत दिन व्यतीत होनेतक सूर्य का उदय नहीं हुआ, ऐसा इस देशमें कभी नहीं होता है। ये बहुत दिन उषःकालके ही हैं, जैसी उषा लाल वर्णके प्रकाशसे युक्त होती है, वैसेही ये दिन हैं। सूर्यप्रकाशवाले ये दिन नहीं हैं। क्यों कि इस सूक्तकी देवता उषा है और इस मंत्रमें भी 'उषः' संबोधन करके ही वर्णन है, देखिये इसी मंत्रका उत्तरभाग–

'हे उषा देवी! तूं जारके समान आचरण करनेवाली दीखती है, संन्यासिनी यती स्त्रीके समान तूं दीखती नहीं। ऐसा उषाको संबोधन करके कहा है। यार की प्रतीक्षा करती हुई जैसी कोई स्त्री रहती है, वह अपने प्रियकी प्रतीक्षा करती रहती है, वह पति न आया तो भी आतुरताके साथ वह स्त्री प्रतीक्षा करतीही रहती है, परंतु अपने प्रियपर क्रोध करके संन्यासिनी बन कर उसको नहीं छोडती, तद्वत् यह उषा है।

यहां सूर्य उदय होनेतक अनेक दिन उषःकाल ही उषःकाल रहनेका स्पष्ट वर्णन है। हमारे देशमें घण्टाभर तक उषःकाल रहता है, पश्चात् सूर्यका उदय होता है। अतः यह वर्णन यहां के उषःकालपर घटता ही नहीं। यहां तो सूर्योदयके पूर्व बहुत उषःकाल आते नहीं, प्रतिदिन उषा सूर्य की प्रतीक्षा करती रहती है, पर सूर्य देव उसके पास नहीं आते, ऐसा

यहां नहीं होता, अतः उषा अपने प्रियकी प्रतीक्षा बहुत दिन करती रही, पर सूर्य देव नहीं आये तथापि वह उषा यती (संन्यासिनी) बनी नहीं, अपने प्रिय पर पूर्ववत् प्रेमही करती रही, यह वर्णन यहांके उषःकालका नहीं हो सकता।

जिस देशमें सूर्योदयके पूर्व अनेक दिन उषःकाल रहता होगा, वहीं पर ऐसी कल्पना कवि कर सकता है। और वहीं यह कल्पना प्रत्यक्ष सृष्टीमें दीख सकती है। जहां घण्टाभर ही उषःकाल रहता होगा, वहां सूर्योदय के पूर्व बहुत दिन उषः काल रहा, ऐसा वर्णन नहीं हो सकता।

यहां '**बहुलानि अहानि**' पद है, अनेक दिन व्यतीत होनेके पश्चात् वहां सूर्यदेवका दर्शन होता है। यहां दिनका अर्थ पृथ्वीका अपने इर्दगिर्द भ्रमणका काल है। आकाशमें जो तारका मण्डल दीखता है वह भ्रमण करतासा दीखता है। उसके २४ घण्टोंके परिभ्रमणसे दिनकी कल्पना होती है! ऐसे बहुत दिन व्यतीत होने तक यह उषा सूर्यकी प्रतीक्षा करती रहती है, और पश्चात् सूर्य देव आते हैं और उषा सूर्यदेवके साथ संलग्न होती है।

यहां '**बहुलानि अहानि**' पद है। इस वर्णनसे कितने दिन लेने योग्य हैं, इसका भी यहां विचार करना चाहिये। यदि १० दिन व्यतीत हो जायँ, तो एक महिना व्यतीत हुआ ऐसा कहेंगे, इसलिये जिस कारण यहां 'अहानि' अर्थात् 'दिन' ही व्यतीत हुए ऐसा कहा है, उस कारण हम कह सकते हैं कि, तीस दिनोंसे कम ही ये उषःकाल होंगे। यदि आठ दस दिनतक ही यह उषःकाल रहता होगा, तो उसके लिये 'बहुत दिन' ऐसा प्रयोग कोई नहीं करेगा, क्योंकि सात संख्यातक संख्या 'बहुत दिन' कहने योग्य नहीं होती। इसलिये ३० दिन भी नहीं और दस दिन तक भी नहीं, अर्थात् बीससे कुछ अधिक दिन ऐसा यह उषाका अवधि '**बहुलानि अहानि**' पदोंसे लेना योग्य है।

संस्कृत व्याकरणके अनुसार '**बहुलानि अहानि**' (बहुत दिन) का अर्थ कमसे कम तीन दिन और अधिकसे अधिक जितने भी होंगे उतने दिन बोधित होंगे। अतः व्याकरण हमारी इतनीहि यहां सहायता करता है और कहता है कि इन पदोंसे कमसे कम तीन दिनोंका अवधि निर्धारित हो सकता है, ज्यादा कितने दिन ले सकते है यह व्याकरण नहीं कह सकता। पर केवल तीन ही दिनोंके लिये 'बहुतही दिन' ऐसा कोई भी नहीं कहता। इसलिये यह अवधि निश्चयसे तीन दिनोंसे अधिक है इसमें संदेह नहीं, अनेक उषाओंका वर्णन वेदमंत्रोंमें भी है, अतः उषाका बहुवचनमें प्रयोग अनेक वेदमंत्रोंमें दिखाई देता है—

स्पार्हा वसूनि तमसापगूळ्हा
आविष्कृण्वन्त्युषसो विभातीः॥ (६४; ऋ.१।११३।६)

'स्पृहणीय पदार्थ जो गूढ अन्धकारसे ढंके थे, उन सबको ये अनेक (विभातीः उषसः आविष्कृण्वन्ति) प्रकाशनेवाली उषायें प्रकट कर रही हैं।' अर्थात् ये अनेक उषायें आकर सूर्य आनेके पूर्वही विश्वान्तर्गत नानापदार्थोंको हमारे सामने प्रकट करती हैं। इसी सूक्तका अगला मंत्र इस मंत्रका आशय अधिक स्पष्ट कर रहा है-

परा च यन्ति पुनरा च यन्ति
भद्रा नाम वहमाना उषासः। (७०; ऋ.१।१२३।१२)

'ये (उषासः) उषायें (भद्रा नाम वहमानाः) कल्याणकारक यशका धारण करती हुई (परा यन्ति) जातीं हैं और (पुनः च आयन्ति) फिर वापस आतीं हैं।' उषःकाल चला गयासा दीखता है और उसी समय फिर नया शुरू होने लगता है। यह वर्णन बडा महत्त्व रखनेवाला वर्णन है। हमारे देशमें एक बार उषःकाल गया तो दिन आता है, दिनके बाद सायंकाल और उसके बाद रात्री व्यतीत होती है, इसतरह २४ घण्टे व्यतीत होते हैं, तत्पश्चात् दूसरी उषा आती है। अतः यह वर्णन यहांका नहीं है जिस भूभाग पर एकबार उषा गयी तो उसी समय पुनः दूसरी उषःकाल आनेकी संभावना हो, वहीं यह वर्णन प्रत्यक्ष दीख सकता है, और वहीं सूर्योदयके पूर्व अनेक उषाओंका होना भी संभव हो सकता है। ऐसी कई उषायें लगातार आतीं हैं और पश्चात् सूर्य देव उगते हैं, वहीं कवि कह सकता है कि, 'एक उषा गयी और फिरसे दूसरी उषा पुनः आगयी।' इसी तरह और भी वर्णन देखिये-

क इदासां कतमा पुराणी ? (९६; ऋ.४।५१।६)

'इन सब उषाओंमें कौनसी भला उषा पुरानी है?' यह प्रश्न तब हो सकता है कि, जब अनेक उषःकाल साथसाथ आते हों। हमारे भारतवर्षमें तो एकही उषःकाल रहता है इस लिये इसमें पुराना और नया ऐसा भेद नहीं हो सकता, परंतु न्यून प्रकाशवाला और अधिक प्रकाशवाला ऐसे अनेक क्रमपूर्वक

उषःकाल जहां होंगे, वहीं एक उषःकाल पुराना और दूसरा नया यह भाषा संभवनीय हो सकती है। इसीतरह और भी-

ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुः। (८०; ऋ. ४।५१।७)

'वे नि.संदेह वे कल्याणकारक उषःकाल (पुरा आसुः) पहिले हो चुके थे।' यहां अनेक संख्यामें कुछ उषःकाल पहिले हो चुके ऐसा कहा है। अनेक संख्यामें उषःकालोंका होना यह जहां संभवनीय होगा, वहीं यह वर्णन हो सकता है। ये सब मंत्र किसी देशमें प्रत्यक्ष दीखनेवाले दृश्यका वर्णन कर रहे हैं। उषा दृश्यमान है, हमारे देशमें प्रतिदिन आती है, परंतु यहां अनेक उषाएं सूर्योदयके पूर्व नहीं आतीं और नहीं इनमें एक प्राचीन और दूसरी अर्वाचीन कही जा सकती है। और जो वर्णन इन उषा सूक्तोंमें है, वहां अनेक उषाएं सूर्योदयके पूर्व होती हैं, और ये उषाएं एकके पीछे दूसरी ऐसी क्रमपूर्वक आती हैं, देखिये—

क्रमसे उषाओंका आना

आसां पूर्वासां अहसु स्वसॄणां
अपरा पूर्वां अभ्येति पश्चात्।
ताः प्रत्नवन्नव्यसीः नूनं अस्मे
रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः॥ (८०; ऋ. १।१२४।९)

'(आसां पूर्वासां स्वसॄणां अहसु) इन पहिले बहिनरूपी अनेक उषाओंके दिनोंमें (पूर्वां पश्चात् अपरा अभ्येति) पहिली उषाके पश्चात् ही दूसरी उषा उसके पीछेसेही लगातार आती रहती है। (ताः) वे (नव्यसीः उषासः) नयीं उषाएं (प्रत्नवत्) पुराणी उषाओंके समानही निश्चय पूर्वक (अस्मे) हमें (रेवत् सुदिना उच्छन्तु) ऐश्वर्य युक्त उत्तम दिन देवें।'

इस मन्त्रमें 'पूर्वां पश्चात् अपरा अभि एति' यह वाक्य बडे महत्त्वका है इसका आशय ऐसा है कि- 'पूर्व उषाके पश्चात् ही, उस उषाके पीछेसेही दूसरी उषा सब प्रकारसे आती हैं। एक उषा समाप्त हुई तो दूसरी उषा शुरू होती है। यह दृश्य इस देशका नहीं है।

यहां 'उषा' पद अनेक वचनमें है, इससे अनेक उषाओं का होना सिद्ध है, अनेक उषाएं होनेके कारण ही उनको इस मंत्रने (स्वसॄः) बहिनें कहा है। एक पिताकी अनेक पुत्रियाँ आपसमें बहिनें होती हैं। सूर्य आनेवाला है, उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अनेक उषाएं आपसमें बहिनें कहीं जा सकती हैं। बहिन कहनेसे भी एक सूर्य देवके कारण उत्पन्न होनेवाली सूर्यकी अनेक पुत्रियां, ये उषाएँ हैं, अतः वे आपसमें बहिनें हैं यह सिद्ध है। इससे सूर्योदयके पूर्व अनेक उषाओंका होना सिद्ध हुआ है।

उषाओंका क्रमसे और एकके पीछे दूसरीका आना सिद्ध कर रहा है कि ऐसा दृश्य किती दूसरे देशमें होगा, इस भारत वर्षमें तो ऐसा दृश्य कदापि नहीं होता।

पहिले दिनको जाननेवाली उषा

जानत्यह्नः प्रथमस्य नाम
शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची॥ (६७; ऋ.१।१२३।९)

'यह उषा (प्रथमस्य अह्नः जानती) पहिले दिनका नाम जानती है, और (शुक्रा श्वितीची) यह प्रकाश देनेवाली तेजस्विनी उषा (कृष्णात् अजनिष्ट) कृष्ण वर्ण अन्धकारसे उत्पन्न हुई।'

हमारे देशमें पहिले दिनकी उषा ऐसा कोई भेद नहीं है, क्योंकि सभी उषाएं एकसी होती हैं, पर जहां जिस प्रदेशमें बडे अन्धकारके पश्चात् पहिलाही उषःकाल शुरू होता है और वह उषःकाल अनेक दिनोंतक लगातार रहता है वहीं यह संभव हो सकता है कि यह उषा प्रथम दिनकी है और यह दूसरे दिनकी है, पर वे आपसमें बहिनें हैं और एकके पीछे एक आती रहती हैं। इस मंत्र में प्रथम दिनकी उषा (प्रथमस्य अह्नः उषा) कहीं है, यह वर्णन विशेष महत्त्व का है। इसी तरह के वर्णन के ये मन्त्र हैं—

१. शश्वतीनां विभातीनां प्रथमा उषा व्यश्वैत्।
(५३, ऋ. १।११३।१५)

२. शश्वतीनां आयतीनां प्रथमा उषा व्यद्यौत्।
(७३, ऋ. १।१२४।१)

३. परायतीनां अन्वेति पाथः
आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम्।(४६;ऋ. १।११३।८)

४. उषा अगन् प्रथमा पूर्व हूतौ। (६०; ऋ. १।११३।८)

५. उषः सूनृते प्रथमा जरस्व। (६३; ऋ. १।१२३।२)

६. उषः सुजाते प्रथमा जरस्व। (१५२; ऋ. ७।७६।६)

(१) शाश्वत चमकनेवाली उषाओंमें यह पहली उषा प्रकाशित हुई है। (२) शाश्वत आनेवाली उषाओंमें पहिली उषा उदित हुई है (३) जानेवाली उषाओंके मार्गका अनुसरण करनेवाली और आनेवाली उषाओंमें पहिली यह उषा

है (४) यह पहिली उषा आगई है। (५-६) हे उत्तम निर्माण हुई उषा ! तू पहिली उषा है।

(१,३) कुत्स आंगिरसः, (२,४-५) कक्षीवान् दैर्घतमसः, (६) वसिष्ठ के देखे ये मंत्र हैं। इन में यह पहिली उषा है ऐसा कहा है।

यहां पहिली उषा करके उसमें कोई विशेषता नहीं होती। पर जहां बडे प्रदीर्घ अन्धेरेके पश्चात् वर्षमें प्रथमही उषाके प्रकाशका दर्शन होता होगा, वहांका आनन्द इन मंत्रोंमें वर्णित हुआ दीखता है।

तीस बहिनें

त्रिंशत्स्वसार उपयन्ति निष्कृतं। (तै. सं. ४।३।२।६)

'तीस बहिनें नियत स्थानपर चलती हैं।' बहिनें उषायें हैं यह जो ऋग्वेदमें कहा था, वे तीस बहिनें हैं ऐसा इस मंत्रने कहा है। तीस ही उषाएं क्यों हैं? क्योंकि छः मास की रात्री के पश्चात् तीस उषाएं आकर ही सूर्यका उदय होता है।

भयानक रात्री

न यस्याः पारं ददृशे न योयुवद्विश्वमस्यां नि विशते यदेजति। अरिष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रि पारमशीमहि भद्रे पारमशीमहि॥ (अथर्व. १९।४७।२)

(न यस्याः पारं ददृशे) जिस रात्रीका पार अर्थात् समाप्ति का समय हम देखते नहीं, इतनी यह विशाल रात्री है।

(न योयुवत्) जस रात्री में भिन्नता भी नहीं दीखती, एक जैसी अखण्ड यह रात्री रहती है (विश्वं अस्यां निविशते) सब कुछ इस रात्री में प्रविष्ट होता है (यत् एजति) जो कुछ हिलता है वह सब भी इस रात्रीमें ही रहता है। (अ-रिष्टासः) हम विनष्ट न होते हुए, हे (उर्वि तमस्वति रात्रि) बडी अन्धेरी रात्री ! तेरे पार (अशीमहि) हम होंगे। हे कल्याणि रात्री ! तेरे पार हम होंगे।

यह विशेष दीर्घकालीन रात्रीका ही वर्णन दीखता है। यह हमारी १२ घण्टेकी रात्री नहीं है, यह छः मासकी रात्री है जो संवत्सर जैसी है इसका वर्णन देखिये—

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे।
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज॥ ३॥
(अ. ३।१०।३)

(यां संवत्सरस्य प्रतिमां रात्रीं त्वां) संवत्सरकी प्रतिमा-रूपी रात्रीकी (उपास्महे) हम उपासना करते हैं। (सा नः) वह रात्री हमारी (आयुष्मतीं प्रजां) दीर्घायुवाली प्रजाको (रायः पोषेण संसृज) धन और पुष्टीके साथ पूर्ण करो।

संवत्सरस्य प्रतिमा रात्री= ये पद निःसंदेह वर्षकी दीर्घरात्रीको अर्थात् अर्धसंवत्सर तक चलनेवाली रात्रीको बता रहे हैं। नहीं तो 'संवत्सरकी प्रतिमा रात्री'का कोई विशेष तात्पर्य ही नहीं है।

ऐसे बडे अन्धकारके पार होनेको ही अन्धेरेसे पार होना कहते हैं—

अन्धकारका पार होना

बडे अन्धकारका पार होना भी इन उषा सूक्तोंमें दीखता है—

अतारिष्म तमसस्पारं अस्य
उषा उच्छन्ती वयुना कृणोति। (२९; ऋ.१।९२।६)

'(अस्य तमसः पारं अतारिष्म) इस अन्धकारको हमने पार किया, अब यह (उषा उच्छन्ती) उषा अपना प्रकाश करती हुई अपने उद्देश प्रकट करती है।'

इस मंत्रमें (अस्य तमसः पारं अतारिष्म) इस अन्धकारके पार हम हो चुके, यह वाक्य प्रगाढ और दीर्घकालके अन्धेरे की सूचना दे रहा है। प्रतिरात्रीके अन्धकारके विषयमें ऐसा कोई नहीं कहेगा, क्योंकि हमें पता है कि छः सात बजे यह अन्धेरा दूर होनेका निश्चय है। यदि अन्धेरा ऐसा हो कि जो कई महिने रहनेवाला हो, तो उस अन्धकारकी समाप्तिपर ऐसा वाक्य बोला जाना सर्वथा संभव है कि 'इस दुस्तर अन्धकारसे अब हम पार हो चुके हैं।' इतने मंत्रोंका आशय मनन पूर्वक देखनेसे हमें ऐसा प्रतीत होता है कि बडे अन्धकारके व्यतीत होनेपर कई उषायें लगातार आतीं, उनमें पहिली और अन्तिम ऐसी भी उषाएं रहती हैं, ऐसे अनेक उषःकाल व्यतीत होनेपर दिनका प्रारंभ होता है, जहां ऐसा होता हो वहाँका यह वर्णन है।

हमें विदित है कि अपनीही पृथ्वीपर ऐसे प्रदेश हैं कि जहां करीब पांच महिनोंकी प्रचण्ड रात्री रहती है, इस निबिड गाढ अंधेरी प्रचण्ड रात्रीके पश्चात् करीब तीस दिनका उषःकाल और प्रभात होता है, पश्चात् करीब पांच महिनेका दिन होता है और पश्चात् वैसा ही एक मासका सायंकाल होता है। दिन और रात्रीका प्रमाण न्यूनाधिक भी कई

प्रदेशोंमें रहता है। नार्वे स्वीडन के प्रदेशोंमें इस तरहके प्रचण्ड दिन रात आज भी होते हैं। महाभारतकारने ध्रुव पर्वतका वर्णन दिया है वहां छः महिनोंका दिन और वैसी ही प्रचण्ड रात्री होनेका वर्णन है। अगस्ति ऋषि वहां गये थे ऐसा भी महाभारतमें लिखा है देखो–

एनं स्वहरहर्मेरुं सूर्याचन्द्रमसौ ध्रुवम्।
प्रदक्षिणमुपावृत्य कुरुराः कुरुनन्दन॥
ज्योतींषि चाप्यशेषेण सर्वाण्यनघ सर्वतः।
परियन्ति महाराज गिरिराजं प्रदक्षिणम्॥
(म. भा. वन. १६३।३७-३८)

स्वतेजसा तस्य नगोत्तमस्य महौषधीनां च तथा प्रभावात्।
विविक्तभावो न बभूव कश्चिदहोनिशानां पुरुष प्रवीर॥
बभूव रात्रिर्दिवसश्च तेषां संवत्सरेणैव समान रूपः।
(म. भा. वन. १६४।११,१२)

दैवे रात्यहनी वर्षं प्रविभागस्तयोः पुनः।
अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्याद्दक्षिणायनम् (मनु. १।६७)
एकं वा एतद्देवानां अहः यत्संवत्सरः। (तै. ब्रा.३।९।२२।१)

'मेरुपर्वत है, उसकी प्रदक्षिणा सूर्य, चन्द्र, तथा सब नक्षत्र करते हैं। उस मेरुपर्वत पर दिन और रात्रीका ऐसा भेद नहीं (जैसा यहां हमारे देशमें प्रतिदिन दिखाई देता है।) वहां दिन और रात्री वर्ष जैसी होती है (अर्थात् वहां छः मासोंकी रात्री और छः मासोंका दिन होता है, इसमें उषःकाल और सायंकालके संधिसमय अन्तर्भूत हुए हैं।) यह महाभारतका वर्णन है।

मनुस्मृतिमें कहा है कि उत्तरायण दिवस है और दक्षिणायन रात्री है। (अर्थात् छः मासोंका उत्तरायण दिन है और छः मासोंका दक्षिणायण रात्री है।)

इस तरह मेरुपर्वतका वर्णन हमारे ग्रंथोंमें है। मेरुपर्वतही उत्तरीय ध्रुव है। आज भी वहां छः मासोंकी प्रचण्ड घन अन्धकारमयी रात्री है और छः मासोंका प्रचण्ड दिन है। उत्तरीय ध्रुवके नीचे दक्षिण दिशामें नार्वे और स्वीदन देश हैं, इसलिये वहां यह प्रमाण थोडा न्यूनाधिक रहता है। उत्तरीय ध्रुवमें सूर्य चन्द्र तथा नक्षत्र चक्रीके समान घूमते हुए नजर आते हैं, हमारे देशमें जैसे सिरपर आकर अस्त होनेका दृश्य है वैसा वहां नहीं है, वहां किसी देवताकी प्रदक्षिणा करनेके समान ये सब सूर्य चन्द्र और नक्षत्र घूमते हैं और मेरुकी प्रदक्षिणा करते दीखते हैं।

संक्षेपसे यहां ५ महिनोंकी निबिड गाढ अन्धकारवाली प्रचंण्ड रात्री होती है, इसके बाद पहिली उषा चमकती है, इस कारण वह (प्रथम उषा) पहिली उषा कही जाती है, इसके नंतर करीब सत्ताईस उषाएं क्रमपूर्वक एकके पीछे दूसरी ऐसी आती हैं, अतः ये परस्पर बहिने होती हैं, पश्चात् सूर्य देव प्रकाशते हैं। ये करीब ५ महिने प्रकाशते ही रहते हैं, तथापि कभी ये मध्यान्हके समय जैसे आकाशमध्यमें नहीं चढते। नौ बजने जितने ऊपर चढते हैं यह अधिक से अधिक ऊंचाई होती है। जिस किसी ऊंचाई पर हो दिनभर उसी ऊंचाईपर रहते हुए ये ध्रुवपर्वत की प्रदक्षिणा करते हैं, पश्चात् सायं समय भी करीब उषःकाल जितनाही होता है और पश्चात् रात्री होती है। इस तरह छः मास सूर्य दर्शन नहीं और छः मास गाढ अन्धकार नहीं ऐसी वर्षकी अवधि काटी जाती है। नक्षत्रोंके एक परिभ्रमणसे एक दिन समझा जाता है, तथा वहां विद्युत्प्रकाश इस छः मासकी रात्रीमें कुछ रोशनी करता रहता है। यह वहां की परिस्थिति ध्यानमें धारण करके पूर्वोक्त मंत्रोंके निम्नलिखित वाक्य पुनः देखिये—

१. **अस्य तमसः पारं अतारिष्म।** (२९; ऋ.१।९२।६)= अब हम इस गाढ निबिड और प्रचंड अन्धकारके पार हो चुके।

२. **कृष्णात् शुक्रा प्रथमस्य अह्नः (उषा) अजनिष्ट।** (६७; ऋ. १।१२३।३)= गाढ अन्धेरी रात्रीके पश्चात् प्रथम दिनकी यह पहिली उषा अब प्रकाशित हुई है।

३. **विभानीनां प्रथमा उषा व्यश्वैत्।** (७३; ऋ.१।१२४।२)= प्रकाशित होनेवालियोंमें यह पहिली उषा प्रकाशित हुई।

४. **आसां स्वसॄणां पूर्वा पश्चात् अपरा अभवेति।** (८०; ऋ. १।१२४।९)= ये बहिनें जैसी अनेक उषाएं एकके पीछे दूसरी क्रमसे आती हैं।

५. **भद्रा उषसः पुरा आसुः।** (८०; ऋ. ४।५१।७)=कल्याण कारक अनेक उषाएँ (सूर्य उदयके) पूर्व प्रकाशित हो चुकी हैं।

६. **उषसः परा यन्ति, पुनः आयन्ति।** (७०; ऋ. १।१२३।१२)= इन उषाओंमेंसे कई जाती हैं और नयी आती हैं।

७. **उपसः विभातीः** (६४; ऋ. १।१२३।६) = अनेक उषायें (क्रमशः आकर) प्रकाशती हैं।

८. **सूर्यस्य प्राचीनं उदिता अहानि बहुलानि आसन्।** (१४९; ऋ० ७।७६।३)= सूर्य उदयके पूर्व उदय को प्राप्त होनेवाली उषाएं अनेक हैं।

इस तरह किसी ऐसे प्रदेशमें मंत्रों के ये पद अत्यंत सार्थक दीखते हैं। पाठक इसका विचार करें।

इतना होनेपर भी उषःकाल जाग्रतिका सूचक है। यह जाग्रति आध्यात्मिक मानना उचित है। क्यों कि आत्मिक जाग्रति में सब अन्य जाग्रतियां समाविष्ट होती है। यह भाव इन मंत्रों में पाठक देख सकते हैं और उससे आध्यात्मिक उन्नति के मार्गका बोध भी प्राप्त कर सकते है। यह आध्यात्मिक उन्नति वेदकी मुख्य उन्नति है इस की सिद्धि करनेकी आवश्यकता बिलकुल नहीं है। क्योंकि यह बात सबको स्वीकृत ही है।

इस तरह उषाके हृदयंगम सूक्तोंका विचार पाठक कर सकते हैं।

निवेदक

१ पौष विक्रमीय संवत २०००

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.
अध्यक्ष स्वाध्याय मण्डल
औंध (जि० सातारा)



दैवत-संहिता।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् देवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता।)

८ उषादेवता।

॥१॥ (ऋ० १।३०।२०-२२)

(१-३) शुनःशेप आजीगर्तिः। गायत्री।

कस्ते उषः कधप्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये। कं नक्षसे विभावरि २०
वयं हि ते अमन्मह्या—ऽऽन्तादा पराकात्। अश्वे न चित्रे अरुषि २१
त्वं त्येभिरा गहि वाजेभिर्दुहितर्दिवः। अस्मे रयिं नि धारय २२ ३

॥२॥ (ऋ० १।४८।१-१६)

(४-२३) प्रस्कण्वः काण्वः। प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती।)

सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः।
सह द्युम्नेन बृहता विभावरि राया देवि दास्वती १
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्वसुविदो भूरिं च्यवन्त वस्तवे।
उदीरय प्रति मा सूनृता उष—श्चोद राधो मघोनाम् २ ५
उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम्।
ये अस्या आचरणेषु दध्रिरे समुद्रे न श्रवस्यवः ३
उषो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनो दानाय सूरयः।
अत्राह तत् कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम् ४
आ घा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुञ्जती।
जरयन्ती वृजनं पद्वदीयत उत्पातयति पक्षिणः ५ ८

धि या सृजति सर्मनं व्यूथिनः पदं न वेत्योदती ।
वयो नकिष्टे पप्तिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनीवति ६
एषायुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।
शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान् ७ १०
विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्रिधः ८
उष आ भाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।
आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभगं व्युच्छन्ती दिविष्टिषु ९
विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरि ।
सा नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामघे हवम् १०

उषो वाजं हि वंस्व यश्चित्रो मानुषे जने ।
तेना वह सुकृतो अध्वराँ उप ये त्वा गृणन्ति वह्नयः ११
विश्वान् देवाँ आ वह सोमपीतये ऽन्तरिक्षादुषस्त्वम् ।
सास्मासु धा गोमदश्वावदुक्थ्यं मुषो वाजं सुवीर्यम् १२ १५
यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदृक्षत ।
सा नो रयिं विश्ववारं सुपेशसमुषा ददातु सुग्म्यम् १३
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्व ऊतये जुहूरेऽवसे महि ।
सा नः स्तोमाँ अभि गृणीहि राधसोषः शुक्रेण शोचिषा १४
उषो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः ।
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः १५

सं नो राया बृहता विश्वपेशसा मिमिक्ष्वा समिळाभिरा ।
सं द्युम्नेन विश्वतुरोषो महि सं वाजैर्वाजिनीवति १६

॥३॥ (ऋ० १।४९।१-४) अनुष्टुप् ।

उषो भद्रेभिरा गहि दिवश्चिद् रोचनादधि ।
वहन्त्वरुणप्सव उप त्वा सोमिनो गृहम् १
सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उषस्त्वम् ।
तेना सुश्रवसं जनं प्रावाद्य दुहितर्दिवः २ ११

वयश्चित् ते पतत्रिणो द्विपच्चतुष्पदर्जुनि ।
उषः प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि ३
व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमाभासि रोचनम् ।
तां त्वामुषर्वसूयवो गीर्भिः कण्वा अहूषत ४ २३

॥४॥ (ऋ० १।९२।१-१५)

(१४-१८) गोतमो राहूगणः । १-४ जगती, ५-१२ त्रिष्टुप्; १३-१५ उष्णिक् ।

एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते ।
निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः १
उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत ।
अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः २ २५
अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः ।
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते ३
अधि पेशांसि वपते नृतूरिवापोर्णुते वक्ष उस्रेव बर्जहम् ।
ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः ४
प्रत्यर्ची रुशदस्या अदर्शि वि तिष्ठते बाधते कृष्णमभ्वम् ।
स्वरुं न पेशो विदथेष्वञ्जञ्चित्रं दिवो दुहिता भानुमश्रेत् ५
अतारिष्म तमसस्पारमस्योषा उच्छन्ती वयुना कृणोति ।
श्रिये छन्दो न स्मयते विभाती सुप्रतीका सौमनसायाजीगः ६
भास्वती नेत्री सूनृतानां दिवः स्तवे दुहिता गोतमेभिः ।
प्रजावतो नृवतो अश्वबुध्यानुषो गोअग्राँ उप मासि वाजान् ७ ३०
उषस्तमश्यां यशसं सुवीरं दासप्रवर्गं रयिमश्वबुध्यम् ।
सुदंससा श्रवसा या विभासि वाजप्रसूता सुभगे बृहन्तम् ८
विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति ।
विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः ९
पुनःपुनर्जायमाना पुराणी समानं वर्णमभि शुम्भमाना ।
श्वघ्नीव कृत्नुर्विज आमिनाना मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः १०
व्यूर्ण्वती दिवो अन्ताँ अबोध्यप स्वसारं सनुतर्युयोति ।
प्रमिनती मनुष्या युगानि योषा जारस्य चक्षसा वि भाति ११ ३४

पशून्न चित्रा सुभगा प्रथाना सिन्धुर्न क्षोदः उर्विया व्यश्वैत् ।
अमिनती दैव्यानि व्रतानि सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दृशाना १२
उषस्तच्चित्रमा भरा—स्मभ्यं वाजिनीवति । येन तोकं च तनयं च धामहे १३
उषो अद्येह गोम—त्यश्वावति विभावरि । रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति १४
युक्ष्वा हि वाजिनीव—त्यश्वाँ अद्यारुणाँ उषः । अथा नो विश्वा सौभगान्या वह १५ ३८

॥५॥ (ऋ० १।११३।१-२०)

(३९-५८) कुत्स आङ्गिरसः । १ (उत्तरार्धस्य) राज्ञिश्च । त्रिष्टुप् ।

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागा—च्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा ।
यथा प्रसूता सवितुः सवायँ एवा रात्र्युषसे योनिमारैक् १
रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागा—दारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः ।
समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं चरत आमिनाने २ ४०
समानो अध्वा स्वस्रोरनन्त—स्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे ।
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे ३
भास्वती नेत्री सूनृतानां—मचेति चित्रा वि दुरो न आवः ।
प्रार्प्या जगद्व्युं नो रायो अरूय—दुषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ४
जिह्मश्येऽहु चरितवे मघो—न्याभोगय इष्टये राय उं त्वम् ।
दभ्रं पश्यद्भ्य उर्विया विचक्षे उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ५
क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै ।
विसदृशा जीवितामिप्रचक्षे उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ६
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः ।
विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ ७ ४५
परायतीनामन्वेति पाथ आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् ।
व्युच्छन्ती जीवमुदीरय—न्त्युषा मृतं कं चन बोधयन्ती ८
उषो यदग्निं समिधे चकर्थ वि यदावश्चक्षसा सूर्यस्य ।
यन्मानुषान् यक्ष्यमाणाँ अजीग—स्तद् देवेषु चकृषे भद्रमग्नः ९
क्रियात्या यत् समया भवाति या व्यूषुर्याश्च नूनं व्युच्छान् ।
अनु पूर्वाः कृपते वावशाना प्रदीध्याना जोषमन्याभिरेति १०
ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् व्युच्छन्तीमुषसं मर्त्यासः ।
अस्माभिरू नु प्रतिचक्ष्याभू—दो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान् ११ ४९

यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती।
सुमङ्गलीर्बिभ्रती देववीतिमिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ १२ ५०
शश्वत् पुरोषा व्युवास देव्यथो अद्येदं व्यावो मघोनी।
अथो व्युच्छादुत्तराँ अनु द्यूनजरामृता चरति स्वधाभिः १३
व्यपस्रुग्भिर्दिव आतासु बध्नादप कृष्णां निर्णिजं देव्यावः।
प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वैरोषा याति सुयुजा रथेन १४
आवहन्ती पोष्या वार्याणि चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना।
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्वैत् १५
उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगादप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति।
आरैक् पन्थां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः १६
स्यूमना वाच उदियर्ति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातीः।
अद्या तदुच्छ गृणते मघोन्यस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् १७ ५५
या गोमतीरुषसः सर्ववीरा व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय।
वायोरिव सूनृतानामुदर्के ता अश्वदा अश्नवत् सोमसुत्वा १८
माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्बृहती वि भाहि।
प्रशस्तिकृद् ब्रह्मणे नो व्युच्छा नो जने जनय विश्ववारे १९
यच्चित्रमप्न उषसो वहन्तीजानाय शशमानाय भद्रम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः २० ५८

॥६॥ (ऋ० १।१२३।१-१३)

(५९-८३) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। त्रिष्टुप्।

पृथू रथो दक्षिणाया अयोज्यैनं देवासो अमृतासो अस्थुः।
कृष्णादुदस्थादर्या३ विहायाश्चिकित्सन्ती मानुषाय क्षयाय १
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादबोधि जयन्ती वाजं बृहती सनुत्री।
उच्चा व्यख्यद् युवतिः पुनर्भूरोषा अगन् प्रथमा पूर्वहूतौ २
यदद्य भागं विभजासि नृभ्य उषो देवि मर्त्यत्रा सुजाते।
देवो नो अत्र सविता दमूना अनागसो वोचति सूर्याय ३
गृहंगृहमहना यात्यच्छा दिवेदिवे अधि नामा दधाना।
सिषासन्ती द्योतना शश्वदागादग्रमग्रमिद् भजते वसूनाम् ४ ६१

भगस्य स्वसा वरुणस्य जामि—रुषः सूनृते प्रथमा जरस्व ।
पश्चा स दध्या यो अघस्य धाता जयेम तं दक्षिणया रथेन ५
उदीरतां सूनृता उत् पुरन्धी—रुदग्नयः शुशुचानासो अस्थुः ।
स्पार्हा वसूनि तमसापगूळहा—विष्कृण्वन्त्युषसो विभातीः ६
अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति विषुरूपे अहनी सं चरेते ।
परिक्षितोस्तमो अन्या गुहाकः—रद्यौदुषाः शोशुचता रथेन ७ ६५
सदृशीरद्य सदृशीरिदु श्वो दीर्घं सचन्ते वरुणस्य धाम ।
अनवद्यास्त्रिंशतं योजना—न्येकैका क्रतुं परि यन्ति सद्यः ८
जानत्यह्नः प्रथमस्य नाम शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची ।
ऋतस्य योषा न मिनाति धामाहरहर्निष्कृतमाचरन्ती ९

कन्येव तन्वा शाशदानाँ एषि देवि देवमियक्षमाणम् ।
संस्मयमाना युवतिः पुरस्ता—द्याविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती १०
सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा—विस्तन्वं कृणुषे दृशे कम् ।
भद्रा त्वमुषो वितरं व्युच्छ न तत् ते अन्या उषसो नशन्त ११
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्ववारा यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।
परा च यन्ति पुनरा च यन्ति भद्रा नाम वहमाना उषासः १२ ७०
ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना भद्रं भद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ।
उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छा—स्मासु रायो मघवत्सु च स्युः १३

॥७॥ (ऋ० १।१२४।१-१३)

उषा उच्छन्ती समिधाने अग्ना उद्यन्त्सूर्य उर्विया ज्योतिरश्रेत् ।
देवो नो अत्र सविता न्वर्थं प्रासावीद् द्विपत् प्र चतुष्पदित्यै १
अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
ईयुषीणामुपमा शश्वतीना—मायतीनां प्रथमोषा व्यद्यौत् २
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ३
उषो अदर्शि शुन्ध्युवो न वक्षो नोधा इवाविरकृत प्रियाणि ।
अपस्यसा संसतो बोधयन्ती शश्वत्तमागात् पुनरेयुषीणाम् ४ ७५

पूर्वे अर्धे रजसो अप्त्यस्य गवां जनित्र्यकृत प्र केतुम् ।
व्यु प्रथते वितरं वरीय ओ—भा पृणन्ती पित्रोरुपस्था ५
एवेदेषा पुरुतमा दृशे कं नाजामिं न परि वृणक्ति जामिम् ।
अरेपसा तन्वा३ शाशदाना नाभीदीषते न महो विभाती ६
अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारुगिव सनये धनानाम् ।
जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः ७
स्वसा स्वस्रे ज्यायस्यै योनिमारै—गपैत्यस्याः प्रतिचक्ष्येव ।
व्युच्छन्ती रश्मिभिः सूर्यस्या—ञ्जयंङ्क्ते समनगा इव व्राः ८
आसां पूर्वासामहसु स्वसृणा—मपरा पूर्वामभ्येति पश्चात् ।
ताः प्रत्नवन्नव्यसीर्नूनमस्मे रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः ९ ८०
प्र बोधयोषः पृणतो मघो—न्यर्ब्धमानाः पणयः ससन्तु ।
रेवदुच्छ मघवद्भ्यो मघोनि रेवत् स्तोत्रे सूनृते जारयन्ती १०
अवेयमश्वैद् युवतिः पुरस्ताद् युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम् ।
वि नूनमुच्छादसति प्र केतु—र्गृहंगृहमुप तिष्ठाते अग्निः ११
उत् ते वयश्चिद् वसतेरपप्तन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरि वाम—मुषो देवि दाशुषे मर्त्याय १२
अस्तोढ्वं स्तोम्या ब्रह्मणा मे ऽवीवृधध्वमुशतीरुषासः ।
युष्माकं देवीरवसा सनेम सहस्रिणं च शतिनं च वाजम् १३ ८१

॥८॥ (ऋ० ३।६१।१-७)

(८५-९१) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि ।
पुराणी देवि युवतिः पुरंधि—रनु व्रतं चरसि विश्ववारे १
उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती ।
आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो ये २
उर्ध्वः प्रतीची भुवनानि विश्वो—र्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः ।
समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या वयुत्स्व ३
अव स्यूमेव चिन्वती मघो—न्युषा याति स्वसरस्य पत्नी ।
स्वर्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद् दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः ४ ८८

अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम् ।
ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक् ५
ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् ।
आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः ६
ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन् वृषा मही रोदसी आ विवेश ।
मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा ७ ९१

॥९॥ (ऋ० ४।५१।१-११)
(९२-१०९) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

इदमु त्यत् पुरुतमं पुरस्ताज्ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात् ।
नूनं दिवो दुहितरो विभातीर्गातुं कृणवन्नुषसो जनाय १
अस्थुरु चित्रा उषसः पुरस्ान्मिता इव स्वरवोऽध्वरेषु ।
व्यू व्रजस्य तमसो द्वारोच्छन्तीरव्रञ्छुचयः पावकाः २
उच्छन्तीरद्य चितयन्त भोजान् राधोदेयायोषसो मघोनीः ।
अचित्रे अन्तः पणयः ससन्त्वबुध्यमानास्तमसो विमध्ये ३
कुवित् स देवीः सनयो नवो वा यामो बभूयादुषसो वो अद्य ।
येना नवग्वे अङ्गिरे दशग्वे सप्तास्ये रेवती रेवदूष ४ ९५
यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भिरश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः ।
प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाच्चतुष्पाच्चरथाय जीवम् ५
कं स्विदासां कतमा पुराणी यया विधाना विदधुर्ऋभूणाम् ।
शुभं यच्छुभ्रा उषसश्चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदृशीरजुर्याः ६
ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुरभिष्टिद्युम्ना ऋतजातसत्याः ।
यास्वीजानः शशमान उक्थैः स्तुवञ्छंसन् द्रविणं सद्य आप ७
ता आ चरन्ति समना पुरस्तात् समानतः समना पप्रथानाः ।
ऋतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते ८
ता इळेव समना समानीरमीतवर्णा उषसश्चरन्ति ।
गूहन्तीरभ्वमसितं रुशद्भिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः ९
रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतासासु देवीः ।
स्योनादा वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम १० १०१

तद् वो दिवो दुहितरो विभाती—रुप ब्रुव उपसो यज्ञकेतुः ।
वयं स्याम यशसो जनेषु तद् द्यौश्च धत्तां पृथिवी च देवी ११

॥१०॥ (ऋ० ४।५२।१-७) गायत्री ।

प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः । दिवो अदर्शि दुहिता १
अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी । सखाभूदश्विनोरुषाः २
उत सखास्यश्विनो—रुत माता गवामसि । उतोषो वस्व ईशिषे ३ १०९
यावयद् द्वेषसं त्वा चिकित्वित् सूनृतावरि । प्रति स्तोमैरभुत्स्महि ४
प्रति भद्रा अदृक्षत गवां सर्गा न रश्मयः । ओषा अप्रा उरु ज्रयः ५
आपप्रुषी दिवावरि व्यावर्ज्योतिषा तमः । उषो अनु स्वधामव ६
आ द्यां तनोषि रश्मिभि—रान्तरिक्षमुरु प्रियम् । उषः शुक्रेण शोचिषा ७

॥११॥ (ऋ० ५।७९।१-१०)
(११०-१२५) सत्यश्रवा आत्रेयः । पङ्क्तिः ।

महे नो अद्य बोधयो—षो राये दिवित्मती ।
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते १ ११०
या सुनीथे शौचद्रथे व्युच्छो दुहितर्दिवः ।
सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते २
सा नो अद्याभरद्वसु—र्व्युच्छा दुहितर्दिवः ।
यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ३
अभि ये त्वा विभावरि स्तोमैर्गृणन्ति वह्नयः ।
मघैर्मघोनि सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयः सुजाते अश्वसूनृते ४
यच्चिद्धि ते गणा इमे छदयन्ति मघत्तये ।
परि चिद् वष्टयो दधु—र्ददतो राधो अह्रयं सुजाते अश्वसूनृते ५
एषु धा वीरवद् यश उषो मघोनि सूरिषु ।
ये नो राधांस्यह्रया मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनृते ६ ११५
तेभ्यो द्युम्नं बृहद् यश उषो मघोन्या वह ।
ये नो राधांस्यश्व्या गव्या भजन्त सूरयः सुजाते अश्वसूनृते ७
उत नो गोमतीरिष आ वहा दुहितर्दिवः ।
साकं सूर्यस्य रश्मिभिः शुक्रैः शोचद्भिरर्चिभिः सुजाते अश्वसूनृते ८ ११७

व्युच्छा दुहितर्दिवो मा चिरं तनुथा अपः ।
नेत् त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा सुजाते अश्वसूनृते ९
एतावद् वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि ।
या स्तोतृभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनृते १०

॥१२॥ (ऋ० ५।८०।१-६) त्रिष्टुप् ।

द्युतद्यामानं बृहतीमृतेन ऋतावरीमरुणप्सुं विभातीम् ।
देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रासो मतिभिर्जरन्ते १ ११०
एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वती यात्यग्रे ।
बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वोषा ज्योतिर्यच्छत्यग्रे अह्नाम् २
एषा गोभिररुणेभिर्युजाना ऽस्रेधन्ती रयिमप्रायु चक्रे ।
पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा वि भाति ३
एषा व्यैनी भवति द्विबर्हा आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ४
एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात् ।
अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात् ५
एषा प्रतीची दुहिता दिवो नॄन् योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः ।
व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योतिर्युवतिः पूर्वथाकः ६ ११५

॥१३॥ (ऋ० ६।६४।१-६)

(११६-१३७) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

उदु श्रिय उषसो रोचमाना अस्थुरपां नोर्मयो रुशन्तः ।
कृणोति विश्वा सुपथा सुगान्यभूदु वस्वी दक्षिणा मघोनी १
भद्रा दिदक्ष उर्विया वि भास्युत तै शोचिर्भानवो द्यामपप्तन् ।
आविर्वक्षः कृणुषे शुम्भमानोषो देवि रोचमाना महोभिः २
वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो गावः सुभगामुर्विया प्रथानाम् ।
अपेजते शूरो अस्तेव शत्रून् बाधते तमो अजिरो न वोळ्हा ३
सुगोत तै सुपथा पर्वतेष्ववाते अपस्तरासि स्वभानो ।
सा न आ वह पृथुयामन्नृष्वे रयिं दिवो दुहितरिषयध्यै ४ १२९

सा वंह योक्षभिरवातो—षो वरं वहंसि जोषमनुं ।
त्वं दिवो दुहितर्या हं देवी पूर्वहूतौ मंहना दर्शता भूः ५ १३०
उत् ते वयश्चिद् वसतेरपप्तन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरिं वाम—मुषो देवि दाशुषे मर्त्यीय ६

॥१४॥ (ऋ० ६।६५।१-६)

एषा स्या नों दुहिता दिवोजाः क्षितीरुच्छन्ती मानुषीरजीगः ।
या भानुना रुशता राम्या—स्वञ्जायि तिरस्तमंसश्चिदुक्थूं १
वि तद् ययुररुणयुग्भिरश्वै—श्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः ।
अग्रं यज्ञस्य बृहतो नयन्ती—र्वि ता बाधन्ते तम ऊर्म्यीयाः २
श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्ती—र्नि दाशुषं उषसो मर्त्यीय ।
मघोनींर्वीरवत् पत्यमाना अवो धात विधते रत्नमद्य ३
इदा हि वो विधते रत्नमस्ती—दा वीराय दाशुषं उषासः ।
इदा विप्राय जरते यदुक्था नि ष्म मावंते वहथा पुरा चित् ४ १३५
इदा हि तं उषो अद्रिसानो गोत्रा गवामाङ्गिरसो गृणन्ति ।
व्यर्केण बिभिदुर्ब्रह्मणा च सत्या नृणामभवद् देवहूंतिः ५
उच्छा दिवो दुहितः प्रत्नवन्नो भरद्वाजवद् विधते मघोनि ।
सुवीरं रयिं गृणते रिरीह्यु—रुगायमघिं धेहि श्रवो नः ६

॥१५॥ (ऋ० ७।४१।७)

(१३८-१७८) मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥१६॥ (ऋ० ७।७५।१-८)

व्युषा आवो दिविजा ऋतेना—ऽऽविष्कृण्वाना महिमानमागात् ।
अप द्वुहस्तम आवरजुष्ट—माङ्गिरस्तमा पथ्या अजीगः १
महे नो अद्य सुवितायं वो—ध्युषो महे सौभगाय प्र यन्धि ।
चित्रं रयिं यशसं धेह्यस्मे देवि मर्तेषु मानुषि श्रवस्युम् २
एते त्ये भानवो दर्शतायां—श्चित्रा उषसो अमृतासं आगुः ।
जनयन्तो दैव्यानि व्रतान्या—पृणन्तो अन्तरिक्षा व्यस्थुः ३ १४१

एषा स्या युजाना पराकात् पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति ।
अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी ४
वाजिनीवती सूर्यस्य योषा चित्रामघा राय ईशे वसूनाम् ।
ऋषिष्टुता जरयन्ती मघोन्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना ५
प्रति द्युतानामरुषासो अश्वाश्चित्रा अदृश्रन्नुषसं वहन्तः ।
याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन दधाति रत्नं विधते जनाय ६
सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।
रुजद् दृळ्हानि दददुस्रियाणां प्रति गावं उषसं वावशन्त ७ १४५
नू नो गोमद् वीरवद् धेहि रत्नमुषो अश्वावत् पुरुभोजो अस्मे ।
मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ८

॥१७॥ (ऋ० ७।७६।१-७)

उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत् ।
कृत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुराविरकर्भुवनं विश्वमुषाः १
प्र मे पन्था देवयानाः अदृश्रन्नमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः ।
अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात् प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः २
तानीदहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।
यतः परि जार इवाचरन्त्युषो ददृक्षे न पुनर्यतीव ३
त इद् देवानां सधमादं आसन्नृतावानः कवयः पूर्व्यासः ।
गूळ्हं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्त्सत्यमन्त्रा अजनयन्नुषासम् ४ १५०
समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते ।
ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः ५
प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवांसः ।
गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छोषः सुजाते प्रथमा जरस्व ६
एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः ।
दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥१८॥ (ऋ० ७।७७।१-६)

उषो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।
अभूदग्निः समिधे मानुषाणामकर्ज्योतिर्बाधमाना तमांसि १ १५४

विश्वं प्रतीची सप्रथा उदस्थाद् रुशद् वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत् ।
हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंदृग् गवां माता नेत्र्यह्नामरोचि २ १५५
देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम् ।
उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता ३
अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छो वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः ।
यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि ४
अस्मे श्रेष्ठाभिर्भानुभिर्वि भाह्युषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।
उषो च नो दधती विश्ववारे गोमदश्वावद् रथवच्च राधः
या त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।
अस्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥१९॥ (ऋ० ७।७८।१-५)

प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन्नूर्ध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते ।
उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वाममस्मभ्यं वक्षि १ १६०
प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मतिभिर्गृणन्तः ।
उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरितापा देवी
एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन् पुरस्ता ज्ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभाती
अजीजनन्त्सूर्यं यज्ञमग्निमपाचीनं तमो अगादजुष्टम् ३
अचेति दिवो दुहिता मघोनी विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम् ।
आस्थाद् रथं स्वधया युज्यमान मा यमश्वासः सयुजो वहन्ति ४
प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्तास्माकासो मघवानो वयं च ।
तिल्विलायध्वमुषसो विभाती र्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥२०॥ (ऋ० ७।७९।१-५)

व्युषा आवः पथ्या३ जनानां पञ्च क्षितीर्मानुषीर्बोधयन्ती ।
सुसंदृग्भिरुक्षभिर्भानुमश्रेद् वि सूर्यो रोदसी चक्षसावः १ १६५
व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून् विशो न युक्ता उषसो यतन्ते ।
सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति सवितेव बाहू २
अभूदुषा इन्द्रतमा मघोन्यजीजनत् सुविताय श्रवांसि ।
वि दिवो देवी दुहिता दधाति वाजैरश्वमा सुकृते वसूनि ३ १६७

तावद्दुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत् स्तोतृभ्यो अरदो गृणाना ।
यां त्वा जज्ञुर्वृषभस्या रवेण वि दृळ्हस्य दुरो अद्रेरौर्णोः ४
देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मध्यक् सूनृता ईरयन्ती ।
व्युच्छन्तीं नः सनये धियो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥२१॥ (ऋ० ७।८०।१-३)

प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा अबुध्रन् ।
विवर्तयन्तीं रजसी समन्ते आविष्कृण्वतीं भुवनानि विश्वा १ १७०
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गुद्वी तमो ज्योतिषोषा अबोधि ।
अग्रे एति युवतिरह्याणा प्राचिकितत् सूर्यं यज्ञमग्निम् २
अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ३

॥२२॥ (ऋ० ७।८१।१-६) प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती) ।

प्रत्यु अदर्श्यायत्युच्छन्तीं दुहिता दिवः ।
अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी १
उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचाँ उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि २
प्रति त्वा दुहितर्दिव उषो जीरा अभुत्स्महि ।
या वहसि पुरु स्पार्हं वनन्वति रत्नं न दाशुषे मयः ३ १७५
उच्छन्ती या कृणोषि महना महि प्रख्यै देवि स्वर्दृशे ।
तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः ४
तच्चित्रं राध आ भरोषो यद् दीर्घश्रुत्तमम् ।
यत् तें दिवो दुहितर्मर्तभोजनं तद् रास्व भुनजामहै ५
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं वाजाँ अस्मभ्यं गोमतः ।
चोदयित्री मघोनः सूनृतावत्युषा उच्छदप स्रिधः ६

॥२३॥ (ऋ० ८।१०१।१३)

(१७९) जमदग्निर्भार्गवः । उषाः सूर्यप्रभा वा । बृहती ।

इयं या नीच्यर्किणी रूपा रोहिण्या कृता ।
चित्रेव प्रत्यदर्श्यायत्युच्छन्ती दुशसु बाहुषु १३ १७९

॥२४॥ (ऋ० १०।१७२।१-४)

(१८०-१८३) संवर्त आङ्गिरसः । द्विपदा विराट् ।

आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः १ १८०
आ याहि वस्व्या धिया मंहिष्ठो जारयन्मखः सुदानुभिः १ २
पितुभृतो न तन्तुमित् सुदानवः प्रति दध्मो यजामसि ३
उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजाततां २ ४

॥२५॥ (१८४) (वा० य० १२।४६)

संज्ञानमसि कामधरणं मयि ते कामधरणं भूयात् ।
अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि चितं स्थ परिचितं ऊर्ध्वचितः श्रयध्वम् ४६ १८४

॥२६॥ (साम० ३०३,७५१)+

(१८५-१८६) वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । बृहती ।

प्रत्यु अदर्श्यायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः ।
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी २०३

॥२७॥ (अथर्व० १९।१२।१)

वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजाततां ।
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः १ १८५

उषा-सहचारी देवगणः ।

(१) आदित्योषसः । (दुःष्वप्नघ्नम्)

॥२८॥ (ऋ० ८।४७।१४-१८)

(१८७-१९१) त्रित आप्त्यः । महापङ्क्तिः ।

यच्च गोषु दुःष्वप्न्यं यच्चास्मे दुहितर्दिवः ।
त्रिताय तद् विभावर्याप्त्याय परा वहानेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १४
निष्कं वा घा कृणवते स्रजं वा दुहितर्दिवः ।
त्रिते दुःष्वप्न्यं सर्वमाप्त्ये परि दद्मस्यनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १५
तदन्नाय तदपसे तं भागमुपसेदुषे ।
त्रितार्यं च द्विताय चोषो दुःष्वप्न्यं वहानेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १६ १८९

+ सा० ७५१ = ऋ० ७.८१.२। (दै० उषा १७४)

यथा कलां यथा शफं यथ ऋणं संनयामसि ।
एवा दुःष्वप्न्यं सर्वमाप्त्ये सं नयामस्य नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १७ १९०
अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम् ।
उषो यस्माद् दुःष्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छत्व नेहसो व ऊतयः
सुऊतयो व ऊतयः १८

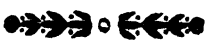
(२) उषासानक्ता ।×

॥२९॥ (१९२-१९४) (वा० य० २०।४१)

उषासानक्ता बृहती बृहन्तं पयस्वती सुदुघे शूरमिन्द्रम् ।
तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे ४१

॥३०॥ (वा० य० २८।१४,३७)

देवी उषासानक्तेन्द्रं यज्ञे प्रयत्यह्वेताम् ।
दैवीर्विशः प्रायासिष्टा सुप्रीते सुधिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यजं १४
देवी उषासानक्ता देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम् ।
अनुष्टुभा छन्दसेन्द्रियं बलमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वीतां यजं ३७ १९४



× दै० (अग्निः) [आप्रीसूक्तानि] १९१२; १९२४; १९३६; १९४७; १९५८; १९६९; १९७९; १९८६; १९९७; २००८; २०१९; २०३१; २०४२; २०८९; २१११; २११३;

उषादेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[२] १।३०।२१ (शुन.शेप आजीगर्तिः । उषाः)
अश्वे न चित्रे अरुषि ।
(१०४) ४।५२।२ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
अश्वेव चित्रारुषी ।

[३] १।३०।२२ (शुनःशेप आजीगर्तिः । उषाः)
अस्मे रयिं नि धारय ।
(इन्द्रः २४८८) १०।२४।१ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा वासुक्रः । इन्द्रः)
.....धारय वि वो मदे ।

[४] १।४८।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषा)
व्युच्छा दुहितर्दिवः ।
(११२) ५।७९।३= (११८) ५।७९।९ (सप्तश्रवा आत्रेयः । उषाः)

[५] १।४८।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
चोद राधो मघोनाम् ।
(आयुर्वेद० १०७९) ७।९६।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वती)

[११] १।४८।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
अप...दुहिता दिव उषा उच्छदप स्निधः ।
(१७३) ७।८१।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
.....दुहिता दिवः ।
अपो...चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
(१७८) ७।८१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
उषा उच्छदप स्निधः ।

[१६] १।४८।१३ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्रति भद्रा अदृक्षत ।
(१०७) ४।५२।५ (वामदेवो गौतमः । उषाः)

[१७] १।४८।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्व ऊतये जुहूरेऽवसे महि ।
सा नः स्तोमाँ अभि गृणीहि राधसोषः शुक्रेण शोचिषा ॥
(अश्विनौ ४२६) ८।८।६ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो जुहूरेऽवसे नरा ।
आ यातमश्विना गतमुपेमां सुष्टुतिं मम ।

(१०९) ४।५२।७ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
उषः शुक्रेण शोचिषा ।
(अश्विनौ ४१३) ८।५।३० (ब्रह्मातिथि काण्वः । अश्विनौ)
उपेमां सुष्टुतिं मम ।
(अश्विनौ ५३०-५३२) ८।३५।२२-२४ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
आ यातमश्विना गतम् ।

[१८] १।४८।१५ प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।
(अश्विनौ ४४४) ८।९।१ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिः ।

[२०] १।४९।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
दिवश्चिद् रोचनादधि ।
(मरुतः २७५) ५।५६।१ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)
(अश्विनौ ४२७) ८।८।७ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

[२३] १।४९।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
विश्वमाभासि रोचनम् ।
१।५०.४ (प्रस्कण्वः काण्वः । सूर्यः)
विश्वमा भासि — ।
(इन्द्रः १४०३) ३।४४।४ (गाथिनो विश्वामित्रः । इन्द्रः)
विश्वमा भाति रोचनम् ।

[२६] १।९२।३ (गोतमो राहूगणः । उषाः)
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ।
(अश्विनौ ४६) १।४७।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
इषं पृञ्चन्ता सुकृते सुदानवे ।

[२७] १।९।२४ (गोतमो राहूगणः । उषाः)
ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती ।
(अग्निः ७४६) ४।१४।२ (वामदेवो गौतमः । आग्निः)
— — कृण्वन् ।

[२९] १।९२।६ (गोतमो राहूगणः । उषाः)
अतारिष्म तमसस्पारमस्य ।
(अश्विनौ २०७) १।१८३।६= (अश्विनौ २१३) १।१८४।६

(अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति वां स्तोमो ।
(अश्विनौ ३७३) ७।७३।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अश्विनौ)
अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति स्तोमं ।
[३०] १।९२।७ (गोतमो राहूगणः । उषाः)
भास्वती नेत्री सूनृतानाम् ।
(४२) १।११३।४ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
[३४] १।९२।११ (गोतमो राहूगणः । उषाः)
प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
[३५] १।९२।१२ (गोतमो राहूगणः । उषाः)
अमिनती दैव्यानि व्रतानि ।
(७३) १।१२४।२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
[३६] १।९२।१३ (गोतमो राहूगणः । उषाः)
उपस्तांचित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।
येन तोकं च तनयं च धामहे ।
४।५५।९ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
उषो मघोन्या वह ।
अस्मभ्यं वाजिनीवति ।
(सोमः ६६१) ९।७४।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । पवमानः सोमः)
येन तोकं च तनयं च धामहे ।
[४२] १।११३।४=(३०) १।९२।७
[४२-४४] १।११३।४--६ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ।
[४५] १।११३।७ (कुत्स आङ्गिरसः । उषा)
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि..... शुक्रवासाः ।
उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ ।
(७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
—प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना ।
(७१) १।१२३।१३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छ ।
[५२] १।११३।१४ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वैरोषा याति सुयुजा रथेन ।
(अग्निः ७४७) ४।१४।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
प्रबोधयन्ती सुविताय देव्युषा ईयते सुयुजा रथेन ।
[५३] १।११३।१५ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्वैत् ।
(७३) १।१२४।२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनामायतीनां प्रथमोषा व्यद्यौत् ।
[५४] १।११३।१६ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
आगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ।
(सोमः ११४५)८।४८।११ (प्रगाथो घौरः काण्वः । सोमः)
अगन्म — —।
[६३] १।१२३।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
उषः सूनृते प्रथमा जरस्व ।
(१५२) ७।७६।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
उषः सुजाते प्रथमा जरस्व ।
[७०] १।१२३।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।
(अग्निः ७९३) ५।४।४ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।
[७१] १।१२३।१३=(४५) १।११३।७
[७३] १।१२४।२=(३५) १।९२।१२
[,,] १।१२४।२=(३४) १।९२।११
[,,] १।१२४।२=(५३) १।११३।१५
[७४] १।१२४।३=(४५) १।११३।७
[,,] १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
..... पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ।
(१२३) ५।८०।४ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
१०।६६।१३ (वसुकर्णो वासुक्रः । विश्वे देवाः)
ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।
[७६] १।१२४।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
व्यु प्रथते वितरं वरीय ।
(अग्निः २००६) १०।११०।४ (जमदग्निर्भार्गवः, रामो वा जामदग्न्यः । आप्रीसूक्तं [बर्हिः])
[७८] १।१२४।७ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
जायेव पत्य उशती सुवासाः ।
(अग्निः ६६७) ४।३।२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
= १०।७१।४ (बृहस्पतिराङ्गिरसः । ज्ञानम्)
(अग्निः १६६३) १०।९१।१३ (अरुणो वैतहव्यः । अग्निः)
[,,] १।१२४।७ उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः ।
(१२५) ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
योषेव भद्रा नि— ।
[८१] १।१२४।१० (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
पृणतो मघोन्यबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।
रेवदुच्छ मघवद्भ्यो मघोनि ।
(९४) ४।५१।३ (वामदेवो गौतमः । उषाः)

उच्छन्तीरद्य चितयन्त — — मघोनीः ।
अचित्रे अन्तः पणयः ससन्त्वबुध्यमानाः ।
[८३] १।१२४।११ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)

=(१३१) ६।६४।६ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । उषाः)
उत् ते वयश्चिद् वसतेरपप्तन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[९१] ३।६१।७ (गाथिनो विश्वामित्रः । उषाः)
वृषा मही रोदसी आ विवेश ।

(अग्निः १६४५) १०।८०।२ (अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा, सप्तिर्वाजंभरो वा । अग्निः)
अग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[९४] ४।५१।३ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
अचित्रे अन्तः पणयः ससन्तु ।
(८१) १।१२४।१०(कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
अबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।
[१०१] ४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषाः)
सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।
(इन्द्रः २११०) ६।४७।१२ (गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः)
(,, १७७६) १०।१३१।६ (सुकीर्तिः काक्षीवतः । इन्द्रः)
(सोमः ७९९) ९।८९।७ (उशना काव्यः । पवमानः सोमः)

(सोमः ८३२) ९।९५।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । पवमानः सोमः)
[१०४] ४।५२।२ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
अश्वेव चित्रारुषी ।
(२)१।३०।२१ (शुनःशेप आजीगर्तिः । उषाः)
अश्वे न चित्रे अरुषि ।
[१०७] ४।५२।५ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
प्रति भद्रा अदृक्षत ।
(१६) १।४८।१३ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
[१०९] ४।५२।७=(१७) १।४८।१४
उषः शुक्रेण शोचिषा ।

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[११०-१२] ५।७२।१-३ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ।
(११०-११९) ५।७९।१-१० सुजाते अश्वसूनृते
[१११] ५।७९।२= (११२) ५।७९।३
सा (यो) व्युच्छ (व्यौच्छः) सहीयसि ।
[११२] ५।७९।३=(११८) ५।७९।९ व्युच्छा दुहितर्दिवः ।
(४) १।४८।१ प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
(१२) १।४८।९ चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।
(११) १।४९।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्रावाय दुहितर्दिवः ।
(१११) ५।७९।२ व्यौच्छो दुहितर्दिवः ।
(११७) ५।७९।८ आ वहा दुहितर्दिवः ।
[११५] ५।७९।६ येषु धः वीरवद् यशः ।
(इन्द्रः १६५६) ४।३२।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

[११५-१६] ५।७९।६-७ ये नो राधांस्यह्रया (७ अस्या)
[११६] ५।७९।७ उषो मघोन्या वह ।
४।५५।९ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
[११७] ५।७९।८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
उत नो गोमतीरिषः ।
(अश्विनौ ३९२) ८।५।९ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
(सोमः ४४१) ९।६२।२४ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
[११८] ५।७९।८ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।
(अश्विनौ ४५) १।४७।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
(अदितिः० २११) १।१३७।२ (परुच्छेपो देवोदाग्निः । मित्रावरुणौ)
(७०) १।१२३।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।

(अदितिः० ३७०) ८।१०१।२
(जमदग्निर्भार्गवः । मित्रावरुणौ)
[१२३] ५।८०।४ ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु ।
(७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
१०।६६।१३ (वसुकर्णो वासुक्रः । विश्वे देवाः)
ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।
[१२३] ५।८०।४ प्रजानतीव न दिशो मिनाति ।
(७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)

[१२५] ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः ।
(७८) १।१२४।७ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः ।
["] ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि ।
६।५०।८ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः [सविता])
व्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[१३१] ६।६४।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उषाः)
=(८३) १।१२४।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
उत् ते वयश्चिद् वसतेरपप्तन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥

[१३४] ६।६५।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उषाः)
नि दाशुष उषसो मर्त्याय ।
=(८३) १।१२४।१२=(१३१) ६।६४।६
उषो देवि दाशुषे मर्त्याय ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[१३८] ७।४१।७= (१७२) ७।८०।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
[,,] × ७।४१।७ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
=(१४६) ७।७५।८=(१५३) ७।७६।७
=(१५९) ७।७७।६=(१६४) ७।७८।५
=(१६९) ७।७९।५=(१७२) ७।८०।३

[१४४] ७।७५।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
दधाति रत्नं विधते जनाय ।
(अश्विनौ २५४) ४।४४।४ (पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)
दधथो रत्नं विधते जनाय ।
[१४५] ७।७५।७ देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।
४।५६।२ (वामदेवो गौतमः । द्यावापृथिवी)
देवी देवेभिर्यजते यजत्रैः ।
[१५१] ७।७६।५ ते देवानां न मिनन्ति व्रतानि ।
(आयुर्वेद० ८७३) ७।४७।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आपः)
ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि ।
[१५२] ७।७६।६ =(६३) १।१२३।५
उषः सुजाते (५ सूनृते) प्रथमा जरस्व ।

[१५७] ७।७७।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
अन्ति — दूरे अमित्रं — उर्वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः ।
(सोमः ६८५) ९।७८।५ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
शत्रुमन्तिके दूरके .... उर्वीं गव्यूतिमभयं च नस्कृधि ।
[१६२] ७।७८।३ एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन् ।
(आयुर्वेद० ७७८) १।१९१।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अ तृणसूर्याः [विषघ्नोपनिषद्])
एत उ त्ये प्रत्यदृश्रन् ।
[,,] ७।७८।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
अजीजनन्त्सूर्यं यज्ञमग्निम् ।
[१७१] ७।८०।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना ।
प्राचिकितत्सूर्यं यज्ञमग्निम् ।
३।५३।१६ (गाथिनो विश्वामित्रः । वाक् [सप्तपरी])
सा पक्ष्या नव्यमायुर्दधाना ।
[१७२] ७।८०।३ = (१३८) ७।४१।७
[१७३] ७।८१।१ प्रत्यु अदर्श्यायति ।
(१७९) ८।१०१।१३ (जमदग्निर्भार्गवः । उषाः सूर्यप्रभा वा)
चित्रेव प्रत्यदर्श्यायति ।
[१७३] ७।८१।१ = (११) १।४८।८
ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।

× [दे०- अग्निः, २०६ पृष्ठे ऋग्वेदस्य सप्तमे मण्डले एष मन्त्रभागो द्रष्टव्यः ।]

[१७३] ७।८१।१ = (११) १।४८।८
उच्छन्ती (८ मघोनी) दुहिता दिवः ।
[१७८] ७।८१।६ = (११) १।४८।८
उषा उच्छदप स्रिधः ।

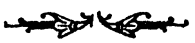
[१७८] ७।८१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
अवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम् ।
(इन्द्रः ३३१) ८।१३।१२ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[१७९] ८।१०१।१३ (जमदग्निर्भार्गवः । उषाः सूर्यप्रभा वा)
चित्रेव प्रत्यदर्श्यायति ।
(१७३) ७।८१।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
प्रत्यु अदर्श्यायति ।

दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवता-मन्त्राणां सूची।



अचेति दिवो दुहिता	१६३
अच्छा वो देवीमुषसं	८९
अजैष्माद्यासनाम	१९१
अतारिष्म तमसः	२९
अधि पेशांसि वपते	२७
अन्तिवामा दूरे अमित्र०	१५७
अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति	६५
अभि ये त्वा विभावरि	११३
अभूदुषा इन्द्रतमा	१६७
अभ्रातेव पुंस एति	७८
अमिनती दैव्यानि व्रतानि	७३
अर्चन्ति नारीरपसो	२६
अव स्यूमेव चिन्वती	८८
अवेयमश्वैद् युवतिः	८२
अश्वावतीर्गोमतीः	५; ७०; १३८; १७२
अश्वेव चित्रारुषी	१०४
अस्तोढ्वं स्तोम्या ब्रह्मणा	८४
अस्थुरु चित्रा उषसः	९३
अस्मे श्रेष्ठेभिर्मानुभिः	१५८
आ घा योषेव सूनर्युषा	८
आ द्यां तनोषि रश्मिभिः	१०९
आपप्रुषी विभावरि	१०८
आ याहि वनसा सह	१८०
आ याहि वस्व्या धिया	१८१
आवहन्ती पोष्या वार्याणि	५३
आसां पूर्वासामहसु	८०
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिः	३९
इदमु त्यत् पुरुत्तमं	९२
इदा हि त उषो अद्रिसानो	१३६
इदा हि वो विधते	१३५
इयं या नीचर्यर्किणी	१७९
ईयुष्टे ये पूर्वतरामू	४९
उच्छन्ती या कृणोषि	१७६
उच्छन्तीरद्य चितयन्त	९४
उच्छा दिवो दुहितः	१३७
उत नो गोमतीरिष	११७
उत सखास्यश्विनोः	१०५
उत् ते वयश्चिद् वसतेः	८३; १३१
उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा	२५
उदीरतां सूनृता उत्	६४
उदीर्ध्वं जीवो असुर्न	५४
उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं	१४७
उदु श्रिय उषसो रोचमाना	१२६
उदुस्रियाः सृजते सूर्यः	१७४
उषो अदर्शि शुन्ध्युवो	७५
उषो रुरुचे युवतिर्न योषा	१५४
उषासोषा उच्छाच्च नु	६
उष आ भाहि भानुना	१२
उषः प्रतीची भुवनानि	८७
उषस्तच्चित्रमा भर	३६
उषस्तमश्यां यशसं	३१
उषः अप स्वसुस्तमः	१८३; १८६
उषा उच्छन्ती समिधाने	७२
उषासानक्ता बृहती	१९१
उषो अद्येह गोमती	३७
उषो देव्यमर्त्या वि	८६
उषो भद्रेभिरा गहि	२०
उषो यदग्निं समिधे चकर्थ	४७
उषो यदद्य भानुना	१८
उषो ये ते प्र यामेषु युञ्जते	७
उषो वाजं हि वंस्व	१४
उषो वाजेन वाजिनि	८५
ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्	९१
ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना	७१
ऋतावरी दिवो अर्कैः	९०

एता उ त्या उषसः केतुं २४
एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन् १६१
एतावद् वेदुषस्त्वं ११९
एते त्ये भानवो दर्शताया० १४१
एवेदेषा पुरुतमा दृशे कं ७७
एषा गोभिररुणेभिर्यजाना १२२
एषा जनं दर्शता बोधयन्ती १२१
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ४५; ७४
एषा नेत्री राधसः सूनृतानां १५३
एषा प्रतीची दुहिता दिवो १२५
एषायुक्त परावतः १०
एषा व्येनी भवति द्विबर्हाः १२३
एषा शुभ्रा न तन्वो विदानो १२४
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना १७१
एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः १३१
एषा स्या युजाना पराकात् १४१
एषु धा वीरवद् यशः ११५
कन्येव तन्वा शाशदानाँ ६८
कस्त उषः कधप्रिये १
कियात्या यत् समया भवाति ४८
कुवित् स देवीः सनयो नवो वा ९५
क्व स्विदासां कतमा पुराणी ९७
क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया ४४
गृहंगृहमहना यात्यच्छा ६१
जानत्यह्नः प्रथमस्य नाम ६७
जिह्मश्ये चरितवे मघोनां ४३
त इद् देवानां सधमाद १५०
तच्चित्रं राध आ भर १७७
तदग्नाय तदपसे १८९
तद् वो दिवो दुहितरो विभातीः १०१
ता आ चरन्ति समना पुरस्तात् ९९
ता इन्वेव समना समानीः १००
ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुः ९८
तानीदहानि बहुलान्यासन् १४९
तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व १६८
तेभ्यो द्युम्नं बृहद् यशः ११६
त्वं त्येभिरा गहि ३
देवंदेवं राधसे चोदयन्ती १६९
देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती १५६
देवी उषासानक्ता १९३; १९४
द्युतद्यामानं बृहतीं १२०
निष्कं वा घा कृणवते १८८
नू नो गोमद् वीरवद् धेहि १४६
परायतीनामन्वेति पाथ ४६
पशून्न चित्रा सुभगा प्रथाना ३५
पितुभृतो न तन्तुमित् १८२
पुनःपुनर्जायमाना पुराणी ३३
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादबोधि ६०
पूर्वे अर्धे रजसो अप्त्यस्य ७६
पृथू रथो दक्षिणाया अयो० ५९
प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन् १६०
प्रति त्वा दुहितर्दिवः १७५
प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्त १६४
प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा १५२
प्रति द्युतानामरुषासो १४४
प्रति भद्रा अदृक्षत १०७
प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः १६१
प्रति ष्या सूनरी जनी १०३
प्रति स्तोमेभिरुषसं १७०
प्रत्यर्ची रुशदस्या अदर्शि २८
प्रत्यु अदर्श्यायत्यु (त्यू) च्छन्ती १७३; १८५
प्र बोधयोषः पृणतो मघोनि ८१
प्र मे पन्था देवयाना अदृश्रन् १४८
भगस्य स्वसा वरुणस्य जामिः ६३
भद्रा दृक्ष उर्विया वि भासि १२७
भास्वती नेत्री सूनृतानां ३०; ४१
महे नो अद्य बोधय ११०
महे नो अद्य सुविताय १४०
माता देवानामदितेरनीकं ५७
यच्च गोषु दुःष्वप्न्यं १८७
यच्चित्रमप्न उषसो वहन्ति ५८
यच्चिद्धि ते गणा इमे ११४
यथा कलां यथा शफं १९०
यदद्य भागं विभजासि ६१
यस्या रुशन्तो अर्चयः १६
या गोमतीरुषसः सर्ववीरा ५६
यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्ति १५९
यावयद् द्वेषसं त्वा १०६

यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः	५०	व्युच्छा दुहितर्दिवो	११८
या सुनीथे शौचद्रथे	१११	व्युषा आवः पथ्या जनानां	१६५
युङ्क्वा हि वाजिनीवती	३८	व्युषा आवो दिविजा ऋतेन	१३९
यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भिरश्वैः	९६	व्यूर्ण्वती दिवो अन्ताँ अबोधि	३४
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्व ऊतये	१७	शश्वत् पुरोषा व्युवास देवी	५१
रयिं दिवो दुहितरो विभातीः	१०१	श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं	१७८
रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागा०	४०	श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्तीः	१३४
वयं हि ते अमन्महि	२	संज्ञानमसि कामधरणं	१८४
वयश्चित् ते पतत्रिणो	२२	सत्या सत्येभिर्महती महद्भिः	१४५
वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो	१२८	सदृशीरद्य सदृशीरिदु श्वो	६६
वाजिनीवती सूर्यस्य योषा	१४३	सं नो राया बृहता विश्वपेशसा	१९
वि तद् ययुररुणयुग्भिरश्वैः	१३३	समान ऊर्वे अधि संगतासः	१५१
वि या सृजति समनं व्यर्थिनः	९	समानो अध्वा स्वस्रोरनन्त०	४१
विश्वमस्या नानाम चक्षसे	११	सह वामेन न उषो	४
विश्वं प्रतीची सप्रथाः	१५५	सा नो अद्याभरद् वसुः	११२
विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे	१३	सा वह योक्षभिरवातो०	१३०
विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या	३२	सुगोत ते सुपथा पर्वतेषु	१२९
विश्वान् देवाँ आ वह सोमपीतये	१५	सुपेशसं सुखं रथं	२१
व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वयतून्	१६६	सुसंकाशा मातृमृष्टेव	६९
व्यञ्जिभिर्दिव आतास्वद्यौ०	५२	स्यूमना वाच उदियर्ति वह्निः	५५
व्युच्छन्ती हि रश्मिभिः	२३	स्वसा स्वस्रे जायस्यै	७९

दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवता-मन्त्राणां उपमा-सूची ।

अजिरः न वोळ्हा ६,६४,३; १२८ तमः बाधते ।
अद्यसत् न १,१२४,४; ७५ ससतः बोधयन्ती ।
अपसः न १,९२,३; २६ नारीः विष्टिभिः आ परावतः अर्चन्ति ।
अपां न ऊर्मयः ६,६४,१; १२६ उषसः श्रियः उत् अस्थुः ।
अभ्राता इव प्रतीची १,१२४,७; ७८ उषा एति ।
अश्वा इव ४,५२,२; १०४ चित्रा अरुषी उषा ।
अस्ता इव ६,६४,३; १२८ शूरा शत्रून् अपेजते ।
उस्रा इव बर्जहम् १,९२,४; २७ उषा वक्षः अपोर्णुते ।
(यथा) ऋणम् ८,४७,१७; १९० दुःष्वप्न्यं आप्त्ये संनयामसि।
कन्या इव १,१२३,१०; ६८ तन्वा शाशदाना ।
(यथा) कलाम् ८,४७,१७; १९० दुःष्वप्न्यं आप्त्ये संनयामसि ।
गर्तारुक् इव १,१२४,७; ७८ धनानां सनये गर्तं एति ।
गवां सर्गाः न ४,५१,८; ९९ ऋतस्य सदसः बुधानाः जरन्ते।
गवां सर्गाः न ४,५२,५; १०७ उरु ज्रयः आ अप्राः ।
गावः न व्रजम् १,९२,४; २७ विश्वस्मै भुवनाय ज्योतिः ।
चक्रं इव ३,६१,३; ८७ समानं अर्थं चरणीयमाना ।
चन्द्रा इव ३,६१,७; ९१ माया पुरुत्रा भानुं वि दधे ।
(यथा) चित् ५,७९,१;११० नः अबोधयः ।
चित्रा इव ८,१०१,१३; १७८ आयती प्रत्यदर्शि ।
जाया इव पत्ये उशती सुवासाः १,१२४,७; ७८ उषाः अप्सः।
जारः इव ७,७६,३; १४९ परि आ चरन्ती ।
तन्तुं ततं इव वा० य० २०,४१; १९२ पेशसा संवयन्ती।
(आयुधानि इव) धृष्णवः १,९२,१; २४ निष्कृण्वानः गावः प्रति।
नृतूः इव १,९२,४; २७ पेशांसि अधि वपते ।
नोधाः इव १,१२४,४; ७५ प्रियाणि आविः अकृत ।
पशून् न १,९२,११;३५ प्रथाना उर्विया व्यश्वैत् ।
पितुभृतः न १०,१७२,३; १८२ तन्तुं इत् प्रति दध्मः ।
पूर्वथा १,९२,२; २५ वयुनानि अक्रन् ।
" ५,८०,६; १२५ युवतिः पुनः ज्योतिः अकः ।
प्रजानती इव १,१२४,३; ७४ ऋतस्य पन्थां साधु एति ।
" ५,८०,४; १२३ दिशः न मिनाति ।
प्रत्नवत् ६,६५,६; १३७ नः उच्छ ।
भद्रा योषा इव ५,८०,६; १२५ नृन् अप्सः नि रिणीते ।
भरद्वाजवत् ६,६५,६; १३७ नः धनं रिरीहि ।
मातुः न सूनवः ७,८१,४; १७६ वयं ते स्याम ।
यती इव ७,७६,३; १४९ पुनः न दृक्षे ।
युवतिः [इव] १,१२३,१०; ६८ संस्मयमाना वक्षांसि आविः ।
युवतिः अह्रयाणा ७,८०,२; १७१ सूर्यं आचिकितत् ।
युवतिः न योषा ७,७७,१; १५४ उप रुरुचे ।
योषा इव सूनरी १,४८,५; ८ प्रभुञ्जती घा आ याति ।
योषा इव १,१२३,११; ६९ सुसंकाशा तन्वं दृशे आविः कृणुषे।
रत्नं न ७,८१,३; १७५ दाशुषे पुरु स्पार्हं वहसि ।
(वृषभस्य) रवेण ७,७९,४; १६८ त्वा प्रकाशेन जन्नुः ।
(यथा) रात्री सवितुः प्रसूता १,११३,१; ३९ उषसे सवायं ।
वायोः इव १,११३,१८; ५६ सूनृतानां उदर्कः ।
विशः न युक्ताः ७,७९,२; १६६ उषासः अक्तून् यतन्ते ।
(समनगा इव) व्राः १,१२४,८; ७९ एषा अक्षि अङ्क्ते ।
(यथा) शफम् ८,४७,१७; १९० दुःष्वप्न्यं आप्त्ये संनयामसि।
शुन्ध्युवः न वक्षः १,१२४,४; ७५ एषा उपो अदर्शि ।
शुभ्रा न ५,८०,५; १२४ तन्वः विदाना नः दृशये अस्थात् ।
(समुद्रे न) श्रवस्यवः १,४८,३; ६ अस्याः आचरणेषु रथाः ।
श्रिये छन्दः न १,९२,६; २९ विभाती उषाः स्मयते ।
श्वघ्नी इव कृत्नुः १,९२,१०; ३३ मर्तस्य आयुः जरयन्ती ।
सविता इव बाहू ७,७९,२; १६६ उषसः ज्योतिः यच्छन्ति ।
सिन्धुः न क्षोदः १,९२,१२; ३५ उषाः उर्विया व्यश्वैत् ।
(उद्यन्) सूर्यः [इव] १,१२४,१; ७२ उर्विया ज्योतिः अश्रेत् ।
(रिपुं) स्तेनं यथा ५,७९,९; ११८ त्वां अर्चिषा नेत् तपाति ।
स्यूमा इव ३,६१,४; ८८ (तमः) अव चिन्वती उषा याति ।
(अध्वरेषु मिताः) स्वरवः इव ४,५१,२; ९३ चित्राः उषसः ।
(विदथेषु) स्वरुं न १,९२,५; २८ पेशः उषा अनक्ति ।
स्नातः ऊर्ध्वा इव ५,८०,५; १२४ उषाः नः दृशये अस्थात् ।
हस्ता इव १,१२४,७; ७८ उषाः अप्सः नि रिणीते ।

दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवताया गुणबोधक-पदानि ।

अग्निरस्तमा ७,७९,३; १६७
अजरा १,११३,१३; ५१
अजुर्याः ४,५१,६; ९७
अदितेः अनीकम् १,११३,१९; ५७
अद्रिसानुः ६,६५,५; १३६
अध्वा समानः स्वस्रोः १,११३,३; ४१
अनवद्याः १,१२३,८; ६६
अनीकम् अदितेः १,११३,१९; ५७
अनुयच्छमाना ऋतस्य रश्मिम् १,१२३,१३; ७१
अनूर्चा [रात्र्युषसौ] १,११३,२; ४०
अन्तिवामा ७,७७,४; १५७
अभिपश्यन्ती जनानां वयुना ७,७५,४; १४२
अभिभुवस्नाः ४,५१,७; ९८
अमर्त्या ३,६९,२; ८६
अमिनती दैव्यानि व्रतानि १,९२,१२; ३५ । १२४,२; ७२
अमीतवर्णा ४,५१,९; १००
अमृतस्य केतुः ३,३९,३; ८७
अमृता १,११३,१३; ५१
अमृते [रात्र्युषसौ] १,११३,२; ४०
अरुणप्सुः ५,८०,१; १२०
अरुषी १,३०,२१; २ । ९२,१-२; २४-२५ । ४,५१, २; १०४
अर्किणी ८,१०१,१३; १७९
अर्या १,१२३,१; ५९
अवाता ६,६४,५; १३०
अश्वदाः १,११३,१८; ५६
अश्वं नयन्ती सुदृशीकं श्वेतम् ७,७७,३; १५६
अश्वसूनृता ५,७९,१-१०; ११०-११९
अश्वा १,३०,२१; २
अश्वावती-तीः १,४८,२; ५ । ९२,१४; ३७ । १२३, १२; ७० । ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
असितं अम्बं गूहन्तीः ४,५१,९; १००
अश्विनोः सखा ४,५२,२-३; १०४-१०५
अस्रेधन्ती ५,८०,३; १२२
अह्ना १,१२३,४; ६२
अह्नः प्रथमस्य नाम जानती १,१२३,९; ६७
अह्नां नेत्री ७,७७,२; १५५
आपमुषी ४,५२,६; १०८
आभरद्वसुः ५,७९,३; ११२
आमिनाना विजः १,९२,१०; ३३
आमिनाने वर्णम् [नक्तोषासा] १,११३,२; ४०
आयती ३,६१,६; ९० । ७,८१,१; १७३ । साम० ३०३; १८५
आयती अन्तः दशसु बाहुषु ८,१०१,१३; १७९
आयतीनां प्रथमा १,१२४,२; ७३
आयुः जरयन्ती १,९२,१०; ३३
आयुः प्रतिरन्ती ७,७७,५; १५८
आवहन्ती परेड्या वार्याणि १,११३,१५; ५३
आवहन्ती स्वर् ५,८०,१; १२०
आविष्कृण्वती विश्वा भुवनानि ७,८०,१; १७०
आविष्कृण्वाना तन्वम् ५,८०,४; १२३
आविष्कृण्वाना महिमानम् ७,७५,१;१३९
इन्द्रतमा ७,७९,३; १६७
इषं दधती ७,७७,५; १५८
इषं वहन्ती १,९२,३; २६
ईयुषीणां शश्वतीनां उपमा १,११३,१५; ५३
ईरयन्ती सूनृता १,११३,१९; ५० । ३,६०,१; ८६ । ७,७९,५; १६९
ईशाना वस्वः विश्वस्य पार्थिवस्य १,११३,७; ४५
ईशिषे वस्वः ४,५२,३; १०५
ईशे वसूनां रायः ७,७५,५; १४३
उच्छन्ती १,९२,६; २९ । १२४,१; ७२ । ४,५१,३; ९४ । ६,६५,१; १३१ । ७,७६,७; १५३ । ८१,१, ४; १७३,१७६ । साम० ३०३; १८९
उच्छन्ती व्रजस्य तमराः द्वारा ४,५१,२; ९३
उदीरयन्ती जीवम् १,११३,८; ४६
उपमा ईयुषीणां शश्वतीनाम् १,११३,१५; ५३ । १२४, २; ७३
उर्विया १,९२,११; ३५ । ६,६४,२,३; ११७;११८

उषाः
उषसः
} प्रायः सर्वत्र ।

ऋतजातसत्या ४,५१,७; ९८
ऋतपाः १,११३,११; ५०
ऋतस्य सदसः ४,५१,८; ९९
ऋतावरी ३,६९,६; ९० । ४,५२,२; १०४ । ५,८०, १; १२०
ऋतेजाः १,११३,११; ५०
ऋषिष्टुता ७,७५,५; १४३
ऋष्वा ६,६४,४; १२९
एयुषीणां शश्वत्तमा १,१२४,४; ७५
ओदती १,४८,६; ९
कधप्रिया १,३०,२०; १
कृण्वती ज्योतिः भुवनाय १,९२,४; २७
कृण्वती पथः सुगान् ५,८०,२; १२१
कृत्नुः १,९२,१०; ३३
केतुः १,१२४,११; ८२
केतुः अमृतस्य ३,६१,३; ८७
केतुः यज्ञस्य १,११३,१९; ५७
गवां जनित्री १,१२४,५; ७६
गवां नेत्री ७,७६,६; १५२
गवां माता ४,५६,२-३; १०४-१०५ । ७,७७,१; १५५
गावः १,९२,१; २४
गूहन्ती अभ्वं असितम् ४,५१,९; १००
गृणाना ७,७९,४; १६८
गृणाना वह्निभिः ७,७५,५; १४३
गोभिः अरुणेभिः युजाना ५,८०,३; १२२
गोमती-तीः १,४८,२; ५ । ९२,१४; ३७ । ११३, १८; ५६ । १२३,१२; ७० । ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
घृतं दुहाना ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
चन्द्ररथा ३,६१,२; ८६ । ६,६५,२; १३३
चरणीयमानां समानं अर्थम् ३,६१,३; ८७
चरायै विश्वं जीवं प्रसुवन्ती ७,७७,१; १५४
चिकित्वित् ४,५२,४; १०६
चिकित्सन्ती मानुषाणां क्षयाय १,१२३,१; ५९
चित्रा १,३०,२१; २ । ९२,१२; ३५ । ११३,४; ४२ । ४,५१,२; ९३
चित्रामघा १,४८,१०; १३ । ७,७५,५; १४३ । ७७,३; १५६
चेकिताना १,११३,१५; ५३
चोदयन्ती देवंदेवं राधसे ७,७९,५; १६९
चोदयित्री मघोनः ७,८१,६; १७८
जननी स्वर् ३,६१,४; ८८
जनानां पथ्या ७,७९,१; १६५
जनानां वयुना अभिपश्यन्ती ७,७५,४; १४२
जनियो गवाम् १,१२४,५; ७६
जनी ४,५२,१; १०३
जयन्ती वाजम् १,१२३,२; ६०
जरयन्ती मर्तस्य आयुः १,९२,१०; ३३
जरयन्ती वृजनम् १,४८,५; ८
जानती प्रथमस्य अह्नः १,१२३,९; ६७
जामिः वरुणस्य १,१२३,५; ६३
जायमाना पुनःपुनः १,९२,१०; ३३
जारयन्ती १,१२४,१०; ८१
जारस्य योषा १,९२,११; ३४
जीरा रथानाम् १,४८,३; ६
जीवं उदीरयन्ती १,११३,८; ४६
ज्योतिः कृण्वती भुवनस्य १,९२,४; २७
ज्योतिः यच्छन्ती ७,७८,३; १६२
ज्योतिः वसाना १,१२४,३; ७४
ज्योतिषा [निवारयन्ती] गूहूवी तमः ७,८०,२; १७१
ज्योतिषां श्रेष्ठं ज्योतिः १,११३,१; ३९
तन्वं आविष्कृण्वाना ५,८०,४; १२३
तन्वः विदाना ५,८०,५; १२४
तमः गूहूवी ज्योतिषा (निवारयन्ती) ७,८०,२: १७१
तमांसि अप बाधमाना ५,८०,५; १२४ । ७,७८,२; १६१
तमांसि बाधमाना ७,७७,१; १५४
दक्षिणा १,१२३,१,५; ५९,६३ । ६,६४,१; १२६
दधती इषं राधः (च) ७,७८,५; १५८
दधाना नव्यं आयुः ७,८०,२; १७१
दधाना नाम अधि १,१२३,४; ६२
दधाना रयिं दीर्घश्रुतम् ७,७६,७; १५३
दर्शता ५,८०,२; १२१ । ६,६४,५; १३० । ७,७५, ३; १४१

*

दाशुषे वार्याणि व्यूर्ण्वती ५,८०,६; १२५
दास्वती १,४८,१; ४
दिवः अन्तान् व्यूर्ण्वती १,९५,११; ३४
दिविजाः ७,७५,१; १३९
दिवोजाः ६,६५,१; १३२
दिवित्मती ५,७९,१; ११०
दिवो दुहिता-तरः १,३०,२१; ३ । ४८,१.८-९; ४, ११-१२ । ४९,२; २१ । ९२,५,७; २८,३० । ११३, ७; ४५ । १२४,३; ७४ । ४,५१,१.१०; ९२, १०१ । ४,५२,१; १०३ । ५, ७९, २--३, ८--९; ११०-१११,११७-११८ । ८०,५-६; १२४-१२५ । ६,६४,४-५; १२९-१३० । ६५,६; १३७ । ७,७५, ४; १४२ । ७७, ६; १५९ । ७८, ४; १६३ । ७९,३; १६७ । ८१,१.३.५; १७३,१७५,१७७ । ८, ४७,१४-१५; १८७-१८८ । साम० ३०३; १८५
दुरिता विश्वा अप बाधमाना ७,७८,२; १६१
दुहानाः घृतम् ७,४१,७; १३८ । ८०,३: १७२
दुहिता ६,६५,१; १३२
दुहिता दिवः ' दिवो दुहिता ' द्रष्टव्यम् ।
दृशाना सूर्यस्य रश्मिभिः १,११३,१२; ३५
देवंदेवं राधसे चोदयन्ती ७,७९,५; १६९
देववीतिं बिभ्रती १,११३,१२; ५०
देवशिष्टे [रात्र्युषसौ] १,११३,३; ४१
देवानां चक्षुः वहन्ती ७,७७,३; १५६
देवानां माता १,११३,१९; ५७
देवी-वीः १,४८,१,३,१५; ४,६,१८ । ९२,९-१०; ३२-३३ । ११३,१३-१४; ५१-५२ । १२३,३,१०; ६१,६८ । १२४,१२-१३; ८३-८४ । ३,६१,१-२.५; ८५-८६,८९ । ४,५१,४-५ ८.१०; ९५-९६,९९,१०१ । ५,८०,१,३; १२०,१२२ । ६,६४,२,५-६; १२७, १३०-१३१ । ७,७५,२,७; १४०,१४५ । ७७,५; १५८ । ७८,२; १६१ । ७९,३; १६७ । ८१,४; १७६ । वा०य० २८,१४.३७; १९३-१९४ ।
द्युतदामा (मन्) ५,८०,१; १२०
द्युताना ७,७५,६; १४४
द्योतना १,१२३,४; ६२
द्विबर्हाः ५,८०,४; १२३
नक्तोषासा [देवते] १,११३,३; ४१
नयन्ती यज्ञस्य अग्रम् ६.६५,२; १३३
नयन्ती सुदृशीकं श्वेतं अश्वम् ७,७७,३; १५६
नव्यं आयुः दधाना ७,८०,२; १७१
नव्यसी-सीः ३,६१,३; ८७ । १,१२४,९; ८०
नाम अधि दधाना १,१२३,४; ६२
नारीः १,९२,३; २६
निष्कृतं अहरहः आचरन्ती १,१२३,९; ६७
नीची ८,१०१,१३; १७९
नेत्री अक्षाम् ७,७७,२; १५५
नेत्री गवाम् ७,७६,६ १५२
नेत्री सूनृतानाम् १,९२,७; ३० । ११३,४; ४२ । ७,७६,७; १५३
पत्यमानाः ६,६५,३; १३४
पत्नी भुवनस्य ७,७५,४; १४२
पत्नी स्वसरस्य ३,६१,४; ८८
पथः रदन्ती सुविताय ५,८०,३; १२१
पथः सुगान् कृण्वती ५,८०,२; १२१
पथ्या जनानाम् ७,७९,१; १६५
पप्रथानाः समानतः समना ४,५१,८; ९९
पयस्वती वा० य० २०,४१; १९२
पराकात् युजाना ७,७५,४; १४२
पावकाः ४,५१,२; ९३
पुनःपुनः जायमाना १,९२,१०; ३३
पुनर्भूः १,१२३,२; ६०
पुरन्धिः ३,६१,१; ८५
पुराणी १,९२,१०; ३३ । ३,६१,१; ८५ । ४,५१,६ ९७
पुरुतमा १,१२४,६; ७७
पुरुष्टुता ५,८०,३ १२२
पूर्वहूतौ प्रथमा १,१२३,२; ६०
पृणन्ती उभा १,१२४,५; ७६
पृथुयामा (मन्) ६,६४,४; १२९
प्रचेताः ३,६१,१; ८५
प्रजानती इव १,१२४,३; ७४ । ५,८०,४; १२३
प्रतिबुध्यमानाः स्योनात् वः ४,५१,१०; १०१
प्रतिरन्ती आयुः ७,७७,५; १५८
प्रतीची १,९२,९; ३२ । ५,८०,६; १२५ । ७,७६,२, १४८
प्रतीची पुंसः १,१२४,७; ७८
प्रतीची विश्वम ७,७७,२, १५५
प्रतीची विश्वा भुवनानि ३,६१,३; ८७

प्रथमा १,१२३,५; ६३ । ७,७६,६; १५१
प्रथमा आयतीनाम् १,१२४,१; ७३
प्रथमा आयतीनां शश्वतीनाम् १,११३,८; ४६
प्रथमा पूर्वहूतौ १,१२३,१; ६०
प्रथमा विभातीनाम् १,११३,१५; ५३
प्रथमा विश्वस्मात् भुवनात् १,१२३,१; ६०
प्रथाना १,९२,१२; ३५ । ६,६४,३; १२८
प्रदीध्याना अन्याभिः १,११३,१०; ४८
प्रपीताः विश्वतः ७,४१,७; १३८ । ८०,३, १७१
प्रबोधयन्ती अरुणैः अश्वैः १,११३,१४; ५१
प्रबोधयन्ती ससन्तम् ४,५१,५; ९६
प्रभुञ्जती १,४८,५; ८
प्रभूता विश्वं अनु ७,७७,३; १५६
प्रभिनती मनुष्या युगानि १,९२,११; ३४ । १२४,२; ७२
प्रशस्तिकृत् १,११३,१९; ५७
प्रसुवन्ती विश्वं जीवं चरायै ७,७७,१; १५४
बाधमाना तमांसि द्वेषः अप ५,८०,५; १२४
बाधमाना तमांसि विश्वा दुरिता अप ७,७८,१; १६१
बाधमाना तमांसि ७,७७,१; १५४
बिभ्रती देववीतिम् १,११३,१२; ५०
बिभ्रती रुशत् शुक्रं वासः ७,७७,२; १५५
बृहती १,११३,१९; ५७ । ५,८०,२, १२१ । वा०य० २०,४१, १९३
बृहती ऋतेन ५,८०,१; १२०
बृहद्रथा ५,८०,२; १२१
बोधयन्ती जनम् ५,८०,२; १२१
बोधयन्ती पञ्चमानुषीः क्षितीः ७,७९,१; १६५
बोधयन्ती विश्वं जीवम् १,९२,९; ३२
बोधयन्ती ससतः १,१२४,४; ७५
भगस्य स्वसा १,१२३,५; ६३
भद्रा १,१२३,११; ६९ । ६,६४,२; १२७
भद्राः ४,५१,७; ९८ । ७,४१,७; १३८ । ८०,३, १७१
भद्रा नाम वहमानाः १,१२३,१२; ७०
भास्वती १,९२,७; ३०
भुवनस्य पत्नी ७,७५,४; १४१
भुवनानि विश्वा आविष्कृण्वती ७,८०,१; १७०
भुवनानि विश्वा प्रतीची ३,६१,३; ८७
मंहना ७,८१,४; १७६
मंहना पूर्वहूतौ ६,६४,५; १३०
मघोनः चोदयित्री ७,८१,६; १७८
मघोनी १,४८,८; ११ । ११३,५.१३.१९; ४३,५१, ५५ । १२४,१०; ८१ । ३,६१,४; ८८ । ४,५१,३ ९४ । ५,७९,४.६-७; ११३,११५-११६। ६,६४,१, १२६ । ६५, ३. ६; १३४, १३७ । ७, ७५, ५; १४५ । ७७,४; १५७ । ७८,४; १६३ । ७९,३; १६९
मघुधा ३,६९,५; ८९
मर्त्यत्रा १,१२३,३; ६१
महती ७,७५,७; १४५
महिमानं आविष्कृण्वाना ऋतेन ७,७५,१; १३९
मही ३,६९,७; ९१ । ७,८१,४; १७६
मातरः १,९२,१; २४
माता गवाम् ४,५२,१-३; १०४-१०५ । ७,७७,१, १५५
माता देवानाम् १,११३,१९; ५७
मातृमृष्टा १,१२३,११; ६९
माया मित्रस्य वरुणस्य ३,६१,७; ९१
मृतं बोधयन्ती १,११३,८; ४६
यच्छन्तीः ज्योतिः ७,७८,३; १६१
यजता ७,७५,७; १४५
यज्ञस्य केतुः १,११३,१९; ५७
यतमानाः सूर्यस्य रश्मिभिः १,१२३,१२; ७०
यावयद् द्वेषाः १,११३,१२; ५० । ४,५२,४; १०६
युगानि मनुष्या प्रमिनती १,९२,११; ३४ । १२४,२; ७२
युजाना अरुणेभिः गोभिः ५,८०,३; १२२
युजाना पराकात् ७,७५,४; १४२
युवतिः १,११३,७; ४५ । १२३,२.१०, ६०,६८। १२४,११; ८२ । ३,६१,१; ८५ । ५,८०,६, १२५
युवतिः अह्रयाणा ७,८०,२; १७१
योषा १,१२३,९; ६७
योषा जारस्य १,९२,११; ३४
योषा सूर्यस्य ७,७५,५; १४३
रजसी समना विवर्तयन्ती ७,८०,१; १७०
रण्वसंदृक् ३,६१,५; ८९
रत्नभाक् ७,८१,४; १७६
रथानां जीरा १,४८,३; ६
रदन्ती पथः सुविताय ५,८०,३; १२२

रयिं दीर्घश्रुतं दधाना ७,७६,७; १५३
रश्मिं ऋतस्य अनुयच्छमाना १,१२३,१३; ७१
रश्मिभिः व्यक्ता ७,७७,३; १५६
रश्मिभिः सूर्यस्य दृशाना १,९२,११; ३५
रश्मिभिः सूर्यस्य यतमानाः १,१२३,१२; ७०
रुचानाः ४,५१,९; १००
रुशती १,११३,२; ४०
रुशद्वत्सा १,११३,२; ४०
रुशन्तः ६;६४,१.३; १२६,१२८
रूपा ८,१०१,१३; १७९
रेवती ४,५१,४; ९५
रोचना ३,६१,५; ८९
रोचमानाः ६,६४,१; १२६
रोहिण्या ८,१०१,१३; १७९

घनन्वती ७,८१,३; १७५
वरुणस्य जामिः १,१२३,५; ६३
वर्ण आमिनाने [नक्तोषासा] १,११३,२; ४०
वसाना ज्योतिः १,१२४,३; ७४
वसूनां रायः ईशे ७,७५,५; १४३
वस्वः ईशिषे ४,५१,३; १०५
वस्वी ६,६४,१; १२६
वहन्तीः इषम् १,९२,३; २६
वहन्तीः दाशुषे श्रवः वाजं इषं ऊर्जम् ६,६५,३; १३४
वहन्ती देवानां चक्षुः ७,७७,३; १५६
वह्निभिः गृणाना ७,७५,५; ११३
वाजं जयन्ती १,१२३,२; ६०
वाजपत्नी ७,७६,६; १५२
वाजप्रसूता १,९२,८; ३१
वाजिनी वाजेन ३,६१,१; ८५
वाजिनीवती १,४८,६.१६; ९,१९। १२३,१३.१५; ३६,३८। ७,७५,५; १४३
वार्याणि पोष्या आवहन्ती १,११३,१५; ५३
वार्याणि व्यूर्ण्वती ५,८०,६; १२५
वावशाना पूर्वाः १,११३,१०; ४८
विजः आमिनाना १,९६,१०; ३३
विदाना तन्वः ५,८०,५; १२४
विभाती १,९२,६; २९। ११३,१०; ६८। १२४,६; ७७। ३,६१,५-६; ८९-९०। ४,५१,१.१०-११; ९२, १०१-१०२। ५,८०,१; १२०। ७,७८,४; १६३
विभातीः १,११३,१७; ५५। १२३,६; ६४। ७,७८,३.५; १६२,१६४
विभातीनां प्रथमा १,११३,१५; ५३
विभावरी १,३०,२०; १। ४८,१.१०; ४,१३। ९२, १४; ३७। ४,५१,६; १०८। ५,७९,४.१०; ११३, ११९। ८,४७,१४; १८७
विरूपे [नक्तोषासा] १,११३,३; ४१
विवर्तयन्ती रजसी समन्ते ७,८०,१; १७०
विवासयन्ती १,११३,११; ४९
विश्वं अनु प्रभूता ७,७७,३; १५६
विश्वं जीवं चरायै प्रसुवन्ती ७,७७,१; १५४
विश्वं प्रतीची ७,७७,२; १५५
विश्वतः प्रपीताः ७,४१,७; १३८। ८०,३; १७२
विश्वमिन्वा ५,८०,२; १२१
विश्ववारा १,११३,१९; ५७। ३,६१,१; ८५। ५, ८०,३; १२२। ७,७७,५; १५८
विश्ववाराः १,१२३,१२; ७०
विश्वसुविदः १,४८,२; ५
विश्वस्य वस्वः पार्थिवस्य ईशाना १,११३,७; ४५
विहायाः १,१२३,१; ५९
वीरवतीः ७,४१,७; १३८। ८०,३; १७२
व्रजं जरयन्ती १,४८,५; ८
व्रतानि दैव्यानि अमिनती १,९२,१२; ३५। १२३,२, ७३
व्यक्ता रश्मिभिः ७,७७,३; १५६
व्युच्छन्ती [तमांसि] १,४८,९; १२। ४९,४; २३। ११३,७-८; ४५-४६। ५,७९,१०; ११९। ७,७९, ५; १६९
व्युच्छन्ती सूर्यस्य रश्मिभिः १,१२४,८; ७९
व्युच्छन्ती स्वसुः परि ४,५१,१; १०३
व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि ५,८०,६; १२५
व्यूर्ण्वती दिवो अन्तान् १,९२,११; ३४
व्येनी ५,८०,४; १२३

शाश्वत्तमा एयुषीणाम् १,१२४,४; ७५
शाशदाना १,१२३,१०; ६८
शाशदाना अरेपसा तन्वा १,१२४,६; ७७
शुक्रा १,१२३,९; ६७
शुक्राः रुशद्भिः तनूभिः ४,५१,९; १००
शुक्रं वासः बिभ्रती ७,७७,२; १५५

शुक्रवासाः १,११३,७; ४५
शुचयः ४,५१,२.९; ९३,१००
शुभ्राः ४,५१,६; ९७ । ७,७५,६; १४४
शुम्भमाना १,९२,१०; ३३
शुम्भमाना महोभिः ६,६४,२; १२७
श्रेष्ठतमा १,११३,१२; ५०
श्वितीची १,१२३,९; ६७
श्वेत्या १,११३,२; ४०
संस्मयमाना १,१२३,१०; ६८
सखा अश्विनोः ४,५२,२-३; १०४-१०६
सत्या ७,७५,७; १४५
सदसः ऋतस्य ४,५१,८; ९९
सदृशीः ४,५१,६; ९७
सदृशीः अद्य १,१२३,८; ६६
सदृशीः श्वः १,१२३,८, ६६
सनुत्री १,१२३,२; ६०
सप्रथाः ७,७७,२; १५५
समनसा [नक्तोषासा] १,११३,३; ४१
समना ४,५१,८-९; ९९-१००
समना पप्रथानाः ४,५१,८; ९९
समानबन्धू [नक्तोषासा] १,११३,२; ४४
समानीः ४,५१,९; १००
सर्ववीराः १,११३,१८; ५६
ससतः बोधयन्ती १,१२४,४; ७५
ससन्तं प्रबोधयन्तीः ४,५१,५; ९६
सिषासन्ती १,१२३,४; ६२
सुजाता १,१२३,३; ६१ । ५,७९,१-१०; ११०-११९ । ७,७६,६; १५२ । ७७,६; १५९
सुदंसा ३,६१,४; ८८
सुदिनाः १,१२४,९; ८०
सुदुघे [उषासानक्ता] वा० य० २०,४१; १९२
सुदृशीकंसंदृक् ७,७२,२; १५५
सुधिते [उषासानक्ता] वा० य० २८,१४; १९३
सुप्रतीका १,९२,६; २९
सुप्रीते [उषासानक्ता] वा० य० २८,१४; १९३
सुभगा १,४८,७; १० । ११३,७; ४५ । ९२,८.१२; ३१,३५ । ३,६१,४; ८८ । ६,६४,३; १२८ । ७,७६,६; १५२ । ७७,३; १५६
सुमङ्गली १,११३,१२; ५०
सुमेके १,११३,३; ४१
सुम्नावरी १,११३,१२; ५०
सुरुक्मे [उषासानक्ता] वा० य० २०,४१; १९२
सुविताय पथः रदन्ती ५,८०,३; १२२
सुसंकाशा १,१२३,११; ६९
सूनरी १,४८,५.८.१०; ८,११,१३ । ४,५२,१; १०३ । ७,८१,१; १७३ । साम० ३०३; १८५
सूनृता १,१२३,५; ६३ । १२४,१०; ८१
सूनृतावती १,९२,१४; ३७ । ७,८१,६; १७८
सूनृतावरी ४,५२,४; १०६
सूनृताः ईरयन्ती १,११३,१२; ५० । ३,६१,२; ८६ । ७,७९,५; १६९
सूनृतां नेत्री १,९२,७; ३० । ११३,४; ४२ । ७,७६,७; १५३
सूर्यस्य योषा ७,७५,५; १४३
सौभाग्यं आवहन्ती १,४८,९; १२
स्तोम्याः १,१२४,१३; ८४
स्योनात् वः प्रतिबुध्यमानाः ४,५१,१०; १०१
स्वभानुः ६,६४,४; १२९
स्वर् आवहन्ती ५,८०,१; १२०
स्वर् जनन्ती ३,६१,४; ८८
स्वसरस्य पत्नी ३,६१,४; ८८
स्वसा भगस्य १,१२३,५; ६३
स्वसारौ [नक्तोषासा] १,११३,३; ४१
स्वसुः परि व्युच्छन्ती ४,५२,१; १०३
हिरण्यवर्णा ३,६१,२; ८६ । ७,७७,२; १५५

अग्निदेवतामन्त्रान्तर्गत--

आप्रीसूक्तेषु 'उषासानक्ता'-देवताया गुणबोधक-पद-संग्रहः ।

इन्द्रस्य धेनू	२०८९
उक्षिते	१९४७
उपाके	१९५८; १९२४
,,	२०७९
उभे	२१००
उशती	१९९७
उषे	२०४२
ऋतस्य मातरा	१९२४; १९६९
चरन्ती मित्रावरुणा अन्तरा	२१११
ततं तन्तुं संवयन्ती	१९४७
दधाने शुक्रपिशम्	२००८
दर्शते	१९८६
,,	२१००
दिवः दुहितरा	१९९७
दिव्ये	१९७९
दिव्ये (योषणे)	२००८
दिव्ये योषिते	२०६६
दुहितरः दिवः	१९९७
देवी	१९९७
धेनू इन्द्रस्य	२०८९
नृः पतिभ्यः योनिं कृण्वाने	२१३५
पयस्वती	१९४७
पुरुहूते	१९७९
बर्हिषदा	१९७९
बृहती	१९८६
,,	२००८
,,	२१००
,,	२१३५
भन्दमाने	१९२४
मघोनी	१९७९
मही	१९७९
,,	१९८६
,,	२०८९
मातरा	२०८९
मातरा ऋतस्य	१९२४
यजते	२००८
,,	२०७९
यह्वी	१९२४
,,	२०३१
योषणे	२००८
,,	१९७९
योषणे दिव्ये	२०६६
रण्विते	१९४७
वयोवृधा	१९६९
वध्या इव	१९४७
शुक्रपिशं दधाने	२००८
विरूपे	१९५८
संवयन्ती ततं तन्तुम्	१९४७
संविदाने	२१११
संस्मयमाने	२१३५
संजानाने	२०३१
समीची	१९४७
सवातरौ	२०८९
सनता	१९४७
सुदुघे	१९४७
सुपेशसा	१९११; २०४२
,,	१९२४; २१३५
,,	१९३६; २१००
,,	२०१९; २०५४
,,	२०३१; २०४२
सुप्रतीके	१९६९
सुरुक्मे	१९३६; २००८
सुशिल्पे	१९८६] २००८ १९९७] २१००
सुष्वयन्ती	२८०८; २०७९
सुहिरण्ये	२१११



दैवत-संहिता

(१)

आदितिः, आदित्याश्च

संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)

संवत् २००१, शक १८६६, सन १९४४

मुद्रक और प्रकाशक
वसंत श्री. सातवळेकर, B. A.
भारत मुद्रणालय, औंध (जि. सातारा)

आदित्यों के कार्य और उनकी लोकसेवा

[लेखक- श्री० दयानन्द गणेश धारेश्वर, बी. ए.]

जिस प्रकार अश्विनौ सदैव जनताके हितके लिए कार्य करनेमें लगे रहते हैं वैसे ही आदित्य अर्थात् अदिति के पुत्र भी जनसेवाको बडे ही स्पृहणीय ढंग से प्रचलित रखते हैं। अदिति याने अदीनता, अखंडता एवं पूर्णता के इन पुत्रोंने वीरतापूर्वक और साहस से कार्य करके एवं जनताकी रक्षा करके लोगोंका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करलिया है अतः भक्त तथा उपासक इन आदित्यो से क्या कहते हैं सो वेदके शब्दोंमें देखना ठीक होगा।

जनताके सम्मुख अपनी रक्षाकी समस्या सदैव उठखडी होती है। अतः अपना संरक्षण भलीभाँति हो ऐसी तीव्र लालसा हमेशा जनमनमें जागृत रहती है और देवतारूपी सभी सुयोग्य एवं कार्यक्षम व्यक्तियों से इसी संबंधमें बारंबार निवेदन किया जाता है। जसे—

स्यान् नु क्षत्रियान् अव आदित्यान् याचिषामहे।
(ऋ. ८।६७।१)

'उन विख्यात आदित्यों के सम्मुख, जो कि क्षत्रिय हैं, हम संरक्षणकी माँग पेश करते हैं।'

महि वो महतामवो ... अवांस्यावृणीमहे।
(ऋ. ८।६७।४)

आप जैसे महान लोगोंके संरक्षण बहुत बडे होते हैं इसलिए हम आपकी संरक्षण आयोजनाओं को स्वीकृत करते हैं।'

'महि वो महतामवो ... दाशुषे। यं आदित्या अभि द्रुहो रक्षथा न ईं अघं नशत् ...।
(ऋ. ८।४७।१)

'आप जैसे बडे वीरोंका दानी पुरुषके लिए दिया हुआ संरक्षण बडा है क्योंकि जिसे आदित्य द्वेष्टाओं से बचाते हैं उसे पाप या बुराई घेर नहीं सकती है।'

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि आदित्यानामुतावसि।
(ऋ. ८।४७।५)

'हम लोग प्रभु इन्द्रके सुखकी या आदित्योंके संरक्षण की छत्रछाया में रहें।'

... अनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः।
(ऋ. ८।४७।१)

'आप आदित्योंकी रक्षाएं निर्दोष, निष्पाप एवं सुन्दर हैं।'

आदित्या विश्वे ... तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।
(ऋ. ७।५१।३)

'आप सारे आदित्य प्रशंसित होनेपर हमेशा कल्याणकारक बातों से हमारी रक्षा कीजिए।'

आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शन्तमेन।
(ऋ. ७।५१।२)

'हम लोग आदित्योंकी नई रक्षासे एवं अत्यन्त शक्तिदायक सुखसे जुडजायँ।'

आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां ...अस्माकं सन्तु भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोमं अवसे नो अद्य।
(ऋ. ७।५१।२)

'अदिति और आदित्य हर्षित हों और हमारे भुवन के संरक्षक बनें तथा आज हमारी रक्षा करनेमें उत्साह मिल जाय इसलिए सोमरसका पान करें।'

युष्मे देवा अपि ष्मसि युध्यन्त इव वर्मसु।
यूयं महो न एनसो यूयमर्भादुरुष्यथ।(ऋ.८।४७।८

"हे दानी या द्योतमान आदित्यो! तुम्हारे सहारे हम ऐसे रहते हैं मानों कवचधारी लोग लडते हों, याने वे जैसे निर्भय हुआ करते वैसेही हम हैं और आप हमें बडे एवं छोटे पापसे बचाते हैं।"

शश्वत् हि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयं पुरा नूनं बुभुज्महे॥ (ऋ. ८।६७।१६)

"हे अच्छे दानी! अदितिके पुत्रो! हमेशाही हम लोग आपकी रक्षाओं से पहले तथा अब भी सुखोंका उपभोग लेते रहते हैं।"

ते न आस्नो वृकाणामादित्यासो मुमोचत ।
स्तेनं बद्धं इवादिते । (ऋ. ८।६७।१४)

' हे अदिति एवं वे ऐसे विख्यात आदित्यो । हमें भेडिये जैसे क्रूर तथा लालची लोगोंके मुँहसे ऐसे छुडाओ जैसे बाँधकर रखे हुए चोरको छुडाया जाता है । '

ये मूर्धानः क्षितीनां अदब्धासः स्वयशसा ।
व्रता रक्षन्ते अद्रुहः ॥ (ऋ. ८।६७।१३)

' जो आदित्य द्वेष न करते हुए अपनी अर्जित यशस्विता के कारण न दबाये हुए होकर मानवों के अग्रभाग में रहते हैं और व्रतोंकी रक्षा करते हैं । '

धारयन्त आदित्यासो जगत् स्था देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः.....रक्षमाणा असुर्यम्..... ।
(ऋ. २।२७।४)

" ये देवतारूपी आदित्य अखिल भुवनके संरक्षक होते हुए जंगम तथा स्थावर का धारण करते हैं और प्राणशक्ति को बचाते हैं । '

विद्यां आदित्या अधसो वो अस्य...यत्...भय आ चित् मयोभु । (ऋ. २।२७।५)

' हे अदितिके पुत्रो ! मैं चाहता हूँ कि आपकी इस रक्षासे परिचित हो जाऊँ जो रक्षा भय के अवसरपर भी सुखदायक बनी रहती है । '

इन ऊपर दिये हुए मंत्रों और मन्त्रभागोंसे स्पष्ट दिखाई देता है कि जनताकी रक्षा करनेमें अदिति केपुत्र बडे सिद्ध हस्त थे, अतः लोग भी आदित्यों की संरक्षण आयोजना से लाभ उठानेमें अत्यन्त उत्सुक रहा करते थे । वेद में ऐसे निर्देश मिलते हैं कि लोगों का नेतृत्व भी आदित्य सफलतापूर्वक कर लिया करते थे और जो लोग मार्ग भूले भटके होते हैं तथा जो अन्धकार में रहते हैं उनके पथप्रदर्शन तथा प्रकाशदान का कार्य आदित्य सफलतापूर्वक पूर्ण करते हैं, जैसे-

आदित्या... युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम् ।
(ऋ. २।२७।११)

' हे आदित्यो ! तुम्हारे नेतृत्वमें मैं निर्भयता से पूर्ण प्रकाश को प्राप्त कर लूँ । '

...पुत्रासो अदितेः... मर्त्याय ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम् । (ऋ. १०।१८५।३)

' आदित्य मानव को लगातार उजेला या प्रकाशपुञ्ज देते हैं । '

मृळयद्वो वयं चकृमा कच्चिदागः । उरु अश्यां अभयं ज्योतिः... मा नो दीर्घा अभि नशन् तमिस्राः (ऋ. २।२७।१४)

' यद्यपि हम से आप का कुछ अपराध हुआ हो तो भी हमें सुख दो; मैं विशाल एवं निर्भयतामय प्रकाश को प्राप्त हो जाऊँ और सुदीर्घ अन्धियारी हमें न घेर ले । '

नकिष्टं घ्नन्त्यन्तितो न दूरात् य आदित्यानां भवति प्रणीतौ । (ऋ २।२७।१३)

' जो कोई आदित्योंके श्रेष्ठ नेतृत्वके तत्त्वावधानमें रहता है उसे न कोई दूरसे या समीपसे होकर मार सकते हैं । '

...आदित्या..; युष्माकं.. प्रणीतौ परि श्वभ्रेव दुरितानि वृज्याम् । (२।७७।५)

' हे आदित्यो ! तुम्हारे श्रेष्ठ नेतृत्व में मैं बुराइयों को इस तरह टाल दूँ जैसे कोई गढोंको टाल देता हो अर्थात् जहाँ नेता की धुरा आदित्य उठा लेते हैं वहाँ बुराइयों का भय रहता ही नहीं । '

सभी बुराइयों को हटाने की क्षमता आदित्यों में विद्यमान है ऐसा निम्न मन्त्रभागों से ज्ञात होता है ।

यत् आदिः यत् अपीच्यं... अस्ति दुष्कृतं... तत् विश्वं... आरे अस्मत् दधातन...
(ऋ. ८।४७।१३)

' जो कोई बुरा कृत्य चाहे प्रकटरूपसे या गुप्तरूपसे विद्यमान हो उस सारी बुराई को हम से दूर रखो । '

अपामीवामपस्निधं अप सेधत दुर्मतिं । आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ (ऋ. ८।१८।१०)

' हे आदित्यो ! रोग, शत्रु तथा दुष्ट बुद्धि को दूर हटा दो और हमें पाप से पृथक् रखो । '

अपो षु ण इयं शरुरादित्या अप दुर्मतिः ।
अस्मदेत्वजघ्नुषी ॥ (ऋ. ८।६७।१५)

' हे आदित्यो ! यह हिंसक हथियार तथा यह दुष्ट विचारधारा हमें पीडा न देती हुई, भलीभाँति हम से दूर हो जाए । '

मा नो हेतिः... आदित्यः कृत्रिमा शरुः पुरा नु जरसो वधीत् । (ऋ. ८।६७।२०)

' हे आदित्यो ! वृद्धावस्था के पहले यह शस्त्र तथा बनाया हुआ हथियार हमें न मारडाले ऐसा प्रबंध करो । '

ते नो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नावा... अति विश्वानि दुरिता पिपर्तन । (ऋ. ८।१८।१७)

' वे ऐसे विख्यात तुम कल्याणकारक सुखसे और आप की नौका से हमें सभी बुराइयों के पार ले चलो- । '

युयोत शरुमस्मत्.. आदित्यास उतामतिं ।
ऋधग् द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः । (ऋ. ८।१८।११)

' हे सर्वज्ञ आदित्यो ! हमसे हिंसक शस्त्र, कुमति एवं शत्रुओंका पृथक् करदो । '

वैदिक सूक्तोंके दर्शन कर्ता सुकवि आदित्यों से कैसी प्रार्थना करते हैं सो निम्न मंत्रोंमें देखने योग्य है-

तत् सु नः शर्म यच्छत आदित्या यन्मुमोचति ।
एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः ॥ (८।१८।१२)

' हे अच्छे दानशूर आदित्यो ! हमें भलीभाँति वह सुख दे डालो जो पापीको भी पाप से छुडा सकता है ।"

यद् वः श्रान्ताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः ।
तेना नो अधि वोचत । (ऋ. ८।६७।६)

" कार्य करके थके हुए और उपयुक्त वस्तुका उत्पादन करनेवाले के लिए आप के पास जो वरणीय धन तथा घर है उसे साथ लेकर हमसे वार्तालाप करो । " इस प्रार्थनासे स्पष्ट हुआ कि परिश्रमी तथा आवश्यक मानी हुई वस्तुओं के उत्पादक को ये आदित्य स्वीकार करने योग्य धन देते एवं निवास करनेके लिए योग्य गृहका प्रबंध भी कर डालते ।

जीवान् नो अभि धेतन आदित्यासः पुराहथात् ।
कद्ध स्थ हवनश्रुतः । (ऋ. ८।६७।५)

"हमारी पुकार सुननेवाले हे आदित्यो ! भला तुम किधर हो ? जबतक हम जीवित हैं, और मृत्युके पहले ही हमारें निकट चले आओ । " इस मंत्र में वैदिक ऋषि आदित्यों के संपर्क में आनेके लिए कितने उत्सुक हैं सो स्पष्ट दिखाई देता है ।

ये चिद्धि मृत्युबंधव आदित्या मनवः स्मसि ।
प्र सू न आयुर्जीवसे तिरेतन । (ऋ. ८।१८।२२)

" हे आदित्यो ! हममें जो कोई मृत्यु के अत्यन्त निकट चले गये हों तो भी जीवनके लिए हमारी आयु बढाइये ।'

दीर्घ जीवन की कुंजी आदित्योंके समीप थी ऐसा जान पडता है और वे मुमुर्षु लोगोंको मृत्युपाशसे छुडानेकी चेष्टा करते थे । जनसेवाके गुरुतर कार्यमें आयुर्वृद्धिका बहुत ऊँचा स्थान है अतः आदित्य इसविषय में पूर्ण सतर्क रहा करते ।

तुचे तुनाय तत् सु नो द्राधीय आयुर्जीवसे ।
आदित्यासः सुमहसः कृणोतन ॥ (ऋ. ८।१८।१८)

' हे आदित्यो ! तुम भलीभाँति महनीय तेजसे युक्त हो इसलिए हमारी सन्तानके लिए जीवनार्थ उस दीर्घ आयुष्यका प्रबंध करो ।"

शतं नो रास्व शरदो विचक्षेऽइयामायूंषि सुधितानि पूर्वा । (ऋ. २।२७।१०)

" हमें विशेष दर्शनके लिए सौ वर्ष प्रदान करो (उतना दीर्घ जीवन मिले) और हम भलीभाँति रखी हुई पूर्वकालीन आयुर्मर्यादाको प्राप्त कर लें ।"

वेदकालीन कवि आदित्यों से कष्टनिवारण के लिए प्रार्थना करते थे और अदितिके पुत्र जनताके सुखको बढाने का प्रयत्न करते थे ऐसा निम्न मंत्रों से व्यक्त होता है—

इदं ह नूनमेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः ।
आदित्यानां... (ऋ. ८।१८।१)

" अब इन आदित्यों के सामने मानव इस सुखकी माँग पेश करे ।

तत् सु नः ... शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ।
(ऋ. ८।१८।३)

" हमें वही विस्तृत सुख जिसकी चाह हम करते हैं आदित्य हमें दे दें । "

विदा देवा अघानामादित्यासो अपाकृतिम् ।
पक्षा वयो यथोपरि व्यस्मे शर्म यच्छत...
(ऋ. ८।४७।२)

" हे दानी आदित्यो ! तुम पापों को हटाना जानते हो और जैसे पंछी ऊपर से डैनों को फैलाते हैं ताकि पक्षिशावकोंको सुख मिले, उसी तरह तुम हमें विशेष ढंग से सुखका प्रदान करो ।"

व्यृ१स्मे अधि शर्म तत् पक्षा वयो न यन्तन
विश्वानि विश्ववेदसो वरूथ्या मनामहे ...।
(ऋ. ८।४७।३)

" हे सर्वज्ञ आदित्यो ! हम सारे स्वीकरणीय वस्तुओं

को पाना चाहते हैं अतः विशेष रूपसे हमें वह सुख देदो जिस तरह पंछी अपने शिशुओं पर सुखके लिए पर फैलाते हैं।"

यद् देवा शर्म शरणं यद् भद्रं यदनातुरम्।
त्रिधातु यद् वरूथ्यं१ तदस्मासु वि यन्तन ...
(ऋ. ८।४७।१०)

"हे देवो आदित्यो! जो कल्याणकारक, रोगरहित एवं सुखप्रद निवासस्थान है और जो तीन प्रकार के धातुओं से युक्त स्वीकरणीय धन है उसे हम लोगोंमें दे डालो।"

इन आदित्यों की निरीक्षण शक्ति बड़ी सूक्ष्म है और इनके मार्गमें कोई रुकावट खड़ी नहीं होती है इसीलिए बड़ी सफलता से ये जनसेवा कर सकते हैं और लोगोंकी सुखवृद्धि करना इनके लिए बड़ी सुगम एवं साधारणसी बात है।

त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धासो...
अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु, सर्वं राजभ्यः परमा चिदन्ति। (ऋ. २।२७।३)

"वे अदितिके पुत्र विशाल, गंभीर तथा न दबे हुए हैं और भली एवं बुरी बातोंकी थाह पूरीतरह पालेते हैं, समूची घटनाओं की तहतक देखते हैं क्योंकि इन विराजमान आदित्यों के लिए सभी दूरस्थित वस्तुएँ मानों समीपवर्ति ही हैं।" इसलिए आदित्यों को सभी जानकारी अनायासही मिलजाती है जैसे,

... देवा हृत्सु जानीथ मर्त्यम्।
उप द्रुयुं चाद्रुयुं च ... (ऋ. ८।१८।१५)

"हे देवतारूपी आदित्यो! तुम अपने दिलमें कपटी एवं अ-कपटी मानवको समीप से याने अच्छी तरह जानते हो।"

आदित्या अव हि,ख्यताधि कूलादिवः ...
(ऋ. ८।४७।११)

"हे आदित्यो! जैसे कोई तटपर खड़े रहकर नीचे पानीकी ओर देखते हैं वैसेही तुम ऊँचे पदपर आरूढ हो नीचे हम मानवोंको देखलो।"

... ते धामान्यमृता मर्त्यानामदब्धा अभि चक्षते। (ऋ. ८।१०१।६)

"वे न दबे हुए एवं अमर आदित्य मानवोंके स्थानोंको देखते हैं।"

सुगः पन्था अनृक्षरः आदित्यासः ... नात्राव-खादो अस्ति वः। (ऋ. १।४१।४)

"हे आदित्यो! तुम्हारा मार्ग सुगम एवं कंटकरहित है, यहाँपर तुम्हारे लिए कोई नीचे गिराने योग्य गर्त आदि नहीं है।"

सुगो हि वो...पन्था अनृक्षरो... साधुः अस्ति। तेनादित्या अधि वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म॥ (ऋ. २।२७।६)

हे आदित्यो! आपका मार्ग बड़ा सुगम, निष्कलंक और भला है, उस मार्ग परसे आकर आप हम से भाषण कीजिए और हमें ऐसा सुख दो कि जिसे विनष्ट करना शत्रुके लिए दूभर एवं बड़ा कठिन हो।"

आदित्या...सुतीर्थमर्वतो यथानु नेषथा सुगं...।
(ऋ. ८।४७।११)

"हे आदित्यो! जैसे घोड़ोंको बिना कठिनाई के सुगमतापूर्वक जाने योग्य स्थानमें ले चलते हैं वैसेही हमें आसानीसे ले चलो।"

या वो माया अभिद्रुहे यजत्रा, पाशा आदित्या रिपवे विचृत्ताः। अश्वीव तॉं अति येषं रथेना-रिष्टा उरावा शर्मन् स्याम। (ऋ. २।२७।१६)

'हे (यजत्राः) पूजनीय आदित्यो! (वः) आपकी (याः मायाः) जो शक्तियाँ तथा (पाशाः) जाल (अभिद्रुहे रिपवे विचृत्ताः) हमसे द्वेष करनेवाले एवं शत्रुको पकड़नेके लिए फैलाये गये हैं (तान्) उन्हें मैं (रथेन) रथसे यात्रा करता हुआ (अश्वी इव अति येषं) जैसे एक घुड़सवार लाँघकर चला जाता है वैसेही पार निकल जाऊँ और हम लोग (अ-रिष्टाः) अहिंसित होकर, बिना किसी क्षतिके (उरौ शर्मन् आ स्याम) विशाल सुखमें निवास करते रहें।" इससे स्पष्ट है कि वीर आदित्य अपनी अद्भुत युक्तियों तथा जालों से शत्रुको पकड़ लेते थे। परन्तु जो दानी एवं सरल मार्गपरसे चलनेवाले होते उनकी हरतरह की मदद करना आदित्यों का कार्य था, जैसे-

यो राजभ्य ऋतनिभ्यो ददाश यं वर्धयन्ति पुष्टयश्च नित्याः। स रेवान् याति प्रथमो रथेन वसुदावा विदथेषु प्रशस्तः। (ऋ. २।२७।१२)

'(यः) जो मानव (ऋतनिभ्यः राजभ्यः) ऋतके नेता एवं विराजमान आदित्यों को (ददाश) दे चुका हो और (नित्याः पुष्टयः च यं वर्धयन्ति) शाश्वत टिकनेवाली पुष्टियाँ जिसे वृद्धिंगत करते हैं (सः) वह (विदथेषु प्रशस्तः) सभामण्डपों में प्रशंसित होकर (प्रथमः रेवान्) प्रथमश्रेणी का धनाढ्य बनकर (वसुदावा रथेन याति) धन का दानी होता हुआ रथ पर से संचार करता है।''

...हिरण्ययाः शुचयो धारपूताः अस्वप्नजो... अदब्धाः उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय। (ऋ. २।२७।९)

''सुवर्णमय आभावाले, विशुद्ध तथा जलधाराओं से पवित्र होते हुए आदित्य (अस्वप्नजः) स्वप्नशीलता से दूर रहकर और कठिनाइयों से न दबकर (ऋजवे मर्त्याय) सरल बर्ताव रखनेवाले मानव के लिए (उरुशंसाः) अत्यधिक मात्रा में उपदेश देनेवाले या भाषण करनेवाले हैं।'' अर्थात् जिस मानवमें सरलता तथा निष्कपटता पाई जाती है उसके समीप आकर आदित्य सहायता करने के लिए या पथप्रदर्शनार्थ बहुत सारी बातें कहनेवाले होते हैं।

शुचिरपः सूयवसा अदब्ध उपक्षेति वृद्धवयाः सुधीरः। . य आदित्यानां भवति प्रणीतौ॥ (ऋ २।२७।१३)

'जो अपने आपको आदित्यों के नेतृत्व के नीचे रखता है वह अच्छा वीर होकर (वृद्ध वयाः) अन्नभाण्डारों की वृद्धि करता हुआ (अदब्धाः) विपत्तियोंसे न दबकर (सूयवसाः) अच्छे तृणों से, युक्त (शुचिः अपः उप क्षेति) निर्मल जलों- जलाशयोंके निकट निवास करता है।' इससे स्पष्ट हुआ कि आदित्य जनताके नेता बनकर उन्हें वीर बनाने का प्रयत्न करते तथा अन्नों की वृद्धि कैसे करनी चाहिए सो बतलाकर अच्छे तृण, शुद्ध जल आदि बातों से युक्त स्थानोंके निकट घर बनाकर रहने का प्रबंध करते।

अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम्। अदब्धा सन्ति पायवः सुगेवृधः॥ (ऋ. ८।१८।२)

इन आदित्यों का मार्ग (अन्-अर्वाणः) हिंसारहित है और इनके संरक्षण सुगमतापूर्वक बढनेवाले तथा शत्रुओं से न दबाये हुए हैं' आदित्यों की योग्यता का अच्छा परिचय इसमें मिलता है। आदित्यों के कार्य करने के मार्ग इस ढंगके हुआ करते कि यथा संभव हिंसा न हो और स्वयं ही अपनी आन्तरिक शक्ति से संरक्षण की आयोजनाएँ फलती फूलती रहें।

अब अदितिके संबन्धमें क्या कहा है सो देखना चाहिए, क्योंकि इन आदित्यों को- अदिति के पुत्रों को उसी से प्रेरणा मिलती है।

अदितिर्न उरुष्यत्वदितिः शर्म यच्छतु। माता मित्रस्य रेवतेऽर्यम्णो वरुणस्य च॥ ... (ऋ. ८।४७।९)

'धनाढ्य मित्र, अर्यमा एवं वरुणकी माता जो अदिति है वह हमारी रक्षा करे और सुख दे दे।'

पिपर्तु नो अदितिः राजपुत्रा अति द्वेषांस्यर्यमा सुगेभिः। बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मोप स्याम पुरुवीराः अरिष्टाः। (ऋ. २।२७।७)

'जिसके पुत्र विराजमान हैं ऐसी वह अदिति हमारा पालन करे, अर्यमा हमें सुगमतापूर्वक या सुखकर मार्गों से शत्रुओंके परे पहुँचादे; मित्र एवं वरुण का दिया हुआ सुख सचमुच बृहत् है। प्रचंड है अतः हम अनेक वीरोंसे युक्त होकर बिना क्षति उठाये उसके समीप रहें।'

महीं... मातरं सुव्रतानां ऋतस्य पत्नीमवसे हुवेम। तुविक्षत्रामजरन्तीमुरूचीं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। (वाजसनेयी यजु. २१।५ अथर्व. ७।६।२)

'हम अदिति को अपनी रक्षा का प्रबंध करनेके लिए बुलायँ, जो महनीय, अच्छे व्रतधारी आदित्यों की माता, ऋत की पत्नी, अत्यधिक क्षत्रियोचित वीरता से युक्त, जीर्ण न होनेवाली, विशालता से पूर्ण, सुन्दर सुख देनेवाली एवं भलीभाँति आगे ले चलनेवाली, है।'

अदितिर्नो दिवा... अदितिर्नक्तं... अदितिः पातु अंहसः सदावृधा (ऋ. ८।१८।६)

'हमेशा बढनेवाली अदिति हमें दिन और रात पाप से बचाए'

उत स्या नो दिवा... अदितिरूत्या गमत्। सा... मयस्करदप स्रिधः॥ (ऋ. ८।१८।७)

'और वह अदिति दिन के समय संरक्षण की आयोजनाके साथ हमारे निकट चली आए और वह शत्रुओंको

दूर हटाकर सुखमय वायुमण्डल का सृजन करे।'

आदित्यों की असाधारण योग्यता का परिचय होने के कारण वैदिक कवि इस प्रकार उनकी सराहना करते हैं-

इमा गिरः आदित्येभ्यो... सनात् राजभ्यो जुह्वा जुहोमि। शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नः तुविजातो वरुणो... (ऋ. २।२७।१)

'मैं सनातनकाल से विराजमान आदित्योंके लिए इन भाषणों का मानों हविर्भागसा अपनी ओरसे अर्पण करता हूँ, हमारी इन वक्तृताओंको ये आदित्यमंडलके सदस्य जैसे मित्र, वरुण, अर्यमा एवं भग सुन लें।'

इमं स्तोमं सक्रतवो मे अद्य ...जुषन्त। आदित्यासः शुचयो धारपूता अवृजिना अनवद्या अरिष्टाः। (ऋ. २।२७।२)

"आज मेरे इस स्तुतिमय भाषणका स्वीकार, कार्यशील आदित्य, जोकि विशुद्ध, पवित्र, पापरहित, निर्दोष और स्वस्थ हैं, करलें।"

ऐसा प्रतीत होता है कि अदिति के पुत्र, आदित्य ऐसा नाम अबतक बतलाये हुए गुणों से युक्त कुछ चुने हुए देवोंको दिया जाता था जिनका सर्वोपरि कार्य केवलमात्र लोकरक्षा तथा लोकसेवा करना ही था। इस आदित्यमण्डल के सदस्य वेही हो सकते जो संपूर्णतया निर्दोष एवं पूर्णतया विकसित हों, जिन में किसी भी प्रकार की त्रुटि न पाई जाती हो, क्योंकि त्रुटि होनेसे वे अदिति अखण्डता, अदीनता के पुत्र कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते। यद्यपि एक स्थान में कहा है कि-

अशीतिभिस्तिसृभिः सामगेभिरादित्येभिः...। (अथर्व. २।१२।४)

जिससे ज्ञात होता है कि आदित्यों की संख्या ८०×३= २४० थी और इन्हें सामगान विदित था, तथापि इस आदित्यमण्डल में प्रमुखतया मित्र, वरुण, अर्यमा, भग एवं सविता का स्थान था। क्योंकि अपने वैशिष्ट्यपूर्ण कार्यों से शायद इनकी ही अमिट छाप वैदिक कवियों के अन्तस्तलपर पडी हुई हो। आदित्यों के निश्चित कार्य को संभवतः मित्र, वरुण एवं अर्यमा ही अधिकलभाव से संपूर्ण करने की क्षमता से युक्त हों अतः इन तीनों का उल्लेख आदित्यों के सूक्तों में बार बार पाया जाता है। जैसे कि निम्न मंत्रों से स्पष्ट होगा—

मित्रो नो अत्यंहतिं वरुणः पर्षदर्यमा। आदित्यासो यथा विदुः॥ (ऋ. ८।६७।१२)

'आदित्य जैसे जानते हैं वैसे ही कार्य करके हमें मित्र, वरुण तथा अर्यमा दुर्गति या पापके पार ले चलें।'

महि वो महतामव वरुण मित्रार्यमन्...। (ऋ. ८।६७।४)

'हे वरुण! मित्र! अर्यमन्! आप जैसे बडे आदित्यों का संरक्षण बडा है।'

महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य॥' (१०।१८५।२)

'तीनों अर्थात् मित्र, वरुण तथा अर्यमा का संरक्षण महान्, दिव्य तथा शत्रुओंके अपराभवनीय हो जाए।'

अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यं। त्रिवरूथं मरुतो यन्त नछर्दिः॥ (ऋ. ८।१८।२१)

'हे वीर मरुतो! हे मित्र, वरुण तथा अर्यमन्! हमें निष्पाप, नेताओं से युक्त, प्रशंसनीय और तीन प्रकार के स्त्रीकरणीय धन से पूर्ण घर दे डालो।'

... मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये। (ऋ. ८।१८।२०)

'हम कल्याण के लिए मित्र तथा वरुणको चाहते हैं।'

महि वो महतामवो वरुण मित्र दाशुषे। (ऋ. ८।४७।१)

'हे वरुण और मित्र! दानीके लिए जो तुम बडे आदित्य रक्षा का प्रबंध कर डालते हो वह बडा है।'

धर्यं ते वो वरुण मित्रार्यमन्त्स्यामेदृतस्य रथ्यः। (ऋ. ८।१९।३५)

'हे वरुण, मित्र तथा अर्यमन्! हम अवश्य ही आप के ऋतको ले चलनेवाले हों।'

तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा। शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे।' (ऋ. ८।१८।३)

'वह विस्तारशील सुख जिसे हम चाहते हैं मित्र, वरुण, अर्यमा, सविता और भग हमें भली प्रकार से दे डालें।'

यद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः (ऋ. ७।६६।४)

'आज जब कि सूर्य का उदय होनेपर (अनागाः)

निष्पाप मित्र, अर्यमा, भग एवं सविता (सुवाति) कार्य निष्पन्न कर दिखाता है । '

...सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम्। अर्यमणं रिशादसम् ॥ (ऋ. ७।६६।७)

' सूर्योदय के पश्चात् मित्र, वरुण एवं हिंसकोंके वध-कर्ता अर्यमा की सराहना करता हूँ । '

ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह। इषं स्वश्च धीमहि । (ऋ. ७।६६।९)

' हे द्योतमान वरुण तथा हे मित्र ! हम विद्वानोंके साथ तेरेही बनकर रहें तथा अन्न एवं तेजको पानेके उपाय सोचें ।

अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत । (ऋ. ७।६६।११)

तीनों विराजमान वरुण, मित्र एवं अर्यमा को ऐसा क्षत्रियोचित बल मिला कि जो दूसरोंको पाना असंभव प्रतीत हुआ । '

ऊपर दिये हुए मन्त्रोंसे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आदित्यों के संगठित दल में मित्र, वरुण और अर्यमा का स्थान बड़ा ही ऊँचा था। हो सकता है कि आदित्यदल के कार्यकारी मंडल के सत्ताधारी सदस्य उक्त नाम धारण करते हों। वेद में इन तीनों आदित्य दल के प्रमुख सदस्यों के बारेमें कहा है कि–

इमे चेतारो अनृतस्य भूरेर्मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति । इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः ॥ (ऋ. ७।६०।५)

' ये मित्र, अर्यमा एवं वरुण अदिति के (अदब्धाः शग्मासः) न दबे हुए शक्तिशाली पुत्र हैं और ये ऋत के (दुरोणे ववृधुः) घरमें पले हुए हैं तथा (भूरेः अनृतस्य चेतारः) बडे भारी असत्यको पहचाननेवाले हैं । ' अर्थात् ये कभी मिथ्या बातों में फँस नहीं सकते और इनकी शिक्षादीक्षा ऋतके घरमें हुई है । इस प्रकार शिक्षित होकर ये आदित्यदलके संगठनकार्य में ऊँचे पदपर विराजमान होते हैं । इन के कार्य का स्वरूप बताया है कि ये–

....तिरश्चिद्दंहः सुपथा नयन्ति । (ऋ. ७।६०।६)

' अच्छे मार्ग से लोगोंको पाप के परे ले चलते हैं । '

... अचेतसं चिच्चितयन्ति दक्षैः ।

... चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति ॥ (ऋ.७।६०-६७)

' अच्छे उपायों से अज्ञानी को भी ज्ञानसम्पन्न बनाते हैं और चिकित्सक बुद्धिवाले होकर अनजान को ठीक मार्ग पर ले चलते हैं । '

अब विचार करना चाहिए कि आदित्यों के लिये कौन से विशेषण प्रयुक्त हुए हैं जिन से ज्ञात होगा कि आदित्य दल में प्रवेश पाने के लिए योग्यता का मानदंड कितना ऊँचा रखा था ।

१. **सक्रतवः** = कार्योंसे युक्त, कभी खाली हाथ या निठल्ले न बैठे हुए ।

२. **शुचयः, धारपूताः** = विशुद्ध एवं जलधाराओंमें नहा धोकर साफसुथरे रहनेवाले ।

३. **ज--वृजिनाः, अनवद्याः** = पापरहित, अनिन्द्य ।

४. **अरिष्टाः, अदब्धासः** – अहिंसित, न दबे हुए ।

५. **उरवः, गभीराः** = बृहदाकार, गंभीर मुखाकृतिवाले ।

६. **अस्वप्नजः, अनिमिषाः** = निद्रासुख का उपभोग न लेनेवाले और पलक न मारनेवाले । यह दूसरा विशेषण अथक परिश्रम करने की सूचना देता है ।

७. **दीर्घाधियः** = विशाल बुद्धिवाले या महान् कार्यक्रम रखनेवाले ।

८. **ऋणानि चयमानाः** = ऋणोंको बटोरनेवाले ताकि उऋण हो सकें ।

९. **ऋजवे मर्त्याय उरुशंसाः** = सरल, निष्कपट आचरणवाले मानव को खूब उपदेश की बातें कहनेवाले ।

१०, **राजभ्यः** (आदित्येभ्यः) **राजानः**= विराजमान आदित्यों के लिए; लोक सेवकों को जनता के मध्य विराजमान होने की चेष्टा करनी चाहिए ।

११. **सु-दानवः** = अच्छे दानशूर । कृपणतासे कोसों दूर रहनेवाले ।

१२. **यजत्राः** = पूजनीय ।

१३. **रजिष्ठाः** = लोकोंके मध्य खूब संचार करनेवाले ।

१४. ये अंहः अतिपिप्रति = जो पाप के परे ले जाते हैं, जनता को निष्पाप करनेका प्रयत्न करते हैं।

१५. ये अदब्धस्य व्रतस्य ईशते = जो न दबे हुए व्रतके अधिपति हैं।

१६. ऋताबृधः, घोरासो अनृतद्विषः = ऋत की वृद्धि करनेवाले और असत्य के भीषण विरोधी।

१७. ऋतजाताः ऋतस्य दुरोणे ववृधुः = ऋत से या ऋतके लिए उत्पन्न, ऋत के घर में पले हुए।

१८. विश्व-वेदसः = सब कुछ जाननेहार।

१९. सु-महसः = बडे अच्छे ओजस्वी।

२०. प्र-चेतसः = प्रकृष्ट ज्ञानवाले।

२१. सुमृळीकाः = बहुत अच्छे ढंगसे सुख देनेवाले।

२२. हवनश्रुतः = जनता की पुकार सुननेवाले।

२३. अ-द्रुहः = द्वेष न करनेवाले।

२४. क्षितीनां मूर्धानः = मानवोंके प्रमुख।

२५. अद्भुत-पनसः = जिन्होंने पहले पापकृत्य किया ही न हो।

इन ऊपर दिये हुए विशेषणों से आदित्यदलके सदस्यों की योग्यतापर बहुत अच्छा प्रकाश पडता है। जो निरलस कार्यकर्ता, सत्यप्रेमी, उत्कृष्ट ज्ञानी, सेवातत्पर, निष्पाप, साफ सुथरे, दानशूर, विशालचेता और लोकरक्षक बननेके इच्छुक होते वेही आदित्यदल में प्रवेश पासकते थे और अदिति अर्थात् अदीनता, स्वतंत्रता, पूर्णता के पुत्र कहलानेके अधिकारी बन सकते थे।

इस आदित्यदल में मित्र का स्थान बहुत ही ऊँचा है, इसलिए वेदमें मित्र के बारे में क्या कहा है सो देखना चाहिए—

... मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत। (ऋ. ३।५९।१)

'मित्रके लिए घृतयुक्त हवनीय वस्तुका अर्पण करो।'

तस्मा एतत् पन्यतमाय जुष्टमग्नौ मित्राय हविराजुहोत (ऋ. ३।५९।५)

'उस अत्यन्त प्रशंसनीय मित्र के लिए यह सेवनीय हविर्भाग अग्नि में डाल दो।' इसभाँति मित्र का सुस्वागत करनेके पश्चात् कवि कहते हैं—

अनमीवास इळया मदन्तो... वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम। (ऋ. ३।५९।३)

'हम नीरोगी और अन्न मिलनेके कारण हर्षित होते हुए मित्र की प्रसन्न बुद्धि की छत्रछायामें रहें।'

अयं मित्रो नमस्यः... राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट... तस्य वयं सुमतौ... भद्रे सौमनसे स्याम। (ऋ ३।५९।४)

'यह मित्र विराजमान, अच्छे क्षत्रियोचित बल से युक्त एवं नमन करनेयोग्य हो प्रकट हुआ है अतः हम उस की कल्याणकारक प्रसन्नताके तत्त्वावधान में रहें। अर्थात् कभी ऐसा न होनेपाय कि मित्र को क्रोधित होना पडे।

महाँ आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो गृणते सुशेवः। (ऋ. ३।५९।५)

'यह मित्र बडा भारी आदित्य है जो जनता को प्रेरित करता हुआ प्रशंसा करनेवाले को सुन्दर ढंग से सुख देता है और जिस के समीप नमनपूर्वक बैठना चाहिए।'

मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो...। (ऋ. ३।५९।१)

'मित्र लोगों को उपदेश की बातें कहता हुआ कार्यप्रवृत्त करता है।'

मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे...। (ऋ. ३।५९।१)

"मित्र टकटकी लगाकर कृषिकर्म में लगे लोगों को देखता है" ताकि कहीं काम में भूल न होनेपाय।

...मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्। (ऋ. ३।५९।१)

...स देवान् विश्वान् बिभर्ति। (ऋ. ३।५९।८)

"मित्र द्युलोक एवं भूलोक की धारणा करता है और सभी देवों का भरणपोषण करता है।" अर्थात् समूचे विश्व में सुव्यवस्था हो ऐसी कोशिश करता है।

न हन्यते न जीयते त्वोतो, नैनं अंहो अश्नोत्यन्तितो न दूरात्। (ऋ. ३।५९।२)

"हे मित्र! तू जिसकी रक्षा कर चुका है वह न मारा जाता है और नाहि जीता जाता है, इसे न समीप से न दूर से ही पाप व्याप्त कर पाता है।"

अभि ये महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः। अभि श्रवोभिः पृथिवीम्॥ (ऋ. ३।५९।७)

'जो मित्र विशाल होकर अपने महनीय तेज से द्युलोक को तथा अन्नोंसे भूमण्डलको व्याप्त कर चुका है।'

मित्रो... जनाय... इष... अकः। (ऋ. ३।५९।९)

'मित्रने जनताके लिए अन्न बनाया है।'

इस प्रकार मित्र की योग्यता बड़ी है, परन्तु वह स्वयं अकेलाही प्रकट न होकर बहुधा वरुण के साथ मिलकर कार्य करता है। अतः वेद में दोनोंका संयुक्त उल्लेख पाया जाता है। जैसे-

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् ...
...मित्रावरुणौ ऋतावृधौ ऋतस्पृशा...
कवी... मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया ...
(ऋ. १।२।७-९)

'शुद्ध बलवाले मित्र और शत्रुविध्वंसक वरुण को बुलाता हूँ; मित्र एवं वरुण ऋत के संपर्क में रह उस की वृद्धि करनेवाले हैं; मित्र और वरुण विद्वान्, विशालता में उत्पन्न और विस्तृत स्थल में निवास करनेवाले हैं।'

मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये ...
... यौ... ऋतस्य ज्योतिषस्पती ता मित्रा-
वरुणा हुवे। वरुणः प्राविता भुवन् मित्रो
विश्वाभिरूतिभिः। करतां नो सुराधसः।
(ऋ. १।२३।४-६)

'हम मित्र और वरुण को सोम पीनेके लिए बुलाते हैं; जो ऋत एवं प्रकाशके अधिपति हैं, उन मित्र एवं वरुण को मैं बुलाता हूँ; वरुण उत्कृष्ट संरक्षक बने तथा सभी संरक्षणसाधनों से युक्त होकर मित्र भी रक्षणकर्ता हो और दोनों मिलकर हमें अच्छे धनिक बना दें।'

मित्र और वरुण के स्वागत का वर्णन वैदिक कवियोंने इस तरह किया है-

आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र... उपेमं
चारुमध्वरम्। (ऋ. ५।७१।१)

'हे शत्रुविध्वंसक मित्र एवं वरुण! इस सुन्दर, हिंसा-रहित कार्य के समीप आने के लिए हमारे पास आओ।'

उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः...
सोमस्य पीतये। (ऋ. ५।७१।३)

'हे मित्र और वरुण! हमारे निचोड़े हुए सोमके निकट आओ, ताकि दानीके सोमका पी जाना संभव हो।'

आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा।
पातं सोममृतावृधा। (ऋ. ७।६६।१९)

'हे नेता एवं ऋत की वृद्धि करनेवाले मित्र और वरुण! हमारे दान का स्वीकार करते हुए तुम दोनों आओ तथा सोम पी जाओ।'

...आयातं...गोश्रीता मत्सरा इमे सोमासो...
आ राजाना दिविस्पृशाऽस्मत्रा गन्तमुप नः
इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्राः...।
(ऋ. १।१३७।१)

'हे विराजमान एवं द्युलोक के छूनेवाले मित्र एवं वरुण! आओ, हमारी ओर आओ; क्योंकि आपके लिए ये तेजस्वी सोम दुग्धमिश्रित बनाकर रखे हैं।'

अस्मत्रा गन्तमुप नोऽर्वाञ्चा सोमपीतये।
अयं वां मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ
पीतये सुतः। (ऋ. १।१३७।३)

'हे मित्र तथा वरुण! सोम पीनेके लिए हमारी ओर आओ; क्योंकि यह सोम तुम्हारे पीने के लिए मनुष्यों से निचोड़ा गया है।'

इससे स्पष्ट है कि आदित्यों का स्वागत तथा सत्कार करने के लिए दुग्धमिश्रित सोम का रस दिया जाता था। अब देखना चाहिए कि वैदिक कवि मित्र एवं वरुण से किस तरह की प्रार्थना करते हैं, या उनके सम्मुख कौनसी माँग पेश करते हैं-

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषाग्निणो
नुदतं प्रतीचः। मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त
मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम्॥
(अथर्व. ३।३२।३)

'हे मित्र और वरुण! हमारे लिए इधर निर्भयता रहे और अपने तेज से तुम स्वार्थी लोगों को पराङ्मुख बना-कर दूर कर दो। ध्यानमें रहे कि वे किसी भी बतानेवाले ज्ञानी को और मानसम्मान को न पा सकें, अपितु आपसमें ही एक दूसरे की राह में रोड़े अटकाते हुए मौत के मुँह में समाविष्ट हो जायँ।'

... मित्रावरुणा ... प्रजावत् क्षत्रं मधुनेह
पिन्वतम्। बाधेथां दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं
चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत्॥ (अथर्व. ६।९७।२)

'हे मित्र एवं वरुण ! सन्तानयुक्त क्षत्रियोचित वीरताको तुम मधु से पुष्ट करो, बुराई को दूर से ही हटा दो और जो कुछ पाप किया हो, उसे हम से अलग कर दो।'

यो अद्य सेन्यो .. उदीरते। युवं तं मित्रा-वरुणौ अस्मद्यावयतं परि ॥ (अथर्व. १।२०।२)

'आज जो कोई हत्यारा सेना साथ ले ऊपर उठ जाता हो, हे मित्र और वरुण ! उसे तुम हम से दूर भगा दो।'

मित्रावरुणौ वृष्टयाधिपती तौ मावताम्।
(अथर्व. ५।२४।५)

'वे दोनों मित्र और वरुण जो स्वामी हैं, वर्षा से मेरी रक्षा करें।'

... मित्रावरुणा धारयत्क्षिती ... युवो ... सख्यैरभिष्याम रक्षसः। (ऋ. १०।१३२।२)

'हे मानवोंके धारणकर्ता मित्र एवं वरुण! तुम्हारी मित्रता मिलनेपर हम राक्षसों को पराभूत करेंगे।'

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं ... अविष्टं धियो जिगृतं पुरन्धीः। ...
(ऋ. ७।६५।५; ७।६४।५)

'हे मित्र एवं वरुण ! तुम्हारे लिए यह स्तोत्र तैयार किया है; तुम हमारे कर्मों को सुरक्षित रखो और बहुतों के धारणक्षम बातों को जागृत करो।'

इयं... पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि। विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो...।
(ऋ. ७।६०।१२; ७।६१।७)

'यज्ञों में, हे मित्र और वरुण ! तुम्हारे लिए यह पुरस्क्रिया कर डाली है; अतः सभी बीहड स्थानों को पार करके हमारी पुष्टि करो।'

आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं ... (ऋ. ७।५०।१)
... हुवे वां मित्रावरुणा सबाधः।
(ऋ ७।६१।६)

'हे मित्र तथा वरुण ! यहाँ मेरी रक्षा करो; बाधा से घिर जानेपर तुम्हें मैं पुकारता हूँ।'

प्र बाहवा सिसृतं जीवसे न आ नो गव्यूति-मुक्षतं घृतेन। आ नो जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ॥ (ऋ. ७।६२।५)

'हे मित्र एवं वरुण ! अपने बाहुओं को खूब फैलाओ ताकि हम जीवित रहें और घृतसे हमारे मार्ग को सींच दो, युवकतुल्य तुम जनता में हमें विख्यात करो, मेरी इन पुकारोंको तुम सुन लेना।'

राजाना... ऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया यातमर्वाक्। इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टिं अव दिव इन्वतं जीरदानू ॥ (ऋ. ७।६४।२)

'हे विराजमान मित्र एवं वरुण ! तुम ऋत के संरक्षक, क्षत्रिय, शीघ्रदानी और समुद्रपर प्रभुत्व रखनेवाले हो, इसलिए हमारे अभिमुख आओ और द्युलोक से हमें वृष्टि एवं अन्न प्रेरित करो।'

सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दृशा। वृष्टिं वां राधो अमृतत्व-मीमहे ... ... (ऋ. ५।६३।२)

'हे भलीभाँति विराजमान तुम इस भुवनपर प्रभुत्व रखनेवाले मित्र और वरुण ! यज्ञमें स्वकीय शक्ति से सब कुछ देखनेवाले हो; तुम से हम अपरपन और धन तथा वृष्टि चाहते हैं।'

यत् बंहिष्ठं... सुदानू... अच्छिद्रं शर्म भुव-नस्य गोपा। तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषा-सन्तो जिगीवांसः स्याम ॥ (ऋ. ५।६२।९)

'हे अच्छे दानशूर एवं विश्वके पालनकर्ता मित्र और वरुण ! जो कुछ भी छिद्ररहित (त्रुटिरहित, अखंड) और अत्यधिक सुख है, उससे हमारी रक्षा करो; ताकि हम धन का वितरण करते हुए जिगीषु बनें।'

... मित्रवरुणा... दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम्। (ऋ. ५।६३।५)

'हे द्युलोक के सम्राट्तुल्य मित्र और वरुण ! हमें दूध एवं जलसे सींच दो अर्थात् हमारे यहाँ दुग्ध एवं जल की न्यूनता न हो।'

सम्राजा या...मित्रश्चोभा वरुणश्च देवा देवेषु प्रशस्ता। ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वां क्षत्रं देवेषु ॥
(ऋ. ५।६८।२-३)

'जो ये सम्राट्तुल्य, दानी, देवतागण में प्रशंसित मित्र एवं वरुण हैं, वे हमें भूमंडल एवं द्युलोकस्थ महनीय धन दे डालें, क्योंकि देवताओं में तुम्हारा क्षत्रियोचित बल

महान् है।'

नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्मने तोकाय तरिषो दधन्तु। सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु ... ॥ (ऋ ७।६२।६)

'अब अर्यमाके साथ मित्र और वरुण हमें तथा बाल-बच्चों को धन दे डाले और हमारे लिए सभी मार्ग सुन्दर एवं सुगम हों।'

मा हेळे भूम वरुणस्य ... मा मित्रस्य नृणाम्। (ऋ. ७।६२।४)

'हम लोग वरुण के तथा मानवोंके अत्यन्त प्यारे मित्र के भी द्वेष में न रहें' अर्थात् ऐसा कभी न होने पाय कि वे हमारा द्वेष करने लगें। इस से स्पष्ट है कि मित्रावरुणों का कितना भारी प्रभाव जनतापर पडा था।

मित्रस्तन्नो वरुणो देवो...प्र साधिष्ठेभिः पथिभिर्नयन्तु। (ऋ. ७।६४।३)

'तो हमें मित्र एवं देवतारूपी वरुण अत्यन्त सुगम मार्गा से अधिकाधिक ले चलें।'

मित्रहतन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः। मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत् कर्म ... यच्चयध्वे ॥ (ऋ. ७।५२।२)

'संरक्षक मित्र एवं वरुण उस सुख को हमारी सन्तान के लिए देवें; हम आप के ही हैं, इसलिए दूसरों से उत्पन्न पाप का भार हमें न उठाना पडे और नाहि हम वह कार्य करें कि जिसे तुम नष्ट करना चाहो।'

यत् गोपा अवदत् अदितिः शर्म भद्रं मित्रो यच्छन्ति वरुणः। तस्मिन्ना तोकं तनयं दधाना मा कर्म देवहेळनं...॥ (ऋ. ७।६०।८)

'संरक्षक अदितिने जो कहा था कि मित्र एवं वरुण कल्याणकारक सुख देते हैं, उसीमें हम अपनी सन्तान रखते हुए ऐसा कर्म न करें कि जिससे देवोंका क्रोध प्रतीत हो।'

त्रा नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम्। मित्र साधयतं धियः। (ऋ. ७।६६।३)

'हे विख्यात गृहरक्षक तथा शरीरसंरक्षक मित्र और वरुण! हम स्तोताओं के कर्मों को या बुद्धियोंको सफलता दो।'

ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वामपो न नावा दुरिता तरेम। (ऋ. ७।६५।३)

'हे मित्रावरुणो! तुम्हारे ऋतके मार्गसे हम बुराइयों को इस भाँति लाँघकर आगे बढें, जैसे नौकाके सहारे लोग जलोंको तैर जाते हैं।'

वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे ... ॥ (ऋ. ५।६५।५)

'हम अत्यन्त विस्तृत एवं चौडे मित्रके संरक्षणमें रहे'

इन ऊपर दिये हुए मंत्रभागों से मित्र और वरुणके कार्योंका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। जनताकी सेवा वे कितनी लगनसे करते थे, सो सूर्यप्रकाशवत् सुस्पष्ट होता है। वेदमें अन्यत्र इनके बारेमें जो उल्लेख पाये जाते हैं उनसे भी इसी बात की पुष्टि होती है। जैसे-

यां मे धियं ... देवा अददात वरुण मित्र यूयं। तां पीपयत पयसेव धेनुं कुवित् गिरो अधि रथे वहाथ ॥ (ऋ. १०।६४।१२)

'हे द्योतमान मित्र एवं वरुण! तुमने जो बुद्धि मुझे प्रदान की है, उसे तुम ऐसी पुष्ट करो जैसे कोई गायको अत्यन्त दुग्धवती बनाए अर्थात् बुद्धि यथेष्ट सफल हो। क्योंकि तुम अपने रथोंमें बहुतसी वक्तृताओं को ले चलते हो।' इससे स्पष्ट होता है कि रथारोही होकर जहाँ जहाँ ये पहुँचते, उधर लोग इनके लिए भाषण किया करते थे। निस्सन्देह इन भाषणोंमें मित्रावरुणकी योग्यताका यथोचित वर्णन रहता अतः वैदिक कवि उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे दोनों तथा अन्य देवभी उन्हें भलीभांति लाभ पहुँचायँ। मित्र और वरुण तथा अन्य आदित्य लोकसेवामें अनवरत रूपसे लगे हैं, इसलिए वैदिक कवि कहते हैं-

आ नो बर्ही रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा। सीदन्तु मनुषो यथा ॥ (ऋ. १।२६।४)

आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम्। (ऋ. १।४४।१३)

"शत्रुहिंसक तीन प्रमुख आदित्य मित्र, वरुण और अर्यमा हमारे बिछाए हुए दर्भासनपर अन्य मानवोंके तुल्य बैठें। प्रातःकाल ही अहिंसक कार्यमें उपस्थित रहनेके लिए जानेवाले मित्र एवं अर्यमा कुशासनपर बैठ जाएँ।"

वैदिक कवि अग्निसे कहते हैं कि-

त्वमादित्याँ आवह तान् हुवमसि । अग्ने... (ऋ. १।९४।३)

" हे अग्ने ! तू अदितिके पुत्रोंको इधर ले आ, क्योंकि हम उन्हें बहुत चाहते हैं । " आदित्योंकी योग्यताके बारेमें कहा है कि–

ते हि पुत्रासो अदितेर्विदुर्द्वेषांसि योतवे अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः ॥ (ऋ. ८।१८।५)

" वे तो अदितिके पुत्र निष्पाप और विशाल मात्रा में कार्य करनेवाले हैं और जानते हैं किस ढंगसे हमें पापसे दूर रखा जाय तथा द्वेष्टाओं को हमसे पृथक् किया जाय । "

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुः ... दधिरे दिवि क्षयम् । (ऋ. १०।६३।५)

" जो सम्राटतुल्य भली भाँति बढनेवाले आदित्य हैं वे यज्ञमें आचुके हैं तथा द्युलोकमें निवासस्थान बना चुके हैं।"

आदित्यों से जनताको कैसे लाभ पहुँचता था इस विषय में कहा है कि—

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते... यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥ (ऋ. १०।६३।१३)

" जिस मानव को आदित्य अच्छी नीतियों से सारी बुराइयों के पार सुख के लिए ले चलते हैं, वह अखंडरूप से अहिंसित होता हुआ वृद्धिंगत होता है और संतानों द्वारा विशेष रूप से जन्म लेता है ।"

इस कारण वैदिक कवि इन से प्रार्थना करते हैं कि–

त आदित्या अभयं शर्म यच्छत । सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ॥ (ऋ. १०।६३।७)

" ऐसे वे विख्यात आदित्यो ! तुम भयरहित सुख प्रदान करो और भलाई के लिए हमारे लिए सुन्दर मार्ग सुखपूर्वक गमन करने योग्य कर दो । "

त आदित्या आगता सर्वतातये... (ऋ.१०।३५।११)

" ऐसे वे तुम आदित्यो ! सबके विस्तार या वृद्धिके लिए आओ । "

तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम् । (ऋ. १०।३५।१२)

" हे देवतारूपी आदित्यो ! तो हमें ऐसा घर दो कि जिसे नेताओं का संरक्षण प्राप्त हो, जो भलीभाँति भरण करता हो तथा अत्यन्त प्रशंसनीय हो ।"

...स्वस्तये आदित्यासो भवन्तु नः। (ऋ. ५।५१।१२)

" हमारे कल्याण के लिए आदित्य प्रयत्नशील रहें ।"

ऐसे विख्यात आदित्यों के दलमें प्रमुखतया विराजमान मित्र, वरुण एवं अर्यमा के संबंधमें निम्न मंत्र देखने योग्य हैं—

प्रातर्यं वरुणं मित्रं... कृष्वावसे नो अद्य । (ऋ. ६।२१।९)

" आज विशेष ढंग से संरक्षण हो इसलिए मित्र एवं वरुण को तैयार कर ले ।"

ते नः सन्तु यूजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा । वृधासश्च प्रचेतसः ॥ (ऋ. ८।८३।२)

" वे वर्धनशील तथा प्रकृष्ट ज्ञानवाले मित्रावरुण एवं अर्यमा हमेशा हमारे साथ रहनेवाले हों । "

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् । अर्यमा देवैः सजोषाः ॥ (ऋ. १।९०।१)

शं नो मित्रः, शं वरुणः, शं नो भवत्वर्यमा... (ऋ. १।९०।९)

" सरल एवं निष्कपट नीतिसे प्रेरित होकर जाननेवाला मित्र, वरुण तथा देवताओं से युक्त अर्यमा हमें ले चलें ।" " तीनों आदित्य हमारे लिए हितकारक बनें । "

आ नो...गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः । (ऋ. १।१८६।२)

" हमारे निकट तीनों देवतारूपी मित्रावरुण तथा अर्यमा मिल कर आजायँ । "

वामं नो अस्त्वर्यमन् वामं वरुण शंस्यम् । वामं हि आवृणीमहे ॥ (ऋ. ८।८३।४)

हे वरुण एवं अर्यमन् ! हमें प्रशंसनीय एवं सुन्दर धन मिल जाय, क्योंकि हम तो सुन्दर चीजको ही सर्वथा स्वीकार कर लेते हैं । "

ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त नस्तिरो विश्वानि दुरिता नयन्ति । सुक्षत्रासो वरुणो.... । (ऋ ६।५१।१०)

" वे उत्तम क्षत्रियोचित बलसे पूर्ण मित्र एवं वरुण उच्च कोटि के तेजवाले हैं और निश्चय से हमें सारी बुराइयोंके पार ले चलते हैं । "

त आगमन्तु त इह भवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो... । (ऋ. ६।४९।१)

"वे अच्छे क्षत्रिय मित्रावरुण इधर आ जायँ और हमारे कथन को सुनलें।"

इसभाँति, मित्र और वरुण जिन्हें आदित्य दल में सर्वोपरि स्थान मिल गया है अपनी तीव्र लगन एवं अदम्य उत्साहसे जनसेवा को इतने अच्छे ढंग से निभाते हैं कि वैदिक कवि प्रसन्नचेता होकर उनकी खूब सराहना करते हैं, देखिए-

इमां वां मित्रावरुणा सुवृक्तिमिषं न कृण्वे असुरा नवीयः ॥ (ऋ. ७।३६।२)

'हे बल तथा प्राण शक्ति देनेवाले मित्र और वरुण! तुम दोनोंके लिए मैं इस नयी सुन्दर वक्तृता को बना देता हूँ, मानों जैसे कि कोई अन्न बनाता हो अर्थात् सोच विचार के उपरान्त परिश्रमपूर्वक तैयार कर देता हूँ।'

सविता देवताका परिचय

सविता के संबन्ध में ब्राह्मणग्रन्थों में निम्न निर्देश मिलते हैं जैसे—

सविता वै देवानां प्रसविता। (शत. १।१।२।१७)
(जै. उ. ३।१८।३)

सविता वै प्रसविता। (कौ. ६।१४)

"सविता सचमुच देवोंको उत्पन्न करनेवाला है, उत्पादक है।"

सविता वै प्रसवानामीशे। (कौ. १।३०;७।१६)

सविता प्रसवानामीशे। (कौ. ५।२)

"सविता विशेष उत्पादनोंका प्रभु है।" इस से स्पष्ट हुआ कि उत्पादन या सृजनाक्रिया से सविताका घनिष्ठ संबंध है। यही बात निम्न निर्देश में दिखाई देती है—

एताभिर्वै (रात्रिभिः) सविता सर्वस्य प्रसवमगच्छत्। (ताण्ड्य. २४।१५।२)

'इन्हीं से युक्त हो सविता सबके उत्पादन के निकट चला गया।'

सविता प्राजनयत्। (तै. ब्रा. १।६।२।२)

प्रजापतिः सविता भूत्वा प्रजा असृजत।
(तै. ब्रा. १।६।४।१)

'सविताने प्रकृष्टतया उत्पन्न किया, प्रजापतिने सविता बनकर प्रजाओं का सृजन किया।"

अब देखना चाहिए कि वेदमंत्रोंमें उत्पादक सविताके संबंधमें कौनसे निर्देश पाये जाते हैं-

दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः ... विचक्षणः प्रथयन्नापृणद्रोदसी उभे सविता सुम्नमुक्थ्यम्। (ऋ. ४।५३।२)

"विश्वकी प्रजाओंका पालनकर्ता, द्युलोकका धारण करनेवाला और विशेष ढंगसे द्रष्टा सविता फैलानेका तथा भरनेका कार्य करता हुआ प्रशंसनीय एवं विशाल सुखका सृजन कर चुका।"

...प्रासावीद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे। (ऋ. ५।८१।२)

'मानवों तथा चौपायोंके लिए सविताने हितका निर्माण प्रकृष्ट रूपसे किया।'

उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इत् ... (ऋ. ५।८१।५)

"हे सवितर्! तू अकेला ही उत्पादन कार्यपर प्रभुत्व रखता है।'

स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः।
तं भागं चित्रमीमहे ॥ (ऋ. ५।८२।३)

"वह सेवनीय या ऐश्वर्यवान् सविता तो दानी पुरुषके लिए रत्नोंका सृजन करता है और हम उस अनूठे भागको पाना चाहते हैं।"

... देवः सविता दमूना ... आ दाशुषे सुवति भूरि वामम्। (ऋ. ६।७१।४)

"दान देनेकी इच्छा मनमें रखता हुआ द्योतमान सविता दानी पुरुषको देनेके लिए सुन्दर धन को प्रचुरमात्रा में बना देता है।"

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु ...।
(अथर्व. ५।२४।१)

'प्रकृष्ट उत्पादनोंका स्वामी जो सविता है वह मेरी रक्षा करे।"

वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः । (ऋ. ६।७१।६)

"हे सवितर्! आज हमारे लिए सुन्दर धनका सृजन कर, कल के दिन भी और प्रतिदिन धनका निर्माण कर।"

अधा नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम्। (५।८२।४)

"हे देवतारूपी सवितर्! आज तू हमारे लिए सन्तान-युक्त अच्छे ऐश्वर्यका सृजन कर।"

देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्योऽमृतत्वं सुवसि भागमुत्तमम्। (४।५४।२)

"हे सवितर्! पहले तो तू पूजनीय देवोंके लिए उत्कृष्ट तथा भजनीय धनका और अमरपनका निर्माण करता है।"

य इमा विश्वा जातान्याशाश्वयति श्लोकेन। प्र च सुवाति सविता॥ (ऋ. ५।८२।९)

"जो सविता इन सभी वस्तुओं को प्रकर्ष से उत्पन्न करता है और उत्पादित होनेपर श्लोक द्वारा चारों ओर सुनाता है।

उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्यस्य ... द्यु३र्वी पृथ्वीं... सृजानः आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः॥ (ऋ. ७।३८।२)

'हे सवितर्! तू उठ खड़ा रह, इस प्रार्थना को सुन ले और तू विशाल पृथ्वी को बनाता है तथा मानवों के लिए मनुष्योपभोग्य धन-संपदा को प्रेरित करता है।'

इन उपर्युक्त मन्त्रों से भी स्पष्ट होता है कि उत्पादन एवं प्रेरण सविता के प्रमुख कार्यों में गिने जाते थे। दोनों कार्य निस्सन्देह महत्त्वपूर्ण हैं और वैदिक कवि सविता से निम्न प्रकार प्रार्थना करते हैं—

ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे। तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव॥ (ऋ. १।३५।११)

'हे (देव सवितर्) द्योतमान! उत्पादक तथा प्रेरक सवितर्! अन्तरिक्ष में (ते ये पूर्व्यासः) तेरे जो पूर्वकाल से विद्यमान (अरेणवः सु कृताः) बिना धूलि के अर्थात् निर्मल एवं भली भाँति बनाये हुए (पन्थाः) मार्ग हैं (तेभिः) उनपर से, (सुगेभिः पथिभिः) जो कि सुगमतापूर्वक यात्रा करनेयोग्य हैं, आकर (अद्य नः रक्ष) आज हमारी रक्षा कर (अधि ब्रूहि च) और हमसे वार्तालाप कर, कुछ उपदेश की बातें हम से कह दे।'

अस्मभ्यं तद्दिवो अद्भ्यः पृथिव्यास्त्वया दत्तं काम्यं राधः आ गात्। शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवात्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे॥ (ऋ. २।३८।११)

'हे (सवितर्) उत्पादक तथा प्रेरक देव! (त्वया दत्तं) तूने दिया हुआ (तत् काम्यं राधः) वह कमनीय धन (दिवः अद्भ्यः पृथिव्याः) द्युलोक से, जलोंसे तथा भूमंडलपर से (अस्मभ्यं आ गात्) हमारे लिए आजाय, (यत्) जो धन, (स्तोतृभ्यः) स्तोताओं के लिए तथा (उरुशंसाय जरित्रे) विस्तारपूर्वक कहनेवाले प्रशंसक के लिए (शं आपये भवति) शान्तिदायक तथा आप्तवत् बन जाता है।'

बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी। स नो देवः सविता शर्म यच्छत्वस्मे क्षयाय त्रिवरूथमंहसः॥ (ऋ. ४।५३।६)

'(देवः सविता) दानी सविता (यः वशी) जो सब को वश में रखनेवाला, (जगतः स्थातुः) जंगम एवं स्थावर (उभयस्य जगतः निवेशनः) द्विविध संसार को ठीक बिठानेवाला, (प्रसवीता) प्रकर्ष से प्रेरित या उत्पन्न करनेवाला और (बृहत्सुम्नः) प्रचंड सुख या धन साथ रखनेवाला है (सः नः) वह हमें (शर्म यच्छतु) सुख दे डाले और (अस्मे) हमारे लिए (अंहसः क्षयाय) पाप का विनाश हो इसलिए (त्रिवरूथं) तीन विभागवाले घर का दान करे।' इससे विदित होता है कि सविता का कार्यक्षेत्र समूचे विश्व में फैला हुआ है।

आगन् देव ऋतुभिर्वर्धतु क्षयं, दधातु नः सविता सुप्रजामिषम्। स नः क्षपाभिरहभिश्च जिन्वतु, प्रजावन्तं रयिमस्मे समिन्वतु (ऋ. ४।५३।७)

'देवतारूपी सविता (ऋतुभिः आगन्) विभिन्न

मौसम में भेजाएं और (क्षयं वर्धतु) हमारे निवास-स्थल को बढ़ाए तथा (सुप्रजां इषं) अच्छी सन्तान तथा अन्न (नः दधातु) हमें देवे; वह सविता (क्षपाभिः अहभिः च) रातदिन (नः जिन्वतु) हमें संतुष्ट रखे और (अस्मे) हमारी ओर (प्रजावन्तं रयिं सं इन्वतु) सन्तानयुक्त धन भलीभाँति प्रेरित करे। '

अभूदेवः सविता वन्द्यो नु नः... वि यो रत्ना भजति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अद्य द्रविणं यथा दधत् ॥ (ऋ. ४।५४।१)

' हमारे लिए द्योतमान सविता वन्दनीय हुआ है, इसमें सन्देह नहीं; जो मानवों को रमणीय धन बाँटकर देता है वह जैसे इधर हमारे लिए उच्च कोटि का द्रव्य रखे ऐसा प्रबंध करो। '

गाव इन ग्रामं युयुधिरिवाश्वान्, वाश्रेव वत्सं सुमना दुहाना। पतिरिव जायामभि नो न्येतु, धर्ता दिवः सविता विश्ववारः। (ऋ. १०।१४९।४)

" जैसे गौएँ सायंकाल अपने ग्राम की ओर सहर्ष लौट आती हैं, योद्धा जिस तरह उत्सुकतापूर्वक घोड़ों के पास जा पहुँचता है, अच्छी मनवाली गौ दुहते समय रँभाती हुई अपने बछड़े के निकट जिस प्रकार शीघ्र जाती है और पतिदेव अपनी पत्नी के निकट जैसे तीव्रतया जाता है वैसे ही यह सविता, जो कि द्युलोक का धारणकर्ता और सब लोगों के लिए वरणीय है, हमारे समीप अत्यन्य अधिक मात्रा में आ जाए। "

देवस्य वयं सवितुः सवीमनि, श्रेष्ठे स्याम वसुनश्च दावने। यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो निवेशने प्रसवे चासि भूमनः। (ऋ. ६।७१।२)

(वयं) हम लोग देवतारूपी सविता के उच्चकोटि के (सवीमनि) उत्पादन-कार्य की तथा (वसुनः दावने) धनवितरण-कार्य की छत्रछाया में रहें, हे सवितर्! जो तू अखिल मानव तथा चौपायों के यथेष्ट सृजन एवं प्रस्थापन-कार्य में लगा हुआ है।" इस मन्त्र में सविता के विशाल कार्यक्षेत्र की झलक मिलती है। वह केवल श्रेष्ठ ढंग के उत्पादन-कार्य में ही लगा हो सो बात नहीं अपितु धनके विभाजन में भी उसका ध्यान बराबर लगा रहता है, क्योंकि यदि उत्कृष्ट उत्पादन की ओर ही ध्यान दिया जाय और उचित वितरण का कुछ भी ख्याल न रखा जाय तो बड़ी विकट समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं जैसे कि वर्तमान आर्थिक संगठन से स्पष्ट होता है। समूचे विश्व के उत्पादन तथा ठीक जगह बिठाने के कार्य को सविता सुचारुरूप से निभाता है।

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वं शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्। हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ॥ (ऋ. ६।७१।३)

" हे सवितर्! तू आज (नः गयं) हमारे धन तथा गृहको (शिवेभिः अदब्धेभिः पायुभिः) हितकारक तथा न दबाये गये संरक्षणसाधनों से (परि पाहि) चतुर्दिक् सुरक्षित रख और तू (हिरण्यजिह्वः) हितरमणीय वाणी से कहनेवाला है इसलिए हम तेरे सामने यह माँग पेश करते हैं कि हमें (नव्यसे सुविताय) नई भलाई के लिए बचा दे एवं हमपर (अघ-शंसः) बुरी बातें कहनेवाला कोई भी (माकिः ईशत) कभी न शासन प्रस्थापित करे।

अपि ष्टुतः सविता देवो अस्तु, यमा चित् विश्वे वसवो गृणन्ति। स नः स्तोमान् नमस्य श्रुतो पाद्भिश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरीन् ॥ (ऋ. ७।३८।३)

" सभी वसुतक जिसकी प्रशंसा करते हैं वह दानशील सविता भी प्रशंसित होवे, वह नमन करने योग्य है और हमारे स्तोत्रोंको सुनकर हमें अन्न दे डाले तथा सारी संरक्षण आयोजनाओं को साथ लेकर विद्वन्मण्डली की रक्षा कर ले।"

इससे स्पष्ट है कि उत्पादन, प्रेरण के अतिरिक्त संरक्षण कार्य करनेकी क्षमताभी पर्याप्तरूपसे सवितामें विद्यमान थी।

सूर्य और सविता

साधारणतया सूर्यको सविता कह जाता है, अतः प्रश्न उठ खड़ा होता है कि क्या सूर्य और सविता अभिन्न हैं? ब्राह्मण-ग्रंथों के कुछ वचन इस अभिन्नता को मानते हैं ऐसा प्रतीत होता जैसे-

आदित्य एव सविता। गोपथ. १।३३; जै. ड. ४।२७।११

असावादित्यो देवः सविता। शतपथ. ६।३।१।१८।

असौ वै सविता योऽसौ (सूर्यः) तपति। कौ. ७।६; गोपथ. १।२०

एष वै सविता य एष (सूर्यः) तपति।
शतपथ. ३।२।३।१८; ४।४।१।३; ५।३।१।७

इन वचनों से स्पष्ट होता है कि सविता वास्तवमें सूर्य ही है, क्योंकि विश्वभरमें प्रेरणा और उत्पादन-क्रिया का सजीव प्रतीक सूर्य है, यह निस्सन्देह है। वेदमें भी कुछ ऐसे मंत्र पाये जाते हैं जिनसे सूर्य एवं सविताकी अभिन्नताकी सूचना मिलती है, जैसे–

अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्याः... हिरण्याक्षः सविता देव आगात्, दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि।
(ऋ. १।३५।८)

" हितरमणीय दृष्टिसे युक्त सविता द्योतमान होता हुआ, दानी पुरुष के लिए स्वीकरणीय रत्नों को धारण करता हुआ, पृथ्वीके आठों दिग्विभागों को प्रकाशित कर गया और आपहुँचा है।"

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिः, उभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते, अपामीवां बाधते...अभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति॥ (ऋ. १।३५।९)

" विशेषरीतिसे द्रष्टा और हाथ में सुवर्ण धारण करता हुआ भूलोक एवं द्युलोक दोनों के बीच चला आता है, रोगों को दूर भगाता है और आकर्षक तेजसे द्युलोक को व्याप्त करता है।"

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो...हिरण्ययेन सविता रथेना आ देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
(ऋ. १।३५।२)

' आकर्षक तेज से युक्त हो आनेवाला द्योतमान सविता सुवर्ण के बने अर्थात् तेजस्वी जगमगाते हुए रथपर से विश्व को निहारता हुआ चला आता है।'

वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो वि राजति। (ऋ. ५।८१।२)

' श्रेष्ठ सविताने आकाश को विशेष ढंग से प्रकाशित कर दिया है और वह उषाके प्रयाण के पश्चात् विराजमान हो उठता है।'

नृचक्षा एष दिवो मध्य आस्ते, आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम्। (ऋ. १०।१३९।२)

' द्युलोक, भूलोक तथा अन्तरिक्ष पूर्ण करता हुआ यह मानवोंका निरीक्षण करनेवाला आकाश के मध्य बैठे रहता है।'

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम्। (ऋ. १०।१३९।१)

' सूर्य की रश्मिवाला तथा हरण करने की क्षमता से युक्त सविता सदैव प्रकाशपुंज को ऊपर उठाता है।'

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णाद्स्कम्भने सविता द्यामदृंहत्। (ऋ. १०।१४९।१)

' सविताने भूमि को यंत्रोंद्वारा स्थिर किया है और निरालंब से दिखाई देनेवाले स्थान में द्युलोक को स्थायी बनाया है।'

आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा... प्र बाहू अस्राक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसवश्चक्तुभिर्जगत्॥ (ऋ. ४।५३।३)

' द्युलोकस्थ तथा भूमंडलस्थ लोकोंको अपने तेज से व्याप्त कर चुका और जगत् को दिन और रात के समय प्रेरित तथा अपने स्थान पर बिठाकर उत्पादन कार्यके लिए सविताने अपने बाहुओं को खूब आगे बढाया है।' सूर्य का सवितृत्व अत्यन्त स्पष्ट है।

संरक्षण-कार्य करने के लिए सविता को निमंत्रण भेजने के निर्देश देखने योग्य हैं।

... ह्वयामि देवं सवितारमूतये। (ऋ. १।३५।१)
हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये। (ऋ.१।२२।५)
विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः।
सवितारं नृचक्षसम्॥ (ऋ. १।२२।७)

' संरक्षण हो इसलिए मैं देवतारूपी सविता को, जो हाथमें सुवर्ण धारण करता है, बुलाता हूँ; मानवों के द्रष्टा और अनूठे धन का विभजन करनेवाले सविता को हम बुलाते हैं।" इस प्रकार भक्तोंके दिये हुए निमंत्रण को पाकर सविता रथपर चढकर यात्रा करने लगता है, जैसे–

हिरण्येन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्। ... बृहन्तं आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः। (ऋ. १।३५।२,४)

" देव सविता भुवनों को देखता हुआ सुनहले रथपरसे चला आता है; विचित्र किरणोंवाला याने तेजस्वी सविता बडे भारी रथपर चढ गया।"

इसभाँति, आदित्यों के महनीय कार्यका वर्णन वेदमें किया है। पाठक भी आदित्यों के मंत्र एवं सूक्त पढलें और मनन करें, ऐसी विनम्ति है।



दैवत-संहिता।

[ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता।]

१ अदितिः, आदित्याश्च।

(१) अदितिः।

॥१॥ (ऋ० १।८९।१०)

(१)× गोतमो राहूगणः। त्रिष्टुप्।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्ष—मदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् १०

॥२॥ (ऋ० ८।१८।४-७)

(२-५) हरिम्बिठिः काण्वः। उष्णिक्।

देवेभिर्देव्यदिते ऽरिष्टभर्मन्ना गहि। स्मत् सूरिभिः पुरुप्रिये सुशर्मभिः ४
ते हि पुत्रासो अदिते—र्विदुर्द्वेषांसि योतवे।
अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः ५
अदितिर्नो दिवा पशु—मदितिर्नक्तमद्वया। अदितिः पात्वंहसः सदावृधा ६
उत स्या नो दिवा मति—रदितिरूत्या गमत्। सा शंताति मयस्करदप स्रिधः ७ ५

॥३॥ (ऋ० ८।६७।१०-१२)

(६-८) मत्स्यः साम्मदः, मैत्रावरुणिर्मान्यः बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः। गायत्री।

उत त्वामदिते म—ह्यहं देव्युप ब्रुवे। सुमृळीकामभिष्टये १०
पर्षि दीने गभीर आँ उग्रपुत्रे जिघांसतः। माकिस्तोकस्य नो रिपत् ११
अनेहो न उरुव्रज उरूचि वि प्रसर्तवे। कृधि तोकाय जीवसे १२

॥४॥ (९-१५)(वा० य० ११।५६-५७,५९)

सिनीवाली सुकपर्दा सुकुरीरा स्वौपशा। सा तुभ्यमदिते मह्योखां दधातु हस्तयोः ६६ ९

×वा० य० २५,२३। अथर्व० ७।६।१।

उखां कृणोतु शक्त्या बाहुभ्यामदितिर्धिया ।
माता पुत्रं यथोपस्थे साग्निं बिभर्त्तु गर्भ आ । मुखस्य शिरोऽसि ५७ १०
अदित्यै रास्नास्यदितिष्टे बिलं गृभ्णातु ।
कृत्वाय सा महीमुखां मृन्मयीं योनिमग्नये ।
पुत्रेभ्यः प्रायच्छददितिः श्रपयानिति ५९

॥५॥ (वा० य० २१।५-७)×

महीमू षु मातरꣳ सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हुवेम ।
तुविक्षत्रामजरन्तीमुरूचीꣳ सुशर्माणमदितिꣳ सुप्रणीतिम् ५
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसꣳ सुशर्माणमदितिꣳ सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावꣳ स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तयें ६
सुनावमा रुहेयमस्रवन्तीमनागसम् । शतारित्राꣳ स्वस्तयें ७

॥६॥ (वा० य० २९।४)‡

स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।
देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु ४ १५

॥७॥ (अथर्व० ७।६।४)+

(१६-१७) अथर्वा । विराड् जगती ।

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे ।
यस्या उपस्थ उर्वन्तरिक्षं सा नः शर्म त्रिवरूथं नि यच्छात् ४

॥८॥ (अथर्व० ७।७।१) आर्षी जगती ।

दितेः पुत्राणामदितेरकारिषमवं देवानां बृहतामनर्मणाम् ।
तेषां हि धाम गभिषक् समुद्रियं नैनान् नमसा परो अस्ति कश्चन १ १७

अदिति-सहचारी देवगणः ।

(१) सोमः, अदितिः ।

॥९॥ (अथर्व० ६।७।१-२) [दै० सोमः ११५१-५१ मन्त्रौ द्रष्टव्यौ]

× अथर्व० ७।६।१-३; ‡ दै० [अग्निः] २१०९ ।
+ वा० य० ९,१;१८,३० ।

(२) आदित्याः।

॥१०॥ (ऋ० १।४१।४-६)
(१८-२०) कण्वो घौरः। गायत्री।

सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते । नात्रावखादो अस्ति वः ४
यं यज्ञं नयथा नर आदित्या ऋजुना पथा । प्र वः स धीतये नशत् ५
स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना । अच्छा गच्छत्यस्तृतः ६ २०

॥११॥ (ऋ० २।२७।१-१७)
(२१-३७) कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा। त्रिष्टुप्।

इमा गिर आदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद् राजभ्यो जुह्वा जुहोमि ।
शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः १
इमं स्तोमं सक्रतवो मे अद्य मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।
आदित्यासः शुचयो धारपूता अवृजिना अनवद्या अरिष्टाः २
त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धासो दिप्सन्तो भूर्यक्षाः ।
अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु सर्वं राजभ्यः परमा चिदन्ति ३
धारयन्त आदित्यासो जगत् स्था देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।
दीर्घाधियो रक्षमाणा असुर्यमृतावानश्चयमाना ऋणानि ४
विद्यामादित्या अवसो वो अस्य यदर्यमन् भय आ चिन्मयो भु ।
युष्माकं मित्रावरुणा प्रणीतौ परि श्वभ्रेव दुरितानि वृज्याम् ५ २५
सुगो हि वो अर्यमन् मित्र पन्था अनृक्षरो वरुण साधुरस्ति ।
तेनादित्या अधि वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म ६
पिपर्तु नो अदितिर्राजपुत्रा ऽति द्वेषांस्यर्यमा सुगेभिः ।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मोपं स्याम पुरुवीरा अरिष्टाः ७
तिस्रो भूमीर्धारयन् त्रीरुत द्यून् त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेषाम् ।
ऋतेनादित्या महि वो महित्वं तदर्यमन् वरुण मित्र चारु ८
त्री रोचना दिव्या धारयन्त हिरण्ययाः शुचयो धारपूताः ।
अस्वप्नजो अनिमिषा अदब्धा उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय ९
त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये च देवा असुर ये च मर्ताः ।
शतं नो रास्व शरदो विचक्षे ऽश्यामायूंषि सुधितानि पूर्वा १० ३०

*

न दक्षिणा वि चिकिते न सव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा ।
पाक्या चिद् वसवो धीर्या चिद् युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम् ११
यो राजभ्य ऋतनिभ्यो ददाश यं वर्धयन्ति पुष्टयश्च नित्याः ।
स रेवान् याति प्रथमो रथेन वसुदावा विदथेषु प्रशस्तः १२
शुचिरपः सूयवसा अदब्ध उप क्षेति वृद्धवयाः सुवीरः ।
नकिष्टं घ्नन्त्यन्तितो न दूराद् य आदित्यानां भवति प्रणीतौ १३
अदिते मित्र वरुणोत मृळ यद् वो वयं चकृमा कच्चिदागः ।
उर्वश्यामभयं ज्योतिरिन्द्र मा नो दीर्घा अभि नशन् तमिस्राः १४
उभे अस्मै पीपयतः समीची दिवो वृष्टिं सुभगो नाम पुष्यन् ।
उभा क्षयावाजयन् याति पृत्सु भावधौ भवतः साधू अस्मै १५ ३५

या वो माया अभिद्रुहे यजत्राः पाशा आदित्या रिपवे विचृत्ताः ।
अश्वीव ताँ अति येषं रथेना रिष्टा उरावा शर्मन्त्स्याम १६
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदात्र आ विदं शूनमापेः ।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १७

॥१२॥ (ऋ० ७।५१।१-३)

(३८-५३) मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शंतमेन ।
अनागास्त्वे अदितित्वे तुरासं इमं यज्ञं दधतु श्रोषमाणाः १
आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां मित्रो अर्यमा वरुणो रजिष्ठाः ।
अस्माकं सन्तु भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोममवसे नो अद्य २
आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्व ऋभवश्च विश्वे ।
इन्द्रो अग्निरश्विना तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ३ ४०

॥१३॥ (ऋ० ७।५२।१-३)

आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्देवत्रा वसवो मर्त्यत्रा ।
सनेम मित्रावरुणा सनन्तो भवेम द्यावापृथिवी भवन्तः १
मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः ।
मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत् कर्म वसवो यच्चयध्वे . २ ४१

तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त रत्नं देवस्य सवितुरियानाः ।
पिता च तन्नो महान् यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुषन्त ३

॥१४॥ (ऋ० ७।६६।४-१३)
गायत्री, १०-१३ प्रगाथः =(समा बृहती+विषमा सतोबृहती)

यदद्य सूर उदिते ऽनागा मित्रो अर्यमा । सुवाति सविता भगः ४
सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः । ये नो अंहोऽतिपिप्रति ५ ४५
उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये । महो राजान ईशते ६
प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् । अर्यमणं रिशादसम् ७
राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे । इयं विप्रा मेधसातये ८
ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह । इषं स्वश्च धीमहि ९
बहवः सूरचक्षसो ऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
त्रीणि ये येमुर्विदथानि धीतिभिर्विश्वानि परिभूतिभिः १० ५०
वि ये दधुः शरदं मासमादहर्गृज्ञमक्तुं चादृचम् ।
अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत ११
तद् वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते ।
यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा युयमृतस्य रथ्यः १२
ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः ।
तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः १३

॥१५॥ (ऋ० ८।१८।१-३,१०-२२)
(५४-६९) हरिम्बिठिः काण्वः । उष्णिक् ।

इदं ह नूनमेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः । आदित्यानामपूर्व्यं सवीमनि १
अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम् । अदब्धाः सन्ति पायवः सुगेवृधः २ ५५
तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ३
अपामीवामप स्निध मप सेधत दुर्मतिम् । आदित्यासो युयोतना नो अंहसः १०
युयोता शरुमस्मदाँ आदित्यास उतामतिम् । ऋधग् द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः ११
तत् सु नः शर्म यच्छता ऽऽदित्या यन्मुमोचति । एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः १२
यो नः कश्चिद् रिरिक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यः । स्वैः प एवैः रिरिषीष्ट युर्जनः १३
समित् तमघमश्नवद् दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् । यो अस्मत्रा दुर्हणावाँ उरुष्यति ६१ १४

पाकत्रा स्थन देवा हृत्सु जानीथ मर्त्यम् । उप द्रुयुं चाद्रयुं च वसवः १५
आ शर्म पर्वतानामोतापां वृणीमहे । द्यावाक्षामारे अस्मद् रपस्कृतम् १६
ते नो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नावा वसवः। अति विश्वानि दुरिता पिपर्तन १७
तुचे तनाय तत् सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे। आदित्यासः सुमहसः कृणोतन १८ ६५
यज्ञो हीळो वो अन्तर आदित्या अस्ति मृळत ।
युष्मे इद् वो अपि ष्मसि सजात्ये १९
बृहद् वरूथं मरुतां देवं त्रातारमश्विना । मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये २०
अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यम् । त्रिवरूथं मरुतो यन्त नश्छर्दिः २१
ये चिद्धि मृत्युबन्धव आदित्या मनवः स्मसि ।
प्र सू न आयुर्जीवसे तिरेतन २२

॥१६॥ (ऋ० ८।१९।३४-३५)

(७०-७१) सोभरिः काण्वः । ३४ उष्णिक्, ३५ सतोबृहती ।

यमादित्यासो अद्रुहः पारं नयथ मर्त्यम् । मघोनां विश्वेषां सुदानवः ३४ ७०
यूयं राजानः कं चिच्चर्षणीसहः क्षयन्तं मानुषाँ अनु ।
वयं ते वो वरुण मित्रार्यम-न्त्स्यामेदृतस्य रथ्यः ३५

॥१७॥ (ऋ० ८।४७।१-१३)

(७२-८४) त्रित आप्त्यः । महापङ्क्तिः ।

महि वो महतामवो वरुण मित्र दाशुषे ।
यमादित्या अभि द्रुहो रक्षथा नेमघं नशदनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १
विदा देवा अघानामादित्यासो अपाकृतिम् ।
पक्षा वयो यथोपरि व्यस्मे शर्म यच्छता नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः २
व्यस्मे अधि शर्म तत् पक्षा वयो न यन्तन ।
विश्वानि विश्ववेदसो वरूथ्या मनामहे ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ३
यस्मा अरासत क्षयं जीवातुं च प्रचेतसः ।
मनोर्विश्वस्य घेदिम आदित्या राय ईशते ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ४
परि णो वृणजन्नघा दुर्गाणि रथ्यो यथा ।
स्यामेदिन्द्रस्य शर्मण्यादित्यानामुतावस्य नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ५ ७१

परिह्रुतेदुना जनो युष्मादत्तस्य वायति ।
देवा अदब्धमाश वो यमादित्या अहेतना नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ६
न तं तिग्मं चन त्यजो न द्रासदभि तं गुरु ।
यस्मा उ शर्म सप्रथ आदित्यासो अराध्व मनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ७
युष्मे देवा अपि ष्मसि युध्यन्त इव वर्मसु ।
यूयं महो न एनसो यूयमर्भादुरुष्यता नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ८
अदितिर्न उरुष्यत्व दितिः शर्म यच्छतु ।
माता मित्रस्य रेवतो ऽर्यम्णो वरुणस्य चा नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ९ ८०
यद् देवाः शर्म शरणं यद् भद्रं यदनातुरम् ।
त्रिधातु यद् वरूथ्यं तदस्मासु वि यन्तना नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १०
आदित्या अव हि ख्यता धि कूलादिव स्पशः ।
सुतीर्थमर्वतो यथा नु नो नेषथा सुग मनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ११
नेह भद्रं रक्षस्विने नावयै नोपया उत ।
गवे च भद्रं धेनवे वीराय च श्रवस्यते ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १२
यदाविर्यदपीच्यं देवासो अस्ति दुष्कृतम् ।
त्रिते तद् विश्वमाप्त्य आरे अस्मद् दधातना नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १३

॥१८॥ (ऋ० ८।६७।१-९,१३-२१)

(८५-१०२) मत्स्यः साम्मदः, मैत्रावरुणिर्मान्यः, बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः। गायत्री ।

त्यान् नु क्षत्रियाँ अव आदित्यान् याचिषामहे । सुमृळीकाँ अभिष्टये १ ८५
मित्रो नो अत्यंहतिं वरुणः पर्षदर्यमा । आदित्यासो यथा विदुः २
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं वरूथमस्ति दाशुषे । आदित्यानामरंकृते ३
महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन् । अवांस्या वृणीमहे ४
जीवान् नो अभि धेतना ऽऽदित्यासः पुरा हथात् । कद्ध स्थ हवनश्रुतः ५
यद् वः श्रान्तायं सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः । तेना नो अधि वोचत ६ ९०
अस्ति देवा अंहोरुर्वस्ति रत्नमनागसः । आदित्या अद्भुतैनसः ७
मा नः सेतुः सिषेदयं महे वृणक्तु नस्परि । इन्द्र इद्धि श्रुतो वशी ८
मा नो मृचा रिपूणां वृजिनानामविष्यवः । देवा अभि प्र मृक्षत ९
ये मूर्धानः क्षितीना मदंध्वासः स्वयशसः । व्रता रक्षन्ते अद्रुहः १३ ९४

ते नं आसो वृकाणा—मादित्यासो मुमोचत । स्तेनं बद्धमिवादिते १४ ९५
अपो षु णं इयं शरु—रादित्या अप दुर्मतिः । अस्मदेत्वजघुषी १५
शश्वद्धि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयम् । पुरा नूनं बुभुज्महे १६
शश्वन्तं हि प्रचेतसः प्रतियन्तं चिदेनसः । देवाः कृणुथ जीवसे १७
तत् सु नो नव्यं सन्यस आदित्या यन्मुमोचति । बन्धाद् बद्धमिवादिते १८
नास्माकमस्ति तत् तर आदित्यासो अतिष्कदे । यूयमस्मभ्यं मृळत १९
मा नो हेतिर्विवस्वत आदित्याः कृत्रिमा शरुः । पुरा नु जरसो वधीत् २०
वि षु द्वेषो व्यंहति—मादित्यासो वि संहितम् । विष्वग् वि वृहता रपः २१ १०२

॥१९॥ (ऋ० ८।१०१।६)

(१०३) जमदग्निर्भार्गवः । सतोबृहती ।

ते हिन्विरे अरुणं जेन्यं वस्वे—कं पुत्रं तिसृणाम्। ते धामान्यमृता मर्त्यानां—मदब्धा अभि चक्षते ६

॥२०॥ (ऋ० १०।१८५।१-३)

(१०४-१०६) सत्यधृतिर्वारुणिः । आदित्यः (स्वस्त्ययनम्) । गायत्री ।

महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः । दुराधर्षं वरुणस्य १
नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु । ईशे रिपुरघशंसः २ १०५
यस्मै पुत्रासो अदितेः प्र जीवसे मर्त्याय । ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम् ३

॥२१॥ (१०७-१२०) (वा० य० ८।१-५)

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा ।
विष्णो उरुगायैष ते सोमस्तꣳ रक्षस्व मा त्वा दभन् १
कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा २
कदा चन प्रयुच्छस्युभे निपासि जन्मनी ।
तुरीयादित्य सवनं त इन्द्रियमातस्थावमृतं दिव्यादित्येभ्यस्त्वा ३
यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः ।
आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादꣳहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा ४ ११०
विवस्वन्नादित्येष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व ५

॥२२॥ (वा० य० १३।३,५)

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ३ १११

द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः ५

॥२३॥ (वा० य० १७।५९-६०)

विमान एष दिवो मध्य आस्त आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।
स विश्वाचीरभिचष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम् ५९
उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश ।
मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ६० ११५

॥२४॥ (वा० य० २३।५;३१।१७)×

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ५
अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद् रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे १७

॥२५॥ (वा० य० ३३।८१-८३)

इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ८१
यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः ।
तिरश्चिद्यें रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सो अज्यते रयिः ८२
अयꣳ सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ८३ १२०

॥२६॥ (अथर्व० २।३२।१-६) [दै० (आयुर्वेद०) १२५ सूक्तं द्रष्टव्यम् ।]

॥२७॥ (अथर्व० १६।३।१-६)

(१२१-१६३) ब्रह्मा । १ आसुरी गायत्री; २-३ आर्च्यनुष्टुप्; ४ प्राजापत्या त्रिष्टुप्; ५ साम्न्युष्णिक्; ६ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

मूर्धोहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम् १
रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम् २
उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्टां धर्ता च मा धरुणश्च मा हासिष्टाम् ३
विमोकश्च मार्द्रपविश्च मा हासिष्टामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम् ४ १२४

× वा० य० २३।५ = दै० [इन्द्रः] २४; अथर्व० २०,२६,४;४७,१०;६९,९; सा० १४६८
दै० [अदितिः०] २

बृहस्पतिर्म आत्मा नृमणा नाम हृद्यः ५ १२५
असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा ६

॥२८॥ (अथर्व० १६।४।१-७)

१,३ साम्न्यनुष्टुप्; २ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्; ५ आसुरी गायत्री; ६ आर्च्युष्णिक्; ७ त्रिपदा विराड्गर्भाऽनुष्टुप् ।

नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम् १
स्वासदसि सुषा अमृतो मर्त्येष्वा २
मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽवहाय परा गात् ३
सूर्यो माह्नः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः ४ १३०
प्राणापानौ मा मा हासिष्टं मा जने प्र मेषि ५
स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च सर्वा आपः सर्वगणो अशीय ६
शर्करी स्थ पशवो मोप स्थेषुर्मित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु ७

॥२९॥ (अथर्व० १७।१।१-३०)

१ जगती; १-८ त्र्यवसाना; १-३ अतिजगती; ६-७,१९ अत्यष्टिः; ८,११, १६ अतिधृतिः; ९ पञ्चपदा शाकरी; १०-१३,१६,१८-१९,२४ त्र्यवसाना; १० अष्टपदा धृतिः; ११ कृतिः; १३ प्रकृतिः; १४-१५ पञ्चपदा शाकरी; १७ पञ्चपदा विराडतिशाकरी; १८ भुरिगष्टिः; २४ विराडत्यष्टिः; १-५ षट्पदा; ११-१३,१६,१८-१९,२४ सप्तपदा; २० ककुप्; २१ चतुष्पदा उपरिष्टाद्बृहती; २२ याजुषी अनुष्टुप्; २३ निचृद्बृहती (२२-२३ द्विपदा); २५-२६ अनुष्टुप्; २७,३० जगती; २८-२९ त्रिष्टुप् ।

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रमायुष्मान् भूयासम् १
विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियो देवानां भूयासम् २ १३५
विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः प्रजानां भूयासम् ३
विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः पशूनां भूयासम् ४
विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः समानानां भूयासम् ५
उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि ।
द्विषंश्च मह्यं रध्यतु मा चाहं द्विषते रधं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ६ १३९

उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि ।
यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ७ १४०
मा त्वा दभन्त्सलिले अप्स्वन्तर्ये पाशिन उपतिष्ठन्त्यत्र ।
हित्वाशस्तिं दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ८
त्वं न इन्द्र महते सौभगायादब्धेभिः परि पाह्यक्तुभिस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ९
त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शंतमो भव ।
आरोहँस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १०
त्वमिन्द्रासि विश्वजित् सर्ववित् पुरुहूतस्त्वमिन्द्र ।
त्वमिन्द्रेमं सुहवं स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ११

अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न ते आपुर्महिमानमन्तरिक्षे ।
अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः स त्वं न इन्द्र दिवि षंछर्म यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १२ १४५
या ते इन्द्र तनूरप्सु या पृथिव्यां यान्तरग्नौ या ते इन्द्र पवमाने स्वर्विदि ।
ययेन्द्र तन्वाऽन्तरिक्षं व्यापिथ तया न इन्द्र तन्वाऽ३ शर्म यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १३
त्वामिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रं नि षेदुर्ऋषयो नाधमानास्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १४
त्वं तृतं त्वं पर्येष्युत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्विदं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १५
त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नभसी वि भासि ।
त्वमिमा विश्वा भुवनानु तिष्ठस ऋतस्य पन्थामन्वेषि विद्वांस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १६

पञ्चभिः पराङ् तपस्येकयार्वाङशस्तिमेषि सुदिने बाधमानस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १७ १५०
त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः ।
तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्यं जुह्वति जुह्वतस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १८
असति सत् प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम् ।
भूतं ह भव्य आहितं भव्यं भूते प्रतिष्ठितं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १९
शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि । स यथा त्वं भ्राजता भ्राजोऽस्येवाहं भ्राजता भ्राज्यासम् २०
रुचिरसि रोचोऽसि । स यथा त्वं रुच्या रोचोऽस्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन
च रुचिषीय २१

उद्यते नम उदायते नम उदिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः २२ १५५

अस्तंयते नमोऽस्तमेष्यते नमोऽस्तमिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः० २३
उदगादयमादित्यो विश्वेन तपसा सह ।
सपत्नान् मह्यं रन्धयन् मा चाहं द्विषते रधं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् २४
आदित्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये । अहर्मात्यपीपरो रात्रिं सत्रातिं पारय २५
सूर्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये । रात्रि मात्यपीपरोऽहः सत्रातिं पारय २६
प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।
जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम् २७ १६०
परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या या मा मानुषीरवसृष्टा वधाय २८
ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम् ।
मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः २९
अग्निर्मा गोप्ता परि पातु विश्वत उद्यन्त्सूर्यो नुदतां मृत्युपाशान् ।
व्युच्छन्तीरुषसः पर्वता ध्रुवाः सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम् ३०

॥३०॥ (अथर्व० १९।१८।४)

(१६४) अथर्वा। आर्च्यनुष्टुप्।

वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु । ये मा घायव एतस्या दिशोऽभिदासात् ४

(१६५) ॥३१॥ (अथर्व० २०।१३५।६)

आदित्या ह जरितरङ्गिरोभ्यो दक्षिणामनयन् ।
तां ह जरितः प्रत्यायंस्तामु ह जरितः प्रत्यायन् ६ १६५

आदित्य-सहचारी देवगणः ।

(१) आदित्योषसः ।

॥३२॥ [दै० (उषा) १८७-१९१ मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

(२) अग्निमित्रवरुणादित्यविश्वेदेवाः ।

॥३३॥ (वा० य० ४।११)

व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः ।
दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहस॰ सुतीर्था नो असद्वशे ।
ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षक्रतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ११ १६६

(३) आदित्या वसवोऽङ्गिरसः पितरः ।

॥३४॥ (अथर्व० २।१२।४)

(१६७) भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

अशीतिभिस्तिसृभिः सामगेभिरादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ।
इष्टापूर्तमवतु नः पितृणामामुं ददे हरसा दैव्येन ४

(४) भगादित्याः ।

॥३५॥ (अथर्व० ३।१६।२-३,५) (१६८-१७०); अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

प्रातर्जितं भगमुग्रं हवामहे वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद् यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजा चिद् यं भगं भक्षीत्याह २
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ३
भग एव भगवाँ अस्तु देवस्तेना वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीमि स नो भग पुरएता भवेह ५ १७०

(५) बृहस्पतिः, आदित्यः ।

॥३६॥ (अथर्व० ४।१।१-७)+

(१७१-१७७) वेनः । त्रिष्टुप्, २,५ पुरोऽनुष्टुप् ।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः १
इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः ।
तस्मा एतं सुरुचं हारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे २
प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति ।
ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ ३ १७३

+ वा० य० १३।३ (११२)

स हि दिवः स पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत् ।
महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः ४
स बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट् ।
अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः ५ १७५
नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम ।
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन्नु ६
योऽथर्वाणं पितरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसावं च गच्छात् ।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान् ७

(६) दिवादित्यौ ।

॥३७॥ (अथर्व० ४।३९।५-६)

(१७८-१७९) अङ्गिराः । ५ त्रिपदा महाबृहती, ६ संस्तारपङ्क्तिः ।

दिव्या दित्याय समनमन्त्स आर्भ्नोत् ।
यथा दिव्या दित्यायं सुमनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु ५
द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो वत्सः । सा म आदित्येन वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा ६

(७) आदित्यादयः ।

॥३८॥ (अथर्व० ५।२१।१०-१२)

(१८०-१८२) ब्रह्मा । अनुष्टुप्, ११ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

आदित्य चक्षुरा दत्स्व मरीचयोऽनु धावत । पत्सङ्किनीरा सजन्तु विगते बाहुवीर्यं १० १८०
यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून् ।
सोमो राजा वरुणो राजा महादेव उत मृत्युरिन्द्रः ११
एता देवसेनाः सूर्यकेतवः सचेतसः । अमित्रान् नो जयन्तु स्वाहा १२

(८) आदित्या रुद्रा वसवश्चः ।

॥३९॥ (१८३) (अथर्व० २०।१३५।९)

आदित्या रुद्रा वसवस्त्वेनु त इदं राधः प्रति गृभ्णीह्यङ्गिरः ।
इदं राधो विश्व इदं राधो बृहत्पृथु ९ १८३

(३) मित्रः, मित्रावरुणौ च ।

॥४०॥ (ऋ० १।१५१।१)

(१८४) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

मित्रं न यं शिम्या गोषु गव्यवः स्वाध्यो विदथे अप्सु जीजनन् ।
अरेजेतां रोदसी पाजसा गिरा प्रति प्रियं यजतं जनुषामवः १

॥४१॥ (ऋ० ३।५९।१-९)×

(१८५-१९३) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप्, ६-९ गायत्री।

मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।
मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत १ १८५
प्र स मित्र मर्तो अस्तु प्रयस्वान् यस्त आदित्य शिक्षति व्रतेन ।
न हन्यते न जीयते त्वोतो नैनमंहो अश्नोत्यन्तितो न दूरात् २
अनमीवास इळया मदन्तो मितज्ञवो वरिमन्ना पृथिव्याः ।
आदित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तो वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम ३
अयं मित्रो नमस्यः सुशेवो राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः ।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्या—ऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ४
महाँ आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो गृणते सुशेवः ।
तस्मा एतत् पन्यतमाय जुष्ट—मग्नौ मित्राय हविरा जुहोत ५
मित्रस्य चर्षणीधृतो ऽवो देवस्य सानसि । द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ६ १९०
अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः । अभि श्रवोभिः पृथिवीम् ७
मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टिशवसे । स देवान् विश्वान् बिभर्ति ८
मित्रो देवेष्वायुषु जनाय वृक्तबर्हिषे । इषं इष्टव्रता अकः ९

॥४२॥ (१९४) (वा० य० ११।५३)

मित्रः सꣳसृज्य पृथिवीं भूमिं च ज्योतिषा सह ।
सुजातं जातवेदसमयक्ष्माय त्वा सꣳसृजामि प्रजाभ्यः ५३

॥४३॥ (अथर्व० १९।१९।१)

(१९५) अथर्वा। भुरिग्बृहती।

मित्रः पृथिव्योदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु १ १९५

× ऋ० ३,५९,६ = वा० य० ११,६२; काण्व० १२,६४ ।

॥४४॥ (ऋ० १।२।७-९)

(१९६-१९८) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं घृताचीं साधन्ता ७
ऋतेन मित्रावरुणा वृतावृधावृतस्पृशा । क्रतुं बृहन्तमाशाथे ८
कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अपसम् ९

॥४५॥ (ऋ० १।२३।४-६)

(१९९-२०१) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये । जज्ञाना पूतदक्षसा ४
ऋतेन यावृतावृधा वृतस्य ज्योतिषस्पती । ता मित्रावरुणा हुवे ५ २००
वरुणः प्राविता भुवन् मित्रो विश्वाभिरूतिभिः । करतां नः सुराधसः ६

॥४६॥ (ऋ० १।४३।३)

(२०२) कण्वो घौरः । गायत्री ।

यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ३

॥४७॥ (ऋ० १।१३६।१-७)

(२०३-२१३) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ७ त्रिष्टुप् ।

प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां बृहन्नमो हव्यं मतिं भरता मृळयद्भ्यां स्वादिष्ठं मृळयद्भ्याम् ।
ता सम्राजा घृतासुती यज्ञेयज्ञ उपस्तुता ।
अर्थैनोः क्षत्रं न कुतश्चनाधृषे देवत्वं नू चिदाधृषे १
अदर्शि गातुरुरवे वरीयसी पन्था ऋतस्य समयंस्त रश्मिभि श्चक्षुर्भगस्य रश्मिभिः ।
द्युक्षं मित्रस्य सादन मर्यम्णो वरुणस्य च ।
अथा दधाते बृहदुक्थ्यं१ वय उपस्तुत्यं बृहद् वयः २
ज्योतिष्मतीमदितिं धारयत्क्षितिं स्वर्वतीमा सचेते दिवेदिवे जागृवांसा दिवेदिवे ।
ज्योतिष्मत् क्षत्रमाशाते आदित्या दानुनस्पती ।
मित्रस्तयोर्वरुणो यातयज्जनो ऽर्यमा यातयज्जनः ३
अयं मित्राय वरुणाय शंतमः सोमो भूत्ववपानेष्वाभगो देवो देवेष्वाभगः ।
तं देवासो जुषेरत विश्वे अद्य सजोषसः ।
तथा राजाना करथो यदीमहे ऋतावाना यदीमहे ४ २०६

यो मित्राय वरुणायाविधज्जनोऽनर्वाणं तं परि पातो अंहसो दाश्वांसं मर्तमंहसः।
तमर्यमाभि रक्षत्यृजूयन्तमनु व्रतम्।
उक्थैर्य एनोः परिभूषति व्रतं स्तोमैराभूषति व्रतम् ५
नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळ्हुषे सुमृळीकाय मीळ्हुषे।
इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम्।
ज्योग्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि ६
ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो मंसीमहि स्वयशसो मरुद्भिः।
अग्निर्मित्रो वरुणः शर्म यंसन् तदश्याम मघवानो वयं च ७

॥४८॥ (ऋ० १।१३७।१-३) अतिशक्करी।

सुषुमा यातमद्रिभिर्गोश्रीता मत्सरा इमे सोमासो मत्सरा इमे।
आ राजाना दिविस्पृशाऽस्मत्रा गन्तमुप नः।
इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्रा गवाशिरः १ २१०
इम आ यातमिन्दवः सोमासो दध्याशिरः सुतासो दध्याशिरः।
उत वामुषसो बुधि साकं सूर्यस्य रश्मिभिः।
सुतो मित्राय वरुणाय पीतये चारुर्ऋताय पीतये २
तां वां धेनुं न वासरीमंशुं दुहन्त्यद्रिभिः सोमं दुहन्त्यद्रिभिः।
अस्मत्रा गन्तमुप नो ऽर्वाञ्चा सोमपीतये।
अयं वां मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ पीतये सुतः ३

॥४९॥ (ऋ० १।१३९।२) अत्यष्टिः।

यद्ध त्यन्मित्रावरुणावृतादध्यादुदाथे अनृतं स्वेन मन्युना दक्षस्य स्वेन मन्युना।
युवोरित्थाधि सद्म स्वपश्यामहिरण्ययम्।
धीभिश्चन मनसा स्वेभिरक्षभिः सोमस्य स्वेभिरक्षभिः २

॥५०॥ (ऋ०१।१५१।२-९)
(२१४-२३२) दीर्घतमा औचथ्यः। जगती।

यद्ध त्यद् वां पुरुमीळ्हस्य सोमिनः प्र मित्रासो न दधिरे स्वाभुवः।
अध क्रतुं विदतं गातुमर्चत उत श्रुतं वृषणा पस्त्यावतः २
आ वां भूषन् क्षितयो जन्म रोदस्योः प्रवाच्यं वृषणा दक्षसे महे।
यदीमृताय भरथो यदर्वते प्र होत्रया शिम्या वीथो अध्वरम् ३ २१५

प्र सा क्षितिरसुर या महि प्रिय ऋतावानावृतमा घोषथो बृहत् ।
युवं दिवो बृहतो दक्षमाभुवं गां न धुर्युप युञ्जाथे अपः ४
मही अत्र महिना वारमृण्वथो ऽरेणवस्तुज आ सप्तन् धेनवः ।
स्वरन्ति ता उपरताति सूर्यं मा निम्रुचं उषसस्तक्ववीरिव ५
आ वामृताय केशिनीरनूषत मित्र यत्र वरुण गातुमर्चथः ।
अव त्मना सृजतं पिन्वतं धियो युवं विप्रस्य मन्मनामिरज्यथः ६
यो वां यज्ञैः शशमानो ह दाशति कविर्होता यजति मन्मसाधनः ।
उपाह तं गच्छथो वीथो अध्वरमच्छा गिरः सुमतिं गन्तमस्मयू ७
युवां यज्ञैः प्रथमा गोभिरञ्जत ऋतावाना मनसो न प्रयुक्तिषु ।
भरन्ति वां मन्मना संयता गिरो ऽदृप्यता मनसा रेवदाशाथे ८ ११०

रेवद् वयो दधाथे रेवदाशाथे नरा मायाभिरितऊति माहिनम् ।
न वां द्यावोऽहभिर्नोत सिन्धवो न देवत्वं पणयो नानशुर्मघम् ९

॥५१॥ (ऋ० १।१५२।१-७) त्रिष्टुप् ।

युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो ह सर्गाः ।
अवातिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे १
एतच्चन त्वो वि चिकेतदेषां सत्यो मन्त्रः कविशस्त ऋघावान् ।
त्रिरश्रिं हन्ति चतुरश्रिरुग्रो देवनिदो ह प्रथमा अजूर्यन् २
अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद् वां मित्रावरुणा चिकेत ।
गर्भो भारं भरत्या चिदस्य ऋतं पिपर्त्यनृतं नि तारीत् ३
प्रयन्तमित् परि जारं कनीनां पश्यामसि नोपनिपद्यमानम् ।
अनवपृग्णा विततं वसानं प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ४ ११५

अनश्वो जातो अनभीशुरर्वा कनिक्रदत् पतयदूर्ध्वसानुः ।
अचित्तं ब्रह्म जुजुषुर्युवानः प्र मित्रे धाम वरुणे गृणन्तः ५
आ धेनवो मामतेयमवन्ती ब्रह्मप्रियं पीपयन्त्सास्मिन्नूधन् ।
पित्वो भिक्षेत वयुनानि विद्वान् नासाविवासन्नदितिमुरुष्येत् ६
आ वां मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं नमसा देवाववसा ववृत्याम् ।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु सह्या अस्माकं वृष्टिर्दिव्या सुपारा ७ ११८

॥५२॥ (ऋ० १।१५३।१-४)

यजामहे वां महः सजोषा हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।
घृतैर्घृतस्नू अध यद् वामस्मे अध्वर्यवो न धीतिभिर्भरन्ति १
प्रस्तुतिर्वां धाम न प्रयुक्ति—रयामि मित्रावरुणा सुवृक्तिः ।
अनक्ति यद् वां विदथेषु होता सुम्नं वां सूरिर्वृषणावियक्षन् २ २३०
पीपाय धेनुरदितिर्ऋताय जनाय मित्रावरुणा हविर्दे ।
हिनोति यद् वां विदथे सपर्य—न्त्स रातहव्यो मानुषो न होता ३
उत वां विक्षु मद्यास्वन्धो गाव आपश्च पीपयन्त देवीः ।
उतो नो अस्य पूर्व्यः पतिर्दन् वीतं पातं पयस उस्रियायाः ४

॥५३॥ (ऋ० २।४१।४-६)×

(२३३-२३५) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । गायत्री ।

अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा । ममेदिह श्रुतं हवम् ४
राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आसाते ५
ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती । सचेते अनवह्वरम् ६ २३५

॥५४॥ (ऋ० ३।६२।१६-१८)+

(२३६-२३८) गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । गायत्री ।

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् । मध्वा रजांसि सुक्रतू १६
उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः । द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता १७
गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् । पातं सोममृतावृधा १८

॥५५॥ (ऋ० ५।६२।१-९)

(२३९-२४७) श्रुतविदात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

ऋतेन ऋतमपिहितं ध्रुवं वां सूर्यस्य यत्र विमुचन्त्यश्वान् ।
दश शता सह तस्थुस्तदेकं देवानां श्रेष्ठं वपुषामपश्यम् १
तत् सु वां मित्रावरुणा महित्व—मीर्मा तस्थुषीरहभिर्दुदुह्रे ।
विश्वाः पिन्वथः स्वसरस्य धेना अनु वामेकः पविरा ववर्त २
अधारयतं पृथिवीमुत द्यां मित्रराजाना वरुणा महोभिः ।
वर्धयतमोषधीः पिन्वतं गा अव वृष्टिं सृजतं जीरदानू ३ २४१

× ऋ० २,४१,४ = वा० य० ७,९;

+ ऋ० ३,६१,१६ = वा० य० २१।८; सा० २२०,६६३

आ वामश्वासः सुयुजो वहन्तु यतरश्मय उप यन्त्ववाक् ।
घृतस्य निर्णिगनु वर्तते वामुप सिन्धवः प्रदिवि क्षरन्ति ४
अनु श्रुतामतिं वर्धदुर्वीं बर्हिरिव यजुषा रक्षमाणा ।
नमस्वन्ता धृतदक्षाधि गर्ते मित्रासाथे वरुणेळास्वन्तः ५
अक्रविहस्ता सुकृते परस्पा यं त्रासाथे वरुणेळास्वन्तः ।
राजाना क्षत्रमहृणीयमाना सहस्रस्थूणं बिभृथः सह द्वौ ६
हिरण्यनिर्णिगयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते दिव्याश्वाजनीव ।
भद्रे क्षेत्रे निमिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य ७ २४५
हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टावयःस्थूणमुदिता सूर्यस्य ।
आ रोहथो वरुण मित्र गर्तमतश्चक्षाथे अदितिं दितिं च ८
यद् वंहिष्ठं नातिविधे सुदानू अच्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा ।
तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम ९

॥५६॥ (ऋ० ५।६३।१–७)

(२४८–२६१) अर्चनाना आत्रेयः । जगती ।

ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि ।
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत् पिन्वते दिवः १
सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दृशा ।
वृष्टिं वां राधो अमृतत्वमीमहे द्यावापृथिवी वि चरन्ति तन्यवः २
सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस्पती पृथिव्या मित्रावरुणा विचर्षणी ।
चित्रेभिरभ्रैरुप तिष्ठथो रवं द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया ३ २५०
माया वां मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिश्चरति चित्रमायुधम् ।
तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते ४
रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गविष्टिषु ।
रजांसि चित्रा वि चरन्ति तन्यवो दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम् ५
वाचं सु मित्रावरुणाविरावतीं पर्जन्यश्चित्रां वदति त्विषीमतीम् ।
अभ्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतमरुणामरेपसम् ६
धर्मणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया ।
ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम् ७ २५४

॥५७॥ (ऋ० ५।६४।१-७) अनुष्टुप्, ७ पङ्क्तिः ।

वरुणं वो रिशादसमूचा मित्रं हवामहे । परि व्रजेव बाह्वोर्जगन्वांसा स्वर्णरम् १ २५५
ता बाहवा सुचेतुना प्र यन्तमस्मा अर्चते । शेवं हि जार्यं वां विश्वासु क्षासु जोगुवे २
यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा । अस्य प्रियस्य शर्मण्यहिंसानस्य सश्चिरे ३
युवाभ्यां मित्रावरुणोपमं धेयामृचा । यद्ध क्षयै मघोनां स्तोतॄणां च स्पूर्धसे ४
आ नो मित्र सुदीतिभिर्वरुणश्च सधस्थ आ । स्वे क्षये मघोनां सखीनां च वृधसे ५
युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच्च बिभ्रथः । उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये ६ २६०
उच्छन्त्यां मे यजता देवक्षत्रे रुशद्गवि ।
सुतं सोमं न हस्तिभिरा पद्भिर्धावतं नरा बिभ्रतावर्चनानसम् ७

॥५८॥ (ऋ० ५।६५।१-६)

(२६१-२७३) रातहव्य आत्रेयः । अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः ।

यश्चिकेत स सुक्रतुर्देवत्रा स ब्रवीतु नः । वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः १
ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा । ता सत्पती ऋतावृधा ऋतावाना जनेजने २
ता वामियानोऽवसे पूर्वा उप ब्रुवे सचा । स्वश्वासः सु चेतुना वाजाँ अभि प्र दावने ३
मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते । मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः ४ २६५
वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे । अनेहसस्त्वोतयः सत्रा वरुणशेषसः ५
युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः ।
मा मघोनः परि ख्यतं मो अस्माकमृषीणां गोपीथे न उरुष्यतम् ६

॥५९॥ (ऋ० ५।६६।१-६) अनुष्टुप् ।

आ चिकितान सुक्रतू देवौ मर्त रिशादसा । वरुणाय ऋतपेशसे दधीत प्रयसे महे १
ता हि क्षत्रमविहुतं सम्यगसुर्यमाशाते । अधा व्रतेव मानुषं स्वर्ण धायि दर्शतम् २
ता वामेषे रथानामुर्वीं गव्यूतिमेषाम् । रातहव्यस्य सुष्टुतिं दधृक् स्तोमैर्मनामहे ३ २७०
अधा हि काव्या युवं दक्षस्य पूर्भिरद्भुता । नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा ४
तदृतं पृथिवि बृहच्छ्रवएष ऋषीणाम् । जयसानावरं पृथ्वतिं क्षरन्ति यामभिः ५
आ यद् वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः । व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये ६

॥६०॥ (ऋ० ५।६७।१-५)

(२७४-२८३) यजत आत्रेयः । अनुष्टुप् ।

बळित्था देव निष्कृतमादित्या यजतं बृहत् । वरुण मित्रार्यमन् वर्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे १
आ यद् योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः । धर्तारा चर्षणीनां यन्तं सुम्नं रिशादसा २ २७५

विश्वे हि विश्ववेदसो वरुणो मित्रो अर्यमा । व्रता पदेव सश्चिरे पान्ति मर्त्यं रिषः ३
ते हि सत्या ऋतस्पृश ऋतावानो जनेजने । सुनीथासः सुदानवोऽहोश्चिदुरुचक्रयः ४
को नु वां मित्रास्तुतो वरुणो वा तनूनाम् । तत् सु वामेषते मतिरत्रिभ्य एषते मतिः५

॥६१॥ (ऋ० ५।६८।१-५) गायत्री ।

प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा । महिक्षत्रावृतं बृहत् १
सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च । देवा देवेषु प्रशस्ता २ १८०
ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महि वां क्षत्रं देवेषु ३
ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते । अद्रुहा देवौ वर्धेते ४
वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः । बृहन्तं गर्तमाशाते ५

॥६२॥ (ऋ० ५।६९।१-४)

(१८४-१९१) उरुचक्रिरात्रेयः । त्रिष्टुप्।

त्री रोचना वरुण त्रीँरुत द्यून् त्रीणि मित्र धारयथो रजाँसि ।
वावृधानावमतिं क्षत्रियस्यानु व्रतं रक्षमाणावजुर्यम् १
इरावतीर्वरुण धेनवो वां मधुमद् वां सिन्धवो मित्र दुहे ।
त्रयस्तस्थुर्वृषभासस्तिसृणां धिषणानां रेतोधा वि द्युमन्तः २ १८५
प्रातर्देवीमदितिं जोहवीमि मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।
राये मित्रावरुणा सर्वतातेऽवे तोकाय तनयाय शं योः ३
या धर्तारा रजसो रोचनस्योतादित्या दिव्या पार्थिवस्य ।
न वां देवा अमृता आ मिनन्ति व्रतानि मित्रावरुणा ध्रुवाणि ४

॥६३॥(ऋ० ५।७०।१-४) गायत्री ।

पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण । मित्र वंसि वां सुमतिम् १
ता वां सम्यगद्रुहाणेषमश्याम धायसे । वयं ते रुद्रा स्याम २
पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा । तुर्याम दस्यून् तनूभिः ३ १९०
मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा ४

॥६४॥ (ऋ० ५।७१।१-३)

(१९२-१९७) बाहुवृक्त आत्रेयः । गायत्री।

आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा । उपेमं चारुमध्वरम् १
विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः । ईशाना पिप्यतं धियः २ १९३

उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः । अस्य सोमस्य पीतये ३

॥६५॥ (ऋ० ५।७२।१–३) उष्णिक् ।

आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत् । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये १ २९५

व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयज्जना । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये २

मित्रश्च नो वरुणश्च जुषेतां यज्ञमिष्टये । नि बर्हिषि सदतां सोमपीतये ३

॥६६॥ (ऋ० ६।६७।१–११)

(२९८–३०८) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

विश्वेषां वः सतां ज्येष्ठतमा गीर्भिर्मित्रावरुणा वावृधध्यै ।

सं या रश्मेव यमतुर्यमिष्ठा द्वा जनाँ असमा बाहुभिः स्वैः १

इयं मद् वां प्र स्तृणीते मनीषोप प्रिया नमसा बर्हिरच्छे ।

यन्तं नो मित्रावरुणावधृष्टं छर्दिर्यद् वां वरूथ्यं सुदानू २

आ यातं मित्रावरुणा सुशस्त्युप प्रिया नमसा हूयमाना ।

सं यावप्रःस्थो अपसेव जनाञ्छुधीयताश्चिद् यतथो महित्वा ३ ३००

अश्वा न या वाजिना पूतबन्धू ऋता यद् गर्भमदितिर्भरध्यै ।

प्र या महिं महान्ता जायमाना घोरा मर्ताय रिपवे नि दीधः ४

विश्वे यद् वां महना मन्दमानाः क्षत्रं देवासो अदधुः सजोषाः ।

परि यद् भूथो रोदसी चिदुर्वी सन्ति स्पशो अदब्धासो अमूराः ५

ता हि क्षत्रं धारयेथे अनु द्यून् दृंहेथे सानुं द्युपमादिव द्योः ।

दृळ्हो नक्षत्र उत विश्वदेवो भूमिमातान् द्यां धासिनायोः ६

ता विग्रं वैथे जठरं पृणध्या आ यत् सद्म सभृतयः पृणन्ति ।

न मृष्यन्ते युवतयोऽवाता वि यत् पयो विश्वजिन्वा भरन्ते ७

ता जिह्वया सदमेदं सुमेधा आ यद् वां सत्यो अरातिर्ऋते भूत् ।

तद् वां महित्वं घृताञ्चावस्तु युवं दाशुषे वि चयिष्टमंहः ८ ३०५

प्र यद् वां मित्रावरुणा स्पृधन् प्रिया धाम युवधिता मिनन्ति ।

न ये देवास ओहसा न मर्ता अयज्ञसाचो अप्यो न पुत्राः ९

वि यद् वाचं कीस्तासो भरन्ते शंसन्ति के चिन्निविदो मनानाः ।

आद् वां ब्रवाम सत्यान्युक्था नाकिर्देवेभिर्यतथो महित्वा १०

अवोरित्था वां छर्दिषो अभिष्टौ युवोर्मित्रावरुणावस्कधोयु ।

अनु यद् गावः स्फुरानृजिप्यं धृष्णुं यद् रणे वृषणं युनजन् ११ ३०८

॥६७॥ (ऋ० ७।५०।१)

(३०९-३४७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती ।

आ मा॑ मित्रावरुणे॒ह र॑क्षतं कु॒लाय॑यद् वि॒श्वय॒न्मा न॒ आ ग॑न् ।
अ॒ज॒का॒वं दु॒र्दृ॒शी॑कं ति॒रो द॑धे॒ मा मा॑ पथे॒न॒ र॒प॒सा वि॑दत् त्स॒रुः १

॥६८॥ (ऋ० ७।६०।२-१२) त्रिष्टुप् ।

ए॒ष स्य मि॑त्रावरुणा नृ॒चक्षा॑ उ॒भे उदे॑ति॒ सूर्यो॑ अ॒भि ज्मन् ।
विश्व॑स्य स्था॒तुर्ज॒ग॑तश्च॒ गोपा॒ ऋजु॒ मर्ते॑षु वृ॒जि॒ना च॒ प॒श्य॒न् २ ३१०
अयु॑क्त स॒प्त ह॒रित॑ः स॒धस्था॒द् या ई॒ वह॑न्ति॒ सूर्यं॑ घृ॒ताचीः॑ ।
धामा॑नि मित्रावरुणा यु॒वाकुः॑ सं यो यू॒थेव॒ जनि॑मानि॒ चष्टे॑ ३
उद् वां॑ पृ॒क्षासो॑ मधु॒मन्तो॑ अस्थु॒रा सूर्यो॑ अरुहच्छु॒क्रमर्णः॑ ।
यस्मा॑ आदि॒त्या अ॒ध्व॑नो॒ र॒दन्ति॒ मि॒त्रो अ॑र्य॒मा व॑रु॒णः स॒जोषाः॑ ४
इ॒मे चे॒तारो॒ अ॒नृ॒तस्य॒ भूरे॒र्मित्रो अ॑र्य॒मा व॑रु॒णो हि सन्ति॑ ।
इ॒म ऋ॒तस्य॑ वावृधु॒र्दु॒रो॒णे श॒ग्मासः॑ पु॒त्रा अदि॑तेर॒द॒ब्धाः ५

इ॒मे मि॒त्रो व॑रु॒णो दू॒ळभा॑सो ऽचे॒तसं॑ चिच्चितयन्ति॒ दक्षैः॑ ।
अपि॒ क्रतुं॑ सु॒चे॒त॒सं व॑तन्त॒स्तिर॑श्चिद॒र्यः सु॒पथा॑ नयन्ति ६
इ॒मे दिवो॑ अ॒नि॒मिषा॑ पृथि॒व्या॒श्रिक॑त्वासो॑ अचे॒तसं॑ नयन्ति ।
प्र॒व्रा॒जे चि॑न्न॒द्यो॑ गा॒धम॑स्ति॒ पार॑ं नो॑ अस्य॒ वि॒ष्पि॒तस्य॑ पर्षन् ७ ३१५
यद् गो॒पाव॒ददि॑तिः शर्म॑ भ॒द्रं मि॒त्रो य॒च्छ॑न्ति॒ व॑रु॒णः सु॒दासे॑ ।
तस्मि॒न्ना तो॒कं त॒न॒यं द॑धा॒ना मा कर्म॑ देव॒हेळ॑नं तुरासः ८
अव॒ वेदि॑ं होत्रा॒भि॒र्य॒ज॒त॒ रिप॒ः काश्चि॑द् वरुण॒ध्रु॒तः सः ।
परि॒ द्वेषो॑भिर्य॒मा वृ॑णक्तु॒ रुं सु॒दासे॑ वृषणा उ लो॒कम् ९
स॒स्व॒श्चि॒द्धि सम्मृ॑तिस्त्वे॒ष्यै॒षा॒मपी॑च्येन॒ सह॑सा॒ सह॑न्ते ।
यु॒ष्मद् भि॒या वृ॑षणो रेज॑माना॒ दक्ष॑स्य चिन्महि॒ना मृ॑ळता नः १०

यो ब्रह्म॑णे सुम॒तिमा॑यजा॒ते॒ वाज॑स्य सा॒तौ प॑र॒मस्य॑ रा॒यः ।
सीक्ष॑न्त म॒न्युं म॒घवा॑नो अ॒र्य॒ उ॒रु क्षया॑य चक्रिरे सु॒धा॒तु ११
इ॒यं दे॑व पुरोहि॒ति॒र्यु॒वभ्यां॑ य॒ज्ञेषु॑ मित्रावरुणावकारि ।
विश्वा॑नि दुर्गा॒ पि॒पृ॒तं ति॒रो नो॑ यू॒यं पा॑त स्व॒स्ति॒भिः सदा॑ नः १२ ३२०

॥६९॥ (ऋ० ७।६१।१-७)

उद् वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं देवयोरेति सूर्यस्ततन्वान् ।
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे स मन्युं मर्त्येष्वा चिकेत १
प्र वां स मित्रावरुणावृतावा विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुदियर्ति ।
यस्य ब्रह्माणि सुक्रतू अवाथ आ यत् क्रत्वा न शरदः पृणैथे २
प्रोरोर्मित्रावरुणा पृथिव्याः प्र दिव ऋष्वाद् बृहतः सुदानू ।
स्पशो दधाथे ओषधीषु विक्ष्वृधग्यतो अनिमिषं रक्षमाणा ३
शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम शुष्मो रोदसी बद्बधे महित्वा ।
अयन् मासा अयज्वनामवीराः प्र यज्ञमन्मा वृजनं तिराते ४
अमूरा विश्वा वृषणाविमा वां न यासु चित्रं ददृशे न यक्षम् ।
द्रुहः सचन्ते अनृता जनानां न वां निण्यान्यचिते अभूवन् ५ ३२५
समु वां यज्ञं महयं नमोभिर्हुवे वां मित्रावरुणा सबाधः ।
प्र वां मन्मान्यृचसे नवानि कृतानि ब्रह्म जुजुषन्निमानि ६
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥७०॥ (ऋ० ७।६२।४-६)×

द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नो ये वां जज्ञुः सुजनिमान ऋष्वे ।
मा हेळे भूम वरुणस्य वायोर्मो मित्रस्य प्रियतमस्य नृणाम् ४
प्र बाहवा सिसृतं जीवसे न आ नो गव्यूतिमुक्षतं घृतेन ।
आ नो जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ५
नू मित्रो वरुणो अर्यमा न स्तमने तोकाय वरिवो दधन्तु ।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः *६ ३३०

॥७१॥ (ऋ० ७।६४।१-५)

दिवि क्षयन्ता रजसः पृथिव्यां प्र वां घृतस्य निर्णिजो ददीरन् ।
हव्यं नो मित्रो अर्यमा सुजातो राजा सुक्षत्रो वरुणो जुषन्त १ ३३१

× ऋ० ७,६२,५ = वा० य० २१,९ । * ऋ० ७।६३।६

दे० [अदितिः०] ४

आ राजाना महऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया यातमर्वाक् ।
इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टिमवं दिव इन्वतं जीरदानू २
मित्रस्तन्नो वरुणो देवो अर्यः प्र साधिष्ठेभिः पथिभिर्नयन्तु ।
ब्रवद् यथा न आदरिः सुदासइषा मदेम सह देवगोपाः ३
यो वां गर्तं मनसा तक्षदेतमुर्ध्वां धीतिं कृणवद् धारयच्च ।
उक्षेथां मित्रावरुणा घृतेन ता राजाना सुक्षितीस्तर्पयेथाम् ४
एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ ३३५

॥७२॥ (ऋ० ७।६५।१-५)

प्रति वां सूर उदिते सूक्तैर्मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।
ययोरसुर्यमक्षितं ज्येष्ठं विश्वस्य यामन्नाचिता जिगत्नु १
ता हि देवानामसुरा तावर्या ता नः क्षितीः करतमूर्जयन्तीः ।
अश्याम मित्रावरुणा वयं वां द्यावा च यत्र पीपयन्नहा च २
ता भूरिपाशावनृतस्य सेतू दुरत्येतू रिपवे मर्त्याय ।
ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वामपो न नावा दुरिता तरेम ३
आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिळाभिः ।
प्रति वामत्र वरमा जनाय पृणीतमुद्रो दिव्यस्य चारोः ४
एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ ३४०

॥७३॥ (ऋ० ७।६६।१-३,१७-१९) गायत्री ।

प्र मित्रयोर्वरुणयोः स्तोमो न एतु शूष्यः । नमस्वान् तुविजातयोः १
या धारयन्त देवाः सुदक्षा दक्षपितरा । असुर्याय प्रमहसा २
ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जारित्रणाम् । मित्र साधयतं धियः ३
काव्येभिरदाभ्या ऽऽ यातं वरुण द्युमत् । मित्रश्च सोमपीतये १७
दिवो धामभिर्वरुण मित्रश्चा यातमद्रुहा । पिबतं सोममातुजी १८ ३४५
आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा । पातं सोममृतावृधा १९

॥७४॥ (ऋ० ८।२५।१-९,१३-२४)

(३४७-३६७) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक्, २३ उष्णिग्गर्भा ।

ता वां विश्वस्य गोपा देवा देवेषु यज्ञिया । ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा १ ३४७

मित्रा तना न रथ्या३ वरुणो यश्च सुक्रतुः । सनात् सुजाता तनया धृतव्रता २
ता माता विश्ववेदसा ऽसुर्याय प्रमहसा । महीं जजानादितिर्ऋतावरी ३
महान्ता मित्रावरुणा सम्राजा देवावसुरा । ऋतावानावृतमा घोषतो बृहत् ४ ३५०
नपाता शवसो महः सूनू दक्षस्य सुक्रतू । सुप्रदानू इषो वास्त्वधि क्षितः ५
सं या दानूनि येमथु—र्दिव्याः पार्थिवीरिषः । नभस्वतीरा वां चरन्तु वृष्टयः ६
अधि या बृहतो दिवो३ ऽभि यूथेव पश्यतः । ऋतावाना सम्राजा नमसे हिता ७
ऋतावाना नि षेदतुः साम्राज्याय सुक्रतू । धृतव्रता क्षत्रिया क्षत्रमाशतुः ८
अक्ष्णश्चिद् गातुवित्तरा ऽनुल्बणेन चक्षसा । नि चिन्मिषन्ता निचिरा नि चिक्यतुः ९ ३५५
तद् वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं गोपयत्यम् । मित्रो यत् पान्ति वरुणो यदर्यमा १३
उत नः सिन्धुरपां तन्मरुतस्तद्दधिना । इन्द्रो विष्णुर्मीढ्वांसः सजोषसः १४
ते हि ष्मा वनुषो नरो ऽभिमातिं कयस्य चित् । तिग्मं न क्षोदः प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः १५
अयमेकं इत्था पुरू रु चष्टे वि विश्पतिः । तस्य व्रतान्यनु वश्चरामसि १६
अनु पूर्वाण्योक्या साम्राज्यस्य सश्चिम । मित्रस्य व्रता वरुणस्य दीर्घश्रुत् १७ ३६०
परि यो रश्मिना दिवो ऽन्तान् ममे पृथिव्याः । उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा १८
उदु ष्य शरणे दिवो ज्योतिरयंस्त सूर्यः । अग्निर्न शुक्रः समिधान आहुतः १९
वयौ दीर्घप्रसद्मनी—शे वाजस्य गोमतः । ईशे हि पित्वोऽविषस्य दावने २०
तत् सूर्य रोदसी उभे दोषा वस्तोरुप ब्रुवे । भोजेष्वस्माँ अभ्युच्चरा सदा २१
ऋज्रमुक्षण्यायने रजतं हरयाणे । रथं युक्तमसनाम सुपाणि २२ ३६५
ता मे अश्यानां हरीणां नितोशना । उतो नु कृत्व्यानां नृवाहसा २३
स्मदभीशू कशावन्ता विप्रा नाविष्ठया मती । महो वाजिनावर्वन्ता सचासनम् २४

॥७५॥ (ऋ० ८।१०१।१-४)+

(३६८-३७१) जमदग्निर्भार्गवः १-२ प्रगाथः=(बृहती+सतोबृहती), ३ गायत्री, ४ सतोबृहती।

ऋधगित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये ।
यो नूनं मित्रावरुणावभिष्टय आचक्रे हव्यदातये १
वसिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा नरा राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।
ता बाहुता न दंसना रथर्यतः साकं सूर्यस्य रश्मिभिः २
प्र यो वां मित्रावरुणा ऽजिरो दूतो अद्रवत् । अर्यःशीर्षा मदेरघुः ३ ३७०

+ ऋ० ८,१०१,१ = वा० य० ३३,८७।

न यः संपृच्छे न पुनर्हवीतवे न संवादाय रमते ।
तस्मान्नो अद्य समृतेरुरुष्यतं बाहुभ्यां न उरुष्यतम् ४

॥७६॥ (ऋ० १०।१३२।२-७)

(३७२-३७७) शकपूतो नार्मेधः । विराड्रूपा; २,६ प्रस्तारपङ्क्तिः, ७ महासतोबृहती ।

ता वां मित्रावरुणा धारयत्क्षिती सुषुम्नेषितत्वता यजामसि ।
युवोः क्राणाय सख्यै—रभि ष्याम रक्षसः २
अधा चिन्नु यदिधिषामहे वा—मभि प्रियं रेक्णः पत्यमानाः ।
दुद्धाँ वा यत् पुष्यति रेक्णः सम्वारन् नाकिरस्य मघानि ३
असावन्यो असुर सूयत द्यौ—स्त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ।
मूर्धा रथस्य चाकन् नैतावतैनसान्तकधुक् ४
अस्मिन्त्स्वे३तच्छकपूत एनो हिते मित्रे निगतान् हन्ति वीरान् ।
अवोर्वा मद्धात् तनूष्वः प्रियासु यज्ञियास्वर्वा ५ ३७५
युवोर्हि माताददितिर्विचेतसा द्यौर्न भूमिः पयसा पुपूतनि ।
अवं प्रिया दिदिष्टन सूरो निनिक्त रश्मिभिः ६
युवं ह्यमराजावसीदतं तिष्ठद् रथं न धूर्षदं वनर्षदम् ।
ता नः कणूकयन्ती—र्नृमेधस्तत्रे अंहसः सुमेधस्तत्रे अंहसः ७

॥७७॥ (३७८-३८२) (वा० य० ७।१०) *

राया वयꣳ सस्वाꣳसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः ।
तां धेनुं मित्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम् १०

॥७८॥ (वा० य० १०।१६,२१)

हिरण्यरूपा उषसो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च ।
आरोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि १६
मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि २१ ३८०

॥७९॥ (वा० य० २९।६)

अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि संविदाने ।
उषासा वाꣳ सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्य योनाविह सादयामि ६ ३८१

---

* दे० [इन्द्रः] ३१६० ।

॥८०॥ (वा० य० ३३।७२)

काव्ययोराजानेषु क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे । रिशादसा सधस्थ आ ७२

॥८१॥ (अथर्व० २।२८।१)[⊠]

(३८३) शम्भुः । त्रिष्टुप् ।

मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविदानौ ।
तदग्निर्होता वयुनानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति २

॥८२॥ (अथर्व० ३।२५।१-६)

(३८४-३८९) भृगुः । अनुष्टुप् ।

उत्तुदस्त्वोत्तुदतु मा धृथाः शयने स्वे ।
इषुः कामस्य या भीमा तया विध्यामि त्वा हृदि १
आधीपर्णां कामशल्यामिषुं संकल्पकुल्मलाम् ।
तां सुसंनतां कृत्वा कामो विध्यतु त्वा हृदि २ ३८५
या प्लीहानं शोषयति कामस्येषुः सुसंनता ।
प्राचीनपक्षा व्योषा तया विध्यामि त्वा हृदि ३

शुचा विद्धा व्योषया शुष्कास्याभि सर्प मा ।
मृदुर्निमन्युः केवली प्रियवादिन्यनुव्रता ४
आजामि त्वाजन्या परि मातुरथो पितुः । यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ५
व्यस्यै मित्रावरुणौ हृदश्चित्तान्यस्यतम् । अथैनामक्रतुं कृत्वा ममैव कृणुतं वशे ६

॥८३॥ (अथर्व० ४।२९।१-७) [आयुर्वेदप्रकरणे सूक्तं (२६४) द्रष्टव्यम् ।]

॥८४॥ (अथर्व० १।२०।२)

(३९०-३९४) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

यो अद्य सेन्यो वधोऽघायूनामुदीरते । युवं तं मित्रावरुणावस्मद्यावयतं परि २ ३९०

॥८५॥ (अथर्व० ५।२४।५) चतुष्पदातिऽशाक्करी ।

मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ मावताम् ।
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ५ ३९१

⊠ दे० [आयुर्वेद०] २ ।

॥८६॥ (अथर्व० ६।३२।३) त्रिष्टुप् ।+

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्रिणो नुदतं प्रतीचः ।
मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम् ३

॥८७॥ (अथर्व० ६।८९।३) अनुष्टुप् ।

मह्यं त्वा मित्रावरुणौ मह्यं देवी सरस्वती ।
मह्यं त्वा मध्यं भूम्या उभावन्तौ समस्यताम् ३

॥८८॥ (अथर्व० ६।९७।२) जगती ।

स्वधास्तु मित्रावरुणा विपश्चिता प्रजावत् क्षत्रं मधुनेह पिन्वतम् ।
बाधेथां दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत् २

॥८९॥ (अथर्व० ९।१०।२३)

(३९५) ब्रह्मा । त्रिष्टुप् ।

अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद्वां मित्रावरुणा चिकेत ।
गर्भो भारं भरत्या चिदस्या ऋतं पिपर्त्यनृतं नि पाति २३ ३९५

॥९०॥ (अथर्व० १०।५।११)

(३९६) सिन्धुद्वीपः । पथ्यापङ्क्तिः ।

मित्रावरुणयोर्भाग स्थ । अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये ११

॥९१॥ (३९७-३९९) (सा० ९८६-९८७)*

ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च । वयं वां मित्रा स्याम ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २
पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा । साह्याम दस्यूं तनूभिः ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३

॥९२॥ (सा० १६४७)×

त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः । त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३९९



+ दै० [आयुर्वेद०] ७३३ । * ऋ० ५,७०,१-२ । × ऋ० ८।१५।९

मित्र-मित्रावरुण-सहचारी-देवगणः ।

(१) मित्रावरुणौ नभस्यश्च ।

॥९३॥ (ऋ० २।३६।६)

गृत्समदे (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे सत्तो होता निविदः पूर्व्या अनु ।
अच्छा राजाना नमसा एत्यावृतं प्रशास्त्रादा पिबतं सोम्यं मधु ६ ४००

(२) मित्रावरुणादित्याः ।

॥९४॥ (ऋ० ८।१०१।५)

जमदग्निर्भार्गवः । बृहती ।

प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो ।
वरूथ्यं१ वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ५

(३) उखामित्रौ ।

॥९५॥ (वा० य० ११।६४)

उत्थाय बृहती भवोदु तिष्ठ ध्रुवा त्वम् ।
मित्रैतां त उखां परिदद्म्यभित्या एषा मा भेदि ६४ ४०२

(४) सविता ।

॥९६॥ ऋ० १।२२।५-८)+

(४०३-४०६) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये । स चेत्ता देवता पदम् ५
अपां नपातमवसे सवितारमुप स्तुहि । तस्य व्रतान्युश्मसि ६
विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः । सवितारं नृचक्षसम् ७ ४०५
सखाय आ नि षीदत सविता स्तोम्यो नु नः । दाता राधांसि शुम्भति ८

॥९७॥ (ऋ० १।२४।३-५)

(४०७-४०९) आजीगर्तिः शुनःशेपः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । (५ भगो वा) । गायत्री ।

अभि त्वा देव सवितरीशानं वार्याणाम् । सदावन् भागमीमहे ३
यश्चिद्धि त इत्था भगः शशमानः पुरा निदः । अद्वेषो हस्तयोर्दधे ४
भगभक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा । मूर्धानं राय आरभे ५

॥९८॥ (ऋ० १।३५।२-११)×

(४१०-४१९) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । त्रिष्टुप्, ९ जगती ।

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽ देवो याति भुवनानि पश्यन् २ ४१०
याति देवः प्रवता यात्युद्वता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम् ।
आ देवो याति सविता परावतोऽप विश्वा दुरिता बाधमानः ३
अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम् ।
आस्थाद् रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः ४
वि जनाञ्छ्यावाः शितिपादो अख्यन् रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः ।
शश्वद् विशः सवितुर्दैव्यस्योपस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः ५
तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्थाँ एका यमस्य भुवने विराषाट् ।
आणिं न रथ्यममृताधि तस्थुरिह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत् ६
वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद् गभीरवेपा असुरः सुनीथः ।
क्वेदानीं सूर्यः कश्चिकेत कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान ७
अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् ।
हिरण्याक्षः सविता देव आगाद् दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ८ ४१९

+ ऋ० १,२२,५=वा० य० २२,१० । ×ऋ०१।३५।१=दे० [अग्निः] २४४८; ऋ०१।३५।८-१०=वा० य० ३४।२४-२७

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणि—रुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।
अपामीवां बाधते वेति सूर्यं—मभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ९
हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ् ।
अपसेधन् रक्षसो यातुधाना—नस्थाद् देवः प्रतिदोषं गृणानः १०
ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासो ऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे ।
तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ११

॥९९॥ (ऋ० २।३८।१-११)

(४२०-४३०) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता सवाय शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्थात् ।
नूनं देवेभ्यो वि हि धाति रत्न—मथाभजद् वीतिहोत्रं स्वस्तौ १ ४२०
विश्वस्य हि श्रुष्टये देव ऊर्ध्वः प्र बाहवा पृथुपाणिः सिसर्ति ।
आपश्चिदस्य व्रत आ निमृग्रा अयं चिद् वातो रमते परिज्मन् २
आशुभिश्चिद्यान् वि मुचाति नून—मरीरमदतमानं चिदेतोः ।
अह्यर्षूणां चिन्न्यया आविष्या—मनु व्रतं सवितुर्मोक्यागात् ३
पुनः समव्यद् वितंतं वयन्ती मध्या कर्तोर्न्यधाच्छक्म धीरः ।
उत् संहायास्थाद् व्यृतूँरदर्धर—रमतिः सविता देव आगात् ४
नानौकांसि दुर्यो विश्वमायु—र्वि तिष्ठते प्रभवः शोको अग्नेः ।
ज्येष्ठं माता सूनवे भागमाधा—दन्वस्य केतमिषितं सवित्रा ५
समावर्वर्ति विष्ठितो जिगीषु—र्विश्वेषां कामश्चरतामभूत् ।
शश्वाँ अपो विकृतं हित्व्यागा—दनु व्रतं सवितुर्दैव्यस्य ६ ४२५
त्वया हितमप्स्यमप्सु भागं धन्वान्वा मृगयसो वि तस्थुः ।
वनानि विभ्यो नकिरस्य तानि व्रता देवस्य सवितुर्मिनन्ति ७
याद्राध्यं वरुणो योनिमप्य—मनिशितं निमिषि जर्भुराणः ।
विश्वो मार्ताण्डो व्रजमा पशुर्गात् स्थशो जन्मानि सविता व्याकः ८
न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो व्रतमर्यमा न मिनन्ति रुद्रः ।
नारातयस्तमिदं स्वस्ति हुवे देवं सवितारं नमोभिः ९
भगं धियं वाजयन्तः पुरंधिं नराशंसो ग्नास्पतिर्नो अव्याः ।
आये वामस्य संगथे रयीणां प्रिया देवस्य सवितुः स्याम १० ४२९

अस्मभ्यं तद् दिवो अद्भ्यः पृथिव्या स्त्वया दत्तं काम्यं राध आ गात् ।
शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवात्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे ११ ४३०

॥१००॥ (ऋ० ३।६२।१०-११)×

(४३१-४३३) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् १०
देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरंध्या । भगस्य रातिमीमहे ११
देवं नरः सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवृक्तिभिः । नमस्यन्ति धियेषिताः १२

॥१०१॥ (ऋ० ४।५३।१-७)

(४३४-४४६) वामदेवो गौतमः । जगती ।

तद् देवस्य सवितुर्वार्यं महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः ।
छर्दिर्येन दाशुषे यच्छति त्मना तन्नो महाँ उदयान् देवो अक्तुभिः ४३५ १
दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिशङ्गं द्रापिं प्रति मुञ्चते कविः ।
विचक्षणः प्रथयन्नापृणन्नुर्वजींजनत् सविता सुम्नमुक्थ्यम् २
आप्रा रजाँसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मणे ।
प्र बाहू असृाक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत् ३
अदाभ्यो भुवनानि प्रचाकशद् व्रतानि देवः सविताभि रक्षते ।
प्रास्थाद् बाहू भुवनस्य प्रजाभ्यो धृतव्रतो महो अज्मस्य राजति ४
त्रिरन्तरिक्षं सविता महित्वना त्री रजाँसि परिभूस्त्रीणि रोचना ।
तिस्रो दिवः पृथिवीस्तिस्र इन्वति त्रिभिर्व्रतैरभि नो रक्षति त्मना ५
बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी ।
स नो देवः सविता शर्म यच्छत्वस्मे क्षयाय त्रिवरूथमंहसः ६
आगन् देव ऋतुभिर्वर्धतु क्षयं दधातु नः सविता सुप्रजामिषम् ।
स नः क्षपाभिरहभिश्च जिन्वतु प्रजावन्तं रयिमस्मे समिन्वतु ७ ४४०

॥१०२॥ (ऋ० ४।५४।१-६) जगती, ६ त्रिष्टुप् ।

अभूद् देवः सविता वन्द्यो नु न इदानीमह्न उपवाच्यो नृभिः ।
वि यो रत्ना भजति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा दधत् १
देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्यो ऽमृतत्वं सुवसि भागमुत्तमम् ।
आदिद् दामानं सवितर्व्यूर्णुषे ऽनूचीना जीविता मानुषेभ्यः २ ४४१

× ऋ० ३,६२,१०=वा० य० ३,३५; २२,९; ३०,२; ३६,३

अचित्ती यच्चकृमा दैव्ये जने दीनैर्दक्षैः प्रभूती पूरुषत्वता ।
देवेषु च सवितर्मानुषेषु च त्वं नो अत्र सुवतादनागसः ३
न प्रमिये सवितुर्दैव्यस्य तद् यथा विश्वं भुवनं धारयिष्यति ।
यत् पृथिव्या वरिमन्ना स्वङ्गुरि—र्वर्ष्मन् दिवः सुवति सत्यमस्य तत् ४
इन्द्रज्येष्ठान् बृहद्भ्यः पर्वतेभ्यः क्षयाँ एभ्यः सुवसि पस्त्यावतः ।
यथायथा पतयन्तो वियेमिर एवैव तस्थुः सवितः सवाय ते ५ ४४५
ये ते त्रिरह्नन्तसवितः सवासो दिवेदिवे सौभगमासुवन्ति ।
इन्द्रो द्यावापृथिवी सिन्धुरद्रि—रादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ६

॥१०३॥ (ऋ० ५।८१।१-५)×

(४४७-४६०) इयावाश्व आत्रेयः। जगती।

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः १
विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे ।
वि नाकमख्यत् सविता वरेण्यो ऽनु प्रयाणमुषसो वि राजति २
यस्य प्रयाणमन्वन्य इद् ययु—र्देवा देवस्य महिमानमोजसा ।
यः पार्थिवानि विममे स एतशो रजांसि देवः सविता महित्वना ३
उत यासि सवितस्त्रीणि रोचनोत सूर्यस्य रश्मिभिः समुच्यसि ।
उत रात्रीमुभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मभिः ४ ४५०
उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इदुत पूषा भवसि देव यामभिः ।
उतेदं विश्वं भुवनं वि राजसि इयावाश्वस्ते सवितः स्तोममानशे ५

॥१०४॥ (ऋ० ५।८२।१-९)+। गायत्री, १ अनुष्टुप्।

तत् सवितुर्वृणीमहे वयं देवस्य भोजनम्। श्रेष्ठं सर्वधातमं तुरं भगस्य धीमहि १
अस्य हि स्वयशस्तरं सवितुः कच्चन प्रियम् । न मिनन्ति स्वराज्यम् २
स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः । तं भागं चित्रमीमहे ३
अधा नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम् । परा दुःष्वप्न्यं सुव ४ ४५५
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव ५
अनागसो अदितये देवस्य सवितुः सवे । विश्वा वामानि धीमहि ६ ४५७

× ऋ० ५।८१।१-३ = वा० य० ५,१४; ११।४,६; ३७,२; १२,३। अथर्व० ७,७३,६ (उत्तरार्धः)।
+ ऋ० ५।८२।४-५=वा० य० ३०,३; सा० १४१।

आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे । सत्यसवं सवितारम् ७
य इमे उभे अहनी पुर एत्यप्रयुच्छन् । स्वाधीर्देवः सविता ८
य इमा विश्वा जाता—न्याश्रावयति श्लोकेन । प्र च सुवाति सविता ९ ४६०

॥१०५॥ (ऋ० ६।७१।१–६)

(४६१-४६६) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । जगती, ४-६ त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता हिरण्ययाँ बाहू अयंस्त सवनाय सुक्रतुः ।
घृतेन पाणी अभि प्रुष्णुते मखो युवा सुदक्षो रजसो विधर्मणि १
देवस्य वयं सवितुः सवीमनि श्रेष्ठे स्याम वसुनश्च दावने ।
यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो निवेशने प्रसवे चासि भूमनः २
अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वं शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम् ।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ३
उदु ष्य देवः सविता दमूना हिरण्यपाणिः प्रतिदोषमस्थात् ।
अयोहनुर्यजतो मन्द्रजिह्व आ दाशुषे सुवति भूरि वामम् ४
उदू अयाँ उपवक्तेव बाहू हिरण्यया सविता सुप्रतीका ।
दिवो रोहाँस्यरुहत् पृथिव्या अरीरमत् पतयत् कच्चिदभ्वम् ५ ४६५
वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः ।
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरे—रया धिया वामभाजः स्याम ६

॥१०६॥ (ऋ० ७।३८।१-६)

(४६७-४७६) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । ६ उत्तरार्धस्य भगो वा । त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता ययाम हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत् ।
नूनं भगो हव्यो मानुषेभि—र्वि यो रत्ना पुरूवसुर्दधाति १
उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्यस्य हिरण्यपाणे प्रभृतावृतस्य ।
व्युर्वीं पृथ्वीममतिं सृजान आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः २
अपि ष्टुतः सविता देवो अस्तु यमा चिद् विश्वे वसवो गृणन्ति ।
स नः स्तोमान् नमस्यश्चनो धाद् विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरीन् ३
अभि यं देव्यदितिर्गृणाति सवं देवस्य सवितुर्जुषाणा ।
अभि सम्राजो वरुणो गृण—न्त्यभि मित्रासो अर्यमा सजोषाः ४
अभि ये मिथो वनुषः सपन्ते रातिं दिवो रातिषाचः पृथिव्याः ।
अहिर्बुध्न्य उत नः शृणोतु वरूत्र्येकधेनुभिर्नि पातु ५ ४७१

अनु तन्नो जास्पतिर्मंसीष्ट रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।
भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमनुग्रो अध याति रत्नम् ६

॥१०७॥ (ऋ० ७।४५।१-४)

आ देवो यातु सविता सुरत्नोऽन्तरिक्षप्रा वहमानो अश्वैः ।
हस्ते दधानो नर्या पुरूणि निवेशयंश्च प्रसुवंश्च भूम १
उदस्य बाहू शिथिरा बृहन्ता हिरण्ययां दिवो अन्ताँ अनष्टाम् ।
नूनं सो अस्य महिमा पनिष्ट सूरश्चिदस्मा अनु दादपस्याम् २
स घा नो देवः सविता सहावा ऽऽ साविषद् वसुपतिर्वसूनि ।
विश्रयमाणो अमतिमुरूचीं मर्तभोजनमध रासते नः ३ ४७५
इमा गिरः सवितारं सुजिह्वं पूर्णगभस्तिमीळते सुपाणिम् ।
चित्रं वयो बृहदस्मे दधातु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ४

॥१०८॥ (ऋ० १०।१३९।१-३)

(४७७-४७९) देवगन्धर्वो विश्वावसुः । त्रिष्टुप् ।

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम् ।
तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्त्संपश्यन् विश्वा भुवनानि गोपाः १
नृचक्षा एष दिवो मध्य आस्त आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।
स विश्वाचीरभि चष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम् २
रायो बुध्नः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभि चष्टे शचीभिः ।
देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम् ३

॥१०९॥ (ऋ० १०।१४९।१-५)

(४८०-४८४) अर्चन् हैरण्यस्तूपः । त्रिष्टुप् ।

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णादस्कम्भने सविता द्यामदंहत् ।
अश्वमिवाधुक्षद्धुनिमन्तरिक्षमतूर्तं बद्धं सविता समुद्रम् १ ४८०
यत्रा समुद्रः स्कभितो व्यौनदपां नपात् सविता तस्य वेद ।
अतो भूरत आ उत्थितं रजोऽतो द्यावापृथिवी अप्रथेताम् २
पश्येदमन्यदभवद् यजत्रममर्त्यस्य भुवनस्य भूना ।
सुपर्णो अङ्ग सवितुर्गरुत्मान् पूर्वो जातः स उ अस्यानु धर्म ३ ४८१

गावं इव ग्रामं यूयुधिरिवाश्वान् वाश्रेव वत्सं सुमना दुहाना ।
पतिरिव जायामभि नो न्येतु धर्ता दिवः सविता विश्ववारः ४
हिरण्यस्तूपः सवितर्यथा त्वा ऽऽङ्गिरसो जुह्वे वाजे अस्मिन् ।
एवा त्वार्चन्नवसे वन्दमानः सोमस्येवांशुं प्रति जागराहम् ५

॥११०॥ (४८५-५१६) (वा० य० १।१०,३१)+

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् १० ४८५
सवितुस्त्वा प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ३१

॥१११॥ (वा० य० ४।४,२५)*

चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण
सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ४
अभि त्यं देवꣳसवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवꣳरत्नधामभि प्रियं मतिं कविम् ।
ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः २५

॥११२॥ (वा० य० ५।३९)

देव सवितरेष ते सोमस्तꣳ रक्षस्व मा त्वा दभन् ।
एतत् त्वं देव सोम देवो देवाँ२ उपागा इदमहं मनुष्यान्त्सह रायस्पोषेण स्वाहा३९

॥११३॥ (वा० य० ८।७)

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि ।
जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे ७

॥११४॥ (वा० य० ९।१;११।७; ३०,१)×

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा १ ४९१

+ वा० य० १।२१,२४; २।११; ५।२२,२६; ६।१,९,३०; ९।३०,३८; १०।६; ११।९,२८; १८।३७, २०।३; २२।१; ३७।१;३८।१। अथर्व० १९।५१।२

* अथर्व० ७।१४।१-२ । सा० ४६४ ।

× वा० य० ९,५; १८,३०=तै० [अदितिः०] १६ ।

॥११५॥ (वा० य० १०,५;२८)×

सवित्रे स्वाहा ॥५॥ सवितासि सत्यप्रसवः २८

॥११६॥ (वा० य० ११।१-३,८,११,६३)

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः ।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्यं पृथिव्या अध्याभरत् १
युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे । स्वर्ग्याय शक्त्या २ ४९५
युक्त्वाय सविता देवान्त्स्वर्यतो धिया दिवम् ।
बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान् ३
इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्यꣳ सखिविदꣳ सत्राजितं धनजितꣳ स्वर्जितम् ।
ऋचा स्तोमꣳ समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद्वायत्रवर्त्तनि स्वाहा ८
हस्तं आधाय सविता बिभ्रदभ्रिꣳ हिरण्ययीम् ।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्यं पृथिव्या अध्याभरत् ११
देवस्त्वा सवितोद्वपतु सुपाणिः स्वङ्गुरिः सुबाहुरुत शक्त्या ।
अव्यथमाना पृथिव्यामाशा दिश आपृण ६३

॥११७॥ (वा० य० १७।७४)

ताꣳ सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम् ।
यामस्य कण्वो अदुहत् प्रपीनाꣳ सहस्रधारां पयसा महीं गाम् ७४ ५००

॥११८॥ (वा० य० १९।४३)

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । मां पुनीहि विश्वतः ४३

॥११९॥ (वा० य० २०।७०)*

य इन्द्रं इन्द्रियं दधुः सविता वरुणो भगः। स सुत्रामा हविष्पतिर्यजमानाय सश्चत७०

॥१२०॥ (वा० य० २१।२१)

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।
कुकुप् छन्द इहेन्द्रियं वशा वेहद्रयौ दधुः २१

॥१२१॥ (वा० य० २२।११-१४)

देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे । सुमतिꣳ सत्यराधसम् ११
सुष्टुतिꣳ सुमतीवृधो रातिꣳ सवितुरीमहे । प्र देवाय मतीविदे १२ ५०५

× वा० य० १०,५=२२,६; * वा० य० २०।७१-७१=दै० [इन्द्रः] २९५५-५६ ।

रातिꣳ सत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये । आसवं देववीतये १३
देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदेव्यम्। धिया भगं मनामहे १४

॥१२२॥ (वा० य० ३०।४)

विभक्तारꣳ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः । सवितारं नृचक्षसम् ४

॥१२३॥ (वा० य० ३५।२-३,५)

सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्याँल्लोकमिच्छतु । तस्मै युज्यन्तामुस्रियाः २
सविता पुनातु ३ ५१०

सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ आ वपतु । तस्मै पृथिवि शं भव ५

॥१२४॥ (वा० य० ३७।११-१२,१४-१५)

देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु । ११
सुषदा पश्चाद् देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाः १२
गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम् ।
सं देवो देवेन सवित्रा गत सꣳ सूर्येण रोचते १४
समग्निरग्निना गत सं दैव्येन सवित्रा सꣳ सूर्येणारोचिष्ट ।
स्वाहा समग्निस्तपसा गत सं दैव्येन सवित्रा सꣳ सूर्येणारूरुचत १५ ५१५

॥१२५॥ (३८।८)

सवित्रे त्वा ऋभुमते विभुमते वाजवते स्वाहा ८

॥१२६॥ (अथर्व० १।१८।३)*

(५१७) द्रविणोदाः । विराडास्तारपङ्क्तिस्त्रिष्टुप् ।

यत् ते आत्मनि तन्वां घोरमस्ति यद् वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा ।
सर्वं तद् वाचापहन्मो वयं देवस्त्वा सविता सूदयतु ३

॥१२७॥ (अथर्व० ५।२४।१)

(५१८-५२४) अथर्वा । चतुष्पदाऽतिशक्करी ।

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्यामस्यामाकू-
त्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा १ ५१८

---

* दे० [आयुर्वेद०] ६७५ ।

॥१२८॥ (अथर्व० ६।१।१-३)

उष्णिक्, १ त्रिपदा पिपीलिकमध्या साम्नी जगती, २-३ पिपीलिकमध्या पुर उष्णिक् ।

दोषो गाय बृहद् गाय द्युमद् धेहि । आथर्वण स्तुहि देवं सवितारम् १
तक्षुं स्तुहि यो अन्तः सिन्धौ सनुः । सत्यस्य युवानमद्रोघवाचं सुशेवम् २ ५२०
स घा नो देवः सविता साविषदमृतानि भूरिं । उभे सुष्टुती सुगातवे ३

॥१२९॥ (अथर्व० ७।१४।३-४)*

३ त्रिष्टुप्, ४ जगती ।

सावीर्हि देव प्रथमाय पित्रे वर्ष्माणमस्मै वरिमाणमस्मै ।
अथास्मभ्यं सवितर्वार्याणि दिवोदिव आ सुवा भूरिं पश्वः ३
दमूना देवः सविता वरेण्यो दधद् रत्नं दक्षं पितृभ्य आयूंषि ।
पिबात् सोमं मदंदेनमिष्टे परिज्मा चित् क्रमते अस्य धर्मणि ४

॥१३०॥ (अथर्व० १९।१६।१) अनुष्टुप् ।

असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् ।
सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १

॥१३१॥ (अथर्व० ५।२५।१२)

(५२५-५२६) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्यां गवीन्योः ।
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे १२ ५२५

॥१३२॥ (अथर्व० ५।२६।२) द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

युनक्तु देवः सविता प्रजानन्नस्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा २

॥१३३॥ (अथर्व० ७।१६।१)

(५२७) भृगुः । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पते सवितर्वर्धयैनं ज्योतयैनं महते सौभगाय ।
संशितं चित् संतरं सं शिशाधि विश्व एनमनु मदन्तु देवाः १

॥१३४॥ (अथर्व० १०।५।१४)

(५२८) सिन्धुद्वीपः । पथ्यापङ्क्तिः ।

देवस्य सवितुर्भाग स्थ । अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये १४ ५२८

---

* अथर्व० ७।१४।१-२ । =दै० [अदिति०] ४८८।
दै० [अदितिः०]६

सवितृ-सहचारी देवगणः ।

(१) सवित्राद्याः ।

॥१३५॥ (५२९–५३०) (वा० य० १०।३०)

सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा
पशुभिरिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाग्निना
तेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्रसर्पामि ३०

(२) सवित्रादयः ।

॥१३६॥ (वा० य० ३९।६)

सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीये आदित्यश्चतुर्थे
चन्द्रमाः पञ्चम ऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे ।
मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे ६ ५३०

(३) इन्द्रः, भगः, सविता ।

॥१३७॥ (अथर्व० १।२६।२)

(५३१) ब्रह्मा । त्रिपदा एकावसाना साम्नी त्रिष्टुप् ।

सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्रराधाः २

(४) सविता, आदित्याः, रुद्राः, वसवः ।

॥१३८॥ (अथर्व० ६।६८।१)

(५३२) अथर्वा । पुरो विराडतिशाक्वरगर्भा चतुष्पदा जगती ।

आयमगन्त्सविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदकेनेहि ।
आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसः सोमस्य राज्ञो वपत प्रचेतसः १

(५) बृहस्पतिः सविता मित्रोऽर्यमा भगोऽश्विनौ ।

॥१३९॥ (अथर्व० ६।१०३।१)

(५३३) उच्छोचनः । अनुष्टुप् ।

संदानं वो बृहस्पतिः संदानं सविता करत् ।
संदानं मित्रो अर्यमा संदानं भगो अश्विना १ ५३३

(५) सूर्यः ।

॥१४०॥ (ऋ० १।५०।१-१३)*

(५३४-४६) प्रस्कण्वः काण्वः । गायत्री, १०-१३ अनुष्टुप् ।

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् १
अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः । सूराय विश्वचक्षसे २ ५३५
अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा ३
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि रोचनम् ४
प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान् । प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे ५
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु । त्वं वरुण पश्यसि ६
वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः । पश्यञ्जन्मानि सूर्य ७ ५४०
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं विचक्षण ८
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः । ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ९
उद् वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् १०
उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् । हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ११
शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि १२ ५४५
उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह । द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम् १३

॥१४१॥ (ऋ० १।११५।१-६)+

(५४७-५२) कुत्स आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च १
सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात् ।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम् २
भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः ।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यान्ति सद्यः ३ ५४९

---

* ऋ०१।५०।१-१०,१२-१३ = वा० य० ७,४१; ८,४०-४१;२०,२१; २७,१०; ३३,३१-३२,३६; ३५,१४; ३८,२४ सा० ३१,६३३-६४०। अथर्व० १,२२,४; १३,२,१६-२४; १७,१,२४;२०,४७,१३-२१। ऋ० १।५०।११—१३= दै० [आयुर्वेद०] ५४५-४७ ।

+ ऋ० १।११५।१-२,४-६ = वा० य० ७,४२; १३,४६; ३३,३७-३८,४१। अथर्व० १३,२,३५; २०,१०७,१४-१५; १२३,१-२ । सा० ६२९ ।

तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्वितंतं सं जभार ।
यदेदयुक्त हरितः सधस्था—दाद् रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ४ ५५०
तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणते द्योरुपस्थे ।
अनन्तमन्यद् रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ५
अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरंहसः पिपृता निरवद्यात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ६

॥१४२॥ (ऋ० १।१६४।४६-४७)×

(५५३-५४) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहु—रथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान् ।
एकं सद् विप्रा बहुधा वद—न्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ४६
कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति ।
त आववृत्रन्त्सदनादृतस्या—दिद् घृतेन पृथिवी व्युद्यते ४७

॥१४३॥ (ऋ० ४।४०।५)+

(५५५) वामदेवो गौतमः । जगती ।

हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षस—द्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।
नृषद् वरसदृतसद् व्योमस—दब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम् ५ ५५५

॥१४४॥ (ऋ० ५।४०।५)

(५५६) अत्रिर्भौमः । अनुष्टुप् ।

यत् त्वा सूर्य स्वर्भानु—स्तमसाविध्यदासुरः । अक्षेत्रविद् यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः ५

॥१४५॥ (ऋ० ७।६०।१)

(५५७-५६७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

यदद्य सूर्य ब्रवोऽनागा उद्यन् मित्राय वरुणाय सत्यम् ।
वयं देवत्रादिते स्याम तव प्रियासो अर्यमन् गृणन्तः १

॥१४६॥ (ऋ० ७।६२।१-३)

उत् सूर्यो बृहदर्चींष्यश्रेत् पुरु विश्वा जनिम मानुषाणाम् ।
समो दिवा ददृशे रोचमानः क्रत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् १
स सूर्य प्रति पुरो न उद् गा एभिः स्तोमेभिरेतशेभिरर्वैः ।
प्र नो मित्राय वरुणाय वोचो—ऽनागसो अर्यम्णे अग्नये च २ ५५९

× ऋ० [आयुर्वेद०] ७७४-७८९ (अप्तृणसूर्याः) । + वा० य० १०,२४;११,१४

वि नः सहस्रं शुरुधो रद—न्त्वृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्क—मा नः कामं पूपुरन्तु स्तवानाः ३ ५६०

॥१४७॥ (ऋ० ७।६३।१-४)

उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः साधारणः सूर्यो मानुषाणाम् ।
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य देव—श्चर्मेव यः समविव्यक् तमांसि १
उद्वेति प्रसवीता जनानां महान् केतुरर्णवः सूर्यस्य ।
समानं चक्रं पर्यावृत्सन् यदेतशो वहति धूर्षु युक्तः २
विभ्राजमान उषसामुपस्थाद् रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः ।
एष मे देवः सविता चच्छन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम ३
दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति दूरेअर्थस्तरणिर्भ्राजमानः ।
नूनं जनाः सूर्येण प्रसूता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि ४

॥१४८॥ (ऋ० ७।६६।१४-१६)+

प्रगाथः=(समा बृहती+विषमा सतोबृहती) १६ पुर उष्णिक् ।

उदु त्यद् दर्शतं वपु—र्दिव एति प्रतिह्वरे ।
यदीमाशुर्वहति देव एतशो विश्वस्मै चक्षसे अरम् १४ ५६५
शीर्ष्णःशीर्ष्णो जगतस्तस्थुषस्पतिं समया विश्वमा रजः ।
सप्त स्वसारःसुविताय सूर्यं वहन्ति हरितो रथे १५
तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् १६

॥१४९॥ (ऋ० ८।१०१।११-१२)×

(५६८-६९) जमदग्निर्भार्गवः । प्रगाथः=(विषमा बृहती+समा सतोबृहती)

बण्महाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि ।
महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्धा देव महाँ असि ११
बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि ।
महा देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् १२ ५६९

+ ऋ० ७।६६।१६=वा० य० ३६,२४ ।

× वा० य० ३३,३९-४० । अथर्व० १३,२,२९; २०,५८,३-४ । सा० २७६,१७८८-८९ ।

॥१५०॥ (ऋ० १०।३७।१-१२)*

(५७०-८१) सौर्योऽभितपाः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतं सपर्यत ।
दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत १ ५७०
सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च ।
विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहाऽऽपो विश्वाहोदेति सूर्यः २
न ते अदेवः प्रदिवो नि वासते यदेतशेभिः पतरै रथर्यसि ।
प्राचीनमन्यदनु वर्तते रज उदन्येन ज्योतिषा यासि सूर्य ३
येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वमुदियर्षि भानुना ।
तेनास्मद् विश्वामनिरामनाहुति—मपामीवामप दुष्ष्वप्न्यं सुव ४
विश्वस्य हि प्रेषितो रक्षसि व्रत—महेळयन्नुच्चरसि स्वधा अनु ।
यदुद्य त्वा सूर्योपब्रवामहै तं नो देवा अनु मंसीरत क्रतुम् ५

तं नो द्यावापृथिवी तन्न आप इन्द्रः शृण्वन्तु मरुतो हवं वचः ।
मा शूने भूम सूर्यस्य संदृशि भद्रं जीवन्तो जरणामशीमहि ६ ५७५
विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचक्षसः प्रजावन्तो अनमीवा अनागसः ।
उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवेदिवे ज्योग् जीवाः प्रति पश्येम सूर्य ७
महि ज्योतिर्बिभ्रतं त्वा विचक्षण भास्वन्तं चक्षुषेचक्षुषे मयः ।
आरोहन्तं बृहतः पाजसस्परि वयं जीवाः प्रति पश्येम सूर्य ८
यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना प्र चेरते नि च विशन्ते अक्तुभिः ।
अनागास्त्वेन हरिकेश सूर्या—ऽहाहा नो वस्यसावस्यसोदिहि ९
शं नो भव चक्षसा शं नो अह्ना शं भानुना शं हिमा शं घृणेन ।
यथा शमध्वञ्छमसद् दुरोणे तत् सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम् १०

अस्माकं देवा उभयाय जन्मने शर्म यच्छत द्विपदे चतुष्पदे ।
अदत् पिबदूर्जयमानमाशितं तदस्मे शं योररपो दधातन ११
यद् वो देवाश्चकृम जिह्वया गुरु मनसो वा प्रयुती देवहेळनम् ।
अरावा यो नो अभि दुच्छुनायते तस्मिन् तदेनो वसवो नि धेतन १२ ५८१

---

* ऋ० १०,३७,१=वा० य० ४,३५।

॥१५१॥ (ऋ० १०।१५८।१—५)

(५८१-८६) चक्षुः सौर्यः । गायत्री, १ स्वराट् ।

सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात् । अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः १
जोषा सवितर्यस्य ते हरः शतं सवाँ अहेति । पाहि नो दिद्युतः पतन्त्याः २
चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः । चक्षुर्धाता दधातु नः ३
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः । सं चेदं वि च पश्येम ४ ५८५
सुसंदृशं त्वा वयं प्रति पश्येम सूर्य । वि पश्येम नृचक्षसः ५

॥१५२॥ (ऋ० १०।१७०।१-४)*

(५८७-९०) विभ्राट् सौर्यः । जगती, ४ आस्तारपङ्क्तिः ।

विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविंहुतम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति १
विभ्राड् बृहत् सुभृतं वाजसातमं धर्मन् दिवो धरुणे सत्यमर्पितम् ।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहन्तमं ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा २
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद् धनजिदुच्यते बृहत् ।
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् ३
विभ्राजञ्ज्योतिषा स्व१—रगच्छो रोचनं दिवः ।
येनेमा विश्वा भुवनान्याभृता विश्वकर्मणा विश्वदेव्यावता ४ ५९०

॥१५३॥ (५९१-६०९) (वा० य० १।११)

भूताय त्वा नारातये स्वरभिविख्येषं दृꣳहन्तां दुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि ।
पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्या उपस्थेऽग्ने हव्यꣳ रक्ष ११

॥१५४॥ (वा० य० २।२६)×

स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदा असि वर्चो मे देहि । सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते २६

॥१५५॥ (वा० य० ३।५,९-१०)

भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ५ ५९३

---

* ऋ० १०,१७०,१-३=वा० य० ३३,३०; सा० ६२८,१४५३-१४५५
× वा० य० २।२६ (उत्तरार्धः)=अथर्व १०,५,३७(२); वा० य० २।२७

सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ९
सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा १० ५९५

॥१५६॥ (वा० य० ५।३३)

अध्वनामध्वपते प्र मा तिर स्वस्ति मेऽस्मिन् पथि देवयाने भूयात् ३३

॥१५७॥ (वा० य० ८।४०)*

अदश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ२ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा ।
उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैषते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय ।
सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम् ४०

॥१५८॥ (वा० य० १५।५८)×

परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्ठे ज्योतिष्मतीम् ।
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ ।
सूर्यस्तेऽधिपतिस्तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ५८

॥१५९॥ (वा० य० २०।१६,२१)+

यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाँस्यसि चकृमा वयम् ।
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः १६
उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् २१ ६००

॥१६०॥ (वा० य० ३३।३३-३५,४१)⊠

दैव्यावध्वर्यू आ गतꣳ रथेन सूर्यत्वचा । मध्वा यज्ञꣳ समञ्जाथे ३३
आ न इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ३४
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ३५
आयन्त इव सूर्य विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम ४१ ६०४

---

* वा० य० ८।४१ । × वा० य० १९।४३=दै० [अदितिः०] ५०१ मन्त्रः द्रष्टव्यः ।
+ वा० य०२०।१६=अथर्ववेदे (६।११५।१--२) पाठभेद रूपेण, तथा च वा० य० २०।२१; २७,१०; ३५,१४; ३८,१४ =ऋ० १।५०।१०; अथर्व० ७।५३।७ पाठभेदेन च दृश्यते ।
⊠ वा० य० ३३।३५,४१=दै० [इन्द्रः] २४३३,२३७८ ।

॥१६१॥ (वा० य० ३६।९,२४)×

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा ।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः ९ ६०५
तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् २४

॥१६२॥ (वा० य० ३७।१६-१८)

धर्ता दिवो वि भाति तपसस्पृथिव्यां धर्ता दिवो देवानाममर्त्यस्तपोजाः ।
वाचमस्मे नि यच्छ देवायुवम् १६
अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् ।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः १७
विश्वासां भुवां पते विश्वस्य मनसस्पते विश्वस्य वचसस्पते सर्वस्य वचसस्पते ।
देवश्रुत्त्वं देव घर्म देवो देवान् पाह्यत्र प्रावीरनु वां देववीतये ।
मधु माध्वीभ्यां मधु माधूचीभ्याम् १८

॥१६३॥ (अथर्व० १।३।५)

(६१०-६२२) अथर्वा । पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्मा शरस्य पितरं सूर्यं शतवृष्ण्यम् ।
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बर्हिष्टे अस्तु बालितिं ५ ६१०

॥१६४॥ (अथर्व० २।२१।१-५)

[एकावसानम्] १-४ निचृद्विषमा गायत्री, ५ भुरिग्विषमा ।

सूर्य यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः १
सूर्य यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २
सूर्य यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ३
सूर्य यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ४
सूर्य यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ५ ६१५

× दे० [आयुर्वेद०] ११९-१२६ ।
दे० [अदितिः०] ७

॥१६५॥ (अथर्व० ५।२४।९) चतुष्पदाऽतिशक्करी।

सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ९

॥१६६॥ (अथर्व० ७।१३।१-२) अनुष्टुप्।

यथा सूर्यो नक्षत्राणामुद्यंस्तेजोऽस्यादद एवा स्त्रीणां च पुंसां च द्विषतां वर्च आ ददे १
यावन्तो मा सपत्नानामायन्तँ प्रतिपश्यथ ।
उद्यन्त्सूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आ ददे २

॥१६७॥ (अथर्व० १९।१७।५) अतिजगती।

सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ५

॥१६८॥ (अथर्व० १९।१८।५) सम्राडार्ष्यनुष्टुप्।

सूर्य ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु । ये मायवं प्रतीच्या दिशोऽभिदासात् ५ ६१०

॥१६९॥ (अथर्व० १९।१९।३) भुरिग्बृहती।

सूर्यो दिवोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ३

॥१७०॥ (अथर्व० १९।२३।२४) दैवी पङ्क्तिः।

सूर्याभ्यां स्वाहा २४

॥१७१॥ (अथर्व० २।३६।५)
(६२३) पतिवेदनः। अनुष्टुप्।

भगस्य नावमा रोह पूर्णामनुपदस्वतीम् । तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः ५

॥१७२॥ (अथर्व० ४।४०।७)
(६२४) शुक्रः। त्रिष्टुप्।

य उपरिष्टाज्जुहोति जातवेद ऊर्ध्वायां दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
सूर्यमुखा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि ७

॥१७३॥ (अथर्व० ६।५२।१)
(६२५) भागलिः। अनुष्टुप्।

उत्सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्वन् ।
आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा १ ६१५

॥१७४॥ (अथर्व० १६।९।३-४)

(६२६-२७) यमः । ३ साम्नी पङ्क्तिः, ४ परोष्णिक् ।

अगन्म स्वः स्वरगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म ३
वश्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसुं वंशिषीय वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि ४

॥१७५॥ (साम० ४५८)

(६२८) गौराङ्गिरसः । अतिजगती (अष्टिर्वा) ।

अयं सहस्रमानवो दृशः कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्म ।
ब्रह्मः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः । सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश्चिता गोः २

॥१७६॥ (साम० १७९०-९२)× सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

सूर्य-सहचारी देवगणः ।

(१) सूर्यः पर्जन्याग्नयो वा, सरस्वान् सूर्यो वा ।

॥१७७॥ (ऋ० १।१६४।५१-५२)

(६२९-३०) दीर्घतमा औचथ्यः । ५१ अनुष्टुप्, ५२ त्रिष्टुप् ।

समानमेतदुदकमुच्चैत्यव चाहभिः ।
भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यग्नयः ५१
दिव्यं सुपर्णं वायसं बृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम् ।
अभीपतो वृष्टिभिस्तर्पयन्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि ५२ ६३०

(२) सूर्यमित्रावरुणाः ।

॥१७८॥ (ऋ० ७,६३।५)

(६३१) मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

यत्रा चक्रुरमृता गातुमस्मै श्येनो न दीयन्नन्वेति पाथः ।
प्रति वां सूर उदिते विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः ५

(३) सूर्याविवाहः ।

॥१७९॥ (ऋ० १०।८५।६-१६)

(६३२-५८) सावित्री सूर्या ऋषिका । अनुष्टुप्, १४ त्रिष्टुप् ।

रैभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योचनी ।
सूर्याया भद्रमिद् वासो गाथयैति परिष्कृतम् ६ ६३२

×१०[इन्द्रः] २४६०-२४६२ ।

चित्तिरा उपबर्हणं चक्षुरा अभ्यञ्जनम् ।
द्यौर्भूमिः कोश आसीद् यदयात् सूर्या पतिम् ७
स्तोमा आसन् प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः ।
सूर्याया अश्विना वरा ऽग्निरासीत् पुरोगवः ८
सोमो वधूयुरभव—दश्विनास्तामुभा वरा ।
सूर्या यत् पत्ये शंसन्तीं मनसा सवितादंदात् ९ ६३५
मनो अस्या अनं आसीद् द्यौरासीदुत च्छदिः ।
शुक्रावनड्वाहावास्तां यदयात् सूर्या गृहम् १०
ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते सामनावितः ।
श्रोत्रे ते चक्रे आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः ११
शुची ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः ।
अनो मनसयं सूर्या ऽऽरोहत् प्रयती पतिम् १२
सूर्यायां वहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत् ।
अघासु हन्यन्ते गावो ऽर्जुन्योः पर्युह्यते १३
यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः ।
विश्वे देवा अनु तद् वामजानन् पुत्रः पितरावृणीत पूषा १४ ६४०
यदयातं शुभस्पती वरेयं सूर्यामुप । कैकं चक्रं वामासीत् क्व देष्ट्राय तस्थथुः १५
द्वे ते चक्रे सूर्ये ब्रह्माण ऋतुथा विदुः ।
अथैकं चक्रं यद् गुहा तदद्धातय इद् विदुः १६

(४) सूर्या—सावित्री ।

॥१८०॥ (ऋ० १०।८५।३२-४७)

अनुष्टुप्, ३४ उरोबृहती, ३६--३७,४४ त्रिष्टुप्, ४३ जगती ।

मा विदन् परिपन्थिनो य आसीदन्ति दंपती ।
सुगेभिर्दुर्गमतीता—मप द्रान्त्वरातयः ३२
सुमङ्गलीरियं वधू—रिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्त्वाया—ऽथास्तं वि परेतन ३३
तृष्टमेतत् कटुकमेत—दपाष्ठवद् विषवन्नैतदत्तवे ।
सूर्या यो ब्रह्मा विद्यात् स इद् वाधूयमर्हति ३४ ६४५

आशसनं विशसन—मथो अधिविकर्तनम् ।
सूर्यायाः पश्य रूपाणि तानि ब्रह्मा तु शुन्धति ३५
गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।
भगो अर्यमा सविता पुरंधि—र्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ३६
तां पूषञ्छिवतमामेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्या३ वपन्ति ।
या नः ऊरू उशती विश्रयाते यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपम् ३७
तुभ्यमग्रे पर्यवह—न्त्सूर्यां वहतुना सह ।
पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह ३८
पुनः पत्नीमग्निरदा—दायुषा सह वर्चसा ।
दीर्घायुरस्या यः पति—र्जीवाति शरदः शतम् ३९ ६५०

सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः ।
तृतीयो अग्निष्टे पति—स्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ४०
सोमो ददद् गन्धर्वाय गन्धर्वो दददग्नये ।
रयिं च पुत्राँश्चादा—दग्निर्मह्यमथो इमाम् ४१
इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभि—र्मोदमानौ स्वे गृहे ४२
आ नः प्रजां जनयतु प्रजापति—राजरसाय समनक्त्वर्यमा ।
अदुर्मङ्गलीः पतिलोकमा विश शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ४३
अघोरक्षुरपतिघ्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।
वीरसूर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ४४ ६५५

इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु ।
दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि । ४५
सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्वां भव ।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु ४६
समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ ४७ ६५८

(५) सूर्य-वैश्वानरोऽग्निः ।

॥१८२॥ (ऋ० १०।८८।१—१९)

(६५९-७७) आङ्गिरसो मूर्धन्वान्, वामदेव्यो वा । त्रिष्टुप् ।

हविष्पान्तमजरं स्वर्विदं दिविस्पृशमाहुतं जुष्टमग्नौ ।
तस्य भर्मणे भुवनाय देवा धर्मणे कं स्वधया पप्रथन्त १
गीर्णं भुवनं तमसापगूळ्ह—माविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।
तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापोऽरण्यन्नोषधीः सख्ये अस्य २ ६६०
देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभि—रग्निं स्तोषाण्यजरं बृहन्तम् ।
यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमा—मातताने रोदसी अन्तरिक्षम् ३
यो होताऽऽसीत् प्रथमो देवजुष्टो यं समाञ्जन्नाज्येना वृणानाः ।
स पंतत्रीत्वरं स्था जगद्य—च्छ्वात्रमग्निरकृणोज्जातवेदाः ४
यज्जातवेदो भुवनस्य मूर्ध—न्तिष्ठो अग्ने सह रोचनेन ।
तं त्वाहेम मतिभिर्गीभिरुक्थैः स याज्ञियो अभवो रोदसिप्राः ५

मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्नि—स्ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन् ।
मायामु तु यज्ञियानामेता—मपो यत् तूर्णिश्चरति प्रजानन् ६
दृशेन्यो यो महिना समिद्धो ऽरोचत दिवियोनिर्विभावा ।
तस्मिन्नग्नौ सूक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुहवुस्तनूपाः ७ ६६५
सूक्तवाकं प्रथममादिदग्नि—मादिद्धविरजनयन्त देवाः ।
स एषां यज्ञो अभवत् तनूपा—स्तं द्यौर्वेद तं पृथिवी तमापः ८
यं देवासोऽजनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा ।
सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमा—मृजूयमानो अतपन्महित्वा ९
स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्नि—मजीजनन्छक्तिभी रोदसिप्राम् ।
तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः १०

यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम् ।
यदा चरिष्णू मिथुनावभूता—मादित् प्रापश्यन् भुवनानि विश्वा ११
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन् ।
आ यस्तताने रोदसी विभाती—रपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन् १२ ६७०

वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो ऽग्निं देवा अजनयन्नजुर्यम् ।
नक्षत्रं प्रत्नममिनच्चरिष्णु यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम् १३
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः ।
यो मंहिष्ठा परिभूरुर्वी उतावस्तादुत देवः परस्तात् १४
द्वे स्रुती अशृणवं पितॄणा—महं देवानामुत मर्त्यानाम् ।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत् समेति यदन्तरा पितरं मातरं च १५
द्वे समीची बिभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम् ।
स प्रत्यङ् विश्वा भुवनानि तस्था—वप्रयुच्छन् तरणिर्भ्राजमानः १६
यत्रा वदेते अवरः परश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद ।
आ शेकुरित् संधमादं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत् १७ ६७५
कत्यग्नयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्यु स्विदापः ।
नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विद्मने कम् १८
यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपर्ण्येइ वसते मातरिश्वः ।
तावद् दधात्युप यज्ञमायन् ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन् १९

(६) सूर्यो, हरिमा हृद्रोगश्च ।

॥१८२॥ [दै० (आयुर्वेद०) ४८९-९२ मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

(७) सूर्यः प्रजापतिः ।

॥१८३॥ [दै० (आयुर्वेद०) १३३२-३३ मन्त्रौ द्रष्टव्यौ ।]

(८) सूर्याचन्द्रमसौ ।

॥१८४॥ (अथर्व० ६।८३।१)+
(६७८) भगः । अनुष्टुप् ।

अपचितः प्र पतत सुपर्णो वसतेरिव ।
सूर्यः कृणोतु भेषजं चन्द्रमा वोऽपोच्छतु १

॥१८५॥ (अथर्व० ७।८१।१-६)*
(६७९-८४) अथर्वा । त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप्, ४ आस्तारपङ्क्तिः, ५ स्वराडास्तारपङ्क्तिः ।
पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम् ।
विश्वान्यो भुवना विचष्ट ऋतूँरन्यो विदधज्जायसे नवः १ ६७९

+दै० [आयुर्वेद०] ५१३ । * ऋ० १०।८५।१८-१९; अथर्व० १३।१।११; १४।१।१३-१४।

नवोनवो भवसि जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेष्यग्रम् ।
भागं देवेभ्यो वि दधास्यायन् प्र चन्द्रमस्तिरसे दीर्घमायुः २ ६८०
सोमस्यांशो युधां पतेऽनूनो नाम वा असि ।
अनूनं दर्श मा कृधि प्रजया च धनेन च ३
दर्शोऽसि दर्शतोऽसि समग्रोऽसि समन्तः ।
समग्रः समन्तो भूयासं गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन ४
शोऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तस्य त्वं प्राणेना प्यायस्व ।
आ वयं प्यायिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन ५
यं देवा अंशुमाप्याययन्ति यमक्षितमक्षिता भक्षयन्ति ।
तेनास्मानिन्द्रो वरुणो बृहस्पतिरा प्याययन्तु भुवनस्य गोपाः ६

(९) सूर्यः आपश्च ।

॥१८६॥ (अथर्व० ७।१०७।१)
(६८५) भृगुः । अनुष्टुप् ।

अव दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मयः ।
आपः समुद्रिया धारास्तास्ते शल्यमसिस्रसन् १ ६८५

(१०) सूर्यः गौः ।

॥१८७॥ (अथर्व० २०।४८।१-६)
(६८६-९१) खिलम्, ४-६ सर्पराज्ञी । गायत्री ।

अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरण्यवः । अभि वत्सं न धेनवः १
ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चन्तीर्वर्चसा प्रियः । जातं जात्रीर्यथा हृदा २
वज्रापवसाध्यः कीर्तिर्भ्रियमाणमावहन् । मह्यमायुर्घृतं पयः ३
आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ४
अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः । व्यख्यन्महिषः स्वः ५
त्रिंशद्धामा वि राजति वाक् पतङ्गो अशिश्रियत् । प्रति वस्तोरहर्द्युभिः ६ ६९१

(६) त्वष्टा, धाता, पूषा, भगः, अर्यमा ।

[१] त्वष्टा ।*

॥१८८॥ (ऋ० १०।१८।६)

(६९२) संकुसुको यामायनः । त्रिष्टुप् ।

आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यति ष्ठ ।
इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः ६

॥१८९॥ [६९३-९७] (वा० य० २।२४)×

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सꣳ शिवेन ।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् २४

॥१९०॥ (वा० य० ६।७)

उपावीरस्युप देवान् दैवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान् ।
देव त्वष्टर्वसु रम हव्या ते स्वदन्ताम् ७

॥१९१॥ (वा० य० ८।१७)+

धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर्निधिपा देवोऽअग्निः ।
त्वष्टा विष्णुः प्रजया सꣳरराणा यजमानाय द्रविणं दधात स्वाहा १७ ६९५

॥१९२॥ (वा० य० २०।४४)

त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय वृष्णेऽपाकोऽचिष्टुर्यशसे पुरूणि ।
वृषा यजन् वृषणं भूरिरेता मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान् ४४

॥१९३॥ (वा० य० २९।९)

त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरर्वा जायत आशुरश्वः ।
त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्तारमिह यक्षि होतः ९

॥१९४॥ (अथर्व० ३।३१।५)

(६९८-९९) ब्रह्मा । विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्तीतीदं विश्वं भुवनं वि याति ।
व्यं१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ५ ६९८

---

*दै० [अग्निः (आप्री सूक्तानि)] १९१५,१९२७,१९३९,१९५०,१९६१,१९७१.१९८९,२०००,२०११,२०२२, २०३४,२०४५,२०५७,२०६९,२०८१,२०९२,२१०३,२११४,२१२६,२१३८ ।

× वा० य० ८।१४,१६; अथर्व० ६।५३।३ (पाठभेदेन)। +अथर्व० ७।१७।४ ।

दै० [अदितिः०] ८

(अथर्व० ५।२६।८) द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा ८

॥१९५॥ (अथर्व० ६।५३।३)

(७००) बृहच्छुक्रः । त्रिष्टुप् ।

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन ।
त्वष्टा नो अत्र वरीयः कृणोत्वनु नो मार्ष्टु तन्वो३ यद् विरिष्टम् ३ ७००

॥१९६॥ (अथर्व० ६।७८।३)

(७०१-२) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

त्वष्टा जायामजनयत् त्वष्टास्यै त्वां पतिम् ।
त्वष्टा सहस्रमायूंषि दीर्घमायुः कृणोतु वाम् ३

॥१९७॥ (अथर्व० ६।८१।३)

यं परिहस्तमबिभरदितिः पुत्रकाम्या ।
त्वष्टा तमस्या आ बभ्राद् यथा पुत्रं जनादितिं ३

त्वष्टृ-सहचारी देवगणः ।

(१) त्वष्टा शुक्रश्च ।

॥१९८॥ (ऋ० २।३६।३)

(७०३) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

अमेव नः सुहवा आ हि गन्तन नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन ।
अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धस—स्त्वष्टर्देवेभिर्जनिभिः सुमद्गणः ३

(२) त्वष्टा, पर्जन्यः, ब्रह्मणस्पतिः, अदितिः ।

॥१९९॥ (अथर्व० ६।४।१)

(७०४) अथर्वा । पथ्याबृहती ।

त्वष्टा मे दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रायमाणं सहः १

[२] धाता ।

॥२००॥ (ऋ० १०।१८।५)

(७०५) संकुसुको यामायनः । त्रिष्टुप् ।

यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथ ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु ।
यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम् ५ ७०५

॥२०१॥ (अथर्व० १३।४।३)
(७०६) ब्रह्मा । प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम् ।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ३

॥२०२॥ (अथर्व० १८।३।२६)
(७०७-१०) । अथर्वा । जगती ।

धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २६

धातृ-सहचारी-देवगणः ।

(१) धाता, सविता, इन्द्रः, त्वष्टा, अदितिः ।

॥२०३॥ (अथर्व० ३।८।२)

धाता रातिः सवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः ।
हुवे देवीमदितिं शूरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्ठा यथासानि २

(२) धाताविधातारौ, ऋतवः ।

॥२०४॥ (अथर्व० ३।१०।१०)

ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो मात्रभ्यः संवत्सरेभ्यः ।
धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे १०

(३) धाता, विधाता, सविता, आदित्याः, रुद्राः, अश्विनौ ।

॥२०५॥ (अथर्व० ५।३।९)

धाता विधाता भुवनस्य यस्पतिर्देवः सविताभिमातिषाहः ।
आदित्या रुद्रा अश्विनोभा देवाः पान्तु यजमानं निर्ऋथात् ९ ७१०

(४) धाता, सविता ।

॥२०६॥ (अथर्व० ७।१७।१-३)
(७११-१३) भृगुः । १-२ गायत्री, ३ त्रिष्टुप् ।

धाता ददातु नो रयिमीशानो जगतस्पतिः । स नः पूर्णेन यच्छतु १
धाता ददातु दाशुषे प्राचीं जीवातुमक्षिताम् ।
वयं देवस्य धीमहि सुमतिं विश्वराधसः २ ७१२

धाता विश्वा वार्या दधातु प्रजाकामाय द्राशुषे दुरोणे ।
तस्मै देवा अमृतं सं व्ययन्तु विश्वे देवा अदितिः सजोषाः ३

(५) सविता, धाता, पूषा, त्वष्टा ।

॥२०७॥ (अथर्व० ११।६।३)

(७१४) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत पूषणम् । त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ३

[३] पूषा ।

॥२०८॥ (ऋ० १।२३।१३-१५)

(७१५-१७) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

आ पूषञ्चित्रबर्हिष माघृणे धरुणं दिवः । आजा नष्टं यथा पशुम् १३ ७१५
पूषा राजानमाघृणि रपंगूळ्हं गुहा हितम् । अविन्दच्चित्रबर्हिषम् १४
उतो स मह्यमिन्दुभिः षड् युक्ताँ अनुसेषिधत् । गोभिर्यवं न चर्कृषत् १५

॥२०९॥ (ऋ० १।४२।१—१०)

(७१८-२७) कण्वो घौरः । गायत्री ।

सं पूषन्नध्वनस्तिर व्यंहो विमुचो नपात् । सक्ष्वा देव प्र णस्पुरः १
यो नः पूषन्नघो वृको दुःशेव आदिदेशति । अप स्म तं पथो जहि २
अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् । दूरमधिं सुतेरज ३ ७२०
त्वं तस्य द्वयाविनो ऽघशंसस्य कस्य चित् । पदाभि तिष्ठ तपुषिम् ४
आ तत् ते दस्र मन्तुमः पूषन्नवो वृणीमहे । येन पितॄनचोदयः ५
अधा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम । धनानि सुषणा कृधि ६
अति नः सश्चतो नय सुगा नः सुपथा कृणु । पूषन्निह क्रतुं विदः ७
अभि सुवर्वसं नय न नवज्वारो अध्वने । पूषन्निह क्रतुं विदः ८ ७२५
शाग्धि पूर्धि प्र यंसि च शिशीहि प्रास्युदरम् । पूषन्निह क्रतुं विदः ९
न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि गृणीमसि । वसूनि दस्ममीमहे १०

॥२१०॥ (ऋ० १।१३८।१-४)

(७२८-३१) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः ।

प्रप्र पूष्णस्तुविजातस्य शस्यते महित्वमस्य तवसो न तन्दते स्तोत्रमस्य न तन्दते ।
अर्चामि सुम्नयन्नहमन्त्यूतिं मयोभुवम् ।
विश्वस्य यो मन आयुयुवे मखो देव आयुयुवे मखः १ ७२८

प्र हि त्वा पूषन्नजिरं न यामनि स्तोमेभिः कृण्व ऋणवो यथा मृध
उष्ट्रो न पीपरो मृधः ।
हुवे यत् त्वा मयोभुवं देवं सख्याय मर्त्यः ।
अस्माकमाङ्गूषान् द्युम्निनस्कृधि वाजेषु द्युम्निनस्कृधि २
यस्य ते पूषन्त्सख्ये विपन्यवः क्रत्वा चित् सन्तोऽवसा बुभुज्रिर
इति क्रत्वा बुभुज्रिरे ।
तामनु त्वा नवीयसीं नियुतं राय ईमहे ।
अहेळमान उरुशंस सरी भव वाजेवाजे सरी भव ३ ७३०
अस्या ऊ षु ण उप सातये भुवो ऽहेळमानो ररिवाँ अजाश्व श्रवस्यतामजाश्व ।
ओ षु त्वा ववृतीमहि स्तोमेभिर्दस्म साधुभिः ।
नहि त्वा पूषन्नतिमन्य आघृणे न ते सख्यमपह्नुवे ४

॥२११॥ (ऋ० ३।६२।७-९)

(७३२-३४) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

इयं ते पूषन्नाघृणे सुष्टुतिर्देव नव्यसी । अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते ७
तां जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धियम् । वधूयुरिव योषणाम् ८
यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पूषाविता भुवत् ९

॥२१२॥ (ऋ० ६।४८।१६-१९)

(७३५-३८) शंयुर्बार्हस्पत्यः (तृणपाणिः) १६ ककुप्, १७ सतोबृहती, १८ पुर उष्णिक्, १९ बृहती ।

आ मा पूषन्नुप द्रव शंसिषं नु ते अपिकर्ण आघृणे । अघा अर्यो अरातयः १६ ७३५
मा काकम्बीरमुद् वृहो वनस्पतिमशस्तीर्वि हि नीनशः ।
मोत सूरो अह एवा चन ग्रीवा आदधते वेः १७
दृतेरिव तेऽवृकमस्तु सख्यम् । अच्छिद्रस्य दधन्वतः सुपूर्णस्य दधन्वतः १८
परो हि मर्त्यैरसि समो देवैरुत श्रिया ।
अभि ख्यः पूषन् पृतनासु नस्त्वमवा नूनं यथा पुरा १९

॥२१३॥ (ऋ० ६।५३।१-१०)

(७३९-७४४) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गायत्री, ८ अनुष्टुप् ।

वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये । धिये पूषन्नयुज्महि १
अभि नो नर्यं वसु वीरं प्रयतदक्षिणम् । वामं गृहपतिं नय २ ७४०

अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन् दानाय चोदय । पणेश्चिद् वि म्रदा मनः ३
वि पथो वाजसातये चिनुहि वि मृधो जहि । साधन्तामुग्र नो धियः ४
परि तृन्धि पणीना मारया हृदया कवे । अथेमस्मभ्यं रन्धय ५
वि पूषन्नारया तुद पणेरिच्छ हृदि प्रियम् । अथेमस्मभ्यं रन्धय ६
आ रिख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे । अथेमस्मभ्यं रन्धय ७ ७४५
यां पूषन् ब्रह्मचोदनीं मारां बिभर्ष्याघृणे ।
तया समस्य हृदय मा रिख किकिरा कृणु ८
या ते अष्टा गोऔपशा ऽऽघृणे पशुसाधनी । तस्यास्ते सुम्नमीमहे ९
उत नो गोषणिं धियं मश्वसां वाजसामुत । नृवत् कृणुहि वीतये १०

॥२१४॥ (ऋ० ६।५४।१-१०)+ गायत्री ।

सं पूषन् विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति । य एवेदमिति ब्रवत् १
समु पूष्णा गमेमहि यो गृहाँ अभिशासति । इम एवेति च ब्रवत् २ ७५०
पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते । नो अस्य व्यथते पविः ३
यो अस्मै हविषाविध मन्न तं पूषाऽपि मृष्यते । प्रथमो विन्दते वसु ४
पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः । पूषा वाजं सनोतु नः ५
पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः । अस्माकं स्तुवतामुत ६
माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे । अथारिष्टाभिरा गहि ७ ७५५
शृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम् । ईशानं राय ईमहे ८
पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारस्त इह स्मसि ९
परि पूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम् । पुनर्नो नष्टमाजतु १०

॥२१५॥ (ऋ० ६।५५।१-६)

एहि वां विमुचो नपादाघृणे सं सचावहै । रथीर्ऋतस्य नो भव १
रथीतमं कपर्दिनमीशानं राधसो महः । रायः सखायमीमहे २ ७६०
रायो धारास्याघृणे वसो राशिरजाश्व । धीवतोधीवतः सखा ३
पूषणं न्वश्वजाश्वमुप स्तोषाम वाजिनम् । स्वसुर्यो जार उच्यते ४
मातुर्दिधिषुमब्रवं स्वसुर्जारः शृणोतु नः । भ्रातेन्द्रस्य सखा मम ५
आजासः पूषणं रथे निशुम्भास्ते जनश्रियम् । देवं वहन्तु बिभ्रतः ६ ७६४

+ ऋ० ६,५४,९-१०=वा० य० ३४,४१; अथर्व० ७,९,३-४

॥२१६॥ (ऋ० ६।५६।१-६) गायत्री, ६ अनुष्टुप् ।

य एनमादिदेशति करम्भादितिं पूषणम् । न तेन देव आदिशे १ ७६५
उत घा स रथीतमः सख्या सत्पतिर्युजा । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते २
उतादः पंरुषे गवि सूरश्चक्रं हिरण्ययम् । न्यैरयद् रथीतमः ३
यदद्य त्वा पुरुष्टुत ब्रवाम दस्र मन्तुमः । तत् सु नो मन्म साधय ४
इमं च नो गवेषणं सातयें सीषधो गणम् । आरात् पूषन्नसि श्रुतः ५
आ ते स्वस्तिमीमहे आरेअघामुपावसुम् । अद्या च सर्वतातये श्वश्च सर्वतातये ६ ७७०

॥२१७॥ (ऋ० ६।५८।१-४)× त्रिष्टुप्, २ जगती ।

शुक्रं ते अन्यद् यजतं ते अन्यद् विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि ।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु १
अजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो धियंजिन्वो भुवने विश्वे अर्पितः ।
अष्टौ पुषा शिथिरामुद्वरीवृजत् संचक्षाणो भुवना देव ईयते २
यास्ते पूषन्नावो अन्तः समुद्रे हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्ति ।
ताभिर्यासि दूत्यां सूर्यस्य कामेन कृत श्रव इच्छमानः ३
पूषा सुबन्धुर्दिव आ पृथिव्या इळस्पतिर्मघवा दस्मवर्चाः ।
यं देवासो अददुः सूर्यायै कामेन कृतं तवसं स्वञ्चम् ४

॥२१८॥ (ऋ० १०।१७।३-६)+

(७७५-७८) देवश्रवा यामायनः । त्रिष्टुप् ।

पूषा त्वेतश्च्यावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः ।
स त्वैतेभ्यः परि ददत् पितृभ्यो ऽग्निर्देवेभ्यः सुविदत्रियेभ्यः ३ ७७५
आयुर्विश्वायुः परि पासति त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् ।
यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु ४
पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः सो अस्माँ अभयतमेन नेषत् ।
स्वस्तिदा आघृणिः सर्ववीरो ऽप्रयुच्छन् पुर एतु प्रजानन् ५
प्रपथे पथामजनिष्ट पूषा प्रपथे दिवः प्रपथे पृथिव्याः ।
उभे अभि प्रियतमे सधस्थे आ च परा च चरति प्रजानन् ६ ७७८

× ऋ० ६,५८,१=सा० ७५ ।
+ ऋ० १०,१७,५-६;३-४=अथर्व० ७,९,१-२; १८,२,५४-५५ ।

॥२१९॥ (ऋ० १०।२६।१-९)

(७७१-८७) विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद्वा । अनुष्टुप्; १,४ उष्णिक् ।

प्र ह्यच्छा मनीषाः स्पार्हा यन्ति नियुतः । प्र दस्रा नियुद्रथः पूषा अविष्टु माहिनः १
यस्य त्यन्महित्वं वाताप्यमयं जनः । विप्र आ वसद्धीतिभिश्चिकेत सुष्टुतीनाम् २ ७८०
स वेद सुष्टुतीनामिन्दुर्न पूषा वृषा । अभि प्सुरः प्रुषायति व्रजं न आ प्रुषायति ३
मंसीमहि त्वा वयमस्माकं देव पूषन् । मतीनां च साधनं विप्राणां चाधवम् ४
प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्वहयो रथानाम् । ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सखः ५

आधीषमाणायाः पतिः शुचायाश्च शुचस्य च ।
वासोवायोऽवीनां मा वासांसि मर्मृजत् ६
इनो वाजानां पतिरिनः पुष्टीनां सखा । प्र श्मश्रु हर्यतो दूधोद् वि वृथा यो अदाभ्यः ७ ७८५
आ ते रथस्य पूषन्नजा धुरं ववृत्युः । विश्वस्यार्थिनः सखा सनोजा अनपच्युतः ८
अस्माकमूर्जा रथं पूषा अविष्टु माहिनः । भुवद् वाजानां वृध इमं नः शृणवद्धवम् ९

॥२२०॥ [७८८] (वा० य० ३४।४२)×

पथस्पथः परिपतिं वचस्या कामेन कृतो अभ्यानडर्कम् ।
स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियꣳ सीषधाति प्र पूषा ४२

॥२२१॥ [दै० (आयुर्वेद० १७६५-६७) मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

पूषा-सहचारी देवगणः ।

(१) मरुतः, पूषा, बृहस्पतिः, अग्निः ।

॥२२२॥ (अथर्व० ७।३३।१)

(७८९) ब्रह्मा । पथ्यापङ्क्तिः ।

सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः ।
सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे १

(२) अग्निः, सोमः, पूषा ।

॥२२३॥ (अथर्व० १६।९।२)

(७९०) यमः । आर्च्युष्णिक् ।

तदग्निराह तदु सोम आह पूषा मा धात् सुकृतस्य लोके २ ७९०

× ऋ० ६,४९,८ ।

[४] भगः ।

॥२२४॥ (ऋ० १।२४।५)

(७९१) आजीगर्तिः शुनःशेपः, स क्षत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । गायत्री ।

भगभक्तस्य ते वय॒मुद॑शेम तवाव॑सा । मू॒र्धानं॑ रा॒य आ॒रभे॑ ५

॥२२५॥ (ऋ० ७।३८।६ उत्तरार्धः)

(७९२-९७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

भग॑मु॒ग्रोऽव॑से जोहवीति॒ भग॑मनु॒ग्रो अध॑ याति॒ रत्न॑म् ६

॥२२६॥ (ऋ० ७।४१।२-६)×

प्रा॒तर्जितं॑ भग॑मु॒ग्रं हु॑वेम व॒यं पु॒त्रमदि॑तेर्यो॒ विध॑र्ता ।
आध्र॑श्चिद् यं मन्य॑मानस्तु॒रश्चि॒द् राजा॑ चि॒द् यं भग॑ भ॒क्षीत्याह॑ २
भग॒ प्रणे॑तर्भग॒ सत्य॑राधो॒ भगे॒मां धिय॒मुद॑वा॒ दद॑न्नः ।
भग॒ प्र णो॑ जनय॒ गोभि॒रश्वै॒र्भग॒ प्र नृभि॑र्नृ॒वन्तः॑ स्याम ३
उ॒तेदानीं॑ भग॑वन्तः स्या॒मो॒त प्र॑पि॒त्व उ॒त मध्ये॒ अह्ना॑म् ।
उ॒तोदि॑ता मघव॒न्त्सूर्य॑स्य व॒यं दे॒वाना॑ सु॒मतौ॑ स्याम ४ ७९५
भग॑ एव भग॑वाँ अस्तु दे॒वा॒स्तेन॑ व॒यं भग॑वन्तः स्याम ।
तं त्वा॑ भग॒ सर्व॒ इज्जो॑हवीति॒ स नो॑ भग पुर॒एता॑ भवे॒ह ५
सम॑ध्व॒रायो॒षसो॑ नमन्त दधि॒क्रावे॑व॒ शुच॑ये प॒दाय॑ ।
अ॒र्वाचीनं॑ वसु॒विदं॒ भगं॑ नो॒ रथ॑मि॒वाश्वा॑ वा॒जिन॒ आ व॑हन्तु ६

॥२२७॥ (अथर्व० २।३०।५)

(७९८) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

एयम॑गन् पतिका॒मा जनि॑कामो॒ऽहमाग॑मम् ।
अश्वः॑ कनि॒क्रद॒द् यथा॒ भगे॑नाहं॒ सहागम॑म् ५

॥२२८॥ (अथर्व० २।३६।७)

(७९९) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

इ॒दं हिर॑ण्यं॒ गुल्गु॑ल्वयमौ॒क्षो अथो॒ भगः॑ । एते पति॑भ्यस्त्वाम॑दुः प्रतिका॒माय॒ वेत्त॑वे ७

॥२२९॥ (अथर्व० ५।२६।९)

(८००) ब्रह्मा । [एकावसाना] त्रिपदा पिपीलिकमध्या पुरउष्णिक् ।

भगो॑ युनक्त्वाशिषो॒ न्व१॒॑स्मा अ॒स्मिन् य॒ज्ञे प्र॑वि॒द्वान् यु॑नक्तु सुयु॒जः स्वाहा॑ ९ ८००

× वा० य० ३४,३५-३९; अथर्व ३,१६,२-६

दै० [अदितिः०] ९

॥२३०॥ (अथर्व० ६।१२९।१-३)

(८०१-३) अथर्वाङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

भगेन मा शांशपेन साकमिन्द्रेण मेदिना । कृणोमि भगिनं मापं द्रान्त्वरातयः १
येन वृक्षाँ अभ्यभवो भगेन वर्चसा सह । तेन मा भगिनं कृण्वपं द्रान्त्वरातयः २
यो अन्धो यः पुनःसरो भगो वृक्षेष्वाहितः । तेन मा भगिनं कृण्वपं द्रान्त्वरातयः ३

॥२३१॥ (अथर्व० १४।१।५०-५१,५३,६०)

(८०४-७) सूर्या सावित्री । ५०,५३ त्रिष्टुप्, ५१ अनुष्टुप्, ६० पराऽनुष्टुप् ।

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।
भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ५०
भगस्ते हस्तमग्रहीत् सविता हस्तमग्रहीत् ।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव ५१ ८०५
त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभे कं बृहस्पतेः प्रशिषा कवीनाम् ।
तेनेमां नारीं सविता भगश्च सूर्यामिव परि धत्तां प्रजया ५३
भगस्ततक्ष चतुरः पादान् भगस्ततक्ष चत्वार्युष्पलानि ।
त्वष्टा पिपेश मध्यतोऽनु वर्ध्रान्त्सा नो अस्तु सुमङ्गली ६०

भग-सहचारी-देवगणः ।

(१) अंशः, भगः, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, अदितिः, मरुतः ।

॥२३२॥ (अथर्व० ६।४।२)

(८०८) अथर्वा । प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमादितिः पान्तु मरुतः ।
अप तस्य द्वेषो गमेदभिहुतो यावयच्छत्रुमन्तितम् २

(२) धाता, अर्यमा, भगः, अश्विनौ ।

॥२३३॥ (अथर्व० १४।२।१३)

(८०९) सूर्या सावित्री । त्रिष्टुप् ।

शिवा नारीयमस्तमागान्निमं धाता लोकमस्यै दिदेश ।
तामर्यमा भगो अश्विनोभा प्रजापतिः प्रजया वर्धयन्तु १३ ८०९

[५] अर्यमा ।

॥२३४॥ (अथर्व० ६।६०।१-३)

(८१०-१२) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

अयमा यात्यर्यमा पुरस्ताद् विषितस्तुपः । अस्या इच्छन्नग्रुवै पतिमुत जायामजानये १ ८१०
अश्रमदियमर्यमन्नन्यासां समनं यती । अङ्गो न्वर्यमन्नस्या अन्याः समनमार्यति २
धाता दाधार पृथिवीं धाता द्यामुत सूर्यम् ।
धाताऽस्या अग्रुवै पतिं दधातु प्रतिकाम्यम् ३

॥२३५॥ (अथर्व० ११।६।४)

(८१३) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

गन्धर्वाप्सरसौ ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम् ।
अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ४

॥२३६॥ (अथर्व० १३।४।४)

(८१४-१६) ब्रह्मा । प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः ।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ४

अर्यमन्-सहचारी-देवगणः ।

(१) अर्यमा, पूषा, बृहस्पतिः, इन्द्रः ।

॥२३७॥ (अथर्व० ३।१४।२) अनुष्टुप् ।

सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।
समिन्द्रो यो धनंजयो मयि पुष्यत यद्वसु २ ८१५

(२) मित्रः, वरुणः, त्वष्टा, अर्यमा, महादेवः ।

॥२३८॥ (अथर्व० ९।७।७) त्रिपदा पिपीलिकमध्या निचृद्गायत्री ।

मित्रश्च वरुणश्चासौ त्वष्टा चार्यमा च दोषणी महादेवो बाहू ७

(३) अर्यमा, भगः, बृहस्पतिः, देवीः ।

॥२३९॥ (अथर्व० ३।२०।३)

(८१७) वसिष्ठः । अनुष्टुप् ।

प्र णो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः ।
प्र देवीः प्रोत सूनृता रयिं देवी दधातु मे ३ ८१७

(७) विष्णुः ।

॥२४०॥ (ऋ० १।२२।१६-२१)+

(८१८-२३) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः १६
इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूळ्हमस्य पांसुरे १७
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् १८ ८१०
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा १९
तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् २०
तद् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । विष्णोर्यत् परमं पदम् २१

॥२४१॥ (ऋ० १।१५४।१-६)*

(८२४-३७) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः १
प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा २ ८२५
प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे ।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित् पदेभिः ३
यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति ।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा ४
तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ५
ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि ६

॥२४२॥ (ऋ० १।१५५।४-६) जगती ।

तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसी नस्य त्रातुरवृकस्य मीळ्हुषः ।
यः पार्थिवानि त्रिभिरिद् विगामभिरुरु क्रमिष्टोरुगायाय जीवसे ४ ८३०

+ ऋ० १।२२।१७-२१ = वा० य० ५,१५; ३४,४३-४४; ६,४-५; १३,३३; अथर्व० ७,२६,४-७; सा० २२२, १६६९-७४ ।

* ऋ० १।१५४।१-२,६=वा० य०५,१८.२०; ६,३; अथर्व० ७ २६।१-२,३ (प्रथमचरणः) ।

द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशो ऽभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति ।
तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतयन्तः पतत्रिणः ५

चतुर्भिः साकं नवतिं च नामभिश्चक्रं न वृत्तं व्यतीरवीविपत् ।
बृहच्छरीरो विमिमान ऋक्वभिर्युवाकुमारः प्रत्येत्याहवम् ६

॥२४३॥ (ऋ० १।१५६।१-५)

भवा मित्रो न शेव्यो घृतासुति र्विभूतद्युम्न एवया उ सप्रथाः ।
अधा ते विष्णो विदुषा चिदर्ध्यः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता १
यः पूर्व्याय वेधसे नवीयसे सुमज्जानये विष्णवे ददाशति ।
यो जातमस्य महतो महि ब्रवत् सेदु श्रवोभिर्युज्यं चिदभ्यसत् २
तमु स्तोतारः पूर्व्यं यथा विद ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन ।
आस्य जानन्तो नाम चिद् विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे ३ ८३५

तमस्य राजा वरुणस्तमश्विना क्रतुं सचन्त मारुतस्य वेधसः ।
दाधार दक्षमुत्तममहर्विदं व्रजं च विष्णुः सखिवाँ अपोर्णुते ४
आ यो विवाय सचथाय दैव्य इन्द्राय विष्णुः सुकृते सुकृत्तरः ।
वेधा अजिन्वत् त्रिषधस्थ आर्य मृतस्य भागे यजमानमाभजत् ५

॥२४४॥ (ऋ० ७।९९।१-३,७)+

(८३८-४७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति ।
उभे ते विद्म रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से १
न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिम्नः परमन्तमाप ।
उदस्तभ्ना नाकमृष्वं बृहन्तं दाधर्थ प्राचीं ककुभं पृथिव्याः २
इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनी मनुषे दशस्या ।
व्यस्तभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः ३

वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७ ८४१

+ ऋ० ७।९९।३,७=वा० य० ५,१६; ऋ० ७।१००।७ । दे०[इन्द्रः] ३३०३-५ ।

॥२४५॥ (ऋ० ७।१००।१-६)

नू मर्तो दयते सनिष्यन् यो विष्णव उरुगायाय दाशत् ।
प्र यः सत्राचा मनसा यजात एतावन्तं नर्यमाविवासात् १
त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजन्या—मप्रयुतामेवयावो मतिं दाः ।
पर्चो यथा नः सुवितस्य भूरे—रश्वावतः पुरुश्चन्द्रस्य रायः २
त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा ।
प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम ३
वि चक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन् ।
ध्रुवासो अस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार ४ ८४५
प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट नामा—ऽर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान् ।
तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान् क्षयन्तमस्य रजसः पराके ५
किमित् ते विष्णो परिचक्ष्यं भूत् प्र यद् ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि ।
मा वर्पो अस्मदप गूह एतद् यदन्यरूपः समिथे बभूथ ६

॥२४६॥ (८४८-६०) (वा० य० १।२७,३०)

गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि जागतेन
त्वा छन्दसा परिगृह्णामि ।
सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पयस्वती च २७
अदित्यै रास्नासि विष्णोर्वेष्पोऽस्यूर्जे त्वाऽदब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि ।
अग्नेर्जिह्वासि सुहूर्देवेभ्यो धाम्ने धाम्ने मे भव यजुषे यजुषे ३०

॥२४७॥ (वा० य० २।६,८,२५)

ध्रुवा असदन्नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां
यज्ञन्यम् ६ ८५०
अङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णो
स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वर आस्थात् ८
दिवि विष्णुर्व्यक्रꣳस्त जागतेन च्छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान् द्वेष्टि यं च
वयं द्विष्मोऽन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्रꣳस्त त्रैष्टुभेन च्छन्दसा ततो निर्भक्तो
योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्रꣳस्त गायत्रेण
च्छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः २५ ८५१

॥२४८॥ (वा० य० ५।१,१९,२१,२३-२५,३८)×

अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे त्वातिथेरातिथ्यमसि विष्णवे
त्वा श्येनाय त्वा सोमभृते विष्णवे त्वाऽग्नये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा १
दिवो वा विष्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद् विष्णवे त्वा १९
विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ।
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा २१ ८५५
रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्टयो यममात्यो
निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखा-
नेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं
वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि २३
स्वराडसि सपत्नहा सम्राडस्यभिमातिहा जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा २४
रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि
वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां
वलगहना उपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी
वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ २५
उरु विष्णो विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ३८

॥२४९॥ (वा० य० ८।१)

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा ।
विष्णु उरुगायैष ते सोमस्तꣳ रक्षस्व मा त्वा दभन् १ ८६०

॥२५०॥ (अथर्व० ७।२६।१-३,८)

विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः १
प्र तद् विष्णु स्तवते वीर्याणि मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
परावत आ जगम्यात् परस्याः २ ८६२

× वा० य० ५।३८=वा० य० ५,४१; अथर्व० ७।२६।३

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।
उरु विष्णो वि क्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर ३
दिवो विष्ण उत वा पृथिव्या महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैराप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात् ८

॥२५१॥ (अथर्व० १०।५।२५-३५)

(८६५-७५) कौशिकः । व्यवसाना षट्पदा यथाक्षरं शाक्वर्यतिशाक्वरी ।

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा पृथिवीसंशितोऽग्नितेजाः ।
पृथिवीमनु वि क्रमेऽहं पृथिव्यास्तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ।
स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु २५ ८६५
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाऽन्तरिक्षसंशितो वायुतेजाः ।
अन्तरिक्षमनु वि क्रमेऽहमन्तरिक्षात् तं निर्भजामो०। स मा जीवीत् तं प्राणो० २६
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा द्यौसंशितः सूर्यतेजाः ।
दिवमनु वि क्रमेऽहं दिवस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु २७
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा दिक्संशितो मनस्तेजाः ।
दिशोऽनु वि क्रमेऽहं दिग्भ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो० २८
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाऽऽशासंशितो वाततेजाः ।
आशा अनु वि क्रमेऽहमाशाभ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो० २९
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नह ऋक्संशितः सामतेजाः ।
ऋचोऽनु वि क्रमेऽहमृग्भ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु ३० ८७०
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा यज्ञसंशितो ब्रह्मतेजाः ।
यज्ञमनु वि क्रमेऽहं यज्ञात् तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु ३१
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहौषधीसंशितः सोमतेजाः ।
ओषधीरनु वि क्रमेऽहमोषधीभ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो० ३२
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाप्सुसंशितो वरुणतेजाः ।
अपोऽनु वि क्रमेऽहमद्भ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु ३३
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा कृषिसंशितोऽन्नतेजाः ।
कृषिमनु वि क्रमेऽहं कृष्यास्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु ३४ ८७४

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा प्राणसंशितः पुरुषतेजाः ।
प्राणमनु वि क्रमेऽहं प्राणात् तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु ३५ ८७५

विष्णु-सहचारी-देवगणः।

(१) विष्णु-त्वष्टृ-प्रजापति-धातारः ।

॥२५२॥ (ऋ० १०।१८४।१)+

(८७६) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते १

(२) विष्णुर्वरुणश्च ।

॥२५३॥ (८७७) (वा० य० ८।५९)×

ययोरोजसा स्कभिता रजांस्यसि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा ।
या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू अगन्वरुणा पूर्वहूतौ ५९

॥२५४॥ (अथर्व० ७।२५।२)

(८७८) मेधातिथिः । त्रिष्टुप् ।

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते प्र चानति वि च चष्टे शचीभिः ।
पुरा देवस्य धर्मणा सहोभिर्विष्णुमगन्वरुणं पूर्वहूतिः २

(८) विवस्वान् ।

॥२५५॥ (८७९) (वा० य० २२।३०)

विवस्वते स्वाहा ३०

॥२५६॥ (अथर्व० ६।११६।१-३)*

(८८०-८२) जाटिकायनः । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यया ।
वैवस्वते राजनि तज्जुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम् १ ८८०
वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति ।
मातुर्यदेनं इषितं न आगन् यद् वा पितापराद्धो जिहीडे २
यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस एन आगन् ।
यावन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः ३ ८८२

+ अथर्व० ५।२५।५; × अथर्व० ७।२५।१; * दै० [आयुर्वेद०] २०५६
दै० [अदितिः०] १०

(९) संवत्सरः कालः।

॥२५७॥ (ऋ० १।१६४।४८)

(८८३) दीर्घतमा औचथ्यः। त्रिष्टुप्।

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिंशता न शङ्कवो ऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः ४८

॥२५८॥ [८८४-८६] (वा० य० २२।२८)

संवत्सराय स्वाहा २८

॥२५९॥ (वा० य० २७।४५)

संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि।
उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते
कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ताꣳ संवत्सरस्ते कल्पताम्।
प्रेत्या एत्यै सं चाञ्च प्र च सारय।
सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद ४५ ८८५

॥२६०॥ (वा० य० ३०।१५)

संवत्सरायं पर्यायिणीं परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायां-
तिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जराꣳ संवत्सराय पलिक्नीम् १५

॥२६१॥ (अथर्व० ३।१०।८)

(८८६-८९) अथर्वा। अनुष्टुप्।

आयमगन्त्संवत्सरः पतिरेकाष्टके तव।
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ८

॥२६२॥ (अथर्व० ४।१५।१३)×

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः १३

॥२६३॥ (अथर्व० ११।७।१८)

समृद्धिरोज आकूतिः क्षत्रं राष्ट्रं षडुर्वयः।
संवत्सरोऽध्युच्छिष्ट इडा ग्रैषा ग्रहा हविः १८

॥२६४॥ (अथर्व० १५।३।१) पिपीलिकमध्या गायत्री।

स संवत्सरमूर्ध्वोऽतिष्ठत् तं देवा अब्रुवन् व्रात्य किं नु तिष्ठसीति १ ८९०

× दै० [आयुर्वेद०] ९९४,१०१६।

॥२६५॥ (अथर्व० ११।५।२०)

(८९१) ब्रह्मा। अनुष्टुप्।

ओषधयो भूतभव्यमहोरात्रे वनस्पतिः।
संवत्सरः सहर्तुभिस्ते जाता ब्रह्मचारिणः २०

॥२६६॥ (अथर्व० १९।५३।१-१०)

(८९२-९०६) भृगुः। अनुष्टुप्; १-४ त्रिष्टुप्; ५ निचृत् पुरस्ताद्बृहती।

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा १
सप्त चक्रान् वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतं न्वक्षः।
स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः स ईयते प्रथमो नु देवः २
पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः।
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ्कालं तमाहुः परमे व्योमन् ३
स एव सं भुवनान्याभरत् स एव सं भुवनानि पर्येत्।
पिता सन्नभवत् पुत्र एषां तस्माद् वै नान्यत् परमास्ति तेजः ४ ८९५

कालोऽमूं दिवमजनयत् काल इमाः पृथिवीरुत।
काले ह भूतं भव्यं चेषितं ह वि तिष्ठते ५
कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः।
काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्वि पश्यति ६
काले मनः काले प्राणः काले नाम समाहितम्।
कालेन सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः ७
काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पिताऽऽसीत् प्रजापतेः ८
तेनेषितं तेन जातं तदु तस्मिन् प्रतिष्ठितम्।
कालो ह ब्रह्म भूत्वा बिभर्ति परमेष्ठिनम् ९

कालः प्रजा असृजत कालो अग्रे प्रजापतिम्।
स्वयंभूः कश्यपः कालात् तपः कालादजायत १० ९०१

॥२६७॥ (अथर्व० १९।५४।१-५)

अनुष्टुप्, २ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; ५ त्र्यवसाना षट्पदा विराडष्टिः ।

कालादापः समभवन् कालाद् ब्रह्म तपो दिशः ।
कालेनोदेति सूर्यः काले नि विशते पुनः १
कालेन वातः पवते कालेनं पृथिवी मही । द्यौर्मही काल आहिता २
कालो ह भूतं भव्यं च पुत्रो अजनयत् पुरा ।
कालाद्दचः समभवन् यजुः कालादजायत ३
कालो यज्ञं समैरयद् देवेभ्यो भागमक्षितम् ।
काले गन्धर्वाप्सरसः काले लोकाः प्रतिष्ठिताः ४ ९०५
कालेऽयमङ्गिरा देवोऽथर्वा चाधि तिष्ठतः ।
इमं च लोकं परमं च लोकं पुण्याँश्च लोकान् विधृतीश्च पुण्याः ।
सर्वाँल्लोकानभिजित्य ब्रह्मणा कालः स ईयते परमो नु देवः ५

---

(१०) ऋतवः ।

॥२६८॥ (ऋ० १।१५।१-१२)+

(९०७-१८) मेधातिथिः काण्वः । [ऋतुदेवताः= १ इन्द्रः, २ मरुतः, ३ त्वष्टा, ४ अग्निः, ५ इन्द्रः, ६ मित्रावरुणौ, ७-१० द्रविणोदाः, ११ अश्विनौ, १२ अग्निः] । गायत्री ।

इन्द्र सोमं पिब ऋतुना ऽऽ त्वा विशन्त्विन्दवः । मत्सरासस्तदोकसः १
मरुतः पिबत ऋतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन । यूयं हि ष्ठा सुदानवः २
अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्नावो नेष्टः पिब ऋतुना । त्वं हि रत्नधा असि ३
अग्ने देवाँ इहा वह सादया योनिषु त्रिषु । परि भूष पिब ऋतुना ४ ९१०
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु । तवेद्धि सख्यमस्तृतम् ५
युवं दक्षं धृतव्रत मित्रावरुण दूळभम् । ऋतुना यज्ञमाशाथे ६
द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अध्वरे । यज्ञेषु देवमीळते ७
द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृण्विरे । देवेषु ता वनामहे ८
द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत । नेष्टादृतुभिरिष्यत ९
यत् त्वा तुरीयमृतुभिर्द्रविणोदो यजामहे । अध स्मा नो ददिर्भव १० ९१६

+ ऋ० १।१५।२,४,१२=दै० [अग्निः] २२-२३; [मरुतः] ५;

अश्विना पिबतं मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता । ऋतुना यज्ञवाहसा ११
गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरसि । देवान् देवयते यज १२

॥२६९॥ (ऋ० २।३६।१-६)*

(९१९-३०) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । [ऋतुदेवताः-१ इन्द्रो मधुश्च, २ मरुतो माधवश्च, ३ त्वष्टा शुक्रश्च, ४ अग्निः शुचिश्च, ५ इन्द्रो नभश्च, ६ मित्रावरुणौ नभस्यश्च । जगती ।

तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ट गा अपो ऽधुक्षन्त्सीमविभिरद्रिभिर्नरः ।
पिबेन्द्र स्वाहा प्रहुतं वषट्कृतं होत्रादा सोमं प्रथमो य ईशिषे १
यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामन्छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत ।
आसद्या बर्हिर्भरतस्य सूनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः २ ९२०
अमेव नः सुहवा आ हि गन्तन नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन ।
अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धसस्त्वष्टर्देवेभिर्जनिभिः सुमद्गणः ३
आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि चोशन् होतर्निषदा योनिषु त्रिषु ।
प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिबाग्नीध्रात् तव भागस्य तृप्णुहि ४
एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः ।
तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतस्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत् पिब ५
जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे सत्तो होता निविदः पूर्व्या अनु ।
अच्छा राजाना नमसा एत्यावृतं प्रशास्त्रादा पिबतं सोम्यं मधु ६

॥२७०॥ (अथर्व० २।३७।१-६)×

[ऋतुदेवताः- १-४ द्रविणोदा ऋतवश्च, ५ अश्विनौ, ६ अग्निः ऋतुश्च]

मन्दस्व होत्रादनु जोषमन्धसो ऽध्वर्यवः स पूर्णां वष्ट्यासिचम् ।
तस्मा एतं भरत तद्वशो ददि होत्रात् सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः १ ९१५
यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो ददिर्यो नाम पत्यते ।
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात् सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः २
मेधन्तु ते वह्नयो येभिरीयसे ऽरिषण्यन् वीळयस्वा वनस्पते ।
आयूया धृष्णो अभिगूर्या त्वं नेष्ट्रात् सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः ३
अपाद्धोत्रादुत पोत्रादमत्तो त नेष्टादजुषत प्रयो हितम् ।
तुरीयं पात्रममृक्तमर्त्यं द्रविणोदाः पिबतु द्राविणोदसः ४ ९१८

---

* ऋ० २।३६।३,६=दै० [अदिति०] ४००,७०३ × ऋ० २।३७।५= दै० [अश्विनौ] ११४

अर्वाञ्चमद्य यय्यं नृवाहणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम् ।
पृङ्क्तं हवींषि मधुना हि कं गतमथा सोमं पिबतं वाजिनीवसू ५
जोष्यग्ने समिधं जोष्याहुतिं जोषि ब्रह्म जन्यं जोषिं सुष्टुतिम् ।
विश्वेभिर्विश्वाँ ऋतुना वसो महं उशन् देवाँ उशतः पायया हविः ६ ९३०

॥२७१॥ [९३१-४८] (वा० य० ७।३०)

उपयामगृहीतोऽसि मधवे त्वोपयामगृहीतोऽसि माधवाय त्वोपयामगृहीतोऽसि शुक्राय त्वोपयामगृहीतोऽसि शुचये त्वोपयामगृहीतोऽसि नभसे त्वोपयामगृहीतोऽसि नभस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसीषे त्वोपयामगृहीतोऽस्यूर्जे त्वोपयामगृहीतोऽसि सहसे त्वोपयामगृहीतोऽसि सहस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसि तपसे त्वोपयामगृहीतोऽसि तपस्याय त्वोपयामगृहीतोऽस्यꣳहसस्पतये त्वा ३०

॥२७२॥ (वा० य० १३।२५)

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू अग्नेरन्तःश्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।
ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।
वासन्तिकावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् २५

॥२७३॥ (वा० य० १४।६,१५-१६,२७,२९)

शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू अग्नेरन्तः० ।०। ग्रैष्मावृतू अभिकल्पमाना० ६
नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतू अग्नेरन्तः० ।०। वार्षिकावृतू अभिकल्पमाना० १५
इषश्चोर्जश्च शारदावृतू अग्नेरन्तः० ।०। शारदावृतू अभिकल्पमाना० १६ ९३५
सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू अग्नेरन्तः० ।०। हैमन्तिकावृतू अभिकल्पमाना० २७
एकादशभिरस्तुवत ऋतवोऽसृज्यन्तार्तवा अधिपतय आसन् २९

॥२७४॥ (वा० य० १५।५७)

तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू अग्नेरन्तः० ।०। शैशिरावृतू अभिकल्पमाना० ५७

॥२७५॥ (वा० य० १७।३)

ऋतवः स्थ ऋतावृधः ऋतुष्ठा स्थ ऋतावृधः ।
घृतश्चुतो मधुश्चुतो विराजो नाम कामदुघा अक्षीयमाणाः ३ ९३९

॥२७६॥ (वा० य० २१।२३-२८)

वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः ।
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः २३ ९४०
ग्रीष्मेण ऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः ।
बृहता यशसा बलꣳ हविरिन्द्रे वयो दधुः २४
वर्षाभिर्ऋतुनादित्या स्तोमे सप्तदशे स्तुताः ।
वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः २५
शारदेन ऋतुना देवा एकविꣳश ऋभव स्तुताः ।
वैराजेन श्रिया श्रियꣳ हविरिन्द्रे वयो दधुः २६
हेमन्तेन ऋतुना देवास्त्रिणवे मरुत स्तुताः ।
बलेन शक्वरीः सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः २७
शैशिरेण ऋतुना देवास्त्रयस्त्रिꣳशेऽमृता स्तुताः ।
सत्येन रेवतीः क्षत्रꣳ हविरिन्द्रे वयो दधुः २८ ९४५

॥२७७॥ (वा० य० २२।२८)

ऋतुभ्यः स्वाहाऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा २८

॥२७८॥ (वा० य० २३।४०)

ऋतवस्त ऋतुथा पर्व शमितारो वि शासतु ।
संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा ४०

॥२७९॥ (वा० य० २६।१४)

ऋतवस्ते यज्ञं वि तन्वन्तु मासा रक्षन्तु ते हविः ।
संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः प्रजां च परि पातु नः १४

॥२८०॥ (अथर्व० ३।१०।९)

(९४९-६४) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

ऋतून् यज ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।
समाः संवत्सरान् मासान् भूतस्य पतये यजे ९

॥२८१॥ (अथर्व० ५।२८।१३) पुरउष्णिक् ।

ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे वर्चसे त्वा ।
संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृण्मसि १३ ९५०

॥२८२॥ (अथर्व० ११।३।१७) आसुर्यनुष्टुप् ।

ऋतवः पक्तारं आर्तवाः समिन्धते १७

॥२८३॥ (अथर्व० १५।३।४) द्विपदाऽऽर्च्युष्णिक् ।

तस्यां ग्रीष्मश्च वसन्तश्च द्वौ पादावास्तां शरच्च वर्षाश्च द्वौ ४

॥२८४॥ (अथर्व० १५।४।२-३,५-६,८-९,११-१२,१४-१५,१७-१८)

वासन्तौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् बृहच्च रथंतरं चानुष्टातारौ २

वासन्तावेनं मासौ प्राच्या दिशो गोपायतो बृहच्च रथंतरं चानु तिष्ठतो
य एवं वेद ३

ग्रैष्मौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं चानुष्टातारौ ५ ९५५

ग्रैष्मावेनं मासौ दक्षिणाया दिशो गोपायतो यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं
चानु तिष्ठतो य एवं वेद ६

वार्षिकौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् वैरूपं च वैराजं चानुष्टातारौ ८

वार्षिकावेनं मासौ प्रतीच्या दिशो गोपायतो वैरूपं च वैराजं चानु तिष्ठतो
य एवं वेद ९

शारदौ मासौ गोप्तारावकुर्वंछयैतं च नौधसं चानुष्टातारौ ११

शारदावेनं मासावुदीच्या दिशो गोपायतः श्यैतं च नौधसं चानु तिष्ठतो
य एवं वेद १२ ९६०

हैमनौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् भूमिं चाग्निं चानुष्टातारौ १४

हैमनावेनं मासौ ध्रुवाया दिशो गोपायतो भूमिश्चाग्निश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद १५

शैशिरौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् दिवं चादित्यं चानुष्टातारौ १७

शैशिरावेनं मासावूर्ध्वाया दिशो गोपायतो द्यौश्चादित्यश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद १८

॥२८५॥ (अथर्व० १०।६।१८)

(९६५) बृहस्पतिः । अनुष्टुप् ।

ऋतवस्तमबध्नतार्तवास्तमबध्नत । संवत्सरस्तं बद्ध्वा सर्वं भूतं वि रक्षति १८

॥२८६॥ (अथर्व० ११।४।४)

(९६६) भार्गवो वैदर्भिः । अनुष्टुप् ।

यत् प्राण ऋतावागतेऽभिक्रन्दत्योषधीः ।
सर्वं तदा प्र मोदते यत् किं च भूम्यामधि ४ ९६६

॥२८७॥ (अथर्व० ११।६।१७,२२)

(९६७-६८) शन्तातिः। अनुष्टुप्।

ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान्।
समाः संवत्सरान् मासांस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः १७
या देवीः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वादशर्तवः।
संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः। २२

॥२८८॥ (अथर्व० १२।१।३६)

(९६९) अथर्वा। विपरीत पादलक्ष्मा पङ्क्तिः।

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः।
ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम् ३६

॥२८९॥ (अथर्व० १६।८।२१)

(९७०) यमः। आसुरी पङ्क्तिः।

स आर्तवानां पाशान्मा मोचि २१ ९७०

॥२९०॥ (अथर्व० १७।१।२९)

(९७१) ब्रह्मा। त्रिष्टुप्।

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम्।
मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः २९

(११) चन्द्रमाः।×

॥२९१॥ (ऋ० १०।८५।१९)*

(९७२) सावित्री सूर्या ऋषिका। त्रिष्टुप्।

नवोनवो भवति जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो वि दधात्यायन् प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः १९

॥२९२॥ (ऋ० १०।९०।१३)+

(९७३) नारायणः। अनुष्टुप्।

चन्द्रमा मनसो जात—श्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत १३

॥२९३॥ [९७४-७९] (वा० य० १।२८)

पुरा क्रूरस्य विसृपो विरप्शिन्नुदादाय पृथिवीं जीवदानुम्।
यामैरयँश्चन्द्रमसि स्वधाभिस्तामु धीरासो अनुदिश्य यजन्ते २८ ९७४

×दे० [आयुर्वेद०] ६-७,३९,६८,७१,८८,९१,११६,१२३,१५४,२३२,२४५,२६८,२७४,३१२ सूक्तानि द्रष्टव्यानि।
* अथर्व० ७,८१,२; १४,१,२४; + अथर्व० १९,६,७।

॥२९४॥

चन्द्राय स्वाहा (वा० य० २२।२८)※ चन्द्रमसे किलासम् । (वा० य० ३०।२१) २८ ९७५

॥२९५॥ (वा० य० २३।४,१०)

एष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा ।
यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा संबभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा ४
सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् १०

॥२९६॥ (वा० य० ३१।१२)

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत १२

॥२९७॥ (वा० य० ३३।९०)

चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्रदत् ९०

॥२९८॥ (अथर्व० १।३।४)

(९८०-९०) अथर्वा । पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्मा शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृष्ण्यम् ।
तेना ते तन्वेऽ३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बर्हिष्टे अस्तु बालिति ४ ९८०

॥२९९॥ (अथर्व० २।२२।१-५)

(एकावसानम्) १-४ निचृद्विषमा गायत्री, ५ भुरिग्विषमा ।

चन्द्र यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः १
चन्द्र यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २
चन्द्र यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ३
चन्द्र यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ४
चन्द्र यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽ३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ५

॥३००॥ (अथर्व० ५।२४।१०) चतुष्पदातिशाकरी ।

चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा १० ९८१

※ वा० य० २२,२९-३०; ३९,२ । अथर्व० १९,४३,४ ।

॥३०१॥ (अथर्व० ६।७८।१-२) अनुष्टुप् ।

तेन भूतेन हविषायमा प्यायतां पुनः ।
ज्यायां यामस्मा आवाक्षुस्तां रसेनाभि वर्धताम् १
अभि वर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम् । रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ २

॥३०२॥ (अथर्व० १८।४।८९) पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः ।×

चन्द्रमा अप्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ८९

॥३०३॥ (अथर्व० १९।१९।४) अनुष्टुप् ।

चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ४ ९९०

॥३०४॥ (अथर्व० ११।६।७)
(९९१) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादहोरात्रे अथो उषाः ।
सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति ७

॥३०५॥ (अथर्व० १९।२७।२,५)
(९९२-९३) भृग्वङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यः ।
माद्भ्यस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वातः प्राणेन रक्षतु २
घृतेन त्वा समुक्षाम्यग्न आज्येन वर्धयन् ।
अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दभन् ५

॥३०६॥ (अथर्व० १९।४३।४)
(९९४) ब्रह्मा । व्यवसाना शङ्कुमती पथ्यापङ्क्तिः ।

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह । चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे ४

चन्द्रमा-सहचारी-देवगणः ।

(१) सूर्यः चन्द्रश्च ।

॥३०७॥ (अथर्व० २।१५।३)
(९९५-९६) ब्रह्मा । त्रिपाद् गायत्री ।

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा बिभेः ३ ९९५

× ऋ० १।१०५।१; सा० ४१७

(२) द्यौः, पृथिवी, सूर्यः, चन्द्रमाः, अन्तरिक्षं च ।

॥३०८॥ (अथर्व० ८।१।१२) त्र्यवसाना पञ्चपदा जगती ।

मा त्वा क्रव्यादभि मंस्तारात् संकसुकाच्चर ।
रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च । अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्याः १२

॥३०९॥ (अथर्व० ११।६।५)

(९९७) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा ।
विश्वानादित्यान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ५

(३) दिक्चन्द्रमसः ।

॥३१०॥ (अथर्व० ४।३९।७-८)

(९९८-९९) अङ्गिराः । ७ त्रिपदा महाबृहती, ८ संस्तारपङ्क्तिः ।

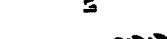
दिक्षु चन्द्राय समनमन्त्स आर्ध्नोत् ।
यथा दिक्षु चन्द्राय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु ७
दिशो धेनवस्तासां चन्द्रो वत्सः । ता मे चन्द्रेण वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा ८

(४) अग्निः, चन्द्रमाश्च ।

॥३११॥ (अथर्व० ६।८६।१)

(१०००) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

समुद्र ईशे स्रवतामग्निः पृथिव्या वशी ।
चन्द्रमा नक्षत्राणामीशे त्वमेकवृषो भव २



(१२) रात्रिः ।

॥३१२॥ (ऋ० १।११३।१ [उत्तरार्धः])

(१००१) कुत्स आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

यथा प्रसूता सवितुः सवायँ एवा रात्र्युषसे योनिमारैक् १ १००१

॥३१३॥ (ऋ० १०।१०।९)

(१००२) वैवस्वतो यमः ऋषिः । त्रिष्टुप् ।

रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य विमृयादजामि ९

॥३१४॥ (ऋ० १०।१२७।१-८)

(१००३-१०१०) कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी । गायत्री ।

रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः । विश्वा अधि श्रियोऽधित १
ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्वतः । ज्योतिषा बाधते तमः २
निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती । अपेदु हासते तमः ३ १००५
सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि । वृक्षे न वसतिं वयः ४
नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः । नि श्येनासश्चिदर्थिनः ५
यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये । अथा नः सुतरा भव ६
उप मा पेपिशत् तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित । उप ऋणेव यातय ७
उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः । रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ८ १०१०

॥३१५॥ [१०११-१६] (वा० य० ३।१८)

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय १८

॥३१६॥ (वा० य० २३।१२)×

द्यौरासीत् पूर्वचित्तिरश्व आसीद् बृहद्वयः ।
अविरासीत् पिलिप्पिला रात्रिरासीत् पिशङ्गिला १२

॥३१७॥ (वा० य० २४।२५)

अह्ने पारावतानालभते रात्र्यै सीचापूरहोरात्रयोः सन्धिभ्यो
जतूर्मासेभ्यो दात्यौहान्त्संवत्सरायर्तुभ्यः सुपर्णान् २५

॥३१८॥ (वा० य० ३०।२१)

रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् २१

॥३१९॥ (वा० य० ३४।३२)*

आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदाꣳसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः ३२ १०१५

× वा० य० २३।५४; * अथर्व० १९.४७.१ ।

॥३२०॥ (वा० य० ३७।२१ [उत्तरार्धः])+

रात्रिः केतुना जुषताꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा २१

॥३२१॥ (अथर्व० १।१६।१)

(१०१७) चातनः । अनुष्टुप् ।

येमावास्यांꣳ रात्रिमुदस्थुर्व्रजमत्रिणः ।
अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्मभ्यमधि ब्रवत् १

॥३२२॥ (अथर्व० २।२५।२)

(१०१८-१९) ब्रह्मा । त्रिपाद् गायत्री ।

यथाहश्च रात्रीं च न बिभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा बिभेः २

॥३२३॥ (अथर्व० १३।४।३०) प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

स वै रात्र्या अजायत तस्माद् रात्रिरजायत ३०

॥३२४॥ (अथर्व० ५।५।१)

(१०२०-२९) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

रात्री माता नभः पितार्यमा ते पितामहः ।
सिलाची नाम वा असि सा देवानामसि स्वसा १ १०२०

॥३२५॥ अथर्व० १५।२।५,१३,२१,२९) द्विपदाऽऽर्ची गायत्री ।

श्रद्धा पुंश्चली मित्रो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मालिर्मणिः ५
उषाः पुंश्चली मन्त्रो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ० १३
इरा पुंश्चली हसो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ० २१
विद्युत् पुंश्चली स्तनयित्नुर्मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ० २९

॥३२६॥ (अथर्व० १५।१३।१,३,५,७,९)

१ साम्न्युष्णिक्, ३,५,७ आसुरी गायत्री, ९ द्विपदानिचृद्गायत्री ।

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्य एकां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति १ १०२५
तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यो द्वितीयां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति ३
तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यस्तृतीयां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति ५
तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यश्चतुर्थीं रात्रिमतिथिर्गृहे वसति ७
तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽपरिमिता रात्रीरतिथिर्गृहे वसति ९ १०२९

+ वा० य० ३८,१६ ।

॥३२७॥ (अथर्व० ६।१२८।२)
(१३०) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

भद्राहं नो मध्यंदिने भद्राहं सायमस्तु नः ।
भद्राहं नो अह्नो प्राता रात्री भद्राहमस्तु नः २ १०३०

॥३२८॥ (अथर्व० १९।४७।२-९)
(१०३१-५१) गोपथः । अनुष्टुप्; २ पञ्चपदाऽनुष्टुब्गर्भा पराऽतिजगती; ६ पुरस्ताद्बृहती; ७ त्र्यवसाना षट्पदा जगती ।

न यस्याः पारं ददृशे न योयुवद् विश्वमस्यां नि विशते यदेजति ।
अरिष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रि पारमशीमहि भद्रे पारमशीमहि २
ये ते रात्रि नृचक्षसो द्रष्टारो नवतिर्नव । अशीतिः सन्त्यष्टा उतो ते सप्त सप्ततिः ३
षष्टिश्च षट् च रेवति पञ्चाशत् पञ्च सुम्नयि । चत्वारश्चत्वारिंशच्च त्रयस्त्रिंशच्च वाजिनि ४
द्वौ च ते विंशतिश्च ते रात्र्येकादशावमाः । तेभिर्नो अद्य पायुभिर्नु पाहि दुहितर्दिवः ५
रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत मा नो दुःशंस ईशत ।
मा नो अद्य गवां स्तेनो मावीनां वृक ईशत ६ १०३५
माश्वानां भद्रे तस्करो मा नृणां यातुधान्यः ।
परमेभिः पथिभिः स्तेनो धावतु तस्करः । परेण दत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्षतु ७
अध रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु । हनू वृकस्य जम्भयास्तेन तं द्रुपदे जहि ८
त्वयि रात्रि वसामसि स्वपिष्यामसि जागृहि ।
गोभ्यो नः शर्म यच्छाश्वेभ्यः पुरुषेभ्यः ९

॥३२९॥ (अथर्व० १९।४८।१-६)
अनुष्टुप्; १ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; २ त्रिपदा विराडनुष्टुप्; ३ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्; ५ पथ्यापङ्क्तिः।

अथो यानि च यस्मा ह यानि चान्तः परीणहि । तानि ते परि दद्मसि १
रात्रि मातरुपसे नः परि देहि । उषा नो अह्ने परि ददात्वह स्तुभ्यं विभावरि २ १०४०
यत् किं चेदं पतयति यत् किं चेदं सरीसृपम् ।
यत् किं च पर्वतायासत्वं तस्मात् त्वं रात्रि पाहि नः ३
सा पश्चात् पाहि सा पुरः सोत्तरादधरादुत ।
गोपाय नो विभावरि स्तोतारस्त इह स्मसि ४ १०४२

---

* अथर्व० १९।४७।१=वा० य० ३४,३२ ।

ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति ये च भूतेषु जाग्रति ।
पशून् ये सर्वान् रक्षन्ति ते न आत्मसु जाग्रति ते नः पशुषु जाग्रति ५
वेद वै रात्रि ते नाम घृताची नाम वा असि ।
तां त्वां भरद्वाजो वेद सा नो वित्तेऽधि जाग्रति ६

॥३३०॥ (अथर्व० १९।५०।१-७) अनुष्टुप् ।

अधा रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु । अक्षौ वृकस्य निर्जह्यास्तेन तं द्रुपदे जहि १ १०४५
ये ते रात्र्यनड्वाहस्तीक्ष्णशृङ्गाः स्वाशवः । तेभिर्नो अद्य पारयाति दुर्गाणि विश्वहा २
रात्रीरात्रिमरिष्यन्तस्तरेम तन्वा३ वयम् । गम्भीरमप्लवा इव न तरेयुररातयः ३

यथा शाम्याकः प्रपतन्नपवान् नानुविद्यते । एवा रात्रि प्र पातय यो अस्माँ अभ्यघायति ४
अप स्तेनं वासो गोअजमुत तस्करम् । अथो यो अर्वतः शिरोऽभिधाय निनीषति ५
यदद्या रात्रि सुभगे विभजन्त्ययो वसु । यदेतदस्मान् भोजय यथेदन्यानुपायसि ६ १०५०
उषसे नः परि देहि सर्वान् रात्र्यनागसः । उषा नो अह्ने आ भजादहस्तुभ्यं विभावरि ७

॥३३१॥ (अथर्व० १९।४९।१-१०)

(१०५०-६०) गोपथः, भरद्वाजश्च । अनुष्टुप्; १-५,८ त्रिष्टुप्, ६ आस्तारपङ्क्तिः; ७ पथ्यापङ्क्तिः; १० व्यवसाना षट्पदा जगती ।

इषिरा योषा युवतिर्दमूना रात्री देवस्य सवितुर्भगस्य ।
अश्वक्षभा सुहवा संभृतश्रीरा पप्रौ द्यावापृथिवी महित्वा १

अति विश्वान्यरुहद् गम्भीरो वर्षिष्ठमरुहन्त श्रविष्ठाः ।
उशती रात्र्यनु सा भद्राभि तिष्ठते मित्र इव स्वधाभिः २
वर्ये वन्दे सुभगे सुजात आजगन् रात्रि सुमना इह स्याम् ।
अस्मांस्त्रायस्व नर्याणि जाता अथो यानि गव्यानि पुष्ट्या ३
सिंहस्य रात्र्युशती पीपस्य व्याघ्रस्य द्वीपिनो वर्च आ ददे ।
अश्वस्य ब्रध्नं पुरुषस्य मायुं पुरु रूपाणि कृणुषे विभाती ४ १०५५
शिवां रात्रिमनुसूर्यं च हिमस्य माता सुहवा नो अस्तु ।
अस्य स्तोमस्य सुभगे नि बोध येन त्वा वन्दे विश्वासु दिक्षु ५
स्तोमस्य नो विभावरि रात्रि राजेव जोषसे ।
आसाम् सर्ववीरा भवाम् सर्ववेदसो व्युच्छन्तीरनूषसः ६ १०५७

शम्यां ह नाम दधिषे मम दिप्सन्ति ये धना ।
रात्रीहि तानसुतपा य स्तेनो न विद्यते यत् पुनर्न विद्यते ७
भद्रासि रात्रि चमसो न विष्टो विष्वं गोरूप युवतिर्बिभर्षि ।
चक्षुष्मती मे उशती वपूंषि प्रति त्वं दिव्या न क्षाममुक्थाः ८
यो अद्य स्तेन आयत्यघायुर्मर्त्यो रिपुः ।
रात्री तस्य प्रतीत्य प्र ग्रीवाः प्र शिरो हनत् ९ १०६०
प्र पादौ न यथायति प्र हस्तौ न यथाशिषत् ।
यो मलिम्लुरुपायति स संपिष्टो अपायति ।
अपायति स्वपायति शुष्के स्थाणावपायति १०

॥३३२॥ [१०६२-६७] (वा० य० ६।२१)

अहोरात्रे गच्छ स्वाहा २१

॥३३३॥ (वा० य० १४।३०)

नवदशभिरस्तुवत शूद्रार्यावसृज्येतामहोरात्रे अधिपत्नी आस्ताम् ३०

॥३३४॥ (वा० य० १८।२३)

अहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् २३

३३५॥ (वा० य० २२।२८)

अहोरात्रेभ्यः स्वाहा २८ १०६५

॥३३६॥ (वा० य० २३।४१)

अर्धमासाः परूंषि ते मासा आ च्छर्यन्तु शम्यन्तः ।
अहोरात्राणि मरुतो विलिष्टꣳ सूदयन्तु ते ४१

॥३३७॥ (वा० य० ३१।२२)

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण २

॥३३८॥ (अथर्व० ६।१२८।३)

(१०६८) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः सूर्याचन्द्रमसाभ्याम् ।
भद्राहमस्मभ्यं राजन्छकधूम् त्वं कृधि ३ १०६८

॥३३९॥ (अथर्व० १५।२।२२)
(१०६९-७३) अथर्वा । आसुरी गायत्री ।

अहश्च रात्रीं च परिष्कन्दौ मनो विपथम् २२

॥३४०॥ (अथर्व० १५।६।१७-१८) १७ आर्ची पङ्क्तिः, १८ विराड् जगती ।

तमृतवश्चार्तवाश्च लोकाश्च लौक्याश्च मासाश्चार्धमासाश्चाहोरात्रे चानुव्यचलन् १७ १०७०
ऋतूनां च वै स आर्तवानां च लोकानां च लौक्यानां च मासानां चार्धमासानां
चाहोरात्रयोश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद १८

॥३४१॥ (अथर्व० १५।१८।४-५) आर्च्यनुष्टुप् ।

अहोरात्रे नासिके दितिश्चादितिश्च शीर्षकपाले संवत्सरः शिरः ४
अह्नां प्रत्यङ् व्रात्यो रात्र्या प्राङ् नमो व्रात्याय ५

॥३४२॥ (अथर्व० १६।८।२४)+
(१०७४) यमः । आसुरी जगती ।

सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मोचि २४

रात्रि-सहचारी-देवगणः ।

रात्रिः, धेनुः ।

॥३४३॥ (अथर्व० ३।१०।२-४)
(१०७५-७७) २-३ अनुष्टुप्, ४ त्रिष्टुप् ।

यां देवाः प्रतिनन्दन्ति रात्रिं धेनुमुपायतीम् ।
संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली २ १०७५
संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे ।
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ३
इयमेव सा या प्रथमा व्यौच्छदास्वितरासु चरति प्रविष्टा ।
महान्तो अस्यां महिमानो अन्तर्वधूर्जिगाय नवगज्जनित्री ४ १०७७

+ दै० [आयुर्वेद०] १८९२ ।

॥३४४॥ (अथर्व० १०।२।६)

(१०७८) नारायणः । यामः । जगती ।

कः सप्त खानि वि ततर्द शीर्षणि कर्णाविमौ नासिके चक्षणी मुखम्
येषां पुरुत्रा विजयस्य मह्मनि चतुष्पादो द्विपदो यन्ति यामम् ६

(१३) पूर्णिमा ।

॥३४५॥ (अथर्व० ७।८०।१-२,४)

(१०७९-८२) अथर्वा । त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप् ।

पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय ।
तस्यां देवैः संवसन्तो महित्वा नाकस्य पृष्ठे समिषा मदेम १
वृषभं वाजिनं वयं पौर्णमासं यजामहे ।
स नो ददात्वाक्षितां रयिमनुपदस्वतीम् २ १०८०
पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीदह्नां रात्रीणामतिशर्वरेषु ।
ये त्वां यज्ञैर्यज्ञिये अर्धयन्त्यमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः ४

॥३४६॥ (अथर्व० १५।१६।१) साम्न्युष्णिक् ।

तस्य व्रात्यस्य । योऽस्य प्रथमोऽपानः सा पौर्णमासी १

(१४) राका ।

॥३४७॥ (ऋ० २।३२।४-५)*

(१०८३-८४) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

राकामहं सुहवा सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना ।
सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम् ४
यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि ।
ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे रराणा ५

(१५) अमावास्या ।

॥३४८॥ (अथर्व० ७।७९।१-४)

(१०८५-९१) अथर्वा । त्रिष्टुप्, १ जगती ।

यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा ।
तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम् १
अहमेवास्म्यमावास्याऽसौ मामा वसन्ति सुकृतो मयीमे ।
मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्रज्येष्ठाः समगच्छन्त सर्वे २ १०८६

* अथर्व० ७,४८,१-२ ।

आगन् रात्री संगमनी वसूनामूर्जी पुष्टं वस्वावेशयन्ती ।
अमावास्या ये हविषा विधेमोर्जं दुहाना पयसा न आगन् ३
अमावास्ये न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान ।
यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ४

॥३४९॥ (अथर्व० १५।२।१४) साम्नी पङ्क्तिः ।

अमावास्या च पौर्णमासी च परिष्कन्दौ मनो विपथम् १४

॥३५०॥ (अथर्व० १५।१६।३) साम्न्युष्णिक् ।

तस्य व्रात्यस्य । योऽस्य तृतीयोऽपानः सामावास्या ३ १०९०

॥३५१॥ (अथर्व० १५।१७।९) द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

तस्य व्रात्यस्य । यदादित्यमभिसंविशन्त्यमावास्यां चैव तत् पौर्णमासीं च ९

(१६) सिनीवाली ।

॥३५२॥ (ऋ० २।३२।६-७)+

(१०९२-९३) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा ।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः ६
या सुबाहुः स्वङ्गुरिः सुषूमा बहुसूवरी ।
तस्यै विश्पत्न्यै हविः सिनीवाल्यै जुहोतन ७

॥३५३॥ (अथर्व० ७।४६।३)

(१०९४) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

या विश्पत्नीन्द्रमसि प्रतीची सहस्रस्तुकाभियन्ती देवी ।
विष्णोः पत्नि तुभ्यं राता हवींषि पतिं देवि राधसे चोदयस्व ३

॥३५४॥ [१०९५] (वा० य० ११।५५)×

सꣳसृष्टां वसुभी रुद्रैर्धीरैः कर्मण्यां मृदम् ।
हस्ताभ्यां मृद्वीं कृत्वा सिनीवाली कृणोतु ताम् ५५

॥३५५॥ (अथर्व० ९।४।१४)

(१०९६) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

गुदा आसन्त्सिनीवाल्याः सूर्यायास्त्वचमब्रुवन् ।
उत्थातुरब्रुवन् पद ऋषभं यदकल्पयन् १४ १०९६

+ वा० य० ३४,१०, अथर्व० ७,४६,१-२ । × वा० य० ११,५६=दै० [अदितिः०] ९

सिनीवाली-सहचारी-देवगणः ।

(१) गुंगू-सिनीवाली-राका-सरस्वतीन्द्राणीवरुणानीः ।

॥३५६॥ (ऋ० २।३२।३)

(१०९७) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

या गुङ्गूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती । इन्द्राणीमह्व ऊतये वरुणानीं स्वस्तये ३

(२) बृहस्पतिः, सिनीवाली, अनुमतिः ।

॥३५७॥ (अथर्व० २।२६।२)

(१०९८) सविता । त्रिष्टुप् ।

इमं गोष्ठं पशवः सं स्रवन्तु बृहस्पतिरा नयतु प्रजानन् ।
सिनीवाली नयत्वाग्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नि यच्छ २

(३) सिनीवाली-सरस्वत्यश्विनः ।

॥३५८॥ (अथर्व० ५।२५।३)

(१०९९) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा ३

(४) प्रजापतिः, अनुमतिः, सिनीवाली ।

॥३५९॥ (अथर्व० ६।११।३)

(११००) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

प्रजापतिरनुमतिः सिनीवाल्यचीकल्पत् । स्त्रैषूयमन्यत्र दधत् पुमांसमु दधादिह ३ ११००

(५) विष्णुः, सरस्वती, सिनीवाली, भगः ।

॥३६०॥ (अथर्व० १४।२।१५,२१)

(११०१-११०२) सूर्या सावित्री । १५ भुरिक्, २१ अनुष्टुप् ।

प्रतिं तिष्ठ विराडसि विष्णुरिवेह सरस्वति ।
सिनीवालि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत् १५
शर्म वर्मैतदा हरास्यै नार्या उपस्तरे । सिनीवालि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत् २१

(६) सरस्वती, सिनीवाली ।

॥३६१॥ (अथर्व० १९।३१।१०)

(११०३) सविता । अनुष्टुप् ।

आ मे धनं सरस्वती पयस्फातिं च धान्यम् । सिनीवाल्युपा वहादुयं चौदुम्बरो मणिः १० ११०३

---

* दे० [अश्विनौ०] ६८९ ।

(१७) कुहूः ।

॥३६२॥ (अथर्व० ७।४७।१-२)

(११०४-११०५) अथर्वा । १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

कुहूं देवीं सुकृतं विप्रनाधसमस्मिन् यज्ञे सुहवा जोहवीमि ।
सा नो रयिं विश्ववारं नि यच्छाद् ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम् १
कुहूर्देवानाममृतस्य पत्नी हव्या नो अस्य हविषो जुषेत ।
शृणोतु यज्ञमुशती नो अद्य रायस्पोषं चिकितुषी दधातु २ ११०५

(१८) नक्षत्राणि ।

॥३६३॥ [११०६-१३] (वा० य० १४।१९)

नक्षत्राणि छन्दः १९

॥३६४॥ (वा० य० १८।१८,४०)

नक्षत्राणि च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् १८
तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम । ताभ्यः स्वाहा ४०

॥३६५॥ (वा० य० २२।२८)×

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा २८

॥३६६॥ (वा० य० २३।४३)

द्यौस्ते पृथिव्युन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते ।
सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया ४३ १११०

॥३६७॥ (वा० य० २५।९) ५

नक्षत्राणि रूपेण ९

॥३६८॥ (वा० य० ३०।१०,२१)

प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम् ॥१०॥ नक्षत्रेभ्यः किर्मिरम् २१

॥३६९॥ (अथर्व० २।२।४)

(१११४) मातृनामा । त्रिपाद्विराण्नाम गायत्री ।

अभ्रिये दिद्युन्नक्षत्रिये या विश्वावसुं गन्धर्वं सचध्वे ।
ताभ्यो वो देवीर्नम इत् कृणोमि ४

॥३७०॥ (अथर्व० ३।७।७)

(१११५) भृग्वङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

अपवासे नक्षत्राणामपवास उषसामुत । अप रक्षांसि दुर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छतु ७ १११५

× वा० य० २२,२९;३९,२ ।

॥३७१॥ (अथर्व० ६।१२८।१,४)
(१११६-१७) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

शकधूमं नक्षत्राणि यद् राजानमकुर्वत । भद्राहमस्मै प्रायच्छन्निदं राष्ट्रमसादिति १
यो नो भद्राहमकरः सायं नक्तमथो दिवा । तस्मै ते नक्षत्रराज शकधूम सदा नमः ४

॥३७२॥ (अथर्व० ९।७।१५)
(१११८-१९) ब्रह्मा । साम्नी बृहती ।

विश्वव्यचाश्वमौषधयो लोमानि नक्षत्राणि रूपम् १५

॥३७३॥ अथर्व० १३।६।२८) प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

तस्यामू सर्वा नक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह २८

॥३७४॥ (अथर्व० १०।२।२२-२३)
(११२०-२१) नारायणः । अनुष्टुप् ।

केन देवाँ अनु क्षियति केन दैवजनीर्विशः । केनेदमन्यन्नक्षत्रं केन सत् क्षत्रमुच्यते २२ ११२०
ब्रह्म देवाँ अनु क्षियति ब्रह्म दैवजनीर्विशः ।
ब्रह्मेदमन्यन्नक्षत्रं ब्रह्म सत् क्षत्रमुच्यते २४

॥३७५॥ (अथर्व० ११।६।१०)
(११२२) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान् ।
समुद्रा नद्यो विशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः १०

॥३७६॥ (अथर्व० १५।१७।४)
(११२३) अथर्वा । साम्न्युष्णिक् ।

तस्य व्रात्यस्य । योऽस्य चतुर्थो व्यानस्तानि नक्षत्राणि ४

॥३७७॥ (अथर्व० १९।७।१-५)
(११२४-३४) गार्ग्यः । त्रिष्टुप्, ४ भुरिक् ।

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि ।
तुमिशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम् १
सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा ।
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे २
पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु ।
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम् ३ ११२६

अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढा ऊर्जं देव्युत्तरा आ वहन्तु ।
अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम् ४
आ मे महच्छतभिषग् वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्म ।
आ रेवतीं चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयिं भरण्य आ वहन्तु ५

॥३७८॥ (अथर्व० १९।८।१-५,७) त्रिष्टुप्, १ विराड् जगती ।

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु ।
प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु १
अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे ।
योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु २ ११३०
स्वस्तिं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु ।
सुहवमग्ने स्वस्त्यमत्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दन् ३
अनुहवं परिहवं परिवादं परिक्षवम् । सर्वं मे रिक्तकुम्भान् परा तान् सवितः सुव ४
अपपापं परिक्षवं पुण्यं भक्षीमहि क्षवम् । शिवा ते पाप नासिकां पुण्यगन्धाभि मेहताम् ५
स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु ७

नक्षत्राणि-सहचारी-देवगणः ।

(१) द्यौः, चक्षुः, नक्षत्राणि, सूर्यः ।

॥३७९॥ (अथर्व० ६।१०।३)

(११३५) शन्तातिः । साम्नी बृहती ।

दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः सूर्यायाधिपतये स्वाहा २ ११३५

(२) सूर्यः, चन्द्रः, नक्षत्राणि ।

॥३८०॥ (अथर्व० १५।६।५-६)

(११३६-३७) अथर्वा । ५ साम्नी त्रिष्टुप्, ६ निचृद्बृहती ।

तमृतं च सत्यं च सूर्यश्च चन्द्रश्च नक्षत्राणि चानुव्यचलन् ५
ऋतस्य च वै स सत्यस्य च सूर्यस्य च चन्द्रस्य च नक्षत्राणां च
प्रियं धाम भवति य एवं वेद ६ ११३७

अदितेः, आदित्यानां च

गुणबोधक-पदानि ।

(१) अदितिः ।

अजरन्ती वा. य. २१,५; १२
अदितिः (सर्वत्र)
अनागाः वा. य. २१,७; १४
अनेहाः वा. य. २१,६; १३
अन्तरिक्षम् १,८९,१०; १
अरिष्टभर्मन् ८,१८,४; २
अस्रजन्ती वा. य. २१,६-७; १३-१४
उपस्थे यस्याः उरु अन्तरिक्षम् अ. ७,६,४; १६
उरुव्रजः ८,६७,१२; ८
उरूची वा. य. २१,५; १२
ऋतस्य पत्नी वा. य. २१,५; १२
ऋतावरी ८,२५,३; ३४९
कृण्वाना स्योनम् वा. य. २९,४; १५
जनाः पञ्च १,८९,१०; १
जनित्वम् ”
जातम् ”
जुषाणा आ वा. य. २९,४; १५
तुविक्षत्रा वा. य. २१,५; १२
देवी ८,१८,४; २ । ६७,१०; ६
दैवी नौः वा. य. २१,६; १३
द्यौः १,८९,१०; १ । वा. य. २१,६; १३
नौः दैवी वा. य. २१,६; १३
पञ्चजनाः १,८९,१०; १
पत्नी ऋतस्य वा. य. २१,५; १२
पिता १,८९,१०; १
पुत्रः ”
पुरुप्रिया ८,१८,४; २
पृथिवी वा. य. २१,६; १३
मतिः ८,१८,७; ५
मही वा. य. ११,५६; ९ । २१,५; १२ । अ. ७,६,४; १६ । ऋ. ८,२५,३; ३४९
माता १,८९,१०; १ । अ. ७,६,४; १६ । ऋ. ८,२५,३; ३४९
माता मित्रस्य अर्यम्णः वरुणस्य च ८,४७,९; ८०
माता सुव्रतानाम् वा. य. २१,५; १२
राजपुत्रा २,२७,७; २७
विश्वे देवाः १,८९,१०; १
(विश्वात्मत्वं आदित्याः) १,८९,१०; १
शतारित्रा वा. य. २१,७; १४
सजोषाः वा. य. २९,४; १५
सुत्रामा वा. य. २१,६; १३
सु-नौः वा. य. २१,७; १४
सु-प्रणीतिः वा. य. २१,५-६; १२-१३
सुमृळीका ८,६७,१०; ६
सुव्रतानां माता वा. य. २१,५; १२
सुशर्मा वा. य. २१,५-६; १२-१३
स्योनं कृण्वाना वा. य. २९,४; १५
स्वरित्रा वा. य. २१,६; १३

(२) आदित्याः ।

अग्निजिह्वाः ७,६६,१०; ५०
अदब्धासः-ब्धाः २,२७,९; २९ । ८,६७,१३; ९४ । ८,१०१,६; १०३
अदितेः पुत्रासः ८,१८,५; ३ । १०,१८५,३; १०६
दै०[अदितिः०] १३
अद्रुतैनसः ८,६७,७; ९१
अद्रुहः ८,१९,३४; ७० । ६७,१३; ९४
अनवद्याः २,२७,२; २२
अनिमिषाः २,२७,९; २९

अनृतद्विषः ७,६६,१३; ५३
अनेहसः ८,१८,५; ३
अमृताः ८,१०१,६; १०३
अरिष्टाः २,२७,२; २२
अवृजिनाः २,२७,२; २२
अस्वप्नजः २,२७,९; २९
आदित्याः-त्यासः वा बहुशः सर्वत्र ।
आशवः × ८,४७,६; ७७
उरवः २,२७,३; २३
उरुचक्रयः ८,१८,५; ३
उरुशंसः २,२७,९; २९
ऊतयः अनेहसः (येषाम्) ८,४७,१-१३; ७२ ८४
ऊतयः सुऊतयः (येषाम्) ८,४७,१-१३; ७२ ८४
ऋणानि चयमानाः २,२७,४; २४
ऋतजाताः ७,६६,१३; ५३
ऋतनिभ्यः २,२७,१२; ३२
ऋत(ता)वानः २,२७,४; २४ । ७,६६,१३; ५३
ऋत(ता)वृधः ७,६६,१०,१३; ५०,५३
ऋतस्य रथ्यः ७,६६,१२; ५२
क्षत्रियाः ८,६७,१; ८५
क्षितीनां मूर्धानः ८,६७,१३; ९४
गम्भीराः २,२७,३; २३
गोपाः विश्वस्य भुवनस्य ७,५१,२; ३९ । २,२७,४; २४
चयमानाः ऋणानि २,२७,४; २४
चर्षणीसहः ८,१९,३५; ७१
जगत् स्थाः धारयन्तः २,२७,४; २४
तुष्टुवानाः ७,५१,३; ४०
तिस्रः भूमीः धारयन् २,२७,८; २८
त्रीणि व्रतानि एषाम् २,२७,८; २८
त्री रोचना दिव्या धारयन्त २,२७,९; २९
त्रीन् द्यून् धारयन् २,२७,८; २८
त्रीणि विदथानि ये येमुः ७,६६,१०; ५०
दक्षक्रतवः (देवाः विशेष्यम्) वा. य. ४,११; १६६
दिवसन्तः २,२७,३; २३
दीर्घ(र्घा)धियः २,२७, ४; २४
देवाः (बहुषु स्थलेषु वर्तते ।)
देवत्राः वसवः ७,५२,१; ४१
धारपूताः १,२७,२,९; २२,२९
धारयन् तिस्रः भूमीः त्रीन् द्यून् २,२७,८; २८
धारयन्त त्री रोचना दिव्या २,२७,९; २९
धारयन्तः जगत् स्थाः (च) २,२७,४; २४
नित्याः २,२७,११; ३१
पन्थाः एषां अदब्धाः, अनर्वाणः, पायवः, सुगेवृधः ८,१८, २; ५५
पाकत्राः ८,१८,१५; ६२
पुत्रासः अदितेः ८,१८,५; ३
पुष्टयः २,२७,११; ३१
प्रचेतसः ८,४७,४; ७५ । ६७,१७; ९८
बहवः ७,६६,१०; ५०
भुवनस्य गोपाः २,२७,४; २४ । ७,५१,२; ३९
भूर्माः तिस्रः धारयन् २,२७,८, २८
भूर्यक्षाः २,२७,३; २३
मनोजाताः(देवाः विशेष्यम्) वा. य. ४,११; १६६
मनोयुजः (देवाः विशेष्यम्) वा. य. ४,११; १६६
महान्तः ८,४७,१; ७२
मूर्धनः क्षितीनाम् ८,६७,१३; ९४
यजत्राः २,२७,१६; ३६
रक्षमाणाः २,२७,४; २४
रथ्यः ऋतस्य ७,६६,१२; ५२
राजानः २,२७,१,३,११; २१,२३,३१। ७,६६,११; ५१। ८,१९,३५; ७१
राजानः व्रतस्य ७,६६,६; ४६
रिशादसः (अर्यमा) ७,६६,७; ४७
रोचना त्रीणि धारयन्त २,२७,९; २९
वरूथं, तेषां चित्रं, उक्थ्यम् ८,६७,३; ८७
वसवः ७,५२,१; ४१ । ८,१८,१५,१७; ६२,६४
विदथानि त्रीणि ये येमुः ७,६६,१०; ५०
विश्ववेदसः ८,१८,११; ५८ । ४७,३; ७४
व्रतानि त्रीणि विदथे एषाम् २,२७,८; २८
शुचयः २,२७,२,९; २२,२९

× अत्र 'आश, वः' इति पदद्वयमस्ति, किन्तु सायनभाष्ये 'आशवः' इति एकमेव पदम् । 'शीघ्रगमनाः' इत्यर्थेन गृहीतं वर्तते ।

सुदानवः ७,६६,५; ४५ । ८,५८,१२; ५९ । १९,३४; ७० । ६७,१६; ९७
सुमहसः ८,१८,१८; ६५
सुमृळीकाः ८,६७,१; ८५
सुशर्माणः ८,१८,४; २
सूरचक्षसः ७,६६,१०; ५०
सूरयः ८,१८,४; २
स्थाः जगत् धारयन्तः २,१७,४; २४
स्वयशसः ८,६७,१३; ९४
स्वराजः ७,६६,६; ४६
हवनश्रुतः ८,६७,५; ८९
हिरण्ययाः २,१७,९; २९

आदित्यः ।

अग्रे समवर्तत विश्वकर्मणः रसात् वा. य. ३१,१७; ११७
अदब्धः अ. १७,१,१२; १४५
अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५
अद्भ्यः सम्भृतः वा. य. ३१,१७; ११७
अनभीशुः १,१५२,५; २२६
अनश्वः " "
अरुणः वा. य. १७,६०; ११५
अरुषः वा. य. २३,५; ११६
अर्वा १,१५२,५; २२६
अश्मा वा. य. १७,६०; ११५
अस्तं इतः अ. १७,१,२३; १५६
" एण्यन् " "
" यन् " "
आदित्यः अ. १७,१,२४-२५; १५७-१५८ । अ. ४,३९, ५-६; १७८-१७९ । अ. ५,२१,१०; १८०
आरोहन् त्रिदिवम् अ. १७,१,१०; १४३
इन्द्रः + अ. १७,१,१-५,९-१४,१८; १३४-३८,१४२-४७,१५१
ईड्यः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
उक्षा समुद्रः वा. य. १७,६०; ११५
उद् आयन् अ. १७,१,२२; १५५
उद् इतः अ. १७,१,२२; १५५
" यन् " "
उपनिषद्यमानः न १,१५२,४; २२५
ऊर्ध्वसानुः १,१५२,५; २२६
ऋषिभिः सहस्कृतः वा. य. ३३,८३; १२०
कनिक्रदत् १,१५२,५; २२६
कनीनां जारः १,१५२,४; २२५
गर्भः (मित्रावरुणयोः) १,१५२,३; २२४
गृणानः दिवः अ. १७,१,१०; १४३
गोजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
चरन् वा. य. २३,५; ११६
जातः १,१५२,५; २२६
जारः कनीनाम् १,१५२,४; २२५
तनूः ते, अप्सु, पृथिव्यां, अन्तः अग्नौ, पवमाने स्वर्विदि अ. १७,१,१३; १४६
तन्वा अन्तरिक्षं व्यापिथ " "
त्रिदिवं आरोहन् अ. १७,१,१०; १४३
दिवः गृणानः " "
दिवः मध्ये निहितः वा. य. १७,६०; ११५
द्रप्सः वा. य. १३,५; ११३
द्यौः धेनुः तस्याः वत्सः अ. ४,३९,६; १७९
नभसी विभासि शोचिषा अ. १७,१,१६; १४९
निहितः दिवः मध्ये वा. य. १७,६०; ११५
पुरु(रू)वसुः वा. य. ३३,८१; ११८
पुरुहूतः अ. १७,१,११; १४४
पृथिव्यै संभृतः वा. य. ३१,१७; ११७
पृश्निः वा. य. १७,६०; ११५
प्रजापतिः अ. १७,१,१८; १५१
प्रयन् १,१५२,४; २२५
प्रियं धाम मित्रस्य वरुणस्य १,१५२,४; २२५
प्रियधामा अ. १७,१,१०; १४३
बाधमानः सुदिने अ. १७,१,१७; १५०
ब्रध्नः वा. य. २३,५; ११६
ब्रह्म वा. य. १३,३; ११२

+ अत्र अथर्व० १७,१,१-५,९-१४,१८: १३४-३८,१४२-४७,१५१ मन्त्रान्तर्गतानि विद्यमानानि पदानि इन्द्ररूपेण वर्तमानस्य आदित्यस्य ।

ब्रह्मणा वावृधानः अदब्धेन अ. १७,१,१२; १४५
भ्राजः अ १७,१,२०; १५३
महेन्द्रः अ. १७,१,१८; १५१
रसात् सम्भृतः वा. य. ३१,१७; ११७
रुचि. अ. १७,१,२१; १५४
रोचः " "
रोचन्ते रोचना दिवि वा. य. २३,५; ११६
वसानः अनवभृष्णा विततं १,१५२,४; २२५
वावृधानः ब्रह्मणा अदब्धेन १७,१,१२; १४५
विद्वान् अ. १७,१,१६; १४९
विभासि नभसी शोचिषा अ. १७,१,१६, १४९
विमानः वा. य. १७,५९; ११४
विराट् अ. १७,१,२१-२३; १५५-१५६
विवस्वान् वा. य. ८,५; १११
विश्वजित् अ. १७,१,११; १४४
विषासहिः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
विष्णुः + अ. १७,१,६-१९; १३९-१५२
शुक्रः अ. १७,१,२०; १५३
शोचिषा नभसी विभासि अ. १७,१,१६; १४९
सन्धनाजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
समुद्रः वा. य. १७,६०; ११५
समुद्र इव पप्रथे वा. य. ३३,८३; ११०
सम्राट् अ. १७,१,२१-२३; १५५-१५६
सर्ववित् अ. १७,१,११; १४४
सहमानः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
सहस्कृतः ऋषिभिः वा. य. ३३,८३; ११०
सहीयान् अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
सहोजितः " "
सासहानः " "
सुपर्णः वा. य. १७,६०; ११५
स्वराट् अ. १७,१,२१-२३; १५५-१५६
स्वर्जित् अ. १७,१,१-५; १३४-१३८

अदितेः, आदित्यानां च उपमासूची।

सुतीर्थं अर्वतः यथा ८,४७,११; ८२ तथा नः सुगमं अनु नेषथ।
अश्वी इव २,२७,१६; ३६ तान् रथेन अति येषम्।
यथा दिवि आदित्याय अ.४,३९,५; १७८ एवा मह्यं सं नमः।
कूलात् इव स्पशः अधि ८,४७,११, ८२ अव हि रुयत।
मं ता पुत्रं यथा उपस्थे वा. य. ११,५७; १० उखा अग्निं।
बन्धात् बद्धं इव ८,६७,१८; ९९ यत् बन्धात् नः मुमोचति।
स्रोतं बद्धं इव ८,६७,१४; ९५ वृकाणा आस्नात् नः मुमोचत।
यथा त्वं भ्राजता भ्राजः अ.१७ १,२०;१५३ एवाहं...भ्राज्यासं
युध्यन्त इव वर्मसु ८,४७,८; ७९ युष्मे देवाः अपि स्मसि।
यथा रथ्यः ८,४७,५; ७६ तथा नः दुर्गाणि अधा परि वृणजन्।
यथा त्वं रुच्या रोचः अ.१७,१,२१;१५४एवाहं पशुभिः रुचिषीय।
वयो यथा पक्षा उपरि ८,४७,२; ७३ अस्मे शर्म विमोचत।
वयः न पक्षाः ८,४७,३; ७४ तत् शर्म अस्मे अधि वि यन्तन।
भ्रात्रा इव २,२७,५; २५ युष्माकं प्रणीतौ दुरितानि परि वृज्याम्।
समुद्र इव वा. य. ३३,८३; ११० पप्रथे।

आदित्य-मन्त्रान्तर्गता अन्यदेवताः।

अंशः २,२७,१; २१
अग्निः ७,५१,३; ४०। अ. १६,४,४,७; १३०,१३३। १७,१,३०; १६३। वा य. ४,११; १६६
अदितिः २,२७,७,१४; १७,३४ । ७,५१,२; ३९। ६६,६; ४६। ८,६७,१४; ९५
अर्यमा २,२७,१-२,५-८; २१-२२,२५-२८। ७,५१,२, ३९। ६६,४,७,११-१२; ४४,४७,५१-५२। ८,१८, ३,२१; ५६,६८। १९,३५, ७१। ४७,९; ८०। ६७, २,४; ८६,८८। १०,१८५,१; १०४
अश्विना ७,५१,३; ४०। ८,१८,१०; ६०
आपः अथ. १६,४,६; १३२
आदित्यः वा.य.८,३,५; १०९,१११। १३,३,५; ११२-११३। १७,५९-६०; ११४-११५। २३,५; ११६। ३१,१७; ११७। ३३,८१,८३; ११८,१२०। अथ.१७,१,१७;१५०
इन्द्रः २,२७,१४; ३४। ७,५१,३; ४०। ८,१२,२०; ६७। ४७,५; ७६। ६७,८; ९२। वा.य. ८,१; १०८। ३३,८२; ११९। अथ. १७,१,१-३०; १३४-१६३
उषसः अथ. १६,४,६; १३२। १७,१,३०; १६३

+ अस्यां सूक्त्यां अथर्व० १७,१,६-१९, १३९-५२ मन्त्रान्तर्गतानि पदानि विष्णवात्मकस्य आदित्यस्य सन्ति।

ऋभवः ७,५१,३; ४०
दक्षः २,२७,१; २१। (वरुणविशेषणं वा।)
द्यावापृथिवी २,२७,१५; ३५। ७,५२,१; ४१। ८,१८, १६; ६३
धीः दैवी वा. य. ४,११; १६६
पर्वताः अथ. १७,१,३०; १६३
पिता ७,५३,३; ४३। [वरुणः प्रजापतिर्वा]
पितरः अथ. २,१२,४; १६७
बृहस्पतिः अथ. १६,३,५; १२५
भगः २,२७,१; २१। ७,६६,४; ४४
मरुतः ७,५१,३; ४०। ८,१८,२१; ६८
मातरिश्वा अथ. १६,३,४; १२४
मित्रः २,२७,१-२,६-८, १४; २१-२२, २६-२८, ३४। ७,५१,१; ३९। ५२,२; ४२। ६६,४,७,९,११-१२; ४४,४७,४९,५१-५२। ८,१८,३,२०,२९; ५६,६७-६८। १९,३५; ७१। ४७,१,९; ७२,८०। ६७,२,४; ८६, ८८। १०,१८१,१; १०४
मित्रावरुणौ २,२७,५; २५। ७,५२,१; ४१। अथ. १६, ४,७; १३३
यमः अथ. १६,४,४; १३०
रुद्राः अथ. २०,१३५,९; १८३
वरुणः २,२७,१२, ६-८, १०, १४, १७; २१-२२, २६-२८,३०,३४,३७। ७,५१,२; ३९। ५२,२; ४२। ७,६६,४,९,११-१२; ४७,४९,५१-५२। ८, १८, ३, २०-२१; ५६,६७-६८। १९,३५; ७१। ४७,१,९; ७२,८०। ६७,२,४; ८६,८८। १०,१८५,१; १४४। अथ. १९,१८,४; १६४
वसवः ७,५२,१; ४१। ८,१८,१५,१७; ६२,६४। [देवतान्तरं विशेषणं वा]
वायुः अथ. १६,४,४; १३०
विश्वे देवाः ७,५१,२; ४०। ५२,३; ४३
विष्णुः वा. य. ८,१; १०७। अथ. १७,१,७-१९,२४; १४०-१५२,१५७
सरस्वती अथ. १६ ४,४; १३०
सविता ७,६६,४; ४४। ८,१८,३; ५६
सूर्यः अथ. १६, ४, ४, १३०। १७, १, ६-८, ३०; १३९-१४१,१६३

(३) मित्रः।

अनागाः ७,६६,४; ४४
अभिष्टिशवाः ३,५९,८; १९२
आदित्यः ३,५९,२,५; १८६,१८९
उपसद्यः नमसा ३,५९,५; १८९
ऋतावान् ७,६२,३; ५६०
गृणते सुशेवः ३,५९,५; १८९
चर्षणीधृत् ३,५९,६; १९०
चन्द्रः ७,६२,३; ५६०
देवः ३,५९,६; १९०
नमसा उपसद्यः ३,५९,५; १८९
नमस्यः ३,५९,४; १८८
पन्यतमः ३,५९,५; १८९
प्रियः १,१५१,१; १८४
भुवाणः ३,५९,१; १८५
महान् ३,५९,५; १८९
याज्ञियः १,१५१,१; १८४। ३,५९,४; १८८
यातयज्जनः ३,५९,५; १८९
राजा ३,५९,४; १८८
विश्पतिः ८,२५,१६; ३५९
वेधा ३,५९,४; १८८
सप्रथाः ३,५९,७; १९१
सुक्षत्रः ३,५९ ४; १८८
सुशेवः ३,५९,४-५; १८८-८९

मित्रावरुणौ।

अकविहस्ता ५,६२,६; २४४
अश्वाश्वित् गातुवित्तरा ८,२५,९; ३५५
अदब्धा ७,६०,५; ३१३
अदाभ्या ७,६६,१७; ३४४
अदितिः युवोः माता १०,१३२,६; ३७६
अदितेः पुत्रा ७,६०,५; ३१३
अद्भुतकतू ५,७०,२; १८९।
अद्भुता ५,६६,४; १७१

अद्रुहा ५,६८,४; २८१ । ७,६६,१८; ३४५
अद्रुहाणा ५,७०,१; २८९ । सा. ९८६; ३९७
अनभिद्रुहा २,४१,५; २३४
अनृतस्य सेतू ७,६५,३; ३३८
अपसं दधाते १,२,९; १९८
अप्नराजौ १०,१३१,७; ३७७
अमूरा ७,६१,५; ३२५
अर्चनानसं बिभ्रती ५,६४,७; २६१
अर्या ७,६५,१; ३३७
अर्वाञ्चा १,१३७,३; २१२
अवोः (अवतोः) ६,६७,११; ३०८
असमा ६,६७,१; १९८
असुरा १,१५१,४; २१६ । ८,२५,४; ३५०
असुरा देवानाम् ७,६५,२; ३३७
अस्तुतः वां कः ? ५,६७,५; २७८
अस्मत्रा १,१३७,१,३; २१०,२१२
अस्मयू १,१५१,७; २१९
अह्रणीयमाना ५,६२,६; २४४
आतुजी ७,६६,१८; ३४५
आदित्या १,१३६,३; २०५। १,४१,६; २३५ । ५,६७,१; २७४ । ६९,४; २८७ । ७,६०,४; ३१२
आशाथे कृतुं बृहन्तम् १,२,८; १९७
इन्द्रा वा. य. १०,१६; ३७९
इषस्पती ५,६८,५; २८३
ईयचक्षसा ५,६६,६; २७३
ईशाना ५,७१,१; २९३
उग्रा-ग्रः ५,६३,३; २५० । १,१५२,२; २२३
उपस्तुता यज्ञेयज्ञे १,१३६,१; २०३.
उरुक्षया १,२,९; १९८
उरुचक्रयः ५,६७,४; २७७
उरुचक्षसा ८,१०१,२; ३६९
उरुशंसा ३,६१,१७; २३७
ऋता ६,६७,४; ३०१
ऋतस्य गोपा ५,६३,१; २४८ । ७,६४,२; ३३२
ऋतस्य ज्योतिषस्पती १,२३,५; २००
ऋतपेशसू (वरुणः) ५,६६,१; २६८
ऋत(ता)याना १,१३६,४; २०६। १५१,४,८;२१६,२२०। ५,६५,२; २६३। ६७,४; २७७। ८,२५,१,४,७-८; ३४७,३५०,३५३-५४
ऋत(ता)वृधा १,२,८; १९७ । २३,५; २०० । २,४१,४, २३३। ३,६२,१८; २३८। ५,६५,२; २६३। ७,६६,१९, ३४६
ऋतस्पृशः ५,६७,४; २७७
ऋतस्पृशा १,२,८; १९७
कवी १,२,९; १९८
काव्या ५,६६,४; २७१
क्रतुं बृहन्तं आशाथे १,२,८; १९७
क्षत्रिया ७,६४,२; ३३१ । ८,२५,८; ३५४
क्षयन्ता दिवि पृथिव्यां रजसः ७,६४,१; ३३१
गातुवित्तरा अक्षणाश्चित् ८,२५,९; ३५५
गृणाना जमदग्निना ३,६२,१८; २३८
गोपा ऋतस्य ५,६३,१; २४८। ७,६४,२; ३३२
गोपा विश्वस्य ८,२५,१; ३४७
घृतयोनी ५,६८,२; २८०
घृतस्नू १,१५३,१; २२९
घृताचीं धियं साधन्ता १,२,७; १९६
घृतान्नौ ६,६७,८; ३०५
घृतासुती १,१३६,१; २०३ । २,४१,५; २३५
घोरा ६,६७,४; ३०१
चर्षणीनां धर्तारा ५,६७,२; २७५
चिकित्वांसः ७,६०,७; ३१५
चिकेतति नः १,४३,३; २०२
चेतारः अनृतस्य भूरेः ७,६०,५; ३१३
जगन्वांसा परि ब्रह्मोः ५,६४,१; २५५
जज्ञाना १,२३,४; १९९
जनेजने ऋतवाना ५,६५,२; २६३
जायूवांसः दिवेदिवे १,१३६,३; २०५
जायमाना ६,६७,४; ३०१
जीरदानू ५,६२,३, २४१ । ७,६४,२; ३३२
जुषाणा ७,६६,१९; ३४६
ज्येष्ठतमा विश्वेषां सताम् ६,६७,१; २९८
ज्योतिषस्पती ऋतस्य १,२३,५; २००
त्रयसानौ ५,६६,५; २७२

तनया ८,२५,२; ३४८
तना ८,२५,२; ३४८
तनूपा ७,६६,३; ३४३
तुरासः ७,६०,८; ३१६
तुविजाता १,१,९; १९८ । ७,६३,१; ३४१
दक्षं दधाते १,१,९; १९८
दक्षपितरा ७,६६,१; ३४१
दक्षस्य सूनू ८,२५,५; ३५१
दधाते दक्षं अपसम् १,१,९; १९८
दर्शतः ५,६५,१; २६१
दानुनस्पती १,१३६,३; २०५ । २,४१,६; २३५
दिवस्पती ५,६३,३; २५०
दिविस्पृशा १,१३७,१; २१०
दिव्या ५,६९,४; २८७
दीर्घश्रुत् (वरुणः) ८,२५,१७; २६०
दीर्घश्रुत्तमा ५,६५,१; २६३ । ८,१०१,१; ३६९
दुरत्येतू ७,६५,३; ३३८
दूळभासः ७,६०,६; ३१४
देवः ७,६४,३; ३३३
देवा-वौ १,१५१,७; २१८ । ५,६६,१; २६८ । ६७,१; २७४ । ६८,१४; २८०,२८२ । ७,६०,१२; ३२० । ६१,१,७; ३२१,३२७ । ६६,१; ३४१ । ८,२५,१,४; ३४७,३५०
द्युमत् ७,६६,१७; ३४४
द्वा ६,६७,१; २९८
धर्तारा चर्षणीनाम् ५,६७,१; २७५
धारयत्क्षिती १०,१३१,१; ३७१
धारयथः त्री रोचना त्रीन् द्यून् त्रीणि रजांसि ५,६९,१; २८४
धर्तारा रजसः रोचनस्य पार्थिवस्य ५,६९,४; २८७
धृतदक्षा ५,६१,५; २४३
धृतव्रता ८,२५,१,८; ३४८,३५४ । १,१५,६; ९१२
ध्रुवक्षेमा ५,७१,१; २९६
नपाता महः शवसः ८,२५,५; ३५१
नमसा हूयमाना ६,६७,३; ३००
नमसे हिता ८,२५,७; ३५३
नमस्वन्ता ५,६१,५; २४३
नमोवृधा ३,६१,१७; २३७
नरा १,१५१,९; २२१ । ५,६४,७; २६१ । ८,१०१,१; ३६९
निचिरा १,१३६,१; २०३; ८,२५,९; ३५५
निमिषन्ता ८,२५,९; ३५५
पती दिवः पृथिव्याः ५,६३,३; २५०
परस्पा सुकृते ५,६१,६; २४४
पीवसा १,१५१,१; २२१
पूतदक्ष १,१,७; १९६ । ७,६५,१; ३३६
पूतदक्षसा १,१३,४; १९९ । ५,६६,४; २७१ । ८,२५,१; ३४७
पूतबन्धू ६,६७,४; ३०१
पूर्वा ५,६५,३; २६४
पृथिव्याः पती ५,६३,३; २५०
प्रचेतसा ५,७१,२; २९३
प्रथमा १,१५१,८; २२०
प्रमहसा ७,६६,१, ३४१ । ८,२५,३; ३४९
प्रयाः (वरुणः) ५,६६,१; २६८
प्रशस्ता देवेषु ५,६८,१; २८०
प्रशास्तारौ वा. य. १६,२१; ३८०
प्राविता १,१३,६; २०१
प्रियतमः [मित्रः] ७,६१,४; ३१८
प्रिया ६,६७,१-३; २९९-३००
बर्हणा ५,७१,१; २९१
बिभ्रतौ अर्चनानसम् ५,६४,७; २६१
भूरिपाशौ ७,६५,३; ३३८
महान्ता ६,६७,४; ३०१ । ८,२५,४; ३५०
मघवानः ८,६०,११; ३१९
महिक्षत्रौ ५,६८,१; २७९
महित्वा ६,६७,३; ३००
महे [वरुणाय] ५,६६,१; २६८
माता युवोः अदितिः १०,१३१,६; ३७६
मित्रराजाना ५,६१,३; २४१
मित्रावरुणा मित्रः वरुणः च वा (प्रायशः सर्वत्र)
मीढ्वान्-ढ्वांसः १,१३६,६; २०८ । ८,२५,१४;३५७
मृळयन्तौ स्वादिष्टम् १,१३६,१; २०३
यज्ञिया ८,२५,१; ३४७

यमिष्ठा ६,६७,१ २९८
यातयज्जनः–ना १,१३६,३; २०५ । ५,७२,२; २९६
युवाना ७,६२,५; ३२९
रक्षमाणा ७,६१,३; ३२३
रक्षमाणा उर्वीम् ५,६२,५; २४३
रक्षमाणा व्रतं अजुर्यम् ५,६९,१; २८४
रथ्या ८,२५,२; ३४८
राजा (अर्यमा) ७,६४,१; ३३१
राजानः ८,१०१,५; ४०१
राजाना १,१३६,४; २०६। १,१३७,१; २१० । २,४१,६; २३५ । ५,६२,६; २४४ । ६५,३; २६३ । ७,६४,२,४; ३३२,३३४ । ८,१०१,२; ३६९ । २,३६,६; ४००,९२४
रिशादसा १,२,७; १९६। ५,६४,१; ५५। ६६,१; २६८। ५,६७,२; २७५। ७१,१; २९२ । वा.य. ३३,७२; ३८२
रिशादा अथ. २,२८,२; ३८३
रीति आपा (रीत्यापा) ५,६८,५; २८३
रुद्रा× ५,७०,२-३; २८९-२९०
वरुणा ५ ६२,३; २४१ । ७,६१,१; ३२१ प्रतियोग्यपेक्षया द्विवचनम् ।
वार्षिष्ठक्षत्रा ८,१०१,२; ३६९
वाजिना ६,६७,४; ३०१
वा(व)वृधाना अमतिं क्षत्रियस्य ५,६९,१; २८४
विचर्षणी ५,६३,३; २५०
विचेतसा १०,१३२,६; ३७६
विपश्चिता ५,६३,७; २५४ । अथ. ६,९७,२; ३९४
विश्वा ७,६१,५; ३२५
विश्वस्य गोपा ८,२५,१; ३४७
विश्वजिन्वा ६,६७,७; ३०४
विश्ववेदसः–सा ५,६७,३; २७६ । ८,२५,३; ३४९
वृषणा १,१५१,२-३; २१४-२१५ । ७,६०,९-१०; ३१७-३१८ । ७,६१,५; ३२५
वृषभा ५,६३,३; २५०
वृष्टिवावा ५,६८,५; २८३
वृष्ट्याधिपती ५,२४,५; ३९१
शग्मासः ७,६०,५; ३१३
शुचिव्रता ३,६१,१७; २३७
श्रेष्ठवर्चसा ५,६५,२; २६३
संविदानौ अथ. २,२८,२; ३८३
सजोषाः-षसः ७,६०,४; ३१२ । ८,२५,१४; ३५७
सत्पती ५,६५,२; २६३
सत्याः ५,६७,४; २७७
सत्यधर्माणा ५,६३,१; २४८
सम्राजा १,१३६,१; २०३ । २,४१,६; २३५ । ५,६३,२-३,५; २४९-५०,२५२ । ६८,२; २८० । ८,२५,४,७; ३५०,३५३
सर्वताता ※ ५,६९,३; २८६
सहसः सहः नपाता ८,२५,५; ३५१
साधन्ता घृताचीं धियम् १,२,७; १९६
साम्राज्यः (वरुणः) ८,२५,७; ३५३
सिन्धुपती ७,६४,२; ३३२
सुक्रतुः (वरुणः) ८,२५,२; ३४८
सुक्रतू ३,६१,१६; २३६ । ६६,१; २६८ । ७,६१,२; ३२२ । ८,२५,५,८; ३५१,३५४
सुक्षत्रः (वरुणः) ७,६४,१; ३३१
सुचेतुना ५,६४,२; २५६ । ६५,३; २६४
सुजातः–ता ७,६४,१; ३३१ । ८,२५,२; ३४८
सुदक्षा ७,६६,२; ३४२
सुदानू–नवः ५,६२,९; २४७ । ६,६७,२; २९९ । ७,६१,३; ३२३ । ५,६७,४; २७७
सुनीथासः ५,६७,४; २७७
सुमृळीकः १,१३६,६; २०८
सुषुम्ना १०,१३२,२; ३७२
सूनू दक्षस्य ८,२५,५; ३५१
सृप्रदानू ८,२५,५; ३५१
सेतू अनृतस्य ७,६५,३; ३३८
स्तिपा ७,६६,३; ३४३
स्वर्णरः ५,६४,१; २५५
स्वर्दृशा ५,६३,२; २४९
हिता नमसे ८,२५,७; ३५३
हिरण्यरूपा वा. य. १०,१६; ३७९
हूयमाना नमसा ६,६७,३; ३००

× अस्य स्थाने ' मित्रा ' इति सामवेदपाठः ३९७,३९८। ※ सर्वताता 'सर्वतातौ यज्ञे' इति सायनभाष्यम् ।

अर्यमादेवताया गुणबोधकपदानि। [मित्रावरुण-सहकारित्वेन]

अदितेः पुत्रः ७,६०,५; ३१३
अनृतस्य चेता (तृ) " "
अरिः ७,६४,३; ३३३
अर्यः× " "
ऋतस्पृश्-क् ५,६७,४; २७७
ऋतावान् " "
चेता अनृतस्य ७,६०,५; ३१३
जनेजने सुनीथः ५,६७,४; २७७
दूलभाः ७,६०,६; ३१४
शुक्षः १,१३६,६; २०८
यातयज्जनः १,१३६,३; २०५
रिशादाः ७,६६,७; ४७
विश्ववेदाः ५,६७,३; २७६
शग्मः ७,६०,५; ३१३
सजोषाः ७,६०,४; ३१२
सत्यः ५,६७,४; २७७
सुजातः ७,६४,१; ३३१
सुदानुः ५,६७,४; २७७
सुनीथः जनेजने " "

निपातभाग्वरुणदेवताया गुणबोधकपदानि।

अंशुं आप्याययन् अ. ७,८१,६; ६८४
अक्षितः " "
अक्षितं भक्षयन् " "
आदित्यवान् अ. १९,८,४; १६४
आप्याययन् अंशुम् अ. ७,८१,६; ६८४
ऋतावान् ७,६१,३; ५६०
गोपाः भुवनस्य अ. ७,८१,६; ६८४
चन्द्रः ७,६१,३; ५६०
तुविजातः २,२७,१; २१
दक्षः " "
पिता ७,५१,३; ४३
भक्षयन् अक्षितम् अ. ७,८१,६; ६८४
भुवनस्य गोपाः " "
महान् ७,५१,३; ४३। ८,६७,४; ८८
यजत्रः ७,५१,३; ४३
राजा अ. ५,११,११; १८१
रेवान् ८,४७,९; ८०

मित्रस्य, मित्रावरुणयोश्च उपमासूची।

अग्निः न शुक्रः ८,२५,१९; ३६१ सूर्यः समिधानः आहुतः।
अत्रिवत् ५,७१,१; २९५ वयं गीर्भिः आ जुहुमः।
अपः न नावा ७,६५,३; ३३८ ऋतस्य पथा दुरिता तरेम।
अपसा इव जनान् ६,६७,३; ३०० श्रुधीयतः जनान् सं यतथः।
अश्वा न ६,६७,४; ३०१ वाजिना पूतबन्धू ऋता।
अश्वाजनी इव ५,६१,७; २४५ स्थूणा अयः वि भ्राजते।
उपमात् इव ६,६७,६; ३०३ दंहेथे द्योः सानुम्।
गां न धुरि १,१५१,४; २१६ आभुवं अपः उप युञ्जाथे।
तक्ववीः इव १,१५१,५; २१७ सूर्य निम्रुचः उषसः स्वरन्ति।
तिग्मं न क्षोदः ८,२५,१५; ३५८ प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः।
द्यौः न १०,१३१,६; ३७६ भूमिः पयसा पुपूतनि।
धेनुं न वासरीम् १,१३७,३; २१२ (अध्वर्यवः) अंशुं दुहन्ति।
पदा इव ५,६७,३; २७६ व्रता सश्चिरे।
बर्हिः इव यजुषा ५,६१,५; २४३ उर्वीं रक्षमाणा वर्धत्।
बाहुता न ८,१०१,१; ३६९ दंसना ता रथर्यतः।
मनसः न प्रयुक्तिम् १,१५१,८; २२० युवां प्रथमा यज्ञैः अञ्जते।
मित्रं न १,१५१,१; १८४ (मित्रः)अग्निं शिम्या आसु जीजनन्
मित्रासः न १,१५१,२; २१४ ऋत्विजः प्र दधिरे।
यूथा इव ७,६०,३; ३११ जनिमानि सं चष्टे।
यूथा इव ८,२५,७; ३५३ बृहतः अभि पश्यतः।
रश्मा इव ६,६७,१; २९८ यमिष्ठा जनान् सं यमतुः।
वाह्नेः व्रजा इव पारि जगन्वांसा५,६४,१,२५५ वः ऋचा हवामहे।

× 'आरिः अर्यः च' इति द्वे पदे वर्जयित्वा एतानि सर्वाणि पदानि मित्रावरुणाभ्यां सहिताया अर्यमादेवताया गुणबोधकानि सन्ति।

मानुषं व्रता इव ५,६६,२; २६९ दर्शतं धायि ।
शूरः न ५,६३,५; २५२ मरुतः रथं युजते ।
शुक्रः सोमः न ७,६४,५; ३३५ एष स्तोमः अयामि ।
शुक्रः सोमः न ७,६५,५; ३४० एष स्तोमः अयामि ।
स्वर् न ५,६६,२; २६९ दर्शतं धायि ।
मानुषः होता न १,१५३,३; २३१ सः रातहव्यः विदथे वां ।

मित्रावरुणदेवतामन्त्रेषु निपातदेवताः ।

अग्निः १,१३६,६-७; २०८-२०९
अदितिः ५,६९ ३; २८६ । ७,६०,८; ३१६ । ८,२५,३; ३४९ । ७,६२,४; ३२८×
अपां सिन्धुः ८,२५,१४-१५; ३५७-३५८
अर्यमा १,१३६,२-३,५-६; २०४-५,२०७-८ । ५,६७,१, ३-४; २७४,२७६-२७७ । ७,६०,४-६; ३१२-३१४। ६२,६; ३३० । ६४,१,३; ३३१,३३३
अश्विना ८,२५,१४-१५; ३५७ ३५८
आदित्यः १,१५२,३-५; २२४-२२६
इन्द्रः १,१३६,६; २०८ । ८,२५,१४-१५; ३५७-३५८
द्यौः १,१३६,६;२०८
द्यावाभूमी ७,६२,४; ३२८
पर्जन्यः ५,६३,४,६; २५१,२५३
पृथिवी ५,६६,५; २७२
भगः १,१३६,२,६; २०४, २०८
मरुतः १,१३६,७; २०९ । ५,६३,५-६; २५१-२५२ । ८,२५,१४ १५; ३५७-३५८
रोदसी १,१३६,६; २०८
वायुः ७,६२,४; ३२९ । ६४,५; ३३५ । ६५,५; ३४०
विश्वे देवाः १,१३६,४,७; २०६,२०९ । ६,६७,५; ३०२
विष्णुः ८,२५,१४-१५; ३५७-३५८
सूर्यः ७,६०,२; ३१०
सोमः १,१३६,६; २०८

(४) सविता ।

अदाभ्यः ४,५३,४; ४३७
अद्रोघवक् अ. ६,१,२; ५२०
अधिपतिः प्रसवानाम् अ. ५,२४,१; ५१८
अन्तरिक्षप्राः ७,४५,१; ४७३
अपसेधन् रक्षसः यातुधानान् १,३५,१०; ४१८
अपां नपात् १,२२,६; ४०४
अप्रयुच्छन् अहनी एति ५,८२,८; ४५९
अमतिं उर्वीं पृथ्वीं सृजानः ७,३८,२; ४६८
अमतिं उरुचीं विश्रयमाणः ७,४५,३; ४७५
अयोहनुः ६,७१,४; ४६४
अरमतिः २,३८,४; ४२३
अर्वाङ् १,३५,१०; ४१८
अवन् सदा १,२४,३; ४०७
अश्वैः वहमानः ७,४५,१; ४७३
असुरः १,३५,१०; ४१८ । ४,५३,१; ४३४
आवर्तमानः कृष्णेन रजसा १,३५,२; ४१०
आसवः वा. य. २२,१३; ५०६
इयानः ७,३८,६; ४७२
ईशानः वार्याणाम् १,२४,३; ४०७
उपवाच्यः ४,५४,१; ४४१
ऊर्ध्वः विश्वस्य श्रुष्टये २,३८,२; ४२१
ऋभुमान् वा. य. ३८,८; ५१६
ओण्योः (वर्तमानः) वा. य. ४,२५; ४८८
कल्पः वा.य. ४,२५; ४८८
कविः ४,५३,२; ४३५ । ५,८१,२; ४४८ । वा. य. ४, २५; ४८८
कविक्रतुः वा. य. ४,२५; ४८८
केतपूः वा. य. ९,१; ४९१
गन्धर्वः वा. य. ९,१; ४९१
गर्भः देवानाम् वा. य. ३७,१४; ५१४
गृणानः प्रतिदोषम् १,३५,१०; ४१८
ब्रास्पतिः २,३८,१०; ४२९

×अत्र 'अदिते' इति पदम् । तत्सायनैः 'द्यावाभूम्यो,' प्रत्येकं संबोधनं गृह्यते ।

चित्रभानुः १,३५,४; ४१२
चित्रराधाः अ. १,२६,२; ५३१
चेतन् वा. य. २२,११; ५०४
चेत्ता पदम् १,२२,५; ४०३
जगत् निवेशयन् प्रसुवन् अक्तुभिः ४,५३,३; ४३६
जगतः वशी ४,५३,६; ४३९
जनः दैव्यः ४,५४,३; ४४३
जास्पतिः ७,३८,६; ४७२
तदपाः १,३८,१; ४२०
(तेजः) आपृणन् ४,५३,२; ४३५
(तेजः) प्रथयन् ४,५३,२; ४३५
दधत् रत्नं दक्षं आयूंषि पितृभ्यः अ. ७,१४,४; ५२३
दधत् रत्ना दाशुषे वार्याणि १,३५,८; ४१६
दधानः कृष्णा रजांसि तविषीम् १,३५,४; ४१२
दधानः हस्ते नर्या पुरूणि ७,४५,१; ४७३
दमूनाः अ. ७,१४,४; ५२३
दाता राधांसि १,२२,८; ४०६
दिवः धर्ता ४,५३,२; ४३५। १०,१४९,४; ४८३
दिवः रातिः ७,३८,५; ४७१
दिव्यः वा. य. ९,१; ४९१
देवः [बहुषु स्थलेषु]
देवानां गर्भः वा. य. ३७,१४; ५१४
देवता १,२२,५; ४०३
दैव्यः १,३५,५; ४१३। २,३८,६; ४२५। ४,५४,४; ४४४
दैव्यः जनः ४,५४,३; ४४३
द्रापिं पिशङ्गं प्रति मुञ्चते ४,५३,२; ४३५
धर्ता दिवः ४,५३,२; ४३५। १०,१४९,४; ४८३
धर्ता भुवनस्य ४,५३,२; ४३५
धियः १,३८,१०; ४२९
धृतव्रतः ४,५३,४; ४३७
नमस्यः ७,३८,३; ४६८
नराशंसः १,३८,१०; ४२९
निवेशनः ४,५३,६; ४३९
निवेशयन् अमृतं मर्त्यं च १,३५,२; ४१०
निवेशयन् जगत् अक्तुभिः ४,५३,३; ४३६
निवेशयन् भूम ७,४५,१; ४७३
नृचक्षा १,२२,७; ४०५। १०,१३९,२; ४७८। वा. य. ३०,४; ५०८
पतिः प्रजानाम् वा. य. ३७,१४; ५१४
पदं चेत्ता १,२२,५; ४०३
परिज्मा अ. ७,१४,४; ५२३
परिभूः त्रिः अन्तरिक्षं महित्वना ४,५३,५; ४३८
पिता मतीनाम् वा. य. ३७,१४; ५१४
पुरन्धिः २,३८,१०; ४२९
पुरु(रू)वसुः ७,३८,१; ४६७
पूर्णगभस्तिः ७,४५,४; ४७६
पूषा ५,८१,५; ४५१
पृणन् आ (तेजः) ४,५३,२; ४३५
पृथिव्याः रातिः ७,३८,५; ४७१
पृथुपाणिः २,३८,२; ४२१
प्रचेताः ४,५३,१; ४३४
प्रजानां पतिः वा. य. ३७,१४; ५१४
प्रजापतिः ४,५३,२; ४३५
प्रतिदोषं गृणानः १,३५,१०; ४१८
प्रथयन् (तेजः) ४,५३,२; ४३५
प्रसवानां अधिपतिः अ. ५,२४,१; ५१८
प्रसवि(वी)ता ४,५३,६; ४३९। वा. य. १०,३०; ५२९
प्रसुवन् जगत् अक्तुभिः ४,५३,३; ४३६
प्रसुवन् भूम ७,४५,१; ४७३
प्रियः वा. य. ४,२५; ४८८
बाधमानः अप विश्वा दुरिता १,३५,३; ४११
बहू शिथिरा ७,४५,२; ४७४
बुध्नः रायः १०,१३९,३; ४७९
बृहन् ५,८१,१; ४४७
बृहस्पतिः अ. ७,१६,१; ५२०
बृहत्सुम्नः ४,५३,६; ४३९
भगः १,३८,१०; ४२९। ३,६२,११; ४३२। ५,८२,१,३; ४५२,४५४। ७,३८,१,६; ४६७,४७२। वा. य. ८,७; ४९०
भगभक्तः १,२४,५; ४०९
भुवनस्य धर्ता ४,५३,२; ४३५
भूम निवेशयन् प्रसुवन् च ७,४५,१; ४७३
मखः ६,७१,१; ४६१

मतिः वा. य. ४,२५; ४८८
मति(ती)विद् वा. य. २२,१२; ५०५
मतीनां पिता वा. य. ३७,१४; ५१४
मन्द्राजिह्वः ६,७१,४; ४६४
मित्रः ५,८१,४; ४५०
यजतः १,३५,३-४; ४११-४१२। ६,७१,४; ४६४
यातुधानान् अपसेधन् १,३५,१०; ४१८
युवा ६,७१,१; ४६१। अ. ६,१,२; ५२०
रक्षसः अपसेधन् १,३५,१०; ४१८
रजसः विधर्मणि (स्थितः) ६,७१,१; ४६१
रत्नधाः वा. य. ४,२५; ४८८
रातिः वा. य. २२,१३; ५०६
रातिः दिवः पृथिव्याः ७,३८,५; ४७१
राधांसि दाता १,२२,८; ४०६
राधसः विभक्ता १,२२,७; ४०५। वा. य. ३०,४; ५०८
रायः बुध्नः १०,१३९,३; ४७९
वन्यः ४,५४,१; ४४१
वरेण्यः ५,८१,२; ४४८। अ. ७,१४,४; ५१३
वशी जगतः स्थातुः उभयस्य ४,५३,६; ४३९
वसूनां संगमनः १०,१३९,३; ४७९
वसुपतिः ७,४५,३; ४७५
वहमानः अश्वैः ७,४५,१; ४७३
वाजवान् वा. य. ३८,८; ५१६
वार्याणां ईशानः १,२४,३; ४०७
विचक्षणः ४,५३,२; ४३५
विचर्षणिः १,३५,९; ११०
विपश्चित् ५,८१,१; ४४७
विप्रः ५,८१,१; ४४७
विभक्ता वसोः चित्ररय राधसः १,२२,७; ४०५। वा. य. ३०,४; ५०८
विभुमान् वा. य. ३८,८; ५१६
विश्रयमाणः उरुचीं अमतिम् ७,४५,३; ४७५
विश्वदेवः ५,८२,७; ४५८
विश्ववारः १०,१४९, ४; ४८३
शचीपतिः अ. १९,१६,१; ५२४
संगमनः वसूनाम् १०,१३९,३; ४७९
सत्पतिः ५,८२,७; ४५८। वा.य. २२,१३; ५०६
सत्यधर्मा १०,१३९,३; ४७९
सत्यप्रसवः वा. य. १०,२८; ४९३
सत्यसवः ५,८२,७; ४५८। वा. य. ४,२५; ४८८
सत्यस्य सूनुः अ. ६,१,२; ५२०
सदा(अ)वन् १,२४,३; ४०७
सविता [प्रायशः सर्वत्र।]
सह(हा)वा ७,४५,३; ४७५
सिन्धौ अन्तः अ. ६,१,२; ५२०
सुक्रतुः ६,७१,१; ४६१। वा. य. ४,२५; ४८८
सुजिह्वः ७,४५,४; ४७६
सुत्रामा वा. य. २०,७०; ५०२
सुदक्षः ६,७१,१; ४६१
सुनीथः १,३५,१०; ४१८
सुपाणिः ७,४५,४; ४७६। वा.य. ११,६३; ४९९
सुबाहुः वा. य. ११,६३; ४९९
सुमति(ती)वृध् वा. य. २२,१२; ४०५
सुमृळीकः १,३५,१०; ४१८
सुरत्नः ७,४५,१; ४७३
सुवानः आ मर्तभोजनं नृभ्यः ७,३८,२; ४६८
सुशेवः अ. ६,१,२; ५२०
सूर्यरश्मिः १०,१३९,१; ४७७
सृजानः उर्वीं पृथ्वीं अमतिम् ७,३८,२; ४६८
स्तोम्यः १,२२,८; ४०६
स्थातुः वशी ४,५३,६; ४३९
स्वङ्गुरिः वा. य. ११,६३; ४९९
स्वः वा. य. ४,२५; ४८८
स्ववान् १,३५,१०; ४१८
स्वाधीः ५,८२,८; ४५९
हरिकेशः १०,१३९,१; ४७७
हविष्पतिः वा. य. २०,७०; ५०२
हव्यः ७,३८,१; ४६७
हिरण्य-अक्षः १,३५,८; ४१६
हिरण्य-जिह्वः ६,७१,३; ४६३।
हिरण्य-पाणिः १,२२,५; ४०३। ३५,९; ४१७। ६,७१, ४; ४६४। ७,३८,२; ४६८। वा. य. ४,२५; ४८८
हिरण्य-हस्तः १,३५,१०; ४१८

सवितुः अश्वाः ।

शितिपादः १,३५,५; ४१३
शुभ्रौ (हरी) १,३५,३; ४११
श्यावाः १,३५,५; ४१३
हरी १,३५,३; ४११

सवितुः बाहू ।

दिवः अन्तान् अनष्टाम् ७,४५,२; ४७४
बृहन्ता ७,४५,२; ४७४
शिथिरा ७,४५,२; ४७४
सुप्रतीका ६,७१,५; ४६५
हिरण्यया ६,७१,१,५; ४६१,४६५ । ७,४५,२, ४७४ ।
पृथु-पाणिः २,३८,२; ४११
सु-पाणिः ७,४५,४; ४७६
हिरण्यः-पाणिः १,२२,५; ४०३
सु-बाहुः वा. य. ११,६३; ४९९
हिरण्य-हस्तः १,३५,१०; ४१८

सवितुः रथः ।

अभीवृत् १,३५,४; ४१२
कृशनैः विश्वरूपः ,,
बृहन् ,,
हिरण्ययः १०,३५,२; ४१०
हिरण्यशम्यः १,३५,४; ४१२
हिरण्यप्रउगः १,३५,५; ४१३

सवितुः रश्मिः ।

असुरः १,३५,७; ४१५
गभीरवेपाः ,,
सुनीथः ,,
सुपर्णः ,,
सूर्य-रश्मिः १०,१३९,१; ४७७
पूर्ण-गभस्तिः ७,४५,४; ४७६

सवितादेवताया उपमासूची ।

अश्वं इव १०,१४९,१; ४८० धुनिं अधुक्षत् अन्तरिक्षम् ।
यथा आङ्गिरसः हिरण्यस्तूपः १०,१४९,५;४८४ एवा त्वा अवसे।
आणिं न रथ्यम् १,३५,६;४१४ अमृत अधि तस्थुः तिस्रः द्यावः।
इन्द्रः न १०,१३९,३; ४७९ सत्यधर्मा समरे तस्थौ ।
उपवक्ता इव बाहू ६,७१,५; ४६५ उद् अयान् सविता ।
गवः इव ग्रामम् १०,१४९,४; ४८३ सविता नः एतु ।
देवः इव १०,१३९,३; ४७९ सविता सत्यधर्मा ।
पतिः इव जायाम् १०,१४९,४; ४८३ सविता नः एतु ।
यूयुधिः इव अश्वान् १०,१४९,४; ४८३ सविता नः एतु ।
वाश्रा इव वत्सं सुमना१०,१४९,४; ४८३ धर्ता दिवः नः न्येतु।
सोमस्य इव अंशुम् १०,१४९,५; ४८४ प्रति जागराहम् ।

(५) सूर्यः ।

अंशः सोमस्य अ. ७,८१,३; ६८१
अंशुः अ. ७,८१,६; ६८४
अक्षितः अ. ७,८१,६; ६८४
अग्नेः चक्षुः १,११५,१; ५४७
अतिथिः ४,४०,५; ५५५
अदितिः ७,६०,१; ५५७
अदृष्टहा अ. ६,५१,१; ६१५
अद्रिजाः ४,४०,५; ५५५
अधिपतिः इष्टकायाः ते वा.य. १५,५८; ५९८
अधिपतिः चक्षुषाम् अ. ५,२४,९; ६१६
अध्वपतिः वा. य. ५,३३; ५९६
अनिपद्यमानः वा. य. ३७,१७; ६०८
अनीकं चित्रं देवानाम् १,१५५,१; ५४७
अनुमद्यमानः रेभैः ७,६३,३; ५६३
अनूनः अ. ७,८१,३; ६८१
अन्तरिक्षसत् ४,४०,५; ५५५
अपां गर्भः १,१६४,५१; ६३०
अप्रयुच्छन् १०,८८,१६; ६७४
अब्जाः ४,४०,५; ५५५
अमर्त्यः [धर्मः] वा. य. ३७,१६; ६०७
अमित्रहा [ज्योतिः] १०,१७०,२; ५८८
अर्णवः ७,६३,२; ५६२
अर्णवं परि यातः [चन्द्रमाश्च] अ. ७,८१,१; ६७९
अर्यमा ७,६०,१; ५५७

असुरहा [ज्योतिः] १०,१७०,२; ५८८
असुर्यः ८,१०१,११; ५६९
अहः अक्तुभिः मिमानः १,५०,७; ५४०
अह्नां केतुः अ. ७,८१,२; ६८०
अहेळयन् रक्षसि व्रतम् १०,३७,५; ५७४
आ च परा च पथिभिः चरन् वा. य. ३७,१७; ६०८
आत्मा जगतः तस्थुषः च १,११५,१; ५४७
आदित्यः १,५०,१३; ५४६ । ८,१०१,११; ५६८ । अ. ६,५२,१; ६२५
आदितेयः १०,८८,११; ६६९
आयुः दधत् यज्ञपतौ अविहुतम् १०,१७०,१; ५८७
आयुः दीर्घं अतिरन् अ. ७,८१,२; ६८०
आरोहन् उत्तरां दिवम् १,५०,११; ५४४
आरोहन् बृहतः पाजसः परि १०,३७,८; ५७७
इन्द्रः वा. य. ३३,३५; ६०३
उत्तमम् [ज्योतिः] १,५०,१०; ५४३। १०,१७०,३; ५८९
उत्तरम् [ज्योतिः] १,५०,१०; ५४३
उत्तरां दिवं आरोहन् १,५०,११; ५४४
उद्यन् १,५०,११; ५४४ । अ. ७,१३,१-२; ६१७-६१८। अ. १७,१,३०; १६३
उद्यन् दिवेदिवे १०,३७,७; ५७६
उरुचक्षाः ७,६३,४; ५६४
ऋतम् ४,४०,५; ५५५
ऋतजाः ,, ,,
ऋतसत् ,, ,,
ऋतून् विदधत् नवः जायसे [चन्द्रः] अ. ७,८१,१; ६७९
ओजः उरु सह अच्युतं यस्य १०,१७०,३; ५८९
ओषधीनां गर्भः दर्शतः १,१६४,५२; ६३०
ओषधीनां दर्शतः १,१६४,५२; ६३०
कर्तृभिः सुकृतः ७,६२,१; ५५८
कर्वीनां मतिः साम. ४५८; ६२८
कृतः ७,६२,१; ५५८
केतुः ७,६३,२; ५६२ । १०,३७,१; ५७०
केतुः अह्नाम् अ. ७,८१,२; ६८०
केतवः [रश्मयः] वा. य. ८,४०; ५९७
क्रत्वा ७,६२,१; ५५८
क्रीडन्तौ शिशू [सूर्यः चन्द्रमाः च] ७,८१,१; ६७९
गर्भः अपाम् १,१६४,५२; ६३०
गोजाः ४,४०,५; ५५५
गोपाः वा. य. ३७,१७; ६०८
गोपाः विश्वस्य स्थातुः जगतश्च ७,६०,२; ३१०
गौः अ. २०,४८,४; ६८९
घर्मः वा. य. ३७,१८; ६०९
चक्षाः मित्रस्य वरुणस्य १०,३७,१; ५७०
चक्षुः तत् ७,६६,१६; ५६७ । वा. य. ३३,२४; ६०६
चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः १,११५,१; ५४७
चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य ७,६३,१; ५६१
चक्षुषां अधिपतिः अ. ५,२४,९; ६१६
चक्षुषेचक्षुषे मयः १०,३७,८; ५७७
चरन् पथिभिः आ च परा च वा. य. ३७,१७; ६०८
चरतः पूर्वापरं मायया (सूर्यः चन्द्रमाः च) अ. ७,८१,१; ६७९
चरिष्णू [अग्निसूर्यौ] १०,८८,११; ६६९
जगतः गोपाः ७,६०,२; ३१०
जगतः तस्थुषश्च आत्मा १,११५,१; ५४७
जगतः तस्थुषः पतिः ७,६६,१५; ५६६
जनानां प्रसवि(वी)ता ७,६३,२; ५६२
जन्मानि पश्यन् १,५०,७; ५४०
जातवेदाः १,५०,१; ५३४
जायमानः नवःनवः अ. ७,८१,२; ६८०
जुषाणः वा. य. ३,१०; ५९५
ज्योतिः १०,१७०,२; ५८८ । वा. य. ३,९; ५९४ । अ. १६,९,३; ६२६ । साम. ४५८; ६२८
ज्योतिः उत्तमम् १,५०,१०; ५४३
ज्योतिः उत्तरम् १,५०,१०; ५४३
ज्योतिषां ज्योतिः १०,१७०,३; ५८९
ज्योतिः महि बिभ्रत् १०,३७,८; ५७७
ज्योतिः ते विभु अदाभ्यम् ८,१०१,११; ५६९
ज्योतिष्कृत् १,५०,४; ५३७
तपोजाः [घर्मः] वा. य. ३७,१६; ६०७
तमसः धर्ता [घर्मः] वा. य. ३७,१६; ६०७
तमसः परि १,५०,१०; ५४३
तरणिः ७,६३,४; ५६४ । १०,८८,१६; ६७४

तर्पयन् वृष्टिभिः १,१६४,५१; ६३०
तस्थुषः जगतः आत्मा १,११५,१; ५४७
तस्थुषः जगतः पतिः ७,६६,१५; ५६६
दधत् आयुः यज्ञपतौ १०,१७०,१; ५८७
दर्शः अ. ७,८१,४; ६८१
दर्शतः अ. ७,८१,४; ६८१
दर्शतं वपुः स्यत् ७,६६,१४; ५६५
दर्शतः ओषधीनाम् १,१६४,५१; ६३०
दर्शतः गर्भ ओषधीनाम् १,१६४,५१; ६३०
दस्युहन्तमम् [ज्योतिः] १०,१७०,१; ५८८
दिवः धरुणः १०,१७०,१; ५८८
दिवः धर्ता [धर्मः] वा. य. ३७,१६; ६०७
दिवस्पुत्रः १०,३७,१; ५७०
दिवा रोचमानः ७,६०,१; ५५८
दिव्यः १,१६४,५२; ६३०
दुरोणसत् ४,४०,५; ५५५
दूरे अर्थः ७,६३,४; ५६४
दूरे दृश् १०,३७,१; ५७०
दृशः साम. ४५८; ६२८
देवः १,५०,१,८; ५३४,५४१। ७,६३,१,३; ५६१,५६३। ८,१०१,११-१२, ५६८-६९। १०,३७,१; ५७०
देवः [धर्मः] वा. य. ३०,१६,१८; ६०७,६०९
देवजातः १०,३७,१; ५७०
देवः देवत्रा १,५०,१०; ५४३
देवयजनी [पृथिवी] वा. य. ३,५; ५९३
देवश्रुत् [धर्मः] वा. य. ३७,१८; ६०९
देवहितम् ७,६६,१६; ५६७। वा. य. ३६,२४; ६०६
देवानां चित्रं अनीकम् १,११५,१; ५४७
देवानां धर्ता [धर्मः] वा. य. ३७,१६; ६०७
देवानां पुरोहितः ८,१०१,११; ५६९
देवेभ्यः भागं विदधत् अ. ७,८१,२; ६८०
द्यौः (दिवे-चतुर्थी) १,१३६,६; २०८
द्यावापृथिवीवान् अ. १९,१८,५; ६२०
द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् १,५०,१३; ५४६
धनजित् [ज्योतिः] १०,१७०,३; ५८९
धरुणः दिवः १०,१७०,१; ५८८
धर्ता तपसः [धर्मः] ३७,१६; ६०७
धर्ता दिवः [धर्मः] ३७,१६; ६०७
धर्ता देवानाम् [धर्मः] ३७,१६; ६०७
धर्मन् १०,१७०,१; ५८८
नवःनवः जायमानः अ. ७,८१,१; ६८०
निजूर्वन् रक्षांसि अ. ६,५२,१; ६१५
नृचक्षाः ७,६०,२; ३१०
नृषत् (सद्) ४,४०,५; ५५५
पतंगः अ. २०,४८,६; ६९१
पतिः जगतः तस्थुषः च ७,६६,१५; ५६६
" युधाम् अ. ७,८१,३; ६८१
" भुवां विश्वासाम् [धर्मः] वा. य. ३७,१८; ६०९
" मनसः विश्वस्य [धर्मः] वा. य. ३७,१८; ६०९
" वचसः विश्वस्य [धर्मः] वा. य. ३७,१८; ६०९
पतिः वचसः सर्वस्य [धर्मः] वा. य. ३७,१८; ६०९
परि यातः अर्णवम् [सूर्याचन्द्रमसौ] अ. ७,८१,१; ६७९
पश्यन् जन्मानि १,५०,७; ५४०
पाजसः बृहतः पारे आरोहन् १०,३७,८; ५७७
पावकः १,५०,६; ५३९
पिता शरस्य अ. १,३,५; ६१०
पुरोहितः देवानाम् ८.१०१,११; ५६९
पूर्वापरं चरतः मायया [सूर्याचन्द्रमसौ] अ. ७,८१,१; ६७९
पृश्निः अ. २०,४८,४; ६८९
प्रजानन् १०,८८,६; ६६४
प्रसवि(वी)ता जनानाम् ७,६३,२; ५६२
प्रेषितः १०,३७,५; ५७४
बिभ्रत् महि ज्योतिः १०,३७,८; ५७७
बृहत् [ज्योतिः] १०,१७०,२-३; ५८८-५८९
बृहन् १,१६४,५२; ६३०। १,१३६,६; २०८
ब्रध्नः साम. ४५८; ६२८
भगः अ. २,३६,५; ६२३
भास्वन् १०,३७,८; ५७७
भुवना विश्वा विचष्टे अ. ७,८१,१; ६७९
भुवां विश्वासां पतिः [धर्मः] वा. य. ३७,१८; ६०९
भ्राजः १०,१७०,३; ५८९। वा. य. ८,४०; ५९७
भ्राजमानः ७,६३,४; ५६४। १०,८८,१६; ६७४
भ्राजिष्ठः वा. य. ८,४०; ५९७

भ्राजिष्टः देवेषु वा. य. ८,४०; ५९७
मतिः कवीनाम् साम. ४५८; ६१८
मनसस्पतिः विश्वस्य वा. य. ३७,१८; ६०९
मयः चक्षुषेचक्षुषे १०,३७,८; ५७७
महः १०,३७,१; ५७०
महान् ७,६३,१; ५६१। ८,१०१,११-१२; ५६८-६९
महान् महा ८,१०१,१२; ५६९
महान् श्रवसा ८,१०१,१२; ५६९
महि १०,१७०,३; ५८९
महिषः अ. १०,४८,५; ६९०
महा महान् ८,१०१,१२; ५६९
मानुषाणां साधारणः ७,६३,१; ५६१
मित्रस्य वरुणस्य चक्षाः १०,३७,१; ५७०
मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः चक्षुः १,११५,१; ५४७
मित्रस्य वरुणस्य चक्षुः ७,६३,१; ५६१
मित्रमहः १,५०,११; ५४४। १०,३७,७; ५७६
मिथुनौ [अग्निसूर्यौ] १०,८८,११; ६६९
मिमानः अहः अक्तुभिः १,५०,७; ५४०
युधां पतिः अ. ७,८१,३; ६८१
रक्षांसि निजूर्वन् अ. ६,५२,१; ६२५
रन्धयन् द्विषन्तं मय्यम् १,५०,१३; ५४६
रुक्मः ७,६३,४; ५६४
रेभैः अनुमद्यमानः ७,६३,३; ५६३
रोचनः १०,८८,५; ६६३
रोचमानः दिवा ७,६२,१; ५५८
वचस्य विश्वस्य पतिः वा. य. ३७,१८; ६०९
वचस्य सर्वस्य पतिः वा. य. ३७,१८; ६०९
वपुः दर्शतं त्यत् ७,६६,१४; ५६५
वरसत् ४,४०,५; ५५५
वरुणः १,५०,६; ५३९
वरुणस्य चक्षाः १०,३७,१; ५७०
वरुणस्य चक्षुः १,११५,१; ५४७। ७,६३,१; ५६१
वर्चः वा. य. ३,९; ५९४
वर्चोदाः [रश्मिः] वा. य. १,२६; ५९२
वसानः सध्रीचीः विषूचीः वा. य. ३७,१७; ६०८
वसुः ४,४०,५; ५५५
वाजसातमम् [ज्योतिः] १०,१७०,१; ५८८
वातजूतः १०,१७०,१; ५८७
वायसः [सरस्वान्] १,१६४,५२; ६३०
विचक्षणः १,५०,८; ५४१। १०,३७,८; ५७७
विचष्टे विश्वा भुवना अ. ७,८१,१; ६७९
विभ्राट् १०,१७०,१-२; ५८७-५८८
विभ्राजन् ज्योतिषा १०,१७०,४; ५९०
विभ्राजमानः ७,६३,३; ५६३
विश्वकर्मन् [ज्योतिः] १०,१७०,४; ५९०
विश्वचक्षाः १,५०,२; ५३५। ७,६३,१; ५६१
विश्वजित् (ज्योतिः) १०,१७०,३; ५८९
विश्वदर्शतः १,५०,४; ५३७
विश्वदृष्टः अ. ६,५२,१; ६२५
विश्वदेव्यावत् ज्योतिः १०,१७०,४; ५९०
विश्वभ्राट् १०,१७०,३; ५८९
विश्वस्य गोपाः ७,६०,२; ३१०
विश्वानरः वा.य. ३३,३४; ६०२
विश्वा भुवनानि आ बिभ्रत् १०,१७०,४; ५९०
विषूचीः सध्रीचीः वसानः वा. य. ३७,१७; ६०८
वृत्रहा १०,१७०,२; ५८८। वा. य. २३,३५; ६०३
वृष्टिभिः तर्पयन् १,१६४,५२; ६३०
वेदिषत् ४,४०,५; ५५५
व्योमसत् ४,४०,५; ५५५
शतवृष्ण्यः अ. १,३,५, ६१०
शं अहा घृणेन चक्षसा भानुना हिमा १०,३७,१०; ५७९
शरस्य पिता अ. १,३,५; ६१०
शिशू क्रीडन्तौ (सूर्याचन्द्रमसौ) अ. ७,८१,१; ६७९
शुक्रम् ७,६६,१६; ५६७। वा. य. ३३,२४; ६०६
शुचिषद् ४,४०,५; ५५५
शोचिष्केशः १,५०,८; ५४१
श्रवसा महान् ८,१०१,१२; ५६९
श्रेष्ठः (रश्मिः) वा. य. २,२६; ५९२
श्रेष्ठम् (ज्योतिः) १०,१७०,३; ५८९
सजूः देवेन सवित्रा वा. य. ३,१०; ५९५
सजूः उषसा इन्द्रवत्या वा. य. ३,१०; ५९५
सत्यम् (ज्योतिः) १०,१७०,२; ५८८
सध्रीचीः वसानः (घर्मः) वा.य. ३७,१७; ६०८

सपत्नहा (ज्योतिः) १०,१७०,१; ५८८
समः ७,६१,१; ५५८
समन्तः समग्रः अ. ७,८१,४; ६८२
सरस्वान् १,१६४,५१; ६३०
सविता ७,६३,३; ५६३; १०,१५८,१-३; ५८३-८४।
वा.य. ३,१०; ५९५। ऋ. १०,८५,९,१३; ६३५,६३९
सहस्रमानवः साम. ४५८; ६१८
साधारणः मानुषाणाम् ७,६३,१; ५६१
सुकृतः कर्तृभिः ७,६१,१; ५५८
सुपर्णः १,१६४,५२; ६३०
सुभगः ७,६३,१; ५६१
सुभृतम् [ज्योतिः] १०,१७०,१; ५८८
सुसंदृशः १०,१५८,५; ५८६
सूरः १,५०,१,९; ५३५,५४१। ७,६३,५; ६३१
सूर्यः (प्रायः सर्वत्र।) ७,६०,१; ३१०
सोमस्य अंशः अ. ७,८१,३; ६८१
स्वः वा. य. १,११; ५९१। अ. १६,९,३; ६१६।
अ. १०,४८,४; ६८९
स्वयम्भूः वा. य. १,२६; ५९१
हंसः ४,४०,५; ५५५
हरिकेशः १०,३७,९; ५७८
होता ४,४०,५; ५५५

सूर्यस्य रश्मयः।

अपः वसानाः १,१६४,४७; ५५४
ऋतस्य सदनात् आवृत्रन् (ये) १,१६४,४७; ५५४
केतवः १,५०,३; ५३६
केतवः ये देवं वहन्ति १,५०,१; ५३४
कृष्णं नियानं हरयः १,१६४,४७; ५५४
देवाः उदिताः १,११५,६; ५५२
द्यावः (द्युभिः-तृतीया) अ. २०,४८,६; ६९१
भ्राजन्तः यथा अग्नयः १,५०,३; ५३६
रश्मयः सप्त १,५०,३; ५३६। वा. य. ८,३; ५९७।
अ. ७,१०७,१; ६८५
सुपर्णाः १,१६४,४७; ५५४
हरितः १,११५,५; ५५१

सूर्यस्य द्विषन्नाशनी शक्तिः।

अर्चिः अ. २,११,३; ६१३।
तपः ,, १; ६११
तेजः ,, ५; ६१५
शोचिः ,, ४; ६१४
हरः ,, २; ६१२

सूर्यस्य अश्वानां गुणबोधकपदानि।

अनुमाद्यासः १,११५,३; ५४९
अश्वाः १,११५,३; ५४९
आशुः ७,६६,१४; ५६५
एतग्वाः १,११५,३; ५४९
एतशः ७,६३,२; ५६२। ७,६६,१४; ५६५
एतशाः १०,३७,३; ५७२
केतवः १,५०,१; ५३४
चित्राः १,११५,३; ५४९
देवः ७,६६,१४; ५६५
धूर्षु युक्तः ७,६६,१४; ५६५
नप्त्यः रथस्य १,५०,९; ५४२

चन्द्रमसः सहचारित्वे सूर्यस्य गुणबोधकपदानि।

अधिपतिः अ. ६,१०,३; ११३५
अह्नां केतुः १०,८५,१९; ९७२
उषसां अग्रं एति ,, ,,
चक्षोः (अस्य पुरुषस्य) अजायत ऋ. १०,९०,१३; ९७३।
वा. य. २१,१२; ९७८
चरते एकाकी वा. य. २३,१०; ९७७
नमस्यन्तः १,११५,३; ५४९
पतराः १०,३७,३; ५७२
भद्राः १,११५,३; ५४९
युक्तः धूर्षु ७,६६,१४; ५६५
रथस्य नप्त्यः १,५०,९; ५४२
शुन्ध्युवः १,५०,९; ५४२
सप्त १,५०,८-९; ५४१-४२
स्वयुक्तयः १,५०,९; ५४२। ७,६६,१५; ५६६
स्वसारः ७,६६,१५; ५६६
हरितः १,११५,३-४,५४९-५०। ७,६६,१५; ५६६

सूर्यसहचारी-वैश्वानराग्नेः गुणबोधकपदानि ।

(ऋ० १०,८८,१-१९; ६५९-७७)

अजरः ३; ६६१
अजुर्यः १३; ६७१
अध्यक्षः यक्षस्य १३; ६७१
अर्चिषा यन् १२; ६७०
आजुहवुः यस्मिन् विश्वा भुवनानि ९; ६६७
ऋजूयमानः अर्चिषा पृथिवीं द्यां च ९; ६६७
कः १; ६५९
कविः १४; ६७२
जातवेदाः ४-५; ६६२-६३
तनूपाः ८; ६६६
तविष् (षष्ठ्-द्वितीया) १३; ६७१
दिवियोनिः ७; ६६५
दिविस्पृक् १; ६५९
दीदिवान् १४; ६७२
दृशेन्यः महिना ७; ६६५
देवजुष्टः ४; ६६२
पचति यः विश्वरूपा ओषधीः १०; ६६८
प्रथमः होता ४; ६६२
बृहन् ३,१३; ६६१,६७१
भुवनस्य मूर्धनि अतिष्ठः ५; ६६३
मूर्धा भुवा भवति नक्तम् ६; ६६४
यज्ञः ८; ६६६
यज्ञियः ५; ६६३
रोदसिप्राः ५,१०; ६६३,६६८
विभावा ७; ६६५
वेदयं पृथिवी द्यौः आपः ८; ६६६
समिद्धः ७; ६६५
सूक्तवाक् ८; ६६६
स्वर्वित् १; ६५९
होता प्रथमः ४; ६६२

सूर्यदेवताया उपमासूची ।

यथा अक्षेत्रविद् सुरधः ५,४०,५; ५५६ भुवनानि अदीधयुः ।
यथा अग्नयः भ्राजन्तः १,५०,३; ५३६। वा.य. ८,४०; ५९७ केतवः रश्मयः वि अदृश्रम् ।
चर्म इव ७,६३,१; ५६१ देवः तमांसि समविव्यक् ।
जातं जात्रीः यथा हृदा अ.२०,४८,२;६८७ ता अर्षन्ति शुभ्रयः।
त्ये तायवः यथा १,५०,२; ५३५ नक्षत्राः अक्तुभिः अप यन्ति।
द्यौः इव भूम्रा वा. य. ३,५; ५९३ अहं भूयासम् ।
पृथिवी इव वरिम्णा वा. य. ३,५; ५९३ अहं भूयासम् ।
भागं न वा. य. ३३,४१; ६०४ जाते जनिमाने वसूनि प्रति ।
मर्यः न योषाम् १,११५,२;५४८ सूर्यः उषसं पश्चात् अभ्येति ।
यथा युवानः मत्सथः वा.य. ३३,३४;६०२ तथा नः विश्वं मनीषा।
अभि वत्सं न धेनवः अ. २०,४८,१; ६८६ त्वा अभि गिरः ।
श्येनः न दीयन् ७,६३,५; ६३१ पाथः अनु एति ।
श्रायन्तः इव सूर्यम् वा.य. ३३,४१; ६०४ वयं विश्वा इन्द्रस्य ।
यथा सूर्यः...नक्षत्राणां अ. ७,१३,१; ६१७ एवा स्त्रीणां वर्चः ।
उद्यन् सूर्यः इव अ. ७,१३,१; ६१८ द्विषतां वर्चः आ ददे ।
सुपर्णः वसतेः इव अ. ६,८३,१; ६७८ अपचितः प्र पतत ।

सूर्यदेवतामन्त्रेषु निपातदेवतानां गुणबोधकपदानि ।

अग्निः १,१६४,४६; ५५३ । ७,६१,१-३; ५५९-५६० [चन्द्रः ऋतावान् । (५६०)]
अग्निः (पार्थिवः) १०,१५८,१; ५८१
अदितिः १,११५,६; ५५१
अर्यमा ७,६१,१; ५५९
आपः १०,३७,६; ५७५
इन्द्रः १,१६४,४६; ५५३ । १०,३७,८; ५७५ । अ. ७,८१,६; ६८४ । भुवनस्य गोपाः अक्षितः अक्षितं भक्षयन्, अंशुं आप्याययन् ।
चन्द्राः ७,६१,३; ५६० (अयं शब्दः मित्रावरुणाग्नीनां विशेषणं वा ।)
देवाः १,११५,६;५५१।१०,३७,५,११-१२;५७४,५८०-८१

द्यौः १,११५,६; ५५१
द्यावापृथिवी १०,३७,६; ५७५
धाता १०,१५८,३; ५८४
पर्वतः १०,१५८,३; ५८४
पृथिवी १,११५,६; ५५१
बृहस्पतिः अ. ७,८१,६; ६८४ । भुवनस्य गोपाः अक्षितः अक्षितं भक्षयन्, अंशुं आप्याययन् ।
मरुतः १०,३७,६; ५७५
मातरिश्वा १,१६४,४६; ५५३
मित्रः १,११५,६; ५५१ । १६४,४६; ५५३ । ७,६०,१; ६२,२-३; ५५७,५५९-५६० ऋतावान् चन्द्रः ५६०
यमः १,१६४,१६; ५५३
वरुणः १,११५,६; ५५१ । १६४,४६; ५५३ । ७,६०,१; ५५७ । ६२,२,३; ५५९-६० । ऋतावान् चन्द्रः ५६० । अ. ७,८१,६; ६८४ । भुवनस्य गोपाः अक्षितः अक्षितं भक्षयन्, अंशुं आप्याययन् ।
वातः (अन्तरिक्षदेवता) १०,१५८,१; ५८२
सिन्धुः १,११५,६; ५५१

(६) [१] त्वष्टा ।

अग्नियः अ. ११,६,३; ७१४
अचिष्टुः वा. य. २०,४४; ६९६
अन्धसः जुजुषाणः २,३६,३; ७०३, ९२१
अपाकः वा. य. २०,४४; ६९६
इन्द्राय शुष्मं दधत् वा. य. २०,४४; ६९६
कर्ता बहोः वा. य. २९,९; ६९७
गावः १,१५,३, ९०९
जजान वीरं यः वा. य. २९,९; ६९७
जजान विश्वं भुवनं यः वा. य. २९,९; ६९७
जायत आशुरश्वः अर्वा यस्मात् वा. य. २९,९; ६९७
जुजुषाणः अन्धसः २,३६,३; ७०३, ९२१
त्वष्टा [बहुशः सर्वत्र ।]
दुहित्रे वहतुं युनक्ति अ. ३,३१,५; ६९८
देवः वा. य. ६,७; ६९४
नेष्टा १,१५,३,९; ९०९,९१५
प्रजया संरराणः वा. य. ८,१७; ६९५
बहोः कर्ता वा. य. २९,९; ६९७
भूरिरेताः वा. य. २०,४४; ६९६
यजन् वा. य. २०,४४; ६९६
रत्नधाः १,१५,३; ९०९
वृषा वा. य. २०,४४; ६९६
संरराणः प्रजया वा. य. ८,१७; ६९५
सुजनिमा १०,१८,६; ६९२
सुदत्रः वा. य. २,२४; ६९३
सुमद्गणः २,३६,३; ७०३, ९२१
सुयुजः अ. ५,२६,८; ६९९
सुहवः २,३६,३; ७०३, ९२१

[२] धाता ।

अग्नियः अ. ११,६,३; ७१४
देवः ,, ,,

धातादेवताया उपमासूची ।

यथा अपरः पूर्वं न १०,१८,५; ७०५ एवा एषां आयूंषि ।
यथा अहानि पूर्वं अनु १०,१८,५; ७०५ एवा एषां आयूंषि ।
यथा ऋतवः ऋतुभिः सधु यन्ति ,, ,, ,, ,,
द्यां इव १८,३,२६; ७०७ बाहुच्युता पृथिवी उपरि ।

[३] पूषा ।

अजाश्वः× १,१३८,४; ७३१ । ६,५८,२; ७७१
अदाभ्यः १०,२६,७; ७८५
अनपच्युतः १०,२६,८; ७८६
अनष्टपशुः १०,१७,३; ७७५
अनष्टवेदाः ६,५४,८; ७५६
अन्त्यूतिः १,१३८,१; ७२८
अप्रयुच्छन् १०,१७,५; ७७७
अवीनां नासोवायः १०,२६,६; ७८४

× पूष्णो अश्वाः– अजासः, निरूम्भाः ६,५५,६; ७६४ ।

अश्वहयः रथानाम् १०,२६,५; ७८३
अहेळमानः १,१३८,३-४; ७३०-३१
आघृणिः १,२३,१३-१४; ७१५-१६ । १३८,४; ७३१ । ३,६२,७; ७३२ । ६,४८,१६; ७३५ । ५३,३,८-९; ७४१,७४६-४७ । ५५,१,३; ७५९,७६१ । १०,१७,५; ७७७
आधवः विप्राणाम् १०,२६,४; ७८२
आधीषमाणायाः पतिः १०,२६,६, ७८४
इच्छमानः श्रवः ६,५८,३; ७७३
इनः १०,२६,७; ७८५
इनः पुष्टीनाम् १०,२६,७; ७८५
इन्दुर्न वृषा १०,२६,३; ७८०
इन्द्रस्य भ्राता ६,५५,५; ७६३
इर्यः ६,५४,८; ७५६
इळस्पतिः ६,५८,४; ७७४
ईशानः ६,५४,८; ७५६
ईशानः राधसः महः ६,५५,२; ७६०
उग्रः ६,५३,४; ७४२
उरुशंसः १,१३८,३; ७३०
ऋतस्य रथी ६,५५,१; ७५९
ऋषिः १०,२६,५; ७८३
कपर्दी ६,५५,२; ७६०
कविः ६,५३,७; ७४५
कामेन कृतः ६,५८,४; ७७४ । वा. य. ३४,४२; ७८८
कृतः कामेन ६,५८,४; ७७४ । वा. य. ३४,४२; ७८८
गोपाः भुवनस्य १०,१७,३; ७७५
जनश्रीः ६,५५,६; ७६४
जारः स्वसुः ६,५५,४-५; ७६२-६३
तवस् ६,५८,४; ७७४
तुविजातः १,१३८,१; ७२८
दस्मः १,४२,१०; ७२७
दस्मवर्चाः ६,५८,४; ७७४
दस्रः १,४२,५; ७२२ । ६,५६,४; ७६८
दिवः सुबन्धुः ६,५८,४; ७७४
दिधिषुः मातुः ६,५५,५; ७६३
देवः १,४२,१; ७१८ । १३८,२; ७२९। ६,५५,६; ७६४। ५८,२; ७७२ । १०,२६,४; ७८२
देवासः यं सूर्यायै अदुः ६,५८,४; ७७४
देवैः समः श्रिया ६,४८,१९; ७३८
धारा रायः ६,५५,३; ७६१
धियं जिन्वः ६,५८,२; ७७२
धीवतोधीवतः सखा ६,५५,३; ७६१
नपात् विमुचः १,४२,१; ७१८ । ६,५५,१; ७५९
नियुद्रथः १०,२६,१; ७७९
नावः यस्य हिरण्ययीः अन्तः समुद्रे चरन्ति अन्तरिक्षे चरन्ति ६,५८,३; ७७३
नौभिः यः सूर्यस्य दूत्यां याति ६,५८,३; ७७३
पतिः शुचस्य १०,२६,६; ७८४
पतिः शुचायाः १०,२६,६; ७८४
पतिः आधीषमाणायाः १०,२६,६; ७८४
पथस्पतिः ६,५३,१; ७३९
परः मर्त्यैः ६,४८,१९; ७३८
पशुपाः ६,५८,२; ७७२
पुरुष्टुतः ६,५६,४; ७६८
पुष्टीनां इनः १०,२६,७; ७८५
पूषा [प्रायः सर्वत्र ।]
पृथिव्याः सुबन्धुः ६,५८,४; ७७४
प्रजानन् १०,१७,५-६; ७७७-७८
प्रत्यर्धिः यज्ञियानाम् १०,२६,५; ७८३
भुवना संचक्षाणः ६,५८,२; ७७२
भुवना संपश्यति ३,६२,९; ७३४
भुवनस्य गोपाः १०,१७,३; ७७५
भुवने विश्वे अर्पितः ६,५८,२; ७७२
भ्राता इन्द्रस्य ६,५५,५; ७६३
मखः १,१३८,१; ७२८
मघवा ६,५८,४; ७७४
मतीनां साधनः १०,२६,४; ७८२
मनुर्हितः १०,२६,५; ७८३
मन्तुमत् (मः-संभो०) १,४२,५; ७२२ । ६,५६,४; ७६८
मयोभूः १,१३८,१-२; ७२८-२९
मर्त्यैः परः ६,४८,१९; ७३८
महः राधसः ईशानः ६,५५,२; ७६०
मातुः दिधिषुः ६,५५,५; ७६३
यज्ञानां प्रत्यर्धिः १०,२६,५; ७८३

यावयत्सखः विप्रस्य १०,२६,५; ७८३
रथानां अश्वहयः १०,२६,५; ७८३
रथी ऋतस्य ६,५५,१; ७५९
रथीतमः ६,५५,२; ७६० । ५६,२-३; ७६६-६७
ररिवान् १,१३८,४; ७३१
राधसः महः ईशानः ६,५५,२; ७६०
रायः धारा ६,५५,३; ७६१
राशिः वसोः ६,५५,३; ७६१
वचस्या कृतः वा. य. ३४,४१; ७८८
वसोः राशिः ६,५५,३; ७६१
वाजपस्त्यः ६,५८,२; ७७२
वाजानां पतिः १०,२६,७; ७८५
वाजी ६,५५,४; ७६२
वाशीवायः अवीनाम् १०,२६,६; ७८४
विद्वान् १०,१७,३; ७७५
विपः १०,२६,२; ७८०
विप्राणां आधवः १०,२६,४; ७८१
विमुचः नपात् १,४१,१; ७१० । ६,५५,१; ७५९
विश्वा अभि विपश्यति ३,६१,९; ७३४
विश्वस्य अर्थिनः सखा १०,२६,८; ७८६
विश्वे भुवने अर्पितः ६,५८,२; ७७१
विश्वसौभगः १,४१,६; ७१३
वृषा १०,२६,३; ७८०
शृण्वन् ६,५४,८; ७५६
शुचस्य पतिः १०,२६,६; ७८४
शुचायाः पतिः १०,२६,६; ७८४
श्रवः इच्छमानः ६,५८,३; ७७३
श्रुतः आरात् ६,५६,५; ७६९
सखा ६,५५,२,५; ७६०,७६३ । १०,२६,७; ७८५
सखा विश्वस्य अर्थिनः १०,२६,८; ७८६
समः देवैः श्रिया ६,४८,१; ७३०
सर्ववीरः १०,१७,५; ७७७
साधनः मतीनाम् १०,२६,४; ७८१
सुबन्धुः दिवः पृथिव्याः च ६,५८,४; ७७४
सूरः ७,५६,३; ७६७
स्वञ्चः ६,५८,४; ७७४
स्वधावान् ६,५८,१; ७७१
स्वसुः जारः ६,५५,४-५; ७६१-६३
स्वस्तिदाः १०,१७,५; ७७७
हिरण्यवाशीमत्तमः १,४१,६; ७१३

पूषादेवताया उपमासूची ।

अजिरं न १,१३८,२; ७२९ त्वा यामनि स्तोमैः प्र कृण्वे ।
इन्दुः न १०,२६,५; ७८१ सः सुष्टुतीनां वेद ।
उष्ट्रः न १,१३८,२; ७२९ त्वं मृधः पीपरः ।
(यथा) वेः ग्रीवाः ६,४८,१७; ७३६ एवा सूरः मा अहः ।
हतेः इव अच्छिद्रस्य ६,४८,१८; ७३७ दधन्वतः ते सख्यं—।
द्यौः इव ६,५८,१; ७७१ त्वं असि ।
यथा नष्टं पशुम् १,९३,१३; ७१५ हे पूषन्...धरुणं दिवः ।
यथा पुरा ६,४८,१९; ७३८ तथा नः त्वं नूनं अव ।
यथा मृधः ऋणवः १,१३८,२; ७२९ त्वा स्तोमैः प्र कृण्वे ।
गोभिः यवं न चर्कृषत् १,९३,१५; ७१७ स मह्यं इन्दुभिः ।
वधूयुः योषणां इव ३,६२,८; ७३३ वाजयन्तीं धियं अव ।
रथं न वाजसातये ६,५३,१; ७३९ वयं त्वा धिये अयुज्महि ।

[४] भगः ।

अदितेः पुत्रः ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८
अन्धः अ. ६,१२९,३; ८०३
आहितः वृक्षेषु " "
उग्रः ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८
जितः " " " "
देवाः× अ. ३,१६,५; १७०
पुत्रः अदितेः ३,१६,५; १७०
पुनःसरः अ. ६,१२९,३; ८०३
पुर एता ७,४१,५; ७९६। अ. ३,१६,५; १७०
प्रणेता ७,४१,३; ७९४ । अ. ३,१६,३; १६९
प्रविद्वान् अ. ५,२६,९; ८००
भगः [प्रायः सर्वत्र ।]

× अत्र 'देवाः' इति ऋग्वेदपाठः । अथर्व. ३,१६,१-३,५; १६८-७० = ऋग्वेद. ७,४१,१-३,५; ७९३-९४,७९६ समाना एव ।

भगवान् ७,४१,५; ७९६। अ. ३,१६,५; १७०
मघवा ७,४१,४; ७९५
वसुविद् ७,४१,६; ७९७
विधर्ता ७,४१,२; ७९३। अ. ३,१६,२; १६८
वृक्षेषु आहितः अ. ६,१२९,३; ८०३
शांशपः अ. ६,१२९,१; ८०१
सत्यराधाः ७,४१,३; ७९४। अ. ३,१६,३; १६९
सुयुजः अ. ५,२६,९; ८००

भगदेवतायां उपमासूची ।

अश्वः कनिक्रदद् अ. १,३०,५; ७९८ भगेन अहं सहागमम्।
दधिक्रावा इव शुचये पदाय ७,४१,६; ७९७उषसः अर्वाचीनं भगं ।
रथं इव अश्वाः वाजिनः ७,४१,६; ७९७
सविता भगः सूर्यो इव अ.१४,१.५३;८०६ प्रजया परि धत्ताम्।

(७) विष्णुः ।

अकुमारः १,१५५,६; ८३२
अदब्धः अ. १७,१,१२; १४५
अदाभ्यः १,२२,१८; ८२०
अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५
अन्यरूपः सामिधे ७,१००,६; ८४७
अपोर्णुते व्रजम् (यः) १,१५६,४; ८३६
अप्रतीता [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७७
अवृकः १,१५५,४; ८३०
आरोहन् त्रिदिवम् अ. १७,१,१०; १४३
इनः १,१५५,४; ८३०
इन्द्रस्य युज्यः सखा १,२२,१९; ८२१
उत्तरं सधस्थं अस्कभायत् १,१५४,१; ८२४। अ. ७,२६, १; ८६१
उरुक्रमः १,१५४,५; ८२८
उरुगायः १,१५४,१.३,६; ८२४,८२६,८२९। ७,१००,१; ८४२। वा. य. ८,१; १०७,८६०
ऋक्वभिः विमिमानः १,१५५,६; ८३१
ऋतस्य गर्भः १,१५६,३; ८३५
एवयाः १,१५६,१; ८३३
एवयावन् (धा) ७,१००,१; ८४३
कुचरः १,१५४,१; ८२५। अ. ७,२६,१; ८६२
गर्भः ऋतस्य १,१५६,३; ८३५
गिरिक्षित् १,१५४,३; ८२६
गिरिष्ठाः १,१५४,१; ८२५। अ. ७,२६,१; ८६२
गोपाः १,२२,१८; ८२०
घृतासुतिः १,१५६,१; ८३३
तन्वा मामया परः सधस्थः ७,९९.१; ८३८
तवसः ७,१००,५; ८४६
तवीयान् तवसः ७,१००,३; ८४४
त्राता १,१५५,४; ८३०
त्रिदिवं आरोहन् अ. १७,१,१०; १४३
त्रिधातु दाधार १,१५४,४; ८२७
त्रिस (ष) धस्थः १,१५६,५; ८३७
दक्षं उत्तमं अहर्विदं दाधार १,१५६,४; ८३६
देवः ७,९९,१-२; ८३८-३९
दैव्यः १,१५६,५; ८३७
धर्माणि धारयन् १,२२,१८; ८२०
नवीयाः १,१५६,२; ८३४
ना ८,२५,१५; ३५८
नाकं ऋष्वं उदस्तभ्नाः ७,९९,२; ८३९
पार्थिवानि रजांसि विममे १,१५४,१; ८२४
पूर्वहूतौ [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७७
पूर्व्यः १,१५६,१-३; ८३४-८३५
पृथिव्याः प्राचीं ककुभं दाधर्थ ७,९९,२; ८३९
बृहच्छरीरः १,१५५,६; ८३२
ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५
भीमः मृगः न १,१५४,२; ८२५
भूर्णिः ८,२५,१५; ३५८
मीढ्वान् १,१५५,४; ८३०। ८,२५,१४; ३५७
युवा १,१५५,६; ८३२
वनीयान् ८,२५,१५; ३५८
वावृधानः ब्रह्मणा अ. १७,१,१२; १४५
विचक्रमाणः त्रेधा १,१५४,१; ८२४। अ. ७,२६,१; ८६४
विभूतद्युम्नः १,१५६,१; ८३३

विमिमानः ऋक्वभिः १,१५५,६; ८३२
विष्णुः× [प्रायः सर्वत्र ।] अ. १७,१,६-१९; १३९-५२
वीरतमा वीर्येभिः [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७७
वृधानः तन्वा मात्रया परः ७,९९,१; ८३८
वृषा १,१५४,३,६; ८२६,८२९
वेधाः १.१५६,१,५; ८३४,८३७
व्रजं अपोर्णुते १,१५६,४; ८३६
शविष्ठा [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७०
शिपिविष्टः ७,९९,७; ८४१ । १००,५-६; ८४६-८४७
शेव्यः १,१५६,१; ८३३
सखा युज्यः इन्द्रस्य १,२२,१९; ८२१
सखिवान् १,१५६,४; ८३६
सजोषाः ८,९५,१४; ३५७
सप्रथाः १,१५६,१; ८३३
समिथे अन्यरूपः ७,१००,६; ८४७
सहोभिः पत्येते [वरुणश्च] ८,५९; ८७७
सुकृत्तरः १,१५६,५; ८३७
सुजनिमा ७,१००,४; ८४५
सुमज्जानिः १,१५६,१; ८३४
स्थविरः ७,१००,३; ८४४
स्वर्दृश् १,१५५,५; ८३१

विष्णुदेवताया उपमासूची ।

चक्रं न १,१५५,६; ८३२विष्णु वृत्तं व्यर्तान्...अर्वाविपत् ।
दिविः इव चक्षुः १,२२,२०; ८२२ सूरयः विष्णो तत्पदं ।
मित्रः न १,१५६,१; ८३३ शेव्यः सुप्रथाः भव ।
मृगः न १,१५४,२; ८२५ भीमः कुचरः गिरिष्ठा प्र स्तवते ।

विष्णोः विक्रमणम् ।

१,२२,१६; ८१८ विष्णुः विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः ।
,, १७; ८१९ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।
,, १८; ८२० त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः ।
१,१५४,१; ८२४ विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ।
अ. ७,२६,१; ८६१ ,,
१,१५४,२; ८२५ यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधि क्षियन्ति
अ. ७,२६,३; ८६३ भुवनानि विश्वा ।
१,१५४,३; ८२६ य इदं दीर्घं प्रथतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभिः ।
१,१५५,४; ८३० यः पार्थिवानि त्रिभिरिद्विगामभिरुक्रमिष्ट ।
७,१००,३; ८४४ त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा ।
,, ४; ८४५ वि चक्रमे पृथिवीमेष एताम् ।
१,१५५,५; ८३१ द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशोऽभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति । तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतयन्तः पतत्रिणः ॥

विष्णोः पदम् ।

१,२२,१७; ८१९ ...विष्णुः...त्रेधा नि दधे पदम् । समूळ्हमस्य पांसुरे ॥
,, २०; ८२२ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।
,, २१; ८२३ तद्विप्रासो ... समिन्धते । विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥
१,१५४,४; ८२७ यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति ।
,, ५; ८२८ विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ।
,, ६; ८२९ अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि ।

(८) विवस्वान् ।

राजा अ. ६,११६,१; ८८०
वैवस्वतः अ. ६,११६,१-२; ८८०-८८१

×अत्र अथर्व १७,१,६-१९; १३९-१५२ मंत्रेषु वर्तमानानि पदानि विष्णुस्वरूपेण वर्तमानस्य आदित्यस्य सन्ति ।

(९) संवत्सरः कालः ।

संवत्सरपञ्चकम् ।

संवत्सरः वा. य. १७,४५; ८८५
परिवत्सरः ,, ,,
इदावत्सरः वा. य. ३०,१५; ८८६
इद्वत्सरः ,, ,,
वत्सरः ,, ,,

संवत्सरावयवाः ।

उषसः वा. य. १७,४५; ८८५
अहोरात्राः ,, ,,
अर्धमासाः ,, ,,
मासाः ,, ,,
ऋतवः ,, ,,
संवत्सरः ,, ,,

संवत्सरकालयो गुणबोधकपदानि ।

संवत्सरः ।

पतिः एकाष्टकायाः अ. ३,१०,८; ८८७
सुपर्णचित् वा. य. १७,४५; ८८५

कालः ।

ईश्वरः सर्वस्य अ. १९,५३,८; ८९९
देवः परमो नु अ. १९,५४,५; ९०६
देवः प्रथमो नु अ. १९,५३,२; ८८३
पिता प्रजापतेः अ. १९,५३,९; ९००
ब्रह्म अ. १०,५३,९; ९००

(१०) ऋतवः ।

द्वादशदेवाः, संवत्सरस्य दंष्ट्राः । अ. ११,६,२२, ९६८

ऋतूनां नामानि ।

वसन्तः वा. य. २१,२३, ९४०। अ. १५,३,४; ९५२। अ. १२,१,३६; ९६
ग्रीष्मः वा. य. २१,२४; ९४१। अ. १५,३,४; ९५२। अ. १२,१,३६, ९६९
वर्षाः, वर्षाणि वा.य. २१,२५; ९४२। अ. १५,३४; ९५२। अ. १२,१,३६; ९६९
शरद्, शारदः वा.य.२१,२६,९४३। अ. १५,३,४, ९५२। अ. १२,१,३६; ९६९
हेमन्तः वा.य.२१,२७; ९४४। अ. १२,१,३६; ९६९।
शैशिरः वा. य. २१,२८; ९४५। अ. १२,१,३६, ९६९

ऋत्ववयवानां मासानां नामानि ।

मधुः, माधवः वा. य. ७,३०, ९३१। १३,१५; ९३२
शुक्रः, शुचिः वा. य. ७,३०; ९३१। १४,६; ९३३
नभः नभस्यः वा. य. ७,३०; ९३१। १४,१५; ९३४
इषः, ऊर्जः वा. य. ७,३०,९३१। १४,१६, ९३५
सहः, सहस्यः वा.य. ७,३०; ९३१। १४,१७, ९३६
तपः, तपस्यः वा. य. ७,३०; ९३१। १५,५७; ९३८
अंहसस्पतिः वा. य. ७,३०; ९३१

'हविरिन्द्रे वयो दधुः' इति । वा.य. २१,२३-२८, ९४०-४५
मन्त्रेषु इन्द्रे हविराद्याधाने वसन्तादीनामितरैःसह सहकारित्वम्।

ऋतुनाम ।	देवाः ।	स्तोमनाम ।	पृष्ठ(साम)नाम ।	मंत्रांकः
वसन्तः	वसवः	त्रिवृत्	रथन्तरम्	२१,२३; ९४०
ग्रीष्मः	रुद्राः	पञ्चदशः	बृहत्	,, २४; ९४१
वर्षाः	आदित्याः	सप्तदशः	वैरूपम्	,, २५; ९४२
शारदः	ऋभवः	एकविंशः	वैराजम्	,, २६; ९४३
हेमन्तः	मरुतः	त्रिणवः	शाक्करम्	,, २७; ९४४
शैशिरः	अमृताः	त्रयस्त्रिंशः	रैवतम्	,, २८; ९४५

व्रात्यस्य (ब्रह्मचारिणः) मासानां गोप्त्रादयः ।

[अथर्व० १५·४ सूक्तं । ९५३-६४]

दिक्नाम ।	गोप्तारौ ।	अनुष्ठातारौ ।	मंत्रांकः ।
प्राची	वासन्तौ मासौ	बृहत् रथन्तरं च ।	२-३; ९५३-५४
दक्षिणा	प्रैष्मौ ,,	यज्ञायज्ञियं वामदेव्यं च ।	५-६; ९५५-५६
प्रतीची	वार्षिकौ ,,	वैरूपं वैराजं च ।	८-९; ९५७-५८
उदीची	शारदौ ,,	श्यैतं नौधसं च ।	११-१२; ९५९-६०
ध्रुवा	हैमनौ ,,	भूमिः अग्निः च ।	१४-१५; ९६१-६२
ऊर्ध्वा	शैशिरौ ,,	द्यौः आदित्यः च ।	१७-१८; ९६३-६४

(१०) ऋतवः। (ऋग्वेद-संहिता)

सूक्तमंत्र-क्रमांकः	मंत्रोक्त-ऋतुवाचक पदम्	सोमपान-पात्रम्	मन्त्रोक्त-देवतापदम् (१,१५।२,३६-३७)	मंत्रोक्त-ऋतुवाचक पदम्	कात्यायन-सर्वानुक्रमण्युक्ता देवताः	सोमपान-पात्रम्	सूक्तमंत्र-क्रमांकः।
१,१५,			उभयत्र			२,३६,	
१;९०७	ऋतुना	...	इन्द्रः	...	मधुः	होत्रम्	१;९१९
२;९०८	"	पोत्रम्	मरुतः	...	माधवः	पोत्रम्	२;९२०
३;९०९	"	...	त्वष्टा	...	शुक्रः	...	३;९२१
४;९१०	"	...	अग्निः	...	शुचिः	आग्नीध्रम्	४;९२२
५;९११	ऋतून् अनु	ब्राह्मणम्	इन्द्रः	...	नभः	ब्राह्मणम्	५;९२३
६;९१२	ऋतुना	...	मित्रावरुणौ	...	नभस्यः	प्रशास्त्रम्	६;९२४
				[सायनभाष्यानुसारेण]		२,३७,	
७;९१३	...	...	द्रविणोदाः	ऋतुभिः	इषः	होत्रम्	१;९२५
८;९१४	...	...	"	"	ऊर्जः	पोत्रम्	२;९२६
९;९१५	ऋतुभिः	नेष्ट्रम्	"	"	सहः	नेष्ट्रम्	३;९२७
१०;९१६	"	तुरीयम्	"	...	...	होत्रपोत्रनेष्ट्रतुरीयाणि	४;९२८
११;९१७	ऋतुना	...	अश्विनौ	...	...	...	५;९२९
१२;९१८	"	...	अग्निः	ऋतुना	तपस्यः	...	६;९३०

२।३६ सूक्ते मंत्रेषु ऋतुवाचकपदस्य अभावः। कात्यायन सर्वानुक्रमण्यां देवतानामानि, मासानां नामानि, न तु ऋतूणाम्।

(११) चन्द्रमाः।

अधिपतिः नक्षत्राणाम् अ. ५,२४,१०; ९८६
अप्सु अन्तः वा. य. ३३,९०; ९७९। अ. १८,४,८९; ९८९
अह्नां केतुः ऋ. १०,८५,१९; ९७१
आयन् देवेभ्यः भागं वि दधाति ,, ,,
एति कनिक्रदत् वा. य. ३३,९०; ९७९
केतुः अह्नाम् ,,
चन्द्रः वा. य. २२,२८; ९७५
चन्द्रमाः (सर्वत्र)
जातः मनसा ऋ. १०,९०,१३, ९७३। वा. य. ३१,२२; ९७८
जायते पुनः वा. य. ३३,१०; ९७७
जायमानः नवः नवः ऋ. १०,८५,१९; ९७१
देवः अ. ११,६,७; ९९१
दे०[अदितिः०] १६
नक्षत्रैः उदक्रामत् अ. १९,१९,४; ९९०
नक्षत्राणां अधिपतिः अ. ५,२४,१०; ९८६
नक्षत्राणां ईशे अ. ६,८६,१; १०००
पिशङ्गं रयिं बहुलं पुरुस्पृहं एति वा. य. ३३,९०; ९७९
वत्सः दिशां धेनूनाम् अ. ४,३९,८; ९९९
वृत्रहा अ. १९,१७,१; ९९१
शतवृष्ण्यः अ. १,३,४; ९८०
शरस्य पिता ,, ,,
सुपर्णः दिवि आ धावते वा. य. ३३,९०; ९७९। अ. १८, ४,८९; ९८९
सोमः यं आहुः चन्द्रमाः अ. ११,६,७; ९९१
हरिः वा. य. ३३,९०; ९७९

आयुर्वेदप्रकरणे।

अन्तरिक्षेण पतति अ. ६,८०,१; १५८८

अवचाकशत् विश्वा भूता अ. ६,८०,१; १५८८
जन्म अप्सु अ. ६,८०,३; १५९०
दिव्यः श्वा अ. ६,८०,१,३; १५८८, १५९०
महिमा अनाः पृथिव्याम् ६,८०,३; १५९०
,, अन्तः समुद्रे ,, ,,
श्वा दिव्य. अ ६,८०,१,३; १५८८,१५९०
सधस्थं दिवि अ ६,८०,३; १५९०

चन्द्ररश्मयः ।

विद्युतः ऋ. १,१०५,१; ९८९
हिरण्यनेमयः ,, ,,

चन्द्रस्य द्विषभ्राशनी शक्तिः ।

अर्चिः अ. १,२२,३; ९८३
तपः ,, १; ९८१
तेजः ,, ५; ९८५
शोचिः ,, ४; ९८४
हरः ,, २; ९८२

(१२) रात्रिः ।

अन्तः महान्तः महिमान. अस्याम् अ. ३,१०,४; १०७७
अमर्त्या १०,१२७,२; १००४
अमावास्या रात्रिः अ. १,१६,१; १०१७
अश्वक्षमा अ. १९,४९,१; १०५१
आयती १०,१२७,१,३, १००३,१००५
इषिरा अ. १९,४९,१; १०५१
उपायती [धेनुः वा] अ. ३,१०,२; १०७५
उर्वी अ. १९,४७,२; १०३१
उशती अ. १९,४९,२, ८; १०५३,१०५९
केशाः [रात्रौ भवति] अ. १५, २,५, १३, २१,२९, १०२१-१०२४
ज्योतिषा नाम वै असि अ. १९,४८,६; १०४४
चक्षुष्मती अ. १९,४९,८, १०५९
चित्रावसुः वा य. ३,१८; १०३१
जनित्री अ. ३,१०,४; १०७७
ज्योतिषा तमः बाधते १०,१२७,२; १००४
ज्योतिषा सुज्योतिः वा. य. ३७,२१; १०१६
तमः अप हापते १०,१२७,३; १००५
तमः ज्योतिषा बाधते १०,१२७,२; १००४
तमस्वती अ. १९,४७,२; १०३१
त्वेषं ते तमः आ वर्तते वा. य. ३४,३२; १०१५
दमूनाः अ. १९,४९,१; १०५१
दिवः दुहिता १०,१२७,८; १०१०। अ. १९,४७,५; १०३४
दुहिता दिवः ,, ,,
देवी १०,१२७,१-३; १००३-५
धेनुः [धेनुः वा] अ. ३,१०,२; १०७५
नवगत् वधूः [धेनुः वा] अ ३,१०,४; १०७७
पत्नी संवत्सरस्य [,,] अ. ३,१०,२; १०७५
पिशङ्गिला वा. य. २३,१२; १०१२
पुरुत्रा १०,१२७,१; १००३
प्रतिमा संवत्सरस्य ३,१०,३; १०७६
प्रथमा या व्यौच्छत् [धेनुर्वा] अ. ३,१०,४; १०७७
प्रविष्टा आसु इतरासु ,, ,, ,,
बृहती वा. य. ३४,३२; १०१५
भद्रा अ. १९,४७,२,७; १०३१,१०३६। ४९,२; १०५३
भद्राह्नं अस्तु रात्री अ. ६,१२८,२; १०३०
माता अ. १९,४८,२; १०४०
माता वनस्पतेः सिलाचीनाम्न्याः अ. ५,५,१; १०२०
माता हिमस्य अ. १९,४९,५; १०५६
युवतिः अ. १९,४९,१,८; १०५१,१०५९
योषा अ. १९,४९,१; १०५१
रात्रिः [प्रायशः सर्वत्र]
रात्रिः तस्मात् [ब्रह्मणः] अजायत अ. ११,४,३०; १०१९
राज्याः सः [ब्रह्मा] अजायत ,,
रेवती अ. १९,४७,४; १०३३
वर्या अ. १९,४९,३; १०५४
वाजिनी अ. १९,४७,४; १०३३
विभाती अ. १९,४९,४; १०५५
विभावरी अ. १९,४८,२,४; १०४०, १०४१। ५०,७; १०५१। ४९,६; १०५७
विश्वा श्रियः अधि अधित १०,१२७,१; १००३
संवत्सरस्य पत्नी अ. ३,१०,२; १०७५

संवत्सरस्य प्रतिमा अ. ३,१०,३; १०७६
सम्भृतश्रीः अ. १९,४९,१; १०५२
सुभगा अ. १९,४९,३,५; १०५४,१०५६ । अ.१९,५०,६; १०५०
सुमङ्गली अ. ३,१०,२; १०७५
सुम्नयि [संबो०] अ. १९,४७,४; १०३३
सुहवा अ. १९,४९,१,५; १०५२,१०५६
हिमस्य माता अ. १९,४९,५; १०५६

रात्रिदेवताया उपमासूची ।

यथा इत् अन्यान् उपायसि अ. १९,५०,६; १०५० अस्मान् भोजय ।
ऋणा इव १०,१२७,७; १००९ कृष्णं तमः यातय ।
अश्ववाः गम्भीरं इव अ.१९,५०,३; १०४७ अरातयः रात्रि न ।
गाः इव १०,१२७,८; १०१० हे उषः ते उप आकरम् ।
चमसः न अ. १९,४९,८; १०५९ विश्वः ।
दिव्याः न ,, ,, क्षामं उक्थाः ।
मित्रः इव अ. १९,४९,२; १०५३ स्वधाभिः अधि तिष्ठते ।
राजा इव अ. १९,४९,६; १०५७ जोषमे अस्य सोमस्य ।
वृक्षे न वसतिं वयः १०,१२७,४; १००६ यत्र ते अविदमहि ।
(यथा) शाम्याकः प्रपतत्पवान् १९,५०,४; १०४८ एवा रात्रि प्र पातय ।
स्तोमं न ऋ. १०,१२७,८; १०१० हे रात्रि...अभिषुणे ।

(१३) पूर्णिमा ।

पूर्णा पश्चात् अ. ७,८०,१; १०७९
पूर्णा पुरस्तात् ,, ,,
पूर्णा मध्यतः ,, ,,
पौर्णमासी अ. ७,८०,१; १०७९ । अ.१५,२,१४; १०८९
प्रथमः अपानः व्रात्यस्य अ. १५,१६,१; १०८२
प्रथमा यज्ञिया अह्नां रात्रीणां अतिशर्वरेषु अ. ७,८०,४; १०८१
यज्ञिया अ. ७,८०,४; १०८१

(१४) राका ।

रराणा सहस्रपोषम् २,३२,५; १०८४
राका २,३२,४-५; १०८३-८४
सुभगा २,३२,४-५; १०८३-८४
सुमनाः २,३२,५; १०८४
सुरत(ष्टु)ती २,३२,४; १०८३
सुहवा २,३२,४; १०८३

(१५) अमावास्या ।

अमावास्या अ. ७,७९,१-४; १०८५-८८ । अ. १५,२,१४; १०८९ । १६,३; १०९० । १७,९; १०९१
ऊर्जं दुहाना अ.७,७९,३; १०८७
ऊर्जं पुष्टं वसु आवेशयन्ती अ. ७,७९,३; १०८७
विश्ववारा अ. ७,७९,१; १०८५
व्रात्यस्य तृतीयः अपानः अ. १५,१६,३; १०९०
संगमनी वसूनाम् अ. ७,७९,३; १०८७
सुभगा अ. ७,७९,१; १०८५

(१६) सिनीवाली ।

अभियन्ती अ. ७,४६,३; १०९४
इन्द्रं प्रतीची ,, ,,
देवानां स्वसा अ. २,३२,६; १०९२
देवी अ. ७,४६,३; १०९४
पृथुष्टुका अ. २,३२,६; १०९२
बहुसूवरी अ. २,३२,७; १०९३

विश्पत्नी अ. २,३२,७; १०९३ । ७,४६,३; १०९४
विष्णोः पत्नी अ. ७,४६,३; १०९४
सहस्रस्तुका ,, ,,
सिनीवाली [प्रायशः सर्वत्र]
सु+अं (=स्वं) गुरिः अ.२,३२,७; १०९३
सुकपर्दा वा. य. ११,५६; ९
सुकुरीरा वा. य. ११,५६; ९
सुबाहुः अ. २,३२,७; १०९३
सुसू(षू)मा अ. २,३२,७; १०९३
स्वसा देवानाम् अ. २,३२,६; १०९२
स्वौपशा वा. य. ११,५६; ९

(१७) कुहूः ।

उशती अ. ७,४७,२; ११०५
कुहूः अ. ७,४७,१-२; ११०४-५
चिकितुषी अ. ७,४७,२; ११०५
देवानां अमृतस्य पत्नी ,, ,,
देवी अ. ७,४७,१; ११०४
विश्पनापस अ. ७,४७,१; ११०४
सुकृत ,, ,,
सुहवा ,, ,,
हव्या ,, २; ११०५

(१८) नक्षत्राणि ।

अष्टाविंशानि अ. १९,८,२; ११३०
चित्राणि अ. १९,७,१; ११२४
जवानि भुवने अ १९,७,१; ११२४
रोचनानि ,, ,,
व्रात्यस्य चतुर्थो व्यानः अ. १५,१७,४; ११२३
शग्मानि अ. १९,८,२; ११३०
शिवानि ,, ,,
नक्षत्राणि अस्य ब्रह्मणः रूपम् अ. ९,७,१५; १११८
इदं ब्रह्म अन्यत् नक्षत्रम् अ. १०,२,२३; ११२१
सरीसृपाणि अ. १९,७,१; ११२४

नक्षत्राणां राजा ।

नक्षत्रराजा अ. ६,१२८,४; १११७
शकधूमः अ. ६,१२८,४; ११२७

क्रमशः नक्षत्राणां नामानि ।

१ कृत्तिका अ. १९,७,२; ११२५
२ रोहिणी ,, ,,
३ मृगशिरः ,, ,,
४ आर्द्रा ,, ,,
५ पुनर्वसू ,, ,,
६ पुष्यः ,, ,,
७ आश्लेषा अ. १९,७,२; ११२५
८ मघा ,, ,,
९ पूर्वा अ. १९,७,३; ११२६
१० फल्गुन्यौ ,, ,,
११ हस्तः ,, ,,
१२ चित्रा ,, ,,
१३ स्वाति ,, ,,
१४ विशाखे ,, ,,
१५ अनुराधा ,, ,,
१६ ज्येष्ठा ,, ,,
१७ मूलम् ,, ,,
१८ पूर्वा अषाढा अ. १९,७,४; ११२७
१९ उत्तरा ,, ,, ,,
२० अभिजित् ,, ,,
२१ श्रवणः ,, ,,
२२ शतभिषग् अ. १९,७,५; ११२८
२३ द्वया ,, ,,
२४ प्रोष्ठपदा ,, ,,
२५ रेवती ,, ,,
२६ अश्वयुजौ ,, ,,
२७ भरण्यः ,, ,,

निपातभाक्-अग्निदेवताया गुणबोधकपदानि ।

उशन् विश्वान् देवान् १,३७,६; ९३०
ऋतावान् ७,६१,३; ५६०
गोपा अ. १७,१,३०; १६३
चन्द्रः ७,६१,३; ५६०
तुरीयः अ. १,१६,१; १०१७
दक्षः १,१३६,६; २०८
ना ८,२५,१५; ३५८
पृथिव्याः वशी अ. ६,८६,१; १०००
ब्रह्म वा. य. ४,११; १६६
भूर्णिः ८,२५,१५; ३५८
भेषजं हिमस्य वा. य. २३,१०; ९९७
मीढ्वान् ८,२५,१४; ३५७
यज्ञः वा. य. ४,११; १६६
यज्ञनीः १,१५,११; ९१८
यातुहा अ. १,१६,१; १०१७
वनीयान् ८,२५,१५; ३५८
वशी पृथिव्याः अ. ६,८६,१; १०००
वसुः १,३७,६; ९३०
विप्रः १,३६,४; ९२२
विश्वान् देवान् उशन् १,३७,६; ९३०
सजोषाः ८,२५,१४; ३५७
होता १,३६,४; ९२२

द्रविणोदा अग्निः ।

अरिषण्यन् १,३७,३; ९२७
धृष्णुः ,, ,,
वनस्पतिः ,, ,,

निपातभाक्-इन्द्रदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुं आप्याययन् अ. ७,८१,६; ६८४
अक्षितः ,, ,,
अक्षितं भक्षयन् ,, ,,
अदब्धः अ. १७,१,१२; १४५
आप्याययन् अंशुम् अ. ७,८१,६; ६८४
आरोहन् त्रिदिवम् अ. १७,१,१०; १४३
ईड्यः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
ईशिषे सर्वस्य जगतः १,३६,१; ९१९
ऋषिभिः सहस्कृतः वा. य. ३३,८३; १२०
गृणानः दिवः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
गोजितः ,, ,, ,,
गोपाः भुवनस्य अ. ७,८१,६; ६८४
त्राता मरुताम् वा. य. १८,२०; ६७
त्रिदिवम् आरोहन् अ. १७,१,१०; १४३
दिवः गृणानः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
देवः वा. य. ८,१; १०८
दक्षः १,१३६,६; २०८
ना ८,२५,१५; ३५८
पुरुहूतः अ. १७,१,११; १४४
प्रथमः १,३६,१; ९१९
प्रयोः १,३६,५; ९२३
प्रियधामा अ. १७,१,१०; १४३
ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५
भक्षयन् अक्षितम् अ. ७,८१,६; ६८४
भुवनस्य गोपाः ,, ,,
भूर्णिः ८,२५,१५; ३५८
मीढ्वान् ८,२५,१४; ३५७
वनीयान् ८,२५,१५; ३५८
वशी ८,६७,८; ९१
वावृधानः ब्रह्मणा अ. १७,१,१२; १४५
विश्वजित् अ. १७,१,११; १४४
विषासहिः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
श्रुतः ८,६७,८; ९१
सजोषाः ८,२५,१४; ३५७
सन्धनाजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
सर्वविद् ,, ,,
सहमानः ,, ,,
सहस्कृतः ऋषिभिः वा. य. ३३,८३; १२०
सहीयान् अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
सहोजितः ,, ,,
सासहानः ,, ,,
स्वर्जितः ,, ,,

निपातभाक्-सोमदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अन्धः २,३७,३; ९२७
अमर्त्यः २,३७,४; ९२८
अमृक्तः ,, ,,
आभृतः इन्द्राय २,३६,५; ९२३
तदोकसः इन्दवः १,१५,१; ९०७
तुरीयं पात्रं (पात्रस्थम्) २,३७,४; ९२८
नृम्णवर्धनः २,३६,५; ९२३
प्रयः २,३७,४; ९२८
प्रस्थितम् २,३६,४; ९२२
प्रहुतः २,३६,१; ९१९
बाह्वोः सहः ओजः हितः (इन्द्रस्य) २,३६,५; ९२३
मत्सरासः (इन्दवः) १,१५,१; ९०७
मधु २,३६,४; ९२२
राजा अ. ५,२१,११; १८१
वषट्कृतः २,३६,१; ९१९
सुतः २,३६,५; ९२३
हितः २,३७,४; ९२८

निपातभाक्- मरुद्देवताया गुणबोधकपदानि ।

अञ्जिषु प्रियाः २,३६,२; ९२०
उग्राः अ. ५,२१,११; १८१
ऋषिभिः शुभ्रासः २,३६,२; ९२०
दिवः नरः २,३६,२; ९२०
नरः ८,२५,१५; ३५८
नरः दिवः २,३६,२; ९२०
पृश्निमातरः अ. ५,२१,११; १८१
पृषतीभिः यामन् २,३६,२; ९२०
प्रियाः अञ्जिषु ,, ,,
भरतस्य सूनवः ,, ,,
भूर्णयः ८,२५,१५; ३५८
मीढ्वांसः ८,२५,१४; ३५७
यज्ञैः संमिश्लाः २,३६,२; ९२०
यामन् पृषतीभिः ,, ,,
वनुषः (वनीयांसः) ८,२५,१५; ३५८
शुभ्रासः ऋष्टिभिः २,३६,२; ९२०
सजोषसः ८,२५,१४; ३५७
संमिश्लाः यज्ञैः २,३६,२; ९२०
सुदानवः १,१५,२; ९०८
सूनवः भरतस्य २,३६,२; ९२०

निपातभाक्-अश्विनौदेवताया गुणबोधकपदानि ।

दीद्यग्नी १,१५,११; ९१७
नरौ ८,२५,१५; ३५८
पुष्करस्रजा अ. ५,२५,३; १०९९
भूर्णी ,, ,,
मीढ्वांसौ ,, १४; ३५७
यज्ञवाहसा १,१५,११; ९१७
वनीयांसौ ८,२५,१५; ३५८
वाजिनीवसू २,३७,५; ९२९
शुचिव्रता १,१५,११; ९१७
सजोषसौ ८,२५,१४; ३५७

निपातभाक्-बृहस्पतिदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुं आप्याययन् अ. ७,८१,६; ६८४
अक्षितः ,, ,,
अक्षितं भक्षयन् ,, ,,
अथर्वा अ. ४,१,७; १७७
आप्याययन् अंशुम् अ. ७,८१,६; ६८४
ऋतस्थाः दिवः अ. ४,१,४; १७४
ऋतस्थाः पृथिव्याः अ. ४,१,४; १७४
कविः अ. ४,१,७; १७७
गोपाः भुवनस्य अ. ७,८१,६; ६८४
जनिता विश्वेषाम् अ. ४,१,७; १७७
दिवः ऋतस्थाः अ. ४,१,४; १७४
देवः पूर्व्यः अ. ४,१,६; १७६

देवता अ. ४,१,६; १७६
देवबन्धुः ,, ७; १७७
पिता ,, ,,
पूर्व्यः देवः ,, ६; १७६
पृथिव्याः ऋतस्थाः अ. ४,१,४; १७४
प्रजानन् अ. २,२६,२; १०३८
भक्षयन् अक्षितम् अ. ७,८१,६; ६८४
भुवनस्य गोपाः अ. ७,८१,६; ६८४
महान् अ. ४,१,४; १७४
विश्वेषां जनिता अ. ४,१,७; १७७
सम्राट् अ. ४,१,५; १७५
स्वधावान् अ. ४,१,७; १७७

अदितेः, आदित्यानां च पुनरुक्त-मन्त्रभागाः।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[१०] १।४१।६ (कण्वो घौरः । आदित्याः)
विश्वं तोकमुत त्मना ।
(अग्निः १४५६) ८।८४।३ (उशना काव्यः । अग्निः)
रक्षा तोकमुत त्मना ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम्।

[२२] २।२७।२ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।
(३३१) ७।६४।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
मित्रो अर्यमा ... वरुणो जुषन्त ।
[२४] २।२७।४ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।
(विश्वे देवाः ११९) १।१६४।२१ (दीर्घतमा औचथ्यः । विश्वे देवाः)
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।
[२७] २।२७।७ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्म ।
(आयुर्वेदः १९५९) १०।१०।६ (यमी वैवस्वती ऋषिका । यमः)
... ... वरुणस्य धाम ।
[२९] २।२७।९ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
श्री रोचना दिव्या धारयन्त ।
(इन्द्रः १६६७) ५।२९।१ (गौरिवीतिः शाक्त्यः । इन्द्रः)
[३७] २।२७।१७ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
=२।२८।११ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा। वरुणः)
=(विश्वे देवाः १५७) २।२९।७ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । विश्वे देवाः)
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाम्न आ विदं शूनमापेः ।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[४२] ७।५२।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत् कर्म वसवो यच्चयध्वे ।
(विश्वे देवाः३९९) ६।५१।७(ऋजिश्वा भारद्वाजः । आदित्याः)
मा व एनो अन्यकृतं भुजेम ... ।
[४३] ७।५२।३ तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त ।
(विश्वे देवाः ४९५)७।४२।१(मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। विश्वे देवाः)

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त ।

[४३] ७।५२।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
रत्नं देवस्य सवितुरियानाः ।
(४७१) ७।३८।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
..... सवितुरियानः ।

[४४] ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
यदद्य सूर उदिते ।
(५१) ७।६६।१२ सूक्तैः सूर उदिते ।
(विश्वे देवाः५३०)८।२७।१९(मनुर्वैवस्वतः। विश्वे देवाः)
यदद्य सूर उद्यति ।
विश्ववेदसो .....मध्यन्दिने ।
(विश्वे देवाः ५३२) ८।२७।२१ यदद्य सूर उदिते...
मध्यन्दिने । विश्ववेदसो ... ।

[४४] ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
सुवाति सविता भगः ।
(४५४) ५।८२।३ (ऋजाश्व आत्रेयः । सविता)

[४६] ७।६६।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
उत स्वराजो अदितिः ।
(इन्द्रः ३०१) ८।१२।१४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
उत स्वराजे अदितिः ।

[४७] ७।६६।७ प्रति वां सूर उदिते ।
(६३१) ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यमित्रवरुणाः)

[५०] ७।६६।१० अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
(अग्निः ९९) १।४४।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)

[५१] ७।६६।११ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
यूयमृतस्य रथ्यः ।
(विश्वे देवाः५६१) ८।८३।३ (कुसीदी काण्वः। विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[५४] ८।१८।१ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
एषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः ।
(मरुतः ६०) ८।७।१५ (पुनर्वत्सः काण्वः। मरुतः)

[५६] ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(विश्वे देवाः २३८) ४।५५।१० (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)

[,,] ८।१८।३ भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेप आजीगर्तिः । अग्निः)
रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

[,,] ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
वरुणो मित्रो अर्यमा । शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ।
(विश्वे देवाः ७९८) १०।१२६।७ (कुत्समलर्हिषः शैलूषिः अंहोमुग्वा वामदेव्यः । विश्वे देवाः)
वरुणो ... । शर्म ... सप्रथ आदित्यासो यदीमहे ।

[३] ८।१८।५ (इरिम्बिठिः काण्वः । अदितिः)
अंहोश्चिदुरुचक्रयः ।
(२७७) ५।६७।४ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

[५७] ८।१८।१० (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
अप सेधत दुर्मतिम् ।
(आयुर्वेदः २३०८) १०।१७५।२ (ऊर्ध्वग्रावा सर्प आर्बुदिः । ग्रावाणः)

[५९] ८।१८।११ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
तत् सु नः.....आदित्या यन्मुमोचति ।
(९९) ८।६७।१८ (मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मान्यः बहवो वा मत्स्या जालबद्धाः । आदित्याः)
तत् सु नो...आदित्या ...।

[६१] ८।१८।१४ दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् ।
(अश्विनौ २२४) २।४१।८ (गृत्समदः शौनकः । अश्विनौ)
दुःशंसो मर्त्यो रिपुम् ।

[६३] ८।१८।१६ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
आ शर्म पर्वतानां अपां वृणीमहे ।
८।३१।१० (मनुर्वैवस्वतः । दम्पत्याशिषः)
आ शर्म पर्वतानां वृणीमहे नदीनाम् ।

[६८] ८।१८।२१ नृवद् वरुण शंस्यम् ।
(विश्वे देवाः ५६१) ८।८३।४ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)
वामं वरुण शंस्यम् ।

[६९] ८।१८।२२ प्र सू न आयुर्जीवसे तिरेतन ।
१०।५९।५ (बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः । असुनीतिः)
जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः ।

[७१] ८।१९।३५ (सोभरिः काण्वः । आदित्याः)
स्यामेदस्तस्य रथ्यः ।
(५१) ७।६६।१२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
यूयमृतस्य रथ्यः ।
[७२] ८।४७।१ (त्रित आप्त्यः । आदित्याः)
महि वो महतामवो ।
(८८) ८।६७।४ (मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मान्यः बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)
[,,] ८।४७।१ वरुण मित्र दाशुषे ।
(१९४) ५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुण मित्र दाशुषः ।
[७३-८४] ८।४७।१-१३ (त्रित आप्त्यः । आदित्यः)
अनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ।
(उषा १८७-९१) ८।४७।१४-१८ (त्रित आप्त्यः । आदित्योषसः)
[७३] ८।४७।५ स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ।
(इन्द्रः ९) १।४।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
[८०] ८।४७।९ अदितिः शर्म यच्छतु ।
६।७५।१२ (पायुर्भारद्वाजः । इषवः)
[,,] ८।४७।९ (त्रित आप्त्यः । आदित्याः)
माता मित्रस्य रेवतो अर्यम्णो वरुणस्य ।
(विश्वे देवाः ५९६) १०।३६।३(लुशो धानाकः। विश्वे देवाः)
माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः ।
[८०] ८।४७।९ अर्यम्णो वरुणस्य च ।
(१०४)१।१३६।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
[८५] ८।६७।१ (मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मान्यः बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)
सुमृळीकाँ अभिष्टये ।
(६) ८।६७।१० सुमृळीकामभिष्टये ।
[८८] ८।६७।४ महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन् ।
(७१) ८।४७।१ (त्रित आप्त्यः । आदित्याः)
...वरुण मित्र दाशुषे ।
[,,] ८।६७।४ वरुण मित्रार्यमन् ।
(१७४) ५।६७।१ (यजत आत्रेयः । मित्र वरुणौ)
[,,] ८।६७।४ अवांस्या वृणीमहे ।
८।२६।२१ (विश्वमना वैयश्वः, व्यश्वो वाङ्गिरसः । वायुः)
[९०] ८।६७।६ तेना नो अधि वोचत ।
(मरुतः १०७) ८।२०।२६ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)
[९९] ८।६७।१८ आदित्या यन्मुमोचति ।
(५९) ८।१८।१२ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम्।

[१८५] ३।५९।१ (गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः)
मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणः ।
(विश्वे देवाः ४६५) ७।३६।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः ।
[''] ३।५९।१ मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।
(विश्वे देवाः४००) ६।५१।८ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
नमो दाधार ... ... ।
[''] ३।५९।१ मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत ।
(आयुर्वेदः ८७३) ७।४७।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। आपः)
सिन्धुभ्यो हव्यं ... ... ।
[१८७] ३।५९।३ अनमीवास इळया मदन्तः ।
(विश्वे देवाः १८९) ३।५४।२० (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
ध्रुवक्षेमास इळया मदन्तः ।
[१८८] ३।५९।४ तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ।
(अग्निः ४६७) ३।१।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
[१९३] ३।५९।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्र)
जनाय वृक्तबर्हिषे ।
(अग्निः ९०५)५।२३।३(शुन्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्निः)
जनासो वृक्तबर्हिषः ।
(इन्द्रः १७४१) ५।३५।६ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
जनासो वृक्तबर्हिषः ।
(अश्विनौ ४००)८।५।१७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
जनासो वृक्तबर्हिषः ।
(इन्द्रः २७९) ८।६।३७ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
जनासो वृक्तबर्हिषः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[१९६] १।२।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् ।
(३३६) ७।६५।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।
(२५५) ५।६४।१ (अर्चनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे ।

[१९७] १।२।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधौ ।
(२२२) १।१५२।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे ।

[२०१] १।२३।६ (मेधातिथिः काण्वः । मित्रावरुणौ)
वरतां नः सुराधसः ।
(इन्द्रः १४६५)३।५३।१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
करद्दिन्नः सुराधसः ।

[२०३] १।१३६।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
ता राजाना घृतासुती ।
(२३५) २।४१।६ (गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)

[२०४] १।१३६।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
मित्रस्य ... अर्यम्णो वरुणस्य च ।
(८०) ८।४७।९ (त्रित आप्त्यः । आदित्याः)
मित्रस्य ... अर्यम्णो वरुणस्य च ।

[२०५] १।१३६।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
सचेते...। ... आदित्या दानुनस्पती ।
(२३५) २।४१।६ (गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)
आदित्या दानुनस्पती । सचेते... ।

[२०६] १।१३६।४ अयं मित्राय वरुणाय शंतमः ।
(सोमः ९७६) ९।१०४।३ (पर्वतनारदौ काण्वौ, काश्यपौ शिखण्डिन्यावप्सरसौ वा। पवमानः सोमः)
यथा मित्राय ... ... ।

[२१०] १।१३७।१ अस्मत्रा गन्तमुप नः ।
(२१२) १।१३७।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः। मित्रावरुणौ)

[,,] १।१३७।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
सोमाः शुक्रा गवाशिरः ।
(सोमः ५०५) ९।६४।२८ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

[२११] १।१३७।२ सोमासो दध्याशिरः ।
(इन्द्रः १८) १।५।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)

[,,] १।१३७।२ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।
(अश्विनौ ४५) (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

[,,] १।१३७।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
चारुर्ऋताय पीतये ।
(सोमः १४४) ९।१७।८ (असितः काश्यपो देवलो वा। पवमानः सोमः)

[२१२] १।१३७।३ अंशुं दुहन्त्यद्रिभिः सोमं दुहन्त्यद्रिभिः ।
(सोमः ५२२) ९।६५।१५ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः ।

[२१६] १।१५१।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
ऋतावानावृतमा घोषथो बृहत् ।
(३५०) ८।२५।४ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
... ... घोषतो बृहत् ।

[२२२] १।१५२।१ ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे ।
(१९७) १।२।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
ऋतेन मित्रावरुणौ ।

[२२५] १।१५२।४ प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ।
(३२४) ७।६१।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
शंसा मित्रस्य ... ...।
(आयुर्वेदः १९५९) १०।१०।६ (यमो वैवस्वत ऋषिः । यमी)
बृहन्मित्रस्य ... ...।
(इन्द्रः २६६९) १०।८९।८ (रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
प्र ये मित्रस्य ... ...।
(२७) १।२७।७(कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्यः)
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य ... ।
(अग्निः १७६१)४।५।४(वामदेवो गौतमः। वैश्वानरोऽग्निः)
... वरुणस्य धाम ... मित्रस्य ।

[२२६] १।१५२।५ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
अनश्वो जातो अनभीशुरर्वा ।
४।३६।१ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
... ... अनभीशुरुस्रथो ।

[२२८] १।१५२।७ आ वां मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं ।
(३३९) ७।६५।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
(२३६) ३।६२।१६ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
[२२९] १।१५३।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।
(इन्द्रः ३१५९) ४।४२।९ (त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः । इन्द्रावरुणौ)
हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।
(इन्द्रः ३१९२) ७।८४।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्रावरुणौ)
हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[२३३] २।४१।४ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्] भार्गवः शौनकः)
अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा ।
(अश्विनौ ३९) १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
अयं वां मधुमत्तमः सुतः... ।
[२३५] २।४१।६ ता सम्राजा घृतासुती ।
(२०३) १।१३६।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
[,,] २।४१।६ आदित्या दानुनस्पती । सचेते ।
(२०५) १।१३६।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
सचेते... । आदित्या दानुनस्पती ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[२३६] ३।६२।१६ (विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
(३३९) ७।६५।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
आ नो मित्रावरुणा ... घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिळाभिः ।
(अश्विनौ ३८९) ८।५।६ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
[२३८]३।६२।१८(विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा। मित्रावरुणौ)
गृणाना जमदग्निना ।
(आयुर्वेदः १०८०) ७।९६।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वती)
गृणाना जमदग्निवत् ।
(अश्विनौ ५७९) ८।१०१।८ (जमदग्निर्भार्गवः । अश्विनौ)
गृणाना जमदग्निना ।
(सोमः ४४१) ९।६२।२४ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
गृणानो जमदग्निना ।
(सोमः ५३२) ९।६५।२५ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
गृणानो जमदग्निना ।
[२३८] ३।६२।१८ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
पातं सोममृतावृधा ।
(अश्विनौ ४१) १।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[२५५] ५।६४।१ (अर्चनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुणं वो रिशादसम् ।
(१९६) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
वरुणं च रिशादसम् ।
[२५६] ५।६४।२ विश्वासु क्षासु जोगुवे ।
(अग्निः २८१) १।१२७।१०(परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
[२६३] ५।६५।२ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
राजाना दीर्घश्रुत्तमा । ऋतावृध ऋतावाना जनेजने ।

(३६९) ८।१०१।२ (जमदग्निर्भार्गवः । मित्रावरुणौ)
राजाना ... ... ।
(२७७) ५।६७।४ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ऋतस्पृश ऋतावानो जनेजने ।
[२६६] ५।६५।५ स्याम सप्रथस्तमे ।
(अग्निः २६८) १।९४।१३ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः)
स्याम...सप्रथस्तमे ।
["] ५।६५।५ अनेहसस्त्वोतयः ।
(७१ ८४) ८।४७।१-१३ अनेहसो व ऊतयः ।
(उषा १८७-९१) ८।४७।१४-१८ (त्रित आप्त्यः । आदित्यः)
[२७०] ५।६६।३ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ता वामेषे रथानाम् ।
(इन्द्रः ३०४३) ५।८६।४ (अत्रिर्भौमः । इन्द्राग्नी)
[२७१] ५।६६।४ नि केतुना जनानाम् ।
(आयुर्वेदः ७७७) १।१९१।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अप्तृणसूर्याः)
नि केतवो जनानाम् ।
[२७४] ५।६७।१ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुण मित्रार्यमन् ।
(८८) ८।६७।४ (मत्स्यः साम्मदः मान्यो मैत्रावरुणिः बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)
(विश्वे देवाः ७९३) १०।१२६।२ (कुत्समलबर्हिषः शैलूषिः अंहोमुग्वा वामदेव्यः । विश्वे देवाः)
[२७५] ५।६७।२ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
आ यद्योनिं हिरण्ययं.....सदथः ।
(सोमः ४९७) ९।६४।२० (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
आ यद्योनिं हिरण्ययं...सीदति ।
["] ५।६७।२ धर्तारा चर्षणीनाम् ।
(इन्द्रः ३१३५) १।१७।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)
[२७६] ५।६७।३ वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेप आजीगर्तिः । अग्निः)
१।४१।१ (कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः)
["] ५।६७।३ पान्ति मर्त्यं रिषः ।
१।४१।२ (शुनःशेप आजीगर्तिः । वरुणमित्रार्यमणः)
[२७७] ५।६७।४ ऋतावानो जनेजने ।
(२६३) ५।६५।२ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ऋतावाना... ।
["] ५।६७।४ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ते हि.....। अंहोश्चिदुरुचक्रयः ।
(३) ८।१८।५ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
ते हि...। अंहोश्चिदुरुचक्रयः ।
[२८६] ५।६९।३ (उरुचक्रिरात्रेयः । मित्रावरुणौ)
प्रातर्...मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।
(अश्विनौ २८९) ५।७६।३ (अत्रिर्भौमः । अश्विनौ)
[२९२] ५।७१।१ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
आ नो गन्तं रिशादसा ।...इमम् ।
(अश्विनौ ४३७) ८।८।१७ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
...रिशादसेमम् ।
[२९३] ५।७१।२ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ईशाना पिप्यतं धियः ।
(इन्द्रः ३०८०) ७।९४।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्राग्नी)
(सोमः १५३) ९।१९।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
[२९४] ५।७१।३ उप नः सुतमा गतम् ।
(इन्द्रः ८१) १।१६।४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
उप...गहि ।
["] ५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुण मित्र दाशुषः ।
(७२) ८।४७।१ (त्रित आप्त्यः । आदित्याः)
वरुण मित्र दाशुषे ।
["] ५।७१।३ अस्य सोमस्य पीतये ।
(अश्विनौ ५) १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
[२९५-९७] ५।७२।१-३ नि बर्हिषि सदतं (३ सदतां) सोमपीतये ।
[२९७] ५।७२।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
जुषेतां यज्ञमिष्टये ।
(अश्विनौ २९९) ५।७८।३ (सप्तवध्रिरात्रेयः । अश्विनौ)
जुषेथां यज्ञमिष्टये ।
(इन्द्र ३०९४)८।३८।४ (श्यावाश्व आत्रेयः। इन्द्राग्नी)
जुषेथां यज्ञमिष्टये ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३०७] ६।६७।१० (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । मित्रावरुणौ)
वि यद्वाचं कीस्तासो भरन्ते ।

(अश्विनौ ३७१) ७।७१।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अश्विनौ)
प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३०९] ७।५०।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
मा मां पथेन रपसा विदत् स्वरुः ।
(अग्निः १२११) ७।५०।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)
(विश्वे देवाः ५०८) ७।५०।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)

[३१०] ७।६०।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपाः ।
(विश्वे देवः ३८४) ६।५०।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।

[,,] ७।६०।२ ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।
(अग्निः ६४३) ४।१।१७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[३११] ७।६०।३ अयुक्त सप्त हरितः सधस्थात् ।
(५५०) १।११५।४ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)

[,,] ७।६०।३ सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ।
(अग्निः ६६४) ४।२।१८ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
आ यूथेव...जनिमान्त्युप्र ।

[३१२] ७।६०।४ उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुः ।
(अश्विनौ २३८) ४।४५।२ (वामदेवो गौतमः। अश्विनौ)
उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते ।

["] ७।६०।४ आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः ।
(विश्वे देवाः ३१८) ५।४५।१० (सदापृण आत्रेयाः । विश्वे देवाः)

["] ७।६०।४ मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।
(विश्वे देवाः १४१) १।१८३।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)

[३१३] ७।६०।५ शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः ।
१।२८।३ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । वरुणः)
यूयं नः पुत्रा... ।

[३१४] ७।६०।६ अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तः ।
(अग्निः ११३३) ७।३।१० = ७।४।१० (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)
अपि क्रतुं सुचेतसं वतेम ।

[३१५] ७।६०।११ वाजस्य सातौ परमस्य रायः ।
(अग्निः ७३६) ४।१२।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।

["] ७।६०।११ उरु क्षयाय चक्रिरे ।
(अग्निः ७५) १।२६।८ (कण्वो घौरः । अग्निः)

[३१०] ७।६०।१२ = (३१७) ७।६१।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

[३११] ७।६१।१ अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे ।
(इन्द्रः ३००८) १।१०८।१ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
वामभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।

[३१४] ७।६१।४ शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम ।
(३१५) १।१५२।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ।

[३१६] ७।६१।६ समु वां यज्ञं महयं नमोभिः ।
(विश्वे देवः ४९७) ७।४२।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
समु वो यज्ञं महयं ... ।

[३१७] ७।६१।७=(३२०) ७।६०।१२

[३१८] ७।६२।४ द्यावाभूमी अदितेः त्रासीथां नः ।
(विश्वे देवाः २२९) ४।५५।१ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)

[३१९] ७।६२।५ श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ।
(विश्वे देवाः ८७) १।१२२।६ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । विश्वे देवाः)

[३३०] ७।६२।६=७।६३।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्मने तोकाय वरिवो दधन्तु ।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
[३३१] ७।६४।१ **मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।**
(२२) २।२७।२ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्यः)
[३३५] ७।६४।५= (३४०) ७।६५।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
एष स्तोमो वरुणो मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
["] ७।६४।५=(३४०) ७।६५।५
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीः ।
(इन्द्रः ३३२४) ४।५०।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्राबृहस्पती)
[३३६] ७।६५।१ **प्रति वां सूर उदिते सूक्तैः ।**
(६३१) ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यमित्रावरुणाः)
प्रति वां... विधेम ।
["] ७।६५।१ **मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।**
(१९६) १।२।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
...पूतदक्षं वरुणम् ।
[३३८] ७।६५।३ **अपो न नावा दुरिता तरेम ।**
(इन्द्रः ३१६८) ६।६८।८ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रावरुणौ)
[३३९] ७।६५।४ **आ नो मित्रावरुणा...घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्।**
(२३६) ३।६२।१६ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
["] ७।६५।४ **प्रति वामत्र वरमा जनाय ।**
(अश्विनौ ३५९) ७।७०।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः अश्विनौ)
प्रति प्र यातं वरमा जनाय ।
[३४०] ७।६५।५ = (३३५) ७।६४।५
["] ७।६५।५ = (३३५) ७।६४।५
[३४२] ७।६६।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
असुर्याय प्रमहसा ।
(३४९) ८।२५।३ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
[३४६] ७।६६।१९ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
पातं सोममृतावृधा ।
(अश्विनौ ४१) १।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[३४७] ८।२५।१ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ।
(अग्निः १२९९) ८।२३।३० (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ।
[३४९] ८।२५।३= (३४२) ७।६६।२
[३५०] ८।२५।४ = (२१६) १।१५१।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
[३५३] ८।२५।७ **अभि यूथेव पश्यतः ।**
(अग्निः ६६४) ४।२।१८ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
आ यूथेव ... पश्वो ।
[३५४] ८।२५।८ **साम्राज्याय सुक्रतू ।**
१।२५।१० (शुनःशेप आजीगर्तिः । वरुणः)
साम्राज्याय सुक्रतुः ।
[३६१] ८।२५।१८ **उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।**
(विश्वे देवाः १८४) ३।५४।१५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
[३६७] ८।२५।२४ **विप्रा नविष्ठया मती ।**
(इन्द्रः ९२६) १।८२।२ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
[३६९] ८।१०१।१ (जमदग्निर्भार्गवः । मित्रावरुणौ)
राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।
(२६३) ५।६५।१ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
[,,] ८।१०१।१ **साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।**
(अश्विनौ ४५) १।४७।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[४०६] १।२२।८ (मेधातिथिः काण्वः । सविता) | (सोमः ९७४) ९।१०४।१ (पर्वतनारदौ काण्वौ,

[४०७] १।१४।३ (आजीगर्तिः शुनःशेपः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । सविता)
ईशानं वार्याणाम् ।
(इन्द्रः १५) १।५।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। इन्द्रः)
[४१०] १।३५।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
हिरण्ययेन सविता रथेन ।
(अश्विनौ २५५) ४।४४।५ (पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)
हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।
(अश्विनौ ४१८) ८।५।३५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
हिरण्ययेन रथेन ।
[४१६] १।३५।८ हिरण्याक्षः सविता देव आगात् ।
(४१३) १।३८।४ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चात्] भार्गवः शौनकः । सविता)
अरमतिः सविता— ।
[४१६] १।३५।८ दधद् रत्ना दाशुषे वार्याणि ।
(अश्विनौ ३९) १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
धत्तं रत्नानि दाशुषे ।
[४१७] १।३५।९ उभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।
१।१६०।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । द्यावापृथिवी)
द्यावापृथिवी...। धिषणे अन्तरीयते ।
[४१८] १।३५।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ् ।
(अश्विनौ १२७) १।११८।१ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[४२०] २।३८।१ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चात्] भार्गवः शौनकः । सविता)
उदु ष्य देवः सविता सवाय ।
(४६१) ६।७१।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता)
...सविता हिरण्यया ।
(४६४) ६।७१।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता)
...सविता दमूना हिरण्यपाणिः ।
(४६७) ७।३८।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
...सविता ययाम हिरण्ययीम् ।
[४२३] २।३८।४=(४१६) १।३५।८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः। सविता)
[४३०] २।३८।११ (गृत्समदः शौनकः । सविता)
शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवाति ।
(अग्निः ११५४)७।८।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[४४३] ४।५४।३ (वामदेवो गौतमः । सविता)
अचित्ती यत् चकृमा दैव्ये जने ।
७।८९।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । वरुणः)
यत् ... .. दैव्ये जने...।
चरामसि ... ... अचित्ती ॥
[४४६] ४।५४।६ आदित्यैनों अदितिः शर्म यंसत् ।
(विश्वे देवाः ६५) १।१०७।२ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[४५३] ५।८१।२ अस्य हि स्वयशस्तरम् ।
(अग्निः ८७७) ५।१७।२ (पूरुरात्रेयः । अग्निः)
[''] ५।८१।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
न मिनन्ति स्वराज्यम् ।
(इन्द्रः १४४०) ८।९३।११ (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[४५४] ५।८१।३ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
सुवाति सविता भगः ।
(४४) ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)

[४५७] ५।८२।६ (इयावाश्व आत्रेयः । सविता)
विश्वा वामानि धीमहि ।
(अश्विनौ ४८९) ८।२२।१८ (सोभरिः काण्वः। अश्विनौ)
(अग्निः १२६१) ८।१०३।५ (सोभरिः काण्वः। अग्निः)

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[४६१] ६।७१।१ उदु ष्य देवः सविता हिरण्यया ।
(४२०) २।३८।१ ...देवः सविता सवाय ।
[४६३] ६।७१।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता)
रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ।
६।७५।१० (पायुर्भारद्वाजः । ब्राह्मण-पितृ-सोम-द्यावा-पृथिवी-पूषाणः)

[४६४] ६।७१।४ उदु ष्य देवः सविता दमूना ।
(४२०) २।३८।१ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्] भार्गवः शौनकः । सविता)
... ... सविता सवाय ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[४६७] ७।३८।१ = (४२०) २।३८।१
[,,] ७।३८।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत् ।
(इन्द्रः १३५२) ३।३८।८ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्रः)
[४७१] ७।३८।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता, [उत्तरार्ध.-भगो वा])
रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।

(४३) ७।५२।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्यः)
... ... रियानाः ।
[४७३] ७।४५।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
हस्ते दधानो नर्या पुरूणि ।
(अग्निः १९५) १।७२।१ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
[४७५] ७।४५।३ मर्तभोजनमध रासते नः ।
(रुद्रः ११) १।११४।६ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)
रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनम् ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[४७८] १०।१३९।२ (देवगन्धर्वो विश्वावसुः । सविता)
आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।
(अग्निः २१२) १।७३।८ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
[४७९] १०।१३९।३ रायो बुध्नः संगमनो वसूनाम् ।
(अग्निः १८८४) १।९६।६ (कुत्स आङ्गिरसः । द्रविणोदा अग्निः)

[४७९] १०।१३९।३ देव इव सविता सत्यधर्मा ।
१०।३४।८ (कवष ऐलूषः, अक्षो मौजवान् वा। अक्षनिन्दा)
[४८१] १०।१४९।२ (अर्चन् हैरण्यस्तूपः । सविता)
अतो द्यावापृथिवी अप्रथेताम् ।
१०।८२।१ (विश्वकर्मा भौवनः । विश्वकर्मा)
आदिद् द्यावापृथिवी अप्रथेताम् ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[५४७] १।११५।१ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।
(अग्निः ७४६) (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं ।

(आयुर्वेदः ९९०) ७।१०१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः (वृष्टिकामः) कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः)
तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

[५४९] १।११५।३ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)
परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः ।
(अश्विनौ २३३) ३।५८।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । अश्विनौ)
परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ।
[५५०] १।११५।४ यदेदयुक्त हरितः सधस्थात् ।
(३११) ७।६०।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
अयुक्त सप्त हरितः— ।
[५५६] ५।४०।५ (अत्रिर्भौमः । सूर्यः)
यत् त्वा सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।
५।४०।९ (अत्रिर्भौमः । अत्रिः)
यं वै सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[५५८] ७।६२।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यः)
कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।
(इन्द्रः १८७१) ६।१९।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रः)
पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।
[५६०] ७।६२।३ ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
(विश्वे देवाः ४८७) ७।३९।७=७।४०।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
[५६४] ७।६३।४ दूरेअर्थस्तरणिर्भ्राजमानः ।
(६७४) १०।८८।१६ (सूर्धन्वानाङ्गिरसो, वामदेव्यो वा । सूर्य-वैश्वानरौ)
अप्रयुच्छन् तरणिर्भ्राजमानः ।
[६३१] ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्य (पूर्वार्धः)-मित्रावरुणौ [उत्तरार्धः])
प्रति वां सूर उदिते ... नमोभिर्मित्रावरुणा ।
(३३६) ७।६५।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
—उदिते सूक्तैर्मित्रं ... ... वरुणम् ।
(४७) ७।६६।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् ।
[६३१] ७।६३।५ विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः ।
(अग्निः ९४८) ६।१।१० (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अग्निः)
विधेम नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः ।
[५६७] ७।६६।१६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यः)
जीवेम शरदः शतम् ।
(६५०) १०।८५।३९ (सूर्यासावित्री ऋषिका । सूर्या- सावित्री)
जीवाति शरदः शतम् ।

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[५६८] ८।१०१।११ (जमदग्निर्भार्गवः । सूर्यः)
महस्ते सतो महिमा पनस्यते ।
(आयुर्वेदः १०४४) १०।७५।९ (सिन्धुक्षित्प्रैयमेधः। नद्यः)
महान् ह्यस्य महिमा पनस्यते ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[५७३] १०।३७।४ (सौर्योऽभितपाः । सूर्यः)
येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमः ।
(१००४) १०।१२७।२ (कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी । रात्रिः)
ज्योतिषा बाधते तमः ।
[५७६] १०।३७।७ जीवाः प्रति पश्येम सूर्य ।
(५८६) १०।१५८।५ (चक्षुः सौर्यः । सूर्यः)
प्रति पश्येम सूर्य ।
[५७९] १०।३७।१० तत् सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम् ।
२।२३।१५ (गृत्समदः शौनकः । बृहस्पतिः)
तदस्मासु द्रविणं धेहि— ।
[५८०] १०।३७।११ यद् वो देवाश्चकृम जिह्वया ।
(आयुर्वेदः १९९०) १०।१५।४ (शङ्खो यामायनः । पितरः)
इमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम् ।

[५८६] १०।१५८।५ (चक्षुः सौर्यः । सूर्यः)
सुसंदृशं त्वा वयं प्रति ।
(इन्द्रः ९२७) १।८२।३ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
सुसंदृशं त्वा वयं मघवन् ।
[''] १०।१५८।५ प्रति पश्येम सूर्य ।
(५७६) १०।३७।७ (सौर्योऽभितपाः । सूर्यः)
[५९०] १०।१७०।४ (विभ्राट् सौर्यः । सूर्यः)
विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वरगच्छो रोचनं दिवः ।
(इन्द्रः २३६६) ८।९८ ३ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[६५०] १०।८५।३९ = (५६७) ७।६६।१६
[६५३] १०।८५।४२ विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
(अग्निः २४६७) १।९३।३ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)
विश्वमायुर्व्यश्नवत् ।
[६५४-५५] १०।८५।४३-४४ शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।
(सोमः १२२३) ६।७४।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । सोमारुद्रौ)
शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे ।
[६६०] १०।८८।२ (आङ्गिरसो मूर्धन्वान्, वामदेव्यो वा । सूर्यवैश्वानरेऽग्निः)
आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।
(अग्निः ६७६) ४।३।११ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
[६७४] १०।८८।१६ = (५६४) ७।६३।४

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[९०९] १।१५।३ (मेधातिथिः काण्वः । [ऋतवः] त्वष्टा)
त्वं हि रत्नधा असि ।
(अग्निः ११९७) ७।१६।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)
[६९२] १०।१८।६ (संकुसुको यामायनः । त्वष्टा)
दीर्घमायुः करति जीवसे वः ।
(आयुर्वेदः १९७७)१०।१४।१४ (यमो वैवस्वतः । यमः)
दीर्घमायुः प्र जीवसे ।
[७१७] १।२३।१५ (मेधातिथिः काण्वः । पूषा)
गोभिर्यवं न चर्कृषत् ।
(इन्द्रः १०८६) १।१७६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
यवं न चर्कृषद् वृषा ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[७३३] ३।६२।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा)
वधूयुरिव योषणाम् ।
(इन्द्रः १४४८) ३।५२।३ (विश्वामित्रो गाथिनः ।इन्द्रः)
[७३४] ३।६२।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा)
यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति ।
(अग्निः १७१४)१०।१८७।४ (वत्स आग्नेयः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[७३५] ६।४८।१६ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । पूषा)
अधा अर्यो अरातयः ।
(इन्द्रः ३०५३)६।५९।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। इन्द्राग्नी)
अधा अर्यो अरातयः ।
[७४३] ६।५३।५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । पूषा)
पणीनामारया हृदया कवे ।
(७४५) ६।५३।७ पणीनां हृदया कवे ।
[७४३-४५] ६।५३।५-७ अथेमस्मभ्यं रन्धय ।
[७४५-४६] ६।५३।७-८ आ रिख किकिरा कृणु ।
[७४८] ६।५३।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
गोषणिं...अश्वसां वाजसामुत । नृवत्... ।
(सोमः २०) ९।२।१० (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
गोषा...नृषा...अश्वसा वाजसा उत ।
[७५४] ६।५४।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
यजमानस्य सुन्वतः ।

(इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)

[७५६] ६।५४।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
ईशानं राय ईमहे ।
८।२६।२२ (विश्वमना वैयश्वः, व्यश्वो वाङ्गिरसः । वायुः)
ईशानं राय ईमहे ।
(इन्द्रः १८२२) ८।४६।६ (वशोऽश्व्यः । इन्द्रः)
(इन्द्रः ५२५) ८।५३ [वाल० ५]।१(मेध्यः काण्वः। इन्द्र)

[७६६] ६।५६।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ।
(इन्द्रः ४०१) ८।१७।८ (हरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)

[७८७] १०।२६।९ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वायुर्वा वसुकृद्वा । पूषा)
इमं नः शृणवद्धवम् ।
(अग्निः १३३१) ८।४३।२२ (निरुद्ध आङ्गिरसः। अग्निः)

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[७९६] ७।४१।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । भगः)
वयं भगवन्तः स्याम ।
(विश्वे देवाः १३८) १।१६४।४० (दीर्घतमा औचथ्यः । विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[८२०] १।२२।१८ (मेधातिथिः काण्वः । विष्णुः)
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः ।
(इन्द्रः ३१४) ८।१२।२७ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे ।

[८२३] १।२२।२१ (मेधातिथिः काण्वः । विष्णुः)
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते ।
(अग्निः ५१७) ३।१०।९ (विश्व मित्रो गाथिनः । अग्निः)
तं त्वा विप्रा विपन्यवो — ।

[८२५] १।१५४।२ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णु)
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
(इन्द्रः २८४०) १०।१८०।२ (जय ऐन्द्रः । इन्द्रः)

[८२८] १।१५४।५ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)
नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
(इन्द्रः २२७८) ७।९७।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्रः)

[८३०] १।१५५।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णु)
उरु क्रमिष्टोरुगायाय जीवसे ।
(इन्द्रः ५८६) ८।६३।९ (पराशर शाक्तः । इन्द्रः)
ऊरु क्रमिष्ट जीवसे ।

[८४१] ७।९९।७ = ७।१००।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विष्णुः)
वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[९२३] २।३६।५ (गृत्समदः शौनकः । [ऋतवः] इन्द्रो नभश्च)
तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतः—।...पिब ।
(इन्द्रः २७६१) १०।११६।७ (अग्नियुतः स्थौरोऽग्नियूपो वा स्थौरः । इन्द्रः)
तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पक्वो ... पिब... ।

[९२४] २।३६।६ (गृत्समदः शौनकः । [ऋतवः] मित्रावरुणौ नभस्यश्च)
जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे ।
(अश्विनौ ५१२) ८।३५।४ (स्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)

[९२५] २।३७।१ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्र- पश्चाद्] भार्गवः शौनकः । द्रविणोदा ऋतवश्च)
अध्वर्यवः स पूर्णां वष्ट्यासिचम् ।
(अग्निः १२०२) ७।१६।११ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)
द्रविणोदा पूर्णां विवष्ट्यासिचम् ।
["] २।३७।१ तस्मा एतं भरत तद्वशो ।
(इन्द्रः ११५१) २।१४।२ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
तस्मा एतं भरत तद्वशाय ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[१००३] १०।१२७।१ (कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी । रात्रिः)
विश्वा अधि श्रियोऽधित ।
(अग्निः ४०१) १।८।५ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)
विश्वा अधि श्रियो दधे ।

[१००४] १०।१२७।१ ज्योतिषा बाधते तमः ।
(५७३) १०।३७।४ ज्योतिषा बाधसे तमः ।
[१०१०] १०।१२७।८ उप ते गा इवाकरम् ।
(रुद्रः १४) १।११४।९ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)
उप ते स्तोमान् ... इवाकरम् ।

अदितेः, आदित्यानां च

वर्णानुक्रम-सूची ।

अंशो भगो वरुणो	८०८	अदित्यै रास्नासि विष्णोः	८४९	अनेहो मित्रार्यमन्	६८
अकविहस्ता सुकृते	२४४	अदित्यै रास्नास्यदितिः	११	अन्तरा मित्रावरुणा	३८१
अक्ष्णश्चिद् गातुवित्तरा	३५५	अदितसन्तं चिदावृणे	७४१	अन्तश्चरति रोचना	६९०
अगन्म स्वः स्वरगन्म	६२६	अदृश्रमस्य केतवो	५३६, ५९७	अन्नं पूर्वा रासतां मे	११२७
अग्निर्मा गोप्ता परि	१६३	अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै	११७	अपचितः प्र पतत	६७८
अग्ने देवाँ इहा वह	९१०	अया देवा उदिता	५५२	अप त्यं परिपन्थिनं	७२०
अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा	८५३	अयो नो देव सवितः	४५५	अप त्ये तायवो यथा	५३५
अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि	६५५	अध रात्रि तृष्टधूमं	१०३७, १०४५	अपापां परिक्षवं	११३३
अङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वा	८५१	अधा चिन्नु यद्दिधिषामहे	३७३	अपवासे नक्षत्राणाम्	११९५
अचित्ती यच्चकृमा	४४३	अधा नो विश्वसौभग	७२३	अपश्यं गोपामनम्	६०८
अजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो	७७१	अधारयतं पृथिवीमुत	२४१	अप स्तेनं वासो	१०४९
अति नः सश्चतो नय	७२४	अधा हि काव्या युवं	२७१	अपादेति प्रथमा	२२४, ३९५
अति विश्वान्यरुहद्	१०५३	अधि या बृहतो दिवो	३५३	अपाद्धोत्रादुत पोत्राद्	९१८
अतो देवा अवन्तु नो	८१८	अध्वनामध्वपते प्र मा	५९६	अपां नपातमवसे	४०४
अथो यानि च यस्मा ह	१०३९	अनर्मीवास इळया	१८७	अपामीवामप स्निधम्	५७
अदब्धेभिः सवितः	४६३	अनर्वाणो ह्येषां पन्था	५५	अपि ष्टुतः सविता देवो	४६९
अदब्धो दिवि पृथिव्यां	१४५	अनश्वो जातो अनभीशुः	२२६	अपो षु ण इयं शहः	९६
अदर्शि गातुरुरवे	२०४	अनागसो अदितये	४५७	अभयं मित्रावरुणौ	३९१
अदाभ्यो भुवनानि	४३७	अनु तन्नो जास्पतिः	४७१	अभि त्यं देवꣳ सवितारम्	४८८
अदितिर्द्यौरदितिः	१	अनु पूर्वाण्योक्या	३६०	अभि त्वा देव सवितः	४०७
अदितिर्नै उरुष्यतु	८०	अनु श्रुताममतिं	२४३	अभि त्वा वर्चसा गिरः	६८६
अदितिर्नो दिवा पशुं	४	अनुहवं परिहवं	११३१	अभि नो नर्यं वसु	७४०
अदिते मित्र वरुणोत	३४	अनेहो न उरुव्रजः	८	अभि यज्ञं गृणीहि नो	९०९

अभि यं देव्यदितिः ४७०
अभि ये मिथो वनुषः ४७१
अभि यो माहिना दिवं १९१
अभि वर्धतां पयसाभि ९८८
अभि सूयवसं नय ७२५
अभीवृतं कृशनैः ४१२
अभ्रिये दिद्युत्क्षत्रिये १११४
अभूद् देवः सविता ४४१
अमावास्या च पौर्णमासी १०८९
अमावास्ये न त्वदेतानि १०८८
अमूरा विश्वा वृषणौ ३२५
अमेव नः सुहवा ७०३, ९२१
अयं वां मित्रावरुणा २३३
अयं सहस्रमानवो ६२८
अयꣳ सहस्रमृषिभिः १२०
अयमा यात्यर्यमा ८१०
अयमेक इत्था पुरु ३५९
अयं मित्राय वरुणाय २०६
अयं मित्रो नमस्यः १८८
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः ५४२
अयुक्त सप्त हरितः ३११
अर्धमासाः परꣳषि ते १०६६
अर्वाञ्चमद्य यय्यं ९२९
अव दिवस्तारयन्ति ६८५
अव वेदिं होत्राभिः ३१७
अवोरित्था वां छर्दिषो ३०८
अशीतिभिस्तिसृभिः १६७
अश्रमदियमर्यमन् ८११
अश्वा न या वाजिना ३०१
अश्विना पिबतं मधु ९१७
अष्टाविंशानि शिवानि ११३०
अष्टौ व्यख्यत् ककुभः ४१६
असति सत् प्रतिष्ठितं १५१
असंतापं मे हृदयम् १२६
असपत्नं पुरस्तात् ५२४
असावन्यो असुर ३७४
अस्तंयते नमो १५६
अस्ति देवा अंहोः ९१
अस्मभ्यं तद्दिवो अद्रुहः ४३०
अस्माकं देवा उभयाय ५८०
अस्माकमूर्जा रथं ७८७
अस्मिन्नस्वेतच्छकपूत ३७५
अस्य हि स्वयशस्तरं ४५३
अस्या ऊ षु ण उप ७३१
अहमेवास्म्यमावास्या १०८६
अहश्च रात्री च १०६९
अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः १०६८
अहोरात्रे इदं वूमः ९९७
अहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे १०६४
अहोरात्रे गच्छ स्वाहा १०६१
अहोरात्रे नासिके १०७२
अहोरात्रेभ्यः स्वाहा १०६५
अह्ना प्रत्यङ् व्रात्यो १०७३
अह्ने पारावतान् १०१३
आ कृष्णेन रजसा ४१०
आगन् देव ऋतुभिः ४४०
आगन् रात्री संगमनी १०८७
आ चिकितान सुकतू २६८
आजामि त्वाजन्या परि ३८८
आजासः पूषणं रथे ७६४
आ तत् ते दस्र मन्तुमः ७२२
आ ते रथस्य पूषन् ७८६
आ ते स्वस्तिमीमहे ७७०
आदित्य चक्षुरा दत्स्व १८०
आदित्य नावमारुक्षः १५८
आदित्या अव हि ख्यत ८२
आदित्यानामवसा ३८
आदित्या विश्वे मरुतः ४०
आदित्यासो अदितयः ४१
आदित्यासो अदितिः ३९
आदित्या ह जरितः १६५
आदित्यो रुद्रा वसवः १८३
आ देवो यातु सविता ४७३
आधीपर्णा कामशल्यां ३८५
आधीषमाणायाः पतिः ७८४
आ धेनवो मामतेयम् ११७
आ न इडाभिर्विदथे ६०१
आ नः प्रजां जनयतु ६५४
आ नो गन्तं रिशादसा २९१
आ नो मित्र सुदीतिभिः २५९
आ नो मित्रावरुणा घृतैः २३६
आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं ३३९
आ पूषञ्चित्रबर्हिषम् ७१५
आप्रा रजांसि दिव्यानि ४३६
आ मा पूषन्नुप द्रव ७३५
आ मां मित्रावरुणेह ३०९
आ मित्रे वरुणे वयं २९५
आ मे धनं सरस्वती ११०३
आ मे महच्छतभिषग् ११२८
आयं गौः पृश्निरक्रमीद् ६८९
आ यद् योनिं हिरण्ययं २७५
आ यद् वामीयचक्षसा २७३
आयमगन्त्संवत्सरः ८८७
आयमगन्त्सविता क्षुरेण ५३२
आ यातं मित्रावरुणा ३००, ३४६
आयुर्विश्वायुः परि ७७६
आ यो विवाय सचथाय ८३७
आ राजाना महऋतस्य ३३१
आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः १०१५
आ रिख किकिरा कृणु ७४५
आ रोदसी वर्जरसं ६९२
आ वक्षि देवाँ इह ९२१
आ वामश्वासः सुयुजो २४१
आ वामृताय केशिनीः २१८
आ वां भूषन् क्षितयो २१५
आ वां मित्रावरुणा २२८
आ विश्वदेवं सत्पतिं ४५८
आ शर्म पर्वतानाम् ६३
आशसनं विशसनम् ६४६
आशुभिश्चियान् वि मुचाति ४२१
इदं विष्णुर्वि चक्रमे ८१९
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ५८९
इदं ह नूनमेषां ५४
इदं हिरण्यं गुल्गुलु ७९९
इनो राजानां पतिः ७८५
इन्द्र सोमं पिब ऋतुना ९०७
इन्द्रज्येष्ठान् बृहद्भ्यः ४४५

इन्द्रं मित्रं वरुणम् ५५३
इम आ यातमिन्दवः २११
इमं स्तोमं सक्रतवो २२
इमं गोष्ठं पशवः १०९८
इमं च नो गवेषणं ७६९
इमं नो देव सवितः ४९७
इमा उ त्वा पुरूवसो ११८
इमा गिर आदित्येभ्यो २१
इमा गिरः सवितारं ४७६
इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः ६५६
इमे चेतारो अनृतस्य ३१३
इमे दिवो अनिमिषा ३१५
इमे मित्रो वरुणो ३१४
इयं ते पूषन्नाघृणे ७३२
इयं देव पुरोहितिः ३२०,३२७
इयमेव सा या प्रथमा १०७७
इयं पित्र्या राष्ट्र्येवप्रे १७१
इयं मद्वां प्र स्तृणीते २९९
इरा पुंश्चली हसो १०२३
इरावती धेनुमती ८४०
इरावतीर्धेनवो २८५
इषश्चोर्जश्च शारदावृतू ९३५
इषिरा योषा युवतिः १०५१
इहैव स्तं मा वि यौष्टं ६५३
उक्षा समुद्रो अरुणः ११५
उखां कृणोतु शक्त्या १०
उच्छन्त्यां मे यजता २६१
उत घा स रथीतमः ७६६
उत त्वामदिते मही ६
उत नः सिन्धुरपां ३५७
उत नो गोषणिं धियम् ७४८
उत यासि सवितः ४५०
उत वां विक्षु मद्यासु २३१
उत स्या नो दिवा मतिः ५
उत स्वराजो अदितिः ४६
उतादः पर्वते गवि ७६७
उतेदानीं भगवन्तः ७९५
उतेशिषे प्रसवस्य ४५१
उतो स मह्यमिन्दुभिः ७१७
उत्तुदस्त्वोत्तुदतु ३८४
उत्थाय बृहती भव ४०२
उत्सूर्यो दिव एति ६२५
उत् सूर्यो बृहदर्चीषि ५५८
उदगादयमादित्यो १५७, ५४६
उदस्य बाहू शिथिरा ४७४
उदिह्युदिहि० । द्विपंश्च १३९
उदिह्युदिहि० । यांश्च १४०
उदु तिष्ठ सवितः ४६८
उदु त्यं जातवेदसं ५३४
उदु त्यद् दर्शतं ५६५
उदु ष्य देवः सविता दमूना ४६४
उदु ष्य देवः सविता ययाम ४६७
उदु ष्य देवः सविता सवाय ४२०
उदु ष्य देवः सविता हिरण्यया ४६१
उदु ष्य शरणे दिवो ३६२
उदू अर्याँ उपक्तेव ४६५
उद्यते नम उदायते १५५
उद्यन्नद्य मित्रमह ५४४
उद्वयं तमसस्परि ज्योतिः ५४३
उद्वयं तमसस्परि स्वः ६००
उद् वां चक्षुर्वरुण ३११
उद् वां पृक्षासो मधुमन्तो ३१२
उद्वेति प्रसवीता ५६२
उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः ५६१
उप ते गा इयकरं १०१०
उप नः सुतमा गतं २९४
उप मा पेपिशत् तमः १००९
उपयामगृहीतोऽसि १०७, ८६०
उपयामगृहीतोऽसि मघवे ९३१
उपयामगृहीतोऽसि सावित्रो ४९०
उपावीरस्युप देवान् ६९४
उभाभ्यां देव सवितः ५०१
उभे अस्मै पीपयतः ३५
उरु विष्णो विक्रमस्वो ८५९
उरुशंसा नमोवृधा २३७
उर्वश्च मा चमसश्च १२३
उषसे नः परि देहि १०५१
उषाः पुंश्चली मन्त्रो १०२२
ऊती देवानां वयम् २०९
ऋक्सामाभ्यामभिहितौ ६३७
ऋज्रमुक्षण्यायने ३६५
ऋतमृतेन सपन्ता २८२
ऋतवः पक्तार आर्तवाः ९५१
ऋतवस्त ऋतुथा पर्व ९४७
ऋतवस्तमबध्नतार्तवाः ९६५
ऋतवस्ते यज्ञं वि वे ९४८
ऋतव स्थ ऋतावृधः ९३९
ऋतस्य च वै स सत्यस्य ११३७
ऋतस्य गोपावधि २४८
ऋतावान ऋतजाता ५३
ऋतावाना नि षेदतुः ३५४
ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे ९५०
ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो ७०९
ऋतुभ्यः स्वाहा ९४६
ऋतूनां च वै स आर्तवानां १०७१
ऋतून् ब्रूग ऋतुपतीन् ९६७
ऋतून् यज ऋतुपतीन् ९४९
ऋतेन ऋतमपिहितं २३९
ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च १६२, ९७१
ऋतेन मित्रावरुणौ १९७
ऋतेन यावृतावृधौ २००
ऋधगित्था स मर्त्यः ३६८
एकादशभिरस्तुवत ९३७
एतच्चन त्वो वि चिकेतद् २२३
एता देवसेनाः सूर्य १८१
एयमगन् पतिकामा ७९८
एष ते योनिश्चन्द्रमाः ९७६
एष स्तोमो वरुण ३३५, ३४०
एष स्य ते तन्वो ९१३
एष स्य मित्रावरुणा ३१०
एहि वां विमुचो नपाद् ७५९
ओर्वप्रा अमर्त्या १००४
ओषधयो भूतभव्यम् ८९१
कः सप्त खानि वि ततर्द १०७८
कत्यग्नयः कति सूर्यासः ६७६
कदा चन प्रयुच्छसि १०९
कदा चन स्तरीरसि १०८

कवी नो मित्रावरुणा १९८
कालः प्रजा असृजत ९०१
कालादापः समभवन् ९०१
काले तपः काले ज्येष्ठं ८९९
कालेन वातः पवते ९०३
काले मनः काले प्राणः ८९८
कालेऽयमङ्गिरा देवो ९०६
कालो अश्वो वहति ८९२
कालो भूतिमसृजत ८९७
कालोऽमूं दिवमजनयत् ८९६
कालो यज्ञं समैरयद् ९०५
कालो ह भूतं भव्यं च ९०४
काव्ययोराजानेषु ३८१
काव्येभिरदाभ्या ३४४
किमित् ते विष्णो परि ८४१
कुहूं देवीं सुकृतं विद्मना ११०४
कुहूर्देवानाममृतस्य ११०५
कृष्णं नियानं हरयः ५५४
केन देवाँ अनु क्षियति ११२०
को नु वां मित्रास्तुतो २७८
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो ८१३
गर्भं धेहि सिनीवालि १०९९
गर्भो देवानां पिता ५१४
गायत्रेण त्वा छन्दसा ८४८
गार्हपत्येन सन्त्य ९१८
गाव इव ग्रामं यूयुधिः ४८३
गीर्णं भुवनं तमसा ६६०
गुदा आसन्त्सिनीवाल्याः १०९६
गृणाना जमदग्निना २३८
गृभ्णामि ते सौभगत्वाय ६४७
गृह्णामि ते सौभगत्वाय ८०४
ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि ९६९
ग्रीष्मेण ऋतुना देवा ९४१
ग्रैष्मावेनं मासौ दक्षिणाया ९५६
ग्रैष्मौ मासौ गोप्तारौ ९५५
घृतेन त्वा समुक्षामि ९९३
चक्षुर्नो देवः सविता ५८४
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे ५८५
चतुर्भिः साकं नवतिं च ८३२
चन्द्रमा अप्स्वन्तरा ९७९, ९८९
चन्द्रमा नक्षत्राणाम् ९८६
चन्द्रमा नक्षत्रैः ९९०
चन्द्रमा मनसो जातः ९७३, ९७८
चन्द्र यत् ते तपस्तेन ९८१
चन्द्र यत् ते तेजस्तेन ९८५
चन्द्र यत् ते तेऽर्चिस्तेन ९८३
चन्द्र यत् ते शोचिस्तेन ९८४
चन्द्र यत् ते हरस्तेन ९८२
चन्द्राय स्वाहा चन्द्रमसे ९७५
चित्तिरा उपबर्हणं ६३३
चित्पतिर्मा पुनातु ४८७
चित्रं देवानाम् ५४७
चित्राणि साकं दिवि ११२४
चित्रावसो स्वस्ति ते १०११
जीवान् नो अभि धेतन ८९
जुषेथां यज्ञं बोधतं ४००, ९२४
जोषा सवितर्यस्य ते ५८३
जोष्यग्ने समिधं जोषि ९३०
ज्योतिष्मतीमदितिं १०५
त आदित्यास उरवो २३
तच्चक्षुर्देवहितं पुर० ६०६
तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रं ५६७
तत्तदिदस्य पौंस्यं ८३०
तत् सवितुर्वरेण्यं ४३१
तत् सवितुर्वृणीमहे ४५२
तत् सु नः शर्म यच्छत ५९
तत् सु नः सविता भगो ५६
तत् सु नो नव्यं सन्यसे ९९
तत् सु वां मित्रावरुणा २४०
तत् सूर्यस्य देवत्वं ५५०
तत् सूर्यं रोदसी उभे ३६४
तदग्निराह तदु सोम ७९०
तदस्य प्रियमभि ८२८
तदृतं पृथिवि बृहत् २७१
तद् देवस्य सवितुः ४३४
तद् यस्यैवं विद्वान् १०२५-२९
तद् वार्यं वृणीमहे ३५६
तद् विप्रासो विपन्यवो ८१३
तद् विष्णोः परमं पदं ८२१
तद् वो अद्य मनामहे ५१
तं नो द्यावापृथिवी ५७५
तन्मित्रस्य वरुणस्य ५५१
तपश्च तपस्यश्च ९३८
तमस्य राजा वरुणः ८३६
तमु ष्टुहि यो अन्तः ५१०
तमु स्तोतारः पूर्व्यं ८३५
तमृतं च सत्यं च ११३६
तमृतवश्चार्तवाश्च १०७०
तरणिर्विश्वदर्शतो ५३७
तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो ११०८
तस्य व्रात्यस्य । यदादित्यम् १०९१
तस्य व्रात्यस्य । योऽस्य चतुर्थो ११२३
तस्य व्रात्यस्य । योऽस्य तृतीयो १०९०
तस्य व्रात्यस्य । योऽस्य प्रथमो १०८९
तस्या ग्रीष्मश्च वसन्तश्च ९५२
तस्यामू सर्वा नक्षत्रा १११९
तां वां धेनुं न वासरीं २१२
ताꣳ सवितुर्वरेण्यस्य ५००
ता अर्षन्ति शुभ्रियः ६८७
ता जिह्वया सदमेदं ३०५
तां जुषस्व गिरं मम ७३३
ता नः शक्तं पार्थिवस्य २८१
ता नः स्तिपा तनूपा ३४३
ता बाहवा सुचेतुना ९५६
ता भूरिपाशावनृतस्य ३३८
ता माता विश्ववेदसा ३४९
ता मे अश्व्यानां ३६६
तां पूषञ्छिवतमा० ६४८
ता व मित्रानोऽवसे २६४
ता वामेषे रथानाम् २७०
ता वां मित्रावरुणा ३७१
ता वां वास्तून्युश्मसि ८२९
ता वां विश्वस्य गोपा ३४७
ता वां सम्यगद्रुह्वाणा १८९, ३९७
ता विम्रं धैथे जठरं ३०४
ता सम्राजा घृतासुती २३५
ता हि क्षत्रं धारयेथे ३०३

ता हि क्षत्रमविहृतं	१६९	त्वष्टा दुहित्रे वहतुं	६९८	दैव्यावध्वर्यू आ गतꣳ	६०१
ता हि देवानामसुरा	३३७	त्वष्टा मे दैव्यं वचः	७०४	दोषो गाय बृहद्	५१९
ता हि श्रेष्ठवर्चसा	१६३	त्वष्टा युनक्तु बहुधा	६९९	द्यावाभूमी अदिते	३२८
तिस्रो द्यावः सवितुः	४१४	त्वष्टा वासो व्यदधात्	८०६	द्यौरासीत् पूर्वचित्तिः	१०११
तिस्रो भूमीर्धारयन्	२८	त्वष्टा वीरं देवकामं	६९७	द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो	१७९
तुचे तनाय तत् सु	६५	त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो	३९९	द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं	१११०
तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ	९१९	त्वामिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः	१४७	द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु	११३
तुभ्यमग्रे पर्यवहन्	६४९	त्वामूना देवः सविता	५२३	द्रविणोदा ददातु नो	९१४
तुरण्यवोऽङ्गिरसो	४३	दर्शोऽसि दर्शतोऽसि	६८१	द्रविणोदा द्रविणसो	९१३
तृष्टमेतत् कटुकम्	६४५	दिक्षु चन्द्राय समनमन्	९९८	द्रविणोदाः पिपीषति	९१५
ते न आसन्नृकाणाम्	९५	दितेः पुत्राणामदितेः	१७	द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं	८८३
तेन भूतेन हविषा	९८७	दिवं द्यूमो नक्षत्राणि	११२२	द्वे इदस्य क्रमणे	८३१
तेनेषितं तेन जातं	९००	दिवि क्षयन्ता रजसः	३३१	द्वे ते चक्रे सूर्ये	६४२
ते नो भद्रेण शर्मणा	६४	दिवि विष्णुर्व्यक्रꣳस्त	८५१	द्वे समीची बिभृतः	६७४
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं	८७	दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः	११३५	द्वे स्रुती अशृणवं	६७३
ते स्याम देव वरुण	४९	दिवो धर्ता भुवनस्य	४३५	द्वौ च ते विंशतिश्च ते	१०३४
ते हिन्विरे अरुणं	१०३	दिवो धामभिर्वरुण	३४५	धर्ता दिवो वि भाति	६०७
ते हि पुत्रासो अदितेः	३	दिवो रुक्म ऊरुचक्षा	५६४	धर्मणा मित्रावरुणा	२५४
ते हि ष्मा वनुषो नरो	३५८	दिवो वा विष्ण उत वा	८५४	धाता दधातु दाशुषे	७११
ते हि सत्या ऋतस्पृशः	२७७	दिवो विष्ण उत वा	८६४	धाता दधातु नो रयिम्	७११
त्यान् नु क्षत्रियाँ अव	८५	दिव्यं सुपर्णं वायसं	६३०	धाता दाधार पृथिवीं	८११
त्रिंशद्धामा वि राजति	६९१	दिव्यादित्याय समनमन्	१७८	धाता मा निर्ऋत्या	७०७
त्रिरन्तरिक्षं सविता	४३८	दिशो धेनवस्तासां	९९९	धाता रातिः सवितेदं	६९५, ७०८
त्रिर्देवः पृथिवीमेषः	८४४	दृतेरिव तेऽवृकम्	७३७	धाता विधाता भुवनस्य	७१०
त्रीणि पदा वि चक्रमे	८२०	दृशेन्यो यो महिना	६६५	धाता विश्वा वार्या दधातु	७१३
त्री रोचना दिव्या	२९	देव सवितः प्रसुव	४९१	धारयन्त आदित्यासो	२४
त्री रोचना वरुण	२८४	देव सवितरेष ते	४८९	ध्रुवा असदन्नृतस्य	८५०
त्वं रक्षसे प्रदिशः	१४९	देवं नरः सवितारं	४३३	नक्षत्राणि च मे यज्ञेन	११०७
त्वं विश्वेषां वरुणासि	३०	देवस्त्वा सविता मध्वा	५१२	नक्षत्राणि छन्दः	११०६
त्वं विष्णो सुमतिं	८४३	देवस्त्वा सवितोद्वपतु	४९९	नक्षत्राणि रूपेण	११११
त्वं तस्य द्वयाविनो	७२१	देवस्य चेततो महीं	५०४	नक्षत्रेभ्यः किर्मिरम्	११११
त्वं तृतं त्वं पर्येषु	१४८	देवस्य त्वा सवितुः	४८५	नक्षत्रेभ्यः स्वाहा	११०९
त्वं न इन्द्र महते	१४१	देवस्य वयं सवितुः	४६१	न तं तिग्मं चन त्यजो	७८
त्वं न इन्दोतिभिः	१४३	देवस्य सवितुर्भाग स्थ	५२८	न ते अदेवः प्रदिवो	५७१
त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रः	१५१	देवस्य सवितुर्मतिं	५०७	न ते विष्णो जायमानो	८३९
त्वमिन्द्रासि विश्वजित्	१४४	देवस्य सवितुर्वयं	४३१	न दक्षिणा वि चिकिते	३१
त्वया हितमप्यम्	४२६	देवेभिर्देव्यदिते	२	नपाता शवसो महः	३५१
त्वयि रात्रि वसामसि	१०३८	देवेभिर्निषितो	६६१	न पूषणं मेथामसि	७१७
त्वष्टा जायामजनयत्	७०१	देवेभ्यो हि प्रथमं	४४१	न प्रमिये सवितुः	४४४

नभश्च नभस्यश्च ९३४
नमो दिवे बृहते २०८
नमो मित्रस्य वरुणस्य ५७०
न यः संपृच्छे न पुनः ३७१
न यस्याः पारं ददृशे १०३१
न यस्येन्द्रो वरुणो ४२८
नव दशभिरस्तुवत १०६३
नवोनवो भवति जायमानो ९७१
नवोनवो भवसि जायमानो ६८०
नहि तेषाममा चन १०५
नानौकांसि दुर्यो विश्वम् ४१४
नाभिरहं रयीणां १२७
नास्माकमस्ति तत् तर १००
नि ग्रामासो अविक्षत १००७
निरु स्वसारमस्कृतो १००५
नूनं तदस्य काव्यो १७६
नू मर्तो दयते सनिष्यन् ८४२
नू मित्रो वरुणो अर्यमा ३३०
नृचक्षा एष दिवो ४७८
नेह भद्रं रक्षस्विने ८३
पञ्चभिः पराङ् तपसि १५०
पथस्पथः परिपतिं ७८८
परमेष्ठी त्वा सादयतु ५९८
परि णो वृणजन्नघा ७६
परि तृन्धि पणीना० ७४३
परि पूषा परस्तात् ७५८
परि यो रश्मिना दिवो ३६१
परिह्वृतेदना जनो ७७
परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणा १६१
परो मात्रया तन्वा ८३८
परो हि मर्यैरसि ७३८
पर्षि दीने गभीर आँ ७
पश्येदमन्यदभवद् ४८१
पाकत्रा स्थन देवा ६१
पातं नो मित्रा पायुभिः ३९८
पातं नो रुद्रा पायुभिः २९०
पिपर्तु नो अदितिः २७
पीपाय धेनुरदितिः २३१
पुष्यं पूर्वा फल्गुन्यौ ११२६
पुनः पत्नीमग्निरदाद् ६५०
पुनः समव्यद् वितनं ४२३
पुरा क्रूरस्य विसृपो ९७४
पुरूरुणा चिद्ध्यस्यवो २८८
पूर्णः कुम्भोऽधि कालः ८९४
पूर्णा पश्चादुत पूर्णा १०७९
पूर्वापरं चरतो मायया ६७९
पूषणं न्वजाश्वम् ७६१
पूषन् तव व्रते वयं ७५७
पूषन्ननु प्र गा इहि ७५४
पूषा गा अन्वेतु नः ७५३
पूषा त्वेतश्च्यावयतु ७७५
पूषा राजानमाघृणिः ७१६
पूषा सुबन्धुर्दिव आ ७७४
पूषेमा आशा अनु वेद ७७७
पूष्णश्चक्रं न रिष्यति ७५१
पौर्णमासी प्रथमा १०८१
प्रजापतिरनुमतिः ११००
प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा १६०
प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम् १११९
प्र णो यच्छत्वर्यमा ८१७
प्रति तिष्ठ विराडसि ११०१
प्रति वां सूर उदिते ४७, ३३६
प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट ८४६
प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्याणि ८६२
प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण ८२५
प्रत्यङ् देवानां विशः ५३८
प्रत्यर्धिर्यज्ञानाम् ७८३
प्रपथे पथामजनिष्ट ७७८
प्र पादौ न यथायति १०६१
प्रप्र पूष्णस्तुविजातस्य ७२८
प्र बाहवा सिसृतं ३२९
प्र मित्रयोर्वरुणयोः ३४१
प्र मित्राय प्रार्यम्णे ४०१
प्र यद् वां मित्रावरुणा ३०६
प्रयन्तमित् परि जारं २२५
प्र यो जज्ञे विद्वानस्य १७३
प्र यो वां मित्रावरुणा ३७०
प्र वां स मित्रावरुणौ ३२२
प्र विष्णवे शूषमेतु ८२६
प्र वो मित्राय गायत २७९
प्र स मित्र मर्तो अस्तु १८६
प्र सा क्षितिरसुर २१६
प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां २०३
प्रस्तुतिर्वां धाम न प्रयुक्तिः २३०
प्र हि त्वा पूषन्नजिरं ७२९
प्र ह्यच्छा मनीषाः ७७९
प्राणापानौ मा हासिष्टं १३१
प्रातर्जितं भगमुग्रं हवामहे १६८
प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम ७९३
प्रातर्देवीमदितिं २८६
प्रोरोर्मित्रावरुणा ३२३
बट् सूर्य श्रवसा ५६९
बळित्था देव निष्कृतम् २७४
बण्महाँ असि सूर्य ५६८
बहवः सूरचक्षसो ५०
बृहत्सुम्नः प्रसवीता ४३९
बृहद् वरूथं मरुतां ६७
बृहस्पतिर्म आत्मा १२५
बृहस्पते सवितः ५२७
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं ११९, १७१
ब्रह्म देवाँ अनु क्षियति ११२१
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः ९११
ब्रूमो देवं सवितारं ७१४
भग एव भगवाँ अस्तु १७०, ७९६
भगं धियं वाजयन्तः ४२९
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो १६९, ७९४
भगभक्तस्य ते वयम् ४०९, ७९१
भगमुग्रोऽवसे जोहवीति ७९२
भगस्ततक्ष चतुरः ८०७
भगस्ते हस्तमग्रहीत् ८०५
भगस्य नावमा रोह ६२३
भगेन मा शांशपेन ८०१
भगो युनक्त्वाशिषो ८००
भद्रा अश्वा हरितः ५४९
भद्रासि रात्रि चमसो १०५९
भद्राह्नं नो मध्यंदिने १०३०
भवा मित्रो न शेव्यो ८३३

भूताय त्वा नारातये	५९१	मित्रस्य चर्षणीधृतो	१९०	यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च	९९५
भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना	५९३	मित्रा तना न रथ्या	३४८	यथा सूर्यो नक्षत्राणां	६१७
मंसीमहि त्वा वयम्	७८२	मित्राय पञ्च येमिरे	१९२	यथाहश्च रात्री च	१०१८
मधुश्च माधवश्च	९३२	मित्रावरुणयोर्भाग स्थ	३९६	यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति	७०५
मनो अस्या अन आसीद्	६३६	मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः	३८०	यदद्य कच्च वृत्रहन्	६०३
मन्दस्व होत्रादनु	९२५	मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती	३९१	यदद्य त्वा पुरुष्टुत	७६८
मरुतः पिबत ऋतुना	९०८	मित्रो अंहोश्विदादुरु	२६५	यदद्य सूर उदिते	४४
महाँ आदित्यो नमसा	१८९	मित्रो जनान् यातयति	१८५	यदद्य सूर्य ब्रवोऽनागा	५५७
महान्ता मित्रावरुणा	३५०	मित्रो देवेष्वायुषु	१९३	यदद्या रात्रि सुभगे	१०५०
महि ज्योतिर्बिभ्रतं	५७७	मित्रो नो अत्यंहतिं	८६	यदयातं शुभस्पती	६४१
महि त्रीणामवोऽस्तु	१०४	मुञ्चन्तु मा शपथ्याद्	९९१	यदश्विना पृच्छमानौ	६४०
महि वो महतामवो	७१, ८८	मूर्धा भुवो भवति नक्तम्	६६४	यदावियदपीच्यं	८४
मही अत्र महिना	२१७	मूर्धाहं रयीणां मूर्धा	१११	यदि जाग्रद्यदि स्वप्न	५९९
महीमू षु मातरम्	१२	मेयन्तु ते वह्नयो येभिः	९२७	यदीदं मातुर्यदि वा	८८२
मह्यं त्वा मित्रावरुणौ	३९३	य इन्द्र इन्द्रियं दधुः	५०२	यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो	६६९
मा कस्याद्भुतक्रतू	२९१	य इमा विश्वा जातानि	४६०	यद् गोपावददितिः शर्म	३१६
मा काकम्बीरमुद् वृहो	७३६	य इमे उभे अहनी	४५९	यद् देवाः शर्म शरणं	८१
माकिर्नेशन्माकीं	७५५	य उपरिष्टाज्जुहोति	६२४	यद्ध त्यद् वां पुरुमीळ्हस्य	२१४
मातुर्दिधिषुमब्रवं	७६३	य एनमादिदेशति	७६५	यद्ध त्यन्मित्रावरुणा वृताद्	२१३
मा त्वा क्रव्यादभि	९९६	यं यज्ञं नयथा नरः	१९	यद् बंहिष्ठं नातिविधे	२४७
मा त्वा दभन्त्सलिले	१४१	यः पूर्व्याय वेधसे	८३४	यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो	८८०
मा नः सेतुः सिषेदयं	९२	यजामहे वां महः	२२९	यद् वः श्रान्ताय सुन्वते	९०
मा नो मृचा रिपूणां	९३	यज्जातवेदो भुवनस्य	६६३	यद् वो देवाश्चकृम	५८१
मा नो हेतिर्विवस्वतः	१०१	यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभिः	९२०	यं देवा अंशुमाप्याययन्ति	६८४
मा मां प्राणो हासीन्मो	१२९	यज्ञो देवानां प्रत्येति	११०	यं देवासोऽजनयन्त	६६७
माया वां मित्रावरुणा	२५१	यज्ञो हीळो वो अन्तरः	६६	यन्नूनमश्र्यां गतिं	२५७
मा विदन् परिपन्थिनो	६४३	यत् किं चेदं पतयति	१०४१	यमादित्यासो अद्रुहः	७०
माश्वानां भद्रे तस्करो	१०३६	यत् त आत्मनि तन्वां	५१७	यमु पूर्वमहुवे तमिदं	९२६
माहं मघोनो वरुण	३७	यत् ते देवा अकृण्वन्	१०८५	यं परिहस्तमबिभः	७०१
मित्र एनं वरुणो वा	३८३	यत् प्राण ऋतावागते	९६६	ययोरोजसा स्कभिता	८७७
मित्रं वयं हवामहे	१९९	यत्र ब्रह्मविदो यान्ति	९९४	यश्चिकेत स सुकृतुः	२६१
मित्रं हुवे पूतदक्षं	१९६	यत्रा चक्रुरमृता	६३१	यश्चिद्धि त इत्था भगः	४०८
मित्रं न यं शिम्या गोषु	१८४	यत्रा वदेते अवरः	६७५	यस्मा अरासत क्षयं	७५
मित्रः पृथिव्योदक्रामत्	१९५	यत्रा समुद्रः स्कभितो	४८१	यस्मै पुत्रासो अदितेः	१०६
मित्रः सꣳसृज्य पृथिवीं	१९४	यत् त्वा तुरीयमृतुभिः	९१६	यस्य ते पूषन्त्सख्ये	७१०
मित्रश्च नो वरुणश्च	२९७	यत् त्वा सूर्य स्वर्भानुः	५५६	यस्य ते विश्वा भुवनानि	५७८
मित्रश्च वरुणश्चांसौ	८१६	यथा नो मित्रो वरुणो	२०२	यस्य त्यन्महित्वं	७८०
मित्रस्तजो वरुणो देवो	३३३	यथा प्रसूता सवितुः	१००१	यस्य स्त्री पूर्णा मधुना	८१७
मित्रस्तजो वरुणो मामहन्त	४२	यथा शाम्याकः प्रपतन्	१०४८	यस्य प्रयाणमन्वन्य	४४९

यस्यायं विश्व आर्यो	११९	यूयं राजानः कं	७१	रात्रि मातरुषसे नः	१०४०
यस्येदं प्रदिशि यद्	८७८	यूयमुग्रा मरुतः	१८१	रात्रीभिरस्मा अहभिः	१००१
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु	८६३	ये चिद्धि मृत्युबन्धवः	६९	रात्री माता नभः पिता	१०२०
या गुङ्गूर्या सिनीवाली	१०९७	ये ते त्रिरहन्त्सवितः	४४६	रात्री व्यख्यदायती	१००३
या त इन्द्र तनूरप्सु	१४६	ये ते पन्थाः सवितः	४१९	रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्	१०१४
याति देवः प्रवता याति	४११	ये ते रात्रि नृचक्षसो	१०३१	राया वयꣳ ससवाꣳसो	३७८
या ते अष्ट्रा गोओपशा	७४७	ये ते राज्यनड्वाहः	१०४६	राया हिरण्यया मतिः	४८
या देवीः पञ्च प्रदिशो	९६८	येन वृक्षाँ अभ्यभवो	८००	रायो धारास्यार्घृणे	७६१
याद्राध्यं वरुणो योनिम्	४२७	येन सूर्य ज्योतिषा	५७३	रायो बुध्नः संगमनो	४७९
या धर्तारा रजसो	२८७	येना पावक चक्षसा	५३९	रुचिरसि रोचोऽसि	१५४
या धारयन्त देवाः	३४१	येऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुः	१०१७	रुजश्च मा वेनश्च मा	१२१
यानि नक्षत्राणि दिवि	११२९	ये मूर्धानः क्षितीनाम्	९४	रेवद् वयो दधाथे	२२१
यां देवाः प्रतिनन्दन्ति	१०७५	ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति	१०४३	रैभ्यासीदनुदेयी	६३१
या प्लीहानं शोषयति	३८६	यो अद्य सेन्यो वधो	३९०	वचो दीर्घप्रसद्मनि	३६३
यां पूषन् ब्रह्मचोदनीं	७४६	यो अद्य स्तेन आयति	१०६०	वज्रापवसाध्यः कीर्तिः	६८८
यावन्तो मा सपत्नानाम्	६१८	यो अन्धो यः पुनःसरो	८०३	वयमु त्वा पथस्पते	७३९
यावन्मात्रमुषसो न	६७७	यो अस्मै हविषाविधत्	७५१	वयं मित्रस्यावसि	२६६
यावया वृक्यं वृकं	१००८	योऽथर्वाणं पितरं	१७७	वरुणः प्राविता भुवन्	२०१
या विश्पत्नीन्द्रसि	१०९४	यो नः कश्चिद् रिरिक्षति	६०	वरुणं वो रिशादसम्	२५५
या वो माया अभिद्रुहे	३६	यो नः पूषन्नघो वृको	७१९	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१६४
या सुबाहुः स्वङ्गुरिः	१०९३	यो नो भद्राहमकरः	१११७	वर्ये वन्दे सुभगे	१०५४
यास्ते पूषन्नावो अन्तः	७७३	यो ब्रह्मणे सुमतिम्	३१९	वर्षाभिर्ऋतुनादित्या	९४१
यास्ते राके सुमतयः	१०८४	यो मित्राय वरुणाय	२०७	वर्षिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा	३६९
युक्तेन मनसा वयं	४९५	यो राजभ्य ऋतनिभ्यो	३२	वषट् ते विष्णवास आ	८४१
युक्त्वाय सविता देवान्	४९६	यो वां गर्तं मनसा	३३४	वसन्तेन ऋतुना देवा	९४०
युञ्जते मन उत युञ्जते	४४७	यो वां यज्ञैः शशमानो	२१९	वस्योभूयाय वसुमान्	६२७
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं	११६	यो विश्वाभि विपश्यति	७३४	वाचं सु मित्रावरुणौ	२५३
युञ्जानः प्रथमं मनः	४९४	योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं	६८३	वाजस्य नु प्रसवे	१६
युनक्तु देवः सविता	५२६	यो होताऽऽसीत् प्रथमो	६६२	वाममद्य सवितर्वाममु	४६६
युयोता शक्मस्मदाँ	५८	रक्षा माकिर्नो अघशंस	१०३५	वार्षिकावेनं मासौ	९५८
युवं वस्त्राणि पीवसा	२२२	रक्षोहणं वलगहनं	८५६	वार्षिकौ मासौ गोप्तारौ	९५७
युवं ह्यग्रराजावसीदतं	३७७	रक्षोहणो वो वलगहनः	८५८	वासन्तावेनं मासौ	९५४
युवं दक्षं धृतव्रत	९१२	रथं युञ्जते मरुतः	२५१	वासन्तौ मासौ गोप्तारौ	९५३
युवं नो येषु वरुण	२६०	रथीतमं कपर्दिनम्	७६०	वि चक्रमे पृथिवीमेष	८४५
युवं मित्रेमं जनं	२६७	राकामहं सुहवां	१०८३	विजनाच्छपावाः शितिपादो	४१३
युवा यज्ञैः प्रथमा गोभिः	२२०	राजानावनभिद्रुहा	२३४	विदा देवा अघानाम्	७३
युवाभ्यां मित्रावरुणा	२५८	रातिꣳ सत्पतिं महे	५०६	विद्मा शरस्य पितरं	६१०, ९८०
युवोर्हि मातादितिः	३७६	रात्रिंरात्रिमरिष्यन्तः	१०४७	विद्यामादित्या अवसो	२५
युष्मे देवा अपि ष्मसि	७९	रात्रिः केतुना जुषताꣳ	१०१६	वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहा	५४०

विद्युत् पुंश्चली स्तनयित्नुः १०२४
वि नः सहस्रं शुरुधो ५६०
वि पथो वाजसातये ७४१
वि पूषन्नारया तुद ७४४
विभक्तारं हवामहे ४०५, ५०८
विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वः ५९०
विभ्राजमान उषसाम् ५६३
विभ्राड् बृहत् पिबतु ५८७
विभ्राड् बृहत् सुभृतं ५८८
विमान एष दिवो मध्य ११४
विमोकश्च मार्द्रपविश्च १२४
वि यद् वाचं कीस्तासो ३०७
वि ये दधुः शरदं ५१
विवस्वते स्वाहा ८७९
विवस्वन्नादित्येष ते १११
विश्वव्यचाश्चर्मौषधयो १११८
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय ६७०
विश्वस्य हि प्रचेतसा २९३
विश्वस्य हि प्रेषितो ५७४
विश्वस्य हि श्रुष्टये ४२१
विश्वानि देव सवितः ४५६
विश्वा रूपाणि प्रति ४४८
विश्वासां भुवां पते ६०९
विश्वाहा त्वा सुमनसः ५७६
विश्वे यद् वां मंहना ३०२
विश्वेषां वः सतां २९८
विश्वे हि विश्ववेदसो २७६
विषासहिं सहमानं १३४-१३८
वि षु द्वेषो व्यंहतिम् १०२
विष्णुर्योनिं कल्पयतु ८७६
विष्णोः कर्माणि पश्यत ८२१
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा आशा ८६९
विष्णोः क्रमोऽसि० ऋक् ८७०
विष्णोः क्रमोऽसि० कृषि ८७४
विष्णोः क्रमोऽसि० दिक् ८६८
विष्णोः क्रमोऽसि० द्यौ ८६७
विष्णोः क्रमोऽसि० अन्तरिक्षात् ८६६
विष्णोः क्रमोऽसि० पृथिवी ८६५
विष्णोः क्रमोऽसि० प्राण ८७५
विष्णोः क्रमोऽसि० अप्सु ८७३
विष्णोः क्रमोऽसि० यज्ञ ८७१
विष्णोः क्रमोऽसि० ओषधी ८७२
विष्णो रराटमसि विष्णोः ८५५
विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि ८६१
विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं ८२४
वि सुपर्णो अन्तरिक्षाणि ४१५
वृषभं वाजिनं वयं १०८०
वृष्टिद्यावा रीत्यापा २८३
वेद वै रात्रि ते नाम १०४४
वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं ८८१
वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो ६७१
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं ६७२
व्यस्मे अधि शर्म तत् ७४
व्यस्यै मित्रावरुणौ ३८९
व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्मणाग्निः १६६
व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा १९६
शंसा मित्रस्य वरुणस्य ३२४
शकधूमं नक्षत्राणि यद् १११६
शक्वरी स्थ पशवो मोप १३३
शन्धि पूर्धि प्र यंसि च ७२६
शं नो भव चक्षसा ५७९
शं नो मित्रः शं वरुणः ६०५
शमिता नो वनस्पतिः ५०३
शम्या ह नाम दधिषे १०५८
शर्म वर्मैतदा हरास्यै ११०२
शश्वद्धि वः सुदानवः ९७
शश्वन्तं हि प्रचेतसः ९८
शारदावेनं मासौ ९६०
शारदेन ऋतुना देवा ९४३
शारदौ मासौ गोप्तारौ ९५९
शिवां रात्रिमनुसूर्यं च १०५६
शिवा नारीयमस्तमागन् ८०९
शीर्ष्णःशीर्ष्णो जगतः ५६६
शुकेषु ते हरिमाणं ५४५
शुक्रं ते अन्यद् यजतं ७७१
शुक्रश्च शुचिश्च प्रैष्मावृतू ९३३
शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि १५३
शुन्ना विद्धा व्योषया ३८७
शुचिरपः सूयवसा ३३
शुची ते चक्रे यात्या ६३८
शृण्वन्तं पूषणं वयम् ७५६
शैशिरावेनं मासौ ९६४
शैशिरेण ऋतुना देवाः ९४५
शैशिरौ मासौ गोप्तारौ ९६३
श्रद्धा पुंश्चली मित्रो १०२१
श्रायन्त इव सूर्यं ६०४
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ १०६७
षष्टिश्च षट्-च रेवति १०३३
स आर्तवानां पाशान्मा ९७०
स एव सं भुवनानि ८९५
सं या दानूनि येमथुः ३५१
सं वर्चसा पयसा ६९३, ७००
सं वः सृजत्वर्यमा ८१५
संवत्सरं शशयाना ८८८
संवत्सरस्य प्रतिमां १०७६
संवत्सराय पर्यायिणीं ८८६
संवत्सराय स्वाहा ८८४
संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसि ८८५
सꣳसृष्टां वसुभी रुद्रैः १०९५
सखाय आ नि षीदत ४०६
सखासावस्मभ्यमस्तु ५३१
स घा नो देवः सविता ४७५, ५२१
सजूर्देवेन सवित्रा सजूः ५९५
स धाता स विधर्ता ७०६
संदानं वो बृहस्पतिः ५३३
सप्त चक्रान् वहति ८९३
सप्त त्वा हरितो रथे ५४१
स बुध्न्यादाष्ट्र जनुषो १७५
समग्निरग्निना गत ५१५
समजन्तु विश्वे देवाः ६५८
समध्वरायोषसो नमन्त ७९७
समानमेतदुदकम् ६२९
समावर्ति विष्ठितो ४२५
समित् तमघमश्नवद् ६१
समुद्र ईशे स्रवतामग्निः १०००
समु पूष्णा गमेमहि ७५०
समु वां यज्ञं महयं ३२६

समृद्धिरोज आकूतिः ८८९
सं पूषन्नध्वनस्तिर ७१८
सं पूषन् विदुषा नय ७४९
सं मा सिञ्चन्तु मरुतः ७८९
सम्राजा उग्रा वृषभा २५०
सम्राजा या घृतयोनी २८०
सम्राजावस्य भुवनस्य २४९
सम्राज्ञी श्वशुरे भव ६५७
स रत्नं मर्त्यो वसु २०
सवितः श्रेष्ठेन रूपेण ५२५
सविता ते शरीराणि ५११
सविता ते शरीरेभ्यः ५०९
सविता पुनातु ५१०
सविता प्रसवानाम् ५१८
सविता यन्त्रैः पृथिवीम् ४८०
सवितासि सत्यप्रसवः ४९३
सवितुस्त्वा प्रसव उत्पुनामि ४८६
सवित्रा प्रथमेऽहन् ५३०
सवित्रा प्रसवित्रा ५२९
सवित्रे त्व ऋभुमते ५१६
सवित्रे स्वाहा ४९२
स वेद सुष्टुतीनाम् ७८१
स वै राज्ञा अजायत १०१९
स संवत्सरमूर्ध्वो ८९०
स सूर्य प्रति पुरो न ५५९
सस्वश्चिद्धि समृतिस्त्वेषी ३१८
सहश्च सहस्यश्च ९३६
स हि दिवः स पृथिव्या १७४
स हि रत्नानि दाशुषे ४५४
सा नो अद्य यस्या वयं १००६
सा पश्चात् पाहि सा पुरः १०४२
सा मा सत्योक्तिः परि ५७१
सावीर्हि देव प्रथमाय ५२२
सिंहस्य राध्युशती १०५५
सिनीवालि पृथुष्टुके १०९२
सिनीवाली सुकपर्दा ९
सुगः पन्था अनृक्षरः १८
सुगो हि वो अर्यमन् २६
सुत्रामाणं पृथिवीं १३
सुनावमा रुहेयम् १४
सुप्रावीरस्तु स क्षयः ४५
सुमङ्गलीरियं वधूः ६४४
सुषदा पश्चाद् देवस्य ५१३
सुषुमा यातमद्रिभिः २१०
सुष्टुतिः सुमतीवृधो ५०५
सुसंदृशं त्वा वयं ५८६
सुहवमग्ने कृत्तिका ११२५
सूक्तवाकं प्रथममादिद् ६६६
सूर्य एकाकी चरति ९७७
सूर्य नावमारुक्षः १५९
सूर्य ते द्यावापृथिवी ६२०
सूर्य यत् ते तपस्तेन ६११
सूर्य यत् ते तेजस्तेन ६१५
सूर्य यत् तेऽर्चिस्तेन ६१३
सूर्य यत् ते शोचिस्तेन ६१४
सूर्य यत् ते हरस्तेन ६१२
सूर्यरश्मिर्हरिकेशः ४७७
सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः ६१६
सूर्याभ्यां स्वाहा ६२२
सूर्याया वहतुः प्रागात् ६३९
सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः ५९४
सूर्यो दिवोदकामत् ६२१
सूर्यो देवीमुषसं ५४८
सूर्यो नो दिवस्पातु ५८२
सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां ६१९
सूर्यो माह्नः पात्वग्निः १३०
सोमः प्रथमो विविदे ६५१
सोमस्त्वा पात्वोषधीभिः ९९२
सोमस्यांशो युधां पते ६८१
सोमो ददद् गन्धर्वाय ६५२
सोमो वधूयुरभवद् ६३५
सोऽर्यमा स वरुणः ८१४
सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा १०७४
स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा १५
स्तोमस्य नो विभावरि १०५७
स्तोमा आसन् प्रतिधयः ६३४
स्तोमेन हि दिवि देवासो ६६८
स्मदभीशू कशावन्ता ३६७
स्वधास्तु मित्रावरुणा ३९४
स्वयंभूरसि श्रेष्ठो ५९२
स्वराडसि सपत्नहा ८५७
स्वस्तितं मे सुप्रातः ११३१
स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो ११३४
स्वस्त्ययोषसो दोषसश्च १३१
स्वासदसि सूषा अमृतो १२८
हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षस० ५५५
हविष्पान्तमजरं ६५९
हस्त आधाय सविता ४९८
हिरण्यनिर्णिगयो अस्य २४५
हिरण्यपाणिमूतये ४०३
हिरण्यपाणिः सविता ४१७
हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टौ २४६
हिरण्यरूपा उषसो ३७९
हिरण्यस्तूपः सवितः ४८४
हिरण्यहस्तो असुरः ४१८
हेमन्तेन ऋतुना देवाः ९४४
हैमनावेनं मासौ ९६२
हैमनौ मासौ गोप्तारौ ९६१

इति अदितिः, आदित्याश्च समाप्ताः ।



दैवत-संहिता

(१०)

विश्वे देवाः

संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)

संवत् २००१, शक १८६६, सन १९४४

मुद्रक और प्रकाशक
वसंत श्री. सातवळेकर, B. A.
भारत मुद्रणालय, औंध (जि. सातारा)

विश्वेदेवा देवताका परिचय

यह एक देवता नहीं है

' विश्वेदेवाः ' नामकी कोई एक देवता नहीं है। इसके पर्याय पद ' विश्वे देवाः, सर्वे देवाः, नानादेवताः, बहुदैवत्यं ' इस तरह अनेक हैं। इन पदोंसेही 'सब देवों' का बोध होता है। जहां मंत्रमें या सूक्तमें एकसे अधिक देवता होते हैं, और प्रत्येक देवताका पृथक् निर्देश करनेकी संभावना नहीं होती, वहांके अनेक देवताओंका मिलकर निदर्शक नाम ' विश्वेदेवाः ' है। ' अनेक देवता ' ऐसा भी इसको हम कह सकते हैं। अतः जिन मंत्रोंमें या सूक्तों में अनेक देवता होते हैं, उनका देवता ' विश्वेदेवाः ' समझा जाता है, उदाहरणके लिये देखिए–

इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम्।
आदित्यान् मारुतं गणम्॥ (ऋ. १।१४।३)

इस एक मन्त्रमें नौ देवताएँ हैं, इसलिये नौ देवताओंका निर्देश करनेके स्थानपर ' विश्वेदेवाः ' देवता कहा है। इससे बोध होता है कि, इस मन्त्रमें अनेक देवताएं हैं।

सब देवताओंकी इकट्ठी प्रार्थना करनेके समयमें भी ' विश्वेदेवा ' देवता मानी जाती है। वहां सब देव ऐसा अर्थ समझा जाता है, जैसा– (ऋ. २।४१।१३)

विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम्।

यहां सब देवोंकी इकट्ठी प्रार्थना है। यहां किसी एक देवताका निर्देश नहीं है। जहां गणदेवोंकी प्रार्थना होती है, वहां उन सब गण देवोंको सामूहिकरूपसे ' विश्वेदेवा ' कहा जाता है। वसु, रुद्र, आदित्य, मरुत् ये सब गण देव हैं। ये संघ करके रहते हैं।

अथर्ववेदमें ' नाना दैवत्यं, मन्त्रोक्ताः देवताः, बहु दैवत्यं, नाना देवताः ' ऐसे अनेक नाम देवताओंमें आते हैं, उन सबका अर्थ ' अनेक देवता ' इतनाही है। अर्थात् अनेक देवताओंका बोधक यह पद है। यह कोई एक देवता नहीं। इस सूक्तमें जो अनेक देवता होंगे, वेही दूसरे सूक्तमें होंगे ऐसी भी बात नहीं। परन्तु सर्वत्र अनेक देवता मन्त्रमें वा सूक्तमें होंगे, यही साम्य यहाँ है।

विश्वेदेवाके विषयमें ब्राह्मण ग्रंथोंका निर्वचन

विश्वेदेवा देवताके संबन्धमें ब्राह्मण ग्रंथोंमें अनेक प्रकारके विवेचन मिलते हैं, उन्हें अब देखिये-

एते वै सर्वे देवा यद्विश्वेदेवाः। (कौ. ब्रा. ४।१४;५।२)
एते वै विश्वेदेवा यत्सर्वेदेवाः। (गो. ब्रा. उ. १।२०)
रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वेदेवाः। (श. ब्रा. ३।९।२।६;१२)
तस्य (सूर्यस्य) ये रश्मयस्ते विश्वेदेवाः। (श. ब्रा. ४।३।१।२६)
एते वै विश्वेदेवा रश्मयः। (श. ब्रा. २।३।१।७)
एते वै रश्मयो विश्वेदेवाः। (श.ब्रा. १२।४।४।६)
(प्राणा वै) विश्वेदेवाः। (वा. य. ३८।१५) (श. ब्रा. १४।२।२।३७)
ऋतवो विश्वेदेवाः। (वा. य. १२।६१) (श. ब्रा. ७।१।१।४३)
इन्द्राग्नी वै विश्वेदेवाः। (श. ब्रा. २।४।४।१३; ३।९।२।१४)
अथ यदेनं (अग्निं) एकं सन्तं बहुधा विहरन्ति तदस्य वैश्वदेवं रूपम्। (ऐ. ब्रा. ३।४)
श्रोत्रं विश्वेदेवाः। (श. ब्रा. ३।२।२।१३)
ता (दिशः) उ विश्वेदेवाः। (जै. उ. ब्रा. २।२।४; २।११।५)
स (प्रजापतिः) विश्वान्देवानसृजत तान् दिक्ष्वुपादधात्। (श. वा. ६।१।२।९)
दिशो हैतद्यजुरेतद्वै विश्वेदेवाः वैश्वानराः। (श. ब्रा. ६।५।२।६)
तस्य (प्रजापतेः) विश्वे देवाः पुत्राः। (श. ब्रा. ६।३।१।१७)
वैश्वदेवो हि वैश्यः (तै. ब्रा. २।७।२।२)

विड्वै विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. १०।४।१।९)
विशो विश्वेदेवाः (श. ब्रा. २।४।३।६; ३।९।१।१६; ५।५।१।१०)
वैश्वदेव्यो वै प्रजाः । (तै. ब्रा. १।६।२।५; १।७।१०।२)
पशवो वै वैश्वदेवम् । (कौ. ब्रा. १६।३)
वैश्वदेवो वा अश्वः । (श. ब्रा. १३।२।५।४; तै. ब्रा. ३।९।२।४; ३।९।११।१)
वैश्वदेवी वै गौः । (गो. ब्रा. उ. ३।१९)
वैश्वदेवं अन्नम् । (तै. ब्रा. १।६।१।१०)
विश्वेषां वा एतद्देवानां रूपं यत्करम्भाः । (तै. ब्रा. ३।८।१४।४)
सर्वमिदं विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. ३।९।१।१४; ४।४।१।९; १८)
सर्वे वै विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. १।७।४।२२; ३।९।१।१३; ४।२।२।३; ५।५।२।१०)
विश्वेदेवा एव सर्वम् । (गो. ब्रा. पू. ५।१५)
अनन्ता विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. १४।६।१।११)
विश्वे वै देवा देवानां यशस्वितमाः । (श. ब्रा. १३।१।२।८; तै. ब्रा. ३।८।७।२)
बृहस्पतिर्विश्वैर्देवैरुदक्रामत् । (ऐ. ब्रा. १।२४)
वैश्वदेवं तृतीयसवनम् । (ऐ. ब्रा. ६।१५; श. ब्रा. १।७।३।१६, ४।४।१।११; जै. उ. १।३७।४)
अथैनं उदीच्यां दिशि विश्वेदेवा ... अभ्यषिञ्चन् वैराज्याय । (ऐ. ब्रा. ८।१४)
विश्वे त्वा देवा उत्तरतोऽभिषिञ्चन्त्वानुष्टुभेन छन्दसा । (तै. ब्रा. २।७।१५।५)

विश्वेदेवा देवताके संबंधमें ब्राह्मण ग्रंथोंमें इस तरहके वचन मिलते हैं। यहां प्रथम ही 'सर्वे देवाः' सब देव विश्वेदेव हैं, ऐसा कहा है, अर्थात् जितने भी देव हैं वे सब विश्वेदेव हैं। कोई देव इनमेंसे छूटा नहीं है। आगे सूर्यके किरण विश्वेदेव हैं ऐसा कहा है। किरण अथवा प्रकाशके किरण जितने भी हैं वे सबके सब विश्वेदेव हैं। आगे प्राण और ऋतुको विश्वेदेवा कहा है। क्योंकि प्राण भी अनेक हैं और ऋतु भी बहुत हैं। इन्द्र और अग्नि विश्वेदेव हैं। अग्नि एक होते हुए भी उसको अनेक नामोंसे पुकारते हैं, इसलिये वे सब रूप विश्वेदेव हैं। श्रोत्र विश्वेदेव हैं, क्योंकि सब दिशाएं ही श्रोत्र हैं और दिशा अनेक होनेके कारण उसे विश्वेदेव कहा है, वह ठीक ही है। प्रजापतिने सब देव उत्पन्न किये, वे विश्वेदेव हैं। प्रजापतिके जो पुत्र देव हैं, वे विश्वेदेव हैं। वैश्य तथा प्रजाजन भी विश्वेदेव हैं। सब पशु भी विश्वेदेव हैं। गौ और घोडा भी विश्वेदेव हैं। विश्वेदेव अनन्त है और यह सब जो भी इस विश्वमें है, वह सब विश्वेदेव ही है।

इस तरह सभी विश्व अर्थात् विश्वके अन्तर्गत पदार्थ मात्र हैं वे सब विश्वेदेव हैं। इसमें कोई वस्तु छूटी नहीं है। यही बात 'विश्वेदेवाः' पदसे भी समझमें आ सकती है। इस विश्वमें जो भी पदार्थ हैं, वे सब 'देव' हैं अतः वे 'विश्वेदेव' कहलाते हैं, यह ठीक ही है। अब तैंतीस देवोंके विषयमें यहां प्रसंगानुसार कुछ कहना चाहिये–

तैंतीस देवताएँ

तैंतीस देवताओंका उल्लेख निम्नलिखित मंत्रोंमें है—

(मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः । पुर उष्णिक् ।)

इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च ।
मनोर्देवा यज्ञियासः ॥ (ऋ. ८।३०।२)

ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन् ।
विदन्नह द्वितासनन् ॥ (ऋ. ८।२८।१)

(गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः ।
पत्नीवतः त्रिंशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयस्व ॥ (ऋ. ३।६।९)

(प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः । अनुष्टुप्)

श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः ।
तान्रोहिदश्व गिर्वणस्त्रयस्त्रिंशतं आवह । (ऋ. १।४५।२)

(भृग्वंगिराः । त्रिवृत् । अनुष्टुप्)

त्रयस्त्रिंशद्देवतास्त्राणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुपुरप्स्वन्तः । अस्मिन्त्समुद्रे अधि यद्धिरण्यं तेनार्यं कृणवद्वीर्याणि ॥ (अथर्व. १९।२७।१०)

(गोपथः । रात्रिः । अनुष्टुप्)

द्वौ च ते विंशतिश्च ते राज्येकादशावमाः ।
तेभिर्नो अद्य पायुभिः नु पाहि दुहितर्दिवः ॥ (अथर्व. १९।४७।५)

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशाः सुराधसः।
बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा॥ (वा. य. २०।११)

इन सात मंत्रोंमें ३३ देवताओंका स्पष्ट उल्लेख है। 'त्रयः त्रिंशत् देवाः। त्रिंशति त्रयः परः देवासः। त्रिंशतं त्रीन् च देवान्। गिर्वणः त्रयः त्रिंशतं। त्रयस्त्रिंशत् देवताः। देवाः त्रयस्त्रिंशाः। द्वौ+विंशतिः च+एकादश।' ये सब उल्लेख ३३ देवोंकी गणना कर रहे हैं। 'तीन और तीस,' अथवा 'तीस और तीन' इस तरह गणना ऊपरके मंत्रोंमें दीखती है। एक मंत्रमें २+२०+११=३३ ऐसी गणना है। तीन और तीसमें भी एक देव मुख्य और दस देव उसके साथवाले ऐसी गणना है। वही बात २+२०+११=३३ में है। तीन देव मुख्य और दस दसके तीन देवगण मिलकर तैंतीस देव होते हैं।

तैंतीस देवोंमें 'तीनवार एकादश' 'त्रया एकादश' अर्थात् ११×३=३३ ऐसी देवोंकी गणना ऊपर दिये एक मंत्रमें की है। इससे ये तीन तरहके देवगण, ग्यारहकी संख्यामें प्रत्येक गण होनेसे, तैंतीस बने हैं। इससे खोज करनेवालेको पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोकमें ग्यारह ग्यारह देवगणोंका निवास है, ऐसा पता लगता है। इसके सूचक निम्नलिखित मन्त्र हैं—

तीन गुणा ग्यारह देव

(हिरण्यस्तूप आंगिरसः। अश्विनौ। जगती)

आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना। प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषः भवतं सचाभुवा॥ (ऋ. १।३४।११; वा. य. ३४।४७)

(परुच्छेपो दैवोदासिः। विश्वेदेवाः। त्रिष्टुप्)

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ। अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्। (ऋ. १।१३९।११)

(भृग्वंगिराः। त्रिवृत्। अनुष्टुप्)

ये देवा दिव्येकादश स्थ० ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ०। ये देवा पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम्॥ (अथर्व. १९।२७।११-१३)

(इयावाश्व आत्रेयः। अश्विनौ। त्रिष्टुप्)

विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैरिहाग्निमरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा। सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना। (ऋ. ८।३५।३)

(नाभाकः काण्वः। अग्निः। महापंक्तिः)

अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्याक्षेति विदथा कविः।
स त्रींरेकादशाँ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः परिष्कृतः। नभन्तामन्यके समे॥ (ऋ. ८।३९।९)

(मेध्यः काण्वः। अश्विनौ। त्रिष्टुप्)

युवां देवास्त्रय एकादशासः सख्याः सख्यस्य दद्रशे पुरस्तात्। अस्माकं यज्ञं सवनं जुषाणा पातं सोममश्विना दीद्यग्नी॥ (ऋ. ८।५७।२)

(कश्यपो मारीचः। पवमानः सोमः। त्रिष्टुप्)

तव त्ये सोम पवमान निण्ये विश्वे देवास्त्रय एकादशासः। दश स्वधाभिरधि मानो अव्ये मृजन्ति त्वा नद्यः सप्त यह्वीः॥ (ऋ. ९।९२।४)

इन सात मंत्रोंमें तैंतीस देवोंकी गणना की है। 'त्रिभिः एकादशैः देवैः। त्रीन् एकादशान्। त्रयः एकादशासः।' तीन गुणे ग्यारह देव हैं यह बात इन मंत्रोंसे सिद्ध होती है।

ये तैंतीस देव 'दिवि एकादश, अन्तरिक्षे एकादश, पृथिव्यामेकादश' इस तरह आकाशमें, अन्तरिक्षमें और भूमिपर ग्यारह ग्यारह हैं, ऐसा विवरण उक्त मंत्रोंमें ही किया है। इससे तैंतीस देव कहां कैसे रहते हैं, इसका पता लगता है। इन ग्यारह देवोंमें भी एक मुख्य और दस गौण अर्थात् उस एकके साथ या अधीन कार्य करते हैं। पृथ्वीपर अग्नि, अन्तरिक्षमें वायु और द्युलोकमें सूर्य ये तीन देव संभवतः मुख्य होंगे और इनमेंसे प्रत्येकके अधीन दस दस देव रहते होंगे। पर ऐसा भी दीखता है कि, अग्नि आदि देव इन तैंतीस देवोंको अपने रथपर बिठलाकर लाते हैं, इस विषयमें मन्त्रभाग देखिए—

अग्ने! पत्नीवतः त्रिंशतं त्रींश्च देवान् आवह॥ (ऋ. ३।६।९)

अग्ने! गिर्वणः त्रयस्त्रिंशतं आवह॥ (ऋ. १।४५।२)

अग्निः तीन् एकादशान् यक्षत्॥ (ऋ. ८।३९।९)

हे अग्ने ! तैंतीस देवोंको और उनकी पत्नियोंको साथ ले आओ। इसीतरह अश्विदेव भी तैंतीस देवोंको लाते हैं–

हे अश्विना ! त्रिभिः एकादशैर्देवैः आयातं ॥
(ऋ. १।३४।११)

हे अश्विदेवो ! तैंतीस देवोंके साथ यहां आओ। यहां ये अग्नि और अश्विदेव तैंतीस देवोंको अपने साथ लाते और यज्ञमें हविर्भाग लेते हैं। अश्वी अपने रथपर तैंतीस देवोंको रखकर लाते हैं, इसी तरह अग्नि भी अपने रथपर रखकर उन सब देवोंको लाते हैं। इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र भाग देखने योग्य है–

ऐभिः अग्ने सरथं याहि अर्वाङ् नाना-रथं वा ॥
(ऋ. ३।६।९)

हे अग्ने ! इन तैंतीस देवोंको अपने रथपर बिठला कर अथवा नाना रथोंपर बिठलाकर यहां ले आओ। यह मन्त्र निःसंदेह विचार करने योग्य है। तैंतीस देवोंकी खोजमें यह सहायक होनेवाला है। तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव हैं, ऐसा भी निम्नलिखित मन्त्र में कहा है–

(गाथिनो विश्वामित्रः। अग्निः त्रिष्टुप्)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन्। औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥ (ऋ. ३।९।९)

तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव अग्निकी पूजा करते हैं। यहाँ ३३३० + ९ = ३३३९ देव हैं ऐसा कहा है।

१ ब्रह्म = महा सूर्य
३ अग्नि–वायु-सूर्य
३३ उक्त तीन देवोंके साथ दस मिलकर तैंतीस देव
३३३ विश्वेदेवाः
३३३९ ,, ,,

बादके ३३३ और ३३३९ ये देव भी उन ३३ देवोंके साथ कार्य करनेवाले उपदेव हैं। इस तरह देवोंकी संख्याकी वृद्धि होकर तैंतीस कोटी अथवा तैंतीस करोड देवताएं मानी गयी हैं। कहते हैं कि मानव-शरीरमें तैंतीस करोड अणु जीवमात्राएँ हैं। अणुजीवमात्रा (Cells) यही जीवनका अतिसूक्ष्म पिण्ड है। ये अणुपिण्ड करोडोंकी संख्यामें शरीरमें रहते हैं, प्रत्येक अणुपिण्डमें विश्वके सब लोकलोकान्तरके अंश रहते हैं और वे (स्पेक्ट्रम्) वर्ण विभाजक यन्त्रसे देखे और पहचाने भी जाते हैं। इससे जो विश्वमें है वह पिण्डमें है और जो पिण्डमें है वह विश्वमें है, इस वैदिक सिद्धान्तकी पुष्टी होती है। इसलिए विश्वान्तर्गत तैंतीस देवताएं शरीरमें कहां हैं, इसकी खोज करना अनिवार्य है। विश्वान्तर्गत तैंतीस देवताएं शरीरमें हैं, इसमें संदेह नहीं है, परन्तु सबकी सब कहां रहती हैं, इसका पता वैदिक वाङ्मयसे नहीं लगता है। कुछ थोडे देवोंके विषयमें ऐतरेयोपनिषदमें कहा है–

अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,
वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्,
आदित्यश्चक्षुर्भूत्वा अक्षिणी प्राविशत्,
दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन्,
ओषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा त्वचं प्राविशन्,
चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,
मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्राविशत्,
आपः रेतो भूत्वा शिस्नं प्राविशन्,
(ऐ. उ. २।५)

कौनसा देव मानव शरीरमें अथवा प्राणि शरीरमें आकर कहां रहा है, इसका वर्णन यहां किया है, इस वर्णनसे निम्न लिखित तालिका बनती है–

विश्वान्तर्गत देवता	शरीरान्तर्गत देवतांश	शरीरमें स्थान
अग्नि	वाक्	मुख
वायु	प्राण	नासिका
आदित्य	चक्षु	नेत्र
दिशा	श्रोत्र	कर्ण
औषधि	केश	त्वचा
चन्द्रमा	मन	हृदय
मृत्यु	अपान	नाभि
आप्	रेत	शिस्न

इस तरह यह तालिका बनी है। वेदके मंत्रोंमें भी यह विषय है–

संसिचो नाम ते देवा ये संभारान् समभरन्।
सर्वे संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १९ ॥

गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १८ ॥
रेतः कृत्वाऽऽज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १९ ॥
या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह ।
शरीरं ब्रह्म प्राविशत् शरीरेऽधि प्रजापतिः ॥ ३० ॥
सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य वि भेजिरे ।
अथास्येतरमात्मानं देवाः प्रायच्छन्नग्नये ॥ ३१ ॥
तस्माद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।
सर्वा ह्यस्मिन्देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥ ३२ ॥
(अथर्व. ११।८)

जो देव शरीर बनानेका संभार इकट्ठा करते हैं, वे संसिच नामक देव मर्त्य देहकी सब सामग्री यथा स्थान इकट्ठी करके मानव देहमें घुस गये हैं। इस मर्त्य गृहको बना कर सब देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं। रेतका घी बनाकर ये देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं। आप्, विराट्, अन्य देवता ब्रह्मके साथ शरीरमें प्रविष्ट हुए हैं। शरीर पर प्रजापति अधिष्ठाता हुआ है। सूर्य चक्षु हुआ, वायु प्राण हुआ, और ये मनुष्य के शरीरमें विभक्त भावसे रहे हैं। इससे भिन्न अन्य अवयव अन्य देव बने हैं। इसलिये ज्ञानी इस पुरुषको ब्रह्म कहते हैं। सब देवताएं, गौवें गोशालामें रहनेके समान, इस शरीरमें रहती हैं।

यहां स्पष्ट कहा है कि, गौवें गोशालामें रहनेके समान सब देवताएं इस शरीरमें रहती हैं, 'सर्वाः देवताः' का अर्थ ये तैंतीस देवता ही हैं। देखिये–

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे सर्वे समाहिताः ॥ १३॥
यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे गात्रा विभेजिरे ॥ १७ ॥

'इसके शरीरमें तैंतीस देव शरीरके सब अवयवोंमें समाहित हुए हैं। इसके शरीरके सब गात्रोंमें ये तैंतीस देव विभक्त होकर रहे हैं।' इस तरह शरीरमें तैंतीस देव अवयव बनकर रहे ऐसा वर्णन है। इस वर्णनमें तैंतीस देवता शरीरके गात्रोंमें रहनेका वर्णन स्पष्ट है। मन्त्रमें इस विषय का जो अधिक वर्णन मिलता है वह ऐसा है—

यस्मिन् भूमिरन्तरिक्षं द्यौर्यस्मिन् अध्याहिता ।
यत्राग्निश्चन्द्रमाः सूर्यो वातस्तिष्ठन्त्यार्पिताः ॥ १२ ॥
यत्र अमृतं च मृत्युश्च पुरुषेऽधि समाहिते ।
समुद्रो यस्य नाड्यः पुरुषेऽधि समाहिताः ॥ १५ ॥
यत्रादित्याश्च रुद्राश्च वसवश्च समाहिताः ॥ २२ ॥
यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् ।
दिवं यश्चक्रे मूर्धानम्० ॥ ३२ ॥
यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ।
अग्निं यश्चक्र आस्यम्० ॥ ३३ ॥
यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरंगिरसोऽभवन् ॥
दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीः० ॥ ३४ ॥ (अथर्व १०।७)

'जिसमें भूमि-अन्तरिक्ष-द्यु ये तीन लोक हैं। जिसमें अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, वायु ये देव रहते हैं, जहां अमृत और मृत्यु हैं। नदियां नाडीरूपसे जहां रहती हैं। जहां वसु, रुद्र और आदित्य रहे हैं, द्युलोक सिर है, अन्तरिक्ष पेट है और भूमि जिसके पांव हुए हैं। सूर्य चक्षु, चन्द्रमा मन और अग्नि मुख बना है। वायु प्राण और अपान, चक्षु अंगिरस और दिशायें ज्ञान साधन कर्ण यहां बने हैं।'

यह वर्णन परमात्माके विश्वशरीरका और जीवशरीरका समानतया वर्णन है। परमात्माका शरीर विश्व है और जीव का शरीर यह पिण्ड शरीर है, पर दोनों जगह ये तैंतीस देव हैं। परमात्म शरीरमें पूर्ण रूपसे और जीवशरीरमें अंश रूपसे ये देवताएँ रहती हैं। इनका मंत्रोक्त वर्णन और देखिये—

दश साकं अजायन्त देवा देवेभ्यः पुरा ॥ ३ ॥
प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रं अक्षितिश्च क्षितिश्च या ।
व्यानोदानौ वाङ्मनस्ते वा आकूतिं आयहन् ॥४
इन्द्रादिन्द्रः सोमात्सोमो अग्नेरग्निरजायत ।
त्वष्टा ह जज्ञे त्वष्टुर्धातुर्धाताऽजायत ॥ ९ ॥
ये त आसन् दश जाता देवा देवेभ्यः पुरा ।
पुत्रेभ्यो लोकं दत्त्वा क्वेमस्ते लोक आसते ॥१०
(अथर्व. ११।८)

दस देवोंसे दस देव-पुत्र उत्पन्न हुए। प्राण, अपान, चक्षु, श्रोत्र, अक्षिति, क्षिति, व्यान, उदान, वाणी, मन ऐसे वे दस देवपुत्र दस देवोंसे उत्पन्न हुए हैं। इन्द्रसे इन्द्र, सोमसे सोम, अग्निसे अग्नि, त्वष्टासे त्वष्टा, और धातासे धाता ये पुत्र हुए हैं। ये दस देवपुत्र बडे देवोंसे उत्पन्न हुए हैं। इन पुत्रोंको स्थान देकर वे देव अपने स्थानमें गये।

पितृस्थानीय देवोंने पुत्ररूपी देवोंको शरीररूपी क्षेत्र निर्माण करके दिया और वे अपने स्थानमें गये। यही इन सभी मंत्रोंका अतिस्पष्ट कथन है। तैंतीस देव शरीरमें आकर

रहे हैं, ऐसा मंत्रमें कहा भी है, परन्तु गणना करनेके समय आठ देवोंके ही नाम दिये हैं। उपनिषद् में भी ६।७ देवों के नाम हैं और अन्य वेद मंत्रोंमें भी ८।१० देवोंके नाम गिनाये हैं। अन्य देवोंके नाम और स्थान नहीं लिखे, इसलिये अन्य देवोंके अंश शरीरमें नहीं आये, ऐसा नहीं माना जा सकता; क्योंकि तैंतीस देवोंका निवास शरीरमें हुआ है ऐसा स्पष्ट कथन पूर्वोक्त मंत्रोंमें है, इतना ही नहीं, परन्तु त्रिलोकी अंश रूपसे शरीरमें रहती है ऐसा भी ऊपरके मंत्रों में कहा है। जब पूर्ण रूपसे त्रिलोकीका अंश शरीरमें आया है, तब तो उस त्रिलोकीके सभी देव शरीरमें आगये हैं, इसमें संदेह नहीं रह सकता। परन्तु सब तैंतीस देवोंके नाम और स्थान शरीरमें कहाँ और कैसे हैं, यह वैदिक वाङ्मयमें किसी स्थानमें लिखा नहीं मिलता। इसकी खोज होना अत्यंत आवश्यक है। अब ऊपरके मंत्रोंके आधारसे शरीरमें जो देवोंके स्थान निश्चित हुए वे ये हैं, उनकी तालिका इस तरह बनती है—

विश्वमें देवता	शरीरमें देवता
द्युलोक	सिर
सूर्य, अंगिरस	नेत्र
आदित्य	नेत्र
अग्नि	मुख
दिशा	कान
अन्तरिक्षलोक	उदर पेट,
चन्द्रमा	मन
रुद्र, वायु	प्राण अपान
विद्युत्	जाठर अग्नि
नदियां	नाडियां
वृक्ष	केश
वसु, अग्नि	उष्णता
पृथ्वी	पांव

इस तरह यह तालिका तैंतीस देवताएं विश्वमें और उनके पुत्र रूप देव शरीर में कैसे कहां हैं, इस संबन्धका ज्ञान देनेके लिये विशुद्ध रूपसे तैयार करनी चाहिये। बडे प्रयत्नसे यह साध्य हो सकती है, क्योंकि वैदिक साहित्यमें इसका संपूर्ण वर्णन कहीं भी नहीं है। थोडे देवताओंका वर्णन वेदमन्त्रों और उपनिषदोंमें है, वैदिक समयमें गुरु अपने शिष्यको यह देवविद्या पढाता होगा, इस लिये उस समय थोडेसे संकेत मात्र उल्लेख जो इस समय वेदमन्त्रों और उपनिषदोंमें आये हैं, उतने पर्याप्त होते होंगे। परन्तु अब यह गुप्तविद्या बतानेवाला कोई गुरु नहीं रहा है, इसलिये विशेष खोज पूर्वक यह ज्ञान तालिका बद्ध करके रखना चाहिये।

शरीरमें देवताओंका स्थान

मनुष्यके पृष्ठवंशमें हड्डियोंकी माला है। इनमें दो हड्डियोंके टुकडोंकी जो संधि है, वहां मज्जाकी ग्रंथी है। सिरसे लेकर गुदातक ये मज्जा केन्द्र ३३ हैं। इनमें गुदाके पासके ६।७ अलग अलग नहीं हैं, परन्तु अन्य मज्जाग्रंथियाँ पृथक् पृथक् हैं और मानसिक ध्यान द्वारा प्रत्येक ग्रंथीको उत्तेजित किया जा सकता है।

योग साधनमें इनमेंसे आठ चक्र योगानुष्ठानके लिये लिये हैं। योगी लोग ध्यानसे देवताकी उपासना इन चक्रोंमें करते हैं और ग्रंथियोंको उत्तेजित करते हैं। ये ग्रंथियाँ उत्तेजित होनेसे उनमेंसे विशेष रस निकलता है, यह रस शरीरमें शोषित होनेसे दीर्घ जीवन, आरोग्य, बल, वीर्य, ज्ञानवर्धन आदि लाभ होते हैं। इसी तरह अन्य मज्जा केन्द्रोंमें जो देवतांश रहते हैं, उनके ज्ञानसे और ध्यानसे मनुष्यका लाभ होना संभव है। पाचन शक्तिका प्रदीप्त होना, रुधिराभिसरण ठीक होना, विचार और स्मरणकी शक्तिका विकास, ब्रह्मचर्यका साधन, ऊर्ध्वरेता बनना, जीवन दीर्घ होना, मृत्युको दूर रखना, नीरोग रहना आदि अनेक लाभ इससे होनेकी संभावना है।

पृष्ठवंशके इन केन्द्रोंके विशेष मालिश करनेसे भी लाभ होते हैं। इस विद्याका नाम 'किरोपॉट्रिक चिकित्सा' हैं। पर यह विद्या तब साध्य होगी जब प्रत्येक मज्जा केन्द्रकी शक्तिका अर्थात् देवताका यथावत् ज्ञान होगा। इसलिये इन ३३ देवताओंके ३३ केन्द्रोंका शरीरमें स्थान, कार्य और देवतासंबन्ध जानना अत्यंत आवश्यक है।

इस ज्ञानसे व्यक्तिका हित है और वैदिक मंत्रोंसे जो अध्यात्मका अनुभव लेना है, वह इसी अनुष्ठानसे हो सकता है। अर्थात् अध्यात्म ज्ञान केवल गप्पें मारनेसे नहीं हो सकता, परन्तु विश्वव्यापक परम पिता परमात्माके अंशसे

जो यह जीव अमृतपुत्र हुआ है, उसमें पितृतुल्य सब शक्तियाँ हैं, उनको जानना, देखना और उनका उपयोग करके अपनी शक्तिका विकास करना चाहिये। यही अनुष्ठान है। योगी लोग यह करते ही हैं। वही अन्योंको पूर्णरूपसे करना चाहिये। अध्यात्मज्ञानका प्रत्यक्ष फल यही है।

शरीरमें सिरका भाग द्युलोक है, छाती और पेट अन्तरिक्ष लोक है, और गुदा मूत्राशयसे नीचेका सब भाग भूलोक है। इन तीन लोकोंमेंसे प्रत्येकमें एक एक देवता मुख्य है और उसके साथ दस देवतायें सहायक हैं। इनका स्थान पृष्ठवंशके मज्जाकेन्द्र हैं। इन केन्द्रोंके अधीन शरीर के सब व्यापार हैं। इसलिये प्रत्येक देवता, उसका अंश शरीरमें कहाँ कहां रहता है, कहां कहां उसका क्या कार्य चल रहा है। उसको स्वाधीन कैसा करना चाहिये, उत्तेजित कैसा करना चाहिये, उत्तेजनासे और स्वाधीनतासे कौनसे लाभ होते हैं, इत्यादि सब ज्ञान इस देवविद्यासे जाना जाता है। योगमें जो गुप्त विद्या है वह यही विद्या है। यह विद्या गुप्त रखते रखते अब लुप्त ही हुई, उसकी खोज करना आजके खोजकर्ताओंका कार्य है।

तैंतीस देवताओंका ज्ञान और स्थान अपने शरीरमें जानना चाहिये। यही अध्यात्मविद्या है और यही योगसाधनका भाग है। योगी लोग आज भी आठ मज्जाकेन्द्रों और वहां के आठ देवताओंको जानते और उनका अनुष्ठान ध्यानद्वारा करके लाभ उठाते हैं। पर इसको वे अतिगुप्त रखते हैं। हमें उसकी शास्त्रीयतासे पूर्णरूपसे खोज करनी चाहिये।

तैंतीस देवताओंका ज्ञान वैद्योंको भी होना चाहिये। पर वह बाहरके विश्वव्यापी देवताओंका ज्ञान है। इस ज्ञानसे ही उनकी चिकित्सा होती है। आजकल मृत्तिकाचिकित्सा, जलचिकित्सा, अग्निचिकित्सा, सूर्यकिरण-चिकित्सा, विद्युत्चिकित्सा, औषधिचिकित्सा आदि अनेक चिकित्साएँ प्रचलित हैं। ये सब चिकित्साएँ देवताओंके यथार्थ ज्ञानसे और उपयोगसे होती हैं।

इससे ज्ञात हुआ कि योगी अपने अन्दर ३३ देवताओंका अनुभव करता है और उनको उत्तेजित करके अन्दरही अन्दरसे विशिष्ट ग्रंथिरसोंको प्राप्त करके नीरोग बनकर दीर्घायु होता है। इसी तरह वैद्य इनही देवताओंके गुणधर्म जानकर उनसे नाना प्रकारकी चिकित्साएं करके अपने रोगियोंके रोग दूर करके उनको अपमृत्युसे बचाकर दीर्घायु बनाता है।

याजक लोग अग्नि सिद्ध करके उसमें विशिष्ट औषधियोंके हवन द्वारा इनही तैंतीस देवताकी प्रसन्नता प्राप्त करके भूमि-जल-वायुकी शुद्धिके द्वारा नीरोगताका साधन करके जनताका हित करते हैं। इस तरह ये सब इन तैंतीस देवोंके साथ अपना संबन्ध जोड रहे हैं और लाभ भी उठा रहे हैं। तैंतीस देवोंकी यही वेदविद्या है। आज यह पूर्ण रूपसे हमारे हस्तगत नहीं है, पर इस ढंगसे प्रयत्न करनेपर यह कभी न कभी हस्तगत हो सकती है।

इसलिए ये तैंतीस देव विश्वमें कौनसे और कहां हैं, वे मानवशरीरमें या प्राणीके शरीरमें कहां हैं और यज्ञमें उनका संबन्ध क्या है इसका पता लगाना चाहिये।

विश्वेदेव कितने हैं ?

अब हम इस बातका विचार करते हैं कि विश्वेदेवा देवताके अन्दर जो मन्त्र समाविष्ट हुए हैं उनमें कितने देवोंका अन्तर्भाव हुआ है और जिन यजुर्वेदके अध्यायोंमें नाना देवताओंके उद्देश्यसे हविर्भाग देनेका वर्णन है, उनमें कितनी देवताएं लिखी हैं। इनका प्रथम प्रकरणशः विचार करेंगे। प्रथम निघण्टुके पञ्चम अध्यायमें पृथ्वी स्थानीय देवताएं ५२, अन्तरिक्ष स्थानीय देवताएं ६८ और द्युस्थानीय देवताएं ३१ इसतरह १५१ देवतायें लिखी हैं, उनके स्थानानुकूल भाव ये हैं–

पृथ्वी स्थानीय ५२ देवतायें

(निघण्टु ५।१)

१ अग्निः जो हवनके लिये तथा पकानेके लिये जलाया जाता है।

२ जातवेदाः जिससे वेद प्रकट हुए वह यज्ञाग्नि।

३ वैश्वानरः सब मानवोंको यज्ञमार्गपर चलानेवाला अग्नि।

(निघण्टु ५।२)

४ द्रविणोदाः धन देनेवाला यज्ञाग्नि,

५ इध्मः समिधाओंसे प्रदीप्त होनेवाला

६ तनू-न-पात् शरीरको न गिरानेवाला, (तनू-नपात्)
सूर्यरूपी शरीरका पुत्र विद्युत्, उसका पुत्र अग्नि,
सूर्यका पोता, गौका पोता घी, (गौ-दूध-घी), घी

७ नराशंसः मनुष्योंद्वारा प्रशंसित यज्ञाग्नि ।

८ इळः (इडः) स्तुत्य अग्नि,
९ बर्हिः दर्भ, आसन,
१० द्वारः द्वार, यज्ञशालाके द्वार,
११ उषासानक्ता उषःकाल और रात्रीका समय,
१२ दैव्याहोतारा अग्नि और वायु, दिव्य होता,
१३ तिस्रो देवीः भारती इळा सरस्वती ये तीन देवियाँ,

१४ त्वष्टा बढई, विश्वरचनाका कार्य करनेवाला,

१५ वनस्पतिः वनस्पति, यूप, समिधा, लकडी,

१६ स्वाहाकृतयः स्वाहाकारपूर्वक आहुति देना' (निघण्टु ५।३)

१७ अश्वः घोडा
१८ शकुनिः पक्षी, कपिंजल
१९ मण्डूकाः मेंढक, जलजन्तु,
२० अक्षाः पासे (खेलनेके),

२१ ग्रावाणः सोम कूटनेके पत्थर,

२२ नराशंसः वीरोंकी, नरोंकी जिसमें प्रशंसा की जाती है वह यज्ञ

२३ रथः रथ, गाडी, वाहन
२४ दुन्दुभिः ढोल, चर्मवाद्य
२५ इषुधिः तर्कस, बाणोंकी थैली,
२६ हस्तघ्नः दस्ताना
२७ अभीशवः लगाम,
२८ धनुः धनुष्य
२९ ज्या धनुष्य की डोरी
३० इषुः बाण
३१ अश्वाजनी चाबूक
३२ उलूखलं उखली
३३ वृषभः बैल, (गायका भी उपलक्षण)
३४ द्रुघणः काष्ठकी गदा, घन
३५ पितुः अन्न
३६ नद्यः नदियाँ

३७ आपः जल
३८ ओषधयः औषधियाँ
३९ रात्रिः रात्री
४० अरण्यानी वनश्री, अरण्य
४१ श्रद्धा श्रद्धा
४२ पृथिवी भूमि
४३ अप्वा भय, रोग, दुःख
४४ अग्नायी अग्निकी ज्वाला
४५ उलूखलमुसले उखली और मुसली
४६ हविर्धानो हवि और उसका पात्र, छाज
४७ द्यावापृथिवी द्यु और पृथिवी
४८ विपाट्-शुतुद्री इस नामकी दो नदियाँ,
४९ आर्त्नी धनुष्यकी दोनों कोटियां, दो नोकें,
५० शुनासीरौ हल और हलसे खींची जानेवाली नाली, रेखा
५१ देवी जोष्ट्री सुख देनेवाली देवता
५२ देवी ऊर्जाहुती बल देनेवाली आहुति देवता,

अन्तरिक्षस्थानीय ६८ देवताएं

(निघण्टु ५।४)

१ वायुः वायु
२ वरुणः वरुण, जलदेव
३ रुद्रः गर्जना करनेवाला विद्युद्देव
४ इन्द्रः विद्युद्देव
५ पर्जन्यः मेघ, वृष्टी
६ बृहस्पतिः बडा पालक मेघ
७ ब्रह्मणस्पतिः ,, ,, ,,
८ क्षेत्रस्य पतिः खेतका पालक, ,,
९ वास्तोष्पतिः घरका पालक, ,,
१० वाचस्पतिः वाणीका रक्षक, ,,
११ अपां न पात् जलोंको न गिरानेवाला
१२ यमः वायु,

१३ मित्रः वायु, प्राणवायु, मेघ
१४ कः सुखदायी, वायु, मेघ, जल
१५ सरस्वान् बहनेवाला वायु, मेघ
१६ विश्वकर्मा सब कर्म करने करानेवाला, वायु,
१७ तार्क्ष्यः पक्षीके समान संचार करनेवाला वायु,
१८ मन्युः क्रोध, उत्साह बढानेवाला वायु, उत्साह,
१९ दधिक्रा वायु, मेघ
२० सविता प्रेरक वायु
२१ त्वष्टा सुखानेवाला, वायु,
२२ वातः वायु, गन्ध लानेवाला वायु,
२३ अग्निः विद्युत्का अग्नि
२४ वेनः प्रकाश, किरण समूह,
२५ असुनीतिः प्राणवायु,
२६ ऋतः जल, जलभरा मेघ,
२७ इन्दुः चन्द्रमा, सोम, पर्वतपर उगनेवाला सोम,
२८ प्रजापतिः पर्जन्य, वायु,
२९ अहिः मेघ, जो बढता रहता है वह मेघ,
३० अहिर्बुध्न्यः मेघ, सूक्ष्म भांपवाला मेघ.
३१ सुपर्णः किरण जिसपर पडे ऐसा मेघ
३२ पुरुरवा गर्जनेवाला मेघ

(निघण्टु ५।५)

३३ श्येनः पक्षी
३४ सोमः सोमवल्ली
३५ चन्द्रमाः चन्द्र
३६ मृत्युः मारनेवाला, काल,
३७ विश्वानरः विश्वका नेता, वायु
३८ धाता धारक वायु
३९ विधाता ,, ,,
४० मरुतः मरनेतक प्राणरूपसे कार्य करनेवाला वायु,
४१ रुद्राः प्राणवायु
४२ ऋभवः कारीगर, वायु
४३ अङ्गिरसः अंगोंमें कार्य करनेवाला रस, संचालक ज्ञान वायु
४४ पितरः पितर,
४५ अथर्वाणः स्थिरता रखनेवाला प्राण पितर
४६ भृगवः भृगु, प्राण
४७ आप्त्याः प्राप्तव्य, प्राण
४८ अदितिः उषा
४९ सरमा मेघगर्जना, वाणी
५० सरस्वती स्रोत, झरना
५१ वाक् वाणी, मेघगर्जना
५२ अनुमती चतुर्दशी युक्त पूर्णिमा, एक कला जिसमें कम है ऐसी पूर्णिमा
५३ राका पूर्णिमा, पूर्णचन्द्रमा युक्त
५४ सिनीवाली चतुर्दशी युक्त अमावास्या, इस दिन थोडासा चन्द्रमा दीखता है।
५५ कुहू जिस अमावास्यामें चन्द्रमा नहीं दीखता।
५६ यमी रात्री
५७ उर्वशी विद्युत, रात्री,
५८ पृथिवी विस्तृत रात्री
५९ इन्द्राणी विद्युत्प्रभा
६० गौरी बिजलीकी श्वेत रोशनी
६१ गौः जल देनेवाली मेघपंक्ति
६२ धेनुः ,, ,, ,,
६३ अघ्न्या ,, ,, ,,
६४ पथ्या अन्तरिक्ष, अवकाश, मार्ग देनेवाला अवकाश,
६५ स्वस्ति रहनेका उत्तम स्थान, कल्याण,
६६ उषाः उषः काल
६७ इळा जल वृष्टी, अन्न उत्पन्न करनेवाली वृष्टी
६८ रोदसी गर्जना करनेवाली विद्युत्

द्युस्थानीय ३१ देवताएँ

(निघण्टु ५।६)

१ अश्विनौ आधीरात्रीके पश्चात् आकाशमें उदय होनेवाले दो नक्षत्र
२ उषाः उषःकाल
३ सूर्य सूर्य, प्रभा
४ वृषाकपायी बलवान् जलशोषक सूर्य

५ सरण्यू त्वष्टृपत्नी, विद्युत्प्रभा
६ त्वष्टा त्वष्टा, विद्युत्, सूक्ष्म करनेवाला,
७ सविता उदयके पूर्वका सूर्य जिसका सूक्ष्म अंश क्षितिजपर दीख रहा है,
८ भग अर्धोदित सूर्य,
९ सूर्य पूर्णोदित सूर्य,
१० पूषा किरणोंसे पुष्ट हुआ एक प्रकारका सूर्य,
११ विष्णु सूर्य (पूर्ण प्रकाशित)
१२ विश्वानरः तीसरे प्रहरका सूर्य,
१३ वरुणः चतुर्थ प्रहरका सूर्य,
१४ केशी क्षितिजपर पहुंचा हुआ किरणोंवाला सूर्य,
१५ केशिनः अस्त होनेवाला किरणमात्रावशिष्ट सूर्य,
१६ वृषाकपिः अस्त हुआ सूर्य
१७ यमः अस्तंगत सूर्य,
१८ अजएकपात् जिसका एक ही किरण दीखता हो ऐसा सूर्य
१९ पृथिवी बडा व्यापक द्युलोक
२० समुद्र नीला आकाश, जो समुद्र जैसा दीखता है,
२१ दध्यङ् मेघाच्छादित आकाश जिससे किंचित् वृष्टी होती हो,
२२ अथर्वा शान्त आकाश, अचल सूर्य
२३ मनुः सूर्य (जिसकी ग्रहमाला एकरेषामें आगयी हो) जो मन्वंतर करता है
२४ आदित्याः सूर्य किरण
२५ सप्त ऋषयः सूर्यके सात किरण, सात नक्षत्र (सप्तर्षि)
२६ देवाः नक्षत्र, ग्रह, किरण,
२७ विश्वेदेवाः सब देव, किरण
२८ साध्याः सूर्यरश्मी, किरण
२९ वसवः ,, ,,
३० वाजिनः ,, ,,
३१ देवपत्न्यः देवोंकी दीप्तियाँ, शक्तियाँ

इस तरह पृथ्वी स्थानमें ५२+अन्तरिक्ष स्थानमें ६८+ और द्युस्थानमें ३१ मिलकर १५१ देवताएं निघण्टुमें गिनी हैं। इनमें कुछ पुनरुक्त हैं, परन्तु उनका अर्थ स्थानभेदसे पृथक् करके बोध लेना उचित है।

द्वादश आदित्य

इस स्थानपर निघण्टु ५।६ में दिये द्युस्थानीय देवताओंके नाम ३१ दिये हैं। इनमें बारह आदित्योंके नाम हैं।

त्वष्टा, सविता, भग, सूर्य, पूषा, विष्णु, विश्वानर, वरुण, केशी (केशिनः), वृषाकपि, यम, अज-एकपात् ।

ये द्वादश आदित्योंके नाम हैं। 'केशी' और 'केशिनः' ये दो नाम किरणोंकी न्यूनता और अधिकतासे हैं, इसलिये ये एककेही मानना योग्य है।

द्वादश आदित्य ये सूर्य उदयसे सूर्य अस्त होने तकके सूर्यके हैं, तथा सूर्यास्तके पश्चात् भी जो प्रकाश रहता है उसका इनमें अन्तर्भाव हुआ है, ऐसा इनके अर्थोंसे प्रतीत होता है।

शतपथ ब्राह्मणमें कहा है कि, द्वादश आदित्य वर्षके १२ महिने हैं। शतपथका यह अर्थ लेनेसे ये पद प्रतिदिनके सूर्यके मानना असंभव होता है। अतः यदि इन पदोंके ये अर्थ रखते हुए इनके साथ १२ महिनोंकी संगति लगानी है, तब तो हमें उत्तरीय ध्रुवके पासही जाकर वहां इन द्वादश आदित्योंका साक्षात्कार करना होगा। क्योंकि वहीं एक एक महिनेतक एक एक आदित्यकी स्थिति रहती है।

अर्थात् उषा एक महिना रहती है यह पाठक 'उषा देवता' की भूमिकामें देख सकते हैं, उसके पश्चात् सूर्यके कुछ किरण दीखनेकी दशा करीब एक मास तक रह सकती है। इसी तरह बारहों आदित्य प्रत्येक एक एक मास रहकर एक वर्षकी पूर्ति करते हैं। यह स्थिति भूमंडलपर किसी भी अन्य स्थानमें नहीं है। अतः यदि बारह आदित्य बारह महिनोंके दर्शक हैं, तब तो यह स्थिति उत्तरीय ध्रुवके समीपकी ही है। हमारे यहां ये बारह आदित्य एकही दिनमें अपना साक्षात् दर्शन देते हैं। हमारे एक दिनकी आदित्यकी बारह प्रकारकी अवस्थाएं उत्तरीय ध्रुवके पास ३६५ दिनोंमें दीखती हैं और प्रत्येक स्थितिके लिये करीब करीब एक मास लगता है।

यहां सूर्य उदयसे पुनः सूर्य उदयतक ये १२ आदित्य आते हैं। पर यहां इन आदित्योंका १२ महिनोंके साथ कोई संबंध नहीं है। 'यम' नाम उस आदित्यका है जिसमें आदित्यकी अस्तके बादकी स्थिति है। 'यम' पदका अर्थ 'युगल' है। अर्थात् यह स्थिति दो मास रहनी चाहिये क्योंकि 'यम' का अर्थ ही 'दो' है।

उत्तरीय ध्रुवके पास ही पूरे दो महिनोंकी बडी गहरी रात्री होती है जहां बिलकुल सूर्य दर्शन नहीं होता। वस्तुतः वहां छः मास सूर्य दर्शन नहीं होता, परन्तु उन छः महिनोंमें ये दो महिने ऐसे होते हैं कि जिसको गहरी निशा कह सकते हैं, शेष ४ महिनोंमें कुछ न कुछ प्रकाश रहता है अर्थात् यह प्रकाश सूर्यबिंब न दीखते हुए ही आता है।

'यम' पदकी सार्थकता वर्षके उन दो महिनोंके साथ है कि जिनमें सूर्य और प्रकाश बिलकुल नहीं होता। उषाके सूक्तोंमें बडी अंधेरी रात्रीका जो वर्णन दीखता है वह भी यहीं सार्थ होना संभव है।

इस विचारसे यह सिद्ध होता है कि जो शतपथने बारह आदित्योंके साथ बारह महिनोंका संबंध जोड दिया है वह उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशमें प्रतिवर्ष दीखनेवाली स्थिति है। समझ लीजिये कि सूर्य उदय हो रहा है, एक अंश, सूर्यका चौथा भाग क्षितिजपर आगया है तो वह चौथा भाग वैसा का वैसा ही क्षितिजपर एक मास तक दीखता रहेगा। इसका अर्थ बिलकुल उतना ही नहीं अपितु एक मासके बाद एक दो अंश ऊपर चढेगा। यह प्रतिदिन इतना थोडा ऊपर चढेगा कि प्रतिदिन उसके चढनेका पता तक नहीं लगेगा। यहां हमारे देशमें एक घण्टेका उषःकाल रहता है। एक घण्टेमें यहां उषःकाल समाप्त होता है और सूर्य ऊपर आने लगता है। उत्तरीय ध्रुवके पास यह उषःकाल एक मास तक रहता है। एक मास उषःकाल होनेके बाद सूर्यका उदय होता है। आगेकी सूर्यकी अवस्थायें भी इसी तरह एक एक मासमें बदलती जाती हैं।

इसीलिये सूर्यकी एक अवस्था एक मास रहनेके कारण एक एक आदित्यका नाम एक एक मासको दिया गया और बारह आदित्योंके बारह महिने माने गये।

यहां एक बात ध्यानमें रखनी चाहिये, वह यह कि जैसा हमारे देशमें मध्याह्नमें सूर्य आकाशके मध्यमें बिलकुल सिरपर आता है वैसा उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशमें कभी नहीं आता। अधिकसे अधिक सूर्यका ऊपर चढाना वहां उतना ही होता है जितना हमारे इस प्रदेशमें सवेरके नौ–दस बजे तक होता है। बस, यही सूर्यकी ऊपर चढनेकी परिसीमा है। यहां तक सूर्य चढ गया तो उसको 'विष्णु' नाम मिलता है। यह विष्णु एक मास तक रहता है। उसके पश्चात् वह नीचे उतरने लगता है। और एक एक मास तक उसको अन्यान्य नाम प्राप्त होते हैं।

इस तरह बारह महिनेके बारह सूर्य 'ठीक एक मास तक एक एक वही सूर्यकी स्थिति' रहनेसे उत्तरीय ध्रुवप्रदेशमें ही दीखते हैं। किसी अन्य स्थानमें सूर्य एक मास तक एक ही स्थितीमें रहता ही नहीं।

कई पुराणोंमें प्रतिमास सूर्यका न्यूनाधिक उन्नता मान मानकर बारह महिनोंके बारह सूर्य माने हैं। पर रात्रीमें सूर्य बिलकुल ही नहीं रहता, इस बातको वे भूल गये दीखते हैं। उत्तरीय ध्रुवमें रात्री और दिनका कोई भेद ही नहीं है, वहां तो पूरे एक मास तक एक प्रकारका सूर्य अपने इर्दगिर्द प्रदक्षिणा करता हुआ देखनेवालेको दीखता है। दूसरे मासमें उससे न्यून, वा अधिक प्रकाशवाला, इस तरह बारह महिने दीखता रहता है। 'यम' संज्ञक युगल महिने पूर्ण अंधेरेके हैं इसीलिये वे युगल कहलाते और वह सूर्य की ही एक स्थिति मानी गयी है।

दो महिने रात्रीके, उदयपूर्वकी उषाका एक मास और अस्तपूर्वके सायंसमयका एक मास, ऐसे चार महिने सूर्यदर्शन बिलकुल नहीं होता, शेष ८ महिने न्यून वा अधिक सूर्य दर्शन होता है इनमें भी २ मास कम शेष ६ मास सूर्य दर्शन होता है। इसीलिये अदितिके ८ पुत्र कहे हैं। जिन आठ महिनोंमें न्यूनाधिक सूर्य दर्शन या सूर्य प्रकाश होता है, वे ८ आदित्य हैं। बाकी 'मार्तण्ड' अर्थात् (मृत–अण्ड) जिनमें सूर्य रूप अण्डा मरा पडा रहता है अर्थात् दीखता नहीं।

यह सब ठीक ही उत्तरीय ध्रुवकी प्रत्यक्ष स्थिति है। पाठक इसका अधिक विचार करें।

वाजसनेयी संहिताके ३० वे तथा काण्वसंहिताके ३४ वे अध्यायमें नरमेधके १८४ अर्पण १७३ देवताओंके उद्देश्यसे हैं- (मंत्र ५) १ ब्रह्म, २ क्षत्र, ३ मरुत, ४ तपस्, ५ तमस्,

६ नारक, ७ पाप्मा, ८ आक्रया, ९ काम, १० अतिकृष्ट, ११ नृत्त, १२ गीत, १३ धर्म, १४ नरिष्टा, १५ नर्म, १६ हस, १७ आनंद, १८ प्रमद, १९ मेधा, २० धैर्य, २१ तपस् २२ माया, २३ रूप, २४ शुभ, २५ शरण्या, २६ हेति, २७ कर्म, २८ दिष्ट, २९ मृत्यु, ३० अन्तक, ३१ नदी, ३२ ऋक्षीका, ३३ पुरुषव्याघ्र, ३४ गंधर्व–अप्सरस्, ३५ प्रयुज्, ३६ सर्प–देव–जन, ३७ अय, ३८ ईर्यता, ३९ पिशाच, ४० यातुधान, ४१ संधि, ४२ गेह, ४३ आर्ती, ४४ निर्ऋति, ४५ आराधि, ४६ निष्कृति, ४७ संज्ञान, ४८ प्रकामोद्य, ४९ वर्ण, ५० बल, ५१ उत्साद, ५२ प्रमुद्, ५३ द्वार, ५४ स्वप्न, ५५ अधर्म, ५६ पवित्र, ५७ प्रज्ञान, ५८ आशिक्षा, ५९ उपशिक्षा, ६० मर्यादा, ६१ अर्म, ६२ जव ६३ पुष्टि, ६४ वीर्य, ६५ तेजस्, ६६ हरा, ६७ कीलाल, ६८ भद्र, ६९ श्रेयस् ७० आध्यक्ष, ७१ भा, ७२ प्रभा, ७३ ब्रह्मस्य विष्टपं, ७४ वर्षिष्ठं नाकं, ७५ देवलोक, ७६ मनुष्यलोक, ७७ सर्वलोक, ७८ अवऋतिवध, ७९ मेध, ८० प्रकाम, ८१ ऋश्वि, ८२ वैरहत्य, ८३ विविक्ति, ८४ औपद्रष्टय, ८५ बल, ८६ भूमन्, ८७ प्रिय, ८८ अरिष्टि, ८९ स्वर्ग, ९० वर्षिष्ठ नाक, ९१ मन्यु, ९२ क्रोध, ९३ योग, ९४ शोक, ९५ क्षेम, ९६ उत्कूल-निकूल, ९७ वपु, ९८ शील, ९९ निर्ऋति, १०० यम, १०१ यम, १०२ अथर्वा, १०३ संवत्सर, १०४ परिवत्सर, १०५ इदावत्सर, १०६ इद्वत्सर, १०७ वत्सर, १०८ संवत्सर, १०९ ऋभु, ११० साध्य, १११ सरस्, ११२ उपस्थावरा, ११३ वैशन्ता, ११४ नड्वला, ११५ पार, ११६ अवार, ११७ तीर्थ, ११८ विषम, ११९ स्वन, १२० गुहा, १२१ सानु, १२२ पर्वत, १२३ बीभत्सा, १२४ वर्ण, १२५ तुला, १२६ पश्चादोष, १२७ विश्व भूत, १२८ भूति, १२९ अभूति, १३० आर्ति, १३१ वृद्धि, १३२ संशर, १३३ अक्षराज, १३४ कृत, १३५ त्रेता, १३६ द्वापर, १३७ आस्कंद, १३८ मृत्यु, १३९ अन्तक, १४० क्षुध, १४१ दुष्कृत, १४२ पाप्मा, १४३ प्रतिश्रुत्क, १४४ घोष, १४५ अन्त, १४६ अनंत, १४७ शब्द, १४८ महस्, १४९ क्रोश, १५० अवस्वर, १५१ वन, १५२ अन्यतोऽरण्य, १५३ नर्म, १५४ हास्य, १५५ वादस्, १५६ महस्, १५७ महस्, १५८ महस्, १५९–१६१ नृत्त, १६२ आक्रन्द, १६३ अग्नि, १६४ पृथिवी, १६५ वायु, १६६ अन्तरिक्ष, १६७ द्युलोक, १६८ सूर्य, १६९ नक्षत्र, १७० चन्द्रमाः, १७१ अहः, १७२ रात्री, १७३ प्रजापति।

यद्यपि ये १७३ देवताएं यहां हैं, तथापि इनमें कई पुनरुक्त हैं, अतः उनको पृथक् करनेसे १६० के करीब ये देवतायें होती हैं। इनमें अन्तिम कुछ थोडी अन्य अन्तरिक्ष आदि स्थानकी हैं, शेष सब पृथ्वीपरकी ही हैं। कुछ काल वाचक हैं, कुछ गुणवाचक हैं, कुछ स्थानवाचक हैं।

वा० यजुर्वेदमें अनेक अध्यायोंमें अनेक देवताओंका उल्लेख है, उनमें अध्याय १८;२२;२४;२५;२९ और ३९ में अनेक देवताएं हैं, पर इनमें बहुतसी देवताएं पूर्वस्थानमें दी हैं। इन सब देवताओंका यहां पुनः पुनः निर्देश करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

निघण्टुमें कही देवताएं अनेक हैं, उनमें पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युस्थानमें जो ग्यारह ग्यारह देवताएं हैं, वे स्थूल अक्षरोंमें मुद्रित की हैं। तथापि उनमें मतभेदके लिये बडा स्थान है, अतः यहां तक यह ३३ देवताओंका प्रश्न अनिर्णितसा ही आजतक रहा है ऐसा हम यहां कह सकते हैं।

जो तो ८ वसु ११ रुद्र व १२ आदित्य मिलकर ३१ और इन्द्र और प्रजापति मिलकर ३३ देव शतपथानुसार मानते हैं, वे पृथ्वीपर ११, अन्तरिक्षमें ११ और द्युलोकमें ११ बता नहीं सकते। उन के मत से अन्तरिक्ष में ११ प्राण माने जायेंगे तो और बारहवां इन्द्र वहां आकर बैठता है और द्युलोक में उन के मत से १२ आदित्य मानते पडते हैं और वसु तो केवल आठ ही पृथ्वी पर रह जाते हैं, पर वे भी पृथ्वीपर नहीं हैं, जो वे ८ गिनते हैं। इस तरह इस गिनतीमें तीन स्थानोंमें ग्यारहकी व्यवस्था नहीं होती। अतः जो मन्त्र तीन स्थानोंमें ग्यारह ग्यारह देवताएं हैं, ऐसा कहते हैं, उनकी गिनती कुछ और ही होगी और शतपथ की कुछ और ही है।

हमारे मतसे पृथ्वीपर ११, अन्तरिक्षमें ११ और द्युस्थानमें ११ यह जो गणना वेद मन्त्रोंमें दीखती है वह

गणना अभीतक किसी भी वैदिक ग्रंथमें स्पष्टतया नहीं बतायी है। उसकी खोज करनी चाहिये। हमने इस विषयमें बहुतही खोज की, पर अभीतक उसकी व्यवस्था ठीक तरह समझमें नहीं आयी। अर्थात् यह खोज अधूरीहि रही है। जो सुविज्ञ पाठक वेदकी खोज करते हैं, वे इन ३३ देवताओंके ग्यारह ग्यारह विभागोंकी खोज करें और उनको तीनों विभागोंमें यथास्थान निश्चित करके बतावें। इसी तरह इन तैंतीस देवताओंमें ये सब तीन चार सौ दैवताएं किस तरह अन्तर्भूत होती हैं अर्थात् किस एक मुख्य देवताके साथ कितनी देवताएं माननी चाहिये, इसका भी निश्चय होना-चाहिये।

यहां एक कठिनता भी है। पूर्वोक्त निघण्टुकी देवताओंमें पृथ्वी देवता पृथ्वी-अन्तरिक्ष-द्यु इन तीनों स्थानोंमें लिखी है। अर्थात् पृथ्वीस्थानको छोडकर अन्य दोनों स्थानोंमें इसका अर्थ 'विस्तृत स्थान' इतनाही है। इस तरह पुनरुक्त देवता नामोंका निश्चय होना संभव है। वा० यजु० अ. ३० में भी कई देवता नाम पुनरुक्त हैं। संभवतः उन का भी ऐसाही निर्णय होगा।

यजुर्वेदके कुछ देवता

अब हम यहां यजुर्वेदके कुछ देवताओंके नाम देते हैं- (अ. ९।२०) आपिः (प्राप्त करनेवाला), स्वापिः (उत्तम रीतिसे प्राप्त करनेवाला), अपिजः (पुनः पुनः उत्पन्न होनेवाला), क्रतुः (यज्ञ), वसुः (निवास हेतु), अहर्पतिः (दिनका स्वामी), मुग्धः (मोह उत्पन्न करनेवाला), मुग्धः वैनंशिनः (मुग्ध होकर नाशको प्राप्त होनेवाला), विनंशिन आन्त्याय (अन्त्य स्थानमें रहनेवाला विनाशकर्ता), अन्त्यः भौवनः (अन्तिम भुवनमें रहनेवाला), भुवनस्पतिः (भुवनोंका पति), अधिपतिः (मुख्य स्वामी)। ये १२ देवताएं वा. य. अ. ९ में हैं।

(अ. २२) बाईसवें अध्यायमें निम्नलिखित देवताएं हैं- (इसमें अग्न्यादि प्रसिद्ध देवताओंको छोडा है इतना पाठक स्मरण रखें)- अपां मोद, हिंकार, हिंकृत, क्रन्दत्, अवक्रन्द, प्रोथत्, प्रप्रोथ, गन्ध, घ्रात, निविष्ट, उपविष्ट, सन्दित, वल्गत्, आसीन, शयान, स्वपत्, जाग्रत्, कूजत्, प्रबुद्ध, विजृम्भमाण, विचृत, संहान, उपस्थित, आयन, प्रायण। (अ. २२।७)

यहां आसीन (बैठनेवाला) शयान (सोनेवाला) इत्यादि पद प्राणियोंकी अवस्थाओंके वाचक हैं, और ये यहाँ देवता वाचक पद हैं यह ध्यानमें रखना योग्य है।

इसी तरह अगली कण्डिकामें निम्नलिखित देवताओंके नाम हैं- यत्, धावत्, उद्द्राव, उद्द्रुत, शूकार, शूकृत, विषण्ण, उत्थित, जव, बल, विवर्तमान, विवृत्त, विधून्वान, विधूत, शुश्रूषमाण, शृण्वत्, ईक्षमाण, ईक्षित, वीक्षित, निमेष, (अत्ति सः) खानेवाला, (पिबति सः) पीनेवाला, (मूत्रं करोति सः) मूत्र करनेवाला, (कुर्वत्) करनेवाला, कृत। (२२।८)

ये नाम प्राणियोंकी अवस्थाओंके हैं। ये इस अध्यायमें घोडेकी अवस्थाएं करके वर्णन किया है। परन्तु सब प्राणियोंके लिये ये पद लग सकते हैं। ये सब पृथ्वीस्थानीय देवता हैं।

इस तरहकी अन्य देवतायें पाठक इस विभागमें देख सकते हैं।

निघण्टुमें गिनाये देवताओंका उपयोग मंत्रोंमें देखकर भी उनका निर्णय हो सकता है। वह कार्य जिस समय इन मंत्रोंका अर्थ हम करेंगे, उस समय होना संभव है। इस छोटीसी भूमिकामें वह नहीं हो सकता।

निवेदन कर्ता

औंध जि. सातारा
१।८।१९४४

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
अध्यक्ष स्वाध्यायमण्डल

देवतासम्बन्धी विचार

[लेखक- पं० ऋभुदेव शर्मा 'साहित्याऽऽयुर्वेदभूषण' 'शास्त्राचार्य,' भूतपूर्व आचार्य येवशी- श्रीश्यामार्यगुरुकुल, औंध]

देव कितने हैं ? वे जड़ हैं या चेतन ? कहाँ रहते और क्या करते हैं ? इत्यादि प्रश्न वेद-स्वाध्यायी के समक्ष उपस्थित होते और समाधान न होनेपर उस विचारकको श्रम करते हैं ।

वेद के देवता-सम्बन्धी निर्णय के लिये ही निरुक्त के दैवत-काण्ड की सृष्टि हुई है और निरुक्त-निर्माण के अन्य प्रयोजनों के साथ देवता-विनिर्णय भी एक प्रयोजन कहा गया है । यथा—

(१) 'अथाऽपि याज्ञे दैवतेन बहवः प्रदेशा भवन्ति । तदेतेनोपेक्षितव्यम् ॥' (निरु० १।६।१७)

और याज्ञ कर्म में देवता सम्बन्धी बहुत से भाग होते हैं वे इस निरुक्तशास्त्र से ही जानने योग्य हैं ।

यज्ञ-प्रकरण में अनेक देव प्रस्तुत होते हैं उनका सम्यक् ज्ञान निरुक्त-शास्त्र से ही होता है ।

'ते चेद्ब्रूयुर्लिङ्गशा अत्रस्म इति ।' निरु० १।६।१७

यदि देवता-ज्ञान के अभिमानी यह कहें कि लिङ्गसे देवता का बोध होता है और हम उन लिङ्गों (चिह्नों, संकेतों) को जानते हैं, फिर निरुक्त की क्या आवश्यकता? तो वे सुनें—

इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्तीति वायुलिङ्गं चेन्द्रलिङ्गं चाग्नेये मन्त्रे ॥ निरु० १।६।१७

'इन्द्रं न त्वा' इस अग्निदेवताक मंत्र में वायु और इन्द्र का भी लिङ्ग पाया जाता है ।

अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्वेति तथाऽग्निर्मान्यवे मन्त्रे ॥ निरु० (१।६।१७)

'अग्निरिव मन्यो' इस मन्यु-देवताक मंत्र में अग्नि का लिङ्ग पाया जाता है । अतः केवल लिङ्ग-ज्ञान दैवत-ज्ञान का परम साधन नहीं, निरुक्त-ज्ञान की भी आवश्यकता है ।

(२) नैघण्टुकमिदं देवता-नाम, प्राधान्येनेदमिति ॥ (निरु० १।६।२०)

निघण्टु में देवता-नाम दो प्रकार के हैं, नैघण्टुक और प्राधान्य ।

तद्यदन्यदैवते मन्त्रे निपतति, नैघण्टुकं तत् ॥ (निरु० १।६।२०)

जो नाम अन्यदेवताक मन्त्र में आ पड़ता है वह नैघण्टुक कहलाता है ।

तद्यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां, तद् दैवतमित्याचक्षते । तदुपरिष्टाद् व्याख्यास्यामो नैघण्टुकानि नैगमानीह । (निरु० १।६।२०)

और जो नाम प्राधान्य-स्तुतिवाले देवताओं के हैं उनका नाम दैवत है । उनको हम आगे कहेंगे । यहाँ नैघण्टुक और नैगम नाम कहते हैं, उनकी व्याख्या करते हैं ।

उपर्युक्त समग्र वाक्यों से यह प्रतीत होता है कि निघण्टुशास्त्र में जितने नाम पढ़े गये हैं वे मुख्यतः देवता-नाम हैं । तथा निघण्टु और निरुक्त हमें देवता निर्णय सम्बन्ध में कुछ न कुछ बता सकते हैं ।

देवता-ज्ञान दुरूह है । इस विषय में निरुक्तकार यास्क कहते हैं—

शाकपूणिः संकल्पयाञ्चक्रे, सर्वा देवता जानामीति । तस्मै देवतोभयलिङ्गा प्रादुर्बभूव । तां न जज्ञे । तां पप्रच्छ, विविदिषाणि त्वेति ॥ (निरु० २।२।८)

शाकपूणि आचार्य के मन में अहंकार उत्पन्न हुआ और उन्होंने विचारा कि मैं सब देवताएँ जानता हूँ । उनके आगे एक उभय-लिङ्ग देवता आ खड़ी हुई । उसको वे नहीं जान सके । उन्हों ने उसे पूछा 'मैं तुझे जानना चाहता हूँ ।'

हमें वेद की देवताओं का विचार करना है क्योंकि वे ही संसार में कार्य कर रही हैं परन्तु वे शाकपूणि-जैसे नैरुक्ताचार्य के लिये भी दुर्ज्ञेय हैं।

यास्क महर्षि ने देवता-सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है, उस का सार यह है- (निरुक्त। दैवत-काण्ड)

अथातो दैवतम्। तद् यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां तद् दैवतमित्याचक्षते ॥

अब यहाँ से आगे दैवत प्रकरण चलेगा। जो नाम प्राधान्य स्तुतिवाली देवताओं के हैं उन्हीं का एक नाम दैवत है। ऐसा आचार्य लोग कहते हैं। मंत्रों की देवताएँ प्रधान और अप्रधान दो प्रकार की हैं। और वे प्रधान और अप्रधानरूपसे एक मंत्र में भी स्तुत होती हैं।

सैषा देवतोपपरीक्षा। यत्काम ऋषिर्यस्यां देवतायामार्थपत्यमिच्छन् स्तुतिं प्रयुङ्क्ते, तद्दैवतः स मन्त्रो भवति।

यह यह देवता-सम्बन्धी विचार किया जाता है। जिस देवता की कामना से प्रेरित होकर ऋषि (स्तोता) जिस देवता में अपनी अर्थ-सिद्धि चाहता हुआ स्तुति का प्रयोग करता है उस देवतावाला वह मन्त्र होता है।

तात्पर्य यह कि, स्तोता जिस देवता की स्तुति करता है, स्तुतिवाले मंत्र (वाक्य) की यही देवता होती है। मंत्रों के विषय देवता कहलाते हैं अतः देवता-भेद से-

तास्त्रिविधा ऋचः। परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृताः, आध्यात्मिकयश्च।

वे तीन प्रकार की ऋक् हैं। परोक्षकृता, प्रत्यक्षकृता और आध्यात्मिकी।

तत्र परोक्षकृताः सर्वाभिर्नामविभक्तिभिर्युज्यन्ते प्रथमपुरुषैश्चाख्यातस्य ॥१॥ 'इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्याः' (ऋ० १०।८९।१०), 'इन्द्रमिद् गाथिनो बृहत्' (ऋ० १।७।१)।

परोक्ष रूप से की हुई स्तुतियें, जिन में आराध्य देव सम्मुख नहीं होता, नाम की समग्र विभक्तियों से युक्त और प्रथम पुरुष की क्रिया में होती हैं। जैसे 'इन्द्र ही दिव् और इन्द्र ही पृथिवी का शासक है,' 'हे गायको! इन्द्र को ही बृहत् साम गाओ' इत्यादि।

अथ प्रत्यक्षकृता मध्यमपुरुषयोगास्त्वमिति चैतेन सर्वनाम्ना। 'त्वमिन्द्र! बलादधि' (ऋ० १०।१५३।२), 'वि न इन्द्र! मृधो जहि' (ऋ० १०।१५२।४)

प्रत्यक्षकृता स्तुतियें मध्यमपुरुष में होती हैं और त्वं, यूयम् आदि सर्वनाम से युक्त। जैसे- 'हे इन्द्र! तू बल से उत्पन्न हुआ है,' 'हे इन्द्र! तू हमारे शत्रुओं को मार दे' इत्यादि

अथापि प्रत्यक्षकृताः स्तोतारो भवन्ति, परोक्षकृतानि स्तोतव्यानि ॥ 'मा चिदन्यद् वि शंसत'। (ऋ० ८।१।१)

परन्तु कहीं कहीं प्रत्यक्षरूप में स्तोता स्तुत होते हैं और स्तोतव्य परोक्ष में आ जाते हैं। जैसे 'हे सखा लोगो! इन्द्र से भिन्न की प्रशंसा मत करो।'

तात्पर्य यह कि कहीं आप सर्वत्र प्रत्यक्षकृता ऋक् को देवता ही न समझ लें, वे स्तोताओं के लिये भी प्रयुक्त होती हैं।

आध्यात्मिकयश्च उत्तमपुरुषयोगाः। अहमिति चैतेन सर्वनाम्ना। यथैतदिन्द्रो वैकुण्ठी, लवसूक्तं, वागाम्भृणीयमिति।

आध्यात्मिकी स्तुतियें उत्तमपुरुष में और अहं (मैं) इस सर्वनाम से युक्त। इन के उदाहरण-इन्द्र वैकुण्ठ, लव और वागाम्भृणीय सूक्त हैं।

निरुक्तकार ने मन्त्रों का वर्गीकरण कर के वेद-वर्णित देवताओं का ज्ञान सरल बना दिया है।

अपि ह्यदेवता देवतावत्स्तूयन्ते, यथाश्वप्रभृतीन्योषधिपर्यन्तानि ॥ ४ ।

और अदेवताएं भी देवता-सदृश स्तुति प्राप्त करती हैं। जैसे-घोडे से लेकर ओषधि-पर्यन्त पदार्थ।

अतः देवताविषयक विचार करने में, स्तुति के कारण, इन्हें देवता नहीं मान लेना चाहिये।

माहाभाग्याद् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते।

कहीं कहीं ऐश्वर्याधिक्य के कारण एक ही देवता बहुत नाम और कार्य से स्तुति प्राप्त करती है। अर्थात् एक होने पर भी अनेक नाम और अनेक कार्य उस के बताये जाते हैं वास्तव में उस का आत्मा (शरीर) अनेक नहीं

होता। ऐसे स्थलों पर नाम और कार्य भिन्न होने से उन्हें अनेक देवता नहीं मान लेना चाहिये।

एकस्याऽऽत्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति।

कहीं-कहीं एक शरीरवाली देवता के अनेक देव प्रत्यङ्ग बन कर आते हैं। अर्थात् भिन्न होने पर भी शरीर के अङ्ग-समान वर्णित होते हैं।

ऐसे स्थलों पर एकत्ववाद से देवों के अनेकत्व में बाधा नहीं पड़ती।

तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः। अग्निः पृथिवीस्थानो, वायुर्वेन्द्रो वा अन्तरिक्षस्थानः सूर्यो द्युस्थानः॥

तीन ही देवताएँ हैं ऐसा निरुक्त-मतानुयायी मानते हैं। अग्नि पृथिवीस्थान में, वायु वा इन्द्र अन्तरिक्ष स्थान में, सूर्य द्यु-स्थान में।

तासां महाभाग्याद् एकैकस्या अपि बहूनि नामधेयानि भवन्ति। अपि वा कर्म-पृथक्त्वात्। यथा-होताऽध्वर्युर्ब्रह्मोद्गाता- इत्यपि एकस्य सतः।

उन तीनों के ऐश्वर्य के कारण, एक एक देवता के बहुत नाम होते हैं। अथवा कर्मवैभिन्न्य से अनेक नाम पड़ते हैं जैसे एक होने पर भी कार्यभेद से वही मनुष्य कभी होता, कभी अध्वर्यु और कभी ब्रह्मा या उद्गाता भी कहलाता है।

अथाकारचिन्तनं देवतानाम्।

अब देवताओं के आकार का विचार करेंगे, वे मनुष्य-सदृश हैं अथवा मनुष्य से भिन्न आकारवाली?

पुरुष-विधाः स्युरित्येकम्। चेतनावद् हि स्तुतयो भवन्ति, तथाऽभिधानानि।

मनुष्य-सदृश शरीर और ज्ञानवाली हैं ऐसा एक मत है। क्योंकि उन की स्तुतियाँ चेतन प्राणियों के समान हैं और नाम भी।

अर्थात् चेतनके जैसे गुण-कर्म होते हैं वैसे इन देवताओं के भी हैं अतः ये भी मनुष्य-सदृश देहवाली हैं।

अपुरुष-विधाः स्युरित्यपरम्। अपि तु यद् दृश्यते। अपुरुषविधं तत्। तद्यथा-अग्निर्वायुरादित्यः पृथिवी चन्द्रमा इति।

'पुरुष-भिन्न आकारवाली हैं' ऐसा दूसरा मत है। क्योंकि यह जो कुछ दीखता है वह पुरुष (मनुष्य) से भिन्न आकृतिवाला है। जैसे अग्नि, वायु, आदित्य (सूर्य) पृथिवी और चन्द्रमा।

अपि वा उभय-विधाः स्युः। अपि वा पुरुष-विधानामेव सतां कर्मात्मान एते स्युः। यथा यज्ञो यजमानस्य।

अथवा दोनों प्रकार की हैं। अथवा पुरुष-सदृश मानें तो दूसरी अचेतन देवताओं को चेतन देवताओं का कर्म मान लेंगे। जैसे यज्ञ भी देवता और यजमान भी देवता हों तो यज्ञ यजमान का कर्म माना जाता है। इस प्रकार मानने में कोई दोष उपस्थित नहीं होगा।

तिस्र एव देवता इत्युक्तं पुरस्तात्। तासां भक्तिसाहचर्यं व्याख्यास्यामः।

तीन ही देवता हैं ऐसा पहले कह चुके हैं। उन के भक्ति और साहचर्य कहेंगे।

अथैतान्यग्निभक्तीनि। अयं लोकः, प्रातःसवनं, वसन्तो, गायत्री, त्रिवृत्-स्तोमो, रथन्तरं साम। ये च देवगणाः समाम्नाताः प्रथमे स्थाने। अग्नायी-पृथिवी-इला इति स्त्रियः। अथाऽस्य कर्म, वहनं च हविषां, आवाहनं च देवतानां, यच्च किंचिद् दार्ष्टं विषयिकं आग्नेयकर्मैव तत्। अथास्य संस्तविका देवा इन्द्रः, सोमो, वरुणः, पर्जन्यः, ऋतवः।

अब अग्नि के भक्तिनाम कहते हैं। पृथिवी ही इसका लोक, प्रातःसवन ही सवन, वसन्त ही ऋतु, गायत्री ही छन्द, त्रिवृत् ही स्तोम, रथन्तर ही इसका साम है। पृथिवी स्थान में पठित देवगण ही इस के साथी हैं। अग्नायी, पृथिवी और इडा ये ही स्त्रियां। हविःका वहन, देवताओं का आवाहन और जो कुछ दृष्टि में आता है वह सब अग्नि का कर्म। और इन्द्र, सोम, वरुण, पर्जन्य और ऋतु ये इस के साथ स्तोतव्य (स्तुति-भागी) देव हैं।

अथैतानीन्द्रभक्तीनि। अन्तरिक्षलोको, माध्यन्दिनं सवनं, त्रैष्टुभस्त्रिष्टुप्, पञ्चदश स्तोमो, बृहत् साम। ये च देवगणाः समाम्नाता मध्यमे स्थाने। याश्च स्त्रियः। अथास्य कर्म, रसाऽनुप्रदानं, वृत्रवधः, या च का च बलकृतिरिन्द्रकर्मैव तत्। अथाऽस्य संस्तविका देवाः। अग्निः, सोमो, वरुणः, पूषा, बृहस्पतिर्ब्रह्मणस्पतिः-पर्वतः, कुत्सो-विष्णुर्वायुः।

ये इन्द्रभक्ति नाम हैं जो इन्द्र के साथ पढे जाते हैं। अन्तरिक्ष ही लोक, माध्यन्दिन ही सवन, ग्रीष्म ऋतु, त्रिष्टुप् छन्दः, पञ्चदश स्तोम, बृहत् ही साम। मध्यम स्थान में पठित देवगण ही साथी। मध्यम स्थान में पठित स्त्रियाँ ही इस की स्त्रियां। रस का देना, वृत्र का वध और जो कुछ बल का काम है वह इन्द्र का कर्म। और अग्नि, सोम, वरुण, पूषा, बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति, पर्वत, कुरस, विष्णु और वायु ये देव इन्द्र के साथ स्तुति प्राप्त करनेवाले हैं।

अथैतान्यादित्यभक्तीनि। असौ लोकः, तृतीयसवनं, वर्षा, जगती, सप्तदशः स्तोमो, वैरूपं साम। ये च देवगणाः समाम्नाता उत्तमे स्थाने। याश्च स्त्रियः। अथाऽस्य कर्म, रसाऽऽदानं, रश्मिभिश्च रसधारणं, यच्च किंचित् प्रवहितं-आदित्यकर्मैव तत्। चन्द्रमसा, वायुना, संवत्सरेण- इति संस्तवः।

ये आदित्यसम्बन्धी नाम हैं। द्यौ लोक, तृतीय-सवन ही सवन, वर्षा ऋतु, जगती छन्दः, सप्तदश स्तोम, वैरूप साम। द्यु-स्थानी देवगण साथी और वहाँ पढी गई स्त्रियां स्त्रियां हैं। रसका आकर्षण करना, किरणोंसे रसका धारण तथा जो कुछ गुप्त (अक्षथित) कर्म है वह इसका कर्म है। चन्द्रमा वायु और संवत्सर के साथ इसका स्तवन होता है। एतेष्वेव स्थानव्यूहेषु- ऋतुच्छन्दःस्तोम-पृष्ठस्य भक्तिशेषमनुकल्पयीत।

इन तीन स्थानों में ही ऋतु, छन्दः, स्तोम और पृष्ठ (साम) की शेष कल्पनाएँ कर लेनी चाहियें।

यास्क महर्षिने तीन स्थानोंके तीन व्यूह बनायें हैं और वे समग्र देवता, छन्द, ऋतु आदि को उन्हीं में बांट देना चाहते हैं। यह क्रम उन का अपना नहीं, वेद से लिया हुआ है। प्रमाण के लिए दो एक मन्त्र उद्धृत करता हूँ।

(१) वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वद्० रुद्रास्त्वा कृण्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसा ... आदित्यास्त्वा कृण्वन्तु जागतेन छन्दसा ... ॥ यजु० ११।५८॥

इस मंत्रमें वसु रुद्र और आदित्योंके साथ गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती का सम्बन्ध स्पष्ट है। ये देवगण क्रम से पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ-लोक के हैं, अतः इन लोकों के साथ भी इन छन्दों का सम्बन्ध है।

अग्नेर्भागोऽसि, दीक्षाया आधिपत्यं, ब्रह्म स्पृतं, त्रिवृत् स्तोम इन्द्रस्य भागोऽसि, विष्णोराधिपत्यं क्षत्रं स्पृतं पञ्चदशः स्तोमो, नृचक्षसां भागोऽसि, धातुराधिपत्यं, जनित्रं स्पृतं, सप्तदशः स्तोमो०००॥ यजु० १४।२४

यहां अग्नि, इन्द्र और नृचक्षस् (आदित्यों) के साथ त्रिवृत्, पञ्चदश और सप्तदश स्तोमों का सम्बन्ध स्पष्ट है। प्रथम मंत्र में वसु का अर्थ अग्नि, रुद्र का अर्थ इन्द्र और आदित्य का अर्थ सूर्य लें तो दोनों मंत्र निरुक्त के तीन व्यूहों को बहुत कुछ प्रमाणित कर देते हैं। इसी प्रकार ऋतु और पृष्ठसम्बन्धी मंत्र भी बहुत हैं जो प्रयोजन न होने से यहां नहीं लिखे जाते।

अन्त में दैवत-काण्ड की भूमिका का उपसंहार करते हुए ऋषि लिखते हैं--

इतीमा देवता अनुकान्ताः॥ (निरु० ७।३।१३)

इस प्रकार ये देवताएँ कह दी गईं।

निरुक्तकार ने सम्पूर्ण देवताओं की व्याख्या अपने ढंग से की है। उन्हों ने सारे देवों को तीन स्थानों में बाँट दिया है यथा-

अग्निः पृथिवीस्थानः। तं प्रथमं व्याख्यास्यामः। (नि० ७।४)

अग्नि पृथिवी-स्थानी देव है, उसकी प्रथम व्याख्या करेंगे। परन्तु वेद में अग्नि शब्द केवल पृथिवीस्थ अग्नि का ही वाचक नहीं, अतः उन्हें कहना पडा।

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति। अप्येते उत्तरे ज्योतिषी अग्नी उच्येते। निरु० ७।४

कोई ऐसा न मान ले कि यह पृथिवीस्थ अग्नि ही अग्नि है मध्यम और उत्तमस्थान वाले देव भी अग्नि कहलाते हैं।

अन्त में कहा-

यस्तु सूक्तं भजते, यस्मै हविर्निरुप्यतेऽयमेव सोऽग्निः। निपातमेवैते उत्तरे ज्योतिषी अनेन नामधेयेन भजेते॥ (निरु० ७।४)

जो अग्नि सूक्त का सेवन करता, जिसके निमित्त हवि दिया जाता है वह यही पृथिवीस्थ अग्नि है। अन्तरिक्ष और द्युलोकस्थ ज्योतियाँ गौणरूप से अग्नि नाम धारण करती हैं।

अग्नि का दूसरा नाम जातवेदाः है। उस के विषय में भी ऐसा ही कहते हैं—

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति। अप्येते उत्तरे ज्योतिषी जातवेदसौ उच्येते।...यस्तु सूक्तं भजते यस्मै हविर्निरुप्यते ऽयमेव सोऽग्निर्जातवेदाः। निपातमेवैते उत्तरे ज्योतिषी एतेन नामधेयेन भजेते॥ (निरु० ७।५)

अर्थात् अन्तरिक्षस्थ और द्युलोकस्थ देव भी जातवेदाः हैं, परन्तु मुख्यतया जातवेदाः यह अग्नि ही है।

वैश्वानर, द्रविणोदा आदि नामों पर भी यास्क ऋषि का ऐसा ही मत है। यास्क के मत से जातवेदाः वैश्वानर आदि नामवाले भिन्न देव नहीं हैं, पृथिवी पर इस अग्नि के ही ये नाम हैं, इन को भिन्न-भिन्न देव नहीं मानना चाहिये। अग्नि और पृथिवी से सम्बद्ध नामों की व्याख्या करके मध्यम स्थान की ओर चलते हैं-

अथ मध्यस्थाना देवताः। तासां वायुः प्रथमगामी भवति। (निरु० १०।१)

अब मध्यस्थानी देवों की व्याख्या करते हैं। उन में वायु प्रथम है।

इस प्रकरण के देखने से पता चलता है कि इन्द्र मित्र वरुण रुद्रादि नाम वायु के ही हैं। मरुत्, रुद्र, ऋभु, पितर आदि गणनाम वायु-समूह के प्रतीत होते हैं। अदिति, सरमा, सरस्वती, इन्द्राणी आदि स्त्रियों के नाम मध्यस्थान में होनेवाली वाणी है। उषा आदि प्रत्यक्ष स्त्रीवाचक नामों को छोड कर शेष नाम उस वाणी गर्जना) के ही हैं।

मध्यस्थान के पश्चात् महर्षि द्युस्थान की ओर बढते हैं-

अथातो द्युस्थाना देवताः। तासामश्विनौ प्रथमाऽऽगामिनौ भवतः॥ (निरु० १२।१)

अब हम द्यु-स्थानी देवताओं का वर्णन करेंगे। उनमें अश्विनौ प्रथम श्रेणी में आनेवाले हैं।

ये अश्विनौ कौन हैं? यह प्रश्न जगत् के सम्मुख आज भी जटिल है। यास्क के मत में मध्यम और उत्तम दोनों स्थानों के देव मिलकर जिन में उत्तम स्थान के देव आदित्य की प्रधानता रहती है, अश्विनौ कहलाते हैं।

तयोः काल ऊर्ध्वमर्धरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टम्भम् अनुत्तमो भागो हि मध्यमः। ज्योतिर्भाग आदित्यः। (निरु० १२।१)

उन का समय आधी रात के पश्चात् प्रकाश के प्रवेश होनेपर आरम्भ होता है। उसका अन्धकारयुक्त भाग मध्यम देव और प्रकाशमय भाग आदित्य है।

वायु और आदित्य अश्विनौ हैं। वास्तव में आधी रात के पश्चात् सूर्य प्राची दिक् में अपनी आभा दर्शाने लगता है। सूर्य उस अवस्था में अश्विनौ नाम से प्रसिद्ध होता है।

सविता, भग, सूर्य, विष्णु आदि नाम उस आदित्य (सूर्य) के ही हैं। ये नाम काल और कार्य के भेद से पडे हैं। उषाः, सूर्या, वृषाकपायी, सरण्यू नाम आदित्य के प्रकाश (आभा) के हैं।

इन पदार्थों के ये नाम कैसे पडे हैं और वेद के किन मंत्रों के आधार पर ऐसा अर्थ करना पडा है, यह विस्तृत व्याख्या निरुक्त में ही देखिये।

द्युस्थान के देवगण-

अथातो द्युस्थाना देवगणाः। तेषामादित्याः प्रथमागामिनो भवन्ति।

अब हम द्यु-स्थानी देवगण का वर्णन करेंगे उनमें आदित्य-गण प्रथम आते हैं।

आदित्य, सप्त-ऋषि, विश्वे देव, साध्य, वसु आदि देव-गण सूर्य की किरणों के नाम हैं।

चाहे देवों की गणना तीन में हो या अधिक में, नैरुक्त लोग तीन से अधिक देव मानने को उद्यत नहीं। वसु और आदित्य सूर्य-रश्मियों या अग्नि-अर्चियों में समाविष्ट हो जाते हैं और रुद्र-गण वायु-दल में। इस प्रकार वसु, रुद्र और आदित्यों की कोई भिन्न सत्ता नहीं रहती। कई लोग विश्वे देव को सर्व देव मानकर उनकी आदित्य-गण के सदृश कोई संख्या नहीं मानते। परन्तु द्यु-स्थानी देवगण में विश्वे देव और साध्यों की गणना होने से वे आदित्यादि गण से भिन्न गण हैं। वेद की शैली से भी यही प्रतीत होता है-

वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, आदित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वदिन्द्रस्त्वा धूपयतु, वरुणस्त्वा धूपयतु, विष्णुस्त्वा धूपयतु॥ (यजु० ११।६०)

ये विश्वे देव वसु, रुद्र और आदित्य से भिन्न हैं तथा विश्वानर के पुत्र हैं। क्योंकि इन्हें अनेकत्र वैश्वानर कहा

गया है। ये सूर्य के रश्मि हों तो भी वसु रुद्र और आदित्य से पृथक् ही माने जायेंगे।

३३ की संख्या

विश्वे देव तैंतीस हैं-

(१) नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः।
विश्वे सतोमहान्त इत् ॥१॥

(२) इति स्तुतासो असथा रिशादसो,
ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च।
मनोर्देवा यज्ञियासः ॥२॥

(३) ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत।
अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत ॥४॥
(ऋ० ८।३०)

(४) ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन्।
विदन्नह द्वितासनन् ॥१॥ (ऋ० ८।२८)

(५) ये देवासो दिव्येकादश स्थ,
पृथिव्यामध्येकादश स्थ,
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ,
ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥ (ऋ० १।१३९।११, यजु० ७।१९)

इन मंत्रों की देवता विश्वे देव हैं। ये तैंतीस हैं और दिव् अन्तरिक्ष और पृथिवी पर ग्यारह-ग्यारह की संख्या में रहती हैं। अब सिद्ध हो गया कि ये विश्वे देव सम्पूर्ण देव नहीं हैं किन्तु वसु आदि से पृथक् ३३ की संख्या में रहते हैं।

विश्वे देव की संख्या ३३३९ है-

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन्।
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त।
(ऋ० ३।९।९; १०।५२।६; यजु० ३३।७)

ऋ० ३।९।९ में इस मंत्र की देवता अग्नि है, अन्यत्र विश्वे देव देवता हैं। विचारणीय प्रश्न है कि ये विश्वे देव ३३ हैं या ३३३९ हैं अथवा विश्वेदेव ३३ हैं और सर्वे देव ३३३९ अथवा विश्वे देव का सर्वत्र सर्वे देव ही अर्थ है और वे ३३ या ३३३९ दोनों में हो सकते हैं। विश्वे देव ३३ हैं और वे ही ३३३९ भी, तो परस्पर विरोध आयेगा। यदि सम्पूर्ण देव ३३ की संख्या में हैं और वे ३३३९ की संख्या में भी, तो विरोध है। हाँ, यदि हम विश्वे देव ३३ और सम्पूर्ण देव ३३३९ मानें तो कुछ संगति लग सकती है। निरुक्तकार ने विश्वे देवाः का अर्थ 'सर्वे देवाः' किया है, परन्तु उन के मत में 'देवाः' यह भी गण है। यह सूर्य रश्मि का नाम है तब 'सर्वे देवाः' विश्वे देवाः का पर्याय नाम होगा अर्थ तो आदित्य-रश्मि ही लेना पड़ेगा। वे शाकपूणि आचार्य का मत उद्धृत करते हैं-

"यत्तु किंचिद् बहुदैवतं तद् वैश्वदेवानां स्थाने युज्यते। यदेव विश्वलिङ्गमिति शाकपूणिः।" (निरुक्त १२।४) अर्थात् बहुत देवतावाला मंत्र विश्वे देव के स्थान में पढ़ा जाता है जब अन्य विश्वे देवयुक्त गायत्र मंत्र न मिले।

यद्यपि यास्क इस के विरोधी हैं तथापि यह सम्भव है कि सर्वे-देवताक मंत्र विश्वे-देवताक बनाये गये हों। तब ३३३९ संख्याक मंत्र सर्वे-देवताक हैं ऐसा मानना पड़ेगा।

पुराणों में विश्वे देव अन्य देवों से पृथक् हैं। ब्राह्मणमें भी, 'रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वे देवाः' (श० ३।९।२।६ इत्यादि स्थलों में विश्वे देव पृथक् हैं और वे सूर्य के रश्मि (किरण) हैं।

यह देवता-विषय बहुत गहन तथा और अधिक मननीय है क्योंकि यह अनुसन्धान अन्तिम नहीं है।



*

'विश्वे देवाः' के मंत्रोंके संबंधमें विचार

(ले० श्री० पं० दयानन्द गणेश धारेश्वर बी. ए. स्वाध्यायमंडल, औंध)

वेदोंमें उपलब्ध देवताओंके वर्णनपरक विभिन्न सूक्त पढनेसे स्पष्टतया प्रतीत होता है कि वे सभी देव असाधारण क्षमता से युक्त होते हैं तथा वे अत्यन्त सफल तापूर्वक जनताकी लगातार सेवा करते हुए लोगोंकी अटल, अडिग एवं अविचल भक्ति और उपासना प्राप्त करने में बडी स्पृहणीय और विराट सफलता प्राप्त कर लेते हैं। वेद मन्त्रों में अतीव लोकप्रिय नेता, कार्यकर्ता, स्वयंसेवक या प्रभुका बडाही प्रभावोत्पादक एवं सजीव चित्रण देखने मिलता है। जनता एवं उपासकों, भक्तों और अनुयायियों की रक्षा करने का गुरुतर कार्य भार सुचारुरूपसे प्रचलित रखकर समूची बुराइयों और सारे दुश्मनों, विरोधियों एवं स्वार्थी शत्रुओंको पराभूत कर विनष्ट करने या मार भगाने से वैदिक सुकवि और द्रष्टा ऋषि देवों के निकटतम संपर्क में रहने के लिए बडे समुत्सुक दीख पडते हैं और उन्हें आदर पूर्वक समीप बुलाकर सोम आदि वस्तुओं के प्रदानसे भलीभाँति सुस्वागत कर उनके पराक्रमों तथा गुणों का सुन्दर ढंगसे वर्णन करते हुए उनकी सराहना करते हैं। वेदमन्त्रों के द्रष्टा किसभाँति देवताओं को समीप आनेके लिए निमन्त्रण देते हैं या देवों का आवाहन करते हैं यह निम्न मन्त्रों में देखने योग्य है।

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत।
(ऋ० १।३।८)

'हे संरक्षणकर्ता तथा मानवों के धारण करनेहारे सभी देवो! इधर आओ।'

विश्वे देवासो...सुतमा गन्त तूर्णयः।
(ऋ० १।३।८)

'हे समूचे देवो! हमने जो सोमरस निचोड रखा है उस के निकट शीघ्रता पूर्वक चले आओ।' क्योंकि हम 'सभी देवोंको इधर उपस्थित रहनेके लिये बुलाते हैं।'

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं...अवसे हूमहे वयम्। (ऋ० १।८९।५)

'उस प्रभुत्व प्रस्थापित करनेवाले एवं स्थावर जंगमके अधिपति तुल्य इन्द्र को हम अपने संरक्षणार्थ बुलाते हैं।'

...विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह।
(ऋ० १।८९।७)

'सारे देव हमारे समीप संरक्षणकी आयोजना लेकर पहुँच जायँ।'

त्रितः...देवान् हवत ऊतये। (ऋ० १।१०५।१७)

'त्रित ऋषि अपने संरक्षणार्थ देवोंको बुलाता है।'

त आदित्या आ गता सर्वतातये भूत देवा वृत्रतूर्येषु शंभुवः॥ (ऋ० १।१०६।२)

वे विख्यात अदितिके पुत्रो! सबके द्वारा विस्तारित कार्य के लिए आपहुँचो और हे द्योतमान एवं देवतारूपी! हमारे शत्रुवधोंके कार्योंमें हितकारक बनो।'

इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं...ऋषिरव्हदूतये।
(ऋ० १।१०६।६)

'कुत्स ऋषिने वृत्रके वध करनेहारे इन्द्रको अपने संरक्षण के लिए बुलाया।

उप नो देवा अवसा गमन्त्वङ्गिरसां सामभिः स्तूयमानाः। (१।१०७।२)

"अंगिरसों के सामों से प्रशंसित होते हुए देव हमारे पास संरक्षण योजना से युक्त हो पधारें।"

धृतव्रता आदित्या...आरे मत् कर्त...आगः।
शृण्वतो यो...देवा भद्रस्य विद्वाँ अवसे हुवे वः॥
(ऋ० २।२९।१)

हे व्रतधारी आदित्यो! अपराध, दोष को मुझसे दूर कर दो और मैं तुम्हारी की हुई अच्छी बात को जानता हुआ

कार्य को अच्छीतरह निभाने के लिए इधर बुलाता हूँ।

विश्वे देवास आगत शृणुता म इमं हवम्।
एदं बर्हिर्नि षीदत ॥ (२।४१।१३,६।५२।७)

'सारे देवो! इधर आओ, मेरी इस पुकार को सुनलो, और इस कुशासन पर बैठ जाइए।'

...देवासः पूषरातयः। विश्वे मम श्रुता हवम्।
(ऋ. २।४१।१५)

'सभी देव जिनकी देनें पुष्टी कारक होती हैं मेरी इस पुकार को सुनलें।'

सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैरिन्द्राग्नी अवसे हुवध्यै ॥ (ऋ. ५।४५।४)

'हे इन्द्र एवं अग्नि! तुम्हें मैं देवों से स्वीकृत तथा भलीभाँति कहे वचनोंसे संरक्षण के लिए बुलाता हूँ।'

इन उपर्युक्त मन्त्रोंसे वैदिक ऋषियोंके अन्तस्तलमें देवों के सान्निध्यकी लालसा किस भाँति जागृत थी सो अत्यन्त स्पष्ट होगा। तथा और भी देखिए—

सुगा वो देवाः सदना अकर्म य आजग्मेद ँ
सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीँष्यस्मे
धत्त वसवो वसूनि ॥ (वा. यजु. ८।१८)

'हे देवतागण! आपके लिए हम सुखदायक घर बना चुके हैं जो तुम इस सवन का सेवन या स्वीकार करते हुए इधर आनेलगे; सब को बसानेवाले देवो! हविर्भागोंको भरपूर देते हुए एवं उन्हें इष्टस्थान में पहुँचाते हुए हमारे लिए धन भाण्डारों को यहाँपर धर दो।'

आ नो विश्वे सजोषसो देवासो गन्तनोप नः।
वसवो रुद्रा अवसे न आगमञ्छृण्वन्तु मरुतो
हवम् ॥ (ऋ. ८।५४) [वाल. ६]३

'सभी देव मिलजुलकर हमारेलिए समीप आ जायँ; वसु एवं रुद्र हमारे संरक्षण के लिए आवें तथा मरुत् वीर भी हमारी पुकार सुन लें।'

वयामिद् वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना।
देवा वृधाय हूमहे ॥ (ऋ. ८।८३।६)

हे अच्छे दान शूर देवो! हम तो घर में रहते हुए या मार्ग पर से आवागमन करते हुए तुम्हें ही वृद्धि का कार्य करनेके लिए बुलाते हैं।'

इस प्रकार देवों को बुलाकर वैदिक मन्त्रोंके दर्शन करनेहारे प्रतिभा शाली कवि उनसे कैसी प्रार्थना करते हैं तथा अपनी आकांक्षाओं को किस तरह उनके सम्मुख पेश करते हैं यह निम्न मंत्रों में देखने योग्य है-

दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना जीराध्वरं
कृणुतं सुम्नमिष्टये। (ऋ. १०।३६।६)

'हे अश्विनौ! तुम दोनों हमारे यज्ञको द्युलोकको छूनेवाला याने अति उच्च कोटिका तथा शीघ्र हिंसारहित होनेवाला बना दो और हमारा इच्छित सिद्ध हो जाय इस हेतु सुख का निर्माण कर डालो।'

उपह्वये सुहवं मारुतं गणं पावकसृष्वं सख्याय
शंभुवम्। रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि...।
(ऋ. १०।३६।७)

'मैं पवित्रतामय वायुमंडल का सृजन करनेहारे एवं तेजस्वी वीर मरुतोंके दलको अपने निकट बुलाता हूँ ताकि मित्रता के लिए वह सुखदायक प्रतीत होवे और हम उत्कृष्ट कीर्ति पाने के लिए धनसंपदाको बढानेके ढंग सोचते हैं।'

यद् वो देवा ईमहे तद् ददातन।
जैत्रं क्रतुं रयिमद् वीरवद्यशस्तद् देवानामवो
अद्या वृणीमहे। (ऋ. १०।३६।१०)

'हे देवो! हम तुम से जो मांगते हैं उसे देडालो; वीरतायुक्त, धनसंपन्न यश एवं जयिष्णु कार्यक्रम हमें मिल जाय अतः आज हम देवों के उस संरक्षण के ढंग को अपने लिए चुनलेते हैं।'

ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे मित्रस्य व्रते
वरुणस्य देवाः। ते सौभगं वीरवद् गोमदग्नो
दधातन द्रविणं चित्रमस्मे ॥ (ऋ. १०।३६।११)

'जो सारे देव सत्य के प्रेरणकर्ता सविता एवं मित्र तथा वरुण के निर्दिष्ट, व्रत के अनुकूल कार्य करते हैं वे हमें वीरता पूर्ण, गोधन संकुल अच्छे ऐश्वर्यवाले कार्य और अनूठा धन देडाले।

यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः।
कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा॥ (ऋ.६।५१।१५)

'हे देवो! तुम तो सचमुच चतुर्दिक द्योतमान एवं अच्छे दान शूर हो तथा तुममें इन्द्र प्रमुख है; मार्गपरसे

यात्रा करते समय मिलजुलकर रक्षा करनेवाले तुम देव हमारे लिए सुख का प्रबन्ध करडालो ।'

आत्मरक्षा का भाव मानवमें किस तीव्रतासे उमड पडता है यह निम्न मंत्रमें दीख पडता है—

अवन्तु मामुषसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः पिन्वमानाः । अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासोऽवन्तु मा पितरो देवहूतौ ॥ (ऋ. ६।५२।४)

' प्रतिदिन उत्पन्न होते हुए उषः काल मुझ को बचाएँ प्रतिपल जल से पूर्ण होती हुई नदियाँ मेरी रक्षा करें; अटल रूपसे खडे पहाड मेरा संरक्षण करें तथा देवोंको बुलाने में पितर अपने संरक्षण की छत्रछायामें मुझे रख दें।'

द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां सुविताय मातरा । उषा उच्छन्त्यप बाधतामघं स्वस्त्याग्निं समिधानमीमहे ॥ (ऋ० १०।३५)

' आज हमें दोष रहित, महान एवं मातृतुल्य द्यावापृथिवी सुरक्षित रखें ताकि हमारी भलाई हो जाए; उदित होती हुई उषा पापको दूर करदे और हम चाहते हैं कि भलीभाँति धधकनेवाला अग्नि हितकारक बने ।'

नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे सजोषाः । समस्मे इषं वसवो ददीरन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ (ऋ. ७।४८।४)

' हे देवो! हमारे लिए तुम धनसंपदा का निर्माण करो, और तुम सभी मिलकर हमारी रक्षा करनेके लिए कटिबद्ध रहो; हे वसुओ ! हमें तुम अन्न सामग्री भली भाँति देते रहो और कल्याणकारक साधनोंसे हमेशा हमारे संरक्षण का गुरुतर कार्य भार संपन्न करो ।

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञियाः ... मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेषु इत् वो अन्तमा मदेम ॥ (ऋ. ६।५२।।४)

' मेरे कथनको सभी यज्ञमें बैठने योग्य देव सुनलें; मैं कभी निन्दनीय वचन तुम्हारीलिए न कहूँ और तुम्हारे किये सुख कारक प्रबंधों में हम तुम्हारे अत्यन्त निकटवर्ती होकर आनन्दित बनें । '

स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा नमसा विवासे । अस्मिन् नो अद्य विदथे यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम् ॥ (ऋ. ६।५२।१७)

' दर्भमय आसन के बिछानेपर और अग्नि के भलीभाँति प्रदीप्त होनेपर बडे सूक्तसे एवं नमन से मैं उपासन करता हूँ; आज हमारे इस यज्ञ में उपस्थित होकर सारे तुम पूजनीय देव हमारे दिये हुए इस हविके परिणाम स्वरूप हर्षित बनो । '

इदं देवा शृणुत ये यज्ञिया स्थ ... पाशो स बद्धो दुरिते नि युज्यताम् यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति ॥ (अथर्व. २।१२।२)

' हे देवो ! जो तुम यजनीय हो तो इस मेरे वचन को सुन लो; जो कोई हमारे इस मन को हिंसित करे अर्थात् कष्ट दे वह फंदे में बँधा जाकर बुराई में गिरजाय । '

देवों का निम्नलिखित वर्णन देखने योग्य है—

नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः । विश्वे सन्तो महान्त इत् ॥ (ऋ. ८।३०।१)

' हे देवो ! तुम में कोई न छोटा शिशु है न बालक अपितु सारे ही निश्चय पूर्वक बडे हैं । '

यथा वशन्ति देवास्तथेदसत् तदेषां नकिरा मिनत् । अरावा चन मर्त्यः ॥ (ऋ. ९।२८।४)

' जैसे देव इच्छा करते हैं वैसे ही निश्चय पूर्वक बन जाता है । उनके इस सामर्थ्य को न कोई विनष्ट करपाता है, कृपण मानव भी इन के सामने झुक जाते हैं ।'

सदा देवा अरेपसः । सामवेद. ४४२.

' देव हमेशा निर्दोष रहते हैं । '

इसी कारण इन देवों की मनःपूर्वक प्रशंसा की जाती है । देवों के संरक्षण का परिणाम निम्न मंत्र में बताया है—

ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः । अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं त्रायन्ते स जोषसः ॥ (ऋ. ८।२७।१७)

" जिसकी रक्षाका भार हाथमें दान लेकर मित्र, वरुण एवं अर्यमा मिलकर उठाते हैं वह बिना युद्ध ठाने धन पाता है और सुगम साधनों से मार्ग का अन्त पाकेता

है अर्थात् मार्गपर यातायात करने में उसे तनिक भी कठिनाई नहीं प्रतीत होती है।' इसी कारण उनकी सराहना की जाती है।

अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो देवासो अस्त्याप्यम्। प्र ण पूर्वस्मै सुविताय वोचत मक्षू सुम्नाय नव्यसे ॥ (ऋ. ८।२७।१०)

'हे शत्रुविध्वंसक देवो! तुममें सचमुच बंधुता एवं सजातीयताके भाव विद्यमान हैं इसलिए अब हमसे शीघ्र भली भाँति कहदो कि पूर्वकालीन भलाई एवं नये ढंगके सुख को पाने के लिए हम क्या करें।'

वि नो देवासो अद्रुहोऽछिद्रं शर्म यच्छत।
न यद् दुराधसवो नू चिदन्तितो वरूथमादधर्षति॥
(ऋ.८।२७।९)

'द्रोह न करनेहारे एवं सबको बसानेवाले हे देवो! हमें वह छिद्ररहित याने त्रुटिरहित स्वीकरणीय सुख दे डालो जिसे न कोई दूरसे या समीपसेही आक्रान्त करनेका साहस करसके।'

देवंदेवं वोऽवसे देवंदेवमभिष्टये। देवंदेवं हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया॥(ऋ. ८।२७।१३)

'अपनी रक्षा के लिए तुममें से प्रत्येक देवको हम बुलाते हैं. अपनी इच्छा पूर्ण हो इसलिए हरएक देवको निमंत्रित करते हैं और द्योतमान बुद्धिशक्तिसे निष्पादित स्तोत्रों से प्रशंसा करते हुए अन्नकी प्राप्ति हो इस हेतुसे प्रति देवको हम समीप आनेके लिए विनति करते रहें।'

देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं सरातयः। ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवो विदः॥ (ऋ. ८।२७।१४)

'सारे देव तो अपने साथ देन लेकर और एक विचार वाले होकर तथा एकत्रित रूपसे मनुको दान देते हैं और हमारी इच्छा है कि वे आज हमारे लिए और हमारी सन्तान के लिए भी धन के दाता बनें।'

'विश्वे देवा' सूक्तोंके स्मरणीय वाक्य

वैदिक कवि विभिन्न देवोंकी स्तुति करते हुए उनसे क्या अपेक्षा रखते हैं तथा उनके सम्मुख किसतरह अपनी आवश्यकताओंका विवरण करते हुए अपनी महत्त्वपूर्ण एवं शाश्वतिक मांग प्रस्तुत करते हैं इस विषयपर निम्न मंत्रांशों से पर्याप्त प्रकाश पडता है और साथ ही वैदिक सूक्तों एवं मंत्रों के दर्शनकर्ताओं के जीवन विषयक दृष्टि कोणको भी अत्याधिक प्रस्फुट करने में बडी भारी सहायता मिल सकती है।

शत्रुओं तथा बुराइयों को सुदूर भगाकर सुख एवं भलाई की अक्षुण्ण प्राप्ति मानवमात्रका प्रमुख उद्देश्य है और वैदिक सूक्तों में इसकी एक प्रबलतम झाँकी हमें देखने मिलती है। दुश्मनों तथा बुराइयों के मटियामेट होनेपर आर्थिक सुस्थितिका सुप्रबंध समाधानकारक ढंगसे करके सुदीर्घ-जीवनका सुदीर्घ काल तक इष्ट मित्रों एवं पुत्र पौत्रों समेत उपभोग लेना भी मानवका दूसरा एक अतिप्रबल अदम्य उद्देश्य है और इसकी भी झलक वेदमंत्रोंमें यथेष्ट उपलब्ध होती हैं। अस्तु, वेदके ही शब्दोंमें वैदिक ऋषियों की अदम्य लालसा से परिचित होनेके लिए निम्न वचनों की ओर ध्यान देना चाहिए।

ते अस्मभ्यं शर्म यंसन्नमृता मर्त्येभ्यः।
बाधमाना अप द्विषः॥ (ऋ. १।९०।३)

'(ते अमृताः) वे अमरपनका उपभोग लेनेवाले देव (मर्त्येभ्यः अस्मभ्यं) मरणशील हम मानवोंको, (द्विषः अप बाधमानाः) द्वेष करनेवालोंको दूर मार भगाते हुए (शर्म यंसन्) सुख का प्रदान करें।'

... ऊतये ... हवामहे। रथं न दुर्गात्...विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन॥ (ऋ. १।१०६।१)

'हम संरक्षणार्थ देवों तथा दिव्य दल बल को बुलाते हैं और जिस प्रकार बीहड स्थानमें से या दुर्गम जगह से रथको खींच बाहर निकालते हैं उसी तरह, हे देवो! हमें समूचे पाप या कष्ट में से पूर्णतया बाहर निकाल हमारा बेडा पार कर दो।'

...यूयं द्वेषांसि सनुतर्युयोत... अद्या च नो मृळयत अपरं च॥ (ऋ. २।२९।२)

'तुम द्वेषों को गुप्तस्थानमें भेजकर हमसे दूर करो और आज तथा बाद में भी हमें सुख देते रहो।'

यूयं नो स्वस्ति दधात। (ऋ. २।२९।३)

...देवा यूयमिदापयः स्थ ते मृळत नाधमानाय मह्यम् ... मा युष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म।
(ऋ. २।२९।४)

' तुम हमारे कल्याण का प्रबंध करो; हे देवो ! तुमही सचमुच हमारे आप्त हो और ऐसे वे तुम याचना करनेवाले मुझ को सुख दे दो, क्योंकि तुम्हारे जैसे आप्तों के मौजूद होनेपर हमें थकावट न होने पाय । '

आरे पाशा आरे अघानि देवा । (ऋ. २।२९।५)

' हे देवो ! फंदे और पाप हमसे दूर रहें । ' अर्थात् कभी जालों तथा पापों के चँगुलमें हम न फँसजायँ ।

यच्छन्तु नो मरुतः शर्म भद्रम् । (ऋ. ३।५४।२०)

' वीर मरुत हमें कल्याणकारक सुखका प्रदान करें । '

...अवन्तु नः । मरुतो मृळयन्तु नः ।
(ऋ. १।२३।१२)

' वीर मरुत हमारी रक्षा करें और हमें सुख देवें ।

देवा नो...सदमित् वृधे असन्...रक्षितारो दिवे दिवे । (ऋ. १।८९।१)

' प्रतिदिन रक्षाका कार्य सुचारुरूप से चलाते हुए देव हमेशा हमारे संवर्धनार्थ चेष्टाशील रहें । '

मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह
(ऋ. १।८९।७)

' मननशील तथा विद्वानों के दृष्टिकोण को साथ रखनेवाले सभी देव हमारेलिए संरक्षण की आयोजना बनाकर इधर पधारें । '

देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे । (ऋ. १।८९।२)

' हम देवों की मित्रताको प्राप्त करें और हमारा जीवन अक्षुण्ण रूप से प्रचलित रहे इसलिए देव हमारी आयुष्य रेखा को बढा देवें । '

...विश्वा द्वेषांसि सनुतर्युयोत...(ऋ.१०।१००।९)

' सभी द्वेषभावों को हमसे दूर करो । '

आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतन... (ऋ. १०।६३।१२)

' हे देवो ! द्वेषभाव को हमसे हटादो । '

गोभिः ष्याम यशसो जनेष्वा ।

सदा देवास इळया सचेमहि (ऋ. १०।६४।११)

' हम गोधनसे युक्त होकर जनतामें यशस्वी बन जायँ और हे देवो ! हमेशा हम अन्न से युक्त रहें । '

...उरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये । (ऋ. १०।६३।१२)

हमारे हित के लिए विशाल सुख दे डालो । '

ते...अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये । (ऋ. १०।६३।७)

ऐसे वे देवो ! तुम भयरहित सुख का प्रदान करो और भलाई हो जाय इसलिए हमारे लिए सुगम एवं सुन्दर मार्ग बना-दो अर्थात हमें बीहड सडकोंपर न चलना पडे ।

मा प्र गाम पथो वयं ..

मान्तः स्थुर्नो अरातयः । (ऋ. १०।५७।१)

' हम मार्ग छोडकर दूर भटकते न चलें और हमारे शत्रुओं को अन्दर स्थान न मिले । अर्थात हम मार्गभ्रष्ट न हों तथा शत्रु हमारे भीतर जगह न पासकें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए ।

विश्वे नो देवा अवसागमन्तु ।

विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे । (ऋ. १०।३५।१३)

सभी देव संरक्षण की आयोजना साथ लेकर हमारे निकट पहुँच जायँ और समूचा द्रव्य एवं बल हमारेलिए रहे

मा दुर्विदत्रा निर्ऋतिर्नो ईशत.. । (ऋ. १०।३६।२)

' बुरे ज्ञानवाली पीडा हमपर शासन न करें । ' ज्ञान का दुरुपयोग करनेवाली बुरी मनोवृत्तिका शासन या प्रभुत्व प्रस्थापित न होने पाय ।

अवन्तु नो अमृतासस्तुरासः । (ऋ. ५।४२।५)

' अमर पनको प्राप्त हुए देव त्वरापूर्वक कार्य करनेवाले बनकर हमारी रक्षा करें ।

देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं । मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् । (ऋ. ५।४२।१६)

' मेरेलिए हरएक देव सुगमतापूर्वक बुलानेयोग्य बन जाय और हमें भूमाता दुर्बुद्धि में न रखें ।

सदा सुगः पितुमाँ अस्तु पन्था । (ऋ. ३।५४।२१)

' मार्ग हमेशा सुख पूर्वक तथा अन्न युक्त रहें ' । यह अभिलाषा तो यात्रियों एवं विदेशों में जानेवाले लोगोंके अन्तस्तलमें ही जागृत हुआ करती है और वैदिक कवि यात्रा करने के अभ्यस्त थे ऐसा स्पष्ट होता है ।

अरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः । (अथर्व ५।३।५)

वयं सुषखायो भवेम तरन्तो विश्वा दुरिता स्याम । (ऋ. १०।३१।१)

' हम लोग अच्छे वीर एवं अक्षीण और निर्दोष शरीरवाले बनें, सभी बुराइयोंको लाँघते चलें । '



दैवत-संहिता।

[ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् देवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता।]

१० विश्वे देवाः।

॥१॥ (ऋ० १।३।७-९)

(१-३) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। गायत्री।

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत । दाश्वांसो दाशुषः सुतम् ७
विश्वे देवासो अप्तुरः सुतमा गन्तु तूणयः । उस्रा इव स्वसराणि ८
विश्वे देवासो अस्रिध एहिमायासो अद्रुहः । मेधं जुषन्त वह्नयः ९ ३

॥२॥ (ऋ० १।१४।१-१२)

(४-१८) मेधातिथिः काण्वः। गायत्री।

ऐभिरग्ने दुवो गिरो विश्वेभिः सोमपीतये । देवेभिर्याहि यक्षि च १
आ त्वा कण्वा अहूषत गृणन्ति विप्र ते धियः । देवेभिरग्न आ गहि २ ५
इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम् । आदित्यान् मारुतं गणम् ३
प्र वो भ्रियन्त इन्दवो मत्सरा मादयिष्णवः । द्रप्सा मध्वश्चमूषदः ४
ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः । हविष्मन्तो अरंकृतः ५
घृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा वहन्ति वह्नयः । आ देवान्त्सोमपीतये ६
तान् यजत्राँ ऋतावृधो ऽग्ने पत्नीवतस्कृधि । मध्वः सुजिह्व पायय ७ १०
ये यजत्रा य ईड्या—स्ते ते पिबन्तु जिह्वया । मधोरग्ने वषट्कृति ८
आकीं सूर्यस्य रोचनाद् विश्वान् देवाँ उषर्बुधः । विप्रो होतेह वक्षति ९
विश्वेभिः सोम्यं मध्व—ग्न इन्द्रेण वायुना । पिबा मित्रस्य धामभिः १०
त्वं होता मनुर्हितो ऽग्ने यज्ञेषु सीदसि । सेमं नो अध्वरं यज ११
युक्ष्वा ह्यरुषी रथे हरितो देव रोहितः । ताभिर्देवाँ इहा वह १२ १५

---

* ऋ० १,३,७=वा० य० ७,३३ । + ऋ० १,१४,३ = वा० य० ३३,४५ ।

॥३॥ (ऋ० १।२३।१०-१२)

विश्वान् देवान् हवामहे मरुतः सोमपीतये । उग्रा हि पृश्निमातरः १०
जयतामिव तन्यतुर्मरुतामेति धृष्णुया । यच्छुभं याथना नरः ११
ह्वस्काराद् विद्युतस्पर्यतो जाता अवन्तु नः । मरुतो मृळयन्तु नः १२

॥४॥ (ऋ० १।८९।१-१०)×

(१९-३७) गोतमो राहूगणः । १-५,७ जगती; ६ विराट्-स्थाना; ८-१० त्रिष्टुप् ।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे १
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम् ।
देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे २ १०
तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम् ।
अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ३
तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः ।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुव स्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ४
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ५
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ६
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ७ १५
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ८
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ९
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् +१० १८

× ऋ० १।८९।१-१०=वा० य० २५,१४-२३; + ऋ० १।८९।१० =अथर्व० ७,६,१;
⊠ ऋ० १।८९।६,८=सा० १८७४-७५ ।

॥५॥ (वा० १।९०।१-९)* गायत्री; ९ अनुष्टुप् ।

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् । अर्यमा देवैः सजोषाः १
ते हि वस्वो वसवाना—स्ते अप्रमूरा महोभिः । व्रता रक्षन्ते विश्वाहा २ ३०
ते अस्मभ्यं शर्म यंस—न्नमृता मर्त्येभ्यः । बाधमाना अप द्विषः ३
वि नः पथः सुवितायं चियन्त्विन्द्रो मरुतः । पूषा भगो वन्द्यासः ४
उत नो धियो गोअग्राः पूषन् विष्णवेवयावः । कर्ता नः स्वस्तिमतः ५
मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ६
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ७ ३५
मधुमान्नो वनस्पति—र्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ८
शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः ९

॥६॥ (ऋ० १।१०५।१-१९)

(१८-५६) त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । पङ्क्तिः; ८ यवमध्या महाबृहती; १९ त्रिष्टुप् ।

चन्द्रमा अप्स्व१न्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी +१
अर्थमिद् वा उ अर्थिन आ जाया युवते पतिम् ।
तुञ्जाते वृष्ण्यं पयः परिदाय रसं दुहे वित्तं मे अस्य रोदसी २
मो षु देवा अदः स्व१—र्वं पादि दिवस्परि ।
मा सोम्यस्य शंभुवः शूने भूम कदा चन वित्तं मे अस्य रोदसी ३ ४०
यज्ञं पृच्छाम्यवमं स तद् दूतो वि वोचति ।
क्व ऋतं पूर्व्यं गतं कस्तद् बिभर्ति नूतनो वित्तं मे अस्य रोदसी ४
अमी ये देवाः स्थन त्रिष्वा रोचने दिवः ।
कद् व ऋतं कदनृतं क्व प्रत्ना व आहुति—र्वित्तं मे अस्य रोदसी ५
कद् व ऋतस्य धर्णसि कद् वरुणस्य चक्षणम् ।
कदर्यम्णो महस्पथा—ऽति क्रामेम दुर्गहो वित्तं मे अस्य रोदसी ६
अहं सो अस्मि यः पुरा सुते वदामि कानि चित् ।
तं मा व्यन्त्याध्यो३ वृको न तृष्णजं मृगं वित्तं मे अस्य रोदसी ७
सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः ।
मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो वित्तं मे अस्य रोदसी ८ ४५

* ऋ० १,९०,६-९=वा० य० १३,२७-२९; ३६,९ । + वा० य० ३३,९०; अथर्व० १८,४,८९; सा० ४१७

अमी ये सप्त रश्मय—स्तत्रा मे नाभिरातता ।
त्रितस्तद् वेदाप्त्यः स जामित्वाय रेभति वित्तं मे अस्य रोदसी ९
अमी ये पञ्चोक्षणो मध्ये तस्थुर्महो दिवः ।
देवत्रा नु प्रवाच्यं सध्रीचीना नि वावृतु—र्वित्तं मे अस्य रोदसी १०
सुपर्णा एत आसते मध्य आरोधने दिवः ।
ते सेधन्ति पथो वृकं तरन्तं यह्वतीरपो वित्तं मे अस्य रोदसी ११
नव्यं तदुक्थ्यं हितं देवासः सुप्रवाचनम् ।
ऋतमर्षन्ति सिन्धवः सत्यं तातान सूर्यो वित्तं मे अस्य रोदसी १२
अग्ने तव त्यदुक्थ्यं देवेष्वस्त्याप्यम् ।
स नः सत्तो मनुष्वदा देवान् यक्षि विदुष्टरो वित्तं मे अस्य रोदसी १३ ५०
सत्तो होता मनुष्वदा देवाँ अच्छा विदुष्टरः ।
अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरो वित्तं मे अस्य रोदसी १४
ब्रह्मा कृणोति वरुणो गातुविदं तमीमहे ।
व्यूर्णोति हृदा मतिं नव्यो जायतामृतं वित्तं मे अस्य रोदसी १५
असौ यः पन्था आदित्यो दिवि प्रवाच्यं कृतः ।
न स देवा अतिक्रमे तं मर्तासो न पश्यथ वित्तं मे अस्य रोदसी १६
त्रितः कूपेऽवहितो देवान् हवत ऊतये ।
तच्छुश्राव बृहस्पतिः कृण्वन्नंहूरणादुरु वित्तं मे अस्य रोदसी १७
अरुणो मा सकृद् वृकः पथा यन्तं ददर्श हि ।
उज्जिहीते निचाय्या तष्टेव पृष्ट्यामयी वित्तं मे अस्य रोदसी १८ ५५
एनाङ्गूषेण वयमिन्द्रवन्तोऽभि ष्याम वृजने सर्ववीराः ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः १९

॥७॥ (ऋ० १।१०६।१-७)

(५७-६६) कुत्स आङ्गिरसः । जगती; ७ त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये मारुतं शर्धो अदितिं हवामहे ।
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन १
त आदित्या आ गता सर्वतातये भूत देवा वृत्रतूर्येषु शंभुवः । रथं न दुर्गाद्० २
अवन्तु नः पितरः सुप्रवाचना उत देवी देवपुत्रे ऋतावृधा । रथं न दुर्गाद्० ३ ५९

नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे । रथं न दुर्गाद्० ४ ६०
बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि शं योर्यत् ते मनुर्हितं तदीमहे । रथं न दुर्गाद्० ५
इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं शचीपतिं काटे निबाळ्ह ऋषिरह्वदूतये । रथं न दुर्गाद्० ६
देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ७

॥८॥ (ऋ० १।१०७।१-३) त्रिष्टुप।

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्न—मादित्यासो भवता मृळयन्तः ।
आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्ववृत्या—दंहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् १
उप नो देवा अवसा गमन्त्वङ्गिरसां साममिः स्तूयमानाः ।
इन्द्र इन्द्रियैर्मरुतो मरुद्भि—रादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् २ ६५
तन्न इन्द्रस्तद् वरुणस्तदग्नि—स्तदर्यमा तत् सविता चनो धात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ३

॥९॥ (ऋ० १।१२१।१-१५)

(६७-९६) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । (इन्द्रो वा)। त्रिष्टुप्।

कदित्था नॄंः पात्रं देवयतां श्रवद् गिरो अङ्गिरसां तुरण्यन् ।
प्र यदानड्विश आ हर्म्यस्यो—रु क्रमते अध्वरे यजत्रः १
स्तम्भीद् द्यां स धरुणं पृथ्वो—दृभुर्वाजाय द्रविणं नरो गोः ।
अनु स्वजां महिषश्चक्षत व्रां मेनामश्वस्य परि मातरं गोः २
नक्षद्वत्समरुणीः पूर्व्यं राट् तुरो विशामङ्गिरसामनु द्यून् ।
तक्षद् वज्रं नियुतं तस्तम्भद् द्यां चतुष्पदे नर्याय द्विपादे ३
अस्य मदे स्वर्यं दा ऋतायापीवृतमुस्रियाणामनीकम् ।
यद्ध प्रसर्गे त्रिककुभ्निवर्त—दप द्रुहो मानुषस्य दुरो वः ४ ७०
तुभ्यं पयो यत् पितरावनीतां राधः सुरेतस्तुरणे भुरण्यू ।
शुचि यत् ते रेकण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्रियायाः ५
अध प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु प्र रोच्यस्या उषसो न सूरः ।
इन्दुर्येभिराष्ट स्वेदुहव्यैः सुवेण सिञ्चन्नरणाभि धाम ६
स्विध्मा यद् वनधितिरपस्यात् सूरो अध्वरे परि रोधना गोः ।
यद्ध प्रभासि कृत्व्याँ अनु द्यू—ननर्विशे पश्विषे तुराय ७ ७३

अष्टा महो दिव आदो हरीं इह द्युम्नासाहमभि योधान उत्सम् ।
हरिं यत् ते मन्दिनं दुक्षन् वृधे गोरभसमद्रिभिर्वाताप्यम् ८
त्वमायसं प्रति वर्तयो गो—र्दिवो अश्मानमुपनीतमृभ्वा ।
कुत्साय यत्र पुरुहूत वन्व—ञ्छुष्णमनन्तैः परियासि वधैः ९ ७५
पुरा यत् सूरस्तमसो अपीते—स्तमद्रिवः फलिगं हेतिमस्य ।
शुष्णस्य चित् परिहितं यदोजो दिवस्परि सुग्रथितं तदादः १०
अनु त्वा मही पाजसी अचक्रे द्यावाक्षामा मदतामिन्द्र कर्मन् ।
त्वं वृत्रमाशयानं सिरासु महो वज्रेण सिष्वपो वराहुम् ११
त्वमिन्द्र नर्यो याँ अवो नॄन् तिष्ठा वातस्य सुयुजो वहिष्ठान् ।
यं ते काव्य उशना मन्दिनं दाद् वृत्रहणं पार्यं ततक्ष वज्रम् १२

त्वं सूरो हरितो रामयो नून् भरच्चक्रमेतशो नायमिन्द्र ।
प्रास्यं पारं नवतिं नाव्यानामपि कर्तमवर्तयोऽयज्यून् १३
त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः पाहि वज्रिवो दुरितादभीके ।
प्र नो वाजान् रथ्योऽश्वबुध्या—निषे यन्धि श्रवसे सूनृतायै १४ ८०
मा सा ते अस्मत् सुमतिर्वि दसद् वाजप्रमहः समिषो वरन्त ।
आ नो भज मघवन् गोष्वर्यो मंहिष्ठास्ते सधमादः स्याम १५

॥१०॥ (ऋ० १।१२२।१-१५) त्रिष्टुप्; ५-६ विराड्रूपा ।

प्र वः पान्तं रघुमन्यवोऽन्धो यज्ञं रुद्राय मीळ्हुषे भरध्वम् ।
दिवो अस्तोष्यसुरस्य वीरै—रिषुध्येव मरुतो रोदस्योः १
पत्नीव पूर्वहूतिं वावृधध्या उषासानक्ता पुरुधा विदाने ।
स्तरीर्नात्कं व्युतं वसाना सूर्यस्य श्रिया सुदृशी हिरण्यैः २

ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा ममत्तु वातो अपां वृषण्वान् ।
शिशीतमिन्द्रापर्वता युवं न—स्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः ३
उत त्या मे यशसा श्वेतनायै व्यन्ता पान्तौशिजो हुवध्यै ।
प्र वो नपातमपां कृणुध्वं प्र मातरा रास्पिनस्यायोः ४
आ वो रुवण्युमौशिजो हुवध्यै घोषेव शंसमर्जुनस्य नंशे ।
प्र वः पूष्णे दावन आँ अच्छा वोचेय वसुतातिमग्नेः ५ ८१

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमो॒त श्रु॒तं सद॑ने वि॒श्वत॑ः सीम् ।
श्रोतु॑ नः श्रोतु॒रातिः सु॒श्रोतु॑ः सु॒क्षेत्रा॑ सिन्धु॒राद्भिः ६
स्तु॒षे सा वां॑ वरुण मित्र रा॒ति॒र्गवां॑ श॒ता पृ॒क्षया॑मेषु पु॒त्रे ।
श्रु॒तर॑थे प्रि॒यर॑थे दधा॒नाः स॒द्यः पु॒ष्टिं नि॑रुन्धा॒नासो॑ अग्मन् ७
अ॒स्य स्तु॒षे महि॑मघस्य रा॒धः॑ सचा॑ स॒नेम॒ नहु॑षः सु॒वीरा॑ः ।
जनो॒ यः प॒ज्रेभ्यो॑ वा॒जिनी॑वा॒॒नश्वा॑वतो॒ रथि॑नो म॒घं सू॒रिः ८
जनो॒ यो मि॑त्रावरुणावभि॒ध्रु॒॒गपो॒ न वां॑ सु॒नोत्यक्ष॑णया॒ध्रुक् ।
स्व॒यं स यक्ष्मं॑ हृ॒दये॒ नि ध॑त्त॒ आप॒ यदी॑ होत्रा॒भिर्ऋ॒तावा॑ ९ १०
स व्राध॑तो॒ नहु॑षो दं॒सुजू॑तः॒ शर्धं॑स्तरो॒ नरां॑ गू॒र्तश्र॑वाः ।
वि॒सृ॒ष्टरा॑तिर्यजति॒ बाळ्ह॒मृत्वा॒ विश्वा॑सु पृ॒त्सु सद॒मिच्छूर॑ः १०
अध॒ ग्मन्ता॒ नहु॑षो हवं॒ सूरेः॑ श्रोता॑ राजानो अ॒मृत॑स्य मन्द्राः ।
न॒भो॒जुवो॒ यन्नि॒रव॑स्य रा॒धः॑ प्रश॑स्तये महि॒ना र॑थ॒वते ११
ए॒तं शर्धं॑ धाम॒ यस्य॑ सू॒रे॒रित्य॑वोचन दश॒तयस्य॒ नंशे॑ ।
द्यु॒म्नानि॒ येषु॑ वसु॒ता॑ती रा॒रन् विश्वे॑ म॒न्वन्तु॒ प्रभृ॑थेषु वा॒जम् १२
मन्दा॑महे दश॒तयस्य धा॒से॒॒र्द्विर्यत् पञ्च॒ बिभ्र॑तो यन्त्यन्ना॑ ।
किमि॒ष्टाश्व॑ इ॒ष्टर॑श्मिरेत॒ ईशा॑नास॒स्तरु॑ष॒ ऋज्ज॑ते॒ नॄन् १३
हिर॑ण्यकर्ण॒ मणि॑ग्रीव॒मर्ण॒॒स्तन्नो॒ विश्वे॑ वरिवस्यन्तु दे॒वाः ।
अ॒र्यो गिर॑ः स॒द्य आ ज॑ग्मु॒षी॒रो॒॒स्माँ॑ अ॒न्तूभ॑येष्वस्से १४ १५
च॒त्वारो॑ मा मश॒र्शार॑स्य शिश्व॒॒स्त्रयो॒ राज्ञ॑ आर्यव॒सस्य॑ जि॒ष्णोः ।
रथो॑ वां मित्रावरुणा दी॒र्घाप्सा॑ः स्यू॒मग॑भस्ति॒ः सू॒रो नाद्यौ॑त् १५

॥११॥ (ऋ० १।१३९।१,११)

(९७-९८) परुच्छेपो दैवोदासिः । १ अत्यष्टिः, ११ त्रिष्टुप् ।*

अस्तु॒ श्रौष॑ट् पु॒रो अ॒ग्निं धि॒या द॑ध॒ आ नु तच्छर्धो॑ दि॒व्यं वृ॑णीमहे
इन्द्रवा॒यू वृ॑णीमहे ।
यद्ध॑ क्रा॒णा वि॒वस्व॑ति॒ नाभा॑ सं॒दाय॑ि नव्य॒सी ।
अध॒ प्र सू न॒ उप॑ यन्तु धी॒तयो॑ दे॒वाँ अच्छा॒ न धी॒तय॑ः १
ये दे॑वासो दि॒व्येका॑दश॒ स्थ पृ॑थि॒व्या म॑ध्येका॑दश॒ स्थ ।
अ॒प्सु॒क्षितो॑ महि॒नैका॑दश॒ स्थ ते दे॑वासो य॒ज्ञमि॒मं जु॑षध्वम् ११ ९८

* ऋ० १,१३९,११=वा० य० ७,१९ ।

॥१२॥ (ऋ० १।१६४।१-४१)

(९९-१३९) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप्; १२,१५,२३,२९,३६,४१ जगती ।

अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः ।
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं त्रिशचक्रं सप्तबन्धुम् १
सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा ।
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुः २ १००
इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः सप्तचक्रं सप्त वहन्त्यश्वाः ।
सप्त स्वसारो अभि सं नवन्ते यत्र गवां निहिता सप्त नाम ३
को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति ।
भूम्या असुरसृगात्मा क्व स्वित् को विद्वांसमुप गात् प्रष्टुमेतत् ४
पाकः पृच्छामि मनसाविजानन् देवानामेना निहिता पदानि ।
वत्से बष्कयेऽधि सप्त तन्तून् वितिरे कवय ओतवा उ ५
अचिकित्वाञ्चिकितुषश्चिदत्र कवीन् पृच्छामि विद्मने न विद्वान् ।
वि यस्तस्तम्भ षळिमा रजांस्यजस्य रूपे किमपि स्विदेकम् ६
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेदास्य वामस्य निहितं पदं वेः ।
शीर्ष्णः क्षीरं दुहते गावो अस्य वविं वसाना उदकं पदापुः ७ १०५
माता पितरमृत आ बभाज धीत्यग्रे मनसा सं हि जग्मे ।
सा बीभत्सुर्गभरसा निविद्धा नमस्वन्त इदुपवाकमीयुः ८
भुक्ता माताऽऽसीद् धुरि दक्षिणाया अतिष्ठद् गर्भो वृजनीष्वन्तः ।
अमीमेद् वत्सो अनु गामपश्यद् विश्वरूप्यं त्रिषु योजनेषु ९
तिस्रो मातॄस्त्रीन् पितॄन् बिभ्रदेक ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमव ग्लापयन्ति ।
मन्त्रयन्ते दिवो अमुष्य पृष्ठे विश्वविदं वाचमविश्वमिन्वाम् १०
द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य ।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः ११
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम् ।
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षळर आहुरर्पितम् १२
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्ना तस्थुर्भुवनानि विश्वा ।
तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः १३ १११

सनेमि चक्रमजरं वि वावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति ।
सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा १४
साकंजानां सप्तथमाहुरेकजं षळिद् यमा ऋषयो देवजा इति ।
तेषामिष्टानि विहितानि धामशः स्थात्रे रेजन्ते विकृतानि रूपशः १५
स्त्रियः सतीस्ताँ उ मे पुंस आहुः पश्यदक्षण्वान्न वि चेतदन्धः ।
कविर्यः पुत्रः स ईमा चिकेत यस्ता विजानात् स पितुष्पितासत् १६
अवः परेण पर एनावरेण पदा वत्सं बिभ्रती गौरुदस्थात् ।
सा कद्रीची कं स्विदर्धं परागात् क्व स्वित् सूते नहि यूथे अन्तः १७ ११५
अवः परेण पितरं यो अस्या—नुवेद पर एनावरेण ।
कवीयमानः क इह प्र वोचद् देवं मनः कुतो अधि प्रजातम् १८
ये अर्वाञ्चस्ताँ उ पराच आहु—र्ये पराञ्चस्ताँ उ अर्वाच आहुः ।
इन्द्रश्च या चक्रथुः सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति १९
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्व—त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति २०
यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भाग—मनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति ।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश २१
यस्मिन् वृक्षे मध्वदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे ।
तस्येदाहुः पिप्पलं स्वाद्वग्रे तन्नोन्नशद्यः पितरं न वेद २२ १२०
यद् गायत्रे अधि गायत्रमाहितं त्रैष्टुभाद् वा त्रैष्टुभं निरतक्षत ।
यद् वा जगज्जगत्याहितं पदं य इत् तद् विदुस्ते अमृतत्वमानशुः २३
गायत्रेण प्रति मिमीते अर्क—मर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम् ।
वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदा ऽक्षरेण मिमते सप्त वाणीः २४
जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद् रथंतरे सूर्यं पर्यपश्यत् ।
गायत्रस्य समिधस्तिस्र आहु—स्ततो मह्ना प्र रिरिचे महित्वा २५
उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम् ।
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नो ऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचम् २६
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात् ।
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय २७ १२५

गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं मूर्धानं हिङ्ङकृणोन्मातवा उ ।
सृक्कांणं घर्ममभि वावशाना मिमाति मायुं पयते पयोभिः २८ १२६
अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनावधि श्रिता ।
सा चित्तिभिर्नि हि चकार मर्त्यं विद्युद् भवन्ती प्रति वव्रिमौहत २९
अनच्छये तुरगातु जीव—मेजद् ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम् ।
जीवो मृतस्य चरति स्वधाभि—रमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः ३०
अपश्यं गोपामनिपद्यमान—मा च परा च पथिभिश्चरन्तम् ।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः ३१
य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात् ।
स मातुर्योना परिवीतो अन्त—र्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश ३२ १३०
द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम् ।
उत्तानयोश्चम्वोर्योनिरन्त—रत्रा पिता दुहितुर्गर्भमाधात् ३३
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः ।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम ३४
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम ३५
सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठन्ति प्रदिशा विधर्मणि ।
ते धीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परिभुवः परि भवन्ति विश्वतः ३६
न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः संनद्धो मनसा चरामि ।
यदा मागन् प्रथमजा ऋतस्या—दिद् वाचो अश्नुवे भागमस्याः ३७ १३५
अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतो ऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः ।
ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्ता न्यन्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम् ३८
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्त इमे समासते ३९
सुयवसाद् भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम ।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती ४०
गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्ष—त्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ४१ १३९

॥१३॥ (ऋ० १।१८६।१-११)

(१४०-१५०) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

आ न इळाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा १ १४०
आ नो विश्व आस्क्रा गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।
भुवन् यथा नो विश्वे वृधासः करन्नुषाहा विथुरं न शर्वः २
प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषे ऽग्निं शस्तिभिस्तुर्वणिः सजोषाः ।
असद् यथा नो वरुणः सुकीर्तिरिषश्च पर्षदरिगूर्तः सूरिः ३
उप व एषे नमसा जिगीषोषासानक्ता सुदुघेव धेनुः ।
समाने अहन् विमिमानो अर्कं विषुरूपे पयसि सस्मिन्नूधन् ४
उत नोऽहिर्बुध्न्योऽ मयस्करः शिशुं न पिप्युषीव वेति सिन्धुः ।
येन नपातमपां जुनाम मनोजुवो वृषणो यं वहन्ति ५
उत नं ईं त्वष्टा गन्त्वच्छा स्मत् सूरिभिरभिपित्वे सजोषाः ।
आ वृत्रहेन्द्रश्वर्षणिप्रास्तुविष्टमो नरां नं इह गम्याः ६ १४५
उत नं ईं मतयोऽश्वयोगाः शिशुं न गावस्तरुणं रिहन्ति ।
तमीं गिरो जनयो न पत्नीः सुरभिष्टमं नरां नमन्त ७
उत नं ईं मरुतो वृद्धसेनाः स्मद् रोदसी समनसः सदन्तु ।
पृषदश्वासोऽवनयो न रथा रिशादसो मित्रयुजो न देवाः ८
प्र नु यदेषां महिना चिकित्रे प्र युञ्जते प्रयुजस्ते सुवृक्ति ।
अध यदेषां सुदिने न शरुर्विश्वमेरिणं प्रुषायन्त सेनाः ९
प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं प्र पूषणं स्वतवसो हि सन्ति ।
अद्वेषो विष्णुर्वात ऋभुक्षा अच्छा सुम्नाय ववृतीय देवान् १०
इयं सा वो अस्मे दीधितिर्यजत्रा अपिप्राणी च सदनी च भूयाः ।
नि या देवेषु यतते वसूयुर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ११

॥१४॥ (ऋ० २।२९।१-७)

(१५१-५७) कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । त्रिष्टुप् ।

धृतव्रता आदित्या इषिरा आरे मत् कर्त रहसूरिवागः ।
शृण्वतो वो वरुण मित्र देवा भद्रस्य विद्वाँ अवसे हुवे वः १ १५१

यूयं देवाः प्रमतिर्यूयमोजो यूयं द्वेषांसि सनुतर्युयोत ।
अभिक्षत्तारो अभि च क्षमध्वमद्या च नो मृळयतापरं च २ १५१
किमु नु वः कृणवामापरेण किं सनेन वसव आप्येन ।
यूयं नो मित्रावरुणादिते च स्वस्तिमिन्द्रामरुतो दधात ३
हुये देवा युयमिदापयः स्थ ते मृळत नाधमानाय मह्यम् ।
मा वो रथो मध्यमवाळृते भून्मा युष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म ४
प्र व एको मिमय भूर्यागो यन्मा पितेव कितवं शशास ।
आरे पाशा आरे अघानि देवा मा माधि पुत्रे विमिव ग्रभीष्ट ५ १५५
अर्वाञ्चो अद्या भवता यजत्रा आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम् ।
त्राध्वं नो देवा निजुरो वृकस्य त्राध्वं कर्तादवपदो यजत्राः ६
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदात्र आ विदं शूनमापेः ।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ७

॥१५॥ (ऋ० २।३१।१-७)

(१५८-६७) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः। जगती, ७ त्रिष्टुप् ।

अस्माकं मित्रावरुणावतं रथमादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
प्र यद् वयो न पप्तन्वस्मनस्परि श्रवस्यवो हृषीवन्तो वनर्षदः १
अध स्मा न उदवता सजोषसो रथं देवासो अभि विक्षु वाजयुम् ।
यदाशवः पद्याभिस्तितर्तो रजः पृथिव्याः सानौ जङ्घनन्त पाणिभिः २
उत स्य न इन्द्रो विश्वचर्षणिर्दिवः शर्धेन मारुतेन सुक्रतुः ।
अनु नु स्थात्यवृकाभिरूतिभी रथं महे सनये वाजसातये ३ १६०
उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिस्त्वष्टा गाभिः सजोषा जूजुवद् रथम् ।
इळा भगो बृहद्दिवोत रोदसी पूषा पुरंधिरश्विनावधा पती ४
उत त्ये देवी सुभगे मिथूदृशो षासानक्ता जगतामपीजुवा ।
स्तुषे यद् वां पृथिवि नव्यसा वचः स्थातुश्च वयास्त्रिवया उपस्तिरे ५
उत वः शंसमुशिजामिव श्मस्यहिर्बुध्न्योऽज एकपादुत ।
त्रित ऋभुक्षाः सविता चनो दधे ऽपां नपादाशुहेमा धिया शमि ६
एता वो वश्म्युद्यता यजत्रा अतक्षन्नायवो नव्यसे सम् ।
श्रवस्यवो वाजं चकानाः सप्तिर्न रथ्यो अहं धीतिमश्याः ७ १६४

॥१६॥ (ऋ० २।४१।१३-१५) गायत्री।

विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत १३ १६५
तीव्रो वो मधुमाँ अयं शुनहोत्रेषु मत्सरः । एतं पिबत काम्यम् १४
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम् १५

॥१७॥ (ऋ० ३।२०।१,५)

(१६८-६९) गाथी कौशिकः । त्रिष्टुप् ।

अग्निमुषसमश्विना दधिक्रां व्युष्टिषु हवते वह्निरुक्थैः ।
सुज्योतिषो नः शृण्वन्तु देवाः सजोषसो अध्वरं वावशानाः १
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं बृहस्पतिं सवितारं च देवम् ।
अश्विना मित्रावरुणा भगं च वस्नन् रुद्रा आदित्याँ इह हुवे ५

॥१८॥ (ऋ० ३।५४।१-२२)

(१७०-२२१) प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । त्रिष्टुप् ।

इमं महे विदथ्याय शूषं शश्वत् कृत्व ईड्याय प्र जभ्रुः ।
शृणोतु नो दम्येभिरनीकैः शृणोत्वग्निर्दिव्यैरजस्रः १ १७०
महिं महे दिवे अर्चा पृथिव्यै कामो म इच्छञ्चरति प्रजानन् ।
ययोर्ह स्तोमे विदथेषु देवाः संपर्यवो मादयन्ते सचायोः २
युवोरृतं रोदसी सत्यमस्तु महे षु णः सुविताय प्र भूतम् ।
इदं दिवे नमो अग्ने पृथिव्यै संपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ३
उतो हि वां पूर्व्या आविविद्र ऋतावरी रोदसी सत्यवाचः ।
नरश्चिद् वां समिथे शूरसातौ ववन्दिरे पृथिवि वेविदानाः ४
को अद्धा वेद क इह प्र वोचद् देवाँ अच्छा पथ्या३ का समेति ।
दक्षं श्च एषामवमा सदांसि परेषु या गुह्येषु व्रतेषु ५
कविर्नृचक्षा अभि षीमचष्ट ऋतस्य योना विघृते मदन्ती ।
नाना चक्राते सदनं यथा वेः समानेन क्रतुना संविदाने ६ १७५
समान्या वियुते दूरेअन्ते ध्रुवे पदे तस्थतुर्जागरूके ।
उत स्वसारा युवती भवन्ती आदु ब्रुवाते मिथुनानि नाम ७
विश्वेदेते जनिमा सं विविक्तो महो देवान् बिभ्रती न व्यथेते ।
एजद् ध्रुवं पत्यते विश्वमेकं चरत् पतत्रि विषुणं वि जातम् ८ १७७

सना पुराणमध्येम्यारान्महः पितुर्जनितुर्जामि तन्नः ।
देवासो यत्र पनितार एवैरुरौ पथि व्युते तस्थुरन्तः ९ १७८
इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवीम्यृदूदरा: शृणवन्नग्निजिह्वाः ।
मित्रः सम्राजो वरुणो युवान आदित्यासः कवयः पप्रथानाः १०
हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्वस्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानः ।
देवेषु च सवितः श्लोकमश्रेरादस्मभ्यमा सुव सर्वतातिम् ११ १८०
सुकृत् सुपाणिः स्ववाँ ऋतावा देवस्त्वष्टावसे तानि नो धात् ।
पूषण्वन्त ऋभवो मादयध्वमूर्ध्वग्रावाणो अध्वरमतष्ट १२
विद्युद्रथा मरुत ऋष्टिमन्तो दिवो मर्या ऋतजाता अयासः ।
सरस्वती शृणवन् यज्ञियासो धाता रयिं सहवीरं तुरासः १३
विष्णुं स्तोमासः पुरुदस्ममर्का भगस्येव कारिणो यामनि ग्मन् ।
उरुक्रमः ककुहो यस्य पूर्वीर्न मर्धन्ति युवतयो जनित्रीः १४
इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः पत्यमान उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।
पुरंदरो वृत्रहा धृष्णुषेणः संगृभ्या न आ भरा भूरि पश्वः १५
नासत्या मे पितरा बन्धुपृच्छा सजात्यमश्विनोश्चारु नाम ।
युवं हि स्थो रयिदौ नो रयीणां दात्रं रक्षेथे अकवैरदब्धा १६ १८५
महत् तद् वः कवयश्चारु नाम यद्ध देवा भवथ विश्व इन्द्रे ।
सख्ये ऋभुभिः पुरुहूत प्रियेभिरिमां धियं सातये तक्षता नः १७
अर्यमा णो अदितिर्यज्ञियासो ऽदब्धानि वरुणस्य व्रतानि ।
युयोत नो अनपत्यानि गन्तोः प्रजावान् नः पशुमाँ अस्तु गातुः १८
देवानां दूतः पुरुध प्रसूतो ऽनागान् वोचतु सर्वताता ।
शृणोतु नः पृथिवी द्यौरुतापः सूर्यो नक्षत्रैरुर्वन्तरिक्षम् १९
शृण्वन्तु नो वृषणः पर्वतासो ध्रुवक्षेमास इळया मदन्तः ।
आदित्यैर्नो अदितिः शृणोतु यच्छन्तु नो मरुतः शर्म भद्रम् २०
सदा सुगः पितुमाँ अस्तु पन्था मध्वा देवा ओषधीः सं पिपृक्त ।
भगो मे अग्ने सख्ये न मृध्या उद् रायो अश्व्यां सदनं पुरुक्षोः २१
स्वदस्व हव्या समिषो दिदीह्यस्मद्र्यक् सं मिमीहि श्रवांसि ।
विश्वाँ अग्ने पृत्सु ताञ्जेषि शत्रूनहा विश्वा सुमना दीदिहीनः २२ १९१

॥१९॥ (ऋ० ३।५५।१-२२)

उषसः पूर्वा अध यद् व्यूषुर्महद् वि जज्ञे अक्षरं पदे गोः ।
व्रता देवानामुप नु प्रभूषन् महद् देवानामसुरत्वमेकम् १
मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवा मा पूर्वे अग्ने पितरः पदज्ञाः ।
पुराण्योः सद्मनोः केतुरन्तर्महद् देवानामसुरत्वमेकम् २
वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः शमह्यच्छा दीद्ये पूर्व्याणि ।
समिद्धे अग्नावृतमिद् वदेम महद् देवानामसुरत्वमेकम् ३
समानो राजा विभृतः पुरुत्रा शये शयासु प्रयुतो वनानु ।
अन्या वत्सं भरति क्षेति माता महद् देवानामसुरत्वमेकम् ४ १९५
आक्षित् पूर्वास्वपरा अनूरुत् सद्यो जातासु तरुणीष्वन्तः ।
अन्तर्वतीः सुवते अप्रवीता महद् देवानामसुरत्वमेकम् ५

शयुः परस्तादध नु द्विमाता ऽबन्धनश्चरति वत्स एकः ।
मित्रस्य ता वरुणस्य व्रतानि महद् देवानामसुरत्वमेकम् ६
द्विमाता होता विदथेषु सम्राळन्वग्रं चरति क्षेति बुध्नः ।
प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते महद् देवानामसुरत्वमेकम् ७
शूरस्येव युध्यतो अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत् ।
अन्तर्मतिश्चरति निष्षिधं गोर्महद् देवानामसुरत्वमेकम् ८
नि वेवेति पलितो दूत आँस्वन्तर्महाँश्चरति रोचनेन ।
वपूंषि बिभ्रदभि नो वि चष्टे महद् देवानामसुरत्वमेकम् ९ २००
विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः प्रिया धामान्यमृता दधानः ।
अग्निष्टा विश्वा भुवनानि वेद महद् देवानामसुरत्वमेकम् १०

नाना चक्राते यम्या३ वपूंषि तयोरन्यद् रोचते कृष्णमन्यत् ।
श्यावी च यदरुषी च स्वसारौ महद् देवानामसुरत्वमेकम् ११
माता च यत्र दुहिता च धेनू सबर्दुघे धापयेते समीची ।
ऋतस्य ते सदसीळे अन्तर्महद् देवानामसुरत्वमेकम् १२
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः ।
ऋतस्य सा पयसापिन्वतेळा महद् देवानामसुरत्वमेकम् १३ २०४

पद्या वस्ते पुरुरूपा वपूँष्यूर्ध्वा तस्थौ त्र्यविं रोरिहाणा ।
ऋतस्य सद्म वि चरामि विद्वान् महद् देवानामसुरत्वमेकम् १४ १०५
पदे इव निहिते दस्मे अन्तस्तयोरन्यद् गुह्यमाविरन्यत् ।
सध्रीचीना पथ्याऽ३ सा विषूची महद् देवानामसुरत्वमेकम् १५
आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः सबर्दुघाः शशया अप्रदुग्धाः ।
नव्यानव्या युवतयो भवन्तीर्महद् देवानामसुरत्वमेकम् १६
यदन्यासु वृषभो रोरवीति सो अन्यस्मिन् यूथे नि दधाति रेतः ।
स हि क्षपावान्त्स भगः स राजा महद् देवानामसुरत्वमेकम् १७
वरिस्य नु स्वश्व्यं जनासः प्र नु वोचाम विदुरस्य देवाः ।
षोळ्हा युक्ताः पञ्चपञ्चा वहन्ति महद् देवानामसुरत्वमेकम् १८

देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः पुपोष प्रजाः पुरुधा जजान ।
इमा च विश्वा भुवनान्यस्य महद् देवानामसुरत्वमेकम् १९ ११०
महीं समैरच्चम्वा समीची उभे ते अस्य वसुना न्यृष्टे ।
शृण्वे वीरो विन्दमानो वसूनि महद् देवानामसुरत्वमेकम् २०
इमां च नः पृथिवीं विश्वधायाः उपक्षेति हितमित्रो न राजा ।
पुरःसदः शर्मसदो न वीराः महद् देवानामसुरत्वमेकम् २१
निष्षिध्वरीस्त ओषधीरुतापो रयिं त इन्द्र पृथिवी बिभर्ति ।
सखायस्ते वामभाजः स्याम महद् देवानामसुरत्वमेकम् २२

॥२०॥ (ऋ० ३।५६।१-८)

न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि ।
न रोदसी अदुहा वेद्याभिर्न पर्वता निनमे तस्थिवांसः १
षड् भाराँ एको अचरन् बिभर्त्यृतं वर्षिष्ठमुप गाव आगुः ।
तिस्रो महीरुपरास्तस्थुरत्या गुहा द्वे निहिते दर्श्येका २ ११५
त्रिपाजस्यो वृषभो विश्वरूप उत त्र्युधा पुरुध प्रजावान् ।
त्र्यनीकः पत्यते माहिनावान्त्स रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम् ३
अभीक आसां पदवीरवो ध्यादित्यानामद्भे चारु नाम ।
आपश्चिदस्मा अरमन्त देवीः पृथग् व्रजन्तीः परि षीमवृञ्जन् ४ ११७

त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः कवीना—मुत त्रिमाता विदथेषु सम्राट् ।
ऋतावरीर्योषणास्तिस्रो अप्या—स्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः ५
त्रिरा दिवः सवितर्वार्याणि दिवेदिव आ सुव त्रिर्नो अह्नः ।
त्रिधातु राय आ सुवा वसूनि भगं त्रातर्धिषणे सातये धाः ६
त्रिरा दिवः सविता सोषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी ।
आपश्चिदस्य रोदसी चिदुर्वी रत्नं भिक्षन्त सवितुः सवाय ७ २२०
त्रिरुत्तमा दुणशा रोचनानि त्रयो राजन्त्यसुरस्य वीराः ।
ऋतावान इषिरा दूळभास—स्त्रिरा दिवो विदथे सन्तु देवाः ८

॥२१॥ (ऋ० ३।८।८)

(२२२-२८) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा द्यावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम् ।
सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम् ८

॥२२॥ (ऋ० ३।५७।१-६)

प्र मे विविक्वाँ अविदन्मनीषां धेनुं चरन्तीं प्रयुतामगोपाम् ।
सद्यश्चिद् या दुदुहे भूरि धासे—रिन्द्रस्तदग्निः पनितारो अस्याः १
इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता दिवो न प्रीताः शंशयं दुदुह्रे ।
विश्वे यदस्यां रणयन्त देवाः प्र वोऽत्र वसवः सुम्नमश्याम् २
या जामयो वृष्णं इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन् ।
अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति बिभ्रतं वपूंषि ३ २२५
अच्छा विवक्मि रोदसी सुमेके ग्राव्णो युजानो अध्वरे मनीषा ।
इमा उ ते मनवे भूरिवारा ऊर्ध्वा भवन्ति दर्शता यजत्राः ४
या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा अग्ने देवेष्वुच्यत उरूची ।
तयेह विश्वाँ अवसे यजत्रा—ना सादय पायया च मधूनि ५
या ते अग्ने पर्वतस्येव धारा—संश्चन्ती पीपयद् देव चित्रा ।
तामस्मभ्यं प्रमतिं जातवेदो वसो रास्व सुमतिं विश्वजन्याम् ६

॥२३॥ (ऋ० ४।५५।१-१०)

(२२९-३८) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, ८-१० गायत्री ।

को वस्त्राता वसवः को वरूता द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नः
सहीयसो वरुण मित्र मर्तात् को वोऽध्वरे वरिवो धाति देवाः १ २२९

प्र ये धामानि पूर्व्याण्यर्चान् वि यदुच्छान् विंयोतारो अमूराः ।
विधातारो वि ते दधुरजस्रा ऋतधीतयो रुरुचन्त दस्राः २ २३०
प्र पस्त्याऽमदितिं सिन्धुमर्कैः स्वस्तिमीळे सख्याय देवीम् ।
उभे यथा नो अहनी निपातं उषासानक्ता करतामदब्धे ३
व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्था—मिषस्पतिः सुवितं गातुमग्निः ।
इन्द्राविष्णू नृवदु षु स्तवाना शर्म नो यन्तममवद् वरूथम् ४
आ पर्वतस्य मरुतामवांसि देवस्य त्रातुरवि भगस्य ।
पात् पतिर्जन्यादंहसो नो मित्रो मित्रियादुत नं उरुष्येत् ५
नू रोदसी अहिना बुध्न्येन स्तुवीत देवी अप्येभिरिष्टैः ।
समुद्रं न संचरणे सनिष्यवो घर्मस्वरसो नद्योऽ अप व्रन् ६
देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन् ।
नहि मित्रस्य वरुणस्य धासि—मर्हामसि प्रमियं सान्वग्नेः ७ २३५
अग्निरीशे वसव्यस्या—ऽग्निर्महः सौभगस्य । तान्यस्मभ्यं रासते ८
उपो मघोन्या वह सूनृते वार्या पुरु । अस्मभ्यं वाजिनीवति ९
तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । इन्द्रो नो राधसा गमत् १०

॥२४॥ (ऋ० ५।२६।९)

(२३९) वसूयव आत्रेयः । गायत्री।

एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः । देवासः सर्वया विशा ९

॥२५॥ (ऋ० ५।४१।१-२०)

(२४०-९३) भौमोऽत्रिः । त्रिष्टुप्, १६-१७ अतिजगती, २० एकपदा विराट् ।

को नु वां मित्रावरुणावृतायन् दिवो वा महः पार्थिवस्य वा दे ।
ऋतस्य वा सदसि त्रासीथां नो यज्ञायते वा पशुषो न वाजान् १ २४०
ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायु—रिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त ।
नमोभिर्वा ये दधते सुवृक्तिं स्तोमं रुद्राय मीळ्हुषे सजोषाः २
आ वां येष्ठोऽश्विना हुवध्यै वातस्य पत्मन् रथ्यस्य पुष्टौ ।
उत वां दिवो असुराय मन्म प्रान्धांसीव यज्यवे भरध्वम् ३
प्र सक्षणो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः ।
पूषा भगः प्रभृथे विश्वभोजा आजिं न जग्मुराश्वश्वतमाः ४ २४३

प्र वो॑ र॒यिं युक्ता॑श्वं भरध्वं॒ राय एषेऽव॑से दधीत॒ धीः ।
सु॒शेव॒ एवै॑रौशि॒जस्य॒ होता॒ ये व॒ एवा॑ मरुतस्तु॒राणा॑म् ५
प्र वो॑ वा॒युं र॑थयु॒जं कृ॑णुध्वं॒ प्र दे॒वं विप्रं॑ पनि॒तार॑मर्कैः ।
इ॒षु॒ध्यवं॑ ऋत॒साप॒: पुर॑ंधी॒र्वस्वी॑र्नो अत्र पत्नी॒रा धि॒ये धुः ६ २४५
उप॑ व॒ एषे॒ वन्द्ये॑भिः शू॒षैः प्र यह्वी दि॒वश्चि॒तय॑द्भिर्कैः
उ॒षास॒मक्तां॑ वि॒दुषी॑व॒ विश्व॒मा हा॑ वहतो॒ मर्त्या॑य य॒ज्ञम् ७
अ॒भि वो॑ अर्चे पोष्या॒वतो॑ नॄन् वास्तो॒ष्पति॒ त्वष्टा॑रं र॒रा॑णः ।
धन्या॑ स॒जोषा॑ धि॒षणा॒ नमो॑भि॒र्वन॒स्पती॑रोष॒धी रा॒य एवे॑ ८
तु॒जे न॒स्तने॒ पर्व॑ताः सन्तु॒ स्वैत॑वो॒ ये वस॑वो॒ न वी॒राः ।
प॒नि॒त आ॒प्त्यो य॑जतः सदा॑ नो॒ वधी॑न्नः शंसं॒ नर्यो॑ अभि॒ष्टौ ९
वृष्णो॑ अस्तोपि भू॒म्यस्य॒ गर्भे॒ त्रितो॒ नपा॑तमपां सु॒वृक्ति॑ ।
गृ॒णी॒ते अ॒ग्निरे॒तरी॒ न शू॒षैः शो॒चिष्के॑शो॒ नि रि॑णाति॒ वना॑ १०
क॒था म॒हे रु॒द्रिया॑य ब्रवाम॒ कद् राये चि॑कि॒तुषे॒ भगा॑य ।
आप॒ ओष॑धीरुत नो॑ऽवन्तु॒ द्यौर्वना॑ गि॒रयो॑ वृ॒क्षके॑शाः ११ २५०
शृ॒णोतु॑ न ऊ॒र्जां प॒तिर्गिर॒: स नभ॒स्तरी॑या॒ इष॑िरः परि॒ज्मा ।
शु॒ष्वन्त्वा॒पः पु॒रो न शु॒भ्राः परि॒ स्रुचो॑ बबृ॒हाण॑स्या॒द्रेः १२
वि॒दा चि॒न्नु म॑हान्तो॒ ये व॒ एवा॒ ब्रवा॑म दस्मा॒ वार्यं॑ दधा॒नाः ।
वय॑श्च॒न सु॒भ्व॑१॑ आव॑ यन्ति॒ क्षुभा म॑र्त॒मनु॑यतं वध॒स्नैः १३
आ दैव्या॑नि पार्थि॒वानि॒ जन्मा॒ऽपश्चा॑च्छा सु॒मख॑ाय वोचम् ।
वर्ध॑न्तां द्यावो॒ गिर॑श्चन्द्रा॒ग्रा॑ उ॒दा व॑र्धन्ता॒मभि॑पा॒ता अर्णा॑ः १४
प॒देप॑दे मे जरि॒मा नि धा॑यि॒ वरू॑त्री वा॒ शक्रा॒ या पा॒युभि॑श्च ।
सिष॑क्तु मा॒ता म॒ही र॒सा नः॒ स्मत् सू॒रिभि॑र्क्रतु॒हस्तै॑ ऋजु॒वनि॑ः १५
क॒था दा॑शेम॒ नम॑सा सु॒दानू॒नेव॑या मरुतो अच्छोक्तौ॒ प्रश्र॑वसो मरुतो अच्छोक्तौ ।
मा नो॑ऽहिर्बुध्न्यो॑ रि॒षे धा॒दस्माकं॑ भूदुपमाति॒वनि॑ः १६ २५५
इति॑ चि॒न्नु प्रजा॑यै पशु॒मत्यै॒ देवा॑सो वनते॒ मर्त्यो॑ व॒ आ दे॑वासो वनते॒ मर्त्यो॑ वः ।
अत्रा॑ शि॒वां त॒न्वो॑ धासि॒मस्या॒ जरां॑ चि॒न्मे नि॒र्ऋति॑र्जग्रसीत १७
तां वो॑ देवाः सुम॒तिमू॒र्जय॑न्ती॒मिष॑मश्याम॒ वसवः॒ शसा॑ गोः ।
सा नः॑ सु॒दानु॑र्मृ॒ळय॑न्ती॒ देवी॒ प्रति॒ द्रव॑न्ती सु॒विता॑य॒ गम्याः १८ २५७

❀

अभि न इळा युथस्य माता स्मन्नदीभिरुर्वशी वा गृणातु ।
उर्वशी वा बृहद्दिवा गृणाना ऽभ्यूर्णवाना प्रभुथस्यायोः १९ २५८
सिषक्तु न ऊर्ज्व्यस्य पुष्टेः २०

॥२६॥ (ऋ० ५।४२।१-१०,१२-१८) त्रिष्टुप्, १७ एकपदा विराट् ।

प्र शंतमा वरुणं दीधिती गी—र्मित्रं भगमदितिं नूनमश्याः ।
पृषद्योनिः पञ्चहोता शृणोत्व—तूर्तपन्था असुरो मयोभुः १ २६०
प्रति मे स्तोममदितिर्जगृभ्यात् सूनुं न माता हृद्यं सुशेवम् ।
ब्रह्म प्रियं देवहितं यदस्त्य—हं मित्रे वरुणे यन्मयोभु २
उदीरय कवितमं कवीना—मुनत्तैनमभि मध्वा घृतेन ।
स नो वसूनि प्रयता हितानि चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ३
समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सं सूरिभिर्हरिवः सं स्वस्ति ।
सं ब्रह्मणा देवहितं यदस्ति सं देवानां सुमत्या यज्ञियानाम् ४
देवो भगः सविता रायो अंश इन्द्रो वृत्रस्य संजितो धनानाम् ।
ऋभुक्षा वाजो उत वा पुरंधि—रवन्तु नो अमृतासस्तुरासः ५
मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णो—रर्जूयतः प्र ब्रवामा कृतानि ।
न ते पूर्वे मघवन् नापरासो न वीर्यं१ नूतनः कश्चनाप ६ २६५
उप स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं बृहस्पतिं सनितारं धनानाम् ।
यः शंसते स्तुवते शंभविष्ठः पुरूवसुरागमज्जोहुवानम् ७
तवोतिभिः सचमाना अरिष्टा बृहस्पते मघवानः सुवीराः ।
ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वस्त्रदाः सुभगास्तेषु रायः ८
विसर्मणं कृणुहि वित्तमेषां ये भुञ्जते अपृणन्तो न उक्थैः ।
अपव्रतान् प्रसवे वावृधानान् ब्रह्मद्विषः सूर्याद् यावयस्व ९
य ओहते रक्षसो देववीता—वचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात ।
यो वः शमी शशमानस्य निन्दात् तुच्छयान् कामान् करते सिष्विदानः १०
दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभ्वतष्टाः ।
सरस्वती बृहद्दिवोत राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः १२
प्र सू महे सुशरणाय मेधां गिरं भरे नव्यसीं जायमानाम् ।
य आहना दुहितुर्वक्षणासु रूपा मिनानो अकृणोदिदं नः १३ २७१

प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं रुवन्तमिळस्पतिं जरितर्नूनमश्याः।
यो अब्दिमाँ उदनिमाँ इयर्ति प्र विद्युता रोदसी उक्षमाणः १४
एषः स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सूनूँर्युवन्यूरुदश्याः।
कामो राये हवते मा स्वस्त्युपं स्तुहि पृषदश्वाँ अयासः १५
प्रैषः स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं वनस्पतीँरोषधी राये अश्याः।
देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् १६
उरौ देवा अनिबाधे स्याम १७ २७५
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।
आ नो रयिं वहतमोत वीरान विश्वान्यमृता सौभगानि १८

॥२७॥ (ऋ० ५।४३।१-१७) त्रिष्टुप्, १६ एकपदा विराट्।

आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्था अमर्धन्तीरुप नो यन्तु मध्वा।
महो राये बृहतीः सप्त विप्रो मयोभुवो जरिता जोहवीति १
आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे।
पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम् २
अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि प्र वायवे भरत चारु शुक्रम्।
होतेव नः प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वो ररिमा ते मदाय ३
दश क्षिपो युञ्जते बाहू अद्रिं सोमस्य या शमितारा सुहस्ता।
मध्वो रसं सुभगास्तिगिरिष्टां चनिश्चदद् दुदुहे शुक्रमंशुः ४ २८०
अस्तावि ते जुजुषाणाय सोमः क्रत्वे दक्षाय बृहते मदाय।
हरी रथे सुधुरा योगे अर्वाग्इन्द्र प्रिया कृणुहि हूयमानः ५
आ नो महीमरमतिं सजोषा ग्नां देवीं नमसा रातहव्याम्।
मधोर्मदाय बृहतीमृतज्ञामाग्ने वह पथिभिर्देवयानैः ६
अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो न विप्रा वपावन्तं नाग्निना तपन्तः।
पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ठ आ घर्मो अग्निमृतयन्नसादि ७
अच्छा मही बृहती शंतमा गीर्दूतो न गन्त्वश्विना हुवध्यै।
मयोभुवा सरथा यातमर्वाग्गन्तं निधिं धुरमाणिर्न नाभिम् ८
प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्याहं पूष्ण उत वायोरदिक्षि।
या राधसा चोदितारा मतीनां या वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन् ९ २८५

आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वा—ना रूपेभिर्जातवेदो हुवानः ।
यज्ञं गिरो जरितुः सुष्टुतिं च विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती १० २८६
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा सरस्वती यजता गन्तु यज्ञम् ।
हवं देवी जुजुषाणा घृताची शग्मां नो वाचमुशती शृणोतु ११
आ वेधसं नीलपृष्ठं बृहन्तं बृहस्पतिं सदने सादयध्वम् ।
सादद्योनिं दम आ दीदिवांसं हिरण्यवर्णमरुषं सपेम १२
आ धर्णसिर्बृहद्दिवो रराणो विश्वेभिर्गन्त्वोमभिर्हुवानः ।
आ वसान ओषधीरमध्र—स्त्रिधातुशृङ्गो वृषभो वयोधाः १३
मातुष्पदे परमे शुक्र आयो—र्विपन्यवो रास्पिरासो अग्मन् ।
सुशेव्यं नमसा रातहव्याः शिशुं मृजन्त्यायवो न वासे १४ २९०
बृहद् वयो बृहते तुभ्यमग्ने धियाजुरो मिथुनासः सचन्त ।
देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् १५
उरौ देवा अनिबाधे स्याम १६
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं बहतमोत वीरा—ना विश्वान्यमृता सौभगानि १७

॥२८॥ (ऋ० ५।४४।१-१५)

(२९४-३०८) काश्यपोऽवत्सारः (१० क्षत्र-मनस-एवावद-यजत-सध्रि-अवत्साराः, ११ विश्ववार-यजत-मायी-अवत्साराः, १२ अवत्सारेण सह सदापृण-यजत-बाहुवृक्त-श्रुतवित्-तर्याः, १३ सुतंभरश्च)। जगती, १४-१५ त्रिष्टुप्।

तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदं स्वर्विदम् ।
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे गिरा ऽऽशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे १
श्रिये सुदृशीरुपरस्य याः स्व—र्विरोचमानः ककुभामचोदते ।
सुगोपा असि न दभाय सुक्रतो परो मायाभिर्ऋत आस नाम ते २ २९
अत्यं हविः सचते सच्च धातु चा—ऽरिष्टगातुः स होता सहोभरिः ।
प्रसर्स्राणो अनु बर्हिर्वृषा शिशु—र्मध्ये युवाजरो विस्रुहा हितः ३
प्र वं एते सुयुजो यामन्निष्टये नीचीरमुष्मै यम्यं ऋतावृधः ।
सुयन्तुभिः सर्वशासैरभीशुभिः क्रिविर्नामानि प्रवणे मुषायति ४
संजर्भुराणस्तरुभिः सुतेगृभं वयाकिनं चित्तगर्भासु सुस्वरुः ।
भरद्वाजेष्वज्रगाथ शोभसे वर्धस्व पत्नीरभि जीवो अध्वरे ५ १

यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते सं छायया दधिरे सिध्रयाप्स्वा ।
महीमस्मभ्यमुरुषामुरु ज्रयो बृहत् सुवीरमनपच्युतं सहः ६
वेत्यग्रुर्जानिवान् वा अति स्पृधः समर्यता मनसा सूर्यः कविः ।
घ्रंसं रक्षन्तं परि विश्वतो गय—मस्माकं शर्म वनवत् स्वावसुः ७ ३००
उयायासमस्य यतुनस्य केतुनं ऋषिस्वरं चरति यासु नाम ते ।
यादृश्मिन् धायि तमपस्यया विदद् य उ स्वयं वहते सो अरं करत् ८
समुद्रमासामव तस्थे अग्रिमा न रिष्यति सवनं यस्मिन्नायता ।
अत्रा न हार्दि क्रवणस्य रेजते यत्रा मतिर्विद्यते पूतबन्धनी ९
स हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभि—रेवाव्रदस्य यजतस्य सध्रेः ।
अवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः शर्विष्ठं वाजं विदुषा चिदर्ध्यम् १०
श्येन आसामदितिः कक्ष्यो३ मदो विश्ववारस्य यजतस्य मायिनः ।
समन्यमन्यमर्थयन्त्येतवे विदुर्विषाणं परिपानमन्ति ते ११
सदापृणो यजतो वि द्विषो वधीद् बाहुवृक्तः श्रुतवित् तर्यो वः सचा ।
उभा स वरा प्रत्येति भाति च यदीं गणं भजते सुप्रयावभिः १२ ३०५
सुतंभरो यजमानस्य सत्पति—र्विश्वासामूधः स धियामुदञ्चनः ।
भरद् धेनू रसवच्छिश्रिये पयो ऽनुब्रुवाणो अध्येति न स्वपन् १३
यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः १४
अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते ऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति ।
अग्निर्जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः १५

॥२९॥ (ऋ० ५।४५।१-११)

(३०९-१९) सदापृण आत्रेयः। त्रिष्टुप्।

विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थै—रायत्या उषसो अर्चिनो गुः ।
अपावृत व्रजिनीरुत् स्वर्गाद् वि दुरो मानुषीर्देव आवः १
वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सादो—र्वाद् गवां माता जानती गात् ।
धन्वर्णसो नद्यः खादोअर्णाः स्थूणेव सुमिता दंहत द्यौः २
अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूर्व्याय ।
वि पर्वतो जिहीत साधत द्यौ—राविवासन्तो दसयन्त भूमं ३ ३११

सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टे॒रिन्द्रा न्व॑ग्नी अवसे हुवध्यै ।
उक्थेभिर्हि ष्मा कवयः सुयज्ञा आविवासन्तो मरुतो यजन्ति ४ ३१२
एतो न्व॑द्य सुध्यो३ भवाम प्र दुच्छुना॑ मिनवामा वरीयः ।
आरे द्वेषांसि सनुतर्दधामा॒ऽयाम प्राञ्चो यजमानमच्छ ५
एता धियं कृणवामा सखायोऽप या माताँ ऋणुत व्रजं गोः ।
यया मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वणिग्वङ्कुरापा पुरीषम् ६
अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रि॒रार्चन् येन दश मासो नवग्वाः ।
ऋतं यती सरमा गा अविन्दद् विश्वानि सत्याङ्गिराश्चकार ७ ३१५
विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः सं यद् गोभिरङ्गिरसो नवन्त ।
उत्स आसां परमे सधस्थ ऋतस्य पथा सरमा विदद् गाः ८
आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यदस्योर्विया दीर्घयाथे ।
रघुः श्येनः पतयदन्धो अच्छा युवा कविर्दीदयद् गोषु गच्छन् ९
आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णोऽयुक्त यद्धरितो वीतपृष्ठाः ।
उद्ना न नावमनयन्त धीरा आशृण्वतीरापो अर्वागतिष्ठन् १०
धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षां ययातरन् दश मासो नवग्वाः ।
अया धिया स्याम देवगोपा अया धिया तुतुर्यामात्यंहः ११

॥३०॥ (ऋ० ५।४६।१-८)

(३२०-२७) प्रतिक्षत्र आत्रेयः । (७-८ देवपत्न्यः) । जगती; १,८ त्रिष्टुप् ।

हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम् ।
नास्या वश्मि विमुचं नावृतं पुन॒र्विद्वान् पथः पुरएत ऋजु नेषति १ ३२०
अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो ।
उभा नासत्या रुद्रो अध ग्राः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त २
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ अपः ।
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं सवितारमूतये ३
उत नो विष्णुरुत वातो अस्रिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत् ।
उत ऋभव उत राये नो अश्विनो॒त त्वष्टोत विभ्वानु मंसते ४
उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद् दिविक्षयं यजतं बर्हिरासदे ।
बृहस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद् वरूथ्यं॑ वरुणो मित्रो अर्यमा ५ ३२४

उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस्त्रामणे भुवन् ।
भगो विभक्ता शवसावसा गम दुरुव्यचा अदितिः श्रोतु मे हवम् ६ ३२५
देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये ।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत ७
उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीरिन्द्राण्यग्नाय्यश्विनी राट् ।
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम् ८

॥३१॥ (ऋ० ५।४७।१-७)

(३२८-३४) प्रतिरथ आत्रेयः । त्रिष्टुप् ।

प्रयुञ्जती दिव एति ब्रुवाणा मही माता दुहितुर्बोधयन्ती ।
आविर्वासन्ती युवतिर्मनीषा पितृभ्य आ सदने जोहुवाना १
अजिरासस्तदप ईयमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम् ।
अनन्तासः उरवो विश्वतः सीं परि द्यावापृथिवी यन्ति पन्थाः २
उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश ।
मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ३ ३३०
चत्वार ईं बिभ्रति क्षेमयन्तो दश गर्भं चरसे धापयन्ते ।
त्रिधातवः परमा अस्य गावो दिवश्चरन्ति परि सद्म अन्तान् ४
इदं वपुर्निवचनं जनास आरन्ति यन्नद्यस्तस्थुरापः ।
द्वे यदीं बिभृतो मातुरन्ये इहेह जाते यम्या सबन्धू ५
वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति ।
उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ ६
तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् ७
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय

॥३२॥ (ऋ० ५।४८।१-५)

(३३५-३९) प्रतिभानुरात्रेयः । जगती ।

कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वक्षत्राय स्वयशसे महे वयम् ।
आमेन्यस्य रजसो यदभ्र आँ अपो वृणाना वितनोति मायिनी १
ता अस्मत वयुनं वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वमा रजः ।
अपो अपाचीरपरा अपेजते प्र पूर्वाभिस्तिरते देवयुर्जनः २ ३३६

आ ग्रावभिरहन्यैभिरक्तुभि—र्वरिष्ठं वज्रमा जिघर्ति मायिनि ।
शतं वा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नहा ३ ३३७
तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्य—नीकमरुयं भुजे अस्य वर्पसः ।
सचा यदि पितुमन्तमिव क्षयं रत्नं दधाति भरहूतये विशे ४
स जिह्वया चतुरनीक ऋञ्जते चारु वसानो वरुणो यतन्नरिम् ।
न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयं यतो भगः सविता दाति वार्यम् ५

॥३३॥ (ऋ० ५।४९।१-५)

(३४०-४४) प्रतिप्रभ आत्रेयः, (५ तृणपाणिः) । त्रिष्टुप् ।

देवं वो अद्य सवितारमेषे भगं च रत्नं विभजन्तमायोः ।
आ वां नरा पुरुभुजा ववृत्यां दिवेदिवे चिदश्विना सखीयन् १ ३४०
प्रति प्रयाणमसुरस्य विद्वा—न्त्सुक्तैर्देवं सवितारं दुवस्य ।
उप ब्रुवीत नमसा विजान—ञ्ज्येष्ठं च रत्नं विभजन्तमायोः २
अदुत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर्वस्त उस्राः ।
इन्द्रो विष्णुर्वरुणो मित्रो अग्नि—रहानि भद्रा जनयन्त दस्माः ३
तन्नो अनर्वा सविता वरूथं तत् सिन्धव इषयन्तो अनु ग्मन् ।
उप यद् वोचे अध्वरस्य होता रायः स्याम पतयो वाजरत्नाः ४
प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दु—र्ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः ।
अवैत्वभ्वं कृणुता वरीयो दिवस्पृथिव्योरवसा मदेम ५

॥३४॥ (ऋ० ५।५०।१-५)

(३४५-६०) स्वस्त्यात्रेयः । अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

विश्वो देवस्य नेतु—र्मर्तो वुरीत सख्यम् । विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे १ ३४५
ते तं देव नेत—र्ये चेमाँ अनुशसे । ते राया ते ह्याऽपृचे सचेमहि सचध्यैः २
अतो न आ ननतिथा—नतः पत्नीर्दशस्यत ।
आरे विश्वं पथष्टां द्विषो युयोतु यूयुविः ३
यत्र वह्निरभिहितो दुद्रवद् द्रोण्यः पशुः । नृमणा वीरपस्त्यो ऽर्णा धीरेव सनिता ४
एष तं देव नेता रथस्पतिः शं रयिः ।
शं राये शं स्वस्तय इषःस्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे ५ ३४९

॥३५॥ (ऋ० ५।५१।१-३,८-१५)

१-३ गायत्री; ८-१० उष्णिक्; ११-१३ जगती त्रिष्टुब्वा; १४-१५ अनुष्टुप् ।

अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैरूमेभिरा गहि । देवेभिर्हव्यदातये १ ३५०
ऋतधीतय आ गत सत्यधर्माणो अध्वरम् । अग्नेः पिबत जिह्वया २
विप्रेभिर्विप्र सन्त्य प्रातर्यावभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये ३
सजूर्विश्वेभिर्देवेभिराश्विभ्यामुषसा सजूः । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण ८
सजूर्मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण ९
सजूरादित्यैर्वसुभिः सजूरिन्द्रेण वायुना । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण १० ३५५
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ११
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः १२
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः १३
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि १४
स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि १५ ३६०

॥३६॥ (ऋ० ६।२१।९,११)

(३६१-६२) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं मरुतः कृष्वावसे नो अद्य ।
प्र पूषणं विष्णुमग्निं पुरंधिं सवितारमोषधीः पर्वतांश्च ९
नू म आ वाचमुप याहि विद्वान् विश्वेभिः सूनो सहसो यजत्रैः ।
ये अग्निजिह्वा ऋतसाप आसुर्ये मनुं चक्रुरुपरं दसाय ११

॥३७॥ (ऋ० ६।४९।१-५)

(३६३-४२५) ऋजिश्वा भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, १५ शाक्करी ।

स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिर्गीर्भिर्मित्रावरुणा सुम्नयन्ता ।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः १
विशोविश ईड्यमध्वरेष्वदब्धक्रतुमरतिं युवत्योः ।
दिवः शिशुं सहसः सूनुमग्निं यज्ञस्य केतुमरुषं यजध्यै २ ३६४

अरुषस्य दुहितरा विरूपे स्तृभिरन्या पिंपिशे सूरो अन्या ।
मिथस्तुरा विचरन्ती पावके मन्म श्रुतं नक्षत ऋच्यमाने ३ ३६५
प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रयिं विश्ववारं रथप्राम् ।
द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविमियक्षसि प्रयज्यो ४
स मे वपुच्छदयदश्विनोर्यो रथो विरुक्मान् मनसा युजानः ।
येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ५
पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्याः पुरीषाणि जिन्वतमप्यानि ।
सत्यश्रुतः कवयो यस्य गीर्भिर्जगतः स्थातर्जगदा कृणुध्वम् ६
पावीरवी कन्या चित्रायुः सरस्वती वीरपत्नी धियं धात् ।
ग्नाभिरच्छिद्रं शरणं सजोषा दुराधर्षं गृणते शर्म यंसत् ७

पथस्पथः परिपतिं वचस्या कामेन कृतो अभ्यानळर्कम् ।
स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियं सीषधाति प्र पूषा ८ ३७०
प्रथमभाजं यशसं वयोधां सुप्राणिं देवं सुगभस्तिमृम्भ्वम् ।
होता यक्षद् यजतं पस्त्यानामग्निस्त्वष्टारं सुहवं विभावा ९
भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ ।
बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नमृधग्घुवेम कविनेषितासः १०
आ युवानः कवयो याह्यासो मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम् ।
अचित्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्त इत्था नक्षन्तो नरो अङ्गिरस्वत् ११
प्र वीराय प्र तवसे तुरायाजा युथेव पशुरक्षिरस्तम् ।
स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य स्तृभिर्न नाकं वचनस्य विप्रः १२

यो रजांसि विममे पार्थिवानि त्रिश्चिद् विष्णुर्मनवे बाधिताय ।
तस्य ते शर्मन्नुपदद्यमाने राया मदेम तन्वा३ तना च १३ ३७५
तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिरर्कैस्तत् पर्वतस्तत् सविता चनो धात् ।
तदोषधीभिरभि रातिषाचो भगः पुरंधिर्जिन्वतु प्र राये १४
नू नो रयिं रथ्यं चर्षणिप्रां पुरुवीरं मह ऋतस्य गोपाम् ।
क्षयं दाताजरं येन जनान्त्स्पृधो अदेवीरभि च क्रमाम
विश आदेवीरभ्य१श्चरेम १५ ३७७

॥३८॥ (ऋ० ६।५०।१-१५) त्रिष्टुप् ।

हुवे वो देवीमदितिं नमोभि—र्मृळीकाय वरुणं मित्रमग्निम् ।
अभिक्षदामर्यमणं सुशेवं त्रातॄन् देवान्त्सवितारं भगं च १
सुज्योतिषः सूर्य दक्षपितृ—ननागास्त्वे सुमहो वीहि देवान् ।
द्विजन्मानो य ऋतसापः सत्याः स्वर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः २
उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु बृहद् रोदसी शरणं सुषुम्ने ।
महस्करथो वरिवो यथा नो ऽस्मे क्षयाय धिषणे अनेहः ३ ३८०
आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्ता—मद्या हूतासो वसवोऽधृष्टाः ।
यद्वीमर्भे महति वा हितासो बाधे मरुतो अह्वाम देवान् ४
मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी सिषक्ति पूषा अभ्यर्धयज्वा ।
श्रुत्वा हवं मरुतो यद्ध याथ भूमा रेजन्ते अध्वनि प्रविक्ते ५

अभि त्यं वीरं गिर्वणसमर्चे—न्द्रं ब्रह्मणा जरितर्नवेन ।
श्रवदिद्धवमुप च स्तवानो रासद् वाजाँ उप महो गृणानः ६
ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धात तोकाय तनयाय शं योः ।
यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ७
आ नो देवः सविता त्रायमाणो हिरण्यपाणिर्यजतो जगम्यात् ।
यो दत्रवाँ उषसो न प्रतीकं व्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि ८ ३८५
उत त्वं सूनो सहसो नो अद्या देवाँ अस्मिन्नध्वरे ववृत्याः ।
स्यामहं ते सदमिद् रातौ तव स्याग्नेऽवसा सुवीरः ९
उत त्या मे हवमा जग्म्यातं नासत्या धीभिर्युवमङ्ग विप्रा ।
अत्रिं न महस्तमसोऽमुमुक्तं तूर्वतं नरा दुरितादभीके १०

ते नो रायो द्युमतो वाजवतो दातारो भूत नृवतः पुरुक्षोः ।
दशस्यन्तो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता अप्या मरुता च देवाः ११
ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषा मीळ्हुष्मन्तो विष्णुर्मृळन्तु वायुः ।
ऋभुक्षा वाजो दैव्यो विधाता पर्जन्यावाता पिप्यतामिषं नः १२
उत स्य देवः सविता भगो नो ऽपां नपादवतु दानु पार्प्रः ।
त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषा द्यौर्देवेभिः पृथिवी समुद्रैः १३ ३९०

उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात् पृथिवी समुद्रः ।
विश्वे देवा ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु १४ ३९१
एवा नपातो मम तस्य धीभिर्भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
मा हुतासो वसवोऽधृष्टा विश्वे स्तुतासो भूता यजत्राः १५

॥३९॥ (ऋ० ६।५१।१-१६) त्रिष्टुप्, १३-१५ उष्णिक्, १६ अनुष्टुप्।

उदु त्यच्चक्षुर्महि मित्रयोराँ एति प्रियं वरुणयोरदब्धम् ।
ऋतस्य शुचि दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदिता व्यद्यौत् १
वेद यस्त्रीणि विदथान्येषां देवानां जन्म सनुतरा च विप्रः ।
ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्नभि चष्टे सूरो अर्य एवान् २
स्तुष उ वो महऋतस्य गोपानदितिं मित्रं वरुणं सुजातान् ।
अर्यमणं भगमदब्धधीतीनच्छा वोचे सधन्यः पावकान् ३ ३९५

रिशादसः सत्पतीँरदब्धान् महो राज्ञः सुवसनस्य दातॄन् ।
यूनः सुक्षत्रान् क्षयतो दिवो नॄनादित्यान् याम्यदितिं दुवोयु ४
द्यौष्पितः पृथिवि मातरध्रुगग्ने भ्रातर्वसवो मृळता नः ।
विश्व आदित्या अदिते सजोषा अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त ५
मा नो वृकाय वृक्ये समस्मा अघायते रीरधता यजत्राः ।
यूयं हि ष्ठा रथ्यो नस्तनूनां गूयं दक्षस्य वचसो बभूव ६
मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत् कर्म वसवो यच्चयध्वे ।
विश्वस्य हि क्षयथ विश्वदेवाः स्वयं रिपुस्तन्वं रीरिषीष्ट ७
नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।
नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे ८ ४००

ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षानृतस्य पस्त्यसदो अदब्धान् ।
ताँ आ नमोभिरुरुचक्षसो नॄन् विश्वान्व आ नमे महो यजत्राः ९
ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उ न स्तिरो विश्वानि दुरिता नयन्ति ।
सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निर्ऋतधीतयो वक्मराजसत्याः १०
ते न इन्द्रः पृथिवी क्षामं वर्धन् पूषा भगो अदितिः पञ्च जनाः ।
सुशर्माणः स्ववसः सुनीथा भवन्तु नः सुत्रात्रासः सुगोपाः ११ ४०३

नू सद्मानं दिव्यं नंशिं देवा भारद्वाजः सुमतिं याति होता ।
आसानेभिर्यजमानो मियेधैर्देवानां जन्म वसूयुर्ववन्द १२
अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम् । दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् १३ ४०५
ग्रावाणः सोम नो हि कं सखित्वनाय वावशुः । जही न्यत्रिणं पणिं वृको हि षः १४
यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा १५
अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम् । येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु १६

॥४०॥ (ऋ० ६।५२।१-१७) त्रिष्टुप्, ७-१२ गायत्री, १४ जगती ।

न तद् दिवा न पृथिव्यानु मन्ये न यज्ञेन नोत शमीभिराभिः ।
उब्जन्तु तं सुभ्वः पर्वतासो नि हीयतामतियाजस्य यष्टा १
अतिं वा यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यः क्रियमाणं निनित्सात् ।
तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषमभि तं शोचतु द्यौः २ ४१०
किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां किमङ्ग त्वाहुरभिशस्तिपां नः ।
किमङ्ग नः पश्यसि निद्यमानान् ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिमस्य ३
अर्वन्तु मामुषसो जायमाना अर्वन्तु मा सिन्धवः पिन्वमानाः ।
अर्वन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासो ऽर्वन्तु मा पितरो देवहूतौ ४
विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
तथा करद् वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽवसागमिष्ठः ५

इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः सरस्वती सिन्धुभिः पिन्वमाना ।
पर्जन्यो न ओषधीभिर्मयोभू रग्निः सुशंसः सुहवः पितेव ६
विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत ७ ४१५
यो वो देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति । तं विश्व उप गच्छथ ८
उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये । सुमृळीका भवन्तु नः ९
विश्वे देवा ऋतावृधं ऋतुभिर्हवनश्रुतः । जुषन्तां युज्यं पयः १०

स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गण स्त्वष्टृमान् मित्रो अर्यमा । इमा हव्या जुषन्त नः ११
इमं नो अग्ने अध्वरं होतर्वयुनशो यज । चिकित्वान् दैव्यं जनम् १२
विश्वे देवाः शृणुतेमं हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ ।
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् १३ ४२१

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञिया उभे रोदसी अपां नपाच्च मन्म ।
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेष्विद् वो अन्तमा मदेम १४ ४११
ये के च ज्मा महिनो अहिमाया दिवो जज्ञिरे अपां सधस्थे ।
ते अस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षपं उस्रा वरिवस्यन्तु देवाः १५
अग्नीषोमेन्द्रावरुणा धियं मे ऽस्मिन् हवे सुहवा सुष्टुतिं नः ।
इळामन्यो जनयद् गर्ममन्यः प्रजावतीरिष आ धत्तमस्मे १६
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा नमसा विवासे ।
अस्मिन् नो अद्य विदथे यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम् १७ ४१५

॥४१॥ (ऋ० ७।३४।१-१५,१८-२५)

(४१६-५१०) मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । द्विपदा विराट्, २२-२५ त्रिष्टुप् ।

प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत् सुतष्टो रथो न वाजी १
विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अध क्षरन्तीः २
आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वी—र्वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः ३
आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वा—निन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः ४
अभि प्र स्थाताहेव युज्ञं यातेव पत्मन् त्मना हिनोत ५ ४२०
त्मना समत्सु हिनोत युज्ञं दधात केतुं जनाय वीरम् ६
उदस्य शुष्माद् भानुर्नार्त बिभर्ति भारं पृथिवी न भूम ७
ह्वयामि देवाँ अयातुरग्ने साधन्नृतेन धियं दधामि ८
अभि वो देवीं धियं दधिध्वं प्र वो देवत्रा वाचं कृणुध्वम् ९
आ चष्ट आसां पाथो नदीनां वरुण उग्रः सहस्रचक्षाः १० ४२५
राजा राष्ट्रानां पेशो नदीना—मनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायु ११
अविष्टो अस्मान् विश्वासु विक्ष्व—द्युं कृणोत शंसं निनित्सोः १२
व्येतु दिद्युद् द्विषामशेवा युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम् १३
अवीन्नो अग्निर्हव्यान्नमोभिः प्रेष्ठो अस्मा अधायि स्तोमः १४
सजूर्देवेभिरपां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु १५ ४४०
उत न एषु नृषु श्रवो धुः प्र राये यन्तु शर्धन्तो अर्यः १८
तपन्ति शत्रुं स्वर्ण भूमा महासेनासो अमेभिरेषाम् १९
आ यन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा त्वष्टा सुपाणिर्दधातु वीरान् २० ४४३

प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत स्यादस्मे अरमतिर्वसूयुः २१
ता नो रासन् रातिषाचो वसून्या रोदसी वरुणानी शृणोतु ।
वरूत्रीभिः सुशरणो नो अस्तु त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायः २२ ४४५
तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आपस्तद् रातिषाच ओषधीरुत द्यौः ।
वनस्पतिभिः पृथिवी सजोषा उभे रोदसी परि पासतो नः २३
अनु तद्यौ रोदसी जिहाता मनुर्यच्छो वरुण इन्द्रसखा ।
अनु विश्वे मरुतो ये सहासो रायः स्याम धरुणं धियध्यै २४
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निरापः ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः २५

॥४२॥ (ऋ० ७।३५।१-१५) त्रिष्टुप् ।

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ १
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु २ ४५०
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ३
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ४
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ५
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ६
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ७ ४५५
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ८
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ९ ४५७

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः १० ४५८
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ११
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु १२ ४६०
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा १३
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ।
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः १४
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः *१५

॥४३॥ (ऋ० ७।३६।१-९)

प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः ।
वि सानुना पृथिवी संस्र उर्वी पृथु प्रतीकमध्येधे अग्निः १
इमां वां मित्रावरुणा सुवृक्तिमिषं न कृण्वे असुरा नवीयः ।
इनो वामन्यः पदवीरदब्धो जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः २ ४६५
आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या अपीपयन्त धेनवो न सूदाः ।
महो दिवः सदने जायमानोऽचिक्रदद् वृषभः सास्मिन्नूधन् ३
गिरा य एता युनजद्धरी त इन्द्र प्रिया सुरथा शूर धायू ।
प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिनात्या सुक्रतुर्मर्यमणं ववृत्याम् ४
यजन्ते अस्य सख्यं वयश्च नमस्विनः स्व ऋतस्य धामन् ।
वि पक्षो बाबधे नृभिः स्तवान इदं नमो रुद्राय प्रेष्ठम् ५
आ यत् साकं यशसो वावशानाः सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता ।
याः सुष्वयन्त सुदुघाः सुधारा अभि स्वेन पयसा पीप्यानाः ६
उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना धियं तोकं च वाजिनोऽवन्तु ।
मा नः परि ख्यदक्षरा चरन्त्यवीवृधन् युज्यं ते रयिं नः ७ ४७०

* ऋ० ७,३५,१-१५ = अथर्व० १९,१०,१-१०; ११,१-५ ।

प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं प्र पूषणं विदथ्यं न वीरम् ।
भगं धियोऽवितारं नो अस्याः सातौ वाजं रातिषाचं पुरंधिम् ८
अच्छायं वो मरुतः श्लोक एत्व—च्छा विष्णुं निषिक्तपामवोभिः ।
उत प्रजायै गृणते वयो धु—र्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ९

॥४४॥ (ऋ० ७।३७।१-८)

आ वो वाहिष्ठो वहतु स्तवध्यै रथो वाजा ऋभुक्षणो अमृक्तः ।
अभि त्रिपृष्ठैः सवनेषु सोमै—र्मदे सुशिप्रा महोभिः पृणध्वम् १
यूयं ह रत्नं मघवत्सु धत्थ स्वर्दृशं ऋभुक्षणो अमृक्तम् ।
सं यज्ञेषु स्वधावन्तः पिबध्वं वि नो राधांसि मतिभिर्ददध्वम् २
उवोचिथ हि मघवन् देष्णं महो अर्भस्य वसुनो विभागे ।
उभा ते पूर्णा वसुना गभस्ती न सूनृता नि यमते वसव्या ३ ४७५
त्वमिन्द्र स्वयशा ऋभुक्षा वाजो न साधुरस्तमेष्यृक्वा ।
वयं नु ते दाश्वांसः स्याम ब्रह्म कृण्वन्तो हरिवो वसिष्ठाः ४
सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद् याभिर्विवेषो हर्यश्व धीभिः ।
ववन्मा नु ते युज्याभिरूती कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ५
वासयसीव वेधसस्त्वं नः कदा न इन्द्र वचसो बुबोधः ।
अस्तं तात्या धिया रयिं सुवीरं पृक्षो नो अर्वा न्युहीत वाजी ६
अभि यं देवी निर्ऋतिश्चिदीशे नक्षन्त इन्द्रं शरदः सुपृक्षः ।
उप त्रिबन्धुर्जरदष्टिमे—त्यस्ववेशं यं कृणवन्त मर्ताः ७
आ नो राधांसि सवितः स्तवध्या आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ ।
सदा नो दिव्यः पायुः सिषक्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ८ ४८०

॥४५॥ (ऋ० ७।३९।१-७)

ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत् प्रतीची जूर्णिर्दिवतातिमेति ।
भेजाते अद्री रथ्येव पन्था—मृतं होता न इषितो यजाति १
प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषा—मा विश्पतीव बीरिट इयाते ।
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् २
ज्मया अत्र वसवो रन्त देवा उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः ।
अर्वाक् पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य ३ ४८३

ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः सधस्थं विश्वे अभि सन्ति देवाः ।
ताँ अध्वर उशतो यक्ष्यग्ने श्रुष्टी भगं नासत्या पुरंधिम् ४ ४८४
आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्या मित्रं वह वरुणमिन्द्रमग्निम् ।
आर्यमणमदितिं विष्णुमेषां सरस्वती मरुतो मादयन्ताम् ५
ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां नक्षत् कामं मर्त्यानामसिन्वन् ।
धाता रयिमविदस्यं संदासां संक्षीमहि युज्येभिर्नु देवैः ६
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठ ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥४६॥ (ऋ० ७।४०।१-६)+

ओ श्रुष्टिर्विदथ्याइ समेतु प्रति स्तोमं दधीमहि तुराणाम् ।
यदद्य देवः सविता सुवाति स्यामास्य रत्निनो विभागे १
मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युभक्तमिन्द्रो अर्यमा ददातु ।
दिदेष्टु देव्यदितिं रेक्णो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च २
सेदुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्यं पृषदश्वा अवाथ ।
उतेमग्निः सरस्वती जुनन्ति न तस्य रायः पर्येतास्ति ३ ४९०
अयं हि नेता वरुण ऋतस्य मित्रो राजानो अर्यमापो धुः ।
सुहवा देव्यदितिरनर्वा ते नो अंहो अति पर्षन्नरिष्टान् ४
अस्य देवस्य मीळ्हुषो वया विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः
विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ५
मात्रे पूषन्नाघृण इरस्यो वरूत्री यद् रातिषाचश्च रासन् ।
मयोभुवो नो अर्वन्तो नि पान्तु वृष्टिं परिज्मा वातो ददातु ६

॥४७॥ (ऋ० ७।४१।१) जगती।×

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम १

॥४८॥ (ऋ० ७।४२।१-६) त्रिष्टुप् ।

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु ।
प्र धेनव उदप्रुतो नवन्त युज्यातामद्री अध्वरस्य पेशः १ ४९५

+ ऋ० ७.४० ७ = ऋ० ७,३९,७ । × ऋ० ७।४१।१ = अथर्व० ३।१६।१

सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा युक्ष्वा सुते हरितो रोहितश्च ।
ये वा सबभ्रू रुषा वीरवाहो हुवे देवानां जनिमानि सत्तः २
सद्मु वो यज्ञं महयन् नमोभिः प्र होता मन्द्रो रिरिच उपाके ।
यजस्व सु पुरुवणीक देवा ना यज्ञियाममर्तिं ववृत्याः ३
यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे स्योनशीरतिथिराचिकेतत् ।
सुप्रीतो अग्निः सुधितो दम आ स विशे दाति वार्यमियत्यै ४
इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रे यशसं कृधी नः ।
आ नक्तां बर्हिः सदतामुषासो शन्ता मित्रावरुणा यजेह ५
एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो रायस्कामो विश्वप्स्न्यस्य स्तौत् ।
इषं रयिं पप्रथद् वाजमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६ ५००

॥४९॥ (ऋ० ७।४३।१-५)

प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन् द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्यै ।
येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विष्वग्वियन्ति वनिनो न शाखाः १
प्र यज्ञ एतु होत्वो न सप्ति रुध्यच्छध्वं समनसो घृताचीः ।
स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधू ध्वा शोचींषि देवयून्यस्थुः २
आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः सानौ देवासो बर्हिषः सदन्तु ।
आ विश्वाची विदथ्यामनक्त्वग्ने मा नो देवताता मृधस्कः ३
ते सीषपन्त जोषमा यजत्रा ऋतस्य धाराः सुदुघा दुहानाः ।
ज्येष्ठं वो अद्य मह आ वृणा ना मा गन्तन समनसो यति ष्ठ ४
एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य त्वया वयं सहसावन्नास्क्राः ।
राया युजा संधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ ५०५

॥५०॥ (ऋ० ७।४४।१) जगती ।

दाधिक्रां वः प्रथममश्विनोषसमग्निं समिद्धं भगमूतये हुवे ।
इन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं मादित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः १

॥५१॥ (ऋ० ७।४८।४) त्रिष्टुप् ।

नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे सजोषाः ।
समुस्रे इषं वसवो ददीरन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ४ ५०७

॥५२॥ (ऋ० ७।५०।३) जगती ।

यच्छ॑ल्म॒लौ भव॑ति॒ यन्न॒दीषु॒ यदोष॑धीभ्यः॒ परि॒ जाय॑ते॒ विष॑म् ।
विश्वे॑ दे॒वा नि॒रि॒त॒स्तत् सु॑वन्तु॒ मा मां प॒द्येन॒ रप॑सा विदत् त्स॒रुः ३ ५०८

॥५३॥ (ऋ० ८।२५।१०-१२)

(५०९-५११) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक् ।

उ॒त नो॑ दे॒व्यदि॑ति॒—रु॒रु॒ष्यता॑ नास॒त्या । उ॒रु॒ष्यन्तु॑ म॒रुतो॑ वृद्धशं॒वसः १०
ते नो॑ नावमुरुष्यत॒ दिवा॒ नक्तं॑ सुदानवः । अरि॑ष्यन्तो॒ नि पा॒युभिः॑ सचेमहि ११ ५१०
अग्ने॑ते विष्णवे व॒य॒—मरि॑ष्यन्तः सु॒दान॑वे । श्रुधि स्व॑यावन्त्सिन्धो पू॒र्वचि॑त्तये १२

॥५४॥ (ऋ० ८।२७।१-२२)

(५१२-५२) मनुर्वैवस्वतः । प्रगाथः=(विषमा बृहती+समा सतोबृहती) ।

अग्नि॑रुक्थे पु॒रोहि॑तो॒ ग्रावा॑णो ब॒र्हिर॑ध्व॒रे ।
ऋचा या॑मि म॒रुतो॒ ब्रह्म॑ण॒स्पति॑ दे॒वाँ अवो॒ वरे॑ण्यम् १
आ प॒शुं गा॑सि पृथि॒वीं व॒न॒स्पती॒—नु॒षासा॒ नक्त॒मोष॑धीः ।
विश्वे॑ च नो॒ वस॑वो विश्ववेदसो॒ धी॒नां भू॑त प्रावि॒तार॑ः २
प्र सू न॑ एत्वध्व॒रो३॒ऽग्ना दे॒वेषु॑ पू॒र्व्यः ।
आदि॒त्येषु॒ प्र व॑रुणे धृतव्र॒ते म॒रुत्सु॑ वि॒श्वभा॑नुषु ३
विश्वे॒ हि ष्मा॒ मन॑वे विश्ववेदसो॒ भुव॑न् वृ॒धे रि॒शाद॑सः ।
अरि॑ष्टेभिः पा॒युभि॑र्विश्ववेदसो॒ यन्ता॑ नोऽवृ॒कं छ॒र्दिः ४ ५१५
आ नो॑ अ॒द्य सम॑नसो॒ गन्ता॒ विश्वे॑ स॒जोष॑सः ।
ऋचा॒ गिरा म॑रु॒तो दे॒व्यदि॑ते॒ सद॑ने॒ पस्त्ये॑ महि ५
अ॒भि प्रिया म॑रुतो॒ या वो॑ अश्व्या॑ ह॒व्या मि॑त्र प्रया॒थन॑ ।
आ ब॒र्हिरि॑न्द्रो॒ वरु॑ण॒स्तुरा॒ नर॑ आदि॒त्यास॑ः सदन्तु नः ६
व॒यं वो॑ वृ॒क्तब॑र्हिषो॒ हि॒तप्र॑यस आनु॒षक् ।
सु॒तसो॑मासो॒ वरु॑ण हवामहे॒ मनु॑ष्वदि॒द्धाग्न॑यः ७
आ प्र या॑त म॒रु॑तो॒ विष्णो॒ अश्वि॑ना॒ पूष॒न् माकी॑नया॒ धिया ।
इन्द्र॒ आ या॑तु प्रथ॒मः स॑नि॒ष्युभि॒—र्वृषा॒ यो वृ॑त्र॒हा गृ॒णे ८
वि नो॑ देवासो अद्रुहो ऽच्छि॒द्रं शर्म॑ यच्छत ।
त॒ र॒ त॒रात॑ सं॒सदो॒ न वि॑दन्ति॒तो॒ वृ॒क॒श॒या॒द॒र्ष॒ति ९ ५२०

अस्ति॒ हि वः॑ सजा॒त्यं॑ रिशादसो॒ देवा॑सो अस्त्याप्य॑म् ।
प्र णः॑ पू॒र्वस्मै॑ सुवि॒ताय॑ वोचत म॒क्षू सु॒म्नाय॑ नव्य॑से १०
इ॒दा हि व॒ उप॑स्तुति॒मिदा वा॒मस्य॑ भ॒क्तये॑ ।
उप॑ वो विश्ववेदसो नम॒स्यु॒राँ असृ॑क्ष्यन्या॒मिव ११
उदु॒ ष्य वः॑ सवि॒ता सु॑प्रणी॒तयो॒ऽस्थाद्दु॒र्धो वरे॑ण्यः ।
नि द्वि॒पाद॒श्चतु॑ष्पादो अ॒र्थिनो॒ऽविं॑श्रन् पतयि॒ष्णवः॑ १२
दे॒वंदे॑वं वोऽवसे दे॒वंदे॑वमभिष्टये ।
दे॒वंदे॑वं हुवेम वाज॒सातये॒ गृण॑न्तो दे॒व्या धि॒या १३
दे॒वासो॒ हि ष्मा मन॑वे सम॒न्यवो॒ विश्वे॑ सा॒कं सरा॑तयः ।
ते नो॑ अ॒द्य ते अप॑रं तु॒चे तु नो॒ भव॑न्तु वरिवो॒विदः॑ १४ ५२५
प्र वः॑ शंसाम्यद्रुहः सं॒स्थ उप॑स्तुतीनाम् ।
न तं धू॒र्तिर्वि॑रुण मित्र॒ मर्त्यं॒ यो वो॒ धाम॑भ्योऽवि॒धत् १५
प्र स क्षयं॑ तिरते॒ वि म॒हीरिषो॒ यो वो॒ वरा॑य दा॒शति ।
प्र प्र॒जाभि॑र्जायते॒ धर्म॑ण॒स्पर्य॒रिष्टः॑ सर्व॑ एधते १६
ऋ॒ते स वि॑न्दते यु॒धः सु॒गेभि॑र्या॒त्यध्व॑नः ।
अ॒र्य॒मा मि॒त्रो वरु॑णः सरा॒तयो॒ यं त्राय॑न्ते सजोषसः १७
अज्रे॑ चिदस्मै कृणुथा॒ न्यञ्च॑नं दु॒र्गे चि॒दा सु॑सर॒णम् ।
एषा चि॑दस्मादु॒शनिः॑ पु॒रो नु सास्रे॑धन्ती॒ वि न॑श्यतु १८
यदु॒द्य सूर्य॑ उ॒द्यति॒ प्रिय॑क्षत्रा ऋ॒तं दु॒ध ।
यन्नि॒म्रुचि॑ प्र॒बुधि॑ विश्ववेदसो॒ यद् वा॑ मध्यं॒दिने॑ दि॒वः १९ ५३०
यद् वा॑भि॒पित्वे॑ असुरा ऋ॒तं य॒ते छ॒र्दिर्येम॑ वि दा॒शुषे॑ ।
व॒यं तद् वो॑ वसवो विश्ववेदस॒ उप॑ स्थेयाम मध्य॒ आ २०
यदु॒द्य सूर॒ उदि॑ते॒ यन्म॑ध्यं॒दिन॑ आतु॒चि ।
वा॒मं ध॒त्थ मन॑वे विश्ववेदसो॒ जुह्वा॑नाय प्रचेतसे २१
व॒यं तद् वः॑ सम्राज॒ आ वृ॑णीमहे पु॒त्रो न ब॑हुपाय्य॑म् ।
अ॒श्याम॒ तदा॑दि॒त्या जु॒ह्वतो ह॒वि॒र्येन॒ वस्यो॒ऽनश॑माहै २२

॥५५॥ (ऋ० ८।२८।१-५) गायत्री, ४ पुरउष्णिक् ।

ये त्रिं॑शति त्रय॑स्परो॒ देवा॑सो ब॒र्हिरा॑स॒दन् । वि॒दन्नह॑ द्वि॒तास॑नन् १ ५३४

वरुणो मित्रो अर्यमा स्मद्रातिषाचो अग्नयः । पत्नीवन्तो वषट्कृताः २ ५३५
ते नो गोपा अपाच्या—स्त उदक्त इत्था न्यक् । पुरस्तात् सर्वया विशा ३
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत् तदेषां नकिरा मिनत् । अरावा चन मर्त्यः ४
सप्तानां सप्त ऋष्टयः सप्त द्युम्नान्येषाम् । सप्तो अधि श्रियो धिरे ५

॥५६॥ (ऋ० ८।२९।१–१०)

(कश्यपो वा मारीचः) । द्विपदा विराट् ।

बभ्रुरेको विषुणः सूनरो युवाङ्क्यङ्क्ते हिरण्ययम् । १
योनिमेक आ ससाद द्योतनो ऽन्तर्देवेषु मेधिरः १। २ ५४०
वाशीमेको बिभर्ति हस्त आयसीमन्तर्देवेषु निध्रुविः । ३
वज्रमेको बिभर्ति हस्त आहितं तेन वृत्राणि जिघ्नते २। ४
तिग्ममेको बिभर्ति हस्त आयुधं शुचिरुग्रो जलाषभेषजः । ५
पथ एकः पीपाय तस्करो यथाँ एष वेद निधीनाम् ३। ६
त्रीण्येक उरुगायो वि चक्रमे यत्र देवासो मदन्ति । ७ ५४५
विभिर्द्वा चरत एकया सह प्र प्रवासेव वसतः ४। ८
सदो द्वा चक्राते उपमा दिवि सम्राजा सर्पिरासुती । ९
अर्चन्त एके महि साम मन्वत तेन सूर्यमरोचयन् ५। १०

॥५७॥ (ऋ० ८।३०।१–४)

१ गायत्री, २ पुरउष्णिक्, ३ बृहती, ४ अनुष्टुप् ।

नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः । विश्वे सतोमहान्त इत् १
इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च । मनोर्देवा यज्ञियासः २ ५५०
ते नस्त्राध्वं तेऽवत त उ नो अधि वोचत ।
मा नः पथः पित्र्यान्मानवादधि दूरं नैष्ट परावतः ३
ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत ।
अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत ४

॥५८॥ (ऋ० ८।५४ [वाल० ६] ३–४)

(५५३–५४) मातरिश्वा काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती)

आ नो विश्वे सजोषसो देवासो गन्तनोप नः ।
वसवो रुद्रा अवसे न आ गम—न्छृण्वन्तु मरुतो हवम् ३ ५५३

पूषा विष्णुर्हवनं मे सरस्व॒त्यव॑न्तु स॒प्त सिन्धवः ।
आपो वातः पर्वतासो वन॒स्पतिः शृणोतु पृथिवी हव॑म् ४

॥५९॥ (ऋ० ८।५८ [वाल० १०] । १-३)

(५५५-५७) मेध्यः काण्वः । (१ ऋत्विजो वा) । त्रिष्टुप् ।

यमृत्विजो॑ बहुधा क॒ल्पय॑न्तः सचेतसो॒ यज्ञ॒मिमं वह॑न्ति ।
यो अ॑नूचा॒नो ब्राह्म॒णो युक्त आ॑सी॒त् का स्वि॒त् तत्र॒ यज॑मानस्य सं॒वित् १ ५५५
एक॑ एवाग्निर्बहु॒धा सम॑िद्ध॒ एक॒: सूर्यो॑ विश्व॒मनु॑ प्रभू॒तः ।
एकै॒वोषाः सर्व॑मि॒दं वि भा॒त्येकं॑ वा इ॒दं वि ब॑भूव॒ सर्व॑म् २
ज्योति॑ष्मन्तं के॒तुम॑न्तं॒ त्रिच॑क्रं सु॒खं रथं॑ सु॒षद॑ं भूरिवा॒रम् ।
चि॒त्रामघा॒ यस्य॒ योगे॑ऽधिजज्ञे॒ तं वो॑ हुवे अति॑ रिक्तं॒ पिब॑ध्यै ३

॥६०॥ (ऋ० ८।६९।११[पूर्वार्धः])

(५५८) प्रियमेध आङ्गिरसः । पंक्तिः ।

अपा॒दिन्द्रो॒ अपा॑दु॒ग्नि॒र्विश्वे॑ दे॒वा अ॑मत्सत । ११

॥६१॥ (ऋ० ८।८३।१-९)

(५५९-६७) कुसीदी काण्वः । गायत्री ।

दे॒वाना॒मिदवो॑ म॒हत् तदा वृ॑णीमहे व॒यम् । वृष्णा॑म॒स्मभ्य॑मू॒तये॑ १
ते नः॑ सन्तु युज॒: सदा॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा । वृ॒धास॑श्च प्रचेतसः २ ५६०
अति॑ नो विष्पि॒ता पु॒रु नौभि॒रपो॒ न प॑र्षथ । यू॒यमृ॒तस्य॑ रथ्यः ३
वा॒मं नो॑ अस्त्वर्यमन् वा॒मं व॑रुण शंस्य॑म् । वा॒मं ह्यावृ॑णीमहे ४
वा॒मस्य॒ हि प्र॑चेतस॒ ईशा॑नासो रिशादसः । नेमा॑दित्या अघस्य॒ यत् ५
व॒यमिद् वः॑ सुदानवः क्षि॒यन्तो॒ यान्तो॑ अध्व॒न्ना । देवा॑ वृधाय॑ हूमहे ६
अधि॑ न इन्द्रे॒षां विष्णो॑ सजा॒त्याना॑म् । इ॒ता म॑रुतो॒ अश्वि॑ना ७ ५६५
प्र भ्रा॑तृत्वं सु॒दान॑वो ऽध॑ द्वि॒ता स॑मा॒न्या । मा॒तुर्गर्भं॑ भरामहे ८
यू॒यं हि ष्ठा सु॑दानव॒ इन्द्र॑ज्येष्ठा अ॒भिद्य॑वः । अधा॑ चिद् व उ॒त ब्रु॑वे ९

॥६२॥ (ऋ० १०।३१।१-११)

(५६८-७९) कवष ऐलूषः । त्रिष्टुप् ।

आ नो॑ दे॒वाना॒मुप॑ वेतु शं॒सो विश्वे॑भिस्तु॒रैर॑वसे॒ यज॑त्रः ।
तेभि॑र्व॒यं सु॒षखा॑यो॒ भवे॑म॒ तर॑न्तो॒ विश्वा॑ दुरि॒ता स्याम १ ५६८

परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्या—दृतस्य पथा नमसा विवासेत् ।
उत स्वेन क्रतुना सं वदेत श्रेयांसं दक्षं मनसा जगृभ्यात् २ ५६९
अधायि धीतिरसृग्रमंशा—स्तीर्थे न दस्ममुप यन्त्यूमाः ।
अभ्यानश्म सुविताय शूषं नवेदसो अमृतानामभूम ३
नित्यश्चाकन्यात् स्वपतिर्दमूना यस्मा उ देवः सविता जजान ।
भगो वा गोभिर्यमेमनज्यात् सो अस्मै चारुश्छदयदुत स्यात् ४
इयं सा भूया उपसामिव क्षा यद्ध क्षुमन्तः शवसा समायन् ।
अस्य स्तुतिं जरितुर्भिक्षमाणा आ नः शग्मास उप यन्तु वाजाः ५
अस्येदेषा सुमतिः पप्रथाना ऽभवत् पूर्व्या भूमना गौः ।
अस्य सनीळा असुरस्य योनौ समान आ भरणे बिभ्रमाणाः ६
किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।
संतस्थाने अजरे इतऊती अहानि पूर्वीरुषसो जरन्त ७
नैतावदेना परो अन्यद—स्त्युक्षा स द्यावापृथिवी बिभर्ति ।
त्वचं पवित्रं कृणुत स्वधावान् यदीं सूर्यं न हरितो वहन्ति ८ ५७५
स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वीं मिहं न वातो वि ह वाति भूम ।
मित्रो यत्र वरुणो अज्यमानो ऽग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम् ९
स्तरीर्यत् सूते सद्यो अज्यमाना व्यथिरव्यथीः कृणुत स्वगोपा ।
पुत्रो यत् पूर्वैः पित्रोर्जनिष्ट शम्यां गौर्जिगार यद्ध पृच्छान् १०
उत कण्वे नृपदः पुत्रमाहु—रुत श्यावो धनमादत्त वाजी ।
प्र कृष्णाय रुशदपिन्वतोधा—ऋतमत्र नकिरस्मा अपीपेत् ११

॥६३॥ (ऋ० १०।३३।१)

प्र मा युयुज्र प्रयुजो जनानां वहामि स्म पूषणमन्तरेण ।
विश्वे देवासो अध मामरक्षन् दुःशासुनागादिति घोष आसीत् १

॥६४॥ (ऋ० १०।३५।१-१४)

(५८०-६०७) लुशो धानाकः । जगती, १३-१४ त्रिष्टुप् ।

अवुंध्रमु त्य इन्द्रवन्तो अग्नयो ज्योतिर्भरन्त उषसो व्युष्टिषु ।
महीं द्यावापृथिवी चेततामपो ऽद्या देवानामव आ वृणीमहे १ ५८०

दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे मातृन्तिसन्धून् पर्वताञ्छर्यणावतः ।
अनागास्त्वं सूर्यमुषासमीमहे भद्रं सोमः सुवानो अद्या कृणोतु नः २
द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां सुविताय मातरा ।
उषा उच्छन्त्यप बाधतामघं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ३
इयं न उस्रा प्रथमा सुदेव्यं रेवत् सनिभ्यो रेवती व्युच्छतु ।
आरे मन्युं दुर्विदत्रस्य धीमहि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ४
प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभिर्ज्योतिर्भरन्तीरुषसो व्युष्टिषु ।
भद्रा नो अद्य श्रवसे व्युच्छत स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ५
अनमीवा उषस आ चरन्तु न उदग्नयो जिहतां ज्योतिषा बृहत् ।
आयुक्षातामश्विना तूतुजिं रथं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ६ ५८५

श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्वरेण्यं भागमा सुव स हि रत्नधा असि ।
रायो जनित्रीं धिषणामुप ब्रुवे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ७
पिपर्तु मा तदृतस्य प्रवाचनं देवानां यन्मनुष्याꣳ अमन्महि ।
विश्वा इदुस्राः स्पळदिति सूर्यः स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ८
अद्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरीमणि ग्राव्णां योगे मन्मनः साध ईमहे ।
आदित्यानां शर्मणि स्था भुरण्यसि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ९
आ नो बर्हिः सधमादे बृहद्दिवि देवाँ ईळे सादया सप्त होतॄन् ।
इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे १०
त आदित्या आ गता सर्वतातये वृधे नो यज्ञमवता सजोषसः ।
बृहस्पतिं पूषणमश्विना भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ११ ५९०

तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम् ।
पश्वे तोकाय तनयाय जीवसे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे १२
विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः ।
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे १३
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं त्रायध्वे यं पिपृथात्यंहः ।
यो वो गोपीथे न भयस्य वेद ते स्याम देववीतये तुरासः १४ ५९३

॥६५॥ (ऋ० १०।३६।१-१४)

उषासानक्ता बृहती सुपेशसा द्यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
इन्द्रं हुवे मरुतः पर्वतॉं अप आदित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः १ ५९४
द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतस ऋतावरी रक्षतामंहसो रिषः ।
मा दुर्विदत्रा निर्ऋतिर्न ईशत तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे २
विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः ।
स्वर्वज्ज्योतिरवृकं नशीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ३
ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु दुष्ष्वप्न्यं निर्ऋतिं विश्वमत्रिणम् ।
आदित्यं शर्म मरुतामशीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ४
एन्द्रो बर्हिः सीदतु पिन्वतामिळा बृहस्पतिः सामभिर्ऋक्वो अर्चतु ।
सुप्रकेतं जीवसे मन्म धीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ५

दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना जीराध्वरं कृणुतं सुम्नमिष्टये ।
प्राचीनरश्मिमाहुतं घृतेन तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ६
उप ह्वये सुहवं मारुतं गणं पावकमूष्वं सख्याय शंभुवम् ।
रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ७ ६००
अपां पेरुं जीवधन्यं भरामहे देवाञ्यं सुहवंमध्वरश्रियम् ।
सुरश्मिं सोममिन्द्रियं यमीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ८
सनेम तत् सुसनितो सनित्वभि—र्वयं जीवा जीवपुत्रा अनागसः ।
ब्रह्मद्विषो विष्वगेनो भरेरत तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ९
ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन यद् वो देवा ईमहे तद् ददातन ।
जैत्रं क्रतुं रयिमद् वीरवद्यश—स्तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे १०

महद्यं महतामा वृणीमहे ऽवो देवानां बृहतामनर्वणाम् ।
यथा वसु वीरजातं नशामहै तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ११
महो अग्नेः समिधानस्य शर्म—ण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे १२
ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे मित्रस्य व्रते वरुणस्य देवाः ।
ते सौभगं वीरवद गोमदग्नो दधातन द्रविणं चित्रमस्मे १३ ६०१

सुविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताधरात्तात् ।
सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः १४

॥६६॥ (ऋ० १०।५२।१-६)
(६०८-१३) सौचीकोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह होता वृतो मनवै यन्निषद्य ।
प्र मे ब्रूत भागधेयं यथा वो येन पथा हव्यमा वो वहानि १
अहं होता न्यसीदं यजीयान् विश्वे देवा मरुतो मा जुनन्ति ।
अहरहरश्विनाध्वर्यवं वां ब्रह्मा समिद् भवति साहुतिर्वाम् २
अयं यो होता किरु स यमस्य कमप्यूहे यत् समञ्जन्ति देवाः ।
अहरहर्जायते मासिमास्य—थो देवा दधिरे हव्यवाहम् ३ ६१०
मां देवा दधिरे हव्यवाह—मपम्लुक्तं बहु कृच्छ्रा चरन्तम् ।
अग्निर्विद्वान् यज्ञं नः कल्पयाति पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् ४
आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुवीरं यथा वो देवा वरिवः करणि ।
आ बाह्वोर्वज्रमिन्द्रस्य धेया—मथेमा विश्वाः पृतना जयाति ५
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ६

॥६७॥ (ऋ० १०।५६।१-७)
(६१४-२०) बृहदुक्थो वामदेव्यः । त्रिष्टुप्, ४-६ जगती ।

इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।
संवेशने तन्वश्चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे १
तनूष्टे वाजिन् तन्वं नयन्ती वाममस्मभ्यं धातु शर्म तुभ्यम् ।
अहेतो महो धरुणाय देवान् दिवीव ज्योतिः स्वमा मिमीयाः २ ६१५
वाज्यसि वाजिनेना सुवेनीः सुवितः स्तोमै सुवितो दिवै गाः ।
सुवितो धर्मै प्रथमानु सत्या सुवितो देवान्त्सुवितोऽनु पत्म ३
महिम्न एषां पितरश्चनेशिरे देवा देवेष्वदधुरपि क्रतुम् ।
समविव्यचुरुत यान्यत्विषु रैषां तनूषु नि विविशुः पुनः ४
सहोभिर्विश्वं परि चक्रमू रजः पूर्वा धामान्यमिता मिमानाः ।
तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे प्रासारयन्त पुरुध प्रजा अनु ५ ६१८

द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्विदं मास्थापयन्त तृतीयेन कर्मणा ।
स्वां प्रजां पितरः पित्र्यं सह आवरेष्वदधुस्तन्तुमातंतम् ६ ६१९
नावा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
स्वां प्रजां बृहदुक्थो महित्वा ऽऽ वरेष्वदधादा परेषु ७

॥६८॥ (ऋ० १०।५७।१-६)

(६२१-२६) बन्धुः श्रुतबन्धुर्गौपायनाः । गायत्री ।

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः । मान्तः स्थुर्नो अरातयः १
यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः । तमाहुतं नशीमहि २
मनो न्वा हुवामहे नाराशंसेन सोमेन । पितॄणां च मन्मभिः ३
आ तं एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे । ज्योक् च सूर्यं दृशे ४
पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः । जीवं व्रातं सचेमहि ५ ६२५
वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ६

॥६९॥ (ऋ० १०।६१।१-२७)

(६२७-६०) नाभानेदिष्ठो मानवः । त्रिष्टुप् ।

इदमित्था रौद्रं गूर्तवचा ब्रह्म क्रत्वा शच्यामन्तराजौ ।
क्राणा यदस्य पितरा मंहनेष्ठाः पर्षत् पक्थे अहन्ना सप्त होतॄन् १
स इद् दानाय दभ्याय वन्वन्ऋजिश्वानः सूदैरमिमीत वेदिम् ।
तूर्वयाणो गूर्तवचस्तमः क्षोदो न रेत इतऊति सिञ्चत् २
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विप्राः शच्या वनुथो द्रवन्ता ।
आ यः शर्याभिस्तुविनृम्णो अस्याऽश्रीणीतादिशं गभस्तौ ३
कृष्णा यद् गोष्वरुणीषु सीदद् दिवो नपाताश्विना हुवे वाम् ।
वीतं मे यज्ञमा गतं मे अन्नं ववन्वांसा नेषमस्मृतध्रू ४ ६३०
प्रार्थिष्ट यस्य वीरकर्ममिष्णदनुष्ठितं नु नर्यो अपौहत् ।
पुनस्तदा वृहति यत् कनायां दुहितुरा अनुभृतमनर्वा ५
मध्या यत् कर्त्वमभवदभीके कामं कृण्वाने पितरि युवत्याम् ।
मनानग्रेतौ जहतुर्वियन्ता सानौ निषिक्तं सुकृतस्य योनौ ६
पिता यत् स्वां दुहितरमधिष्कन् क्ष्मया रेतः संजग्मानो नि षिञ्चत् ।
स्वाध्योऽजनयन् ब्रह्म देवा वास्तोष्पतिं व्रतपां निरतक्षन् ७ ६३३

स ईं वृषा न फेनमस्यदाजौ स्मदा परैदप दुध्रचेताः ।
सरत् पदा न दक्षिणा परावृङ् न ता नु मे पृशन्यो जगृभ्रे ८
मक्षू न वह्निः प्रजाया उपब्दि—रग्निं न नग्न उप सीददूधः ।
सनितेध्मं सनितोत वाजं स धर्ता जज्ञे सहसा यवीयुत् ९ ६३५
मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा ऋतं वदन्त ऋतयुक्तिमग्मन् ।
द्विबर्हसो य उप गोपमागु—रदक्षिणासो अच्युता दुदुक्षन् १०
मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो राधो न रेत ऋतामित् तुरण्यन् ।
शुचि यत् ते रेक्ण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्रियायाः ११
पश्वा यत् पश्चा वियुता बुधन्ते—ति ब्रवीति वक्तरी रराणः ।
वसोर्वसुत्वा कारवोऽनेहा विश्वे विवेष्टि द्रविणमुप क्षु १२
तदिन्वस्य परिषद्वानो अग्मन् पुरू सदन्तो नार्षदं बिभित्सन् ।
वि शुष्णस्य संग्रथितमनर्वा विदत् पुरुप्रजातस्य गुहा यत् १३
भगो ह नामोत यस्य देवाः स्वर्णे ये त्रिषधस्थे निषेदुः ।
अग्निर्ह नामोत जातवेदाः श्रुधी नो होतर्ऋतस्य होताध्रुक् १४ ६४०
उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता नासत्याविन्द्र गूर्तये यजध्यै ।
मनुष्वद् वृक्तबर्हिषे रराणा मन्दू हितप्रयसा विक्षु यज्यू १५
अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधा अपश्च विप्रस्तरति स्वसेतुः ।
स कक्षीवन्तं रेजयत् सो अग्निं नेमिं न चक्रमर्वतो रघुद्रु १६
स द्विबन्धुर्वैतरणो यष्टा सबर्धुं धेनुमस्वं दुहध्यै ।
सं यन्मित्रावरुणा वृञ्ज उक्थै—र्ज्येष्ठेभिर्यमणं वरूथैः १७
तद्बन्धुः सूरिर्दिवि ते धियंधा नाभानेदिष्ठो रपति प्र वेनन् ।
सा नो नाभिः परमास्य वा घा—ऽहं तत् पश्चा कतिथश्चिदास १८
इयं मे नाभिरिह मे सधस्थ—मिमे मे देवा अयमस्मि सर्वः ।
द्विजा अहं प्रथमजा ऋतस्ये—दं धेनुरदुहज्जायमाना १९ ६४५
अधासु मन्द्रो अरतिर्विभावा ऽवं स्यति द्विवर्तनिर्वनेषाट् ।
ऊर्ध्वा यच्छ्रेणिर्न शिशुर्दन् मक्षू स्थिरं शेवृधं सूत माता २०
अधा गाव उपमातिं कनाया अनु श्वान्तस्य कस्य चित् परेयुः ।
श्रुधि त्वं सुद्रविणो नस्त्वं या—ळाश्वघ्नस्य वावृधे सूनृताभिः २१ ६४७

अध॒ त्वमिन्द्र॒ विद्व॑यृ॒स्मान् म॒हो रा॒ये नृ॑पते वज्रबाहुः ।
रक्षा॑ च नो म॒घोनः॑ पा॒हि सू॒री—ननेहसस्ते हरिवो अभिष्टौ २२ ६४८
अध॒ यद् रा॑जाना॒ गवि॑ष्टौ॒ सर॑त् सर॒ण्युः का॒रवे॑ जर॒ण्युः ।
विप्रः॑ प्रे॒ष्ठः स ह्येषां॑ बभूव॒ परा॑ च वक्षदु॒त पर्ष॑देनान् २३
अधा॑ न्वस्य॒ जेन्य॑स्य पु॒ष्टौ वृ॒था रे॑भन्त ईमहे॒ तदु॒ नु ।
स॒र॒ण्युर॑स्य सू॒नुरश्वो॑ विप्र॒श्चासि॑ श्रव॑सश्च सा॒तौ २४ ६५०
यु॒वोर्यदि॑ स॒ख्याया॒स्मे शर्धा॑य॒ स्तोमं॑ जुजुषे नम॑स्वान् ।
वि॒श्व॒त्र यस्मि॒न्ना गिरः॑ समी॒चीः पू॒र्वीर्व॑ गा॒तुर्दा॑शत् सू॒नृता॑यै २५
स गृ॑णा॒नो अ॒द्भिर्दे॑व॒वानि॑ति सु॒बन्धु॑र्नमसा सू॒क्तैः ।
वर्धा॑दु॒क्थैर्व॑चो॒भिरा हि नूनं॑ व्यध्वै॒ति॒ पय॑स उ॒स्रिया॑यायाः २६
त ऊ॒ षु णो॑ म॒हो य॑जत्रा भूत देवास ऊ॒तये॑ स॒जोषाः॑ ।
ये वाजाँ॑ अन॑यता॒ वि॒यन्तो॒ ये स्था नि॑चे॒तारो॒ अमू॑राः २७

॥७०॥ (ऋ० १०।६२।१-७)

(१-६ अङ्गिरसो वा) । ५ अनुष्टुप्; प्रगाथः=(६ बृहती, ७ सतोबृहती) ।

ये य॒ज्ञेन॑ दक्षि॒णया॒ सम॑क्ता॒ इन्द्र॑स्य स॒ख्यम॑मृत॒त्वमा॑न॒श ।
तेभ्यो॑ भ॒द्रम॑ङ्गिरसो वो अस्तु॒ प्रति॑ गृभ्णीत मान॒वं सु॑मेधसः १
य उ॒दाज॑न् पि॒तरो॑ गो॒मय॑ं वस्व॒—तेनाभि॑न्दन् परि॒वत्स॒रे व॒लम् ।
दी॒र्घायु॑त्वम॑ङ्गिरसो वो अस्तु॒ प्रति॑ गृभ्णीत मान॒वं सु॑मेधसः २ ६५५
य ऋ॒तेन॒ सूर्य॑मारोहयन् दि॒व्य—प्रथयन् पृथि॒वी मा॒तर॑ं वि ।
सु॒प्र॒जास्त्वम॑ङ्गिरसो वो अस्तु॒ प्रति॑ गृभ्णीत मान॒वं सु॑मेधसः ३
अ॒यं नाभा॑ वदति व॒ल्गु वो॑ गृ॒हे देव॑पुत्रा ऋषय॒स्तच्छृ॑णोतन ।
सु॒ब्र॒ह्म॒ण्यम॑ङ्गिरसो वो अस्तु॒ प्रति॑ गृभ्णीत मान॒वं सु॑मेधसः ४
विरू॑पास इ॒दृष॑य॒—स्त इद् ग॑म्भी॒रवे॑पसः ।
ते अङ्गि॑रसः सु॒नव॒—स्ते अ॒ग्नेः परि॑ जज्ञिरे ५
ये अ॒ग्नेः परि॑ जज्ञिरे विरू॑पासो दि॒वस्परि॑ ।
नव॑ग्वो नु दश॑ग्वो अङ्गिर॒स्तमः॒ सचा॑ दे॒वेषु॑ मंहते ६
इन्द्रे॑ण यु॒जा निः सृ॑जन्त॒ वाघ॑तो व्र॒जं गोम॑न्तम॒श्विन॑म् ।
स॒हस्रं॑ मे ददतो अष्टकर्ण्य॒ः श्रवो॑ दे॒वेष्व॑क्रत ७ ६६०

॥७१॥ (ऋ० १०।६३।१-१४,१७)

(६६१-९१) गयः प्लातः । जगती, १७ त्रिष्टुप् ।

परावतो ये दिधिषन्त आप्यं मनुप्रीतासो जनिमा विवस्वतः ।
ययातेर्ये नहुष्यस्य बर्हिषि देवा आसते ते अधि ब्रुवन्तु नः १
विश्वा हि वो नमस्यानि वन्द्या नामानि देवा उत यज्ञियानि वः ।
ये स्थ जाता अदितेरज्यस्परि ये पृथिव्यास्ते म इह श्रुता हवम् २
येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नस—स्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ३
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ४
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययु—रपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभि—र्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ५ ६६१
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति ष्टुतः ।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद् यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ६
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ७
य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ८
भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहे—ऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ९
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागस—मस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये १० ६७०
विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ११
अपामीवामप विश्वामनाहुति—मपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयोतनो—रु णः शर्म यच्छता स्वस्तये १२
अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभि—रति विश्वानि दुरिता स्वस्तये १३ ६७३

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये १४ ६७४
एवा प्लतेः सूनुरवीवृधद् वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।
ईशानासो नरो अमर्त्येना ऽस्तावि जनो दिव्यो गयेन ×१७

॥७२॥ (ऋ० १०।६४।१-१६) जगती; १२,१६ त्रिष्टुप् ।

कथा देवानां कतमस्य यामनि सुमन्तु नाम शृण्वतां मनामहे ।
को मृळाति कतमो नो मयस्करत् कतम ऊती अभ्या ववर्तति १
क्रतूयन्ति क्रतवो हृत्सु धीतयो वेनन्ति वेनाः पतयन्त्या दिशः ।
न मर्डिता विद्यते अन्य एभ्यो देवेषु मे अधि कामा अयंसत २
नरा वा शंसं पूषणमगोह्यमग्निं देवेद्धमभ्यर्चसे गिरा ।
सूर्यामासा चन्द्रमसा यमं दिवि त्रितं वातमुषसमक्तुमश्विना ३
कथा कविस्तुवीरवान् कया गिरा बृहस्पतिर्वावृधते सुवृक्तिभिः ।
अज एकपात् सुहवेभिर्ऋक्वभिरहिः शृणोतु बुध्यो३ हवीमनि ४
दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि ।
अतूर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विषुरूपेषु जन्मसु ५ ६८०
ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः ।
सहस्रसा मेधसाताविव त्मना महो ये धने समिथेषु जभ्रिरे ६
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं स्तोमैः कृणुध्वं सख्याय पूषणम् ।
ते हि देवस्य सवितुः सवीमनि क्रतुं सचन्ते सचितः सचेतसः ७
त्रिः सप्त सस्रा नद्यो महीरपो वनस्पतीन् पर्वताँ अग्निमूतये ।
कृशानुमस्तॄन् तिष्यं सधस्थ आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे ८
सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिर्महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः ।
देवीरापो मातरः सूदयित्नवो घृतवत् पयो मधुमन्नो अर्चत ९
उत माता बृहद् दिवा शृणोतु न स्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः ।
ऋभुक्षा वाजो रथस्पतिर्भगो रण्वः शंसः शशमानस्य पातु नः १०
रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयो भद्रा रुद्राणां मरुतामुपस्तुतिः ।
गोभिः ष्याम यशसो जनेष्वा सदा देवास इळया सचेमहि ११ ६८६

×ऋ० १०,६३,१७ = ऋ० १०,६४,१७ ।

यां मे धियं मरुत इन्द्र देवा अददात वरुण मित्र यूयम् ।
तां पीपयत पयसेव धेनुं कुविद् गिरो अधि रथे वहाथ १२
कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः सजात्यस्य मरुतो बुबोधथ ।
नाभा यत्र प्रथमं संनसामहे तत्र जामित्वमदितिर्दधातु नः १३
ते हि द्यावापृथिवी मातरा मही देवी देवाञ्जन्मना यज्ञिये इतः ।
उभे बिभृत उभयं भरीमभिः पुरू रेतांसि पितृभिश्च सिञ्चतः १४
वि षा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं बृहस्पतिररमतिः पनीयसी ।
ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृह—दवीवशन्त मतिभिर्मनीषिणः १५ ६९०
एवा कविस्तुवीरवाँ ऋतज्ञा द्रविणस्युर्द्रविणसश्चकानः ।
उक्थेभिरत्र मतिभिश्च विप्रो ऽपीपयद् गयो दिव्यानि जन्म १६

॥७३॥ (ऋ० १०।६५।१-१५)

(६९२-७२०) वसुकर्णो वासुक्रः । जगती, १५ त्रिष्टुप् ।

अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा वायुः पूषा सरस्वती सजोषसः ।
आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत् सोमो रुद्रो अदितिर्ब्रह्मणस्पतिः १
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती मिथो हिन्वाना तन्वा३ समोकसा ।
अन्तरिक्षं मह्या पप्रुरोजसा सोमो घृतश्रीर्महिमानमीरयन् २
तेषां हि मह्ना महतामनर्वणां स्तोमाँ इयर्म्यृतज्ञा ऋतावृधाम् ।
ये अप्सवमर्णवं चित्ररांधस—स्ते नो रासन्तां महये सुमित्र्याः ३
स्वर्णरमन्तरिक्षाणि रोचना द्यावाभूमी पृथिवी स्कम्भुरोजसा ।
पृक्षा इव महयन्तः सुरातयो देवाः स्तक्षन्ते मनुषाय सूरयः ४ ६९५
मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे या सम्राजा मनसा न प्रयुच्छतः ।
ययोर्धाम धर्मणा रोचते बृहद् ययोरुभे रोदसी नाधसी वृतौ ५
या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीरवारतः ।
सा प्रबुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्धविषा विवस्वते ६
दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधः ऋतस्य योनिं विमृशन्त आसते ।
द्यां स्कभित्व्यप आ चक्रुरोजसा यज्ञं जनित्वी तन्वी३ नि मामृजुः ७
परिक्षिता पितरा पूर्वजावरी ऋतस्य योना क्षयतः समोकसा ।
द्यावापृथिवी वरुणाय सव्रते घृतवत् पयो महिषाय पिन्वतः ८ ६९९

पर्जन्यावाता वृषभा पुरीषिणेन्द्रवायू वरुणो मित्रो अर्यमा ।
देवाँ आदित्याँ अदितिं हवामहे ये पार्थिवासो दिव्यासो अप्सु ये ९ ७००
त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते दैव्या होतारा उषसं स्वस्तये ।
बृहस्पतिं वृत्रखादं सुमेधसमिन्द्रियं सोमं धनसा उ ईमहे १०
ब्रह्म गामश्वं जनयन्त ओषधीर्वनस्पतीन् पृथिवीं पर्वताँ अपः ।
सूर्यं दिवि रोहयन्तः सुदानव आर्षीं व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि ११
भुज्युमंहसः पिपृथो निरश्विना श्यावं पुत्रं वध्रिमत्या अजिन्वतम् ।
कमद्युवं विमदायोहथुर्युवं विष्णाप्वं विश्वकायावं सृजथः १२
पावीरवी तन्यतुरेकपादजो दिवो धर्ता सिन्धुरापः समुद्रियः ।
विश्वे देवासः शृणवन् वचांसि मे सरस्वती सह धीभिः पुरंध्या १३
विश्वे देवाः सह धीभिः पुरंध्या मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
रातिषाचो अभिषाचः स्वर्विदः स्वर्गिरो ब्रह्म सूक्तं जुषेरत १४ ७०५
देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः *१५

॥७४॥ (ऋ० १०।६६।१-१४)

देवान् हुवे बृहच्छ्रवसः स्वस्तये ज्योतिष्कृतो अध्वरस्य प्रचेतसः ।
ये वावृधुः प्रतरं विश्ववेदस इन्द्रज्येष्ठासो अमृता ऋतावृधः १
इन्द्रप्रसूता वरुणप्रशिष्टा ये सूर्यस्य ज्योतिषो भागमानशुः ।
मरुद्गणे वृजने मन्म धीमहि माघोने यज्ञं जनयन्त सूरयः २
इन्द्रो वसुभिः परि पातु नो गय मादित्यैर्नो अदितिः शर्म यच्छतु ।
रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृळयाति न स्त्वष्टा नो ग्नाभिः सुविताय जिन्वतु ३
अदितिर्द्यावापृथिवी ऋतं महदिन्द्राविष्णू मरुतः स्वर्बृहत् ।
देवाँ आदित्याँ अवसे हवामहे वसून् रुद्रान्त्सवितारं सुदंससम् ४ ७१०
सरस्वान् धीभिर्वरुणो धृतव्रतः पूषा विष्णुर्महिमा वायुरश्विना ।
ब्रह्मकृतो अमृता विश्ववेदसः शर्म नो यंसन् त्रिवरूथमंहसः ५
वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञिया वृषणो देवा वृषणो हविष्कृतः ।
वृषणा द्यावापृथिवी ऋतावरी वृषा पर्जन्यो वृषणो वृषस्तुभः ६ ७१२

* ऋ० १०,६५,१५=ऋ० १०,६६,१५ ।

अग्नीषोमा वृषणा वाजसातये पुरुप्रशस्ता वृषणा उप ब्रुवे ।
यावीजिरे वृषणो देवयज्यया ता नः शर्म त्रिवरूथं वि यंसतः ७
धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो बृहद्दिवा अध्वराणामभिश्रियः ।
अग्निहोतार ऋतसापो अद्रुहो ऽपो असृजन्ननु वृत्रतूर्ये ८
द्यावापृथिवी जनयन्नभि व्रता ऽऽप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया ।
अन्तरिक्षं स्वरा पप्रुरूतये वशे देवासस्तन्वी३ नि मामृजुः ९ ७१५
धर्तारौ दिव ऋभवः सुहस्ता वातापर्जन्या महिषस्य तन्यतोः ।
आप ओषधीः प्र तिरन्तु नो गिरो भगो रातिर्वाजिनो यन्तु मे हवम् १०
समुद्रः सिन्धू रजो अन्तरिक्षमज एकपात् तनयित्नुरर्णवः ।
अहिर्बुध्न्यः शृणवद् वचांसि मे विश्वे देवास उत सूरयो मम ११
स्याम वो मनवो देववीतये प्राञ्चो नो यज्ञं प्र णयत साधुया ।
आदित्या रुद्रा वसवः सुदानव इमा ब्रह्म शस्यमानानि जिन्वत १२
दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।
क्षेत्रस्य पतिं प्रतिवेशमीमहे विश्वान् देवाँ अमृताँ अप्रयुच्छतः १३
वसिष्ठासः पितृवद् वाचमक्रत देवाँ ईळाना ऋषिवत् स्वस्तये ।
प्रीता इव ज्ञातयः काममेत्या ऽस्मे देवासोऽवं धूनुता वसु १४ ७२०

॥७५॥ (ऋ० १०।९२।१-१५)
(७२१-३५) शार्यातो मानवः । जगती ।

यज्ञस्य वो रथ्यं विश्पतिं विशां होतारमक्तोरतिथिं विभावसुम् ।
शोचिष्केशं हरिणीषु जर्भुरद् वृषा केतुर्यजतो द्यामशायत १
इममञ्जस्पामुभये अकृण्वत धर्माणमग्निं विदथस्य साधनम् ।
अक्तुं न यह्वमुषसः पुरोहितं तनूनपातमरुषस्य निंसते २
बळस्य नीथा वि पणेश्च मन्महे वया अस्य प्रहुता आसुरत्वे ।
यदा घोरासो अमृतत्वमाशता दिजनस्य दैव्यस्य चर्किरन् ३
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरु व्यचो नमो मह्यरमतिः पनीयसी ।
इन्द्रो मित्रो वरुणः सं चिकित्रिरे ऽथो भगः सविता पूतदक्षसः ४
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धव स्तिरो महीमरमतिं दधन्विरे ।
येभिः परिज्मा परियन्नुरु ज्रयो वि रोरुवज्जठरे विश्वमुक्षते ५ ७२५

क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो दिवः श्येनासो असुरस्य नीळयः ।
तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमेन्द्रो देवेभिरर्वशेभिरर्वशः ६ ७२६
इन्द्रे भुजं शशमानास आशत सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये ।
प्र ये न्वस्यार्हणा ततक्षिरे युजं वज्रं नृपदनेषु कारवः ७
सूरश्चिदा हरितो अस्य रीरमदिन्द्रादा कश्चिद् भयते तवीयसः ।
भीमस्य वृष्णो जठरादभिश्वसो दिवेदिवे सहुरिः स्तन्नबाधितः ८
स्तोमं वो अद्य रुद्राय शिक्वसे क्षयद्वीराय नमसा दिदिष्टन ।
येभिः शिवः स्ववाँ एवयावभिर्दिवः सिषक्ति स्वयशा निकामभिः ९
ते हि प्रजाया अभरन्त वि श्रवो बृहस्पतिर्वृषभः सोमजामयः ।
यज्ञैरथर्वा प्रथमो वि धारयद् देवा दक्षैर्भृगवः सं चिकित्रिरे १० ७३०
ते हि द्यावापृथिवी भूरिरेतसा नराशंसश्चतुरङ्गो यमोऽदितिः ।
देवस्त्वष्टा द्रविणोदा ऋभुक्षणः प्र रोदसी मरुतो विष्णुरर्हिरे ११
उत स्य नः उशिजामुर्विया कविरहिः शृणोतु बुध्न्यो३ हवीमनि ।
सूर्यामासा विचरन्ता दिविक्षितां धिया शमीनहुषी अस्य बोधतम् १२
प्र नः पूषा चरथं विश्वदेव्यो ऽपां नपादवतु वायुरिष्टये ।
आत्मानं वस्यो अभि वातमर्चत तदश्विना सुहवा यामनि श्रुतम् १३
विशामासामभयानामधिक्षितं गीर्भिरु स्वयशसं गृणीमसि ।
याभिर्विश्वाभिरदितिमनर्वणमक्तोर्युवानं नृमणा अधा पतिम् १४
रेभदत्र जनुषा पूर्वो अङ्गिरा ग्रावाण ऊर्ध्वा अभि चक्षुरध्वरम् ।
येभिर्विहाया अभवद् विचक्षणः पाथः सुमेकं स्वधितिर्वनन्वति १५ ७३५

॥७६॥ (ऋ० १०।९३।१-१५)

(७३६-५०) तान्वः पार्थ्यः । प्रस्तारपङ्क्तिः; २-३,१३ अनुष्टुप्; ९ अक्षरैः पङ्क्तिः, ११ न्यङ्कुसारिणी, १५ पुरस्ताद्बृहती ।

महिं द्यावापृथिवी भूतमुर्वी नारी यह्वी न रोदसी सदं नः ।
तेभिर्नः पातं सह्यस एभिर्नः पातं शूषणि १
यज्ञेयज्ञे स मर्त्यो देवान्त्सपर्यति । यः सुम्नैर्दीर्घश्रुत्तम आविवासात्येनान् २
विश्वेषामिरज्यवो देवानां वाममहः । विश्वे हि विश्वमहसो विश्वे यज्ञेषु यज्ञियाः३
ते घा राजानो अमृतस्य मन्द्रा अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा ।
कद् रुद्रो नृणां स्तुतो मरुतः पूषणो भगः ४ ७३९

उत नो नक्तमपां वृषण्वसू सूर्यामासा सदनाय सधन्या ।
सचा यत् साद्येषा महिर्बुध्नेषु बुध्न्यः ५ ७४०
उत नो देवावश्विना शुभस्पती धामभिर्मित्रावरुणा उरुष्यताम् ।
महः स राय एषते ऽति धन्वेव दुरिता ६
उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना विश्वे देवासो रथस्पतिर्भगः ।
ऋभुर्वाज ऋभुक्षणः परिज्मा विश्ववेदसः ७
ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतो मद आ ते हरी जूजुवानस्य वाजिना ।
दृष्टरं यस्य सामं चिद् ऋधग् यज्ञो न मानुषः ८
कृधी नो अह्रयो देव सवितः स चं स्तुषे मघोनाम् ।
सहो न इन्द्रो वह्निभिर्न्येषां चर्षणीनां चक्रं रश्मिं न योयुवे ९
ऐषु द्यावापृथिवी धातं महदस्मे वीरेषु विश्वचर्षणि श्रवः ।
पृक्षं वाजस्य सातये पृक्षं रायोत तुर्वणे १० ७४५
एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्टं कृचित् सन्तं सहसावन्नभिष्टये सदा पाह्यभिष्टये ।
मेदतां वेदतां वसो ११
एतं मे स्तोमं तना न सूर्ये द्युतद्यामानं बावृधन्त नृणाम् ।
संवर्ननं नाश्व्यं तष्टेवानपच्युतम् १२
बावर्त येषां राया युक्तैषां हिरण्ययी ।
नेमधिता न पौंस्या वृथेव विष्टान्ता १३
प्र तद् दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु ।
ये युक्त्वाय पञ्च शता स्मयु पथा विश्राव्येषाम् १४
अधीन्ववत्रं सप्तथिं च सप्त च । सद्यो दिदिष्ट ताव्वः सद्यो दिदिष्ट पार्थ्यः
सद्यो दिदिष्ट मायवः १५ ७५०

॥७७॥ (ऋ० १०।१००।१-१२)

(७५१-६२) दुवस्युर्वान्दनः । जगती, १२ त्रिष्टुप् ।

इन्द्र दह्य मघवन् त्वावदिद् भुज इह स्तुतः सुतपा बोधि नो वृधे ।
देवेभिर्नः सविता प्रावतु श्रुत मा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे १
भराय सु भरत भागमृत्वियं प्र वायवे शुचिपे क्रन्ददिष्टये ।
गौरस्य यः पयसः पीतिमानश आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे २ ७५१

आ नो देवः सविता साविषद् वयं ऋजूयते यजमानाय सुन्वते ।
यथा देवान् प्रतिभूषेम पाकवदा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ३ ७५३
इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु विश्वहा राजा सोमः सुवितस्याध्येतु नः ।
यथायथा मित्राधितानि संदधुरा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ४
इन्द्रं उक्थेन शवसा परुर्दधे बृहस्पते प्रतरीतास्यायुषः ।
यज्ञो मनुः प्रमतिर्नः पिता हि कमा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ५ ७५५
इन्द्रस्य नु सुकृतं दैव्यं सहो ऽग्निर्गृहे जरिता मेधिरः कविः।
यज्ञश्च भूद् विदथे चारुरन्तम आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ६
न वो गुहा चकृम भूरि दुष्कृतं नाविष्यवे वसवो देवहेळनम् ।
माकिर्नो देवा अनृतस्य वर्पस आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ७
अपामीवां सविता साविषन्नयन् वरीय इदप सेधन्त्वद्रयः ।
ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ८
ऊर्ध्वो ग्रावा वसवोऽस्तु सोतरि विश्वा द्वेषांसि सनुतर्युयोत ।
स नो देवः सविता पायुरीड्य आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ९
ऊर्जं गावो यवसे पीवो अत्तन ऋतस्य याः सदने कोशे अङ्ध्वे ।
तनूरेव तन्वो अस्तु भेषजमा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे १० ७६०
क्रतुप्रावा जरिता शश्वतामव इन्द्र इद् भद्रा प्रमतिः सुतावताम् ।
पूर्णमूधर्दिव्यं यस्य सिक्तय आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ११
चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा अभिष्टिः सन्ति स्पृधो जरणिप्रा अधृष्टाः ।
राजिष्ठया रज्या पश्व आ गोस्तूतूर्षति पर्यग्रं दुवस्युः १२

॥७८॥ (ऋ० १०।१०१।१-१२)

(७६३-७४) बुधः सौम्यः । (ऋत्विजो वा)। त्रिष्टुप्; ४,६ गायत्री; ५ बृहती; ९-१२ जगती ।

उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीळाः ।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवमिन्द्रावतोऽवसे नि ह्वये वः १
मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नावमरित्रपरणीं कृणुध्वम् ।
इष्कृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राञ्चं यज्ञं प्र णयता सखायः २
युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम् ।
गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत् सृण्यः पक्वमेयात् ३ ७६५

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक् । धीरा देवेषु सुम्नया ४
निरहावान् कृणोतन सं वरत्रा दधातन ।
सिञ्चामहा अवतमुद्रिणं वयं सुषेकमनुपक्षितम् ५
इष्कृताहावमवतं सुवरत्रं सुषेचनम् । उद्रिणं सिञ्च अक्षितम् ६
प्रीणीताश्वान् हितं जयाथ स्वस्तिवाहं रथमित् कृणुध्वम् ।
द्रोणाहावमवतमश्मचक्रमंसत्रकोशं सिञ्चता नृपाणम् ७
व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्म सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।
पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दंहता तम् ८ ७७०
आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये देवीं देवा यजता यज्ञियामिह ।
सा नो दुहीयद् यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ९
आ तू षिञ्च हरिमीं द्रोरुपस्थे वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः ।
परि ष्वजध्वं दश कक्ष्यामि रुभे धुरौ प्रति वह्निं युनक्त १०
उभे धुरौ वह्निरापिब्दमानो ऽन्तर्योनेव चरति द्विजानिः ।
वनस्पतिं वन आस्थापयध्वं नि षू दधिध्वमखनन्त उत्सम् ११
कर्तृभरः कपृथमुद् दधातन चोदयत खुदत वाजसातये ।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाधं इह सोमपीतये १२

॥७९॥ (ऋ० १०।१०९।१-७)

(७७५-८१) जुहूर्ब्रह्मजाया, ब्राह्मः ऊर्ध्वसामा वा । त्रिष्टुप्, ६-७ अनुष्टुप् ।

तेऽवदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषे ऽकूपारः सलिलो मातरिश्वा ।
वीळुहरास्तप उग्रो मयोभू रापो देवीः प्रथमजा ऋतेन १ ७७५
सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छदहृणीयमानः ।
अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसी दग्निर्होता हस्तगृह्या निनाय २
हस्तेनैव ग्राह्य आधिरस्या ब्रह्मजायेयमिति चेदवोचन् ।
न दूताय प्रह्ये तस्थ एषा तथा राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य ३
देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसे ये निषेदुः ।
भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धां दधाति परमे व्योमन् ४
ब्रह्मचारी चरति वेविषद् विषः स देवानां भवत्येकमङ्गम् ।
तेन जायामन्वविन्दद् बृहस्पतिः सोमेन नीतां जुह्वं न देवाः ५ ७७९

पुनर्वै देवा अददुः पुनर्मनुष्या उत । राजानः सत्यं कृण्वाना ब्रह्मजायां पुनर्ददुः ६ ७८०
पुनर्दाय ब्रह्मजायां कृत्वी देवैर्निकिल्बिषम् । ऊर्जं पृथिव्या भक्त्वायोरुगायमुपासते ७

॥८०॥ (ऋ० १०।११४।१-१०)

(७८१-९१) सधिर्धैरूपो, घर्मो वा तापसः । त्रिष्टुप्, ४ जगती ।

घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतु—स्तयोर्जुष्टिं मातरिश्वा जगाम ।
दिवस्पयो दिधिषाणा अवेषन् विदुर्देवाः सहसामानमर्कम् १
तिस्रो देष्ट्राय निर्ऋतीरुपासते दीर्घश्रुतो वि हि जानन्ति वह्नयः ।
तासां नि चिक्युः कवयो निदानं परेषु या गुह्येषु व्रतेषु २
चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा घृतप्रतीका वयुनानि वस्ते ।
तस्यां सुपर्णा वृषणा नि षेदतु—र्यत्र देवा दधिरे भागधेयम् ३
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे ।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तित—स्तं माता रेळिह स उ रेळिह मातरम् ४ ७८५
सुपर्णं विप्राः कवयो वचोभि—रेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ।
छन्दांसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान्त्सोमस्य मिमते द्वादश ५
षट्त्रिंशाँश्च चतुरः कल्पयन्त—श्छन्दांसि च दधत आद्वादशम् ।
यज्ञं विमाय कवयो मनीष ऋक्सामाभ्यां प्र रथं वर्तयन्ति ६
चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य तं धीरा वाचा प्र णयन्ति सप्त ।
आप्नानं तीर्थं क इह प्र वोच—द्येन पथा प्रपिबन्ते सुतस्य ७
सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था यावद् द्यावापृथिवी तावदित् तत् ।
सहस्रधा महिमानः सहस्रं यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक् ८
कश्छन्दसां योगमा वेद धीरः को धिष्ण्यां प्रति वाचं पपाद ।
कमृत्विजामष्टमं शूरमाहु—र्हरी इन्द्रस्य नि चिकाय कः स्वित् ९ ७९०
भूम्या अन्तं पर्येकं चरन्ति रथस्य धुरं युक्तासो अस्थुः ।
श्रमस्य दायं वि भजन्त्येभ्यो यदा यमो भवति हर्म्ये हितः १०

॥८१॥ (ऋ० १०।१२६।१-८)

(७९२-९९) शैलूषिः कुलमलबर्हिषो, वामदेव्योऽहोमुग्वा । उपरिष्टाद्बृहती, ८ त्रिष्टुप् ।

न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयन्ति वरुणो अति द्विषः १ ७९२

तद्वि वयं वृणीमहे वरुण मित्रार्यमन् ।
येना निरंहसो यूयं पाथ नेथा च मर्त्यमति द्विषः २
ते नूनं नोऽयमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।
नर्यिष्ठा उ नो नेषणि पर्षिष्ठा उ नः पर्षण्यति द्विषः ३
यूयं विश्वं परि पाथ वरुणो मित्रो अर्यमा ।
युष्माकं शर्मणि प्रिये स्याम सुप्रणीतयोऽति द्विषः ४ ७९५
आदित्यासो अति स्रिधो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
उग्रं मरुद्भी रुद्रं हुवेमेन्द्रमग्निं स्वस्तयेऽति द्विषः ५
नेतार ऊ षु णस्तिरो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
अति विश्वानि दुरिता राजानश्चर्षणीनामति द्विषः ६
शुनमस्मभ्यमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।
शर्म यच्छन्तु सप्रथ आदित्यासो यदीमहे अति द्विषः ७
यथा ह त्यद् वसवो गौर्यं चित् पदि षिताममुञ्चता यजत्राः ।
एवो ष्वस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः ८

॥८२॥ (ऋ० १०।१२८।१-९)

(८००-८०८) विहव्य आङ्गिरसः । त्रिष्टुप्, ९ जगती ।

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ।
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम १ ८००
मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः ।
ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वातः पवतां कामे अस्मिन् २
मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः ।
दैव्या होतारो वनुषन्त पूर्वेऽरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः ३
मह्यं यजन्तु मम यानि हव्या ऽऽकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु ।
एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवासो अधि वोचता नः ४
देवीः षळुर्वीरुरु नः कृणोत विश्वे देवास इह वीरयध्वम् ।
मा हास्महि प्रजया मा तनूभिर्मा रधाम द्विषते सोम राजन् ५
अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषामदब्धो गोपाः परि पाहि नस्त्वम् ।
प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते ३मैषां चित्तं प्रबुधां वि नेशत् ६ ८०५

धाता धातॄणां भुवनस्य यस्पतिर्देवं त्रातारमभिमातिषाहम् ।
इमं यज्ञमश्विनोभा बृहस्पतिर्देवाः पान्तु यजमानं न्यर्थात् ७ ८०६
उरुव्यचा नो महिषः शर्म यंस दस्मिन् हवे पुरुहूतः पुरुक्षुः
स नः प्रजायै हर्यश्व मृळयेन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः ८
ये नः सपत्ना अप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव बाधामहे तान् ।
वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन् ९

॥८३॥ (ऋ० १०।१३७।१-७)

(८०९-१५) [सप्तर्षयः]- १ भरद्वाजः, २ कश्यपः, ३ गोतमः, ४ अत्रिः, ५ विश्वामित्रः, ६ जमदग्निः, ७ वसिष्ठः । अनुष्टुप् ।

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः । उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः १
द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः । दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद् रपः २ ८१०
आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः । त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ३
आ त्वागमं शन्तातिभिरथो अरिष्टतातिभिः । दक्षं ते भद्रमाभार्षं परा यक्ष्मं सुवामि ते ४
त्रायन्तामिह देवास्त्रायतां मरुतां गणः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ५
आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः । आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ६
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी ।
अनामयित्नुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि ७ ८१५

॥८४॥ (ऋ० १०।१४१।१-६)

(८१६-२१) अग्निस्तापसः । अनुष्टुप् ।

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव ।
प्र नो यच्छ विशस्पते धनदा असि नस्त्वम् १
प्र नो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः । प्र देवाः प्रोत सूनृता रायो देवी ददातु नः २
सोमं राजानमवसेऽग्निं गीर्भिर्हवामहे । आदित्यान् विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ३
इन्द्रवायू बृहस्पतिं सुहवेह हवामहे । यथा नः सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असत् ४
अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय । वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् ५ ८२०
त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय । त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ६

॥८५॥ (ऋ० १०।१५५।५)

(८२२) शिरिम्बिठो भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

परीमे गामनेषत पर्यग्निमहृषत । देवेष्वक्रत श्रवः क इमाँ आ दधर्षति ५ ८२२

॥८६॥ (ऋ० १०।१५७।१-५)×

(८२३-२७) भुवन आप्त्यः, साधनो वा भौवनः । द्विपदा त्रिष्टुप् ।

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः १
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चाऽऽदित्यैरिन्द्रः सह चीकॢपाति १। २
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम् ३ ८१५
हुत्वाय देवा असुरान् यदायन् देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः २। ४
प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्छचीभिरादित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ३। ५

॥८७॥ (ऋ० १०।१६५।१-५)

(८२८-३२) नैर्ऋतः कपोतः । त्रिष्टुप् ।

देवाः कपोत इषितो यदिच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम ।
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे १
शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनो गृहेषु ।
अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु २
हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मान्नाष्ट्र्यां पदं कृणुते अग्निधाने ।
शं नो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मा नो हिंसीदिह देवाः कपोतः ३ ८१०
यदुलूको वदति मोघमेतद् यत् कपोतः पदमग्नौ कृणोति ।
यस्य दूतः प्रहित एष एतत् तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे ४
ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदमिषं मदन्तः परि गां नयध्वम् ।
संयोपयन्तो दुरितानि विश्वा हित्वा न ऊर्जं प्र पतात् पतिष्ठः ५

॥८८॥ (ऋ० १०।१६७।३)

(८३३) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मणि ।
तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातर्विधातः कलशाँ अभक्षयम् ३

॥८९॥ (ऋ० १०।१८१।१-३)

(८३४-३६) १ प्रथो वासिष्ठः, २ सप्रथो भारद्वाजः, ३ घर्मः सौर्यः । त्रिष्टुप् ।

प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामाऽनुष्टुभस्य हविषो हविर्यत् ।
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णोः रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः १ ८१४

× वा० य० २५,४६; अथर्व० २०,६३,१-३; १२४,४-६; सा० ४५२,१११०-१२ ।

अविन्दन्ते अतिहितं यदासीद् यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् ।
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णोर्भरद्वाजो बृहदा चक्रे अग्नेः २ ८३५
तेऽविन्दन् मनसा दीध्यानाः यजुःष्कन्नं प्रथमं देवयानम् ।
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णोरा सूर्यादभरन् घर्ममेते ३

॥९०॥ (ऋ० १०।१८४।१-२)

(८३७-३८) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु । आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते १
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनौ देवावा धत्तां पुष्करस्रजा २

॥९१॥ [८३१-३६] (वा० य० २।१२-१३,१८)

एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव १२
मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु ।
विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ १३ ८४०
सꣳस्रवभागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठाः परिधेयाश्च देवाः ।
इमां वाचमभि विश्वे गृणन्त आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् १८

॥९२॥ (वा० य० ४।११)

दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहसꣳ सुतीर्था नो असद्वशे ।
ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षक्रतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ११

॥९३॥ (वा० य० ५।३०,३५)

इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि । ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि ३०
ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवानाꣳ समित् ३५

॥९४॥ (वा० य० ६।१९,२४)

घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ।
दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा १९ ८४५
विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ २४

॥९५॥ (वा० य० ७।२१)×

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः २१ ८४७

×वा० य० ७।१२,१९,३३-३४= तै० [विश्वे देवाः] २९४,९८,१,१६५,३१५; वा० य० ८,८ ।

॥९६॥ (वा० य० ८।१५,१९,४७,५७-५८)

समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सꣳ सूरिभिर्मघवन्त्सꣳ स्वस्त्या ।
सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति सं देवानाꣳ सुमतौ यज्ञियानाꣳ स्वाहा १५
याँ२ आवह उशतो देव देवाँस्तान् प्रेरय स्वे अग्ने सधस्थे ।
जक्षिवाꣳसः पपिवाꣳसश्च विश्वेऽसुं घर्मꣳ स्वरातिष्ठतानु स्वाहा १९
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जगच्छन्दसं गृह्णामि ४७ ८५०
विश्वे देवा अꣳशुषु न्युप्तः ५७। विश्वे देवाश्चमसेषून्नीतः ५८

॥९७॥ (वा० य० ९।३३)

विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयँस्तामुज्जेषम् ३३

॥९८॥ (वा० य० ११।५८,६०,६५)

विश्वे त्वा देवा वैश्वनराः कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ५८
विश्वे त्वा देवा वैश्वनरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ६० ८५५
विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा आच्छृन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ६५

॥९९॥ (वा० य० १२।७०)

घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः ।
ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमानास्मान्त्सीते पयसाभ्याववृत्स्व ७०

॥१००॥ (वा० य० १४।७,२०,२६)

सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः सजूर्विश्वैर्देवैः सजूर्देवैर्वयोनाधैरग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ७
अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता २०
ऋभूणां भागोऽसि विश्वेषां देवानामाधिपत्यं भूतꣳ स्पृतं त्रयस्त्रिꣳशः स्तोमः २६

॥१०१॥ (वा० य० १५।१४,५४)

अधिपत्न्यसि बृहती दिग्विश्वे ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिर्हेतीनां प्रतिधर्ता त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ त्वा स्तोमौ पृथिव्याꣳ श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे अव्यथायै स्तभ्नीताꣳ शाक्वररैवते सामनी प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु १४ ८६१

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च ।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत *५४ ८६२

॥१०२॥ (वा० य० १७।७३)

आजुह्वानः सुप्रतीकः पुरस्तादग्ने स्वं योनिमासीद साधुया ।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ७३

॥१०३॥ (वा० य० १८।७६)+

धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः । सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ७६

॥१०४॥ (वा० य० २०।११)

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिꣳशाः सुराधसः ।
बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे । देवा देवैरवन्तु मा ११ ८६५

॥१०५॥ (वा० य० २१।१७)

उषे यह्वी सुपेशसा विश्वे देवा अमर्त्याः । त्रिष्टुप् छन्द इहेन्द्रियं पष्ठवाड् गौर्वयो दधुः १७

॥१०६॥ (वा० य० २२।५,२८)

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि ५
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ×२८

॥१०७॥ (वा० य० २४।२७,४०)

विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान् २७। खड्गो वैश्वदेवः विश्वेषां देवानां पृषतः ४० ८७०

॥१०८॥ (वा० य० २५।५-६)*

पार्श्वं विश्वेषां देवानामुत्तरम् ५। विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा ६

॥१०९॥ (वा० य० २७।५२)

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद इन्द्राय हव्यम् । विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् २२

॥११०॥ (वा० य० २९।६०)

विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालः ६० ८७४

---

* वा० य० १८,६१ ।
+ वा० य० १८,३१; ३३,४४,५२-५३,७७,९१,९४; ३४,५३=दै० [विश्वे देवाः] ४८२,५९४,४२१,४१७, ५२६-२७,३९१ ।
× वा० य० ३९,१३ । * वा० य० २५।१४-२३,४३=दै० [विश्वे देवाः] १९-२८,८२७ ।

॥१११॥ (वा० य० ३६।१७)+

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव
शान्तिः सा मा शान्तिरेधि १७ ८७५

॥११२॥ (वा० य० ३९।६)

विश्वे देवा द्वादशे ६

॥११३॥ (अथर्व० १।९।१-२)※

(८७७-१०४३) अथर्वा । १ वसवः, इन्द्रः, पूषा, वरुणः, मित्रः, अग्निः, आदित्याः, विश्वे देवाः; २ देवाः, सूर्यः, अग्निः हिरण्यं । त्रिष्टुप् ।

अस्मिन् वसु वसवो धारयन्त्विन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः ।
इममादित्या उत विश्वे च देवा उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु १
अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिरस्तु सूर्यो अग्निरुत वा हिरण्यम् ।
सपत्ना अस्मदधरे भवन्तूत्तमं नाकमधि रोहयेमम् २

॥११४॥ (अथर्व० १।१५।१-४)

सिन्धवः, (वाताः, पतत्रिणः) । अनुष्टुप्, २ भुरिक्पथ्या पङ्क्तिः ।

सं सं स्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः ।
इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि १
इहैव हवमा यात म इह सँस्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः ।
इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रयिः २ ८८०
ये नदीनां संस्रवन्त्युत्सासः सदमक्षिताः । तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ३
ये सर्पिषः संस्रवन्ति क्षीरस्य चोदकस्य च । तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि४

॥११५॥ (अथर्व० १।२७।१-४)

(स्वस्त्ययनकामः) । चन्द्रमाः, इन्द्राणी च । अनुष्टुप्, १ पथ्यापङ्क्तिः ।

अमूः पारे पृदाकवस्निषप्ता निर्जीरायवः ।
तासां जरायुभिर्वयमक्ष्याऽवपि व्ययामस्यघायोः परिपन्थिनः १
विषूच्येतु कृन्तती पिनाकमिव बिभ्रती ।
विष्वक् पुनर्भुवा मनोऽसमृद्धा अघायवः २ ८८४

+अथर्व १९।९।१,१४;=दै० [विश्वे देवाः] १०६९,१०८२ । ※ अथर्व १,९,३-४=दै० [अग्निः] २१४१-४३।
दै० [विश्वे देवाः] ९

न बहवः समशकन् नार्भका अभि दाधृषुः । वेणोरद्रा इवाभितोऽसमृद्धा अघायवः ३ ८८५
प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं वहतं पृणतो गृहान् । इन्द्राग्नेतु प्रथमाजीतामुषिता पुरः ४

॥११६॥ (अथर्व० २।३४।१-५)

१ पशुपतिः, २ देवाः, ३ अग्निः विश्वकर्मा, ४ वायुः प्रजापतिः, ५ आशीः । त्रिष्टुप् ।

य ईशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत यो द्विपदाम् ।
निष्क्रीतः स यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानं सचन्ताम् १
प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो गातुं धत्त यजमानाय देवाः ।
उपाकृतं शशमानं यदस्थात् प्रियं देवानामप्येतु पाथः २
ये बध्यमानमनु दीध्याना अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च ।
अग्निष्टानग्रे प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः ३
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपा विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः ।
वायुष्टानग्रे प्र मुमोक्तु देवः प्रजापतिः प्रजया संरराणः ४ ८९०
प्रजानन्तः प्रतिं गृह्णन्तु पूर्वे प्राणमङ्गेभ्यः पर्याचरन्तम् ।
दिवं गच्छ प्रतिं तिष्ठा शरीरैः स्वर्गं याहि पथिभिर्देवयानैः ५

॥११७॥ (अथर्व० ३।३।२-३,५-६)+

२ इन्द्रः, ३ वरुणः सोमः इन्द्रः, ५ इन्द्राग्नी, विश्वे देवाः, ६ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, ३ चतुष्पदा भुरिक्पङ्क्तिः, ५-६ अनुष्टुप् ।

दूरे चित् सन्तमरुषास इन्द्रमा च्यावयन्तु सख्याय विप्रम् ।
यद् गायत्रीं बृहतीमर्कमस्मै सौत्रामण्या दधृषन्त देवाः २
अञ्जस्त्वा राजा वरुणो ह्वयतु सोमस्त्वा ह्वयतु पर्वतेभ्यः ।
इन्द्रस्त्वा ह्वयतु विड्भ्य आभ्यः श्येनो भूत्वा विश आ पतेमाः ३
ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः प्रतिं मित्रा अवृषत । इन्द्राग्नी विश्वे देवास्ते विशि क्षेममदीधरन् ५
यस्ते हवं विवदत् सजातो यश्च निष्ट्यः । अपाञ्चमिन्द्र तं कृत्वाथेममिहावं गमय ६

॥११८॥ (अथर्व० ३।४।१-२,४-७)*

इन्द्रः, २ पञ्च प्रदिशः, ४ अश्विनौ, मित्रावरुणौ, विश्वे देवाः, मरुतः, ५ द्यावापृथिवी । त्रिष्टुप्, १ जगती, ४-५ भुरिक् ।

आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसोदिहि प्राङ् विशां पतिरेकराट् त्वं वि राज ।
सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तूपसद्यो नमस्यो भवेह १ ८९६

+ अथर्व० ३,३,१,४=दै० [अग्निः] २१५९ । दै० [अश्विनौ] ६७२ । * अथर्व० ३,४,३=दै० [अग्निः] २१६० ।

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः ।
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि २
अश्विना त्वाग्ने मित्रावरुणोभा विश्वे देवा मरुतस्त्वा ह्वयन्तु ।
अधा मनो वसुदेयाय कृणुष्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि ४
आ प्र द्रव परमस्याः परावतः शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।
तदयं राजा वरुणस्तथाह स त्वायमह्वत् स उपेदमेहि ५
इन्द्रेन्द्र मनुष्याइ३ः परेहि सं ह्यज्ञास्था वरुणैः संविदानः ।
स त्वायमह्वत् स्वे सधस्थे स देवान् यक्षत् स उ कल्पयाद् विशः ६ ९००
पथ्या रेवतीर्बहुधा विरूपाः सर्वाः संगत्य वरीयस्ते अक्रन् ।
तास्त्वा सर्वाः संविदाना ह्वयन्तु दशमीमुग्रः सुमना वशेह ७

॥११९॥ (अथर्व० ३।८।१-६)

१ मित्रः, पृथिवी, वरुणः, वायुः, अग्निः; २ धाता, सविता, इन्द्रः, त्वष्टा, अदितिः; ३ सोमः, सविता, आदित्यः, अग्निः; ४ विश्वे देवाः, ५-६ सांमनस्यम् । त्रिष्टुप्; २,६ जगती; ४ चतुष्पदा विराड् बृहतीगर्भा, ५ अनुष्टुप् ।

आ यातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः संवेशयन् पृथिवीमुस्रियाभिः ।
अथास्मभ्यं वरुणो वायुरग्निर्बृहद् राष्ट्रं सवेश्यं दधातु १
धाता रातिः सवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः ।
हुवे देवीमदितिं शूरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्ठा यथासानि ×२
हुवे सोमं सवितारं नमोभिर्विश्वानादित्याँ अहमुत्तरत्वे ।
अयमग्निर्दीदायद् दीर्घमेव संजातैरिद्रोऽप्रतिब्रुवद्भिः ३
इहेदसाथ न परो गमाथेयो गोपाः पुष्टपतिर्व आजत् ।
अस्मै कामायोप कामिनीर्विश्वे वो देवा उपसंयन्तु ४ ९०५
सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि । अमी ये विव्रता स्थन तान् वः संनमयामसि ५
अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनु चित्तेभिरेत ।
मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्त्मान एत ६

॥१२०॥ (अथर्व० ३।१०।१,५-७,११-१३)*

अष्टका, १ धेनुः, ५ एकाष्टका, ६ जातवेदाः, पशवः, ७ रात्रिः, यज्ञाः, ११ देवाः, १२ इन्द्रः, देवाः, १३ प्रजापतिः । अनुष्टुप्; ५-६, १२ त्रिष्टुप्; ७ व्यवसाना षट्पदा विराड्गर्भातिजगती ।

प्रथमा ह व्युवास सा धेनुरभवद् यमे । सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् १ ३०८

×अथर्व० ३,८,२ = दै० [अदितिः०] ७०८। *अथर्व०३,१०,२-४,८-१० = दै०[अदितिः०]७०९,८८७,९४९,१०७५-७७।

वानस्पत्या ग्रावाणो घोषमक्रत हविष्कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् ।
एकाष्टके सुप्रजसः सुवीरा वयं स्याम पतयो रयीणाम् ५ ९०९
इडायास्पदं घृतवत् सरीसृपं जातवेदः प्रति हव्या गृभाय ।
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपास्तेषां सप्तानां मयि रन्तिरस्तु ६
आ मा पुष्टे च पोषे च रात्रि देवानां सुमतौ स्याम ।
पूर्णा दर्वे परा पत सुपूर्णा पुनरा पत । सर्वान् यज्ञान्त्संभुञ्जतीषमूर्जं न आ भर ७
इडया जुह्वतो वयं देवान् घृतवता यजे । गृहानलुभ्यतो वयं सं विशेमोप गोमतः ११
एकाष्टका तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम् ।
तेन देवा व्यसहन्त शत्रून् हन्ता दस्यूनामभवच्छचीपतिः १२
इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे दुहितासि प्रजापतेः । कामानस्माकं पूरय प्रति गृह्णाहि नो हविः १३

॥१२१॥ (अथर्व० ३।१५।१–८)

(पण्यकामः)। विश्वे देवाः, इन्द्राग्नी । त्रिष्टुप्, १ भुरिक्, ४ त्र्यवसाना षट्पदा बृहतीगर्भा विराडत्यष्टिः, ५ विराडजगती, ७ अनुष्टुप्, ८ निचृत् ।

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरएता नो अस्तु ।
नुदन्नरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम् १ ९१५
ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।
ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि २
इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय ।
यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् ३
इमामग्ने शरणिं मीमृषो नो यमध्वानमगाम दूरम् ।
शुनं नो अस्तु प्रपणो विक्रयश्च प्रतिपणः फलिनं मा कृणोतु ।
इदं हव्यं संविदानौ जुषेथां शुनं नो अस्तु चरितमुत्थितं च ४
येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।
तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्ने सातघ्नो देवान् हविषा नि षेध ५
येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।
तस्मिन् म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः ६ ९२०
उप त्वा नमसा वयं होतर्वैश्वानर स्तुमः। स नः प्रजास्वात्मसु गोषु प्राणेषु जागृहि ७
विश्वाहा ते सदमिद् भरेमाश्वायेव तिष्ठते जातवेदः ।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम ८ ९२२

॥१२२॥ (अथर्व० ५।८।१-९)×

नानादैवत्यं; १-२ अग्निः, ३ विश्वे देवाः, ४-९ इन्द्रः । अनुष्टुप्, २ त्र्यवसाना षट्पदा जगती, ३-४ भुरिक्पथ्यापङ्क्तिः, ६ आस्तारपङ्क्तिः, ७ द्व्युष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः, ९ त्र्यवसाना षट्पदा द्व्युष्णिग्गर्भा जगती ।

वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्य आज्यं वह । अग्ने तां इह मादय सर्व आ यन्तु मे हवम् १
इन्द्रा याहि मे हवमिदं करिष्यामि तच्छृणु ।
इम ऐन्द्रा अतिसरा आकूतिं सं नमन्तु मे । तेभिः शकेम वीर्यं१ जातवेदस्तनूवशिन् २
यदुसावमुतो देवा अदेवः संश्चिकीर्षति ।
मा तस्याग्निर्हव्यं वाक्षीद्वयं देवा अस्य मोप गुर्ममैव हवमेतन ३ ९१५
अति धावतातिसरा इन्द्रस्य वचसा हत ।
अविं वृकं इव मथ्रीत स वो जीवन्मा मोचि प्राणमस्यापि नह्यत ४
यममी पुरोदधिरे ब्रह्माणमपभूतये । इन्द्र स तं अधस्पदं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे ५
यदिं प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म वर्माणि चक्रिरे ।
तनूपानं परिपाणं कृण्वाना यदुपोचिरे सर्वं तदरसं कृधि ६
यानुसावतिसरांश्चकार कृणवच्च यान् ।
त्वं तानिन्द्र वृत्रहन् प्रतीचः पुनरा कृधि यथामुं तृणहां जनम् ७
यथेन्द्र उद्वाचनं लब्ध्वा चक्रे अधस्पदम् । कृण्वे३हमधरांस्तथामूंछश्वतीभ्यः समाभ्यः ८ ९३०
अत्रैनानिन्द्र वृत्रहन्नुग्रो मर्मणि विध्य । अत्रैवैनानभि तिष्ठेन्द्र मेघ्य१हं तव ।
अनु त्वेन्द्रा रभामहे स्याम सुमतौ तव ९

॥१२३॥ (अथर्व० ६।३।१-३)

१ इन्द्रापूषणौ, अदितिः, मरुतः, अपां नपात्, सिन्धवः, विष्णुः, द्यौः; २ द्यावापृथिवी, ग्रावा, सोमः, सरस्वती, अग्निः; ३ अश्विनौ, उषासानक्ता, अपां नपात्, त्वष्टा । जगती, १ पथ्याबृहती ।

पातं न इन्द्रापूषणादितिः पान्तु मरुतः ।
अपां नपात् सिन्धवः सप्त पातन पातु नो विष्णुरुत द्यौः १
पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः ।
पातु नो देवी सुभगा सरस्वती पात्वग्निः शिवा ये अस्य पायवः २
पातां नो देवाश्विना शुभस्पती उषासानक्तोत न उरुष्यताम् ।
अपां नपादभिहुती गयस्य चिद् देव त्वष्टर्वर्धय सर्वतातये ३ ९३४

× अथर्व० ५,८,१-३=दै० [अग्निः] २१६३-६५।

॥१२४॥ (अथर्व० ६।४।१-३)+

१ त्वष्टा, पर्जन्यः, ब्रह्मणस्पतिः, अदितिः २ अंशः, भगः, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, अदितिः, मरुतः; ३ अश्विनौ, द्यौष्पिता। पथ्याबृहती, २ संस्तारपङ्क्तिः, ३ त्रिपदा विराड्गायत्री ।

त्वष्टा मे दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः । पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रायमाणं सहः१ ९३५
अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमादितिः पान्तु मरुतः ।
अप तस्य द्वेषो गमेदभिह्रुतो यावयच्छत्रुमन्तितम् २
धिये समश्विना प्रावतं न उरुष्या णं उरुज्मन्नप्रयुच्छन् । द्यौ३ष्पितर्यावयं दुच्छुना या ३

॥१२५॥ (अथर्व० ६।५।३)

अग्निः, सोमः, ब्रह्मणस्पतिः । अनुष्टुप् ।

यस्य कृण्मो हविर्गृहे तमग्ने वर्धया त्वम् । तस्मै सोमो अधि ब्रवदयं च ब्रह्मणस्पतिः ३

॥१२६॥ (अथर्व० ६।४०।१-३)

१ द्यावापृथिवी, सोमः, सविता, अन्तरिक्षं, सप्तऋषयः; २ सविता, इन्द्रः; ३ इन्द्रः ।
१-२ जगती, ३ अनुष्टुप् ।

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नोऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु ।
अभयं नोऽस्तूर्वन्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हविषाऽभयं नो अस्तु १
अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्र ऊर्जं सुभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु ।
अशत्रिन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्यत्र राज्ञामभि यातु मन्युः २ ९४०
अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात् । इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि ३

॥१२७॥ (अथर्व० ६।६२।१-३)

रुद्रः, वैश्वानरः, वातः, द्यावापृथिवी । त्रिष्टुप् ।

वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु वातः प्राणेनेषिरो नमोभिः ।
द्यावापृथिवी पयसा पयस्वती ऋतावरी यज्ञिये नः पुनीताम् १
वैश्वानरीं सूनृतामा रभध्वं यस्या आशास्तन्वो वीतपृष्ठाः ।
तया गृणन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम् २
वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।
इहेडया सधमादं मदन्तो ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम् ३

॥१२८॥ (अथर्व० ६।६४।१-३)

सांमनस्यम्, १ विश्वे देवाः । अनुष्टुप्, (२ त्रिष्टुप्)।

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते १ ९४५

+अथर्व० ६,४,१-२,३=दै० [अदितिः०] ७०४,८०८ । दै० [अश्विनौ] ६७३ ।

समानो मन्त्रः सामितिः समानी समानं व्रतं सह चित्तमेषाम् ।
समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम् २
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः । समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ३

॥१२९॥ (अथर्व० ६।६८।१-३)

१ सविता, आदित्याः, रुद्राः, वसवः; २ अदितिः, आपः, प्रजापतिः; ३ सविता, सोमः, वरुणः ।
१ पुरोविराडतिशाक्करगर्भा चतुष्पदा जगती; २ अनुष्टुप्; ३ अतिजगतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

आयमगन्त्सविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदकेनेहि ।
आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसः सोमस्य राज्ञो वपत प्रचेतसः १
अदितिः श्मश्रु वपत्वाप उन्दन्तु वर्चसा । चिकित्सतु प्रजापतिर्दीर्घायुत्वाय चक्षसे २
येनावपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान् ।
तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्ववानयमस्तु प्रजावान् ३ ९५०

॥१३०॥ (अथर्व० ६।७३।१-३)

सांमनस्यम्, वरुणसोमाग्निबृहस्पतिवसवः, ३ वास्तोष्पतिः । १,३ भुरिक्; २ त्रिष्टुप् ।

एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु ।
अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः १
यो वः शुष्मो हृदयेष्वन्तराकूतिर्या वो मनसि प्रविष्टा ।
तान्त्सीव्यामि हविषा घृतेन मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु २
इहैव स्त मापं याताध्यस्मत् पूषा परस्तादपथं वः कृणोतु ।
वास्तोष्पतिरनु वो जोहवीतु मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु ३

॥१३१॥ (अथर्व० ६।७४।१-३)

सांमनस्यम्, नाना देवताः, त्रिणामा । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप् ।

सं वः पृच्यन्तां तन्वः सं मनांसि समु व्रता । सं वोऽयं ब्रह्मणस्पतिर्भगः सं वो अजीगमत् १
संज्ञपनं वो मनसोऽथो संज्ञपनं हृदः । अथो भगस्य यच्छान्तं तेन संज्ञपयामि वः २ ९५५
यथादित्या वसुभिः संबभूवुर्मरुद्भिरुग्रा अहृणीयमानाः ।
एवा त्रिणामन्नहृणीयमान इमान् जनान्त्संमनसस्कृधीह ३

॥१३२॥ (अथर्व० ६।९७।१,३)

देवाः । १ त्रिष्टुप्; ३ भुरिक् ।

अभिभूर्यज्ञो अभिभूरग्निरभिभूः सोमो अभिभूरिन्द्रः ।
अभ्यहं विश्वाः पृतना यथासान्येवा विंशेमाग्निहोत्रा इदं हविः १ ९५७

इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ।
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजसा ×३ ९५८

॥१३३॥ (अथर्व० ६।९९।१-३)

इन्द्रः, सोमः सविता च । अनुष्टुप्, ३ भुरिग्बृहती (सौम्या सावित्री) ।

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वाहूरणाद्धुवे । हुवाम्युग्रं चेत्तारं पुरुणामानमेकजम् १
यो अद्य सेन्यो वधो जिघांसन् न उदीरते । इन्द्रस्य तत्र बाहू समन्तं परि दध्मः २ ९६०
परि दध्म इन्द्रस्य बाहू समन्तं त्रातुस्त्वायतां नः । देव सवितः सोम राजन्त्सुमनसं मा कृणु स्वस्तये ३

॥१३४॥ (अथर्व० ७।७०।१-५)

श्येनः, देवाः । १ त्रिष्टुप्, २ अतिजगतीगर्भा जगती, ३-५ अनुष्टुप्
(३ पुरःककुम्मती) ।

यत् किं चासौ मनसा यच्च वाचा यज्ञैर्जुहोति हविषा यजुषा ।
तन्मृत्युना निर्ऋतिः संविदाना पुरा सत्यादाहुतिं हन्त्वस्य १
यातुधाना निर्ऋतिरादु रक्षस्ते अस्य घ्नन्त्वनृतेन सत्यम् ।
इन्द्रेषिता देवा आज्यमस्य मथ्नन्तु मा तत् सं पादि यदसौ जुहोति २
अजिराधिराजौ श्येनौ सपातिनाविव । आज्यं पृतन्यतो हतां यो नः कश्चाभ्यघायति ३
अपाञ्चौ त उभौ बाहू अपि नह्याम्यास्यम् । अग्नेर्देवस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः ४ ९६५
अपि नह्यामि ते बाहू अपि नह्याम्यास्यम् । अग्नेर्घोरस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः ५

॥१३५॥ (अथर्व० ७।९८।१)

इन्द्रः, विश्वे देवाः । विराट् ।

सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः ।
सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा १

॥१३६॥ (अथर्व० १९।१५।५-६)+
मन्त्रोक्ताः । ५ जगती; ६ त्रिष्टुप् ।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ५
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ६ ९६९

× अथर्व० ६,९७,१=दै० [अदितिः०]३९४। + अथर्व० १९,१५,१=दै० [इन्द्रः] ५६०।

॥१३७॥ (अथर्व० १९।१६।१-२)

मन्त्रोक्ताः । १ अनुष्टुप्; २ व्यवसाना सप्तपदा बृहतीगर्भातिशक्करी ।

असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् । सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १ ९७०
दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्नयः ।
इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादश्विनावभितः शर्म यच्छताम् ।
तिरश्चीनघ्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म २

॥१३८॥ (अथर्व० १९।१७।१-१०)

मन्त्रोक्ताः । १-४ जगती; ५,७,१० अतिजगती; ६ भुरिक्; ९ पञ्चपदाऽतिशक्करी ।

अग्निर्मा पातु वसुभिः पुरस्तात् तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा १
वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० २
सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ३
वरुणो मादित्यैरेतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ४ ९७५
सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्या दिशः पातु० । स मा रक्षतु० ५
आपो मौषधीमतीरेतस्या दिशः पातु तासु क्रमे तासु श्रये तां पुरं प्रैमि ।
ता मा रक्षन्तु ता मा गोपायन्तु ताभ्य आत्मानं परि ददे स्वाहा ६
विश्वकर्मा मा सप्तऋषिभिरुदीच्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ७
इन्द्रो मा मरुत्वानेतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ८
प्रजापतिर्मा प्रजननवान्त्सह प्रतिष्ठाया ध्रुवाया दिशः पातु० । स मा रक्षतु० ९ ९८०
बृहस्पतिर्मा विश्वैर्देवैरूर्ध्वाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० १०

॥१३९॥ (अथर्व० १९।१८।१-१०)

मन्त्रोक्ताः । १,८ साम्नी त्रिष्टुप्; २-६ आर्च्यनुष्टुप्; (५ सम्राडार्च्यनुष्टुप्); ७,९-१० (द्विपदा) प्राजापत्या त्रिष्टुप् ।

अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवः प्राच्या दिशोऽभिदासात् १
वायुं तेऽन्तरिक्षवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासात् २
सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासात् ३
वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासात् ४
सूर्यं ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवः प्रतीच्या दिशोऽभिदासात् ५
अपस्त ओषधीमतीरृच्छन्तु । ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासात् ६ ९८७

विश्वकर्माणं ते सप्तऋषिवन्तमृच्छन्तु । ये मांघायव उदीच्या दिशोऽभिदासात् ७ ९८८
इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृच्छन्तु । ये मांघायवं एतस्या दिशोऽभिदासात् ८
प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु । ये मांघायवो ध्रुवाया दिशोऽभिदासात् ९
बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु । ये मांघायवं ऊर्ध्वाया दिशोऽभिदासात् १०

॥१४०॥ (अथर्व० १९।१९।१-११)

चन्द्रमाः, मन्त्रोक्ताश्च । पङ्क्तिः १,३,९ भुरिग्बृहती; १० स्वराट्; २,४-८,११ अनुष्टुब्गर्भा ।

मित्रः पृथिव्योदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु १
वायुरन्तरिक्षेणोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० २
सूर्यो दिवोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ३
चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ४ ९९५
सोम ओषधीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ५
यज्ञो दक्षिणाभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ६
समुद्रो नदीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ७
ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ८
इन्द्रो वीर्येणोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ९ १०००
देवा अमृतेनोदक्रामंस्तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० १०
प्रजापतिः प्रजाभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ११

॥१४१॥ (अथर्व० १९।२०।१ ४)

बहुदैवत्यम् । १ त्रिष्टुप्; २ जगती; ३ पुरस्ताद्बृहती; ४ अनुष्टुब्गर्भा ।

अप न्यधुः पौरुषेयं वधं यमिन्द्राग्नी धाता सविता बृहस्पतिः ।
सोमो राजा वरुणो अश्विना यमः पूषाऽस्मान् परि पातु मृत्योः १
यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः प्रजापतिर्मातरिश्वा प्रजाभ्यः ।
प्रदिशो यानि वसते दिशश्च तानि मे वर्माणि बहुलानि सन्तु २
यत् ते तनूष्वनद्यन्त देवा द्युराजयो दंहितः । इन्द्रो यच्चक्रे वर्म तदस्मान् पातु विश्वतः ३
वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः । वर्म मे विश्वे देवाः कृन् मा मा प्रापत् प्रतीच्यिका४ १००६

॥१४२॥ (अथर्व० १९।२३।१-२९)

मन्त्रोक्ताः चन्द्रमाश्च । १ आसुरी गायत्री: २-७; २०,२३,२७ दैवी त्रिष्टुप्: ८,१०-१२,१४-१६ प्राजापत्या गायत्री, १७,१९,२४-२५,२९ दैवी पंक्तिः; ९,१३,१८,२२,२६,२८ दैवी जगती; (१-२९ एकावसानाः)।

आथर्वणानां चतुर्ऋचेभ्यः स्वाहा १। पञ्चर्चेभ्यः स्वाहा २। षळृचेभ्यः स्वाहा ३
सप्तर्चेभ्यः स्वाहा ४। अष्टर्चेभ्यः स्वाहा ५। नवर्चेभ्यः स्वाहा ६
दशर्चेभ्यः स्वाहा ७। एकादशर्चेभ्यः स्वाहा ८
द्वादशर्चेभ्यः स्वाहा ९। त्रयोदशर्चेभ्यः स्वाहा १०। चतुर्दशर्चेभ्यः स्वाहा ११
पञ्चदशर्चेभ्यः स्वाहा १२। षोडशर्चेभ्यः स्वाहा १३। सप्तदशर्चेभ्यः स्वाहा १४
अष्टादशर्चेभ्यः स्वाहा १५। एकोनविंशतिः स्वाहा १६। विंशतिः स्वाहा १७
महत्काण्डाय स्वाहा १८। तृचेभ्यः स्वाहा १९। एकर्चेभ्यः स्वाहा २०
क्षुद्रेभ्यः स्वाहा २१। एकानृचेभ्यः स्वाहा २२। रोहितेभ्यः स्वाहा २३
सूर्याभ्यां स्वाहा २४। व्रात्याभ्यां स्वाहा २५। प्राजापत्याभ्यां स्वाहा २६
विषासह्यै स्वाहा २७। मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा २८। ब्रह्मणे स्वाहा २९ १०३५

॥१४३॥ (अथर्व० १९।२४।१-८)

ब्रह्मणस्पतिः, बहुदैवत्यम्। अनुष्टुप्: ४-६,८ त्रिष्टुप्, ७ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री ।

येन देवं सवितारं परि देवा अधारयन् । तेनेमं ब्रह्मणस्पते परि राष्ट्राय धत्तन १
परीममिन्द्रमायुषे महे क्षत्राय धत्तन । यथैनं जरसे नयाज्योक् क्षत्रेऽधि जागरत् २
परीमं सोममायुषे महे श्रोत्राय धत्तन । यथैनं जरसे नयाज्योक् श्रोत्रेऽधि जागरत् ३
परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।
बृहस्पतिः प्रायच्छद् वासं एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ ४
जरां सु गच्छ परि धत्स्व वासो भवा गृष्टीनामभिशस्तिपा उ ।
शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व ५ १०४०
परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्वापीनामभिशस्तिपा उ ।
शतं च जीव शरदः पुरूचीर्वसूनि चारुर्वि भजासि जीवन् ६
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ७
हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो जरामृत्युः प्रजया सं विशस्व ।
तदग्निराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ८ १०४३

॥१४४॥ (अथर्व० ५।३।३-६)×

(१०४४-४७) बृहद्दिवोऽथर्वा। ३-४ देवाः; ५ द्राविणोदाः, ६ देवीः। त्रिष्टुप्।

मम॑ दे॒वा वि॑ह॒वे स॑न्तु॒ सर्व॒ इन्द्र॑वन्तो म॒रुतो॒ विष्णु॑रग्निः।
मम॒ान्तरि॑क्षमुरुलो॒कम॑स्तु॒ मह्यं॑ वा॒तः प॑वतां॒ काम॑ा॒यास्मै॒ ३ १०४४
मह्यं॑ यजन्तां॒ मम॒ यानी॒ष्टाकू॑तिः स॒त्या मन॑सो मे अस्तु।
ए॒नो॒ मा नि गां॑ कत॒मच्च॒नाहं॑ वि॒श्वे दे॒वा अ॒भि र॑क्षन्तु मे॒ह ४
मयि॑ दे॒वा द्रवि॑ण॒मा य॑जन्तां॒ मय्या॒शीर॑स्तु॒ मयि॑ दे॒वहू॑तिः।
दैव्या॑ होता॑रः सनिषन्न॒ एत॑दरि॒ष्टाः स्याम॑ त॒न्वा॑ सु॒वीरा॑ः ५
दैवी॑ः षड्वी॒रुरु नः॑ कृणोतु॒ विश्वे॑ देवास॒ इह मा॑दयध्वम्।
मा नो॑ विदद॒भिभा॒ मो अ॑शस्ति॒र्मा नो॑ विदद् वृजि॒ना द्वे॒ष्या॒ या ६

॥१४५॥ (अथर्व० १।१६।१-४)

(१०४८-५१) चातनः। अग्निः, इन्द्रः, वरुणः, (२-४ दधत्यं सीसम्)। अनुष्टुप्, ४ ककुम्मती अनुष्टुप्।

ये॒मा॒वा॒स्या॒३॒ रात्रि॒मुद॑स्थुर्व्रा॒जम॑त्रि॒वर्ण॑ः। अ॒ग्निस्तु॒रीयो॑ यातु॒हा सो अ॒स्मभ्य॒मधि॑ ब्रवत् १
सीसा॑याध्या॒ह॒ वरु॑णः॒ सीसा॑या॒ग्निरु॑पाव॒ति। सीसं॒ म॒ इन्द्रः॑ प्रा॒यच्छ॒त् तदु॒ग्रः या॑तु॒चात॑नम् २
इ॒दं वि॒ष्कं॑न्धं सहत॒ इदं॑ बाधते अ॒त्रिव॑र्णः। अ॒नेन॒ विश्वा॑ ससहे॒ या जा॒तानि॑ पिशा॒च्याः ३ १०५०
यदि॑ नो॒ गां हं॑सि॒ यद्यश्वं॒ यदि॒ पूरु॑षम्। तं त्वा॒ सीसे॑न विध्यामो॒ यथा॒ नोऽसो॒ अवी॑रहा ४

॥१४६॥ (अथर्व० १।१९।१-५)

१०५२-९०) ब्रह्मा। ईश्वरः, (१ इन्द्रः, २ दैवीः मनुष्येषवः, ३ रुद्रः, ४ देवाः)। अनुष्टुप्, २ पुरस्ताद्बृहती, ३ पथ्यापङ्क्तिः।

मा नो॑ विदन् विव्या॒धिनो॒ मो अ॑भिव्या॒धिनो॑ विदन्।
आरा॑च्छर॒व्या॑ अ॒स्मद् विषू॑चीरिन्द्र पातय १
विष्व॑ञ्चो अ॒स्मच्छर॑वः पतन्तु॒ ये अ॒स्ता ये चा॒स्या॑ः।
दैवी॑र्मनुष्येषवो॒ ममा॒मित्रा॒न् वि वि॑ध्यत २
यो नः॒ स्वो यो अर॑णः सजा॒त उ॒त निष्ट्यो॒ यो अ॒स्माँ अ॑भि॒दास॑ति।
रु॒द्रः श॑र॒व्या॑ ये॒तान् ममा॒मित्रा॒न् वि वि॑ध्यतु +३
यः स॒पत्नो॒ योऽस॑पत्नो॒ यश्च॑ द्वि॒षन्छपा॑ति नः।
दे॒वास्तं सर्वे॑ धूर्वन्तु ब्रह्म॒ वर्म॒ ममान्त॑रम् ४ १०५५

×अथर्व० ५,३ ७,९-१०=दै० [सोमः] ११८७; दै० [अदितिः०] ७१०; दै० [रुद्रः] १५५।
+अथर्व० १,१९,३ = दै० [रुद्रः] ११२।

॥१४७॥ (अथर्व० १।२६।१-२)*

१ देवाः; २ इन्द्रः, भगः, सविता गायत्रीः २ त्रिपदा एकावसाना साम्नी त्रिष्टुप्, ४ एकावसाना पादनिचृत्।

आरेऽसावस्मदस्तु हेतिर्देवासो असत्। आरे अश्मा यमस्यथ १
सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्रराधाः २

॥१४८॥ (अथर्व० ३।२३।१-६)

चन्द्रमाः, योनिः, द्यावापृथिवी। अनुष्टुप्, ५ उपरिष्टाद् भुरिग्बृहती, ६ स्कंधोग्रीवी बृहती।

येन वेहद् बभूविथ नाशयामसि तत् त्वत्। इदं तदन्यत्र त्वदप दूरे नि दध्मसि १
आ ते योनिं गर्भ एतु पुमान् बाण इवेषुधिम्।
आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः २
पुमांसं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम्।
भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् ३ १०६०
यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्ति च। तैस्त्वं पुत्रं विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुका भव ४
कृणोमि ते प्राजापत्यमा योनिं गर्भ एतु ते।
विन्दस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शमसच्छतु तस्मै त्वं भव ५
यासां द्यौः पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव।
तास्त्वा पुत्रविद्याय दैवीः प्रावन्त्वोषधयः ६

॥१४९॥ (अथर्व० ६।५५।१) जगती।

ये पन्थानो बहवो देवयानां अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति।
तेषामज्यानिं यतमो वहाति तस्मै मा देवाः परि धत्तेह सर्वे १

॥१५०॥ (अथर्व० ६।११४।१-३) अनुष्टुप्।

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। आदित्यास्तस्मान्नो यूयमृतस्यर्तेन मुञ्चत १ १०६५
ऋतस्यर्तेनादित्या यजत्रा मुञ्चतेह नः। यज्ञं यद् यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेकिम २
मेदस्वता यजमानाः सुचाज्यानि जुह्वतः। अकामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम ३

॥१५१॥ (अथर्व० ७।२४।१)

इन्द्रः, अग्निः, विश्वे देवाः, मरुतः, सविता, प्रजापतिः, अनुमतिः। त्रिष्टुप्।

यत्र इन्द्रो अखनद् यदग्निर्विश्वे देवा मरुतो यत् स्वर्काः।
तदस्मभ्यं सविता सत्यधर्मा प्रजापतिरनुमतिर्नि यच्छात् १ १०६८

*अथर्व० १,२६,३-४ = दै० [मरुतः] ४३०-३१।

॥१५२॥ (अथर्व०.१९।९।१-१४)

(शन्तातिः?) । शान्तिः, बहुदैवत्यम् । अनुष्टुप्; १ विराडुरोबृहती; ५ पञ्चपदा पथ्यापंक्तिः; ९ पञ्चपदा ककुम्मती; १२ त्र्यवसाना सप्तपदाष्टिः; १४ चतुष्पदा संकृतिः ।

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्वन्तरिक्षम् ।
शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता नः सन्त्वोषधीः १ १०६९

शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम् ।
शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः २

इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता । ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः ३
इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम् । येनैव ससृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ४

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनःषष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि ।
यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः ५

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः ।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्वर्यमा ६

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वांछमन्तकः ।
उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः ७ १०७५

शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत् । शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरव तीर्यतीः ८
नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः ।
शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का दिशोपसर्गाः शमु नो भवन्तु ९
शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा । शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः १०
शं रुद्राः शं वसवः शमादित्याः शमग्नयः । शं नो महर्षयो देवाः शं देवाः शं बृहस्पतिः ११
ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्तऋषयोऽग्नयः ।
तैर्मे कृतं स्वस्त्ययनमिन्द्रो मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु ।
विश्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु १२ १०८०

यानि कानि चिच्छान्तानि लोके सप्तऋषयो विदुः ।
सर्वाणि शं भवन्तु मे शं मेऽस्त्वभयं मेऽस्तु १३

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः ।
ताभिः शान्तिभिः सर्वशान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं
यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः १४ १०८१

॥१५३॥ (अथर्व० १९।४३।१-८)

ब्रह्म, बहुदैवत्यम् । व्यवसाना शंकुमती पथ्यापङ्क्तिः ।

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
अग्निर्मा तत्र नयत्वग्निर्मेधा दधातु मे । अग्नये स्वाहा १
यत्र ब्रह्मविदो०। वायुर्मा तत्र नयतु वायुः प्राणान् दधातु मे । वायवे स्वाहा २
यत्र ब्रह्मविदो०। सूर्यो मा तत्र नयतु चक्षुः सूर्यो दधातु मे । सूर्याय स्वाहा ३ १०८५
यत्र ब्रह्मविदो०। चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे । चन्द्राय स्वाहा ४
यत्र ब्रह्मविदो०। सोमो मा तत्र नयतु पयः सोमो दधातु मे । सोमाय स्वाहा ५
यत्र ब्रह्मविदो०। इन्द्रो मा तत्र नयतु बलमिन्द्रो दधातु मे । इन्द्राय स्वाहा ६
यत्र ब्रह्मविदो०। आपो मा तत्र नयन्त्वमृतं मोप तिष्ठतु । अद्भ्यः स्वाहा ७
यत्र ब्रह्मविदो०। ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे । ब्रह्मणे स्वाहा ८ १०९०

॥१५४॥ (अथर्व० २।१२।१-८)

(१०९१-९८) भरद्वाजः । १ द्यावापृथिवी, अन्तरिक्षम्; २ देवाः, ३ इन्द्रः, आदित्या-वसवोऽङ्गिरसः पितरः; ५ सोम्यासः पितरः; ६ मरुतः, ७ यमसादनम्, ब्रह्म, ८ अग्निः । त्रिष्टुप्, २ जगती, ७-८ अनुष्टुप् ।

द्यावापृथिवी उर्वन्तरिक्षं क्षेत्रस्य पत्न्युरुगायोऽद्भुतः ।
उतान्तरिक्षमुरु वातगोपं त इह तप्यन्तां मयि तप्यमाने १
इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया स्थ भरद्वाजो मह्यमुक्थानि शंसति ।
पाशे स बद्धो दुरिते नि युज्यतां यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति २
इदमिन्द्र शृणुहि सोमप यत् त्वा हृदा शोचता जोहवीमि ।
वृश्चामि तं कुलिशेनेव वृक्षं यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति ३
अशीतिभिस्तिसृभिः सामगेभिरादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ।
इष्टापूर्तमवतु नः पितॄणामामुं ददे हरसा दैव्येन ×४
द्यावापृथिवी अनु मा दीधीथां विश्वे देवासो अनु मा रभध्वम् ।
अङ्गिरसः पितरः सोम्यासः पापमार्छत्वपकामस्य कर्ता ५
अतीव यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यो निन्दिषत् क्रियमाणम् ।
तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषं द्यौरभिसंतपाति ६ १०९६

× अथर्व० २,१२,४=दै० [अदितिः०] १६७ ।

सप्त प्राणानष्टौ मन्यस्तांस्ते वृश्चामि ब्रह्मणा । अयां यमस्य सादनमग्निदूतो अरंकृतः७ ११०७
आ दधामि ते पदं समिद्धे जातवेदसि । अग्निः शरीरं वेवेष्ट्वसुं वागपि गच्छतु ८

॥१५५॥ (अथर्व० २।२८।३-५)

(१०९९-११०१) शम्भुः । द्यावापृथिव्यादयो देवाः । त्रिष्टुप्, ५ भुरिक् ।

त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः ।
मेमं प्राणो हांसीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः ३
द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविदाने ।
यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः ४ ११००
इममग्न आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन् ।
मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत् ५

॥१५६॥ (अथर्व० २।३६।४,६,८)+

(११०२-४) पतिवेदनः । ४ इन्द्रः, ६ धनपतिः, ८ ओषधिः । ४ त्रिष्टुप्, ६ अनुष्टुप्, ८ निचृत्पुरउष्णिक् ।

यथाखरो मघवंश्चारुरेष प्रियो मृगाणां सुषदा बभूव ।
एवा भगस्य जुष्टेयमस्तु नारी संप्रिया पत्याविराधयन्ती ४
आ क्रन्दय धनपते वरमामनसं कृणु । सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वरः प्रतिकाम्यः ६
आ ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रतिकाम्यः । त्वमस्यै धेह्योषधे ८

॥१५७॥ (अथर्व० ३।१९।१-८)

(११०५-२०) वसिष्ठः । विश्वे देवाः, चन्द्रमाः, इन्द्रः । अनुष्टुप्, १ पथ्याबृहती, ३ भुरिग्बृहती, ५ त्रिष्टुप्, ६ व्यवसाना षट्पदा त्रिष्टुप्ककुम्मतीगर्भातिजगती, ७ विराडास्तारपङ्क्तिः, ८ पथ्यापङ्क्तिः ।

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं१ बलम् ।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः १ ११०५
समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं१ बलम् ।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेनं हविषाहम् २
नीचैः पद्यन्तामधरे भवन्तु ये नः सूरिं मघवानं पृतन्यान् ।
क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वानहम् ३
तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत ।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः ४ ११०८

+अथर्व० २,३६,१;३=दै० [अग्निः] २३३९-४० । अथर्व० २,३६,२ = दै० [सोमः] १९४३ । अथर्व० २,३६,५;७ = दै० [अदितिः०] ६२३,७९९ ।

एषामहमायुधा सं स्यामेषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि ।
एषां क्षत्रमजरमस्तु जिष्णवेषां चित्तं विश्वेऽवन्तु देवाः ५
उद्धर्षन्तां मघवन् वाजिनान्युद् वीराणां जयतामेतु घोषः ।
पृथग् घोषा उलुलयः केतुमन्त उदीरताम् । देवा इन्द्रज्येष्ठा मरुतो यन्तु सेनया ६ १११०
प्रेता जयता नर उग्रा वः सन्तु बाहवः ।
तीक्ष्णेषवोऽबलधन्वनो हतोग्रायुधा अबलानुग्रबाहवः ७
अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते ।
जयामित्रान् प्र पद्यस्व जह्येषां वरंवरं मामीषां मोचि कश्चन ८

॥१५८॥ (अथर्व० ३।२२।१-६)

वर्चः, बृहस्पतिः, विश्वे देवाः । अनुष्टुप्, १ विराट् त्रिष्टुप्, पञ्चपदा परानुष्टुप् विराडतिजगती, ४ त्र्यवसाना षट्पदा जगती ।

हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद् यशो अदितया यत् तन्वः संबभूव ।
तत् सर्वे समदुर्मह्यमेतद् विश्वे देवा अदितिः सजोषाः १
मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च चेतति । देवासो विश्वधायसस्ते मां जन्तु वर्चसा २
येन हस्ती वर्चसा संबभूव येन राजा मनुष्येष्वप्स्वन्तः ।
येन देवा देवतामग्र आयन् तेन मामद्य वर्चसाग्ने वर्चस्विनं कृणु ३ १११५
यत् ते वर्चो जातवेदो बृहद् भवत्याहुतेः ।
यावत् सूर्यस्य वर्च आसुरस्य च हस्तिनः ।
तावन्मे अश्विना वर्च आ धत्तां पुष्करस्रजा ४
यावच्चतस्रः प्रदिशश्चक्षुर्यावत् समश्नुते ।
तावत् समैत्विन्द्रियं मयि तद्धस्तिवर्चसम् ५
हस्ती मृगाणां सुषदामतिष्ठावान् बभूव हि ।
तस्य भगेन वर्चसाभि षिञ्चामि मामहम् ६

॥१५९॥ (अथर्व० १९।११।५-६)+

बहुदैवत्यम् । त्रिष्टुप् ।

ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ १११९

+ अथर्व० १९,११,१-४ = दै० [विश्वे० देवाः] ४।१९-६२ ।
दै० [विश्वे देवाः] ११

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् ।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय ६ ११२०

॥१६०॥ (अथर्व० १९।२२।१-२१)

(११२१-४१) अङ्गिराः । मन्त्रोक्ताः । १ साम्न्युष्णिक्, ३,१९ प्राजापत्या गायत्री; ४,७,११,१७ दैवी जगती; ५,१२-१३ दैवी त्रिष्टुप्; २,६,१४-१६,२० दैवी पङ्क्तिः; ८-१० आसुरी जगती; १८ आसुर्यनुष्टुप्; २१ चतुष्पदा त्रिष्टुप् (१-२० एकावसानाः) ।

आङ्गिरसानामाद्यैः पञ्चानुवाकैः स्वाहा १ षष्ठाय स्वाहा २
सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा ३ नीलनखेभ्यः स्वाहा ४
हरितेभ्यः स्वाहा ५ क्षुद्रेभ्यः स्वाहा ६
पर्यायिकेभ्यः स्वाहा ७ प्रथमेभ्यः स्वाहा ८
द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ९ तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा १०
उपोत्तमेभ्यः स्वाहा ११ उत्तमेभ्यः स्वाहा १२
उत्तरेभ्यः स्वाहा १३ ऋषिभ्यः स्वाहा १४
शिखिभ्यः स्वाहा १५ गणेभ्यः स्वाहा १६
महागणेभ्यः स्वाहा १७ सर्वेभ्योऽङ्गिरोभ्यो विदगणेभ्यः स्वाहा १८
पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा १९ ब्रह्मणे स्वाहा २०
ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ब्रह्माग्रे ज्येष्ठं दिवमा ततान ।
भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः +२१ ११४१

॥१६१॥ (अथर्व० ४।८।१-७)

(११४२-४९) अथर्वाङ्गिराः । चन्द्रमाः, आपः, राज्याभिषेकः; १ राजा, २ देवाः, ३ विश्वरूपः, ४-५ आपः । अनुष्टुप्; १,७ भुरिक् त्रिष्टुप्, ३ त्रिष्टुप्, ५ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

भूतो भूतेषु पय आ दधाति स भूतानामधिपतिर्बभूव ।
तस्य मृत्युश्चरति राजसूयं स राजा राज्यमनु मन्यतामिदम् १
अभि प्रेहि मार्प वेन उग्रश्चेत्ता संपलहा ।
आ तिष्ठ मित्रवर्धन तुभ्यं देवा अधि ब्रवन् २
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषञ्छ्रियं वसानश्चरति स्वरोचिः ।
महत् तद् वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ ३ ११४४

+अथर्व १९।२२।२१=अथर्व १९,२३,३०

व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे वि क्रमस्व दिशो महीः ।
विश्वस्त्वा सर्वा वाञ्छन्त्वापो दिव्याः पयस्वतीः ४ ११४५
या आपो दिव्याः पयसा मदन्त्यन्तरिक्ष उत वा पृथिव्याम् ।
तासां त्वा सर्वासामपामभि षिञ्चामि वर्चसा ५
अभि त्वा वर्चसासिचन्नापो दिव्याः पयस्वतीः ।
यथासो मित्रवर्धनस्तथा त्वा सविता करत् ६
एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः सिंहं हिन्वान्ति महते सौभगाय ।
समुद्रं न सुभुवस्तस्थिवांसं मर्मृज्यन्ते द्रीपिनमप्स्वन्तः ७

॥१६२॥ (अथर्व० ७।११८।१)

चन्द्रमाः, वरुणः, देवः । त्रिष्टुप् ।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् ।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु १

॥१६३॥ (अथर्व० ६।१२३।१-५)

(११५० ५४) भृगुः । त्रिष्टुप्, ३ द्विपदा साम्न्यनुष्टुप्, ४ एकावसाना द्विपदा प्राजापत्या भुरिगनुष्टुप् ।

एतं सधस्थाः परि वो ददामि यं शेवधिमावहाज्जातवेदाः ।
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति तं स्म जानीत परमे व्योमन् १ ११५०
जानीत स्मैनं परमे व्योमन् देवाः सधस्था विद लोकमत्र ।
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्तीष्टापूर्तं स्म कृणुताविरस्मै २
देवाः पितरः पितरो देवाः । यो अस्मि सो अस्मि ३
स पचामि स ददामि स यजे स दत्तान्मा यूयम् ४
नाके राजन् प्रति तिष्ठ तत्रैतत् प्रति तिष्ठतु । विद्धि पूर्तस्य नो राजन्त्स देव सुमना भव ५

॥१६४॥ (अथर्व० १९।२७।१-१५)

(११५५-६९) भृग्वङ्गिराः । त्रिवृत्, चन्द्रमाश्च । अनुष्टुप्; ३,९ त्रिष्टुप्; १० जगती(?); ११ आर्च्युष्णिक्; १२ आर्च्यनुष्टुप्; १३ साम्नी त्रिष्टुप् (११-१३ एकावसानाः)

गोभिष्ट्वा पात्वृषभो वृषा त्वा पातु वाजिभिः। वायुष्ट्वा ब्रह्मणा पात्विन्द्रस्त्वा पात्विन्द्रियैः १
सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यः । माद्भस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वातः प्राणेन रक्षतु २
तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीस्तीण्यन्तरिक्षाणि चतुरः समुद्रान् ।
त्रिवृतं स्तोमं त्रिवृत आप आहुस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्भिः ३ ११५७

त्रीनाकांस्त्रीन्त्समुद्रांस्त्रीन् ब्रध्नांस्त्रीन् वैष्टपान् । त्रीन् मातरिश्वनस्त्रीन्त्सूर्यान् गोप्तॄन् कल्पयामि ते४ ११५८
घृतेन त्वा समुक्षाम्यग्न आज्येन वर्धयन् । अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दभन्५
मा वः प्राणं मा वोऽपानं मा हरो मायिनो दभन् । आजन्तो विश्ववेदसो देवा दैव्येन धावत६
प्राणेनाग्निं सं सृजति वातः प्राणेन संहितः । प्राणेन विश्वतोमुखं सूर्यं देवा अजनयन् ७
आयुषाऽऽयुःकृतां जीवायुष्मान् जीव मा मृथाः । प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम् ८
देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रोऽन्वविन्दत् पथिभिर्देवयानैः ।
आपो हिरण्यं जुगुपुस्त्रिवृद्धिस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्भिः ९
त्रयस्त्रिंशद् देवतास्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुपुरप्स्वन्तः ।
अस्मिञ्चन्द्रे अधि यद्धिरण्यं तेनायं कृणवद् वीर्याणि १०
ये देवा दिव्येकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ११ ११६५
ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् १२
ये देवाः पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् १३
असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् । सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १४
दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्नयः ।
इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादश्विनावभितः शर्म यच्छताम् ।
तिरश्चीनघ्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म १५

॥१६५॥ (अथर्व० ६।१०।१-३)

(११७०-७८) शन्तातिः । १ पृथिवी, श्रोत्रं, वनस्पतिः, अग्निः; २ प्राणः, अन्तरिक्षं, वयः, वायुः; ३ द्यौः, चक्षुः, नक्षत्राणि, सूर्यः । द्वैपदम्, १ साम्नी त्रिष्टुप्, २ प्राजापत्या बृहती, ३ साम्नी बृहती ।

पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्योऽग्नयेऽधिपतये स्वाहा १ ११७०
प्राणायान्तरिक्षाय वयोभ्यो वायवेऽधिपतये स्वाहा २
दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः सूर्यायाधिपतये स्वाहा ३

॥१६६॥ (अथर्व० ६।१९।१-३)

चन्द्रमाः, १ देवजनाः, मनवः, विश्वा भूतानि, पवमानः, २ पवमानः; ३ सविता ।
गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवो धिया । पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा १
पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे । अथो अरिष्टतातये २
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । अस्मान् पुनीहि चक्षसे ३ ११७५

॥१६७॥ (अथर्व० ६।९३।१-३)

रुद्रः, १ यमो मृत्युः शर्वः, २ भवः शर्वः, ३ विश्वे देवाः मरुतः अग्नीषोमौ वरुणः वातपर्जन्यौ । त्रिष्टुप् ।

यमो मृत्युरघमारो निर्ऋथो बभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः ।
देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परि वृञ्जन्तु वीरान् १
मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्त्रे उत राज्ञे भवाय ।
नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्मदघविषा नयन्तु २
त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः ।
अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम ३

॥१६८॥ (अथर्व० ६।५३।१-२)+

(११७९-८०) बृहच्छुक्रः । १ द्यौः, पृथिवी, शुक्रः, सोमः, अग्निः, वायुः, सविता, भगः; २ वैश्वानरः, १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु ।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च १
पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु पुनश्चक्षुः पुनरसुर्न ऐतु ।
वैश्वानरो नो अदब्धस्तनूपा अन्तस्तिष्ठाति दुरितानि विश्वा २ ११८०

॥१६९॥ (अथर्व० ६।६३।१-३)*

(११८१-८३) ब्रह्मणः । १ निर्ऋतिः, २ यमः, ३ मृत्युः । जगती, २ अनिजगतीगर्भा ।

यत् ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दामन्ग्रीवास्वविमोक्यं यत् ।
तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः १
नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।
यमो मह्यं पुनरित् त्वा ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे २
अयस्मये द्रुपदे वेधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम् ।
यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् ३

॥१७०॥ (अथर्व० ६।१०३।१-३)

(११८४-८६) उच्छोचनः । इन्द्राग्नीः १ बृहस्पतिः सविता मित्रो अर्यमा भगो अश्विनोः २-३ इन्द्रोऽग्निः; अनुष्टुप् ।

संदानं वो बृहस्पतिः संदानं सविता करत् । संदानं मित्रो अर्यमा संदानं भगो अश्विना १
सं परमान्त्समवमानथो सं द्यामि मध्यमान् । इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् २
अमी ये युधमायान्ति केतून् कृत्वानीकशः । इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् ३ ११८६

+ अथर्व० ६,५३,३=दै० [अदितिः०] ७०० । * अथर्व० ६,६३,४ = दै० [अग्निः] १७१६ ।

॥१७१॥ (अथर्व० ६।१२०।१-३)

(११८७-८९) कौशिकः । अन्तरिक्षं, पृथिवी, द्यौः, अग्निः । १ जगती, २ पङ्क्तिः, ३ त्रिष्टुप् ।

यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिंसिम ।
अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निरुदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् १ ११८७
भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं भ्रातान्तरिक्षमभिशस्त्या नः ।
द्यौर्नः पिता पित्र्याच्छं भवाति जामिमृत्वा मावं पत्सि लोकात् २
यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वः स्वायाः ।
अश्लोणा अङ्गैरहृताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान् ३

॥१७२॥ (अथर्व० १४।२।५३-५८)

(११९०-९५) सूर्या सावित्री । अनुष्टुप् ।

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । वर्चो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५३ ११९०
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । तेजो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५४
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । भगो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि ५५
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । यशो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५६
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । पयो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५७
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । रसो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि ५८ ११९५

॥१७३॥ [११९६-९८] (अथर्व० २०।१२८।५)

ये चं देवा अयजन्ताथो ये चं परादुदिः । सूर्यो दिवमिव गत्वाय मघवा नो वि रप्शते ५

॥१७४॥ (अथर्व० २०।१३५।४,१०)

वीळ मे देवा अंक्रंसताध्वर्यो क्षिप्रं प्रचर । सुसत्यमिद् गवामस्यसि प्रखुदसि ४
देवा ददुत्वासुरं तद् वो अस्तु सुचेतनम् । युष्माँ अस्तु दिवेदिवे प्रत्येवं गृभायत १०

देवाः ।

॥१७५॥ (ऋ० १।२७।१३)

(११९९) आजीगर्तिः शुनःशेपः स ऋषिर्मो वैश्वामित्रो देवरातः । त्रिष्टुप् ।

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः ।
यजाम देवान् यदि शक्नवाम मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः १३ ११९९

॥१७६॥ (ऋ० १।४५।१० [उत्तरार्धः])
(१२००) प्रस्कण्वः काण्वः । (सुदानवः देवाः) । अनुष्टुप् ।

अयं सोमः सुदानव—स्तं पात तिरोअह्न्यम् १० १२००

॥१७७॥ (ऋ० १।९४।८ [त्रयः पादाः])
(१२०१) कुत्स आङ्गिरसः । जगती ।

पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो ऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः ।
तदा जानीतोत पुष्यता वचः ८

॥१७८॥ (ऋ० १।१६४।५०)
(१२०२) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा—स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ५०

॥१७९॥ (ऋ० ७।१०४।११)
(१२०३) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

परः सो अस्तु तन्वा३ तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः ।
प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो नो दिवा दिप्सति यश्च नक्तम् ११

॥१८०॥ (ऋ० ८।६३।१२)*
(१२०४) प्रगाथः काण्वः । त्रिष्टुप् ।

अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ।
यः शंसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः १२

॥१८१॥ (ऋ० ८।८०।१०)
(१२०५) एकधूर्नौधसः । त्रिष्टुप् ।

अवीवृधद् वो अमृता अमन्दी—देकधूर्देवा उत याश्च देवीः ।
तस्मा उ राधः कृणुत प्रशस्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् १० १२०५

॥१८२॥ (ऋ० १०।५१।२,४,६,८)
(१२०६-११) सौचीकोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

को मा ददर्श कतमः स देवो यो मे तन्वो बहुधा पर्यपश्यत् ।
काहं मित्रावरुणा क्षियन्त्य—ग्नेर्विश्वाः समिधो देवयानीः २
होत्रादहं वरुण बिभ्यदायं नेदेव मा युनजन्त्र देवाः ।
तस्य मे तन्वो बहुधा निविष्टा एतमर्थं न चिकेताहमग्निः ४ १२०७

* वा० य० ३३,५० ।

अग्नेः पूर्वे भ्रातरो अर्थमेतं रथीवाध्वानमन्वावरीवुः ।
तस्माद्क्रिया वरुण दूरमायं गौरो न क्षेप्नोरविज्यायाः ६ १२०८
प्रयाजान् मे अनुयाजाँश्च केवला नूर्जस्वन्तं हविषो दत्त भागम् ।
घृतं चापां पुरुषं चौषधीना मग्नेश्च दीर्घमायुरस्तु देवाः ८

॥१८३॥ (ऋ० १०।५३।४-५)

तदद्य वाचः प्रथमं मसीय येनासुराँ अभि देवा असाम ।
ऊर्जाद उत यज्ञियासः पञ्च जना मम होत्रं जुषध्वम् ४ १२१०
पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
पृथिवी नः पार्थिवात् पात्वंहसो ऽन्तरिक्षं दिव्यात् पात्वस्मान् ५

॥१८४॥ (ऋ० १०।७२।१-९)

(१२१२-२०) बृहस्पतिर्लौकयः, बृहस्पतिराङ्गिरसो वा, अदितिर्दाक्षायणी वा । अनुष्टुप् ।

देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया । उक्थेषु शस्यमानेषु यः पश्यादुत्तरे युगे १
ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवाधमत् । देवानां पूर्व्ये युगे ऽसतः सदजायत २
देवानां युगे प्रथमे ऽसतः सदजायत । तदाशा अन्वजायन्त तदुत्तानपदस्परि ३
भूर्जज्ञ उत्तानपदो भुव आशा अजायन्त । अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाद्वदितिः परि ४ १२१५
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ५
यद्देवा अदः सलिले सुसंरब्धा अतिष्ठत । अत्रा वो नृत्यतामिव तीव्रो रेणुरपायत ६
यद्देवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत । अत्रा समुद्र आ गूळ्ह मा सूर्यमजभर्तन ७
अष्टौ पुत्रासो अदितेर्ये जातास्तन्वस्परि । देवाँ उप प्रैत् सप्तभिः परा मार्ताण्डमास्यत् ८
सप्तभिः पुत्रैरदितिरुप प्रैत् पूर्व्यं युगम् । प्रजायै मृत्यवे त्वत् पुनर्मार्ताण्डमाभरत् ९ १२२०

॥१८५॥ (ऋ० १०।८५।१७)

(१२२१) सूर्या सावित्री ऋषिका । अनुष्टुप् ।

सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च । ये भूतस्य प्रचेतस इदं तेभ्योऽकरं नमः १७

॥१८६॥ (ऋ० १०।९८।१-१२)

(१२२२-३३) देवापिरार्ष्टिषेणः (वृष्टिकामः) । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वासि पूषा ।
आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वान्त्स पर्जन्यं शंतनवे वृषाय १ १२२२

आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान् त्वद्देवापे अभि मामगच्छत् ।
प्रतीचीनः प्रति मामा ववृत्स्व दधामि ते द्युमतीं वाचमासन् २
अस्मे धेहि द्युमतीं वाचमासन् बृहस्पते अनमीवामिषिराम् ।
यया वृष्टिं शंतनवे वनाव दिवो द्रप्सो मधुमाँ आ विवेश ३
आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्त्विन्द्रं देह्यधिरथं सहस्रम् ।
नि षीद होत्रमृतुथा यजस्व देवान् देवापे हविषा सपर्य ४ १२२५
आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन् देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान् ।
स उत्तरस्मादधरं समुद्रमपो दिव्या असृजद्वर्ष्या अभि ५
अस्मिन्त्समुद्रे अध्युत्तरस्मिन्नापो देवेभिर्निवृता अतिष्ठन् ।
ता अद्रवन्नार्ष्टिषेणेन सृष्टा देवापिना प्रेषिता मृक्षिणीषु ६
यद्देवापिः शंतनवे पुरोहितो होत्राय वृतः कृपयन्नदीधेत् ।
देवश्रुतं वृष्टिवनिं रराणो बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत् ७
यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्न आर्ष्टिषेणो मनुष्यः समीधे ।
विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः प्र पर्जन्यमीरया वृष्टिमन्तम् ८
त्वां पूर्व ऋषयो गीर्भिरायन् त्वामध्वरेषु पुरुहूत विश्वे ।
सहस्राण्यधिरथान्यस्मे आ नो यज्ञं रोहिदश्वोप याहि ९ १२३०
एतान्यग्ने नवतिर्नव त्वे आहुतान्यधिरथा सहस्रा ।
तेभिर्वर्धस्व तन्वः शूर पूर्वीर्दिवो नो वृष्टिमिषितो रिरीहि १०
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा सं प्र यच्छ वृष्ण इन्द्राय भागम् ।
विद्वान् पथ ऋतुशो देवयानान्प्यौलानं दिवि देवेषु धेहि ११
अग्ने बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहा ऽपामीवामप रक्षांसि सेध ।
अस्मात् समुद्राद् बृहतो दिवो नो ऽपां भूमानमुप नः सृजेह १२

॥१८७॥ [१२३४-६३] (वा० य० १।८)

देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ८

॥१८८॥ (वा० य० २।७,२१)

नमो देवेभ्यः ७
देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित । मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः×२१ १२३६

× वा० य० ८,२१=अथर्व ७,९७,७-८ ।

॥१८९॥ (वा० य० ६।११)

स्वाहा॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यः॒ स्वाहा॑ ११ १२३७

॥१९०॥ (वा० य० ७।३,१२,१७,२२,२६)

दे॒वेभ्य॑स्त्वा मरीचि॒पेभ्यः॑ +३। दे॒वास्त्वा॑ शुक्र॒पाः प्रण॑यन्तु १२

दे॒वास्त्वा॑ मन्थि॒पाः प्रण॑यन्तु १७

दे॒वेभ्य॑स्त्वा देवा॒व्यं॑ य॒ज्ञस्याऽऽयु॑षे गृह्णामि २२। दे॒वाना॑मुत्क्रम॑णमसि २६

॥१९१॥ (वा० य० ८।१८,२७,४३,६०)

सु॒गा वो॑ देवाः सदना अकर्म॒ य आ॑ज॒ग्मेद॑ꣳ सव॑नं जुषा॒णाः।

भर॑माणा॒ वह॑माना ह॒वीꣳ॑ष्य॒स्मे धत्त वसवो॒ वसू॑नि॒ स्वाहा॑ *१८

दे॒वाना॑ꣳ स॒मिद॑सि २७

इडे॒ रन्ते॒ हव्ये॒ काम्ये॒ चन्द्रे॒ ज्योते॑ऽदिते॒ सर॑स्वति॒ महि॒ विश्रु॑ति।

ए॒ता ते॑ अघ्न्ये॒ नामा॑नि दे॒वेभ्यो॑ मा सु॒कृतं॑ ब्रूतात् ४३ १२४५

दे॒वान् दिव॑मगन् य॒ज्ञस्ततो॑ मा॒ द्रवि॑णमष्टु मनु॒ष्या॒न॒न्तरि॑क्षमगन् य॒ज्ञस्ततो॑ मा॒ द्रवि॑णमष्टु पि॒तॄन् पृ॑थि॒वीम॑गन् य॒ज्ञस्ततो॑ मा॒ द्रवि॑णमष्टु यं कं च॑ लो॒कम॑गन् य॒ज्ञस्ततो॑ मे भ॒द्रम॑भूत् ६०

॥१९२॥ (वा० य० ९।३५-३६)

वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो दे॒वेभ्यः॑ पश्चा॒त् सद्भ्य॒ः स्वाहा॑ ३५

ये दे॒वा वि॒श्वदे॑वनेत्राः पश्चा॒त् सद॒स्तेभ्य॒ः स्वाहा॑ ३६

॥१९३॥ (वा० य० १५।५०)

तं पत्नी॑भि॒रनु॑गच्छेम देवाः पु॒त्रैर्भ्रातृ॑भि॒रुत॑ वा॒ हिर॑ण्यैः।

नाकं॑ गृभ्णा॒नाः सु॑कृ॒तस्य॑ लो॒के तृ॒तीये॑ पृ॒ष्ठे अधि॑ रोच॒ने दि॒वः ५०

॥१९४॥ (वा० य० १७।५६)

दैव्या॑य ध॒र्त्रे जोष्ट्रे॑ दे॒व॒श्रीः श्रीम॑नाः श॒तप॑याः।

प॒रि॒गृ॒ह्य दे॒वा य॒ज्ञमा॑यन् दे॒वा दे॒वेभ्यो॑ अध्व॒र्यन्तो॑ अस्थुः ५६

॥१९५॥ (वा० य० १८।६०)

ए॒तं जा॑नाथ पर॒मे व्यो॑म॒न् देवाः॑ सधस्था॒ वि॒द रू॒पम॑स्य।

यदा॒गच्छा॑त् प॒थिभि॑र्देव॒यानै॑रिष्टापू॒र्त्ते कृ॑णवाथा॒विर॑स्मै ६० १२५१

॥१९६॥ (वा० य० १९।१२)

देवा यज्ञमतन्वत भेषजं भिषजाश्विना । वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधतः १२

॥१९७॥ (वा० य० २०।१४)

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् ।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः १४

॥१९८॥ (वा० य० २१।५३)

देवा देवानां भिषजा होतारावेन्द्रमश्विना ।
वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मतिꣳ होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने
वसुधेयस्य व्यन्तु यजं ५३

॥१९९॥ (वा० य० २६।१९)

अनु वीरैरनु पुष्यास्म गोभिरन्वश्वैरनु सर्वेण पुष्टैः ।
अनु द्विपदानु चतुष्पदा वयं देवा नो यज्ञमृतुथा नयन्तु १९ १२५५

॥२००॥ (वा० य० २८।११)

देवा आज्यपा जुषाणा इन्द्र आज्यस्य व्यन्तु ११

॥२०१॥ (वा० य० २९।२०)

देवा इदस्य हविरद्यमायन् यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत् २०

॥२०२॥ (वा० य० ३१।१४–१५,२१)

यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः १४
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् १५
रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात् तस्य देवा असन् वशे २१ १२६०

॥२०३॥ (वा० य० ३३।७,४८,८९)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिꣳशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ७
अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो ।
उभा नासत्या रुद्रो अध ग्नाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त ४८
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ८९ १२६३

लिङ्गोक्ताः ।

॥२०४॥ (ऋ० १।१३६।६-७)

(१२६४-६५) परुच्छेपो दैवोदासिः । ६ अत्यष्टिः, ७ त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं॑मग्निमुप॑ स्तुहि द्यु॒क्षमर्य॑मणं॒ भग॑म् ।
ज्योग्जीव॑न्तः प्र॒जया॑ सचेमहि सोम॑स्यो॒ती सं॑चेमहि ६ १२६४
ऊ॒ती दे॒वानां॑ व॒यमिन्द्र॑वन्तो मं॑सीमहि स्वय॑शसो म॒रुद्भिः॑ ।
अ॒ग्निर्मि॒त्रो वरु॑णः शर्म॑ यंसन् तद॑श्याम म॒घवा॑नो व॒यं च॑ ७

॥२०५॥ (ऋ० २।३२।८)

(१२६६) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

या गु॒ङ्गूर्या॑ सिनीवा॒ली या रा॒का या॑ सर॑स्वती ।
इन्द्रा॑णीमह्व ऊ॒तये॑ वरुणा॒नीं स्व॒स्तये॑ ८

॥२०६॥ (ऋ० १०।१४।७-९)

(१२६७-६९) वैवस्वतो यमः । (पितरो वा) । त्रिष्टुप् ।

प्रेहि॒ प्रेहि॑ प॒थिभिः॑ पू॒र्व्येभि॒र्यत्रा॑ नः॒ पूर्वे॑ पि॒तर॑ः परे॒युः ।
उ॒भा राजा॑ना स्व॒धया॑ मद॑न्ता य॒मं प॑श्यासि॒ वरु॑णं च दे॒वम् ७
सं ग॑च्छस्व पि॒तृभिः॑ सं य॒मेने॒ष्टापू॒र्तेन॑ पर॒मे व्यो॑मन् ।
हि॒त्वाया॑व॒द्यं पु॒नर॒स्तमे॑हि सं ग॑च्छस्व त॒न्वा॑ सु॒वर्चा॑ः ८
अपे॑त॒ वी॑त॒ वि च॑ सर्पतातो ऽस्मा ए॒तं पि॒तरो॑ लो॒कम॑क्रन् ।
अहो॑भि॒रद्भि॒रक्तु॑भि॒र्व्यक्तं॑ य॒मो द॑दात्यव॒सान॑मस्मै ९

॥२०७॥ [१२७०-१३९३] (वा० य० १।१२,१४)

प॒वित्रे॑ स्थो वैष्ण॒व्यौ स॑वि॒तुर्वः॑ प्रस॒व उत्पु॑ना॒म्यच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॑ ।
देवी॑रापो अग्रेगुवो अग्रेपु॒वोऽग्र॒ इ॒मम॒द्य य॒ज्ञं न॑यताग्रे य॒ज्ञप॑तिꣳ सु॒धातुं॑ य॒ज्ञप॑तिं
देव॒युव॑म् १२ १२७०
शर्मा॑स्यव॒धूत॑ꣳ रक्षोऽव॒धूता॑ अरा॑तयोऽदित्या॒स्त्वग॑सि॒ प्रति॑ त्वादि॒तिर्वे॑त्तु ।
अद्रि॑रसि वानस्प॒त्यो ग्रावा॑सि पृथु॒बुध्नः॑ प्रति॑ त्वादित्या॒स्त्वग्वे॑त्तु १४

॥२०८॥ (वा० य० २।१,५,१५,२०,२२,३२)

कृ॒ष्णोऽस्याख॑रेष्ठोऽग्नये॑ त्वा जु॒ष्टं प्रो॑क्षा॒मि॒ वेदि॑रसि ब॒र्हिषे॑ त्वा जु॒ष्टां प्रो॑क्षा॒मि
ब॒र्हिर॑सि स्रु॒ग्भ्यस्त्वा॒ जु॒ष्टं प्रो॑क्षा॒मि॒ १ १२७२

समिदसि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् पातु कस्याश्चिदभिशस्त्यै ।
सवितुर्बाहू स्थ ऊर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थं देवेभ्य आ त्वा वसवो रुद्रा
आदित्याः सदन्तु ५
अग्नीषोमयोरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि ।
अग्नीषोमौ तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेना-
पोहामि ।
इन्द्राग्न्योरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि । इन्द्राग्नी तमपनुदतां० १५
अग्नेऽदब्धायोऽशीतम पाहि मा दिद्योः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्टयै पाहि
दुरद्मन्या अविषं नः पितुं कृणु ।
सुषदा योनौ स्वाहा वाडग्नये संवेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा २० ११७५
सं बर्हिरङ्क्तां हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सं मरुद्भिः ।
समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा २२
नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय
नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे
नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो
देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त ३२

॥२०९॥ (वा० य० ३।५,९-१०)

भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ५
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ९
सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या । जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥
सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा १०

॥२१०॥ (वा० य० ४।७,२६)

आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा दीक्षायै तपसेऽग्नये स्वाहा
सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा ।
आपो देवीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवी उरो अन्तरिक्ष ।
बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा ७ १२८१

शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि चन्द्रं चन्द्रेणामृतममृतेन ।
सग्मे ते गोरस्मे ते चन्द्राणि तपसस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः परमेण पशुना क्रीयसे
सहस्रपोषं पुषेयम् २६ ११८१

॥२११॥ (वा० य० ५।२,७,९)

अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थ उर्वश्यस्यायुरसि पुरूरवा असि ।
गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि जागतेन त्वा
छन्दसा मन्थामि २
अꣳशुरꣳशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे ।
आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।
आप्याययास्मान्त्सखीन्त्सन्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।
एष्टा रायः प्रेषे भगाय ऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम् ७
तन्मायनी मेऽसि वित्तायनी मेऽस्यवतान्मा नाथितादवतान्मा व्यथितात् ।
विदेदग्निर्नभो नामाग्ने आङ्गिर आयुना नाम्नेहि योऽस्यां पृथिव्यामसि
यत् तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदग्निर्नभो नामाग्ने आङ्गिर आयुना
नाम्नेहि यो द्वितीयस्यां पृथिव्यामसि यत् तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा
दधे विदेदग्निर्नभो नामाग्ने आङ्गिर आयुना नाम्नेहि यस्तृतीयस्यां
पृथिव्यामसि यत् तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे ।
अनु त्वा देववीतये ९ ११८५

॥२१२॥ (वा० य० ६।७,९,१५-१६,१८,२०-२१,२३,२६)

उपावीरस्युप देवान् दैवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान् ।
देवं त्वष्टर्वसु रम हव्या ते स्वदन्ताम् ७
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं नियुनाज्मि ।
अद्भ्यस्त्वौषधीभ्योऽनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योऽनु सखा सयूथ्यः ।
अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ९
मनस्त आप्यायतां वाक्त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां चक्षुस्त आप्यायताꣳ
श्रोत्रं त आप्यायताम् ।
यत् ते क्रूरं यदास्थितं तत् त आप्यायतां निष्टयायतां तत् ते शुध्यतु शमहोभ्यः ।
ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳसीः १५ ११८८

रक्षसां भागोऽसि निरस्तꣳ रक्ष इदमहꣳ रक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳ रक्षोऽवबाध इदमहꣳ रक्षोऽधमं तमो नयामि ।
घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम् १६
सं ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम् ।
रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन् वातस्य त्वा ध्राज्यै पूष्णो रश्म्या ऊष्मणो व्यथिषत् प्रयुतं द्वेषः १८ १२९०
ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र उदानो अङ्गे अङ्गे निधीतः ।
देवं त्वष्टर्भूरिं ते सꣳ समेतु सलक्ष्मा यद्विषुरूपं भवाति ।
देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु २०
समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवꣳ सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु स्वज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा २१
हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ२ आविवासति ।
हविष्मान् देवो अध्वरो हविष्माँ२ अस्तु सूर्यः २३
सोम राजन् विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु ।
शृणोत्वग्निः समिधा हवं मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः ।
श्रोता ग्रावाणो विदुषो न यज्ञꣳ शृणोतु देवः सविता हवं मे स्वाहा २६

॥२१३॥ (वा० य० ७।२-३,१५,१८,२०,२२,२३,२७-२८,४५-४७)+

मधुमतीर्न इषस्कृधि यत् ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा स्वाहोर्वन्तरिक्षमन्वेमि २
स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यो देवाꣳशो यस्मै त्वेडे तत् सत्यमुपरिप्रुता भक्षेन हतोऽसौ फट् प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा ३ १२९६

+ वा० य० ७,३९-४० = दै० [इन्द्रः] १८७१,१४३ ।

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्मा इन्द्राय सुतमाजुहोत स्वाहा ।
तृम्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुहुता यत् स्वाहायाऽग्नीत् १५ ११९७
सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।
सञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्को मन्थिनोऽधिष्ठानमसि १८
उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणोऽसि स्वाग्रयणः ।
पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु विष्णुं त्वं पाह्यभि सवनानि पाहि २०
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा बृहद्वते वयस्वत उक्थाव्यं गृह्णामि ।
यत् ते इन्द्र बृहद्वयस्तस्मै त्वा विष्णवे त्वैष ते योनिरुक्थेभ्यस्त्वा देवेभ्यस्त्वा
देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि २२ १३००
मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्राय त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे
गृह्णामीन्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं
यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्रा-
विष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि २३
प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे
वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतुदक्षाभ्यां मे वर्चोदा
वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदसौ
वर्चसे पवेथाम् २७
आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वौजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वाऽऽयुषे मे वर्चोदा
वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् २८
रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु ।
ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्युन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ४५
ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयꣳ सुधातुदक्षिणम् ।
अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत ४६
अग्नये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीयाऽऽयुर्दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्र-
हीत्रे रुद्राय त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीय प्राणो दात्र एधि
वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे बृहस्पतये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीय
त्वग्दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे यमाय त्वा मह्यं वरुणो ददातु
सोऽमृतत्वमशीय हयो दात्र एधि वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे ४७ ११०६

॥२१४॥ (वा० य० ८।९,५४-५९)

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिसुतस्य देव सोम तु इन्दोरिन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्रहाँ२ ऋध्यासम् ।

अहं परस्तादुहमवस्ताद्यदुन्तरिक्षं तदु मे पिताभूत् ।

अहꣳ सूर्यमुभयतो ददर्शाहं देवानां परमं गुहा यत् ९

परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्धो अच्छेतः ।

सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायां पूषा सोमक्रयण्याम् ५४

इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयायोपोत्थितोऽसुरः पण्यमानो मित्रः क्रीतो विष्णुः शिपिविष्ट उरावासन्नो विष्णुर्नरन्धिषः ५५

प्रोह्यमाणः सोम आगतो वरुण आसन्द्यामासन्नोऽग्निराग्नीध्र इन्द्रो हविर्धानेऽर्थवोपावहियमाणः ५६ १३१०

विश्वे देवा अꣳशुषु न्युप्तो विष्णुराप्रीतपा आप्याय्यमानो यमः सूयमानो विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः शुक्रः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीर्मन्थी संकृतश्रीः ५७

विश्वे देवाश्चमसेषून्नीतोऽसुहोमायोद्यतो रुद्रो हूयमानो वातोऽभ्यावृत्तो नृचक्षाः प्रतिख्यातो भक्षो भक्ष्यमाणः पितरो नाराशꣳसाः ५८

सप्तः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवहियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजाꣳसि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा । या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू अगन् वरुणा पूर्वहूतौ +५९

॥२१५॥ (वा० य० ९।९-१२,२४,३१-३६)

जवो यस्ते वाजिन्निहितो गुहा यः श्येने परीत्तो अचरच्च वाते ।

तेन नो वाजिन् बलवान् बलेन वाजजिच्च भव समने च पारयिष्णुः ।

वाजिनो वाजजितो वाजꣳ सरिष्यन्तो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत ९

देवस्याहꣳ सवितुः सवे सत्यसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकꣳ रुहेयम् ।

देवस्याहꣳ सवितुः सवे सत्यसवस इन्द्रस्योत्तमं नाकꣳ रुहेयम् ।

देवस्याहꣳ सवितुः सवे सत्यप्रसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकमरुहम् ।

देवस्याहꣳ सवितुः सवे सत्यप्रसवस इन्द्रस्योत्तमं नाकमरुहम् १० १३१५

+ वा० य० ८।६० = दै० [विश्वे देवाः] १२४६ । * अथर्व० ६,९२.१ पाठभेदेन ।

बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतये वाचं वदत बृहस्पतिं वाजं जापयत ।
इन्द्र वाजं जयेन्द्राय वाचं वदतेन्द्रं वाजं जापयत ११ ११९६
एषा वः सा सत्या संवागभूद्यया बृहस्पतिं वाजमजींजपताजींजपत बृहस्पतिं वाजं वनस्पतयो विमुच्यध्वम् ।
एषा वः सा सत्या संवागभूद्ययेन्द्रं वाजमजींजपताजींजपतेन्द्रं वाजं० १२
वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये दिवमिमा च विश्वा भुवनानि सम्राट् ।
अदितन्तं दापयति प्रजानन्त्स नो रयिꣳ सर्ववीरं नियच्छतु स्वाहा २४
अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत् तमुज्जेषमश्विनौ द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयतां तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रीँल्लोकानुदजयत् तानुज्जेषꣳ सोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदः पशूनुदजयत् तानुज्जेषम् ३१
पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिश उदजयत् ता उज्जेषꣳ सविता षडक्षरेण षडृतूनुदजयत् तानुज्जेषं मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशूनुदजयꣳस्तानुज्जेषं बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुदजयत् तामुज्जेषम् ३२ ११२०
मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतꣳ स्तोममुदजयत् तमुज्जेषं वरुणो दशाक्षरेण विराजमुदजयत् तामुज्जेषमिन्द्र एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभमुदजयत् तामुज्जेषं विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयꣳस्तामुज्जेषम् ३३
वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशꣳ स्तोममुदजयꣳस्तमुज्जेषꣳ रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशꣳ स्तोममुदजयꣳस्तमुज्जेषमादित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशꣳ स्तोममुदजयꣳस्तमुज्जेषमदितिः षोडशाक्षरेण षोडशꣳ स्तोममुदजयत् तमुज्जेषं प्रजापतिः सप्तदशाक्षरेण सप्तदशꣳ स्तोममुदजयत् तमुज्जेषम् ३४
एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहाऽग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसद्भ्यः स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरासद्भ्यः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः स्वाहा ३५
ये देवा अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा यमनेत्रा दक्षिणासदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा मित्रावरुणनेत्रा वा मरुन्नेत्रा वोत्तरासदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवाः सोमनेत्रा उपरिसदो दुवस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा ३६ ११२४

॥२१६॥ (वा० य० १०।५,९,११,२३,२८,३१)

सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे त्विषिर्भूयात्।
अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहाऽꣳशाय स्वाहा भगाय स्वाहाऽर्यम्णे स्वाहा ५ १३२५
आविर्मर्या आविवित्तो अग्निर्गृहपतिराविवित्त इन्द्रो वृद्धश्रवा आविवित्तौ मित्रावरुणौ घृतव्रतावाविवित्तः पूषा विश्ववेदा आविवित्ते द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवावा-विवित्तामदितिरुरुशर्मा ९
इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि।
अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वाऽरिष्टो अर्जुनो मरुतां प्रसवेन जयापाम मनसा समिन्द्रियेण २१
अग्नये गृहपतये स्वाहा सोमाय वनस्पतये स्वाहा मरुतामोजसे स्वाहेन्द्रस्येन्द्रियाय स्वाहा।
पृथिवि मातर्मा मा हिꣳसीर्मो अहं त्वाम् २३
अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिशः कल्पन्तां ब्रह्मँस्त्वं ब्रह्माऽसि सविताऽसि सत्यप्रसवो वरुणोऽसि सत्यौजा इन्द्रोऽसि विशौजा रुद्रोऽसि सुशेवः।
बहुकार श्रेयस्कर भूयस्करेन्द्रस्य वज्रोऽसि तेन मे रध्य २८
अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व।
वायुः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्क्सोमो अतिस्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा ३१ १३३०

॥२१७॥ (वा० य० ११।५८,६६)

वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि पृथिव्यसि धारया मयि प्रजाꣳ रायस्पोषं गौपत्यꣳ सुवीर्यꣳ सजातान् यजमानाय रुद्रास्त्वा कृण्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवास्यन्तरिक्षमसि धारया मयि प्रजाꣳ रायस्पोषं गौपत्यꣳ सुवीर्यꣳ सजातान् यजमानायादित्यास्त्वा कृण्वन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि द्यौरसि धारया मयि प्रजाꣳ रायस्पोषं गौपत्यꣳ सुवीर्यꣳ सजातान् यजमानाय विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि दिशोऽसि धारया मयि प्रजाꣳ रायस्पोषं गौपत्यꣳ सुवीर्यꣳ सजातान् यजमानाय ५८ १३३१

आकूतिमग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा मनो मेधामग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा चित्तं विज्ञातमग्निं
प्रयुजꣳ स्वाहा वाचो विधृतिमग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा प्रजापतये मनवे
स्वाहाऽग्नये वैश्वानराय स्वाहा ६६ १३३२

॥२१८॥ (वा० य० १२।४५,५४,७४)

अपेत वीत वि च सर्पतातो येऽत्र स्थ पुराणा ये च नूतनाः ।
अदाद्यमोऽवसानं पृथिव्या अक्रन्निमं पितरो लोकमस्मै ४५
लोकं पृण छिद्रं पुणाथो सीद ध्रुवा त्वम् ।
इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिरस्मिन् योनावसीषदन् ५४
सजूरन्द्रो अयवोभिः सजूरुषा अरुणीभिः ।
सजोषसावश्विना दꣳसोभिः सजूः सूर एतशेन सजूर्वैश्वानर इडया घृतेन स्वाहा ७४ १३३५

॥२१९॥ (वा० य० १३।२,३८)

अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः समुद्रमभितः पिन्वमानम् ।
वर्धमानो महाँ२ आ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथस्व २
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।
घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ३८

॥२२०॥ (वा० य० १४।९-१०,१७-१९,२३-२६)

मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः क्षत्रं वयो मयश्छन्दं छन्दो विष्टम्भो वयोऽधि-
पतिश्छन्दो विश्वकर्मा वयः परमेष्ठी छन्दो बस्तो वयो विवुलं छन्दो
वृष्णिर्वयो विशालं छन्दः पुरुषो वयस्तन्द्रं छन्दो व्याघ्रो वयोऽनाधृष्टं
छन्दः सिꣳहो वयश्छदिश्छन्दः पष्ठवाड् वयो बृहती छन्द उक्षा वयः
ककुप् छन्द ऋषभो वयः सतोबृहती छन्दः ९
अनड्वान् वयः पङ्क्तिश्छन्दो धेनुर्वयो जगती छन्दस्त्र्यविर्वयस्त्रिष्टुप् छन्दो
दित्यवाड् वयो विराट् छन्दः पञ्चाविर्वयो गायत्री छन्दस्त्रिवत्सो वय उष्णिक्
छन्दस्तुर्यवाड् वयोऽनुष्टुप् छन्दो लोकं ता इन्द्रम् १०
आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहि व्यानं मे पाहि चक्षुर्मे पाहि श्रोत्रं मे
पाहि वाचं मे पिन्व मनो मे जिन्वाऽऽत्मानं मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ १७
मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रतिमा छन्दो अस्रीवयश्छन्दः पङ्क्तिश्छन्द उष्णिक्
छन्दो बृहती छन्दोऽनुष्टुप् छन्दो विराट् छन्दो गायत्री छन्दस्त्रिष्टुप्
छन्दो जगती छन्दः १८ १३४१

पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दो नक्षत्राणि छन्दो वाक् छन्दो मनश्छन्दः कूर्मश्छन्दो हिरण्यं छन्दो गौश्छन्दोऽजाश्छन्दोऽश्वश्छन्दः १९

आशुस्त्रिवृद्भ्रान्तः पञ्चदशो व्योमा सप्तदशो धरुणं एकविꣳशः प्रतूर्तिरष्टादश-स्तपो नवदशोऽभीवर्त्तः संविꣳशो वर्चो द्राविꣳशः सम्भरणस्त्रयोविꣳशो योनिश्चतुर्विꣳशो गर्भाः पञ्चविꣳश ओजस्त्विणवः क्रतुरेकत्रिꣳशः प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिꣳशो ब्रध्नस्य विष्टपं चतुस्त्रिꣳशो नाकः षट्त्रिꣳशो विवर्त्तोऽष्टाच-त्वारिꣳशो धर्त्रं चतुष्टोमः २३

अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया आधिपत्यं ब्रह्म स्पृतं त्रिवृत्स्तोम इन्द्रस्य भागोऽसि विष्णोराधिपत्यं क्षत्रꣳस्पृतं पञ्चदश स्तोमो नृचक्षसां भागोऽसि धातुराधि-पत्यं जनित्रꣳ स्पृतꣳ सप्तदश स्तोमो मित्रस्य भागोऽसि वरुणस्याधिपत्यं दिवो वृष्टिर्वातं स्पृत एकविꣳश स्तोमः २४

वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं चतुष्पात् स्पृतं चतुर्विꣳश स्तोम आदित्यानां भागोऽसि मरुतामाधिपत्यं गर्भाः स्पृताः पञ्चविꣳश स्तोमोऽदित्यै भागोऽसि पूष्ण आधिपत्यमोजः स्पृतं त्रिणव स्तोमो देवस्य सवितुर्भागोऽसि बृहस्पतेराधिपत्यꣳ समीचीर्दिशः स्पृताश्चतुष्टोम स्तोमः २५ १३४५

यवानां भागोऽस्ययवानामाधिपत्यं प्रजा स्पृताश्चतुश्चत्वारिꣳश स्तोम ऋभूणां भागोऽसि विश्वेषां देवानामाधिपत्यं भूतꣳ स्पृतं त्रयस्त्रिꣳश स्तोमः २६

॥२२१॥ (वा० य० १५।३-१९)

षोडशी स्तोम ओजो द्रविणं चतुश्चत्वारिꣳश स्तोमो वर्चो द्रविणम् ।
अग्नेः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वे अभिगृणन्तु देवाः ।
स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणायजस्व ३

एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः शम्भूश्छन्दः परिभूश्छन्द आच्छच्छन्दो मनश्छन्दो व्यचश्छन्दः सिन्धुश्छन्दः समुद्रश्छन्दः सरिरं छन्दः ककुप्छन्दस्त्रिककुप्छन्दः काव्यं छन्दो अङ्कुपं छन्दोऽक्षरपङ्क्तिश्छन्दः पदपङ्क्तिश्छन्दो विष्टारप-ङ्क्तिश्छन्दः क्षुरोभ्रजश्छन्दः ४

आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः संयच्छन्दो वियच्छन्दो बृहच्छन्दो रथन्तरञ्छन्दो निकायश्छन्दो विवधश्छन्दो गिरश्छन्दो भ्रजश्छन्दः सꣳस्तुप्छन्दोऽनुष्टु-प्छन्द एवश्छन्दो वरिवश्छन्दो वयश्छन्दो वयस्कृच्छन्दो विष्पर्धाश्छन्दो विशालं छन्दश्छदिश्छन्दो दूरोहणं छन्दस्तन्द्रं छन्दो अङ्काङ्कं छन्दः ५ १३४९

रश्मिना सत्यायं सत्यं जिन्व प्रेतिना धर्मणा धर्मं जिन्वान्वित्या दिवा दिवं जिन्व सन्धिनान्तरिक्षेणान्तरिक्षं जिन्व प्रतिधिना पृथिव्या पृथिवीं जिन्व विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिं जिन्व प्रवयाहाहर्जिन्वानुया रात्र्या रात्रीं जिन्वोशिजा वसुभ्यो वसूञ्जिन्व प्रकेतेनादित्येभ्य आदित्यान्जिन्व ६ १३५०

तन्तुना रायस्पोषेण रायस्पोषं जिन्व सꣳसर्पेण श्रुतायं श्रुतं जिन्वैडेनौषधीभिरोषधीर्जिन्वोत्तमेन तनूभिस्तनूर्जिन्व वयोधसाधीतेनाधीतं जिन्वाभिजिता तेजसा तेजो जिन्व ७

प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा ८

त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा प्रवृदसि प्रवृते त्वा विवृदसि विवृते त्वा सवृदसि सवृते त्वाक्रमोऽस्याक्रमायं त्वा संक्रमोऽसि संक्रमायं त्वोत्क्रमोऽस्युत्क्रमायं त्वोत्क्रान्तिरस्युत्क्रान्त्यै त्वाधिपतिनोर्जोर्जं जिन्व ९

राड्यसि प्राची दिग् वसवस्ते देवा अधिपतयोऽग्निर्हेतीनां प्रतिधर्ता त्रिवृत् त्वा स्तोमः पृथिव्याꣳ श्रयत्वाज्यमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु रथन्तरꣳ साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु १०

विराडसि दक्षिणा दिग् रुद्रास्ते देवा अधिपतय इन्द्रो हेतीनां प्रतिधर्ता पञ्चदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याꣳ श्रयतु प्र उगमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु बृहत्साम प्रतिष्ठित्या० ११ १३५५

सम्राडसि प्रतीची दिगादित्यास्ते देवा अधिपतयो वरुणो हेतीनां प्रतिधर्ता सप्तदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याꣳ श्रयतु मरुत्वतीयमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु वैरूपꣳ साम प्रतिष्ठित्या० १२

स्वराडस्युदीची दिङ्मरुतस्ते देवा अधिपतयः सोमो हेतीनां प्रतिधर्तैकविꣳशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याꣳ श्रयतु निष्केवल्यमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु वैराजꣳ साम प्रतिष्ठित्या० १३ १३५७

अधिपत्न्यसि बृहती दिग् विश्वे ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिर्हेतीनां प्रतिधर्ता
त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ त्वा स्तोमौ पृथिव्याꣳ श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे
अव्यथायै स्तभ्नीताꣳ शाक्वररैवते सामनी प्रतिष्ठित्या० १४

अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला चाप्सरसौ दुड्क्षणवः पशवो हेतिः पौरुषेयो वधः
प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च
नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः १५

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य रथस्वनश्च रथेचित्रश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
मेनका च सहजन्या चाप्सरसौ यातुधाना हेती रक्षाꣳसि प्रहेतिस्तेभ्यो० १६ १३६०

अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य रथप्रोतश्चासमरथश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
प्रम्लोचन्ती चानुम्लोचन्ती चाप्सरसौ व्याघ्रा हेतिः सर्पाः प्रहेतिस्तेभ्यो० १७

अयमुत्तरात् संयद्वसुस्तस्य तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
विश्वाची च घृताची चाप्सरसावापो हेतिर्वातः प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु० १८

अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य सेनाजिच्च सुषेणश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
उर्वशी च पूर्वचित्तिश्चाप्सरसावस्फूर्जन् हेतिर्विद्युत् प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु० १९

॥२२२॥ (वा० य० १७।४८,५१)+

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव ।
तत्र इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ४८

यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम् । तस्मै देवा अधिब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः५२ ११६५

॥२२३॥ (वा० य० १८।३७)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ३७

॥२२४॥ (वा० य० २०।३,१३,१७-१८)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्याया-
न्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि ३ ११६७

+ वा० य० १७,४९=ऋ० ६,७५,१८; दै० [विश्वे देवाः] ११४९; सा० १८७० ।

लोमानि प्रयतिर्मम त्वङ् म आनतिरागतिः ।
मा१ꣳसं म उपनतिर्वस्वस्थि मज्जा म आनतिः १३
यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां यदिन्द्रिये ।
यच्छूद्रे यदर्ये यदेनश्चकृमा वयं यदेकस्याधि धर्मणि तस्यावयजनमसि १७
यदापो अघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।
अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्ष्यव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि १८ ११७०

॥२२५॥ (वा० य० २१।४१-४३,६०-६१)×

होता यक्षद्दश्विनौ छागस्य वपाया मेदसो जुषेतां१ꣳ हविर्होतर्यज ।
होता यक्षत् सरस्वतीं मेषस्य वपाया मेदसो जुषतां१ꣳ हविर्होतर्यज ।
होता यक्षदिन्द्रमृषभस्य वपाया मेदसो जुषतां१ꣳ हविर्होतर्यज ४१
होता यक्षदश्विनौ सरस्वतीमिन्द्रं१ꣳ सुत्रामाणमिमे सोमाः सुरामाण१ꣳ छागैर्न
मेषैर्ऋषभैः सुताः शष्पैर्न तोक्मभिर्लाजैर्महस्वन्तो मदा मासरेण परिष्कृताः
शुक्राः पयस्वन्तोऽमृताः प्रस्थिता वो मधुश्चुतस्तानश्विना सरस्वतीन्द्रः
सुत्रामा वृत्रहा जुषन्तां१ꣳ सोम्यं मधु पिबन्तु मदन्तु व्यन्तु होतर्यज ४२
होता यक्षदश्विनौ छागस्य हविष आत्तामद्य मध्यतो मेद उद्भृतं पुरा द्वेषोभ्यः
पुरा पौरुषेय्या गृभो घस्तां नूनं घासे अजाणां यवसप्रथमाना१ꣳ सुमत्क्षराणा१ꣳ
शतरुद्रियाणामग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानां पार्श्वतः श्रोणितः शितामत
उत्सादतोऽङ्गादङ्गादवत्तानां करत एवाश्विना जुषेतां१ꣳ हविर्होतर्यज ४३
सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदश्विभ्यां छागेन सरस्वत्यै मेषेणेन्द्राय
ऋषभेणाक्षँस्तान् मेदस्तः प्रति पचतागृभीषतावीवृधन्त पुरोडाशैरपुरश्विना
सरस्वतीन्द्रः सुत्रामा सुरासोमान् ६०
त्वामद्य ऋष आर्षेय ऋषीणां नपादवृणीतायं यजमानो बहुभ्य आ सङ्गतेभ्य
एष मे देवेषु वसु वार्यायक्ष्यत इति ता या देवा देव दानान्यदुस्तान्यस्मा
आ च शास्वा च गुरस्वेषितश्च होतरसि भद्रवाच्याय प्रेषितो मानुषः
सूक्तवाकाय सूक्ता ब्रूहि ६१ ११७५

× वा० य० २१.२३-२८=दै०[अदितिः०] २४०-२४५ ।

॥२२६॥ (वा० य० २३।८,१३,१८-२०,२६-२७,६३)

वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाऽऽदित्यास्त्वाञ्जन्तु जागतेन छन्दसा ।

भूर्भुवःस्वर्लाजी३ञ्छाची३न्यव्ये गर्ग्य एतदन्नमत्त देवा एतदन्नमद्धि प्रजापते ८

वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्रीवश्छागैर्न्यग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्वृद्ध्या ।

एष स्य राथ्यो वृषा पवित्रे अधि सानवि । इन्द्रमिन्दुरिषायति ॥ १३

प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।

अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् १८

गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम ।

आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् १९

ता उभौ चतुरः पदः सम्प्रसारयाव स्वर्गे लोके प्रोर्णुवाथां वृषा वाजी रेतोधा रेतो दधातु २० १३८०

ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रापय गिरौ भारꣳ हरन्निव । अथास्यै मध्यमेधतां शीते वाते पुनन्निव २६

ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद्गिरौ भारꣳ हरन्निव । अथास्य मध्यमेजतु शीते वाते पुनन्निव २७

सुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन्तर्महत्यर्णवे ।

दधे ह गर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः ६३

॥२२७॥ (वा० य० २६।१-२)

अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सं नमतामदो वायुश्चाऽन्तरिक्षं च सन्नते ते मे सं नमतामद आदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सं नमतामद आपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सं नमतामदः ।

सप्त सꣳसदो अष्टमी भूतसाधनी सकामाँ२ अध्वनस्कुरु संज्ञानमस्तु मेऽमुना १

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।

ब्रह्मराजन्याभ्याꣳ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।

प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु २ १३८५

॥२२८॥ (वा०य० २८।२३,४३)

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन् पक्तीः पचन् पुरोडाशँ ब्रध्नन्निन्द्राय छागम् ।

सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राय छागेन ।

अघत्तं मेदुस्तः प्रति पचताग्रभीदवीवृधत् पुरोडाशेन । त्वामद्य ऋषे २३ १३८६

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।

द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ४३

॥२२९॥ (वा० य० २९।४७)

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा ।

पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नो अघशꣳस ईशत ४७

॥२३०॥ (वा० य० ३२।१५)×

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।

मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा १५

॥२३१॥ (वा० य० ३५।३,११)*

वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा ।

वि मुच्यन्तामुस्रियाः ३ १३९०

अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपो रपः । अपामार्ग त्वमस्मदप दुःष्वप्न्यꣳ सुव ११

॥२३२॥ (वा० य० ३६।१)

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये ।

वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ १

॥२३३॥ (वा० य० ३८।४,१५)

अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै पिन्वस्वेन्द्राय पिन्वस्व ।

स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् ४

स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा ग्रावभ्यः स्वाहा प्रतिरवेभ्यः ।

स्वाहा पितृभ्य ऊर्ध्वबर्हिर्भ्यो घर्मपावभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ꣳ स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः १५ १३९४

×वा० य० ३३,५७-५८=दै० [अदितिः०] १३६; सा० ८४७; दै० [अश्विनौ] ३। वा० य० ३४,४६=दै० [विश्वे देवाः] ८०८।

*वा० य० ३५।४=दै० [आयुर्वेद०] ३०५।

॥२३४॥ (सा० २९९)

(१३९५-९७) वामदेवो गौतमः । बहुः । बृहती ।

त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः २९९ १३९५

॥२३५॥ (सा० ५९१) एकपाज्जगती ।

इमं वृषणं कृणुतेकमिन्माम् ५९१

॥२३६॥ (सा० ६११) महापङ्क्तिः ।

यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती ।
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम् ।
यशसाऽऽस्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम् ६११

॥२३७॥ (सा० ३६८)

(१३९८) त्रित आप्त्यः । अनुष्टुप् ।

अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः ।
कद्व ऋतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः ३६८

॥२३८॥ (सा० ४४२)

(१३९९) त्रसदस्युः । द्विपदा विराट् ।

सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः ४४२

॥२३९॥ (सा० ४५३)

(१४००) कवष ऐलूषः । द्विपदा विराट् ।

वि स्रुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः ४५३ १४००

॥२४०॥ (सा० ४५५)

(१४०१) आत्रेयः । द्विपदा विराट् ।

ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुहीन इन्द्र ४५५

॥२४१॥ (सा० १५०३-४)×

(१४०२-३) अग्निस्तापसः । अनुष्टुप् ।

अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्जोषि ब्रह्म सहस्कृत ।
ये देवत्रा य आयुषु तेभिर्नो महया गिरः १५०३ १४०२

×सा १५०५ = दै० [विश्वे देवाः] ८२१ ।

प्र स विश्वेभिरग्निभिरग्निः स यस्य वाजिनः ।
तनये तोके अस्मदा सम्यङ्वाजैः परीवृतः १५०४ १४०३

॥२४२॥ (सा० १८७२)

(१४०४) पायुर्भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ठ्यो जिघांसति ।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरं शर्म वर्म ममान्तरम् १८७२

नानादेवताः ।

॥२४३॥ (वा० य० ९।२०)

आपये स्वाहा स्वापये स्वाहा ऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहा
ऽहर्पतये स्वाहा ऽह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनꣳशिनाय स्वाहा
विनꣳशिन आन्त्यायनाय स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहा
ऽधिपतये स्वाहा ॥२०॥ १४०५-१६

॥२४४॥ (वा० य० १०।५)

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा
बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहा ऽꣳशाय स्वाहा
भगाय स्वाहा ऽर्यम्णे स्वाहा ॥५॥ १४१७-२८

॥२४५॥ (वा० य० ११।६०,६५)

वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्व-
दादित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन
छन्दसाङ्गिरस्व-दिन्द्रस्त्वा धूपयतु वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुस्त्वा धूपयतु ॥६०॥ १४२९-३५

वसवस्त्वाऽऽच्छृन्दतु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् रुद्रास्त्वाऽऽच्छृन्दन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्व-
दादित्यास्त्वाऽऽच्छृन्दन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा
आच्छृन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥६५॥ १४३६-३९

॥२४६॥ (वा० य० १४।२८-३१)

एकयास्तुवत प्रजा अधीयन्त प्रजापतिरधिपतिरासीत् तिसृभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत ब्रह्मणस्पतिरधिपतिरासीत् पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त भूतानां पतिरधिपतिरासीत् सप्तभिरस्तुवत सप्त ऋषयोऽसृज्यन्त धाताऽधिपतिरासीत् ॥२८॥ १४४०-४३

नवभिरस्तुवत पितरोऽसृज्यन्तादितिरधिपत्न्यासी—देकादशभिरस्तुवत ऋतवोऽसृज्यन्तार्तवा अधिपतय आसँ—स्त्रयोदशभिरस्तुवत मासा असृज्यन्त संवत्सरोऽधिपतिरासीत् पञ्चदशभिरस्तुवत क्षत्रमसृज्यतेन्द्रोऽधिपतिरासीत् सप्तदशभिरस्तुवत ग्राम्याः पशवोऽसृज्यन्त बृहस्पतिरधिपतिरासीत् ॥२९॥ १४४४-४८

नवदशभिरस्तुवत शूद्रार्यावसृज्येतामहोरात्रे अधिपत्नी आस्ता—मेकविꣳशत्यास्तुवतैकशफाः पशवोऽसृज्यन्त वरुणोऽधिपतिरासीत् त्रयोविꣳशत्यास्तुवत क्षुद्राः पशवोऽसृज्यन्त पूषाऽधिपतिरासीत् पञ्चविꣳशत्यास्तुवतारण्याः पशवोऽसृज्यन्त वायुरधिपतिरासीत् सप्तविꣳशत्यास्तुवत द्यावापृथिवी व्यैतां वसवो रुद्रा आदित्या अनूव्यायँस्त एवाधिपतय आसन् ॥३०॥ १४४९-५३

नवविꣳशत्यास्तुवत वनस्पतयोऽसृज्यन्त सोमोऽधिपतिरासी—देकत्रिꣳशतास्तुवत प्रजा असृज्यन्त यवाश्चायवाश्चाधिपतय आसँ—स्त्रयस्त्रिꣳशतास्तुवत भूतान्यशाम्यन् प्रजापतिः परमेष्ठ्यधिपतिरासीत् ॥३१॥ १४५४-५६

॥२४७॥ (वा० य० १८।१६-१८,२२)

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१६॥

मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१७॥

पृथिवी च म इन्द्रश्च मे ऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे समाश्च म इन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१८॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मे ऽअर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मे ऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे ऽकुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२२॥ १४५७-८५

॥२४८॥ (वा० य० २२।५-८,२०,२२-३४)

प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामी—न्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि ।
यो अर्वन्तं जिघांꣳसति तमभ्यमीति वरुणः ॥५॥ १४८६-९१

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा ऽपां मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा
विष्णवे स्वाहे—न्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा
॥६॥ १४९२-१५०१

हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा
प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहो—पविष्टाय स्वाहा
सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा ऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा
जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा
सꣳहानाय स्वाहो—त्थिताय स्वाहा ऽऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥७॥ १५०२-१५
यते स्वाहा धावते स्वाहो—द्धावाय स्वाहो—द्धताय स्वाहा शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा
निषण्णाय स्वाहो—त्थिताय स्वाहा जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्तमानाय स्वाहा
विवृत्ताय स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा
शृण्वते स्वाहे—क्षमाणाय स्वाहे—क्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा
यदत्ति तस्मै स्वाहा यत् पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा
कृताय स्वाहा ॥८॥ १५२६-५०

काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा स्वाहाऽऽधिमाधीताय स्वाहा मनः
प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञाताया—ऽदित्यै स्वाहा ऽदित्यै मह्यै स्वाहा ऽदित्यै
सुमृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा
पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा
त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयपाय स्वाहा
विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा ॥२०॥ १५५१-७१

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्युः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो
जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य
यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां
योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥२२॥ १५७२

प्राणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा
वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥२३॥ १५७३-७९

प्राच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा
प्रतीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहो—दीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहो—
र्ध्वायै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा
॥२४॥ १५८०-९१

अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहो—दकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्रवन्तीभ्यः स्वाहा
स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहा
ऽर्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा ॥२५॥ १५९२-१६०३

वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहा ऽभ्राय स्वाहा मेघाय स्वाहा विद्योतमानाय स्वाहा
स्तनयते स्वाहा ऽवस्फूर्जते स्वाहा वर्षते स्वाहा ऽववर्षते स्वाहो—ग्रं वर्षते स्वाहा
शीघं वर्षते स्वाहो—द्गलते स्वाहो—द्गहीताय स्वाहा प्रुष्णते स्वाहा शीकायते स्वाहा
प्रुष्वाभ्यः स्वाहा ह्रादुनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा ॥२६॥ १६०४-११

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहे—न्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहा ऽन्तरिक्षाय स्वाहा
दिवे स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहा ऽऽशाभ्यः स्वाहो—र्व्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा
॥२७॥ १६२१-३१

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा ऽहोरात्रेभ्यः स्वाहा ऽर्धमासेभ्यः स्वाहा
मासेभ्यः स्वाहे ऋतुभ्यः स्वाहा ऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा
द्यावापृथिवीभ्या२ स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा
वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहा ऽऽदित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा
पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौ—षधीभ्यः स्वाहा ॥२८॥ १६३१-५४

पृथिव्यै स्वाहा ऽन्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा ऽद्भ्यः स्वाहौ—षधीभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा
अरिष्टेभ्यः स्वाहा चराचरेभ्यः स्वाहा सरीसृपेभ्यः स्वाहा ॥२९॥ १६५५-६६

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा
गणपतये स्वाहा ऽभिभुवे स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा
सꣳसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा
दिवा पतयते स्वाहा ॥३०॥ १६६७-८०

मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा
नभस्याय स्वाहे—षाय स्वाहो—र्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा
तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ऽꣳहसस्पतये स्वाहा ॥३१॥ १६८१-९३

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा ऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा स्वः स्वाहा
मूर्ध्ने स्वाहा व्यश्नुविने स्वाहा ऽन्त्याय स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा
भुवनस्य पतये स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥३२॥ १६९४-१७०५

आयुर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ऽपानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा
व्यानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहो—दानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा समानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा
चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा वाग्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा
मनो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ऽऽत्मा यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा
ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा स्वर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा पृष्ठं यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा
यज्ञो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ॥३३॥ १७०६-११

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्याꣳ स्वाहा शताय स्वाहै—कशताय स्वाहा व्युष्टयै स्वाहा
स्वर्गाय स्वाहा ॥३४॥ १७१२-१७

॥२४९॥ (वा० य० २४।१-४०)

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयो ररार्ट पुरस्तात्
सारस्वती मेष्युधस्ताद्बर्वो—राश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्याꣳ
सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयो—स्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्यो—र्वायव्यः श्वेतः पुच्छ
इन्द्राय स्वपस्याय वेह—द्वैष्णवो वामनः ॥१॥ १७१८-३७

रोहितो धूम्ररोहितः कर्कन्धुरोहितस्ते सौम्या बभ्रुररुणबभ्रुः शुकबभ्रुस्ते वारुणाः
शितिरन्ध्रोऽन्यतःशितिरन्ध्रः समन्तशितिरन्ध्रस्ते सावित्राः शितिबाहुरन्यतःशितिबाहुः
समन्तशितिबाहुस्ते बार्हस्पत्याः पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती ता मैत्रावरुण्यः ॥२॥ १७३८-४१

शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥३॥ १७४३-४७

पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निरूर्ध्वपृश्निस्ते मारुताः फल्गूलोहितोर्णा पलक्षी ताः सारस्वत्यः
प्लीहाकर्णः शुण्ठाकर्णोऽध्यालोहकर्णस्ते त्वाष्ट्राः कृष्णग्रीवः शितिकक्षोऽञ्जिसक्थस्त ऐन्द्राग्नाः
कृष्णाञ्जिरल्पाञ्जिर्महाञ्जिस्त उषस्याः ॥४॥ १७४८-५२

शिल्पा वैश्वदेव्यो रोहिण्यस्त्यवयो वाचे ऽविज्ञाता अदित्यै सरूपा धात्रे
वत्सतर्यो देवानां पत्नीभ्यः ॥५॥ १७५३-५७

कृष्णग्रीवा आग्नेयाः शितिभ्रवो वसूनाꣳ रोहिता रुद्राणाꣳ
श्वेता अवरोकिण आदित्यानां नभोरूपाः पार्जन्याः ॥६॥ १७५८-६२

उन्नत ऋषभो वामनस्त ऐन्द्रावैष्णवा उन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्त ऐन्द्राबार्हस्पत्याः
शुकरूपा वाजिनाः कल्माषा आग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥७॥ १७६३-६७

एता ऐन्द्राग्ना द्विरूपा अग्नीषोमीया वामना अनड्वाह आग्नावैष्णवा वशा मैत्रावरुण्यो
ऽन्यत एन्यो मैत्र्यः ॥८॥ १७६८-७२

कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्याः श्वेता वायव्याः अविज्ञाता अदित्यै
सरूपा धात्रे वत्सतर्यो देवानां पत्नीभ्यः ॥९॥ १७७३-७८

कृष्णा भौमा धूम्रा आन्तरिक्षा बहुन्तो दिव्याः शबला वैद्युताः सिध्मास्तारकाः ॥१०॥
१७७९-८३

धूम्रान् वसन्तायालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान् वर्षाभ्यो ऽरुणाञ्छरदे
पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय ॥११॥ १७८४-८९

त्र्यवयो गायत्र्यै पञ्चावयस्त्रिष्टुभे दित्यवाहो जगत्यै त्रिवत्सा अनुष्टुभे
तुर्यवाह उष्णिहे ॥१२॥ १७९०-९४

पष्ठवाहो विराजे उक्षाणो बृहत्या ऋषभाः ककुभे ऽनड्वाहः पङ्क्त्यै
धेनवोऽतिच्छन्दसे ॥१३॥ १७९५-८९

कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्या उपध्वस्ताः सावित्रा वत्सतर्यः सारस्वत्यः
श्यामाः पौष्णाः पृश्नयो मारुता बहुरूपा वैश्वदेवा वशा द्यावापृथिवीयाः ॥१४॥
१८००-१८०७

उक्ताः संश्चरा एतां ऐन्द्राग्नाः कृष्णा वारुणाः पृश्नयो मारुताः कायास्तूपराः ॥१५॥
१८०८-१८१२

अग्नयेऽनीकवते प्रथमजानालभते मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः सवात्यान् मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो बार्किहान् मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः सꣳसृष्टान् मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो ऽनुसृष्टान् ॥१६॥
१८१३-१७

उक्ताः संश्चरा एतां ऐन्द्राग्नाः प्राशुक्ला माहेन्द्रा बहुरूपा वैश्वकर्मणाः ॥१७॥
१८१८-२१

धूम्रा बभ्रुनीकाशाः पितृणाꣳ सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥१८॥
१८२२-२५

उक्ताः संश्चरा एताः शुनासीरीयाः श्वेता वायव्याः श्वेताः सौर्याः ॥१९॥
१८२६-२९

वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान् वर्षाभ्यस्तित्तिरिं—ञ्छरदे वर्त्तिका हेमन्ताय कर्करा—ञ्छिशिराय विकंकरान् ॥२०॥
१८३०-३५

समुद्राय शिशुमारानालभते पर्जन्याय मण्डूका—नुद्भ्यो मत्स्यान् मित्राय कुलीपयान् वरुणाय नाक्रान् ॥२१॥
१८३६-४०

सोमाय हꣳसानालभते वायवे बलाका इन्द्राग्निभ्यां कुश्चान् मित्राय मद्गून् वरुणाय चक्रवाकान् ॥२२॥
१८४१-४५

अग्नये कुटरूनालभते वनस्पतिभ्य उलूका—नग्नीषोमाभ्यां चाषा—नश्विभ्यां मयूरान् मित्रावरुणाभ्यां कपोतान् ॥२३॥
१८४६-५०

सोमाय लवानालभते त्वष्ट्रे कौलीकान् गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः कुलीका देवजामिभ्यो ऽग्नये गृहपतये पारुष्णान् ॥२४॥
१८५१-५५

अह्ने पारावतानालभते रात्र्यै सीचाप—रहोरात्रयोः सन्धिभ्यो जतू—र्मासेभ्यो दात्यौहा—न्त्संवत्सराय महतः सुपर्णान् ॥२५॥
१८५६-६१

भूम्या आखूनालभते ऽन्तरिक्षाय पाङ्क्त्रान् दिवे कर्शान् दिग्भ्यो नकुलान्
वर्ष्मकानवान्तरदिशाभ्यः ॥२६॥ १८६२-६६

वसुभ्य ऋश्यानालभते रुद्रेभ्यो रुरू—नादित्येभ्यो न्यङ्कून् विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषता—
—न्त्साध्येभ्यः कुलुङ्गान् ॥२७॥ १८६७-७१

ईशानाय परस्वत आलभते मित्राय गौरान् वरुणाय महिषान्
बृहस्पतये गवयाँ—स्त्वष्टृ उष्ट्रान् ॥२८॥ १८७२-७६

प्रजापतये पुरुषान् हस्तिन आलभते वाचे प्लुषीँ—श्चक्षुषे मशका—
—च्छ्रोत्राय भृङ्गाः ॥२९॥ १८७७ ८०

प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारण्यो मेषो
यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहि—दृषभाय गवयी
क्षिप्रश्येनाय वर्तिका नीलङ्गोः कृमिः समुद्राय शिशुमारो
हिमवते हस्ती ॥३०॥ १८८१-९०

मयुः प्राजापत्य उलो हलिक्ष्णो वृषदꣳ शस्ते धात्रे दिशां कङ्को
धुङ्क्षाऽऽग्नेयी कलविङ्को लोहिताहिः पुष्करसादस्ते त्वाष्ट्रा वाचे क्रुञ्चः ॥३१॥
१८९१-९८

सोमाय कुलुङ्ग आरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायो—रिन्द्रस्य गौरमृगः
पिद्गो न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमत्यै प्रतिश्रुत्काय चक्रवाकः ॥३२॥ १८९९-१९०४

सौरी बलाका शार्गः सृञ्जयः श्वयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक्
श्वाविद् भौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे
सरस्वते शुकः पुरुषवाक् ॥३३॥ १९०५-१९१०

सुपर्णः पार्जन्य आतिर्वाहसो दर्विदा ते वायवे बृहस्पतये वाचस्पतये पैङ्गराजो
ऽलज आन्तरिक्षः प्लवो मद्गुर्मत्स्यस्ते नदीपतये
द्यावापृथिवीयः कूर्मः ॥३४॥ १९११-१९१६

पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां
कृकवाकुः सावित्रो हꣳसो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य
प्रियो मल्यकः ॥३५॥ १९१७-२२

एण्यह्वो मण्डूको मूषिका तित्तिरिस्ते सर्पाणां लोपाश आश्विनः कृष्णो राज्ञ्या
ऋक्षो जतूः सुषिलीका त इतरजनानां जहका वैष्णवी ॥३६॥ १९१३-१८

अन्यवापोऽर्धमासाना मृश्यो मयूरः सुपर्णस्ते गन्धर्वाणा मपामुद्रो मासां कश्यपो
रोहित् कुण्डृणाचीं गोलत्तिका तेऽप्सरसां मृत्यवेऽसितः ॥३७॥ १९१९-३४

वर्षाहूर्क्षीतुना माखुः कशो मान्थालस्ते पितॄणां बलायाजगरो वत्सनां कपिञ्जलः
कपोत उलूकः शशस्ते निर्ऋत्यै वरुणायारण्यो मेषः ॥३८॥ १९३५-४०

श्वित्र आदित्याना मुष्टो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्या अरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः
क्वयिः कुटरुदर्त्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः ॥३९॥ १९४१-४६

खङ्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसा मिन्द्राय सूकरः
सिꣳहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥४०॥ १९४७-५१

॥२५०॥ (वा० य० २५।१-९)

शादं दृद्भि रवकां दन्तमूलै र्मृदुं बस्वै स्तेगान् दꣳष्ट्राभ्याꣳ सरस्वत्या अग्रजिह्वं
जिह्वाया उत्साद मवक्रन्देन तालु वाजꣳ हनुभ्या मप आस्येन वृषणमाण्डाभ्या
मादित्याँ श्मश्रुभिः पन्थानं भ्रूभ्यां द्यावापृथिवी वर्तीभ्यां विद्युतं कनीनकाभ्याꣳ
शुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्यणि पक्ष्माण्य वार्या इक्षवो ऽवार्याणि पक्ष्माणि
पार्या इक्षवः ॥१॥ १९५३-७१

वातं प्राणेना ऽपानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तर
मनूकाशेन बाह्यं निवेष्यं मूर्ध्ना स्तनयित्नुं निर्बाधेना ऽशनिं मस्तिष्केण
विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्याꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदुनीमधरकण्ठेना
ऽपः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभि रतिदिꣳ शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जेजल्येन शीर्ष्णा
सैक्रोशैः प्राणान् रेष्माणꣳ स्तुपेन ॥२॥ १९७१-९०

मशकान् केशै रिन्द्रꣳ स्वपसा वहेन बृहस्पतिꣳ शकुनिसादेन कूर्माञ्छफै
राक्रमणꣳ स्थूराभ्या मृक्षलाभिः कपिञ्जला ञ्जवं जङ्घाभ्या मश्वानं बाहुभ्यां
जाम्बीलेनारण्य मग्निमतिरुग्भ्यां पूषणं दोर्भ्या मश्विनावꣳसाभ्याꣳ रुद्रꣳ रोराभ्याम् ॥३॥ १९९१-२००१

अग्नेः पक्षति—र्वायोर्निपक्षति—रिन्द्रस्य तृतीया सोमस्य चतुर्थ्य—दित्यै पञ्चमी—
—न्द्राण्यै षष्ठी मरुतां सप्तमी बृहस्पतेरष्टम्य—र्यम्णो नवमी धातुर्दशमी—
—न्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयोदशी ॥४॥ २००४-२०१६

इन्द्राग्न्योः पक्षतिः सरस्वत्यै निपक्षति—र्मित्रस्य तृतीया
ऽपां चतुर्थी निर्ऋत्यै पञ्चम्य—ग्नीषोमयोः षष्ठी सर्पाणां सप्तमी
विष्णोरष्टमी पूष्णो नवमी त्वष्टुर्दशमी—न्द्रस्यैकादशी
वरुणस्य द्वादशी यम्यै त्रयोदशी द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्व
विश्वेषां देवानामुत्तरम् ॥५॥ २०१७-३१

मरुतां स्कन्धा विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा रुद्राणां द्वितीया
ऽऽदित्यानां तृतीया वायोः पुच्छे—मग्नीषोमयोर्भासदौ
क्रुञ्चौ श्रोणिभ्या—मिन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यां
मित्रावरुणावल्गाभ्या—माक्रमणं स्थूराभ्यां बलं कुष्टाभ्याम् ॥६॥ २०३२-४१

पूषणं वनिष्ठुना ऽन्धाहीन्स्थूलगुदया सर्पान् गुदाभि—र्विहुतं आन्त्रै—रपो वस्तिना
वृषणमाण्डाभ्यां वाजिनं शेपेन प्रजां रेतसा चार्षान् पित्तेन प्रदरान् पायुना
कूश्माञ्छकपिण्डैः ॥७॥ २०४३-५३

इन्द्रस्य क्रोडो ऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवो ऽदित्यै भस—
—जीमूतान् हृदयौपशेना—ऽन्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां
दिवं वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशिभि—रुपलान् प्लीह्ना
वल्मीकान् कलोमभि—र्लोमभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्ती—र्हृदान् कुक्षिभ्यां
समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥८॥ २०५४-७०

विधृतिं नाभ्यां घृतं रसेना—ऽपो यूष्णा मरीचिर्विप्रुड्भि—र्नीहारमूष्मणा
शीनं वसया प्रुष्वा अश्रुभि—र्हादुनीर्दूषीकाभि—रस्ना रक्षांसि चित्राण्यङ्गै—
—र्नक्षत्राणि रूपेण पृथिवीं त्वचा जुम्बुकाय स्वाहा ॥९॥ २०७१-८३

॥२५१॥ (वा० य० २९।५८-६०)

आग्नेयः कृष्णग्रीवः सारस्वती मेषी बभ्रुः सौम्यः पौष्णः श्यामः शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः
शिल्पो वैश्वदेव ऐन्द्रोऽरुणो मारुतः कल्माष ऐन्द्राग्नः संहितो
ऽघोरामः सावित्रो वारुणः कृष्ण एकशितिपात् पेत्वः ॥५८॥ २०८४-९४

अग्नयेऽनीकवते रोहिताञ्जिरन्वा—नघोरामौ सावित्रौ पौष्णौ रजतनाभी
वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ मारुतः कृष्णमाष आग्नेयः कृष्णोऽजः सारस्वती मेषी
वारुणः पेत्वः॥५९॥ २०९५-२१०१

अग्नये गायत्राय त्रिवृते राथन्तरायाष्टाकपाल इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय
बार्हतायैकादशकपालो विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालो
मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यामेकविंशाभ्यां वैराजाभ्यां पयस्या बृहस्पतये पाङ्क्ताय
त्रिणवाय शाक्वराय चरुः सवित्र औष्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय रैवताय द्वादशकपालः
प्राजापत्यश्चरु—रदित्यै विष्णुपत्न्यै चरु—रग्नये वैश्वानराय द्वादशकपालो ऽनुमत्या
अष्टाकपालः ॥६०॥ २१०२-२१११

॥२५२॥ (वा० य० ३०।५-२२)

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं
नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीब—मक्रयायायोगूं कामाय पुँश्चलू—
—मतिक्रुष्टाय मागधम् ॥५॥ २११३-२२

नृत्ताय सूतं गीताय शैलूषं धर्माय सभाचरं नरिष्ठायै भीमलं नर्माय रेभꣳ
हसाय कारिं—मानन्दाय स्त्रीषखं प्रमदे कुमारीपुत्रं मेधायै रथकारं
धैर्याय तक्षाणम् ॥६॥ २१२३-३२

तपसे कौलालं मायायै कर्मारꣳ रूपाय माणिकारꣳ शुभे वपꣳ शरव्याया इषुकारꣳ
हेत्यै धनुष्कारं कर्मणे ज्याकारं दिष्टाय रज्जुसर्जं मृत्यवे मृगयु—
—मन्तकाय श्वानिनम् ॥७॥ २१३३-४१

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठ—मृक्षीकाभ्यो नैषादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं
गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं प्रयुग्भ्य उन्मत्तꣳ सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपद—
मर्येभ्यः कितव—मीर्यतायाऽकितवं पिशाचेभ्यो विदलकारीं
यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥८॥ २१४३-५१

सन्धये जारं गेहायोपपति—मार्त्यै परिवित्तं निर्ऋत्यै परिविविदान—मराय्या एदिधिषुःपतिं
निष्कृत्यै पेशस्कारीꣳ संज्ञानाय सरकारीं प्रकामोद्वायोपसदं
वर्णायानुरुधं बलायोपदाम् ॥९॥ २१५३-६२

उत्सादेभ्यः कुब्जं प्रमुदे वामनं द्वार्भ्यः स्थाम२ स्वप्नायान्ध—मधर्माय बधिरं
पवित्राय भिषजं प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्श—माशिक्षायै प्रश्निन—मुपशिक्षाया अभिप्रश्निनं
मर्यादायै प्रश्नविवाकम् ॥१०॥ २१६३-७२

अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्टयै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपाल—
—मिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहप२ श्रेयसे वित्तध—
—माध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ॥११॥ २१७३-८२

भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रह्मस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं
देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितार२ सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तार—
—मर्वाक्रत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासःपल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम् ॥१२॥
२१८३-९२

ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तार—मौपद्रष्ट्र्यायानुक्षत्तारं
बलायानुचरं भृम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिन—मरिष्टा अश्वसाद२
स्वर्गाय लोकाय भागदुघं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥१३॥ २१९३-२२०२

मन्यवेऽयस्तापं क्रोधाय निसरं योगाय योक्तार२ शोकायाभिसर्तारं क्षेमाय विमोक्तार—
—मुत्कूलनिकूलेभ्यस्त्रिष्ठिनं वपुषे मानस्कृत२ शीलायाञ्जनीकारीं निर्ऋत्यै कोशकारीं
यमायाग्नम् ॥१४॥ २२०३-१२

यमाय यमग्न—मथर्वभ्योऽवतोका२ संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत्सरायाविजाता—
—मिदावत्सरायातीत्वरी—मिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जरा२ संवत्सराय पलिक्नी—
—मृभुभ्योऽजिनसन्ध२ साध्येभ्यश्चर्मघ्नम् ॥१५॥ २२१३-२२२२

सरोभ्यो धैवर—मुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो बैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं
पाराय मार्गार—मवाराय केवर्तं तीर्थेभ्य आन्दं विषमेभ्यो मैनाल२ स्वनेभ्यः पर्णकं
गुहाभ्यः किरात२ सानुभ्यो जम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम् ॥१६॥ २२२३-३४

बीभत्साये पौल्कसं वर्णाय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं पंश्चादोषाय ग्लाविनं
विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं भूत्यै जागरण—मभूत्यै स्वपन—मार्त्यै जनवादिनं
व्यृद्धया अपगल्भ२ सं२शुराय प्रच्छिदम् ॥१७॥ २२३५-४४

अक्षराजाय कितवं कृतायाऽऽदिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनं—
—मास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोघ्यच्छ—मन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां
विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् ॥१८॥ २२४५-५४

प्रतिश्रुत्कायाऽर्तनं घोषाय भष—मन्ताय बहुवादिनं—मनन्ताय मूकꣳ शब्दायाडम्बराघातं
महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्म—मवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनप—
—मन्यतोरण्याय दावपम् ॥१९॥ २२५५-६४

नर्माय पुँश्चलूꣳ हसाय कारिं यादसे शाबल्यां ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकं तान् महसे
वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं तान् नृत्ताया—ऽऽनन्दाय तलवम् ॥२०॥ २२६५-७०

अग्नये पीवानं पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डाल—मन्तरिक्षाय वꣳशनर्तिनं
दिवे खलतिꣳ सूर्याय हर्यक्षं नक्षत्रेभ्यः किर्मिरं चन्द्रमसे किलास—महे शुक्लं पिङ्गाक्षꣳ
रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् ॥२१॥ २२७१—८०

अथैतानष्टौ विरूपाना लभतेऽतिदीर्घं चातिह्रस्वं चातिस्थूलं चातिकृशं चातिशुक्लं
चातिकृष्णं चातिकुल्वं चातिलोमशं च । अशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ।
मागधः पुँश्चली कितवः क्लीबोऽशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ॥२२॥ २२८१-८१

॥२५३॥ (वा० य० ३९।१—२,११-१३)

स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहा ऽग्नये स्वाहा ऽन्तरिक्षाय स्वाहा
वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥१॥ २२८३-८९

दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा ऽद्भ्यः स्वाहा वरुणाय स्वाहा ।
नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा ॥२॥ २२९०-९६

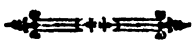
आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा ।
शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥११॥ २२९७—२३०५

तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा ।
निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥१२॥ २३०६—१३

यमाय स्वाहा ऽन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा ॥१३॥ २३१४—२०

विश्वे देवाः-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।



[१] १।३।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वे देवाः)
विश्वे देवास आ गत ।
(१६५) २।४१।१३ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
(४१५) ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
[४] १।१४।१ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
विश्वेभिः सोमपीतये ।
(इन्द्रः ४१२) ८।२१।४ (सोभरिः काण्वः । इन्द्रः)
[६] १।१४।३ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
इन्द्रवायू बृहस्पतिं । आदित्यान् मारुतं गणम् ।
(८१९) १०।१४१।४ (अग्निस्तापसः । विश्वे देवाः)
इन्द्रं यू बृहस्पतिं ।
(अग्निः १ ३।१६।१४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
आदित्यान् मारुतं गणम् ।
[८] १।१४।५ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
बृक्तबर्हिषः ।
हविष्मन्तो अरंकृतः ।
(अश्विनौ ४००) ८।५।१७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
बृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो — ।
[९] १।१४।६ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
वहन्ति प्रयांसि वीतये ।
आ देवान्त्सोमपीतये ।
(अग्निः १०८५) ६।१६।४४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
वहाभि प्रयांसि वीतये ।
आ देवान्त्सोमपीतये ।
[१४] १।१४।११ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
त्वं होता मनुर्हितो ।
सेमं नो अध्वरं यज ।

(अग्निः १०५०) ६।१६।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
त्वं ... ... ।
(अग्निः २८) १।२६।१ (शुनःशेप आजीगर्तिः । अग्निः)
सेमं ... ... ।
[१५] १।१४।१२ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
युक्ष्वा हरुषी रथे हरितो देव रोहितः ।
(मरुतः २८०) ५।५६।६ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)
युङ्ग्ध्वं हरुषी रथे युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितः ।
[१६] १।२३।१० (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
मरुतः सोमपीतये ।
(मरुतः ३९७) ८।९४।३ = (मरुतः ४०३) ८।९४।९
(बिन्दुः पूतदक्षो वा आङ्गिरसः । मरुतः)
[२५] १।८९।७ (गोतमो राहूगणः । विश्वे देवाः)
विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ।
(५९२) १०।३५।१३ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु ।
[३८-५५] १।१०५।१-१८ वित्तं मे अस्य रोदसी ।
[४२] १।१०५।५(त्रित आप्त्यः,कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)
त्रिष्वा रोचने दिवः ।
(इन्द्रः २३०६) ८ ६९।३ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[४५]१।१०५।८(त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)
सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः ।
मूषो न शिभा व्यदन्ति माध्यः स्वो अरं ते शतक्रतो ॥
(इन्द्रः २५३९) १०।३३।२ (कवष ऐलूषः । इन्द्रः)
सं मा ... ... ।
(इन्द्रः २५४०) १०।३३।३ (कवष ऐलूषः । इन्द्रः)
मूषो न ... ... ।

[५०]१।१०५।१३(त्रित आप्त्यः,कुत्स आङ्गिरसो वा। विश्वे देवाः)
देवेष्वस्त्याप्यम्।
(अश्विनौ ४६७) ८।१०।३ (प्रगाथो घौरः काण्वः। अश्विनौ)
देवेष्वध्याप्यम्।
[५१] १।१०५।१४ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा। विश्वे देवाः)
देवाँ ... ... ।
अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः।
(अग्निः १९२८) १।१४१।११ (दीर्घतमा औचथ्यः। [आप्रीसूक्तं] = वनस्पतिः)
अवसृजन्नुप त्मना देवान् यक्षि वनस्पते।
अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः।
(अग्निः १९४०) १।१८८।१० (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः। [आप्रीसूक्तं] = वनस्पतिः)
उप त्मन्या वनस्पते। अग्निर्हव्यानि सिष्वदत्।
[५३] १।१०५।१६ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा। विश्वे देवाः)
दिवि प्रवाच्यं कृतः।
(इन्द्रः १२२६) २।२२।४ (गृत्समदः शौनकः। इन्द्रः)
दिवि प्रवाच्यं कृतम्।
[५७-६२] १।१०६।१-६ (कुत्स आङ्गिरसः। विश्वे देवाः)
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन।
[५८] १।१०६।२ (कुत्स आङ्गिरसः। विश्वे देवाः)
त आदित्या आ गता सर्वतातये।
(५९०) १०।३५।११ (लुशो धानाकः। विश्वे देवाः)
[६३] १।१०६।७ (कुत्स आङ्गिरसः। विश्वे देवाः)
देवैनो देव्यदितिर्नि पातु देवत्राता त्रायतामप्रयुच्छन्।
(२३५) ४।५५।७ (वामदेवो गौतमः। विश्वे देवाः)
[६५] १।१०७।२ उप नो देवा अवसा गमन्तु।
(५९२) १०।३५।१३ विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु।
["] १।१०७।२ (कुत्स आङ्गिरसः। विश्वे देवाः)
आदित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत्।
(अदितिः०४४६) ४।५४।६ (वामदेवो गौतमः। सविता)
(७०९) १०।६६।३ (वसुकर्णो वासुक्रः। विश्वे देवाः)
... ... शर्म यच्छतु।
[६६] १।१०७।३ (कुत्स आङ्गिरसः। विश्वे देवाः)
तन्न ... ... तदर्यमा तद् सविता धनो धात्।
(३७६) ६।४९।१४(ऋजिश्वा भारद्वाजः। विश्वे देवाः)
तन्नो.....तत् पर्वतस्तत् सविता धनो धात्।
[७१] १।१२१।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। विश्वे देवाः इन्द्रो वा)
राधः सुरेतस्तुरणे।
शुचि यत्ते रेक्ण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्रियायाः।
(६३७) १०।६१।११ (नाभानेदिष्ठो मानवः। विश्वे देवाः)
राधो न रेत ऋतमित् तुरण्यन्।
शुचि यत्ते रेक्ण आयजन्त ... ।
[७९] १।१२१।१३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। विश्वे देवाः इन्द्रो वा)
भरद्वाजमेतशो नायमिन्द्र।
(इन्द्रः १७०२) ५।३१।११ (अवस्युरात्रेयः। इन्द्रः)
भरद्वाजमेतशः सं रिणाति।
[८४, ९५] १।१२२।३,१४ तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः।
[८७] १।१२२।६ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। विश्वे देवाः)
श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा।
(अदितिः० ३२९) ७।६२।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। मित्रावरुणौ)
[९२] १।१२२।११ श्रोता राजानो अमृतस्य मन्द्राः।
(७३९) १०।९३।४ (तान्वः पार्थ्यः। विश्वे देवाः)
ते धा राजानो ... ।
[९७] १।१३९।१ धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः।
(इन्द्रः १०३२) १।१३२।५ (परुच्छेपो दैवोदासिः। इन्द्रः)
[१०१] १।१६४।३ (दीर्घतमा औचथ्यः। विश्वे देवाः)
सप्त स्वसारो अभि सं नवन्ते।
१०।७१।३ (बृहस्पतिराङ्गिरसः। ज्ञानम्)
तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते।
[११९] १।१६४।११ इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः।
(अदितिः० २४) २।२७।४ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा। आदित्यः)
देवा विश्वस्य ... ।
[११८,१२६] १।१६४।१०,१८ अमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः।

[१३९] १।१६४।३१ (दीर्घतमा औचथ्यः । विश्वे देवाः)
= १०।१७७।३ (पतङ्गः प्राजापत्यः । मायाभेदः)
अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः॥
[१३८] १।१६४।४० अथो वयं भगवन्तः स्याम ।
(अदितिः० ७९६)७।४१।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । भगः)
तेन वयं ... ... ।
[१४१] १।१८६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।
(अदितिः० ३११) ७।६०।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
[१४२] १।१८६।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषेऽग्निं ।
(अग्निः १४५४) ८।८४।१ (उशना काव्यः । अग्निः)
... ... अतिथिं स्तुषे । अग्निं ... ।
[१४३] १।१८६।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
उषासानक्ता सुदुघेव धेनुः ।
(अग्निः १९७९) ७।२।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । [आप्रीसूक्तं] = उषासानक्ता)

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[१५२] २।२९।२ (कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा । विश्वे देवाः)
यूयं द्वेषांसि सनुतर्युयोत ।
(७५९) १०।१००।९ (दुवस्युर्वान्दनः । विश्वे देवाः)
विश्वा द्वेषांसि सनुतर्युयोत ।
[१५७] २।२९।७ = (अदितिः० ३७) २।२७।१७ (कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा । आदित्यः)
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाम्न आ विदं शूनमापेः ।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥
[१५८] २।३१।१ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
आदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
(अश्विनौ ५०९) ८।३५।१(श्यावाश्व आत्रेयः। अश्विनौ)
[१६५] २।४१।१३ (गृत्समदः [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्] भार्गवः शौनकः । विश्वे देवाः)
विश्वे देवास आ गत ।
(१) १।३।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वे देवाः)
(४१५) ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
[१६५] २।४१।१३ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
(४५२) ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् ।
एदं बर्हिर्नि षीदत ॥
(अश्विनौ ५४९) ८।७३।१० (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा । अश्विनौ)
शृणुतं म इमं हवम् ।
[१६७] २।४१।१५ इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः ।
विश्वे मम श्रुता हवम् ॥
(इन्द्रः ३२४८) १।१३।८ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः)

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[१६९] ३।२०।५ (गाथी कौशिकः । विश्वे देवाः)
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं ...।... हुवे ॥
(७६३) १०।१०१।१ (बुधः सौम्यः । विश्वे देवा ऋत्विग् वा)
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं···हुवे ।
[१७०] ३।५४।१ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा। विश्वे देवाः)
शृणोतु नो दम्येभिरनीकैः ।
(अग्निः ४६१) ३।१।१५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ।
[१७२] ३।५४।३ सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।
(अग्निः ११६) १।५८।७ (नोधा गौतमः । अग्निः)
[१७४] ३।५४।५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
को अद्धा वेद क इह प्र वोचद् ।
परेषु वा गुह्येषु व्रतेषु ॥

१०।१२९।६ (प्रजापतिः परमेष्ठी । भाववृत्तम्)
को अद्धा ... ... ।
(७८३) १०।११४।२ (सप्तिर्वैरूपो धर्मो वा तापसः । विश्वे देवाः)
परेषु या —।
[१८०] ३।५४।११ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानः ।
(११८) ३।५६।५ त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः ।
[१८४] ३।५४।१५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।
(इन्द्रः १४७१) ४।१६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
(अदितिः० ३६१) ८।२५।१८ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
[१८७] ३।५४।१८ अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि ।
१।२४।१० (शुनःशेप आजीगर्तिः कृत्रिमो देवरातो वैश्वामित्रो वा । वरुणः)
[१८९] ३।५४।२० ध्रुवक्षेमास इळया मदन्तः ।
(अदितिः० १८७) ३।५९।३ (गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः)
अनमीवास इळया ... ।
[१९१] ३।५४।२२ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
समिषो दिहीह्यस्मद्य१क् सं मिमीहि श्रवांसि ।
(अग्निः ७९१) ५।४।२ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
(इन्द्रः १८७३) ६।१९।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
अस्मद्य१क् सं मिमीहि श्रवांसि ।
[१९२-२१३] ३।५५।१-२२ महद्देवानामसुरत्वमेकम् ।
(इन्द्रः २६१७) १०।५५।४ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । इन्द्रः)
महन्महत्वा असुरत्वमेकम् ।
[२००] ३।५५।९ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
अन्तर्महाँअरति रोचनेन ।
(अग्निः १५०७) १०।४।२ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
अन्तर्महाँअरसि रोचनेन ।
[२०४] ३।५५।१३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः।
(इन्द्रः २५०४) १०।२७।१४ (ऐन्द्रो वसुक्रः । इन्द्रः)
[२१०] ३।५५।१९ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ।
(आयुर्वेदः १९५८) १०।१०।५ (यमी वैवस्वती ऋषिका । यमः)
[२१२] ३।५५।२१ इमां च न पृ विश्वधाया उप ति हितमित्रो ।
न राजा । पुरःसदः शर्मसदो ोरा ...।
(अग्निः २०७) ५।७३।३ (पराश . शाक्त्यः । अग्निः)
देवो न यः पृथिवीं... राजा । पुरःसदः... वीरा... ।
[२१६] ३।५६।३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)
स रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम् ।
(आयुर्वेदः ९९०) ७।१०१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः (वृष्टिकामः), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः)
[२१८] ३।५६।५ = (१८०) ३।५४।११ त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः (११ पत्यमानः) ।
[२२०] ३।५६।७ राजाना मित्रावरुणा सुपाणी ।
(अग्निः १९३) १।७१।९ (पराशरः शाक्त्यः । अग्निः)
[२२२] ३।८।८ (गाथिनो विश्वामित्रः । विश्वे देवाः)
आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा ।
(४६१) ७।३५।१४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त (इदं ब्रह्म) ।
(७१८) १०।६६।१२ (वसुकर्णो वासुक्रः । विश्वे देवाः)
— रुद्रा वसवः सुदानवः (इमा ब्रह्म) ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[२२९] ४।५५।१ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
द्यावाभूमी अदितये त्रासीथां नः ।
(अदितिः० ३२८) ७।६१।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)

[२३३] ४।५५।३ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
उभे यथा नो अहनी निपाते ।
(आयुर्वेदः २२८५) १०।७६।१ (जरत्कर्णः सर्प ऐरावतः । प्रावाणः)
— अहनी सचाभुवा ।
[२३४] ४।५५।६ समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।
(इन्द्रः ८०६) १।५६।२ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[२३५] ४।५५।७ = (६३) १।१०६।७
[,,] ४।५५।७ नहि मित्रस्य वरुणस्य धासिम् ।
(आयुर्वेदः ९०१) १०।३०।१ (कवष ऐलूषः । आपः, अपां नपात् वा)
महीं मित्रस्य ... ।

[२३७] ४।५५।९ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
उषो मघोन्या वह ।
(उषाः ११६) ५।७९।७ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
[,,] ४।५५।९ अस्मभ्यं वाजिनीवति ।
(उषा ३६) १।९२।१३ (गोतमो राहूगणः । उषा)
[२३८] ४।५५।१० (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अदितिः० ५६) ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेप आजीगर्तिः । अग्निः)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[२३९] (वसूयव आत्रेयः । विश्वे देवाः)
देवासः सर्वया विशा ।
(मरुतः ४०) १।३९।५ (कण्वो घौरः । मरुतः)
[२४१] ५।४१।१ (भौमोऽत्रिः । विश्वे देवाः)
ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त ।
१।१६२।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्वः)
मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परि ख्यन्।
[२४५] ५।४१।६ (अत्रिर्भौमः । विश्वे देवाः)
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं ... अर्कैः ।
... पुरंधीः ॥
(६८१) १०।६४।७ (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं स्तोमैः कृणुध्वम् ।
[२४७] ५।४१।८ (अत्रिर्भौमः । विश्वे देवाः)
वनस्पतीँरोषधी राय एवे ।
(२७४) ५।४२।१६ वनस्पतीँरोषधी राये अश्याः ।
[२४९] ५।४१।१० गृणीते अग्निरेतरी न शूषैः ।
(अग्निः१००९) ६।१२।४ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अग्निः)
सास्माकेभिरेतरी न शूषैरग्निः ।
[२५५] ५।४१।१६ (अत्रिर्भौमः । विश्वे देवाः)
मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धात् ।
७।३४।१७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अहिर्बुध्न्यः)

[२६२] ५।४२।३ चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ।
(४८८) ७।४०।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
यदय देवः सविता सुवाति ।
[२७४] ५।४२।१६ = (२४७) ५।४१।८ (भौमोऽत्रिः । विश्वे देवाः)
[,,] ५।४२।१६ (अत्रिर्भौमः । विश्वे देवाः)
देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात्।
(२९१) ५।४३।१५ (भौमोऽत्रिः । विश्वे देवाः)
[२७५] ५।४२।१७ = (२९२) ५।४३।१६ (भौमोऽत्रिः । विश्वे देवाः)
उरौ देवा अनिबाधे स्याम ।
[२७६] ५।४२।१८ (अत्रिर्भौमः । विश्वे देवाः)
= (२९३) ५।४३।१७ (भौमोऽत्रिः । विश्वे देवः)
= (अश्विनौ २९१) ५।७६।५ (अत्रिर्भौमः । अश्विनौ)
= (,, २९६) ५।७७।५ (अत्रिर्भौमः । अश्विनौ)
समाधिनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥
[२८६] ५।४३।१० (अत्रिर्भौमः । विश्वे देवाः)
विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती ।
(५९२) १०।३५।१३ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती ।

[२८७] ५।४३।११ (अत्रिर्भौमः । विश्वे देवाः)
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा ।
(अश्विनौ २९०) ५।७६।४ (अत्रिर्भौमः । अश्विनौ)
[२९१] ५।४३।१५ = (२७४) ५।४२।१६
[२९२] ५।४३।१६ = (२७५) ५।४२।१७
[२९३] ५।४३।१७= (२७६) ५।४२।१८ =
(अश्विनौ २९१) ५।७६।५= (अश्विनौ २९६) ५।७७।५
[३०७] ५।४४।१४ यो जागार तमृचः कामयन्ते यो
जागार तमु सामानि यन्ति । यो जागार तमयं सोम
आह ॥ (३०८) अग्निर्जागार तमृचः ...
अग्निर्जागार...। अग्निर्जागार तमयं ... ॥
[३०७–८] ५।४४।१४-१५ (काश्यपोऽवत्सारः । विश्वे देवाः)
तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ।
[३१२] ५।४५।४ (सदापृण आत्रेयः । विश्वे देवाः)
इन्द्रा न्वग्नी अवसे हुवध्यै ।
(इन्द्रः ३०४८) ६।५९।३(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
... .. अवसेह वज्रिणा ।
[३१८] ५।४५।१० (सदापृण आत्रेयः । विश्वे देवाः)
आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः ।
(अदितिः० ३१२) ७।६०।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
मित्रावरुणौ)
[३२२] ५।४६।३ (प्रतिक्षत्र आत्रेयः । विश्वे देवाः)
स्वः पृथिवीं द्यां ... ... अपः ।
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं ।
(५०६) ७।४४।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । दधिक्राव्ण्युषोऽग्निर्भगेन्द्रविष्णुपूषब्रह्मणस्पत्यादित्यद्यावापृथिव्यापस्वः)
भगमूतये हुवे । इन्द्रं विष्णुं पूषणं
ब्रह्मणस्पतिं... द्यावापृथिवी अपः स्वः ।
[३२७] ५।४६।८ (प्रतिक्षत्र आत्रेयः । देवपत्न्यः)
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु ।
(४४५) ७।३४।२२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
[३५०] ५।५१।१ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वे देवाः)
देवेभिर्हव्यदातये ।
(अग्निः ९२३) ५।२६।४ (वसूयव आत्रेयः । अग्निः)
[३५१] ५।५१।२ सत्यधर्माणो अध्वरम् ।
(अग्निः १६) १।१२।७ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
सत्यधर्माणमध्वरे ।
[३५२] ५।५१।३ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वे देवाः)
प्रातर्यावभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये ।
(इन्द्रः ३०९७) ८।३८।७ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
प्रातर्यावभिरा गतं देवेभिः..... सोमपीतये ।
[३५३] ५।५१।८ अश्विभ्यामुषसा सजूः ।
(अग्निः ९९) १।४४।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
[३५३-५५] ५।५१।८-१० आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३६३] ६।४९।१ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
त आ गमन्त त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः ।
(आयुर्वेदः १९९१) १०।१५।५ (शङ्खो यामायनः । पितरः)
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु ।
(४०२) ६।५१।१०(ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः ।
[३६६]६।४९।४ प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा ।
(आयुर्वेदः १०२६)३।३३।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । नद्यः)
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषा ।
[३६७] ६।४९।५ येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ।
(अश्विनौ २०४) १।१८३।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
[३७२] ६।४९।१० बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नम् ।
(इन्द्रः१२८८) ३।३२।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।
[३७४] ६।४९।११ प्र वीराय प्र तवसे तुराय ।
(इन्द्रः २०११)६।३२।१ (सुहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
महे वीराय ... ... ।
[३७५] ६।४९।१३ यो रजांसि विममे पार्थिवानि ।
१।१६०।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । द्यावापृथिवी)
वि यो ममे रजसी सुक्रतूयः ।
[३७६] ६।४९।१४ तत् पर्वतस्य सवितः सवो धात् ।
(६६) १।१०७।३ तदर्वतो तत् सवितः ... ।
[३८१] ६।५०।४ अधा हुतासो बसवोऽनुग्मन् ।
(३९१) ६।५०।१५ मा हुतासो बसवोऽनुग्मन् ।

[३८४] ६।५०।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।
(अदितिः० ३१०) ७।६०।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपाः ।
(६६८) १०।६३।८ (गयः प्लातः । विश्वे देवः)
... ... जगतश्च मन्तवः ।
[३८५] ६।५०।८ आ नो देवः सविता त्रायमाणः ।
(४५८) ७।३५।१० (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
शं नो देवः ... ... ।
["] ६।५०।८ व्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि ।
(उषा १२५) ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
व्यूर्णवती दाशुषे ... ।
[३८६] ६।५०।९ उत त्वं सूनो सहसो नो अद्य ।
(अग्निः ११७) १।५८।८ (नोधा गौतमः । अग्निः)
अच्छिद्रा सूनो ... ।
[३९०] ६।५०।१३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
भगो ... । त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषाः ।
(६८५) १०।६४।१० (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)
त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः । ... भगो ।
[३९२] ६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
एवा ... ... भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
(इन्द्रः २१८५) ७।२३।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
एवा ... वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
[३९४] ६।५१।२ ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।
(अग्निः ६४३) ४।१।१७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
[३९७] ६।५१।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
विश्व आदित्या अदिते सजोषाः ।
(६७५) १०।६३।१७ = १०।६४।१७ (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)
... ... अदिते मनीषां ।
["] ६।५१।५ अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त ।
(मरुतः २७३) ५।५५।९ (स्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)
... वि यन्तन ।
[३९९] ६।५१।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ।
(अदितिः ४१) ७।५१।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्याः)
मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ।
[४००] ६।५१।८ नमो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।
(अदितिः० १८५) ३।५९।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
मित्रो दाधार ... ।
[४०२] ६।५१।१० = (३६३) ६।४९।१ सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः।
[४०७] ६।५१।१५ यूयं हि ष्ठा सुदानवः ।
(अदितिः० ९०८) १।१५।२ (मेधातिथिः काण्वः । [ऋतवः]= मरुतः)
(५६७) ८।८३।९ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)
["] ६।५१।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वे देवाः)
इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः ।
(५६७) ८।८३।९ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)
[४०८] ६।५१।१६ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
स्वस्तिगामनेहसम् ।
(इन्द्रः २३१८) ८।६९।१६ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[४११] ६।५२।३ ब्रह्मद्विषे तपुर्षि हेतिमस्य ।
(इन्द्रः १२५४) ३।३०।१७ (विश्वामित्रो गाथिनः इन्द्रः)
[४१३] ५।५२।५ पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
(इन्द्रः १५९१) ४।२५।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
पश्यात् सूर्य ... ।
[४१५] ६।५२।७ = (१६५) २।४१।१३
[४२०] ६।५२।१२ इमं नो अग्ने अध्वरम् ।
(अग्निः ७९७) ५।४।८ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
अस्माकमग्ने अध्वरम् ।
[४२०] ६।५२।१२ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
चिकित्वान् दैव्यं जनम् ।
(अग्निः १३५१) ८।४४।९ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
[४२१] ६।५२।१३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् ।
(इन्द्रः ३१७१) ६।६८।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ)
... ... मादयेथाम् ।
(आयुर्वेदः १०८४)१०।१७।८ (देवश्रवा यामायनः।सरस्वती)
... ... मादयस्व ।
[४२४] ६।५२।१६ अग्नीपर्जन्यावतं धियं मे ।
(सोमः१२२१) २।४०।५ (गृत्समदः शौनकः । सोमापूषणौ)
सोमापूषणावतं धियं मे ।
[४२५] ६।५२।१७ स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ ।
(अग्निः ६८५) ४।६।४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम्।

[४४५] ७।३४।२२ = (३२७) ५।४६।८
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु ।
[४४८] ७।३४।२५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः) =
(मरुतः ३६९) ७।५६।२५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मरुतः)
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निरापः ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
(७१५) १०।६६।९ (वसुकर्णो वासुक्रः । विश्वे देवाः)
आप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया ।
[४५८] ७।३५।१० = (३८५) ६।५०।८
देवः सविता त्रायमाणः ।
[४६१] ७।३५।१४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त ।
(आयुर्वेदः २२६६) ३।८।८ (गाथिनो विश्वामित्रः ।
यूपाः, विश्वे देवा वा)
... रुद्रा वसवः सुनीथा ।
(७१८) १०।६६।१२ (वसुकर्णो वासुक्रः । विश्वे देवाः)
—वसवः सुदानवः ।
दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः।
(१२११) १०।५३।५ (अग्निः सौचीकः । देवाः)
गोजाता ... ... ।
पार्थिवात् पार्थिवात् ... ... दिव्यात् ... ।
[४६३] ७।३५।१५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
देवानां ... मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य ।
(७०५) १०।६५।१४ (वसुकर्णो वासुक्रः । विश्वे देवाः)
देवाः ... मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
(७०६) १०।६५।१५=१०।६६।१५
(वसुकर्णो वासुक्रः । विश्वे देवाः)
देवान् ... । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य ।
[४६५] ७।३६।२ जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः ।
(अदितिः० १८५) ३।५९।१(गाथिनो विश्वामित्रः। मित्रः
मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणः ।
[४७७] ७।३७।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ।
(इन्द्रः ९९०) ८।९७।१५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
[४८४] ७।३९।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः ।
(मरुतः४१४) १०।७७।८ (स्यूमरश्मिर्भार्गवः । मरुतः
[४८७] ७।३९।७ = ७ ४०।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। विश्वे देवाः
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।
(अदितिः ५६०) ७।६२।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः। सूर्यः
ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं ॥
[४८८] ७।४०।१ यदद्य देवः सविता सुवाति ।
(२६२) ५।४२।३ चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ॥
[४९१] ७।४०।४ सुहवा देव्यदितिरनर्वा ।
(सोमः १२२२) २।४०।६ (गृत्समदः शौनकः । अदितिः
अवतु देव्य ... ।
[४९२] ७।४०।५ विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः ।
(मरुतः २०९) २।३४।११ विष्णोरेषस्य प्रभृथो हवामहे
[४९५] ७।४२।१ प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त ।
(अदितिः० ४३) ७।५२।३ तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त
[४९७] ७।४२।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
समु वो यज्ञं महयन् नमोभिः ।
(अदितिः०३२६) ७।६१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ
समु वां यज्ञं महयं ... ।
[४९९] ७।४२।५ इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व ।
(अग्निः ७९७) ५।४।८ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व ।

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम्।

[५१०] ८।२५।११ (विश्वमना वैयश्वः । विश्वे देवाः)
अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ।
(अग्निः ४०२) २।८।६ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः
अरिष्यन्तः सचेमह्यभि ष्याम ।

[५१४] ८।२७।३ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वे देवाः)
मरुत्सु विश्वभानुषु ।
(अग्निः २४५०) ४।१।३ (वामदेवो गोतमः । अग्निर्वरुणश्च)

[५१५] ८।२७।४ यन्ता नोऽवृकं छर्दिः ।
(उषाः १८) १।४८।१५ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।

[५२१] ८।२७।१० देवासो अस्त्याप्यम् ।
(५०) १।१०५।१३ देवेष्वस्त्याप्यम् ।

[५२४] ८।२७।१३ देवंदेवं वोऽवसे देवंदेवं...। देवंदेवं हुवेम ।
(इन्द्रः ३०६) ८।११।१९ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
देवंदेवं वोऽवस इन्द्रम् ।

[,,] ८।२७।१३ देवंदेवं हुवेम वाजसातये ।
(इन्द्रः १७४१) ५।३५।६ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
पूर्व्य हवन्ते वाजसातये ।

[५२७] ८।२७।१६ प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ।
(मरुतः ३८४) ७।५९।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मरुतः)

[,,] ८।२७।१६ प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
६।७०।३ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । द्यावापृथिवी)

[,,] ८।२७।१६ अरिष्टः सर्व एधते ।
१।४१।२ (कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः)

[५२८] ८।२७।१७ अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो ।
(अग्निः २४६) १।७९।३ (गोतमो राहूगणः । अग्निः)
अर्यमा ... ... परिज्मा ।

[५३०] ८।२७।१९ यद्यद्य सूर्य उद्यति ।
(अदितिः० ४४) ७।६६।४ यद्यद्य सूर उदिते ।

[५३२] ८।२७।२१ यद्यद्य सूर उदिते ।
(अदितिः० ४४) ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। आदित्याः)

[५३५] ८।२८।१ वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेप आजीगर्तिः। अग्निः)

[५३८] ८।२८।५ सप्तो अधि श्रियो धिरे ।
(अग्निः ४०१) २।८।५ (गृत्समदः शौनकः। अग्निः)
विश्वा अधि श्रियो दधे ।

[५४०] ८।२९।२ अन्तर्देवेषु मेधिरः ।
(५१) १।१०५।१४ देवो देवेषु मेधिरः ।

[५४७] ८।२९।९ सम्राजा सर्पिरासुती ।
(अदितिः० २०३) १।१३६।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
— घृतासुती ।

[५४९] ८।३०।१ अर्भको देवासो न कुमारकः ।
(इन्द्रः २३१७) ८।६९।१५ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
अर्भको न कुमारकः ।

[५५१] ८।३०।३ त उ नो अधि वोचत ।
(मरुतः १०७) ८।२०।२६ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)
तेना नो अधि वोचत ।

[५५८] ८।६९।११ (प्रियमेध आङ्गिरसः । (अर्धर्च)विश्वे देवाः, (उत्तरार्धः) वरुणः)
विश्वे देवा अमत्सत । वत्सं संशिश्वरीरिव ।
(सोमः ११५) ९।१४।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
विश्वे ... ... ।
(सोमः ४०१) ९।६१।१४ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
वत्सं ... ... ।

[५६०] ८।८३।१ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेप आजीगर्तिः । अग्निः)

[५६१] ८।८३।३ यूयमृतस्य रथ्यः ।
(अदितिः० ५१) ७।६६।१२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। आदित्यः)

[५६२] ८।८३।४ वामं नो अस्त्वर्यमन् वामं वरुण शंस्यम् ।
(अदितिः० ६८) ८।१८।२१ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यम् ।

[५६७] ८।८३।९ यूयं हि ष्ठा सुदानवः ।
(अदितिः० ९०८) १।१५।१ (मेधातिथिः काण्वः । [ऋतवः] मरुतः)
(४०७) ६।५१।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम्।

[५६६] १०।३१।२ (कवष ऐलूषः । विश्वे देवाः)
ऋतस्य पथा नमसा विवासेत्।
(अग्निः २८४) १।१२८।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः। अग्निः)
... नमसा हविष्मता ।

[५७४] १०।३१।७ (कवष ऐलूषः । विश्वे देवाः)
किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः।
१०।८१।४ (विश्वकर्मा भौवनः । विश्वकर्मा)

[५७५] १०।३१।८ नैतावदेना परो अन्यदस्ति ।
(इन्द्रः २५११) १०।२७।२१ (ऐन्द्रो वसुक्रः । इन्द्रः)
अव इदेना परो — ।

[५८१] १०।३५।२ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे ।
... भद्रं सोमः ... ।
२।२६।२ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
... भद्रं मनः ... । ब्रह्मणस्पतेरव आ वृणीमहे ।

[५८२-९१] १०।३५।३-१२ स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ।

[५८५] १०।३५।६ आयुक्षातामश्विना तूतुजिं रथम् ।
(अश्विनौ १६३) १।१५७।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ)
... यातवे रथम् ।

[५८९] १०।३५।१० इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगम्।
(६६९) १०।६३।९ (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)
अग्निं मित्रं ... ।

[५९०] १०।३५।११ त आदित्या आ गता सर्वतातये ।
(५८) १।१०६।२ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

[५९१] १०।३५।१२ पश्वे तोकाय तनयाय जीवसे ।
३।५३।१८ (गाथिनो विश्वामित्रः । रथाङ्गानि)
बलं तोकाय ... ।

[५९२] १०।३५।१३ विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती ।
(२८६) ५।४३।१० (भौमोऽत्रिः । विश्वे देवाः)
विश्वे गन्त मरुतो ... ।

["] १०।३५।१३ विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु ।
(२५) १।८९।५ (गोतमो राहूगणः । विश्वे देवाः)
... अवसा गमन्निह ।

[५९३] १०।३५।१४ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं ।
(६७४) १०।६३।१४ (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)

[५९४] १०।३६।१ द्यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ७१) १।३६।४ (कण्वो घौरः । अग्निः)
देवासस्त्वा वरुणो .. ।

["] १०।३६।१=(५०६) ७।४४।१
इन्द्रं... आदित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः ।

[५९५-६०५] १०।३६।२-१२ तदेवानामवो अद्या वृणीमहे ।
अहं होता न्यसीदं यजीयान् ।

[६०९] १०।५२।२ (सौचीकोऽग्निः । विश्वे देवाः)
(अग्निः ७६०) ५।१।६ (बुधगविष्ठिरावात्रेयौ । अग्निः)

[६१०-११] १०।५२।३-४ अथा (४मां) देवा दधिरे हव्यवाहम् ।
(अग्निः ११६९) ७।११।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)

[६१२] १०।५२।५ अथेमा विश्वाः पृतना जयाति ।
(इन्द्रः २३५१) ८।९६।७ (तिरश्चीराङ्गिरसः, द्युताने वा मारुतः । इन्द्रः)
... जयासि ।

[६१३] १०।५२।६ (सौचीकोऽग्निः । विश्वे देवाः)
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन्।
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥
(अग्निः ५०८) ३।९।९ (गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः

[६१८] १०।५६।५ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । विश्वे देवाः)
तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे ।
(इन्द्रः १६१) ८।३।६ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः
इन्द्रे ह विश्वा— ।

[६२०] १०।५६।७ स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
(अग्निः ३६१) १।१८९।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः अग्निः

[६२३] १०।५७।३ पितृणां च मन्मभिः ।
८।४१।९ (नाभाकः काण्वः । वक्षणः)

[६२४] १०।५७।४ उयोक् च सूर्यं दृशे।
(आयुर्वेदः ८६८) १।२३।२१ (मेधातिथिः काण्वः। आपः)
(आयुर्वेदः ८८५) १०।९।७ (त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः, सिन्धुद्वीप आम्बरीषो वा। आपः)
[६२७-३८]१०।६१।१०-११ (नाभानेदिष्ठो मानवः। विश्वे देवाः)
मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वाः (११ नवीयः)।
[६३८] १०।६१।११ शुचि यत् ते रेक्ण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्रियायाः।
(७१) १।१२१।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। विश्वे देवा इन्द्रो वा)
[६४८] १०।६१।२२ रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन्।
(इन्द्रः ७९६) १।५४।११ (सव्य आङ्गिरसः। इन्द्रः)
[६६०] १०।६२।७ व्रजं गोमन्तमश्विनम्।
(सोमः ११६४) १०।२५।५ (ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद्वा। सोमः)
["] १०।६२।७ श्रवो देवेष्वक्रत।
(इन्द्रः ६१२) ८।६५।१२ (प्रगाथः काण्वः। इन्द्रः)
[६६४] १०।६३।४ (गयः प्लातः। विश्वे देवाः)
देवासो अमृतत्वमानशुः।
(अग्निः १६१३) १०।५३।१० (देवाः। अग्निः)
येन देवासो — ।
[६६८] १०।६३।८ विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः।
(३८४) ६।५०।७ विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः।
[६६९] १०।६३।९ = (५८९) १०।३५।१०
अग्निं (१० इन्द्रं) मित्रं वरुणं सातये भगं।
[६७१] १०।६३।१३ अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते।
१।४१।२ (कण्वो घौरः। वरुणमित्रार्यमणः)
अरिष्टः सर्व एधते।
["] १०।६३।१३ प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि।
६।७०।३ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः। द्यावापृथिवी)
[६७४] १०।६३।१४ = (५९३) १०।३५।१४ यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं।
[६७५] १०।६३।१७ = १०।६४।१७ (गयः प्लातः। विश्वे देवाः)
एषा प्लतेः सूनुरवीवृधद्वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी।
ईशानासो नरो अमर्त्येनास्तावि जनो दिव्यो गयेन।
[६७५] १०।६३।१७ विश्व आदित्या अदिते मनीषी।
(३९७) ६।५१।५ विश्व आदित्या अदिते सजोषाः।
[६७९] १०।६४।४ (गयः प्लातः। विश्वे देवाः)
कविः ... । अहिः शृणोतु बुध्न्यो हवीमनि।
(७३१) १०।९२।१२ (शार्यातो मानवः। विश्वे देवाः)
कविरहिः ... ।
[६८१] १०।६४।७ प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं।
(२४५) ५।४१।६ (भौमोऽत्रिः। विश्वे देवाः)
... रथयुजं कृणुध्वं। .. पुरंधीः।
[६८५] १०।६४।१० त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः।
(३९०) ६।५०।१३ त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषाः।
[६८६] १०।६४।११ रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयः।
(अग्निः ३३२) १।१४४।७ (दीर्घतमा औचथ्यः। अग्निः)
[६९०] १०।६४।१५ (गयः प्लातः। विश्वे देवाः)
ग्रावा यत्र मधुपुदुच्यते बृहद्।
(७५८) १०।१००।८ (दुवस्युर्वान्दनः। विश्वे देवाः)
[६९२] १०।६५।१ (वसुकर्णो वासुक्रः। विश्वे देवाः)
अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा।
(अग्निः ७१) १।३६।४ (कण्वो घौरः। अग्निः)
देवासस्त्वा वरुणो ... ।
["] १०।६५।१ आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत्।
(७१०) १०।६६।४ इन्द्राविष्णू मरुतः ... ।
[६९८] १०।६५।७ दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधः।
(अग्निः ९९) १।४४।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः। अग्निः)
सुदानवोऽग्निजिह्वा ऋतावृधः।
[७००] १०।६५।९ (वसुकर्णो वासुक्रः। विश्वे देवाः)
देवाँ आदित्याँ अदितिं हवामहे।
(७१०) १०।६६।४ देवाँ आदित्याँ अवसे हवामहे।
[७०५] १०।६५।१४= (४६३) ७ ३५।१५
मनोर्यज्ञा अमृता ऋतज्ञाः।
[७०६] १०।६५।१५ = १०।६६।१५ (वसुकर्णो वासुक्रः। विश्वे देवाः)
देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
["] १०।६५।१५ = (४६३) ७।३५।१५
ते नो रासन्ता० ... सदा नः।

[७०९] १०।६६।३ = (६५) १।१०७।२
आदित्यैर्नो अदितिः शर्म यच्छतु (२ यंसत)।
[७१०] १०।६६।४ = (६९२) १०।६५।१ (वसुकर्णो वासुकः। विश्वे देवाः)
["] १०।६६।४ = (७००) १०।६५।९
[७१५] १०।६६।९ आप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया।
(४४८) ७।३४।२५ आप ओषधीर्वनिनो जुषन्त।
(मरुतः ३६९) ७।५६।२५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः। मरुतः)
[७१८] १०।६६।१२ आदित्या रुद्रा वसवः सुदानवः।
(२२२) ३।८।८ आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा।
[७१९] १०।६६।१३ दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित।
(अग्निः १९४८) २।३।७ (गृत्समदः शौनकः। [आप्रीसूक्तं] दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
... प्रथमा विदुष्टरः।
["] १०।६६।१३ ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया।
(उषा ७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः। उषाः)
[७२६] १०।९२।६ (शार्यातो मानवः। विश्वे देवाः)
तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा।
(अग्निः ७१) १।३६।४ (कण्वो घौरः। अग्निः)
देवासस्त्वा वरुणो ... ।
[७२७] १०।९२।७ सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये।
(इन्द्रः ३१५१) ४।४१।६ (वामदेवो गौतमः। इन्द्रावरुणौ)
[७३१] १०।९२।११ = (६७९) १०।६४।४
[७३६] १०।९३।१ (तान्वः पार्थ्यः। विश्वे देवाः)
महि द्यावापृथिवी भूतमुर्वी।
(इन्द्रः ३१६४) ६।६८।४ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः। इन्द्रावरुणौ)
महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतमुर्वी।
[७३९] १०।९३।४ ते घा राजानो अमृतस्य मन्द्राः।
(९१) १।१२२।११ श्रोता राजानो अमृतस्य ... ।
["] १०।९३।४ अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा।
(अग्निः २४६) १।७९।३ (गोतमो राहूगणः। अग्निः)
[७४१] १०।९३।६ महः स राव एषते।
(अग्निः ३५३) १।१४९।१ (दीर्घतमा औचथ्यः। अग्निः)
[७४६] १०।९३।११ सदा पाह्यभिष्टये।
(इन्द्रः १००८) १।१२९।९ (पक्थेषो दैवोदासिः। इन्द्रः)
सदा पाह्यभिष्टिभिः।
[७५०-६१] १०।१००।१-११ (द्रुवस्युर्वान्दनः। विश्वे देवाः)
आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे।
[७५८] १०।१००।८ = (६९०) १०।६४।१५
मावा यत्र मधुवृदुच्यते बृहत्।
[७५९] १०।१००।९ विश्वा द्वेषांसि सनुतर्युयोत।
(१५१) २।२९।२ यूयं द्वेषांसि ... ।
[७६३] १०।१०१।१ (बुधः सौम्यः। विश्वे देवाः, ऋत्विजो वा)
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीम्।
(१६९) ३।२०।५ (गाथी कौशिकः। विश्वे देवाः)
[७७१] १०।१०१।९ सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः।
(इन्द्रः ३१५०) ४।४१।५ (वामदेवो गौतमः। इन्द्रावरुणौ)
[७८३] १०।११४।२ = (१७४) ३।५४।५
परेषु या गुह्येषु व्रतेषु।
[७९१] १०।१२६।१ (शैलूषिः कुत्सलवर्हिषो, वामदेव्योऽसोमयुग्वा। विश्वे देवाः)
न तमंहो न दुरितं।
१।२३।५ (गृत्समदः शौनकः। ब्रह्मणस्पतिः)
[७९३] १०।१२६।२ वरुणमित्रार्यमन्।
(अदितिः० २७४) ५।६७।१ (यजत आत्रेयः। मित्रावरुणौ)
[७९४-९८] १०।१२६।३-७ वरुणो मित्रो अर्यमा।
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेप आजीगर्तिः। अग्निः)
(अदितिः० ५६) ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः। आदित्यः)
[७९८] १०।१२६।७ शर्म यच्छन्तु सप्रथ आदित्यासो यदीमहे।
(अदितिः० ५६) ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः। आदित्यः)
... ... यदीमहे।
[७९९] १०।१२६।८ यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः।
एवो ष्वस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः॥
(अग्निः ७३९) ४।१२।६ (वामदेवो गौतमः। अग्निः)
[८०७] १०।१२८।८ इन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः।
(इन्द्रः ८५४) १।१०४।८ (कुत्स आङ्गिरसः। इन्द्रः)
मा नो वधीरिन्द्र मा परा दाः।

[८१८] १०।१४१।३ (अग्निस्तापसः । विश्वे देवाः)
अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
(अग्निः १११९) ८।११।६ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
[८१९] १०।१४१।४ इन्द्रवायू बृहस्पतिं सुहवेह ।
(६) १।१४।३ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
... ... मित्रावरुणा ।
[८२१] १०।१४१।६ ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।
(इन्द्रः ६१) १।१०।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
ब्रह्म ... यज्ञं च वर्धय ।
[८२७] १०।१५७।५ (भुवन आप्त्यः, साधनो वा भौमः । विश्वे देवाः)
आदित् स्वधामिधिरां पर्वपश्यन् ।
(मरुतः १९१) १।१६८।९ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
[८२८] १०।१६५।१ (नैर्ऋतः कपोतः । विश्वे देवाः)
शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।
(सोमः ११२३) ६।७४।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । सोमाश्वौ)
शं नो भूतं द्विपदे— ।
[८३४-३६] १०।१८१।१-३ (१ प्रथो वासिष्ठः, २ सप्रथो भारद्वाजः, ३ धर्मः सौर्यः । विश्वे देवाः)
धातुर्युतानात् सवितुश्च विष्णोः ।
[१२०१] १।१६४।५० (दीर्घतमा औचथ्यः । साध्याः)= १०।९०।१६ (नारायणः । पुरुषः)
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
[१२११] १०।५३।५ (सौचीकोऽग्निः । देवाः)
गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
(४६२) ७।३५।१४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
["] १०।५३।५ (सौचीकोऽग्निः । देवाः)
पृथिवी नः पार्थिवात् पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात् पात्वस्मान् ।
(इन्द्रः ३३००) ७।१०४।२३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । पृथिव्यन्तरिक्षे [उत्तरार्धः])
[१२१३-१४] १०।७२।२-३ असतः सदजायत ।
[१२२१] १०।८५।१७ (सूर्यासावित्री ऋषिका । देवाः)
मित्राय वरुणाय च ।
(सोमः९३९) ९।१००।५ (रेभसूनू काश्यपौ । पवमानः सोमः)
[१२६४] १।१३६।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । लिङ्गोक्ताः)
मित्राय वोचं वरुणाय मीढुषे सुमृळीकाय मीढुषे ।
(इन्द्रः १००२) १।१२९।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृळीकाय सप्रथः ।

दैवतसंहितायां

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(१) ऋग्वेदमन्त्राणाम् ।

अंशः
अक्तुः
अक्षरम्
अग्निः
अग्नि-जिह्वा
अग्नि-दीप्तयः
अग्नी-पर्जन्यौ
अग्निवायुआदित्यपदाधानवेत्तारः
अग्निवायुसूर्याः
अग्नी-षोमौ
अग्न्यादित्ययोः अनुवेत्ता व्यतिहारेण वा उपासकः
अङ्गिराः- रसः
अज एकपात
अतिथिः
अत्रयः
अथर्वा
अदितिः
अद्रिः
अद्री (पत्नी-यजमानौ)
अध्वरः
अनात्मज्ञः (तत्परिदेवनम्)
अनुमतिः
अन्तरिक्षम्
अपां नपात्
अप्याः
अभिषाचः
अर्णवः
अर्यमा
अर्वन्तः
अश्वः-श्वाः
अश्विना
असुरः
अ (स्तृ)-स्तारः
अहः
अहिर्बुध्न्यः
अहोरात्रे
आत्मज्ञान- अज्ञाने
आत्रेयः प्रतिक्षत्रः
आदित्यः
आदित्य सत्यं दुर्ज्ञेयम्
आदित्याः
आपः
इन्दवः
इन्द्रः
इन्द्राग्नी
इन्द्रापर्वतौ
इन्द्रापूषणौ
इन्द्रामरुतौ
इन्द्रावरुणौ
इन्द्रवायू
इन्द्राविष्णू
इन्द्रा-सोमौ
इन्द्राणी
इळा
इळा. (भूमिस्थाना देवताः)
उक्षणः पञ्च
उर्वशी
उलूका
उषाः
उषासानक्ते
ऋतवः
ऋत्विजः
ऋभवः
ऋभुक्षाः- क्षणः
ऋषयः (पञ्च)
ऋषयः (सप्त)
ओषधयः- धीः
ककुदः
कण्वः
कपोतः
कृशानुः
क्षत्रस्य पतिः
गयः
गायत्रम् (साम)
गिरयः
गुरुगूः
गौः
गोजाताः
गोयावा (तान्वदिदिक्षा)
गोरूपेण आदित्यरश्मिसमूहः गोरूपिणी आहुतिः वा
गो- सवितारौ (मेघवायू वा)
ग्नाः (देवपत्न्यः, पत्नीः)
ग्रावाणः
घर्मः
घर्मा
चक्रम्
चन्द्रमाः
जगत् (साम)
जनाः पञ्च
ज (निः)-नयः
जिह्वा
जीवात्म-परमात्मानौ

तत्त्वविद्
तनयित्नुः
तन्यतुः
तार्क्ष्यः
तिष्यः
त्वष्टा
दक्षः
दधिक्राः
दिव्याः
दिशः (मेघाः वा)
दीधितिः
देवः
देवगणः-संघः वा
देवाः
देवानां देवाः
देवो देवः
देवपत्नीः [पत्नीः, माः]
देवी
देवीः तिस्रः
देवीः षट्
देहात्मानौ (देहात्मजीवात्मानौ-सायनाः)
द्यौः
द्यावापृथिवी [रोदसी]
द्यावापृथिवी-अन्तरिक्षम् [तिस्रः निर्ऋतीः]
धर्ता
धर्मः
धाता
धिषणा
धीः
धियः
धेनुः
धेनवः
नक्षम्
नक्षत्राणि
नक्षः
नमः
नरः
नराशंसः
नासात्यौ-विप्रः
निर्ऋतिः
निशाः
नौः (दैवी)
पतयः, सत्यस्य
पत्नीः [माः, देवपत्नीः]
पन्थाः
परमात्मा (आदित्यः वा)
परमेश्वरस्य अविषयत्वम्
पर्जन्यवाता
पर्वतः-तासः
पशुः
पार्थिवाः
पितरः
पुरन्धिः
पूषा
पृथिवी
पृश्निः
प्रजापतिः
प्रदिशः
प्रमतिः (अग्नेः)
प्रवाचनम् (देवानाम्)
प्रश्नाः
प्रश्नप्रतिवचनानि
बर्हिः
बृहत्
बृहदुक्थः
बृहस्पतिः
ब्रह्म
ब्रह्मा
ब्रह्मजाया
ब्रह्मणस्पतिः
भगः
भवित्रम्
भूतानि
भूमिः
भृगवः
मदः
मनः (मन आवर्तनम्)
मनीषा
मनीषिणः
मनुष्याः
मन्म
मरुतः
मही
माता
मित्रः
मित्रावरुणा
मेघः
यजमानब्रह्माणौ
यजुः
यज्ञः
यमः
रथः
रथन्तरं साम
रश्मयः (सूर्यस्य, आदित्यस्य वा)
राका
राजानः
रातिषाचः
रायः
रुद्रः-द्राः
रुद्रियः
रोदसी (एकवचनम्) (रुद्रस्य पत्नी)
रोदसी (द्विवचनम्) (द्यावापृथिवी)
वत्सः
वनस्पतिः
वना
वनिनः
वरुणः
वसवः
वाक्
वाजः-जाः
वाजी [बृहदुक्थपुत्रः]
वाजिनः [अग्नि-वायु-सूर्याः]
वातः
वातापर्जन्या
वायुः
वास्तोष्पतिः
विद्युत्
विद्वान् पथः
विधाता

विट् (श्) सर्वा
विश्वे देवाः
विष्णुः
वृकः (अरुणः)
वृषस्तुभः
वृष्टिः
वेदिः
व्रजिनीः
व्रतानि
शंसः
शमी (गोत्वेन निरूपिता)
शम्भुः
शरीरम्
शर्यणावन्तः
संवत्सरः
संसारः
सत्यस्य पतयः (पतयः सत्यस्य)
समुद्रः
सरमा
सरयुः
सरस्वती (नदी)
सरस्वती (वाक्)
सविता
साम
सिनीवाली
सिन्धुः-न्धवः
सुकृतानि, सुकृताम् (सुकृतां सुकृतानि)
सुतम्भरः (ऋषिः)
सुपर्णः
सुमतिः, आदित्यानाम्
सुहवानि देवानाम्
सूनृता
सूर्यः
सूर्यामासा
सोमः
सोमजामयः
सोमसूर्यचक्रभ्रमणानि
स्तोता
स्तोमः (देवस्तुतिः)
स्वः
स्वधावान् (प्रश्नोत्तराणि)
स्वरूणां मितयः
स्वस्तिः
हविष्कृतः
हस्तौ
होता
होतारा दैव्या

विश्वे-देवाऽन्तर्गतानां देवतानां गुणबोधकपदानि ।

अंशः ५,४१,५; १६४
अक्तुः १०,६४,३, ६७८ । १०,१४,९; १२६९
अक्षरम् १,१६४,२४; १२१ । ३,५५,१; १९१
अर्कम् १२१
गायत्रम् ”
त्रैष्टुभम् ”
महत् १९१
वाकम् १२१
अग्निः १,१४,१-१२; ४-१५ । १०५,४,१३-१४; ४१,५०-५१ । १०६,१; ५७ । १०७,३; ६६ । १११,३,५; ८४,८६ । १३९,१; ९७ । १६४,१,११; ९९,१०९ । १८६,३; १४१ । ३,१०,१,५; १६८-६९ । ५४,१, ३,१९,२१-२२; १७०,१७२,१८८,१९०-९१ । ५५, १-१०; १९३-२०१ । ८,८; २२१। ५७,१,४-६,२२३, २२६-२८ । ४,५५,४,७-८; २३१,२३५-३६ । ५,४१, ४,१०; २४३,२४९ । ४१,३; २६१ । ५,४३,६,१०, १३-१५; २८१,२८६,२८९-९१; ४४,३-५,८,१४-१५; २९३-९८,३०१,३०७-८ । ४५,४; ३११। ४६,१,४; ३२१,३२३। ४७,७; ३३४। ४८,१,४-५; ३३५,३३८-३९ । ४९,३; ३४१। ५०,४; ३४८। ५१,१-३,८-१०, १३-१४; ३५०,३५३-५५,३५८-५९। ६,२१,९; ३६१। ६,४९,१-२,९,३६३-६४,३७१। ५०,१,९;३७८,३८६। ५१,५,१०,१३; ३९५,४०१,४०५। ५२,५-६,११,१७; ४१३-१४,४२०,४२५। ७,३४,८,१४,२५;४३३,४३९, ४४८ । ३५,४; ४५१ । ३६,१; ४६४ । ३९,१,४-७; ४८१,४८४-८७। ४०,३;४९०। ४१,१;४९४। ४१,१-६; ४९६-५००।४३,१-३,५;५०१-३,५०५। ४४,१; ५०६। ८,१७,१-३; ५११-१४। २८,१-३; ५३५-३६। २९,१; ५४०। ८,५८,१; ५५६। ६९, ११; ५५८। १०, ३१,१०; ५७७। ३५,१,३-१३; ५८०,५८१-९१। ३६,६,१२; ५९९,६०५। ५१,३ ४,६; ६१०-११, ६१३। ५६,१; ६१४। ५७,१; ६२१। ६१,९,१४, १७,१०-११; ६३५,६४०,६४३,६४६-४७। ६३,९; ६६९। ६४,३-४,८; ६७८-७९,६८३। ६५,१; ६९४, ६६, ४, १३; ७१०,७१९। १०,९१,१-४,११,१७, ७११-१४,७३१,७३४। १००,६,७५६। १०१,१;७६३, १०९,१-२, ७७५-७६। ११४,४; ७८५। १२६,५,८, ७९६,७९९। १२८,१-२,६; ८००-१,८०५। १४१,१; ३,६; ८१६,८१८,८२१। १६५,१; ८२९। १८१,३; ८३५। २०,९८,८-१२; १२२९-१२३३। १,१९६,६-७, १२६४-६५

अग्निदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अक्तोः अतिथिः ७२१
अगोह्यः ६७८
अजरः २९६
अजस्पाः ७२२
अजस्रः १७०
अतिथिः ४९८
अतिथिः अक्तोः ७२१
अतिथिः प्रेष्ठः १४१
अदब्धः ८०५
अदृप्तक्रतुः ३६४
अधासु मन्द्रः ६४६
अधिक्षित्, अभयानां विशाम् ७३४
अध्यक्षः ८००
अध्रुक् ६४०
अध्वरस्य केतुः २२२
अनीकैः (युक्तः) दिव्यैः दम्येभिः १७०
अनूरुत्, अपरा १९६
अन्तः चरन्, गोः निष्षिधम् १९९
अन्तः चरन्, महान् रोचनेन २००
अन्तमः १९९, ७५६
अन्तर्मतिः १९९
अन्वग्रं चरन् १९८
अप-म्लुक्तः ६११
अपरा अनूरुत् १९६
अपाच्याः ५३६
अपां नपात् ८५
अबन्धनः १९७
अभीशवः अग्नेः-
ऋतावृधः ,,
यम्यः ,,
सर्वशासाः ,,
सुयन्तवः ,,
सुयुजः ,,
अमृध्रः २८९
अरतिः ६४६
अरतिः युवत्योः ३६४
अरिं यसन् ३३९
अरिष्टगातुः २९६
अरुषः ३६४
अवमः ४१
अश्वाः अग्नेः-
अरुषाः ४९६
रोहितः ,,
वीरवाहाः ,,
हरितः ,,
असिन्वन् ४८६
आक्षित् पूर्वासु १९६
आततः तन्तुः देवेषु ६२२
आश्वश्वतमाः २४३
आहुतः ६२२
आहुतः घृतेन ५९९
इध्मं सनिता ६३५
इन्द्रवान् ५८०
इन्द्रस्य सुकृतम् ७५६
इषस्पतिः २३१
ईड्यः १७०,३६४
ईशे महः सौभगस्य २३६
ईशे वसव्यस्य ,,
उग्रः ७७५
उदक्तः ५३६
उपब्दिः ६३५
उषसः पुरोहितः ७२२
ऋजुगाथः २९८
ऋतं महत् ७१०
ऋतधीतिः ४०२
ऋतस्य होता ६४०
ऋतावान् ४८७
एकः १९७
एकः एव ५५६
ओमभिः विश्वेभिः हुवानः २८९
ओषधीः वसानः ,,
कण्वहोता २४३
कविः ६७९,७५६
कवीनां कवितमः २६२
कृच्छ्रा चरन् ६११
केतुः १९३
केतुः अध्वरस्य २२२
केतुः यजतः ७२१
केतुः यज्ञस्य ३६४
क्रिविः २९७
गोः निष्षिधं अन्तः चरन् १९९
गोपाः २०१, ५३६, ८०५
ग्नाः वसानः २८९
घृतपृष्ठः ९९
घृतेन आहुतः ५९९
चतुरनीकः ३३९
चरन् अन्वग्रम् १९८
चरन् बहुकृच्छ्रा ६११
चारुः ७५६
चारु वसानः ३३९
चिकित्वान् दैन्यं जनम् ४१०
जरिता ७५६
जर्भुरत् हरिणीषु ७२१
जातः शम्यां पित्रोः ५७७
जातवेदाः २२८, २८६, ६४०
जीवः २९८
ज्योतिरनीकः ४९२
तनूनपात् ७२२
तन्तुः देवेषु आततः ६२२
तपः ७७५
तुर्वणिः शस्तिभिः १४२
तृतीयः भ्राता (आदित्यस्य) ९९
त्रितः २४३
त्रिधातुशृंगः २८९
त्रिवृत् ६११
दधानः प्रिया अमृता धामानि २०१
दस्मः ३४१
दिवः शिशुः ३६४
दिवः सजोषाः २४३
दिव्यः ,,
दूतः ४१, २००
दूतः देवानाम् १८८

देवः १५, ५१
देवानां दूतः १८८
देवेद्धः ६७८
दैव्यं सहः ७५६
द्योतनः ५४०
द्रविणोदाः ३२३, ७३१
द्विबन्धुः ६४३
द्विमाता १९७, १९८
द्विवर्तनिः ६४६
धनदाः ८१६
धर्णसिः २८९
धर्ता प्रजायाः ६३५
धर्मन् ७२२
धामन् ३३५
नराशंसः ६०
पञ्चयामः ६११
पत्नीवान् ५३५
परस्तात् शयुः १९७
पलितः २००
पुत्रः पूर्वः ५७७
पुरन्धिः ३६१
पुरस्तात् ५३६
पुरुत्रा १९५
पुरुध प्रसूतः १८८
पुरोहितः ५१२, ७१९
पुरोहितः उषसः ७२२
पुर्वणीकः ४९७
पूर्वः पुत्रः ५७७
पूर्वासु आक्षित् १९६
प्रजायाः धर्ता ६३५
प्रतिनुदन् परेषां मन्युम् ८०५
प्रथमः ७१९
प्रथमा पुरोहितः ,,
प्रयुतः १९५
प्रसर्स्राणः बर्हिः अनु २९६
प्रसाधनः यज्ञस्य ६२२
प्रसूतः १८८
प्रसूतः पुरुध १८८
प्राचीनरश्मिः ५९९
प्रियः ३३५
प्रेष्ठः ४३९
प्रेष्ठः अतिथिः १४१
बर्हिः अनु प्रसर्स्राणः २९६
बहुधा समिद्धः ५५६
बुध्नः १९८
बृहद्दिवः २८९
भगः ३३९
भद्रः ३४१
भर्गः हनाम यस्य ६४०
भ्राता ३९७
भ्राता तृतीयः (आदित्यस्य) ९९
मतिः १९९
मध्यमः ७८५
मध्ये हितः २९६
मनुर्हितः १४
मन्द्रः अधासु ६४६
मन्युं परेषां प्रतिनुदन् ८०५
महः सौभगस्य ईशे २३६
महत् ऋतम् ७१०
महान् रोचनेन अन्तः चरन् २००
महे (चतु०) ३३५
मेधिरः ५१, ५४०, ७५६
यजतः केतुः ७२१
यज्ञः ४१, ७५६
यज्ञस्य केतुः ३६४
यज्ञस्य प्रसाधनः ६२२
यज्ञस्य रथ्यः ७२१
यतन् अरिम् ३३९
यवीयुत् ६३५
यष्टा ६४३
यह्वः ७२२
युवत्योः अरतिः ३६४
युवा २९६
रथ्यः यज्ञस्य ७२१
रराणः २८९
राजा १९५
रोचनेन महान् अन्तः चरन् २००
वक्मराजसत्यः ४०२
वत्सः १९७
वनेषाट् ६४६
वपूंषि बिभ्रत् नः अभिविचष्टे २००
वयाकिनं (सोमं) सञ्जभुराणः २९८
वयोधाः २८९
वराः (ब० व०) ६१०
वरुणः ३१९
वर्पसः (षष्ठी) ३१८
वषट्कृताः (ब० व०) ५३५
वसर्हा ८४
वसव्यस्य ईशे २३६
वसानः ओषधीः २८९
वसानः प्राः ,,
वसानः चारु ३३९
वसुः २२८, ३५८
वसुपतिः वसूनाम् ४१३
वसूनां वसुपतिः ,,
वह्निः १६८, ३४८
वाजं सनिता ६३५
वाजी ६०
विदथस्य साधनम् ७२२
विदथेषु सम्राट् १९८
विदथ्यः १७०
विदुष्टरः ५०, ५१
विप्रः ५, १२, ३५२
विभावसुः ७२१
विभावा ३७१, ६४६
विमृतः १९५
विशस्पतिः ८१६
विशां अभयानां अधिक्षित् ७३४
विशां विश्पतिः ७२१
विशां होता ,,
विश्पतिः विशाम् ,,
विश्वभोजः २४१
विश्वानरः १०८
विश्वा भुवनानि वेद २०१
विश्वे (ब० व०) ५९१
विष्णुः २०१
विष्णुर्हा मध्ये हितः २९१
वीळुहरः ७७
वृषभः २८

वृषा २९६, ७२१
वैतरणः ६४३
वैद्युतं तेजः ३३५
वैद्युताग्निः ,,
वैश्वानरः ३५८
शक्तिः अग्नेः-
मायिनी ३३५
वृणाना ,,
शम्यां पित्रोः जातः ५७७
शयुः पररतात् १९७
शस्तिभिः तुर्वणिः १४१
शिशुः २९६
शिशुः दिवः ३६४
शुष्कासु शोचन् ७२१
शेवृधः ६४६
शोचन् शुष्कासु ७२१
शोचिष्केशः २४९
श्रेष्ठवर्चाः ४०२
सक्षणः २४३
सचा ३३८
सजोषाः १४१, २४३
सञ्जभ्राणः सुतेगृभं वयाकिनम् २९८
सत्तः ५०,५१
सत्पतिः ४०५
सनिता इध्मम् ६३५
सनिता वाजम् ,,
सन्त्यः ३५२
सप्ततन्तुः ६११
समानः १९५
समिधानः ४२५,५८१-५९१, ६०५
समिद्धः १९४, ५०६, ५९१
समिद्धः बहुधा ५५६
सम्राट् विदथेषु १९८
सर्वताता १८८
सविता ३३९
सहः दैव्यम् ७५६
सहसः सूनुः ३६४, ३८६
सहसावन् ५०५
सहस्यः ५००
सहोभरिः २९६
साधनं विदथस्य ७२१
सीदन् योनिं आ ५४०
सुकृतं इन्द्रस्य ७५६
सुक्षत्रः ३६३, ४०१
सुजिह्वः १०
सुद्रविणः ६४७
सुधितः ४९८
सुपर्णः ७८५
सुप्रीतः ४९८
सुमनाः १९१, ८१६
सुशंसः ४१४
सुशेव्यः २९०
सुस्वरुः २९८
सुहवः ४१४
सूनुः सहसः ३६४, ३८६
सौभगस्य ईशे २३६
स्थिरः ६४३
स्वक्षत्रः ३३५
स्वयशः ,,
हरिणीषु जर्भुरत् ७२१
हव्यवाट् ६१०,६११
हव्याद् ४३९
हितः विशुहा मध्ये २९६
हुवानः २८६
हुवानः विश्वेभिः ओमभिः २८९
होता १२,१४,५१,१९८,२९६,३७१, ६१३,६४०,७७६
होता विशाम् ७२१

अग्निजिह्वा १,५७,५; २२७
उरूची ,,
मधुमती ,,
सुमेधा ,,
अग्निदीक्षयः १,५७,४; २२६
ऊर्ध्वाः ,,
दर्शता ,,
भूरिवाराः ,,
यजत्राः ,,
अग्नीषर्जन्यौ ६,५१,१६; ४२४
अन्यः इळां जनयत् [अग्निः] ,,
अन्यः गर्भं जनयत् [पर्जन्यः] ,,
सुहवा ,,
अग्नि-वायु-आदित्यपदाधानवेत्तारः १,१६४,१३; १२१
(सवनत्रय-छन्दस्त्रय-विधानं वा ।)
गायत्रे अधि गायत्रम्-अग्निपदम् ।
त्रैष्टुभात् त्रैष्टुभं पदम्-वायुपदम् ।
जगति आहितं जगत्-आदित्यपदम् ।
अग्निवायुसूर्याः १,५६,८; २२१ । १०,६६,१०; ७१६। १०,११४,१; ७८३
इषिराः २२१
ऋतावानः ,,
वृळभासः ,,
निर्ऋतीः तिस्रः ७८३
वाजिनः ७१६
अग्नीषोमौ १०,६६,७; ७११

पुरुप्रशस्ता वृषणा ७१३
अग्न्यादित्ययोः अनुवेत्ता व्यतिहारेण वा उपासकः।१,१६४, १८; ११६
कवीयमानः ११६
अङ्गिराः-रसः ५,४५,५-८;३१३-१६। ७,४२,१; ४९५। १०,६१,१०; ६३६। १०,६२,१-६; ६५४-६५९। १०,९२,१५; ७३५
अग्नेः सूनवः ६५८
अग्नेः परि जज्ञिरे ६५९
अच्युताः ६३६
अदक्षिणासः ६३६
ऋतं वदन्तः ६३६
ऋषयः ६५८
गम्भीरवेपसः ६५८
जनुषा पूर्वः ७३५
जज्ञिरे अग्नेः परि ६५९
द्विबर्हसः ६३६
नवग्वाः ३१५,६३६
पितरः ६५४-६५७
पूर्वः जनुषा ७३५
यज्ञेन दक्षिणया समक्ताः ६५४
विरूपासः ६५८,६५९
विश्वे ३१६
सखायः ३१४
सुध्यः ३१३
सुमेधसः ६५४-६५७
सूनवः अग्नेः ६५८
अज एकपात् १,३१,६; १६३। ६,५०,१४; ३९१। ७,३५,१३; ४६१। १०,६४,४; ६७९। १०,६५,१३; ७०४। ६६,११; ७१७
दिवः धर्ता ७०४
धर्ता दिवः ”
अतिथिः ५,५०,३; ३४७
अत्रयः ८,२९,१०; ५४८
अर्चन्तः ”
महि साम मन्वत ”
सूर्यं रोचयन् ”
अथर्वा १०,९२,१०; ७३०
प्रथमः ”

अग्निदेवताया उपमासूची।

अक्तुं न यह्वम्	७२२	पुरोहितं अरुषस्य निंसते।	
अत्रिवत्	३५३-५५	अग्ने आ याहि, सुते रण।	
आर्जि न	२४३	प्रभृथे प्र जग्मुः।	
पितुमन्तं क्षयं इव	३३८	भरहूतये विशे रत्नं दधाति।	
पर्वतस्य धारा इव	२२८	असश्चन्ती प्रमतिः।	
पिता इव	४१४	अग्निः सुशंसः सुहवः।	
प्रति परशोः इव	३३८	अस्य तां रीतिम् (पश्यामि)।	
आयवः शिशुं न	२९०	सुशेव्यं वासे नमसा मृजन्ति।	
युध्यतः शूरस्य इव	१९९	अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत्।	
ऊर्ध्वा श्रेणिः न	६४६	शिशुः मक्षू दन्।	

अदितिः १,८९,३,१०; २१,२८ । १०५,१९; ५६ । १०६, १,७; ५७,६३ । १०७,१-३; ६५-६६। २,२९,३; १५३, ३,५४,१८,२०; १८७,१८९ । ४,५५,१,३,७; २२९ । २३१,२३५ । ५,४१,१-२; २६०-२६१ । ४६,३,६; ३२२,३२५ । ४९,३; ३४२। ५१,११,१४; ३५६,३५९। ६,५०,१; ३७८। ५१,३-५,११; ३९५-९७,४०३ । ७, ३५,९; ४५७ । ३९,५; ४८५ । ४०,२,४;४८९,४९१। ८,२५,१०; ५०९ । २७,५; ५१६ । १०,३६,३;५९६। ६३,५,१०,१७; ६६५,६७०,६७५। ६४,५,१३; ६८०, ६८८ । ६५,१,९; ६९१,७०० । ६६,३-४; ७०९-१० । ९१,११,१४; ७३१,७३४। १००,१-११; ७५१-६१

अदितिर्देवताया गुणबोधकपदानि ।

अनर्वा ४९१
उरुव्यचाः ३२५
दुवोयु ३९६
देवी २३५,३५६,३७८,४८९,४९१,५०९,५१६
पस्त्या २३१
मही ५१६
माता मित्रस्य ५९६
माता वरुणस्य ”
यज्ञिया १८७
सर्वताति: ७५१-७६१
सुप्रणीतिः ६७०
सुशर्मा ”
सुहवा ४९१
अदितेः विभूतिमत्त्वं सकलजगदात्मत्वं वा २८

अदितिर्देवताया उपमासूची ।

सूनुं न माता २६१ प्रति मे स्तोमं जगृभ्यात् ।
अद्रिः ७,३५,३; ४५१
अद्री (पत्नीयजमानौ) ७,३९,१; ४८१ । ४२,१; ४९५

अद्री देवताया उपमासूची ।

रथ्या इव पन्थाम् ४८१ भेजाते अद्री ऋतम् ।
अध्वरः ८,१७,३; ५१४
अनात्मज्ञः (तत्परिदेवनम्) १,१६४,३७; १३५
निण्यः १३५
मनसा (युक्तः) १३५
संनद्धः ”
अनुमतिः १०,१६७,३; ८३३
अन्तरिक्षम् ३,५४,१९; १८८ । ३,८,८; २२२ । ५,४२, १६; २७४ । ७,३५,५; ४५३ । १०,६६,११; ७१७ । १२८,२; ८०१ । ५३,५; १२११
उरु १८८
उरुलोकः ८०१
रजः ७१७
अपां नपात् १,१२२,४; ८५ । १८६,५; १४४। २,३१, ६; १६३ । ५,४१,१०; २४९ । ६,५०,१३; ३९० । ५२,१४; ४२२ । ७,३४,१५; ४४० । ३५,१३;४६१ । १०,९२,१३; ७३३
आशुहेमा १६३
गर्भः वृष्णः भूम्यस्य २४९
दानु ३९०
पप्रिः ”
पेरुः ४६१
विश्वदेव्यः ७३३
वृष्णः भूम्यस्य गर्भः २४९
शिवः ४४०
सखा ”
अप्याः ७,३५,११; ४५९
अभिषाचः ७,३५,११; ४५९
अर्णवः १०,६६,११; ७१७
अर्यमा १,८९,३; २१ । ९०,१-३,९; २९-३१,३७। १०५,६; ४३ । १०७,३; ६६। १८६,२; १४१। ३,५४, १८; १८७ । ४,५५,४,६; २३२,२३८ । ५,४१,२, २४१ । ४६,५; ३२४ । ६,५०,१; ३७८ । ५१,३, ३९५ । ५२,११; ४१९ । ७,३५,२; ४५० । ३६,४; ४६७ । ३९,५; ४८५ । ४०,२,४; ४८९,४९१ । ८,२७, १७; ५२८ । २८,२-३; ५३५-३६ । ८३,२,४; ५६०, ५६२ । १०,३१,४; ५७१ । ३६,१; ५९४ । ६१,१७; ६४३ । ६४,५; ६८० । ६५,१,९; ६९२,७०० । ९२,६; ७२६ । ९३,४; ७३९ । १२६,१-७; ७९२-९८। १४१,२; ८१७ । १,१३६,६; १२६४

अर्यमा देवताया गुणबोधकपदानि ।

(मित्रावरुणाभ्यां सहितत्वेन बहुवचम् ।)

अतूर्तपन्थाः ६८०
अपबाधमानाः द्विषः ३०
अपाच्याः ५३६
अप्रमूराः ३०
अमृताः ,,
अमृतस्य मन्द्राः ७३९
गोपाः ५३६
चर्षणीनां राजा ७९७
तुक्षः १२६४
द्विषः अपबाधमानाः ३०
नेता ७९७
पुरुजातः ४५०
पुरुरथः ६८०
प्रचेतसः ५६०
मन्द्राः ७३९
महः (षष्ठी) ४३
यज्ञियः १८७
युजः ५६०
राजानः अमृतस्य ७३९
राजा चर्षणीनाम् ७९७
वसवानाः ३०
वस्वः ,,
वृधासः ५६०
शम् ३७
सजोषसः १४१,५२८
सप्तहोता ६८०
सरातयः ५२८
सुक्रतुः ४६७
सुशेवः ३७८
स्मद्रातिषाचः ५३५
अर्वन्तः ७,३२,१२; ४६० । १०,६४,६; ६८१
मितद्रवः ६८१
वाजिनः ,,
विश्वे ,,
हवनश्रुतः ,,

उपमासूची ।

मेधसातौ इव ६८१ त्मना सहस्रसाः ।
अश्वः-श्वाः १,१६४,२-३; १००-१०१ । १०,११४,१०; ७९१
एकः १००
सप्त १०१
सप्तनामा १००
रथस्य धूर्षु युक्तासः ७९१
अश्विनौ १,८९,३-४; २१-२२ । १२२,४-५; ८५-८६ । १८६,१०; १४९ । २,३१,४; १६१ । ३,२०,१,५; १६८-६९ । ५४,१६; १८५ । ५७,२; २२४ । ५,२६, ९; २३९ । ४१,३; २४२ । ४२,१८; २७६ । ४३,८, १७; २८४,२९३ । ४६,२,४; ३२१,३२३ । ४९,१; ३४० । ५१,८,११; ३५३,३५६ । ६,४९,५; ३६७ । ५०,१०; ३८७ । ७,३५,४; ४५२ । ३९,४; ४८४ । ४०,५; ४९२ । ४१,१; ४९४ । ४६,१; ५०६ । ८,२५, १०; ५०९ । २७,८; ५१९ । २९,८; ५४६ । ८३,७; ५६५ । १०,३५,६; ५८५ । ३६,६; ५९२ । ५२,२; ६०९ । ६१,३-४,१५; ६२९-३०,६४१ । ६४,३; ६७८ । ६५,१२; ७०३ । ६६,५; ७११ । ९२,१३; ७३३ । ९३,५-७; ७४०-४२ । १२८,७; ८०६ । १८४,२; ८३८

अश्विनौ देवताया गुणबोधकपदानि ।

अदब्धा १८५
अपां वृषण्वसू ७४०
अमृता २७६
अर्चिमन्ता ६४१
उभा ८०६
चारु यथोः नाम १८५
दिवः नपाता ६३०
देवौ ७४१,८३८
द्रवन्ता हवनेषु तिग्मम् ६२९
द्वा ५४६
धिष्ण्या २२
नपाता दिवः ६३०
नरा ३४०,३६७,३८७
नाम यथोः चारु १८५

नासत्या ३२१,३६७,३८७,४८४,५०९,६४१
पती १६१
पान्ता ८५
पितरा १८५
पुरुभुजा ३४०
पुष्करस्रजा ८३८
बन्धुपृच्छ्या १८५
मन्दू ६४१
मयोभुवा २८४
येष्ठा २४२
रथः अश्विनोः-
तृतुजिः ५८५
मनसा युजानः ३६७
विधक्मान् ,,
रयिदौ रयीणाम् १८५
रयीणां रयिदौ ,,
रराणा वृक्तबर्हिषे ६४१
रुद्रा ७४२
रौद्रौ ६४१
विप्रा ३८७
वृक्तबर्हिषे रराणा ६४१
वृषणा २२४
वृषण्वसू अपाम् ७४०
व्यन्ता ८५
शुभस्पती ७४१
सरथा २८४
सुहवा ७३३
सुहस्ता २२४
हवनेषु द्रवन्ता ६२९
हितप्रयसा ६४१

अश्विनौ देवताया उपमासूची।

धुरं आणिः न नाभिम् २८४ यातं अर्वाग् गन्तं निधिम्।
दूतः न २८४ शन्तमा गीः गन्तु हवध्यै।
प्रवासा इव ५४६ प्र वसतः।
मनः न ६२९ येषु हवनेषु तिग्मम्।
वधन्वांसा न ६३० इषं अस्मभ्यम्।
असुरः ५,४१,३; २४१। १०,५६,६; ६१९
दिव्यः २४१
स्वर्विद् ६१९

उपमासूची।

अन्धांसि इव २४२ असुराय मन्म प्र भरध्वम्।
अस्तारः (अस्तृ) १०,६४,८; ६८३
अहः १०,१४,९; ११६९
अहिर्बुध्न्यः १,१८६,५; १४४। २,६१,६; १६३। ४,५५,६; २३४। ५,४१,१६; २५५। ६,४९,१४; ३७६। ५०,१४; ३९१। ७,३५,१३; ४६१। १०,६४,४; ६७९। ६९,११; ७१७। ९२,१२; ७३२। ९३,५; ७४०
उपमातिवनिः २५५
कविः ७३२
अहोरात्रे १,१२२,४; ८५। ३,५५,११,१५; २०२,२०६। ४,५५,३; २३१। ६,४९,३; ३६५
अदब्धे २३१
अन्यत् गुह्यं अन्यत् आविः २०६
अन्यत् रोचते अन्यत् कृष्णम् २०२
अन्या स्तृभिः पिपिशे सूरः अन्या ३६५
अरुषस्य दुहितरा ३६५
अरुषी २०२
अहनी २३१
ऋज्यमाने ३६५
नाना वपूंषि चक्राते २०२
पथ्या २०६
पदे दस्मे अन्तः निहिते इव २०६
पावके ३६५
मातरा ८५
मिथस्तुरा ३६५
विचरन्ती ३६५
विरूपे ३६५
विषूची २०६
श्यावी २०२
सध्रीचीना २०६
स्वसारौ २०२

उपमासूची।

पदे इव निहिते २०६ दस्मे अन्तः।

आत्मज्ञानाज्ञाने १,१६४,३९; १३७
जीवात्मनः पारमार्थिकं रूपम् (सायनाचार्यः)
आत्रेयः (ऋषिः) प्रतिक्षत्रः ५,४६,१; ३१०
विद्वान् ३१०

उपमासूची ।

हयः न ३२० विद्वान् अयुजि स्वयं धुरि ।
आदित्यः १,१०५,१६; ५३ । १२२,३; ८४ । १६४, १,७-८, १०, ३१, ३३; ९९,१०५-६,१०८,१२९,१३१। ३,५५,१४; ३०५ । ५,४१,९; २४८ । ६,५१,१; ३९३ । १०,६१,१८; ६४४ । ६६,१३;७१९ । १०९,१; ७७५

आदित्यदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अकूपारः ७७५
अदब्धः ३९३
अनिपद्यमानः १२९
अनीकम् ७०
आचरन् पथिभिः १२९
आप्त्यः २४८
ऋतः २०५,३९३
गोपाः १२९
चक्षुः त्यत् ३९३
चम्वोः उत्तानयोः योनिः १३१
त्यत् चक्षुः ३९३
दर्शतः ,,
नर्यः २४८
पथिभिः आचरन् १२९
पनितः २४८
परिज्मा ८४
पलितः ९९
पिता १०६,१३१
पुरोहितः प्रथमः ७१९
प्रथमः पुरोहितः ,,
प्रियः मित्रयोः वरुणयोः यजत्रः २४८,३९३
योनिः उत्तानयोः चम्वोः १३१
वसानः विषूचीः १२९
वसानः सध्रीचीः ,,
वामः ९९,१०५
विः १०५
विश्पतिः ९९
विषूचीः वसानः १२९
शुचिः ३९३
सध्रीचीः वसानः १२९
सप्तपुत्रः ९९
होता ,,
आदित्यसत्यम् (दुर्ज्ञेयम्) [परमेश्वरस्य अविषयत्वम्, सायनाचार्यः ।] १,१६४,४-६; १०१-१०४
आदित्याः १,१४,३-४; ६-७ । १०६,२; ५८ । १०७,१-२; ६४-६५ । २,२९,१; १५१ । ३१,१; १५८ । ३,२०,५; १६९ । ५४,१०,२०; १७३,१८९ । ८,८; २२२ । ५, ५१,१०,१२; ३५५,३५७ । ६,५०,११; ३८८ । ५१, ४-५; ३९६-९७ । ७,३५,६,१४; ४५४, ४६२ । ४४,१; ५०६ । ८,२७,३,६,२२; ५१४,५१७,५३३ । ८३,५,८; ५६३,५६६ । १०,३५,९,११-१२; ५८८,५९०-९१। १०, ३६,१; ५९३ । ६३,३,५,७,१३,१७; ६६३,६६५,६६७, ६७३,६७५ । ६५,१,९; ६९२,७०० । ६६,३-४,११; ७०९-१०,७१८ । १२६,५,७; ७९६,७९८ । १२८,९; ८०८ । १४१,३; ८१८ । १५७,२-३; ८२४-२५ । ९८,१; १२२२

आदित्यानां गुणबोधकपदानि ।

अग्निजिह्वाः १७९
अदब्धाः ३९६
अद्रिबर्हाः ६६३
अपरिह्वृता ६६५
इषिराः १५१
ईशानासः वामस्य ५६३
उक्थशुष्माः ६६३
ऋदूदराः १७९
कवयः ,,
क्षयन्तः ३९६
तुराः ५१७
दातारः सुवसनस्य ३९६
दिव्याः देवाः ३८८,७००
देवाः दिव्याः ३८८,७००
धृतव्रताः १५१

नरः ३९६, ५१७
पप्रथानाः १७९
प्रचेतसः ५६३
मधुमत् पयः येभ्यः माता पिन्वते ६६३
महः ३९६
युवानः १७९, ३९६
राजानः ३९६
रिशादसः २९६, ५६३
वनर्षदः १५८
वामस्य ईशानासः ५६३
विश्वे ३९७, ६७५
वृषभराः ६६३
श्रवस्यवः १५८
सजोषसः ५९०
सत्पतयः ३९६
सम्राजः १७९, ५३३, ६६५
सुक्षत्राः ३९६
सुदानवः ५६६, ७१८
सुवसनस्य दातारः ३९६
सुवृधः ६६५
स्वप्नसः ६६३
हृषीवन्तः १५८

आदित्यानां उपमासूची।

पुत्रः न ५३३ बहुपाय्यं आ वृणीमहे।
आपः ३,५४,१९; १८८। ५५,११; २१३। ५६,४,७; २१७, २२०। ५,४१,११-१२; २५०-५१। ४६,३; ३२१। ६,५०,७; ३८४। ७,३४, २-३, २३, २५; ४२७-२८, ४४६, ४४८। ३५,८; ४५६। ४४,१; ५०६। ८,५४,४; ५५४। १०,३६,१; ५९४। ६४,८-९; ६८३-६८४। ६५,१३; ७०४। ६६,१०; ७१६। १०९,१; ७७५। १३७,६; ८१४। १४,९; १२६९

आपो देवताया गुणबोधक-पदानि।

अद्रेः बबृहाणस्य परि स्रुचः २५१
अमीवचातनीः ८१४
क्षरन्तीः ४२७
जगतः विश्वस्य जनित्रीः ३८४
जनित्रीः विश्वस्य स्थातुः जगतः ,,
देवीः २१७, ६८४, ७७५
परि स्रुचः बबृहाणस्य अद्रेः २५१
पृथक् व्रजन्तीः २१७
पृथ्वीः ४२८
प्रथमजाः ७७५
बबृहाणस्य अद्रेः परि स्रुचः २५१
भिषजः ३८४
भेषजीः ८१४
भेषजीः सर्वस्य ,,
महीः ६८३
मातरः ६८४
मातृतमाः ३८४
मानुषीः ,,
विश्वस्य जगतः जनित्रीः ,,
विश्वस्य स्थातुः जनित्रीः ,,
व्रजन्तीः पृथक् २१७
शुभ्राः २५१
समुद्रियः ७०४
सर्वस्य भेषजीः ८१४
सूदयित्न्वः ६८४
स्थातुः विश्वस्य जनित्रीः ३८४

उपमासूची।

पुरो न २५१ शुभ्राः आपः शृण्वन्तु।
इन्दवः १,१४,४; ७
चमूषदः ,,
द्रप्साः ,,
मत्सराः ,,
मध्वः ,,
मादयिष्णवः ,,
इन्द्रः १,१४, ३-४, १०; ६-७, १३। ८९,५-६; २३-२४। ९०,४,९; ३२, ३७। १०५,८; ४५। १०६,१,६; ५७,६२। १०७,२-३; ६५-६६। १२१,१-१५; ६७-८१। १६४,३३; १३१। १८६,६-८; १४५-४७। १,३१,३; १६०। ३,५५,१७; २०८ [पर्जन्यात्मा]। १८ [कालात्मा], २०-२२; २०९,२११-१३। ५७,१-३; २२३-२२५। ४,५५,७,१०; २३५,२३८। ५,४१,२; २४१। ४२,४-६, १३; २६३-६५, २७१। ४३,५; २८१। ४४,१-२; २९४-९५। ४५,१,४; ३०९,३१२। ४६,२; ३२१। ४८,३; ३३७ [सूर्यरूपः] उत्तरार्धस्य वा। ४९,३; ३४२। ५१,१०,१४; ३५५,३५९। ६,२१,९,११; ३६१-३६२। ५०,६; ३८३। ५१,११; ४०३। ५२,६,११; ४१४,४१९। ७,३४,३-४; ४२८-२९। ३५,५-६; ४५३-५४। ३६,४; ४६७। ३७, ३-८; ४७५-८०। ३९,४-५; ४८४-८५। ४०,२; ४८९। ४१,१; ४९४। ४२,५; ४९९। ४४,१; ५०६। ८, २७,६,८; ५१७,५१९। २९,४; ५४२। ६९,११; ५५८। ८३,७; ५६५। १०,३१,१; ५६८। ३५, १०; ५८९। ३६,१,५; ५९४,५९८। ५२,५; ६१२। ५७,१; ६२१। ६१, ११-१३,१५,२१-२२; ६३७-६३९, ६४१,६४७-४८। ६३,९,१४;६६९, ६७४। ६४,७,१०,१२; ६८२,६८५, ६८७। ६५,१,१०; ६९२,७०१। ६६,३,६;७०९,७१२। ९२,५-८,१४; ७२५-७२८,७३४। ९३,८-९,११; ७४३-४४,७४६। १००,१-२,५-६, ११-१२, ७५१-५२,७५५-५६,७६१-६२। १०१,१,१२; ७६३,७७४। १२६,५; ७९६। १२८,२,७-८; ८०१,८०६-८०७। १४१,५;८२०। १५७,१-३; ८२३-२५। १६७,३; ८३३। ९८,१; १२२२। १,१३६, ६-७; १२६४-१२६५

इन्द्रदेवताया गुणबोधकपदानि।

अंहोमुक् ६६९
अजूर्यन् २६५

अद्रिवस् ७६
अद्रिं विष्यन् ३०९
अनर्वा ६३९
अन्यासु रोरवीति २०८
अप्रतीतः २६५
अप्रयुच्छन् २३५
अभिमातिषाहः ८०६
अभिष्टिः ७६२
अमृतः २६४
अरुणीः राट् ६९
अर्यः ८१
अवः शश्वताम् ७६१
अहा वि वर्तयन् ३३७
अहा सं वर्तयन् ,,
आशुः २९४
आहनाः २७१
ईशानः २३
उरुव्यचाः ८०७
ऋते ते नाम २९५
ऋभुः ६८
ऋभुक्षाः १६३,२४१,२६४,४७६, ६८५,७४३
ऋभुभिः सखा १८६
कारुः ६३८
कालात्मा इन्द्रः २१९
कृतुप्राः ७६२
कृतुप्रावा ७६१
क्षमावान् २०८
गिर्वणः २८३
गृणानः ,,
गोः नरः ६८
घ्नन् वृत्राणि ५४२
चम्वोः उत्तानयोः योनिः १३१
चर्षणिप्राः १४५
चित्रभानुः ७६२
जगतः पतिः २३
जनः दैव्यः ६६९
जयन् २९४
जरिता ७६१
जिष्णुः २६५,४५३
जुजुषाणः २८१
जूजुवानः ७४३
ज्येष्ठतातिः २९४
तरणिः ७२
तक्षणः १४६
तवीयान् ७२८
तस्थुषःपतिः २३
तुरः-रासः २६४,५१७
तुरण: ७१
तुरः विशाम् ६९
तुविष्टमः १४५
त्राता २३५, ८०६
त्रिककुभ् ७०
त्रितः १६३
त्रिबन्धुः ४७९
दस्मः ३४२
दिव्यः ४८०
देवः ४५३
देवानां शंसः ५६८
दैव्यः जनः ६६९
धनानां सञ्जितः २६४
धाता धातृणाम् ८०६
धातृणां धाता ,,
धियंजिन्वः २३
धृष्णुषेणः १८४
नरः गोः ६८
नर्यं सुरभिष्टमः १४६
नर्यः ७८
नाम ऋते ते २४५
नार्षदः ६३९
नि दधाति रेतः अन्यस्मिन् यूथे २०८
नृपतिः ६४८
नृन् पात्रम् ६७
पतिः ७३४
पतिः जगतः तस्थुषः च २३
पतिं भुवनस्य ८०६
पत्यमानः विश्वैः वीर्यैः १८४
परः मायाभिः २९५
परिज्मा ७२५
पर्जन्यः ७१२
पर्जन्यात्मा इन्द्रः २०८
पात्रं नृन् ६७
पायुः ४८०
पिता १३१ (उत्तरार्धः), ७५५
पुरन्दरः १८४
पुरन्धिः २६४, ४८४, ६८२
पुरुक्षुः ८०७
पुरुहूतः ७१, १८६, ८०७
प्रतीचीनः २९४
प्रथमः ५१९
प्रमतिः ७५५
प्रमतिः सुतावताम् ७६१
बर्हिषद् २९४
भगः २०८
भद्रः ३४२
मरः ७५२
भीमः ७२८
भुवनस्य पतिः ८०६
मघवा ८१,२८५,४७५,७५१,८३३
मनुः ७५५
मरुत्वान् २९५,१२२२
महः-हे (चतु०) २७१
महिषः ६८
मायाभिः परः २९५
मिनानः रूपा वक्षणासु २७१
यजत्रः ६७,५६८
यज्ञः ७५५
योनिः उत्तानयोः चम्वोः १३१
रजसस्पतिः ४५३
रथः इन्द्रस्य-
अरिष्यन् ६७४
प्रातर्यावा ,,
रथयुक् ६८२
रराणः ६३८
राट् अरुणीः ६९
राजा १०८, २२२
रूपा मिनानः वक्षणासु २७१
रेतः नि दधाति अन्यस्मिन् यूथे २०८
रोरवीति अन्यासु ,,

वक्षणासु रूपा मिनानः २७१
वज्रः इन्द्रस्य-
पार्यः ७८
मन्दी ,,
वृत्रहा ,,
वज्रं हस्ते बिभर्ति ५४१
वज्रबाहुः ६४८
वज्री ४२९
वाजिवान् ८०
वन्द्यः ३२
वसुः ७४४
वसोः वसुत्वा ६३८
वसुत्वा वसोः ,,
वसूनि विन्दमानः २११
वाजः २६४
वाजप्रसहः (संबो०) ८१
विद्वान् ३६२
विन्दमानः वसूनि २११
विवर्तयन् अहा ३३७
विशां तुरः ६९
विश्वचर्षणिः १६०
विश्वधायाः २१२
विश्वैः वीर्यैः पत्यमानः १८४
विष्यन् अद्रिम् ३०९
वीरः २०९, २११, ३८३
वीर्यैः विश्वैः पत्यमानः १८४
वृजनः २९४
वृत्रखादः ७०१
वृत्रहा ६२, १४५, १८४, ५१९
वृत्राणि घ्नन् ५४२
वृद्धश्रवाः २७
वृषभः २०८
वृषा २२५, ५१९, ७२८
शंसः देवानाम् ५६८
शचीपतिः ६२
शतक्रतुः ४५
शश्वतां अवः ७६१
शूरः ४६७
संवर्तयन् अहा ३३७
सखा ऋभुभिः १८६
सचित् ६८२
सचेताः ,,
सञ्जितः धनानाम् २६४
सहसः सूनुः ३६२
सहसावान् ७४४
साधुः ४७६
सुकृतः ६६९
सुकतुः १६०, २९५
सुगोपाः २९५, ४०३
सुतपाः ७५१
सुतावतां प्रमतिः ७६१
सुत्रात्राः ४०३
सुनीथः ,,
सुमेधाः ७०१
सुरभिष्टमः नराम् १४६
सुशरणः २७१
सुशर्मा ४०३
सुहवः ६६९
सूनुः सहसः ३६२
सूरः ७३, ७९
स्तवानः ३८३
स्तुतः ७५१
स्वयशाः ४७६
स्वर्विद् २९४
स्वर्विरोचमानः २९५
स्ववान् ४०३
हरिवान् २६३, ४७६, ६४८
हरी इन्द्रस्य-
धायू ४६७
प्रिया ,,
वाजिना ७०३
सुरथा ४६७
हर्यश्वः ४७७, ८०७
हस्ते वज्रं बिभर्ति ५४१
हिरण्यबाहुः ४२९
हूयमानः २८१

इन्द्रदेवताया उपमासूची ।

उषसः न सूरः ७१ प्र रोचि अस्याः ।
रजिष्ठया रज्या पश्व आ गोः ७६२ सुतूर्षति पर्यग्रं दुवस्युः ।
मूषः न शिश्ना ४५ व्यदन्ति मा आध्यः ।
राधः न ६३७ रेतः ऋतमित् तुरण्यन् ।
शर्मसदः न वीराः २१२ पुरःसदः (मरुतः) ।
सपत्नीः इव ४५ पर्शवः अभितः तपन्ति ।
स्वर् न ६३९ त्रिपधस्थे देवाः निषेदुः ।
हितमित्रः न राजा २१२ उप क्षेति पृथिवीम् ।

इन्द्र-अग्नी । ५,४६,३; ३२२ । ७,३५, १; ४४९ । १०, ६५, २; ६९३ । १२८,९; ८०८
तन्वा समोकसा मिथः हिन्वाना वृत्रहत्येषु सत्पती ६९३
सत्पती वृत्रहत्येषु समोकसा तन्वा हिन्वाना मिथः ६९३
इन्द्रा-पर्वता १,१२२,३; ८४
इन्द्रा-पूषणा ७,३५,१; ४४९
इन्द्रा-मरुतः २,२९,३; १५३
इन्द्रा-वरुणा ७,३५,१; ४४९
रातहव्या ४४९
इन्द्र-वायू १,१३९,१; ९७ । १०,६५, ९; ७०० । १४१,४; ८१९
पुरीषिणा ७००
वृषभा ,,
सुहवा ८१९
इन्द्रा-विष्णू ४,५५,४; २३२। १०,६६, ४; ७१०
इन्द्रा-सोमा ७,३५,१; ४४९
इन्द्राणी २,३२,८; १२६६
इळा ३,५५,१४; २०५ । ५,४१,१९-२०; २५८-२५९ । १०, ३६, ५; ५९८
अभ्यूर्णाना २५८
उर्वशी ,,
ऊर्ध्वा तस्थौ २०५
गृणाना २५८
ऋषिं रेरिहाणा २०५

पद्या २०५
पुरुरूपा वपूंषि वस्ते ,,
बृहद्दिवा २५८
रेरिहाणा व्यविम् २०५
इळाः (भूमिस्थानाः देवताः सायनाचार्याः) १,१८६,१; १४०
उक्षाणः पञ्च १,१०५,१०; ४७
मही दिवः मध्ये तस्थुः ४७
उर्वशी ५,४१,१९-२०; २५८-२५९।
—[देवसंघः मरुद्गणः वा]
अभ्यूर्ण्वाना आयोः प्रभृथस्य
गृणाना बृहद्दिवा २५८
उलूकः १०,१६५,४; ८३१
उषाः १,९०,७; ३५। ३, २०, १,५; १६८-१६९। ५५,१; १९२। ४, ५५,९; २३७। ५,४५,१-२; ३०९-३१०। ४७,१; ३२८। ४८,२; ३३६। ५१,८; ३५३। ६,५२,४; ४१२। ७,३५,१०; ४५८। ३९,१; ४८१। ४२,५; ४९९। ८,२७,२; ५१३। ५८,२; ५५६। १०,३५,२-६; ५८१-५८५। १०,६४,३; ६७८। १०१, १; ७६३

उषादेवताया गुणबोधकपदानि।

अत्कं व्युतं वसाना ८३
अनमीवाः ५८५
अपरा ३३६
अपाची ,,
आ वियासन्ती ३२८
उच्छन्ती ५८३
उषा ,,
एका एव इदं सर्वं विभाति ५५६
गवां माता ३१०
जानती ,,
जायमाना ४१२
जूर्णिः ४८१
जोहुवाना पितृभ्यः आ ३२८
दुहितुः बोधयन्ती ,,
देवी १६९, ७६३
पितृभ्यः आ जोहुवाना ३२८
पूर्वाः १९२
प्रतीची ४८१
प्रथमा ५८३
प्रयुञ्जती ३२८
बोधयन्ती दुहितुः ,,
भद्राः ५८४
मघोनी २३७
मनीषा ३२८
मही ,,
माता ,,
युवतिः ,,
रेवती ५८३
वसाना व्युतं अत्कम् ८३
वाजिनीवती २३७
विभाति एका एव इदं सर्वम् ५५६
विभातीः ४५८
व्युतं अत्कं वसाना ८३
श्रिया सूर्यस्य सुदृशी ,,
सिञ्चते सूर्यस्य रश्मिभिः ५८४
सुदृशी सूर्यस्य श्रिया ८३
सूनृता २३७
सूर्यस्य रश्मिभिः सिञ्चते ५८४
उषासानक्ते १,१२२,२; ८३। १८६, ४; १४३। २,३१,५; १६२। ४,५५, ३; २३१। ५,४१,७; २४६। १०, ३६,१; ५९४

गुणबोधकपदानि।

अदब्धे २३१
अपीजुवा जगताम् १६२
जगतां अपीजुवा ,,
पुरुधा विदाने ८३
बृहती ५९४
मिथुदृशा १६२
यह्वी २४६
विदाने पुरुधा ८३
विदुषी विश्वम् २४६
विश्वं विदुषी ,,
सुपेशसा ५९४
सुभगे १६२

उपमासूची।

पत्नी इव ८३ पूर्वहूतिं वावृधध्यै।
ऋतवः १,१६४,१५; ११३। ५,४६, ८; ३२७

गुणबोधकपदानि।

ऋतुः जनीनाम् ३२७
ऋषयः ११३
जनीनां ऋतुः ३२७
देवजाः ११३
यमाः षट् ,,
षड् यमाः ,,
सार्कजानां सप्तथं एकजम् ,,
ऋत्विजः ७,४३,१;५०२। ८,५८,१; ५५५। १०,१०१,१-११; ७६३-७३।

गुणबोधकपदानि।

अनूचानः ५५५
कल्पयन्तः यज्ञं बहुधा ,,
कवयः ७६६
धीराः ,,
बहवः ७६३
बहुधा यज्ञं कल्पयन्तः ५५५
ब्राह्मणः ,,
यज्ञं बहुधा कल्पयन्तः ,,
युक्तः ,,
सखायः ७६३-७३
सचेतसः ५५५
सनीळाः ७६३
समनसः ,,

उपमासूची।

अन्तः योना इव ७७३ चरति द्विजानिः।
यवसा इव गत्वी ७७१ सा नः दुहीयत्।
हेत्वः न सप्तिः ५०१ यज्ञः प्र एतु।
ऋभवः ३,५४,१२,१८; १८१,१८७। ५,४२,१२; १७०। ४६,४; ३२३। ५१,१३; ३५८। ७,३५,११; ४६०। ३६,८; ४७१। ३७,१-२; ४७३-४७४। १०,९३,७; ७४२। ६५,१०; ७०१। ६६,१०; ७१६

गुणबोधकपदानि ।

अपसः २७०
ऊर्ध्वप्रावणः १८१
ऋभुक्षणः ४७३-४७४
दमूनसः २७०
दिवः धर्तारः ७१६
देवाः ३५८
धर्तारः दिवः ७१६
पुरन्धिः ४७१
पूषण्वन्तः १८१
यज्ञियासः १८७
रातिषाचः ४७१
वाजः ,,
वाजाः ४७३
विभ्वा ३२३
सुकृतः ४६०
सुशिप्राः ४७३
सुहस्ताः १७०,७०१, ७१६
स्वधावन्तः ४७४
स्वर्दृशः ,,
ऋभुक्षाः-क्षणः १,१८६,१०; १४९ । ५,४१,२; २४१ । ४२,५; २६४ । ६,५०,११; ३८९ । १०,६४,१०; ६८५ । १०,९२,११; ७३१ । ९३,७-८; ७४२-७४३

गुणबोधकपदानि ।

अमृतासः २६४
तुरासः ,,
दैव्यः ३८९
पुरन्धिः २६४
वाजः २६४, ३८९
विभ्वा ३८९
विश्ववेदसः ७४२
ऋषयः (पञ्च) ५,४४,१२; ३०५
नामानि- १ तर्यः ,,
२ बाहुवृक्तः ,,
३ यजतः ,,
४ श्रुतवित् ,,
५ सदापृणः ,,
पञ्च नामानि ५,४४,१०; ३०१
१ एवावदः, २ क्षत्रः, ३ मनसः, ४ यजतः, ५ सध्रिः च ।
त्रयाणां नामानि- ५,४४,११; ३०४
१ मायी, २ यजतः, ३ विश्ववारः च ।
ऋषयः (सप्त) १०,१०९,४; ७७८
तपसे ये निषेदुः ,,
पूर्वे ,,
सप्त ,,
ओषधीः-धयः १,९०,६; ३४ । ३,५४,११; १९० । ५५, २२; २१३ । ५७,३; २२५ । ५,४१,८,११; २४७, २५० । ४२,१६; २७४ । ६,२१,९; ३६१ । ४९, १४; ३७६ । ५२,६; ४१४ । ७,३४,२३,२५, ४४६, ४४८ । ३५,५,७; ४५३,४५५ । ८,२७,२; ५१३ । १०,६६,१०; ७१६

गुणबोधकपदानि ।

जामयः २२५
धेनवः ,,
नमस्यन्तीः ,,
पुत्रं वावशानाः ,,
प्रस्वः ४५५
माध्वीः ३४
वावशानाः पुत्रम् २२५
ककुदः ३,५४,१४; १८३
जनित्रीः ,,
युवतयः ,,
कण्वः (ऋषिः) १०,३१,११; ५७८
कृष्णः ,,
नृषदः पुत्रः ,,
पुत्रः नृषदः ,,
वाजी ,,
श्यावा ,,
कपोतः १०, १६५, १-५; ८२८-३२
इषितः ८२८-८२९
दूतः निर्ऋत्याः ८२८
निर्ऋत्याः दूतः ,,
शकुनः ८२९
शिवः ,,

कृशानुः १०,६४,८; ६८३
क्षेत्रस्य पतिः १०,६६,१३; ७१९
गयः १०,६४,१६; ६९१
ऋतज्ञाः ६९१
कविः ,,
चक्रानः द्रविणसः ,,
द्रविणसः चक्रानः ,,
द्रविणस्युः ,,
विप्रः ,,
तुर्वीरवान् ,,
गायत्रम् (साम) १,१६४,२५; १२३
गिरयः ५,४१,११; २५०
वृक्षकेशाः ,,
गुग्गुः १,३२,८; १२६६
गौः (ग.वः) १,१६४,१७,२६-२९,४०; ११५,१२४-२७, १३८ । ७,३५,१२; ४६० । १०,६५,६; ६९७ । १००, १०; ७६०

गुणबोधकपदानि ।

अघ्न्या १२५,१३८
अधिश्रिता ध्वसनौ १२७
अभीवृता येन (वत्सेन) ,,
अश्विभ्यां पयः दुहा १२५
आचरन्ती १३८
इच्छन्ती वत्सम् १२५
दुहा पयः अश्विभ्याम् ,,
दुहाना पयः ६९७
धेनुः १२४
ध्वसनौ अधिश्रिता १२७
धर्म सृक्काणं वावशाना १२६
पयः दुहा अश्विभ्याम् १२५
पयः दुहाना ६९७
प्रजुवाणा ,,
भगवती १३८
वत्सं इच्छन्ती १२५
(वत्सेन) येन अभीवृता १२७
वसुपत्नी १२५
वावशाना सृक्काणं घर्मम् १२६
विद्युत् भवन्ती १२७
व्रतनीः ६९७
सुदुघा १२४
सूयवसाद् १३८
सृक्काणं घर्मं अभि वावशाना १२६
हिङ्कृण्वती १२५
गोजाताः ७,३५,१४; ४६२
गोयाश्वा (तान्व-दिदिक्षा) १०,९३,१५; ७५०
गोरूपेण आदित्यरश्मिसमूहः गोरूपिणी आहुतिः वा । १,१६४, १७; ११५
कद्रीची ११५
वत्सं अवः परेण पदा बिभ्रती ,,
गो सवितारौ वा मेघवायू १,१६४,२६; १२४
'गो' पदानि–
धेनुः १२४
सुदुघा ,,
' सवितृ ' पदानि–
अभीद्धः १२४
गोधुक् ,,
घर्मः ,,
सुहस्तः ,,
मा, माः (देवपत्न्यः) पत्नीः च ५,४१,६; २४५ । ४२,१२; २७० । ४३,६; २८१ । ४६,१,७-८; ३११,३१६-३२७ । ५०,३; ३४७ । ६,४९,७; ३६९ । ५०,१३,१५; ३९०,३९२ । ७,३४,२०,२२-२३; ४४३, ४४५-४४६ । ३५,६; ४५४ । १०,६४,१०; ६८५ । ६६,३; ७०९ । ९२,१४; ७१४ । ८,८०,१०; १२०५

गुणबोधकपदानि ।

अधृष्टाः ३९२
अर्पा व्रते (वर्तमानाः) ३२६
अरमतिः २८१
इषुध्यवः २४५
उशतीः ३२६
ऋतज्ञा २८१
ऋतसापः २४५
मा २८१

मा: ३२१,३६९,३९२,४५४,७०९ ७३४
जनयः ३२७,३९०,६८५
दशस्यन्तीः २७०
देवपत्नीः ३२७
पत्नीनामानि- ३२७
अग्नायी ,,
अश्विनी ,,
इन्द्राणी ,, १२६६
रोदसी ,, ४४५
वरुणानी ,, ,,
देवी २८२
देवीः ३२६, १२०५
पत्नीः २४५, ४४३
पार्थिवासः ३२६
पुरन्धीः २४५
पत्नीः वृष्ण: २७०
बृहती २८२
मही ,,
राट् ३२७
रातहव्या २८२
रातिषाचः ४४५
वरूत्रीः ,,
वसवः ३९२
वस्वीः ३४७
विभ्वतष्टाः २७०
विश्वाः ७३४
वृष्णः पत्नीः २७०
शुभ्राः ,,
सुहवाः ३२६
स्तुतासः ३९२
हुतासः ,,
प्रावाणः १,८९,४; २२ । ७,३५,७; ४५५ । १०,३६,४; ५९७ । ६४,१५; ६९० । ९२,१५; ७३५ । १००,८-९; ७५८-७५९
अध्वर्यवः ७५८
ऊर्ध्वः-र्ध्वाः ७३५, ७५९
मधुषुद् ६९०, ७५८
मयोभुवः २२
सोमसुतः ,,
घर्मः ५,४३,७; २८३ = घर्म पात्रम् ।
१०,१८१,३; ८३६ । = हविः ।

उपमासूची ।

पितुः न पुत्रः उपसि प्रेष्ठः २८३ घर्मः अग्निं आ असादि ।
वपावन्तं न २८३ अग्निना तपन्तः अक्षन्ति ।
घर्मा १०,११४,१; ७८२ = अग्निः आदित्यश्च ।
चक्रम् १०,१६४,२,११; १००,१०९
अग्निः १०९
अजरम् १००
अनर्वम् ,,
जराय न १०९
त्रिनाभि १००
द्वादशारम् १०९
विश्वा भुवना यत्र आधि तस्थुः १००
सप्त शतानि विंशतिश्च पुत्राः मिथुनासः अत्र तस्थुः १०९
चन्द्रमाः १,१०५,१; ३८। १०,६४,३; ६७८ । ९९,१४; ७३४
अक्तोः युवा ७३४
युवा अक्तोः ,,
सुपर्णः ३८
जगत् (साम) १,१६४,२५; १२३
जनाः पञ्च ६,५१,११; ४०३ । १०,५३,४-५; १२१०-११
ऊर्जादः १२१०
गोजाताः १२११
यज्ञियासः १२१०-१२११
सुगोपाः ४०३
सुनीथाः ,,
सुशर्माणः ,,
स्ववसः ,,
जनयः (जनिः) १०,६४,१०; ६८५
जिह्वा १०,१३७,७; ८१५
वाचः पुरोगवी ,,
जीवात्म-परमात्मानौ १,१६४,२०; ११८

द्वा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते ११८
सयुजा ,,
सुपर्णा ,,
जीवात्मा-स्वादु पिप्पलं अत्ति । ११८
परमात्मा-अनश्नन् अभि चाकशीति । ,,
तत्त्वविद् ११४
कविः ,,
तनयित्नुः १०,६६,११; ७१७
तन्यतुः १०,६५,१३; ७०४
पावीरवी ,,
तार्क्ष्यः १,८९,६; २४
अरिष्टनेमिः ,,
तिष्यः १०,६४,८; ६८३
त्वष्टाः १,१८६,६; १४५ । २,३१,४; १६१ । ३,५४,१२; १८१ । ५५,१९; २१० । ५,४१,८; २४७ । ४६,४; ३२३ । ६,४९,९; ३७१ । ५०,१३; ३९० । ५२,११; ४१९ । ७,३४,२०-२२; ४४३-४४५ । ३५,६; ४५४ । ८,२८,३; ५४१ । १०,६४,१०; ६८५ । ६६,३; ७०९ । ९१,११; ७३१ । १८४,१; ८३७

त्वष्टादेवताया गुणबोधकपदानि ।

अरमतिः ४४४
ऋतावान् १८१
ऋभ्वा ३७१
देवः १८१, ११०, ३७१, ७३१
देवेषु अन्तः निधृविः ५४१
निधृविः देवेषु अन्तः ,,
पस्त्यानां यजतः ३७१
पिता ६८५
पोष्यावान् २४७
प्रजाः विविधाः जजान ५१०
,, ,, पुपोष ,,
प्रथमभाक् ३७१
बिभ्रत् आयसीं वाशीं हस्ते ५४३
भुवनस्य सक्षणिः १६१
यजतः पस्त्यानाम् ३७१
यशः ,,
वयोधाः ३७१
वसूयुः ४४४
वाशीं हस्ते बिभ्रत् ५४३
विश्वरूपः २१०
सक्षणिः भुवनस्य १६१
सविता २१०
सुकृत् १८१
सुगभस्तिः ३७१
सुदत्रः ४४५
सुपाणिः १८१, ३७१, ४४३
सुशरणः ४४५
सुहवः ३७१
स्ववान् १८१
वक्षः १,८९,३; २१
अस्रिधः ,,
दधिक्राः ३,२०,१,५; १६८-१६९ । ७,४४,१; ५०६ । १०,१०१,१; ७६३
दिव्याः ७,३५,११,१४; ४५९,४६१
दिशः (वा मेघाः) ३,५५,१६; २०७
अप्रदुग्धाः ,,
अशिश्वीः ,,
धेनवः ,,
नव्यानव्याः ,,
भवन्तीः ,,
युवतयः ,,
शशयाः ,,
सबर्दुघाः ,,
दीधितिः १,१८६,११; १५०
अपिप्राणी ,,
यजत्रा ,,
वसूयुः ,,
सदनी ,,
देवः १,१०६,७; ६३
अप्रयुच्छन् ,,
देवगण-संघः वा १,१२२,८; ८९ । ५,४१,२०; २५९ । ६,५१,१२; ४०४ । ७,४२,२; ४९६ । १०,५७,५; ६२५

गुणबोधकपदानि ।

जनः ८९
जनः दैव्यः ६२५
जनिमा देवानाम् ४९६
जन्म देवानाम् ४०४
देवानां जनिमा ४९६
देवानां जन्म ४०४
दैव्यः जनः ६२५
पञ्चेभ्यः वाजिनीवान् ८९
महिमघः ,,
मह्यं सूरिः ,,
वाजिनीवान् पञ्चेभ्यः ,,
सूरिः अश्वावतः रथिनः मह्यम् ,,
देवाः ['विश्वे देवाः' द्रष्टव्यम्]
देवानां देवाः ७,३५,१५; ४६३
अमृताः ,,
ऋतज्ञाः ,,
मनोः यजत्राः ,,
यज्ञियानां देवानां यज्ञियाः ,,
देवो देवः ५,४१,१६; २७४ । ४३,१५; २९१ । ८,२७,११; ५२४
सुहवः २७४, २९१
देवपत्नीः ['पत्नीः' द्रष्टव्यम्]
देवी ५,४१,१८; २५७ । १०,१४१,२; ८१७
द्रवन्ती २५७
मृळयन्ती ,,
सुदानुः ,,
देवीः (तिस्रः) ३,५६,५; २१८
अप्याः ,,
ऋतावरीः ,,
योषणाः ,,
विदथे दिवः स्त्रिः आ पत्यमानाः ,,
देवीः (षट्) १०,१२८,५; ८०४
देहात्मानौ (देहात्म-जीवात्मानौ-सायनाचार्यौ ।) १,१६४,३८; १३६
देहः- आत्मा-
अन्यं नि चिक्युः अन्यं न नि चिक्युः
मर्त्यः अमर्त्यः, मर्त्येन सयोनिः
स्वधा स्वधया गृभीतः
देहात्मानौ-वियन्ता, विषूचीना, शश्वन्ता, १३६
द्यौः १,८९,४; २२ । ९०,७; ३५ । १०५,१९; ५६ । १०६,७; ६३ । १०७,३; ६६ । १६४,९,३३; १०७, १३१ । ३,५४,२-३,९,१९; १७१-१७२,१७८, १८८ । ५५, १२-१३; २०३-२०४ । ५,४१,११; २५० । ४३,२; २७८ । ४५,२-३; ३१०-११ । ४६,३; ३२२ । ६,५०,१३; ३९० । ५१,५; ३९७ । ५२,२; ४१० । ७, ३४,२३; ४४६ । ४३,१; ५०१ । १०,३६,२; ५९५ । ५६,३; ६१६ । ६३,१०; ६७०

द्यौर्देवताया गुणबोधकपदानि ।

अनेहाः ६७०
अन्यस्याः वत्सं रिहती १०४
उरु १७८
ऋतावरी ५९५
जनिता १३१, १७८
दक्षिणायाः धुरि युक्ता १०७
दुहिता १८८
धेनुः २०४
पन्थाः व्युतः १७८
पिता २२,३५,१३१,१७८,२७८,३९७
प्रचेतसः ५९५
बन्धुः १३१
महः १७१, १७८
माता १०७
युक्ता दक्षिणायाः धुरि ,,
रिहती अन्यस्याः वत्सम् २०४
व्युतः पन्थाः १७८
सुमिता ३१०

उपमासूची ।

स्थूणा इव ३१० द्यौः सुमिता दृंहत ।
द्यावापृथिवी (रोदसी) १,१०५,१-१८; ३८-५५ । १०६,३; ५९ । २,३१,४; १६१ । ३,५४,३-४,६-१०; १७२-७१,१७५-७९ । ५५,१२,२०, २०३, २११ । ५६, १,७; २१४,२२० । ३,८,८; २२२ । ५७,४; २२६ । ४, ५५,१,३,६; २२९,२३१,२३४ । ५, ४३,२, २७८ । ४९,५; ३४४ । ५१, ११; ३५६ । ६,५०,३; ३८० । ५२, १४; ४२२ । ७,३४,२३-२४; ४४६-४४७ । ७,३५,३,५; ४५१,४५३ । ३९,७; ४८७ । ४०,२; ४८९ । ४४,१; ५०६ । १०,३५,१-३; ५८०-५८२ । ३६,१; ५९४ । ६३,९; ६६९ । ६४,१४; ६८९ । ६५,८; ६९९ । ६६,४,६; ७१०, ७१२ । ९२, ११-१२; ७३१-७३२ । ९३,१,१०; ७३६,७४५ । १,१३६,६; १२६४

द्यावापृथिवी (रोदसी) देवताया गुणबोधकपदानि ।

अदितिः २२९
अद्रुहा २१४
अमृधे २७८
उभे १११,२३१,४२२,४४६,६८९
उर्वी २२०, ४४७, ७३६
ऋतस्य योना १७५, ६९९
ऋतावरी १७३, ७१२
ऋतावृधा ५९
क्षयतः समोकसा ६९९
चम्वा २११
जागरूके १७६
दूरेअन्ते ,,
देवपुत्रे ५९
देवान् बिभ्रती १७७
देवी ५९
द्यावाक्षामा २२२, ५९४
द्यावाभूमी २२९
धिषणे ३८०
धेनू २०३
परिक्षिता ६९९
पितरा ,,
पिता माता २७८

पूर्वजावरी ६९९
बिभ्रती देवान् १७७
बृहती ४५१
भवन्ती १७६
भूरिरेतसा ७३१
मदन्ती १७५
मधुवचा २७८
मही २११,५८०,५८२,६८९,७३६
मातरा ५८२,६८९
मिथुनानि नाम १७६
यशसौ २७८
युवती १७६
योना ऋतस्य १७५, ६९९
रोदसी ३८-५५,२१४,२२०,२२६, २८४,३८०,४४६,७३६,१२६४
वरुणाय सत्रते ६९९
विदृते १७५
वियुते १७६
वृषणा ७२२
शमीनहुषी ७३२
संविदाने १७५
सबर्दुघे २०३
समान्या १७६
समीची २०३, २११
समोकसा क्षयतः ६९९
सत्रते वरुणाय ,,
सुमेके २२६
सुषुम्ने ३८०
सुहस्ता २७८
स्वसारा १७६

द्यावापृथिवी (रोदसी) देवताया उपमासूची ।

नारी यह्वी न ७३६ रोदसी सदं नः ।
यथा वेः १७५ नाना चक्राते सदनम् ।
समुद्रं न सम्वरणे सनिष्यवः २३४ स्तुवीत देवी अप्येभिः इष्टेः ।

द्यु-पृथिवी-अन्तरिक्षम् १०,११४,१; ७८३
तिस्रः निर्ऋतीः ७८३
धर्ता ७,३५,३; ४५१
धर्मः १०,५६,३; ६१६
धाता ३,५४,१३; १८२ । ७,३५,३; ४५१ । १०,१६७,३; ८३३। १८१, १-३; ८३४-३६ । १८४,१; ८३७
धिषणा ३,५६,६; २१९ । ५,४१,८; २४७ । १०,३५,७; ७८६
जनित्री रायः ५८६
धन्या २४७
रायः जनित्री ५८६
धीः ७,३४,९; ४३४
देवी ,,
धियः ७,३५,११; ४५९ । १०,६५, १३-१४; ७०४ ७०५
धेनुः ३,५७,१; २२३
अगोपाः ,,
चरन्ती ,,
पनितारः अस्याः इन्द्रः अग्निश्च ,,
प्रयुता ,,
मनीषा ,,
धेनवः ५,४३,१; २७७ । ७,३६,३; ४६६ । ४२,१; ४९५
अमर्धन्तीः २७७
उदप्रुतः ४९५
तूर्ण्यर्थाः २७७
पयसा मध्वा (युक्ताः) ,,
बृहतीः ,,
मध्वा पयसा (युक्ताः) ,,
मयोभुवः ,,
सप्त ,,
सूदाः ४६६
नक्तम् १,९०,७; ३५ । ७,४२,५; ४९९ । ८,२७,२; ५१३
नक्षत्राणि ३,५४,१९; १८८
नद्यः ५,४१,१४; २५३ । ४२,१२; २६३ । ४३,१; २७७ । ४५,२; ३१० । ४६,६; ३२५ । ७,३६,६; ४६९ । १०,६४,८; ६८३
अभिषाताः २५३
अर्णाः ,,
ऋतावरीः अर्णाः ३१०
गिरः २५३
चन्द्राग्राः ,,
त्रिःसप्त ६८३
द्यावः २५३
धन्वर्णसः ३१०
पत्नीः वृणः २७०
पयसा स्वेन पीप्यानाः ४६९
पीप्यानाः स्वेन पयसा ,,
यशसः ,,
वावशानाः ,,
विभ्वतष्टाः २६३
वृष्णः पत्नीः २७०
सप्ताः ६८३
सुदीतयः ३२५
सुदुघाः ४६९
सुधाराः ,,
नमः ६,५१,८-९; ४००-४०१
नरः ('नृ' बहुवचनम्)५,५०,३; ३४७
नराशंसः ७,३५,२; ४५० । १०,६४,३; ६७८ । ९१,११; ७३१
चतुरङ्गः ७३१
शंसः ४५०
नाभानेदिष्ठः (मन्त्रद्रष्टा) १०,६१,१९; ६४५
निशाः = व्रजिनीः ५,४५,१; ३०९
निर्ऋतिः ५,४१,१६; २५५। १०,३६,२; ५९५ । ११४,२; ७८३
तिस्रः ७८३
दुर्विदत्रा ५९५
नौः (देवी) १०,६३,१०; ६७०
अनागाः ६७०
अस्रवन्ती ,,
देवी ,,
स्वरित्रा ,,
पतत्रः सत्यस्य ७,३५,११; ४६०
पत्नीः ['देवपत्नीः (आः)' द्रष्टव्यम्]
अभिषाताः २५३
अर्णाः ,,
ऋतावरीः अर्णाः ३१०
गिरः २५३
चन्द्राग्राः ,,
त्रिःसप्त ६८३
द्यावः २५३
धन्वर्णसः ३१०
पत्नीः वृणः २७०
पयसा स्वेन पीप्यानाः ४६९
पीप्यानाः स्वेन पयसा ,,
यशसः ,,
वावशानाः ,,
विभ्वतष्टाः २६३
वृष्णः पत्नीः २७०
सप्ताः ६८३
सुदीतयः ३२५
सुदुघाः ४६९
सुधाराः ,,
नमः ६,५१,८-९; ४००-४०१
नरः ('नृ' बहुवचनम्)५,५०,३; ३४७
नराशंसः ७,३५,२; ४५० । १०,६४,३; ६७८ । ९१,११; ७३१
चतुरङ्गः ७३१
शंसः ४५०
नाभानेदिष्ठः (मन्त्रद्रष्टा) १०,६१,१९; ६४५
निशाः = व्रजिनीः ५,४५,१; ३०९
निर्ऋतिः ५,४१,१६; २५५। १०,३६,२; ५९५ । ११४,२; ७८३
तिस्रः ७८३
दुर्विदत्रा ५९५
नौः (देवी) १०,६३,१०; ६७०
अनागाः ६७०
अस्रवन्ती ,,
देवी ,,
स्वरित्रा ,,
पतत्रः सत्यस्य ७,३५,११; ४६०
पत्नीः ['देवपत्नीः (आः)' द्रष्टव्यम्]

पन्थाः ३,५४,११; १९० । ५,५१, १४-१५; ३५९-३६० । ६,५१,१६; ४०८
अनेहाः ४०८
पथ्या ३५९
पितुमान् १९०
रेवती ३५९
सुगः १९०
स्वस्तिगा ४०८

उपमासूची ।

सूर्याचन्द्रमसौ इव ३६० पन्थां स्वरित अनु चरेम ।
परमात्मा (आदित्यः वा) १,१६४,११-१२,३१; ११९-१२०,१२९
अनिपद्यमानः १२९
आचरन् पथिभिः ,,
इनः ११९
गोपाः १२९
गोपाः विश्वस्य भुवनस्य ११९
धीरः ,,
पतिभिः आचरन् १२९
पिता १२०
भुवनस्य विश्वस्य गोपाः ११९
मध्वदः १२०
वसानः विषूचीः १२९
वसानः सध्रीचीः ,,
विषूचीः वसानः ,,
सध्रीचीः वसानः ,,
सुपर्णाः ११९-१२०
परमेश्वरस्य अविषयत्वम् १, १६४, ४७, १०२-१०५
पर्जन्यः १,१६४,३३; १३१ । ५,४२, १३-१४; २७१-२७२ । ६,५२,६; ४१४ । ७,३५,१०; ४५८ । ३६,३, ४६६ । ४२,१; ४९५ । १०,६६,६; ७१२ । ९५,५; ७२५
अद्रिदुघान् २७२
आहनाः २७१
इळस्पती २७२
उक्षमाणः रोदसी विष्णुता २७२
उदनिमान् ,,
क्रन्दनुः ४९५
गर्भः दुहितुः १३१
जठरे रोरुवत् ७२५
जायमानः दिवः सदने ४६६
दिवः सदने जायमानः ,,
दुहितुः गर्भः १३१
पिता १३१ (उत्तरार्धः)
महे (चतु०) २७१
मिनानः रूपा वक्षणासु ,,
रुवन् २७२
रूपा मिनानः वक्षणासु २७१
रोदसी उक्षमाणः विष्णुता २७२
रोरुवत् जठरे ७२५
वक्षणासु रूपा मिनानः २७१
विष्णुता रोदसी उक्षमाणः २७२
वृषभः ४६६
सुशरणः २७१
स्तनयन् २७२
पर्जन्यवाता ६,४९,६; ३६८। ५०,१२; ३८९। १०,६५,९; ७००। ६६,१०; ७१६
पुरीषिणा ७००
वृषभा ३६८, ७००
पर्वतः-तासः ३, ५४, २०; १८९ । ५६,१; २१४ । ४,५५,५; २३३ । ५,४१,९; २४८ । ४५,३; ३११ । ४६,३,६; ३२२, ३२५ । ६,२१,९; ३६१ । ४९,१४; ३७६ । ५२,१,४; ४०९,४१२ । ७,३४,२१; ४४६ । ३५, ८; ४५६ । ३७,८; ४८० (पर्वतः)। ८,५४,४; ५५४। १०,३५,२; ५८१। ३६,१; ५९४ । ६४,८; ६८३

गुणबोधकपदानि ।

इळया मदन्तः २०
तस्थिवांसः २१४
ध्रुवक्षेमासः २०
ध्रुवयः ४५६
ध्रुवासः ४१२
मदन्तः इळया २०
वसवो न वीराः २४८
सुम्बः ४०९
सुशस्तयः ३२५

उपमासूची ।

वसवः न वीराः २४८ पर्वताः स्वैतवः सन्तु ।
पशुः ८,२७,२; ५१३
पार्थिवाः ७,३५,११,१४; ४५९,४६२
पितरः १,१०९,३; ५९ । ३,५२,२; १९३ । ६,५२,४; ४१२ । ७,३५,१२; ४६० । १०,५६,४,६; ६१७,६१९ । ५७,३,५; ६२३,६२५ । १०, १४, ७-९; १२६७-१२६९
पदज्ञाः १९३
पूर्वे ,,
सुप्रवाचनाः ५९
पुरन्धिः ७,३५,२; ४५० । ३९,४; ४८४। १०,६५,१३; ७०४
पूषा १, १४, ३-४; ६-७ । ८९, ५-६; २३-२४ । ९०, ४-५; ३१-३३ । १०६, ४; ६० । १२२, ५; ८६ । १८६,१०; १४९ । २,३१,४; १६१। ३, ५७, २; २२४ । ५, ४१, ४; २४३। ४३,९; २८५ । ४६,२-३,५; ३२१-३२२,३२४ । ४९,३; ३४२ । ५१,११; ३५६ । ६,२१,९; ३६१। ४९,८; ३७० । ५०,५; ३८२ । ५१, ११, ४०३ । ७,३५,९; ४५७ । ३६, ८; ४७१ । ३९,२; ४८२ । ४०,६; ४९३ । ४१,१; ४९४ । ४४,१; ५०६ । ८,२७,८; ५१९ । २९,६; ५४४ । ५४,४; ५५४ । १०,६४, ३,७, ६७८,६८२ । ६५,१; ६९२ । ६६,५; ७११ । ९२,१३; ७३३। ९८,१; १२२२
पूषादेवताया गुणबोधकपदानि।
अदब्धः १३
अध्यर्धयज्वा ३८२

अनर्वणः ३५६
अर्कः ३७०
असुरः ३५६
आघृणिः ४९३
कण्वहोता २४३
क्षयद्वीरः ६०
चोदिता मतीनाम् २८५
चोदिता वाजरत्य "
तव्यसः (षष्ठी) "
तुरः "
त्रितः २४३
दिवः "
दिव्यः "
द्रविणोदाः २८५
निधीनां वेदः ५४४
नियुत्व न् ४८२
पथः पोषाय ५४४
पथस्पथः परिपतिः ३७०
परिपतिः पथस्पथः "
पायुः २३
पीपय पथः ५४४
पुरन्धिः १६१
मतीनां चोदिता २८५
रक्षिता वेदसां वृधे २३
वन्द्यः ३२
वाजस्य चोदिता २८५
विदथ्यः ४७१
विश्वदेव्यः ७३३
विश्वभोजः २४३
विश्ववेदाः २४
वीरः ४७१
वृधे वेदसां रक्षिता २३
वेदसां वृधे रक्षिता "
सक्षणः २४३
सचित् ६८२
सचेताः "
सजोषाः २४३

पूषादेवताया उपमासूची ।

यथा वेदसां असत् वृधे रक्षिता २३ पूषा स्वस्तये पायुः ।

पृथिवी १,८९,४; २२। ९०,७; ३५। १०५,१९; ५६। १०६,७; ६३। १०७,३; ६६। १६४,८-९, ३३; १०६-१०७,१३१। ३,५४,२-४,१९; १७१-१७३,१८८। ५५, ११-१३, २२; २०३-२०४,२१३। ३,८,८; २२१। ५,४१,१६; २७४। ४३,२, १५; २७८,२९१। ४६,३; ३२२। ६, ५०, १३-१४; ३९०-३९१। ५१,५,११; ३९७,४०३। ७,३४, १३; ४४६। ३५,३; ४५१। ३६,१; ४६४। ४३,१; ५०१। ८,२७,२; ५१३। ५४,४; ५५४। १०,३६,२; ५९५। ५६,२; ६१५। ६३,१०; ६७०। १०,५३,५; ११११

गुणबोधकपदानि ।

अधुक् ३९७
अपिन्वत ऋतस्य पयसा २०४
इळा "
उरूची ४५१
उर्वी ४६४
ऋतस्य पयसा अपिन्वत २०४
ऋतावरी ५९५
गर्भरसा निविद्धा १०६
गौः १०७
तनूः तन्वं नयन्ती ६१५
दक्षिणा १०७
दुहिता १३१
नयन्ती तन्वं तनूः ६१५
निविद्धा गर्भरसा १०६
पार्थिवं रजः ३५
प्रचेतसः ५९५
बन्धुः १३१
बीभत्सुः १०६
मधुमत् ३५
मही १३१
माता २२,१०६-१०७,१३१,२०३, २७४,२९१ ३९७
रजः पार्थिवम् ३५
विश्वरूप्यम् १०७
सुगोपाः ४०३
सुत्रात्राः "
सुत्रामा ६७०
सुशर्मा ४०३
स्व (सु+अ) वस् "
पृश्निः ७,३५,१३; ४६१
देवगोपाः "
प्रजापतिः १०,१८४,१; ८३७
प्रदिशः ७,३५,८; ४५६
चतस्रः "
प्रमतिः (अग्नेः) ३,५७,६; २१८
असश्चन्ती "
चित्रा "
विश्वजन्या "
सुमतिः "

उपमासूची ।

पर्वतस्य इव धारा २२८ असश्चन्ती ।

प्रवाचनम् (देवानाम्) १०,३५,८; ५८७
ऋतस्य प्रवाचनम् "
प्रश्नाः १०,११४,९; ७९०
प्रश्न-प्रतिवचनानि १, १६४, १४-१५; १३२-१३३
बर्हिः ७,३९,२; ४८२
बृहत् १०,१८१,२; ८३५
बृहदुक्थः १०,५६,७; ६२०

उपमासूची ।

नावा न क्षोदः ६२० प्रदिशः पृथिव्याः स्वस्तिभिः अति दुर्गाणि विश्वा ।

बृहस्पतिः १,१४,३-४; ६-७। ८९,६; २४। ९०,९; ३७। १०५,१७; ५४। १०६,५; ६१। ३,१०,५; १६९। ५,४१,७-९; २६६-२६८। ४३,१२; २८८। ४६,५; ३२४। ५१,१२ ३५७। १०,३५,११; ५९०। ३६, ५; ५९८। ६४,४,१५; ६७९,६९०

९१,१०; ७३०। १००,५; ७५५। १०९,५; ७७९। ११८,७; ८०६। १४१,२-५; ८१७-८२०। १६७,३; ८३३। ९८, १-३, ७; १२२१-१२२४,१२२८

गुणबोधकपदानि।

अरमतिः ६९०
अरुषः २८८
दीदिवान् ,,
धनानां सनिता २६६
नीलपृष्ठः २८८
पुरुवसुः २६६
प्रथमः ,,
बृहन् २८८
रत्नधेयः २६६
वेधाः २८८
शम् ३७
शम्भविष्ठः २६६
सनिता धनानाम् ,,
सर्वगणः ३५७
सादयोनिः २८८
हिरण्यवर्णः ,,

उपमासूची।

जुष्टं न देवा ७७९ जाया अन्वविन्दत् बृहस्पतिः।
दूतः आ १२२३ देवः अजरः।
ब्रह्म ७,३५,७; ४५५। ३६,१; ४६४। ८,५८,२; ५५६। १०,६१,७; ६३३। १०,११४,८; ७८९
एकं वा इदं सर्वं वि बभूव ५५६
ब्रह्मा ८,५८,३; ५५७। १०,५२,२; ६०९। १४७,३; ८१८
अतिरिक्तः ५५७
केतुमान् ,,
ज्योतिष्मान् ,,
त्रिचक्रः ,,
भूरिवारः ,,
रथः ,,
समिद् ६०९
सुचः ५५७
सुषद् ,,
ब्रह्मजाया १०,१०९,३-४; ७७७-७८
उपनीता ब्राह्मणस्य ,,
जाया ,,
भीमा ,,
ब्रह्मणस्पतिः ५,४२,९; २६८। ४६,३; ३२२। ७,४१,१; ४९४। ४६,१; ५०६। ८,२७,१; ५१२। १०,६५,१; ६९२
भगः १, १४, ३-४; ६-७। ८९,३; २१। ९०,४; ३२। २, ३१, ४; १६१। ३,१०,५; १६९। ५४,२१; १९०। ५६,६; २१९। ४,५५,५, १०; २३३,२३८। ५,४१,४,११; २४३, २५०। ४२,१,५; २६०, २६४। ४६,२-३,६; ३२१-३२२, ३२५। ४८,५; ३३९। ४९,१,३; ३४०, ३४२। ५१, ११; ३५६। ६, ४९, १४; ३७६। ५०, १, १३; ३७८,३९०। ५१, ३, ११; ३९५, ४०३। ७,३५,२; ४५०। ३६,८; ४७१। ३९,४; ४८४। ४०, २; ४८९। ४१,१; ४९४। ४४,१; ५०६। १०,३१,४; ५७१। ३५, १०-११; ५८९-५९०। ६१, ९; ६६९। ६४,१०; ६८५। ६६,१०; ७१६। ९३,४,७; ७३९, ७४२। १४१, २; ८१७। १, १३६, ६; १२६४

भगो देवताया गुणबोधकपदानि।

अविता धियः ४७१
आशुश्वतमः २४३
कण्वहोता ,,
चिकित्वान् २५०
त्राता २१९, २३८
त्रितः २४३
दिवः २४३
दिव्यः ,,
देवः २३३, ३४०
धियः अविता ४७१
पुरन्धिः ३७६
बृहद्दिवा १६१
राधः ६८५
रत्नं विभजन् आयोः ३४०
रथस्पतिः ६८५, ७४२
रातिः ७१६
वन्द्यः ३१
विभक्ता ३२५
विभजन् रत्नं आयोः ३४०
विश्वभोजाः २४३
शंसः ६८५
सक्षणः २४३
सजोषाः ,,
भवित्रम् ७,३५,९; ४५७
भूतानि १०,१३७,५; ८१३
विश्वा ,,
भूमिः ७,३६,८; ४७१
अरमतिः ,,
मही ,,
भृगवः १०,९२,१०; ७३०
मदः ५,४४,११; ३०४
अदितिः ,,
कक्ष्यः ,,
श्येनः ,,
मनः (मन आवर्तनम्।) १०,५७,३-५; ६२३-६२५
मनीषा ७,३४,१; ४२६
देवी ,,
शुक्रा ,,
मनीषिणः १०,६४,१५; ६९०
मनुष्याः १०,१०९,६; ७८०
मन्म १०,३६,५; ५९८
सुप्रकेतम् ,,
मरुतः १,१४,३-४; ६-७। २३,१०-१२, १६-१८। ८९, ३, ७; २१, २५।

९०,४-५; ३१-३३। १०६,१; ५७। १०७,२, ६५। १२१,१; ८२। १८६, ८-९; १४७-१४८। २,३१,३; १६०। ४१, १५; १६७। ३,५४,१३,२०; १८२,१८९। ५५,२१; २१२। ४, ५५,५; २३३। ५,२६,९; २३९। ४१, २, ५, ११, १३-१४, १६, २०; २४१, २४४, २५०,२५२-५३,२५५, २५९। ४२,१०,१५; २६९,२७३। ४३,१०; २८६। ४५,४; ३१२। ४६, २-३, ५; ३११-३१२, ३२४। ६,२१,९; ३६१। ४९,६,११-१२, ३६८,३७३-३७४। ५०,४-५,११; ३८१-३८२, ३८८। ५१, २, ११; ४१०, ४१९। ७, ३४, १८-१९, २४-२५; ४४१-४४२,४४७-४४८। ३५,९; ४५७। ३६,७,९; ४७०,४७२। ३९,३,५; ४८३,४८५। ४०,३; ४९०। ४२,५; ४९९। ८,२५,१०-११; ५०९-५१०। २७,१,३,५,८,१२, १५-१६; ५१२,५१४,५१६,५१९, ५२३,५२६-५२७। १८,५; ५३८। ५४,१; ५५३। ८३,७; ५६५। १०,३५,१३; ५९२। ३६,४,७; ५९७,६००। ५२,२; ६०९। ६३, ९,१४; ६६९,६७४। ६४,११-१३; ६८६-८८। ६५, १; ६९२। ६६, २-४; ७०८-७१०। ९२,५-६,९,११; ७२५-७२६,७२९,७३१। ९३,४,९; ७३९, ७४४। १२६,५; ७९६। १२८,२; ८०१। १३७,५; ८१३। १५७, ३; ८२५। १, १३६, ७, १२६५

'मरुतः' देवतायाः गुणबोधकपदानि।

अग्निजिह्वाः २५
अद्रुहः ५२६
अधृष्टाः ३८१
अयासः १८२, २७३
अरिष्यन्तः ५१०
असुरस्य नीळयः ७२६
अक्षिधः २१
इत्था वृधन्तः ३७३
उग्राः १६
ऋतजाताः १८२
ऋष्टयः सप्त तेषाम् ५३८
ऋष्टिमन्तः १८२
ऋष्वः ६००
एवयावः ३३, ७२९
एवाः २५२
कवयः ३६८, ३७३
क्काणाः ७२६
गणः मरुताम् ८१३
गणः मारुतः ६००
गोजाताः ३८८
जगतः स्थाता ३६८
जाताः विद्युतः अतः परि १८
तवसः ३७४
तुरासः १८२, ३७४
तुराणां एवाः २४४
दधानाः वार्यम् २५२
दस्माः ,,
दिवः मर्याः १८२
दिवः श्येनासः ७२६
दिविक्षयः ३२४
द्युम्नानि सप्त तेषाम् ५३८
नक्षन्तः ३७३
नरः १७, ३७३
नीळयः असुरस्य ७२६
परि जाताः विद्युतः अतः १८
पावकः ६००
पुरःसदः ११२
पूषणः ७३९
पृश्निमातरः १६, २७
पृषदश्वाः-श्वासः २५,१४७,२७३,४९०
मनवः २५
मन्दसानाः ४७०
मरुतां गणः ८१३
मरुद्गणः १६७, ७०८
मर्याः दिवः १८२
महान्तः २५०, २५२
महासेनासः ४४२
माघोनः ७०८
मारुतः गणः ६००
मारुतं शर्धः ५७, २७३, ३२१
मित्रयुजः ८, १४७
यजतम् ३२४
यक्षियासः १८१, ३७३
यथिन्-यी ७२५
युवानः ३७३
युवन्यवः २७३
रथाः (रथवन्तः) ८,१४७
रायस्पोषः ६००
रिशादसः ८,१४७
रुद्रः ७२५
रुद्राः ६८६,७०९,७२६
रुद्रस्य सूनवः २७३,३८१
रुद्रियः २५०
वन्द्यासः ३२
वयश्चन २५२
वसवः ३८१
वह्नयः ७४४
वाजिनः ४७०
वार्यं दधानाः २५२
विदथेषु जग्मयः २५
विद्युद्रथाः १८२
विश्वे ४४७
विश्वकृष्टयः ७२६
विश्वभानवः ५१४
वीरः ३७४
वृजनः ७०८
वृद्धशवसः ५०९
वृद्धसेनाः १४७
शम्भू ६००
शर्धः मारुतम् ५७, २७३, ३२१
शर्धसदः ११२
शुभंयावानः २५
शुभ्राः ४८३

श्येनासः दिवः ७२६
श्रियः सप्त तेषाम् ५३८
सत्यश्रुतः ३६८
सप्त ५३८
सप्तः ऋष्टयः शुभ्राणि श्रियः तेषाम् "
समनसः १४७
सहासः ४४७
सुदानवः २५५, ५१०
सुप्रणीतयः ५५३
सुभ्वः २५२
सुमखाः २५३
सुहवः ६००
सूनवः रुद्रस्य २७१, ३८१
सूरचक्षसः २५
स्थाता जगतः ३६८
स्वर्काः ४५७
हितासः ३८१
हुतासः "

उपमासूची ।

इषुध्या इव ८२ दिवः अस्तोषि असुरस्य वीरैः ।
जयतां इव १७ तन्यतुः मरुतां एति ।
पितुमान् इव क्षयः ६८६ रण्वः संदृष्टौ ।
यूथा इव पशुरक्षिः अस्तम् ३७४ प्र तवसे तुराय अज ।
स्तृभिः न नाकम् ३७४ स पिष्पृशति तन्वि श्रुतस्य ।

मही ५,४१,१५; २५४
ऋजुवलिः "
ऋजुहस्ता "
माता "
रक्षा "
माता १०,६४,१०; ६८५
दिवा "
बृहत् "
मित्रः १,१४,३-४; ६७। ८९,३; २१। ९०,१-३,९; २९-३१,३७। १०५, १९; ५६। १०६,१,७; ५७,६१। १०७,३; ६६। १२२,७; ८८। १३९, १; ९७। १८६,२; १४१। २,२९,१; १५१। ३,५४,१०; १७९। ५५,६; १९७। ४,५५,१,५,७,१०; २२९, २३३,२३५,२३८। ५,२६,९; २४१। ४१,२; २४१। ४२,१-२; २६०-२६१। ४६,२,५; ३२१, ३२४। ४९,३,५; ३४२,३४४। ६,२१,९; ३६१। ४९,१; ३६३। ५०,१; ३७८। ५१,३,१०; ३९५,४०२। ५२,११; ४१९। ७, ३६,२; ४६५। ३९,५,७,४८५,४८७। ४०,२,४; ४८९,४९१। ८,२७,६, १५,१७; ५१७,५२६,५२८। १८,२-३; ५३५-५३६। ८३,२; ५६०। १०,३१,२; ५७६। ३५,१०; ५८९। ३६,१,१२-१३; ५९४,६०५-६०६। ६३,९; ६६९। ६४,११; ६८७। ६५,१,५,९; ६९२,६९६,७००। ९२, ६; ७२६। ९३,४; ७३९। १०२,२; ७७६। १२६,१-७; ७९२-७९८। ८५,१७; १२२१। ९८,१; १२२२। १,१३६,६-७; १२६४-१२६५

मित्रस्य धामानि १,८९,३; २१

अन्वर्तिता ७७६
अपबाधमानाः द्विषः ३०
अप्रमूराः "
अमृताः "
अमृतस्य राजानः ७३९
ऋतधीतिः ४०२
ऋतावान् ४८७
गोपाः ५३६
चर्षणीनां राजा ७९७
जनं यतति ४६५
दस्मः ३४२
दिव्यं शर्धः ९७
द्विषः अपबाधमानाः ३०
नेता ७९७
प्रचेतसः ५६०
ब्रुवाणः ४६५
भद्रः ३४२
मन्द्राः ७३९
यतति जनम् ४६५
युजः ५६०
राजानः अमृतस्य ७३९
राजा चर्षणीनाम् ७९७
वक्मराजसत्यः ४०२
वसवानाः ३०
वस्वः "
विद्वान् २९
वृधासः ५६०
शम् ३७
शर्धः दिव्यम् ९७
श्रेष्ठवर्चाः ४०२
सजोषसः ५२८
सत्यसवः ६०६
सम्राट् ६९६
सरातयः ५२८
सुक्षत्रः ३६३, ४०२
स्मद्रातिषाचः ५३५
मित्रावरुणौ १, १२२, ६, ९-१०, १५; ८७,९०-९१,९६। २,२९,३; १५३। ३१,१; १५८। ३,२०,५; १६९। ५६,७; २२०। ५,४१,१; २४०। ४६,३; ३२२। ४७,७; ३३४। ५१, ९,१४; ३५४, ३५९। ६,४९,१; ३६३। ७,३५,४; ४५२। ३६,२; ४६५। ४१,१; ४९४। ४२,५; ४९९। ८,२९,९; ५४७। १०,६१, १७,२३,२५; ६४३, ६४९, ६५१। ९३,६; ७४१। ५१,२; ११०६

मित्रावरुणौ देवतायाः गुणबोधकपदानि ।

असुरा ४६५
उपमा ५४७
उशन्ता ४९९
दिवि द्वा सदः चक्राते ५४७
राजाना ३३०, ६४९
शुभस्पती ७४१
सम्राजा दिवि ५४७

सर्पिरासुती ५४७
सुपाणी २२०
सुम्नयन्ता ३६३

उपमासूची ।

इषं न ४६५ सुवृक्तिं कृण्वे ।
धन्वा इव ७४१ दुरिता अति एति ।
गातुः पूर्वी इव ६५१ सूनृतायै दाशत् ।
वयः न १५८ वस्मनस्परि प्र पप्तन् ।
पशुषः वाजान् न २४० त्रासीथां नः ।
सूरः न ९६ स्यूम गभस्तिः रथः अयौत् ।
मेघः १,१६४,२६; १२४ । (मेघलक्षणा-धेनुः) १६४,३२,१३० । मध्यस्थानः वायुर्वा ।
धेनुः १२४
परिवीतः मातुः ये नौ बहुप्रजा १३०
मातुर्योनौ परिवीतः सुदुघा १२४
यजमान-ब्रह्मणौ १०,११४,३; ७८४
वृषणा ,,
सुपर्णा ,,
वज्रः १०,१८१,३; ८३६
यज्ञः ७, ३४, ५७, ४३०-४३१ । ३५,७, ४५५ । ४३,१, ५०१ । १०,६६,६; ७१२ । ११४,६-७, ७८७-७८८
आप्त्यनः ७८८
केतुः ४३१
तीर्थः ७८८
वीरः ४३१

देवतारहितमन्त्रे गुणबोधकपदानि ।

जीराध्वरः ५९९
दिविस्पृक् ,,

उपमासूची ।

पृथिवी न भूम ४३१ भारं बिभर्ति ।
वमः १०,६४,३; ६७८ । ९१,११; ७३१ । १६५,४; ८३१ । १४,७-९; १२६७-१२६९
कपोतः यस्य दूतः ८३१
दिवि (-स्थः) ६७८
दूतः यस्य कपोतः ८३१
मदन् स्वधया १२६७
मृत्युः ८३१
राजा १२६७
स्वधया मदन् ,,
रथः १,१६४,१-३; १००-१०१
एकचक्रः १००
एकः सप्तनामा अश्वः यं वहति ,,
सप्त अश्वाः यं वहन्ति १०१
सप्तचक्रः ,,
सप्तनामा एकः अश्वः यं वहति १००
सप्त युञ्जन्ति ,,
रथन्तरं साम १,१६४,२५, १२३ । १०, १८१,१; ८३४
रश्मयः (सूर्यस्य, आदित्यस्य वा) १, ९०,८; ३६ । १०५,९,११; ४६,४८ । १६४,३,७,१६; १०१, १०५,११४ । १६४,११-१२, ३६; ११९-१२०, १३४ । ५,४४,४; २९७ । ४७,२, ३२९ (सूर्यो देवता)

गुणबोधकपदानि ।

अजिरासः ३२९
अनन्तासः ,,
अपईयमानाः ,,
अभीशवः २९७
अमृतस्य नाभिं आ तस्थिवांसः ३२९
अर्णसभाः १३४
आ तस्थिवांसः अमृतस्य नाभिम् ३२९
ईयमानाः अपः ,,
उक्षः ,,
ऋतावृधः २९७
नावः ३६
पन्थाः ३२९
परिभुवः १३४
भुवनस्य रेतः १३४
मध्वदः १२०
माध्वीः ३६
यम्यः २९७
रेतः भुवनस्य १३४
विपश्चितः ,,
सप्त ४६, १३४
सर्वशासाः २९७
सुपर्णाः ४८, ११९-१२०
सुयन्तवः २९७
सुयुजः ,,
स्त्रियः सतीः पुंसः आहुः ११४
राका ५,४१,११; २७० । २,३१,८; १२६६
दशस्यन्ती २७०
बृहद्दिवा ,,
सुभ्राः ,,
राजानः १०, १०९, ६; ७८०
सत्यं कृण्वानाः ,,
रातिषाचः ७,३५,११; ४५९ । ४०,६; ४९३ [देवपत्न्यः]
रायः ७,३५,२; ४५०
रुद्रः-द्राः १,१२२,१; ८२ । २,३१,१; १५८ । ३,२०,५; १६९ । ८,८; २२२ । ५,४१,२; २४१ । ४६,२; ३२१ । ५१,१३; ३५८ । ६,४९,१०; ३७२ । ५०,१२; ३८९ । ७,४०,५; ४९२ । ४१,१; ४९४ । ८,२९,५; ५४३ । ५४,३; ५५३ । १०,६१,१-२; ६२७-६२८ । ६४,८; ६८३ । ६५,१; ६९२ । ६६,३-४,११; ७०९-७१०, ७१८ । ९२,९; ७२९ । ९३,४,७; ७३९,७४२ × । १२६,५; ७९६ । १२८,९; ८०८

'रुद्रः' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजरः ३७२
अप्याः ३८८
आयुधं क्षिप्रं हस्ते बिभ्रत् ५४३

× अत्र 'रुद्रा' इतिपदं वर्तते । द्विवचनत्वात् अश्विनोः विशेषणम् ।

उग्रः ५४३, ७९६
ऋष्वः ३७१
क्षयद्वीरः ७२९
गूर्तवचस्तमः ६२८
च्यवानः ,,
जलाषः ४५४
जलाषभेषजः ५४३
तिग्मं आयुधं हस्ते बिभ्रत् ,,
तूर्वयाणः ६२८
दभ्याय वन्वन् ,,
दानाय वन्वन् ,,
नृणां स्तुतः ७३९
नृभिः स्तवानः ४६८
पिता भुवनस्य ३७१
बिभ्रत् हस्ते तिग्मं आयुधम् ५४३
बृहन् ३७१
भुवनस्य पिता ,,
मीढ्वान् ८१, २४१
रुद्रा [द्विवचनत्वेन अश्विनोः विशेषणं अत्र वर्तते] ७५१
वन्वन् दभ्याय ६२८
वन्वन् दानाय ,,
शिक्वसे (चतु०) ७२९
शिवः ,,
शुचिः ५४३
सुदानवः ७१८
सुपुत्रः ३७१
स्तवानः नृभिः ४६८
स्तुतः नृणाम् ७३९
स्ववन् ७२९
हस्ते तिग्मं आयुधं बिभ्रत् ५४३

उपमासूची ।

क्षोदः न ६२८ रेत इत ऊति सिञ्चत् ।
रुद्रियः १०,६४,८; ६८३
रोदसी (एकवचनम्-रुद्रस्य पत्नी) । ६, ५०,५; ३८१ । १०,९१,११; ७३१ ।
देवी ३८१
रोदसी (द्विवचनम् 'द्यावापृथिवी' इत्यर्थे ।) [' द्यावापृथिवी ' द्रष्टव्यम्]

वत्सः (गोः) १,१६४,२९; १२७
वनस्पतिः १,९०,८; ३६ । ५,४१,८; २४७ । ४१,१६; २७४ । ७,३४, २३; ४४६ । ८,२७,१; ५१३ । ५४,४; ५५४ । १०,६४,८; ६८३
मधुमान् ३६
वना ५,४१,११; २५०
वनिनः ७,३४,२५; ४४८ । ३५,५; ४५३
वरुणः १,८९,३; २१ । ९०,१-३,९; २९-३१,३७ । १०५,६,१५,१९; ४३,५२,५६ । १०६,१,७; ५७, ६३ । १०७,३; ६६ । १२२,७;८८ । १८६,१-३; १४१-१४२ । २,२९, १,७; १५१,१५७ । ३,५४, १०, १८; १७९,१८७ । ५५,६; १९७ । ४,५५,१,५, ७, १०; २२९, २३२-२३३,२३५,२३८ । ५,२६,९; २३९ । ४१,२; २४१ । ४२,१-२; २६०-२६१ । ४३,१,५; ३२१,३२४ । ४९,३,५; ३४१,३४४ । ६,११,९; ३६१ । ४९,१; ३६३ । ५०,१; ३७८ । ५१,३,१०; ३९५,४०२ । ७,३४, १०-११,२४-२५; ४३५-४३६,४४७-४४८ । ३५,६; ४५४ । ३६,२;४६५ । ३९,५,७; ४८५,४८७ । ४०,१,४; ४८९,४९१ । ८,२७,३,६-७,१५, १७; ५१४,५१७-५१८,५२६,५२८ । २८,१-३; ५३५-५३६ । ८३,१,४, ५६०,५६२ । १०,३१,९; ५७६ । ३५,१०; ५८९ । ३६,१,१२-१३, ५९४, ६०५-६०६ । ६१,२४, २६, ६५०,६५२ । ६३,९, ६६९ । ६४, ११; ६८७ । ६५,१,५,९; ६९२, ६९६,७०० । ६६,५; ७११ । ९१,६; ७२६ । ९३,४; ७३९ । १०९,१-२; ७७५-७७६ । १२६,१-७; ७९२-९८ । १६७,३; ८३३ । ५१,४,६; १२०७-१२०८ । ८५,१७; १२२१ । ९८,१; १२२२ । १,१३६,६-७; १२६४-६५ । १०,१४,७; १२६७

वरुणदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अदब्धः ४६५
अदब्धानि व्रतानि यस्य १८७
अनुत्तं क्षत्रं अस्य ४३६
अन्वर्तिता ७७६
अपबाधमानः द्विषः ३१
अपाच्यः ५३६
अप्रमूराः महोभिः ३०
अमृतः ३१
अरिगूर्तः १४१
इनः ४६५
इन्द्रसखा ४४७
इषः पर्षत् १४१
उग्रः ४३५
ऋजुनीतिः २९
ऋतधीतिः ४०१
ऋतस्य नेता ४९१
ऋतावान् ४८७
क्षत्रं अनुत्तं (विश्वायु) अस्य ४३६
गातुवित् ५१
गृणानः ६५१
गोपाः ५३६
चर्षणीनां राजा ७९७
दस्मः ३४१
दाश्वान् ६९६
देवः १२६७
देववान् ६५१
शुक्षः ४४७
द्विषः अपबाधमानः ३१
धृतव्रतः ५१४, ७११
नदीनां पेशः ४३६
नव्यः ५१
नेता ७९७
नेता ऋतस्य ४९१
पतिः २३३
पदवीः ४६५
पर्षत् इषः १४१

पेशः नदीनाम् ४३६
प्रचेताः ५६०
भद्रः ३४१
मदन् स्वधया १२६७
मन्द्रः ७३९
महोभिः अप्नसूराः ३०
मीढ्वान् १२६४
युजः ५६०
राजा ४९१,७३९,८३३,१२६७
राजा चर्षणीनाम् ७९७
राजा राष्ट्रानाम् ४३६
राष्ट्रानां राजा ”
वक्मराजसत्यः ४०१
वसव नः ३०
वसुः ”
विप्रः ६५०
विधायु क्षत्रं अस्य ४३६
वृधः ५६०
व्रतानि अदब्धानि अस्य १८७
शम् ३७
श्रेष्ठवर्चाः ४०१
सजोषाः ५२८
सत्यसवः ६०६
सम्राट् ६९६
सरण्युः अस्य सूनुः अश्वः ६५०
सरस्वान् ७११
सलिलः ७७५
सहस्रचक्षाः ४३५
सुकीर्तिः १४१
सुक्षत्रः ३६३,४०१
सुबन्धुः ६५१
सुरातिः ५१८
सुशंसः ४५४
सूरिः १४१
स्मद्रातिषु चः ५३६
स्वधया गदन् १२६७

उपमासूची ।

अग्निः वने न ५७६ शोकं व्यसृष्ट ।
वसवः १,१०६,१-६;५७-६१। १,३१,१;
१५८ । ३,२०,५; १६९ । ८८;
२२२ । ५७,४; २२४ । ४,५५,१;
२२९ । ५,४१,१८; २५७ । ४९,५;
३४४ । ५१,१०; ३५५ । ६,५०,११;
३८८ । ५१,५; ३९७ । ७,३५,६,
१४, ४५४,४६१ । ३९,३; ४८३ ।
४८,४; ५०७ । ८,५४,३; ५५३ ।
१०, ६६, ३-४, १२; ७०९-७१०,
७१८ । १००,७,९; ७५७,७५९ ।
१२६,८; ७९९ । १२८,९; ८०८ ।
१०,९८,१; १२१२

गुणबोधकपदानि ।

ज्मया ४८३
देवाः ३८८, ४८३
पार्थिवासः ३८८
सुदानवः ५७-६१, ७१८
सुनीथाः २२१

उपमासूची ।

रथं न दुर्गात् ५७-६१ अंहसः नः निष्पिपर्तन ।
वाक् १,१६४,४१; १३९ । ७,३६,७,
७४०
अक्षरा ४७०
अष्टापदी १३९
एकपदी ”
गौरीः ”
चतुष्पदी ”
चरन्ती ४७०
तक्षती सलिलानि १३९
द्विपदी ”
नवपदी ”
बभ्रुवर्षी ”
सलिलानि तक्षती ”
सहस्राक्षरा ”
वाजः-जाः १०,३१,५; ५७१ । ६४,
१०, ६८५ । ९३,७; ७४१

उपमासूची ।

उषसां इव क्षा ५७१ इयं (स्तुतिः)भूया॥
वाजी (बृहदुक्थपुत्रः ।) १०,५६,१-३;
६१४-६१६
वाजिनः (अग्नि-वायु-सूर्याः ।) १०,६६,
१०; ७१६
वातः १,८९,४; २२ । ९०,६; ३४ ।
१२१,३; ८४ । १८६,१०; १४९ ।
५,४१,४; २४३ । ४६,४; ३२३ ।
६,५०,१२; ३८९ । ७, ३५,४,९;
४५१,४५७ । ३६,३; ४६६ । ४०,
६; ४९३ । ८,५४,४; ५५४ । १०,
३१,९; ५७६ । ६४,३; ६७८ ।
१२८,२; ८०१ । १३७,१-३; ८१०-
८११ । १४१,५; ८९०

गुणबोधकपदानि ।

अपां वृषण्वान् ८४
अस्निधः ३२३
आश्वश्वतमः २४३
ईधिरः ४५१
कण्वहोता २४३
त्रितः २४३,६७८
दिवः २४३
दिव्यः ”
दूतः देवानाम् ८११
देवानां दूतः ”
ध्रजत् ४६६
परिज्मा ४९३
मीढ्वान् १८९
वातौ द्वौ ८१०
विश्वभेषजः ८११
विश्वभोजः २४३
सक्षणिः ”
सजोषाः ”
वाता-पर्जन्या १०,६६,१०; ७१६
महिषस्य तन्यतोः ”
वायुः १, १४,३-४,१०; ६-७,११।
१६४,१,२६,३२; ९९, १२४,१३०
(मध्यस्थानः वायुः)। ५,४१,२,६,
१२, २४१,२४५, २५१ । ४१, १;
२६० । ४३, ३, ९, २७९,२८५ ।
५१,१०,१२;३५५,३५७। ६,४९,४;

१६६ । ७,३९,२; ४८१ । ४०,१; ४८९ । १०,५६,१; ६१४ । ६४,७, ६८१ । ६५,१; ६९१ । ६६,५; ७११। ९१,११; ७१३ । ९३,४,७; ७३९, ७४१ । १००,१; ७५१ । १०९,१; ७७५ । ११४,१; ७८१

वायुः-गुणबोधकपदानि ।

अतूर्तपन्थाः २६०
अभीद्धः १२४
अश्नः ९९
असुरः २६०
(आदित्यस्य) मध्यमः भ्राता ९९
आयुः २४५
इषिरः २५१
ऊर्जां पतिः ,,
कविः ३६६
कन्दर्दिष्टिः ७५१
गोधुक् १२४
घर्मः ,,
चोदिता मतीनाम् २८५
चोदिता वाजस्य ,,
तवीयान् ,,
तुरः ,,
देवः २४५-२७५
द्रुतयामा ३६६
द्रविणोदाः २८५
नभस्तरीयान् २५१
नियुता ३६६
नियुत्वान् ४८१
पञ्चहोता २६०
पत्यमानः ३६६
पनिता २४५
परिज्मा २५१, ७३९, ७४१
परिवीतः मातुर्योनौ १३०
पृषद्योनिः २६०
प्रयज्युः ३६६
बहुप्रजाः १३०
बृहद्रथिः ३६६
भ्राता मध्यमः आदित्यस्य ९९
मतीनां चोदिता २८५
मध्यमः भ्राता अस्य (आदित्यस्य) ९९
मयोभूः २६०
मातरिश्वा ७७५, ७८२
मातुर्योनौ परिवीतः १३०
रथप्राः ३६६
रथयुक् २४५
वाजस्य चोदिता २८५
विप्रः २४५
विश्ववारः ३६६
विश्ववेदाः ७४१
शुचिपाः ७५१
सचित् ६८१
सचेताः ,,
सुहस्तः १२४
वास्तोष्पतिः ५,४१,८, २४७ । १०, ६१,७-९, ६३३-६३५
दक्षचेताः ६३४
व्रतपाः ६३३

उपमासूची ।

वृषा न फेनं अस्यत् आजौ ६३४ स्मत् आ परैदप ।
विद्युत् १,१६४,१९; १२७
विद्वान् पथः ५,४६,१; ३२०
पुर एता ,,
विधाता ६,५०,१२, ३८९। १०,१६७, ३; ८३३
विट् (श्) सर्वा- ५,२६,९; २३९। ८,१८,३; ५३६
देवाः ['विश्वे'इति उपपदरहितानिर्देशः ।] १,८९,१-२,८-९; १९ २०,२६-२७। ९०,१-३; २९-३१ । १०५,३,७, ११-१४, १७, ४०, ४१-४४, ४९-५१,५४ । १०६,१,७; ५८,६३ । १०७,१, ६५ । १२२,५,७; ८६, ८८ । १३९,१,११; ९७-९८। १६४, १०; १०८ । १८६,१०-११; १४९-१५० । २,२९,१-६; १५१-१५६ । ३१,१,७; १५९,१६४ । ३,२०,१; १६८ । ५४,१,५,११; १७१,१७४, १९० । ५५,१-२२; १९२-२१३ । ५६,१; २१४ । ४,५५,१-२; २२९-२३० । ५,२६,९; २३९ । ४१,१७; २५६ । ४२,१७, २७५ । ४३,१६; २९१ । ४६,१; ३२१ । ४९,५; ३४४ । ५०,३; ३४७ । ५१,१३; ३५८ । ६,४९,१४; ३७६ । ५०, १-२,९,११,१३; ३७८-७९, ३८६, ३८८,३९० । ५१,६,८-९,११,१५ ३९८,४००-४०१,४०४,४०७ । ५२, ५,१५; ४१३,४२३ । ७,३४,१,८-९, ११-१३,१५,१८-१९; ४२६,४३३-३४,४३७-३८,४४०-४२ । ३५,११; ४५९ । ३९,६; ४८६ । ४०,१;४८८ । ४२, १-३, ६; ४९६-४९७, ५०० । ४३,१-५; ५०१-५०५ । ८,२,१७,१, ९-११,१८; ५२१,५२०-२२,५२९ । २८,१,४; ५३४,५३७ । ८३,१, ३,६,९; ५५९,५६१,५६४,५६७। १०,३५, १, १०, १२, १४; ५८०, ५८९, ५९१, ५९३ । ३६, २-१२, ५९५-६०५। ५२,३-६; ६१८-६१३। ५६,१-४; ६१५-६१७ । ६१, ७, १७, ६३३, ६५३ । १०, ६२, ७; ६६० । ६३,१-२,४,८, ११, १४; ६६१-६२,६६४,६६८,६७२,६७४ । ६४,१-१, १०-११, १४; ६७६-७७, ६८५-८७,६८९। ६५,३-४,७,९,११, १५; ५९४-९५,६९८, ७००,७०१, ७०६।६६,१-२,४,६,८-९,१४;७०७-८, ७१०, ७१२, ७१४-१५, ७२० । ९२,६,१०; ७२६,७३० । ९३,२; ७३७ । १०१,१,३,७, ७५१,७५३, ७५७ । १०९, ३-७; ७७८-८१। ११४,१-३; ७८१-८४ । १२६,१,८; ७९२,७९९ । १२८,२-३,८; ८०१-२,८०६। १३७,१,५; ८०९,८१३। १४१,२; ८१७ । १५५,५; ८२२ ।

१५७,४-५; ८२६-८२७। १६५,१-३; ८२८-३०। १, २७, १३; ११९९। ४५,१०; १२००। ९४,८; १२०१। १६४,५०; १२०२। ७, १०४,११; १२०३। ८,६३,१९; १२०४। ८०,१०; १२०५। १०, ५१,२,४,६,८; १२०६-९। ५३, ४-५; १२१०-११। ७२, १-९; १२१२-२०। ८५,१७; १२२१। ९८,४,६; १२२५,१२२७। १,१३६, ७; १२६५

विश्वेदेवाः।

['विश्वे' इति उपपदसहितनिर्देशः।]

१,३,७-९; १-३। १४,१-१२;४-१५। २३,१०; १६। ८९,७; ९५। १२१, १-१५; ६७ ८१ [इन्द्रः वा]। १२२, ३,११-१४; ८४,९२-९५। १८६, २-४; १४१-१४३। २,४१,१३-१५; १६५-६७। ३,५४,१७; १८६। ५७, २,५; २२४,२२७। ४,४४,६; २९९। ४५,११; ३१९। ४६,६; ३३३। ५१, १-३, ८,१३,३५०-५३,३५८। ६, २१,११; ३६२। ४९,१५; ३७७। ५०,१४-१५; ३९१-३९२। ५१,७; ३९९। ५२,७-८,१०,१३-१४, १७; ४१४-१५,४१७,४२१-२२,४२५। ७, ३५,११; ४५९। ३९,४; ४८४। ४८, ४; ५०७। ५०,३; ५०८। ८,२७,२, ४-५,११,१४,१९-२१; ५१३,५१५-१६,५२१,५२५,५३०-३१। ३०,१-४; ५४९-५२। ५४,३; ५५३। ६९,११; ५५८। १०,३१,१-३,६; ५६८-७०,५७३। ३३,१; ५७९। ३५,१३;५९१। ३६,१३; ६०६। ४२,१-२; ६०८-९। ६३,६,११; ६६६,६७१। ६५,१३-१४; ७०४-७०५। ६६,५,११,१३; ७११,७१७, ७१९। ९३,३,७; ७३८, ७४१। १२८,२,४-५;८०१,८०३-४। १५७,

१; ८२३। ९८,८; १२२९

'देवाः' 'विश्वे देवाः' च उभयोः मिलित्वा गुणबोधकपदानि।

अग्निजिह्वाः२५,३६२,३७९,४२१,६९८
अग्निहोतारः ७१४
अजस्राः २३०
अदब्धाः-सः ४०१, १९
अदब्धधीतयः ३९५
अदितेः अद्रुयः परि पृथिव्या जाताः ६६२
अदितेः अष्टौ पुत्रासः १२१९
अद्रुहः ३, ५२०, ७१४
अधृष्टाः ३९२
अध्वन् यान्तः ५६४
अध्वरं वावशानाः १६८
अध्वरस्य प्रचेतसः ७०७
अध्वराणां अभिश्रियः ७१४
अनर्वाणः ६०४, ६७४
अनागसः ६६४
अनिमिषन्तः ”
अन्तरिक्षे स्थ ४२१
अपः जनयन्तः ७०२
अपबाधमानाः द्विषः ३२
अपरीतासः १९
अपिप्राणी सदनी वसूयुः च १५०
अप्तुरः २
अप्याः ३८८
अप्रमूराः महोभिः ३०
अप्रयुच्छन्तः ७१९
अप्रायुवः १९
अप्सु एकादश ९८
अप्सु देवाः ७००
अभिक्षतारः १५२
अभिष्टयः ४०७, ५६७
अभिश्रियः अध्वराणाम् ७१४
अभिषाचः ७०५
अमूराः २३०
अमृताः ३१,६५३, ७०५-७,७११, ७१९,१२०७

अमृतबन्धवः १२१६
अमृतस्य राजानः ९२
अमृतस्य सूनवः ४१७
अर्भकः न अस्ति ५४९
अर्भकाः ११९९
अर्यः १९५
अर्वन्तः ४९३
अर्वाञ्चः १५६
अर्हणाः ६६४
अश्वं जनयन्तः ७०२
अष्टौ अदितेः पुत्रासः १२१९
असुराः ५३१
अस्निधः ३
अहिमायाः ६६४
आपयः १५४
आर्या व्रता विसृजन्तः ७०२
आशिनाः ११९९
इन्द्रज्येष्ठाः १६७,४०७,५६७,७०७, १२०४
इन्द्रप्रसूताः ७०८
ईड्याः ११
ईशानासः ९४
ईशिरे भुवनस्य ६६८
ईळाः १४०
उद्भिदः १९
उपस्थ ४२१
उरुचक्षसः ४०१
उशन्तः ४८४
उषर्बुधः ११
ऊमाः ४८४
ऋतज्ञाः ७०५
ऋतधीतयः २३०, ३५१
ऋतसापः ३६२, ३७९, ७१४
ऋतुभिः हवनश्रुतः ४१८
ऋतस्य गोपाः ३९५
ऋतस्य धाराः दुहानाः ५०४
ऋतस्य पस्त्यसदः ४०१
ऋतस्य रथ्यः ४७१, ५६१

ऋतावृधः १०,३९१,४१८,६९४,६९८, ७०७
ऋदूदरः १७९
एकादश अप्सु ९८
एकादश दिवि ९८
एकादश पृथिव्याम् ९८
एहिमायासः ३
ओमासः १
ओषधीः जनयन्तः ७०२
कवयः १७९, १८६
कविशस्ताः ३९१
कुमारकः न ५४९
कृतवः १९
क्षत्रियाः ७१४
क्षियन्तः ५६४
गणः ३०५
गां जनयन्तः ७०२
गिरः ४८५
गोजाताः ३८८
गोपाः ४०७
गोपाः ऋतस्य ३९५
घर्मस्वरसः २३४
चन्द्राः ४८७
चर्षणीधृतः २
चित्रराधसः ६९४
जगतः मन्तवः विश्वस्य ६६८
जगमयः विदथेषु २५
जनः ३६३
जनः दैव्यः ६१५, ६६९
जनयन्तः अपः ७०२
,, अश्वम् ,,
,, ओषधीः ,,
,, गाम् ,,
,, पर्वतान् ,,
,, पृथिवीम् ,,
,, ब्रह्म ,,
,, वनस्पतीन् ,,
जनानां प्रयुजः ५७९
जाताः अद्भ्यः परि पृथिव्याः अदितेः ६६१
ज्योतिष्कृताः ७०७
ज्योतीरथाः ६६४
तनूनां रथ्यः ३९८
तुराः-रासः ४०८, ५६८, ५९३
तुविजाताः ६६६
तूर्णयः ३
त्रयः च त्रिंशत् च ५५०
त्रातारः ३७८
त्रिंशति परः त्रयः ५३४
त्रिषु स्थन ४१
त्रीणि शता त्री सहस्राणि त्रिंशत् च ६१३
वृक्षपितरः ३७९
दक्षस्य रथ्यः ३९८
दधानाः पुष्टिं प्रियरथे ८८
दशस्यन्तः ३८८
दस्माः २३०
दाश्वांसः २
दिवक्षसः ६९८
दिवः मध्ये तस्थुः ४७
दिवि एकादश ९८
दिवि सूर्यं रोहयन्तः ७०२
दिवेदिवे रक्षितारः १९
दिव्याः ३८८, ७००
दीधितिः विश्वेषां देवानाम् १५०
दीर्घश्रुतः ७८३
दुहानाः ऋतस्य धाराः ५०४
दैव्यः जनः ६१५, ६६९
द्यविस्थ ४११
द्विजन्मानः ३७९
द्विषः अपबाधमानाः ११
धृतव्रताः १५१, ७१४
न अर्भकः ५४९
न कुमारकः ,,
नभोजुवः ९२
नरः ४०१
नाम येषां चारु महत् १८६
नामानि विश्वा येषां नमस्यानि, यज्ञियानि, वन्द्यानि ६६१
निचेतारः ६५३
निरुन्धानासः ८८
नृचक्षसः ६६४
पन्नीवन्तः १०
पर्वतासः १२०४
पर्वतान् जनयन्तः ७०२
पार्थिवासः ३८८, ७००
पावकाः ३९५
पुत्रासः अदितेः अष्टौ १२१९
पुष्टिं दधानाः प्रियरथे ८८
पूतदक्षाः ४०१
पूषरातयः १६७
पृथिवीं जनयन्तः ७०२
पृथिव्या एकादश ९८
पृश्निमातरः २५
पृषदश्वाः ,,
प्रचेतसः ६६८, १२२१
प्रचेतसः अध्वरस्य ७०७
प्रयुजः जनानाम् ५७९
प्रातर्यावाणः ३५२
प्रावितारः ५१३
प्रियक्षत्राः ५२०
बृहन्तः ६०४
बृहच्छ्रवसः ७०७
बृहद्दिवा ७१४
ब्रह्म ७०२
ब्रह्मकृताः ७११
भद्राः १९, १२१६
भुवना ईशिरे १२२१
मध्ये तस्थुः महो दिवः ४७
मनवः २५
मनुप्रीतासः ६६१
मनोः यजत्राः ७०५
मनोः यज्ञियाः ६०३
मन्तवः विश्वस्य स्थातुः जगतश्च ६६८
मन्त्राः ३९१
मन्द्राः ९२
मयोभुवः ४९३
मंहयन्तः ६९५

महान्तः ६०४,६७४,११९९
महिमघः ८९
महोभिः अभ्रमूराः ३०
मेहनाः ११०४
यजताः ३७९
यजत्राः १०-११,१६,१५६,१६४,३९१, ३९८, ४०१, ४२१, ४२५, ५०४, ६५३,६७१,७९९
यजत्राः मनोः ७०५
यज्ञानिष्कृतः ७१४
यज्ञियाः १८७,२६३,४८४,५५०,७१२
यज्ञियाः मनोः ६०३
यज्ञियाः यज्ञेषु ७३८
यज्ञेषु यज्ञियाः ”
यान्तः अध्वन् ५६४
युज्याः ४८६
युवानः १४०, ११९९
रक्षितारः दिवेदिवे १९
रथ्यः ऋतस्य ४०१, ५६१
” तनूनाम् ३९८
” दक्षस्य ”
” वचसः ”
राजानः ९२
रातिषाचः ३७३, ७०५
रिशादसः ५१५,५२१,५५०
रुद्राः ११०४
रोहयन्तः दिवि सूर्यम् ७०२
वचसः रथ्यः ३९८
वनस्पतीन् जनयन्तः ७०२
वन्याः २४६
वरिवोविदः ५२५
वरुणप्रशिष्टाः ७०८
वशाः ७२६
वसवः५७-६२,२२९,३९२,३९७,३९९, ५१३,५२०,५३१,७५७
वसवानाः ३०
वस्वः ”
वह्नयः ३, ७८३
वावशानाः अध्वरम् १६८
विदथेषु ऋत्वियः २५
विधातारः २३०
वियोतारः ”
विश्वाः ४०१
विश्वमहसः ७३८
विश्वेदेवाः ३९९, ४५९
विश्वेदेवसः ५१३,५१५,५२२,५३०, ५३१-५३२,७०७,७११,७४२
विश्वेषां देवानां धीधितिः १५०
विसृजन्तः आर्या व्रता ७०२
वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ११०४
वृधासः ६४१
वृषणः ७१२
वृषासः ५५९
वैश्वानराः ५५२
व्रता विसृजन्तः आर्या ७०२
शम्भुवः ४०, ५८
शुभंयावानः २५
शूषाः २४६
श्रुतरथे पुष्टिं दधानाः ८८
सजोषसः १६८,५१६,५५३,६५३
सजोषसः वृत्रहत्ये भरहूतौ ११०४
सतो महान्तः ५४९
सत्याः ३७९
सत्यधर्माणः ३५१
सधन्यः ३९५
सनिष्यवः २३४
सपर्यवः १७१
समनसः ५०४, ५१६
समन्यवः ५२५
सरातयः ”
सर्वे ८०१
सामभिः स्तूयमानाः ६५
सुकृतः ६६९
सुजाताः ३९५
सुज्योतिषः १६८,३७९
सुदानवः ५७-६२,४०४,५६४,५६७, ७०१,११००
सुदुघाः ५०४
सुमिन्याः ६९४
सुमृळीकाः ४१७
सुरातयः ६९५
सुव्रताः ३६३
सुसंरब्धाः ११९७
सूनवः अमृतस्य ४१७
सूरयः ६९५, ७१७
सूरचक्षसः २५
सूर्यं दिवि रोहयन्तः ७०२
स्तुताः ३९१,३९२
स्तूयमानाः सामभिः ६५
स्थातुः मन्तवः विश्वस्य ६६८
स्वतवसः १४९
स्वर्गिरः ७०५
स्वर्वन्तः ३७९
स्वर्विदः ७०५
स्वाध्यः ६३३
हवनश्रुतः ऋतुभिः ४१७
हुवानः ३९१

'देवाः, विश्वे देवाः' च देवतानां उपमासूची ।

उक्षा इव स्वसराणि २ सुतं आ गन्त तूर्णयः ।
ऋषिवत् ७२० देवान् स्वस्तये ईळानाः ।
कर्मारः इवः ११९३ ब्रह्मणस्पतिः समघमत् ।
गौरः न क्षेप्नोः १२०८ अविजे ज्यायाः ।
यथा ह त्यत् गौर्यं चित् पदि वितामुञ्चत् ७९९ एवमु वसवः अस्मत् अहं विमुञ्चत ।
तीर्थे न ५७० ऊमाः दस्मं उपयन्ति ।
दिवि इव ज्योतिः ६१५ स्वं आ मिमीयात् ।
नौभिः अपः न ५६१ विप्रिता पुरु अति पर्षथ ।
पयसा इव धेनुम् ६८७ मे धियं पीपयत ।
पिता इव कितवम् १५५ यूयं मा शशासत ।
पितृवत् ७२० वसिष्ठासः वाचं अक्रत ।
पुत्रासः न मातरं विभृत्राः ५०३ देवासः आ सदन्तु ।
पृक्षाः इव ६९५ महयन्तः देवाः मनुषाम स्तवन्ते ।

प्रीताः इव ज्ञातयः ७२० अस्मे वसु कामं अव धूनुत ।
यथा भुवनानि यतयः १२१८ समुद्रे अत्र आ गूळ्हं सूर्यं अजभर्तन ।
मनुष्वत् ५१ सत्तः होता विदुष्टरः ।
रथः न वाजी ४२६ शुक्रा देवी प्र एतु ।
रथीः इव अध्वानम् १२०८ भ्रातरः अर्थमतं अन्वावरीवुः ।
राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य ७७७ न दूताय प्रह्ये तस्थ एषा ।
वनिनः न शाखाः ५०१ ब्रह्माणि विप्राः विष्वक् वि तन्ति ।
वि इव १५५ मा माधि पुत्रे प्रभीष्ट ।
वृकः व तृष्णजं मृगम् ४०तं आध्यः यन्तिः
सप्तिः न रथ्यः१६४ यजत्रा धीतिं अश्याः।
स्वर् न ४४२ तपन्ति शत्रुं भूमा ।
विष्णुः १,९०,५,९; ३३,३७ । १६४, २६; १३४ । १८६, १०; १४९ । ३,५४,१४; १८३ ।५५,१०; २०१। ५,४६,१-४; ३२१-३२३ । ४९,३; ३४२ । ५१,९; ३५४ । ६,२१,९; ३६१ । ४९,१३; ३७५ । ५०,१२; ३८९ । ७,३५,९;४५७ । ३६,९; ४७२। ३९,५; ४८५। ४०,५;४९२। ४४,१; ५०६ । ८,२५,१२; ५११ । २७,८; ५१९ । २९,७; ५४५। ५४,४; ५५४ । ८३,७; ५६५ । १०,६५,१; ६९२ । ६६,५; ७११ । ९१,११; ७३१ । १२८,२; ८०१ । १४१,३, ५; ८१८,८२० । १८१,१-३; ८३४-८३६ । १८४,१; ८३७ ।

'विष्णुः'-गुणबोधकपदानि ।

अग्नन् ५११
अद्वेषः १४९
उरुक्रमः १४९, १८३
उरुगायः ५४५
एषः हविर्भिः ४९२
गोपाः २०१
त्रीणि विचक्रमे ५४५
दधानः प्रिया अमृता धामानि २०१
दस्मः ३४२
देवः ४९२
धामानि प्रिया अमृता दधानः २०१
पाति परमं पाथः ''
पुरुदस्मः १८३
भद्रः ३४२
भुवनानि विश्वा वेद २०१
महिमा ७११
मंहिष्ठान् ३८९, ४९२
विचक्रमे त्रीणि ५४५
वेद विश्वा भुवनानि २०१
शम् ३७
सिन्धुः ५११
सुदानुः ''
स्वयावा ''
हविर्भिः एषः ४९२
वृकः (अरुणः) १,१०५,१८; ५५ ।
अरुणः ''

उपमासूची ।

तष्टा इव पृष्टयामयी ५५ उज्जिहीते निचाय्य ।
वृषस्तुभः १०,९६,६; ७१२
वृष्टिः १,१६४,९,३३; १०७,१३१
गर्भः १०७, १३१
नाभिः ''
पुत्रः १०७
वत्सः ''
वेदिः ७,३५,७; ४५५ । १०,११४,३; ७८४
घृतप्रतीका ७८४
चतुष्कपर्दा ''
युवतिः ''
वयुनानि वस्ते ''
वस्ते वयुनानि ''
सुपेशा ''
व्राजिनीः (निशाः) ५,४५,१; ३०९
व्रतानि ७,३५,९; ४५७
शंसः ७,३५,१, (प्र. पा.) ४५० । २; (तृ. पा.) ४५० । १०,३१,१; ५६८
शंसः = नराशंसः। (४५०)
सत्यस्य सुयमस्य शंसः (४५०)
देवानां शंसः
शमी (गोत्वेन निरूपिता) १०,३१, १०; ५७७
शम्भुः । ७,३५,१०; ४५८
शरीरम् १,१६४,३०; ११८
अनत् ११८
जीवम् ''
तुरगातु ''
पस्त्यानां मध्ये आ ध्रुवं (शेते) ''
शये ''
शर्यणावन्तः १०,३५,१; ५८१
संवत्सरः १, १६४, ३, १०, ११-१४; १०१,१०८,११०-११२ । ३,५६, २५; ११५-११८

गुणबोधकपदानि ।

अक्षः भूरिभारः १११
अजरम् ११२
अर्पितं सप्तचक्रे षळरे ११०
आवृतं रजसा ११२
चक्षुः सूर्यस्य ''
चक्रम् १११-११२
त्रिपाजस्यः ११६
त्रिमाता ११८
त्र्यनीकः ११६
त्र्युधा प्रजावान् ''
द्वादशाकृतिः ११०
पञ्चपादः ''
पञ्चारः १११
पिता ११०
पुरीषी ''
पुरुधा ११६
प्रजावान् त्र्युधा ''
माहिनावान् ''
रजसा आवृतम् ११२
रेतोधाः शश्वतीनाम् ११६

विचक्षणम् ११०
विदथेषु सम्राट् २१८
विश्वरूपः २१६
वृषभः ,,
शश्वतीनां रेतोधाः ,,
षळरम् ११०
सनाभिः १११
सनेमि १११
सप्तचक्रम् ११०
सम्राट् विदथेषु २१८
सूर्यस्य चक्षुः १११
संसारः १,१६४,३१; १३०
परिवीतः मातुर्योनौ १३०
बहुप्रजा ,,
मातुर्योनौ परिवीतः ,,
सत्यस्य पतयः (पतयः सत्यस्य) ७, ३५,१२; ४६०
समुद्रः ६,५०,१३-१४; ३९०-३९१। ७,३५,१३; ४६१। १०,६६,११; ७१७
सरमा ५,४५,७-८; ३१५-३१६
सरयुः १०,६४,९; ६८४
महो ६८४
वक्षणी ,,
सरस्वती (नदी) १,८९,३; २१। ३, ५४,१३; १८२। ५,४२,१२; २७०। ४३,११; २८७। ४६,२; ३२१। ६,५०,१२; ३८९। ५२,६; ४१४। ७,३५,११; ४५९। ३६,६; ४६९। ४०,३,६; ४९०,४९३। ८,५४,४; ५५४। १०,६४,९; ६८४। ६५,१, १३; ६९२,७०४। १४१,५; ८२०। १८४,२; ८३८। २,३२,८; १२६६

गुणबोधकपदानि।

उशती शग्मां वाचम् २८७
घृताची ,,
जुजुषाणा हवम् ,,
दशस्यन्ती २७०
पिन्वमाना ४१४
बृहद्दिवा २७०
मयस्करत् २१
मही ६८४
मीळ्हुषी ३८९
यजता २८७
वक्षणी ६८४
वरूत्री ४९३
वाचं शग्मां उशती २८७
शग्मां वाचं उशती ,,
शुभ्रा २७०
सप्तथी ४६९
सिन्धुमाता ,,
सुभगा २१
हवं जुजुषाणा २८७
सरस्वती (वाक्) ६,४९,७; ३६९। ७,३९,५; ४८५।
कन्या ३६९
चित्रायुः ,,
पावीरवी ,,
वीरपत्नी ,,
सविता १,१०६,७; ६३। १०७,३; ६६। १६४,२६; १२४। १८६,१; १४०। २,३१,६; १६३। ३,२०,५; १६९। ५४,११; १८०। ५५,१९; २१०। ५६,६-७; २१९,२२०। ४, ५५,१०; २३८। ५,४२,३,५; २६२, २६४। ४६,३; ३२२। ४८,५; ३३९। ४९,१-२,४; ३४०-३४१, ३४३। ५०,१-२,४-५; ३४५, ३४६,३४८-३४९। ६,२१,९; ३६१। ४९,१४; ३७६। ५०,१,८,१३; ३७८, ३८५, ३९०। ७,३५,१०; ४५८। ३७,८; ४८०। ४०,१; ४८८। ८,२७,१२; ५२३। १०,३१, ४; ५७१। ३५,७; ५८६। ३६, १२-१४; ६०५-६०७। ६४,७; ६८२। ६६,४; ७१०। ९३,९; ७४४। १००,१,३,८-९; ७५१, ७५३,७५८-७५९। ११८,७; ८०६। १४१,५; ८२०। १८१,१-३; ८१४-८३६

सविता-गुणबोधकपदानि।

अनर्वा ३४३
अप्रयुच्छन् ६३
अभिमातिषाहः ८०६
अभीद्धः ११४
असुरः ३४१
आयोः ज्येष्ठं रत्नं विभजन् ,,
आयोः रत्नं विभजन् ३४०
ईड्यः ७५९
उषसो न प्रतीकम् ३८५
ऊर्ध्वः ५२३
कवीनां कवितमः २६१
गोषुक् ११४
घर्मः ,,
जजान पुरुधा प्रजाः २१०
ज्येष्ठं रत्नं आयोः विभजन् ३४१
त्राता ६३,८०६
त्रायमाणः ३८५
त्रिः आ पत्यमानः विदथे १८०
त्वष्टा २१०
दक्षवान् ३८५
देवः ६३,१४०,१६९,२१०,२६२, ३४०-३४१,३४५,३४९,३८५,३९०, ४५८,४८८,६८१,७४४,७५३,७५९
द्युतानः ८३६
धातृणां धाता ८०६
नृमणाः ३४८
नेता ३४५,३४९
पतिः भुवनस्य ८०६
पायुः ७५९
पुपोष पुरुधा प्रजाः २१०
प्रजाः पुरुधा जजान ,,
प्रजाः पुरुधा पुपोष ,,
भुवनस्य पतिः ८०६
भजतः ३८५
रत्नधा ५८६
रत्नं विभजन् आयोः ३४०-३४१

रत्नी ४८८
रथस्पतिः ३४९
वरेण्यः ५२३
वाजी ८२०
विदथे त्रिः आ पत्यमानः १८०
विभजन् आयोः रत्नम् ३४०
विभजन् आयोः रत्नं ज्येष्ठम् ३४१
विश्वानरः १४०
विश्वरूपः २१०
सत्यसवः ६०६
सुजिह्वः १८०
सुदंससः ७१०
सुहस्तः १२४
हिरण्यपाणिः १८०

उपमासूची ।

उषसः न प्रतीकम् ३८५ सविता देवः ।
रश्मिं न ७४४ चर्षणीनां चक्रं नि येायुवे
साम १,१६४,२५; १२३
सिनीवाली १०,१८४,२; ८३८ । २, ३२,८; १२६६
सिन्धुः-न्धवः १,९०,६; ३४ । १०५, १२,१९; ४९,५६ । १०६,७; ६३ । १०७,३; ६६ । १२२,६; ८७ । ३,५६,५; २१८ । ४,५५,३; २३१ । ५, ४९, ४; ३४३ । ६,५२,४,६; ४१२, ४१४ । ७,३५,८; ४५६ । ८, ५४, ४; ५५४ । १०, ३५, २, ५८१ । ६४,९; ६८४ । ६५,१३; ७०४ । ६६,११; ७१० । ९२,५; ७२५

गुणबोधकपदानि ।

इषयन्तः ३४३
त्री षधस्थाः २१८
देवी २३१
पिन्वमानाः ४१२
मही ६८४
मातरः ५८१
वक्षणीः ६८४
श्रोतुरातिः ८७
सप्त ५५४
सुश्रोतुः ८७
सुकृतानि सुकृतां ७,३५,४; ४५२
सुतम्भरः (ऋषिः) ५,४४,१३; ३०६
उदचनः ३०६
ऊधः विश्वासां धियाम् ,,
विश्वासां धियां ऊधः ,,
सत्पतिः ,,
सुमतिः आदित्यानाम् १,१०७,१; ६४
अर्वाची ६४
वरिवोवित्तरा ,,
सुपर्णः १०,११४,४-५; ७८५-८६
सुहवानि देवानाम् ७,३५,३; ४५१
सूनृता १०,१४१,२; ८१७
सूर्यः १,९०,८; ३६ । १०५,११,४९ । १०६,७; ६३ (सविता वा) । १६४,२५; १२३ । २,३१,६; १६३ [सूर्यः सायनाचार्यः] । ३,५४,६; १७५ । ५५,६-७; १९७-१९८ । ५,४४,४, ७-१०; २९७,३००-३०३ । ४५, १-२, ९-१०; ३०९-३१०, ३१७-३१८ । ४७, ३-७; ३३०-३३४ । ४८,३; ३३७ [इन्द्रात्मा सूर्यः] । ४९,३; ३४२ । ६,५०,२; ३७९ । ५१,१-२; ३९३-३९४ । ५२,५; ४१३ । ७,३५,८; ४५६ । ३६,१; ४६४ । ४४,१; ५०६ । १०,३१,९; ५७६ । ३५,२,८; ५८१, ५८७ । ५६, १-२, ७; ६१४-६१५, ६२० । ६४,३; ६७८ । १०,९२,७,१४; ७२७, ७३४ । ११४,१; ७८२ । १४१, ३; ८१८ । १८१,३; ८३६ । १,१३६, ६; १२६४

सूर्यः- गुणबोधकपदानि ।

अग्रुः ३००
अजः १६३
अन्वग्रं चरति १९८
अप्रयुच्छन् ६३
अबन्धनः १९७
अरुषः ३३०
अर्कः ७८२
अर्यः ३९४
अश्मा ३३०
अहा विवर्तयन् ३३७
अहा संवर्तयन् ,,
उक्षा ३३०
उच्चरन् ४१३
उरुचक्षाः ४५६
उस्राः ३४२
एकः ५५६
एकपात् १६३
एकः वत्सः १९७
कविः १७५, ३००, ३१७
चरति अन्वग्रम् १९८
जनित्रं परमं संवेशनम् ६१४
जनिवान् ३००
ज्योतिः तृतीयम् ६१४
ज्योतिः दिवि ६१५
तृतीयं ज्योतिः ६१४
त्राता ६३
दिवि ज्योतिः ६१५
दिवो मध्ये निहितः ३३०
देवः ६३, ३०९
देवानां जन्म सनुतः वेद ३९४
द्यौः ३३४, १२६४
द्विमाता १९७-१९८
निहितः मध्ये दिवः ३३०
नृचक्षाः १७५
परमं जनित्रं संवेशनम् ६१४
पश्यन् मर्तेषु ऋजु वृजिना ३९४
पुरस्तात् शयुः १९७
पृश्निः ३३०
बुध्नः १९८
बृहन् ३३४, १२६४
मधुमान् ३६
युवा ३१७
रघुः ,,

वत्सः एकः १९७
विदथानि त्रीणि वेद ३९४
विदथेषु सम्राट् १९८
विप्रः ३९४
विवर्तयन् अहा ३३७
विश्वं अनु प्रभूतः ५५६
विश्वः उस्राः स्पळुत् एति ५८७
वृजिना पश्यन् मर्तेषु ऋजु ३९४
वृषा ३३३
वेद देवानां सनुतः जन्म ३९४
शयुः परस्तात् १९७
श्येनः ३१७
संवर्तयन् अहा ३३७
संवेशनं परमं जनित्रत् ६१४
सप्ताश्वः ३१७
समुद्रः ३३०
समुद्रः आसां स्तुतीनाम् ३०१
सम्राट् विदथेषु १९८
सहसामानः ७८१
सुपर्णः ३३०
सुमहः ३७९
सूरः ३९४, ७१७
स्तुतीनां आसां समुद्रः ३०१
स्तोगः ५७६
स्वः ३०९
स्वावसुः ३००
होता १९८

उपमासूची ।

अमतिं न ३१० श्रियं वि सात् ।
उद्रा न नावम् ३१८ धीराः तं अनयन्त ।
रुक्मः न दिवः ३९३ उदिता व्यद्यौत् ।
सूर्यामासा १०,६४,३; ६७८ । ९१, ११; ७३१ । ९३,५; ७४०
दिविक्षिता ७३१
विचरन्ता ,,
सदनाय सधन्या ,,
सोमः १,१४,४ (इन्दवः), ७,१०,१३। ८९,३; २१ । २,४१,१४; १६६ । ५,४३,४; २८० । ४६,४; ३२३ । ५१,९,१२; ३५४,३५७ । ६,५१, १४; ४०६ । ५२,३। ४११ । ७,३५, ७; ४५५। ४१,१; ४९४। ८,१९,१; ५३९ । १०,३५,१; ५८१ । ३६,८; ६०१; । ५१,१, ६०९ । ५७,६; ६२६ । ६१,१६; ६४२ । ६५,१-२, १०; ६९१,६९३,७०१ । १००,४; ७५४ । १०९,१-२; ७७५-७७६ । १२८,५; ८०४ । १४१,३; ८१८ । १६७,३; ८३३। १,४५,१०;१२००। १३६,६; १२९४

सोमदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुः २८०
अजि हिरण्ययम् ५३९
अध्वरश्रीः ६०१
अपां पेरुः ,,
अभिशस्तिपाः ४११
अहृणीयमानः ७७६
आहुतिः देवानाम् ६०९
इन्दवः ७
इन्द्रियः ६०१
गिरिष्ठाः २८०
गोपाः ब्रह्मणः ४११
घृतश्रीः ६९३
चमूषदः ७
जीवधन्यः ६०१
तिरो अह्नयः १२००
तीव्रः १६६
देवानां आहुतिः ६०९
देवान्यः ६०१
द्रप्सः ७
पतिः भुवनस्य ३५७
बभ्रुः ५३९
ब्रह्मा ६०९
ब्रह्मणः गोपाः ४११
भुवनस्य पतिः ३५७
मत्सरः-राः १६६, ७
मधुमान् १६६
मधु सोम्यम् १३
मध्वः ७
मध्वः रसः २८०
मयोभूः ७७५
मादयिष्णवः ७
युवा ५३९
राजा ६४१,७५४,७७६,८०४,८३३
विप्रः ६४१
विषुणः ५३९
वि सेतुः ६४१
वेधाः ,,
शुक्रः २८०
समिद् ६०९
सुरश्मिः ६०१
सुवानः ५८१
सुहवः ६०१
सूनरः ५३९
सोम्यं मधु १३
स्तुतः ६४१
हिरण्ययं अजि ५३९

उपमासूची ।

नेमिं न चक्रं अर्वतो रघुद्रु ६४१ कक्षीवन्तं रेजयत् ।
सोमजामयः १०,९१,१०; ७३०
सोमसूर्यचक्रभ्रमणानि १,१६४,१९,११७

उपमासूची ।

धुरा न युक्ताः ११७ तानि रजसः वहन्ति।
स्तोता १०,१३७,४; ८१२
स्तोमः (देवस्तुतिः) १०,९३,११-१४; ७४७ ७४९

उपमासूची ।

तना न सूर्ये ७४७ मे स्तोमं वावृधन्त ।
तष्टा इव अनपच्युतम् ७४७ मे स्तोमं वावृधन्त ।
नेमधिता न पौंस्या ७४८ राया युक्ता हिरण्ययी वावर्त ।
वृषा इव विष्टान्ता७४८ हिरण्ययी वावर्त ।

अंघनन्नं न अरुष्यम् ७४७ मे स्तोमं वावृधन्त ।
स्वः १०,३६,१; ५९४ । ६५,१; ६९१ । ६६,४; ७१०
बृहत् ६९१,७१०
स्वधावान् (प्रश्नोत्तराणि) १०,३१,७-९; ५७४-५७६
स्वरूणां मितयः ७,३५,७; ४५५
स्वस्तिः ४,५५,३; २३१
हविष्कृतः १०,६६,६; ७१९
वृषणः ,,
हस्तौ १०,१३७,७; ८१५
अनामयित्नू ,,
दशशाखौ ,,
होता ७,३९,१; ४८१ । १०,३५,१०; ५८९ । ६४,१५; ६९०
इषितः ४८१
सप्त ५८९
होतारा दैव्या १०,६६,१३; ७१९
पुरोहिता ,,
प्रथमा ,,

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(२) यजुर्वेद-मन्त्राणाम् ।

अंशः १०,५; १३२५
अक्षरपंक्तिः छन्दः १५,४; १३४८
अक्षाः १०,२८; १३२९
अग्निः ८,१९; ८४९ । १४,७,२०; ८५८-८५९ । १५,५४; ८६१ । १७, ७३; ८६३ । १८,७६; ८६४ । २७, ५१; ८७३ । ८,२७; १२४४ । १५, ५०; १२४९ । १७,५६; १२५० । २०,१४; १२५३ । ३३,७; १२६१ । ३३,४८; १२६२ । ३,९-१०; १२७९-१२८० । ४,७; १२८१ । ५,१,९; १२८३,१२८५ । ६,१६,२१,२६; १२८९,१२९१,१२९४ । ९, ३१; १३१९ । १०,५,९,२३; १३२५, १३२६,१३२८ । ११,६६; १३३१ । १५,१५,५१; १३५९,१३६५ । १८, ३७, १३६६ । २१,६१; १३७५ । २३,१३; १३७७ । २६,१; १३८४ । २८,२३; १३८६ । ३२,१५; १३८९ । ३५,३; १३९०
अंगिराः १२८५
अनाधृष्टं ते नाम ,,
असितग्रीवः १३७७
आकूतिं प्रयुक् १२८१
,, १३३१
आयुः १२८५
ऋषिः १३७५
ऋषीणां नपात् ,,
गृहपतिः १३२६,१३२८
चित्तं प्रयुक् १३३१
जातवेदाः ८७३
जोष्टा १२५०
ज्योतिः १२७९
तपस् दीक्षा १२८१
दीक्षा तपः ,,
देवः ८६४,१२८५,१३७५
देवता ८५९
देवानां समिद् १२४४
दैव्यः १२५०
धर्ता ,,
धामच्छद् ८६४
नभः नाम १२८५
पुरः (स्थः) १३५९
पूषा सरस्वती १२८३
प्रयुक् आकूतिम् १२८१,१३३१
,, चित्तम् १३३१
प्रयुक्त मनः मेधाम् १३३१,१२८१
,, वाचो विधृतिम् १३३१
,, विज्ञानम् ,,
मनः मेधां प्रयुक् १२८१,१३३१
मेधां मनः प्रयुक् ,, ,,
वर्चः १२७९
वाचो विधृतिं प्रयुक् १३३१
विज्ञानं प्रयुक् ,,
वैश्वानरः ८५८,१२९१,१३३१
सजूः रात्र्या १२८०
,, सवित्रा ,,
सरस्वती पूषा १२८१
सूर्यरश्मिः १३५९
हरिकेशः ,,
होता १३७५
अग्निः (भूः) ३,५; १२७८
अग्निः (सेमः) ८,५६; १३१०
अग्नीषोमौ २,१५; १२७४ । ६,९; १२८७
अग्नेः पुरीषम् १५,३; १३४७
अग्नेः भागः १४,२४; १३४४
अघ्न्या नामानि ८,४३; १२४५

अदितिः १२४५
इडा ,,
काम्या ,,
चन्द्रा ,,
ज्योता ,,
मही ,,
रन्ता ,,
विश्रुतिः ,,
सरस्वती ,,
हव्या ,,
अङ्काङ्कं छन्दः १५,५; १३४९
अंकुपं छन्दः १५,४; १३४८
अजा ४,२६; १२८२
अजाः छन्दः १४,१९; १३४१
अथर्वा (सोमः) ८,५६; १३१०
अदितिः ९,३४; १३२१। १०,९; १३२६। १४,४८; १३६४
अदित्यै भागः १४,२३; १३४९
अधरारणिः ५,४; १२८३
अधिपतिः १५,१०; ८६१
अधिपतिः छन्दः १४,९; १३३८
अधीतम् १५,७; १३५१
अध्वरः ६,२३; १२९३
तपसः तनूः १२८२
प्रजापतेः वर्णः ,,
उरुशर्वा १३२६
उर्वशी १२८३
देवः १२९३
हविष्मान् १२९३
अनः (शकटम्) १,८; १२३४
देवानां वह्नितमम् ,,
,, जुष्टतमम् ,,
,, देवहूतमम् ,,
,, पवित्रतमम् ,,
वह्नितमं देवानाम् ,,
,, सस्नितमम् ,,
अनुष्टुप् छन्दः १४,१०,१८; १३३९, १३४१। १५,५; १३४९
अन्तरिक्षम् ३६,१७; ८७५ । ४,७; १२८१ । ६,२१; १२९२ । ७,२; १२९५ । २६,१; १३८४
अन्तरिक्षं छन्दः १४,१९; १३४२। १५,६; १३५०
अन्तर्यामः ग्रहः ७,२७; १३०२
अन्धः (सोमः) ८,५४; १३०८
अपानः २३,१८; १३७८
अपामार्गः ३५,११; १३९१
अब्दः १२,७४; १३३५
अथर्वोभिः सजूः ,,
अर्यमा १०,५; १३२५
अर्वा २२,२०; १२५७
अवभृथः २०,१८; १३७०
निचुम्पुणः १३७०
निचेरुः ,,
अश्वः २३,१३,१८-२०; १३७७, १३७८-८० ×
अश्वः (दक्षिणा) ७,४७; १३०६
अश्वः छन्दः १४,१९; १३४२
अश्वकः १३७८
गणपतिः गणानाम् १३७९
गणानां गणपतिः ,,
गर्भधः ,,
निधीनां निधिपतिः ,,
प्रियाणां प्रियपतिः ,,
राध्यः १३७७
रेतोधाः १३८०
वाजी ,,
वृषा १३७७, १३८०
हयः १३०६
अश्वस्तुतिः ९,९; १३१४
अश्विनौ १४,७; ८५८ । १९,१२; १२५२। २१,५३; १२५४। ३३,४८; १२६२ । ६,९; १२८७ । ९,३१; १३१९। १०,३१; १३३०। १२,७४; १३३५ । २१,४१-४३,६०; १३७१-१३७४। २८,४; १३९३

गुणबोधकपदानि ।

अध्वर्यू ८५८
उभा १२६२
दंसोभिः सजूः १३३५
नासत्या १२६२
भिषजा १२५२, १२५४
अष्टाचत्वारिंशः विवर्तः १४,२३; १३४३
अष्टादशः प्रतूर्तिः १४,२३; १३४३
असुः (सोमः) ८,५८; १३१२
असुरः (सोमः) ८,५५; १३०९
अस्थि [वसु] २०,१३; १३६८
अस्त्रियः छन्दः १४,१८; १३४१
अहः १५,६; १३५०
अहोरात्रे ६,२१; १२९२
आक्रमः १५,९; १३५३
आग्नीध्रम्ः ५,३०; ८४३
वैश्वदेवम् ,,
आग्रयणः ७,२४; १२९९। २८; १३०३
आच्छच्छन्दः १५,४-५; १३४८-४९
आज्यम् ५,३५; ८४४। ५,२; १२८३
ज्योतिः ८४४
विश्वरूपम् ,,
विश्वेषां देवानां समिद् ,,
आयुः १२८३
आत्मा प्रजापतिरूपेण ८,९; १३०७
आदित्यः ३१,२१; १२६०। १५,१७; १३६१ । २६,१; १३८४
पश्चात् (स्थः) १२६०
विश्वव्यचाः १३६१
आदित्याः १४,२०; ८५९ । १,५; १२७३ । २२; १२७६। ९,६४; १३२२। ११,५८; १३३१। २३,८; १३७६ । १५,६; १३५०
देवता ८५९
आदित्यानां भागः १४,२५; १३४५

× शतपथ-ब्राह्मणतः एतेषां मन्त्राणां देवता ' ईश्वरः' ।

आदित्यः ६,१९; ८४५
आपः ६,२४; ८४६। ३६,१७; ८७५। १,११; १२७०। ४,७; १२८१। ६,२३,२६; १२९३,१२९४। २०, १८; १३७० २६,१; १३८४
अग्रेगुवः १२७०
अग्रेपुवः ,,
देवीः १२७०,१२८१
बृहतीः १२८१
भागधेयीः ८४६
विश्वेषां देवानाम् १२९३
विश्वशम्भुवः १२८१
विश्वेषां देवानां भागधेयीः ८४६
शान्तिः ८७५
हविष्मतीः १२९३
आभिचारिकम् ७,१८;१२९८
आयुः ५,१; १२८३
आज्यम् ,,
आशीः ८,६०; १२४६
आश्विनं ग्रहः ७,२७; १३०२
आहवनीयः २,५; १२७३
इध्मः २,१; १२७२
अग्नये जुष्टः १२७२
आखरेष्ठः ,,
कृष्णः ,,
जुष्टः अग्नये ,,
इन्द्रः ५,३०; ८४३। ८,१५; ८४८। १४,२०; ८५९। १८,७६; ८६४। २७,५१; ८७३। १९,११; १२५२। २१,५३; १२५४। २८,११; १२५६। २,२१; १२७६। ५,७; १२८४। ७, १५,२१-२३;१२९७,१३००-१३०१। ९,१०-१२; १३१५-१३१७। ९,३३; १३११। १०,५; १३२५। ९; १३२६। २३; १३२८। २८; १३२९। ३१; १३३०। १७,४८; १३६४। २०, ३, ४१-४२, ६०; १३६७,१३७१-७२,१३७४। २८, २३; १३८६। ४३; १३८७। ३२, १५; १३८९। ३८,४; १३९३
देवः ८६४,१३८७
देवता ८५९
धामच्छद् ८६४
बृहद्वान् १३००
मघवान् ८४८
वयस्वान् १३००
वयोधाः १३८७
विशौजाः १३२९
वृद्धश्रवाः १३२६
सुत्रामा १३३०,१३७१,१३७४
इन्द्रः मरुतश्च ८,५५; १३०९ [सोमः]
इन्द्रः ८,५६; १३१० [सोमः]
इन्द्राग्नी २,१५; १२७४। ७,२३; १३०१; १२,५४; १३३४

उपमासूची।

कुमाराः विशिखाः इव १७,४८; १३६४ यत्र बाणाः संपतन्ति।
इन्द्राबृहस्पती ७,२३; १३०१
इन्द्रावरुणौ ७,२३; ,,
इन्द्राविष्णू ७,२३; ,,
इन्द्रस्य भागः १४,२४; १३४४
इष्टका १४,७; ८५८। २०; ८५९। २६; ८६०। १५,१४; ८६१। ५४; ८६१। + १४,९-१०,१७-१९,२३-२६; १३३८-४६। १५, ३-१९; १३४७-६३
अधिपत्नी ८६१
बृहती दिक् ,,
ईश्वरः २३,१९-२०; १३७९-८०×
गणपतिः गणानाम् १३७९
गणानां गणपतिः ,,
गर्भधः ,,
निधिपतिः निधीनाम् १३७९
निधीनां निधिपतिः ,,
प्रियपतिः प्रियाणाम् ,,
प्रियाणां प्रियपतिः ,,
रेतोधाः ,,
वाजी ,,
वृषा ,,
उक्थम् १५,१०; ८६१
वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे ,,
उक्थ्यम् ७,२८; १३०३
उक्थ्यग्रहः ७,२२; १३००
उखा ११,५८,६०,६५; ८५४-५६। ११,५८; १३३१
ध्रुवा अन्तरिक्षम् १३३१
ध्रुवा दिशः ,,
ध्रुवा द्यौः ,,
ध्रुवा पृथिवी ,,
उत्क्रमः १५,५; १३५३
उत्क्रान्तिः १५,५; ,,
उत्तरारणिः ५,१; १२८३
पुरूरवाः ,,
उदीची दिक् सम्राट् १५,१३; १३५७
उद्दिशः ६,१९; ८४५
उद्गाताः ॐ २३,२७; १३८१

उपमासूची।

गिरौ भारं हरन् इव २३,२७; १३८२। ऊर्ध्वं एवं उच्छ्रयतात्।
शीते वाते पुनन् इव २३,२७; १३८१। मध्वं एजतु।
उपभृत् २,१५; १२७४
उपांशुः ग्रहः ७,३ १२९६। २७;१३०१
उपांशुसवनम् (ग्रहः) ७,३; १२९६। २७; १३०१
उपावीः ६,७; १२८६
तृणविशेषः ,,

+ अतोऽनन्तरं ' इष्टका ' आरोपित देवतानां नामानि स्वतंत्रतया संगृहीतानि वर्तन्ते।
× ' उवट-महीधर-भाष्यकारमते एतयोः मन्त्रयोः 'अश्वः' देवता। शतपथब्राह्मणतः 'ईश्वरः' देवता।
ॐ शतपथब्राह्मणमते अत्र देवता 'राष्ट्रश्रीः'।

उर्वशी ५,२; १२८३
अधरारणिः ,,
उलूखलम् १,१४; १२७१
अद्रिः १२७१
ग्रावा ,,
पृथुबुध्नः ,,
वानस्पत्यः ,,
उषा १२,७४; १३३५
सजूः अरुणीभिः १३३५
उषासानक्ते २१,१७; ८६६
यह्वी ८६६
सुपेशसा ,,
उष्णिक् छन्दः १४,१०; १३३९। १४,१८; १३४१
ऋक् (वाक्) ३६,१; १३९२
ऋतवः १४,७; ८५८। २,३२; १२७७
षट् १२७७
घोरः (हेमन्तः) ,,
जीवः (वर्षाः) ,,
मन्युः (शिशिरः) ,,
रसः (वसन्तः) ,,
शोषः (ग्रीष्मः) ,,
स्वधा (शरद्) ,,
पितॄणां स्वरूपभूताः ,,
ऋभवः १४,२६; ८६०
ऋभूणां भागः १४,२६; १३४६
ऋषयः १५,१०; ८६१
एकत्रिंशः क्रतुः १४,२३; १३४३
एकविंशः धरुणः १४,२३; १३४३
एवः छन्दः १५,४-५; १३४८-१३४९
ऐन्द्रवायवः ग्रहः ७,२७; १३०२
ओषधयः ३६,१७; ८७५
,, १५,७; १३५१
ओषधिः ६,१५; १२८८
ककुप् छन्दः १४,९; १३३८। १५,४; १३४८
काश्यं छन्दः १५,४; १३४८
कुम्भं प्रति वचनम् २०,१७; १३६९
कृषिः छन्दः १४,१९; १३४२
कृष्णाजिनम् १,१४; १२७१
अदित्याः त्वक् ,,
शर्म ,,
क्षुरो भ्रजः छन्दः १५,४; १३४८
गर्भाः पञ्चविंशः १४,२३; १३४३
गायत्री छन्दः १४,१०; १३३९। १८; १३४१
गिरः छन्दः १५,५; १३४९
गार्हपत्यः अग्निः २,२०; १२७५
अदब्धायुः ,,
अशीतमः ,,
गौः छन्दः १४,१९; १३४२
गौः (दक्षिणा) ७,४७; १३०६
ग्नाः (देवपत्न्यः) ३१,४; १२६२
ग्रन्थिः ५,३०; ८४३
इन्द्रस्य ध्रुवः ,,
ग्रहः (सोमपात्रम्) ७,२१; ८४७। ८, ४७; ८५०। ७,१२, १२३९। १७, १२४०। २१, १२४१। ३; १२९६
मन्थिग्रहः १२४०
ग्रावाणः ६,२६; १२९४। ३८,१५; १३९४

उपमासूची।

विदुषः न यज्ञम् ६,२६; १२९४ शृणोतु मे हवम्।
घोषः १०,५; १३२५
चक्षुः ३६,१; १३९२
चतुर्विंशः योनिः १४,२३; १३४३
चतुष्टोमः धर्त्रम् १४,२३; १३४३
चतुस्त्रिंशः ब्रध्नस्य विष्टपम् १४,२३; १३४३
चत्वारिंशः स्तोमः १५,३;
चन्द्रमाः १४,२०; ८५९। २,२१; १२३६। २३,१३; १३७७
अतृष्णः १३७७
देवः १२३६
देवता ८५९
ब्रह्मा १३७७
मनसस्पतिः १२३६
चर्म १०,५; १३२५
सोमस्य त्विषिः ,,

उपमासूची।

तव इव १०,५; १३२५ मे त्विषिः स्यात्।
चात्वालः (अग्निः) ७,२६; १२४२ ५,९; १२८५
देवानां उत्क्रमणम् ,,
छदिः छन्दः १४,९; १३३८ १५,५; १३४९
छन्दांसि ६,२१; १२१२
जगती छन्दः १४,१०,१८; १३३९, १३४१
जनित्रं अग्नेः ५,२; १२८३
शकलम् ,,
जुहूः २,१५; १२७४
तनवः १५,७; १३५१
तन्द्रं छन्दः १४,९; १३३८। १५,५; १३४९
तृणम् ६,७; १२८६
उपावीः ,,
तेजः १५,७-८; १३५१-५२
त्रयस्त्रिंशः प्रतिष्ठा १४,२३; १३४३
त्रयोविंशः सम्भरणः १४,२३; १३४३
त्रिककुप् छन्दः १५,४; १३४८
त्रिणव ओजः १४,२३; १३४३
त्रिवृत् १५,९; १३५३
त्रिवृत् आशुः १४,२३; १३४३
त्रिष्टुप् छन्दः १४,१०-१८; १३३९, १३४१
त्वक् २०,१३; १३६८
आगतिः ,,
आनतिः ,,
त्वष्टा ६,७; १२८६
देवः ,,
दक्षिणाः ७,४५,४७; १३०४,१३०६
दक्षिणाग्निः २,२०; १२७५
संवेशपतिः ,,
दक्षिणा दिक् (विराट्) १५,११; १३५५
दर्भौ (वृषणौ) ५,२; १२८३

दिक्षः ६,१९; ८४५
दुन्दुभिः ९,११-१२; १३१६-१३१७
दूरोहणं छन्दः १५,५; १३४९
देवाः ४,११; ८४२ । १४,७; ८५८ । २०,११; ८६५ । २,७-११; १२३५-३६ । ६,११; १२३७ । ७,३,१२, १७; १२३८-१२४० । ८, १८; १२४३ । ९,३५-३६; १२४७-४८ । १५,५०; १२४९। १७,५६; १२५०। १८,६०; १२५१। १९,१२; १२५२। २०, १४; १२५३ । २६, १९, १२५५। २८,११, १२५६। २९,२०; १२५७ । ३१,१४-१५,२१; १२५८-१२६०। ३३,७,४८,८९; १२६१-१२६३ । ७,२२; १३०० । ९,३५-३६; १३२३-१३२४ । १७,५२; १३६५ । २१,६१; १३७५ । २३,८; १३७६ । २६,२; १३८५ । २९,४७; १३८८

गुणबोधकपदानि ।

अग्निनेत्राः १३२३
आज्यपाः १२५६
उत्तरासदः १३२३
उपरिषदः ,,
ऋतावृधः १३८८
गातुविदः १२३६
जुषाणाः १२५६
त्रयाः एकादश ८६५
त्रयस्त्रिंशाः ,,
त्रीणि शता त्री सहस्राणि त्रिंशत् नव च १२६१
दक्षंकतवः ८४२
दक्षिणासदः १३२३
दुवस्वन्तः १३२३
परमे व्योमन् १२५१
पश्चात्सदः १३२३
पुरःसदः ,,
बृहस्पतिपुरोहिताः ८६५
मनोजाताः ८४२
मनोयुजः ८४२
मन्थिपाः १२४०
मरीचिपाः १२३८
मरुन्नेत्राः १३२३
यमनेत्राः ,,
वयोनाधाः ८५८
विश्वदेवनेत्राः १२४७,१२४८,१३२३
शुक्रपाः १२३९
सधःस्थाः १२५१
सुराधसः ८६५
सोमनेत्राः १३२३
अनेहसा १३८८
विश्वशंभुवौ १३२६
शिवे १३८८

द्यावापृथिवी ४,७; १२८१ । ९,७; १२८४ । ६, १६, २१; १२८९, १२९२ । १०,९; १३२६ । २९,४७ १३८८ । ३८,१५; १३९४
द्यौः ३६,१७; ८७५ । २६,१; १३८४। १५,६; १३५०
द्यौः छन्दः १४,१९; १३४२
द्वाविंशः वर्चः १४,२३; १३४३
द्वेषः ६,१८; १२९०
धर्मः १५,६; १३५०
धाता ३१,१५; १३८९
धिषणाः ६,२६; १२९४
देवीः ,,
धीः ४,११; ८४२
दैवी ,,
यज्ञवाहस् ,,
वर्चोधाः ,,
सुतीर्था ,,
सुमृडीका ,,
ध्रुवम् ७,२८; १३०३
नक्षत्राणि छन्दः १४,१९; १३४२
नभः ६,२१; १२९२
दिव्यम् ,,
नवदशः तपः १४,२३; १३४३
निकायः छन्दः १५,५; १३४९
निर्ऋतिः ९,३५; १३२३
नृचक्षाः सोमः ८,५८; १३१२
नृचक्षसां भागः १४,२४; १३४४
न्यग्रोधः २३,१३; १३७७
पंक्तिः छन्दः १४,१०,१८; १३३९, १३४१
पञ्चदश भान्तः १४,२३; १३४३
पदपंक्तिः छन्दः १५,४; १३४८
पयः ३८,५; १३९३
परमात्मा २३,६३; १३८३
प्रथमः ,,
सुभूः ,,
स्वयम्भूः ,,
परमेष्ठी (सोमः) ८,५४; १३०८
परमेष्ठी छन्दः १४,९,१३३८
परिभूः छन्दः १५,४; १३४८
पर्जन्यः १५,१९; १३६३
अर्वाग्वसुः ,,
उपरि ,,
वैष्णव्यौ १२७०
पवित्रे (दर्भौ) १,१२; १२७०
पशुः ६,९,१५; १२८७,१२८८
पितरः २,३२; १२७७ । १२,४५; १३३३ । २९,४७; १३८८ । ३५, १५; १३९४ ।
ऊर्ध्वबर्हिषः १३९४
घर्मपावानः ,,
सोम्यासः १३८८
पितरः नाराशंसाः (सोमः) ८,५; १३१२
पुरुषः (जगद्बीजम्) ३१, १४-१५; १२५८-१२५९ । १३,३८; १३३७
मध्ये अमेः १३२७
वेतसः ,,
हिरण्ययः ,,

उपमासूची ।

सरितः न १३,३८; १३३७ धेनाः सम्यक् स्रवन्ति ।
पुरूरवाः (उत्तरारणिः) ५,२, १२८३

पुष्करपत्रम् १३,२; १३३६
अग्नेः योनिः ,,
अपां पृष्ठम् ,,
पुष्करे वर्धमानः ,,
पूतभृदाहवनीयौ ७,२८; १३०३
पूषा ३३,४८; १२६२। ६,९; १२८७। ९,३२; १३२०। १०,५,९; १३२५-१३२६। १८,३७; १३६६। २०,३; १३६७। २९,४७; १३८८। ३५,१५; १३९४
विश्वेवेदाः १३२६
पूषा (सोमः) ८,५४; १३०८
पृथिवी ३६,१७; ८७५। ३,५; १२७८। ५,९; १२८५। १०,२३; १३२८। १५,६; १३५०। २६,१; १३८४
अष्टमी १३८४
तप्तायनी १२८५
देवयजनी १२७८
भूः ,,
भूतसाधनी १३८४
माता १३२८
वित्तायनी १२८५
पृथिवी छन्दः १४,१९; १३४२
प्रच्छत् छन्दः १५,५; १३४९
प्रजापतिः ९,२४,३४; १३१८,१३२१। १३,९; १३२६। ११,६६; १३३१। २३,८,६३; १३७६,१३८३। ३१,१५; १३८९
प्रजानन् १३१८
मनुः १३३१
वाजस्य प्रसवः १३१८
सम्राट् ,,
प्रजापतिः (सोमः) ८,५४; १३०८
प्रजापतिः छन्दः १४,९; १३३८
प्रतिपद् १५,८; १३५१
प्रतिमा १४,१८; १३४१
प्रतिरवाः ३८,१५; १३९४
प्रतीची दिक् सम्राट् १५,१२; १३५६
प्रदिशः ६,१९; ८४५
प्रमा १४,१८; १३४१
प्रवृत् १५,९; १३५३
प्रस्तरः २,५; १२७३
ऊर्णम्रदाः ,,
स्वासस्थः ,,
प्राची दिक् राज्ञी १५,१०; १३५४
प्राणः २३,१८; १३७८। ३६,१; १३९१
बर्हिः २,१; १२७१। २,२२; १२७६
जुष्टं स्रुग्भ्यः १२७१
विवलं छन्दः १४,९; १३३८
बृहत् छन्दः १५,५; १३४९
बृहती छन्दः १४,९,१८; १३३८, १३४१
बृहती दिक् अधिपत्नी १५,१४; १३५८
बृहस्पतिः २,१२-१३; ८३९-८४०। १४,२०; ८५८। १५,१०; ८६१। १८,७६; ८६४। ४,७; १२८१। ९, १०-११, ३२; १३१५-१३१७, १३२०। १०,५; १३२५। १२, ५४; १३३४। १७,४८; १३६४
देवः ८६४
देवता ८५८
धामच्छद् ८६४
प्रतिधर्ता हेतीनाम् ८६१
हेतीनां प्रतिधर्ता ,,
ब्रह्मणस्पतिः ३३,८९; १२६३। १७,५१; १३६५
ब्रह्मा २,१२; ८३९। १८,७६; ८६४। ३६,१७; ८७५। १०,२८; १३२९
देवः ८६४
धामच्छद् ,,
ब्राह्मणः ७,४६; १३०५
आर्षेयः ,,
ऋषिः ,,
पितृमान् ,,
पैतृमत्यः ,,
सधादुदक्षिणः ,,
ब्राह्मणासः २९,४७; १३८८
भक्षः (सोमः) ८,५८; १३१२
भगः ३३,४८; १२६२। १०,५; १३२५
भुवः (वायुः) ३,५; १२७८
भूः (अग्निः) ३,५; १२७८
भ्रजः छन्दः १५,५; १३४९
मज्जा २०,१३; १३५८
आनतिः ,,
मनः ३६,१; १३९२
मनः छन्दः १४,१९; १३४२। १५,४; १३४८
मन्थी ७,१८; १२९८
मन्थी (सोमः) ८,५७; १३११
मयन्दं छन्दः १४,९; १३३८
मरुतः १२,७०; ८५७। १४,२०; ८५९। ३३,४८; १२६२। २,२२; १२७६। ९, ३२; १३२०। १०, २१, २३, १३२७-१३२८
देवता ८५९
मारुतं शर्धः १२६२
मा छन्दः १४,१८; १३४१
मांसम् २०,१३; १३७८
उपनतिः ,,
मित्रः ३३,४८; १२६२। ९,३३; १३२१
मित्रः (सोमः) ८,५५; १३०९
मित्रस्य भागः १४,२४; १३४१
मित्रावरुणौ ६,२१; १२९२। ७,२३; १३०१। १०,९,२१; १३२६-१३२७
धृतव्रतौ १३२६
मैत्रावरुणं ग्रहः ७,२७; १३०२
यजमानः (स्फ्यः) १०,२८; १३२९
अभिभूः ,,
बहुकारः ,,
भूयस्करः ,,
श्रेयस्करः ,,
यजमान-आशीः ३,५; १२७८

उपमासूची ।

द्यौः इव भूम्ना ३,५; १२७८ अहं भूयासम्।
पृथिवी इव वरिम्णा ३,५; १२७८ अहं भूयासम्।

यजुः (मनः) ३६,१; १३९२
यज्ञः ८,६०; १२४६ । ६,२१; १२९१। १५,१८; १३६२
उत्तरात् १३६२
संयद्वसुः ,,
यन्ता १८,३७; १३६६
यमः १२,४५; १३३३
यमः (सोमः) ८,५७; १३११
यमस्यः भृत्याः १२,४५; १३३३
नूतनाः ,,
पुराणाः ,,
यवानां भागः १४,२६; १३४६
यामः (प्राणः) ३६,१; १३९२
रक्षः १,१४; १२७१ । ६,१६; १२८९
रज्जुः ५,३०; ८४३
इन्द्रस्य स्यूः ,,
रथः १०,२१; १३२७
इन्द्रस्य वज्रः ,,
रथन्तरं छन्दः १५,५; १३४९
रात्रिः १५,६; १३५०
रायस्पोषः १५,७; १३५१
रुद्रः ३३,४; १२६२ । १०,२८; १३२९
सुशेवाः ,,
रुद्रः (सोमः) ८,५८; १३१२
रुद्राः १४,२०; ८५९ । २,५; १२७३ । ९,३४; १३२२ । ११,५८; १३३१ । २३,८; १३७६
देवता ८५९
लेपः ७,३; १२३८
लोकं पृणा १२,५४; १३३४
घृणाः ,,
लोमानि २०,१३; १३६८
प्रयतिः ,,
वनस्पतिः २१,६०; १३७४
सूपस्थाः ,,
देवः ,,
वनस्पतयः ३६,१७; ८७५ । ९,१२; १३१७ । २८,४३; १३८७
वपाश्रपण्यौ ६,१६; १२८९
वयः छन्दः १५,५; १३४९
वयस्कृत् छन्दः १५,५; ,,
वरिवः छन्दः १५,४; १३४८ १५,५; १३४९
वरुणः १४,२०; ८५९ । ३३,४८; १२६२ । ९,३३; १३२१ । १०,२८; १३२९ । २०,१८; १३७०। २६,१; १३८४ । ३२,१५; १३८९
देवता ८५९
सत्यौजाः १३२९
वरुणः (सोमः) ८,५६; १३१०
वसा ६,१९; ८४५ । ६,१८; १२९०
अन्तरिक्षस्य हविः ८४५
रेट् १२९०
वसवः १४,२०; ८५९ । ८,१८; १२४३ । २,५,२२; १२७३,१२७६। ९,३४; १३२२ । ११,५८; १३३१। २३,८; १३७६ । १५,६; १३५०
देवता ८५९
भरमाणाः १२४३
वहमानाः ,,
वसूनां भागः १४,२५; १३४५
वाक् ३६,१; १३९२
वाक् कल्याणी २६,२; १३८५
वाक् छन्दः १४,१९; १३४२
वातः १४,२०; ८५९
देवता ,,
वातः (सोमः) ८,५८; १३१२
वायुः २३,१३; १३७७ । २६,१; १३८४ । ३२,१५; १३८९ । ३५,३; १३९०
ऊर्ध्वनभाः १२८९
दक्षिणा १३६०
मारुतः १२८९
विश्वकर्मा १३६०
वायुः (भुवः) २,५; १२७८ । ६,१६; १२८९ । १५,१६; १३६०
वायुः (सोमः) ८,५७; १३११
वावाता× २३,२६; १३८१

उपमासूची।

गिरौ भारं हरन् इव १३८१ ऊर्ध्वा एनां उच्छ्रापय ।
शीते वाते पुनन् इव १३८१ अस्यै मध्यं एधताम् ।
वासस् (दक्षिणा) ७,९७, १३०६
विदिशः ६,१९; ८४५
विधर्ता १५,१०; ८६१
विधाः १४,७; ८५८
विधृती (तृणद्वयम्) २,५; १२७३
वियत् छन्दः १५,५; १३४९
विराट् छन्दः १४,१०,१८; १३३९, १३४१
विवधः छन्दः १५,५; १३४९
विवृत् १५,९; १३५३
विशालं छन्दः १४,९; १३३८ । १५,५; १३४९
विश्वकर्मा (सोमः) ८,५४; १३०८
विश्वे देवाः २,१३,१८; ८४०-८४१ । ५,३०,३५; ८४३-८४४ । ६,१९, २४; ८४५-८४६ । ७,२१; ८४७ । ८,१९,४७,५७; ८४९-८५१ । ८,५८; ८५२ । ९,३३; ८५३ । १०,५८,६०,६५; ८५४-८५६ । ११,७०; ८५७। १४,७,२०,२६; ८५८-८६०। १५,१४,५४; ८६१-८६२। १७,७३; ८६३ । १८,७६; ८६४ । २१,१७, ८६६ । २२,५,२८; ८६७-८६८। २४,२७; ८७० । २५,५-६; ८७१-८७२। २७,५२; ८७३ । २९,६०; ८७४ । ३६,१७; ८७५ । ३९,६; ८७६ । २,११; १२७६ । ९,३३; १३२१ । ११,५८; १३३१ । ३६,१; १३९२। ३८,१५; १३९४

× शतपथब्राह्मणमते अत्र देवता 'श्रीः'

गुणबोधकपदानि ।

अधिपतयः ८६१
अनुमताः ८५७
अमर्त्याः ८६६
उशन्तः ८४९
गृणन्तः ८४१
घृतपावानः ८४५
जक्षित्रांसः ८४९
जागताः ८७४
पपिवांसः ८४९
परिधेयाः ८४१
प्रस्तरेष्ठाः ,,
बृहन्तः ,,
वसापावानः ८४५
वैरूपाः ८७४
वैश्वानराः ८५४-८५६, १३३१
शान्तिः ८७५
संस्रवभागाः ८४१
सचेतसः ८६४
सप्तदश ८७४
सर्वे ८६७
सीताः ८५७
स्थेषाः ८४१

निधो देवाः (सोमः) ८,५७-५८; १३११-१३१२
विष्टारपंक्तिः छन्दः १५,४; १३४८
विष्णुः ३३,४; १२६१ । ७,११; १३०० । ९,३१; १३१९
विष्णुः (सोमः) ८,५७; १३११
विष्णुः शिपिविष्टः (सोमः) ८,५७; १३११
,, सरन्तियः (,,) ८,५५; १३०९
,, शिपिविष्टः ,, ८,५५; १३०९
विष्णूवरुणौ (सोमः) ८,५९; १३१३
आप्रीतौ १३१३
पूर्वहूतौ ,,
वीरतमौ ,,
शविष्ठौ ,,
विष्पर्धाः छन्दः १५,५; १३४९
वृषणौ (दर्भौ) ५,२; १२८३
वृष्टिः १५,६; १३५०
वेदिः २,१; १२७२
बर्हिषे जुष्टा ,,
वैश्वानरः १२,७४; १३३५
सजूः इडया ,,
सजूः घृतेन ,,
व्यचः छन्दः १५,४; १३४८
व्यानः २३,१८; १३७८
शाकलम् (अग्नेः जनित्रम्) ५,२; १२८३
,, ७,१८; १२९८
शम् ६,१५; १२४८
शम्भूः छन्दः १५,४; १३४८
शल्मलिः २३,१३; १३७०
शान्तिः ३६,१७; ८७५
शान्तिमन्त्राः ३६,१; १३९२
शुक्रः (सोमः) ८,५७; १३११
शुक्रामन्थिनौ ७,१७; १२४०
,, ,, (ग्रहः) ७,२७; १३०२
श्रीः (राष्ट्रश्रीः) × २३,२६-२७; १३८१-८२
श्रुतम् १५,७; १३५१
श्रोत्रम् ३६,१; १३९२
श्लोकः १०,५; १३२५
षट्त्रिंशः नाकः १४,२३; १३४३
षोडशी स्तोमः १५,३; १३४७
संयत् छन्दः १५,५; १३४९
संस्तुप् छन्दः १५,५; ,,
संक्रामः १५,९; १३५३
सतोबृहती छन्दः १४,९; १३३८
सत्यम् १५,६; १३५०
सदः ५,३०; ८४३
ऐन्द्रम् ,,
सप्तदशः व्योमा १४,२३; १३४३
समाः छन्दः १४,१९; १३४२
समिद् २,५; १२७३
समुद्रः ६,२१; १२९२
समुद्रः (सोमः) ८.५९; १३१३
समुद्रः छन्दः १५,४; १३४८
सम्पत् १५,८; १३५२
सरस्वती १९,२२; १२५२ । २१,५३; १२५४ । ३३,४८; १२६२ । २,२०; १२७५ । १०,५,३१; १३२५, १३३० । १८,३७; १३६६ । २०,३; १३६७ । २१,४१-४३,६०; १३७१-७४ । ३८,४; १३९३
भिषक् १२५२
यशोभगिनी १२७५
वाचा १२५२
सरिरं छन्दः १५,४; १३४८
सर्वगु ३६,१७; ८७५
शान्तिः ,,
सलिलः (सोमः) ८,५९; १३१३
सविता २,१२-१३; ८३९-४० । ६,९,२१,२६; १२८७, १२९२, १२९४ । ९,१०,३२; १३१५, १३२० । १०,५,२८; १३२५, १३२९ । १८,३७; १३६६ । २०,३; १३६७ । ३५,३; १३९०
देवः ८३९, १२८७, १२९२, १२९४, १३१५, १३६६-६७
सत्यप्रसवं १३१५, १३२९
सत्यसवः १३१५
सविता (सोमः) ८,५४; १३०८
सवितुः भागः १४,२५; १३४५
सविंशः अभीवर्तः १४,२३; १३४३
सवृत् १५,९; १३५३
सामनी १५,१०; ८६१
शाक्करैवते ,,
सिन्धुः (सोमः) ८,५९; १३१३
सिन्धुः छन्दः १५,४; १३४८
सीता १२,७०; ८५७

× एतयोः मन्त्रयोः सर्वानुक्रमण्यां 'वावाता,' 'उद्गाता' देवते निर्दिष्टे । उपमानानि तत्र द्रष्टव्यानि ।

अनुमता विश्वैः देवैः ८५७
ऊर्जस्वती ,,
पयसा पिन्वमाना ,,
सूनृता ३३,८९; १२६३
देवी ,,
सूरः ११,७४; १३३५
सजूः एतशेन ,,
सूर्यः १४,२०; ८५९ । ३,९-१०; ११७९-८० । ६,२३; ११९३ । ३५, ३; १३९०
जुषाणः १२८०
ज्योतिः १२७९
देवता ८५९
सजूः रात्र्या १२८०
सजूः सवित्रा ,,
सूर्यः (स्वः) ३,५; ११७८
हविष्मान् ,,
सोमः ८,५७-५८; ८५१-५२ । ७,२२; १२४१ । ४,२६; १२८२ । ५७; १२८४ । ६,२१,२६; ११९२, ११९४ । ७,२; ११९५ । ८,९,५४; १३०७-८। ९,३१; १३१९ । १०,५, २३,३१; १३२५,१३२८,१३३०।

गुणबोधकपदानि ।

अंशुः १२८४
अंशुषु न्युप्तः ८५१
अतिस्रुतः १३३०
अमृतम् १२८२
इन्दुः १३०७
इन्द्रस्य युज्यः सखा १३३०
इन्द्रियावान् १३०७
उन्नीतः चमसेषु ८५२
चन्द्रः १२८२
चमसेषु उन्नीतः ८५२
देवः १२८४,१३०७
देवाव्यः १२४१
न्युप्तः अंशुषु ८५१
पनीवान् १३०७
पवित्रेण पूतः १३३०
प्रत्यट् ,,
बृहस्पतिसुतः १३०७
राजा १२९४
वनस्पतिः १३२८
वायुः १३३०
शुक्रम् १२८२
सखा इन्द्रस्य १३३०
सोमधिकर्णी ४,२६; ११८२
सोमांशुः ७,३; १२९६
स्तोमः १४,२३; ८६०
त्रयस्त्रिंशः ,,
स्तोमौ १५,१०; ८६१
त्रिणव त्रयस्त्रिंशौ ,,
स्पृयः १०,२; १३२९
इन्द्रस्य वज्रम् ,,
स्वर् (सूर्यः) ३,५; १२७८
स्वधितिः ६,१५; १२८८
स्वरुः ६,२१; १२९२
हिरण्यम् (दक्षिणा) ७,४७; १३०६
हिरण्यं छन्दः १४,१२; १३४२
हृदयम् (पशु) ६,१८; १२९०
होतारा दैव्या २१,५३; १२५४
होत्राः ७,१५; १२९७
मरुत्वः ,,
सुप्रीताः ,,
सुहुताः ,,
स्विष्टाः ,,

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(३) अथर्ववेद-मन्त्राणाम् ।

अंशः ६,४,२; ९३६
अग्निः १,९,१-२; ८७७ ८७८ । २, ३४,३; ८८९ । ३,८,१,३; ९०२, ९०४ । ३,१५,३-६,८; ९१७-२०, ९२१ । ५,८,१,३; ९२३,९२५ । ६, ३,२; ९३३।५,३; ९३८। ७३,१-२; ९५१-५२।९७,१;९५७।७,७०,४-५; ९६५-९६६ । ९,१६,२; ९७१ (बहुवचनम्)। १९,१७,१; ९७२। १८,१, ९८२ । २४,८; १०४३ । ५,३,३; १०४४ । १,१६,१-२; १०४८-४९ । ७,२४,१; १०६८ । १९,९,११-१२; १०७९-८० (बहुव०) । ४३,१; १०८३ । २,१२,८; १०९८। २८,५; ११०१।३,२१,३; १११५। १९,११, ६; ११२० । २७,५,७,१५; ११५९, ११६१,११६९ (ब०व०) । ६,१०,१; ११७० ।५३,१; ११७९ । १०३,२-३; ११८५-८६ । १२०,१; ११८७

गुणबोधकपदानि ।

अधिपतिः ११७०
अभिभूः ९५७
अजयेन वर्चयन् ११५९
इद्धः सजातैः ९०४
गार्हपत्यः ११८७
घोरः ९६६
जातवेदाः १०९८

*

तुरीयः १०४८
देवः ८८९,९६५
प्रजया संरराणः ८८९
यातुहा १०४८
वर्धयन् आज्येन ११५९
वसुवान् ९८१
विश्वकर्मा ८८९
संरराणः प्रजया ,,
सजातैः इद्धः ९०४

उपमासूची ।

तिष्ठते अश्वाय इव ९२१ विश्वाहा ते इत् सदं भरेम ।

अग्नीषोमा ६,९३,३; ११७८
अंगिरसः २,१२,४-५; १०९४-९५
आङ्गिरसानां आद्याः पञ्चानुवाकाः १९, २२,१; ११२१
अदितिः ३,८,२; ९०३ । ६,३१,१; ९३१ । ६,४,१-२; ९३५-९३६। ६८,२; ९४९ । २,१८,५; ११०१। ३,२१,१; १११३ । ६,११,२; ११८८

गुणबोधकपदानि ।

जनित्रम् ११८८
देवी ९०३
मध्यमेष्ठाः सजातानाम् ,,
शूरपुत्रा ,,
सजातानां मध्यमेष्ठाः ,,

उपमासूची ।

माता इव ११०१ अस्मै शर्म यच्छ ।

अनुमतिः ७,२४,१; १०६८
अन्तकः १९,९,७; १०७५
अन्तरिक्षम् ६,४०,१; ९३९। १९,१५, ५; ९६८ । १७,२; ९७३ । १९,२; ९९३ । ५,३,३; १०४४ । १९,९, १,१४; १०६९,१०८२। २,११,१; १०९१ । १९, २७, ३; ११५७ [बहुवचनम्] । ६,१०,२; ११७१। १२०,१-२; ११८७-८८

गुणबोधकपदानि ।

उरु १०६९, १०९१
उरुलोकः १०४४
त्रीणि ११५७
भ्राता ११८८
अपां नपात् ६,३,१,३; ९३२,९३४
अभिचाराः १९,९,९; १०७७
अमृतम् १९,१९,१०; १००१
अर्यमा ६,४,२; ९३६ । १९,९,६; १०७४ । ६,१०३,१; ११८४
अश्विना ३,४,४; ८९८ । ६,३,३; ९३४ । ४,३; ९३६ । १९,१६,२; ९७१ । २०,१; १००३ । ३,२२,४; १११६ । १९,२७,१५; ११६९ । ६; १०३,१; ११८४
देवाः ९३४
पुष्करस्रजा १११६
शुभस्पती ९३४
अष्टर्चाः १९,२३,५; १०११
अष्टादशर्चाः १९,२३,१५; १०२१
अहः १०,२०,४; १००६
आदित्यः १९,९,१०; १०७८
आदित्याः १,९,१; ८७७ । ३,८,३; ९०४ । ६,४८,१; ९४८ । ७४,३; ९५६ । १९,१६,२; ९७१ । १७,४; ९७५ । ६,११४,१-२; १०६५-६६। १९,९,११; १०७९ । २,१२,४; १०९४ । २,२७,१५; ११६९

गुणबोधकपदानि ।

अहृणीयमानाः ९५६
उग्राः ,,
यजत्राः १०६६
यज्ञवाहसः ,,

उपमासूची ।

यथा आदित्याः अहृणीयमानाः वसुभिः मरुद्भिः संबभूवुः ९५६ एवा इह इमान् जनान् संमनसः कृधि ।

आपः ६,६२,१; ९४२ । ६८,२; ९४९। १९,१७,६; ९७७ । १८,६; ९८७ । ९,१; १०६९ । ४३,७; १०८९ । ४,८,१-७; ११४२-४८ । १९,२७, ३; ११५७ । २७,९; ११६३

गुणबोधकपदानि ।

इषिरः ९४२
उदन्वतीः १०६९
ओषधीमतीः ९७७,९८७
त्रिवृतः ११५७
दिव्याः ११४५-४७
पयस्वतीः ११४५,११४७
परिष [स] स्वजानः व्याघ्रं सिंहम् ११४८

उपमासूची ।

सुभुवः समुद्रं न ११४८ अप्सु अन्तः तस्थिवांसं द्विपिनं मर्मृज्यन्ते ।

आशाः १९,१५,६; ९६९
सर्वाः ,,
आशीः २,३४,५; ८९१ । १९,२४,५-६; १०४०-४१ । २७,८; ११६२
इन्द्रः १,९,१; ८७७ । ३,३,२-३,६; ८९२-९३,८९५ । ४,१; ८९६ । ८,२; ९०३ । १०,१२; ९१३ । १५,१,६; ९१५,९२० । ५,८,२,४-९; ९२४, ९२६-३१। ६ ४०,२-३; ९४०-४१। ९७,१,३; ९५७-९५८ । ९९,१-३; ९५९-९६१ । ७,९८,१; ९६७ । १९,१६,१; ९७० । १७,८; ९७९ । १८,८; ९८९ । १९,९; १००० । २०,३; १००५। २४,२,७-८; १०३७, १०४२-४३ । १,१६,२; १०४९ । १९,१; १०५२ । २६,२; १०५७ । ७,२४,१; १०६८ । १९,९,६,१२; १०७४,१०८० । ४३,६; १०८८ । २,११,३; १०९३। २,३६,४; ११०२। ३,१९,१-८; ११०५-१२ । १९,२७, १,९; ११५५,११६३। ६,१०३,२-३; ११८५ ८६। २०,१२८,५; ११९६

गुणबोधकपदानि।

अभिभूः ९५७
अरातिं नुदन् ९१५
ईशानः ,,
उग्रः ९३१,९५८-९५९
उपसद्यः ८९६
एकजः ९५९
एकराट् ८९६
ओजसा प्रमृणन् ९५८
गोजितः ,,
ग्रामजितः ,,
चेत्ता ९५९
जयन् ९५८
तवस्तरः १०४२
दस्यूनां हन्ता ९१३
दूरे चित् सन् ८९२
धनदाः ९१५
नमस्यः ८९६
नुदन् अरातिम् ९१५
पुरएता ,,
पुरुनामा ९५९
प्रमृणन् ओजसा ९५८
मघवान् ११०२,१११०,११९६
मरुत्वान् ९७९,९८९
महिमा ९१३
राजा ८९६
वज्रबाहुः ९५८
वणिक् ९१५
विप्रः ८९२
विशाम्पतिः ८९६
वीरः ९५८
वृत्रहा ९२९,९३१
शचीपतिः ९१३,९७०
सखा १०५७
हन्ता दस्यूनाम् ९१३

उपमासूची।

अर्वे वृकः इव ९२६ (शत्रुं) मथ्नीत।
यथा आखरः मृगाणां सुषदा बभूव११०२
एषा नारी सं श्रिया आविराधयन्ती अस्तु।
यथा इन्द्रः अधस्पदं चक्रे ९३० तथा अहं अमून् अधरान् कण्वे।
कुलिशेन इव वृक्षम् १०९३ तं वृश्चामि।
इन्द्राग्नी ३,३,५; ८९४। १९,१६,१; ९७१। २०,१; १००३। २७,१५; ११६९। ६,१०३,१-३; ११८४-८६
इन्द्राणी १,२७,१-४; ८८३-८८६

उपमासूची।

वेणोः अद्रा इव ८८५ अभितः अथायवः असमृद्धाः।
इन्द्रापूषणा ६,३,१; ९३२
इन्द्रियाणि १९,९,५; १०७३
पञ्च ,,
ब्रह्मणा संशितानि ,,
मनः षष्ठानि ,,
संशितानि ब्रह्मणा ,,
ईश्वरः १,१९,१-४; १०५१-१०५५
उत्तमाः १९,२२,१२; ११३२
उत्तराः १९,२२,१३; ११३३
उत्पाताः १९,९,७; १०७५
पार्थिवान्तरिक्षाः १०७५
उपोत्तमाः १९,२२,११; ११३१
उरुगायः २,१२,१; १०९१
अद्भुतः ,,
उल्का १९,९,८-९; १०७६-७७
उषासानक्ता ६,३,३; ९३४
ऋषभः १९,२७,१; ११५५
ऋषयः १९,२२,१४; ११३४
एकर्चाः १९,२३,२०; १०२६
एकादशर्चाः १९,२३,८; १०१४
एकानृचाः १९,२३,२२; १०२८
एकाष्टका ३,१०,५; ९०९। १०,१२-१३; ९१३-९१४

गुणबोधकपदानि।

इन्द्रपुत्रा ९१४
दुहिता प्रजापतेः ,,
प्रजापतेर्दुहिता ,,
सोमपुत्रा ,,
एकोनविंशतिः १९,२३,१६; १०२२
ओषधयः १९,१९,५; ९९६। ३,२३,६; १०६३। १९,९,१,१४; १०६९, १०८२। २,३६,८; ११०४[एक व.]

गुणबोधकपदानि।

दैवीः १०६३
यासां द्यौः पिता ,,
,, पृथिवी माता ,,
,, समुद्रः मूलम् ,,
वीरुधः ,,
कृताकृतम् १९,९,२; १०७०
कृत्याः १९,९,९; १०७७
क्षुद्राः १९,२३,११; १०२७। २२,६; ११२६
क्षेत्रस्य पत्नी २,१२,१; १०९१
गणाः १९,२२,१६; ११३६
गावः १९,९,८; १०७६। १४,१,५३-५८; ११९०-११९५
लोहित क्षीराः १०७६
ग्रहाः १९,९,७,१०; १०७५,१०७८
चान्द्रमसाः १०७८
दिविचराः १०७५
ग्रावा ६,३,२; ९३३
चक्षुः ६,१०,३; १०७२
चन्द्रमाः चन्द्रः वा १,२७,१-४;८८३-८६। १९,१९,४; ९९५। ३,२३,१-६; १०५८-६३। १९,४३,४; १०८३ (चन्द्रः)। ३,१९,१-८; ११०५-१२। ४,८,१-७; ११४१-४८। ७, ११८,१; ११४९।१९,२७,२; ११५६ (चन्द्रः)। ५,२७,१-१५; ११५५-६९। ६,१९,१-३; ११७३-७५

गुणबोधकपदानि।

राजा ११४९
वृत्रहा ११५६
सोमः ११४९
चतुर्ऋचः १९,२३,१; १००७
चतुर्दशर्चाः १९,२३,११; १०१७

जरिमा २,२८,३; १०९९
जातवेदाः ३,१०,६; ९१० । १५,८; ९२२ । ५,८,२; ९२४ । १९,१६,१; ९७१ । ३,२२,४; २११६ । १९,१७, १५; ११६९
तृचाः १९,२३,१९; १०२५
तृतीयाः शंखाः १९,२२,१०; ११३०
त्रयोदशर्चाः १९,२३,१०; १०१६
त्रिवृत् १९,१७,१-१५; ११५९-११६९
त्वष्टा ३,८,२; ९०३ । ६,३,३; ९३४। ६,४,१; ९३५
देवः ९३४
दक्षिणाः (दानानि) १९,१९,६; ९९७
दधत्यं सीसम् १,१६,२-४; १०४९-५१
दर्वी ३,१०,७; ९११

गुणबोधकपदानि ।

पूर्णा ९११
यज्ञान् सम्भुञ्जती ,,
सम्भुञ्जती यज्ञान् ,,
सुपूर्णा ,,

दशर्चाः १९,२३,७; १०१३
दिवा १९,१५,६; ९६९ । १९,१९ ३; ९९४
दिशः १९,२०,२; १००४
देवाः [पश्य 'विश्वे देवाः'।]
देवजनाः ६,१९,१; ११७३। ९३,१; ११७६
देवताः १९,२७,१०; ११६४
त्रयस्त्रिंशत् ,,
देवयानाः पन्थानः ३,१५,२; ९१६
देशोपसर्गाः १९,९,९; १०७७
द्यौः ६,३,१; ९३२ । १९,९,१,१४; १०६९,१०८२ । २,२८,४; ११००। १९,११,६; ११२०। २७,३; ११५७। ६,१०,३; ११७२। ५३,१; ११७९। १२०,१-२; ११८७-११८८

गुणबोधकपदानि ।

तिस्रः ११५७
पिता ११८७,११८८
प्रचेताः ११७९
बृहत् सादनम् ११२०
शान्ता १०६९
सादनं बृहत् ११२०

द्यावापृथिवी ३,४,५; ८९९ । ६,३,२; ९३३ । ४०,१; ९३९ । ६२,१; ९४२ । १९,१५,५; ९६८ । १७, ५; ९७६ । २०,४; १००६। ३,२३, १-६; १०५८-६३। २, १२, १, ५; १०९१,१०९५ । २,२८,४; ११००

गुणबोधकपदानि ।

उभे ८९९,९६८
ऋतावरी ९४२
पयसा पयस्वती ,,
यज्ञिये ,,
शिवे ८९९
संविदाने ११००

द्यौष्पिता ६,४,३; ९३७
द्वादशर्चाः १९,२३,९; १०१५
द्वितीयाः शङ्खाः १९,२२,९; ११२९
धनपतिः २,३६,६; ११०३
धाता ३,८,२; ९०३ । १९,२०,१; १००३ । १९,९,१२; १०८०
धूमकेतुः १९,९,१०; १०७८
धेनुः ३,१०,१; ९०८
नक्तम् १९,१५,६; ९६९
नक्षत्राणि १९,१९,४; ९९५। १९,९,९; १०७७ (एकवचनम्) । ६,१०,३; ११७२
उल्काभिहतम् १०७७
नद्यः १९,१९,७; ९९८
नवर्चाः १९,२३,६; १०१२
नावाः १९,२७,४; ११५८
त्रयः ,,
निखाताः १९,९,९; १०७७
वल्गाः ,,
निर्ऋतिः ७,७०,१-२; ९६२-९६३ । ६,६३,१-२; ११८१-११८२
देवी ११८१
निर्हेतम् १९,९,८; १०७
नीलनखाः १९,२२,४; ११२
पञ्चदशर्चाः १९,२३,१२; १०१
पञ्चर्चाः १९,२३,२; १००
पतत्रिणः १,१५,१-४; ८७९-८८
पत्नी क्षेत्रस्य २,१२,१; १०९
पर्यायिकाः १९,२२,७; ११२
पर्जन्यः ६,४,१; ९३
पवमानः ६,१९,१-२; ११७३-११७
पशवः ३,१०,६; ९१

गुणबोधकपदानि ।

ग्राम्याः ९१
विश्वरूपाः ,,
सप्त ,,

पशुपतिः २,३४,१; ८८
पितरः २,१२,४-५; १०९४-९
सोम्यासः १०९
पूर्वा रूपाणि १९,९,२; १०७
पूषा १,९,१; ८७७ । १९,२०,१ १००३
पृथक् सहस्रौ १९,२२,१९; ११३९
पृथिवी ३,८,१; ९०२ । १९,१९,१ ९९२।१९,९,१,१४; १०६९,१०८२ २,२८,४; ११०० । १९, २७, ३ ११५७ [बहुवचनम्] । ६, १, १ ११७० । ५३,१; ११७९ । १२०,१ ११८७

गुणबोधकपदानि ।

तिस्रः ११५७
प्रचेताः ११७९
माता ११८९
शान्ता १०६९

प्रजाः १९,१९,११; १००
प्रजापतिः ३,१०,१३; ९१४। १५,६ ९२०। ६,६८,२; ९४९ । १९,१७ ९; ९८०। १८,९। ९९०। १९ ११; १००२। १९,२०,२; १००४ ७,२४,१; १०६८। १९,९,६,१२ १०७४,१०८०

गुणबोधकपदानि ।

पतिः भुवनस्य १००४
प्रजननवान् ९८०,९९०
भुवनस्य पतिः १००४
सत्यधर्मा १०६८
प्रजापतेः दुहिता ३,१०,१३; ९१४
इन्द्रपुत्रा ,,
सोमपुत्रा ,,
प्रथमः (शंखाः) १९,२१,८; ११२८
प्रदिशः ३,४,१; ८९७ । १९,२०,१ १००४
देवीः ८९७
पञ्च ,,
प्राजापत्यौ १९,१३,१६; १०३२
प्राणः १९,१७,७, ११६१ । ६,१०,१; ११७१
बृहस्पतिः ६,७३,१-२; ९५१-९५२ । १९,१७,१०,९८१। १८,१०; ९९१। २०,१; १००३ । २४,४,८; १०३९, १०४३ । १९,९,६,११; १०७४, १०७९ । ३,२२,१-६; ११२३-१८। ६,१०३,१; ११८४ । १४,२,५३-५८; ११९०-९५
विश्वदेववान् ९९१
ब्रध्नाः १९,१७,४; ११५८
त्रयः ,,
ब्रह्म+ह्मा १९,१९,८; ९९९ । २३, १९; १०३५ । ९,१२; १०८० (ब्रह्मा)। ४३,८; १०९० (ब्रह्मा)। २, १२,६-७, १०९६-९७ । १९,२१, २०-२१; ११४०-११४१ (ब्रह्मा)
ब्रह्मचारिणः १९,१९,८; ९९९
ब्रह्मणस्पतिः ६,४,१;९३५। ५,३; ९३८। ७४,१; ९५४ । १९,२४,१; १०३६
भगः ६,४,२; ९३६ । ७४,१-२; ९५४-९५५ । १,२६,२; १०५७ । ६,५३,१; ११७९ । १०३,१,११८४
भवः ६,९३,२; ११७७
भव्यम् १९,९,२; १०७०
भूतम् १९,९,२; १०७०
भूतानि विश्वा ६,१९,१; ११७३
भूतकृतः १९,१६,२; ९७१। २७,१५; ११६९
भूमिः १९,९,८; १०७६ । ६,११०, २; ११८०
तीर्यतिः १०७६
माता ११८०
वेप्यमान्त १०७६
मञ्जलिकाः १९,२३,२८; १०३४
मनः १९,९,४; १०७२
परमेष्ठिन् ,,
ब्रह्मसंशितम् ,,
मनवः ६,१९,१; ११७३
मनुष्येषवः १,१९,२; १०५३
अस्ताः ,,
अस्याः ,,
दैवीः ,,
विष्वञ्चः ,,
शरवः ,,
मरुतः ३,४,४; ८९८। ६,३,१; ९३२। ६,४,२; ९३६ । ६,७४,३; ९५६ । ७,९८,१; ९६७ । ५,३,३; १०४४ । ७,२४,१; १०६८ । २,१२,६; १०९६ । ३,१९,६; १११० । ६,९३, ३; ११७८
इन्द्रवन्तः १०४४
विश्ववेदसः ११७८
स्वर्काः १०६८
महर्षयः १९,९,११; १०७९
देवाः ,,
महाकाण्डः १९,२३,१८; १०२४
महागणाः १९,२२,१७; ११३७
मातरिश्वा १९,२०,१; १००४ । १९, २७,४; ११५८ [बहुवचनम्]।
त्रयः ११५८
मित्रः १,९,१; ८७७ । ३,८,१; ९०२; ६,४,२; ९३६ । १९,१९,१, ९९२। १९,९,६-७; १०७४-७५। २,२८,५; ११०१ । ३,२२,१, ११११४ । ६, १०३,१; ११८४
मित्रराजा ११०१
मित्रावरुणा ३,४,४; ८९८। १९,११, ६; ११२०
उभा ८९८
मृत्युः १९,९,१०; १०७८। ६,९३,१; ११७६। ६,६३,१-३; ११८१-८३
अघमारः ११७६
निर्ऋथः ,,
बभ्रुः ,,
यज्ञः ३,१०,७; ९११ (बहुवचनम्)। ६,९७,१; ९५७ । १९,१९,६; ९९७
अभिभूः ९५७
यमः १९,२०,१; १००३। ६,९३,१; ११७६ । ६,६३,१-३; ११८१-८३
मृत्युः ११८१
यमस्य सादनम् १,११,७; १०९७
योनिः ३,१३,१-६; १०५८-६३

उपमासूची ।

बाणः इव इषुधिम् १०५९ पुमान् गर्भः ते योनिं आ एतु ।
राजा ३,४,६-७; ९००-९०१ । ४,८, १; ११४१ । ६,९३,१; ११७७
राज्याभिषेकः ४,८,१-७; ११४१-४८

उपमासूची ।

सुभुवः समुद्रं न ११४८ आसु अन्तः तस्थिवांसं द्वीपिनं मर्मृज्यन्ते ।
रात्रिः ३,१०,७; ९११
राहुः १९,९,१०; १०७८
रुद्राः ६,६८,१; ९४८ । १९,१७,३; ९७४ । १९,१९,३; १०५४ (रुद्रः)। १९,९,१०,११; १०७८-७९ । ३, २२,२, १११४ (रुद्रः)। ६,९३,१-३; ११७६-७८
तिग्मतेजसः १०७८
रोहिताः १९,२३,२३; १०२९
लोकाः १९,९,१२; १०८०

वनस्पतयः १९,९,१४; १०८१ । ६, १०,१; ११७०
वयांसि ६,१०,१; ११७१
वरुणः १,९,१; ८७७। ३,३,३; ८९३। ४,५; ८९९ । ८,१; ९०१ । ६,४,१; ९३६ । ६८,३; ९५० । ७३,१-२; ९५१-९५१ । १९,१७,४; ९७५ । १८,४; ९८५ । २०,१; १००३ । १,१६,१; १०४९ । १९,९,६-७; १०७४-७५ । २,१८,५; ११०१ । ३,१२,१; १११४ । ७,११८,१; ११४९ । ६,९३,३; ११७८

गुणबोधकपदानि ।

आदित्यवान् ९८५
पूतदक्षः ११७८
मित्रराजा ११०१
राजा ८९३,८९९,१००३
वर्चः ३,११,१-६; १११३-१८
वसवः १,९,१; ८७७। ६,६८,१; ९४८। ७३,१-२; ९५१-९५१ । ७४,३; ९५६ । ७,९८,१; ९६७ (वसुः) । १९,१७,१; ९७१ । ९,११; १०७९। १,१२,४; १०९४
वाक् १९,९,३; १०७१
देवी ,,
परमेष्ठिनी ,,
ब्रह्मसंशिता ,,
वातः १,१५,१-४;८७९-८८२ (वाताः)। ६,६१,१; ९४१ । ५,३,३; १०४४। १९,१७,२; ११५६। १७,१; ११६१
वृत्रहा ११५६
वातगोपम् १,११,१; १०९१
वातापर्जन्यौ ६,९३,३; ११७८
वायुः १,३४,४; ८९० । ३,८,१; ९०१। ६,६८,१; ९४८ । १९,१७,१; ९७३। १८,१; ९८३ । १९,१; ९९३ । ४३,१; १०८४ । १७,१; ११५५ । ६,१०,१; ११७१ । ५३,१; ११७९
अधिपतिः ११७१
अन्तरिक्षवान् ९८३
देवः ८९०
प्रजया संरराणः ,,
प्रजापतिः ,,
संरराणः प्रजया ,,
वास्तोष्पतिः ६,७१,३; ९५३
विंशतिः १९,२३,१७; १०२३
विदगणाः १९,२१,१८; ११३८
सर्वे अङ्गिरसः ,,
विवस्वान् १९,९,७; १०७५
विश्वकर्मा १९,१७,७;९७८।१८,७;९८८
सप्तऋषिवान् ,,
विश्वे देवाः १,९,१; ८७७ । ३,३,५; ८९४ । ३,४,४; ८९८ । ३,८,४; ९०५ । ७,८,१; ९६७ । १९,१०,१०; ९८१ । १९,२०,४; १००६ । ५,३, ४,६; १०४५,१०४७ । ६,११४,३; १०६७ । ७,२४,१; १०६८ । १९, ९,११,१४; १०८०,१०८१ । १, ११,५; १०९५ । १८,५; ११०१ । ३,१९,१-८; ११०५-११ । ३,११, १-५; १११३-१८ । ६,१२३,१-५; ११५०-५४ । ६,९३,३; ११७८ । १४,१,५३-५८; ११९०-९५
[विश्वे देवाः केवलेन 'देवाः इति' पदेन निर्देशः]। १,९,१; ८७८ । १,३४, १; ८८८ । ३,३,१; ८९१ । ३,१०, ७,११-१२; ९११-९१३ । ३,१५, ५-६; ९१९-९२० । ५,८,३; ९२५। ६,६४,१-३; ९४५-९४७। ६,९७,१, ९५७ । ७,७०,१; ९६३ । १९, १९,१०; १००१ । २०,३; १००५ । २४, १; १०३६ । ५, ३, ३, ५; १०४४,१०४६ । १,१९,४; १०५५। १, २६, १; १०५६ । ६, ५५, १; १०६४ । ६,११४,१; १०६५। १९, ९, ११-१२, १४; १०७९, १०८०, १०८१ । १,१२,१; १०९१ । ३, ११,१; १११४ । ११,११,५; १११९ । ४,८,१; ११४३ । ७, ११८,१; ११४९ । १९,१७,६-७; ११६०-६१ । १९,१७,११-१३; ११६५-६७ । २०,१२८,५; ११९६। २०,१३५,४,१०; ११९७-९८

गुणबोधकपदानि ।

अन्तरिक्षे एकादश ११६६
अमृताः १११९
इन्द्रज्येष्ठाः १११०
इन्द्रेषिताः ९६३
ऋतज्ञाः १११९
ऋत्विजः देवानाम् ,,
एकादश अन्तरिक्षे ११६६
एकादश दिवि ११६५
एकादश पृथिव्याम् ११६७
दिवि एकादश ११६५
देवानां ऋत्विजः १११९
देहिनः १००५
द्युराजयः ,,
पृथिव्यां एकादश ११६७
भ्राजन्तः ११६०
मनोः यजत्राः १११९
महर्षयः १०७९
यजत्राः मनोः १११९
यज्ञियासः ,,
विश्वदेवाः ९६७
विश्वधायसः १११४
विश्ववेदसः ११६०,११७८

उपमासूची ।

यथा पूर्वे संजानानाः देवाः भागं उपासते ९४५ तथा मनांसि सं जानताम् । यथा अहं विश्वाः पृतनाः अभि असानि ९५७ एवा विधेम अग्निहोत्रा इदं हविः ।

विश्वरूपः ४,८,३; ११४४
विश्वा भूतानि ६,१९,१; ११७१
विषासहिः १९,२३,१७; १०३३
विष्णुः ६,३,१; ९३२ । ५,३,३; १०४४। १९,९,६; १०७४

वीर्यम् १९,१९,९; १०००
वृषा १९,१७,१; ११५५
वेदाः १९,९,१२; १०८०
वैश्वानरः ३,१५,७; ९२१। ६,६२,१; ९४१। ६,५३,१; ११८०
अदब्धः ११८०
तनूपाः ,,
वैश्वानरी ६,६१,१-३; ९४३-९४४
इडा ,,
वैष्टपाः १९,१७,४; ११५८
त्रयः ,,
व्रात्यौ १९,२३,१५; १०३१
शंखाः तृतीयाः १९,२१,१०; ११३०
शंखाः द्वितीयाः १९,२१,९; ११२९
(शंखाः) प्रथमाः १९,२१,८; ११२८
शचीपतिः १९,१७,१४; ११६८
शर्वः ६,९३,१-१; ११७६-११७७
अस्ता ११७६
नीलशिखण्डः ,,
शान्तयः १९,९,१४; १०८१
शान्तानि १९,९,१३; १०८१
शिखिनः १९,२१,१५; ११३५
शुक्रः ६,५३,१; ११७९
बृहन् ,,
श्येनः ७,७०,३; ९६४
अजिराधिराजौ ,,
संपातिनौ ,,

उपमासूची।

अजिराधिराजौ सम्पातिनौ श्येनौ इव ९६४

यः कक्ष्य नः अभि अघायति।

श्रोत्रम् ६,१०,१; ११७०
षडृचाः १९,२३,३; १००९
षष्ठः १९,२१,१; ११२१
षोडशर्चाः १९,२३,१३; १०१९
सप्तऋषयः ६,४०,१; ९३९। १९,१७,७; ९७८। १९,९,१२; १०८०
सप्तदशर्चाः १९,२३,१४; १०२०
सप्तर्चाः १९,२३,४; १०१०
सप्तमाष्टमौ १९,२१,३; ११२३
समुद्रः १९,१९,७; ९९८। १९,२७,३-४; ११५७-११५८
चत्वारः ११५७
त्रयः ११५८
सरस्वती ६,८,१; ९३३
देवी ,,
सुभगा ,,
सविता ३,८,१-३; ९०३-९०४। ३,१५,६; ९२०। ६,४०,१-२; ९३९-९४०। ६,६८,१,३; ९४८,९५०। ९९,३; ९६१। १९,१६,१; ९७०। २०,१; १००३। २४,१,८; १०३६, १०४३। १,२६,२; १०५७। ७,२४,१; १०६८। १९,२७,४; ११६८। ६,१९,३; ११७५। ६,५३,१; ११७९। ६,१०३,१; ११८४
चित्रराधा १०५७
देवः १०३६
सत्यधर्मा १०६८
सादनं यमस्य २,११,७; १०९७
सामगाः २,११,४; १०९४
तिस्रः अशीत्यः ,,
सांमनस्यम् ३,८,५-६; ९०६-९०७। ६,६४,१-३; ९४५-९४७। ६,७४,१-३; ९५४-९५६

उपमासूची।

यथा अहूणीयमानाः उग्राः आदित्या वसुभिः मरुद्भिः संबभूवुः ९५६ एवा इमान् जनान् इह संमनसः कृधि।

यथा पूर्वे संजानानाः देवाः भागं उपासते ९४५ तथा सं वः मनांसि जानताम्।

सिन्धवः १,१५,१-४; ८७९-८८२। ६,३,१; ९३२
सप्त ९३२

सांसं दधत्यम् १,१६,२-४; १०४९-५१

उपमासूची।

यथा नः अवीरहा असः १०५१ (तथा) त्वा सीसेन विध्यामः।

सूर्यः १,९,१; ८७८। ६,६२,३; ९४४। १९,१७,५; ९७६। १८,५; ९८६। १९,३,९९४। २०,४; १००६। ४३,३; १०८५। २७,२,४, ७; ११५६, ११५८ [बहुवचनम्], ११६१। ६,१०,३; ११७२

गुणबोधकपदानि।

अधिपतिः ११७२
गोप्तारः त्रयः ११५८
त्रयः गोप्तारः ,,
द्यावापृथिवीवान् ९८६
विश्वतोमुखः ११६१
सूर्यौ १९,२३,१४; १०३०
सोमः ३,३,३; ८९३। ८,३; ९०४। १५,६; ९२०। ६,३,२; ९३३। ५,३; ९३८। ४०,१; ९३९। ६८, १,३; ९४८,९५०। ७३,१-२; ९५१-९५२। ९७,१; ९५७। ९९,३; ९६१। १९,१७,३; ९७४। १८,३; ९८४। १९,५; ९९६। २०,१; १००३। २४,३-४,८; १०३८-३९, १०४३। ४३,५; १०८७। ७,११८, १; ११४९। १९,२७,१; ११५६। ६, ५३,१; ११७९

गुणबोधकपदानि।

अभिभूः ९५७
राजा ९४८,९५०,१००३,१०३९, ११४९
रुद्रवान् ९८४
स्तोमः १९,२७,३; ११५७
त्रिवृत् ,,
स्वर्गः ६,१२०,३; ११८९
हरिताः १९,२२,५; ११२५
हिरण्यम् १,९,१; ८७८
होतारः ५,३,५; १०४६
दैवाः ,,

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(४) सामवेद-मन्त्राणाम् ।

अग्निः १५०३-४; १४०२-३
सहस्कृत १४०२
अग्नयः विश्वे १५०३-४; १४०२-३
अदितिः २९९; १३९५
इन्द्रः ४५३,४५५; १४००-१४०१
इन्द्रबृहस्पती ६११; १३९७
गावः ४४१, १३९९
विश्वधायसः शुचयः ,,
त्वष्टा २९९; १३९५
देवाः ३६८,४४१,१८७१, १३९८-९९,१४०४
अरेपसः १३९९
द्यावापृथिवी ६११,१३९७
पर्जन्यः २९९, १३९५
ब्रह्मणस्पतिः ,, ,,
मित्रः ४५५; १४०१
वरुणः ,, ,,
विश्वे देवाः ५९१; १३९६

(५) विश्वे-देवाऽन्तर्गता यजुर्वेदीय

नाना-देवताः ।

अंशः १०,५; १४२६
अंहस्पतिः २२,३१; १६९३
अकूपारः २४,३५; १९२१
अक्षराजः ३०,१८; २२४५
अग्निः १०,५; १४१७ । १८,१६; १४५७ । १८,२२; १४७५ । २२,६,२७; १४९२,१६९२ । २४,२,६,९,१४,२३,३१; १७२९,१७५८,१७७३,१८००,१८४६,१८९४। २५,३-४; २०००,२००४। २९,५८-६०; २०८४,२१००,२१०३ । ३०,११; २२७१ । ३९,१; २२८५
अग्निः अनीकवान् २४,१६; १८१३ । २९,५९; २०९५
,, गृहपतिः २४,२४; १८५५
,, वैश्वानरः २९,६०; २१११
अग्नामरुतः २४,७; १७६६
अग्नाविष्णू २४,८; १७७०
अग्नीषोमौ २४,८,२३; १७६९,१८४८। २५,५; २०२२
अङ्गिरसः १८,२२; १४८५
अतिकृष्टः ३०,५; २१२२
अतिच्छन्दः २४,१३; १७९९
अत्ति यत् २२,८; १५४६
अथर्वाणः ३०,१५; २२१४
अदितिः १४,२९; १४४४ । १८,२२; १४८३ । २२,२०; १५५७ । २४,५,९; १७५५,१७७६ । २५,२,४,८; १९८८,२००८,२०५५,२०५७। २९,६०, २११०
अदितिः मही २२,२०; १५५८
,, सुमृडीका २२,२०; १५५९
अधर्मः ३०,१०; २१६५
अधिपतिः ९,२०; १४१६ । २२,३०,३२; १६७४,१७०४
अध्वा २५,३; १९९८
अनन्तः ३०,१९; २२५८
अनुमतिः २४,३२; १९०३ । २९,६०; २११२
अनुष्टुभ् २४,१२; १७९३
अन्तः ३०,१९; २२५७
अन्तकः ३०,७,१८; २१४२,२२५१ । ३९,१३; २३१५
अन्तरम् २५,२; १९७७
अन्तरिक्षम् १८,१८; १४७०। २२,२७,२९; १६२५,१६५६ । २४,१०। २६,३४; १७८०,१८६३,१९१४ । २५,८; २०५९ । ३०,११; २२७४। ३९,१; २२८६
अन्त्यः २२,३२; १७०१
अन्त्यः भौवनः ९,२०; १४१४ । २२,३२; १७०२
अन्धाहयः २५,७; २०४४
अन्यतोरण्यम् ३०,१९; २२६४

अपानः २२,२३,३३; १५७४,१७०८
अपां मोदः २२,६; १४९४
अपिजः ९,२०; १४०७ । २२,३२; १६९६
अप्सरसः २४,३७, १९३३
अभिभूः २२,३०; १६७३
अभूतिः ३०,१७; २२४१
अभ्रः २२,२६; १६०६
अयवाः १४,३१; १४५५
अयाः ३०,८, २१४९
अरण्यम् २२,३९,१९४३। २५,३; १९९९
अराधि ३०,९; २१५७
अरिष्टिः ३०,१३; २२००
अर्कः १८,२२; १४७७
अर्णवः २२,२५; १६०१
अर्धमासाः २२,२८; १६३४ । २४, ३७; १९२९
अर्मा: ३०,११; २१७३
अर्यमा १०,५; १४२८। २५,४;२०१२
अर्वाची दिक् २२, २४, २७; १५८१, १५८३, १५८५, १५८७, १५८९, १५९१,१६३१
अवऋतिः ३०,१२; २१९०
अवका २५,१; १९५४
अवक्रन्दः १२,७; १५०५ । २५,१; १९५९
अवरस्परः ३०,१९; २२६२
अववर्षत् २२,२६; १६१२
अवस्फूर्जत् २२,२६; १६१०
अवाची दिक् २२,२४; १५९०
अवान्तरदिशः २४,२६; १७६६
अवारः ३०,१६; २२२८
अवार्याः २५,१; १९७०-७१
अशनिः २५,२; १९८१
अश्विनौ १४,१,३,२३,३६; १७३१, १७४३, १८४९, १९२५ । २५,३; २००२
अश्वमेधः १८,२२; १४८०
असुः २२,३०; १६६७
अहः (र्) १४,२५,३६। १८५६, १९२३ । ३०,२१; २२७९
अहर्पतिः ९,२०; १४१०
अहर् मुग्धः ९,२०; १४११
अहोरात्रे १४,३०; १४४९
अहोरात्राणि २२,२८; १६३३
अहोरात्रयोः सन्धयः १४,२५; १८५८
आक्रमणम् २५,३,६; १९९५,२०४१
आक्रया ३०,५; २१२०
आत्मा २२,३३; १७१६
आदित्याः ११,६०,६५;१४३१,१४३८। १४,३०; १४५३ । २२,२८; १६४६। २४, ६, २७, ३९; १७६१, १८६९, १९४१। २५,१,६; १९६२,२०३५
आधिं आधीतः २२,२०; १५५४
आध्यक्ष्यः ३०,११; २१८२
आनन्दः ३०,६,२०; २१२९,२२७०
आन्त्यायनः विनंशी ९,२०; १४१३
आपः २२,२५,२९; १५९२,१६६१ । २४,२१,३७; १८३८,१९३१। २५, १-२,५,७,९;१९६१,१९८३,२०२०, २०४७,२०७३ । ३९,२; २२९३
आपिः ९,२०; १४०५
आयनः २२,७; १५२४
आयासः ३९,११; २२९७
आयुः २२,३३; १७०६
आर्तवाः १४,२६; १४४५ । २२,२८, १६३८
आर्तिः ३०,९,१७; २१५४,२२४२
आशाः २२,२७; १६२९
आशिक्षा ३०,१०; २१७०
आसीनः २२,७; १५१४
आस्कन्दः ३०,१८; २२४९
इतरजनाः २४,३६; १९२७
इदावत्सरः ३०,१५; २२१७
इद्वत्सरः ३०,१५; २२१८
इन्द्रः १०,५; १४२३ । ११,६०; १४३३। १४,२९; १४४७ । १८, १६-१८; १४५७-७४ । २२,६,२७; १४९८,१६२४ । २४,१,३२,४०; १७३६,१९०२,१९४९ । २५,३-५, ८; १९९२,२००६,२०१४,२०२७, २०५४ । २९,५८,६०; २०२०, २१०४
इन्द्राणी २५,४; २००९
इन्द्राग्नी २२.५; १४८७ । २४,४,८, १५,१७,२२,१७५१,१७६८,१८०९, १८१९,१८४३ । २५,५; २०१७। २९,५८; २०९२
इन्द्राबृहस्पती २४,७; १७३४ । २५, ६; २०३९
इन्द्राविष्णू २४,७; १७६३
इरा ३०,११; २१७८
इषः २१,३१; १६८७
ईक्षमाणः २२,८; १५४२
ईक्षितः ,, १५४३
ईर्यता ३०,८; २१५०
ईशानः २४,२८; १८७२
उग्रं वर्षत् २२,२६; १६१३
उत्कूलनिकूल्याः ३०,१४; २२०८
उत्थितः २२,८; १५३३
उत्सादः २५,१; १९५८
उत्सादाः ३०,१०; २१६२
उदकम् २२,२५; १५९४
उदानः २२,३३; १७१०
उदीची २२,२४; १५८६
उद्गृहीतः २२,२६; १६१६
उद्गृह्णन् २२,२६; १६१५
उद्गावः २२,८; १५२८
उद्द्रुतः २२,८; १५२९
उद्यासः ३९,११, २३०१
उपयामः २५,२; १९७५
उपलाः २५,८; २०६४
उपविष्टः २२,७; १५११
उपशिक्षा ३०,१०; २१७१
उपस्थावराः ३०,१६; २२२४
उपस्थितः २२,७; १५२३

उर्वी २२,२७; १६३०
उषाः २४,४; १७५१
उष्णिह् २४,१२; १७९४
ऊर्जः २२,३१; १६८८
ऊर्ध्वा दिक् २२,२४; १५८८
ऋक्षीकाः ३०,८; २१४४
ऋतवः २२,२८; १६३७ । २४,३८; १९३५
ऋतिः ३०,१३; २१९३
ऋभवः ३०,१५; २२२१
ऋषभः २४,३०, १८८६
एकः २२,३४; १७१२
एकशतम् २२,३४; १७१५
ओषधयः २२,२८-२९; १६५४,१६६१
औपद्रष्ट्रथम् ३०,१३; २१९६
कः २२,२०; १५५१ । २४,१५, १८१२ । २२,२०; १५५२
ककुभ् २४,१३; १७९७
कतमः २२,२०; १५५३
कपिञ्जलाः २५,३; १९९६
कर्णौ २५,२; १९८४
कर्म ३०,७; २१३९
कामः २४,३९; १९४६। ३०,५;२१२१
कीलालः ३०,११; २१७९
कुर्वत् २२,८; १५४९
कूजत् २२,७; १५१७
कूप्याः २२,२५; १५९८
कूर्माः २५,३; १९९४
कूश्माः २५,७; २०५३
कृतः २२,८; १५५०। ३०,१८; २२४६
कृष्णः २५,१; १९६८
कृतुः ९,२०; १४०८ । २२,३२; १६९७
क्रन्दत् २२,७; १५०४
क्रुञ्चौ २५,६; २०३८
क्रोधः ३०,१४; २२०४
क्रोशः ३०,१८; २२६१
क्षत्रम् ३०,५; २११४
क्षिप्रश्येनः २४,३०, १८८७
क्षुध् ३०,१८; २२५२
क्षेमः ३०,१४; २२१७
गणपतिः २२,३०; १६७२
गणश्रीः २२,३०; १६७१
गन्धः २२,७; १५०८
गन्धर्वाः २४,३७; १९३०
गन्धर्वाप्सरसः ३०,८; २१४६
गायत्री २४,११, १७९०
गिरयः २५,८; २०६३
गीतम् ३०;६; २१२४
गुल्माः २५,८; २०६६
गुहाः ३०,१६; २२३२
गेहम् ३०,९; २१५४
ग्रीष्मः २४,११,२०; १७८५,१८३१
घर्मः १८,२२; १४७६ । ३९,१२; २३१०
घृतम् २५,९; २०७२
घोषः १०,५; १४२४। ३०,१९; २२५६
घ्राताः २२,७; १५०९
चक्रवाकौ २५,८; २०६१
चक्षुः २२,२३,३३; १५७६, १७१२ । २४,२९; १८७२
चन्द्रः २२,२८-३०, १६११,१६५९, १६७७। ३९,१, २२९१
चन्द्रमाः २४,३५;१९१७ । ३०,२१, २२७८
चराचराणि २२,२९; १६६५
चाषाः २५,७; २०५१
चित्तम् २५,१; १९८७
चित्तं विज्ञाता २२,२०, १५५६
चित्राणि २५,९; २०८०
जगती २४,१२; १७९२
जम्बुकः २५,९; २०८३
जवः २२,८; १५३४। २५,३; १९९७। ३०,११, २१७४
जाग्रत् २२,७; १५१६
जीमूताः २५,८; २०५८
ज्योतिः २२,३०,३३; १६७८,१७१८
तपस् २२,३०; १६९१ । ३०,५,७, २११६,२१३३ । ३९,१२; २३०६
तपस्यः २२,३०; १६९२
तप्तः ३९,१२; २३०९
तप्यत् ३९,१२; २३०७
तप्यमानः ३९,१२; २३०८
तमस् ३०,५; २११७
तारकाः २४,१०; १७८३
तिष्ठन्त्यः २२,२५; १५९५
तीर्थानि ३०,१६, २२२९
तुरीपः त्वष्टा २२,२०; १५६७
तुला ३०,१७; २२३७
तेजस् ३०,११; २१७७
तेदनी २५,२; १९८५
त्वष्टा १८,१७; १४६६ । २२,२०; १५६६ । २४, १.४, २४,२८,३१; १७३४, १७५०, १८५२, १८७६, १८९५। २५,५; २०२६
त्वष्टा तुरीपः २२,२०, १५६७
,, पुरुरूपः २२,२०; १५६८
त्रिष्टुभ् २४,१२; १७९१
त्रेता ३०,१८; २२४७
त्र्यम्बकः २४,१८; १८२५
दक्षिणा दिक् २२,२४; १५८२
दितिः १८,२२; १४८३
दिवा पतयत् २२,३०; १६८०
दिशः १८,१८,२२; १४७४,१४८५ । २२,२७; १६२८। २४,२६,३१; १८६५,१८९३। २५,८; २०५६। ३९,१; २२९०
दिष्टम् ३०,७; २१४०
दुष्कृतम् ३०,१८, २२५३
देवाः सर्वे २२,५; १४९०
देवजामयः २४,२४; १८५४
देवानां पत्न्यः २४,५,९,२४; १७५७, १७७८,१८५३
देवलोकः ३०,१२, २१८७
द्यौः १८,१८,२२; १४७१,१४८४ । २२,२७,२९; १६२७,१६५७ । २४, १०,२६; १७८१,१८६४ । २५,८; २०६२ । ३०,२१, २२७५ । ३९,१, २२८८

द्यावापृथिवी २२,२८; १६४०। २४, १४,३४; १८०७,१९१६। २५,१,५; १९६५,२०३०। ३९,१३; २३२०
द्वा २२,३४; १७२३
द्वापरः ३०,१८; २२४८
द्वारः ३०,१०; २१६५
धर्मः ३०,६; २१२५
धाता १४,२८; १४४३। १८,१७; १४६४। २४,५,९,३१, १७५६, १७७६,१८९१। २५,४; २०१३
धार्याः २२,१५; १६००
धावत् २२,८; १५२७
धूमः २२,२६; १६०५
धैर्यम् ३०,६, २१३२
नक्षत्राणि १८,१८; १४७३। २२,२८-२९; १६३२,१६६०। २५,९; २०८१।३०,११; २२७७। ३९,२, २२९२
नक्षत्रियः २२,२८; १६३३
नड्वलाः ३०,१६; २२२६
नद्यः ३०,८; २१४३
नदीपतिः २२,३४; १९१५
नभः २२,३१; १६८५। २५,८; २०६०
नभस्यः २२,३१; १६८६
नरांधिषः पूषा २२,८; १५६५
नरिष्ठा ३०,६; २१२६
नर्मः ३०,६,२०; २१२७,२२६५
नाकः वर्षिष्ठः ३०,१२; २१८६
नाभिः ३९,२, २२९५
नारकम् ३०,५; २११८
नासिके २५,२; १९७४
निभूयपः विष्णुः २२,८; १५६५
निमेषः २२,८; १५४५
निर्ऋतिः २२,३८; १९३९। २५,२,५; १९८९,२०११। ३०,९,१४; ११५६, २२११
निविष्टः २२,७; १५१०
निवेष्यः २५,२; १९७९
निषण्णः २२,८; १५३२
निष्कृतिः ३०,९; २१५८। ३९,११; २३११
नीलङ्गुः २४,३०; १८८८
नीहारः २२,२६; १६२१। २५,९, २०७५
नृत्तम् ३०,६,२०, २१२३, २२६९
पङ्क्तिः २४,१३; १७९८
पतिः भुवनस्य ९,२०; १४१५
पतिः भूतानाम् १४,२८; १४४२
पन्थाः २५,१; १९६४
पप्रोथः २२,७; १५०७
परमेष्ठी १४,३१; १४५६
परिप्लवाः २२,२९, १६६४
परिवत्सरः ३०,१५; २११६
पर्जन्यः २४,३,६,२१,३४; १७४७, १७६२,१८३७,१९११
पर्वताः ३०,१६; २२१४
पवित्रम् ३०,१०; २१६८
पशुपतिः रुद्रः २४,३; १७४४
पश्चादोषः ३०,१७; २२३८
पाप्मा ३०,५,१८, २११९,२२५४
पारम् ३०,१६; २२२७
पार्याः २५,१; १९६९,१९७२
पावका सरस्वती २२,२०; १५६१
पितरः २४,३८; १९३६
,, अग्निष्वात्ताः २४,१८; १८२४
,, बर्हिषदः ,, १८२३
,, सोमवन्तः ,, १८२२
पिबति यत् २२,८; १५४७
पिशाचाः ३०,८; २१५१
पुरुरूपः त्वष्टा २२,२०; १५६८
पुरुष व्याघ्रः ३०,८; २१४४
पुष्टिः ३०,११; २१७५
पुष्पाणि २२,२८; १६५२
पूतः ३९,२; २२९६
पूषा १०,५; १४२१। १४,३०; १४५१। १८,१६; १४६१। २२,२०; १५६३। २४,७,१४,३२; १७६७,१८०४, १९००। २५,३,५,७;२००१,२०१५, २०४३। २९,५८-५९; २०८७,२०९७
पूषा नरन्धिषः २२,२०; १५६५
,, प्रपथ्यः ,, ,, १५६४
पृथिवी १८,१८,२२; १४६९,१४८१। २२,२७,२९; १६२४,१६५५। २५, ९; २०८२। ३०,२१, २२७२। ३९, १, २२८४
प्रकामः ३०,१२; २१९२
प्रकामोघ ३०,९; २१६०
प्रजा २५,७; २०५०
प्रजापतिः १४,२८,३१; १४४०,१४५६। २२,५,३२; १४८६,१७०५। २४,१, २९-३१; १७२८,१८७७,१८८१, १८९१। २९,६०; २१०९। ३०, २२; २२८१-८२
प्रज्ञानम् ३०,१०; २१६९
प्रतिश्रुत्का २४,३२; १९०४। ३०,१९, २२५५
प्रतीची दिक् २२,२४; १५८४
प्रदराः २५,७; २०५२
प्रपथ्यः पूषा २२,२०, १५६४
प्रबुद्धः २२,७; १५१९
प्रभा ३०,१२; २१८४
प्रमद् ३०,६; २१३०
प्रमुद् ३०,१०; २१६४
प्रयुजः ३०,८; २१४७
प्रसवः २२,३२; १६९५
प्राची दिक् २२,२४; १५८०
प्राणः १८,२२, १४७९। २२,२३,३३, १५७३,१७०७
प्राणाः २५,२, १९९०
प्राणाः साधिपतिकाः ३९,१; २२८३
प्रायणः २२,७; १५२५
प्रायश्चित्तिः ३९,११; २३११
प्रायासः ३९,११; २२९८
प्रियः ३०,१३; २१९९
प्रुष्णत् २२,२६; १६१७
प्रुष्वा. २२,२६; १६१९। २५,९; २०७७
प्रोथत् २२,७; १५०६

फलानि २२,२८; १६५३
बलम् २२,८;१५३५। २४,३८; १९३७। २५,६; २०४१। ३०,९,१३; २१६१; २१९७
बाह्यः २५,१; १९७८
बीभत्सा ३०,१७; २२३५
बृहती २४,१३; १७९६
बृहती सरस्वती २२,२०; १५६२
बृहस्पतिः १०,५; १४२२ । १४,२९; १४४८ । १८,१६; १४६१ । २२,६; १४९९। २४,१,२८; १७४१,१८७५
बृहस्पतिः (वाचस्पतिः)२४,३४; १९१३। २५,३-४; १९९३,२०११ । २९,५८, ६०; २०८८,२१०७
ब्रध्नस्य विष्टपम् ३०,१२; २१९७
ब्रह्म २२,२२; १५७२।३०,५; २११३। ३९,१३; २३१७
ब्रह्महत्या ३९,१३; २३१८
ब्रह्मणस्पतिः १४,२८; १४४१
ब्रह्मा २२,३३; १७१७
भगः १०,५; १४२७
भद्रा ३०,११; २१८०
भा ३०,१२; २१८३
भुवनस्य पतिः९,२०; १४१५। २२,३२; १७०४
भूतानि विश्वा ३०,१७; २२३९
भूतानां पतिः १४,२८; १४४२
भूतिः ३०,१७; २२४०
भूमन् ३०,१३; २१९८
भूमिः २४,१०,२६,३३; १७७९, १८६२,१९०८
भेषजम् ३९,११; २३१३
भौवनः आन्त्यः ९,२०; १४१४ । २२, ३२; १७०३
मंहस् ३०,१९-२०; २२६०,२२६८
मतिः २४,३९; १९४२
मधुः २२,३१; १६८१
मनः २२,२३,३३; १५७९,१७१५
मनः प्रजापतिः २२,२०; १५५५
मनुष्यराजः २४,३०; १८८४
मनुष्यलोकः ३०,१२; २१८८
मन्युः २४,३३; १९०९ । ३०,१४; २२०३
मरीचिः २५,९; २०७४
मरुतः १८,१७; १४६७ । २२,२८; १६४७ । २४,४,१४-१५,४०; १७४८,१८०५,१८११,१९५० ।२५, ४,६; २०१०,२०३२ । २९,५८-५९; २०९१,२०९९ । ३०,५; २११५
मरुतः क्रीडिनः २४,१६; १८१६
,, गृहमेधिनः ,, १८१५
,, सान्तपनाः ,, १८१४
,, स्वतवसः ,, १८१७
मर्यादा ३०,१०; २१७२
मलिम्लुचः २२,३०; १६७९
मशकाः २५,३; १९९१
मही अदितिः २२,२०; १५५८
महेन्द्रः २४,१७; १८२०
माधवः २२,३१; १६८२
माया ३०,७; २१३४
मायुः २४,३२; १९०१
मासाः २२,२८; १६३६ । २४,२५, ३७; १८५९,१९३२
मित्रः १८,१७; १४६३ । २२,६; १५०० । २४,८,२१-२२,२८,३३; १७७२, १८३९, १८४४, १८७३, १९०६ । २५,५; २०१९
मित्रावरुणा २४,२,८,२३; १७४२, १७७१,१८५० । २५,६; २०४० । २९,६०; २१०६
मुग्धं अहः ९,२०; १४११
मुग्धः वैनंशिनः ९,२०; १४१२
मूत्रं करोति यत् २२,८; १५४८
मूर्धन् २२,३२; १६९९
मूलानि २२,२८, १६४९
मृत्युः २४,३७; १९३४ । ३०,७, १८; २१४१,२२५० । ३९,१३; २३१६
मृद् २५,१; १९५५
मेघः २२,२६; १६०७
मेधः ३०,१२, २१९१
मेधा ३०,६; २१३१
मोदः अपाम् २२,६; १४९४
यज्ञः २२,३३; १७२१
यत् २२,८; १५२६
यमः २४,३,३०; १७४५,१८८३ । २५,४; २०१६ । ३०,१४-१५; २२१२-१३ । ३९,१३; २३१४
यमी २५,५; २०२९
यवाः २४,३१; १४५५
यातुधानाः ३०,८; २१५२
यादस् (दः) ३०,२०; २२६७
योगः ३०,१४; २२०५
रक्षांसि २४,४०; १९४८ । २५,९; २०७९
रश्मयः २२,२८; १६४३
रात्रिः २४,२५,३६; १८५७,१९२६ । ३०,११; २१८०
रुद्रः २४,३९; १९४४ । २५,३; २००३
रुद्रः पशुपतिः २४,३; १७४४
रुद्राः ११,६०,६५; १४३०,१४३७ । १४,३०; १४५३ । २२,२८; १६४५। २४, ३, ६, २७; १७४६, १७६०, १८६८ । २५,६; २०३४
रूपम् ३०,७; २१३५
रेष्मन् (ष्मा) २५,१; १९९०
लोकः स्वर्गः ३०,१३; २२०१
लोकाः सर्वे ३०,११; २१८९
वत्सरः ३०,१५; २२१९
वनम् ३०,१९; २२६३
वनस्पतयः२२,२८-२९;१६५१,१६६३। २४,२३,३५; १८४७,१९१८
वपुस् (पुः) ३०,१४; २२०९
वरुणः ११,६०; १४३४ । १४,३०; १४५०। १८,१७; १४६४। २२,५,९; १४९१,१५०१। २४,१,१५,२१-२२,

२८,३०,३८;१७३९,१८१०,१८४०, १८४५, १८७४, १८८२, १९४० । २५, ४-५; २०१५, २०२८ । २९, ५८-५९; २०९४,२१०१ । ३९,१; २२९४

वर्णम् ३०,९,१७; २१६१,२२३६

वर्षत् (न्) २२,२६; १६११

वर्षाः २४,११,२०; १७८६,१८३२

वर्षिष्ठः नाकः ३०,१२-१३; २१८६, २२०२

वल्गत् २२,७; १५१३

वल्मीकाः २५,८; २०६५

वसन्तः २४,११,२०; १७८४,१८३०

वसुः ९,२०; १४०९ । २२,३०; १६६८

वसवः ११,६०,६५; १४२९,१४३६ । १४,३०; १४५३ । २२,२८; १६४४ । २४, ६, २७, ३८; १७५९, १८६७, १९३८

वाक् २२,२३,३३; १५७८,१७१४ । २४, ५, २९, ३१; १७५४, १८७८, १८९६

वाजम् २२,३२; १६९४ । २५,१; १९६०

वाजी २५,७; २०४९

वाजिनः २४,७,३९; १७६५,१९४५

वातः २२,२६; १६०४ । २४,३५; १९२० । २५,२; १९७३

वायुः १४,३०; १४५२ । २२,५-६; १४८८,१४९६ । २४, १,९, २२, ३०,३४; १७३५,१७७५,१८४२, १८८१, १९११ । २५,४,६; २००५, २०३६ । ३०,२१; २२७३

वारः (र्) २२,२५; १५९३

विचृतः २२,७; १५२१

विजृम्भमाणः ,, १५२०

विद्युत् २४,१०; १७८२ । २५,१; १९६६

विद्योतमानः २२,२६; १६०८

विधूतः २२,८; १५३९

विधून्वानः २२,८; १५३८

विधृतिः २५,९; २०७१

विनंशी आन्त्यायनः ९,२०; १४१३

विभूः २२,३०; १६६९

वियासः ३९,११; २३००

विराट् २४,१३; १७९५

विवर्तमानः २२,८; १५३६

विवस्वान् २२,३०; १६७०

विवित्तिः ३०१३; २१९५

विवृतः २२,८; १५३७

विश्वकर्मा २४,१७; १८२१

विश्वे देवाः ११,६०,१५; १४३२, १४३९ । १८,१७; १४६८ । २२,५; १४८९ । २२,२८; १६४८ । २४, ५, १४, २७, ४०; १७५३,१८०६, १८७०,१९४७,१९५२ । २५,५-६; २०३१,२०३३ । २९,५८-६०; २०८९,२०९८,२१०५ । ३९,१३; २३१९

विश्वानि भूतानि ३०,१७; २२३९

विषमाः ३०,१६; २२३०

विष्णुः ११,६०; १४३५ । २२,६; १४९७ । २४,१,३६; १७३७, १९२८ । २५,५; २०२४ । २२,२०; १५६९

विष्णुः निभूयपः २२,२०; १५७०

,, शिपिविष्टः ,, १५७१

विहृतः २५,७; २०४६

वीक्षितः २२,८; १५४४

वीर्यम् ३०,९; २१७६

वृषणः २५,१,७; १९६२,२०४८

वैनंशिनः सुरधः ९,२०; १४१२

वैरहत्यः ३०,१३; २१९४

वैशन्ताः ३०,१६; २२२५

वैश्वानरः २५,८; २०७०

वैश्वानरः अग्निः २९,६०; २१११

वैश्वानराः विश्वे देवाः ११,६०,६५; १४३२,१४३९

व्यश्नुविन् २२,३२; १७००

व्यानः २२,२३,३३; १५७५,१७०९

व्युद्धिः ३०,१७; २२४३

व्यृष्टिः २२,३४; १७२६

शक्वरयः १८,२२; १४८५

शतम् २२,३४; १७२४

शब्दः ३०,१९; २२५९

शयानः २२,७; १५१५

शरद् २४,११,२०; १७८७,१८३३

शरव्या २४,४०; १९५१ । ३०,७; २१३७

शाखाः २२,२८; १६५०

शादः २५,१; १९५३

शार्दूलः २४,३०; १८८५

शिपिविष्टः विष्णुः २२,२०; १५७१

शिशिरः २४,११,२०; १७८९,१८३५

शीकायत् २२,२६; १६१८

शीघ्रं वर्षत् ,, ,, १६१४

शीनः २५,२; २०७६

शीलम् ३०,१९; २२१०

शुक् (च) ३९,११; २३०२

शुकः २२,३१; १६८३

शुक्रः २५,१; १९६७

शुचिः २२,३१; १६८४

शुनासीरः २३,१९;१८२७

शुभम् ३०,७; २१३६

शुश्रूषमाणः २२,८; १५४०

शूकारः ,, १५३०

शूकृतः ,, १५३१

शृणः २२,३०; १६७५

शृण्वत् २२,८; १५४१

शोकः ३०,१४,२२०६।३९,११;२३०५

शोचत् ,, २३०३

शोचमानः ,, २३०४

श्रेयस् ३०,११; २१८१

श्रोत्रम् २२,२३,३३; १५७७,१७१३ । २४,२९; १८८० । २५,२; १९८३

श्लोकः १०,५; १४१५

संयासः ३९,११; २२९९

संवत्सरः १४,२९; १४४६ । २२,२८; १६३९ । २४,२५; १८६० । ३०,१५; २२१५,२२२०

संशरः ३०,१७; २२४४
संसर्पः २२,३०; १६७६
संहानः २२,७; १५२२
सञ्चराः उक्ताः [पूर्वं मंत्रोक्ताः] २४,१५, १७,१९; १८०८,१८१८,१८२६
संज्ञानम् ३०,९; २१५९
सत् २५,२; १९७६
सन्दितः २२,७; १५१२
सन्धयः अहोरात्रयोः २४,२५; १८५८
सन्धिः ३०,९; २१५३
समाः १८,१८; १४७२
समानः २२,३३; १७११
समुद्रः २२,२५; १६०२। २४,२१,३०; १८३६,१८८९। २५,८; २०६९
सरांसि ३०,१६; २२२३
सरस्वान् २४,३३; १९१०
सरस्वती १०,५; १४२०। १८,१६; १४६०। २२,२०; १५६०। २४,१, ४,१४,३३; १७३०,१७४९,१८०३, १९०७। २५,१,५; १९५७,२०१८। २९,५८-५९; २०८५,२१०१
सरस्वती पावका २२,२०; १५६१
,, बृहती ,, १५६२
सरिरः २२,२५; १६०३
सरीसृपाः २२,२९; १६६६
सर्पाः २४,३६; १९२४। २५,५,७; २०२३,२०४५
सर्पदेवजनाः ३०,८; २१४८
सर्वे लोकाः ३०,१२; २१८९
सविता १०,५; १४१९। १८,१६; १४५९। २२,६; १४९५। २४,२, १४,३५; १७४०,१८०२,१९१९। २९,५८,६०; २०९३,२१०८
सहस्(हाः) २२,३१; १६८९
सहस्यः ,, १६९०
साध्याः २४,२७; १८७१। ३०,१५; २२२२
सानूनि ३०,१६; २२३३
सुमृडीका अदितिः २२,२०; १५५९
सूद्याः २२,२५; १५९९
सूर्यः १८,२२; १४७८। २२,२८-२९; १६४२,१६५८। २४,१९,३३,१८२९, १९०५। ३०,२१; २२७६। ३९,१; २२८९
सूर्य-यमौ २४,१; १७३३
सोमः १०,५; १४१८। १४,३१; १४५४। १८,१६; १४५८। २२,६, २७; १४९३,१६२३। २४,२,९,१४, २२,२४,३२; १७३८,१७७४,१८०१, १८४१, १८५१, १८९९। २५,४; २००७। २९,५८; २०८६
सोमपूषणौ २४,१; १७३२
स्तनयत् २२,२६; १६०९
स्तनयित्नुः २५,१; १९८०
स्तेगाः २५,१; १९५६
स्यन्दमानाः २२,२५; १५९७
स्रवन्त्यः २२,२५; १५९६। २५,८; २०६७
स्वनाः ३०,१६; २२३१
स्वपत् २२,७; १५१६
स्वप्नः ३०,१०; २१६६
स्वर् २२,३१-३३; १६९८,१७१९
स्वर्गः २२,३४; १७३७
स्वर्गः लोकः ३०,१३; २२०१
स्वापिः ९,२०; १४०६
हंसः ३०,६,२०; २१२८,२२६६
हिङ्कारः २२,७; १५०१
हिङ्कृतः ,, १५०३
हिमवान् २४,३०; १८९०
हेतिः ३०,७; २१३८
हेमन्तः २४,११,२०; १७८८,१८३४
हृदाः २५,८; २०६८
ह्रादुनीः २२,२६; १६२०। २५,९,२०७८
ह्रीः २४,३५; १९२१

विश्वे-देवादेवता-मन्त्राणां
वर्णानुक्रमसूची ।

अꣳशाय स्वाहा १४१६
अꣳशुरꣳशुष्टे देव सोम १२८४
अंशो भगो वरुणो मित्रो ९३६
अꣳहसस्पतये स्वाहा १६९३
अक्षराजाय कितवम् २२४५
अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः ३२१,१२६२
अग्नये कूटरूप् १८४६
अग्नये गायत्राय त्रिवृते २१०३
अग्नये गृहपतये पारुष्णान् १८५५
अग्नये गृहपतये स्वाहा १३२८
अग्नये त्वा मख्यं वरुणो ददातु १३०६
अग्नयेऽनीकवते प्रथमजान् १८१३
अग्नयेऽनीकवते रोहितान् २०९५
अग्नये पीवानम् २२७१
अग्नये वैश्वानराय द्वादशकपालः २१११
अग्नये स्वाहा १४१७,१४९२,१६२२, २२८५
अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु ९८२
अग्निमतिरुग्भ्याम् २०००
अग्निमद्य होतारमवृणीत १३८६
अग्निमुषसमश्विना दधिक्रां १६८
अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ६९२
अग्निरीशे वसव्यस्य २३६
अग्निरुक्थे पुरोहितो ५१२
अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत् १३१९
अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते ३०८
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा १२७९
अग्निर्देवता वातो देवता ८५९
अग्निर्मा पातु वसुभिः पुरस्तात् ९७२
अग्निश्च पृथिवी च सन्नते १३८४
अग्निश्च म इन्द्रश्च मे १४५७
अग्निश्च मे १४७५
अग्नीपर्जन्याववतं धियं मे ४१४
अग्नीषोमयोरुज्जितिमनूज्जेषं १२७४
अग्नीषोमयोर्भासदौ २०३७
अग्नीषोमयोः षष्ठी २०२२
अग्नीषोमाभ्यां चषान् १८४८
अग्नीषोमा वृषणा वाजसातये ७१३
अग्ने अच्छा वदेह नः ८१६
अग्ने तव त्यदुक्थ्यं ५०
अग्नेऽदब्धायोऽशीतम पाहि १२७५
अग्नेः पक्षतिः २००४
अग्नेः पूर्वे भ्रातरो अर्थमेतं १२०८
अग्ने बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहा १२३३
अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषाम् ८०५
अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थ १२८३
अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया आधिपत्यं १३४४
अग्ने विश्वेभिरग्निभिः १४०२
अग्ने सुतस्य पीतये ३५०
अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदः ८७३
अग्नते विष्णवे वयम् ५११
अङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे १४८५
अचिकित्वाञ्चिकितुषश्चिदत्र १०४
अच्छा मही बृहती शंतमा गीः २८४
अच्छायं वो मरुतः श्लोक एतु ४७१
अच्छा विवक्मि रोदसी सुमेके २२६
अजिराधिराजौ श्येनौ ९६४
अजिरासस्तदप ईयमानाः ३२९
अञ्जे चिदस्मै कृणुथा न्यञ्चनं ५२९
अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो न विप्राः २८३
अतिकुष्टाय मागधम् २१२२
अति धावतातिसरा ९२६
अति नो विष्पिता पुरु ५६१
अति वा यो मरुतो मन्यते नो ४१०
अतीव यो मरुतो मन्यते नो १०९६
अतो न आ नूनतिथीन् ३४७
अत्यं हविः सचते सच्च धातु च २९६
अत्रैनानिन्द्र वृत्रहन् ९३१
अथर्वभ्योऽवतोकाꣳ २२१४
अथैतानष्टौ विरूपानालभते २२८१
अदत्रया दयते वार्याणि ३४२
अदितिꣳ शीर्ष्णा १९८७
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षम् २८
अदितिर्द्यौरदितिर्मातरिक्षम् १२१६
अदितिश्च मे १४८२
अदितिः श्मश्रु वपतु ९४९
अदित्यै पञ्चमी २००८
अदित्यै पाजस्यम् २०५५
अदित्यै भसत् २०५७
अदित्यै मख्यै स्वाहा १५५८
अदित्यै विष्णुपत्न्यै चरुः २११०
अदित्यै सुमृडीकायै स्वाहा १५५९
अदित्यै स्वाहा १५५७
अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो ह्वयतु ८९३
अद्भ्यः स्वाहा १५९२,१६६१,२२९३
अद्भ्यो मत्स्यान् १८३८
अद्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरीमणि ५८८
अध स्मन्ता नहुषो हवं सूरेः ९२
अध त्वमिन्द्र विद्धयस्मान् ६४८
अध प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु ७२
अध यद् राजाना गविष्टौ ६४९
अध स्मा न उदवता सजोषसो १५९
अधा गाव उपमातिं कनायाः ६४७
अधा न्वस्य जेन्यस्य पुष्टौ ६५०
अधायि धीतिरसमप्रमंशाः ५७०
अधासु मन्द्रो अरतिर्विभावा ६४६
अधि न इन्द्रेषां ५६५

अधिपतये स्वाहा १४१६, १६७४, १७०४
अधिपत्न्यसि बृहती दिग् ८६१,१३५८
अधीन्वत्र सप्तिं च ७५०
अधोरामः सावित्रो २०९३
अधोरामौ सावित्रौ २०९६
अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि २७९
अध्वानं बाहुभ्याम् १९९८
अनच्छये तुरगातु जीवम् १२८
अनड्वान् वयः पङ्क्तिश्छन्दो १३३९
अनड्वाहः पङ्क्त्यै १७९८
अनन्ताय मूकम् २२५८
अनामित्रं नो अधराद् ९४१
अनमीवा उषस आ चरन्तु नः ५८५
अनु तदुर्वी रोदसी जिहाताम् ४४७
अनु त्वा मही याजसी अचक्रे ७७
अनुमत्या अष्टाकपालः २११२
अनु वीरैरनु पुष्यास्म १२५५
अनूकाशेन बाह्यं १९७८
अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रिः ३१५
अन्तकाय गोघातम् २२५१
अन्तकाय श्वनिनम् २१४२
अन्तकाय स्वाहा २३१५
अन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे १४७०
अन्तरिक्षं पुरीतता २०५९
अन्तरिक्षाय पाङ्क्तान् १८६३
अन्तरिक्षाय वैश्वनर्तिनम् २२७४
अन्तरिक्षाय स्वाहा १६२६, १६५६, २२८६
अन्ताय बहुवादिनम् २२५७
अन्त्याय भौवनाय स्वाहा १४१४,१७०२
अन्त्याय स्वाहा १७०१
अन्धाहीन्त्स्थूलगुदया २०४४
अन्यत एन्यो मैत्र्यः १७७२
अन्यतोरण्याय दावपम् २२६४
अन्यवापोऽर्धमासानाम् १९१९
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय २०४
अप आस्येन १९६१
अप त्यं वृजिनं रिपुम् ४०५
अप न्यधुः पौरुषेयं वधं १००३
अपः शुष्ककण्ठेन १९८५
अपश्यं गोपामनिपद्यमानम् १२९
अपस्त ओषधीमतीर्ऋच्छन्तु ९८७
अपाघमप किल्बिषमप १३९१
अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतो १३६
अपां चतुर्थी २०२०
अपाग्नौ त उभौ बाहू ९६५
अप दिन्द्रो अपादग्निः ५५८
अपानाय स्वाहा १५७४
अपानेन नासिके १९७४
अपानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा १७०८
अपामीवां सविता साविषन्यग् ७५८
अपामीवामप विश्वामनाहुतिम् ६७२
अपामुद्रो १९३१
अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः १३३६
अपां पेरुं जीवधन्यं भरामहे ६०१
अपां मोदाय स्वाहा १४९४
अपिजाय स्वाहा १४०७,१६९६
अपि नह्यामि ते बाहू ९६६
अपि पन्थामगन्महि ४०८
अपेत वीत वि च सर्पतातो१२६९,१३३३
अपो यूष्णा २०७३
अपो वस्तिना २०४७
अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तो अग्नयो ५८०
अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नो ९३९
अभयं नः करत्यन्तरिक्षम् ९६८
अभयं मित्रादभयममित्राद् ९६९
अभि त्यं वीरं गिर्वणसमर्च ३८३
अभि त्वा वर्चसासिचन् ११४७
अभि त्वेन्द्र वरिमतः ९५९
अभि नꣳइळा यूथस्य माता २५८
अभि प्र स्थाताहेव यज्ञं ४३०
अभि प्रिया मरुतो या वो ५१७
अभि प्रेहि माप वेनः ११४३
अभिभुवे स्वाहा १६७३
अभिभूर्यज्ञो अभिभूरग्निः ९५७
अभि यं देवी निर्ऋतिश्चिदीशे ४७९
अभि वो अर्चे पोष्यावतो नॄन् २४७
अभि वो देवीं धियं दधिध्वम् ४३४
अभीक आसां पदवीरबोधि २१७
अभूत्यै स्वपनम् १२४१
अभ्राय स्वाहा १६०६
अमी ये देवा स्थन ४२,१३९८
अमी ये पञ्चोक्षणो ४७
अमी ये सप्त रश्मयः ४६
अमी ये युधमायन्ति ११८६
अमूः पारे पृदाक्वः ८८३
अयं यो होता किरु स यमस्य ६१०
अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता १२७
अयं सोमः सुदानवः १२००
अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधाः ६४१
अयं हि नेता वरुण ऋतस्य ४९१
अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य १३६०
अयं नाभा वदति वल्गु वो गृहे ६५७
अयमुत्तरात् संयद्वसुस्तस्य १३६१
अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य १३६३
अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य १३६१
अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिः १३५९
अयस्मये द्रुपदे बेधिष इह ११८३
अयेभ्यः कितवम् २१४९
अरण्याय सूमरो १९४३
अराध्या एदिधिषुः पतिम् २१५७
अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते ६७३
अरिष्टया अश्वसादꣳ २२००
अरुणाञ्छरदे १७८७
अरुणो मा सकृद् वृकः ५५
अरुषस्य दुहितरा विरूपे ३६५
अर्कश्च मे १४७७
अर्चन्त एके महि साम ५४८
अर्णवाय स्वाहा १६०१
अर्थमिद् वा उ अर्थिनः ३९
अर्धमाय बधिरम् २१६७
अर्धमासेभ्यः स्वाहा १६३५
अर्मेभ्यो हस्तिपम् २१७३
अर्यमणं बृहस्पतिम् ८२०
अर्यमा णो अदितिर्यज्ञियासो १८७

अर्यम्णे स्वाहा १४२८
अर्यम्णो नवमी २०१२
अर्वाच्यै दिशे स्वाहा १५८१,१५८३, १५८५,१५८७,१५८९,१५९१,१६३१
अर्वाञ्चो अद्या भवता यजत्रा १५६
अलज आन्तरिक्षः १९१४
अवऋत्यै वधायोपमन्थितारं २१९०
अवकां दन्तमूलैः १९५४
अवक्रन्दाय स्वाहा १५०५
अवक्रन्देन तालु १९५९
अवन्तु नः पितरः सुप्रवाचना ५९
अवन्तु मामुषसो जायमाना ४१२
अवः परेण पर एनावरेण ११५
अवः परेण पितरं यो अस्य ११६
अवरस्पराय शङ्कुध्वम् २२६२
अवलिप्ता रौद्राः १७४६
अववर्षते स्वाहा १६१२
अवसृष्टा परा पत शरव्ये १११२
अवस्फूर्जते स्वाहा १६१०
अवाच्यै दिशे स्वाहा १५९०
अवाराय केवर्त २२२८
अवार्यो इक्षवो १९७०
अवार्याणि पक्ष्माणि १९७१
अविज्ञाता अदित्यै १७५५, १७७६
अविन्दन्ते अतिहितं यदासीद् ८३५
अविष्टो अस्मान् विश्वासु विक्षु ४३७
अवीन्नो अग्निर्हव्यान्नमोभिः ४३९
अवीवृधद् वो अमृता अमन्दीद् १२०५
अशनिं मस्तिष्केण १९८१
अशीतिभिस्तिसृभिः सामगेभिः १०९४
अश्वमेधश्च मे १४८०
अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते १७२८
अश्विना त्वाग्रे मित्रावरुणोभा ८९८
अश्विनावृक्साभ्याम् २००२
अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै १३३०
अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै १३९३
अश्विभ्यां मयूरान् १८४९
अष्टर्चेभ्यः स्वाहा १०११
अष्टादशर्चेभ्यः स्वाहा १०२१
अष्टा महो दिव आदो हरी इह ७४
अष्टौ पुत्रासो अदितेः १११९
असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो ९७०,११६८
असवे स्वाहा १६६७
असावि ते जुजुषाणाय सोमः २८१
असौ यः पन्था आदित्यो ५३
अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो ५२१
अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं ९७
अस्ना रक्षाꣳसि २०७९
अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भः ३११
अस्माकं मित्रावरुणावतं रथम् १५८
अस्मिन्त्समुद्रे अध्युत्तरास्मिन् १२२७
अस्मिन् वसु वसवो धारयन्तु ८७७
अस्मे धेहि द्युमतीं वाचमासन् १२२४
अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो १२०४
अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्रः ९४०
अस्य देवस्य मीळ्हुषो वयाः ४९२
अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिः ८७८
अस्येदेषा सुमतिः पप्रथाना ५७३
अस्य मदे स्वर्यं दा ऋताय ७०
अस्य वामस्य पलितस्य ९९
अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः ८९
अहं सो अस्मि यः पुरा ४४
अहं होता न्यसीदं यजीयान् ६०९
अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि ९०७
अहर्पतये स्वाहा १४१०
अहोरात्रयोः सन्धिभ्यो १८५८
अहोरात्रेभ्यः स्वाहा १६३४
अह्ने पारावतानालभते १८५६
अह्ने मुग्धाय स्वाहा १४११
अह्ने शुक्लं पिङ्गाक्षम् २२७९
आकीं सूर्यस्य रोचनाद् १२
आकूतिमग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा १३३२
आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा १२८१
आ क्रन्दय धनपते ११०३
आक्रमणꣳ स्थूराभ्याम् १९९५,२०४१
आक्रयाया अयोगूं २११०
आक्षित् पूर्वाक्षपरा अनूक्त १९६
आखुः कशो मान्थालस्ते १९३६
आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्याः ४८५
आग्नेयः कृष्णग्रीवः २०८४
आग्नेयः कृष्णोऽजः २१००
आ ग्रावभिरद्दन्येभिरक्तुभिः ३३७
आङ्गिरसानामाद्यैः ११२१
आ चष्ट आसां पाथो नदीनां ४३५
आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः १३४९
आजुह्वानः सुप्रतीकः पुररताद् ८६३
आ त एतु मनः पुनः ६२४
आतिर्वाहसो दर्विदा ते वायवे १९११
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषन् ११४४
आ तू षिञ्च हरिमीं द्रोरुपस्थे ७७२
आ ते नयतु सविता नयतु ११०४
आ ते योनिं गर्भ एतु १०५९
आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे १३०३
आत्मा यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा १७१६
आ त्वा कण्वा अहूषत ५
आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसा ८९६
आ त्वागमं शन्तातिभिः ८१२
आथर्वणानां चतुर्ऋचेभ्यः स्वाहा १००७
आ दधामि ते पदं १०९८
आदित्यैँ रमश्नुभिः १९६३
आदित्यानां तृतीया २०३५
आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथाः २२२
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त ४६२
आदित्यासो अति स्रिधो ७२६
आदित्यास्त्वाऽऽच्छृन्दन्तु जागतेन १४३८
आदित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन १४३१
आदित्येभ्यः स्वाहा १६४६
आदित्येभ्यो न्यङ्कून् १८६९
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिः ८२५
आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान् १२२३
आ दैव्यानि पार्थिव नि जन्म २५३
आ धर्णसिर्बृहद्दिवो रराणो २८९
आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वान् ४२९
आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्था २७७
आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः २०७
आध्यक्षायानुक्षत्तारम् २१८२
आ न इळाभिर्विदथे सुशस्ति १४०

आनन्दाय तलवम् २२७०
आनन्दाय स्त्रीषखं २२२९
आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वान् २८६
आ नो अद्य समनसो ५१६
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा २८७
आ नो देवः सविता त्रायमाणो ३८५
आ नो देवः सविता साविषद् वयः ७५३
आ नो देवानामुप वेतु शंसो ५६८
आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्तु १२२५
आ नो बर्हिः सधमादे बृहद्दिवे ५८९
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो १९
आ नो महीमरमतिं सजोषाः २८२
आ नो राधांसि सवितः स्तवध्यै ४८०
आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्ताम् ३८१
आ नो विश्व आस्का गमन्तु देवाः १४१
आ नो विश्वे सजोषसो ५५३
आप इद् वा उ भेषजीः ८१४
आपये स्वाहा १४०५
आ पर्वतस्य मरुतामवांसि २३३
आ पशुं गासि पृथिवीं वनस्पतीन् ५१३
आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वीः ४२८
आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः ५०३
आपो मौषधीर्मतरिश्वेतस्या दिशः ९७७
आ प्र द्रव परमस्याः परावतः ८९९
आ प्र यात मरुतो विष्णो ५१९
आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी १५७२
आ मा पुष्टे च पोषे च ९११
आ यत् साकं यशसो वावशानाः ४६९
आयनाय स्वाहा १५२४
आ यन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा ४४३
आ यमगन्त्सविता क्षुरेण ९४८
आ यातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः ९०२
आयासाय स्वाहा २२९७
आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाहि १३४०
आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा १७०६
आ युवानः कवयो यज्ञियासो ३७३
आयुषाऽऽयुःकृतां जीवायुष्मान् ११६२
आरण्योऽजो नकुलः शका १९००
आरेऽसावस्मदस्तु हेतिः १०५६
आर्तवेभ्यः स्वाहा १६३८
आर्त्यै जनवादिनं २२४१
आर्त्यै परिवित्तं २१५५
आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन् १२२६
आ वात वाहि भेषजं ८११
आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या ४६६
आ वां येष्ठाऽश्विना हुवध्यै २४२
आविर्मर्या आवित्तो अग्निः १३२६
आ वेधसं नीलपृष्ठं बृहन्तं २८८
आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये ७७१
आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुवीरं ६१२
आ वो रुवण्युमौशिजो हुवध्यै ८६
आ वो वाहिष्ठो वहतु स्तवध्यै ४७३
आशाभ्यः स्वाहा १६२९
आशिक्षायै प्रश्निनम् २१७०
आशुश्रिवृद्धान्तः पञ्चदशो व्योमा १३४३
आश्विनावधोरामौ बाह्वोः १७३१
आसीनाय स्वाहा १५१४
आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै २७८
आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णो ३१८
आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः ३१७
आस्कन्दाय सभास्थाणुं २२४९
इडया जुह्वतो वयं देवान् ९१२
इडायास्पदं घृतवत् सरीसृपं ९१०
इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे १२४५
इति चिन्नु प्रजायै पशुमत्यै २५६
इति स्तुतासो असथा रिशादसो ५५०
इदं यत् परमेष्ठिनं मनः १०७२
इदं वपुर्निवचनं जनासः ३३२
इदं विष्कन्धं सहते १०५०
इदं त एकं पर ऊ त एकं ६१४
इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया १०९२
इहमित्था रौद्रं गूर्तवचा ६२७
इदमिन्द्र शृणुहि सोमप १०९३
इदावत्सरायातीत्वरीम् २२१७
इदा हि व उपस्तुतिं ५२२
इद्वत्सरायातिष्कद्वरीं २२१८
इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन ९१७
इन्द्रꣳ स्वपसा वहेन १९९२
इन्द्र उक्थेन शवसा परुर्दधे ७५५
इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं शचीपतिं ६१
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणाः १६७
इन्द्र दृह्य मघवन् त्वावदिद् भुजे ७५१
इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृच्छन्तु ९८९
इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे दुहितासि ९१४
इन्द्रप्रसूता वरुणप्रशिष्टा ७०८
इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि ९१५
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये ५७
इन्द्रवायू बृहस्पतिं ६, ८१९
इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयाय १३०९
इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता २२४
इन्द्रस्त्वा धूपयतु १४३३
इन्द्रस्य क्रोडो २०५४
इन्द्रस्य गौरमृगः १९०१
इन्द्रस्य तृतीया २००६
इन्द्रस्य नु सुकृतं दैव्यं सहः ७५६
इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोः १३२७
इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ८४३
इन्द्रस्यैकादशी २०१४, २०१७
इन्द्राग्निभ्यां कुश्यान् १८४३
इन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि १४८७
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः ३२१
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती ६९३
इन्द्राग्न्योः पक्षतिः २०१७
इन्द्राण्यै षष्ठी २००९
इन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यां २०३९
इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय २११४
इन्द्राय सूकरः १९४९
इन्द्राय स्वपस्याय वेहद् १७३६
इन्द्राय स्वाहा १४१३, १४९८, १६१४
इन्द्रा याहि मे हवमिदं ९२४
इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वाघतो ६६०
इन्द्रेन्द्र मनुष्याः परेहि ९००
इन्द्रे भुजं शशमानास आशत ७१७
इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु विश्वहा ७५४
इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः ४१४
इन्द्रो मा मरुत्वानेतस्या दिशः ९७९
इन्द्रो वसुभिः परि पातु नो गयम् ७०९

इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः पत्यमानः १८४
इन्द्रो वीर्येणोदक्रामत् १०००
इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः १०१
इमं वीरमनु हर्षध्वम् ९५८
इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम् १३९६
इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवीमि १७९
इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व ४९९
इमं नो अग्ने अध्वरं होतः ४२०
इममग्न आयुषे वर्चसे नय ११०१
इममञ्जस्पामुभये अकृण्वत ७२२
इमं महे विदथ्याय शूषं १७०
इमा वां मित्रावरुणा सुवृक्ति ४६५
इमां च नः पृथिवीं विश्वधायाः २१२
इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि १०७३
इमा नु कं भुवना सीषधाम ८२३
इमामग्ने शरणिं मीमृषो नो ९१८
इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी १०७१
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः १३३
इयं सा भूया उषसामिव क्षा ५७१
इयं सा वो अस्मे दीधितिर्यजत्राः १५०
इयं न उस्रा प्रथमा सुदेव्यं ५८३
इयं मे नाभिरिह मे सधस्थम् ६४५
इरायै कीनाशं २१७८
इर्यताया अकितवं २१५०
इषाय स्वाहा १६८७
इष्कृताहावमवतं ७६८
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेद १०५
इहेदसाथ न परो गमाथेर्यो ९०५
इहैव स्त माप याताध्यस्मत् ९५३
इहैव हवमा यात म इह ८८०
ईक्षमाणाय स्वाहा १५४१
ईक्षिताय स्वाहा १५४३
ईळते त्वामवस्यवः ८
ईशानाय परस्वत आलभते १८७१
उक्ताः सम्वराः १८०८,१८१८,१८१६
उक्षाणो बृहत्या १७९६
उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः ३३०
उग्रं वर्षते स्वाहा १६१३
उत कण्वं नृषदः पुत्रमाहुः ५७८
उत गना व्यन्तु देवपत्नीः ३२७
उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद् ३२४
उत त्या मे यशसा श्वेतनायै ८५
उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता ६४१
उत त्या मे हवमा जग्म्यातं ३८७
उत त्ये देवी सुभगे मिथूदृशा १६१
उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः ३२५
उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना ४७०
उत त्वं सूनो सहसो नो अद्या ३८६
उत देवा अवहितं ८०९
उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु ३८०
उत न ईं त्वष्टा गन्त्वच्छा १४५
उत न ईं मतयोऽश्वयोगाः १४६
उत न ईं मरुतो वृद्धसेनाः १४७
उत न एषु नृषु श्रवो धुः ४४१
उत नो देवावश्विना शुभस्पती ७४१
उत नो देव्यदितिः ५०९
उत नो धियो गोअग्राः ३३
उत नो नक्तमपां वृषण्वसू ७४०
उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना ७४२
उत नो विष्णुरुत वातो अस्रिधो ३२३
उत नोऽहिर्बुध्न्यो मयस्करः १४४
उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोतु ३९१
उत माता बृहद् दिवा शृणोतु नः ६८५
उत वः शंसमुशिजामिव श्मसि १६३
उत स्य देवः सवितां भगो नः ३९०
उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिः १६१
उत स्य न इन्द्रो विश्वचर्षणिः १६०
उत स्य न उशिजामुर्विया कविः ७३१
उतो हि वां पूर्व्या आविविद्रे १७३
उत्कूलनिकूलेभ्यस्त्रिष्ठिनं २२०८
उत्तमेभ्यः स्वाहा ११३१
उत्तरेभ्यः स्वाहा ११३३
उत्थिताय स्वाहा १५३३
उत्सादेभ्यः कुर्ब्जं २१६३
उदकाय स्वाहा १५९४
उदस्य शुष्माद् भानुर्नार्त ४३१
उदानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा १७१०
उदीच्यै दिशे स्वाहा १५८६
उदीरय कवितमं कवीनाम् २६१
उदु त्यच्चक्षुर्महि मित्रयोराँ ३९३
उदु ष्य वः सविता सुप्रणीतयो ५२३
उद्बृहीताय स्वाहा १६१६
उद्बृहते स्वाहा १६१५
उद्धर्षन्तां मघवन् वाजिनानि १११०
उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः ७६३
उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि ८६१
उद्यासाय स्वाहा २३०१
उद्द्रावाय स्वाहा १५२९
उद्द्रावाय स्वाहा १५२८
उन्नत ऋषभो वामनस्त १७६३
उन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठः १७६४
उप त्वा नमसा वयं होतः ९२१
उपध्वस्ताः सावित्राः १८०२
उप नः सूनवो गिरः ४१७
उप नो देवा अवसा गमन्तु ६५
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पति० १३०७
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा १३००
उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणो १२९९
उपयाममधरेणोष्टेन १९७५
उपलान् प्लीह्ना २०६४
उप व एषे नमसा जिगीषा १४३
उप व एषे वन्द्येभिः शूषैः २४६
उपविष्टाय स्वाहा १५११
उपशिक्षाया अभिप्रश्रिनं २१७१
उप स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं २६६
उपस्थावराभ्यो दाशं २२२४
उपास्थिताय स्वाहा १५२३
उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां १२४
उप ह्वये सुहवं मारुतं गणं ६००
उपावीरस्युप देवान् दैवीः १२८६
उपोत्तमेभ्यः स्वाहा ११३१
उभाभ्यां देव सवितः ११७५
उभे धुरौ वह्निरापिप्दमानो ७७३
उरुव्यचा नो महिषः शर्म यंसद् ८०७
उरौ देवा अनिबाधे स्याम २७५, २९१
उर्व्यै दिशे स्वाहा १६३०
उलो हलिक्ष्णो १८९१

उवोचिथ हि मघवन् देष्णं ४७५
उषसः पूर्वा अध यद् व्यूषुः १९२
उषासानक्ता बृहती सुपेशसा ५९४
उषे यह्वी सुपेशसा ८६६
उषो मघोन्या वह २३७
उष्ट्रो घृणीवान् वाध्रीनसस्ते १९४२
ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो १२६५
ऊर्ज गावो यवसे पीवो अत्तन ७६०
ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वत १४०१
ऊर्जाय स्वाहा १६८८
ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद्गिरौ १३८२
ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रापय गिरौ १३८१
ऊर्ध्वायै दिशे स्वाहा १५८८
ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत् ४८१
ऊर्ध्वो प्रावा वसवोऽस्तु सोतरि ७५९
ऋक्षल भिः कपिञ्जलान् १९९६
ऋक्षीकाभ्यो नैषादं २१४४
ऋक्षो जतूः सुषिलीका १९२७
ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः १३९२
ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदम् ८३२
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् १३७
ऋजुनीती नो वरुणो २९
ऋतधीतय आ गत ३५१
ऋतये स्तेनहृदयं २१९३
ऋतस्यतैनादित्या यजत्रा १०६६
ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षान् ४०१
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरु व्यचो ७२४
ऋतुभ्यः स्वाहा १६३७
ऋते स विन्दते युधः ५२८
ऋभुभ्योऽजिनसन्धम् २२२१
ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतो मदः ७४३
ऋभूणां भागोऽसि विश्वेषां देवानाम् ८६०
ऋश्यो मयूरः सुपर्णस्ते १९३०
ऋषभाः ककुभे १७९७
ऋषभाय गवयी १८८६
ऋषिभ्यः स्वाहा ११३४
एक एवाग्निर्बहुधा समिद्धः ५५६
एकत्रिंशतास्तुवत प्रजाः १४५५
एकयास्तुवत प्रजा अधीयन्त १४४०
एकर्चेभ्यः स्वाहा १०२६
एकविंशत्यास्तुवतैकशफाः १४५०
एकशताय स्वाहा १७२५
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश ७८५
एकस्मै स्वाहा १७२२
एकादशभिरस्तुवत ऋतवो १४४५
एकादशर्चेभ्यः स्वाहा १०१४
एकानृचेभ्यः स्वाहा १०२८
एकाष्टका तपसा तप्यमाना ९१३
एकोनविंशतिः स्वाहा १०२२
एण्यङ्गो १९२३
एतं शर्धं धाम यस्य सूरेः ९३
एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्टवं कूचित् ७४६
एतं सधस्थाः परि वो ददामि ११५०
एतं जानाथ परमे व्योमन् १२५१
एतं ते देव सवितर्यज्ञं ८३९
एतं मे स्तोमं तना न सूर्ये ७४७
एता ऐन्द्राग्नाः १७६८,१८०९,१८१९
एता धियं कृणवामा सखायो ३१४
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा १२३२
एतान्यग्ने नवतिर्नव त्वे १२३१
एता वो वस्म्युद्यता यजत्राः १६४
एताः शुनासीरीयाः १८२७
एतो न्वद्य सुध्यो भवाम ३१३
एदं मरुतो अश्विना २३९
एनाङ्गूषेण वयमिन्द्रवन्तो ५६
एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः ११४८
एन्द्रो बर्हिः सीदतु पिन्वतामिळा ५९८
एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः १३४८
एवा कविस्तुवीरवाँ ऋतज्ञा ६९१
एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो ५००
एवा नपातो मम तस्य धीभिः ३९२
एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य ५०५
एवा प्लतेः सूनुरवीवृधद् वो ६७५
एष ते देव नेता ३४९
एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व १३२३
एषः स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा २७३
एषा वः सा सत्या संवागभूद् १३१७
एषामहमायुधा सं स्यामि ११०९
एह यातु वरुणः सोमो ९५१
ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यद् १२९१
ऐन्द्राग्नः सꣳहितो २०९२
ऐन्द्रोऽरुणो २०९०
ऐभिरग्ने दुवो गिरो ४
ऐषु द्यावापृथिवी धातं महद् ७४५
ओमानमापो मानुषीरमृक्तं ३८४
ओमासश्चर्षणीधृतो १
ओ श्रुष्टिर्विदथ्या समेतु ४८८
ओषधीभ्यः स्वाहा १६५४, १६६२
औपद्रष्ट्रघायानुक्षत्तारं २१९६
कतमस्मै स्वाहा १५५३
कथा कविस्तुवीरवान् कया गिरा ६७९
कथा दाशेम नमसा सुदानून् २५५
कथा देवानां कतमस्य यामनि ६७६
कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम २५०
कदित्था नृꣳः पात्रं देवयतां ६७
कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे ३३५
कद् व ऋतस्य धर्णसि ४३
कपृन्नरः कपृथमुद् दधातन ७७४
कपोत उलूकः शशस्ते १९३९
कर्णाभ्याꣳ श्रोत्रꣳ १९८३
कर्णा यामा १७४५
कर्मणे ज्याकारं २१३९
कलविङ्को लोहिताहिः १८९६
कल्माषा अग्निमारुताः १७६६
कविर्नेचक्षा अभि षीमचष्ट १७५
कश्छन्दसां योगमा वेद धीरः ७९०
कस्मै स्वाहा १५५२
कामाय पिकः १९४६
कामाय पूꣳश्चलूम् २१२१
काय स्वाहा १५५१
कायास्तूपराः १८१२
किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस ५७४
किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां ४११
किमू नु वः कृणवामापरेण १५३
कीलालाय सुराकारं २१७९
कुर्वते स्वाहा १५४९
कुलीका देवजामिभ्यो १८५४

कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः ६८८
कूजते स्वाहा १५१८
कूप्याभ्यः स्वाहा १५९८
कूर्माञ्छकैः १९९४
कूश्माञ्छकपिण्डैः २०५३
कृकवाकुः सावित्रो १९१९
कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते १९५१
कृणोमि ते प्राजापत्यम् १०६२
कृताय स्वाहा १५५०
कृतायाऽऽदिनवदर्शं २२४६
कृधी नो अद्रयो देव सवितः ७४४
कृष्णग्रीव आग्नेयो रराटे १७२९
कृष्णग्रीवः शितिकक्षो १७५१
कृष्णग्रीवा आग्नेयाः १७५८, १७७३, १८००
कृष्णाजिरल्पाज्जिः १७५२
कृष्णान् वर्षाभ्यो १७८६
कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः १८२५
कृष्णा बभ्रुनीकाशाः १८२४
कृष्णा भौमा १७७९
कृष्णा यद् गोष्वरुणीषु सीदद् ६३०
कृष्णा वारुणाः १८१०
कृष्णाय स्वाहा १९६८
कृष्णो रात्र्याः १९२६
कृष्णोऽस्याखरेष्ठाऽग्नये त्वा १२७२
को अद्धा वेद क इह प्र वोचद् १७४
को ददर्श प्रथमं जायमानम् १०२
को नु वां मित्रावरुणावृतायन् २४०
को मा ददर्श कतमः स देवो १२०६
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६
को वस्त्राता वसवः को वरूता २२९
क्रतवे स्वाहा १४०८, १६९७
क्रतुप्रावा जरिता शश्वतामवः ७६१
क्रतूयन्ति क्रतवो हृत्सु धीतयो ६७७
क्रन्दते स्वाहा १५०४
क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो ७२६
क्रुञ्चौ श्रोणिभ्याम् २०३८
क्रोधाय निसरं २२०४
क्रोधाय तूणवध्मम् २२६१
क्रोष्टा मायोः १९०१
क्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते १९४५
क्षत्राय राजन्यं २११४
क्षिप्रश्येनाय वर्तिका १८८७
क्षुद्रेभ्यः स्वाहा १०२७, ११२६
क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं २२५२
क्षेमाय विमोक्तारम् २२०७
खड्गो वैश्वदेवः १९४७
खड्गो वैश्वदेवः विश्वेषां देवानां ८७०
गणपतये स्वाहा १६७२
गणश्रिये स्वाहा १६७१
गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे १३७९
गणेभ्यः स्वाहा ११३६
गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं २१४६
गन्धाय स्वाहा १५०८
गर्भं धेहि सिनीवालि ८३८
गायत्रेण प्रति मिमीते अर्कम् १२२
गिरा य एता युनजद्धरी त ४६७
गिरीन् शाशिभिः २०६३
गीताय शैलूषं २१२४
गुह्याभ्यः किरातꣳ २२३१
गेहायोपपतिम् २१५४
गोधा कालका दार्वाघाटस्ते १९१८
गोभिष्ट्वा पात्वृषभो वृषा त्वा ११५५
गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः १८५३
गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं १२६
गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षति १३९
ग्लौभिर्गुल्मान् २०६६
ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकं २२६८
ग्रावाणः सोम नो हि कं ४०६
ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७
ग्रीष्माय कलविङ्कान् १८३१
घर्मश्च मे १४७६
घर्माय स्वाहा २३१०
घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतुः ७८२
घृतꣳ रसेन २०७२
घृतं घृतपावानः पिबत ८४५
घृतपृष्ठा मनोयुजो ९
घृतेन त्वा समुक्षाम्यग्ने ११५९
घृतेन सीता मधुना समज्यतां ८५७
घोषाय भषम् २२५६
घोषाय स्वाहा १४२४
घ्राताय स्वाहा १५०९
चक्रवाकौ मतरनाभ्यां २०६१
चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा १७११
चक्षुषे मशकान् १८७९
चक्षुषे स्वाहा १५७६
चतुर्दशचैभ्यः स्वाहा १०१७
चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य ७८८
चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा ७८४
चत्वार ईं बिभ्रति क्षेमयन्तो ३३१
चत्वारो मा मशर्शारस्य शिश्वः ९६
चन्द्रमसे किलासम् २२७८
चन्द्रमा अप्स्वन्तरा ३८
चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत् ९९५
चन्द्राय स्वाहा १६४१, १६५९, १६७७, २२९१
चराचरेभ्यः स्वाहा १६६५
चाषान् पित्तेन २०५१
चित्तं मन्याभिः १९८६
चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा अभिष्टिः ७६२
चित्राण्यङ्गैः २०८०
जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद् २२३
जनो यो मित्रावरुणावभिष्टुग् ९०
जयतामिव तन्यतुः १७
जरां सु गच्छ परि धत्स्व १०४०
जवं जङ्घाभ्याम् १९९७
जवाय स्वाहा १५३४
जवायाश्वपं २१७४
जवो यस्ते वाजिन्निहितो १३१४
जहका वैष्णवी १९२८
जाग्रते स्वाहा १५१७
जानीत स्मैनं परमे व्योमन् ११५१
जाम्बीलिनारण्यम् १९९९
जिह्वाया उत्सादम् १९५८
जीमूतान् हृदयौपशेन २०५८
जुम्बकाय स्वाहा २०८३
ज्मया अत्र वसवो रन्त देवाः ४८३

ज्यायांसमस्य यतुनस्य केतुना ३०१
ज्योतिरसि विश्वरूपं ८४४
ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा १७१८
ज्योतिषे स्वाहा १६७८
ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचक्रं ५५७
त आदित्या आ गता सर्वतातये ५८,५९०
त ऊ षु णो महो यजत्राः ६५३
तत् सु नः सविता भगः २३८
तदद्य वाचः प्रथमं मसीय १११०
तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने ३३४, ११२०
तदिन्वस्य परिषद्वानो अग्मन् ६३९
तद्धि वयं वृणीमहे ७९३
तद्बन्धुः सूरिर्दिवि ते धियंधा ६४४
तनूष्टे वाजिन् तन्वं नयन्तां ६१५
तन्तुना रायस्पोषेण रायस्पोषं १३५१
तन्न इन्द्रस्तद् वरुणस्तदग्निः ६६
तन्न इन्दो वरुणो मित्रो अग्निः ४४८
तन्नो अनर्वा सविता वरूथं ३४३
तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं ५९१
तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आपः ४४६
तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं २२
तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिरर्कैः ३७६
तपन्ति शत्रुं स्वर्ण भूमा ४४२
तपसे कौलालं २११३
तपसे शूद्रं २११६
तपसे स्वाहा १६९१, २३०६
तपस्याय स्वाहा १६९२
तप्तायनी मेऽसि वित्तायनी मे १२८५
तप्ताय स्वाहा २३०९
तप्यते स्वाहा २३०७
तप्यमानाय स्वाहा २३०८
तमसे तस्करं २११७
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं २३
तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः १२४९
तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा २९४
तवोतिभिः सचमाना अरिष्टा २६७
तां वो देवाः सुमतिमूर्जयन्तीम् २५७
ता अत्नत वयुनं वीरवक्षणं ३३६
ता उभौ चतुरः पदः संप्रसारय १३८०
ता नो रासन् रातिषाचो वसूनि ४४५
तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं २१
तान् यजत्राँ ऋतावृधः १०
तामस्य रीतिं परशोरिव प्रति ३३८
तिग्ममेको बिभर्ति हस्त आयुधं ५४३
तिसृभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत १४४१
तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीः ११५७
तिस्रो देष्ट्राय निर्ऋतीरुपासते ७८३
तिस्रो मातॄस्त्रीन् पितॄन् बिभ्रदेकः १०८
तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा १५९५
तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेः ११०८
तीर्थेभ्य आनन्दं २२२९
तीव्रो वो मधुमाँ अयं १६६
तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु २४८
तुभ्यं पयो यत् पितरावनीतां ७१
तुर्यवाह उष्णिहे १७९४
तुलायै वाणिजं २२३७
तृचेभ्यः स्वाहा १०२५
तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ११३०
ते अस्मभ्यं शर्म यंसन् ३१
तेगान् दंष्ट्राभ्यां १९५६
ते घा राजानो अमृतस्य मन्द्राः ७३९
तेजसेऽजपालम् २१७७
ते ते देव नेतर्ये ३४६
तेदनीमधरकण्ठेन १९८४
ते न इन्द्रः पृथिवी क्षाम वर्धन् ४०३
ते नः सन्तु युजः सदा ५६०
ते नस्त्राध्वं तेऽवत ५५१
ते नूनं नोऽयमूतये ७९४
ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं ६८१
ते नो गोपा अपाच्याः ५३६
ते नो नावमुरुष्यत ५१०
ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुः २४१
ते नो रायो द्युमतो वाजवतो ३८८
ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषाः ३८९
तेऽवदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषे ७७५
तेऽविन्दन् मनसा दीध्याना ८३६
तेषां हि महा महतामनर्वणां ६९४
ते सीषपन्त जोषमा यजत्राः ५०४
ते हि द्यावापृथिवी भूरिरेतसा ७३१
ते हि द्यावापृथिवी मातरा मही ६८९
ते हि प्रजाया अभरन्त विश्रवः ७३०
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः ४८४
ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उ नः ४०२
ते हि वस्वो वसवानाः ३०
त्मना समत्सु हिनोत यज्ञं ४३१
त्रयस्त्रिंशतास्तुवत भूतानि १४५६
त्रयस्त्रिंशद् देवतास्त्रीणि च ११६४
त्रया देवा एकादश ८६५
त्रयोदशभिरस्तुवत मासाः १४४६
त्रयोदशचैभ्यः स्वाहा १०१६
त्रयोविंशत्यास्तुवत क्षुद्राः १४५१
त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधात् ११७८
त्रायन्तामिह देवाः ८१३
त्रितः कूपेऽवहितो ५४
त्रिपाजस्यो वृषभो विश्वरूपः २१६
त्रिरा दिवः सवितर्वार्याणि २१९
त्रिरा दिवः सविता सोषवीति २२०
त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि २२१
त्रिवत्सा अनुष्टुभे १७९३
त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा १३५३
त्रिः सप्त सप्त नयो महीरपो ६८३
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं ६१३, १२६१
त्रीण्येक उरुगायो वि चक्रमे ५४५
त्रीन्नाकांस्त्रीन्त्समुद्रांस्त्रीन् ११५८
त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः कवीनाम् २१८
त्रेतायै कल्पिनं २२४७
त्र्यवयो गायत्र्यै १७९०
त्वं सूरो हरितो रामयो नॄन् ७९
त्वं होता मनुर्हितो १४
त्वं नो अग्ने अग्निभिः ८२१
त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः ८०
त्वमायसं प्रति वर्तयो गोः ७५
त्वमिन्द्र नर्यो याँ अवो नॄन् ७८
त्वमिन्द्र स्वयशा ऋभुक्षाः ४७६
त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां १०९९
त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे १४६६
त्वष्टा नो दैव्यं वचः १३९५

त्वष्टा मे दैव्यं वचः ९३५
त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते ७०१
त्वष्टुर्दशमी २०२६
त्वष्ट्रे उष्ट्रान् १८७६
त्वष्ट्रे कौलीकान् १८५२
त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा १५६७
त्वष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा १५६८
त्वष्ट्रे स्वाहा १५६६
त्वां विशो वृणतां राज्याय ८९७
त्वामग्न ऋष आर्षेय ऋषीणां १३७५
त्वां पूर्व ऋषयो गीर्भिरायन् १२३०
त्वाष्ट्री लोमशसक्थी सक्थ्यौ १७३४
दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते ६८०
दक्षिणायै दिशे स्वाहा १५८२
दधिक्रां वः प्रथममश्विनोषसम् ५०६
दधिक्र मग्निमुषसं च देवीं १६९
दमूनसो अपसो ये सुहस्ताः २७०
दश क्षिपो युञ्जते बाहू अद्रि २८०
दशचैभ्यः स्वाहा १०१३
दिग्भ्यः स्वाहा १६२८, २२९०
दिग्भ्यो नकुलान् १८६५
दितिश्च मे १४८३
दित्यवाहो जगत्यै १७९२
दिवं वृक्षाभ्यां २०६२
दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधः ६९८
दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे ५८१
दिवा पतयते स्वाहा १६८०
दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना ५९९
दिवे कशान् १८६४
दिवे खलतिꣳ २२७५
दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः ११७२
दिवे स्वाहा १६२७, १६५७, २२८८
दिवो मादित्या रक्षन्तु ९७१, ११६९
दिशश्च म इन्द्रश्च मे १४७४
दिशां कक्षौ १८९४
दिशां जत्रवो २०५६
दिष्टाय रज्जुसर्जं २१४०
दुष्कृताय चरकाचार्यं २२५३
दूरे चित् सन्तमरुषास इन्द्रम् ८९२
देवं वो अद्य सवितारमेषे ३४०
देवंदेवं वोऽवसे ५२४
देवलोकाय पेशितारं २१८७
देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः २१०
देवस्य त्वा सवितुः । अश्विनोः १३६७
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे १२८७
देवस्य त्वा सवितुः । सरस्वत्यै १३६६
देवस्याहꣳ सवितुः सवे १३१५
देवा अमृतेनोदक्रामंस्तां १००१
देवा आज्यपा जुषाणाः १२५६
देवा इदस्य हविरद्यमायन् १२५७
देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे ७७८
देवाः कपोत इषितो यदिच्छन् ८२८
देवा गातुविदो गतुं १२३६
देवा ददत्वासुरं तद् वो अस्तु ११९८
देवा देवानां भिषजा १२५४
देवानां युगे प्रथमे १२१४
देवानाꣳ समिदसि १२४४
देवानां दूतः पुरुध प्रसूतो १८८
देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रो ११६३
देवानां नु वयं जाना १२११
देवान् दिवमगन् यज्ञस्ततो मा १२४६
देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे ७०६
देवान् हुवे बृहच्छ्रवसः स्वस्तये ७०७
देवानामसि वह्नितमꣳ १२३४
देवानामिदवो महत् ५५९
देवानामुत्क्रमणमसि १२४२
देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः ३२६
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां २०
देवाः पितरः पितरो देवाः ११५२
देवा यज्ञमतन्वत भेषजं १२५२
देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो ५२५
देवास्त्वा मन्थिपाः प्रणयन्तु १२४०
देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्तु १२३९
देवीः षळुर्वीरुरु नः कृणोत ८०४
देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्य १२४१
देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः १२३८
देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु ६३, २३५
देवो भगः सविता रायो अंशः २६४
देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं १३८७
दैवीः षडुर्वीरुरु नः कृणोत १०४७
दैवी धियं मनामहे ८४२
दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे देवश्रीः १२५०
दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित ७१९
द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो ५८२
द्यावापृथिवी अनु मा दीर्घाथां १०९५
द्यावापृथिवी उर्वन्तरिक्षं १०९१
द्यावापृथिवी जनयन्नभि व्रता ७१५
द्यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा १६४०, २३२०
द्यावापृथिवीयः कूर्मः १९१६
द्यावापृथिवी वर्तोभ्यां १९६५
द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं २०३०
द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र १३१
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः ८७१
द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतसः ५९५
द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ ११७९
द्यौश्च म इन्द्रश्च मे १४७१
द्यौश्च मे १४८४
द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता ११००
द्यौष्पितः पृथिवि मातरध्रुग् ३९७
द्वादशर्चेभ्यः स्वाहा १०१५
द्वादशारं नहि तज्जराय १०९
द्वापरायाधिकल्पिनम् २२४८
द्वाभ्याꣳ स्वाहा १७२३
द्वाभ्यꣳ स्वाम् २१६५
द्वाविमौ वातौ वातः ८१०
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया ११८
द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ११२९
द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्विदम् ६१९
द्विमाता होता विदथेषु सम्राड् १९८
द्विरूपा अग्नीषोमीया १७६९
धर्तारो दिव ऋभवः सुहस्ता ७१६
धर्माय सभाचरं २११५
धाता च म इन्द्रश्च मे १४६५
धाता धातॄणां भुवनस्य यस्पतिः ८०६
धाता रातिः सवितेदं जुषन्ताम् ९०३
धातुर्दशमी २०१३
धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा ८६४

धायसेभ्यः स्वाहा १६००
धावते स्वाहा १५२७
धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षां ३१९
धिये समाश्विना प्रावतं न ९३७
धुक्ष्वा आग्नेयी १८९५
धूमाय स्वाहा १६०५
धूम्रा आन्तरिक्षा १७८०
धूम्रान् वसन्तायालभते १७८४
धूम्रा बभ्रुनीकाशाः १८२२
धृतव्रता आदित्या इषिरा १५१
धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो ७१४
धेनवोऽतिच्छन्दसे १७९९
धैर्याय तक्षाणम् २१३२
नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः १०७७
नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे १४७३
नक्षत्राणि रूपेण २०८१
नक्षात्रियेभ्यः स्वाहा १६३३
नक्षत्रेभ्यः किंशिरं २२७७
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा १६३२, १६६०, २२९२
नक्षद्धवमरुणीः पूर्व्यं राट् ६९
नड्वलाभ्यः शौष्कलं २२२६
न तमंहो न दुरितं ७९२
न तद् दिवा न पृथिव्यानु मन्ये ४०९
न ता मिनन्ति मायिनो न धीराः २१४
नदीभ्यः पौञ्जिष्ठम् २१४३
न बहवः समशकन् ८८५
नभ उदर्येण २०६०
नभसे स्वाहा १६८५
नभस्याय स्वाहा १६८६
नभोरूपाः पार्जन्याः १७४७, १७६२
नम इदुग्रं नम आ विवासे ४००
नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां १२६४
नमो देवेभ्यः १२३५
नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यो नमो ११९९
नमो वः पितरो रसाय १२७७
नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजो ११८२
नरा वा शंसं पूषणमगोह्यम् ६७८
नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह ६०
नरिष्ठायै भीमलं २१२६
नर्माय पुँश्चलूः २२६५
नर्माय रेभः २१२७
नवदशभिरस्तुवत शूद्रार्यौ १४४९
नवभिरस्तुवत पितरोऽसृज्यन्त १४४४
नवर्चेभ्यः स्वाहा १०१२
नवविंशत्यास्तुवत वनस्पतयो १४५४
न वि जानामि यदिवेदमस्मि १३५
न वो गुहा चकृम भूरि दुष्कृतं ७५७
नव्यं तदुक्थ्यं हितं ४९
न हि वो अस्त्यर्भको ५४९
नाके राजन् प्रति तिष्ठ तत्र ११५४
नाको मकरः कुलीपयः १९२१
नाना चक्राते यम्या वपूंषि २०२
नाभ्यै स्वाहा २२९५
नारकाय वीरहणं २११८
नावा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः ६२०
नासत्या मे पितरा बन्धुपृच्छा १८५
नित्यश्चाकन्यात् स्वपतिर्दमूना ५७१
निमेषाय स्वाहा १५४५
निराहावान् कृणोतन ७६७
निर्ऋतिं निर्जर्जल्येन १९८८
निर्ऋत्यै कोशकारीं २२११
निर्ऋत्यै पञ्चमी २०२१
निर्ऋत्यै परिविविदानम् २१५६
निविष्टाय स्वाहा १५१०
नि वेवेति पलितो दूत आसु २००
विवेष्यं मूर्ध्ना १९७९
निषण्णाय स्वाहा १५३२
निष्कृत्यै पेशस्कारीः २१५८
निष्कृत्यै स्वाहा २३११
निष्षिध्वरीस्त ओषधीरुतापो २१३
नीचैः पद्यन्तामधरे भवन्तु ११०७
नीलग्रीवः कृमिः १८८८
नीलनखेभ्यः स्वाहा ११२४
नीहारमूष्मणा २०७५
नीहाराय स्वाहा १६२१
नू देवासो वरिवः कर्तना नो ५०७
नू नो रयिं रथ्यं चर्षणिप्रां ३७७
नू म आ वाचमुप याहि विद्वान् ३६२
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैः ४८७
नू रोदसी अहिना बुध्न्येन २३४
नू सद्मानं दिव्यं नंशि देवाः ४०४
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा ६६४
नृत्ताय सूतं २१२३
नेतार ऊ षु णस्तिरो ७९७
नैतावदेना परो अन्यदस्ति ५७५
पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां १२११
पञ्चदशभिरस्तुवत क्षत्रम् १४४७
पञ्चदशर्चेभ्यः स्वाहा १०१८
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं ११०
पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त १४४२
पञ्चर्चेभ्यः स्वाहा १००८
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने १११
पञ्चावयस्त्रिष्टुभे १७९१
पञ्चविंशत्यास्तुवतारण्याः १४५२
पत्नीव पूर्वहूतिं वावृधध्या ८३
पथ एकः पीपाय तस्करो ५४४
पथस्पथः परिपतिं वचस्या ३७०
पथ्या रेवतीर्बहुधा विरूपाः ९०१
पदे इव निहिते दस्मे अन्तः २०६
पदेपदे मे जरिमा नि धायि २५४
पद्या वस्ते पुरुरूपा वपूंषि २०५
पन्थानं भ्रूम्यां १९६४
परः सो अस्तु तन्वा तना च १२०३
परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिः १३०८
परावतो ये दिधिषन्त आप्यं ६६१
परिक्षिता पितरा पूर्वजावरी ६९९
परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्याद् ५६९
परि दद्म इन्द्रस्य बाहू ९६१
परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं १०३९
परिप्लवेभ्यः स्वाहा १६६४
परिवत्सरायाविजातामू २२१६
परीदं वासो अधिथाः स्वस्तये १०४१
परीमं सोममायुषे महे १०३८
परीममिन्द्रमायुषे महे १०३७
परीमे गामनेषत ८२२
पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्याः ३६८
पर्जन्याय मण्डूकान् १८३७

पर्जन्यावाता वृषभा पुरीषिणा ७००
पर्यायिकेभ्यः स्वाहा ११२७
पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम् ११३४
पवमानः पुनातु मा क्रत्वे ११७४
पवित्राय भिषजं ११६८
पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः १२७०
पश्वादोषाय ग्लाविनं ११३८
पश्वा यत् पश्वा वियुता बुधन्त ६३८
पष्ठवाहो विराजः १७९५
पाकः पृच्छामि मनसाविजानन् १०३
पातं न इन्द्रापूषणा ९३२
पातां नो देवाश्विना शुभस्पती ९३४
पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये ९३३
पाप्मने क्लीबम् ११९
पाप्मने सैलगम् ११५४
पाराय मार्गारम् ११२७
पार्या इक्षवः १९७१
पार्याणि पक्ष्माणि १९६९
पार्श्वे विश्वेषां देवानामुत्तरम् ८७१
पावीरवी कन्या चित्रायुः ३६९
पावीरवी तन्यतुरेकपादजो ७०४
पिता यत् स्वां दुहितरमधिष्कन् ६३३
पिद्वो न्यङ्कुः कक्कटस्ते १९०३
पिपर्तु मा तदृतस्य प्रवाचनं ५८७
पिशङ्गाञ्छिशिराय १७८९
पिशाचेभ्यो बिदलकारीं ११५१
पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु ११८०
पुनन्तु मा देवजनाः ११७३
पुनर्दाय ब्रह्मजायां ७८१
पुनर्नः पितरो मनो ६२५
पुनर्वै देवा अददुः ७८०
पुमांसं पुत्रं जनय १०६०
पुरा यत् सूरस्तमसो अपीतेः ७६
पुरुषमृगश्चन्द्रमसो १९१७
पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं ११४५
पुष्करसादस्ते त्वाष्ट्रा १८९७
पुष्टये गोपालं ११७५
पुष्पेभ्यः स्वाहा १६५१
पूताय स्वाहा २२९६
पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो ११०१
पूषणं वनिष्ठुना २०४३
पूषणं दोभ्याम् २००१
पूषा च म इन्द्रश्च मे १४६१
पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिशः १३२०
पूषा विष्णुर्हवनं मे सरस्वति ५५४
पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा १५६५
पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा १५६४
पूष्णे स्वाहा १४२१, १५६३
पूष्णो नवमी २०२५
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः १३२
पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा ११३९
पृथिवी च म इन्द्रश्च मे १४६९
पृथिवी च मे १४८१
पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो १३४२
पृथिवीं त्वचा २०८२
पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः १०८२
पृथिव्यै पीठसर्पिणं २२७२
पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्यो ११७०
पृथिव्यै स्वाहा १६२५, १६५५, २२८४
पृश्नयो मारुताः १८०५, १८११
पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निः १७४८
पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती १७४२
पृषतो हेमन्ताय १७८८
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः २५
पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां स्वाहा १७२०
पौष्णः श्यामः २०८७
पौष्णौ रजतनाभी २०९७
प्रकामाय रजयित्रीम् २१९२
प्रकामोद्यायोपसदं २१६०
प्रकाशेनान्तरम् १९७७
प्रजाः रेतसा २०५०
प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु पूर्वे ८९१
प्रजापतये च वायवे च १८८१
प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि १४८६
प्रजापतये पुरुषान् हस्तिनः १८७७
प्रजापतये स्वाहा १७०५
प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु ९९०
प्रजापतिः प्रजाभिरुदक्रामत् १००१
प्रजापतिर्मा प्रजननवान्त्सह ९८०
प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम् २१६९
प्र तद् दुःशीमे पृथवाने वेने ७४९
प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्य २८५
प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषत ४४४
प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वा १३५१
प्रति प्रयाणमसुरस्य विद्वान् ३४१
प्रति मे स्तोममदितिर्जगृभ्यात् २६१
प्रतिश्रुत्काया अर्तनं २२५५
प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः १९०४
प्रतीच्यै दिशे स्वाहा १५८४
प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्छचीभिः ८२७
प्रथमभाजं यशसं वयोधां ३७१
प्रथमा ह व्युवास सा धेनुः ९०८
प्रथमेभ्यः स्वाहा ११२८
प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नाम ८३४
प्रथिष्ट यस्य वीरकर्ममिष्णद् ६३१
प्रदरान् पायुना २०५१
प्र नः पूषा चरथं विश्वदेव्यो ७३३
प्र नु यदेषां महिना चिकित्रे १४८
प्र नो यच्छत्वर्यमा ८१७
प्र पस्त्यामदितिं सिन्धुमर्कैः २३१
प्रप्रोथाय स्वाहा १५०७
प्रबुद्धाय स्वाहा १५१९
प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त ४९५
प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य ४६४
प्रभाया अग्नेर्धं ११८४
प्र भ्रातृत्व सुदानवो ५६६
प्रमदे कुमारीपुत्रं २१३०
प्र मा युयुज्रे प्रयुजो जनानां ५७९
प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो ८८८
प्रमुदे वामनं २१६४
प्र मे विविक्वाँ अविदन्मनीषां २२३
प्र यज्ञ एतु होत्वो न सप्तिः ५०२
प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभिः ५८४
प्रयाजान् मे अनुयाजाँश्च केवलान् १२०९
प्रयुग्भ्य उन्मत्तः २१४७
प्रयुञ्जती दिव एति ब्रुवाणा ३२८
प्र ये धामानि पूर्व्याण्यर्चान् २३०

प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुः ३४४
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धवः ७२५
प्र व एको मिमय भूर्यागो १५५
प्र व एते सुयुजो यामन्निष्टये २९७
प्र वः पान्तं रघुमन्यवोऽन्धो ८२
प्र वः शंसाम्यद्रुहः ५२६
प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा ३६६
प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषाम् ४८२
प्र वीराय प्र तवसे तुराय ३७४
प्र वो भ्रियन्त इन्दवो ७
प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं ४७१
प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन् ५०१
प्र वो रयिं युक्ताश्वं भरध्वं २४४
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं २४५
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं ६८१
प्र शंतमा वरुणं दीधिती गीः २६०
प्र शुक्रैतु देवी मनीषा ४२६
प्र सक्षणो दिव्यः कण्वहोता २४३
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो ५२७
प्रसवाय स्वाहा १६९५
प्र स विश्वेभिरग्निभिः १४०३
प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं रुवन्तम् २७२
प्र सू न एत्वध्वरो ५१४
प्र सू महे सुशरणाय मेधां २७१
प्राच्यै दिशे स्वाहा १५८०
प्राजापत्यश्चरुः २१०९
प्राजापत्याभ्यां स्वाहा १०३२
प्राणश्च मे १४७९
प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे १३०२
प्राणाय स्वाहा १५७३
प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा १३७८
प्राणायान्तरिक्षाय वयोभ्यो ११७१
प्राणेनाग्निं सं सृजति वातः ११६१
प्राणो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा १७०७
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे ४९४
प्रायणाय स्वाहा १५१५
प्रायश्चित्यै स्वाहा २३१२
प्रायासाय स्वाहा २२९८
प्राशृङ्गा माहेन्द्रा १८९०
प्रियाय प्रियवादिनम् २१९९
प्रीणीताश्वान् हितं जयाथ ७६९
प्रुष्णते स्वाहा १६१७
प्रुष्वा अश्रुभिः २०७७
प्रुष्वाभ्यः स्वाहा १६१९
प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं ८८६
प्रेता जयता नर उग्रा वः ११११
प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषे १४२
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिः १२६७
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु १२६३
प्रैषः स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं २७४
प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं १४९
प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं ३६१
प्रोथते स्वाहा १५०६
प्रोह्यमाणः सोम आगतो १३१०
प्लवो मद्रुर्मत्स्यस्ते नदीपतये १९१५
प्लीहाकर्णः शुण्ठाकर्णो १७५०
फलेभ्यः स्वाहा १६५३
फल्गूलोंहितोर्णा पलक्षी १७४९
बलस्य नीथा वि पणेश्च मन्महे ७२३
बभ्रवः सौम्याः १७७४, १८०१
बभ्रवो धूम्रनीकाशाः १८२३
बभ्रुकानवान्तरदिशाभ्यः १८६६
बभ्रुररुणबभ्रुः शुकबभ्रुः १७३९
बभ्रुरेको विषुण सूनरो ५३९
बभ्रुः सौम्यः २०८६
बलं कुष्टाभ्याम् २०४२
बलाय स्वाहा १५३५
बलायाजगरो १९३७
बलायानुचरं २१९७
बलायोपदाम् २१६२
बहुरूपा वैश्वकर्मणाः १८९१
बहुरूपा वैश्वदेवाः १८०६
बीभत्साये पौल्कसं २२३५
बृहद् वयो बृहते तुभ्यमग्ने २९१
बृहन्तो दिव्याः १७८१
बृहस्पतये गवयान् १८७५
बृहस्पतये पाङ्क्ताय २१०७
बृहस्पतये वाचस्पतये १९१३
बृहस्पतये स्वाहा १४२२, १४९९
बृहस्पतिꣳ शकुनिसादेन १९९३
बृहस्पतिनावसृष्टां० । तेजो गोषु ११९१
बृहस्पतिनावसृष्टां० । पयो गोषु ११९४
बृहस्पतिनावसृष्टां० । भगो गोषु ११९२
बृहस्पतिनावसृष्टां० । यशो गोषु ११९३
बृहस्पतिनावसृष्टां० । रसो गोषु ११९५
बृहस्पतिनावसृष्टां० । वर्चो गोषु ११९०
बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु ९९१
बृहस्पतिर्मा विश्वैर्देवैरूर्ध्वायाः ९८१
बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे १४६२
बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि १२२१
बृहस्पतेरष्टमी २०११
बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतये १३१६
बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि ६१
ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं २१८५
ब्रह्म गामश्वं जनयन्त ओषधीः ७०२
ब्रह्मचारी चरति वेविषद् विषः ७७९
ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ११४१
ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मारः १११३
ब्रह्मणे ब्राह्मणं २११३
ब्रह्मणे स्वाहा १०३५, ११४०, २३१७
ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका १८८०
ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदक्रामत् ९९९
ब्रह्महत्यायै स्वाहा २३१८
ब्रह्मा कृणोति वरुणो ५२
ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा १७१७
ब्राह्मणमय विदेयं पितृमन्तं १३०५
ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः १३८८
भगाय स्वाहा १४२७
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः २६
भद्राय गृहपꣳ २१८०
भराय सु भरत भागमृत्वियं ७५२
भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहे ६६९
भर्गो ह नामोत यस्य देवाः ६४०
भायै दार्वाहारम् २१८३
भुज्युमंहसः पिपृथो निरश्विना ७०३
भुवनस्य पतये स्वाहा १४१५, १७०३
भुवनस्य पितरं गीर्भिराभिः ३७२

भूतो भूतेषु पय आ दधाति ११४१
भूत्यै जागरणम् ११४०
भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं ११८८
भूम्ने परिष्कन्दं ११९८
भूम्या अन्तं पर्येके चरन्ति ७९१
भूम्या आखूनालभते १८६१
भूर्जज्ञ उत्तानपदो ११११५
भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना १२७८
भेषजाय स्वाहा २३१३
मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा ६३६
मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो ६३७
मक्षू न वह्निः प्रजाया उपाब्दिः ६३५
मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा १०३४
मण्डूको मूषिका तित्तिरस्ते १९२४
मधवे स्वाहा १६८१
मधु नक्तमुतोषसो ३५
मधुमतीर्न इषस्कृधि यत् ते १२९५
मधुमान्नो वनस्पतिः ३६
मधु वाता ऋतायते ३४
मध्या यत् कर्त्वमभवदभीके ६३१
मनसा होमैर्हरसा घृतेन ११७७
मनसे स्वाहा १५७९
मनस्त आप्यायतां वाक्त १२८८
मनुष्यराजाय मर्कटः १८८४
मनुष्यलोकाय प्रकरितारꣳ २१८८
मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य ८४०
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं ६२९
मनो न्वा हुवामहे ६२३
मनो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा १७१५
मन्दामहे दशतयस्य धासेः ९४
मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं ७६४
मन्यवेऽयस्तापं २२०३
ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा ८४
मम देवा विहवे सन्तु सर्वे ८०१,१०४४
ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु ८००
मयि देवा द्रविणमा यजन्तां८०२,१०४६
मयुः प्राजापत्यः १८९१
मरीचिर्विमुड्भिः २०७४
मरुतश्च म इन्द्रश्च मे १४६७
मरुताꣳ सप्तमी २०१०
मरुताꣳ स्कन्धा २०३२
मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णोः २६५
मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः १८१६
मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः १८१४
मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो १८१७
मरुद्भ्यः स्वाहा १६४७
मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो १८१५
मरुद्भ्यो वैश्यं २११५
मर्माणि ते वर्मणा छादयामि ११४९
मर्यादायै प्रश्नविवाकम् २१७२
मलिम्लुचाय स्वाहा १६७९
मशकान् केशैः १९९१
महत्काण्डाय स्वाहा १०२४
महत् तद् वः कवयश्चारु नाम १८६
महदद्य महतामा वृणीमहे ६०४
महसे वीणावादं २२६०
महागणेभ्यः स्वाहा ११३७
महि द्यावापृथिवी भूतमुर्वी ७३६
महि महे दिवे अर्चा पृथिव्यै १७१
महिन्न एषां पितरश्चनेशिरे ६१७
मही समैरच्चम्वा समीची २११
महो अग्नेः समिधानस्य शर्मणि ६०५
मह्यं यजन्तां मम यानीष्टा १०४५
मह्यं यजन्तु मम यानि हव्या ८०३
मागधः पुँश्चली कितवः २२८२
मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रतिमा छन्दः १३४१
माता च यत्र दुहिता च धेनू २०३
माता पितरमृत आ बभाज १०६
मातुष्पदे परमे शुक्र आयोः २९०
मात्र पूषन्नाघृण इरस्यो ४९३
माधवाय स्वाहा १६८२
मा नो विदन् विध्याधिनो १०५२
मा नो वृकाय वृक्ये समस्मा ३९८
मां देवा दधिरे हव्यवाहम् ६११
मा प्र गाम पथो वयं ६२१
मायायै कर्मारꣳ २११४
मारुतः कल्माषः २०९१, २०९९
मा व एनो अन्यकृतं भुजेम ३९९
मा वः प्राणं मा वोऽपानं ११६०
मासां कश्यपो १९३२
मा सा ते अस्मत् सुमतिर्वि ८१
मासेभ्यः स्वाहा १६३६
मासेभ्यो दात्यौहान् १८५९
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य १५७
मित्रः पृथिव्योदक्रामत् ९९२
मित्रश्च म इन्द्रश्च मे १४६३
मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च ११११४
मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च ४८९
मित्रस्य तृतीया २०१९
मित्राय कुलीपयान् १८३९
मित्राय गौरान् १८७३
मित्राय मद्गून् १८४४
मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे ६९६
मित्राय स्वाहा १५००
मित्रावरुणाभ्यां कपोतान् १८५०
मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं १३०१
मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यां २१०६
मित्रावरुणावल्गाभ्याम् २०४०
मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतꣳ १३२१
मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी ३८२
मुग्धाय वैनतेशिनाय स्वाहा १४१२
मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः १३३८
मूर्ध्ने स्वाहा १६९९
मूलेभ्यः स्वाहा १६४९
मृत्यवे गोव्यच्छम् २२५०
मृत्यवे मृगयुम् २१४१
मृत्यवेऽसितः १९३४
मृत्यवे स्वाहा २३१६
मृदं बस्वैः १९५५
मेघाय स्वाहा १६०७
मेदस्वता यजमानाः १०६७
मेधां मे वरुणो ददातु १३८९
मेधाय वासः पल्पूलीं २१९१
मेधायै रथकारं २१३१
मो षु देवा अदः स्वः ४०
मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवाः १९३
य ईचकार न सो अस्य वेद १३०

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो ६६८
य ईशे पशुपतिः पशूनां ८८७
य उदाजन् पितरो गोमयं वसु ६५५
य ऋतेन सूर्यमारोहयन् दिवि ६५६
य ओहते रक्षसो देववीतौ २६९
यः सपत्नो योऽसपत्नो १०५५
यच्छल्मलौ भवति यन्नदीषु ५०८
यजन्ते अस्य सख्यं वयश्च ४६८
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां च ८२४
यज्ञं पृच्छाम्यवमं ४१
यज्ञस्य वो रथ्यं विश्पतिं विशां ७२१
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः २२०२
यज्ञेयज्ञे स मर्त्यो ७३७
यज्ञो दक्षिणाभिरुदक्रामत् ९९७
यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नम् ६४
यज्ञो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा १७२१
यते स्वाहा १५२६
यत् किं चासौ मनसा यच्च ९६२
यत् ते तनूष्वनद्यन्त देवाः १००५
यत् ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध ११८१
यत् ते वर्चो जातवेदो ११९६
यत् पिबति तस्मै स्वाहा १५४७
यत् पुरुषेण हविषा देवाः १२५८
यत्र बाणाः सम्पतन्ति १३६४
यत्र ब्रह्मविदो० । आपो मा तत्र १०८९
यत्र ब्रह्मविदो० । इन्द्रो मा तत्र १०८८
यत्र ब्रह्मविदो० । चन्द्रो मा तत्र १०८६
यत्र ब्रह्मविदो० । ब्रह्मा मा तत्र १०९०
यत्र ब्रह्मविदो यन्ति १०८३
यत्र ब्रह्मविदो० । वायुर्मा तत्र १०८४
यत्र ब्रह्मविदो० । सूर्यो मा तत्र १०८५
यत्र ब्रह्मविदो० । सोमो मा तत्र १०८७
यत्र वसिष्ठा दिहतो ३४८
यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भागम् ९१९
यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति ११८९
यथाक्षरो मघवंश्चारुरेष प्रियो ११०२
यथादित्या वसुभिः संबभूवुः ९५६
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत् ५३७
यथा ह त्यद् वसवो गौर्यं चित् ७९९
यथेन्द्र उद्वाचनं लब्ध्वा ९३०
यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि १३८५
यदग्नि तस्मै स्वाहा १५४६
यदद्य सूर उदिते ५३२
यदद्य सूर्य उद्यति ५३०
यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां ११८७
यदन्यासु वृषभो रोरवीति २०८
यदसावमुतो देवाः ९२५
यदापो अध्न्या इति वरुणेति १३७०
यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे ४९८
यदि नो गां हंसि १०५१
यदि प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म ९२८
यदुलूको वदति मोघमेतद् ८३१
यद् गायत्रे अधि गायत्रमाहितं १२१
यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां १३६९
यद्देवा अदः सलिले १२१७
यद्देवा देवहेडनं देवासः १०६५, १२५३
यद्देवापिः शंतनवे पुरोहितो १२२८
यद्देवा यतयो यथा १२१८
यद् वाभिपित्वे असुरा ऋतं यते ५३१
यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्ने १२२९
यं देवासोऽवथ वाजसातौ ५९३, ६७४
यन्न इन्द्रो अखनद् यदग्निः १०६८
यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा १५४८
यममी पुरोदधिरे ९२७
यमस्य त्रयोदशी २०१६
यमाय कृष्णो १८८३
यमाय यमसूम् २२१३
यमाय स्वाहा २३१४
यमायासम् २२१२
यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः ५५५
यमो मृत्युरघमारो निर्ऋथो ११७६
यम्यै त्रयोदशी २०२९
यवानां भागोऽस्ययवानामाधिपत्यं १३४६
यशो मा द्यावापृथिवी १३९७
यस्ते हवं विवदत् ८९५
यस्मिन् वृक्षे मध्वदः सुपर्णा १२०
यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने १३६५
यस्य कृष्णो हविर्गृहे ९३८
या आपो दिव्याः पयसा ११४६
याँ आवह उशतो देव ८४९
या गुङ्गूर्या सिनीवाली १२६६
या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृतं ६९७
या जामयो वृष्ण इच्छन्ति शक्तिं २१५
यातुधाना निर्ऋतिरादु रक्षस्ते ९६३
यातुधानेभ्यः कण्टकीकारिम् २१५२
या ते अग्ने पर्वतस्येव धारा २२८
या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा २२७
यादसे शाबल्यां २२६७
यादृगेव दृश्ये तादृगुच्यते २९९
यानसावतिसरांश्चकार ९२९
यानि कानि चिच्छान्तानि १०८१
यानि चत्वार भुवनस्य यस्पतिः १००४
यानि भद्राणि बीजानि १०६१
यां मे धियं मरुत इन्द्र देवाः ६८७
यावच्चतस्रः प्रदिशश्चक्षुः १११७
यासां द्यौः पिता पृथिवी माता १०६३
युक्ता मातासीद् धुरि दक्षिणायाः १०७
युक्त्वा ह्यरुषी रथे १५
युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं ७६५
युवोर्ऋतं रोदसी सत्यमस्तु १७२
युवोर्यदि सख्यायास्मे ६५१
यूयं विश्वं परि पाथ ७९५
यूयं ह रत्नं मघवत्सु धत्थ ४७४
यूयं हि ष्ठा सुदानवः ४०७, ५६७
यूयं देवाः प्रमतिर्यूयमोजो १५२
ये अग्नेः परि जज्ञिरे ६५९
ये अर्वाञ्चस्तॉं उ पराच आहुः ११७
ये के च ज्मा महिनो अहिमाया ४२३
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपाः ८९०
ये च देवा अयजन्तार्थो ११९६
ये त्रिंशति त्रयस्परो ५३४
ये देवा अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः १३२४
ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ ११६६
ये देवा दिव्येकादश स्थ ११६५
ये देवाः पृथिव्यामेकादश स्थ ११६७
ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो १११९
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां ४६३

ये देवा विश्वदेवनेत्राः १२४८
ये देवास इह स्थन ५५१
ये देवासो दिव्येकादश स्थ ९८
ये नदीनां संस्रवन्ति ८८१
येन देवं सवितारं परि १०३६
येन धनेन प्रपणं चरामि ९१९, ९२०
येन वेहद् बभूविथ १०५८
येन हस्ती वर्चसा संबभूव १११५
ये नः सपत्ना अप ते भवन्तु ८०८
येनावपत् सविता क्षुरेण ९५०
ये पन्थानो बहवो देवयानाः ९१६, १०६४
ये बध्यमानमनु दीध्यानाः ८८९
येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः ६६३
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः ६६७
येऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुः १०४८
ये यजत्रा य ईड्याः ११
ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता ६५४
ये सर्पिषः संस्रवन्ति ८८२
ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे ६०६
ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन ६०३
यो अद्य सेन्यो वधो ९६०
यो अर्वन्तं जिघाꣳसति १४९१
योगाय योक्तारꣳ २२०५
योगेयोगे तवस्तरं १०४२
यो जागार तमृचः कामयन्ते ३०७
यो नः स्वो यो अरणः सजातः १०५४
यो नः स्वोऽरणो यश्च १४०४
योनिमेक आ ससाद द्योतनो ५४०
यो यज्ञस्य प्रसाधनः ६२२
यो रजांसि विममे पार्थिवानि ३७५
यो वः शुष्मो हृदयेषु ९५२
यो वो देवा घृतस्नुना ४१६

रक्षसां भागोऽसि निरस्तꣳ १२८९
रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयो ६८६
ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां ४८६
रश्मिना सत्याय सत्यं जिन्व १३५०
रश्मिभ्यः स्वाहा १६४३
राजा राष्ट्रानां पेशो नदीनाम् ४३६
राध्यसि प्राची दिग्वसवन्ते १३५४
राध्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् २२८०
रात्र्यै सीचापूः १८५७
रिशादसः सत्पतीँरदब्धान् ३९६
रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवाः १२६०
रुद्रꣳ रोराभ्याम् २००३
रुद्राणां द्वितीया २०३४
रुद्रास्त्वाऽऽच्छृन्दन्तु त्रैष्टुभेन १४३७
रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन १४३०
रुद्रेभ्यः स्वाहा १६४५
रुद्रेभ्यो रुरुन् १८६८
रुरू रौद्रः १९४४
रूपाय मणिकारꣳ २१३५
रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो १३०४
रेभदत्र जनुषा पूर्वो अङ्गिरा ७३५
रेष्माणꣳ स्तुपेन १९९०
रोहिण्यस्त्र्यवयो वाचे १७५४
रोहिता रुद्राणाꣳ १७६०
रोहितेभ्यः स्वाहा १०२९
रोहितो धूम्ररोहितः १७३८
रोहित् कुण्डृणाची गोलत्तिका १९३३
लोकं पृण छिद्रं पृणाथो १३३४
लोपाश आश्विनः १९२५
लोमानि प्रयतिर्मम त्वञ्च १३६८

वज्रमेको बिभर्ति हस्त आहितं ५४२
वत्सतर्यः सारस्वत्यः १८०३
वत्सतर्यो देवानां पत्नीभ्यः १७५७, १७७८
वत्सराय विजर्जराꣳ २२१९
वनस्पतिभ्य उलूकान् १८४७
वनस्पतिभ्यः स्वाहा १६५१, १६६३
वनाय वनपम् २२६३
वपुषे मानस्कृतꣳ २२०९
वयं वो वृक्तबर्हिषो ५१८
वयं सोम व्रते तव ६२६
वयं तद् वः सम्र ज आ वृणीमहे ५३३
वयमिद् वः सुदानवः ५६४
वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु ९८५
वरुणश्च म इन्द्रश्च मे १४६४
वरुणस्त्वा धूपयतु १४३४
वरुणस्य द्वादशी २०१५, २०२८
वरुणाय चक्रवाकान् १८४५
वरुणाय नाकान् १८४०
वरुणाय महिषान् १८७४
वरुणाय स्वाहा १५०१, २२९४
वरुणायारण्यो मेषः १८८२, १९४०
वरुणो मादित्यैरेतस्या दिशः ९७५
वरुणो मित्रो अर्यमा ५३५
वर्णाय हिरण्यकारं २२३६
वर्णाय नुरुर्धं २१६१
वर्म मे द्यावापृथिवी १००६
वर्षते स्वाहा १६११
वर्षाभ्यस्तित्तिरीन् १८३२
वर्षाहूर्ऋतूनाम् १९३५
वर्षिष्ठाय नाकाय परि २१८६, २२०२
वल्गते स्वाहा १५१३
वल्मीकान् क्लोमभिः २०६५
वशा द्यावापृथिवीयाः १८०७
वशा मैत्रावरुण्योः १७७१
वसन्ताय कपिञ्जलानालभते १८३०
वसवस्त्र्योदशाक्षरेण त्र्योदशꣳ १३२२
वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण १३३१
वसवस्त्वाऽऽच्छृन्दन्तु गायत्रेण १४३६
वसवस्त्वाज्जन्तु गायत्रेण छन्दसा १३७६
वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण १४२९
वसवे स्वाहा १४०९, १६६८
वसिष्ठासः पितृवद् वाचमक्रत ७२०
वसुभ्य ऋश्यानालभते १८६७
वसुभ्यः स्वाहा १६४४
वसूनां कपिञ्जलः १९३८
वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं १३४५
वाग्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा १७१४
वाचे कुम्भः १८९८
वाचे प्लुषीन् १८७८
वाचे स्वाहा १५७८
वाजꣳ हनुभ्याम् १९६०
वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये १३१८
वाजाय स्वाहा १६९४
वाजिनꣳ शेपेन २०४९
वाज्यसि वाजिनेना सुवेनीः ६१६

वातं प्राणेन १९७३
वाताय स्वाहा १६०४
वानस्पत्या ग्रावाणो घोषमक्रत ९०९
वामना अनड्वाह आग्नावैष्णवाः १७७०
वामं नो अस्त्वर्यमन् ५६१
वामस्य हि प्रचेतसः ५६३
वायवे चाण्डालम् २२७३
वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि १४८८
वायवे बलाकाः १८४२
वायवे स्वाहा १४९६, २२८७
वायव्यः श्वेतः पुच्छे १७३५
वायुं तेऽन्तरिक्षवन्तमृच्छन्तु ९८३
वायुः पुनातु सविता पुनातु १३९०
वायुरन्तरिक्षेणोदक्रामत् ९९३
वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्या दिशः ९७३
वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्रीवः १३७७
वायोः पुच्छम् २०३६
वायोर्निपक्षतिः २००५
वारुणः कृष्ण एकशितिपात् पेत्वः २०९४
वारुणः पेत्वः २१०२
वार्ष्यः स्वाहा १५९३
वावर्त येषां राया ७४८
वाशीमेको बिभर्ति हस्ते ५४१
वासयसीव वेधसस्त्वं नः ४७८
विंशतिः स्वाहा १०२३
विकृताय स्वाहा १५२१
विजृम्भमाणाय स्वाहा १५२०
वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि ३३३
विदा चिन्नु महान्तो येव एवा २५२
विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थैः ३०९
विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं ४२७
विद्युतं कनीनकाभ्याम् १९६६, १९८२
विद्युद्रथा मरुत ऋष्टिमन्तो १८२
विद्योतमानाय स्वाहा १६०८
विधूताय स्वाहा १५३९
विधून्वानाय स्वाहा १५३८
विधृतिं नाभ्या २०७१
विनश्शिन आन्त्यायनाय स्वाहा १४१३
वि नः पथा सुविताय ३१
वि नो देवासो अद्रुहो ५२०
विप्रेभिर्विप्र सन्त्य ३५२
विभिर्द्रो चरत एकया सह ५४६
विभुवे स्वाहा १६६९
वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः १९४
वियासाय स्वाहा २३००
विराडसि दक्षिणा दिग् रुद्रास्ते १३५५
विरूपास इदृषयस्ते ६५८
विवर्तमानाय स्वाहा १५३६
विवस्वते स्वाहा १६७०
विविक्त्यै क्षत्तारम् २१९५
विवृत्ताय स्वाहा १५३७
विशामासामभयानामधिक्षितं ७३४
विशोविश ईड्यमध्वरेषु ३६४
विश्वकर्माणं ते सप्तऋषिवन्तमृच्छन्तु९८८
विश्वकर्मा मा सप्तऋषिभिः ९७८
विश्वदानीं सुमनसः स्याम ४१३
विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः १२४७
विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो ५९६
विश्वान् देवान् हवामहे १६
विश्वाहा ते सदमिद् भरेम ९२२
विश्वा हि वो नमस्यामि वन्या ६६२
विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती ५९२
विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः ३१६
विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे १४६८
विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा आच्छृन्दन्तु८५६, १४३९
विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्तु ८५४
विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्तु ८५५, १४३२
विश्वेदेते जनिमा सं विविक्तो १७७
विश्वे देवा अशुषु न्युप्तः ८५१, १३११
विश्वे देवा ऋतावृधः ४१८
विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण ८५३
विश्वे देवा द्वादशे ८७६
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये ३५८
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञियाः ४२२
विश्वे देवाश्चमसेषूजीतः ८५२, १३१२
विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह ६०८
विश्वे देवाः शृणुतेमं हवं मे ४२१
विश्वे देवाः सह धीभिः पुरंध्या ७०५
विश्वे देवास आ गत १६५, ४१५
विश्वे देवासो अप्तुरः २
विश्वे देवासो अस्रिधः ३
विश्वेभिः सोम्यं मधु १३
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते ८४७
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जगच्छन्दसं ८५०
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं ८६७, १४८९
विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान् ८६९, १८७०
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ८६८,१६४८, २३१९
विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः८७४,२१०५
विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं २२३९
विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये ६७१
विश्वेषां देवानामुत्तरम् २०३१
विश्वेषां देवानां पृषतः १९५१
विश्वेषां देवानां प्रथमा ८७१, २०३३
विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ ८४६
विश्वेषामिरज्यवो देवानां ७३८
विश्वे हि ष्मा मनवे विश्ववेदसो ५१५
विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो ३४५
विषमेभ्यो मैनं लभ २२३०
विषासह्यै स्वाहा १०३३
वि षा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं ६९०
विषूचीर्यतु कृन्तती ८८४
विष्णवे निभूयपाय स्वाहा १५७०
विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा १५७१
विष्णवे स्वाहा १४९७, १५६९
विष्णुं स्तोमासः पुरुदस्ममर्काः १८३
विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः २०१
विष्णुर्योनिं कल्पयतु ८३७
विष्णुस्त्वा धूपयतु १४३५
विष्णोरेष्टमी २०२४
विष्वञ्चो अस्मच्छरवः १०५३
विसर्माणं कृणुहि वित्तमेषां २६८
वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सादा ३१०
वि स्रुतयो यथा पथा १४००

विहुत आन्त्रैः २०४६
वीक्षिताय स्वाहा १५४४
वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं २२६९
वीमे देवा अक्रंसत ११९७
वीरस्य नु स्वश्व्यं जनासः २०९
वीर्यायाविपालं २१७६
वृषणमाण्डाभ्याम् १९६२, २०४८
वृषदश्शस्ते धात्रे १८९३
वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञियाः ७१२
वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भ २४९
वेत्यमुर्जनिवान् वा अति स्पृधः ३००
वेद यत्रीणि विदथान्येषां ३९४
वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्यः ९२३
वैरहत्याय पिशुनं २१९४
वैशन्ताभ्यो बैन्दं २२२५
वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ २०९८
वैश्वानरं भस्मना २०७०
वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं ९४४
वैश्वानरीं सूनृतामा रभध्वं ९४३
वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु ९४२
वैष्णवो वामनः १७३७
व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्थाम् २३२
व्यदनुविने स्वाहा १७००
व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे ११४५
व्यानाय स्वाहा १५७५
व्यानो यज्ञेन कल्पताश्स्वाहा १७०९
व्युष्टयै स्वाहा १७२६
व्यृद्धया अपगल्भश् २२४३
व्येतु दिद्युद् द्विषामशेवा ४३८
व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो ७७०
व्रात्याभ्यां स्वाहा १०३१
शं रुद्राः शं वसवः १०७९
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवाः २७
शताय स्वाहा १७२४
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः ४४९
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु ४५४
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु ४६०
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु ४५६
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः ४५५
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु ४५१
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु ४६१
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः ४५७
शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः १०७८
शं नो देवः सविता त्रायमाणः ४५८
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु ४५९
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ ४५३
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु ४५१
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु ४५०
शं नो भूमिर्वेप्यमाना १०७६
शं नो मित्रः शं वरुणः ३७
शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वान् १०७५
शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः १०७४
शबला वैद्युताः १७८२
शब्दायाडम्बराघातं २२५९
शयानाय स्वाहा १५१५
शयुः परस्तादध नु द्विमाता १९७
शरदे वर्त्तिका १८३३
शरव्याया इषुकारश् २१३७
शर्मास्यवधूतश् रक्षोऽवधूता १२७१
शाखाभ्यः स्वाहा १६५०
शादं दद्भिः १९५३
शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी १०६९
शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं १०७०
शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः १९०६
शार्दूलाय रोहिद् १८८५
शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे १९०९
शिखिभ्यः स्वाहा ११३५
शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः २०८८
शितिबाहुरन्यतःशितिबाहुः १७४१
शितिभ्रवो वसूनाश् १७५९
शितिरन्ध्रोऽन्यतःशितिरन्ध्रः १७४०
शिल्पा वैश्वदेवी १७५३
शिल्पो वैश्वदेवः २०८९
शिवः कपोत इषितो नो अस्तु ८२९
शिशिराय विककरान् १८३५
शीकायते स्वाहा १६१८
शीघ्रं वर्षते स्वाहा १६१४
शीनं वसया २०७६
शीलायाजनीकारीं २२१०
शुकरूपा वाजिनाः १७६५
शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि १२८२
शुक्राय स्वाहा १६८३
शुक्लाय स्वाहा १९६७
शुचये स्वाहा १६८४
शुचे स्वाहा २३०२
शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो १७४३
शुनमस्मभ्यमूतये ७९८
शुभे वपश् २१३६
शुश्रूषमाणाय स्वाहा १५४०
शुक्राय स्वाहा १५३०
शुक्राय स्वाहा १५३१
शूरस्येव युध्यतो अन्तमस्य १९९
शूषाय स्वाहा १६७५
शृणोतु न ऊर्जां पतिर्गिरः सः २५१
शृण्वते स्वाहा १५४१
शृण्वन्तु नो वृषणः पर्वतासो १८९
शोकाय स्वाहा २३०५
शोकायाभिसर्तारं २२०६
शोचते स्वाहा २३०३
शोचमानाय स्वाहा २३०४
श्यामाः पौष्णाः १७६७, १८०४
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते १७४४
श्येन आसामदितिः कक्ष्यो मदो ३०४
श्रिये सुदृशीरुपरस्य याः स्वः २९५
श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ८७
श्रेयसे वित्तधम् २१८१
श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्वरेण्यं ५८६
श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताश्स्वाहा १७१३
श्रोत्राय भृङ्गाः १८८०
श्रोत्राय स्वाहा १५७७
श्लोकाय स्वाहा १४२५
श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभः १९४८
श्वाविद् भौमी १९०८
श्वित्र आदित्यानाम् १९४१
श्वेता अवरोकिण आदित्यानां १७६१
श्वेता वायव्याः १७७५, १८२८
श्वेताः सौर्याः १८२९

श्वेतान् ग्रीष्माय १७८५
षट्त्रिंशच्च चतुरः कल्पयन्तः ७८७
षळृचेभ्यः स्वाहा १००९
षड् भारां एको अचरन् बिभर्ति ११५
षष्ठाय स्वाहा ११२२
षोडशर्चेभ्यः स्वाहा १०१९
षोडशी स्तोम ओजो द्रविणं १३४७
स इद् दानाय दभ्याय वन्वन् ६१८
स ईं वृषा न फेनमस्यदाजौ ६३४
संयासाय स्वाहा २२९९
संवत्सराय पर्यायिणी २२१५
संवत्सराय पलिक्नीम् २२२०
संवत्सराय महतः सुपर्णान् १८६१
संवत्सराय स्वाहा १६३९
सं वः पृच्यन्तां तन्वः ९५४
सं वो मनांसि सं व्रता ९०६
सꣳशराय प्रच्छिदम् २२४४
संशितं म इदं ब्रह्म ११०५
सꣳसर्पाय स्वाहा १६७६
सं सं स्रवन्तु सिन्धवः ८७९
सꣳस्रवभागा स्थेषा बृहन्तः ८४१
सꣳहानाय स्वाहा १५२२
सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः १०५७
स गृणानो अद्भिर्देववानिति ६५२
संक्रोशैः प्राणान् १९८९
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेन १२६८
स जिह्वया चतुरनीक ऋञ्जते ३३९
सजूरब्दो अयवोभिः १३३५
सजूरादित्यैर्वसुभिः ३५५
सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः ८५८
सजूर्देवेन सवित्रा सजूः ११८०
सजूर्देवेभिरपां नपातं ४४०
सजूर्मित्रावरुणाभ्यां ३५४
सजूर्विश्वेभिर्देवेभिः ३५३
संजभ्राणास्तरुभिः सुतेगृभं २९८
सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं ९४५
संज्ञपनं वो मनसोऽथो ९५५
संज्ञानाय स्मरकारीं २१५९
सत्तो होता मनुष्वदा ५१
सदा गावः शुचयो विश्वधायसः १३९९
सदापृणो यजतो वि द्विषो वधीद् ३०५
सदा सुगः पितुमाँ अस्तु पन्था १९०
सदुत्तरेण १९७६
सदो द्वा चक्राते उपमा ५४७
स द्विबन्धुर्वैतरणो यष्टा ६४३
सना पुराणमध्येम्यारात् १७८
सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद् ४७७
सनेम तत् सुसनिता सनित्वभिः ६०२
सनेमि चक्रमजरं वि वावृत ११२
सं ते मनो मनसा सं प्राणः १२९०
संदानं वो बृहस्पतिः ११८४
सन्दिताय स्वाहा १५१२
सन्धये जारं २१५३
सप्तः सिन्धुरवभृथाय १३१३
स पचामि स ददामि स यजे ११५३
सप्तदशभिरस्तुवत ग्राम्याः पशवः १४४८
सप्तदशर्चेभ्यः स्वाहा १०२०
सप्त प्राणानष्टौ मन्यस्तांस्ते १०९७
सप्तभिः पुत्रैरदितिः १२२०
सप्तभिरस्तुवत सप्त ऋषयः १४४३
सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा ११२३
सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रम् १००
सप्तर्चेभ्यः स्वाहा १०१०
सप्तविꣳशत्यास्तुवत द्यावापृथिवी १४५३
सप्तानां सप्त ऋष्टयः ५३८
सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो १३४
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः १२५९
स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वान् १२९७
समदिवनोरवसा नूतनेन २७६, २९३
समहमेषां राष्ट्रं स्यामि ११०६
समानी व आकूतिः समाना ९४७
समानो मन्त्रः समितिः समानी ९४६
समानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा १७११
समानो राजा विभृतः पुरुत्रा १९५
समान्या वियुते दूरेअन्ते १७६
समाध्य म इन्द्रश्च मे १४७१
समिदसि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् १२७३
समिन्द्र णो मनसा नेषि २६३, ८४८
समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं १२९१
समुद्रः सिन्धू रजो अन्तरिक्षम् ७१७
समुद्रमासामव तस्थे अग्रिमा ३०१
समुद्रमुदरेण २०६९
समुद्राय शिशुमारानालभते १८३६
समुद्राय शिशुमारो १८८९
समुद्राय स्वाहा १६०१
समुद्रो नदीभिरुदक्रामत् ९९८
समु वो यज्ञं महयन् नमोभिः ४९७
स मे वपुच्छदयदश्विनोर्यो ३६७
सं परमान्तसमवमानथो ११८५
सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन ९६७
सं बर्हिरङ्क्ताꣳ हविषा घृतेन १२७६
सं मा तपन्त्यभितः ४५
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेनाः १३३७
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुः ६६५
सम्राडसि प्रतीची दिगादित्यास्ते १३५६
सरस्वती च म इन्द्रश्च मे १४६०
सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिः ६८४
सरस्वते शुकः पुरुषवाक् १९१०
सरस्वत्या अग्रजिह्वं १९५७
सरस्वत्यै निपक्षतिः २०१८
सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा १५६१
सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा १५६१
सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक् १९०७
सरस्वत्यै स्वाहा १४२०, १५६०
सरस्वान् धीभिर्वरुणो धृतव्रतः ७१९
सरिराय स्वाहा १६०३
सरीसृपेभ्यः स्वाहा १६६६
सरूपा धात्रे १७५६, १७७७
सरोभ्यो धैवरम् २२२३
सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम् २१४८
सर्पाणाꣳ सप्तमी २०२३
सर्पान् गुदाभिः २०४५
सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि १४९०
सर्वेभ्योऽग्निरोभ्यो विदगणेभ्यः ११३८
सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारं २१८९
सविता च म इन्द्रश्च मे १४५९
सविता पश्चात् सविता पुरस्तात् ६०७

सवित्र औण्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय २१०८
सवित्रे स्वाहा १४१९, १४९५
स व्राधतो नहुषो दंसुजूतः ९१
सहसे स्वाहा १६८९
सहस्याय स्वाहा १६९०
सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था ७८९
स हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभिः ३०३
सहोभिर्विश्वं परि चक्रमू रजः ६१८
साकंजानां सप्तथमाहुरेकजं ११३
साध्येभ्यः कुलुङ्गान् १८७१
साध्येभ्यश्चर्मन्नम् २२२२
सानुभ्यो जम्भकं २२३३
सारस्वती मेषी २०८५, २११०१
सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोः १७३०
सिंहो मारुतः १९५०
सिध्मास्तारकाः १७८३
सिषक्तु न ऊर्जव्यस्य पुष्टेः २५९
सीरा युञ्जन्ति कवयो ७६६
सीसायाध्याह वरुणः १०४९
सुकृत् सुपाणिः स्ववाँ ऋतावा १८१
सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा ४९६
सुगा वो देवाः सदना अकर्म १२४३
सुज्योतिषः सूर्य दक्षपितृन् ३७९
सुतंभरो यजमानस्य सत्पतिः ३०६
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं ६७०
सुपर्ण विप्राः कवयो वचोभिः ७८६
सुपर्णः पार्जन्यः १९११
सुपर्णा एत आसते ४८
सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीहि १२९८
सुभूः स्वयम्भूः प्रथमो १३८३
सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैः ३१२
सूद्याभ्यः स्वाहा १५९९
सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिः १३७४
सूयवसाद् भगवती हि भूयाः १३८
सूरश्चिदा हरितो अस्य रीरमद् ७२८
सूर्य ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु ९८६
सूर्यश्च मे १४७८
सूर्याभ्यां स्वाहा १०३०
सूर्याय स्वाहा १६४१, १६५८, २२८९
सूर्याय हर्यक्षं २२७६
सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय १२२१
सूर्यो दिवोदक्रामत् ९९४
सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां ९७६
सेदुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी ४९०
सोम ओषधीभिरुदक्रामत् ९९६
सोम राजन् विश्वास्त्वं प्रजाः १२९४
सोमं राजानमवसे ८१८
सोमं ते क्षद्रवन्तमृच्छन्तु ९८४
सोमश्च म इन्द्रश्च मे १४५८
सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः ११५६
सोमस्य चतुर्थी २००७
सोमस्य त्विषिरसि तवेव १३२५
सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि ८३३
सोमाय कुलुङ्गः १८९९
सोमाय लबानालभते १८५१
सोमाय स्वाहा १४१८, १४९३, १६२३
सोमाय हृत्सानालभते १८४१
सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाया दिशः ९७४
सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां ७७६
सौमापौष्णः श्यामो नाभ्याः १७३२
सौरी बलाका १९०५
सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च १७३३
स्तनयते स्वाहा १६०९
स्तनयित्नुं निर्बाधेन १९८०
स्तम्भीद्द्यां स धरुणं पृषयद् ६८
स्तरीर्यत् सूत सद्यो अज्यमाना ५७७
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ ४२५
स्तुष उ वो मह ऋतस्य गोपान् ३९५
स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिः ३६३
स्तुषे सा वां वरुण मित्र रातिः ८८
स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वीं ५७६
स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणः ४१९
स्तोमं वो अद्य रुद्राय शिक्वसे ७२९
स्त्रियः सतीस्ताँ उ मे पुंस आहुः ११४
स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा १५९७
स्याम वो मनवो देववीतये ७१८
स्रवन्तीभ्यः स्वाहा १५९६
स्वः स्वाहा १६९८
स्वदस्व हव्या समिषो दिदीहि १९१
स्वनेभ्यः पर्णकं २२३१
स्वपते स्वाहा १५१६
स्वप्नायान्धम् २१६६
स्वराडस्युदीची दिङ्मरुतस्ते देवाः १३५७
स्वर्गाय लोकाय भागदुघं २२०१
स्वर्गाय स्वाहा १७२७
स्वर्णरमन्तरिक्षाणि रोचना ६९५
स्वर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा १७१९
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै ३५७
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः २४
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः ३५६
स्वस्ति पन्थामनु चरेम ३६०
स्वस्ति मित्रावरुणा ३५९
स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो १२९६
स्वाहा चित्तं विज्ञाताय १५५६
स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः १२३७
स्वाहाऽऽधिमाधीताय १५५४
स्वापये स्वाहा १४०६
स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा १३९४
स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः २२८३
स्वाहा मनः प्रजापतये १५५५
स्विध्मा यद् वनधितिरपस्यात् ७३

हꣳसो वातस्य १९२०
हत्वाय देवा असुरान् यदायन् ८२६
हये देवा यूयमिदापयः स्थ १५४
हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि ३२०
हरितेभ्यः स्वाहा ११२५
हरिष्मतीरिमा आपो १२९३
हसाय कारिम् २११८, २२६६
हस्काराद् विद्युतस्परि १८
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां ८१५
हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद् यशो १११३
हस्ती मृगाणां सुषदाम् १११८
हस्तेनैव ग्राह्य आधिरस्या ७७७
हिङ्काराय स्वाहा १५०२
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां १२५
हिङ्कृताय स्वाहा १५०३

हिमवते हस्ती	१८९०	हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मान्	८३०	हृदान् कुक्षिभ्याः	२०६८
हिरण्यकर्ण मणिग्रीवमर्णः	९५	हेत्यै धनुष्कारं	२१३८	ह्रादुनीभ्यः स्वाहा	१६२०
हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्वः	१८०	हेमन्ताय ककरान्	१८३४	ह्रादुनीर्दूषीकाभिः	२०७८
हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो	१०४३	होता यक्षदश्विनौ छागस्य वपायाः	१३७१	ह्रियै शल्यकः	१९२१
हिराभिः स्रवन्तीः	२०६७	होता यक्षदश्विनौ छागस्य हविषः	१३७३	ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः	८९४
हुवे वो देवीमदितिं नमोभिः	३७८	होता यक्षदश्विनौ सरस्वतीमिन्द्रं	१३७२	ह्वयामि देवाँ अयातुरग्ने	४३३
हुवे सोमं सवितारं नमोभिः	९०४	होत्रादहं वरुण मित्र्यदार्यं	१२०७		

इति विश्वे-देवादेवता समाप्ता ।